



সনাতন ধর্মীয় সকল প্রকার শাস্ত্র এবং ধর্মগ্রন্থ সম্পূর্ণ বিনামূল্যে পেতে আমাদের ফেইসবুক গ্রুপে যুক্ত হতে পারেন। গ্রুপে জয়েন করতে নিচের নীল রঙের <u>শাস্ত্রপৃষ্ঠা</u> টাইটেলে ক্লিক করুন।

"ॐ শান্ত্রপৃষ্ঠা"

THE WAS TRAINED AND A STATE OF THE PARTY OF

and where the same of the same







ভ মিকা।

মহিদি বেদবাদি প্রাণিত অফাদেশ পুরাণের অন্তগত জাগুপুরাণ যাবভীয় মন্তুল্যাদ্যা কর । বেদ বতং হিন্দেশপ্রাণ্যের অভি উপাদেষ সামগী। ইহাতে রামায়ণ, মহাভাবত, হবি কা, আন সংক্রিকা, বন্ধ, বন্ধানি, মৃহুলোল, ছন্দোগত ও অল্লারশাস্ত্র প্রভৃতির সাবগঠ বিষয় মধ্য গাঁহি স্টেলনকল বর্ণিত আছে। আবও বর্ণাশ্রমধ্য, গৃহনিত্যাণাদি ব্যবস্থা, বিবিধ ব্যাদিনিয়াল মহাজীব্যা, বছরিধ ব্রতমালা এবং অনেক দেবদেবার পূজা ও প্রতিষ্ঠাবিধি কথিত হই প্রত্যাল ব্যাক দিন হইল, মূল সংস্কৃত অগ্লিপুরাণ শ্রেষাটিক সোদাইটি হইতে মুদ্রিত হয়। বংবাতে ভিন লিন হানের দশ খানি পুস্তক একলে 'ম্বাইয়া ঐ মুদ্রান্থন কাষ্য সমাহিত হ, প্রত্যালে একালে। ন্যুণানি প্রত্যক অগ্নিপুরাণমাহাল্যব্যক ক্ষ্যায়ের প্রেই গ্রন্থস্থাপ্র দৃষ্ট হয় অপাল একখানিতে মাতে জ্বিল আখ্যায়ের প্রেই অভ্যায় বিহিত ছিল দেনি। উদ্ধিখায়েও ল ভাদ্শ প্রামাণিক বিবেশ্যক না হওগায় সোদাইটির পুস্তকে পরিশিক্টভাশে ও ত্রিংশং অধ্যায়ের হিন্দু আমাণিক বিবেশ্যক না হওগায় সোদাইটির পুস্তকে পরিশিক্টভাশে ও ত্রিংশং অধ্যায়ের মুদ্রত হন্যায়েত।

দ্যার্দ্র চতা মহামুনি দ্বৈপায়ন লোকহি লাগ লাগেবাণ মধ্যে নেরূপ বিশেষ বিশো উপালেগী বিসাঘৰ সামবেশ করিয়াছেন, তাহাতে এই তম্বা এন্ত ব্যক্তিমাত্রের সাদরে নিনি ১ হওয়া বিশেষ থাবশ্যক। কিন্তু সকলে তাদৃশ সংস্কৃত্ত নহেন বলিয়া অনেকেট ইলাব শ্লাবেশ ছ হইতে পারেন নাই, এজন্য সহজে সাধারতার অবগত নিমিত্র সোমাইটির মুদ্রিত মুন্ত মুন্ত ক্ষেত্র শ্লাবেশ করিয়া অগ্রিপ্রাণের স্বল বস্কাম্য এই অনুবাদ গ্রেছ প্রচারিত হইল । শহাবেশ সকলাম্য এই অনুবাদ গ্রেছ প্রচারিত হইল । শহাবেশ স্বাদ প্রদিশিশ এই শিরোনাম দিয়া অতিরিক্ত ছয় অধ্যায়ৰ বক্ষাবি মুন্তা প্রচার জনা লাভের আশা পরিত্যােশ কবিষা তাদু সাহ্বির হতে পারে, তাহাই, করা বেল। একণে জরশা করি, সাধারণে সম্চিত শার্ষপ্রবিশ এই মহোপকারী গ্রেছে বিশেষ শ্লেশ আলোচনা করিলো শুম্সার্থক জ্ঞান কি বান শ্লাবিত্র বিশেষ শ্লেশ আলোচনা করিলো শুম্সার্থক জ্ঞান কি বান শ্লাবিত্র বেণেতি।

খ্যামপুক্ৰ ২ নং অভয়ধ্যেরের লেন কলিকাত ।

জ্ঞীচন্দ্রনাথ বস্ত

RARE BOOK

मधि प्राचनक मृहि भव।

		Jada Chanana					
Catalogue of the property of	y asarbe	م محد سب بسطور در ادر از الراق	विषय	****		-	
গুণাপ তাল কৰ্ম)	क्षत्र (काव	***		p4 to	WAY
म्रू १ व । वस		•	<u>গীৰ্ম সাহা</u>			• •	94
कृत्याण १ छ। १ च अते			নংকেৰ ওৰ পুনা 'ব	ít ·		4 4 H	8.7
र्शात्र संक्रिक र नवस्		ú	কথার পুনা				458
striants of intle			< ফুথাস!দন বিশ				. 1
'व्य _ा ' (ति) । ।			ন ম(হ্যু)				545
क्ता ३ - १३		>	तंत्र अस्ति श्री	• •			**>
किंग भागाप		J	alulta di				544
ক্ষ় ⁴ ঙ		L.	रका भ र			•	>>
78 · M		3	গ নগ্ৰো			• •	* ﴿ ر
मं इवर् १५२			শুধুম বিষ্ঠান ক্ষ	* \$1		**,	•
विविश्म स्र्वेम	*	, ,	। श्रशं गाका । द ⁴ स			<i>}***</i>	, XOP
क्षानि भवानि यान		e die ern	मध्यान ही मा रेस-	***	* 1	ata Res	\$ con
महाकाविक होन	***	٠ ١ ٢	् । म	***	• 3 k	ما وأيط أول	7 4
महोडाब व न		43	_अ वधिकात्रन अधन	***	in the		140
· 神學 不可以	•	44	क्रिक्न दि मन्द्र कर्म्	N. ush a v	44 Air -	A S	3
1194 418 414 14 15		46. cy	awa fafe) "Kir "		1	Sept. Sept.
ars mi ma	***		जाकदान करिकेशि र	र्थतः		N.	100
ক্লাতি প্ৰস্থিত		ů.	नक्षा देशाहर	ep. T	+ #* V		् ५ ५
With the second		89	-	, दशकीं.		44	为中的
11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		183	1-1-1 1-1-1	1	4+	***	388
PREPARETE SAME			Hay Wall	**	gu te	***	380,
THE CASE OF THE PERSON NAMED IN		444	THE WAY THE ME	Nei 1	46.90	1	* 1
रेनकद मान किं ^{ति} कर्षस		ا ن	485 WIF 4 - 2 WIF	कर्मन	•	~, \$	***
कारि क्षेत्र प्रशासी			WIND THE THE				Agu
প্রধোত্তম বিশিক্ষ		947'	N 9 41 1 144	4 44		*****	
受性的知识解 年 奉4 月1			A VI THE			* * *	
ध्नवानकाम निर्माण मानाका अक्रम		**	MAN TAN			**	4
त्विकामकि वृद्धि क्षात्व		menny \$4	NA MINE CHINE				in
নং কাৰি অভিনা ক্ৰমৰ			MANAGE TOTAL	L		* **	٠ ر ري
द्यासिनाहरू गणेतु हेन्छ			28:11 1747,118			• #	
AND THE PROPERTY OF THE PROPER			SEA SETTLE ALCOHOL			4	
ा कुरुक्त द्वार्टिं ने सम्बर्क		24.	A THE PARTY OF THE				

	INON XU						
•	BA		i i i i i i i i i i i i i i i i i i i		Service Communication of the C		The state of the s
with at the	Q,~	•	7 # 6	***************************************	The same of the sa		s4¢
ভাৰেত বৰীৰ নি				74.9	বৰ্ণধৰ্মাদি		323
े ≩েহংগা≑ঃ বিজয় বিদ।	1			১৫৭	অযুভৰককোটী (হাম		hri 1545
ু সংগ্ৰাম বিশ্বছ বিদ্যা				ንፍ৮	মহাপাতৰাদি কথন		۵، څ ۰۰۰
英華道 6 済				269	প্রায়শ্চিত		
महामानी निमा				563	প্রাথকিওে পাপনাশন স্তোত্ত		5w+
মতাখীপাদি বৰ্ণন) Q (v	স্থাপ পায়তিও		·• 75H
ভূৰন কোষ বৰ্ণন				225	ু শু ৩প ⁽ বভাষ্†		
সংলাম বিৰয় পুৰা				3 58	প্তিদ রস্ত		i 20-8
অন্যত্ত লক্ষ কোটি চো	ম			?#8	হিণা এচ		7 # T
কপিলাদি পূলা বি'ধ				246	ड़•¹क्रा⊴ 5		•
চয় পূজা কণন				>>@	চ;ধ ৰঙ		
মধ্যার কথন				३ ४५	পর্কম" বুক্		4.9
ষ্টি সম্পন্ন				. 59	 यहें व 5		r. Sea
পাদপায়াম কাডিটা ক	थ न			36,	বিপ্নী ৰুঙ		** ***
জীগ জাব কথন				3 47	सब्द्ध हैं। युड		*** 4 **
रख्यां (माप्त्रर	٧•			242	અક્ષ્યો વક		
দেৰ্হালোৎসৰ				نه چار	নৰ্মা বৃচ		***
मधुमग्र आर्टिकी	14			. 4 .	স্পায়ী এক		*** ***
সভাগুত ভাগন				242	ধিবিৰ ছাদৰী ক্ষ		***
भागआभाम शृक्षाक वन	1			592	स्वनाभाभ णे अ ७ .		*** \$4.5
দেবীপ্রতিষ্য লক্ষণ	***		***	210	অবও ধাদ্বা এত		aya
ভ্যানিজভিমানকৰ	•			59#	জ্ঞানশী ব্ৰস্ত	•	4>/
ভূমিপ্তি <u>আ</u> ছ			•	204	১৬ দশী ব্ৰস্ত	• •	* 454
अधामान क्षेत्र				346	শিৰ্গালি শ্ৰন্ত		-1 45 4
প্ৰিত্ৰহেণ্ডিচ	•			399	অংশাৰ পূৰ্ণবাভিত্য ব্ৰক্ত	•	> 26
त १ ४४ मुख					44 200	***	14 404
ন্-ভগুৰি		·	•	398	, I	*1	234
· ·			***	\$b**	· 乔连 送春	• •	S. to
ক্র ল চণ্টাশ্ম বৈবাহ বি ধি		* **	***	>64	দিবস শ্রন্ত	•	***
(यवाशायाय काङाबादाय	•	***	141	26.2	भ(त् ३ %	•	4 44-
_		•••	***	৯৮২	নাৰাত্ত	13	され 本質を
হ্য ক্ষান্ত হাৰ পাচ বাৰ প্ৰায়ে	411			>৮৩	দীপদান বভ	11.	
বান পঞ্চান্ত্ৰম	•			74.2	न र वृष् हा कर्षन	***	*******
ষ্ঠিপশ	•	•	*1*	>>*	भूभावास्त्र · · ·	***	(33
ধৰ্ম বাল		•••	***	34.2	सदकत्रकाण पर्वस ।	•	··· 390
নৰ গ্ৰহেম	***	1,	***	369	ম্বোপ্রার বস্ত	***	.: "# \.44

অবিপুরাবের স্থচিপত্ত।

विषत्र	سيريو سفس سيس	مهمدين من من من من	***	मुहेर			+ *********	بي سيد:	
) তীশ্বপঞ্চ				२: ७	য াত গুণা				9
ा क्षेत्रग्राच ग्राम				229	সামাশি				
(को मृत अड		•	***	३३৮	বামোজ-বাজনীতি	••	f pop		لأحدد
অ৺শনি সমৃত৹ৰ		•••	••	254	ত্ৰীপুৰ্য শক্ষণ				
দ্বপ্ৰি ক াৰা		44.7		\$52	সীলক্ষ				
ম্ভাগান				২৩২	সুজ্পাদি পুড়াফল				
स् नि मिन		•••		၃ ၁ ၁	সহস্ৰ নামিক বৈক্ষণ দে	ভাৰ	÷		
মেরদান				২৩ ৭	আ্যাকগন				
পুবিবীদান	**		•	ર ૭৮	একার এঙ	٠			1
আগ্ৰেশিচ ড বছজাদি		•		50%	জোতিঃ শাস্ত্ৰাব			**	264
মুখ্যাক থা				>8<	। দ্ব∓ ত েজি			٠,	
সন্ধাৰিধি				>8?	শাব, শোচ			,	× 444
গ্রেণী নিকাশ				⇒ 6 B	স্থাবা শৌচ			*	
ু গারু <i>ন</i> ীনি সাবি				280	≛া%কর				*2019
আহ'ভবেক মধ	•			₹84	শ্ভাবির	•			***
च्रश्रासाम				২৪৮	र∌°डोका				.,
মাকলাখায়ে				२७२	চ মণাদি লক্ষণ ও বাজা	সনাদি		7 h	was a
র্মোজনতি		•		२००	ধন বিভ'গ			٠.	湖中 美 []
বাজবন্ম কথন		••	•••	> € 5	কুৰ্জিকাপুলাও বাস্ত	লকণ্য	P		10.2
শ্ৰী-স্তায়কথন		•	••	રહ હ	ধহুকেদ ও বাম-বামাণি	ক্থন			4 1 1
(의 타) 파	k .	•		२१५	আয়েশ ধাৰণ ও লক্ষণ 🤇	ৰদ কথাৰ	₹		13=4
অভ্যতিক বাৰকখন			***	20h	सङ्दर्भ	•••	4 4		146
ৰ গু প্ৰ ণর প	•	•••	+ 4	\$ 3 0 0	धर्गानम		•		٧ إ
, সামাত্যপার		***	•••	२७३	, হাবহাৰ কথন	•	• •		***
द्र स्थि	***	••	1.0	₹७ >	শ্ব পবিশেষ	•	4 4	407	124 i
স্কারসক্ষ্	•		**	764	ণিবা আমাণ	•	4		الم الم
ष्म् जी विवृक्ष	***	***	••1	२७७	নী মাৰিবাগাদি		, 44) • •	•	40,4
भूर्वन ण् राम्	***	***	¥**	२७१	वाक् भाजन्यामि व्यक्तन		ger S	,	K
द्र ास श्चा	••	-11		₹	भशि धान		, an	44	٠, ٠
ক্লীৰকাদিকাৰ শাস্ত্ৰ	- 4	1 f 2h		244	रक् सिथान		p.,	,	500
য়াক্যাজিবেক	***	***	e! ! •	\$ 93*	नाम विशास	- •			1000 H
वृद्ध वाजा		N ===		444	श्रेंथं विशाम		H		349 H
甲壳样	***	1+4	***	રવેર	উৎগাত শাস্তি	***			04.2 ×
শক্ষ	• •	***	***	290	কেব পূজা বৈশ্বদেব বৰি		. in the	1+1	0.02
ৰাত্ৰা মঞ্জল চিন্তা	***	•••	***	₹9€	दिनायक जान		Magget .	٠.٧	
के गाव सङ्ग छगानि	•	•••	***	3,90	स्किशनामि भान		•	•	

अंतियातक प्राथ्यक

RH		ું જુ ં	THE ST		5.5 '9986
THE RIP		×340	নক্ষ নিৰ্ভি		9/3
विशेषमा दिशि	•••	'SEC.'	माना बन	(,)√A ¯¯¯¯; • •;	
अमित्रकः	•••	'ওয়ড	दकार है है कि बहुत का क		*
দ্বী প্ৰতিষ্ঠা কথন	***	ଘଟ ଏଥିବ	द्वित्रयागीरन अध्यक्ष कथन व अर	in Saide - Fir	على المديد
का कारिका करूम	***	. ে ৩৪৮	সেবা চক্র	2,024fr 1	*** 8
र्शिक्ष अव्यक्ती विश्वास		🍇	ানা বল	111	
ियानम्बिमि •••	,	··· •	रहे क्य		• 6
শ ঘট্টিশ নিলি 🗼	•••	00%	वक्रानि द्यान		8
'ৰ বুডিঞ্চিক্টা		U	विश्व र श हरुक्कास	a '	8
विश्व कर्न अस्ति ।	***		अट कोशभ मि	••	
क्षित्र । अक्	***	ეგ'	কুবি শ্বকা পুভা ১৮১	***	•
रिर्वाकात विक		6 92	কুমিকা পূজা	***	, and B
[劉] 東朝軍斗	4.14	Ø & €	भ्यात्मा पुत्रा भ्यातामा सम्बद्धाः	***	8
नामि नाम र क्य		,	व्यक्ते। श्रेक्ट ८५ वी		*** e
াধ্য কি বাছিনি	F • •	5 % to	क्ष्र्तिक्ष्यानि विकि	***	*** 8
ৰিছে বাঙৰ			वारतम्बद्धाः वार्षः	€ + =	. 3
कि रका दिक्षि	·	**** *********************************			*** 8
gen caren.		, ,	add Alex 1 March 1 March 1 March 1		, dit (\$)
कि गीया विश्वास	,		1 27		*** \$
* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	***		ाञ्चरवर्गाम् क्राज्यम् सम्बद्धाः । विद्यासम्बद्धाः क्राज्यम् सम्बद्धाः सम्बद्धाः	† 2 a - ••• :	••- 8
भाग मीया करवा है।	Ϋ́ι ••	ত শ্ব	ाहरताच्या राज्या राज्या स्वार ात्रिका म क्षम् कथन् ।		. • • • • •
wie Pres feurm lagf au	iden overen ovas	・ の 判決	ान धार्मान मृष्टि मकन अभून	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	
किया कता दशास्त्रमास्टि	-1) 6 (4) 14	₩	्रहरू १९४८ - १९४४ - द्वार प्राप्त स्थापना द्वाराहरू १९४४ - १९४४ - द्वार स्थापना द्वाराहरू		*** A
en lacenter fente	*11*	,,, 6 S	A	•	***
कि त्यासन् कथ्ये 😤 👑	**;	18 c 19 1	THE PROPERTY AND ADDRESS OF THE PARTY OF THE		\$ \$
में न में का कार्य	· ·			***	19. SV
विक्षं क्रीकां क्रमम			्य विरम्बा र क्या के	4.5	
SCHOOL SERVE			्र्या पुणा विकित्		i :
4517-118-64			far man frift.		
Si Islamana	,,,4/6d*	2		e * **********************************	, and the second
े विश्व जन्म र भूका व भिन्त विनासिक				out the Market	(e) (E)
P father factor	ş				
1 1-4	·	李德	THE PARTY OF THE P		
			1967 1967 1967 1967 1967 1967 1967 1967		
AND SECTION AND AND AND AND AND AND AND AND AND AN	ৰে চাৰণ কলে। নি টাই ক	4 4 2 2 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	(1) [1] 《中语》		ij
THE RESERVE AND ADDRESS OF THE PERSON ADDRESS OF THE PERSON AND ADDRESS OF THE PERSON ADDRESS OF	174	\$25 T	triffs dien ""	A STATE OF	

-	· .			+ 4	+-		
বিষয়			প্ঠা	(বিশ্ব	***	•	P
পুরুবংশ বর্ণন	1 4		4 - 645	লনামল ,	JIBON KRIBHKA DE	i» Έ	4
निटको यथ	••	•••	843	শ কল দি মছেছে।র '	84/7, Beadon Street CAI CUTTA		•
দৰ বোগহৰ ঔষধ			8¢b	গণপুৰ		• • •	4
সাদি লক্ষ্	••		., 85,	বাগ ঘবী প্ৰা		441	đ
क्रिकाम् अस्			··· 855	অঘোৰাশ্বাদি শান্তি কয়	·	. • •	
रागा ,वार्शक अयु न	1 শ্	***	85-	পাভাপ• শ:য়	***		
াধীক পোষ্ধি কখন		***	ጸንታ	ষ্ট্র খ খাখাবা র	•••	*	4
্ত সঞ্ধনীকৰ বিদ্ধু	ग । ग		. 6%4	क म नाहि	**		4
) গ্ৰ াগ ৰ		••	··· 867	জা-প্ৰাদি	*** ***	4=1	4
াছ চি কিৎসা			81.	গোৰ্মাদ পূলা	***	•••	4
গ্ৰধাহন সাব			. 845		4+4 ,,	,.,	4
ম ৰ চি ^ৰ কৎসং		***	8 6	চন্দ্ৰ বিঃ	***	***	4
মখশাভি গ্ৰ শাভি	•	,	• 819	ছু-ল্লোড নিকাৰণ	***		Œ
। विश्वार अंग र			ኔ ማታ	্বিখন বধন ও আছা স্ম		• • •	8
জুপরিভাষ্	•••	•••	8ba	সমরুণ নিরুণণ	6 4 1 1-1		4
া ^{গ্ৰ} মণ ব া ভূজি লণক	s		85.5	গুরুর নির্পণ	***	***	2
।থণণম বং স্থলণাক ই চিকৎসা	-		9 4	শিকা নিক্পৰ			ď
	•	•	869	कादा नि शक्त	113	4**	\$
ব্যহ্যক মাজীব্ধ সংস্কৃত স্থিতি স্থ	••	•••		কাৰ্যাৰ প্ৰত নাট্ৰ নিৱপ্ৰ	***		
গান্ধা দ চি।কং ধা	**	***	8bb		127	**	•
লিগাংচাংক কাশতেজ	,	•••	81 a	শৃসাধাদি হস নিরূপণ	***	***	Œ
। ৹জ্বস স্থাবি	**	***	8>>	রীতি নিরূপণ	***	***	4
र्वाएक्व	***	***	850	ন্ত্যাদিতে অঙ্গকর্ণা নির	[99 · · ·	4**	ċ
নেম্ম	p 4 1	4,4	868 ***	অভিনয়াদিনিরপণ	4	***	e
ক্লেক্টেন	***	•	#11 82¢	শক্ষাদি নিরূপণ ও শক।	বিশ্ব :	4	•
ঞ্জের।দি পূজা মত্র	144	**4	4 854	সক্তেভিজ বৃদ্ধ	way pop	***	đ
কেপকাশ বিকুনঃম	***	***	ا عاد 8	क्टेरन रचे रस	*** ,	•••	4
ায়সিংহ মল	1 144 1	• * *	855	ক্ৰালয়ায়	*#1 **	424	a 1
হলোকা মেহিশ শঙ্ক	2	200	AND THE MEDICAL	मक् रिर्श् ल्का द्व	140	141	Œ
অংশাকা মোহনী লক	विषि पृथा	***		काषा छन विषय	se Ass	•	¢
রিভা পূকা	4.	***	merce	क्षकानमा क्षिप्रच 🗝 हु।	righter 4	***	2
विका महानि	***	9,64	*** ***	WATER HE CHAD! 1988	तं व विश्वतिक श्रेत्राम	***	à
রিভাষ্ক ময়াদি	***	*#*	4.4	\$31 \$ \$4	\$90 vo	***	¢ ş
রিঙাবিলা 🤲	» دوي	***	m 409	প্ৰাইশ	444 441	***	4
না মন্ত	##	••	#** 6 * >	गक्ति जिस्हाल	heb did	***	48
রিভারান প		190	৫>+	ত্প্ৰিভজি দিছৰণ	### 144	••	à
ভেনাদি শত 🤞	4	***	435	স্ত্ৰীবিক বিষয়প		1.4	ek

অমিপুরাবের স্থাচপত্ত।

- विषय			•	781	বিষয়				न हे
ন্তুংসক বিভরণ বিভ্রম	171	•••	***	à	ষম নিয়ম	•••	•••	1.,	4 9
কার ক	***		•••	££ ·3	মাৰন আগ্যাম		***	•••	ė
স্মাপ	***	•••	***	448	गाम	,	***		et
কৰি ভ			***	444	धात्रगः			• • •	€ b
डेनामि निषत्रभ	***	***	•••	***	नगरि	•••	•••	• • •	¢ i
তিও বিভাস্থ নিমন্ত্ৰণ			•••	669	ব্দকাৰ	•••	***	•••	41
ছ ৎ সিদ্ধর্মণ	4 6'4	***	•••	447	একজান	• • •	***	•••	¢۱
খৰ্গপান্তালাদিৰৰ্গ	**1	r. p	***	426	অহৈত একজান		***	***	¢
मराव दर्ग	***	•••	•••	6.05	গীতাসৰে	• • •	•••		¢
गमार्थ वर्ष	***	•••	***	t + g	ৰম গীতা		***		2
्ति यहमोदशापि वर्ग	***	•••		4 24	আংগের পুরাণের মহোত্ম।		***	•••	¢
वृज्ञ भक्ष ि हेर्नु छ वर्ग	***		***	6 %	পনিষ্টি অন্নিপুরাণ সংখ	ৰি		•••	¢
হমাবৰ্গ	***	• • •	•••	(+)	জগং স্টি	•••	•••	• • • •	e
দএ বিট শুদ্ৰ বৰ্গ	4+1	•••	***	•	এছা র উৎপ ক্তি বিবর ণ	+++	***	4	4
নাৰাজ নাম লিজ	***		•••	€13	স্ট প্ৰকাণ	•••	•••	•••	4
নিভা নৈমি ভিত আ কু:	श न्	• • • •	. **	4 9≷	ৰশিষ্ঠের মিজাবকণ পুত্রস্ব	क्षत	***	***	•
নাড্যাক্তিক প্ৰশান গৰ্ডো	ৎপঞ্জি নিক্লপুণ		,	e 10	হাৰ্কভেয়োপাথান	•••	•••	•••	•
नंदीशयस्य	***	414	*11	498	পরিশিষ্ট সম্পূর্ণ	•••	1++	• • •	•
নরক নিজপণ	•••			676					

শ্মিপুরাণের সূচিপত্ত সম্পূর্ণ।

অথিপুরাণা

প্রথম অধ্যায়।

নমো ভগবতে বাস্থদেবায়।

দেবী সরস্বতী, লক্ষ্মী, গোরী, গণপতি, কার্ত্তি-কেয়, পিনাকপাণি, ভ্রহ্মা, ইন্দ্রাদি দেবগণ ও বাস্তদেবকে নমস্পার।

কোন সময়ে নৈমিধারণ্যে * শৌনক প্রস্থৃতি ঋষিগণ দীর্ঘদত্রের বিজনুষ্ঠান করিয়াছিলেন।

কবিয় প্রাণে লিগিত আছে যে, ভগবান্দানববংশ ধ্বংস কবিয়া গৌরমুখনামা ঋষিকে বলিয়াছিলেন যে, আমি এই ভানে নিমেষমধ্যে দৈতাকুল বিনিশ্ত কবিলাম, অভএব অদ্যান্ বধি এই ভানে নৈমিষার্ল্য বলিয়া প্রসিদ্ধ হইবে।

বাযুপুরাণে বর্ণিত আছে যে, ভগবান্, দিবাকরের স্থায়
প্রভাশালী মনোহর চক্র প্রজন করিয়া তাহা চালাইয়া দিয়া
বলিলেন যে, এই চক্রের নেমি অর্থাপুর্কান্তভাগ যে স্থানে শীর্ণ
হইবে, সেই স্থানই ওপশ্চরণের উপ্যুক্ত। পরে ছিজগণ ঐ
চক্রের পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রধাবিত হইলেন। যে স্থানে চক্র শীর্ণ
ইইল, তথায় ওপস্থা করিতে লাগিলেন, এই জন্মই ঐ স্থান
নৈমিবারণ্য নামে বিখ্যাত হইল; কিন্তু এইরূপ অর্থ করিলে
নৈমিবারণ্য শংক শশাহিট্রে।

† নে যজে বহুস থাক বাজিকে দান করা যায়, যে যজ নিশ্পাদিত করিতে বহুসংখ্যক ঋষিব প্রয়োজন এইং যে যজে বহুস পাক প্রাণী তুপ্তি লাভ কবে, তাহারই নাম সঞ্জ।

া পুনানে সর্গা, প্রতিসর্গা, বংশা, মধস্তর ও বংশাস্ক্রনিত এই পঞ্চবিষয় পাকে। এই প্রিটীট পুরাবের লক্ষণ। সর্গ শব্দে স্থান্তি অব্যাহ্য মহন্তব্য, অহন্ধান্তব্য, পঞ্চত্মাত্র, জ্ঞানেক্রিয়া, ক্রানেন্দ্রিয়া ও আকাশাদি পঞ্চতের উৎপত্তি। প্রতিসর্গ ক্রাণ ইত্যবদরে পুরাণবিং ! সূতবংশীয় উগ্রপ্রবাণ তীর্থ-যাত্রাপ্রসঙ্গে তথায় সমাগত হইলে মহর্ষিরা তাঁহার স্বাগত জিজ্ঞাসা পূর্বক কহিলেন, হে সূত ! তুমি আমাদিগের সম্মানের পাত্র ; যাহা হউক, **হাঁহা**র তত্ত্ব অবগত হইতে পারিলে সর্বাজ্ঞত্ব লাভ হয়, তাদৃশ সারাৎসার পরম পদার্থ কি ? এই বিষয় বর্ণন করিয়া আমাদিগের কোতূহল পরিপূর্ণ কর ।

সূত কহিলেন, হে ঋষিগণ! যিনি সৃষ্টি, স্থিতি ও প্রলায়ের একমাত্র কারণ, সেই ভূতভাবন ভগবান্ বিষ্ণুই সারাৎসার পদার্থ। "সেই বিষ্ণু এবং প্রলায়। কোন কোন মতে ঈশ্বর কর্ত্তক মহদাদি সৃষ্টির নাম স্থা এবং একাদি কর্ত্তক দেবসমূহ্যাদি সৃষ্টির নাম প্রতিস্থা। বংশ অর্থাৎ স্থাবংশ চন্দ্রবংশ প্রভৃতি। মহন্তর অর্থাৎ মন্দ্রাধি ব্যক্তিগণের জীবনচ্বিত।

শ মাজবন্ধ্য কহিন্ধাছেন যে, ক্ষান্তিৰৰ উবসে বিপ্ৰপত্নিব গতে ক্তজাতিৰ উৎপত্তি হয়। কিন্তু ৰাষ্প্ৰগণে লিপিও আছে যে, বেশনক্ষন পৃথু রাজার যজে অবপতির আহ্বনীয় ছতে। সহিত বৃহস্পতির ছত সংমিশ্রিত হটয়া বশসকর ক্তলাতিব উৎপত্তিহয়।

উগ্রহা— যিনি নৃসিংছভাপনীযোপনিষৎ প্রভিপাদ্য বর্ধ প্রবণ করিয়াছেন অর্থাৎ যিনি উপনিষ্দের বহস্তবেভা, ভাঁহা কেই উগ্রহার কছে। আমি উভাইে ব্রহ্মস্বরূপ" এইরপ জ্ঞান জিমিলেই দর্শবিজ্ঞান লাভ হয়। অথবিবেদে কথিত আছে যে, ব্রহ্ম নুই প্রকার; শব্দব্রহ্ম ও পরব্রহ্ম এবং বিদ্যাও ছিবিধ; পরা ও অপরা। কোন সময়ে আমি শুক ও অভাতা তাপদগণ সমভিব্যাহারে বদরিকাশ্রমে উপনীত ইয়া দর্শবিজনবন্দনীয় মহামুনি ছিপায়নকে প্রণামপূর্বক দারতত্ত্ব জিজ্ঞাদা করিয়াছিলাম। তিনি আমার প্রশ্ন শ্রেবিগ্রহারে বশিষ্টের নিকট গ্রন করিয়া ব্রহ্মান্দির্বাহারে বশিষ্টের নিকট গ্রন করিয়া ব্রহ্মান্দির্বাহারে বশিষ্টের নিকট গ্রন করিয়া ব্রহ্মান্দির্বাহারে বশিষ্টের নিকট গ্রন করিয়া ব্রহ্মান্দির করিয়াছিলেন, তাহা যথাবং বর্ণন করিতেছি, তুমি, শুক ও অত্যাত্ত সকলে অবহিত্তিত আকর্ণন করে।

বশিষ্ঠ কহিয়াজিলেন, হে ব্যাস! দ্বিবিধ ব্রেক্ষার বিষয় বর্ণন করিতেজি, ভাবণ কর। প্রাকালে আমি মুনিবর্গ ও দেবগণ সমভিব্যাহারে অগ্নিস্কাশে গমন-পূর্বক জিজ্ঞাসা করাতে তিনি কহিয়াছিলেন যে, ব্রুক্ষ ভূই প্রকার; শব্দব্রক্ষ ও পরব্রক্ষা। ব্রক্ষবিদ্যা-স্বরূপ অক্ষর ও বেদার্থানুগত অগ্নিপ্রাণ শব্দব্রক্ষা ও কালাগ্নিরূপী জ্যোতি:স্ক্রপ বিষ্ণুই পরব্রক্ষা বলিয়া অভিহিত। এই ব্রক্ষান্মত অগ্নিপ্রোক্ত দিব্য পুরাণ ভাষণ করিলে ভুক্তি, মুক্তি ও পরম্ মুখ নাভ হইয়া থাকে। ক্ষ

বশিষ্ঠ কহিলেন, হে ভগবন্! যাহা সংসার রূপ মহামাগর উতীর্ণ হইবার একমাত তর্ণী- ; স্বরূপ, সেই অক্ষোগর ও যাহা বিদ্যাসার বলিয়া ; প্রিগণিত, যাহা অনগত হইলে স্বজ্ঞ লাভ হয়, ;

়ি ৮ কোন এখনে মতে সংগ্ৰাণ প্ৰথক বলিয়া বণিত, ্বিভাতাহাযুক্তিসজ্ভ বলিয়া বোধ হয় নাঃ তাহা পরিজ্ঞাত হইতে অভিলাষ করি, আপনি উহা কীর্ত্তন করুন।

অগ্নি কহিলেন, হে তপোনিধে ৷ আমি তোমার নিকট বিদ্যাদার বিষয় বর্ণন করিতেছি শ্রেবণ কর। মৎশুকুর্মাদিরপধারী কালাগ্রিরুদ্ররূপী ব্রন্দেশর এবং পুরাণ বিদ্যাদার বলিয়া কীর্ত্তিত। विनता चिविध ; भन्ना ও अभन्ना। भूनारा मर्ग, প্রতিস্প, বংশ, মর্ভর, বংশাকুচরিত, সাঙ্গোপাঞ্চ त्वष्ठ इन्हेंग्र, भिका, कब्र, व्याकत्व, विकन्छ, জ্যোতিষ, ছন্দ, অভিধান, মীমাংসা, ধর্মশাস্ত্র, ভার, বৈদ্যশাস্ত্র,ধকুর্বেদ, অর্থশাস্ত্র প্রভৃতি সমস্তই বর্ণিত আছে। ইহাকেই অপরাবিদ্যা কহে, আর যাহা দারা অদৃশ্য অগ্রাহ্ ও নিরাকার ওক্ষের তত্ত্ব পরিজ্ঞাত হওয়া যায় তাহাই পরাবিদ্যা বলিয়া বর্ণিত। পূর্ব্যকালে এই সমস্ত বিষয় ও ভগবানের মৎস্থাদিরূপ ধারণের কারণ দেবদেব বিষ্ণু আমার নিকট এবং কমল্যোনি ত্রন্ধা দেবগণের নিকট বেরূপ কীর্ত্তন করিয়াছিলেন, আমিও তদ্ধপ তোমার নিকট বর্ণন করিব।

> ইত্যাদিমহাপুনাণে আগ্নেয়ে প্রন্ন নামক প্রথম অধ্যায় সমপ্ত।

দ্বিতীয় অধ্যায়।

বশিষ্ঠ কহিলেন, হে অগ্নে! আপনি পূর্বের নারায়ণ-দ্মাপে স্থান্ত স্থিতি ও সংহারের একমাত্র কারণ ভগবানের মৎস্থাদিরূপ ধারণ ও আগ্নেয় পুরাণ যেরূপ প্রবণ করিয়াছেন, তাহা দ্বিস্থার কীর্ত্তন কর্মন।

অগ্নি কহিলেন, হে বশিষ্ঠ ! ভগবান্ হরি তুক্ট ু গণের দমন ও শিফাগণের পালনের জন্ম যে যে 🍦 রূপে মৎস্থাদি অবতার পরিগ্রহ করিয়াছিলেন, তাহা কহিতেছি, শ্রুবণ কর।

অভীত কল্লাবদানে জন্মার নৈমিভিক # লয় হইলে ভূ প্রভৃতি যাবতীয় লোক সাগরজলে সংগ্লাবিত হইয়াছিল। তৎকালে বৈবস্বত মনু ভুক্তি ও মুক্তি লাভের আশার চুশ্চর তপোনুষ্ঠানে নিরত ছিলেন। একদা তিনি পুণ্যসলিলা কুত-মালার গ্নন্ধ্বক জলত্পণ ক্রিতেছেন, ইত্যব-সরে তর্পণবারির দহিত একটি স্বল্লকায় মৎস্থ তাহার অঞ্জলিমধ্যে সমুৎপতিত হইল। তিনি তাহাকে দলিলগর্ভে নিক্ষিপ্ত করিবার উপ-ক্রম করিলে মংস্টা তাঁহাকে সম্বোধন করিয়া বলিল, হে রাজন্! আমাকে নিক্ষেপ করিও না. আমি গ্রাহাদি জলজন্তু হইতে যার পর নাই ভীত হইতেছি। মনু এই কথা শ্রবণ করিয়া তাহাকে একটি কলসমধ্যে নিক্ষেপ করিলেন। মৎস্ত তন্মধ্যে সংবদ্ধিত হইয়া পুনরায় কহিল, হে রাজন্! আমাকে *অপেক্ষাকৃত বিস্তৃত স্থান প্রদান* কর। মনু তাহাই করিলেন, কিন্তু মৎস্থ তথাধ্যে আরও পরিবর্দ্ধিত হ'ইয়া উঠিল এবং মন্তুকে সম্বোধন করিয়া কহিল, হে মনো! এ স্বল্ল জলাশয়ে অব-স্থান করা আমার পক্ষে অতীব অহ্থাবহ হই-তেছে, অতএব আমাকে এতদপেকা বৃহৎ স্থান প্রদান কর । তখন মন্তু তাহাকে একটি সরোবর-মধ্যে নিকিপ্ত করিলেন, কিন্তু মৎস্য তন্মধ্যেও এতদুর পরিবর্দ্ধিত হইয়া উঠিল যে, সরোবরমধ্যে তাহার অঙ্গচালনা হয় না। তথন দে মন্তুকে সম্বোধন করিয়া কহিল, হে রাজন্! আমাকে রুহৎ স্থান প্রদান কর। তাহার এই বাক্য শ্রবণ করিয়া

 ব্রহার নিক্পিত এক দিবদাতে গে প্রল্য হয়, তাহাকে নৈমিতিক লয় কছে। মন্তু তাহাকে জলধিগর্ভে নিক্ষিপ্ত করিলেন।
মৎস্য জলমধ্যে নিপাতিত হইয়া ক্ষণকালমধ্যেই
লক্ষ্যোজন-বিন্তীর্ণ দেহ ধারণ করিল। মনু মৎ-স্থের সেই অত্যন্তুত আরুতি সন্দর্শনপূর্বক বিশ্বিত হইয়া কহিলেন, হে ভগবন্। আপনি কে ? আপনি দেবদেব নারায়ণ সন্দেহ নাই; আপনাকে নম-স্কার। হে জনার্দন! আমাকে কেন মায়াজালে বিমোহিত করিতেছেন ?

মীনরূপী ভগবান, মন্তু কর্তৃক এইরূপ অভিহিত্ত হইয়া কহিলেন, "হে রাজন্! আমি হুইগণের দমন ও সাধুজনের সংরক্ষণার্থ মৎস্তরূপে অবতীর্ণ হইয়াছি। অদ্য হইতে সপ্তম দিবসে এই নিথিল জগৎ সাগরজলে সংপ্লাবিত হইবে, সেই সময়ে একখানি নোকা তোমার নিকট সমুপন্থিত হইলে তুমি তহুপরি জীবগণের বীজ সমারোপিত করত † সপ্রমিগণপ্রিয়ত হইয়া এক ব্রাহ্মী নিশা ‡ অভি- বাহিত করিবে। তদনন্তর আমি সমুপন্থিত হইব, তখন সেই নোকাখানিকে নাগপাশ্বারা আমার শৃঙ্গে বন্ধন করিয়া দিও।" ভগবান্ মীনরূপী জনার্দন এই বলিয়াই তিরোহিত হইলেন, মনুও তদীয় আদেশাকুসারে সময় প্রতীক্ষা করিয়া রহিলেন।

অনন্তর যথাসময়ে সমুদ্র সমুদ্ধেল হইলে এক-থানি নৌকা সমুপাগত হইল; মনু তত্তপরি সমা-রুঢ় হইয়া এক ব্রাহ্মী নিশা অতিবাহিত করি-লেন। পরিশেষে একশৃঙ্গধারী নিযুত্যোজন-বিস্তৃত কাঞ্চনময় একটা মংস্থ সমাগত হইল। মনু

[া] ইহার তাংশগা এই যে, প্রতি জীবের এক একটা দম্পতী সমাব্যেপিত কবিৰে।

[‡] চাবি সংঅযুগে একার এক দিন, এই এক দিনে এক কয়।

নৌকাথানি তাহার শৃঙ্গে বন্ধন করিয়া বিবিধরণে স্তব করিলেন। সেই মৎস্তারপী জনার্দনই মন্থ-দ্যাপে সর্কাপাপনাশন মৎস্তাপরাণ কীর্ত্তন করেন। অনতর তিনি বেদমার্গোচ্ছেদক হয়গ্রীবনামা দানবকে নিহত করিয়া বেদমন্ত্রাদি সংরক্ষণ করি-লেন। সেই দেবদেব হরিই পরিশেষে বারাহকল্লে কৃশারূপে অবতীর্ণ হন।

ইত্যাদিনহাপুরাণে আগ্রেয়ে সংস্থাবভারবর্ণন নামক দিতীয় অধ্যায় সমাধু।

ভূতীয় অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, অধুনা ভগবানের কূর্মাবতার-বিষয় কার্ত্তন করিতেছি, প্রবণ কর; ইহা প্রবণ করিলে যাবতীয় পাপরাশি বিদূরিত হইয়া থাকে।

পুরাকালে স্তরাহ্মরসংগ্রামসময়ে দেবগণ দানব-দিগের নিকট পরাজিত ও মহামুনি ছুর্কাদার অভিশাপে বিগতঞী হইয়া ক্ষীরসাগরশায়ী ভগবান্ নারায়ণনকাশে গমনপূর্ব্বক কহিলেন, হে প্রভো! আমরা দানবগণ কর্তৃক যার পর নাই প্রপীড়িড হইয়াছি, আমাদিগকে তাহাদিগের হস্ত হইতে পরিত্রাণ করুন। তথন হরি ব্রহ্মাদি স্থরগণকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, হে দেবগণ! তোমরা অন্তর্নিগের সহিত সন্ধি সংস্থাপন কর, তাহা হইলে তাহাদিগের সহিত সমবেত হইয়া অয়ত ও শ্রীলাভার্থ ক্ষীরোদধি মন্থন করিতে পারিবে। এইরূপে অরিকুলের সহিত দন্ধিবন্ধনপূর্বক কার্য্য স্ত্ৰসাধিত হইলে আমি তোমাদিগকে অমৃত ভোজন করাইব, কিন্তু দানবদিগকে প্রদান করিব না। তোমরা অমৃত পানপর্কক অমর্ভ লাভ করিয়া অনায়াদে শত্রুগণকে পরাভূত করিতে পারিবে।

অতএব তোমরা মন্দরগিরিকে মন্থনদণ্ড ও নাগ-রাজ বাস্থিকিকে মন্থনরজ্জু করিয়া অতব্দিতভাবে সাগরমন্থনে প্রবৃত্ত হও, আমিও তোমাদিগের সহায়তা সম্পাদন করিব।

দেবগণ বিষ্ণুর আদেশ শ্রবণপূর্ব্বক দৈত্যগণের সহিত মিলিত হইয়া ক্ষীরসাগর মন্থন করিতে আরম্ভ করিলেন। তাঁহারা বাস্ত্রির মুখবিনিঃস্ত বিষানলে অভিসন্তপ্ত হইলে ভগবান্ হরি তাঁহা-দিগের শান্তিবিধান করিতে লাগিলেন।এই প্রকারে স্পর্মুক্তন স্মার্ক হুইলে মুন্দর্গিরি নির্বল্ভন হইয়া সলিলমধ্যে প্রবিষ্ট হইতে লাগিল। তদ-র্শনে বিষ্ণু কুর্মারূপ ধারণপূর্বকে পুষ্ঠোপরি মন্দর ভূধরকে ধারণ করিলেন। অনন্তর মথ্যমান ক্ষীরো-দধি হইতে হলাহল বিষরাশি সমুৎপন্ন হইল। তখন দেবদেব শঙ্কর তাহা কণ্ঠে ধারণ করিলেন. এই জন্মই তিনি নীলকণ্ঠ নামে প্রসিদ্ধ হইয়া-ছেন। তৎপরে বারুণী, পারিজাত তরু, কৌস্তভ-মণি ও অপ্দরোগণ সমুখিত হইল। অনন্তর দিব্য-রূপিণী দেবী লক্ষ্মী সমুখিত হইয়া হরির আশ্রয় গ্রহণ করিলেন; দেবতারা তাঁহাকে সন্দর্শন ও তাঁহার স্তব পাঠ করিয়া পূর্ববৎ জ্রীসম্পন্ন হইয়া উঠিলেন। অবশেষে বিষ্ণুর অংশভূত আয়ুর্কেদ-প্রবর্ত্তক ধশ্বন্তরি অমৃতপূর্ণ কমগুলু করে লইয়া সাগরগর্ভ **হইতে সমুখিত হইলেন। অস্তরগণ অমনি** তাহার হস্ত হইতে সেই কমগুলু গ্রহণপূর্বকে দেব-গণকে অদ্বাংশ প্রদান না করিয়াই পলায়ন করিতে আরম্ভ করিল। তদ্দর্শনে বিষ্ণু মনোমোহিনী রমণীরূপ পরিগ্রহ করিলেন। ভাঁহার অনুপ্র রূপলাবণ্য সন্দর্শনে দানবদিগের চিত্ত বিমোহিত হইয়া গেল। তাহারা রমণীকে সংঘোধন করিয়া কহিল, হে বরাননে! তুমি আনাদিগের ভার্য্যা

হইয়া আমাদিগকে এই অমৃত বণ্টন করিয়া দেও। তথ্য হরি " তথাস্তা " বলিয়া অমৃত গ্রহণপূর্বক দেবগণকে ভোজন করাইলেন, কিন্তু অস্তরদিগকে প্রদান করিলেন না। ভোজনসময়ে রাহুনামা অন্তর চন্দ্ররূপ ধারণপূর্বক অমৃত পান করিতেছিল, দিনমণি ও নিশানাথ জানিতে পারিয়া তাহা হরি-যকাশে প্রকাশিত করিলেন। অমনি ভগবান বিষ্ণুও চক্রদারা রাহুর মৃত্তক ছিম করিয়া ফেলি-লেন। রাহু অমৃত পান করাতে অমরত্ব প্রাপ্ত হইশাছিল, স্তরাং ছিন্নশিরা হইয়াও গতাস্থ হইল না। ছিন্ন মস্তক বরপ্রদ হরিকে সম্বোধন করিয়া কহিল, হে ভগবন্! আপনার রূপাতেই আমি অমর হইলাম, অধুনা ভবৎসকাশে আমার এই মাত্র প্রার্থনা যে, আমি যেন গ্রহমধ্যে পরিগণিত হই এবং আমি মধ্যে মধ্যে চন্দ্ৰ দূৰ্য্যকে গ্ৰাদ করিন, উহাই গ্রহণ বলিয়া প্রসিদ্ধ হইবে। গ্রহণ-সময়ে যাহা কিছু দান করা হইবে, তাহা যেন অফর হয়। রাহ্ এইরূপ প্রার্থনা করিলে ভগ-বান্ হরি তথাস্ত বাক্যে বরপ্রদানপূর্বক জ্রীরূপ পরিত্যাগ করিলেন। যাবতীয় দেবগণও তাঁহার সেই বাক্যে অনুমোদন করিয়াছিলেন।

অনন্তর ভগবান্ পিনাকপাণি, ছরিকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, ছে বিষ্ণো! আমি তোমার মহিলারপ সন্দর্শনে অভিলাষী হইয়াছি। হরিও তচ্ছুবণে অমনি মোহনীয় মোহিনীরূপ পরিগ্রহ করিলেন। তদীয় অমুপম শ্রী ও রূপলাবণ্য সন্দর্শন করিয়া শঙ্করের চিত্ত বিমোহিত হইয়া উঠিল। তিনি সেই কামিনীকে গোরীবোধে তৎসহবাসে অভিলাষী হইলেন এবং নগ্ন ও উন্মত্ত হইয়া রমন্দরি কেশপাশ ধারণ করিলেন। তথন রম্মী কেশ বিমোচনপুর্বক পলায়নপ্রায়ণ হইলে রুদ্রদেবও তৎপশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রধাবিত হইলেন। গমনদময়ে যে যে স্থানে মহাদেবের বীর্য্য নিপতিত
হইয়াছিল, দেই দেই স্থানেই এক একটা কনকময় শিবলিঙ্গ সমুদ্ধৃত হইয়াছে, দেই সেই স্থানই
পরম পুণ্যক্ষেত্র বলিয়া পরিকীর্ত্তিত। অনস্তর
পশুপতি দেই কামিনীকে মায়া জ্ঞান করিয়া
স্বাস্থ্যভাব অবলম্বন করিলে হরি তাঁহাকে সম্থোধন করিয়া কহিলেন, হে রুদ্র ভূমিই আমার
মায়া জয় করিলে, একমাত্র ভূমি ব্যতিরেকে
জগতীতলে আর কোন পুরুষই মদীয় মায়া জয়ে
সমর্থনিতে।

এদিকে দৈত্যগণ অমৃতলাভে বঞ্চিত হ্ইলে দেবতারা তাহাদিগকে সংগ্রামে পরাভূত করিয়া পরমস্থথে ত্রিদিবধামে অবস্থিতি করিতে লাগি-লেম।

যে ব্যক্তি ভক্তিপৃত্যনে একাগ্রহ্নয়ে এই অধ্যায় অধ্যয়ন করেন, তিনি ইহলোকে প্রম স্থসস্থোগপূর্বক অন্তিনে জ্রধানে প্রস্থিত । ইইবেন, সন্দেহ নাই।

> ইত্যাদিমহাপ্র গণে আধ্যেষ কৃদ্মাব্তার নামক ভূতীয় অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুৰ্থ অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, হে ত্রহ্মন্ ! অধুনা সর্ব্বপাপপ্রণাশন বরাহাবতার কীর্ত্তন করিতেছি, জ্রবন
কর। পূর্বকালে অস্ত্রাধিপতি হিরণ্যাক্ষ দেবগণকে পরাজিত করিয়া স্তরপুরে অবস্থিতি করিতেছিল। তখন দেবগণ সমবেত হইয়া বিষ্ণুসমীপে
গমনপূর্বক নানাবিধ স্তব করিয়া পরিত্রাণ লাভার্থ
সহায়তা প্রার্থনা করিলে ভগবান্ও যজ্ঞবরাহরূপ

ধারণপূর্বক দেই তুরাত্মা দানবাধীশর ও তদীয় অনুচরবর্গকে নিহত করিয়া দেবগণের রক্ষাবিধান করিলেন, তৎপরেই বরাহমূর্ত্তি তিরোহিত হইল।

অনন্তর হিরণ্যাক্ষের ভাতা হিরণ্যকশিপুও সেইরূপ দেবগণের যজ্ঞভাগ হরণ ও তাঁহাদিগের আধিপত্য গ্রহণপূর্বক একান্ত স্থানিত হইয়া উঠিলে সর্বানিয়ন্তা বিফু নারদিংহ বপু ধারণপূর্বক দেবগণ সহ মিলিত হইয়া তাহাকে নিহত করিলেন। তথন স্বরগণও স্ব স্থ পদে পুনংপ্রতিষ্ঠিত হইয়া নরদিংহরূপী হরির স্থব করিতে লাগিলেন।

উগ্রভাবা কহিলেন, হে বিপ্রগণ ! পুর্বের দেবা-স্রসংগ্রামদময়ে বলি প্রভৃতি অস্থরগণ কর্তৃকও দেবতারা পরাভূত ও স্বর্গভ্রম্ট হইয়া হরির শরণা-পদ হইয়াছিলেন। ঐ সময়ে আদিতি ও কশ্যপত বহুবিধরূপে হরির তব করেন। তখন ভগবান্ দেবগণকে অভয় প্রদান করিয়া বামনরূপে অদি-তির গর্ভে জন্ম পরিএহ করিলেন। তিনি বামন রূপে অবতার্ণ হইয়া বলির যজ্ঞ হলে গমন করি-লেম। ভাঁহাকে বেদপাঠ করিতে করিতে রাজ-দারে সমুপাগত দেখিয়া সকলের বিস্মায়ের পরি-সীমা রহিল না। তাঁহাকে নেত্রগোচর করিয়া বলির অন্তরে কিঞ্ছিৎ দান করিবার অভিলাষ হইল। নরপতির অভিপ্রায় বৃথিতে পারিয়া দৈত্য-७ङ ७ङाठाघाँ वङ्विधङ्गाल निरुष्ध क्रिलन. কিন্তু বলি গুরুবাক্য উল্লক্ত্যনপূর্বক বামনকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, হে বিপ্র ! আপনি যাহা অভিলাষ করেন, প্রার্থনা করুন, আমি আপনাকে তাহাই প্রদান করিব। বলি এইরূপ প্রতিজ্ঞা করিলে বামন কহিলেন, হে রাজন্! আমি ত্রিপাদভূমিমাত্র প্রার্থনা করি, আমার আর কিছু-মাত্র প্রার্থনীয় নাই। তথন বলি তথাস্ত বলিয়া

হত্তে জলগ্রহণ করিবামাত্র বামন অবামন রূপ ধারণ করিয়া একপদে ভূলোক, দ্বিতীয় পদে ভূবলোক ও ভৃতীয় পদ দ্বারা স্বলোক আক্রমণ করিলেন। অবশেষে তিনি বলির প্রতি রূপা-পরবশ হৃইয়া তাহাকে ত্রিভূবনের ইক্রত্বপদ প্রদান করিয়াছিলেন।

অগ্নি কহিলেন, হে এক্সন্ ! অধুনা পরশুরামের অবতার বর্ণন করিতেছি, প্রবণ কর।

কোন সময়ে ক্ষত্ৰিয়গণ একান্ত উদ্ধত হইলে দেববিপ্রাদিপ্রতিপালক হরি ভূভার-হরণার্থ জমদ-গ্নির ঔরসে রেণুকার গর্ভে পরশুরামরূপে অবতীর্ণ হন। জমদগ্রিনন্দন সর্কাশান্ত্রে ও নিখিল শস্ত্রবিদ্যায় পারদর্শী হইয়াছিলেন। ঐ সময়ে নরপতি কার্ভ-বীৰ্য্য দ্ভাত্তেয় প্ৰসাদে সহজ্ৰ বাহু লাভ পূৰ্ব্বক প্রবলপরাক্রান্ত হইয়া নিখিল বস্তমরার আধিপত্য লাভ করিয়াছিলেন। একদা তিনি মুগরার্থ অরণ্য-মধ্যে পর্য্যান করিতে করিতে একান্ত শ্রান্ত হইয়া উঠিলেন। তথন মহর্ষি জমদগ্রি তাঁহাকে নিমন্ত্রিত করিয়া স্বীয় আশ্রমে আনয়নপূর্ব্বক পরিতোষরূপে ভোজন করাইলেন। তপোনিধি কামধেতুপ্রভাবে যাবতীয় আহারদ্রব্য সংগ্রহ করিয়া মহাপতি ও তদীয় দৈল্যসামভাদগকে সমর্পণ করিলেন। কাম-ধেমুর অত্যদ্ভুত কার্য্যকলাপ সন্দর্শনে নরপতি মহর্ষির নিকট তাহাকে গ্রহণ করিবার প্রার্থনা করিলেন, কিন্তু জমদগ্রি ধেকুপ্রদানে অসম্মত হও-য়াতে কার্ত্তবার্য্য বলপুর্ব্যক হরণ করিয়া লইয়া চলিলেন; স্বতরাং খোরতর সংগ্রাম সংঘটিত ছইল। সেই যুদ্ধে পরভারাম পরভারানর-পতির শিরশ্ছেদ করিয়া কামধেমুকে স্বীয় আশ্রমে প্রত্যানয়ন করিলেন। অনন্তর জামদগ্র অরণ্যে প্রস্থান করিলে কার্ন্তবীর্য্যনন্দনেরা পূর্ববৈর স্মরণ-

পূর্ববিক জমদন্লির প্রাণবিনাশ করেন। অবশেষে পরশুরাম আশুমে প্রত্যাগত হইয়া পিতার নিধনবার্ত্তা শুবণে জোধে অভিভূত হইয়া উঠিলেন। তিনি সেই জোধে অধীর হইয়া একবিংশতিবার পৃথিবী নিঃক্ষত্রিয়া করিয়াছিলেন এবং ক্ষত্রিয়াণিত দ্বারা পুণ্যক্ষেত্র ক্রক্ষেত্রে পঞ্চকুণ্ড নির্মাণ করিয়া তাহাতে পিতৃতর্পণ করেন। অবশেষে কশ্যপকরে বস্তন্ধ্রা সমর্পণপূর্ববিক মহেন্দ্রা গ্রহত গমন করিয়া তপঃশাধনে নিরত হন।

অগ্নি কহিলেন, হে ব্রহ্মন্ । যে ব্যক্তি ভক্তি-পুতচিত্তে ভগবানের কৃশা, বরাহ, নৃসিংহ, বামন ও পরশুরামাবতার শুবণ করেন, অন্তিমে তাঁহার স্বর্গাতি লাভ হইয়া থাকে।

ইত্যাদিমহাপুলাণে আংগ্লেকে ব্যাহন্সিংহাদি অবতার-বৰ্ন নামক চতুৰ অধ্যায় সমাধা।

পঞ্চৰ ভ্ৰায় i

অগ্নি কহিলেন, পূর্বে দেবর্ষি নারদ বাল্মীকির নিকট যে রামায়ণ কীর্ত্তন করেন, আমি তাহা কীর্ত্তন করিতেছি, প্রবণ কর। ইহা প্রবণ করিলে স্বর্গ ও অপবর্গ লাভ হইয়া থাকে।

নারদ কহিয়াছিলেন, বিষ্ণুর মাভিকমল হইতে প্রজাপতি ব্রহ্মা সমূৎপন্ন হন। ব্রহ্মার পুত্র মরীচি। মরীচি হইতে কশ্যপ, কশ্যপ হইতে দূর্যা, দূর্যা হইতে বৈবস্থত মন্তু, মন্তু হইতে ইক্ষাকু, ইক্ষাকু হইতে ককুৎস্ব, ককুৎস্থ ইইতে রঘু, রঘু হইতে অজ এবং অজ হইতে দশরথ সমূৎপন্ন হন। অনন্তর ভগবান্ বৈকুণ্ঠনাথ হরি রাবণাদি রাক্ষ্য-দিগের বিনাশার্থ রাম, ভরত, লক্ষ্মণ ও শক্রম্মরেপে দশরথগৃহে চারি অংশে অবতীর্ণ ইইলেন। কৌশল্যার গর্ভে রাম, কৈকেয়ীর গর্ভে ভরত এবং

স্মিতার গর্ভে লক্ষণ ও শক্রত্ম জন্ম পরিএই করিলেন। মহর্ষি ঋষ্যশৃঙ্গ দশরথের পুজোৎ-পাদনার্থ পুজোষ্টি যজ্তের অনুষ্ঠান করিয়াছিলেন, সেই যজ্ঞীয় পায়দ ভোজন করিয়াই মহিষীচতুই য় গর্ভবতী হন। আত্মদদৃশ দর্বজ্ঞগোপেত পুজ্রচতুইয় প্রাপ্ত হইয়া দশরথের আনন্দের পরিসীমারহিল না।

এই প্রকারে কিয়ৎকাল অতিবাহিত হইলে একদা মহামুনি বিশ্বামিত্র দশর্থসকাশে স্মাগ্ত হইয়া যজ্ঞবিদ্ধ বিনাশার্থ রামলক্ষ্মণকে প্রার্থনা করিলে রাজাও মহর্ষির সহিত পুত্রদয়কে প্রেরণ করিলেন। পথিমধ্যে তপোনিধি, রামচন্দ্রকে বিবিধ অস্ত্রশস্ত্র প্রদান করিলেন। অনন্তর রাম তাড়কানাম্বী ঘোররূপিণী রাক্ষ্ণীকে নিহত করিয়া মারীচের প্রতি মানবান্ত্র প্রয়োগ করেন; মারীচ : সেই শরাঘাতে ব্যথিত ও বিমোহিত হইয়া ঘূর্ণায়-মান হইতে হইতে বহুদূরে সাগরপারে নিপতিত হইল। অনন্তর মহাবল দাশর্থী যক্তহন্তা স্থবা-হুকে নিহত করিয়া সিদ্ধাশ্রমনিবাসী তাপসগণের যজ্ঞবিদ্ব বিদূরিত করিলেন। অবশেষে তিনি ধর্মু-র্যজ্ঞ দন্দর্শনার্থ বিশ্বামিত্র প্রভৃতি ঋষিবর্গ ও অনুজ লক্ষণ সহ মিথিলায় উপনীত হইলেন। দ্বিজবর শতানন্দ রামদকাশে বিশ্বামিত্রের প্রভাব-বিষয় কীর্ত্তন করেন। জনকরাজা সমাগত বিশা-মিত্র ও রামলক্ষাণের যথাবিধি অভ্যর্থনা ও অতিথি-সংকার করিয়াছিলেন। পরিশেষে রাম অবলীলা-ক্রমে দেই হরধনু আকর্ষণপূর্ব্বক তাহা ভগ্ন করিয়া ফেলিলে জনক যুগপৎ বিশ্বিত ও আনন্দিত হইয়া : অবোনিসম্ভবা বীৰ্য্যশুক্ষা তনয়া সীতাকে তদীয় कद्र मञ्जूमान क्रिटलन। विवारहाष्ट्रमवमभरह দশর্থ প্রভৃতি সকলেই নিমন্ত্রিত হইয়া জনক-

পুরে সমাগত হইলেন। রাম জনকনন্দিনী জানকীকে এবং লক্ষাণ উর্দ্মিলাকে বিবাহ করিলেন। জনকের আতা কুশধ্বজের ছুইটি কন্মা ছিল; একের নাম মাগুবী, দিতীয়ের শ্রুতকীর্ত্তি। জনকের অমুজ যথাযোগ্য সম্মান ও সমাদরের সহিত মাগুবীকে ভরতের করে ও শ্রুতকীর্ত্তিকে শত্রুদ্মের হস্তে সমর্পণ করিলেন।

এইরপে পরিণয়বিধি পরিসমাপ্ত হইলে রামচন্দ্র মিথিলানাথকর্তৃক স্পৃত্তিত হইয়া বশিষ্ঠ
প্রভৃতি সকলের সহিত অযোধ্যায় যাত্রা করিলেন। পথিমধ্যে জমদিমিনন্দন মহাবীর্য্য পরশুরাম রোগবশে সমাগত হইলে ঘোরতর বিবাদ
সংঘটিত হয়, তাহাতে ভ্রুনন্দন পরাজিত হইয়া
প্রাস্থিত হইলে রামচন্দ্র অযোধ্যায় প্রস্থান করিলেন। অবশেষে ভরত লক্ষাণের সহিত মাতৃল
বুশাজিতের আলয়ে উপনীত হইলেন।

ইত্যাদিনহাপুগণে আলেরে রামায়ণে বালকাও-বর্ণনামক প্রথম অধ্যায় সমাধ্য।

যষ্ঠ অধ্যার।

নারদ কহিলেন, ভরত মাতুলালয়ে প্রস্থান করিলে রামচন্দ্র পিতৃশুশ্রুষায় নিরত হইয়া কালাতিপাত করিতে লাগিলেন।

একদা রাজা দশরথ রামচন্দ্রকে সংখাধন করিয়া কহিলেন, হে বৎদ! প্রজাগণ তোমার গুণে বশীভূত হইয়া পূর্ব্বেই তোমাকে দান্তাজ্যে অভিযক্ত করিবার কল্পনা করিয়াছে। অধুনা আমারও অভিলাষ যে, প্রভাতে তোমাকে যৌব-রাজ্যে প্রতিষ্ঠিত করিব; অতএব তুমি দীতাদহ ব্রতনিষ্ঠ ও সংযত হইয়া নিশা অভিবাহিত কর। মহীপতির এই বাক্য প্রবণ করিয়া সৃষ্টি, জয়ন্ত,

বিজয়, দিদ্ধার্থ, রাষ্ট্রবর্দ্ধন, অশোক, ধর্মপোল ও

য়মন্ত্র এই আট জন অমাত্য ও মহামুনি বশিষ্ঠও
তাহাতে অনুমোদন করিলেন। রামও পিতার
আদেশ শ্রবণপূর্বক "যে আজ্ঞা" বলিয়া জননী
কৌশল্যার নিকট সমস্ত বিজ্ঞাপিত করত দেবপূজায় নিযুক্ত হইলেন। মহীপতি অযোধ্যানাথ
রামের রাজ্যাভিষেকার্থ মন্ত্রিগণকে সামগ্রীসন্তার
সংগ্রহে অনুমতি করিয়া কৈকেয়ীসদনে প্রস্থান
করিলেন।

এদিকে কৈকেয়ীর প্রিয়্রমখী মন্থরা অযোধ্যা-পুরী সমলস্কতা দর্শনে রামাভিষেক জানিতে পারিয়া কৈকেয়ীর নিকট সমস্ত নিবেদন করিল এবং কহিল "হে কৈকেয়ি! শীঅ গাত্রোথান কর, নরপতি রামকে যৌবরাজ্যে অভিষক্ত করি-বেন, অতএব কি ভুমি, কি আমি, কি ভরত, কাহা-রও পরিত্রাণ নাই।"

রাজমহিয়ী দেবী কৈকেয়ী কুজার এই বাক্য শ্রুবণপূর্বক আনন্দভরে অঙ্গ হইতে হার উন্মোচন করিয়া সমর্পণ করিলেন এবং কহিলেন, হে সখি! ভরত আমার যেরূপ পুল্ল, রামও তদ্দপ; বিশেষ্ট্র রাজ্যলাভে অধিকারী, রাজ্যলাভে ভরভের কোনরপেই অধিকার নাই।

মন্থরা কৈকেয়ীর এই বাক্য প্রবণপূর্বক রোষভরে হার দূরে নিক্ষেপপূর্বক কহিল, হে মৃঢ়ে !
তুমি আত্মাকে, ভরতকে এবং আমাকে রাঘবের
হস্ত হইতে পরিত্রাণ কর । রাম রাজা হইলে
তাহার অবর্তমানে তদীয় পুত্রই রাজপদে প্রতিঠিত হইবে; অতএব ভরতের আর রাজ্যলাভের
কোন সন্তাবনাই রহিল না । ভরতকে একে বারেই
রাজবংশ হইতে পরিভ্রুট হইতে হইল । এক্ষণে
ইহার সন্থপায় বলিতেছি, প্রবণ কর । পূর্বে

দেবাস্থরসংগ্রামসময়ে স্থরগণ শম্বরাস্থর কর্তৃক প্রপীড়িত হইয়া নরপতির নিকট সহায়তা প্রার্থনা করিলে তিনি রজনীযোগেই গমনপূর্বক অস্থর-দিগকে পরাভৃত করিয়া দেবগণকে পরিত্রাণ করিয়াছিলেন। সেই সংগ্রামে নরনাথ কতিবিক্ষত হইলে তুমি স্বীয় বিদ্যাবলে তাঁহাকে রক্ষা করিয়া-ছিলে। তথন রাজা তোমাকে বরদ্বয় প্রদানে অঙ্গীকৃত হইলে তুমি বলিয়াছিলে যে, প্রয়োজন-মতে সময়ান্তরে গ্রহণ করিব। অতথব ইদানীং তাহার এক বরে রামের চতুর্দশ বৎসর বনবাস ও দিতীয় বরে ভরতের রাজ্যাভিষেক প্রার্থনা কর। পূর্বেব কোন সময়ে কৃজা অপরাধ করাতে রামচন্দ্র তাহার পদদয় ধারণপূর্বক আকর্ষণ করিয়াছিলেন, দেই শক্রতা স্মরণ করিয়াই মন্থরা রামচন্দ্রের বনবাস কামনা করিল।

কৈকেয়ী কুজার বাক্যে প্রোৎসাহিত হইয়া মনে মনে কার্য্যসাধনোপায় চিন্তা করিয়া ক্রোধাগারে প্রবেশপূর্বক ধরাশয্যায় শয়ন করিয়া রহিলেন।

এদিকে রাজা দশরথ দেববিপ্রাদি অর্চনা করিয়া অন্তঃপুরে প্রবেশপূর্বক দেখিলেন, কৈকেয়ী আলুলায়িতকেশে ভূশযার শ্রান রহিয়াছেন। তদ্দর্শনে ছংখিত হৃহ্যা স্কাতরে কহিলেন, হে দেবি! তুমি কি কোনরপ পীজায় কেশ প্রাপ্ত হৃইয়াছ অথবা ভয়ে তোমার চিন্ত সমুদ্রিয় হইয়াছে হু তোমার কি অভিলাষ বল। হে হুন্দরি! আমি যে রাম ব্যতিরেকে মুহূর্ত্মাত্রও জীবন ধারণ করিতে পারি না, তাঁহার শপথ করিয়া বলিতেছি, তোমার যাহা অভিলাষ, তাহাই সম্পাদত করিব। আমি সত্য করিয়া বলিতেছি, আমার বাক্য কলাচ মিথ্যা হইবার নহে।

দশরথ এইরূপ প্রতিজ্ঞা করিলে কৈকেয়ী

কহিলেন, হে নৃপতে। পূর্কে দেবাহরসংগ্রামসময়ে আপনি আমাকে ছুইটি বর প্রদান করিতে
প্রতিশ্রুত হইয়া রহিয়াছেন, অধুনা আমি তন্মধ্যে
এক বরে রামের চতুর্দশ বংসর বনবাস ও দিতীয়বরে ভরতের রাজ্যাভিষেক প্রার্থনা করি।
হে রাজন্। যদি আমার অভিলাষ পূর্ণ না করেন,
তাহা হইলে আপনার সমক্ষে বিষ পান করিয়া
দেহ বিসর্জন করিব।

রাজা দশরথ কৈকেয়ীর এই নিদারুণ বাক্য শ্রেবণ করিয়া বজ্রাহতের ক্যায় মূর্চ্ছিত হইয়া ধরা-তলে নিপতিত হইলেন এবং মুহূর্তকণ পরেই সংজ্ঞালাভপূর্বক কৈকেয়ীকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, রে পাপীয়সি! রাম তোর্কি অনিষ্ট শাধন করিয়াছেন, আমিই বা তোরু কি অপকার করিয়াছি যে, এরপ কঠোর বাক্য প্রয়োগ করি-তেছিদ্ ? হায় ! তোর্ প্রিয়সাধন করিয়া আমাকে জনসমাজে নিন্দনীয় হইতে হইবে, সন্দেহ নাই। রে ছুশ্চরিত্রে! তুই কালরাত্রিরূপিণী হইয়া ভার্য্যা-রূপে মদীয় গৃহে প্রবেশ করিয়াছিস্, কিন্তু আমার ভরত কদাচ এরপ প্রার্থনায় সম্মত হইবে না। রে হুউচারিণি! রাম বনবাসী হইলে আমি কোন-মতেই জীবন ধারণ করিতে সমর্থ হইব মা, স্বতরাং ছুই বিধবা হইয়া হুখে রাজ্যন্থ উপভোগ কর্। সত্যসন্ধ মহীপতি সত্যপাশে নিবন্ধ হওয়াতে কৈকেয়ীকে এইরূপ তিরুস্কার করিয়া রামকে সম্বোধনপূর্ব্বক কহিলেন, হে বংস! আমি কৈকেয়ী কর্ত্তক বঞ্চিত হইয়াছি, ভুমি আমাকে নিগৃহীত করিয়া রাজ্য শাসন কর; কৈকেয়ী আমাকে সত্যপাশে নিবদ্ধ করিয়া এক বরে তোমার চতুর্দশ বৎসর বনবাস ও দ্বিতীয় বরে ভরতের রাজ্যাভিষেক প্রার্থনা করিতেছে।

পূৰ্ব্বক তাঁহাকে এবং কৈকেয়ীকে প্ৰদক্ষিণ ও প্ৰণাম করিয়া জননী কোশল্যার মন্দিরে গমন করিলেন। তথায় উপনীত হইয়া বহুবিধরূপে মাতাকে দান্তুনা প্রদানপূর্ব্বক তাঁহাকে প্রণাম করিয়া অমুজ লক্ষ্মণ ও ভার্য্যা সীতার সহিত বনোদ্দেশে প্রস্থিত হইলেন। গমনসময়ে বিপ্রগণকে ও দীনগণকে বহুবিধ ধন বিতরণপূর্বক রথোপরি আরোহণ করিলেন, স্থমন্ত্র त्रथहालमा कतिया हिलालम । श्रुत्रवामी मकलहे শোকার্ভপ্রদয়ে অঞ্রাবিসর্জ্জন করিতে করিতে নগরী হইতে নির্গত হইয়া রামের অনুগামী হইলেন। ক্রমে ক্রমে রথ সরিম্বরা তমদার তীরে উপনীত হইলে সে রজনা তথায় অবস্থিতি করিবারই কল্পনা হইল। অনন্তর নিশাশেষে রামচন্দ্র পৌর-গণের অজ্ঞাতসারে লক্ষণ ও দীতাসমভিব্যাহারে র্থারোহণ করিয়া তথা হইতে প্রস্থান করিলেন। প্রভাতে পৌরগণ রামকে নেত্রগোচর না করিয়া অঞ্পূর্ণলোচনে বিষণ্ণবদনে নগরে প্রত্যারত হইল। এদিকে রাজা সাঞ্চনয়নে শৃক্তহদয়ে কৌশল্যার মন্দিরে প্রবেশ করিলেন। কি পুরবাসীগণ, কি রাজমহিলারা, সকলেই মুক্তকণ্ঠে রোদন করিতে লাগিলেন।

এদিকে রামচন্দ্র রথারোহণপূর্বক সীতা ও লক্ষাণসহ শৃঙ্গবের পুরে উপনীত হইলেন। তথায় নিবাদপতি গুহ কর্তৃক প্রপৃত্তিত হইয়া ইন্ধুদিতরুন্লে সে নিশা অতিবাহিত করিলেন। লক্ষাণ ও গুহ উভরে রজনীযোগে জাগরিত থাকিয়া রামের রক্ষাণিধান করিতে লাগিলেন। অনন্তর রজনীভাতে রঘুপতি স্বস্ত্রকে বিদায় প্রদানপূর্বক সীতা ও সৌনিত্রিসহ নোকারোহণে জাহ্নবী পার হইয়া প্রয়াগধামে উপনীত হইলেন। তথায় ঋষি-

দাশরথী রামচক্র পিতার এই বাক্য শ্রেবণ-। বর ভরদ্বাজকে অভিবন্দন করিয়া গিরিবর চিত্র-কে তাঁহাকে এবং কৈকেয়ীকে প্রদক্ষিণ ও প্রণাম কুটে গমনপূর্বক বাস্তপূজা সাধন করত মন্দাকিনী-য়ো জননী কৌশল্যার মন্দিরে গমন করিলেন। তটে অবস্থিতি করিতে লাগিলেন।

একদা রঘুপতি দীতা দমভিব্যাহারে চিত্রকুটের রমণীয় শোভা দল-শনপূর্বক ইতন্ততঃ পরিভ্রমণ করিতেছেন, ইত্যবসরে একটি বায়দ সহদা
দম্পদ্থিত হইয়া নথ দারা দীতার ন্তন বিদারণ
করিল, তদ্দনি রামচন্দ্র ঐষিকান্ত দারা তাহার
চক্ষু দমুৎপাটন করিয়া ফেলিলেন। তখন বায়দ
ভীত হইয়া রঘুনাথের শরণাপন হইলে রামচন্দ্র
তাহাকে অভয় প্রদান করিলেন, বায়দও গগনপথে দমুজ্ঞীন হইয়া অভিল্যিত স্থানে প্রস্থান
করিল।

এদিকে রামচন্দ্র বনে প্রস্থান করিলে রাজা দশরথ ষষ্ঠ রজনীতে কৌশল্যাকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, হে দেবি ! যাহা বলিতেছি শ্রবণ কর। আমি বছদিন পূর্বেব সর্যুতীরে গমনপূর্বেক অজ্ঞান-বশতঃ যজ্ঞদত্ত নামক মুনিকুমারকে নিহত করিয়া-ছিলাম। সেই বিপ্রবট্ট একটী কুম্ভ লইয়া জল-পূর্ণ করিতেছিলেন, আমি দূর হইতে দেই শব্দ শ্রবণপূর্ব্বক হস্তীবোধে শব্দবেধি বাণ পরিত্যাগ করি, তাহাতেই ঋষিকুষার দেহ বিদর্জ্জন করেন। অবশেষে তাঁহার পিষ্ঠা ও মাতা অপ্রুপূর্ণলোচনে বিলাপ করিতে করিতে আমাকে এই অভিশাপ প্রদান করিলেন যে, "হে রাজন্! আমরা পুত্র-বিরহে অবিলম্বেই প্রাণত্যাগ করিব সন্দেহ নাই. কিন্তু তোমাকেও আমাদিগের ন্যায় স্থতশোকে জর্জাভূত হইয়া দেহ বিসর্জন করিতে হইবে।" অতএব হে কৌশল্যে! আমাকেও রামশোকে প্রাণত্যাগ করিতে হইল। মহীপতি দশরথ এই-মাত্র বলিয়া "হা রাম" এই শব্দোকারণপূর্বক

দেহ বিসর্জন করিলেন। কৌশল্যা তাঁহাকে নিদ্রিত বিবেচনা করিয়া আপনিও একপাথে শয়ন করিয়া রহিলেন।

অনন্তর রজনী প্রভাত হইলে দূত, মাগধ ও বন্দিগণ প্রবোধসূচক স্তুতি পাঠ করিতে আরম্ভ করিল, কিন্তু কিছুতেই মহীপতির নিদ্রাভঙ্গ হইল না। তথন দেবী কৌশল্যা পতিকে মৃতজ্ঞান-পূর্ববক "হা হতান্মি" বলিয়া মুক্তকণ্ঠে রোদন করিতে লাগিলেন; ক্রমে ক্রমে যাবতীয় নর নারী সকলেই ক্রন্দন করিতে আরম্ভ করিল। অবশেষে বশিষ্ঠ ও রাজমন্ত্রীরা ভরত ও শক্রেম্বকে মাতুলালয় হইতে আনয়ন করাইলেন। ভরত অযোধ্যায় সমাগত হইয়া নগরী শোকপূর্ণা দর্শনে ব্যথিত হইয়া ছঃখিতচিতে জননী কৈকেয়ীকে নিন্দা ও তির ফারপূর্বক কহিলেন, হে দেবি ! ভুমি এত-দিনে শিরোপরি কলঙ্কভার সংস্তম্ভ করিলে সন্দেহ নাই। কৈকেয়ীনন্দন মাতাকে এইরূপ ভর্ৎসনা ও কৌশল্যাকে ভূয়দী সাধুবাদ প্রদানপূর্বক তৈল-দ্রোণিস্থিত পিতার মৃতদেহ লইয়া সর্যুত্টে অগ্নি-সংস্কার করিলেন। অনন্তর বশিষ্ঠাদি সকলে তাঁহাকে রাজ্যশাসনে অস্থুরোধ করিলে তিনি কহি-লেন, আমি রামকে আন্যুনার্থ তৎস্কাশে গমন করিব, মহাবল রঘুনাথই এই সাঞাজ্য পালন कतिरान ।

ভরত এই বলিয়া তংক্ষণাৎ পুরী হইতে
নিজ্ঞমণপূর্বক প্রথমতঃ শৃঙ্গবেরপুর, তদনন্তর
প্রয়াগে উপনীত হইয়া ভরদ্বাজাশ্রমে ভোজন
করিলেন এবং ঋষিবরকে প্রণাম করিয়া রামলক্ষ্মণের নিকট গ্মনপূর্বক কহিলেন, হে রাম!
পিতা আপনার শোকে দেহ বিসর্জন করিয়া স্থরধামে প্রস্থান করিয়াছেন, অতএব আপনি অযো-

ধ্যায় উপনীত হইয়া রাজ্যপালন করুন; আমি আপনার আদেশ লইয়া বনবাসে কালাতিপাত করি।

ভরত এই কথা বলিলে রামচন্দ্র পিতৃতর্পণপূর্বক কহিলেন, হে বৎস ! আমি রাজ্যে গমন
করিব না, আমি জটাচীর ধারণপূর্বক চতুর্দশ
সহৎসর বনে বাস করিয়া সত্য প্রতিপালন করিব,
তুমি আমার এই পাছকাম্বর লইয়া যাও, ইহাকেই
রাজ্যাধিদেবতা জ্ঞান করিয়া প্রজাপালন কর।
তথন মহাবল ভরত রামের আদেশে তদীয় পাছকা
লইয়া অযোধ্যায় গমনপূর্বক তাহা সিংহাসনোপরি সমারোপিত করিলেন এবং স্বয়ং নন্দিত্রামে অবস্থিতিপূর্বক সাম্রাজ্য পালন করিতে
লাগিলেন।

ইত্যাদিমহাপুবাণে আথেরে বামানণে অযোধ্যাকাও-বর্ণন নামক ষষ্ঠ অধ্যায় সমাপ্ত।

সপ্তম অধ্যার i

নারদ কহিলেন, রামচন্দ্র, বশিষ্ঠ, মাতৃগণ, অত্রি, অনসূয়া, শরভঙ্গ ও স্থতীক্ষকে প্রণামপূর্বক মহর্ষি অগস্ত্যের প্রসাদলক ধনু ও খড়গ গ্রহণ করিয়া দগুকারণ্যে প্রবেশ করিলেন। তথায় উপনীত হইয়া সরিদ্বরা গোদাবরীতটে পঞ্চতীকাননে কৃটীর নির্মাণপূর্বক দীতা ও সৌমিত্রিসহ অবস্থিতি করিতে লাগিলেন।

একদা শূর্পনথানান্ত্রী ঘোররূপিণী রাক্ষ্ণী আহারাম্বেষণপূর্বক বনপর্যাটন করিতে করিতে তথায় সমাগত হইল। সে রামের অনুপম রূপ-লাবণ্য সন্দর্শনে বিমোহিতপ্রায় হইয়া কহিল, হে হুরূপিণ্! তুমি কে এবং কি কারণেই বা এই ঘোর বিজন অরণ্যমধ্যে আগমন করিয়াছ ং যাহা

হউক্, আমি প্রার্থনা করিতেছি, আমাকে পত্নীত্বে গ্রহণ কর: আমি ভোমার সমভিব্যাহারী এই ছুই জনকে অবিলম্বে ভক্ষণ করিয়া ফেলিতেছি। নিশা-চর্রা এই বলিয়া সীতাও লক্ষণকে গ্রাস করি-বার উপক্রম করিলে সৌমিত্রি রঘুপতির আদেশে তৎক্ষণাৎ তাহার নাদাকর্ণ ছেদন করিয়া ফেলি-লেন। তথন রাক্ষদীর নাদাকর্ণ **হইতে অজ**ন্স শোণিভরাশি বিগলিত হইতে লাগিল, সে রোদন করিতে করিতে ভ্রাতা খরের নিকট গমন করিয়া কহিল, হে ভাতঃ! আমি এরপ নাদাবিহীনা হইয়া কোনরূপে জীবন ধারণ করিতে পারিব না। অযোধ্যাপতি দশরথের পুত্র রাম অমুজ লক্ষাণ ও ভার্য্যা জানকীর সহিত আসিয়া জনস্থানে অধি-বসতি করিতেছে, দেই লক্ষাণই আমার নাসাকর্ণ ছেদন করিয়াছে। যদি তা**হাদিগের তিন জনকে** নিহত করিয়া তাহাদিগের উষ্ণ শোণিত পান করাইতে না পার, তাহা হইলে আমি তোমার সমক্ষে এ দেহ বিসর্জ্বন করিব।

ভাগনীর এই বাক্য শ্রবণপূর্বক থর রামবংধ প্রতিজ্ঞা করিয়া দূষণ, ত্রিশিরা ও চতুর্দ্দশ সহজ্ঞ রাক্ষদদৈশ্যের সহিত সমবেত হইয়া সংগ্রামার্থ যাত্রা করিল। ক্রমে রামসকাশে সমুপনীত হইলে ঘোরতর সংগ্রাম সংঘটিত হইল; রাম অত্যঙ্গাল মধ্যেই বাণদ্বারা ধর, দূষণ, ত্রিশিরা এবং যাবতীয় চতুরস্থ রাক্ষদদৈশ্য বিনিহত করিলেন। তথন শূর্পনথা রোষভরে লক্ষায় গমনপূর্বক রাবণের নিকট ভূপতিত হইয়া কহিল, হে ভাতঃ! ভূমি রাজা বা রাক্ষদদিগের পরিরক্ষক হইবার যোগ্য নহ; দাশর্থী রামচন্দ্র পিতা কর্তৃক নির্বাধিত হইয়া অনুজ লক্ষ্মণ ও ভার্যা সীতাদহ দণ্ডকারণ্যে অধিবদত্তি করিতেছে, সেই লক্ষ্মণ

আমাকে ঈদৃশ বিরূপিণী করাতে ভাতা খর দৈন্দসামন্তদহ সংগ্রাম করিয়াছিল, কিন্তু তুর্জ্জর রঘুপতির করে জনস্থাননিবাদী যাবতীয় রাক্ষদই বিনিহত হইয়াছে; অতএব যদি দীতাকে হরণ-পূর্বক খরাদিহন্তা রাম ও লক্ষ্মণের রুধির পান করাইতে পার, তাহা হইলেই আমি জীবন ধারণ করিব, নতুবা তোমার সমক্ষেই যেরূপে হয় প্রাণ পরিত্যাণ করিব, সন্দেহ নাই।

দশানন, ভগিনীর এইরপ কাতরোক্তি শ্রবণপূর্বক একান্ত ব্যথিত হইয়া রামবধে প্রতিজ্ঞা
করিলেন এবং মারীচকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, হে মারীচ! তুমি বিচিত্র মৃগরূপ ধারণপূর্বক জনস্থানে গমন করিয়া দীতার পুরোভাগে
পরিজ্ঞমণ কর, তোমার মনোহর কান্তি দর্শনে
বিমোহিতা হইয়া জানকী তল্লাভে বাদনা করিলে
রামলক্ষ্মণ তোমাকে নিহত করিবার জন্ত প্রস্থান
করিবে; আমি সেই অবকাশে দীতাকে হরণ
করিব। আমার বাক্যে অবহেলা করিলে তোমাকে
শ্মনস্থানে গমন করিতে হইবে জানিও।

কারীচ কহিল, হে সাজন্! রাম সাকাৎ কর্টান্ত্রক্রপ, তিনি শরাসন করে রণস্থলে দগুায়-মান ইইলে আর কাহার্ট্র পরিত্রাণ নাই। যাহা হউক্, আমি আপনার আদেশে অবিলম্ভেই গমন করিতেছি।

মারীচ রাবণকে এই বলিয়া মনে মনে বিবে-চনা করিতে লাগিল যে, যদি রাবণের বাক্য লজ্মন করি, তাহা হইলে হুরাত্মা আমার প্রাণ-বিনাশ করিবে এবং যদি রামের নিকট যাই, তাহা হইলেও নিস্তার নাই; অতএব দশানন অপেকা রামের হস্তে দেহ বিসর্জন করাই জোয়ঃ। মারীচ মনে মনে এইরূপ কৃতসংকল্প হইয়া কনকম্বারূপ ধারণপূর্বক শীতার পুরোভাগে নানাভাবে পরি-ভ্রমণ করিতে লাগিল। তদর্শনে জানকী বিমো-হিতা হইয়া রামকে কহিলেন, হে আর্য্যপুত্র ! ঐ মনোহর স্বর্ণমূগ বিচরণ করিতেছে, আমি উহাকে লইয়া ক্রীডা করিতে বাসনা করি। সীতার আগ্রহ দর্শনে রামচন্দ্র তৎক্ষণাৎ মুগ ধরিবার জন্ম প্রস্থান করিলেন। মুগও মায়ারলে তাঁহাকে বহুদুরে লইয়া গেল। তথন রাম নিশিত সায়ক-প্রহারে ভাহার প্রাণবিনাশ করিলেন। মারীচ মরণসময়ে রামকণ্ঠের অনুরূপ স্বর বিস্তারপূর্ব্বক "হা সীতে ! হা বৎ্স লক্ষণ !" বলিয়া উচ্চঃম্বরে চীৎকার করিতে লাগিল। তচ্ছ বণে দীতা সমুৎ-ক্তিত হইয়া লক্ষণকে রামের সাহায্যার্থ গমনে অস্থুরোধ করিলে সৌমিত্রি জানকীকে বিবিধরপে প্রবোধ প্রদান করিয়া কহিলেন, দেবি ! আপনি চিন্তা পরিত্যাগ করুন, ত্রিভুবনতলে এতাদৃশ কেইই নাই যে, রামের জীবন নিধনে সমর্থ হয়। কিন্তু দীতা লক্ষণের বাক্যে বিশ্বাস না করিয়া বরং তৎপ্রতি অযথোচিত বিরুদ্ধ বাক্র্য প্রয়োগ করিতে লাগিলেন 🖟 তথন নদৌনিত্রি 🔫 🕬 ভ্যা রামোদেশে প্রস্থান করিলেন। ইত্যবদরে ব্রুক্তিনা-ধিপতি রাবণ শৃ্যাশ্রম হইতে দীতাকে 🔫 বৃণ করিয়া চলিল। পথিমধ্যে গুপ্তরাজ জটায়ু সীতার উদ্ধারার্থে ঘোরতর সংগ্রাম করে, কিন্তু অবশেষে পরাজিত, ছিন্নপক্ষ ও মৃতকল্প হইয়া ধরাতলে নিপতিত হইল। তখন রাবণ দীতাকে ক্রোড়ে লইয়া লঙ্কাপুরে সমুপাগমনপূর্বক তাঁহাকে অশোক-কাননে রাখিয়া দিল। সে প্রত্যুহই বিবিধ প্রলো-তন প্রদর্শনপূর্বক সীতাকে পত্নীত্ব স্বীকারে অনু-রোধ করিতে লাগিল। রাক্ষদীরা রাজার আদেশে সমত্বে জানকীর রক্ষাবিধানে নিযুক্ত রহিল।

থদিকে রামচন্দ্র মারীচকে নিহত করিয়া যেমন প্রত্যাগত হইতেছেন, অমনি পথিমধ্যে লক্ষ্মণকে নেত্রগোচর করিয়া কহিলেন, হে বংল ! যাহাকে ক্ষনক্ষ্মণ বোধ করিয়াছিলে, সে বস্ততঃ মুগ নহে,ছুরাত্মা নিশাচরের মায়ামাত্র।যাহা হউক্, ভুমি সীতাকে শুভাজামে একাকিনী রাখিয়া আসি-য়াছ কেন ? হয় ত এতক্ষণে তাঁহাকে নিশাচরে হরণ করিয়া লইয়া গিয়াছে।

রাম এই বলিয়া ব্যাকুলহৃদয়ে আশ্রমে নমা-গত হইলেন, কিন্তু সীতাকে দেখিতে পাইলেন না। তখন সকাতরে বিলাপ করিতে করিতে কহিতে লাগিলেন, হা প্রিয়ে! আমাকে পরি-ত্যাগ করিয়া কোথায় গমন করিলে? হায়! তোমা ব্যতিরেকে আমি কোনমতেই জীবন ধারণ করিতে পারিব না। রমুপতি এইরূপে শোক প্রকাশ করিতে আরম্ভ করিলে সৌমিত্রি তাঁহাকে সান্তনা প্রদান করিতে লাগিলেন। অনন্তর ভাঁহারা জানকীর অন্বেষণার্থ ইতস্ততঃ পরিভ্রমণ করিতে-ছেন, ইত্যবসরে ভূপতিত মৃতকল্ল জটায়ুর সহিত দাক্ষাৎ হইল। জটায়ু রাষণকর্ত্তক দীতাহরণ ও তৎসহ সংগ্রামাদি সমস্ত বিষয় আনুদ্যোপাস্ত বর্ণন ক্রিয়া প্রাণ পরিতাপি করিল। তথন রামচন্দ্র ভোহার যথাবিধি সংস্কার সাধনপূর্বক তথা হইতে প্রস্থান করিলেন। পথিমধ্যে কবন্ধ বিনিহত হইয়া শাপ হইতে মুক্তিলাভপুৰ্বক রামকে বানররাজ স্থগ্রীবের সহিত সথ্য সংস্থাপনে অফুরোধ করিয়া স্বস্থানে প্রস্থান করিল।

> ইত্যাদিমহাপুরাণে আর্গ্রের রামায়ণে অর্ণাকাও-. বর্ণন নামক দপ্তম অধ্যায় স্থাপ্ত। •

অষ্টম অধ্যায়।

নারদ কহিলেন, অনন্তর রামচন্দ্র পম্পা-সরোবরে গমনপূর্ব্বক শবরীর সহিত দাক্ষাৎ করি-লেন। অবশেষে হনুমানের সহিত সাক্ষাৎ হইল হনুমান্ রামকে স্থগ্রীবের নিকট লইয়া গেলে দাশরথী বানরবরের সহিত সোহার্দ সংস্থাপন করিলেন। তদনন্তর স্থগ্রীব রামের বল পরিজ্ঞাত হইবার অভিপ্রায় করিলে রঘুপতি একটিমাত্র বাণ প্রয়োগ দ্বারা সপ্ততাল ভেদপূর্বক পদাঘাতে হুন্দুভির স্থর্হৎ দেহ দশযোজন দূরে নিক্ষিপ্ত করিয়া ফেলিলেন এবং বৈরকারী বালীকে নিহত করিয়া প্রত্রীবকে কিন্ধিদ্ধ্যার দিংহাদনে অভিষিক্ত করত রুমা ও তারাকে তদীয় করে সমর্পণ করি-লেন। তথন কিন্ধিদ্যাপতি স্থগ্রীব রামকে সম্বো-ধন করিয়া কহিল, হে রাম! যাহাতে দীতা উদ্ধার হয়, আমি তদ্বিষয়ে সাধ্যাসুসারে যত্ন করিব। রামচন্দ্র তচ্ছবণে কিঞ্ছিৎ আশ্বন্ত হইয়া চাতুর্মান্ড বুতানুষ্ঠানপূর্বক মাল্যবান্ গিরিতে অবন্থিতি করিতে লাগিলেন।

ক্রমে চারিমাস অতীত হইল, কিন্তু স্থাীব রাজ্যলাভে বিমোহিত হইয়া একবারও রামের নিকট আসমন করিল না। রাম একে সীতা-বিয়োগে অভিসন্তপ্ত, তাহাতে আবার স্থাীবের তাদৃশ অসদাচরণ দর্শনে একান্ত বিরক্ত হইয়া লক্ষাণকে বানরাধিপের নিকট প্রেরণ করিলেন। সৌমিত্রিও জ্যেষ্ঠের আদেশাক্ষ্সারে স্থাীবস্মীপে সম্পর্নাত হইয়া কহিলেন, হে স্থাীব! মনে করিও না যে, বালী যে পথে পদার্পণ করিয়াছে, সে পথ অবরুদ্ধ রহিয়াছে। এখনও সাবধান হও, যেন বালীর পথের অনুসরণ করিতে না হয়।

লক্ষণের মুখে এই কথা শ্রবণ করিয়া হুগ্রীব বার পর নাই লঙ্জিত হইয়া কহিল, হে সৌমিত্রে! আমি বিষয়ভোগে উন্মত্ত হইয়া এই গহিতাচরণ করিতেছি,যাহা হউক, আমি এই মুহুর্ত্তেই জানকী-নাথের নিকট গমন করিব। বানর্রাজ এই বলিয়া তৎক্ষণাৎ রামদদনে গমনপূর্বক প্রণাম করিয়া কহিল, হে দাশরথে! বানরেরা সকলেই উপস্থিত হইয়াছে, আপনার আদেশাকুসারে ইহাদিগকে সীতাম্বেষণার্থ প্রেরণ করিব। ইহারা চতুর্দিকে গমনপূর্বক দীতার অনুসন্ধান করুক, একমাস মধ্যে যাহারা পুনরাগত না হইবে, তাহাদিগকে শমনদদনে প্রেরণ করিব, দন্দেহ নাই। এই বলিয়া বানরদিগকে পূর্ব্ব পশ্চিম ও উত্তর দিকে প্রেরণ করিল, কিন্তু কেহই জানকীর অনুসন্ধান প্রাপ্ত হইল না, স্বতরাং সকলে প্রত্যা-গত হইয়া রাম ও স্থগ্রীবের নিকট যথাবৎ নিবেদন করিল। অনন্তর হনুমান্ রামের অঙ্গুরীয়ক গ্রহণ-পূর্ব্বক কতিপয় বানরদিগের সহিত সমবেত হইয়া দক্ষিণদিকে প্রস্থিত হইল। তাহারা নানাস্থান পর্য্যটনপূর্ব্বক জানকীর অনুসন্ধান না পাইয়া একটি স্বর্হৎ গুহাসমূথে উপবেশন করিল। তাহারা পরস্পর কহিতে লাগিল যে, মাদাধিক সমতীত হইল, তথাপি জানকীর দাক্ষাৎ প্রাপ্ত হইলাম না, অতএব স্থগ্রীবদমীপেই বা কিরূপে গমন করিব ? হায় ! আমাদিগকে রুথা জীবন পরিত্যাগ করিতে হইল! আহা! জটায়ুই ধ্যা, সে দীতার উদ্ধারার্থ রাবণের দহিত দংগ্রাম করিয়া দেহ বিসর্জ্জন করিয়াছে।

বানরদিগের এইরূপ কথোপকখন কর্ণকুহরে প্রবেশ করিবামাত্র দেই অরণ্যবাসী সম্পাতিনামা পক্ষী কপিদিগকে সম্বোধন করিয়া কহিল, হে বানরগণ! বহুদিন পরে তোমাদিগের মুখে জটায়ুর নাম প্রবণ করিয়া আমার পরম প্রীতিলাভ হইল; জটায়ু আমার ল্রাতা। আমি গগনপথে সমুজ্ঞীন হইয়া অর্কমণ্ডলের সমীপবর্তী হওয়াতে সূর্য্যকরে আমার পক্ষ দগ্ধীভূত হইয়া যায়। সম্প্রতি তোমাদিগের মুখে রাম নাম প্রবণ করিয়া আমার নূতন পক্ষ সঞ্জাত হইতেছে। আমি এই স্থান হইতেই জানকীকে,নেত্রগোচর করিতেছি। তিনি শত্যোজনবিস্তীর্ণ ল্রবণামুরাশির পরপারে, ক্রিক্টগিরির শিখরস্থ রমণীয় লক্ষাপুরীর মধ্যে অশোককাননে বিষণ্ণবদ্দনে দিনপাত করিতেছেন; অতএব তোমরা দবিশেষ অবগত হইয়া রাম ও স্থ্রীবের নিকট গমনপূর্বক নিবেদন কর।

ইত্যাদিমহাপুৰাণে আগ্নেরে রামায়ণে কিছিল্পা-কাওবর্ণন নামক অষ্টম অধ্যায় সম্প্রে।

নবম অধ্যায়।

নারদ কহিলেন, সম্পাতির সেই বাক্য শ্রবণ করিয়া হনুমান্ ও অঙ্গদাদি বানরেরা লবণবারিধির দিকে নেত্রপাত করিয়া কহিল, "কে এই স্থবি-স্তীর্ণ সাগর লজ্মন করিবে ?" তথন মহামতি মারুতি রামকার্য্য সাধনার্থ সেই শতযোজনায়ত সাগর পার হইবার উদ্যোগ করিল; সে একবার সমুদ্রের দিকে নেত্রপাতপূর্বক রামকে হৃদয়ে ধ্যান করিয়া লক্ষ প্রদান করিল; পথিমধ্যে মৈনাকগিরি স্পার্মাত্র ও তৎসহ স্থ্য সংস্থাপন এবং সিংহিকা নিধন করিয়া লক্ষায় উপনীত হইল। কপিবর লক্ষায় প্রবেশপূর্বক দশানন, কুস্তুকর্ণ, বিভীষণ, ইন্দ্রজিৎ ও অন্যান্য রাক্ষদদিগের গৃহ এবং পানভূমি প্রভৃতি সর্বত্রই অয়েষণ করিল,

কিন্তু কুত্রাপি দীতা দেবীর সাক্ষাৎ হইল না; স্থতরাং চিন্তাপরায়ণচিত্তে ইতস্ততঃ পরিভ্রমণ করিতে করিতে দেখিল, জনকনন্দিনী অশোক-বনে শিংশপাতরুমূলে রাক্ষদীগণে পরিরুত হইয়া অবস্থিতি করিতেছেন ; পুরোভাগে তুরাক্সা রাবণ বলিতেছে, হে স্বন্দরি! আমাকে পতিত্বে বরণ করিয়া হুখী হুও। রাবণের এইরূপ কটুবাক্য শ্রবণ করিয়া দেবী কিছুতেই সম্মতি প্রদান করি-লেন না। তথন দশানন অগত্যা তথা হইতে প্রস্থান করিল। হনুমান সেই শিংশপাতরুর উপরে লুকায়িত থাকিয়া সমস্তই প্রত্যক্ষ করিতে-ছিল। রাক্ষদপতি প্রতিগমন করিলে দে জান-কীকে সম্বোধন করিয়া কহিতে লাগিল, হে দেবি! चरपोधा नगरत मगत्रथ नारम এक ताका हिरलन. তাঁহার জ্যেষ্ঠপুত্র রামচন্দ্র অনুজ লক্ষণ ও ভার্য্যা-সহ বনবাসে আগমন করিয়াছিলেন; আপনিই তাঁহার ভার্যা। ছুরাচার রাবণ বনমধ্য হইতে আপনাকে হ্রণপূর্বক আনয়ন করিয়াছে। চন্দ্র আপনাকে অন্বেষণ করিতে করিতে স্থগ্রীব-স্কাশে স্মাগত হইয়া তাঁহার স্থিত মিত্রতা সংস্থাপনপূর্বক আমাকে আপনার নিকট প্রেরণ করিয়াছেন। দেবি ! এই অভিজ্ঞানস্বরূপ রামদত্ত অঙ্গুরীয়ক গ্রহণ করুন ; হনুমান্ এই বলিয়া বুক্ষ হইতে অবভরণপূর্বক দীতাকে অঙ্গুরীয়ক প্রদান कतिल।

তথন জানকী দেই অঙ্গুরীয়ক গ্রহণ করিয়া মারুতিকে কহিলেন, হে মারুতে ! রাম বিদ্যমান থাকিতে আমি এই ছঃখদাগরে নিময় রহিয়াছি, তিনি আমার পরিত্রাণার্থ যত্ন করিতেছেন না কেন !

মারুতি কহিল, দেবি ! এ যাবৎ রাম আপনার

অনুসন্ধান করিতে পারেন নাই, আপনার সংবাদ প্রাপ্ত হইলেই তৎক্ষণাৎ রাবণকে সবলে ধ্বংস করিয়া আপনাকে উদ্ধার করিবেন। আপনি শোক পরিত্যাগ করুন। এক্ষণে অনুমতি হইলে রামসদনে প্রস্থান করি, আপনি আমাকে কিছু অভিজ্ঞানচিত্র প্রদান করুন।

হনুমানের এই কথা প্রবণ করিয়া জনকত্বহিতা ষীয় চূড়ামণি প্রদানপূর্ব্বক কহিলেন, "বংস! রাম যাহাতে শীত্র আমাকে পরিত্রাণ করেন, ডবি-ষয়ে যত্নবান হইও এবং আমার অবস্থা স্বচক্ষেই প্রত্যক্ষ করিলে,ইহাও খার্যাপুজের নিকট নিবেদন করিবে। হে বৎস। তোমাকে নেত্রগোচর করিয়া অনেকাংশে আমার শোকের লাখব হইয়াছে " দীতা এই বলিয়া রামসহ পর্যাটনকালে একটি বায়দ নখাঘাতে তাঁহার স্তন বিদারণ করিলে রাম ঐধিকান্ত দারা কাকের চকু সমুৎপাটন করিয়া-ছিলেন, সেই বিবরণও প্রত্যভিজ্ঞানস্বরূপ মারুতি-সকাশে বর্ণন করিলেন। তথন ছনুমান্ গুড়ামণি গ্ৰহণ ও সেই কথা শ্ৰেষণপূৰ্ব্বক কহিল, হে কল্যাণি ! যদি পতিসকাশে গমন করিবার অভিলাঘ করেন. তাহা হইলে আমার প্রচোপরি আরোহণ করুন. আমি অদ্যই আপনাকে রামস্থগ্রীবের মিকট লইয়া যাইব। তখন দীতা কহিলেন, বৎস! রামচন্দ্র স্বয়ং আসিয়া আমাকে লইয়া ঘাইবেন।

অনন্তর হনুমান্ রাবণকে দর্শন ও তৎসহ
কথোপকথনে অভিলাষী হইয়া বনভঙ্গ এবং দন্তনথাঘাতে বনরক্ষকগণ, সপ্ত মন্ত্রীপুত্র ও রাবণনন্দন
অক্ষকে নিহত করিয়া ফেলিল। অবলোধৈ মেঘনাদ
তাহাকে নাগপালে বন্ধন করিয়া রাবণস্মীপে
লইয়া গেলে রাক্ষদরাজ জিজ্ঞাদা করিল, ভূমি
কে ? হনুমান্ কহিল, আমি রামদৃত, ভূমি রাম-

করে দীতাকে দমর্পণ কর; নতুবা দবলে রাঘব-করে নিধনপ্রাপ্ত হইবে দদ্দেহ নাই। রাবণ হন্-মানের এই বাক্য শ্রাবণ ক্রোধান্ত হইয়া তাহাকে বিনষ্ট করিবার উপক্রম করিল, তখন বিভীষণ তাহাকে নিবারিত করিলেন।

অনন্তর দশানন মাফতির প্রাণবিনাশ অভিলাবে বসনাদি ছারা তদীয় লাসূল সমারত করিয়া তাহাতে অগ্নি প্রদান করিল। হনুমানও লক্ষ্ণ প্রদানপূর্ববিক গৃহ হইতে গৃহান্তরে গমন করিয়া নিখিল, লক্ষাপুরী ও বহুসংখ্যক রাক্ষসের প্রাণ বিনাশ করিয়া ফেলিল এবং পুনরায় সীতাসকাশে আগমনপূর্ববিক তাঁহাকে প্রদক্ষিণ ও প্রণাম করিয়া সাগরপারে পুনরাগত হইল। সীতার সংবাদ প্রাপ্ত হইয়া অঙ্গদিদি বানরগণের আনন্দের পরিসীমারহিল না। তাহারা মধুবনে প্রবেশপূর্ববিক দ্বিমুখাদিকে পরাজিত করিয়া মধুপান করত সানন্দে রামসিম্বানে উপনীত হইল। কহিল, হে ভগবন্! সীতার্ভান্ত পরিজ্ঞাত হইয়াছি, মাক্ষতি দেবীকে প্রত্যক্ষ করিয়া আদিয়াছে।

তথন রাঘবেক্র হন্মান্কে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, হে মারুতে! তুমি কিরুপে সীতার নিকট সমুপস্থিত হইলে ? দেবীই বা আমাকে কি বলিয়াছেন ? দীতার্ভাস্ত-রূপ অমৃত দিক্তন দ্বারা আমাকে পরিতৃপ্ত কর।

হন্মান্ কহিল, হে প্রভো: আমি শতযোজনায়ত লবণসাগর পার ইইয়া লঙ্কাপুরে গন্ধন
করিলাম। দেখিলাম, দেবী জানকী অশোককাননে রাক্ষসীগণে পরির্তা ইইয়া বিষয়বদনে
অবস্থিতি করিতেছেন। আমি তাঁহাকে আপনার
অঙ্কীয়ক প্রদান ও ভাঁহার সহিত কথোপকথনপূর্বক লঙ্কাপুরী ভক্মীভূত করিয়া পুনরাগমন,

করিয়াছি। দেবী প্রত্যভিজ্ঞানস্বরূপ এই চূড়ামণি প্রদান করিয়াছেন, গ্রহণ করুন। হে রাম! শোক পরিত্যাগ করুন, রাবণকে সবংশে ধ্বংস করিয়া দীতা উদ্ধারে স্থত্ন হউন।

হন্মানের 'নিকট হইতে সীতামণি গ্রহণ করিয়া রামের বিরহানল প্রজ্ঞালিত হইয়া উঠিল। তিনি রোদন করিতে করিতে কহিতে লাগিলেন, 'আহা! অদ্য মণি সন্দর্শনে বাধ হইতেছে যেন, দেবী জানকীকেই প্রত্যক্ষ করিলাম; হা সীতে! হা দেবি! হা প্রাণবল্লভে! তোমা ব্যুতিরেকে আমি কোনরূপেই জীবন ধারণ করিতে পারিতেছি না; আমাকে তোমার নিকট লইয়া যাও।' রাম এই প্রকারে বিমোহিতের স্থায় বিলাপ করিতে প্রবৃত্ত হইলে স্থতীব প্রভৃতি বানরেরা তাঁহাকে প্রবেধ প্রদান করিতে লাগিল। তথন দাশর্থী কিঞ্চিৎ সমাশ্বস্ত হইয়া কপিদৈশ্য সমভিব্যাহারে সাগ্রতীরে উপনীত হইলেন।

ইত্যবসরে বিভাষণ ছুরাস্মা ভ্রাতা রাবণকর্তৃক তিরস্কৃত হইয়া রামের নিকট আগমনপূর্বক তাঁহার শরণাপন্ন হইল। রামকরে দীতাকে প্রত্যুপণ করি-বার জন্ম অনুরোধ করাতেই দশানন ভ্রাতাকে দূর্বাভূত করিয়া দেয়। রাম বিভীষণের সহিত মিত্রতা সংস্থাপনপূর্বক তাহাকে লঙ্কারাজ্যে অভি-ধিক্ত করিতে প্রতিজ্ঞা করিলেন।

অনন্তর রঘুপতি সমুদ্রসকাশে লক্ষাগমনের পথ প্রার্থনা করিলেন, কিন্তু সমুদ্র তাঁহার নিকট আগ-মন না করাতে তিনি রোষান্ধ হইয়া শরাসনে শর-সন্ধান করিবামাত্র জলনিধি ভয়ব্যাকুলচিত্তে সম্মুখ-বলী হইয়া কহিলেন, হে প্রভা! আপনি নল দ্বারা জলোপরি সেতু বন্ধনপূর্বক লক্ষায় গমন করুন। তথন দাশরথীর আদেশান্স্সারে নল তরু-শৈলাদি দারা সাগরোপরি সেতু বন্ধন করিল। রামও সেই সেতুযোগে মহাবল বানরসৈভাসহ মহোদধির পারে লক্ষানগরীতে উপনীত হইলেন।

> ইত্যাদিমহাপুরাণে আগ্নেরে রামারণে স্থনরাকাও-বর্ণন নামক নবম অধ্যায় সমাপ্ত।

দশম অধ্যায়।

নারদ কহিলেন, অনস্তর অঙ্গদ রামের আজ্ঞামু-সারে রাবণের নিকট উপস্থিত হইয়া কহিল, হে রাক্ষসরাজ! যদি আপনার মৃত্যুকামনা না কর, তাহা হইলে অবিলম্বে জানকীকে রামকরে প্রত্যুপ্ণ করিয়া স্থী হও।

সংগ্রামপ্রিয় পরমোদ্ধত রাক্ষ্সাধিপতি রাবণ অঙ্গদের এই বাক্য শ্রবণপূর্বক রামকে নিহত ক্রিবার জন্ম যুদ্ধসজ্জা করিতে লাগিল। এদিকে দাশর্থী রামচন্দ্র সেই সংবাদ প্রাপ্ত হইয়া হনুমান, মৈন্দ, দিবিদ, জাম্বান্, নল, নীল, তার, অঙ্গদ, ধুম, স্থাবন, কেশরী, গয়, পনস, বিনত, রম্ভ, শরভ, ক্রথন, গবাক্ষ, দধিবক্তা, গবয়, গন্ধমাদন, স্থাীব ও অন্যান্য বহুসংখ্যক বানরগণসমভিব্যাহারে লঙ্কা-প্রবেশ করিলেন। ক্রমে রাক্ষদদিগের সহিত কপিদৈন্তের তুমুল সংগ্রাম সংঘটিত হইল ; রাক্ষদেরা শর, শক্তি, গদা প্রভৃতি দারা বানর-দিগকে এবং বানরেরা নথ, দস্ত, শিলা প্রভৃতি দ্বারা নিশাচরদিগকে প্রহার করিতে করিল। রাক্ষসদিগের বহুসংখ্যক হন্তী, অশ্ব, রথ ও পদাতি বানরকরে নিহত হইল। হনুমান্ গিরিশুঙ্গ-প্রহারে পরমশক্ত ধূয়াক্ষকে এবং নীল অকম্পন ও প্রহস্ত নামা রাক্ষসন্বয়কে বিনিহত করিল। ইত্যব-

রানলক্ষণকে নাগপাশে বন্ধন করিলে তাঁহারা বিনতানন্দন গরুড়কে স্মরণ করি-লেন: স্মৃত্যাত্র তাক্ষ্যি অবিশ্বে সমুপস্থিত হইয়া সেই নাগসমূহকে বিনষ্ট করিল। রামলক্ষাণ মহাবল প্রদর্শনপূর্বক রাক্ষদদৈত বিনি-পাতিত করিতে প্রবন্ধ হইলেন। রাবণ রামবাণে জর্জাঞ্ত হইয়া পলায়নপূর্ব্বক গৃহে গমন করত কুম্ভকর্ণকে জাগরিত করিয়া দকাতরে আদ্যোপান্ত সমস্ত বিজ্ঞাপিত করিল। কুম্ভকর্ণ প্রবুদ্ধ হইয়া সহস্রঘট মদ্য পান ও ভূরিপরিমিত মহিযাদিমাংস ভোজনপূর্বক রাবণকে কহিল, হে রাজন্! ভূমি সীতাকে হরণ করিয়া স্তমহৎ পাপার্ম্পান করিয়াছ. যাহা হউক, তুমি জ্যেষ্ঠ প্রাতা, পূজনীয়; স্থতরাং আমি যুদ্ধার্থ গমন করিতেছি, আমি সংগ্রামে রামকে ও বানরকুল সমস্ত বিন্ত করিব। কুন্তকর্ণ এই বলিয়া রণকেত্তে গমনপূর্বক হরিদৈয়া বিম-র্দিত করিতে আরম্ভ করিল। স্থগ্রীৰ ভাহার নাগাকণ কর্ত্তন করিয়া দিল । তথন নিশাচর নাগা-কর্ণবিহান হইয়া বানরদিগকে ভক্ষণ করিতে আরম্ভ করিল ৷ তদ্রশনে রামচন্দ্র রোধান্ধ হইয়া দায়কপ্রছারে তাহার বাহ্যুগল, পাদ্রয়, অবশেষে শিরশ্ছেদ করিয়া ভূপাতিত করিলেন। এই প্রকারে কুঁন্ত, নিকুন্ত, মকরাক্ষ, মহোদর, মহাপার্ম, মত, উন্মত, প্রধদ, ভাদকর্ণ, বিরূপাক্ষ, দেবান্ত, নরান্ত, ত্রিশিরা, অতিকায় প্রভৃতি রাক্ষসের। সংগ্রামে রাম লক্ষ্মণ ও বিভীষণের করে নিহত হইয়া ভূশায়ী হইল।

অন্তর রাবণ ভীমযুদ্ধে প্রস্তুত হইরা শক্তি ছারা সৌমিত্রিকে বিচেতন করিলে হন্মান্ গন্ধমাদন গিরি সমুৎপাটনপূর্বক রামসকাশে সমুপ-নীত করিল। তথন সেই গিরির অভ্যন্তর হইতে উষধি গ্রহণপূর্বকি লক্ষ্মণের চেতনা করিলে মারুতি পুনরায গিরিবরকে যথাস্থানে সন্ধিবেশিত করিয়া রাখিল। পরিশেষে মেঘনাদ নিকুন্ডিলাগারে হোমাদির অনুষ্ঠান করিলে লক্ষাণ তথায় গমনপূর্বক তাহাকে বিনষ্ট করিলেন। তথন দশানন পুত্রশোকে অধীর হইয়া দীতাবধার্থ সমুদ্যত হইল, কিন্তু তৎপত্নী মন্দোদরী স্ত্রীবধে নিষেধ করাতে ভাহাতেও কুতকার্যা না হইয়া রথারোহণপূর্বক যুদ্ধার্থ রামদকাশে যাত্র! করিল। এদিকে দেবরাজ পুরন্দরের আদেশে মাতলি রথ লইয়া রামের নিকট উপস্থিত হইলে রাম ততুপরি সমারত হইয়া যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। রাম-রাব-ণের যুদ্ধ উত্তরোভর প্রবলতর হইয়া উঠিল, রাম-রাবণের যুদ্ধের আর উপমা লক্ষিত হয় না। রাবণ বানরদিগকে এবং হনুমান্ প্রভৃতি বানরেরাও দশা-ননকে প্রহার করিতে আরম্ভ করিল। দাশর্থী জ্ঞানে জ্বাস্ত্র বর্ষণ ছারা রাক্ষ্সরাজ্যের রথ, ধ্বজা, অশ্ব, সারথি, ধনু ও বাহু ছেদনপূর্বক তাহার শিরশ্ছেদ করিতে আরম্ভ করিলেন: কিন্তু রক্ষপতির মস্তক যতবারই ছেদিত হয়, ততবারই পুনঃপুনঃ সমুদ্ভুত হইতে লাগিল; রযুপতির বিস্ময়ের পরিদীমা রহিল না। অবশেষে তিনি ব্রহ্মান্ত প্রয়োগ দারা তাহার হৃদয় ভেদ-পূর্ব্বক ধরাশায়ী করিলেন। তথন রাক্ষসমহিলার। রাবণশোকে বিহ্বলা হইয়া মুক্তকণ্ঠে রোদন করিতে আরম্ভ করিল ; বিভীষণ রামের আদেশানু-সারে তাহাদিগকে প্রধােধ প্রদান করিয়া ডেনঠের দেহসংকার স্থসম্পন্ন করিল। অনস্তর রাম দীতাকে আনয়নপূর্বক আগ্লিতে বিশুদ্ধ করিয়া গ্রাহণ করি-লেন। তৎকালে ইন্দ্রাদি যাবতীয় দেহভানাই তথায় সমাপত হইনা রামের স্তৃতিবাদ করিতে

লাগিলেন। ইন্দ্র কহিলেন, হে প্রভো! ভূমি। বৈকুণ্ঠনাথ বিষ্ণু, তুমি ত্রন্ধার প্রার্থনায় রাক্ষসকুল নিহত করিবার জন্ম দশরথের গৃহে অবভীর্ণ ইই-য়াছ: তোমাকে নমস্বার।

গুরপতি এইরূপে রঘুবরের স্তব করিয়া অমৃত-সিধন দারা মৃত বানরদিগকে পুনক্ষীবিত করি-লেন। অনন্তর রাম যথাবিধানে দেবগণের অভ্যর্থনা করিলে তাঁহারাও স্ব স্ব ধামে প্রস্থিত হইলেন।

তদনন্তর দাশরথী, বিভীষণকে লঙ্কার রাজপদে প্রতিষ্ঠিত করিয়া সীতাসহ পুষ্পকারোহণপূর্বক অবোধ্যার যাত্রা করিলেন। গমনসময়ে প্রকুল-চিত্তে দেবী জানকীকে বনতুর্গাদি প্রদর্শন করিতে করিতে চলিলেন। ক্রমে ক্রমে ভরম্বাজাশ্রমে উপ-নীত হইয়া তাঁহাকে নমন্ধারপূর্ব্বক নন্দীগ্রামে স্মা-গত হইলে ভরত বিনয়াবনত হইয়া তাঁহার চরণ বন্দনা করিলেন। অবশেষে জানকীনাথ অযো-ধ্যায় উপনীত হইয়া বশিষ্ঠ, কৌশল্যা, কেক্ষ্নী, স্থমিত্রা প্রভৃতি গুরুজনের চরণ বন্দনাপূর্ববন্ধ রাজ-পদে অভিধিক্ত ইইলেন। তিনি রাজপদে প্রতি-ষ্ঠিত হইয়া স্তৃতনির্কিশেষে প্রজাপালন, ছুষ্টের দমন এবং বহুবিধ যজ্ঞাদি সাধন করিতে লাগি-লেন ৷ তাঁহার শাসনসময়ে বস্তমতী শস্তপূর্ণা ও প্রজাগণ একান্ত ধর্মপরায়ণ ছিল, তৎকালে রাম-রাজ্যে অকালমূত্যুর নাম্মাত্রও শ্রুতিগোচর হইত না।

ইত্যাদিনহাপুধাৰে আংগ্ৰের রামায়ণে যুদ্ধকাগুৰণন ন(মক দশম অধ্যায় সমাও ।

একাদশ অধ্যায়।

হইলে একদা অগস্ত্য প্রভৃতি ঋষিগণ অঘোধ্যায় সমাগত হইলেন। ভাঁহারা রামকর্তৃক স্থপুঞ্জিত হইয়া কহিলেন, হে দাশরথে! ভুমি ইন্দ্রজিৎ প্রভৃতি রাক্ষদগণকে নিহত করিয়া পরম বিজয় লাভ করিয়াছ, তুর্মিই ধ্যা। যদি রাবণাদির উৎ-পত্তি বিবরণ অবগত হইতে বাদনা হয়, বর্ণন করি-তেছি, প্রাবণ কর।

ব্ৰহ্মা হইতে পুলন্ত্য এবং পুলন্তা হইতে বিশ্রবার উৎপত্তি হয়। বিশ্রবার চুই পত্নী: একের নাম পুষ্পোৎকটা, দিতীয়ের নিক্ষা। পুষ্পোৎ-কটার গর্ভে ধনেশ্বর কুবের এবং নিক্ষার গর্ভে বিংশতিবাছ রাবণ, কুন্তকর্ণ, বিভীষণ ও শূর্পনখার জন্ম হয়। রাবণ ত্রন্মার বরে দর্পিত হইয়া দেব-গণকে পর্য্যন্ত পরাস্থৃত করে; কুন্তুকর্ণ অধিকাংশ সময়ই নিজায় অভিবাহিত করিত এবং বিভীষণের ধর্মনিষ্ঠা সূর্ববত্র প্রসিদ্ধ ছিল। স্বরং স্বরপতিও যাহার নিকট পরাস্থত হইয়াছিলেন, সেই মেঘনাদ রাবণের পুত্র; মেঘনাদ রাবণ অপেকাও সমধিক বলসম্পন্ন, ইদ্রুকে পরাজিত করাতেই তাহার নাম ইন্দ্রজিৎ ছয়। দেবগণের হিতার্থ মহাত্মা লক্ষণ তাহাকে নিপাতিত করিয়াচেন।

মহর্ষিরা এই বলিয়া মৌনাবলম্বন করিলে রামচক্র যথাবিধানে তাঁহাদিগের পূজাবিধান করিলেন। তখন তাঁহারা বিদায় গ্রহণপ্রব্রক প্রফুল্লচিতে স্ব স্ব স্থানে প্রস্থিত হইলেন।

অন্তর শক্রুত্ব রামের আদেশে লবণনামা অস্তরকে নিপাতিত করিয়া মধুরানালী নগরী শংকাপিত করিলেন। সিমুতীরনিবাসী চুই-গন্ধর্ক শৈল্য ও তিন কোটি শৈল্যপুত্র ও ভরত-প্রযুক্ত নিশিত শরাঘাতে প্রণীড়িত হট্যা দেহ নারদ কহিলেন, রাম রাজপদে প্রতিষ্ঠিত বিদর্জ্জন করিল।ভরত তথায় তক্ষণিলা ও পুঞ্চরা-

বতী নামক নগরীদ্বয় সংস্থাপনপূর্ব্বক স্বীয় পুজ্রদ্বয়কে তত্ত্বত্য আধিপত্ত্যে নিযুক্ত করিয়া শক্তম্ম
সমভিব্যাহারে পুনরায় রামসকাশে সমাগত হইলেন। ভরতনন্দন তক্ষ তক্ষশিলা ও পুক্ষর
পুদ্ধরাবতী শাসন করিতে লাগিলেন।

এই প্রকারে রযুপতি রামচন্দ্র তুষ্টের দমন ও শিষ্টের পালনপূর্বক রাজ্যশাসন করিতে লাগি-লেন। কিয়ৎকাল অতিবাহিত **হইলে লোকাপ**-বাদভয়ে অগত্যা দীতাকে পরিত্যাগপূর্বক বাল্মী-কির আশ্রমে বনমধ্যে নির্কাসিত করিলেন। তথায় জানকীর গর্ভে কুশ ও লব নামে ছুইটা অমু-পম রূপবান্ কুমার সমুৎপন্ন হইল। কুমারছয় দিন দিন পরিবর্দ্ধমান হইয়া রামচরিত গানপুর্বক ইতন্ততঃ পরিভ্রমণ করিতে লাগিলেন। অবশেষে বাল্মীকি তাঁহাদিগকে সমভিব্যাহারে করিয়া রামের নিকট আগমনপূর্বক সমস্ত পরিচয় প্রদান করিলেন। তথন রঘুবর পুত্রছয়কে সাম্রাজ্যে অভিষিক্ত করিয়া ধ্যানবলে মানবদেহ পরিত্যাগ-পুৰ্বাক বৈৰুপে প্ৰশ্বিত হইলেন। অনুজগণ ও পৌরবর্গ সকলেই ভাঁহার সহিত দেহ বিস্জুন করিয়া ত্রিদিবধামে গমন করিলেন। সীতানন্দন কুশ ও লব সমৃদ্ধিসম্পন্ন সাম্রাজ্য প্রাপ্ত হইয়া পশ্মান্ডসারে প্রজাপালনে প্রবৃত্ত इहेटलम्। তে তাপদগণ। এইরূপেই রামচক্র দশসহত্র দশ শত বংসৰ সাম্রাজ্য শাসন ও বিবিধ যজাতুলীন-পুকাক ফ্রনীতল পরিহার করিয়া **স্বধানে প্রস্থান** করেন।

অগ্নি কহিলেন, মহিষ বাল্মীকি নারদমুখে শ্রেবণ করিয়া যে রামায়ণ প্রণয়ন করেন, উহা ফুনিস্তীর্ণ, তাহাতে মানতীয় বিষয় সবিস্তার কীর্ত্তিত আছে। রামায়ণকথা প্রবণ করিলে অথিল প্রাপ- রাশি বিধ্বংসিত ও অন্তিমে স্বর্গগতি লাভ হইয়া থাকে।

> ইত্যাদিমহাপুরাণে আঘেরে বামারণে উত্তরকাণ্ড-বর্ণন নামক একাদশ অধ্যার সমাপ্ত।

দ্বাদশ অধ্যায় i

অগ্নি কহিলেন, এক্ষণে হরিবংশ বর্ণন করি-তেছি, শ্রবণ কর। ভগবান্ এক্ষা বিষ্ণুর নাভি-কমল হইতে সমুৎপন্ন হন ; ব্ৰহ্মা হইতে অতি. অত্রি হইতে দোম, দোম হইতে পুরুরবা, পুরুরবা হইতে আয়ু, আয়ু হুইতে নহুষ এবং নহুষ হুইতে যযাতি জন্মগ্রহণ করেন। যযাতির ঔরসে ক্লো-চার্য্য-নন্দিনী দেবধানীর গর্ভে যন্ত্র ও ভুর্বাস্ত নামে পুজ্রদ্বয় এবং বৃষপর্ববহুহিতা শর্মিষ্ঠার গর্ভে ক্রন্ত্যু অনুও পুর নামে তিনটা পুত্র উৎপন্ন হয়। যতুর বংশে যাদবগণ জন্মগ্রহণ করেন। তন্মধ্যে বস্তদেবের **উরসে দেবকীর গর্ভে দেবদেব নারায়ণ সমূৎপন্ন** হন; ধরণীর ভারাপনোদন করাই তাঁহার মুখ্য উদ্দেশ্য। দেবকীর সপ্তম গর্ভে নারায়ণের অংশে বলদেব উৎপন্ন হন, কিন্তু বিষ্ণুপ্রযুক্তা যোগনিদ্রা তাঁহাকে রোহিণীর গর্ভে সংজামিত করেন, এই জশ্য বলদেব রোহিণেয় নামে প্রসিদ্ধ হইয়াছেন। অনন্তর দেবকীর অফ্টম গর্ভে ভাত্রমাসে কুফান্টমী তিথিতে নিশীথসময়ে বাস্তদেব চতুভুকি মূর্ত্তিতে অবতীর্ণ ইইলেন। তদর্শনে দেবকী ও বস্তদেব হরির স্তব করাতে তিনি সে মৃত্তি তিরোহিত করিয়া দ্বিবাহু রূপ পরিগ্রহ করিলেন। কোন সময়ে কংসের প্রতি এই দৈববাণী হইয়া-ছিল যে, "দেবকীর অফ্টমগর্ভজাত সন্তানের হস্তেই মথুরাপতি নিহত হইবেন।" সেই অশ্রীরিণী বাণী শ্রবণাবধিই কংসের হৃদয়ে প্রগাত চিন্তার

উদয় হয়; দে দেবকীর গর্ভে সন্তান উৎপন্ন হই-লেই তৎক্ষণাৎ তাহাকে শিলাতলে প্রক্রিপ্ত করিয়া বিনষ্ট করিত। বহুদেব দেই ভয়েই সমুদ্ধিঃ হইয়া কুমার ভূমিষ্ঠ হইবামাত্র তাহাকে লইয়া নন্দালয়ে প্রস্থান করিলেন। ঐ রজনীতেই আর্য্যা দেবী অবিকা যশোদার গর্ভে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। বহুদেব স্বীয় কুমারকে যশোদার ক্রোড়ে রাথিয়া দেই কন্যাটী লইয়া নিজমন্দিরে প্রত্যাবন্ত হই-লেন। এদিকে সদ্যোজাত শিশুর রোদনধ্বনি কর্ণকুছরে প্রবেশ করিবামাত্র নরপতি কংস সদ-ম্রমে দেবকীমন্দিরে সুমাগত হইয়া নবজাত কন্সাটী গ্রহণপ্রবাক শিলাতলে নিক্ষিপ্ত করিল। দেবকী বহুবিধরূপে বিনয়সহকারে নিষেধ করিলেন, কিন্তু কংস কিছুতেই কর্ণপাত করিল না। কংস যেমন নিক্ষিপ্ত করিয়াছে, অমনি বালিকা গগনপথে সমূৎ-পতিত হইয়া কহিল, রে তুরাত্মন্! আমাকে শিলা-পট্টে নিক্ষিপ্ত করিয়া কি করিবি ৷ যিনি তোকে ধ্বংস করিবেন, সেই দেবদেব সর্ব্বভূতেশ্বর ভগ-বান্ বিষ্ণু ভূভারহরণার্থ ধরণীতলে অবতীর্ণ হইয়া গোকুলে পরিবর্দ্ধমান হইতেছেন। বালিকা এই বলিয়াই তিরোহিত হইলেন: তৎকালে ইন্দ্রাদি দেবগণ সেই ক্ষেমন্করীর স্তব করিতে লাগিলেন।

অগ্নি কহিলেন, যিনি বেদগর্ভা, অম্বিকা, ভদ্র-কালী,ভদ্রা,ক্ষেমঙ্করী ও বহুভুজা নামে প্রদিদ্ধা,িমিনি নরপতি কংসকে ভয়প্রদর্শনপূর্বক গগনপথে তিরো-হিত হইলেন, সেই আর্য্যা তুর্গা দেবীকে নুমক্ষার।

যিনি একাপ্রহাদরে ভক্তিসহকারে জিসন্ধা এই ক্ষ্ণচরিত অধ্যয়ন বা শ্রবণ করেন, তাঁহার যাবতীয় মনোরথ হাসিদ্ধ হয়। # এদিকে বহুদেব রাম-কৃষ্ণ কুমারছয়কে স্যত্থে
রক্ষা করিবার জন্য যশোদাপতি নন্দের করে স্মপ্রিক করিলে গোপরাজও বালকয়ুগলের পরিরক্ষণে
নিযুক্ত রহিলেন। রামকৃষ্ণ দিন্দিন পরিবর্জমান
হইয়া গোপালগণের সহিত গোরক্ষণ পূর্বক আনন্দে বিচরণ করিতে লাগিলেন। আহা! বাঁহারা এই নিখিল বিশ্বের প্রতিপালক, তাঁহারা ধরণ্টতলে মানবকুলে অবতীর্ণ হইয়া গোপালরূপে দিন্যাপন করিতে লাগিলেন।

কংস ক্ষেমহুরীর মুখে আত্মবিনাশসংবাদ শ্রবণ করিয়া নিরন্তর কৃষ্ণবিনাশের উপায় চিন্তা করিতে লাগিল। দে বাহ্নদেবের নিধনার্ব পৃতনাদিকে গোকুলে প্রেরণ করিল, কিন্তু কিছুতেই কৃত্কার্য্য হইতে পারিল না। পৃতনা বিষমিঞাত স্তন পান করাইয়া কৃষ্ণকে বিনষ্ট করিবার উদ্যোগ করাতে কৃষ্ণ বাল্যকালেই সেই বলশালিনীকে শমনভবনে প্রেরণ করিলেন। একদা যশোদা উদুখলে বন্ধন করিয়া রাথিয়াছিলেন, কিন্তু তিনি বন্ধ হইয়াও অবলীলাক্রমে যমলার্জ্জন ভগ্ন ও পাদ-ক্ষেপ ছারা শকট পরিবৃত করিয়া ফেলিয়াছিলেন। একদা বাস্থদেব বুন্দাবনে গমনপূর্বক যমুনাহ্রদবাসী কালীয়কে দমন করিয়া তাহাকে সমুদ্রগর্ভে নির্বা-সিত করিলেন। তিনি অরিষ্ট, রুষভ 😘 হয়রূপী কেশী দানবকৈ ধ্বংস করিয়া গোকুলে শক্তোৎসব নিবারিত করেন; সেই কারণে দেবরাজ সংক্রেদ্ধ ছইরা মুধলধারে বারিবর্ষণ ছারা গোকুল বিনাশে কৃতসংকল্প হইলে একিক্ষ এক হত্তে গোৰদ্ধন গিরি ধারণপূর্বক গোকুলবাদীদিণের রক্ষাবিধান করেন। তথন মহেন্দ্র সবিনয়ে বাস্থ্যদেবের স্তব করিলে ভগ-ৰান্ত প্ৰসন্ন হইয়া পুনরায় ইচ্ছোৎসব প্রচারিত कत्रित्तन । त्मरे महावन वास्ट्रास्ट्र हर्छरे (ध्यूक

কোন কোন হন্ত নির্থিত পুন্তকে এই ক্লে ছাদল অধ্যায়
 পরিনমাপ্ত দেখা যায়।

ও গৰ্দভনামা দানবদ্বয় বিনিপাতিত হওয়াতে প্ৰদিদ্ধ তাল্বন নিৰুপদ্ৰব হইয়াছিল।

অনন্তর কংদ ক্লফকে স্বীয় রাজধানীতে আনয়নপূর্বাক তাঁহাকে নিহত করিতে কৃতসংকল্প হইয়া অক্রকে গোকুলে প্রেরণ করিল। মহা-মতি কৃষ্ণভক্ত অক্রুর রাজার আদেশ প্রাপ্তমাত্র হরিসকাশে সমুপনীত হইয়া যথাবিধানে স্তুতিবাদ করিলে কৃষ্ণ ও বলদেব তৎসহ রথারোহণপূর্ব্বক মথুরায় যাত্রা করিলেন। এমন সময়ে জীড়মান গোপিকাগণ সতৃষ্ণনয়নে গোপীনাথের দিকে দৃষ্টি-পাত করিয়া রহিল। পথিমধ্যে এক রজক অত্যুত্তম বস্ত্রাদি লইয়া গমন করিতেছিল, কুঞ তাহার নিকট পরিধানার্থ বসন প্রার্থনা করিলেন. কিন্তু সে তৎপ্রদানে অসম্মত হওয়াতে কুঞ তাহাকে নিপাতিত করিয়া অভিমত পরিচ্ছদ গ্রহণ-পূর্বক উভয় ভাতা পরিধান করিলেন; মালা-কারের নিকট মাল্য প্রার্থনা করিবামাত্র সে তাহা প্রদান করিল, বাফ্রদেবও তাহাকে অভিলমিত বর প্রদান করিলেন। একটি বৃদ্ধ কুজা অমুলেপনাদি লইয়া গমন করিতেছিল, কৃষ্ণ মধুরস্বরে সম্বোধন করিয়া তাহার নিকট গন্ধাদি প্রার্থনা করিলেন; র্দ্ধাও হরির রূপলাবণ্য ও শ্রুতিফ্থকর স্থমধুর সন্বোধন প্রবৃত্ত হইয়া অনুদেপন প্রদান করিল; বাস্তদেব তৎপ্রতি প্রদন্ম হইয়া তাহাকে ঋজুশরীরা ও পরমরূপবতী করিয়া দিলেন।

এই প্রকারে রামকৃষ্ণ সূই জনে নানাবিধ বেশভূষায় বিভূষিত হইয়া কংসালয়ের ছারদেশে উপনীত হইলেন। তথায় কুবলয়াপীড় নামে মন্ত মাতঙ্গ বিদ্যমান ছিল। কৃষ্ণ তাহাকে নিহত করিয়া বলদেব সমভিব্যাহারে রঙ্গমধ্যে প্রবেশ করিলেন। কংস ও মঞ্চোপরিস্থ সকলে সবিশ্বয়ে তাঁহাদিগের প্রতি নেত্রপাত করিয়া রহিল। অন-ন্তর তথায় ভুমুল সংগ্রাম সংঘটিত হইল; সেই মুদ্ধে মহাবল চাণুর ও মুষ্টিকনামা মল্ল কৃষ্ণ ও বল-দেবের করে নিহত হইয়া ধরাশায়ী হইল। শেষে হরি মথুরাপতি কংদকে ধ্বংদ করিয়া তৎ-পিতা উগ্রসেনকে রাজপদে প্রতিষ্ঠিত করিলেন। তংপরে জরাদক্ষ মধুরাপুরী অবরোধ করিলে যাদবগণের সহিত ভাহার ঘোরতর সংগ্রাম সংঘ-টিত হইল ; বহুযুদ্ধের পর জরাসন্ধ কুঞ্চের করে পরাজিত, হইলেন। অবশেষে বাহুদেব গোমন্তক, পৌণ্ডুক প্রভৃতি ভ্রমণপূর্ব্বক মনোহারিণী দারকা-নগরী সংস্থাপনপূর্বক যাদবগণে পরিবৃত হইয়া তথায় অধিবসতি করিতে লাগিলেন। এই প্রকারে কিয়ৎকাল অতিবাহিত হইলে তিনি নরকাম্বরকে বিনিপাতিত করিয়া তৎকর্ত্তক আনীত দেব গন্ধর্ক ও যক্ষকন্যাগণকে বিবাহ করিলেন। এই প্রকারে তাঁহার যোড়শ সহস্র সামান্য। স্ত্রী ও কুক্মিণী প্রভৃতি অউসংখ্যক প্রধানা মহিষী হইল। নর-কারি বাস্তদেব সত্যভামা সমভিব্যাহারে গরুড়া-**শ্লোহণপূর্ব্বক ইন্দ্রকে পরাজিত করি**য়া পারিজাত স্থানয়ন করত সত্যভামার গৃহে সংস্থাপিত করেন। তিনি পঞ্জন দৈত্যকে পরাজিত করত যম কর্ত্তক স্থপুজিত হইয়া সান্দীপনিকে তাঁহার মৃতপুত্র পুন-জ্জীবিতাবস্থায় প্রদান করিলেন। চুর্দান্ত কাল-যবন সেই সর্বজন-বন্দনীয় কৃষ্ণের হন্তে নিহত হইয়াছিল; মুচুকুন্দ বাস্থদেবের প্রতি অকপট ভক্তি প্রদর্শন করিত। বাস্থদেব পিতা বস্থদেব, क्रममी (मक्की ७ विश्वशंशतक बर्फमा क्रिएजन।

বলদেবের ঔরসে রেবতীর গর্ভে নিশঠ ও উল্মুক নামক পুত্রস্বয় এবং কৃষ্ণের ঔরসে জাম্ব-বতীর গর্ভে শাম্ব, রুশ্মিণীর গর্ভে প্রত্যুদ্ধ ও অফ্রান্ড নারীর গর্ভে বহুদংখ্যক পুত্র সমুৎপন্ন হয়। প্রত্যুদ্ধ যে দিবস ভূমিষ্ঠ হন, তাহার ষষ্ঠ দিবসে শদরাহ্মর বালকটিকে হরণ করিয়া সমুদ্রগর্ভে নিক্ষিপ্ত করে; অমনি একটি মৎস্থা শিশুটিকে গ্রাস করিল।

একদা কোন ধীবর মৎস্ত ধরিতে ধরিতে সেই
মংস্তাটিকে প্রাপ্ত হইয়া শম্বরকে প্রদান করিলে
শম্বরও মারাবভীকে সমর্পণ করিল। মারাবভী
মৎস্তামধ্যে প্রত্যামকে প্রাপ্ত হইয়া স্বপতি জ্ঞানে
আদরপূর্বক প্রতিপালন করিতে লাগিলেন। এই
প্রকারে কিয়দিন অতিবাহিত হইলে য়ায়াবভী
প্রত্যামকে সম্বোধন. করিয়া কহিলেন, হে নাথ!
তুমি আমার পতি কাম, পূর্বে দেবদেব শশাস্কশেখরের কোপানলে অনঙ্গ হইয়াছিলে; আমি
তোমার পত্নী, এই তুরায়া শম্বর আমাকে হরণ
করিয়া লইয়া আদিয়াছে; অতএব তুমি ইহার
বধ সাধন কর।

প্রত্যন্ত্র মায়াবতীর এই বাক্য শ্রবণপূর্বক শহরকে নিহত করিয়া ভার্য্যাসহ পিতার নিকট সমাগত হইলেন, পুত্রকে সমুপনীত দেখিয়া কৃষ্ণ ও রুঝিগার আনন্দের পরিসীমা রহিল না। অনন্তর্ম প্রত্যন্ত্রের উরসে মায়াবতীর গর্ভে অনিরুদ্ধ জন্ম পরিগ্রহ করিলেন। বলির জ্যেষ্ঠ পুত্র বাণরাজ্ঞ প্রত্যাকে বন্ধনশালায় নিক্ষেপ করিয়াছিল। নারদ্রপ্রথাৎ এই সংবাদ প্রাপ্ত হইয়া কৃষ্ণ যাদবগণ-সমভিব্যাহারে আসিয়া বাণনগরী অবরোধ করিলেন। অনন্তর পর্মশৈব বাণরাজ শিবকে স্মরণ করিবামাত্র শিব, নন্দী, বিনায়ক, ক্ষন্দ প্রভৃতি সমভিব্যাহারে ভজের মনোরথ সিদ্ধ করিতে আগমন করিলেন। অনন্তর পর্বাহার উভয়দলে ভীষণ-সংগ্রাম আরম্ভ হইল। বছক্ষণ মুদ্ধের পর কৃষ্ণ

জ্ঞণান্ত ঘারা শান্তরী সেনা বিষুদ্ধ করিলেন এবং বাহ্ণদেবের নিশিত শর-প্রহারে বাণের সহস্র বাহ্ ছেদিত হইয়া গেল। তখন বাণ ভীতিবিহল হইয়া ক্ষেত্র শরণাগত হইল, শিবও ক্ষুস্কাশে ভক্তের জন্ম অভয় প্রার্থনা করিলেন। কৃষ্ণ তৎ-প্রার্থনায় সম্মত হইয়া বাণকে অভয় প্রদান করিলেন। তদবধিই বাণ দ্বিবাহু ধারণপূর্বক কাল্যাপন করিতে লাগিল। অনন্তর দেবদেব শঙ্কর ক্ষুক্তে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, বাণ আমার পরম ভক্ত, তুমিও উহাকে অভয় প্রদান করিলে। তোমাতে আমাতে কিছুমাত্র প্রভেদ নাই, যে ব্যক্তি আমাদিগের উভয়কে বিভিন্ন জ্ঞান করিবে, অভিমে তাহাকে নিরয়গানী হইতে হইবে সম্পেহনাই।

অনন্তর কৃষ্ণ শিবাদি কর্ত্ব প্রপৃত্তিত হইয়া
অনিক্লম, উষা ও যাদবগণসমভিব্যাহারে দারকায় গমনপূর্ব্বক বিহার করিতে লাগিলেন।
তিনি বিবিধ মূর্ত্তি ধারণপূর্ব্বক ক্রমিণী প্রভৃতি
রমণীগণের সহিত আমোদপ্রমোদে কালাতিপাত
করিতেন। অনিক্লম বক্ত নামে একটি পুত্র লাভ
করেন। বলদেবের করে প্রলম্ব নিহত হইয়াহিল। এই যাদববংশে যে কত সন্তান সন্ততি জন্মগ্রহণ করিয়াছিল, তাহার সংখ্যা করা স্কুরহ।

অগ্নি কহিলেন, ভক্তিসহকারে হরিবংশ অধ্য-য়ন করিলে ইহলোকে প্রাপ্তকাম হইয়া অন্তিমে হরিসাযুক্ত্য লাভ করা যায়।

> ইত্যাদিমহাপুরাণে আধ্যেত হরিবংশবর্ণন নামক হাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

ত্ত্যোদশ অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, বিনি ভূভারহরণার্থ পাশুব-গণকে নিমিতস্বরূপ করিয়াছিলেন, যাহাতে সেই কৃষ্ণের মাহাত্ম্য সবিশেষ বর্ণিত আছে, অধুনা সেই মহাভারত কীর্ত্তন করিতেছি, প্রবণ কর।

সর্ব্জনবন্দনীয় বৈকুণ্ঠনাথ বিষ্ণুর নাভিক্মল হইতে একা সমুৎপন্ন হন। একা হইতে অতি, <u>অত্রি হইতে সোম, সোম হইতে বুধ, বুধ হইতে</u> পুরুরবা, পুরুরবা হইতে আয়ু, আয়ু হইতে নছ্য, ৰহুষ হইতে য্যাতি এবং য্যাতি হইতে পুৰু সমূৎ-পন্ন হন। পুরুর বংশে ভরত এবং তদনস্তর মহীপতি কুরু জন্ম পরিগ্রহ করেন। কুরুবংশেই নরপতি শান্তসুর জন্ম হয়। শান্তসুর ঔরসে গঙ্গার গর্ভে মহামতি কুষ্ণপ্রবীর ভীম্ম জন্মগ্রহণ করেন। এতদ্যতিরেকে সত্যবতীর গর্ভে শাস্তমুর আরও তুইটি পুত্র ক্লয়ে: তাঁহারা চিত্রাঙ্গদ ও বিচিত্ৰবীৰ্যা মামে অভিহিত। কাল্ড্ৰেমে শান্তমু স্বর্গগমন করিলে ভীম ধর্মাতুসারে প্রজাপালন করিতে লাগিলেন: কিন্তু তিনি যাবজ্জীবন দার-পরিগ্রহ করেন নাই এবং রাজ্যভোগেও তাঁহার কিছুমাত্র স্পৃহা ছিল না; কেবলমাত্র অফুল-দিগের জভাই রাজ্যপালন করিতে লাগিলেন। চিত্রাঙ্গদ বাল্যকালেই জীবন বিসর্জ্জন করেন। বিচিত্রবীর্য্যের তুই ভার্য্যা: একের নাম অফিকা, দিতীয়ের অমালিকা। তাঁছারা উভয়েই কাশী-রাজের নন্দিনী। বীরবর ভীম্ম সংগ্রামে কাশী-পতিকে পরাভূত করিয়া ঐ কন্মাঘয়কে আনয়ন করিয়াছিলেন। কিন্তু বিচিত্রবীর্য্য অত্যন্ত্রকাল মধ্যেই যক্ষারোগে আক্রান্ত হইয়া কলেবর পরি-ত্যাগ করিলেন ।

অনন্তর সত্যবতীর অনুমত্যন্দারে মহামতি ব্যাসদেব অন্ধিকার গর্ভে ধৃতরাষ্ট্রকে এবং অন্ধালিকার গর্ভে পাঞ্কে সমুৎপন্ধ করেন। ধৃতরাষ্ট্র হইতে গান্ধারীর গর্ভে ছুর্য্যোধনাদি এক শত পুত্র সমুৎপন্ধ হয়। নরপতি পাণ্ড্ অ্যাপনিবন্ধন শতশৃত্বাপ্রমা ভার্য্যা মাদ্রীর সহিত সহবাস করিয়া দেহ বিসর্জ্ঞন করেন। তৎপূর্বের তদীয় ভার্য্যা কৃত্তীর গর্ভে ধর্ম হইতে মুথিন্তির, বায়ু হইতে ভীম, ইন্দ্র হইতে অর্জ্জ্ম এবং মাদ্রীর গর্ভে অ্যামিনীকুমার হইতে নকুল ও সহদেব নামক মমজ পুত্রন্ধয় উৎপন্ধ হন। কৃত্তী কন্সকাবস্থায় সূর্য্যের ওরসে কর্ণকে পুত্র লাভ করিয়াছিলেন। কর্ণ নির-স্তর ছুর্য্যোধনের আঞ্রয়েই অবন্থিতি করিতেন।

অনস্তর দৈবযোগে কুরুগণের সহিত পাগুব-দিগের স্থমহৎ শক্রতা সঞ্জাত হইল। কুমতি ভূর্য্যো-ধন পাগুবদিগকে বিন্ট করিবার অভিলাষে তাঁহা-দিগকে জতুগুহে প্রবেশিত করিয়া তাহাতে অগ্নি প্রদান করে, কিন্তু পাণ্ডবেরা তাহা জানিতে পারিয়া জননীসমভিব্যাহারে পলায়নপুর্বক এক-চক্রা নগরীতে গমন করত মুনিবেশে এক ভ্রাক্ষণের গুহে অবস্থিতি করেন এবং তথায় বক রাক্ষদকে বিনষ্ট করিয়া দ্রোপদীর স্বয়ম্বর দক্ষর্শনার্থ কুড়-হলী হইয়া পাঞ্চালনগঙ্গে উপনীত হইলেন। ज्थान्न लक्ना एक पूर्वक भाका लगमिनी (फोभमी क লাভ করেন। অবশেষে তাঁহারা জীবিত আছেন আবণ করিয়া ভূর্য্যোধন তদীয় ভাতৃগণের পরা-মর্শামুসারে রাজ্যার্দ্ধ প্রদান ক্ররিয়াছিলেন। মহা-বল পার্থ ছতাশনের নিকট হইতে দিব্য গাঙীব ধ্যু, অসুত্রম রথ ও অক্ষয় ভূগীর এবং দ্রোণসকাশে ব্ৰহ্মান্ত প্ৰভৃতি প্ৰাপ্ত হন। সৌভাগ্যবশে বাহ-দেব তাঁহার সার্থিত্ব স্বীকার করিয়াছিলেন।

অর্জ্জন একমাত্র কৃষ্ণের সহায়তাবলেই অবিরল শরবর্ষণ দারা ইন্দ্রন্তি নিবারিত করত থাগুবদাহন-সময়ে অনলদেবের ভৃপ্তি-বিধান করিয়াছিলেন।

এই প্রকারে পাওবগণ দশদিক্ জয়পূর্ব্বক অর্থ-রাশি সংগৃহীত করিলে, ধর্মরাজ যুধিন্ঠির রাজসূয় যজের অন্থঠান করিলেন, কিন্তু প্রমৃতি প্র্য্যোধনের অন্তরে তাঁহার সে উন্নতি সহ্ হইল না। সে ভাতা ভংশাসন ও মহাবল কর্ণের পরামর্শ অনুসারে যুধিন্তিরকে শকুনির সহিত দৃতিক্রীড়ায় নিযুক্ত করিল। ধর্মণীল জ্যেষ্ঠপাণ্ডব, শকুনির মায়াপ্রভাবে হুত্-রাজ্য ও হৃতসর্ববিশ্ব হইয়া অবশেষে প্রক্রিজ্মারে ঘাদশ বৎসরের জন্ম ভাতৃগণসমভিন্যাহারে অরণ্যে গমন করিলেন। পুরোহিত ধোম্য ও ভার্যাা জ্যোপদীও তাঁহাদিগের সমভিন্যাহারে ছিলেন। বনবাসী হইলেও পূর্ববিৎ অন্তালীতি সহত্র ব্রাহ্মণ পাণ্ডবগণের নিকট প্রত্যহ ভোজন প্রাপ্ত হইতেন।

এই প্রকারে নিয়মিত কাল অতিবাহিত হইলে এক বৎসর অজ্ঞাতবাসের জন্য পাশুবেরা ভার্যা-সমভিব্যাহারে বিরাটভবনে যাত্রা করিলেন। তথায় উপনীত হইয়া য়ৄধিষ্ঠির কক্ষনামা দ্বিজ, ভীম সূপ-কার, অর্জুন রহয়লা এবং নকুল ও সহদেব অম্মালাধ্যক্ষ হইয়া রহিলেন; দ্রৌপদীও সৈরিস্ক্রীনামে পরিচিতা হইয়া বিরাটের অন্তঃপুরে অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। একদা ছুর্ব্ভ কীচক দ্রৌপদীর সতীত্বিনাশে সমুদ্যত হইলে ভীমসেন সকলের অজ্ঞাতসারে নিশীৎসময়ে সেই ছুরাত্মার প্রাণ বিনাশ করিলেন।

এই প্রকারে কিয়দিন সমতীত হইলে কোরবেরা বিরাটের গোগৃহে সমুপদ্থিত হইয়া গোধনাদি হরণে সমৃদ্যত হইলে বহন্নলারূপী ধনঞ্জয়
ভাঁহাদিগকে পরাভূত করেন; ভাঁহার যুদ্ধকোশল

সন্দর্শন করিয়া কৌরবগণ পাশুব বলিয়া জানিতে পারিয়াছিলেন।

এইরপে এক বংসর অজ্ঞাতবাস পরিসমাপ্ত হইলে বিরাট নরপতি পাশুবগণের পরিচয় প্রাপ্ত হইয়া যার পর নাই আনন্দিত হইলেন এবং প্রীতি সহকারে উত্তরা নাল্লী স্বীয় কন্সাকে অভিমন্ত্যুর করে সমর্পণ করিলেন। অভিমন্ত্যু অর্জ্বনের উরসে কৃষ্ণভগিনী স্বভদ্রার গর্ভে জন্ম পরিগ্রহ করেন।

এদিকে ধর্মরাজ মুধিন্তির সংগ্রামার্থ সপ্ত আকোহিণী দেনা ও তুর্য্যোধন একাদশ আকোহিণী দেনা সংগ্রহ করিলেন। অনন্তর কৃষ্ণ দূতরূপে তুর্য্যোধনসকাশে সম্পন্থিত হইয়া মুধিন্তিরের জন্ম রাজ্যের অর্জাংশ অথবা পাঁচটা গ্রাম প্রার্থনা করিলেন, কিন্তু তুর্য্যোধন কহিলেন, "হৃতীক্ষ সূচ্যপ্র ছারা যে ভূমি বিদ্ধ হয়, আমি বিনা মুদ্ধে তাহাও প্রদান করিব না।" হৃযোধনপ্রমুখাৎ এই বাক্য প্রবণপূর্বক বাহুদেব বিত্রর কর্ত্তক সমর্ক্তিত হইয়া তাঁহাকে স্বীয় বিশ্বরূপ প্রদর্শন করিলেন এবং মুধিন্তিরের নিকট প্রত্যাগত হইয়া সমন্ত আদ্যোপান্ত বর্ণনপূর্বক মুদ্ধের উদ্যোগ করিতে কহিলেন, হৃতরাং ক্রমে ক্রমে ভীষণ সংগ্রামের সঙ্কা হইতে লাগিল।

ইত্যাদিমহাপ্রাণে আধ্যেরে আদিপ্রাদিরুর্নন নামক অন্যোদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুর্দ্ধণ অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, অনন্তর যৌধিষ্ঠিরী ও দৌর্যাধনী সেনা কুরুক্ষেত্তে সমাগত হইয়া পৃথক্ পৃথক্
বৃহহু সন্নিবেশ করিল। কৌরবপক্ষে ভীমা, দ্রোণ
প্রভৃতি গুরুজনকৈ সন্দর্শন করিয়া পার্থের অন্তর

হইতে যুদ্ধবাসনা দূরীভূত হইল। তিনি মনে মনে কহিতে লাগিলেন যে, এ যুদ্ধে শ্রেমালাভের কোন সম্ভাবনাই দেখিতেছি না, বরং অনিষ্টেরই সূচনা নিরীক্ষিত হইতেছে, কারণ যাহাদিগের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইব,সকলেই আত্মীয় ও গুরু; অভএব যুদ্ধে বিরত হওয়াই স্ক্তিভোবে বিধের।

এদিকে আর্জ্মসারথি বাস্থদেব ধনপ্লয়ের অভিপ্রায় পরিজ্ঞান্ত ইইয়া কহিলেন, হে সথে! ভীল্প, দ্রোণ প্রকৃতির জন্ম শোক প্রকাশ করা সমূচিত নহে, কারণ শরীরই বিনশ্বর, কিন্তু আত্মার বিনাশ নাই। আত্মা পরক্রম স্বরূপ, আত্মাকে ব্রহ্ম জ্ঞান করাই উচিত; তোমার অন্তাঘাতে যাহারা রণশায়ী হইবে, তাহাদিগের শরীর বিনক্ত হইয়া যাইবে, কিন্তু আত্মার কোনরূপ অনিক্ত হইয়া যাইবে, কিন্তু আত্মার কোনরূপ অনিক্ত হইবার সম্ভাবনা নাই। ভূমি ক্ষত্রিয়, যুদ্ধই তোমার স্নাত্মন ধর্মে; অভএব দে ধর্ম পরিত্যাগ করিও না। যদি কার্য্যসমূহকে বন্ধনশ্বরূপ বিবেচনা কর, তাহা হইলে যোগী হইয়া সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে স্মান জ্ঞানে তদমুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হও।

কৃষ্ণ এই প্রকারে প্রবোধ প্রদান করিলে অর্জ্বন রথারোহণ পূর্বক স্থুদ্ধে প্রস্তুত্ত হইলেন; চারিদিকে রণবাদ্য বাদিত হইতে লাগিল। মহাবীর ভীম্ম চুর্য্যোধনের সেনাপতিপদে প্রতিষ্ঠিত ছিলেন। অর্জ্বন তাঁহার নিধন-বাদনার শিখণ্ডীকে আপনাদিগের সেনাপতি করিয়া স্বয়ং পশ্চান্তাগে অবস্থিতি পূর্বক মুদ্ধ করিতে লাগিলেন। ধার্ত্তনাষ্ট্রগণ ভাম্মের সহিত দমবেত হইয়া পাগুবদিগের ও শিখণ্ডীর উপর অন্তর্মাজি প্রয়োগ করিতে আরম্ভ করিলেন। শিখণ্ডী ও পাগুবেরাও ধার্ত্তরাষ্ট্রদিগকে প্রহার করিতে প্রস্তুত্ত হইলেন। কুরুপাগুবের মুদ্ধ জামে জামে ভারণ ভীষণ

ইইয়া উঠিল; তদ্দর্শনে অন্তরীক্ষন্ত দেবপণ ও অন্তান্ত দর্শকরন্দের প্রীতির পরিদীমা রহিল না।

এইপ্রকারে অমিতবিক্রম ভীম্ম নয়দিন যুদ্ধ
করিয়া বহুদংখ্যক পাঙ্বদৈন্য বিনিপাতিত করিলেন।অনন্তর দশমদিনে অর্জ্রন শিপ্তীকে পুরোবর্ত্তী
করিয়া ভীম্মের প্রতি অবিরল শরবর্ষণে প্ররন্ত হইলেন। শিখ্তী নপুংসক, হুতরাং নপুংসক দর্শন
পূর্বক ভীম্ম যুবে কান্ত হইয়া অস্ত্র শত্র পরিত্যাগ
করাতে তদীয় ইন্তী, অয়, সেনা প্রভৃতি সমন্তই
বিনক্ট হইল, অবশেষে তিনিও স্বয়ং পরাভুত্ত
হইলেন; কিন্ত ইচ্ছামুত্যু বলিয়া শরবর্ষণে তাঁহার
প্রাণবিয়োগ হইল না। তিনি বহুদিন যাবৎ শরশ্যায় শয়ান থাকিয়া দেবদেব বিষ্ণুকে হৃদয়ে
ধ্যান করিতে করিতে দেহ পরিত্যাগ পূর্বক বহুধামে প্রস্থান করিলেন।

বীরবর ভীম্ম দংগ্রামে পরাস্কৃত ও শরশয্যা-শায়ী হইলে ভুর্য্যোধন একান্ত শোকার্ত হইয়া দ্রোণাচার্য্যকে সেনাপতিপদে প্রতিষ্ঠিত করিলেন। এদিকে ধুষ্টদ্ব্যন্ত্র পাশুবদিগের সেনাপতি হই-লেন। ভাঁহার সহিত ক্রোণের ভুমূল সংগ্রাম সমুপশ্বিত হইল: সেই ভীষণ যুদ্ধে অসংখ্য জীবের প্রাণবিনাশ হওয়াতে বোধ হইতে লাগিল যেন, যমরাজ্য অধিকতর সংবর্দ্ধিত হইতেছে। সেই যুদ্ধে জ্রোণের হস্তে বিরাট ক্রপদ প্রভৃতি বহুদংখ্যক বীর পরাভূত ও নিপাতিত হইলেন। আচার্য্য দ্রোণ অত্যন্তত রণকৌশল প্রদর্শন পূর্ব্যক সমরক্ষেত্রে পরিভ্রমণ করাতে দ্বিতীয় কালের স্থায় শোভা পাইতে লাগিলেন। ধৃউছ্যুদ্ধের করেও ভূর্য্যোধনের বছ্সংখ্যক চতুরঙ্গবল বিনিপাতিভ হইল। এইরূপে তুমুল দংগ্রাম হইতে লাগিল, কিন্তু আচার্য্য কিছুতেই পরাস্ত না হওয়াতে কুঞ

মন্ত্রণা করিয়া ভাঁহার মিধ্যা শোক উপস্থিত করিয়া দেন, তাহাতে ধর্মরাজ যুধিন্তির "অশ্বধামা হত" এই কথা বলিয়াপরে মৃত্যুরে "গজ" শব্দ উদ্ধারণ করিয়াছিলেন, কিন্তু শেষোক্ত শব্দটা আচার্য্যের কর্ণকুহরে প্রবিষ্ট না হওয়াতে তিনি পুত্রশোকে অধীর হইয়া অস্ত্রশস্ত্র পরিত্যাগপূর্বক চারিদিন ভীষণ সংগ্রামের পর পঞ্চম দিবসে ধৃষ্টত্যুন্মের করে দেহ বিদর্জ্জন করিলেন। দ্রোণাচার্য্য নিহত হওয়াতে হুর্য্যোধনের শোকের, পরিসীমা রহিল না, তাঁহার অন্তর একান্ত সমুদ্ধিয় হইয়া উঠিল।

অনন্তর কর্ণ ছুর্য্যোধনের সেনাপতিপর্দে অধিরাচ ছইরা অর্চ্জুনের সহিত যুদ্ধে প্রবন্ত ছইলেন।
কর্ণার্চ্জুনসংগ্রামে উভয়পক্ষীয় বহুসংখ্যক সৈন্ত
বিনক্ত ছইয়াছিল। দেবাস্থর-সংগ্রামের ন্তায় সেই
ভীষণ যুদ্ধ ছুই দিন প্রবর্ত্তমান ছিল। অবশেষে
কর্ণ পার্থের হস্তে ধরাশায়ী ছইলেন। তদনন্তর
শল্য অর্ক্ষদিনমাত্র যুদ্ধ করিয়া যুধিষ্ঠিরের করে
দেহ বিস্ক্তন করিলেন।

তংপরে স্থােধন হতদৈন্ত ইইয়া ভীমদেনের দহিত যুদ্ধে প্রায়ত ইইলে মহাবল রকােদর গদাঘাতে তাহার উক্তঙ্গ করেন এবং তদীয় বহুসংখ্যক অনুজ ও দৈন্যাদিও নিপাতিত করিয়াছিলেন।

এদিকে মহাবল অশ্বথামা পিতৃনিধনজনিত কোথে অধীর হইয়া স্থাইত্যুত্ম ও দ্রোপদীনন্দন-গণের প্রাণসংহার করিলেন। তথন দ্রোপদী পুত্র-বিহীনা হইয়া রোদন করাতে অর্জ্বন ঐষিকান্ত্র প্রয়োগপ্র্বক অশ্বথামার শিরোমণি গ্রহণ করেন। অশ্বথামা অন্ত্রাগ্রিহারা উত্তরার গর্ভ পর্যান্ত বিনাশে সমৃদ্যত হইয়াছিলেন, কৃষ্ণ তাহা রক্ষা করেন। ঐ গর্ভেই মহীপতি পরীক্ষিতের জন্ম হয়। এই প্রকারে কুরুপাওবরণে বছসংখ্যক জীবের প্রাণ বিনক্ত হয়। কোরবপক্ষে কৃতবর্মা, রূপ ও অখথামা এবং পাওবপক্ষে পঞ্চ পাওব, সাত্যকি ও কৃষ্ণমাত্র জীবিত ছিলেন। অনন্তর যুধিষ্ঠির ভীমাদি সহ সমবেত হইয়া শোকাতুরা রমণীগণকে আখাদ প্রদানপূর্বক রণশায়ী বীরদিণের অস্ত্যেষ্টিজিয়া স্থানাহিত করিলেন। তৎকাল পর্যান্তও ভীম শরশযায় শয়ান ছিলেন, যুধিষ্ঠির ভাঁহার নিকট গমনপূর্বক শান্তিপ্রদ রাজধর্ম, মোক্ষধর্ম ও দানধর্ম প্রভৃতি শ্রবণ করিলেন।

অনন্তর ধর্মনন্দন যুধিন্ঠির রাজপদে প্রতিন্ঠিত
হইয়া অশ্বমেধাদি বছবিধ যজ্ঞানুষ্ঠানপূর্ব্বক ব্রাহ্মানদিগকে বিপুল দক্ষিণা প্রদান করিলেন। এইরূপে
কিয়ৎকাল অতিবাহিত হইলে অর্জ্বনের মুখে
যাদবদিগের বিনাশবার্তা প্রবণ করিয়া ধর্মরাজের
শোকের পরিদীমা রহিল না, তখন সংসারে
তাঁহার নির্বেদ উপস্থিত হইল। তিনি অভিমম্যানন্দন পরীক্ষিৎকে রাজপদে প্রতিন্ঠিত করিয়া
অনুজগণসমভিব্যাহারে স্বর্গাতি প্রাপ্ত হইলেন।

ইত্যাদিমহাপ্রাণে আথেরে মহাভারতবর্ণন নামক চতুর্দশ অধ্যার সমাপ্ত !

প্ৰুদশ অধ্যায়।

অমি কহিলেন, যুধিন্তির রাজপদে প্রতিন্তিত হইলে ধৃতরাষ্ট্র গান্ধারী ও কুন্তী সমভিব্যাহারে বনগমনপূর্বক আশ্রম হইতে আশ্রমান্তর পরিশ্রমণ করিতে লাগিলেন। জনন্তর যথাকালে কালধর্ম প্রাপ্ত হইলে মহামতি বিত্র কনজ অমি দ্বারা তাঁহাদিগের দেহসংকার করিলে তাঁহারাও ত্রিদিবধামে প্রস্থান করিলেন।

এই প্রকারে দেবদেব বৈকুণ্ঠনাথ হরি ধর্ম-

সংস্থাপন ও অধর্ম বিনাশার্থ পাওবদিগকে নিমিত্তভূত করিয়া ধরণীর ভার লাঘব করিয়াছিলেন। অনস্তরতিনি বিপ্রশাপচ্ছলে মুষলদারা যাদবকুল নিধনপূর্বাক স্বয়ং দেবাদেশে প্রভাসতীর্থে সমুপনীত
হইয়া কলেবর বিদর্জন করত স্বধামে গমন করিলেন। বস্ততঃ তিনি অবিনাশী এবং ধ্যানিগণের
একমাত্র ধ্যেয়। যিনি কি ইন্দ্রলোক, কি ব্রহ্মলোক, সর্বত্তই পূজনীয়, স্বর্গবাসীরা নিরন্তর যাঁহার
অর্জনা করেন, সেই অনন্তমূর্ত্তি বলভত্রও দেহান্তে
স্বস্থানে প্রস্থান করিলেন।

এই প্রকারে দারকা হরিশৃন্য হওয়াতে জল-নিধি জলরাশি দারা পুরী সংপ্লাবিত করিয়া ফেলি-লেন। অনন্তর ধনপ্রয় যাদবগণের যথাবিধি সৎ-কার দাধনপুর্বক উদকাঞ্জলি প্রদান করিলেন এবং গোপালেরা অফাবক্রের শাপে ভাঁহাদিগের যে সকল রমণীগণকে হরণ করিয়া লইতেছিল, তাঁহা-দিগকে উদ্ধারার্থ যত্ন করিলেন, কিন্তু তাঁহার সমস্ত যুত্রই বিফল হইল। গোপালেরা লগুডমাত্র ছারা অর্জ্রনকে পরাস্ত করিয়া মহিলাগণকে হরণ করিল। তথন অর্জ্বনের শোকের পরিদীমা রহিল না। তিনি মনে মনে বুঝিতে পারিলেন যে, কৃষ্ণ, তিরোহিত হওয়াতে তৎসহ তাঁহার বলও অন্তর্হিত হইয়াছে। অবশেষে তিনি হস্তিনাপুরে সমাগত হইয়া নরপতি যুধিষ্ঠিরের নিকট সমস্ত নিবেদন পূৰ্বক কহিলেন, হে রাজন্! সেই ধনু, সেই অস্ত্র, সেই রথ, সেই অস্থা, সকলই বিদ্যামান আছে, কিন্তু অশ্রোত্রিয়কে দান করিলে তাহা যেমন বিফল হয়, তজ্ঞপ সমস্তই অসার হইয়া রহিয়াছে ৷

ঐ সময়ে ভগবান ব্যাসদেব সমাগত হইয়া বছবিধরপে প্রবোধ প্রদান করিলেন। ধীমান্

ধর্মরাজ অর্জ্জ্বনপ্রমুখাৎ দমস্ত বুক্তান্ত প্রবণ করিয়া রাজ্যবাদনা পরিত্যাগ করিলেন, তাঁহার হৃদয়ে দংসার অনিত্য বলিয়া বোধ হইল। তথন তিনি পরীক্ষিৎকে রাজপদে প্রতিষ্ঠিত করিয়া হরিনাম জপ করিতে করিতে দ্রোপদী ও প্রাতৃগণ সমভি-वाशित महाश्रमान कतित्वन। প्रशिमश्रा त्कीश्रमी. নকুল, সহদেব, ভীম, অৰ্জ্বন, ইহারা পাঁচ জনেই মহাপথে নিপতিত হইলেন; তদ্দর্শনে যুধিষ্ঠিরের শোকের পরিদীমা রহিল না। তিনি বিলাপ করিতেছেন, ইত্যবসরে ইন্দ্রানীত দিব্য রথ সমূপ-স্থিত হইল: তথন আনন্দিতমনে ভাতৃগণের সহিত রথারোহণ পূর্বক ত্রিদিবধামে গমন করি-লেন। তথায় উপনীত হইবাসাত্র চুর্ব্যোধনাদি ভাতৃগণ ও বাহুদেব প্রভৃতি সকলের সহিতই দাক্ষাৎ হইল। তথন ধর্মরাজের পুলকের অবধি রহিল না।

হে তপোধন। এই আমি সংক্ষেপে ভারতাখ্যান কীর্ত্তন করিলাম। ভক্তিপ্তচিত্তে ইহা অধ্যয়ন করিলে স্বর্গতি লাভ হইয়া থাকে।

> ইত্যাদিমহাপুথাণে আথেয়ে মহাভারতবর্ণন নামক পঞ্চদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

যোডণ অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, এক্ষণে বুদ্ধাবতার বর্ণন করি-তেছি। ইহা পাঠ বা অবণ করিলে অর্থলাভ ইইয়া থাকে।

পুরাকালে দেবান্তর-সংগ্রামসময়ে দেবতারা দানবগণ কর্ত্ব পরাজিত হইয়া ঈশ্বরসমীপে গমন পূর্ববিক তাঁহার শরণাগত হইলেন এবং "আমা-দিগকে রক্ষা করুন্, রক্ষা করুন্" বলিয়া দীনভাব প্রকাশ করিতে লাগিলেন। তথন মায়ামোহ- স্করপ ভগবান্ স্থরগণের হিতকামী হইয়া শুদোদনস্থতরূপে অবতীর্ণ হওত বুদ্ধ নামে প্রদিদ্ধ হইলেন। ভাঁহার মায়াপ্রভাবে দানবেরা বেদধর্ম্ম
পরিত্যাগ করিয়া বৌদ্ধ হইল; এই প্রকারেই
বেদধর্মবিবর্জ্জিত পাষ্ণগুদিগের স্থান্তি হয়, তাহারা
দর্মদাই নরকার্হ কর্মের অনুষ্ঠান করিত।

কলিযুগের অবসানে সকল ব্যক্তিই এরপ বেদাচারবিহান, ধর্ম্মকঞ্কধারী, দহ্য ও অধর্ম-লিপ্যু হইবে। তৎকালে স্লেচ্ছণণ রাজরূপী হইয়া মনুষ্য ভক্ষণ করিবে; কিন্তু তাহাদিগের, দৌরাত্মা বহুদিন স্থায়ী হইবে না। ভগবান্ কল্পী বিষ্ণুয়শার পুত্ররূপে অবর্তার্ণ হইয়া অস্ত্র শস্ত্র গ্রহণ পূর্বক তাহাদিগকে সমুৎপাদিত করিবেন। তথন পুন-রায় বর্গাশ্রমাচার পূর্ববিৎ সংস্থাপিত হইবে এবং প্রজাগণ সংকর্মানুষ্ঠান ও ধর্মাচরণে আস্থা প্রদ-র্শন করিবে। অবশেষে ভগবান্ কল্পীরূপ পরি-ত্যাগ করিয়া স্বর্গধামে প্রস্থান করিবেন। অনন্তর পুনরায় সত্যযুগের উদয় হইবে; তখন স্ব্বিধ বর্গ, আশ্রম ও ধর্ম স্ব পদে অবস্থিত থাকিবে।

এইরপে দকল কয়ে ও দকল ময়ন্তরেই ভগবান্ বিষ্ণু নানাবিধ মূর্ত্তিতে অবতীর্ণ হইয়া থাকেন;
তক্মধ্যে তদীয় দেশাবতার ভক্তিপৃতচিত্তে অধ্যয়ন
করিলে দর্ককামনা দিদ্ধি হয়। যে ব্যক্তি উহা
পাঠ করেন, তিনি স্বীয় কুল দহিত স্বর্গগতি লাভ
করিয়া থাকেন। ভগবান্ হরি এই প্রকারেই
ধর্মাধর্মা ব্যবহা করেন। তিনিই স্প্রিপ্রভাতর
একমাত্র কারণ।

ইত্যাদিমহাপ্রাণে আথেরে বুদ্ধক্ষাবতারবর্ণন নামক ধোড়শ অধ্যার সমাপ্ত।

সপ্তদশ অধ্যায়।

অগ্লি কহিলেন। অধুনা ভগবান্ বিফুর জগৎ-স্ফাদি লীলার বিষয় বর্ণন করিতেছি, প্রাবণ কর। বিষ্ণুই স্ষ্টি, স্থিতি ও সংহারের একমাত্র কর্ত্তা: যদিও তিনি নিগুণ, তথাপি স্ষষ্টিদময়ে সপ্তণ হইয়া থাকেন। স্তির পূর্কেব কেবল এক-মাত্র অব্যক্ত ব্রহ্ম বিদ্যমান ছিলেন, রাত্রি, দিন অথবা আকাশ কিছুই ছিল না। অনস্তর সিস্কা বশতঃ প্রকৃতি প্রবিষ্ট হইয়া প্রমপুরুষ বিষ্ণুকে কোভিত করিল। তথন সেই প্রকৃতি 🗢 হইতে মহত্ত্ব † ও মহত্ত্ব হইতে অহ্বারতত্ব সমুৎপন্ন . হইল। ঐ অহস্কার দ্বিবিধ ; বৈকারিক ও ভাম-দিক। বৈকারিক অহস্কার হইতে শব্দতামাত্র আকাশ, আকাশ হইতে স্পৰ্শতশাত্ৰ 1 বায়ু, বায়ু হইতে রূপতমাত্র অগ্নি, অগ্নি হইতে রসতমাত্র জল ও জল হইতে গন্ধভদাত্র পৃথিবী এবং তামস অহঙ্কার হইতে তৈজন দশ ইন্দ্রিয়, ঐ সকল ইন্দ্রি-য়ের অধিষ্ঠাতাদশ দেবতাও মন সমূৎপদ হয়; মন একাদশ ইন্দ্রিয় বলিয়া পরিগণিত। ¶

দক্ত, রজ ও তয়: এই গুণ্
রয়ের সমস্তাবে অব্দিতিকেই
 প্রকৃতি কয়।

[†] ইহলোকে বাহা মহান্ শংক অভিহিত, তাহাকেই মহত্তৰ বলে।

[‡] ইব্রিরগণের অবরব অতি ফ্ল, ইক্রিয়ের স্তায় পঞ্চ তক্ষাত্রও ফ্ল; উহারা সাক্ষাৎ ভগবানের শরীর অবলয়নপূর্বক অবস্থিতি করে, এই ক্সমুই উহাদিগকে তত্তাত্রে বলা দুর্গর।

শ মংসপ্রাণে বৃণিত আছে যে, প্রাকৃতি ইইতেই প্রজাল স্ফান ও রূপান্তর হইয়া থাকে। প্রাকৃতির বিকৃতি হইসে মহন্তব্যের উ্থপতি হয়, ঐ মহন্তব্য হইতে অহমারতত্ত্ব ও অহসার-তব্য হইতে ইন্দ্রিয়পঞ্চক জন্মে। ইন্দ্রিয়পঞ্চক তুই প্রকার; বৃদ্ধীন্দ্রিস্পঞ্চক ও কন্মেন্দ্রিয়পঞ্চক। যাহারা বৃদ্ধির অসুনাত,

অনন্তর ভগবান্ বিবিধ প্রজাস্জনে অভিলাষী হইয়া জল স্জন পূৰ্বক তাহাতে ব্ৰহ্মাণ্ডের বীজ নিক্ষিপ্ত করিলেন। জল "নার" শব্দে অভিহিত ঐ জল নর নামা ভগবান বিষ্ণুর পুত্র ; "অয়ন" শকে স্থান; জল পূর্বেক অবস্থানস্থান ছিল বলি-য়াই ভগবান্ "নারায়ণ" শব্দে অভিহিত হইয়া থাকেন। জলমধ্যে যে বীজ নিহিত হইয়াছিল তাহা হইতে স্বৰ্ণ অণ্ড সমুৎপন্ন হইয়া সলিলো-পরি ভাসমান হইতে লাগিল। সেই অত্তে ব্রহ্মা স্বয়ং সমুৎপন হইলেন , স্বয়ং সম্ভূত বলিয়াই তিনি স্বয়স্তু নামে অভিহিত। হিরণ্যগর্ভ ঐ অতে দংবৎসর কাল অবস্থিতি করিয়া তাহা দ্বি**খ**ণ্ডিত করিয়া ফেলিলেন। উহারই একথতে স্বর্গ ও দিতীয়ে পৃথিবীর সৃষ্টি হইল। ঐ উভয় খণ্ডের মধ্যে যে শৃন্য রহিল, ব্রন্ধা তাহাতেই আকাশের স্প্তি করিলেন। অনন্তর ত্রহ্মা জলোপরি পৃথিবী স্থাপন পূর্বক তাহার সকল ভাগে দশদিক্ ব্যব-স্থাপিত করিলেন। তৎপরে প্রজাপতি ত্রন্না, কাল, মন, বাক্য, কাম,ক্রোধ, রতি, বিছ্যুৎ,অশনি,

তাহারা বৃদ্ধীন্দ্রিষপঞ্চক ও যাহারা কল্মের অন্থগত, তাহারা কল্মেন্দ্রিয়পঞ্চক। কর্ণ, ত্বন্, চক্ষ্, রসনা ও নাসিকা এই পাঁচটিকে বৃদ্ধীন্দ্রিয়পঞ্চক এবং পায়ু, উপস্থ, হস্ত, পদ ও বাক্যা, এই পাঁচটিকে কল্মেন্দ্রিয়পঞ্চক বলা যায়। শব্দ কর্ণের, স্পর্শ ওকের, রূপ চক্ষ্র, রস রসনার, গব্ধ নাসিকার, উৎসর্গ পায়ুর, আনন্দ উপত্বের, আদান হস্তের, গতি পদের এবং আলাপ বাক্যের কার্য্য। স্বৃষ্টি বিক্লুত হুইয়া আকাশ, অনিল, তেজ্ঞ, রূপ ও ভূমির উৎপত্তি হয়। শব্দক্রমাত্র বিক্লুত হুইয়া শব্দস্পর্শত্তশাস্ত্রক আনল, আকাশ, আকাশ বিক্লুত হুইয়া শব্দস্পর্শত্তশাস্ত্রক অনিল, অনিল বিক্লুত হুইয়া শব্দস্পর্শক্রপাত্মক অনিল, আনিল বিক্লুত হুইয়া শব্দস্পর্শক্রপাত্মক হুইয়া শব্দস্পর্শক্র হুইয়া শব্দস্পর্শক্র ক্ল সমৃৎপন্ন হয়। ভূমি শব্দ, স্পাশ, রূপ, রুস ও গদ্ধ এই পঞ্চপ্রণাত্মক; উহাতে গদ্ধগৃতি সম্বিদ্ধ ও কংগ্রেম্ব উভাগেরই গুণ আহে, উহা উভয়াত্মক।

মেঘ এবং ইন্দ্রংমু প্রভৃতির স্থলন করিলেন।
তৎপরে যজ্ঞাসিনির জন্ম ঋক্, যজু ও সামবেদও
স্ফ ইইল। প্রাসিন্ধ আছে যে, ঐ বেদ সকল
ব্রহ্মার মুখ ইইতে সমুৎপন্ন হয়। সাধকগণ ঐ
সকল বেদ স্বারাই দেবতার উদ্দেশে যাগ করিয়া
থাকেন। তৎপরে উচ্চাবচ ভূত, সনংকুমার ও
ক্রোধসস্ভূত রুদ্রের স্থিইইল। পরিশেষে ব্রহ্মার
সপ্ত মানসপুত্র সমূৎপন্ন হন, তাঁহারা মরীচি, অত্রি,
অঙ্গিরা, পুলস্তা, পুলহ, ক্রুতু ও বশিষ্ঠ নামে
প্রথিত। অনস্তর ব্রহ্মা স্বীয় দেহ দ্বিধা বিভক্ত
করিয়া অন্ধভাগে পুরুষ ও অন্ধভাগে নারীরূপী
ইইয়া সেই উভয়ের পরস্পর সংযোগে বিবিধ
প্রজা স্থলন করিতে আরম্ভ করিলেন। **

ইত্যাদিমহাপুরাণে আগ্রেয়ে জগৎস্টবর্ণন নামক সপুদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

* প্রাণাশ্বরে বর্ণিত আছে যে, ভগবান্ জলমধ্যে ব্রহ্মাণ্ডের
বীক্ষ নিহিত করিলে সহ্প্র সংবংসরাস্তে তাহা হুইতে একটী
রক্ষতসংযুক্ত কাঞ্চনময় অও সমুৎপর হয়। কালসহকাবে সেই
অওটী হুই ভাগে বিভক্ত হুইল, তাহারই একথণ্ডমধ্যে দিবাকর
ও অপর থণ্ড মধ্যে ব্রহ্মা সঞ্জাত হন। ব্রহ্মা স্থ ইচ্ছার ঐ থণ্ডবুদ্ম হুইতে দেবলোক ও নরলোকের কৃষ্টি করিলেন। ঐ উভর
লোকের মধ্যবর্জী শৃক্ষ স্থানই আকাশ হুইল। অনস্তর ক্রমে
ক্রমে দিক্, মেঘ, তড়িৎ, নদ, নদী, সবোবর, সমুক্র, দেবতা,
গহ্মর্ক, যক্ষ, পরগ, উরগ, সিদ্ধ, বিদ্যাধর, পিতৃগণ, বস্তুগণ
প্রভৃতির সৃষ্টি হুইল।

ব্ৰহ্ম বছদিন পৰ্যান্ত কঠিন তপজাচরণে নিযুক্ত ছিলেন;
সেই তপোৰীব্যপ্রভাবেই তদীয় মুখপদ্ধ হুইতে সাঞ্চোপাল
বেদ আবিভূতি হইয়াছিল। ক্রমে অস্তান্য শাস্তাদিও প্রকাশিত হয়। ব্রহ্মা নিরন্তর বেদার্মশীলন ও শাস্তালাপে সময়াতিপাত কবিতেন। সহসা উহার মনোমধ্যে সন্তানকামনার উদদ্ধ
হওয়াতেই দশ্টী মানস পুলের উৎপত্তি হয়। তাঁহার। মরীচি,
অত্রি,অলিরা, পুলস্ত্যা, পুলহ, ক্রভু, প্রচেতা, বশিষ্ঠ, ভৃত্য ও নারদ
নামে অভিত্ত।

অফীদশ অখ্যায়।

অগ্নি কহিলেন। স্বায়ন্ত্র মমুর হুই পুত্র ও এক কন্যা; পুত্রদ্বয় প্রিয়ন্ত্রত ও উত্তানপাদ এবং কন্যাটা কাম্যা নামে অভিহিত; কাম্যা শতরূপা নামেও কথিত হইতেন। উত্তানপাদের ছুই পত্নী; একের নাম স্তর্ক্ষচি, দ্বিতীয়ের স্থনীতি। স্থকটির গর্ভে উত্তানপাদের উরসে উত্তম ও স্থনীতির গর্ভে প্রব জন্ম এহণ করেন। হে তপোধন! ঐ প্রব দিব্য তিন সহত্র সংবৎসর যাবৎ কঠোর তপস্থাচরণ করাতে হরি প্রদন্ম হইয়া তাঁহাকে সপ্রস্থিনগণের পুরোভাগে স্থান প্রদান করেন। ঐ স্থান প্রবাভাগে স্থান প্রদান করেন। ঐ স্থান প্রবাভাগে স্থান প্রদান করেন। ঐ স্থান প্রবাভাগে ক্রাচার্য্য নিরন্তর এই কথা বলিতেন যে, অহো! প্রবের তপোবীর্য্য ও শাস্ত্রজ্ঞান কি পরমান্ত্রত! সপ্রবিগণ ইহাকে পুরোবর্তী করিয়া অবস্থিতি করিতেছেন।

জবের তিন পুক্র; তাঁহারা যথাক্রমে শিষ্টি,
তব্য ও শস্তু নামে অভিহিত। ক্ষ তম্মধ্যে শিষ্টির
উরসে স্ক্রায়ার গর্ভে রিপু, রিপুঞ্জয়, রিপ্রা, রপ্রকা
ও রকতেজা নামে পাঁচটা পুক্র দম্পেন হয়।
রিপু রহতা নাম্মী ভার্যার গর্ভে মহাতেজা চাক্ষ্য
মমুকে সম্পোদন করেন। সেই মমুর দশটা
পুক্র; তাঁহারা উরু, পুরু, শতহাম্ম, তপস্বী, সত্যবাক্, কবি, অগ্রিন্টুপ, অতিরাত্র, স্বহান্ন ও অভিমম্য নামে অভিহিত। ই ইহারা সকলেই লড়লার
গর্ভে জন্মগ্রহণ করেন। তম্মধ্যে উরুর উরসে

তদীয় ভার্যা আগ্নেয়ীর গর্ভে অঙ্গ, হ্বমনা, স্বাতি, ক্রত্, অঙ্গিরা ও গয় নামে ছয়টী পু্দ্র সমূৎপন্ন হয়। অঙ্গের পত্নী স্থনীথা; স্থনীথা বেণ নামে একটা পুক্র প্রদাব করেন। মহীপতি বেণ নিরম্ভর পাপকার্য্যের অনুষ্ঠান করিতেন, প্রজাপালনে কিঞ্চিনাত্রও মনোযোগ প্রদান করিতেন না; তদ্দর্শনে মহর্ষিগণ কুশাঘাতে তাঁহার প্রাণ বিনাশ করিলেন।

এই প্রকারে বেণ নিহত হইলে মুনিগণ সন্তানোৎপাদনার্থ তাঁহার দক্ষিণ হস্ত মন্থন করিতে প্রস্তুত্ত হইলেন। মন্থন করিতে করিতে উহা হইতে একটা পুজ্র সমুৎপন্ন হইল; ঐ পুজ্র পৃথু নামে অভিহিত। মহীপতি পৃথুকে নিরীক্ষণ করিয়া মহর্ষিরা কহিলেন, এই পৃথু হইতে প্রজাগণ যার পর নাই আনন্দ লাভ করিবে। এই মহাজ্যা মহাতেজার যশোরাশি বিস্তীর্ণ হইয়া চতুর্দিক্ সমুদ্রাসিত করিবে।

পৃথীনাথ পৃথু সহজ কবচ ও শরাসন ধারণপূর্বক জন্ম পরি গ্রহ করিয়াছিলেন; তদীয় তেজোরাশি সন্দর্শন করিলে বোধ হইত যেন, নিখিল
জুগৎ দগ্দীভূত করিতে সমুদিত হইয়াছেন। তিনি
পূর্ববপুরুষাচরিত নিয়মে ও ধর্মামুসারে স্থতনির্বিশেষে প্রজাপালন করিতেন। তিনি 'যাবতীয়
পৃথিবীপতিগণের মধ্যে আদ্য নরপতি বলিয়া
পরিগণিত।

[🔹] কোন কোন মতে গ্লিষ্টি পাঠ দৃষ্ট হয়।

[†] কোন কোন পুস্তকে রিপ্র হলে পত্র পাঠ দেখা যায়।

[া] পুতকাতরে অগ্নিইপ স্থলে অগ্নিমান, সহায় স্থলে সুধ্য ও অভিনত্য স্থলে অভিমন্য লিখিত আছে।

^{*} মংশুপুরাণে এইদ্ধপ লিখিত আছে যে, উন্তানপাদের উর্বে স্থৃভার (স্থনীতির) গর্ভে অপদাতি, অপস্পত্ত, কীর্দ্তিমান্ ও এবে নামে চারিটি প্র সম্ংপর হয়। এবে তিন সহস্র বংসর যাবং স্থকটিন তাপোন্ধান করিয়া ভগবান্কে প্রদায় করেন। ভগবান্ও প্রীত হইয়া তাঁহাকে অনন্ত নামক দিয়া স্থান প্রধান করেন। এব অবস্থিতি করাতেই ঐ স্থান এবলোক নামে প্রথিত হইয়াছে। ধন্যা নামী পদ্মীর গর্ভে এবের একটি প্র হয়, তাহার

পৃথুর রাজ্যশাসনসময়ে সূত ও মাগধ নামে ছুই প্রকার জাতির উৎপত্তি হয়। তাহারা স্ততি-পাঠে অতীব স্থনিপুণ; উহারা প্রত্যহ বিবিধ স্ততি-পাঠ ছারা নরপতির মনোরঞ্জন করিত। তদবধিই

নাম শিষ্ট (শিষ্টি)। অগ্নিনিদ্নী মুক্তির বহিত শিষ্টের বিবাহ হয়। মৃদ্ধ্য শিষ্ট হইতে চারিটি পুত্র লাভ করেন, তাঁহারা রিপু. নিপুঞ্জয়, সুকল ও বুকতেজা নামে অভিহিত। বীবিণী নামে বীরণ প্রজাপতির একটি করু। ছিল, রিপুঞ্জয় সেই বীরিণীর গর্ভে চাকুষ মহুকে স্মৃৎপাদন করেন। চংকুষ মহু বৈরাজ-নন্দিনী লড়লার গর্ভে উক্ল, পুরু, শতহায়, সভাব।ক্. কবি, অগ্নিইপ্, অভিবাত্ত, প্রহায়, অপরাজিত ও অভমহ্যু নামে দশটি পুত্র উৎপাদন করেন; ঐ দশজনই মহাতেজা, মহাবীহাঁ ও অতীব পুণ্যাত্মা ছিলেন। উক্তর উরসে অগ্নিন ব্দনীণ গর্ভে বে ছয়টি পুল ক্রে, ভাগারা অঙ্গ, স্থানা, স্বাতি, ক্রতু, অঙ্গিরা ও অল্জ নামে অভিহিত। অঙ্গ স্থনীপাকে পত্নীত্বে বরণ করেন, স্থাপা মৃত্যুব ছহিতা; স্থাপার গর্ভে মহীপতি কেনের জন্ম হয়। বেশ নরপতি হইয়া বিধিষিক্ত কম্মের অহ্ঠান কলতে নহয়ি ও অনুয়াতা দিল্লাণ তাহার নিকট স্মাগত হুইয়া হুজায়া হচতে নিবুও হইতে অনুধোধন করেন, কিন্তু বেণ তাঁহাদের বাকে: অবহেলা প্রদর্শন করাতে ছিলগুণ রোমার হুইয়া অভি-শাপ প্রদান করিবেন; সেই শাপেই বেশের মৃত্যু হয়। ক্রমে বাজার অভাবে রাজ্য অরাজক হইয়া উঠিল; পরহিংসা, দম্মান বৃত্তি প্রভৃতি দৌরাল্লা সম্পদ্ধিত হওয়াতে প্রজাগণের সম্হ ক্লেশের উদয় হইল। তথন আক্লের। ভয়াকুল হইয়া মন্ত্রা-পুস্তক বেণের মৃত শ্রীর মন্থন করিতে আরেস্ত করিলেন। ক্রমে ্সই দেহ ২ইতে লেজজাতিব উৎপাত হইল; ভাছাদিগের বণ অপন ব্যাশর প্রায় প্রাচ ক্লক্ষা। বেশের জননী অভীর অপ্রিয়-ভাষেণী ভিলেন, সেই জননীয় আংশ হইতেই মেচ্ছগণ জন্মগ্রহণ किता ७९भव अलास्तरा भूनताय महन कतिए लागितन ; জ্ঞা জ্ঞান বেশের দালণ হস্ত হইতে একটি ধান্মিক পুরুষ্ট্র-পম হইলেন; ভিনি সহজ রত্ময় কবচ ও শরাসনাদিসহ জন্ম-এছণ ক্ষিয়াছিলেন। বেণের শ্রীরে ভাঁহার পিতার যে অংশ ছিল, সেই অংশ হইতেই ঐ পুরুষের উৎপত্তি হয়। সেই পুরু ধের শরীর পৃথু হওরাতেই তিনি পৃথু নামে অভিহিত হইলেন। পুথু মহ্তেজা মহাপাত বলিয়া চিবপ্রান্ধ।

রাজগণের স্তুতি করাই উহাদিগের জীবিকা হইয়াছে।

নরপতি পৃথু যৎকালে প্রজাবর্গের জীবনার্থ গোরপধারিণী বস্ত্রমতীকে দোহনপূর্বক নানাবিধ রক্ন ও শস্তাদি দোহন করেন, তখন দেব, ঋষি, গন্ধর্ব, অপ্যরা, পিতৃগণ, মানবগণ, লতা ও পর্বত প্রস্তৃতি সকলেই স্ব স্ব অভিলম্বিত বস্তু দোহন করিয়া লইয়াছিলেন। হে তপোধন! সেই সময়ে যিনি যে পাত্রে যে দ্রব্য দোহন করিয়া-ছিলেন, তাহা কীর্ভন করিতেছি।

বেণ দেহ পরিত্যাগ করিলে রাজ্য অরাজক, প্রজাপন ধর্মাবর্জ্জিত ও নির্ধন হইয়া উঠিল; তদ্দ র্শনে পুথুর অন্তরে যার পর নাই ক্রোধের উদয় হইল। তিনি বস্তদ্ধরা ভশ্মীকরণে অভিলাষী হইয়া সরো**ষে শরাসনে শ**রসন্ধান করিলেন। তথন ধরণীর ভয়ের পরিদীমা রহিল না। তিনি ভীতি-বিহ্বলা হইয়া গোরূপ ধারণ পূর্বক পলায়ন-পরা-য়ণা হইলে মহীপতি পুথুও তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রধাবিত হইলেন: তৎকালে নরপতির হস্তে দিব্য শরাসন ত্তাশনের ভায়' পরম প্রদীপ্ত ও শোভ-মান হইতে লাগিল। কিয়দুর অতিবাহিত হইল্রে বস্তমতী থার পর নাই পরিআন্তা হইলেন, চ্রুত-গমনে আর তাঁহার দামর্থ্যমাত্রও রহিল না, অগত্যা স্থিরভাবে দণ্ডায়মানা হইয়া নরপতিকে সম্বোধন-পূর্বক কহিলেন, হে মহাপতে ! আপনার অভিলাষ কিং আপনার কি প্রিয়ানুষ্ঠান করিতে হইকে বলুন।

ধরণী দীনভাবে এই কথা কহিলে পৃথু কহি-লেন, হে কল্যানি! অখিল জগতীতলে স্থাবর-জঙ্গমাত্মক যে সকল ভূত আছে, তাহাদিগের মধ্যে যে যাহা বাসনা করিবে, তোমাকে তাহাই প্রদান করিতে হইবে। হে তপোধন! পৃথুর এইরপ আদেশ শ্রবণমাত্র বস্থন্ধরা যাবতীয় প্রাণিবর্গেরই অভিলধিত
বস্তু সমর্পণ করিয়াছিলেন। তিনি গোরূপ ধারণ
করিয়াই ক্ষীররূপে নিখিল দ্রব্য প্রদান করেন।
এইরূপে পৃথু রাজার ছহিত্ব প্রাপ্ত হওয়াতেই
বস্তুমতী পৃথিবী নামে অভিহিতা ইইয়াছেন।

দৰ্কাত্যে নরপতি পৃথু স্বায়স্তুব মনুকে বংস-রূপে পরিকল্পিত করিয়া স্বহস্তে অন্তরূপ চুগ্ধ দোহন করেন। তৎপরে মহর্ষিরা বৃহস্পতিকে দোগ্ধা ও দোমদেবকে বৎদ করিয়া বেদপাত্তে তপোরূপ ত্রশ্ব দোহন করিলেন। অনন্তর দেবতারা দোহন করাতে হেমপাত্তে বলরূপ ছুগ্নের উৎপত্তি হয়, তৎকালে মিত্র দোগ্ধা ও ইন্দ্র বৎস হইয়াছিলেন। তৎপরে পিতৃগণ অন্তককে দোগ্ধা ও যমকে বৎস কল্পনা করিয়া রজতপাত্রে দোহন করিলেন: সেই দোহনে স্বধারূপ তুগ্ধ উৎপন্ন হইল। তদনন্তর নাগগণ অলাবুপাত্তে দোহন করেন, সেই দোহনে বিষরূপ তুগ্ধ সমুৎপন্ন হয়; তৎকালে ধৃতরাষ্ট্র দোগ্ধা ও তক্ষক বংসের কার্য্য নির্ব্বাহ করেন। অন-ন্তর দানবেরা সমরেত হইয়া লোহপাত্রে পৃথিবী দোহন পূর্বক অরিবিনাশিনী মায়ারূপ চুগ্ধ সমূৎ-পাদন করিল; ভংকালে প্রহলাদনন্দন বিরোচন বৎস ও দ্বিমূদ্ধা দোগ্ধা হইয়াছিল। তৎপরে ফক-গণ বৈশ্রবণকে বৎস করিয়া আমপাত্তে বহুদ্ধরা দোহন পূর্ববক অন্তর্ধানশক্তি প্রাপ্ত হয়। অনন্তর প্রেত ও রাক্ষদেরা বহুধা দোহন পূর্বক রুধির উৎপাদন করে, তাহাতে ব্লোপ্যনাভ দোগ্ধা ও স্থমালী বৎসরূপে পরিকল্লিত হইয়াছিলেন। তৎপরে গন্ধর্বগণ নাট্যবেদ-বিচক্ষণ হুরুচিকে দোগ্ধা ও চিত্ররথকে বৎস করিয়া পদ্মদলে ধরণী দোহন করেন, তাহাতে গন্ধরূপ ছুগ্নের উৎপত্তি হয়।

তদন্তে পর্বতগণ একত্রিত হ্ইয়া অবনী দোহন করে, তাহাতে স্থনেরু দোগ্ধা ও হিমালয় বৎসের কার্য্য স্থান্সন্ধ করে; সেই দোহনে নানাবিধ বিচিত্র রক্ত্ব ও ওষধির স্প্তি হয়; শৈলগণ শৈলপাত্রেই ধরণী দোহন করিয়াছিল। তৎপরে রক্ষেরা সর্বতরুরাজ বটকে বৎস ও পুষ্পাবনাকুল শালকে দোগ্ধা করিয়া পলাশপত্রে ধরণী দোহন করে; সেই দোহনে ছিম্মপ্ররোহণ ছ্রেম্বর স্থিই হয়। এইপ্রকারে অন্যান্থ প্রাণিগণও বস্থধা দোহন পূর্বক স্ব স্বাঞ্চিত সামগ্রী লাভ করিয়াছল; ঐ সকল দ্বের ছারাই জীবকুল জীবন ধারণ করিতেছে।

পৃথুর রাজ্যশাসনসময়ে অকালমৃত্যু, রোগ বা অধর্মভয় ছিল না, তৎকালে কাহাকেও দারিদ্রো-তুঃথে ক্লেশ প্রাপ্ত হইতে হয় নাই; বস্তুতঃ সক-লেই মর্ত্তলোকে অবস্থিতি করিয়াও হুরপুরের ক্যায় স্থাথ কালাতিপাত করিত।

পৃথ্ব ছই পুত্র; একের নাম অন্তর্ধান, বিতীয়ের পালী। অন্তর্ধান শিখভিনীকে পত্নীত্বে বরণ
করেন; শিখভিনীর গর্ভে অন্তর্ধানের উরসে
হবির্ধান নামা পুত্রের উৎপত্তি হয়। হবির্ধান
আয়েরী নাম্মী পত্নীর গর্ভে ছয়টী পুত্র সমুৎপাদন
করেন; তাঁহারা যথাক্রমে প্রাচীনবর্হি, শুক্র, গয়,
কৃষ্ণ, ব্রজ ও অজিন নামে অভিহিত। ইহাঁরা
সকলেই মহাবৃদ্ধি বলিয়া প্রসিদ্ধ। তন্মধ্যে ভগবান্
প্রাচীনবর্হি প্রজাপতি বলিয়া পরিগণিত ছিলেন।
তাঁহার পত্নীর নাম স্বর্ণা, স্বর্ণার গর্ভে যে দশ্টী
পুত্র সমুৎপদ্ধ হয়, তাঁহারাও প্রচেতা নামে অভিহিত, তাঁহারা সকলেই ধনুর্বিদ্যায় বিলক্ষণ পারদশী ছিলেন। তাঁহারা সকলে সমবেত হইয়া
সাগরজলে অবগাহন পূর্বক দশসহত্র বৎসর যাবৎ

কঠোর তপস্থাচরণ করিয়াছিলেন। অনন্তর ভগবান্ বিষ্ণু প্রদান হইয়া তাঁহাদিগকে প্রজাপতিছ
প্রদান করিলে তাঁহারা দলিলগর্ভ হইতে সমুখিত
হইলেন। তাঁহারা জলমধ্য হইতে সমুদ্দাত হইয়া
দেখিলেন, বহুদ্ধরা বিবিধ তরুলতায় সমাকীর্ণ হণ্ডযাতে অরণ্যময় হইয়া পড়িয়াছে। তদ্দানে
তাঁহাদিগের হাদয়ে জোধের সঞ্চায় হইল, তখন
তাঁহারা মুখ হইতে প্রস্থালিত হুতাশন বিনিঃস্থত
করিয়া পাদপরাজি ভন্মীভূত করিতে প্রস্তুত

এইপ্রকারে যাবতীয় রক্ষ সংক্ষয় প্রাপ্ত হইতেছে দেখিয়া সোমদেব প্রচেতাগণের নিকট
সম্পনীত হইয়া বিবিধরপ প্রবোধবচনে সান্তনা
প্রদান পূর্বরক কছিলেন, হে প্রচেতাগণ! তোমরা
ক্রোধ সম্বরণ কর, মারিষা নামে যে পরমহান্দরী
নন্দিনী আছে, পাদপগণ তাঁহাকে তোমাদিগের
করে সম্প্রদান করিবে; তোমরা তরকুল নির্মান
করিও না; তোমাদিপের ভার্য্যা হইবার জন্মই
সেই কুলবর্দ্ধিনী মারিষার স্প্তি হইয়াছে। তোমাদিগের উরসে ঐ ক্যার গর্ভে দক্ষ প্রজাপতি জন্ম
পরিগ্রহ করিবেন; সেই দক্ষ হইতে প্রজাগণ
সংবর্দ্ধিত হইবে।

প্রচেডাগণ সোমদেবের অনুরোধে ক্রোধ সম্বরণ পূর্বক দেই কন্তা গ্রহণ করিলেন। সেই মারিষার গর্ভেই দক্ষ প্রজাপতির জন্ম হয়। দক্ষের অনেকগুলি মাননপুত্র সমুৎপন্ন হইয়াছিল। দক্ষ হইতেই কি মিপদ, কি চতুষ্পদ, যাবতীয় চরাচর

প্রাণাপ্তরে বর্ণিত আছে যে, প্রচেতাদিগের তপস্থা প্রস্তারেই যারতীয় বৃক্ষ সংরক্ষিত হইতেছে। কোন সময়ে
দেবতারা দিবাকরের প্রীতিসাধনার্থ অনগদেবের প্রতি অনুমতি
প্রণান করিলে অধিদেব সমন্ত তক্রাকি দগ্দীভূত করিয়াছিলেন।

জীবকুলই উৎপন্ন হয়। * এতদ্ভিন্ন দক্ষের অনেকশুলি কন্সা জন্মে, তমাধ্যে তিনি ধর্মাকে দশ,
কশ্যপকে ত্রেয়াদশ, দোমদেবকে সপ্তবিংশতি, †
অরিফীনেমিকে চারিটী, বাহুপুজ্ঞকে ছুইটী এবং
অঙ্গিরাকে ছুইটী সমর্পন করেন। । ঐ সকল কন্সা
হইতে দেবতা নাগ প্রভৃতি সমুৎপন্ন হয়। পূর্কের স্ত্রীপুরুষের সহবাদে সন্তানোৎপত্তি হইত না, মনঃসংকল্পেই জন্মগ্রহণ করিত। গা

এক্ষণে ধর্মের ভার্যাগণের গর্ভে বাঁহারা জন্ম-গ্রহণ করিয়াছিলেন, তাহা কীর্ত্তন করিতেছি, শ্রহণ কর।

বিশ্বা বিশ্বেদেবগণকে, সাধ্যা সাধ্যগণকে,
মক্তন্ত্বতী মক্তদাণকে,বস্থ বস্থদিগকে,ভামু আদিত্যগণকে,মুহূৰ্ত্তা মুহূৰ্ত্তজগণকে,যামী নাগবীথিগণকে,
সন্থা ঘোষগণকে § এবং সংকল্পা সংকল্পদিগকে

- শংশপুরাণে বার্ণত আছে যে, মারিষা প্রথমতঃ দক্ষকে প্রস্ব করিয়া পরিশেবে বৃক্ষ দক্ষ, ও্যধিসমূহ ও চক্রবতী নায়ী নদীকে প্রদ্ব করেন। দক্ষের অনীতিকোটি দন্তান; তাহাদিগের মধ্যে কেছ কেছ ছিলদ, কেছ কেছ বহুপদ, কেছ কেছ ক্লীমুথ, কেছ শহুকর্ণ; কাহারও কাহারও কর্ণ এত বৃহ্ৎ যে তদ্ধারা দম্ভ মুথ সমাবৃত হইয়াছে, কেছ কেছ দিংহমুখ, কেছ কেছ উইমুথ এবং অনেকের বক্ষঃশৃলের অক্ষাংশমাক আছে।
- † সোমদেৱের করে যে সপ্তবিংশভিট কল্পা সম্পতি হয়, তাহারাই নক্ষত্র নামে অভিহিত।
- ‡ এখনে এই আটায়টি কস্তার উল্লেখ হইল, কিন্তু প্রাণা-করে লিখিত আছে যে, বৈদিশীর গর্জে দক্ষের যৃষ্টিসংখ্যক কলা লক্ষে; তর্মধ্যে তিনি দশটি ধর্মকে, কস্তুপকে অয়েদেশ, চক্রকে সপ্তবিংশতি, অরিষ্টনেমিকে চারিট, তার্গবকে ছুইটি, কুশাখকে ছুইটি ও অঙ্গিরাকে ছুইটি প্রেদান করেন।
- শ মৎক্রপুরাণে লিখিত আছে বে, পুর্দের সকর, দর্শন ও স্পর্শাধারা সৃষ্টি ২ইত; দক্ষের সময় হইতেই সহবাসজ্নিত সৃষ্টি আর্থ্য হয়।
 - ৬ নাগৰীথী—দেবযানবীধাভিমানিনী দেবতা।

 § কোন মতে সমাস্থলে লয়া পাঠ দৃষ্ট হয়।

প্রস্ব করেন। জগতীতলে যে কিছু পদার্থ দৃষ্টি-গোচর হয়, তৎসমস্তই অক্লব্যতী হইতে সমূৎপন্ন।

বস্থগণ অন্ট্যংখ্যক নামে অভিহিত: তাঁহারা আপে, ধ্রুব, অনিল, সোম,ধর, অনল, প্রভূষে ও প্রভাব। * তমধ্যে আপের চারিটা পুত্র; বৈতত্ত্য, শ্রম, শান্ত ও মুনি।† কাল ধ্রুবের এবং বর্চা সোমের পুত্র। মনোহরার গর্ভে ধরের পাঁচটা পুত্র সঞ্জাত হয়; তাঁহারা দ্রবিণ, হব্যবাহ, শিশির, প্রাণ ও রমণ নামে অভিহিত। 🗓 পুরোজব অনি-লের এবং অবিজ্ঞাত অনলের পুত্র; এতদ্ভিন্ন যিনি শরস্তম্বে জন্ম পরিগ্রহ করেন, দেই কুমারও অন-লের পূজ্র; তৎপরে শাখ, বিশাধ ও নৈগ-মেয় নামে আরও তিনটী অনলপুত্র সঞ্জাত হয়। গ কৃত্তিকাগণ পুত্ররূপে প্রতিপালন করাতেই কুমার কার্ত্তিকেয় নাম ধারণ করিয়াছেন। দেবল প্রভ্যু-ষের এবং বিশ্বকর্মা প্রভাবের পুঞ্জ; 🖇 বিশ্বকর্মা গৃহ, কানন, বিভূষণ প্রভৃতি যাবতীয় শিল্পকর্মে স্থনিপুণ; তিনি স্থরগণের শিল্পী; তাঁহারই শিল্প অবলম্বন করিয়া মানবগণ জীবিকা নির্বাহ করে।

স্থ্যভি কশ্যপ হইতে রুদ্রগণকে লাভ করেন,

তাঁহারা বহুসংখ্যক, তন্মধ্যে অজৈকপাদ, অহিত্রধ্ন, বিশ্বরূপ, রৈবত, হর, বহুরূপ, ত্যান্থক, র্যাকপি, শস্তু,কপদী ও কপালী এই একাদশ রুদ্রই প্রধান। স্থরভি তুশ্চর তপোতুর্গান দারা দেবদেব মহা-দেবের প্রসমতা সাধন করিয়াছিলেন। রুদ্রগণ দারাই স্থাবর জঙ্গমাত্মক নিধিল জগৎ পরিব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে।

> ইত্যাদিমহাপুরাণে আথেয়ে জগৎদর্গবর্ণন নামক অষ্টাদশ অধ্যায় সমাপ্ত।

ঊনবিংশতিত্য অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, হে তপোধন। কশ্যপ অদিতি প্রস্থৃতিতে যে সকল প্রজা স্থানন করেন, অধুনা তাহা কীর্ত্তন করিতেছি। পা

* মৎস্থপুরাণে কল্রগণের সংখ্যা একাদশ বলিরাই লিথিত আছে, তাঁহারা মানসভময় বলিয়া বর্ণিত; তাঁহারা বথাজনে অজৈকপাদ, অহিএয়, বিরপাক, রৈবত, হয়, বছরূপ, অ্যথক, সাবিত্র, জয়য়ৢ, পিনাকী ও অপরাজিত নামে প্রসিদ্ধ।

কুর্মপ্রাণে নিথিত আছে যে, একা মরীটি প্রভৃতি মানস প্রস্পতে স্টে করিব। তাঁহালিগের সহিত তপস্তার মনোনিবেশ করিলেন। ঐ অবসার কিরৎকাশ অতিবাহিত হইলে তাঁহার বদন হইতে কালানন সদৃশ রুদ্রের আবির্ভাব ক্টল। সেই রুদ্রের করে ত্রিশৃশ বিরাজমান, তিমি তিনেত্র, অর্জনারী নর-দেহ, এবং ভীবশদর্শন। তাঁহাকে নেত্রগোচর করিবামাত্র প্রজার হলছে ভীতি স্কার হইল; তিনি "আবাকে বিতক্ত কর" এইমাত্র বলিরাই তিরোহিত হইলেন। তথন রুদ্র ব্রদ্ধার আদেশে স্বীর দেহ বিভক্ত করিবা নারীয় ও প্রবৃষ্ক প্রবিদ্ধান গরে সেই প্রকৃষ্ভাগকে প্ররায় একাদশ ভাগে বিভক্ত করেন। এই প্রকারেই একাদশ রুদ্রের স্টি হয়।

দ কপ্সপের অমোদশ পত্নী; যথা—অদিতি, দিতি, দহ, অরিষ্টা, স্থরসা, স্থরতী, বিনতা, তাত্রা, ক্রোধবশা, ইরা, কক্র, ধসা ও মৃনি।

প্রভাবের অপর নাম প্রভাব।

[†] মৎস্থপুরাণে আপের চারি পুত্রের নাম শাস্ক, বৈতও, শাস্ব ধুনিবক্র বলিয়া বর্ণিত আছে।

[‡] মৎসপুরাণে লিখিত আছে বে, ধরের ছুই ভার্বা; একের নামে কল্যাণিনী, বিতীয়ের মনোজবা। কল্যাণিনীর গর্ভে জবিণ ও হব্যবাহ এবং মনোজবার গর্ভে আণে, রমণ ও শিশির ক্রা পরিগ্রহ করেন।

প পুরাণান্তরে বর্ণিত আছে বে, মনোক্ষর ও অভিজ্ঞাত-গতি, এই হুইটি অনলের পুরে; ঐ তনম্বম শিবার গর্ভে ক্ষম গ্রহণ করেন। এতন্তির শাধ, বিশাধ, নৈগমের ও কুমার, এই চারিটিও অধির পুরে।

[§] মংস্তপ্রাণে প্রত্যাবের ছইটি প্র লিখিত দেখা যায়;

একের নাম দেবল, বিতীবের বিভূ।

যে সকল দেবতা চাকুষ মন্বন্তরে ভূষিত নামে অভিহিত হইতেন, তাঁহারা কশ্যপ হইতে অদিতিতে সমূৎপন্ন হন। উহাঁরাই বৈবন্ধত মনুর শাসনসময়ে ছাদশ আদিত্য বলিয়া প্রসিদ্ধ। উহাঁরা
বিষ্ণু, শক্রা, দ্বতা, ধাতা, অর্য্যমা, পূষা, বিবন্ধান,
সবিতা, মিত্রে, বরুণ, ভগ ও অংশ নামে অভিহিত। অরিষ্টনেমির পত্নীরা ষোড়শ সংখ্যক
অপত্য এবং বিহ্যুৎ চারিটা বিচক্ষণ তনয় লাভ
করেন। এই সকল দেবতা ও বিপ্রগণ সকলেই
প্রতি মন্বন্তরে ও প্রতি কয়ে উৎপত্তি ও বিনাশ
প্রাপ্ত হন। কুশাশ হইতে যাবতীয় দেবাস্তের
উৎপত্তি হয়।

কশ্যপ হইতে দিতির গর্ভে হিরণ্যকশিপু ও হিরণ্যাক্ষ নামা পুজন্বয় এবং সিংহিকা নামী একটী কন্যা সমুৎপন্ন হয়। বিপ্রচিত্তি ঐ কন্যাকে ভার্যা-রূপে গ্রহণ করেন; সেই সিংহিকার গর্ভেই রাছ প্রভৃতির উৎপত্তি হয়; সিংহিকানন্দনেরা সকলেই সৈংহিকেয় নামে প্রথিত।†

হিরণ্যকশিপুর চারি পুত্র; তাঁহাদিপের তেজ-বিতা সর্বত্র প্রদিদ্ধ; তাঁহারা অমুহলাদ, হলাদ, প্রহলাদ ও সংহলাদ নামে অভিহিত। গ তমধ্যে। প্রহলাদ পরম বৈষ্ণব ছিলেন। হলাদের পুত্র হ্রদ; ব্রুদের তিন পুত্র : আয়ুস্থান, শিবি ও বান্ধল।

বিরোচন প্রহলাদের ও বলি বিরোচনের পুত্র। বল একশত পুত্র লাভ করেন, তন্মধ্যে বাণই সর্বজ্যে । বাণ তপস্থাদারা পুরাকালে দেবদেব উমাপতিকে প্রদন্ধ করিয়া তাঁহার পাশ্বর্তী হইয়া বিহার করিবার বর প্রাপ্ত হন। া

হিরণ্যাক্ষের পাঁচটী পুত্র। । দমু, শম্বর, শক্নি, দিয়্দ্ধা, শঙ্কু প্রভৃতি এক শত পুত্র লাভ করে। গ প্রভা স্বর্ভানুর ও শচী পুলোমের কন্যা; § উপাদানবী, হয়শিরা ও শর্মিষ্ঠা

একথানি বিদেশীয় ছন্তলিখিত মূল পুতকে লিথিত
আছে যে, হলাদের পুত্র হল এবং সংহলাদের পুত্র আযুদ্মান্,
শিবিও বাহল । মধা———

" ---- ফ্লাদপুত্র হ্রদন্তথা। সংফ্লাদজান্চ আয়ুত্মান্ শিবিবাস্কল এবচ।"

কিন্তু মংতপুলাণে লিথিত আছে যে, আয়ুখান্, শিবি, বাস্থল ও বিয়োচন এই চাহিটিই প্রস্থানের পুত্র।

† প্রসিদ্ধ আছে, বাণ সহস্রবাভ্ ধারণপূর্বক ভূমিষ্ঠ ইইয়া-ছিলেন। তিনি একাগ্রমনে বছদিন যাবৎ কঠোর তপোসুষ্ঠান বারা শক্ষরের আরাধনা করেন। তদীয় তপভায় প্রসন্ধ ইইয়া শূলপাণি নিরস্কর তাঁহার সমীপবর্তী থাকিতেন। দেবদেব হরের অমুগ্রহে বাণ মহাকাল ও শিশি পুলা প্রতাপবান্ ইইয়াছিলেন।

্মংস্থাপুরাণে ছিঃপাকের চানিট পুত্র বলিয়া বর্ণিত আছে। তাছাদিগের নাম উত্ত, শক্নি, ভ্তসভাপন ও মহানাভঃ

শ কৰিক আছে যে, দহুর পুত্রগণের মধ্যে বিজ্ঞচিতি, বিমুদ্ধ, শৃকুনি, শৃকুনিরোধরু অয়োমুথ, সম্বর, কপিল, বামন, মরীচি, ময়বান, ইরা, পৃজ্ঞলিরা, বিজ্ঞাবণ, কেছু, কেতৃবীবা, শতহুদ, উল্লেখিং, বজ্ঞাজা, একবজু, মহাবাহ, বজ্ঞাক, ভারক, অনিলোমা, প্লোম, বিহু, বাণ, স্থজাহ ও বৃহপ্রনা ইহারাই প্রধান; ইহাদিণের মধ্যে বিপ্রচিতিই স্ক্রাণেক্ষা সমধিক বীর্বাণাণী ও শৌর্বাসন্দর।

§ প্রাণান্তরে প্রভা ভলে মুপ্রভা পাঠ দৃষ্ট হয় । প্রোম
দানবের কঞা শচী : দেবরাজ শচীকে পদ্ধীতে গ্রহণ করেন ।

প্ৰাণাঝাৰে ইই(দের নাম এইরপ দৃষ্ট হয়। যথা—ইলা, ধাতা, ভগ, ছয়া, য়য়, বয়ণ, অয়য়য়, বয়য়ান, সবিতা, প্রা, অংশুনান্ও বিয়ু।

[†] शास्त्रक्त, वरण, देनल, मल, बाखालि, देवल, मबूहि, यमुम, व्यक्षन, नरक, कालनाख, मध्यात ६ कहावीया, हेराहारे देशशंहरक्षश्रद्धात मद्द्या खाधान; हेरानिश्चत वाहारे नामववस्त्र संबंधिक इटेबार्ट्ड।

শ অনুষ্দি, হাদ, প্ৰায়াদ ও সংহাদ এইজপ পাঠও দৃষ্ঠিয়া।

র্বপর্বার স্থৃহিছা । কে বৈশানরের ছুই কন্সা;
একের নাম পুলোমা, দিতীরের কালকা। নহাবল মারীচ ঐ উভয়কের পান্ধীদে গ্রহণ করে, তাহাদিগের গণ্ডে কোটি কোটি লামবের কাম হয়। চড়কোটি সংখ্যক নিবাভকবচ নামক দৈত্যেরা
প্রহলাদ হুইতে উৎপন্ন হুইয়াছিল। প্

কাকী, শ্যেনী, ভাদী, গৃগ্রিকা, শু চি, সুগ্রীবা এই ছুয়টি তান্তার কন্মা। ইহাদিগের গভে অখ, উদ্ধ্র ও কাকাদির উৎপত্তি হয়। ক্র অরণ ও গরুড় উভয়ে বিনতার গভে জন্ম গ্রহণ করে। শি হুরদার গভে দহত্র দর্প ও কক্রর গভে ও অপংখ্য দর্পের জন্ম হয়; কক্রর সন্তানগণ কাদ্রবেয়নামে প্রাসিদ্ধ; তন্মধ্যে শেষ, বাহ্বকি, তক্ষক প্রভৃতি কভকগুলি

* মৎস্থপুবাণে বণিত আছে বে, উপল্যনধী, মলোলহী ও কুহু, এই তিনটি ময়লানবের কলা। ব্ৰপক্ষার ছই কলা, একেব নাম শর্মিটা, বিতীয়েব চলা।

† বিষ্ণুরাণে লিখিত আছে যে, নিবাতকবচগণ সংহলাদ হইতে সমুৎপর। উহারা এরণ ছর্জার ছুইরাছিল যে, দেবতা, গর্মা, নাগ, যক অভ্তি কেইই ভাহাদিগকে ধাংল করিতে সমর্থ হয় নাই; আবশেষে ধনলয় ভাহাদিগকে নিপাতিত করেন।

া মংগ্রপুরাবে ও বিষ্ণুপুরাবে 'ভাতার ইমট কুজার নাম এইরপ নিবিত্ত আছে বধা—ভকী, জেনী, ভাসী, গুড়ী, ইপ্রীবী ও ভচিঃ ভকীর বার্ড়ে ভফপকী ও উল্পান, প্রেনীর পর্জে জেনগণ, ভাসীয় গল্ডে ভাস ও ক্রম শক্ষীগণ, গুলীর গর্জে গুর, ক্পোত ও পারাবভকারীয় পকী, অ্রীবীর পর্জে হাব, মেদ, গর্মান্ত ও উট্ল এবং ভচির পর্জে হংল, নারস, কার্ম্বার্ক র নামরগণ প্রস্থুপুর হব!

ण अण्डित निन्छात नृत्य व्यक्ति क्या क्रिक्ट निर्माण न

সাধ্যে কি । কি কোন্দার গড়ে বাহারা ক্যাহ্র করে, কাহারা কোন্দান নামে অভিনিত; তাহারা নংট্রাম্ব; এতভিন্ত খনচর ও জনচর নাংশাশী পক্ষাও কোন্দাশী হইতে সমুৎপর । কু ছারভির গড়ে নামহিবাদি এবং ইহার গড়ে ভ্রাদির স্থাই হয়। খানা হইতে যক্ষ রক্ষ, মুনি হইতে অক্যান্গণ এবং অরিউ হইতে গজ্বগণ জন্মগ্রহণ করে। ক্যাপ হইতেই এইরপে স্থাবরজন্মনাত্মক জগতের স্থাই হয়।

েকান সময়ে বহুদংখ্যক দানৰ দেবতাদিপের করে বিনিহত ও পরাভূত হইলে দিতি পুদ্রশোকে কাতরা ইইয়া-পতি কল্পপের শরণাপদ্দ ইইলেন এবং বহুবিধরূপে তাঁহার প্রীতি সাধ্য পূর্বক একটা ইন্দ্রহন্তা পুদ্র প্রার্থনা করিলে কল্পপত প্রদান করিলেন। কল্পপের বরে দিতির গর্ভ সদার হয়। একিকে দেবরাজ সেই গর্ভ বিনাশার্থ নিরস্তর দিতির ছিত্র অবেন্ধণ করিতে লাগিলেন। সহসা একলা দিতি পাদ্দর্শকান না করিয়াই শর্ম করিলের আমানি ইন্দ্র

[&]quot; विक् प्रार्ण वर्षिक स्वास्त्रक स्वास्त्रकार स्वास्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र

[े] कि चुनाल वर्षिक चार्स एए, ब्रह्में कि नाहजन व रकाय-वर्णात नहर्ष क्रमधारन करत । त्यानिक , चारक रव, रकायवनगर कोमरमस्त्र करत निरुक्त हुए।

ক্ষরিলেন, তাহাতেই উনপ্রকাশৎ স্থায়ুর উৎপ্রতি হয়। এই সকল দীওভেঙ্গা মরুকাণই পরিশেবে ইস্তের সহায় হইয়া বহিন্দেন।

র্ণ মঙ্গলাপের স্থান্ট বিষয়ণ অতি পরমাত্ত; স্থাচরাং ভাষার প্রাকৃত্ব বিবরণ এইস্থালে লিপিবস্থ ছইল। বণা——

স্থাত্তর ন্ধ্রামন্ত্র ভগৰান্ বিষ্ণু দেবগণের সহিত সমবেত হইয়া ধানবদিগকে বিনিহত করেন। তথন দিতি প্ত্র-লোকে একান্ত কাতরা হইয়া মরধামে সমস্তপক্ষক নামক প্ণাক্ষেরে অবতীর্গ হইলেন এবং পবিত্রতোয়া সরস্থীর প্রীতিপ্রদ অনুদর্শন তটভূমে অব্ভিত হইয়া পতি কশুপের আরাধনা করিতে আরম্ভ করিলেন। তিনি ব্রভপরায়ণা ও সংযতা হইয়া চাক্রা-রণ প্রভৃতি বছবিধ তপক্ষার অষ্ঠান করেন। এইরূপে শত বৎসরেরও অধিক অতিবাহিত হইল, তাঁহার দেহয়ী মলিন ও কৃশ হইয়া উঠিল। তথায় বশিষ্ঠ প্রভৃতি অক্সান্ত অধিকাও প্রায় সর্বাণ অবস্থিতি করিতেন। একদা দিতি তাপস্বিগকে সম্বোধন করিয়া জিল্ডানা করিলেন, হে তপ্রিগণ। কোন্ত্রতের ফলে প্রশোক নিবারিত হয় পুকান্ত তপ্রায় করেই বা উজ্বলাক্ষে স্থিতাগাভাগী হওয়া যায় গ্

ভাপৰগণ কৰিলেন, হে বভচাৱিণি ৷ মদনবাদশী নামক রভার **অনুষ্ঠান করিলে** অনিবার্যা পুত্রশোক নিবারিত ও সর্ব্ সেভিগ্য বাভ ছট্যা পাকে। তৈত্র মাসের ভরুপকীর বাদশী ভিশিতে ঐ ব্ৰভের অনুষ্ঠান করিতে হয়। ঐ ভিধিতে ব্ৰভনিষ্ঠ হইরা একটি কুন্তু সংস্থাপিত করিবে, উহাকে বারণ কুন্ত করে। কুন্তটি দিতত খুণে পরিপূর্ণ করিয়া উচাতে ইকুদণ্ড ও অন্যান্ত ফলমূলাদি প্রাদান করিবে। , এই প্রাণার কুন্ত স্থাপিত হইলে বেতচকানে উহার গালে কাহুলিয়া ক্রিয়া গুটখানি খেত বসন দারা উচা সমীবৃত করিবে। 🍇 कুল্ডের উপর একথানি ভাত্র-भारत कतिया किकिए वर्ग /७ त्यासानिश्च, शास्त्र कारानगृक्षक ভাষার উপরে কর্মীপুল বাধিয়া ক্লমুপুরি ক্রিনান্ত্রক রতি ও मद्दानत अञ्जिष् कि किक कतिरद । क्षश्यदक केलाला कि नद-कारम वे अधिमृद्धिरसम्भ भूका कतिरम्। अभरनम् साम् रतिवरे शृक्षा कतिएक इत । यथाकास 'कासान नमः' '(मोकांगां-मात्र समः "प्रवाद नगः" 'सन्त्रवाद सम् "प्रकार्वताद नवः" 'कारकार मनः' 'नवश्वात ननः' 'नक्नतात ननः' 'नर्ताकारमः ननः' विणया हत्रन, अध्या, छेक्, कहि, छेनत, वकः, वस्त, बाह छ निट्या-দেশের পূজা করিবে। এই প্রকারে পূজা সমাধা করিয়াপর-

জন্মা এই প্রকারে জগৎ হান্তি করিরা পৃথুকে সাজাজ্যপদে প্রতিষ্ঠিত করত অভ্যান্য সক্ষকে যথাযথ আধিপত্য প্রদান করিবেলম । চন্দ্র জিজ্ঞ দিন ক্স্তটি রাজ্পের হন্তে প্রদান করিতে হয়। অনন্তর জিজ্ঞ সহকারে রাজ্পজ্যেলন করাইল দক্ষিণা প্রদান করিবেং দক্ষিণা দান সমরে এই মন্ত্র পাঠ করিতে হয়। যথা——

> 'প্রীয়তামত্ত তগবান্ কামক্লণী জনার্দন: । হলত্যে সর্বাভূতানাং আননেদা যো বিধীয়তে ॥'

বাহ্মণডোজন পরিসমাপ্ত হইলে হয়ং ভোজন করিবে, কিন্তু লবণ ভক্ষণ করিবে না। এইরূপে প্রতিমাসে ব্রতাফুঠান পূর্বক বাদশ মাস সমতীত হইলে অম্যোদশমাসে হার্ণছারা কামের প্রতিমৃতি বিনির্দিত করিয়া বাহ্মণকে প্রদান করিবে; ঐ মৃতির সহিত শ্যা, দেহু, হাত ও গভৌ প্রদান করিতে হয়। অনস্তর একটি বিলাশতিকে আনমন করিয়া ভাঁছাদিগের আর্চনা পূর্বক সাধ্যমত বস্ত্র, অলঙার, শ্ব্যা ও গাভী প্রদান করিবে। অনস্তর "আপনারা প্রতিভ ছউন" বলিয়া প্রণাম করিতে হয়। পরিশেষে ক্তর তিশ হারা হোমবিদি পরিসমাপ্ত করিয়া মদনের অব্যাঠ পূর্বক প্ররার বিপ্রদিগকে ভোজন করাইবে। ব্রাহ্মণগদকে গব্য ঘৃত্ত ও পারস প্রদান করা একান্ত বিধেন।

হে দেবি ! কামদেবকেই স্চিদ্যানন্দ হরিরপে ধ্যান করিবে, বিনি প্রকামনার এই এতের অনুষ্ঠান করিবেন, তিনি মনে মনে এইরপ চিন্তা করিবেন যে, হরিই মদনরপে মদীর জঠরে অবতীর্থ হইতেছেন। মদনখাদদী প্রতের অনুষ্ঠান করিলে যাবতীয় পাপরাশি বিধ্বংগিত হইরা ধায়। এই প্রতের প্রভাবে দীঘ্লীবী পুত্র ও প্রম সৌভাগা লাভ হইরা থাকে।

তাপসগণপ্রস্থাৎ এই বৃত্তান্ত প্রবণ ক্রিরাই দিতি মদনহাদশী ব্রতের অন্তর্গন করিলেন। যথাবিধানে অন্যোদশ মাসে
ব্রত নির্নিয়ে পরিসমাপ্ত হইবামাত্র কল্পানার ভগতা ও ব্রতান্তর্গন হইবা ক্রিলেন, হে ব্রবনিনি। জোনার ভগতা ও ব্রতান্তর্গন বন্দল্লে আমি বারণ্যনাই প্রীতি পাত ক্রিরাছি। ভূমি মনোনত ব্যু প্রার্থনা কর্ম।

দিভি বলিলেন, হে ভগবন্ ! যদি আমার প্রতি আগর হইর।
বাব্দেন, আহা হইবে এই বহু প্রদান কলন, বেন আদি ইজহল্পা অনিজ্ঞান প্রকাশ ভরিতে গারি, নদীর পূজ বেন বাবতীর প্রগণেরই বিক্তোহর । এতহাতিরেকে আমার অন্ত
কিছুই প্রাধনীয় নাই ।

ওযবিশম্তের, বরুণ জলের, বৈতাবশ রাজগণের, বিফু আদিত্যগণের, পাবক বহুদিগের, বাসব মরু-দগণের, দক্ষ প্রজাপতিদিশের, প্রহুলাদ মানবসম্-হের, যম পিড্বর্গের, দেবদেব শক্তর ভূতাদিসম্-হের, হিমালয় শৈলগণের, সাগর নদনদীগণের,

কঞ্চপ কহিলেন, কল্যাণি । তুমি যাহা ক্ষাজনাথ করিতেছ, তাহাই দিছ হইবে । একণে যাহা বলিতেছি, প্রবণ কর । তুমি দর্কাগ্রে পুত্রেষ্টি যক্তের অফুটানে প্রবৃত্ত হও । সহর্বি আপত্তম তোমার যক্ত দল্পাদিত করিবেন । তৃৎপরে আমি গর্জাধান করিলেই তুমি অভীপ্যিত তালাভে সমর্থ হইবে।

অনস্তর পুত্রেষ্টি যজ্ঞের আরোজন হইল। আপত্তম বিধানাফুসাবে হোম করিতে আবস্ত করিলেন। সেই যজ্ঞে দিভি
অর্থব্যরবিবরে কিছুমাত্রও কুপণতা করেন নাই। "ইক্সহস্তা
অমিততেজা পুত্র জন্মগ্রহণ করুক্" বলিয়া আপত্তম আহতি
প্রদান করিতে লাগিলেন; তদ্দশ্নে হুরগণ বারপরনাই ভীত
তইলেন, কিন্তু অন্মূরগণের হর্ষের পরিসীমা রহিল না।

যজ্ঞ ফুচারুরূপে পরিসমাথে হইলে কশ্রুপ দিভির গভাঁধান করিয়া কহিলেন, হে কল্যাণি ! ভূমি গর্ডধারণপূর্বক শত বৎসর যাবং এই আপ্রমে অবস্থান কর। সর্বাদা গর্ভের রক্ষাবিধান করিবে: যে অবস্থায় গর্ভিণীগণের অবস্থান করা বিধেয়, ভাছার ব্যক্তিক্রম ঘটলেই গর্ভ বিনষ্ট হুইয়া থাকে৷ সর্বাদা বুক্তমূলে शमन, तृक्रमृत्य अधिष्ठान, मृश्विकात खुन, मृश्य ७ छैम्बर्गत উপর উপবেশন, বল্মীকের উপর অবস্থিতি, জ্বলাবগায়ন, পৃঞ্জ-গৃহে অবস্থান ও সন্ধ্যাকালে আহার করা অন্তর্নত্তী নারীর বিধের নহে। আংহাতে অন্তরে উদ্বেগ ও চিন্তার উদ্বে মা হর, **ভবিবদে पত্ৰান্ ছওয়া গর্জিনীদিগের সর্বভোভাবে কর্তবা**। গর্ভিণীরা নথ, অন্তার ও তত্ম বারা সৃত্তিকা বিশিধন করিবে मा : मित्रकत नेताम शाका जबना नाताम ना जबकान काविक र्गतिकाम कतां व गाँकिया मेशूरिक मरह । भागतिकारिक विवक्ता, कार्केनर, উविषक्तना अवः উध्योगिश वा निकाणिश स्टेंबी अवन क्रिया ना ; नियम्य गरिवासार क्रियाहित क्रा है केसे हैं। फ्र. चनात, चरि धम्कित छेनत **छैनत्वनत 'क**र्तित आ : कौरायक महिल दिवाल क्या है क्या का क्या कि किए किए किए कि अकास अक्षाता। अधिनीया निर्वेश विनियं जोकहरेन नवन-ছতা হইরা দেবপুলা ও ভক্তপ্রারা করিব। পর্যন্ত কেবল वर्षियी दिनशा नरह. त्रमतीमारावतह अहेन्नल निकास रहहलाछ

চিত্রেরণ গর্মবিনিগের, বাছাকি নাগসন্থের, তক্ষক সর্গনিগের, গরুড় পক্ষিবর্গের, প্রারভি গজেন্ত-গণের, র্য গোসকলের, পার্দ্ধিল মুপগণের, প্রক বনস্পতিদিশের এবং উচ্চৈঃপ্রবা অথসমূহের অধি-পতি ইইলেন। তদনন্তর হুধর্মা পূর্বেদিকের, শথ-করা প্রেরহর। বে নারী এইরপ আচরণ করে, সে দার্থকীবি ধর্মনিঠ প্র লাভ কবিতে পারে, সন্দেহ নাই; অতএব ভূমি এই নিয়নে শত বংগর অভিবাহিত কব।

কশুণ এই বশিরা তিরোছিত হইলে দিতি তদীর আদেশা-হুদারে অহুত্রম যোগাবলখনপূর্বক কাল্যাপন করিতে লাগি-শেন।

এদিকে প্রক্ষর একান্ত ভীত হইরা দিভির আশ্রমে অবতীর্ণ হইলেন। দিভির কোনরূপ দোধাবেবপপূর্বক তাঁহার পর্জ নই করাই দেবরাজের মূব্য উদ্দেশ্ত, কিন্তু তিনি এরপ স্বত্বে মনোভাব গোপন করিলেন বে, তাঁহার বাহ্ডাব ক্ষরণোক্ষন করিয়া কেহই মনোগত ক্ষতিপ্রার ব্রিতে পারিল না। তিনি হরং বোগাবেদ্যন করিয়া অব্হিতিপূর্বক আন্যের অসক্ষিত্তাবে কার্যাসিভির উপার চিন্তা করিতে লাগিবেদ।

এইরপে শতবংসর অভীতপ্রায় ছইল: ডিন দিন মাচে অবশিষ্ট আছে, এমন সময়ে দিভিত্র অন্তরে এক্লণ হর্বীধিকা সম্দিত হইল বে, ভাহার মভিত্রম সমুপত্তিত হইল; লৈবপঞা ঐ সময়ে দিবাভাবেই নিজা সমুপশ্বিত হইরা ভাঁহাকে এলগ বিমোহিত করিল যে, তিনি ম্ভাকেশী ও পশ্চিমশিরা হইবা भग्न कतिराम : विरागवणः भाषाश्रीकामान कविराग मा। राज-वास हिन्त व्यार्थभाग विकित नेक्सियों व्यप्ति हरें हो यह बादा गर्छ गरा बरक बिक कतिया क्लिंगिरमम । खे मुद्ध बक् इहेरक সাতটি অপরিবিতভেকা পুল সঞ্চাত হইরা রোদন করিছে भारक प्रतिरम शूरु भूते में स्व, या प्रव" विनिधा कोश्तिभटक क्षमम पश्चित विश्वित विश्वित के विश्ववाद दिया के विश्ववाद क्रिक मा अविवर्गितियो क्रिके क्रिके प्रकार के क्रिके (सर् स्वितित ानी बारकांक क्षा रहेटचर बंध अवसे क्षाप नवाड एक्स्टिक केनेन्स्निन नाथाय प्रेम । क्षेत्राची स्वत्निक क्यान विक्रिक्त भौतिता। अरे अकांकुक वीर्शिक निर्मीक ने पवित्रा त्य-রাজের অক্তরে বারপরনাই বিশ্বরগঞ্চার হইল। ভিনি বনে মনে কিয়ৎকাল চিন্তা ক্ষিয়া খান্যোগে দেখিলেন বে, ৰদন

পেল দক্ষিণনিকের, কেছুমান্ পশ্চিমনিকের এবং হিরণ্যরোমা উভরনিকের আধিপত্যে নির্ফ হইলেন। ইহাকেই প্রভিস্প বলা যায়।

> ইত্যাদিমহাপুরাণে আগ্নেদে প্রতিসর্থবর্ণন নামক উন্বিংশ অধ্যায় সমাধ।

ষাদশী অতের মাহাছেটে কুমারদিগের জীবন বিনষ্ট হইতেছে না। দিতি ভক্তিপুতচিতে দেবদেব হরির অর্চনা করিয়াছিলেন বলিয়াই বজ্ঞ এ কুমারদিগকে বিনষ্ট করিতে সমর্থ হয নাই। ভখন পুরক্ষর কহিলেন যে, আদ্য হইতে এই উনপঞ্চান্ত কুমার স্করগণনধ্যে পরিগণিত হইল, অন্তান্ত দেবগণেব নাায় ইহারাও যজ্ঞাংশভাগী হইবে।

শ্বনন্ধর দেবরাজ দিতির জঠর হইতে বিনিজ্ঞান্ত হইরা বিবিধন্দপ অভিযার উঁহার প্রসঙ্গতা সাধনপূর্বক উনপ্রধানত কুমার সহ আদিবধানে গমন করিলেন। গর্ভমধ্যে বজাবাতে কাতর হইরা কুমারের। রোদন করাতে স্থরপতি "না রুদ, মা কুদশ বলিয়া বিবেধ ক্রিয়াছিলেন বলিয়াই উইারা মুকুৎ নামে প্রামিক হইরাছেন।

* মংজপুরাণে বর্ণিত আছে যে, মহীণতি পৃথু কমলবানি
কর্ত্ব ধরিনীর সাজালাগদে প্রতিষ্ঠিত হইলে চক্র ওবধিসমূহ
বক্র, ত্রত, তপ্তা, মক্ষরে, ভাষা, বিল, পাদপ, ওক্রও লতাগণের অধিপতি হইলেন। ঐক্রণ বন্ধণ জলের, বৈশ্রবণ রাজগণের, কুবের ধনের, বিশ্বু আদিত্য ও বহুগণের, অলি লোকসমূহের, দক্ষ প্রজাপতিগণের, ইক্র মন্ধাণপের, প্রহলাদ দৈত্যদানবদিগের, বম পিড়গণের, প্রপাণি ভূত, পিশাচ, রাক্ষম,
বেতাল, বক্ষ, পত প্রভৃতির, বিশাচল অভলাসমূহের, সাগর
নদমণীর, চিত্ররধ গর্মের কিরর ও বিদ্যাধন্মের, বাহ্মিক লাগগণের, তক্ষক মর্পাদিগের, ঐরাবত দিশ্গলসমূহের, উতৈঃপ্রবা
অখসমূহের, গলড় পন্ধিকুলের, সিংহ মুগমণের, অবভ সোসমূহ হের, রাক্ষ বদশ্যতিবর্গের, স্থান্থা প্রাধিকের, শত্রপদ দ্দিণবিদ্যের, ক্ষেত্রপান্ পশ্চিমদিকের এবং ভিরণারোমা উক্রাধি ক্র
অধিপতি হন।

বিংশতিভ্য অধ্যায়।

ভায়ি কহিলেন, সৃষ্টি নয় প্রকার; মহৎদর্ম,
ভূতদর্গ, বৈকারিকদর্গ, মুখ্যদর্স, তির্ব্যক্তান্তঃদর্গ, উর্ব্যান্তঃদর্গ, অর্থাক্ত্যান্তঃদর্গ, অমুপ্রহদর্গ ও কোমারদর্গ। প্রথমতঃ মহতবের সৃষ্টি
হয়। তৎপরে পঞ্চন্মাত্রের সৃষ্টিকেই ভূতদর্গ
কহে। বৈকারিক দর্গেরই অপর নাম ঐন্দিয়ক
সৃষ্টি। এই দকল প্রাকৃত সৃষ্টি বৃদ্ধিপূর্ব্বক হইয়া
থাকে। মুখ্য সৃষ্টিকেই স্থাবরস্তি কহে।
উর্ব্যােতঃদর্গ দেবদর্গ এবং অর্থাক্সেতঃদর্গই
মানবস্তি বলিয়া বর্ণিত। অমুগ্রহদর্গ ছই
প্রকার; সাজিক ও তামদ। এই নববিধ স্তিইই
নিধিল বিশ্বের মূলীভূত কারণ।

দক্ষ প্রজ্ঞাপতির তন্য়াগণের মধ্যে খ্যাতি প্রভৃতি যে একাদশটি কল্যা সমূৎপন্ন হয়, ভৃঞ প্রভৃতি মহর্ষিরা তাহাদিগের পাণিগ্রহণ করেন ৮৮

* দক্ষের কন্যাগণের সধ্যে খ্যাতি, সতী, সংভূতি, স্থতি,
প্রীতি, ক্ষমা, সন্ততি, অনস্বা, উর্জা, স্বাহা এবং স্থা এই
একাদশটকে ভ্রু, ভব, মরীচি, অলিরা, প্রভ্যা, প্রহ, ক্রতু,
অন্তি, বলিষ্ঠ, বল্লি ও শিতৃগণ ভার্যারূপে গ্রহণ করেন, আর ধর্ম
বে ব্রেরাদশটকে বিবাহ করেন, উল্লোল্ডার্কা প্রার্জা, গল্পী, ধৃতি,
তৃষ্টি, সৃষ্টি, মেখা, জিল্লা, বৃদ্ধি, সক্ষা, বস্তু, সাজি, সিদ্ধি ও কীর্তি
নামে অভিহিত। ইইাবিসের মধ্যে প্রশ্না হইতে কাম, সন্ত্রী
হইতে দর্প, ধৃতি হইতে নিরম, ভৃষ্টি হইতে সম্ভোব, পৃষ্টি হইতে
লাভ, মেরা হইতে শম, জিল্লা হইতে বিভার, বপু হইতে বানসার,
শাস্তি হুইতে ক্ষেম, সিদ্ধি হইতে সিদ্ধি ও কীর্তি হুইতে মন্দের
উৎপত্তি হয়।

কুর্মপুরাণে লিখিড আছে বে, হিংসা অধর্মের ভার্যা, হিংসা হইছে নিক্তি ও অনুষ্ঠ সঞ্চাত হর। নিক্তির ছই প্র, একের নাম ভার, বিভীবের নরক। এভবাতীভ আরও ছইটি কন্যা ক্ষমে, ভারারা মারা ও বেদনা নামে অভিছিক্ষা ভ্তভার্ক্যা ব্যাতি কুইটি পুত্র অনুষ ,করেন,
একের নাম বাতা, বিভীয়ের বিগালা। দেবরাজের তাবে প্রসন্ধা ক্রিয়া বিফুপান্নী প্রইটি
সন্তান সমূৎপাদন করেন। বাতা ও বিগাতা হইতেই প্রাণ প্রমুকপুর উৎপত্তি হয়। মুকপু হইতে
মার্কণ্ডের ও মার্কণ্ডের হইতে বেদশিরা জন্ম পরিগ্রহ করেন।

মরীচির ঔরদে সম্ভূতির গর্ডে পৌর্ণমাস এবং অঙ্গিরার ঔর্ণে স্মৃতির গর্ভে দিনীবালী, কুছু ও রাকা প্রভৃতির উৎপত্তি হয়; স্বন্যা ব্রুতি হইতে তিনটি পুত্র লাভ করেন; তাহারা' সোম, তুর্বাসা ও দতাতেয় নামে.পরিচিত; পরম যোগী বলিয়া প্রদিদ্ধ পুলস্ত্যভার্যা প্রীতি मरखानिरक क्षरम^{*} करत्रम ; शूनरहत ∙खेतरम ক্ষমাতে সহিষ্ণু এবং সন্নতির গভে ক্রভুর ঔরসে মহাতেজা বালিখিল্য ঋষিদিপের উৎপত্তি হর। এই বালিখিল্যগণের দেহের পরিমাণ অঙ্গুঠপর্ব-মাত্র, তাহাদিগের সংখ্যা ষ্টি সহত্র। বশিষ্ঠের ভারদে তৎপত্নী উর্জ্ঞার গর্ডে শুক্র, স্থতপাথভৃতি দপ্তবি ও অগ্নির উর্দে স্বাহার গভে অগ্নিয়াতা, বহিষদ প্রভৃতির উৎপত্তি হয়। স্বধা পিতৃগণ হইতে চুইটি ক্লা লাভ করেন, একের নাম মেনা দ্বিতীয়ের বৈধারিণী।

অধর্ম হইতে তৎপত্নী হিংদা একটি পুত্র ও একটি কন্থা প্রাপ্ত হয়; পুত্রটি অনৃত ও নন্দিনী নিকৃতি নামে অভিহিত; অনৃত হইতে ভায় এবং

ঐ হই কলা বথাকনে ভয় ও নরককে পজিবে বছৰ করে।
মারা হইতে মৃত্যু এবং বেগনা হইতে হংব সমুংপর হয় । ব্যাধি,
ল্বা ব্যাক, ভূকা ও কোব ইহারা মৃত্যু হইতে উৎপর , ইহারা
উল্লিক্ষে, ইহাবিলের পুল কর্মন, বিষ্কুই নাই, ই ইবানেকই
ভানন করি করে।

নিকৃতি হট্টে নামকের উৎপ্রস্থি হর, নারা হইছে মৃত্যু ও বেদনা হইতে ছংশ সমূৎপন হয়; ব্যথি, জরা, শোক, তৃষ্ণা ও জোধ ইহারা মৃত্যু হইতে সঞ্জাত।

অগ্নি কহিলেন, হাই তপোধন! ব্ৰহ্মার শরীর হইতে বোদন করিতে করিতে একটি পুত্র সমূহ-পন্ন হয়; সেই পুত্রই রুৱে নামে অভিহিত !#

শ পুরাধান্তরে বর্ণিত আছে বে, এক্ষা দর্মপ্রথমে সনক, সনাতল, সনক, ফ্রন্থ ও সলংকুমাব এই পাঁচটি মানসপুত্র স্কলন করিছা
তাঁছাবিধের প্রতি প্রকাশিষ্টির ভাবার্পণ কবেন, কিন্তু তাঁহার। সে
বিষয়ে অবহেলা প্রদর্শনপূর্ম ক বৈরাগ্য অবলম্বন করিবেলন,
তথ্পনি এক্ষা মাধা বশতঃ চিন্তার বিষুধ কইলেন। তথ্প দ্বেব
দেব নারারণ তাঁহার নিকট সম্পদ্ভিত হইনা নানাপ্রকার প্রবাধ
প্রধান করিলে এক্ষা সচেতন হইরা তপজার অভিনিবিট ছইলেন; কিন্তু বন্ধনিন পর্যন্ত তপজা করিবাও কিছুমাত্র উপদ্ধি
না হওরাতে তাঁহার জোগ সঞ্জার হইল। একার স্বদ্ধে জোগের
উল্লেক কইবামাত্র ভাষীর নরন্ধর হইতে বারিকিন্তু নিপতিত
হইল। যেমন অঞ্চপাত ক্ইরাছে, অন্নি তাঁহার জেকুটি কুটিল
লগাট হইতে মহাদেব (ক্রন্ত) সমুৎপত্র হুইলেন।

মতেশর বেরপে রকার প্রস্থ প্রাপ্ত হন, তাতা ভূপিপুরাণে এইরপ বর্ণিত আছে বে, অভীত করের অববানে বিজ্ঞাৎ ত্যোষর ও একার্ণর হইরাছিল। তৎকালে জি বেবভা, কি, প্রি, কিছুমাত্রই বিদ্যান ছিল না; একবাল দেবনের নারারণ পেবশরনে শরান হইরা নিজাভিছ্ত ছিলেন। বংকালে তিনি একার্ণরে শরন করিরাছিলের, অবক্রটাছার সহল মন্তক, সহল নরন সহল ভূল ও সহল চরন বিদ্যালার ছিল; জীবার পরিধান পীতবসন। এই অবহার বিরপ্তাল জতীত হইলে একদা তাহার নাভিত্রণ হইতে প্রবোধন-বিত্তীর্ণ, বিষাপত্তপূর্ণ প্রাত্তাহার করিবেল। বিভূতে তার্ল করিবালালে অন্যার নাহালেভাবে রক্ষা বিন্দোভিত্র হইরা করিবেলন, এই ব্যার ত্যোমর একার্ণবে ভূমি একারী কে শরন করিয়া রছিয়াল ট

বিকু একার এই বাদ্য লাবণ্ ক্রিরা সহাভ্যন্তর ক্তিলেন আবি নারারণ, আবিই ক্রিও সংগ্রের একমাত কারণ;

ইনিই নিধিল বিধের শুটি শিভিড ও সংগায়কা

আমার দেহেই সাগত কানকারিবিভাজিতা স্বীপা বল্লভা বিশীন রচিয়াছে এবং আহিট মহাহোগীদিধের একমানে ঈশর।

গুগবান্ একাৰ্বশারী হরি ব্রন্ধার তম্পবিশেষ অবগত গাৰিয়াও বিজ্ঞাসা করিবেম, জুবি কে পু

বন্ধা কহিলেন, আমি ধাতা, বিধাক্ষা, শ্বর্জু এবং প্রাণিতা-মহ; এই অগৎ আমাতেই অবস্থিত, অভিনাব হয়, ভূমি প্রত্যক্ষর।

নারারণ ত্র্যাকত্ঁক এইরপ অভিহিত ও সময়কাত চ্ইর।
তদীর শরীরমধ্যে প্রবেশ করিলেন। দেখিলেন, ব্রহ্মার উদর
মধ্যে দেবদানবাদিসম্যিত তিত্বন বিরাজিত স্বাহ্মাছে।
তদ্দদ্নে নারায়ণের বিশ্বরের পরিসীমা রহিল না। অনতর তিনি
ব্রহ্মার বদন্বির বারা বহির্গত চ্ইরা ক্তিলেন, তৃষিও আমার
কঠরসধ্যে প্রবেশ কর, আমারও গর্ভে নানাবিধ বিভিন্ন লোক
দেখিতে পাইবে।

তথন ব্ৰহ্মাণ্ড দেবদেব বিফুর উদর মধ্যে প্রবিষ্ট চইলেন।
দেখিলেন, আপনার অভ্যন্তরে বে সকল লোক হিল, তংসমূলারই অধার বিরাজিত হইতেছে। তিনি বহুলং বাবং বিজ্
গর্জে পরিপ্রিশ করিলেন, কিন্তু কিছুতেই ভালার অন্ত প্রাপ্ত
হইলেন না। এদিকে ব্রদ্ধা শরীরমধ্যে প্রবিষ্ট হইবামাত্র হরি
দেহস্থ সকল বারই রক্ষ করিয়াছিলেন, স্কুতরাং ব্রদ্ধা নির্গমণ্
প্রাপ্ত না হইয়া নাজিবারে সমূপনীত হইলেন এবং বোগাবলখন
প্রান্ত নেই নাজিক্ষল হইতে আপনার রূপকে সমৃত্ত করিলেন। অন্তর্গ আপনাকেই এক্ষাত্র বিশেষর জ্ঞান করিয়া
জলহনতীরস্বে প্রত্বান্ধর নারায়ণকে কহিলেন, আ্যাকে
প্রান্তর করিবার অভিলাবে আপনি এ কিরপ কার্বোর অ্র্টান
করিলেন । এক্ষরত্ব আমিই স্বাপেক্ষা বলীয়ান্, মংসভূল
বলী অগতে আর হিতীয় ক্ষিণ্ড হয় না।

ক্ষণবানি এই বলিয়া মৌনাবণ্ডন ক্ষিণে, মারারণ উলোকে প্রবোধবচনে সাজ্না প্রয়ানপূর্ত্তক ক্ষিণেন, জাপনি ধাতা, বিধাতা ও বয়স্তু স্তা, কিন্তু মাংস্বাপ্ততা নিবন্ধন নির্মান ভাষা নিরীক্ষণ করিতে পারিতেহেন না। বাহা ভাউক, আঞ্চনি আমার সন্থানের পাল, আপনাকে প্রতিস্কৃত্তা প্রকাশে আমার অভিনান নাই। প্রকাশে আমার বজ্বা এই গ্রে আপনি আমার প্রত বীকার ক্ষন এবং আমার প্রিয় ও সংস্থাবসাধনার্থ প্রবোধন নামে বিধ্যাত হউন। কারক; ইনিই ছাজেগোকানী ঘটনা একচার বিনাশ নাধন করিয়া খাকেন। ভগবান্ পিতা-

ভবন ত্রন্ধা তথান্ত বলিয়া কচিলেন, আপনি সর্ব্বান্ধা, অনন্ত, সকলের উবর এবং পরাৎপর পরত্রন্ধা আমিও সকলের আন্ধা, এই নিবিল বিদ্ব আমার স্বন্ধশার্কা। আমাদিপের চুইজন ভিন্ন আর বিতীর পরমেশ্বর নাই। আমাদিশেব একই মুর্তি, বিধা বিভিন্ন চইয়াছে মারা।

দেবদেব বিষ্ণু ব্রহ্মাণ এই কথা প্রবণ করিয়া কহিলেন, আপনার এই বৃদ্ধি আয়েবিশাশের কারণ সন্দেহ নাই। বিনি একমাত্র অবার অবিপতি, আপনি কি যোগ ছারা জাহাকে প্রস্তাক করিতেছেন মাণু দেই পুরুষ্থোত্তর সংর্ম্মের আমার প্রিক্তিক নহেন। যোগীক্রগণ নিরন্তর আমাচক্ষে উহিকে নিয়ীক্ষণ করিয়া থাকেন। উহিচাব আদি নাই, অন্তর নাই, তিনিই পরব্রহ্ম। আপনি ভাঁহার শ্বণাপর হউন।

বিষ্ণুর এই বাকা শ্রবণ কবিয়া এক্সার হানর জোগে প্রজানিত হইয়া উঠিল। ক্ষবশেষে নারায়ণকে কহিলেন, আপানি এ ক্ষিত্রণ বাক্য প্রয়োগ করিতেছেন, আনাদের মুইজন ভিণ অন্য পরমেশ্য আর কে আছে ? আমরা উভয়েই ক্ষিও।শতির একমান করিব।

নারারণ অখ্যার এই যাক্য শ্রবণ কবিয়া ক্রীবং রোষ প্রদর্শন কবিয়া কহিলেন, মহাত্মার পরিবাদজনক থাকা প্রবোগ করা একান্ত অবিধেয়। আমি সকলই বিদিত আছি, আমি শ্রমেও কলাচ মিথ্যা বাক্য প্ররোগ করি না, বোধহর, পরমেশবের অনস্ত যার। আপনাকে বিযোহিত করিয়াছে। তগৰান্ বিষ্ণু এই বলিয়া মৌনাবন্ধন করিলেন।

এদিকে দেবদেব শশাকশেশর রক্ষার প্রতি অন্তর্গ্রহ প্রদর্শনাথ স্থাই ওয়াই ভূতি ইংকান। উচ্চার মন্তব্ধে কটান্তাব ও করে বিশাল ত্রিশূল বিরাজমান। অত্যস্তুত দিবামাল্য পাদ পর্যান্ত লক্ষিত হওরাতে অনুর্ব্ধ পোন্তা সম্পাদিত চইতেছে। জনীয় লকাট-মেজের অনুত জ্যোতিঃ দর্শকর্মের পক্ষে একান্ত ছর্লিশ্লীক্ষা। ভাহাকে দর্শন করিবামান্ত শিতামহ বন্ধা মানা-বিব্যাহিত হইবা মারাবশ্যে বিজ্ঞানা করিবান, এই শ্শান্তি বিশ্বাহন প্রকাশ নারাবশ্যে বিজ্ঞানা করিবান, এই শ্শান্তি

ক্রমা এইছপ জিজালা করিবে লালারও মহেপের বিকি চুট্টপাতপুর্বক নিকেবদধ্যে তথীবি পর্যাতার বিকিট ব্রী ক্রমাকে কহিলেন, ইনি দেখদের মহানের, ইমি প্রথক্টোড্রিং

मह क्रमण्य अवं, अवंद, जेन्दाम, निकारिक, अपन, जिला, क्रमानीक अ बंदारिक अहे जेकन माहम

७ मनाकतः। देशव भाषि ७ व्या मादे, देख्य गांदलीय दन्द्रस्थात वारीचत । हेनिहे मक्त, मझु, चेनाम, नर्मायक्ष सुरक्षि। दशनै, विश्वाका ७ व्यक्तः वेदी व्हेट्ड मृष्टि, विकिश्व मध्यांत्र स्टेवा शांदक। हेमिहे कांभनांत्र मृद्धित काइन, हेर्रं। स्ट्रेंट्करें कांभनि (यह मकन लाख इहेबाएकन। हेई। तहे भवना मूर्वि निधिन विरचेत्र (यांनि। देशेत्र वास्तान नामिका मूर्जिने व्यामि। হে এখান ! অংপনি কি ইইটেক প্রাক্তক করিতে পংলিভেছেন না 📍 আমি দিব্যচকু প্রদান করিতেছি, আগনি ভর্বার ইহার পরম তম্ম অবগত হউন।

অন্তর লোকপিতামত ব্রহা নারায়ক প্রসাধে দিবানেত লাভ করিয়া মহেশের পরম্ভর অবগত হটলেন। তথন তাঁহার মাবভীয় মোহ বিদুদ্ধিত হ্ট্য়াগেল। তিনি ব্রাঞ্জি হৃত্যা বিবিধরণে ভূতপতি স্থানের **তাব করিলেন**।

অন্তর ভগবান শ্লপাণি ব্রহ্মার ভবে আসর হইয়া কহি-লেন, হে বংস ৷ তুরি আমার প্রম ভক্ত, আমি তোফাকে মৎসদুশ বলিয়া বিবেচনা করি। যদিও ভূমি সফলের আত্মা **९ चाहिल्कर, छ्था**ठ बागांत तिह इहेट्छ न्यूर्लन। लूर्स लाकम्बनार्वहे जामि ट्लामारक नमूर्शनिक कविवाहिनाम। যাহা হউক, এক্ষে আনি ভোমার প্রতি পর্য প্রতি লাভ করিয়াছি, তুমি অভিস্থিত বর প্রার্থনা কর।

গ্রন্ধা এই বাকা প্রবণ করিয়া একবার দিক্তা দিকে নেত-পাতপুৰক প্ৰভাৱনিপুটে শ্ৰম্কে কছিলেল, হে ভগৰন্! আপনি আমার পুত্র হউন, এই বর প্রার্থনা করি; স্থাসার ক্ষয় অভিগাধ নাই। হে দেব । আহি আপেনরে স্বা মারা ৰাৱা বিমোছিত হইবাছি, আপনি প্ৰদন্ন হউন, আমি পুনঃ পুনঃ খাপনার চরণে প্রণাম করি :

অক্সার এইরূপ প্রার্থনা এবণপূর্ক্ত ভগষাল পদীপেশর ক্লাইলেন, হে ব্ৰহ্মনৃ ৷ আমি ভোষার প্রতি বারপরনাই পরি-ড়ুষ্ট চুইয়াছি; অভএৰ ভোষাকে বৰ প্ৰয়াম স্বিভেটি বৈ, लुमि बाक्ष खार्यमा क्षिरण, काराई रहेक । जाप्रव बीगरकीई, (क्षांबाद क्रेब्द्रनवंदीत क्षांनिकान गाक स्ट्रेटन, कार्याद वानराव चुनि कावि कई भरनेत संशोध एकेटन, 'मार्क्स' नाके रेश्वाके मेराजानन क्षीओ हर्देश्के नेवक माध्य, देशि व्यावायर मुर्छि । सैनि विश्वका ভোষার করায়ভা সম্পান্ত করিবেল।

·ভশবান্ তিলোচন এই বলিয়া কছ'লারাত্রথাকে লার্শ করত পুনরার উন্থাকে ও বিক্রুক ক্রিলেস, আবি ভোষাবিদ্যের উভয়ের আজিই পর্য পরিতৃষ্ট হুইরাছি, ভোষরা আমার নিক্ট পুনরায় বন্ধ প্রার্থনা কয়।

७ वम विक् करिशनम, एर क्षप्रदम् ! जानमारक मक्ष्मम ক্রিরাই কামি জুতার্থমঞ্চ চ্ট্রাছি, আমার অলুকোন আছি-লাষ নাই, এইয়াত প্রার্থন। করি, বেন নিরন্তর আপনার প্রভি আমার ভঞ্জি অবিচলিতরতেপ বিলমান গাকে।

विकास धरेमा आर्थमा अनगपूर्वक महाराव उशास्त्रवाटका ব্যঞ্জান করিয়া কহিলেন, হে বিকোণ ভোষাতে আঘাছে किष्माक टाउन मारे। अहे मिनिन दियं चन्नर ७ ममून स्टेर्स, कृषि हस, क्षांत्रि क्षां; कृषि दाखि, क्षांत्रि तिन ; कृषि बाकृष्टि, আৰি পুরুষ; তুমি জান, আমি জাতা; তুমি ৰাছা, আমি নীৰর ; তৃষি বিদ্যাত্মিকা শক্তি, আমি শক্তিমানু জীলত্ব ; আমি বে নিকাম দেব, ভূমিও শেই দেব; ব্ৰহ্মবাদী বোদিগ্ৰ নিরস্তয় कानहरक भागानिगरक क्षेत्राक कहिला वारकत । অপ্ৰেয় না কৰিলে কোন ৰোগীই আমাকে প্ৰাপ্ত ছইছে পাৰেন না। বে বাজি ভোষাকে আম। হইতে বিভিন্ন জান করিবে, मिक्सि निक्ति नाएक नमर्थ इटेप्स सा। धक्रान कृषि छहे বিশ্বপাৰনে যতুবাক্ছেও।

মহেশ্বর এইরাপে ব্রহ্মার পুত্রত স্বীকার করিবা ভাঁচাকে ও বিফুকে বরপ্রদানপূর্বক জীতিকানুগ্রমনে খ্যাবে প্রস্থান कब्रिटनम् ।

* ৰহাবেৰ বে কায়ণে কপানী শক্ষে অভিহিত হন, ভাহা भन्नभ्रारम मृष्टिचरक हर्ज्यम स्पशास अहेक्रम यर्गिल स्नारह (द, খোৰ সময়ে প্ৰকার সভিত মহাদেবের তুমুণ সংগ্ৰাম সংখ্টিত হয়। সেই বুদ্ধে দেবদেব শব্দর শূল **থারা জন্ধার চক্র বিধ্**ঞিত क्षिया (क्लिन्स) ६अ पश्चित स्ट्रेस अवात समय (क्लार) পরিপূর্ণ হইরা উঠিব। জোবাদ হওরাতে ভালার লগাট প্রথেশে খেলোদান ছইল। কথন ভিনি ক্লরবারা নেই বর্ষ क्षिकि भूकि विश्वास्त विभिन्न भहिनारहम, स्वति **डार्श व्हिटेड किंग्डी श्रम महर्ष्यम एडेस ; के श्रमहरू**व क्टक्रोमीय अविध्य विद्यालयाम । इनेहें भूक्ष्म यहक्कि रहेश अनातं भूत्राकारंग वर्शात्रंगि ६३क व्यक्ति, 🙉 क्यायम । अन्त्-बिक कन्नन, कांत्रमीय कि काँवा नावन कविटल परेटन।

मरमाधन करवन। तमहे सरक्षत्र शक्ती क्षत्र-

পিভাষত দেই পুক্ষকে পুরোকর্তী বেধির। বারণরনাই আনন্দিত হইলেন এবং কহিলেন, বংব। ভূমি সরলাভ কর, আর ঐ নির্বোধ মহেব্যের যব স্থেনে বছবানু হও।

্ একা এইরপ আদেশ করিবামাত গেই স্বেদৰ পুলৰ পৃষ্টকোল পরাসন বিগৰিত ক্ষিত্রা প্রহার ক্ষণাং প্রভাব প্রধাবিত
হইল। তাহার তীবৰ মূর্ত্তি নিরীক্ষণ করিয়া মহেশের হুলয়
ভীতিবিহন হইয়াউঠিল; তিনি বেগে পলায়ন পূর্বাক বিষ্ণুসরিধানে গমন করিয়া "পরিজ্ঞান করুন, পরিজ্ঞান ক্ষন" বলিরা
কাশেতক্ষরে আর্তমান করিছে লাগিলেন এবং করিলেন, হে পরক্ষণা ঐ বেলক পাশ-পূক্ষর, একা। হইতে সমুংগর হইরা
আমাক্ষে বিনাশ করিবার অভিলাবে আগ্রন করিতেছে।
ভাগনি আমাকে উহার হত হইতে পরিজ্ঞাণ করন।

শহরের এইরপ ফাতরেছি শ্রবণ করির। বিজ্ব হররে কছপানকার হইল। তিনি অবিলবে হ্রার হারা ঐ পুরুষকে বিমাহিত করিয়া কেলিলেন। নারারণের প্রভাবে খেলজ পুরুষ বিমোহিত ও অভিত হইলে বিজু নানাবিধ প্রবোধবাক্য হারা মহেরেরকে সাজ্না প্রবাদ করিলেন।

ভণন নহেখার পায়নপ্রীত হইরা প্রশান করিলে বিষ্ণু প্রশার বাংনে ভাহিবেক, হে জন্ম ভোমার অভিনাব কি ? ভোমার কি প্রিয়াস্টান ভারিব বল ?

গহেশর বিক্তত্বি এইয়াগ বিজ্ঞানিত হইয়া ক্রডাজনিপুটে প্রিলেন, হে ভগবন্! আনার হল্পে এই বে প্রণান (ভিকা-পাল) রহিয়াছে, ইহাতে কিঞিৎ ভিকা প্রণান কলন।

শহরের এইয়প প্রার্থনা প্রথণ ও তাহার হতে ভিকাপাত্র সম্পর্কন করিয়া বিকুর দ্বারে চিভার উদয় হইল; তিনি মনে মনে কহিছে লাগিলেন বে, বাহেশরকে কি প্রদান করি ? ইইার উপযুক্ত ভিকাই যা কি ? জণকান এইয়প চিন্তা পূর্ত্তক আপনার দক্ষিণ হস্তটি সেই ফপালমধ্যে সমর্পণ করিলেন। তথন কপটাতিক মহেশর প্রায় বারা ঐ হল্ত কর্ত্তন করিয়া সইলেন। বিকুর বাহ হিল্ল হওয়াতে প্রবশ্বেশে ক্ষির্থায়া বিগলিত হইতে সাগিল, ঐ পোণিত হইতে একটা বেগবতী নদী সমূহ-পার হর; সেই নদী গঞ্চাশহ বোজন হীর্ঘা

বিচ্ছু এই প্রকারে মহেখরকে হস্ত সমর্পণ করিয়া **ক্ষিত্রেন,** ভিচ্চাপাত্র পূর্ব ইইয়াছে কি গু

শুশান্তশেশর শহর বিক্যুর এই গভীয় বাক্য প্রবণ করিয়া

शिका महत्रका काकि दासक्शत्रकम क्**रे**का अपेत उत्तर

ক্রিনেন, ইা, এই কণাল পরিপূর্ণ হইবা। তথন বিক্
বীর প্রভাবে ছিল ক্রাক্টেডে বে ক্রির্থারা নিচ্ছত হইডেছিল, ভাছা অপনরম করিরা ক্রেনিনেন। মহেবর তাহার
সমকেই ক্রনিচ্ছে সেই ক্রির পারস্থার রাখিরা মহন করিতে
আরম্ভ করিলেন। মহন করিতে ক্রিডে ঐ শোণিত হইডে
ক্রেনে কলম ও বৃদ্বৃদ্ লম্ংপল হইল; তংপরে সেই কলল ও
বৃদ্বৃদ্ হইতে একটা পুরুব সঞ্চাত হইল, তাহার মন্তকে ক্রীট
এ করে সপদ প্রাসন বিরাজমান। নারার্ণের ক্র কর্তন
হইলে তাহা হইতে বে শোণিত বিনিঃস্ত হইলাছিল, ঐ প্রবের নহনও সেই শোণিতের ভার রক্তবর্ণ হইল। ভাহার পূঠে
ভূপ, মালে ক্রা এবং অল্লিতে অল্লিতাণ পরিশোভিত।

ঐ পুরুষ বসুংগদ হইলে বেবদেব বিষ্ণু লছরকে ভিজাস। করিবেদ, ভোদার এই ক্লাক্ষ্য হইতে কোন্নর আবিভূতি হইল ৪

মহেশর কহিলেন, হে বিক্ষো! তুমি ইহাকে নর বলিরা সংখাধন করিলে, অভএব এ নর নামেই প্রসিদ্ধি লাভ করিবে। তুমি ইহার সহিত একলিও হইরা কলিবুগে নরনারারণ নামে বিখ্যাত হইবে। এই নর খারা তুরগণের বছবিধ ভ্নহৎ কাট্য সংসাধিত হইবে এবং এই ব্যক্তিই তোমার স্থা হইবেন। তোমার ভূল-শোণিত হইতে ইহার জন্ম হইরাছে, ভুতরাং ইহার তুলা তেজানী পুরুষ খার দিতীয় লক্ষিত হইবে না। এই নর ব্যার পঞ্চম খান শ্বরণ হইবে। কি ভুরপতি, কি

শশাস্থাপর এই ব্লিয়া মৌনাব্দ্যন করিলে দেই কপাদত্ব পুরুষ কুডায়লিপুটে নারামণের অব করিয়া মহেখনের ভব করিডে লাগিল।

বেই পুরুষ কহিল, হে অগবন্। আপনাকে নমকার।
আপনি সাক্ষাৎ ক্রমা, আপনিই সক্ষের কারণ, আপনিই
পুরুষের জীবর, আপনাকে নমকার। হে মহাদেব। আপনি
আনাদি ও অনক্ষ, একমাত্র জান বারাই আপনাকে প্রাথ হওর।
বার, আপনিই পরিক্রাণের একমাত্র কারণ; আপনাকে পুনঃ
পুরুষ সম্ভাব করি। এই নিখিল কিয় আপনা হইডেই সমুথপর, আপনিই ইয়ার মুখা বিধান ক্ষান্তিহেল ক্রম্থ পরিবানে
আপনি ইয়ার সংহার সাধন-ক্ষান্তেহেল ক্রম্থ পরিবানে
আপনি ইয়ার সংহার সাধন-ক্ষান্তেহেল ক্রম্থ পরিবানে
করি হে ত্রিলোচন। আপনি ব্যক্তিব্যর অধিপত্তি, আপনি।

विमर्कन निर्दिक निर्दिवत हिम्बारनतः हृश्किता

काम এবং আপনিই মহাগ্রাস, আপনাকে নমন্তার। আদনি বিৰম্ৰ্তি, আপনি সাকাৎ এক এবং আপনিই বৰ্ণাৰি সমুপ, আপনাকে নময়ার। হে দেব। আপনি পুরাণ পুরুষ, আপনি নিত্য এবং আপনি ক্রপর্প আপনাকে নমহার। হে গাছে। আপনি স্টেক্সা, আপনার অংগাচর কিছুট নাই, আপনি পর-माचा चापनाटक नमस्रोत । (इ नर्सक्ष । कापनि स्विद्धक्ष्म -কুক নিখিল বিখের যোনি, ভাপনি দেবগণের হিতকামী, আপনি স্কল ভূতের অধীধর, আপনাকে নম্মার। হে লগংপতে! चार्शन निर्श्तिकात, जार्शन (उत्तत त्रज्ञत्वत्रथ, जारना स्टेटक्ट्रे. সকলের উৎপদ্ভি হইয়াছে, আপেনাকে নম্ভার। হে ভগ্বন্! আপনি ভ্রত্ত্বস্থারপ, আপনি জ্ঞানরণী, আপনি প্রিচ্চানস্ক, व्यापनारक नमकातः। एक (स्वरत्यः। व्यापनि व्यवराज्ये नाक्नी, আপুনি পরিণামর্হিত, আপুনিই কার্যাও কার্ণরুণী, আপু-নাকে নমন্বার। (চ শুলপাণে। আপনি পঞ্জুত ও পঞ্চুতের আত্মা, আপনি মূল প্রাকৃতি, আপনি নায়াত্মপুর, আপনাকে নমস্বার। চে প্রভো। কাপনি ৩ প্রারে বিভক্ত হট্রা ত্রিবিধ মূর্তি পরিপ্রত করিয়াছেন, আপনার তেজ দিব্য, আপনি সিদ্ধ ও পূজা. আপনাকে নমস্কার। হে বিখযোনে ! আপনিই মূর্ত এবং আপ-নিই অমুর্ত্ত, আপনিই শান্ত, আপনিই ত্রাণকর্তা, আপনি আশ্রিত-গ্ৰেব শরণা এবং আপনিই একমাত্র পরম গতি, আপনাত্তে নম-স্থার। হে সর্বলোকেশর। আপনি মধাবাস্ত্র বরদ, সর্বত্তে দংসম্পন্ন এবং বিদ্যা ও অবিদ্যাত্মক প্রভু, আপনাকে নম্বার। আপনি जानित्वन, महारतन, (यन्रवसाजभाद्रभ ७ मन्द्रस्यदेशके, जान-नारक पूनः पूनः अनाम कति। (ह अप्रतीम । जापनि कथन বিষমৃতি, কৰন মহামৃতি, কথন দিবামৃতি ও কথন বা আমৃতিধারী হটয়া পাকেন, আপনাকে নমস্বার। হে ভূত্তবর আপনি সুরগণের ক্রচকল্প, আপনি নিথিক বিশ্ব পরিব্যাপ্ত ক্রিয়া রহিয়াছেন, আপিনি শবণা ও শরণত্ত্তপ, আপনাতে নমভার। হে সনাতন ৷ আপনি স্কলৈত, নিতা আকাশরপী, ভাবাভাব হইতে নিৰ্দ্ধ কাপনায় হজে দিব্য তিখুল বিরাজিত রহিরাহে, আমি আপনার চরণে কোটি কোটি প্রণান করি। হে পুরুবো-क्या जानि जीकालगाती, जानि बक्ताम्हनत ब्राह्म, विध-गरंबन e क्यारकन विक्कामी, व्यापनादक सम्बद्धा । श्वापनि खुक्का-রূপে বিধের স্থান, বিশ্বরূপে পাশন এবং অত্তে করকাণী হইয়া সমস্য সংখ্যার করেন আপনাকে নমস্বার ; কি বিদ্যা, কি ভুতরাং তাঁহার বাক্য তাহার কর্পকুলরে আনেশ করিল না ।

অৰ্ভীৰ্ণী হম এবং পুনৱান্ধ দেবদেব শস্ত্ৰকে পতিত্বে বরণ করেন।

অবিদ্যা, কি সভা, কি অসতা, কি বিহু, কি অমৃত, কি প্ৰাবৃদ্ধি, কি মিবৃতি, দকলই আগমি ; আপনিট কর্মানমূহের কর এবং আপনিই সেই কলভোকো, আপনাকে নমন্বার। হে ঈশ। বোগিপণ নিরস্তর আপদিকৈ ধ্যান ছবিয়া পাকেন এবং যাজি-কেরা আপনারই উদ্দেশে সমস্ত ব্যঞ্জর অনুষ্ঠান করেন, আপ-নিই পিড়জাণী ও দেবর্ণী চইয়া হবা কবা ভোজন করেন, আপনাকে কমঝার। তে স্ক্রিয়ন্। আপনার প্রমাত্রপ অচিস্তা, ভারার ভুলনা নাই, আমি আপনার মেই রূপকে ভক্তি-ভাবে নমন্তার করি। ধে আছোণু আপনাভিন্ন কোন বস্তুট মাই, অপেচ খাপেনি সকল চইতে পৃথক্, আপেনাকে নমস্তার। আপুনি সকলের অন্তর্যামী, আপুনি নাগর্টিভ ও স্কুপ্রিচীম, একমাত্র অভিত্তেই আপনার উপলব্ধি চইরা থাকে, আপনাকে নম্ভার। হে জ্ঞানকপিন্। আপেনি ভূল, স্ভা, ক্র ও অকর, আপনাকে নমস্বার। হে দেব। আপনিই ব্যক্ত, আপনিই অব্যক্ত, আপনি নিয়ন্তা, আপনিই নিরশ্লন, আপন্তে নম্মার। হে প্রভা ৷ আপনি নিশ্বৰি, আপনি মহামূর্তি ও আপনিই স্ক্র-মুর্ত্তি, আপনি ভজের নিকট প্রকাশিত, কিছু অভক্তমনের নিকট অপ্রকাশিত চইয়া থাকেন; আপনা চইতেই কার্য্য ও করেণের উৎপত্তি হইয়াছে, আমমি আপনাকে পুন: পুন: প্রণাম করি।

ভগবান তিলোচন মহেখন কপালভ পুরুষের ভবে প্রীত হটয়া কহিলেন, ছে পুরুষ ! ঐ ক্ষেদ্ধ পুরুষ জ্বার ভেলে সমুংপর হটরাছে, ভূমি ইহাকে নিপাড়িত কর। শহর এই ৰণিয়া নরের চতৰয় ধারণপূর্কক ভিকাপাত হইতে সমুভোলিত क्तितम এবং विकृष्ण नामामनेशुर्वण कवित्नन, दश्विरका ! আমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ হৈ পুরুষ ধাব্যান হইয়া লোগমন করিয়া-ছিল সে ভোমার ছকার শক্তে রিমোছিত ও ভড়িত চইলা রহিয়াছে, উহাকে ওরুপ অবস্থায় রাখা অবিধের; অভএন উহাকে প্রবোধিত কর। তিলোচন এই বলিয়াই ডিরোধান ध्वार्थ इहेरनन ।

चक्र अञ्चर्षक इंटरन नात्राप्रग (महे च्चिमक शुक्रव्रक मर्घा ধন করিয়া কহিলেন, "হে পুক্ষ ুপালোখান কর, শীল श्रांद्वश्रीम कृष्ट्रे ।

নারারণের প্রভাবে সেদত পুরুষ মোহাভিত্ত চইমাছিল,

(ভগবান্ ক্লেদেব ত্রকাহত্যাপারেপ অভিকৃত

তথন বিষ্ণু ভাগার শরীরে পদাধ্যত করিলেন। স্বেদক পুরুষ পদাহত হইবাসাত্তি গাত্তোখান করিব।

আনন্তর সেই বেদক ও রক্তক উডর পুরুবে তুম্প সংগ্রাম সংঘটিত চকল। তাদারা ঘন খন ধমুইকার ও বিংহসাদ পরিতাাগ করাতে দুদ্দিক্ প্রতিধ্বনিত হইকী উটিল। তাদাদিগের আল্রন্সাবাতে ক্তবিক্তল-ছগুরাতে প্রস্পারের গাল হইতেই আবরল শোণিতধারা বিগণিত চইতে বাগিল। এই প্রকারে দিবা ছইণত বংগর সংগ্রামের পর রক্তক পুরুবের ভূল ও স্থেকক পুরুবের ভূল ও স্থেকক পুরুবের কঠ ছির হট্যা গড়িগ। তথন বিষ্ণু, ক্ষলবোদি ব্রক্তার নিকট সমুগনীত চইয়া সগল্পমে কহিবেন, হে ব্রক্তন্ তোমার সেই সেইক পুরুব অন্য মন্য সংগ্রামে ধরাশামী চইবাছে।

বিকুপ্রমূথিৎ এই সংবাদ প্রবণমাত্র জ্ঞার স্থাবে জ্ঞীৰ শোকসঞ্চার হইল। তিনি শোকবিহ্বপচিত্তে বহুকণ বিলাপ করিরা বিফুকে সংখাধনপূর্জক কহিলেন, হে ভগ্রন্ । ঐ নর প্রথাত্য স্বর্গণের অংশকে প্রাভূত করিবে।

অনন্তর ব্রহ্ম থ প্রথমের দেহ সংকারার্থ ক্লিড করিলে বিফু দিবাকরকে ক্ষেধানপূর্বক কহিলেন, হে ভাছর । ঐ প্রক্ষের পরীর পাতালপুরে লইরা স্থাপন কর, বাগরান্তে ঐ ব্যক্তিকে প্ররায় আহ্তুতি করিও, তৎকালে উলা বারা দেব-গণের স্মহৎ কার্য্য সংলাবিত হইবে। সেই সময়ে মতবংশে প্র নামে এক মহাবলপরাক্রান্ত পুরুষ অবতীর্ণ হইবেন, পূথা নামে তাঁলার একটি পরম রূপবতী কলা সমূৎপর হইবেন, সেই কলা ধাবা প্রগণ বহুবিধ কার্য্য সংলাধিত করিবেন। সেই কলা মহর্ষি ত্রানার নিকটবর ও আহ্বন্যমন্ত্রান্ত পেই কলা মহর্ষি ত্রানার নিকটবর ও আহ্বন্যমন্ত্রান করিবেন, সেই কেটা মহর্ষি ত্রানার বিশ্বতি তাহার গর্ভে এক একটা পুত্র জল্পিব। কেটা দেবতারে আংশেই তাহার গর্ভে এক একটা পুত্র জল্পিব। কেটা দেবতার আংশেই তাহার গর্ভে এক একটা পুত্র জল্পিব। তোমার প্রান্তি সহ্বাসকাম্যা করিলে ভূমি জাহারই গর্ভে এই পুরুষকে স্থান্তর্নে সমূৎপাদন ক্ষিবে। সেই ক্ষেত্র এই পুরুষকে নামে বিধ্যাত চাইবে।

দেবদেব নারায়ণ ভাগ্ধককে এই বলিয়া ভিরোকিত সুইলো দিবাক্ষণ ভদীয় আদেশ প্রতিশালকার্থ প্রথান করিবেন।

এদিকে সুরপতি, বিশুর নিকট সমুপন্থিত হইয়া কহিলেন, কে ভগবন্ ৷ আপনার বারা সুরগণের স্থমহৎ কার্যা সম্পাদিত চইল ; আপনার প্রসাদে বাপদাবসানে যে পুরুষ সঞ্জাত হইছে,

হইনাবিমূহ উপদেশে নামাৰিথ ভার্থ পর্ব্যটমপূর্বক

ভদ্মারা দেবগণ বছবিধ সালাব্য আওঁ লইবেন ৷ মনীপতি পাড়ু, कृषी व माजी नाजी शक्ती शहरशृत्तक परकारन वनवान काश्रव ক্রিবেন, তথ্ন জাহার জ্যোটা মহিবী কুতী তৎসহ সহবাদে অন্তিলাখিণী হইয়া ক্লিবেন, হে আহিত্য । আমি মানব হইডে স্কানলাভের কামনা করি না, দেবভা হইডে পুজ লাভের বাসনা করি। পদ্ধীর এইরূপ প্রার্থনায় পাঞ্ছ অফুর্ডি প্রবান করিবে সেই ফুরী ছর্মাসার মন্ত্রপ্রভাবে হাঁচাকে আহ্বান করিবেন, ভাঁহাতেই তৎপকাশে প্রমন করিতে হটবে। অতএৰ ৰদি ঐ কাষিনী দেবাংশেই পুত্ৰ লাভ করেন, ভাৰা হটনে আপুনি এই মুখুতুগাবসানে মুফুলে অবভাৰ ছউন, তাহা হইকেই ছুরাত্মা কুরুগণ বিনিহত হটকে এবং আসনার শোণিতক পুৰুৰ, বিনি তৎকালে কুন্তীগৰ্ভে অৰ্জুন নামে অন্ম গ্রহণ করিবেন, জাহারও বিশ্বর সহারতা হইবে। হে ভগবন্! আপনি পূর্বে তেতাযুগে রামশ্বণে অবতীর্ণ হট্যা ক্র্যুপুত্র শ্রুণীবের হিডার্থ মংখ্রু বালিকে নিহন্ত করিয়াছিলেন, সেই শোক অন্যাণি আমার হাদরে কাপকক রহিয়াছে; সেই ক্সুট প্রার্থনা করিতেছি, আপনি ষতুকুলে অবতীর্ণ হইয়া আমার সহায় হউন।

স্রপাত এইরপ থার্থনা করিলে, বিষ্ণু তাঁহাকে সংখাধন।
করিবা কহিলেন, হে দেবরাকা! ধরণী হুক্তু মানবভাবে
একাত এমাপীড়িডা হইয়াছেন; স্তরাং ডদীর ভারাপনোমন
ও কুক্লের নিবনার্থ আমি মানব্দুণে অবতীর্গ হইব। বিশেবতঃ তুমি অন্বরোধ করিতেছ, অতএব আমি এই মবস্তবাব্যানে ব্যান্ধ্যায় ক্রিগ্রহ করিব, সন্দেহ নাই।

বিশ্ব ক্রিক বিভিনর নাকা প্রবণ করিছা দেবরাজ কহিলেন, ছে প্রাভো! আপেনি নিতা, সভাও আনন্দ্ররূপ; আপেনার বাকা সভা ইউক।

আনৰাম বিষ্ণু ভ্রপতিকে বিধায় আদানপুর্বক প্রজার
নিকট গমন করিয়া কতিলেন, তে প্রজান ! জুমি এই ভাবরলক্ষ্মাত্মক নিষিণ অগৎ ক্লেন করিয়াছ; আমি এবং মড়েখর
উতরেই তোমার সরাম; কৃষ্টি করিয়া সধ্য ভাষার উৎসায়ন
করা নিক্রিছা; অবিধের। ভূমি মহালেবের হিংশা কছিয়া
সকীব বিশ্রমিত কর্মের অভ্যান করিয়াল ; বাহা হউক, এক্লেব
ভূমি পাপশান্তির অভ্যান অভ্যান করিয়াল ; বাহা হউক, এক্লেব
ভূমি পাপশান্তির অভ্যান করিয়াল করিয়াল কর। গার্হপত্য,
দাক্ষিণাত্য ও আহ্বনীয় এই বিবিধ অধিব্যু গ্রহণপূর্বক আরি-

व्यवस्थातः भूगामनिका काव्यनी-दवश्चितः भूगाकत्रो

ভাষে আরম্ভ কয় এবং প্লাভীতে গ্রমণ্ক্র বিবিধ মন্ত্র সম্পাদনে প্রবৃত্ত চও। তুমিই জগতের শক্তি, ভোষার আনদশ্ প্রতিপালনে কেছই বিমুখ ছইবে না। পূর্কোক্ত অমিত্রর হার। কৃত্ত নির্মাণপূর্কক ভাহাতে আমার ও মহেন্টরের তর্মণ কর। ঐ অমিত্ররে হোরাস্থান করিলে পরম সিদ্ধি লাভ করিবে এবং অবলেবে আমাকেই প্রার্থ ছইতে গারিবে। তে ক্ষনাং হোনে! অরিহোত্ত স্ব্রাণেক্রা পবিত্র; বিধানাস্নারে অরিক্রেত্র হারা হোমান্ত্রান করিলে পরম গতি লাভ ছইরা থাকে। আমিত্ররের কথা দ্রে থাকুক, এক অমি বিধানাস্নারে সম্পুলিত ছইনেই সিদ্ধি লাভ ছর।

शृत्र्य (य त्यमक ७ त्रक्तक शृक्तव विषय हिंदिविक हरेग, উহাঁরা ছুই জনই মহাজা ছিলেন। ভাঁছাদিপের জনাবা বা অজের কিছুই ছিল না। উইলেগের মধ্যেই এক জন একার পঞ্ম বদন চন - চতুর্ম পঞ্মুথ ছওয়াতে বজোভাগে সমা-হুল ও বিমোহিত হইয়া উঠিলেন। মোহাভিভৃত হওয়াতে তিনি আপনাকেই প্ৰধান স্টিপ্ৰবৰ্তক বলিয়া জ্ঞান কৰিতে লাগিলেন। তাঁহার পূর্বাদকেব মুখ চইতে ঋথেদ, বিতীয় মুখ इकेट यक्टर्सन, कृतीय मूच ककेट नागरवन, तकूर्य मूच करेट ज অংথকাবেদ এবং পঞ্মমুথ হইতে আজোপায়ৰ সহিত ইভিহাস ও নানাবিধ সংগ্ৰহ প্ৰকাশিত হয়। তিনি পঞ্ম ৰদন যার! याधा भरवा त्वराधावन कर्तिएकत। शक्य मृत्यत त्याल वर्षक-वृत्स्वत शक्त धकास धूर्निवीका। ভাররতেজ বেরণ দীপ প্রকাশ প্রাপ্ত চর না, ডজেপ সেই ব্রনের ভেন্তে ছবাত্মর नकरनरे निरस्काह रहेशा छेठिरनन । अधिकारिकार देशा দেবভাবা এরপ হীনভেদা ও প্রশীক্ষিত ইত্নি বৈ, তাহা-দিগের অবহানও প্রংগর হট্যা উঠিল।

অন্তর স্বরগণ, ধ্যবর্গ ও পিতৃপণে সমধেত ছইরা মন্ত্রণাপূর্বক বঁহালেৰের নিকট গ্রন করিলেন এবং ক্রিকিলেপ ভাঁহার ভতিবাদ করিরা কহিলেন, হে ভগ্রহা । ক্রিকিলেণ জীবের ঈখর, জাপনাকে নমছার। হে দেব যোনি এবং ভূতর্ণের একমাত্র জাঞ্চর; আন হৈ ভগ্রন্ । আপনিই খল, আপনিই খল, আপনিই ল্লের, আপনিই বাগ্লেবী, আনকার, আপনিই ভ্রের, আপনিই পরীর্ছ বাড়, আনকার, আপনিই বর্গ, আপনিই বিক্ এবং আপনিক অপ্রাজিত।

র্যক্ষিত্র বার্নাসনী পূরী সংস্থাপন করিরা স্বীয়

তে দেব। আপনিই মায়া, আপনিই ছুর্গা এবং আপনিই দানব বর্গের সম্প্রাত, আমরা আপনাকে পুনঃ পুনঃ প্রধায় করি।

দেবতা প্রভৃতি সকলে এইরপ তার করিলে দ্দিশেখর অত্তিভাবে অবভিতিপূর্বক কহিলেন, হে প্ররণণ ু ভোষা-দিনের কি অভিলাধ বঁদী।

ছ্রপণ কহিলেন, হে প্রভোণ ব্রহার পঞ্চন বদনের তেজে আনাবিপের বীর্যা, তপজা সমস্তই নিজেল ও মান চইরা পিরাছে; ত্তরাং আমরাও হীনজেলা হইরা পজ্বছি। হে বেব ! বাহাতে আমরা পূর্ববং তেল প্রাণ্ড হই, তাচার উপার বিধান করুন। হে প্রভো ব্রহার পঞ্চম মুখ্যুক সক্রেই নম্ভার করে, বাহাতে এ বদন পতিত চল, আগনি কুপা করিয়া তাহার উপার নিয়লণ করুন, ইচাই আ্যানিপের প্রাথনীয় বর, আমানিপের প্রস্তু বেন অভিনাব নাই।

স্থাগণের এইকপ প্রার্থনা প্রবণপূর্কক মছেশ্বর তৎক্ষণাৎ ব্রহ্মধামে প্রভান করিলেন। ব্রহ্মানেই সময় রক্ষোশুণে সমা-ক্ষ্ম ইইরাছিলেন, স্ত্তবাং শহরকে সমাগত দেখিয়াও তাঁহাব মথোচিত অভ্যর্থনা করিলেন না; পূর্কবিৎ আসনোপরিই সমাসীন বহিলেন।

তথন মহেশর ত্রন্ধার সন্ম্পবস্তী হইরা শ্বরং ক্চিতে লাগি-লেম, ছে দেব । আগনার এই ক্তিরিক্ত মুখধানির ডেল কি ছনিরীক্ষ্য । শকর এই বলিরা অট্টান্ত বিজ্ঞারপূর্বক বামাসু-লির নথাপ্র হারা ঐ পঞ্চম বদন কর্তান ক্রিরা লইলেম এবং লেই মন্তক হল্তে ক্রিয়া নৃত্য ক্রিডে লাগিলেম ; তদ্ধনে নোধ হইল বেন, কৈলামানে ন্চল হটরা উন্নতভাবে নৃত্য ক্রিতে প্রত্ত চইয়াছে।

ব্রহ্মার পঞ্চন বদন ছিল্ল দেখিলা প্রগণের আনিন্দের অবধি
রহিল না। তাঁহারা বিবিধন্তপ স্থোত্রপাঠপূর্বক মহাদেবের
তাম করিয়া পরিপোষে কহিলেন, হে প্রভা । আপনি হহাকাল,
ক্রম্বাহান, ক্রানসম্পন্ন এবং জ্রানপ্রশালা, আপনাকে নম্বার।
হে ক্রম্বন্। আপনি চুপিত জনের ধর্পপর্কারী ও কালসংহর্তা,
ভক্তপ্রন্র প্রধানতা, আপনাকে নম্বার। হে দেবদেব।
আপনা চইতে ভক্তকনের আতে কল্যাণ লাভ হইরা থাকে,
এই ক্রম্বই আপনি শহর নান্দে অভিহিত। হে চাধহারিন্।
আপন্নি ক্রমার পঞ্চন বদন হৈদনপূর্বক কপাল ধারণ করিয়া
মৃত্য করিতেছেন, অতএব আপনি কপানী নামে প্রসিদ্ধি লাভ

অন্ধান্ত (রিণী গৌরী দেবীর সহিত তথার অবস্থিতি করেন।)

কবিবেন। চেদেব : একণে আপেনি আমাদিদের আভি অসের ভটন।

* এগণান্ খহেশ্বর প্রশ্বার প্রথম বদন ছির করিবাছিলেন, নেচ পাপে প্রার্কিছার্থই নানাবিধ ভীর্ষণণাটন ও বারাণনী-গানে অবন্ধিতি করেন। এই বিষয় পদ্মপুরাণে এইরূপ প্রকা-াশত আছে বে একার গঞ্চন বদন ছির করিব। শহরের হাদরে আপনা আপনি বেন্ধহানে পাপ বোধ হইল। তিনি পাপকর বাসনায় সহল ক্ষে, নিক্ক এবং অক্ যক্ষ্ প্রায় পাঠ বারা এশ্বার ক্ষক্রিতে প্রবৃত্ত চইলেন।

महारस्य कविरागन, ८१ उचान्। चार्णान चार्यामशाचा, অগ্পনিট প্রম এক, আপেনাকে নমন্বরে। ছে আচেটা ছে স্থানে যে কিছু অনুত পদাৰ বিদ্যমান আছে, লাপনিই ভাষার একরাত কারণ আপনাকে নমস্বার। ছে দেব। আপনি উর্মুধ অপেনি অভর্যো, মপেনাকে নমস্করে। হে দেবেশ। আপুনি জবক কমবোগর হইতে সমূৎপল হইয়াছেন, জলই আপন্ত স্থান, আপনাকে নমভার। তে ক্ষণলোচন । আপ-নিট্সকলের ভালি, এই জন্তই আপনি পিতামত শক্ষে কতি-হিত চইয়া থাকেন, যাৰতীয় সৃষ্ট পদাৰ্থ ই আপনা হইতে সমুৎ-পর, অপেনিট বঞা এবং আপনিট্ যাল্ডবর, আপনাতে ন্ম-স্থাব। ১০ জগদীশ ় আপনিই বেদগর্ভ ছিবণাগর্ভ ও পদাগর্ভ নামে অভিছিত, আমি আপনাকে কোটি কোটি প্রশাম করি। লেলাণ্ডের অপেনিই ক্লাল, আপ্নিই ক্লালা এবং আপেনিই ৰষট্কার, আপেণাকে নম্ভার। হে ভগ্বন্। সূবসংশ্র **বা**ক্যা**ছ**-সংবে আনি আপনার শিরশেছদন কার্য। এক্ষংভ্যা-পাপে সভি-ভূত হচয়াছি, আপনি আমাকে পারতাণ কলন।

তগৰান্ কমলাঘানি মহেশবের এই প্রকার তব প্রবণপুর্বক পরম পাবতুই হুইরা কহিলেন, ছে শছর। তোমার দ্বৰের এইরূপ ভাক্ত ও মাত সমুৎপন্ন হওবারেই পাপরালি ধ্বংশ হুইল;
ছুমি মাঘান পিবচছেবনপূর্বক কপাল ধারণ করিবা নৃত্য করিযান্ত, এই কন্ত তুম কপালী নামে বিশ্যাত হুইবে। অভঃশন্ন
টোলা ধারা শতকোটি বিশ্র উদ্ধার প্রত্যে হুইবে। বে সম্পশ্ পাপান্থারা পর্মীকাতব ও ক্রেন্ড্রদর, যাহাদিশের পাশক্ষের কিছুমান্ত সন্তাবনা নাত, যাহাদিগকে নেত্রগোচর করিলে দিবা করাক দর্শন করিতে হয় এং বাহাদিগকে স্পর্ক করিলে স্বত্তে विनि उंक्जिंग्राटव इंग्डरंबरवब धाँरे भक्त ब्रुटा छ

জ্ঞাবসাহন না ক্ষিতে ওছি লাক হর দা, ভাহাছাও ভোষা হইতে পৰিজ্ঞা লাক ক্ষিতে। পরত বলিও ভোষার ভজি সমুংপর হওছাতে পাশু ধ্বংস হইল, তথাপি ভূমি আত্মওছি লাভার্য পূৰ্ক কামনা ক্ষিয়া প্রার্ভিত কর। প্রার্ভিতের অনুষ্ঠান ক্ষিতে বহু বহু বার লাক ক্ষিতে পাছিবে।

বন্ধা এই কথা বলিরা ভিরোহিত চইলে মহেশর অভানে না গিরা বিকুর খাসে করিজে লাগেলেন। অবিলয়েই নারারণ ক্রী সমভিবাহারে আবিভূতি হহরা উচ্চার নরনপথের পথ-বলী হইলেন।

क्ष्यत्वय विकृत पर्णन आर्थं इहेत्रा अधामभूकीक श्वकिवादका ফ্রিডে শ্লিলেন, ভগবান্ বিকাট পরাংপর ক্রম, তাঁচার বীৰ্য্যের ইয়তা করা বাল না, তিনি পরম প্রুব, তিনেই পুরুষ-গণের আংখান, ভিটি স্কলের আদি, আমি ভাগকে নম্ভাব করিঃ সেই দেবদেব সকলেরছ অধীধর, ডিনি ৩ ছ, যাবভীয় স্ট পদার্থ উছোর আচভাবেই সমুৎপর। আনফি সুন: সুন: ওঁহিরিভাব কারে। বেদক্রয় ভারা বাহার ডাভ অনগভ ছওয়া যায়, ধিনি তিমুর্ক্টি যিনি আন্ধাও বজনখরপ, বাহার শ্বীক ভুলু, ছক ও শোণভবৰ, বিলি ভেডাযুগে পীতৰণ ও হাপরাৰ্থ কলিবুগে ক্লঞ্বৰ্ হত্য়াছেন, আমি দেই দেবদেৰ নারায়ণ্ডে প্রণাম করি। ইটোৰ বদনকমল খহতে আফান, হল্প ১ইতে ক্তির, উটেফ হইডে বৈখা এবং চরণ ফইডে শুদ্রগণ স্ঞাভ হই-सारक, ब्याम रमके विश्वमार्थ भूतानभूकवरक समझात कात। विलि দেৰপণেৰ কৰচস্বৰূপ, ফিনি কমললোচন বলিয়া প্ৰতিভ, বিনি সহস্রণীর্য, সহস্রচক্ষু এবং যিনি একাকী এই নিখিল বিশ্ব পার-ব্যাপ্ত ক্রিয়া ছহিরছেন, শেই ভগবান্ প্রমেশ্ব বিষ্ণুকে কেটিকোটি প্রণমে কার। যিনি স্বর্জ্ত, স্বর্গত, স্নাতন ও ভাৰাভাৰনিশ ্িজ, নেই জনগাখন ৰজেখন ছরিকে নম্ভার। হে বৈকুঠনাব ৷ আমি যে দিকে নেঅণাত করিভেছি, সেই দিকেই আপনা ব্যতিরেখে খার কিছুই নিরীক্তি চইডেছে मा। এই নিখিল জগৎ चालनाइই चक्रभ माछ।

নারারণ মহাণেবের স্কাবে পরম এইত হইরা কছিলেন, হে কড়। আমি ভোষার প্রতি পরম পরিত্ট হইরাছি, তুমি অভিনামত হর প্রার্থনা কর।

তখন শহর বিনীতভাবে কহিলেন, হে প্রভাঃ আমি একার গঠন বনন ছেনন করিয়া অক্সছড়া-পাপে লিপ্ত হইয়াছি অধ্যয়ন করেন, তিনি কি ইহ, কি পর, উভয়ত্তই পরম দিন্ধি লাভ করিয়া থাকেন।

অগ্নি কহিলেন, হে ব্রহ্মন্! অতঃপর তোমার নিকট বর্ণাশ্রমধর্ম পিতৃমাহাদ্ম্য ও প্রাদ্ধবিধান বর্ণন করিব। কি নর, কি নারী, সকলেরই প্রাদ্ধাস্তান বিধানানুসারে প্রাদ্ধাস্তান করিলে যে ভুক্তি মুক্তি লাভ হইবে, তাহাতে সন্দেহমাত্র নাই।

> ইত্যাদিমহাপুরাণে আথেরে জগৎসর্গরণন নামক বিংশতিতম অধ্যায় সমাপ্ত।

যাংশতে সেই পাপ হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারি, তাহার উপায় নির্দেশ করন। আপনা ব্যতিরেকে আর কেইই আমাকে পাপ হইতে পরিত্রাণ করিতে সমর্থ নহে। বুন্ধহত্যা-জনিত পাপে আমাব শবীর একাস্ত অপবিত্র হইয়াছে, যাহাতে পবিত্রতা লাভ করিতে পারি, তাহার উপায় বলুন, ইহাই আমাব প্রার্থনীয়।

রুজদেব এই কপ প্রার্থনা করিলে বিষ্ণু কহিলেন, হে শহর !
ব্রহ্মহত্যা অতিশয় উতাও কইপ্রদ, এই জন্ত মনে মনেও ঐ
পাপের চিস্তা করা একাল্ক অকর্ত্তবা। তুমি পাপ হইতে পুলি
লাভের প্রত্যাশার আমার নিকট উপায় জিজানা করিছেছ,
অতএব আমি বলিতেছি, তুমি ব্রশ্বচর্য্যের অস্ট্রান কর, তাহা
হইলেই যাবতীয় পাপ বিদ্রিত হইবে।

দেবদেব বিষ্ণু এই প্রকার আদেশ প্রদান পূর্ব্বর সহারন প্রদান করিলে ক্রদেব কামরাপ, প্রভাগ প্রভৃতি বতুসংখ্যক তীর্থে পরিভ্রমণ করিলেন, কিন্তু ক্রাপি স্থান প্রাণ্ড ইইলেন না। তথন লজা ও হংখ নমুভূত হইয়া উহাকে প্রশীভূত করিতে লাগিলেন। অনস্তর পূজ্র তীর্বে গ্রমন করিলেন, তথার বিবিহ তক্রাজিবিরাজিত কলক ঠবিহর সমাকুল অরণ্ড বিরাজ্যান আছে। ক্রদেব দেই অরণ্ডমধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। ঐ তীর্বে যাবতীর পাশ ধ্বংস হইয়া থাকে। শহর তথার ব্রতাহ্রাম পূর্বেক প্রন্থান্ত ভগবান্কে ধ্যান ও তাঁহার নিকট পাপক্ষর কামনা করিতে লাগিলেন।

অনস্তর তথা হুইতে অস্ত তীর্থে গমন পূর্বকে এতনির্চ হুইয়া সংযতজ্গরে তপজাস্থলীনে প্রবৃত হুইলেন।

একবিংশতিত্য ভাধাায়।

অগ্নি কহিলেন, হে ব্রহ্মন ! একণে বর্ণ ও আপ্রমধর্মের বিষয় বর্ণন করিতেছি, প্রাবণ কর। বর্ণ চভূর্বিধ ; ব্রাহ্মণ, ক্রব্রেয়, বৈশ্য ও শুদ্রা। তত্মধ্যে ব্রাহ্মণের ধর্ম ব্রিবিধ ; দান, বেদাধ্যয়ম ও যজ্ঞ ; এতদ্বাতিরেকে তাঁহাদিগের আর চতুর্য ধর্মে নাই। ইইারা যাজন, অধ্যাপন ও প্রতিগ্রহ এই তিনটি উপায় দ্বারা জীবিকানির্ব্বাহ করিবেন ; কিন্তু পবিত্র ব্যক্তির নিকট ব্যতীত অপরের নিকট কিছু গ্রহণ করিবেন না।

এই প্রকারে কিরৎকার সম্বতীত হইলে ক্লের অবপট ও একান্ধিক ভক্তি সন্ধর্ণনে কমলবানি যার পর নাই পরিভূই হইলেন এবং তথার প্রান্ধ্রভূতি হইরা কহিলেন, হে শন্ধর ! ভূমি আমাকে দর্শন করিবার অভিলাবে ছক্তিভাবে উপাসনা করিতেছ, এই কারণেই আমি তোমাকে দর্শন প্রদান করিলার। কি দেবতা, কি মন্ত্রা, কি প্রকর, কি ছী, যে কেছ সংবত হইরা বিধানাম্নসারে ত্রতাম্প্রটান করিবে, আমি ভাহারই প্রতাম্বীভূত হইব। ভূমি কার্মনোবাক্যে আরাধনা করাতে আমার বার পর নাই সভ্যোব অলিয়াছে, অভএব তোমাকে বর প্রদানে বাসনা করি, ভোমার কি অভিলাব প্রাধনা কর।

শকর কহিলেন, হে দেব। আপনি লগতের প্রভু, আপনার বে দর্শন লাভ হইল, ইহাই আমার প্রধান বর সন্দেহ নাই। বহুদিন বহুপরিশ্রমে দেহপাত পূর্কক ভপজারকুণ করিলেও আপনার দর্শনলাভ স্ফুর্লভ। বাহা হউক্, বদি আমাকে বর প্রদানে অভিলাবী হইয়া থাকেন, ভাহা হইলে বাহাতে আমি পৰিক্র ও দেবশক্ষামী হইতে গারি, ভাহাই করুন্, আমার অক্ত কিছুই প্রার্থনীয় নাই।

রক্ষা কছিলেম, ছে মছেবর । কুমি যে তীর্থে বলিয়া তপভাপ্রটান করিতেছ,এই তীর্থে ভোষার হল্ত হইতে কপাল নিকভিত হইয়াছে, স্বতরাং এই স্থান কপালব্যেচন নামে প্রামিদ্ধ
ইইবে এবং এই ক্ষেত্র নিরীকণ করিলে দর্শকর্মের প্রথাসক্ষ
ইইবে সন্দেহ নাই। মহাপাতকী ব্যক্তিও এই স্থান্ধে ক্ষালিতা
ভোষাকে নেত্রগোচর করিলে বিগুলি বাভ করিতে পারিবেঃ

ত্রাক্ষণদিগের স্থায় ক্ষত্তিরগণেরও ধর্ম দান, অধ্যয়ন ও যজ্ঞ এবং তাঁহারা ধরাশাসন ও অন্ত্র-বিদ্যা দারা জীবিকানিব্বাহ করিবেন।

দান, অধ্যয়ন ও যজ্ঞ বৈশাদিগেরও এই তিনটি ধর্ম। বৈশ্যেরা বাণিজ্ঞা, পশুপালন ও কৃষিকর্ম ছারা জীবিকানির্বাহ করিবেন।

দান, যজ্ঞ ও বিপ্রদেবা এই তিনটি শূদ্রদিগের

অত্ত্য পঞ্চলোশপরিষিত ভূমি অতীব পবিত্র হটবে এবং ইহার
মধ্য দিয়া প্ৰাণলিকা গলাদেবী প্রবাহিতা হটবেন। আমি যাবতীর দেবগণসহ সমবেত হট্রা এই হানে অবস্থিতি করিব; এই
তীর্ধ বারাণসী নামে প্রসিদ্ধ হটবে। বে ব্যক্তি এই পঞ্চলোশপরিষিত প্থাক্ষেত্রমধ্যে দেহ বিসর্জন করিবে, সে অশেষ পাপে
অভিত্ত থাকিলেও দেহাবসানে তৎক্ষণাৎ শহরত্ব প্রাপ্ত হটবে
সন্দেহ নাই। এই তীথে পূজা জগ ও হোমামুছান করিলে
আনস্ত ফল লাভ হট্রা থাকে। এই তীর্থ কি অর্গ, কি অপ্বর্গ,
উভারেবই কারণ; অভএব হে শিব! ভূমি কলত্র সহ এই
প্রাক্ষেত্রে অবস্থান কর।

মছেখণ কছিলেন, হে ব্রন্ধন । আপনি অনুমতি করুন্,
আগতী শলে যে কোন তীর্থ বিদায়ান আছে, তৎসমূদায় হইতে
এই তীর্থ যেন অধান ও পুণাজনন হয়; দেবদেব বিষ্ণু যেন
নিরস্তব মৎসম্ভিব্যাহারে এই স্থানে অধিবস্তি করেন; কি
ধেব, কি দানব, সকলেই ঘেন বর লাভার্থ আমার আরাধন।
করে; আমি ঘেন সকলেরই বরদাতা এবং সকলেরই আরাধ্য
ও আর্থনীয় হই। এই তীর্থে আমি ভিন্ন আরু কেইই হেন
বর্দ হইতে সুক্ষন না হন।

কদ্রদেব এইরপ প্রার্থনা করিলে একা কহিলেন, হে কদ্র ! ভোষার এই সমক্ত প্রার্থনাই ফলবতী হইবে, গুণবান্ বিষ্ণু বশাসুগত হইবা নিরস্তর বারাণনীধানে ক্ষাধ্বস্তি করিবেন।

পিতামহ ব্রন্ধা এই বলির। নানাবিধ প্রবোধবাক্যে সান্ধনা শ্রেদান পৃথ্যক ভিরোজিত হইনে ত্রিপুলী শহর বারাগদী পুরী স্থাপন করিয়। তথার প্রবেশ করিলেন। এই বারাগদী পৃথিবী হুইতে সম্পূর্ণ পৃথক।

বিনি স্টি হিভি ও শংহারের একমাত্র কারণ বলিয়া অন্তি-হিভ, নারায়ণও বাঁচাকে পূজা ও মান্ত বিবেচনায় তার করিয়া বাকেন, সেই দেবদের শশাস্ত্রশেধরও ব্রহ্নহত্যাপাপে জড়ীভুড

ধর্ম ; ক্রয়বিক্রয় ও বিপ্রদেবাই উহাদিগের জীবিকা।

হে ব্রহ্মন্! বর্ণচভূক্টয়ের ধর্ম কীর্ত্তিত হইল ; অধুনা আশুমধর্মের বিষয় শ্রণ কর।

কি ত্রাহ্মণ, কি ক্ষত্রিয়, কি বৈশ্য, কি শুদ্র, সকল বর্ণ ই স্ব ধর্মে অবিচলিতভাবে অবস্থান করিলে সিদ্ধিলাভ হইয়া থাকে। যে সকল কর্ম নিষিদ্ধ, তাহার অমুষ্ঠান করিলেই নরকগামী হইতে হয়। বিপ্রগণ যে পর্যন্তে উপনয়নসংক্ষারে সংস্কৃত না হন, তাবৎ অভিলাধানুরূপ কর্মানুষ্ঠান ও অভি-

হওরাতে এইরপে বহুপবিশ্রমে প্রায়শ্চিত্তের অন্তর্ভান করিরা-ছিলেন।

* একপুরাণে বর্ণিত আছে যে, সপ্রপাতালের পথ সলিলের অধ্যেজালে যে স্থান, তাঙাকেই নরক কছে। পাপাত্মাধা ঐ নরকে নিপতিত হইয়া স্থাস কৃত পাপের কল ভেগে করিয়া থাকে। ঐ স্থানে রৌধর, শুকর, ধোধ, তাল, বিশিস্ন, মহাজ্বাল, তপ্তকুল্ক, মহালোহ, বিমোহন, ক্ষিবান্ধ, বৈতংগী, ক্মিভোজন, অসিপত্রেন, ক্ষে, লালাভক্ষ,বেধক, প্রবহ,বহিজ্বাল, অধানিরা, সন্দংশ, ক্রমিভাজ, তমঃ, অবীচি, খভোজন, অপ্রতিষ্ঠ প্রভৃতি বছবিধ নরক বিদামান। ঐ সকল স্থান ক্তান্তের অধিকার-ভৃত্ত; গাপিগণ ঐ সকল নরকমধ্যে নির্ভ্রের দাকণ যুগ্রণ ভোগ করিভেছে।

যে ব্যক্তি কৃট ও মিপ্যাসাক্ষ্য অপবা পক্ষপাত করিয়া
সাক্ষ্য প্রদান করে, ভাষাকে রৌরব নামক নাকে নিপতিত হইয়া আশেব ক্লেশ সভোগ করিতে হয়। বাহারা স্থরাপায়ী, য়য়্যাতী, স্থর্বহারী, শুরুপদ্বীগামী এবং বাহারা এই
সকল ব্যক্তির সহিত একল বাস করে, তাহাদিগের শুকর নরক
প্রাণ্ডি হইয়া পাকে। বাহারা ক্ষলির ও বৈশ্রগণকে নিহত
করে, হাহারা শুরুলমানন নিরত ও বাহারা রাজসেনা বধ
করে, তাহারা ভগুকুন্ত নামক স্থান্ডি লরকে নিপতিত হয়।
বাহারা পতিরতা ধর্মপদ্বীকে বিক্রের করে, বাহারা বধান্তনের
ক্রাকারী ও ভক্তরনকে পরিতাগে করে,ভাহারা মহালোহনবকে
নিপতিত হইয়া দারণ বাতনা ভোগ করিতে থাকে। কন্যা ও
প্রবধ্গামী, শুকর অপ্যানকারী ও পরাপবাদী নরাধ্যদিগের

লাষানুসারে দ্রব্যাদি ভক্ষণ করিতে পারেন, কিস্তু উপনয়নান্তে ব্রক্ষচর্য্য ব্রতাবলম্বনপূর্বক গুরুগৃহে বাস করাই তাঁহাদিগের নিয়মিত ধর্ম।

ব্রহ্মচর্য্যাশুমে অবস্থানকালে বেদাকুশীলন, অগ্নিসেবা, স্থান, ভিক্ষার্থ পরিভ্রমণ, শুরুকে নিবে-দন করিয়া তদন্তে ভিক্ষার ভোজন, শুরুর কার্য্য-

মহাজ্ঞাল নামক ঘোৰ নিবয়ে পতন চয়। যাহাবা বেদবিক্রমী, বেদনিন্দক ও যাহাবা অগম্যা কামিনী গমন কবে, তাহাবা অসিপত্রেন নামক ঘোর নবকে নিপত্তিত হইয় দারুণ ক্লেশ ভোগ কবে। তস্ত্রব ও মর্যাদদ্যক ব্যক্তি দ্বের বিম্যেহ নামক নবক লাভ হয়। যে সকল ব্যক্তি দ্বেরা, রাক্ষণ ও পিতৃ লোকেব হি নাচবণ কবে, ভাহাঝা ক্রমিভক্ষ নামক নবকে নিপ তেত হইয়া থাকে এবং যাহাবা দেবতা, পিতৃ ও অতিথিদিগকে বঞ্জনা কাবয় স্থাণ ভোজন কবে, অস্ত্রেমে তাহাদিগকে লালা ভক্ষ নবকে নিপত্তিত হইয়া থাকে। বিদ্ধিত হই ভেছ্ম। যাহাবা বিনাদ্যেমে শব্দাবা লীবগণকে বিদ্ধু কবে, তাহাবা বেধক নবকে নিপত্তিত হইয়া থাকে। অসংপ্রতিগ্রাহী ব্যক্তি অব্যাম্থ নবকে নিপত্তিত হয়। যাহাবা অব্যক্তিগ্রাহী ব্যক্তি অব্যাম্থ নবকে নিপত্তিত হয়। যাহাবা অব্যক্তিগ্রাহী ব্যক্তি অব্যাম্থ নবকে প্রদান না কবিয়া স্থাং মিষ্টার ভোজন কবে, দেহাবদানে তাহাদিগকে পৃশ্ববহ নবকে প্রয়ণ কি তিত হয়।

যে সকল এাহ্মণ লাক্ষা, মাংস, তিল ও লবণ বিক্রম দাবা জীবিকা নির্মাহ কবে, তাহারাও পূয়বহনবকে প্রস্থান কবে। যাহারা মার্জ্জাব, কৃকুট, শুকব এবং পক্ষি পোষণ করে, তাহা দিগকেও উল্লিখিত নিবয়ে নিমগ্র ছইতে হয়।

যে সকল এক্ষণ সোমবিক্রয়ী শকুমবাবসায়ী, গ্রামবাজক ও মিত্রহত্যাকানী এবং বে সকল বিপ্র গৃহে আন্নি প্রাদান করে, তাহাদিগকে ক্ষিবান্ধ নামক নিবরে নিমগু হইতে হয়।

বে সকল বাক্তি সীয় গ্রামের অনেই সাধন করে, ভাষা দিগকে বৈতবণী নামক নরকে নিপতিত হইরা দারুণ ক্লেশরাশি উপভোগ কবিতে হয়। রেতঃপানাদিকারী, মর্য্যাদাভেদক ও কুশিল্পীবী মানবগণ কৃষ্ণনামক নরকে গ্রম করে।

যাহাবা মেষমাংস বিক্রন্ত স্থারা জীবিকা নির্কাহ করে ও যাহারা মুগলাতী, ব'চুজালা নামক নবকট তাহাদিলের বাস স্থান। যাজাশ এতবিশ্বকারী ও বাহাবা আ্লামপ্রিল্রট, তাহা-দিগকে সন্দংশ নামক নবকে নিপ্তিত হইতে হয়। যে স্কল সাধনে নিরন্তর সতর্ক থাকা, গুরুর সম্ভোষসাধন ও গুরুর অসুমতি গ্রহণপূর্বক একান্তমনে শান্ত্রা-ধ্যয়ন করাই সর্বতোভাবে কর্ত্তবা। ত্রক্সচর্যা-বন্ধায় গুরুর নিকট এক বা ততোধিক বেদ অধ্য-য়ন করিয়া গুরুর অনুমতি গ্রহণপূর্বক ইচ্ছামু-সারে গার্হস্যাশুমে বানপ্রস্থাশুমে অথবা চতুর্থা-শুমেও প্রবেশ করা যাইতে পারে। যদি কোন আশুমেই প্রবিন্ট হইতে বাসনা না হয়, তাহা হইলে ত্রক্সচারী ত্রক্ষচর্যাবন্ধায় যাবজ্জীবন গুরু-গৃহৈই অবন্ধিতি করিবেন। গুরুর অবর্ত্তমানে গুরুপুত্র অথবা গুরুপদ্বীর প্রতিই গুরুবৎ ব্যবহার দারা দিনপাত করা বিধেয়।

বন্ধচারী দিবাভাগে নিজাভিভূত হয় এবং যে সকল ব্যক্তি পুদেব নিকট বিদ্যাশিক্ষা করে, ভাহারা খডোজন নামক নরকে নিপতিত হইয়া থাকে।

বে সকল ব্যক্তি কায়মনোবাক্যে বর্ণশ্রেমবিক্সর কল্মের অফ্টান কবে, তাহাদিগকে অধ্যংশিরা নামক নরকে নিগভিত হইয়া অধ্যংশিরাজাবে অব্যস্তি করিতে হয়।

এই সকল বাতিবেকে আবও সহক্ষ সহস্ৰ ভীষণ নর্ভ বিদ্যান মান আছে। পাপায়াবা সেগ সকল নির্ব্যে নিপ্তিত হুইরা খোব যাডনা ভোগ কবিরা থাকে।

বিষ্ণুপ্রাণে বর্ণিত আছে যে, ভূমির এবং অন্ধকারময় গর্ভন্থ জলেব আধোভাগে নরক বিল্যমান, পাণীরা ভালাতে নিপতিত হটরা অ অ কল্মফল ভোল করে। তথার ুরৌবব, শুকব, বোধ, তাল, বিশসন মহাজ্ঞাল, তগুকুন্ত, তপ্তলৌহ,লবণ, বিলোহিত, কদিরান্ধ, বৈতরণী, ক্ষমীশ, ক্ষমিভোজন, অনিশজ্ঞবন, ক্ষ্মুক, লালাভক্ষ, পৃহবহু, বহিজ্ঞাল, আধঃশিরা, সন্দংশ, কালপ্ত্ঞ, তমন, অবী চি, প্রভাজন প্রভৃতি বহুবিধ ঘোর নরক বিদ্যমান রহিয়াছে। ঐ সমন্ত নরক ব্যবাঞ্জের অধিকৃত।

বে ব্যক্তি মিথা সাক্ষ্য প্রদান অথবা সাক্ষ্যপ্রদানকালে পক্ষপাত্তিতা প্রকাশ করে, তাহাদিগকে রৌরব নরতে মিপতিত হউতে হর। জার্শহত্যাকারী পরপ্রবাস্থিক ও গোঘাতীরা রোধ নামক নিরয়ে গমন করিয়া থাকে। মদ্যপারী, প্রক্ষহত্যাকারী, স্বর্গহারী এবং যে সকল ব্যক্তি উহাদিগের সংসর্গ করে, তাহা ব্রহ্মচর্যাবসানে অভিলাষামুসারে গার্হস্থাশুনে প্রবেশ করিলে অসমানগোত্রা বালার পাণিগ্রহণ করিতে হয়। যে নারীকে পত্নীত্বে গ্রহণ করিবে, তাহাকে অরোগিণী দেখিয়া গ্রহণ করা উচিত। গার্হস্থাশুমীরা অর্থোপার্জন দারা পিতৃদেবতা, অতিথি ও আশ্রিত ব্যক্তিগণের শুক্রারা এবং ভরণপোষণ করিবে। ভূত্য, পুক্র, দাস, অন্ধ ও পতিত ব্যক্তিগণকে শক্ত্যমুসারে অন্ধাদি দান করা কর্তব্য। পশুপক্ষীদিগকেও ভক্ষ্য প্রদান করা গৃহস্থদিগের ধর্ম। ঋতুকালে যথাসময়ে দারাগমনও তাহাদিগের সনাতন ধর্ম বলিয়া পরিগণিত। গৃহস্থগণ স্থীয় সাধ্য অনুসারে পঞ্চ যজ্ঞের অনুষ্ঠান করিবেন। তাঁহারা প্রথমতঃ পিতৃ.

দিগের ও শৃকর নরক প্রাপ্তি হয়। যাহারা ক্ষত্রিয় ও বৈশুঘাতী, গুরুপত্মীগামী, ভগিনীগামী এবং যাহারা রাজাঙ্গনাগমন করে, তাহাদিগকে তপ্তকৃষ্ণ নামক নিরয়ে নিমগ্র হইয়া দারুণ যাতনা ভোগ করিতে হয়। যে বাক্তি পতিব্রতা পত্মীকে বিজয় করে, অখবিক্রয় বারা যাহাদিগের জীবিকা নির্বাহ হয় এবং যাহারা অমুগত জনকে পরিত্যাগ করে, ভাহাদিগকে তপ্তলোহ নরকে নিপতিত হইতে হইয়া থাকে, প্রেবধ্ অথবা প্রতীগমনকারী পাপায়ারা মহাজাল নরকে নিপতিত হয়। গুরুনিক্ষক ও বেদবিক্রয়কারীরা লবণ নরকে গমন করে, যাহারা দেবতা, ব্রাক্ষণ ও পিতার প্রতি হিংসাচরণ করে, তাহাদিগের ক্রমিভক্ষনরকে গতি হয়। অভিচারকারী ব্যক্তি ক্রমীশ নরকে গমন করে।

যে সকল পাপাঝারা দেবতা, পিতৃ ও অতিথিদিগকে প্রদান না করিয়া অত্যে স্বয়ং ভোজন করে, তাহাদিগকে লালাভক্ষ নরকে নিমগ্র হটঝা দারুণ যাতনা ভোগ করিতে হয়, অসং-জীবী, অধাজ্যযাজক এবং নক্ষত্রগণক ব্যক্তিরা, অধামুখ নরকে, লাক্ষা- মাংস রস ও লবণ বিক্রেমকারী এবং মার্জ্যার, কুকুর ও ছাগাদি পোষণকারীরা পুরবহ নরকে গমন করে।

এই প্রকার সহস্র সহস্র দারুশ নরক বিদ্যামান আছে; ত্ত্বতকারীরা উহাতে নিপতিত হুইশ্লা আশেষ ক্লেশ সম্ভোগ করিয়া থাকে। ০ দেবতা ও অতিধিসংকার করিয়া জ্ঞাতিগণকে আহার প্রদানপূর্বক পরিশেষে সৃষ্ণ ভূত্যবর্গের সহিত ভোজন করিবেন। নিরস্তর সদাচারপরায়ণ হইয়া অবস্থিতি করাই গৃহস্থগণের কর্তব্য। #গৃহস্থাশ্রমে অবস্থিতি করিয়া পুজাদি সঞ্জাত হইলে যথন দেহ পরিণত হইবে, তখন বানপ্রস্থাবলম্বন করাই বিধেয়।

ধন্ম, অর্থ ও কাম এই ত্রিবর্ণের সাধনে যত্নশীল হওরাই গৃহমেধিগণের কর্ম্পর। অর্থোপার্জ্জন পূর্বাক তাহা চারি ভাগে বিভক্ত করিয়া একাংশ ধর্মাপ্র্টানে বায় করিবে, এক ভাগ পরিবারবর্ণের ভাবী কার্য্যাদির জন্ম সঞ্চিত রাখিবে এবং অবশিষ্ট ভূই ভাগ অর্থৎে অর্জাংশ হারা আত্মজীবিকা নির্বাহ ও নিত্য ক্রিয়াদি সমাধা করিবে। যে ভাগ সঞ্চিত থাকিবে, ভাহা উত্তরোজ্র বৃদ্ধিত এইরূপ আচরণ করিলেই তাহা সফল হুইয়া থাকে।

পাপ বিদ্যুগের জন্ত ধর্মা ছুইনে করা একান্ত কর্ত্তবা। গৃহস্থ গণ আক্ষ মুহুর্তে শ্যা। ইইতে সমুখিত হইয়া ধন্ম ও অর্থ চিন্তা করিবে। নিজেখিত হইয়া প্রথমত: আচমন পূর্ব্বক পূর্বমুথে সমাসীন ইইয়া প্রথমা সন্ধার উপাসনা করিবে, সায়াহে পশ্চিম সন্ধান বন্দনার সময় স্থাদেব দৃষ্টিপথের অতীত ইইতে না ইইতে উপাসনা আরম্ভ করা উচিত। যথকালে স্থাদেব সমুদিত হন ও যথন অন্তাচলে গমন করেন, নেই সময় তাঁহাকে নেত্রগোচর করা সমূচিত নহে। কেশ সংস্কার, আদর্শতলে মুথাদি নিরীক্ষণ, দক্তধাবন এবং দেবতর্পণ, এই সকল কার্যা দিবাভাগের পূর্ব্বাহে সমাধা করা উচিত। গৃহমেধিগণ অসংপ্রকাণ, মিথাা ও পরুষ বাকা প্রয়োগ, রুথা কলহ, অসৎ শাস্ত্রালাপ, সর্ব্বাহা পরিত্যাগ করিবে।

বে পথে গ্রাম, বাদগৃহ, তীর্থ জথবা ক্লেক্তে গমন করিতে হয়, তথার মলমূক্ত ত্যাগ করা জবিধেয়। অপরের কথা দূরে থাকুক, স্বীয় পুরীর দর্শন করাও গৃহস্থের কর্তব্য নহে। রক্তম্বানাবীর সহিত সন্তাব্দ, তাহাকে স্পর্শ করা, অধিক কি, তাহাকে

্বানপ্রশ্বাশ্রম অবলম্বন করিলেই চিত্ত জি

সমূৎপদ্দ হইয়া থাকে। বানপ্রস্থাবলম্বন করিতে

হইলে অরণ্যবাসী হইয়া ফলমূলাদি ভক্ষণ ও

তপোমূর্তান মারা দেহ শুক্ষ করাই কর্ম্বর।

দর্শন করাও অনুচিত। সলিলমধ্যে মলমূত্র ত্যাগ ও মৈথুনক্রিয়া করিবে না। কি বিষ্ঠা, কি মৃত্র, কি কেশ, কি অঙ্গার, कि অন্তি, কি রজ্জু, এই সকল জবেরর উপর দণ্ডারমান বা উপ-বেশন করা সমূচিত নহে। বিপ্রা, অগ্নি, গো ও সূর্য্য ইইাদিগের সমূপে মলমূত্র ত্যাগ করিবে না। দিবাভাগে উত্তরমূপ ও নিশা-যোগে দক্ষিণমূথ হইয়া মলমূত্র পরিত্যাগ করিবে; কিন্তু কোন-রপ পীড়া অথবা কোনরপ ব্যাঘাত সঞ্চাত হইলে অভিলাষাত্র-करण (र ज्ञारन ও रा पिरक উপবিষ্ট इतेज्ञाहे इडेक्सा (कन, মলমূত পরিত্যাগ করা দোবাবহ নছে। বিনা কারণে পুনঃপুনঃ স্থান করিবে না, স্থানাস্থে গাতো তৈল লেপন করাও অকর্ন্তব্য। প্রত্যহ পিতৃ ও দেবতাগণের অর্চনা পূর্বক সাধ্যামুসারে মনুষ্ ও অক্তান্ত জীবগণকে আহার করাইয়া পরিশেষে শ্বরং ভোজন করিবে। ভোজনসমরে পূর্কমূপ বা উত্তরমূপ ছইয়া আচমন क्रिएक इस, यावर रक्षाक्षन প्रतिम्याश न। इस, कावर सोनाव-লখন করিয়া অবস্থান করাই উচিত। অত্যুক্ত অনু আছার করিবে না। গমন করিতে করিতে বা শয়ন করিব। আহার করাও উ চত নহে। উচ্ছিট্ৰয়ুখে বেদপাঠ বা কাহার সহিত কলোপ-কথন করা একান্ত অকর্ত্ব্য। ভোজনাত্তে হন্ত প্রকালন না করিয়া গো, বাদ্ধণ, অগ্নিও খীর মন্তকে কর প্রদান করিবে না। একবল্ল চইয়া ভোজন বা দেবপুলা করা সমৃতিত নতে; নগ হইব। সান ও নগ হইর। শরন করাও অস্তিত। ছই হত ধারা মন্তক কণ্ডায়ন সর্ক্থা নিবিদ্ধ; তথা আসন, তথা শ্বা ও তথ পাত্র বাবহার করা অবিধেয়। শুরুজন সমীপে সমাগত হটলে প্রত্যুত্থান পূর্বক অভ্যর্থনা ও সন্ধাননা করিয়া উপবেশনার্থ আসন প্রদান করিতে হয়। ভাঁহাদিপের তাতি মিটবাক্য প্রয়োগ করা এবং তাঁহাদিগকে অভিবাদন করা লেয়োলাভের একমাত্র কারণ; ভাহাদিগকে কটু বাক্যে দ্বীভূত করিলে পদে পদে বিপদে নিপতিত হইতে হর। ভাঁহারা কোনত্রপ ভূমপের অভূষান করিলে ভাষা অপরের নিকট কীর্ত্তন ও কেহ তাহাদিলের নিন্দা করিলে তাহা এবণ করা একার অকর্তব্য। তাহারা ক্রম হইলে বিনীভভাবে অতিবাকা ৰারা প্রসম করা-ইতে হয়। ব্রাহ্মণ, রাজা, আডুর, বিদ্যাবৃদ্ধ, গর্ভিণী, ভারবাহক, 🖯

তদবস্থায় প্রত্যাহ ভূতলে শয়ন করিবে এবং ব্রহ্মচর্য্যপরায়ণ ও পিতৃদেবতা এবং অতিথিসং-কারে নিরত হইয়া কাল্যাপন করা বিধেয়। ব্রিস্ক্যা স্নান, যথাসময়ে হোম ও জ্টাব্রহল ধারণ

অন্ধ, ৰধির, মন্ত, উন্মন্ত প্রভৃতিকে গমনসময়ে অগ্রে পথ প্রান্ধান कशित्व। (प्रवाणव, ठजुन्नाथ, विमाातुष, श्वत्र ६ (प्रवर्क नाम-র্শনমাত্র প্রদক্ষিণ করা উচিত। অস্ত ব্যক্তির ব্যবহৃত পাছুকা, বসন, অলম্বার, উপবীত, মাল্য প্রভৃতি ধারণ করিবে না। চত্ত-र्षनी नक्षणी ७ व्यक्तांस नर्वाप्तवरम गार्व्य देखन मर्फन करा ५ जी-সহবাস সর্কথা পরিত্যজা। বিনা কারণে ক্ষিপ্তপদ ও কিপ্ত-बन्द हरेत्रा व्यवज्ञान कतिएव ना । शक्य बहन व्यव्यात ७ रेशकु পরিত্যাগ করা সদাচারপর্যমণ ব্যক্তির নিতাক্ত ভ্রেম্কর। মূর্ব, ব্যসনী, বিকলাজ ও কুজ প্রভৃতিকে দর্শন করিয়া উপহাস করা সদাচারনিষ্ঠ গৃহত্বের উচিত নহে, দম্ভ ও অভিযান পরিত্যাপ করা ভাঁহাদিগের পক্ষে একান্ত সমূচিত। কাহাকেও দণ্ড প্ৰদানে সমূদ্যত হওয়া সৰ্চিত নহে, কিন্তু পুক্ত ও শিষ্যদিপকে শিক্ষালানার্থ দণ্ড প্রালান করিতে পারে। সংবাধ ও ক্লবর (১) আহরণপূর্বক একাকী আহার করিবে না। কি প্রাতঃকাল, কি সারাহ, উভর সময়েই অতিথি সেবা করা গৃহত্তের সমূচিত। প্রত্যত পূর্ব্যপুর বা উত্তরমূপ হট্মা দক্তগাবন করিবে। শাল্পে বে সকল কাঠ নিধিত্ব বলিয়া লিখিত, ভজারা ইত্তথাকন कड़िरव मा।

উত্তরশিরা বা পশ্চিমশিরা হইয়া শয়ন করা উচিত মহে, দক্ষিণ অথবা পূর্কদিকে মন্তক রাথিরা শরন করাই বিশ্বিত। বে ললাশয়ের লল চুর্গদ্ধে পরিপুরিত, ভাহাতে স্থান করা সমু-চিত নহে। স্থানাতে বসন অথবা হক্ত দারা প্লাল মার্ক্ষন করিবে না এবং ভার্লকেশ বা আর্ল্র বস্ত্র কম্পিত করাও অরুচিত। কেবল এহণ বাতিরেকে রজনীযোগে স্থান করা শাল্রনিষিদ্ধ। স্থান করিবার অপ্রেগাত্রে অম্পেশন অলান করা বিজ্ঞানের অম্যোদিত নহে। রক্তাও ক্ষরণ এবং চিল্লিড বসন পরিধান করিবে না। ছিল্ল ও দাশ্যুম্ব বস্ত্রও সর্বাথা পরি-তালা। চিরোফিত ও পর্যুবিত কয়, পিইশাক, ইক্ মৃথ্য অভ্যুক্তির বিকার এবং মাংস্বিকার পরিত্যাগ করিবে; পৃষ্টমাংস, বৃধামাংস, ক্ষত্রুর কর্ত্বক দাই ও অবলেছিত

(১) সংবাৰ—মিটারবিশেব। ক্বর—তিলমিল্রিত অর্ বিশেষ। করিয়া অবস্থিতি করিতে হয়। সুীয় পাপরাশি বিদ্রিত করিবার জন্ম নিয়ত যোগাভ্যান করা বানপ্রস্থাবলম্বীদিগের অবশ্য কর্ত্তব্য।

ভিক্কাশ্রমকেই চতুর্ধাশুম কহে; ইহার

মাংল এবং বে সকল মাংল লাজনিবিদ্ধ, তাহা ভ্রমেও ভক্ষণ করা
বর্ষটিত নহে।

বংকালে দিনমনি সম্দিত ও অন্তগত হন, তৎকালে শরান থাকা অমলনের কারণ। সান করিয়া তৎক্ষণাৎ শরন করা সমূচিত নহে এবং সমাসীন হইয়াও নিল্রোভিভূত হইবে না। শরনকালে অস্তমনা হওয়া অকর্তব্য; শরন করিয়া অথবা কথা কহিতে কহিতে ভোজন করাও বিধের নহে। ভোজন-কালে অপর কের সমীপত্ত থাকিলে তাহাকে আহার প্রদান না করিয়া স্বরং কলাচ স্যোজনে প্রবৃত্ত হইবে না। প্রতিদিন স্থানাতে ভোজন করাই কর্তবা।

পরদারাগমন বিজ্ঞ ও বিচক্ষণ পুরুষগণের অনুষ্ঠেদিত ও অভিত্রেত নহে; কারণ পরস্থাগমন করিলে ইটাপুর্ত, কীর্ত্তি ও আযুক্ষর হইরা থাকে; বস্তুত: পরস্থার সহিত সহবাস করিলে বে পরিমাণে পরমাযুর ভাস হয়, ইংলোকে মানবগণের পক্ষে তৎসদৃশ আযুক্ষয়কর কার্যা আর বিতীয় লক্ষিত হয় না।

चात्र (काक्टानत चाटा (यक्तन चाट्यन कत्र) विविध चाट्छ, তজ্ঞপ কি দেবপূজা, কি অগ্নিকার্যা, কি গুরুপ্রণাম, এ সমস্ক কশ্বামুঠানের পূর্বেও আচমন করিবে। পূর্বা অথবা উত্তরষ্থ হট্রা আচমন করিতে হয়। নিশাল ফুল স্বারাই আচমন করা कर्खवा: (व अन पूर्न (क शृतिक व्यथवा (व अनाम ततः अनगर হইতে শব্দ সমূখিত হয়, তদ্বারা আচমন করা সমূচিত নছে। করচরণ খ্রেড করিয়া বারি প্রোক্ষণ পূর্বক আচমন করাই कर्त्तवा : च्याह्यमार्थ किन वा हाति वाद जनभान कतिरव ; मरा-প্রথমে বার্মর মুখ্যার্জন করিরা ইল্লিরছিল ও মন্তক পর্শ করিবে, তদনস্তর বারি দারা সমাক্রপে আচমন পূর্বক পবিত্র হইয়া কর্মাত্র্টানে প্রবৃত্ত হইবে। নিষ্ঠীবনাদি পরিত্যাপ পুৰাক সবস্ত্র হুইয়া আচমন করাই বিহিত। আচমন করিলে ফেরপ দেহ ওছ হয়, তজ্ঞাপ পোপুট স্পর্শ, সূর্য্য দশন এবং দক্ষিণ কর্ণ ম্পূর্ণ করিলেও গুল্প লাভ হইয়া থাকে। বে সময়ে যেরুপ সম্ভবে, সে সমন সেইরূপ করাই উচিত, কিন্তু পূর্বে পূর্বের অভাবে পর পর অফুটান করাই উচিত।

সলিলমধ্যক্ষ্তিকা, ফালক্টেডফ্ডিকা, বন্ধীক মৃত্তিকা,

অপর নাম যত্যাশুম। বানপ্রস্থাশুমের পরেই এই আশুম অবলম্বন করিতে হয়। আশুমচতুষ্টয়-দেবার্থীগণেরই এই আশুম আশুয় করা কর্ত্তব্য। এই আশুমাবলম্বীগণ ইন্দ্রিয়া দমনপূর্ত্তক দ্বেষ

মৃষিকবিদারিত মৃত্তিক। ও শৌচাবশিষ্ট মৃত্তিক। এই পঞ্চবিধ মৃত্তিকা সর্বাধা পরিতাজা, এই সমন্ত মৃত্তিক। অপবিত বলিয়াই উদাসত হটবা থাকে।

সদাচাবনিষ্ঠ ব্যক্তি বিনা কারণে দক্তবর্ষণ ও স্বীয় শরীব ভাড়ন করিবে না। সন্ধানকালে অধারন, ভোজন, শয়ন ও স্থানাস্তরে গমন করা সম্ভিত নছে। মৈথুনকার্যাও সন্ধান সমরে নিবিদ্ধ। দিবাভাগেব পূর্বাস্থে দেবার্চনা, মধ্যাত্রে অভিথিসের এবং অপরাস্থে পিতৃপুলা কর্ত্তবা। সন্ধাবন্ধনাদির সময় পূর্বে বা উত্তরাক্ত হুইরা উপ্রেশন ক্রিবে।

যে ব্যক্তি স্থাপনার কল্যাণ কামনা করেন, তিনি রোগা-বিতা ও বিকলাজী কন্তার পাণিগ্রহণ করিবেন না। বিকলাজী ও রোগিণী কন্যা সংকুলঞ্জাতা হইলেও সর্বধা পরিভাজ্য। বে কন্যা বিক্তরুপিণী, যাহার বর্গ পিঞ্চল, যাহার বাক্য স্থাতীব কর্কশ, তাহাকে পরিভাগে করাই যুক্তিসমত। যে কন্যার স্কল্পপ্রভাজ বিকল নহে, যাহার নাম স্ক্রমধুর ও সৌমা, যে স্ব্রু-স্কুলক্ষণসম্বিভা, ভাদৃশী কন্যাই পরিণরের যোগাপানী।

গৃহমেধিগণ, দিবানিত্র। ও দিবানৈথ্ন সক্ষয় পরিত্যাপ করিবে। বাহাতে জীবগণ পীড়াপ্রাপ্ত হর এবং মদ্বারা অপবের হৃদর সন্তাপিত হর, তাদৃশ কল্পের অমুষ্ঠান করা একান্ত জবিধের। দেবতা, রাজণ, সাধু, তপত্মী, গুরু, যাজ্ঞিক ও পতিব্রতা নারী, পরিহাসক্ষণেও এই সমস্ত ব্যক্তির নিন্দা করিবে না যে হানে ঐ সমস্ত মহান্তার নিন্দাবাদ হয়, তথায় অবস্থান করাও সম্চিত নহে। করাচ অমলল স্চক পরিছেল ধারণ ও অমলল স্চক বাকা স্লেয়োগ করিবে না। নিরম্ভর স্থেত ক্ষমে বিভূষ্ত হইয়া অবস্থান করা বিধের। অত্যতম শ্যা ও অত্যতম আসম বিদামানে অপকৃষ্ট প্র্যাসনাদিতে সমার্চ্ হইবে না।

রমণীপণ ঋতুমতী হইলে চারি দিন তাহাদিগের সহত সহ-বাস করিবে না। কি এছেণ, কি ক্লাঞ্জের, কি বৈশ্বা, কি শুদ্র, চতুর্মাণের প্রতিই এই নিম্ন বিহিত আছে। কন্যাজনন নিবা-রণে অভিলাব হটলে রক্তবলা নারীকে পঞ্চরাত্তি প্রয়ায় পরি-ভাগে করিবে; স্ক্তরাং ঋতু হটবাব পর বট রাত্তিতে প্রীগ্যন হিংসা পরিত্যাগ করিয়া নিরন্তর ব্রহ্মচর্য্যামুষ্ঠান করিবেন, সর্ববঙ্গ পরিত্যাগ করাই ইইাদিপের কর্ত্তব্য কর্ম। এক গৃহে বহুদিন অবস্থিতি করা যত্যাশুমীদিপের সমুচিত নহে। একবারমাত্র করাই যুক্তিযুক্ত। এতব্যতিরেকে যুগা রজনীতে স্ত্রীগমনও শ্রেমন্তর; যুগা রাত্রিতে স্ত্রীগমন কবিলে প্র এবং অমুগারাত্রতে গমন করিলে কনা। সমুৎপন্ন হর। এই কারণে প্রার্থী মানবেরা অত্কালীন যুগা রজনীতেই স্ত্রীসহবাস করিয়া থাকে। দিবাভাগে স্ত্রীগমন করিলে অধ্যাত্রক স্ত্রানের উৎপত্তি হয় এবং প্রেম অধ্যা সন্ধাকালে গমন করিলে নপ্ত্রক সন্ত্রান করা করে। ক্ষোরকর্ম, বমন ও স্ত্রীসপ্তোগের পর স্বত্তে স্থান করা কর্ত্তবা। মানবগণ ভার্যার রক্ষণাবেক্ষণে নিরন্তর বস্থবান্ হইবে।

যে সকল বাক্তি মূর্থ, তুর্ফ্ ভ, উন্মন্ত, অবিনীত, চুঃশীল, চৌষাপরামণ, বহুবামী, লোভী ও উপ্রস্থভাব তাহাদিগের সহিত দৌহার্দ সংস্থাপন করা সমূচিত নহে। বেখ্যা ও বেখ্যাপতির সহিত্ত মিত্রতা করিবে না। যহোবা নিত্যভীত, ঘাহারা অর্থহীন এবং যাহারা দৈবের উপর নির্ভ্তর করিয়া নিশ্চিম্ন থাকে, আয়োমতির কিছুমাত্র চেষ্টা করে না, তাহারাও বন্ধুর যোগ্যপাত্র নহে। যাহারা সাধুশীল, সদাচার্মিষ্ট, বিজ্ঞা, পিশুন-শৃষ্ঠ, নিম্নত সংক্ষামুষ্ঠানতংপর, তাহানেগের সহিত্য মিত্রতা করা যুক্তিসক্ষত। সেই সকল ব্যক্তির সহিত্য সোহার্দেই কল্যাপ্তর হইরা থাকে।

আপনা হইতে উচ্চবর্ণ, ঋষিক্ ও আচার্য্য গ্রহাণত হইবে সাধ্যাসুসারে তাঁহাদিগের অর্চনা করিবে এবং তাঁহারা বাহা আদেশ করিবেন, সাধ্যাস্থ্যারে তাহা প্রতিপাশনে বছুবান্ হইবে। যদি কোন কারণে ঐ সকল ব্যক্তি কোধ প্রকাশ করেন, তাহা হইলেও তাঁহাদিগের সহিত বিবাদ করা উচ্চত নহে।

গৃহ্দেখিগণ গৃহসংকার করিয়া যথান্তানে অধি সংস্থাপনপূব্বক নিতাপূলা এবং ছতাশনে আছতি প্রদান করিবে।
সালাচারপরায়ণ ব্যক্তি প্রতিদিন সর্বাপ্রথমে ত্রন্ধাকে, ভদনস্তর
প্রকাশতিকে এবং ভদনস্তর শুষ্ক কণাকে আছতি প্রদান
করিবে। পরিশেষে গৃহ্বলি প্রদানপূর্বক বিশাদেষগণকৈ
বিধানামূসারে যদি প্রদান করিতে হয়। স্থানবিভাগান্তস্তর
পূথক্ পূথক্ দেবভার উদ্দেশ করিয়া পর্জন্ত, আপে, ধরিতী

ভিকা করিয়া যাহা কিছু প্রাপ্ত ইইবেন, তাহা ভক্ষণ করিয়াই উহারা জীবন ধারণ করিবেন। ক্রিয়ামুষ্ঠান বিসর্জনপূর্বক নিরন্তর আত্মদর্শন ও আত্মজ্ঞানলাভে যত্নবান্ হওয়াই ভিক্কাশ্রী-দিগের সনাতন ধর্ম।

প্রভিতির বলি দিবে। প্রত্যেক দিকে প্রাচাদে দিক্সকলেব বলি দিয়া উত্তর্জিকে ব্রহ্মা, গগ্মমার্ফে নবগ্রহ, বিশ্বভত্ত, উষ ও ভূতপতিদিগের উদ্দেশে বলি আলোন কবিবে ৷ আনস্তর "হধানম:" এই মন্ত্ৰ উচ্চাবণপ্ৰক আচীনাবীতী হটয়া দক্ষিণ-দিকে পিতগণের উদ্দেশে আছতি প্রদান করিব। ত**্**-পরে অরাবশেষ প্রদান করিয়া বিধানাতুসারে স্লিল দান করিতে হয়। ভাদনায়ৰ অপ্রভাগে উদ্ধৃত করিয়া যথাবিধি বিপ্ৰকে প্ৰদান করিবে। দৈৰতীৰ্থে দৈবকৰ্ম এবং পিততীৰ্থে পিতৃকর্ম আরম্ভ করাই প্রশস্ত কিন্তু আচমনক্রিয়া ব্রাক্ষ তীর্থেই করিতে হয়। দক্ষিণ হল্পের অসুষ্ঠের উত্তর হইতে ষে বেথা দৃষ্ট হয়, তাহাই ত্রান্ধতীর্থ বলিয়া উদাহত, উহাই আংচমনার্থ প্রশস্ত। তর্জনী ও আংস্টের মধ্যে পিড়ডীর্থ, ঐ তীর্থ মারা পিতৃগণকে জল প্রদান করিবে; কেবল নান্দী-ম্ধ, আ ছে। পিড়ভীথে ভিপণ করিবে না। অফুলি সমূহের অগ্রে टेम्बजीर्थ, छेटा बाहा टेम्बक्रिया निन्धानिक कविटन। कनिष्ठा-ভূলির মূলে কায়তীর্থ, উহার অপের নাম প্রাক্ষাপতা ভীর্ণ। এই সকল তীর্থ দারা দৈব ও পিতৃকার্য্য সম্পল্ল করিছে, জন্ত ভীৰ্থে উক্ত কাৰ্য্য বিহিত নহে। প্ৰাশ্বতীৰ্থ স্থাৱা আচমন কবিতে হয়। পিড়ভীর্থে পিড়কার্য্য এবং দেবভীর্থে দৈব-কাৰ্য্য করাই বিহিত। বিজ্ঞানেখা আজাপতা ভীর্য দার। ন। দ্বীমুখ পিতৃগণের কার্য্য সমাধ। করিবে। প্র্রুজাপতি সম্বন্ধ বে কেনে ক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিবে, তাহাও ঐ প্রাক্ষাপত্য তীর্থে সম্পন্ন করা সমূচিত।

সদাচারশরাধন বিক্ষ পুরুষ একেবারে জল ও অগ্নি ধারণ করিবেন না। গুরুজন ও দেবতাদিগের প্রতি পাদপ্রসারণ করা উচিত নহে; গোবেৎস যৎকালে গাভীর ত্ত্ম পান করে, তথম তাছাকে ভূঝপান করিতে না দেওয়া অতীব গাহিত। অঞ্চলি ছারা জল পান করা এবং মুথবায়ু ছারা অগ্নি প্রজ্ঞালন শাল্পনিবিদ্ধ। অয়ই ৬উক, আর অধিক পরিমাণেই হউক, শৌচকাল সম্পস্থিত চইলে বিলম্ব করা বিধেয় নহে। যে দেশে অগ্নাভা, বৈদ্যা, গ্রোভিন্ন, ব্রাহ্মণ ও পূণ্ সত্য, শৌচ, অহিংস্। অনস্য়া, ক্ষমা, আনৃশংস্থা, অকার্পণ্য, সন্তোষ, এই অফীবিধ ধর্ম সকল
বর্ণ ও সকল আশুমের সাধারণ। এই সকল ধর্মে অবিচলিতভাবে অবস্থান করাই সকলের কর্তব্য কর্মা।

বাহারা স্থ স্থ ধর্ম উল্লেজনপূর্বক পরধর্মে নিরত হয়,নরপতি তাহাদিগকে সম্চিত দক্ত প্রদান করিবেন; কারণ মানবগণ সৃ সৃ ধর্মে পরিত্যাগ-পূর্বক পাপাত্ম্চান করিলে নরপতি যদি তাহাতে উপেক্ষা প্রদর্শন করেন, তাহা হইলে তাঁহার ধর্ম ও ইন্টাপূর্ত্ত বিনন্ট হইয়া যায়; অতএব যত্ন-সহকারে সকল বর্ণ ও সকল আশুমকে সৃ সৃ পদে প্রতিষ্ঠিত রাখাই তাঁহাদিগের একান্ত কর্ত্তব্য ।

ইত্যাদিমহাপুরাণে আয়েয়ে বর্ণাশ্রমধর্ম্বকথন নামক একবিংশতিভ্য অধ্যায় স্মাপ্ত।

দ্বাবিংশতিত্বম অধ্যায়।

অঘি কহিলেন, হে এক্ষন্! অতঃপর পিতৃ-গণের বিবরণ, তাঁহাদিগের মাহাক্ষ্য ও শান্ধবিবরণ বর্ণন করিতেছি, শুবণ কর।

সলিখা স্বোতশ্বতী বিদ্যমান না আছে, তথার বাস করা অমলনের কারণ। যে দেশের মহীপতি অরিনাশে ক্ষমবান, মহাবলপরাক্রাস্ত্র ও ধর্মানিষ্ঠ, বিজ্ঞ ব্যক্তিরা সেই দেশেই অধিবসতি করিবেন। কুরাজার রাজ্যে বাস করা সম্ভিত নহে। যে দেশের নরপতি প্রগল্ভ নহে, যে দেশের ভূমি বহুশশুপূর্ণা, যে দেশে ঔবধের অভাব নাই, তথার অবস্থান করাই বিজ্ঞগণের যুক্তিযুক্ত। যে দেশের মহীপতি জিগীযাপরায়ণ, ধর্মাত্মা, নিত্তাব্যক্তির এবং যে দেশ নিরস্তর উৎসবে সমাকুল, তথার বাস করাই সমৃচিত। যে স্থানের প্রতিবাসীগণ সাধুশীল, তথার অবস্থানও পরম প্রেয়ন্তর সন্দেহ নাই ।

এইরূপ আচরপ্তেই সদাচার বলে এবং ইহাই স্থাচারের স্থরপ। এইরূপ আচরণে গৃহমেধিগণ কলেয়াপন করিলে ভাষাকে কদাপি ক্লেশের ভাগী হইতে হয় না। হে তপোধন! মরীচিপ্রভৃতি সপ্তসংখ্যক ব্রহাপুত্রেরাই শুরধামে পিতৃগণ বলিয়া পরিগণিত। তমধ্যে চারিজন মূর্ত্তিমান্; অবশিষ্ট তিন জন মূর্তিবিহীন।

ঐ সকল পিতৃগণের মধ্যে চারিজন ধর্মমূর্তিধারী এবং তিন জন পরমাণুস্করপ। স্বর্গে
সন্তানক নামে পরমদীপ্রিসম্পন্ন লোক বিদ্যমান
আছে, সেই সমস্ত লোকই দেবতাদিগের পিতৃস্থান। স্থারবর্গ সেই সকল পিতৃগণের যজ্ঞ করিয়া
থাকেন। ঐ সকল পিতৃগণ আদ্ধে যোগীগণের
যোগবর্জন করিয়া দেন।

যে সকল পিতৃগণ সোমপ নামে অভিহিত, ধরাতলবাদীরা তাঁহাদিগের অর্চনা কবিয়াধাকেন।

সনকাদি পিতৃগণ অধিরাজ শব্দে অভিহিত হইয়া থাকেন; তাঁহারা নিরন্তর তপস্থাচরণে অভিনিবিষ্ট রহিয়াছেন।

অগ্নিষাতা, মারীচ, বৈরাজ, বর্ষিদ, হুকালের প্রভৃতি পিতৃগণ বিশেষ বিশেষ বর্ণের অর্চনীয়। ব্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয় অনুমতি প্রদান করিলে শৃদ্রেরাও ঐ সকল পিতৃগণের উদ্দেশে যজ্ঞসাধন করিতে পারে; বস্তুতঃ শৃদ্রজাতির পৃথক পিতৃলোক নাই।

হে ব্ৰহ্মন্ ! পিভৃষৰ্গ অতি বিস্তীৰ্ণ ; কোটি বৰ্ষেও ইহার অস্ত নিরূপিত হয় না।

জাদোপযুক্ত দ্রব্য ও উপযুক্ত ত্রাহ্মণ প্রাপ্ত হইলেই প্রাদ্ধ করা যাইতে পারে। এতদ্বতি-রেকে ব্যতীপাত, অয়ন ও বিষুব সংক্রমে এবং গ্রহণসময়েও শাদ্ধাসুষ্ঠান করা কর্ত্তব্য। যৎকালে নক্ষত্র-গ্রহাদির পীড়া ও তুঃস্বপ্ত দর্শন হয়, তৎ-কালে এবং নবশস্তাগমের সময়েও প্রাদ্ধ করা যাইতে পারে। যে সময়ে অমাবস্তা তিথিতে আর্দ্রা, বিশাখা অথবা স্বাতী নক্ষত্রের যোগ হয়, তংকালে আদ্ধানুষ্ঠান করিলে অফবর্ম যাবং পিতৃগণ পরিতৃপ্ত থাকেন এবং অমাবস্থা তিথিতে
পুষাা, আর্দ্রা অথবা পুনর্বস্থার যোগ হইলে যদি
আদ্ধানুষ্ঠান করা হয়, তাহা হইলে পিতৃগণ ঘাদশবার্ষিকী পরিতৃপ্তি লাভ করেন। ধনিষ্ঠা, পূর্ব্বভাদ্রপদ অথবা শতভিষা নক্ষত্রযুক্ত অমাবস্থাতে
আদ্ধানুষ্ঠান করিলে অনন্তফলভাগী হওয়া যায়,
কিন্তু ঐ কাল স্থরগণেরও স্কতুর্ল্ভ।

পিতৃগণ সৃষ্ণ বলিয়াছেন যে, বৈশাখ মাসের শুরুপক্ষের তৃতীয়া, কার্তিকের শুরুনবমী, ভাজ মাসের কৃষ্ণা ত্রেদেশী, মাঘী পূর্ণিমা, গ্রহণ, অফকাচতুইয় ও অয়নদ্ম, এই সমস্ত সময়ে শুদ্ধামুষ্ঠান করিলে দহস্র সন্তংসরকৃত শুদ্ধের ফল লাভ হইয়া থাকে।

পিতৃগণ কহিয়াছেন যে, বহুপুণ্যে মাঘী কৃষ্ণা পঞ্চনীতে শতভিষার যোগ হইয়া থাকে। তৎ-কালে এবং ঐ সময়ে ধনিষ্ঠা যোগ হইলে যদি শুদ্ধাসুষ্ঠান করা যায়, তাহা হইলে পিতৃগণ সহস্র যুগ যাবৎ স্থাথ নিজিত থাকেন।

গঙ্গা, গোমতী, সরস্বতী, বিপাশা ও শতক্র নদীতে স্নানপূর্বক ভক্তিসহকারে পিতৃগণের উদ্দেশে সলিলাঞ্জলি প্রদান ও শাদ্ধান্মুষ্ঠান করিলে পিতৃলোকের পরমা প্রীতি সমুৎপাদিত হয়। "পুত্রগণ কবে তীর্থে গমন করিয়া আমাদিগের উদ্দেশে তর্পণ করিবে" তাঁহারা নিরন্তর এই কামনা করিয়া থাকেন।

বেদাধ্যায়ী, ষড়ঙ্গবিৎ, ঋত্বিক্, ভাগিনেয়, জামাতা, জোহিজ, মাতৃল, তপস্থী, পঞ্চামি আহ্মণ, শিষ্য ও মাতৃপিতৃপরায়ণ ব্যক্তিকে শ্রাদ্ধে ভোজন করাইতে হয়। যে সকল বিপ্র মিত্রজোহী, কুনথী, স্থাবদৃদ্ধ, কন্তাদূষক, অগ্নি ও বেদবর্জ্জিত,

অপবাদগ্রস্ত, তক্ষর, পিশুন, গ্রামধান্তক, বাঁহারা বেতন গ্রহণপূর্কক অধ্যাপন কার্য্য নির্কাহ করেন, বাঁহারা মাতৃপিতৃকর্তৃক পরিত্যক্ত এবং বাঁহারা দেবল,তাদৃশ ব্রাহ্মণকে শাুকে ভোজন প্রদান করা সমূচিত নহে।

যে দিবস আদ্ধ করিতে হইবে, তাহার পূর্ববিদেব আদ্ধাপযুক্ত ব্রহ্মণদিগকে নিমন্ত্রণ করিবে। তাঁহারা আদ্ধাননে সমাগত হইলে সম্বর্ধনাপূর্বক ভাজন করাইতে হয়। সেই সকল ব্যক্তি গৃহাগত হইলে প্রথমতঃ তাঁহাদিগের চরণ প্রকালন করিয়া দিবে; তদনন্তর আপনি কুশহস্ত হইয়া আচমনপূর্বক তাঁহাদিগকে আদনোপরি উপবেশন করাইবে। দৈবপক্ষে হুই এবং পিতৃপক্ষে তিন ব্রাহ্মণ নিমন্ত্রণ করাই বিহিত। অসমর্থ হইলে উভয়ন্থলে এক একটি ব্রাহ্মণ নিমন্ত্রণ করিলেই হয়। দৈবপক্ষের ব্রাহ্মণদিগকে পূর্ববিন্দ্র ও পিতৃপক্ষের ব্রাহ্মণদিগকে উভরমুথ করাইয়া ভোজন করাইবে।

কেহ কেহ বলিয়া থাকেন যে, পিত্রাদির শাদ্ধ পৃথক্ পৃথক্ করাই সমূচিত। কেহ কেহ বলেন গন্ধাদি দান একত্রেই হুইতে পারে। বিফরার্থ কুশাসন দান করিয়া বিধানামুসারে পৃথক্ পৃথক্ অর্ঘ্যদান করিতে হয়। পরস্তু অর্ঘ্যপাত্রের অত্রে দৈবাদিক্রমে আবাহন করিবে। দেবপক্ষে অর্ঘ্য-দানসময়ে অর্ঘ্যপাত্রে যবোদক ও হুরভি চন্দন-কুম্মাদি দারা প্রিশোভিত করিতে হয়। অনন্তর পিতৃপক্ষের বিপ্রদিগের আবাহন করিয়া ভিলজল-সহ পৃথক্ পৃথক্ অর্ঘ্যদান করিবে।

হে জ্বন্! শাদ্ধকালে কোন পথিক জ্বাক্ষণ অভ্যাগত হইলে বিধানামুসারে তাঁহার অর্চনা করিতে হয়। কারণ যোগিগণ মানবদিগের হিতকামী হইয়া নানারূপে ধরাতলে পরিভ্রমণ করিয়া থাকেন; আগস্তুক পথিক তদ্রূপ যোগী হইলেও হইতে পারেন। বিশেষতঃ শাুদ্ধসময়ে অভ্যাগত অতিথির অর্চনা না করিলে শাুদ্ধক্রিয়ার কল ধ্বংস হইয়া যায়।

অর্ব্য ও গন্ধাদি দান করিয়া পরিশেষে বিধানামুসারে অয়িতে হোমানুষ্ঠান করিবে। প্রথমতঃ অয়ির, পরে সোমের, তৎপরে বৈবস্থতের হোম করিয়া হুতাবশিষ্ট দ্রব্য কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ পাত্র-সমূহে সংস্থাপিত করিবে, তদনন্তর মঞ্চেচারণ সহকারে অমাদি পরিবেশন করিয়া উৎসর্গ করিবে। যাবৎ অম উষ্ণ থাকিবে এবং যাবৎ বিপ্রগণ বাগ্যত হইয়া ভোজন করিবেন, তাবৎ পিত্লোকদিগের ভোজন হয়, য়তরাং অমাদিদান-সময়ে তাহার গুণ বর্ণন করা সম্চিত নহে।

অনন্তর দৈবাদি পক্ষের বিপ্রদিগের তৃপ্তি প্রশ্ন করিয়া দকল আক্ষণকে ইতিহাদ শ্বণ করাইতে হয় ৷ পরে অমার্থ অমাগ্রভাগ গ্রহণপুর্বক অপিও ব্যক্তিদিগের উদ্দেশে ভূতলে নিক্ষিপ্ত করিয়া আচমনার্থ ব্রাহ্মণসমূহের হস্তে সলিল প্রদান করিবে। তদনন্তর দ্বিজগণ পরিভুক্ত হইয়া অ্তু-মতি প্রদান করিলে কুশোপরি সতিল পিও প্রদান করিবে। এইপ্রকারে মাতামহাদিত্রকেও পিও প্রদান করিতে হয়। তৎপরে লেপভোজী পিতৃগণের উদ্দেশে বিধানাকুদারে অন্ন প্রদান করিবে। অনন্তর গন্ধাদি দারা করিয়া পূজা ও শক্ত্যসুসারে দক্ষিণা প্রদান **স্বস্ত্যা**দিবাচন করিতে হয়। তৎপরে দেবপক্ষের বাহ্মণদিগের প্রীতি প্রার্থনাপূর্বক আশীর্কাদ প্রার্থনা করিবে। পরিশেষে বাহ্মণদিগকে বিদর্জন করিতে হয়। এইপ্রকারে শ্রাদ্ধকর্ম সমাপিত হইলে বৈশ্বদেব- কার্য্য সম্পাদনপূর্ঝক জ্ঞাতি বন্ধু প্রভৃতির সহিত মিলিত হইয়া স্বয়ং ভোজন করিবে।

ধব বিদ্যমানে পিতৃগণের উদ্দেশে পিগু প্রদান করিতে কদাচ অর্থকার্পণ্য প্রদর্শন করিবে না। পিতৃগণের প্রীতিসাধনার্থ তাঁহাদিগের উদ্দেশে পবিত্র পিতৃতীর্থসমূহে শাদ্ধামুষ্ঠান * এবং * পিতৃতীর্থের বিষয় প্রাণায়রে এইরপ বর্ণিত আছে,

खल्माशिमी পूनाविद्वानी भशात्रे लिङ्गरनत मर्खन्यधान जीर्थ বলিয়া প্রথিত; দেবদেব ভগবান গদাধর তথায় বিরাভ কবিতেছেন। এই স্থানে আদ্ধান্ত্রপান করিলে পিতৃগণ প্রম প্রীতি লাভ করিয়া থাকেন। "একজনও গ্রাধানে গ্রন করিয়া পিও প্রদান করিবে" এই অভিলাধেই মানবগণ বরুপুত্র কামনা কৰে। পুণাক্ষেত্ৰ বাৰাণনীও পিড়গণেৰ জীতিপ্ৰদ তীৰ্থ: মানবগণ এই স্থানে দেহ বিস্জ্জনপূক্তক শত শত পাপ্রাশি হুইতে বিমৃক্ত হুইয়া পুৰুষ গতি লাভ কৰে। পিতুগণের প্রীতি কৰ তীৰ্থ প্ৰয়াগেও শ্ৰাদ্ধানুষ্ঠান কৰিলে যাবতীয় মনোবেথ স্থানিদ্ধ হয়; এই স্থানে বটেশ্ব ও যোগনিদাভিভত কেশ্ব বিরাজমান রহিয়াছেন। পঙ্গাছার, নন্দা, ললিডা, মায়াপুনী, মিত্রপ ও কেদার এই সকল স্থানও পিতৃতীর্থ ব'গ্রহা অভিচ্নিত : গঙ্গাদ্বাৰে আদাভুষ্ঠান কবিলে দশাৰ্ষমেধের ফল প্রাপু হওয়া বার। গঙ্গাসাগর মহর্ষিগণকর্ত্তক সক্ষতীর্থময় বলিয়া অভিহিত হয়; উহা এবং ব্ৰহ্মসায় নামক ক্ষেত্ৰও পিতৃতীৰ্থ বলিয়া ব্ৰতিত। প্রকারর শতক্রে হ্রাদের মধ্যে অবস্থিত। যে স্থানে পুণ্যসলিলা তর্জিণী গোমতী প্রবাহিত হইতেছেন, যে ভানে স্নাভ্ন প্রজ্যান্তেদ নিরীক্ষিত হয়, যে স্থানে কাঞ্চনময়দাববিবাভিত হুরমা মন্দিরমধ্যে অষ্টাদশভুজ ভগবান শক্ষেব রম্পীয় মৃতি বিবাজমান, যে খানে পিনকেপাণে শূল হল্তে করিয়া যক্তব্লাহেব অভুদরণ করিয়াছিলেন, সেই পবিছে নৈমিধারণ্যও পিতগণের পরম প্রীতিজনক ভীর্থ, ঐ ভীর্বে দক্ষতীর্থের ফল লাভ করা যার ; হরিচক্রের নেমি শীর্ণ হইয়াছিল বলিয়াই ঐ স্থান নৈমিষা-রণানামে আংসিদ্ধ হটয়াছে। ঐ ভানে গমনপুর্বক শিবের ও যজ্ঞববাহের প্রতিমৃতি নিতীকণ করিলে অথিল পাড়করাশি হইতে মুক্তিলাভ কর। যায়। যে স্থানে নর্গিংহরপী হরির প্রতিষ্ঠি প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে, সেই কৃতপৌচ নামক স্থান এবং ইক্ষতীও পিতৃগণের প্রীতিপ্রাদ তীর্ষ; (পিতৃগণ ইক্ষ্মতীর বাহ্মণদিগকে ধন, বসন, ভূষণ ও বিবিধ ভোজন প্রদান করা বিধেয়। যদি পুত্র অর্থহীন হয়,

সরিহিত গঙ্গাদক্ষমে নিবন্ধর অধিষ্ঠিত বহিয়াছেন। পুণাতে য়ো সরয়, ইরাবতী, যমুমা, দেবিকা, কালী, চক্রভাগা, দুৰ্বভী, বেণুমতী, পালা ও বেত্ৰবভী এই সকল ভানও পিতৃ-গণেব পরম তীর্থ; এই সকল স্থানে শ্রাদ্ধানুষ্ঠান কবিলে কোটি-গুণ ফল লাভ হইয়া থাকে। জনুমার্গ নামক পিতৃতীর্থে স্ক্র-কামনা পবিপূর্ণ হয়। যে সকল স্থানের নাম স্মব্রেও পাপবালি বিদ্বিত হটয়া যায়, সেই নীলকুও, মন্দাকিনী, মানস্দ্বোব্ব, ক্রদ্র, স্বস্থতী, অচ্ছোদা, বিপাশা, ক্রিপ্রা, বৈদ্যনাথ, বংশো-८७म, स्ट्राटिखम, शटकाटिखम, कानक्षर, महाकान, विकुशने, छट्छ-শ্ব ও নম্মদান্বার পিতৃগণের প্রম তীর্থ; এই সকল তীর্থে শ্রাদ্ধানুষ্ঠান করিলে গ্রাধামে পিওপ্রদানের ফল লাভ চইয়া थाटक । ७% व. काटबरी, किलानक, हल्लादशामाञ्चन छ অমধকণ্টক পরম পিতৃতীর্থ। জ্রোণী, বাটনদী, ক্ষীবনদী, ধারাদরিৎ, গজকর্ণ, পুরুষোত্তম, গোকর্ণ, তপতী, মূলতাপী, পরে। खी, কায়। বরে। হব, গোমতী, বরুণা, ছাবকা, অর্ক্রদ্যবন্ধতী, মণিমতী, গিরিকর্ণিকা, ভৈত্তর, ভৃগুতুঙ্গ, পাপছর পাপহর, মহা-বোধি, পাটলা, নাগতীর্থ, অবস্থিকা, বেণানদী, মহাশাল, মহা-কদ্ৰ, মহালিঙ্গ, দশাৰ্ণা, শতক্ত্ৰা, শৃত।হ্বা, কালিকা, বিতন্তা, ধৃতপাপ, বিশ্বপদ, শোণ, ঘর্ষর ও দক্ষিণসাগর এই সকল স্থানে আন্তেষ্ঠান করিলে অনন্ত ফলভাগী হওয়া যায়; ঐ স্কল পুণ্যক্ষেত্র পরম পিতৃতীর্থ বলিয়া অভিহিত। মেধকর নামক পিতৃতীর্থে শার্মধর বিষ্ণু নিখন্তর অব'হুতি করিতেছেন। এত-खित मत्नाम वी, हम्भानमी, महामाल, मिटक्संत, माझत, हज्यवाक, জন্মের্বন, ত্রিপুর, চম্মকোট, শ্রীশেল, পুণাতোমা তুর্গভয়া ভীম রথী নদী, শ্রীবঙ্গ, মহেক্ত, ক্লঞ্চবেণা, কুগুলা, গোদাবরী, ত্রিসন্ধ্যা, নারসিংহ, ত্রৈমম্বক, এই সকল স্থানও পরম পিতৃতীর্থ ; এই সকল স্থানে ভক্তিসহকারে অবগাহনপুর্বাক প্রাদাযুদ্ধান করিলে কোটি কোটি ফল লাভ হইয়া থাকে। ভগবান্ শশিশেপর নির-স্থর উল্লিখিত তৈরম্বক তীর্থে বিরাজ করিতেছেন। পুণ্যসলিলা স্রোত্রতী বাহনা, শুভপ্রন সিদ্ধিবন, পাশুপত এবং পার্ম্বভিকা নদীতে আদামুদ্ধান করিলেও শতকোটগুণ ফল প্রাপ্ত হওর৷ বার। জামদ্যথা তীর্থও পিতৃগণের পরম প্রেয়তম; ঐ স্থানে গোদাবরী নদী প্রতীকের ভবে প্রভিন্ন হইয়াছেন। তামপর্নী, শ্রীপর্ণী, জয়াতীর্থ, মুংশুনদী, শিবধার, ভদ্রতীর্থ, পম্পাতীর্থ,

তাহা হইলে বনজাত শাকাদি দারাও পিতৃগণের দভোষ বিধান করিবে। যে ব্যক্তি শাকাদি দংগ্রহেও অসমর্থ, ভক্তিনম্রভাবে পিতৃগণের উদ্দেশে জলমাত্র প্রদান করাও তাহার কর্ত্তব্য। যদি জলও প্রাপ্ত হওয়া না যায়, তাহা হইলে বনে গমন করিয়া সূর্য্যাদি লোকপালদিগকে নমস্কার-পূর্বক এই বাক্য উচ্চারণ করিবে যে, "আমি অর্থহীন, শাক্ষোপযুক্ত কোন দ্রব্য আহরণেও আমার সামর্থ্য নাই, আমি ভক্তিভাবে পিতৃগণকে প্রণাম করি, তাঁহারা আমার প্রতি প্রসন্ম থাকুন।"

রামেশব, অবভূত, এলাপুর, আনন্দক্মল, আফ্রাত্রেখর, একাস্তক, গোবদ্ধন, হবিশ্চক্র, কুপুচক্র, সহস্রাক্ষ, পৃথুদক, কদলীনদী, রামাধিবাস, ইন্দ্রকীল, মহানাদ, সৌমিত্রিসঙ্গম এই স্কল স্থানও পর্ম পিতৃতীর্থ : ঐ স্কল তীর্থে প্রাদ্ধানুষ্ঠানপুর্বক পিডগ্ৰেৰ উদ্দেশে দান করিলে অন্তফলভাগী ছওয়া যায়। যে স্থানে স্থাপতি স্বৰ্গভ্ৰষ্ট ছইয়া নিপতিত হন এবং নম্চিকে বিনিপাতিত করিয়া তপংগ্রভাবে যে স্থান হটতে পুনবায় অমরাবানীতে প্রস্তান কবেন, সেই পুণাবতী সেক্রফেণাও পিতৃ-গণের প্রিয়তম ভীর্ণ; অঞ্জোষ্ণ, সহস্রলিঙ্গ, রাঘ্যেশ্বর, পুষ্কর, শালগ্রাম, সোমপান, সাবস্বত ভীর্থ, স্থামিতীর্থ, মলন্দ্রা নদী, কৌশকী, চক্রিকা, বৈদর্ভী, বৈধা, উত্তরকাবেরী ও জালদ্ধর পর্বত, এই সকল ভানে আদ্ধামন্তান, অগ্নিকার্য্য ও দান করিলে পিজন্প প্ৰম প্ৰীত হট্যা থাকেন। যে ব্যক্তি লোহদও, विकारमान, हिळ्कृतेनिति, शक्नारयान, कुखाल, मश्मानस्माहन, ঋণমোচন, অটুহাস, গৌতমেশ্বর, বশিষ্ঠতীর্থ, হারিত, কুশাবর্ত, হরতীর্থ, পিণ্ডারক, শঞ্জোদ্ধাব, ঘণ্টেশ্বর, বিষক, নীলগিরি, ধরণীতীর্থ, রামতীর্থ ও অরতীর্থে লাদাস্ট্রনেপৃক্ষক পিও প্রদান কবেন, অভিযে তাঁহার পরম পতি লাভ হয়। পুগুরীক, কর্দ-মাল, নকুলেশ, গৌরীশিথর, কুশেখর, করবীরপুরী, মাত্যুছ, ভদ্ৰকালেশ্বর, বৈকুণ্ঠতীর্থ, ভীমেশ্বর, ছাগলগু,গণ তীর্থ, খ্রীপতি ভীর্য, জয়ন্ত, বিজয়, ওষবতী নদী, বেদলির, বস্থপ্রদাও বদ**ী**-ভীর্থ, এ সকল স্থানেও পিও প্রেলান করিলে পিড়গণ পরম গ্রীতি লাভ করেন; বস্তুত: এই সকল ছানে প্রাদ্ধান করা

০ যে ব্যক্তি নিত্য শাদ্ধদান দ্বারা পিতৃগণের প্রীতিবিধান করেন, পিতৃগণ তাঁহার প্রতি সম্বন্ধ হইয়া তাঁহার যাবতীয় অভিলাষ পূর্ণ করিয়া দেন।
দ্ব দৌহিত্র, তিল এবং অপরাহ্নকাল এই তিনটি শাদ্ধে অতীব পবিত্র ও প্রশন্ত। রজতও প্রশন্ত বলিয়া বর্ণিত, স্বতরাং শাদ্ধকালে এই সমস্ত স্বত্রে দংগ্রহ করিবে।

* শিতৃগণ প্রীত হটলে যে সর্ক্কামনা স্থাসিদ্ধ হইয়া থাকে,

তি বিষয়ক একটা অভাত্ত্ত বিষয়ণ পুঝাণাভ্রে বর্ণিত আছে,

সংক্রেপে উহা এই স্থলে উদ্ধৃত কবা গেল।

—

পুণাকৃমি ভাবতবর্ষের উত্তর দীমার কুনক্ষেত্র নামে একটা পরম তীর্থ বিদ্যমান আছে, পুর্বের তথার কৌশিক নামে এক ধর্মপ্রায়ণ প্রমতেজঃসম্পন্ন মহর্ষি বাদ করিতেন। তাহার সাতটী পুত্র; ঋষিকুমাবেরা স্বন্থপ, জোধন, হিংলা, পিশুন, করি, বারন্ত ও পিতৃবর্তী নামে প্রাদিদ্ধ। উই।বা দকলেই মহাম্নি গর্মের শিষার গ্রহণ করিয়াভিলেন।

কাশসহকাবে কোশিক দেহায়ে স্বধামে প্রস্থান কবিলেন। তদনস্তর অত ল কালের মধ্যেই মহী হলে অনাবৃষ্টি ও ছার্ভিক সঞ্জাত হইল; অসংখা জাবগণ কালগ্রাসে নিপতি ১ হইতে লাগিল।

ঐ সময়ে একদা কৌশিককুমারেবা বনমধ্যে পবিভ্রমণপুর্বক তবন একটা প্রস্থিনী গাভীব পাৰ্লক্ষণ কার্য্যে নিবৃক্ত ভিলেন। গাভী বংস সমভিব্যাহাবে স্বেক্ষাহ্মাবে ইতস্ততঃ প্রাটন করিতেছিল। বিপ্রবটুগণ একে তপনতাপে সম্বন্ধ, তাহাতে ছঃসহ কুর্বীয়ে যার পব নাই কাতব হটয়া উঠিলেন, বনমধ্যে তামৃশ কিছুই লক্ষিত হয় না,যদ্বাবা কুবা শান্তি কাবতে পাবেন। অবশেষে অগতাা সেই গাভী ভক্ষণে কুতসংবল্ল হইলেন। সকলেই একমত হইলেন বটে, কিছু সর্বাকান্ত পিতৃবলী ভাতৃগণকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, 'যদি এই পয়্বিনিক নিহত করাই স্থিবীকৃত হইল, তাহা হইলে আক্রেষ স্বাহ্মের আম্বা ভক্ষণ কবিব, তাহা হইলে আমাদিগের এই গাভীবধ জনিত পাপ বিদ্বিত হই ব সন্দেহ নাই।' কানছেব এই বাকা ভ্রমণ কবিয়া সকলে ভাছাকে সাধ্বাদ প্রস্থান তহাকের অব্যাহ্মাদ্য কবিয়া সকলে ভাছাকে সাধ্বাদ প্রস্থানাত্র বাকা ভ্রমণ কবিয়া সকলে ভাছাকে সাধ্বাদ প্রস্থানাপ্রক তহাকের আম্বাদ্য কবিয়া সকলে ভাছাকে সাধ্বাদ প্রস্থান কবিয়ান কবিয়ান

শুনিদবিসে এককোশের অধিক দূর গমন, বিভোজন ও দারাসহবাস পরিত্যাগ করাই শাদ্ধ-কারীর সমূচিত। আদ্ধে যাবতীয় দ্রব্যাপেক্ষা যোগী বিপ্রাই শ্রেষ্ঠ, কারণ তদ্ধারা পরিক্রাণ লাভ হইয়া থাকে।

অগ্নি কহিলেন, হে তপোধন! পৈতৃকীক্রিয়ার

অনস্তব প্রাদ্ধের অনুষ্ঠান হইল, সেই গাভীকে প্রাদ্ধারারপে নিয়োজিত কবিলেন। বিধানামূদারে প্রাদ্ধণার্থী স্থানাহিত ইইল। বৈদিক বলবতা হেডু তাদৃশ গঠিত কল্মের অনুষ্ঠান কবিতেও প্রিকুমানগণের অস্তবে ভরস্থার হয় নাই, তাছারা অনায়াদে গাভীমাংস ভক্ষণ কবিলেন।

সন্ধা। সমাগত, - দিনমণি অন্তগতপ্রায় দেখিয়া ঋষি
নন্দনেবা গোবংসটিমাত্র লইয়া গুক্সমীপে সমাগত হইলেন এবং
কু চাঞ্চলিপুটে নিবেদন কবিলেন, হে ভগবন্ গহসা বনমধ্য
হইতে একটি ভীষণকায় বাাত্র সমাগত হইয়া আপনার প্যত্মিশী
গাভাকে নিহত কবিয়াছে, অগত্যা বংসটি শইয়া প্রভ্যাগত
হহবাছি।

কালসহকাবে কৌশিকলুমাবেবা দেহ বিস্ঞান কলিলেন: গোবধজনিত পালেব ফলে তাঁহাদিগকে দশাবদেশে ব্যাধেব গুছে জন্ম গ্রহণ কবিতে হইল, কিন্তু তাঁহাদিগেব জাতিমুতি বিলুপ্ত হয় নাই। পিতৃভজিপ্রায়ণ হইবা আলাদ্ধে গাভী নিয়োজিত কাব্যাছিলেন বলিয়াই পূৰ্ব্বৰৎ তাঁহাদিগেৰ জাতিস্মৰত বিদ্য মনে ছিল। তাঁহারা ব্যাধগুহে জন্মগ্রহণপুরংক বৈবাগ্য অব লম্বন ক্ষিয়া বনবাদী হইলেন এবং অনাহাবে শ্ৰীরপাতপুক্ক কালজার গিরিতে সপ্ত মুগরপে জন্মগ্রহণ কবিলেন; পিতৃগণেব অনুগ্রহে সে অবস্থায়ও তাহ।দিগেব জাতিম্বতি বিলুপুহ্য নাই। তাঁহাব। বৈবাগ্য অবলম্বনপূৰ্বক অঞ্জল তীৰ্থ দৰ্শন কবিয়া অবশেষে অনাহাবে দেহ বিস্ক্রন কবিলেন। ভদনস্তব ভাহাদিগকে সপ্ত চক্রবাকরূপে স্বন্ধীপে জন্ম পরিগ্রহ কবিতে হইল। চক্ৰৰকোবস্থেও তাহবোপুকাৰৎ বৈৰাগ্য অবলয়ন পুক্ষক দেহ বিস্থাভান করিয়া মানস সরোবার সপ্ত হংস্ক্রপে দেহ ধাবণ কবিলেন। হংদাবস্থায় তাঁহাবা বথাক্রমে স্থমনা, বুমুদ, গুদ্ধ, চিত্রদর্শী, নথেক্সক, স্থানেজ ও অংশুমান নামে আভ হত হইলেন। তাঁহাদিগের মধ্যে তিন জনকে স্বরচেতনা হেতু যোগভাই হইতে হইয়াছিল।

বিষয় সকল পুরাণেই বর্ণিত আছে। এই জিয়া সম্যক্ অবগত হইলে সংসারবন্ধন বিদূরিত হইয়া

একল পাঞ্লিরাল ধীমান মহীপতি বিলাম জীড়াকৌতৃ-কামোদ উপভোগ করিবার জন্ত রমণীগণ সমভিব্যাহারে ঐ মানস সরোধরে গমন করিলেন, চতুরঙ্গবল সহকারে মন্ত্রীস্বয়ও তাঁহার অভগানী ছইলেন। নরপতি সরোধরে সমাগত ছইয়া তত্ত্তা প্ৰম রমণীয় উপবন্মধ্যে কিয়ৎক্ষণ পরিভ্রমণ পূর্বক রাজাঙ্গনাগণ সহ বিবিধ কৌতুক করিতে লাগিলেন; রম্ণীরা नानाविध विवामजाव अपूर्णन शृक्षक महीलात्वत मनहत्व अवुष ছটলেন। নরপতির তার্দী সুখদম্পত্তি ও মন্ত্রিদরের বাজতুল্য ঐপর্যা প্রভৃতি সমস্তই সেই সপ্তচক্রবাকের নেত্রগোচর হইল, তন্মধ্যে যিনি প্রথমজন্মে কুরুক্তেন্টে পিতৃবর্তী নামে ঋষিকুমার ক্রপে জন্ম ধারণ করিয়াছিলেন, ঘাঁহরি পরামশে গোনিধনসময়ে প্রাদ্ধের অমুষ্ঠান হইয়াছিল, তাঁহার অন্তরে রাজা ভোগের ব্যস্না জ্বিলে এবং অপর ভুইটি চক্রবাক মল্লিবয়ের পদ কামনা করিলেন। অন্তরে ঐথবা ভোগের কামনা সঞ্চার ইওয়াতে ঐ চক্রবাকত্রের যোগ ভ্রংশ হইল, সভবাং তাঁহারা অবিলম্বেই চক্রবাকদেহ পরিত্যাগ করিয়া ধরাতলে জন্ম পরিগ্রহ করিলেন। তন্মধা পিতৃবতী মহীপতি বিভাজের পুত্র জন্মদত নামে এবং অপুর চুকুবাক্ষয় অমাত্যপুদ্র পুগুরীক ও স্থালক নামে প্রথিত इरेग्रा अवडीर्ग इरेलान, उपवद्यात आद डाहामिराद पूर्वदः জাতিত্বরত বিদ্যমান রহিল না। তাবশিষ্ট বে হংলচভূইয়ের অথবে বিদ্যালও ভোগবাসনা হয় নাই, ওাঁহারা দেহাত্তে मर्क्सारकृष्टे आकारणद शहर असा शहर कतिरामन, छाँहा मिराने व ক্ষাতিস্থতি পূর্ববং বিদ্যমান রহিল। পূর্বে মহর্বি গর্গের বে প্রস্থিনী গাড়ীকে প্রাদালরূপে পরিকলিত করা হইরাছিল, তিনি প্রমন্ত্রনারী হইয়া সল্লতি নাম ধারণ পূর্বাক দেবলের নিন্দিনীক্রপে অবতীর্প ইইলেন।

রাজকুমার এক্ষণত দিন দিন গুরুপক্ষের চন্দ্রমার ন্যায় বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইতে লাগিলেন; ক্রমে ক্রমে বিদ্যাবন্তা, ধর্ম্বিদ্যা, বীর্যাশালিতা সকল গুণই তাঁহার অধিকৃত হইল। তিনি জীবমাত্রেরই কণোপকখন বৃদ্ধিতে পারিতেন। পূর্বালিখিত দেবলকুমারীসর্তির সহিত তাঁহার বিবাহ হয়। কালসহকারে বিভাজ
দেহপরিত্যাগ করিলে এক্ষণতেই রাজপদে প্রতিষ্ঠিত হইয়া রাজ্য
শাসন ও প্রতির সহিত প্রম্ন স্থাধে দিনপাত করিতে লাগিলেন।
বে চক্রবাক্ষর মন্ত্রিপ্রেরপে জ্লাপ্রহণ করিয়াছিলেন, তাহারা

যায়। ব্তনিষ্ঠ মহর্ষিরা এই জিয়ার অসমেশ স্ব স্ব অভীপ্সিত সিদ্ধ করিয়াছেন। বস্তুতঃ পিছ-

উভবেই ব্ৰহ্মতের মন্ত্রী **হটর। রাজতুল্য স্থপভোলে আর্থ** হটলেন।

একদা এক্ষদত্ত সহধৰ্মিণী সম্নতির সহিত রাজগ্রাসাধ সন্ধি-হিত উপবনমধ্যে পরিভ্রমণ করিতেছেন, ইতাবসরে একটা পিপীলিকামিথুন ভাঁহার নেজপথে নিপতিত হইল ৷ ভাহার! উভয়ে প্রণয়কলতে প্রবৃত্ত হইয়াছে। পিণীলিক কামলরে জর্জারিত হইরা পিণীলিকাকে বিনম্বার্কবচনে বলিতেছে, হে জীবিতেখরি ! তোমার স্থার মনোহারিণী রমণী মহীতলে विजीत (नज्राताहर स्त्र ना ; मिश्हकविष्य श्रेतीय स्त्रीय कवि, শুকুতর জ্বন, বিস্তৃত বক্ষ, বিশুদ্ধ কাঞ্চনৰৎ বৰ্ণ, স্থপঠিত শ্রোণিদেশ এবং স্থাধুর মৃত্ হাস্ত সন্দর্শন করিয়া কাছার নয়ন ও মন বিমোহিত না হয় ? তোমার সরোজবদন হইতে যে দকল বচনসুধা বিনিৰ্গত হয়, তাহা প্ৰবণযুগলকে অভূত আনস্ক-রসে সিঞ্চিত করে; আহা ! তোমার রসমার গঠন অভীব মনোহর। গুড় ও শর্করা ছারা ভোমার প্রীতি সমুৎপাদন করা যায়। তুমি পতিপ্রাণা, তোমার ন্যায় পতিবাৎসল্য অন্য কোন নারীতে সম্ভবে না; আমি স্থান ও জোজন না করিলে ভূমি কদাচ স্থানাহার কর না; আমি জুদ্ধ হইলে ভূমি ধার পর নাই ভীতা এবং আমি স্থানাগ্ররে প্রস্থান করিলে ভূমি একাস্ত ছঃথিতা ও চিন্তিতা হও; কিন্তু হে স্ক্লরি ! আনো তোমার মুথকমলে রোষ্চিত্র সন্দর্শন করিয়া আমার ছবম বিদীর্থ ইই-ভেছে, ইহার প্রক্ত কারণ কি বল।

পতির এইরপ বচন শ্রবণ করিয়া পিণীলিকা ক্রোণভবে কহিল, হে শঠ! ভূমি আর বুধা প্রবার প্রদর্শন করিও না; ভূমি অল্য সমস্ত দিনের মধ্যে একবার আমার নিকট আইদ নাই, অপর পিপীলিকার মুখে মোদকচ্ব সমর্পণ করিয়াছ; আমি আর তোমার চাটুবাক্যে প্রভারিত হইব না, তোমার হুদয়ভাব বিশেষরূপে বৃথিতে পারিকাছি।

পিপীলিকা কহিল, স্থলোচনে । আমি অন্য পিপীলিকাকে মোদকচুৰ প্ৰদান করিয়াছি দত্য, কিন্তু আমি ভোমাকে মদে করিয়া এবে সে কার্যা করিয়াছি, কামবলে বা প্রথমপরভঙ্গ ছইয়া তৎপ্রতি আসক্ত হই নাই। যাহা হউক, আমি ভোমার চরলে প্রশিপাক্ত করিতৈছি, আমার অপরাধ ক্ষমা কর, ভোমার গাত্র স্পর্শ করিয়া বলিভেছি, আর কদাপি এরপ কার্বেয় যন্ত এবং হরিসারণ অপেকা ভোষ্ঠ পুণ্যকর্ম আর

প্রবৃদ্ধ হইব না; হাছাতে ভবিষাতে এরপ প্রমে পতিত না हरे, छविदात नमधिक यप्तरान थाकित।

পিণীলিকের এইরূপ বিনরবচন প্রবণ ও তদীয় অকপট অবৈশ্ব দর্শনে পিপীলিকার ক্রোধের উপদম হইল: সে প্রীতি-সহকারে পতির সহিত আমোদে প্রবৃত হইল।

পুর্কেই কথিত হইয়াছে বে, নরপতি ত্রহ্মদত্ত জীবমাত্তেরই ক্ৰোপক্ৰন বৃথিতে পারিতেন। পূর্বে তৎপিতা পাঞালরাজ विजाक भूळकामनात त्मवत्मय माताबत्यत भाताधना कतित्रा-ছিলেন। বহুকাল কঠোর তপশ্চবণের পর ভগবান্ হরি অসম হইয়া আছ্তুত হইলেন এবং কহিলেন, হে রাজন ! ভোমার তপক্তচেরণ নিরীক্ষণ করিয়া যার পর নাই সভ্তোষ লাক্ত করিরাছি, ভূমি অভীঞ্চিত বর গ্রহণ কর।

মহীপতি হরির এই বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন, **८१ थाला। यमि कामात था**छि थानत हरेगा थारकन, यमि আমাকে বরপ্রদানে অভিলাব হয়, তাহা হটলে এই বর প্রদান করুন যেন, আমি একটি অমৃত্য পুত্র প্রাপ্ত হই; দেই পুত্র বিদ্যাবন্তা, যোগশীলতা ও বীর্ঘাশালীতার পারদর্শী হইবে; একমাত্রই ধর্মই যেন ভাহার অসভ্ষণ হয় এবং দেই পুত্র যেন যাৰতীয় জীবেরই কথোপকথন বুঝিতে পারে।

নরপতি বিভাক এইরপ প্রার্থন। করিলে দেবদেব নারায়ণ "छशाख" विषया विश्वधानानभूसंक ष्यछर्हिक इहेरलन। त्रहे काश्राप्ट बाक्सम्बन अक्षम्ख भक्त कीरवत क्षत वृद्धि भक्तम ছইয়াছেলেন। সেই কারণেই তিনি উদাানমধ্যে পিপীলিকা-মিৰ্নের প্ৰবন্ধনৰ প্ৰবণ করিয়া তাহা বুঝিতে পারিলেন এবং তৎকালে তিনি কিছুতেই হাজ সংবরণ করিতে পারেন নাই। তাঁহাকে সহসা হাক্ত করিতে দেখিয়া মহিষী সরতি মনে মনে অন্যবিধ আশহা করিয়া জিজাসা করিলেন, রাজন্। সহসা এরণ হাক করিবার কারণ কি ? আপনার হাজের কোন কারণই অহুভূত হুইতেছে না ।

তখন ব্ৰহ্মণত মহিষার আগ্রহাতিশয় দর্শনে পিণীলিকা-মিখুনের বৃত্তান্ত আদ্যোপান্ত বর্ণন করিয়া কহিলেন, ছে দেবি ! এই অক্তই আমি হাজ সংবরণ করিতে পারি নাই, নতুবা আমার হাজের অন্ত কোন কারণ নাই।

মহিষী নরপতির এই প্রুল বাক্যে কিছুমাত্র বিশাস করি-

লক্ষিত হয় না; স্নতরাঃ এই ক্রিয়া বিধানাসু-সারে সম্পাদিত করা মানবমাত্তেরই কর্তবা। ইত্যাদিমহাপুরাণে আগ্নেরে পিড্মাহাত্মাদিকপ্র নামক বাবিংশতিভয় অধ্যায় সমাপ্ত 🕻

কারণ দেবতা ব্যতিবেকে পিপীলিকার স্বর আর কে বুঝিতে পারে ? আমার বিলকণ প্রতীতি হইতেছে যে, আপনি আমাকেই উপহাস করিভেছেন; অতএব আমার দেছ বিদ ৰ্জন করাই শ্রেয়ভ্তর, আপেনার উপহাসভ্তরন হইয়া জীবন ধারণে কোন ফল লক্ষিত হইতেছে না ৷

মহিধীর এইরপ দারণ বচন প্রবণ কবিছা ব্রহ্মদভের তঃথের পরিসীমারহিল না। তিনি হতবুদ্ধি হইয়া পড়িলেন। মহি शैटक त्कान উত্তর প্রদান না কবিয়া দেবদের নারায়দের আরোধনার প্রবৃত্ত হইলেন। কিরপে তিনি জীবগণের কৃতজ্ঞতা প্রাপ্ত হটলেন, তাহার কাবণ পরিজ্ঞাত হটবার মান্সে সংযত হইয়া নিরশনে অবস্থানপূর্বক কীরদাগরশায়ী হরির ধ্যান করিতে লাগিলেন।

এইরূপে সাত দিন সমতীত হটল। তথন হরি নিজাধোগে নরপ্তিকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, অন্য বামিনী প্রভাতে একটি গলিতবয়ক বিপ্র আমার পুরীমধ্যে সমগেত হইবেন, ভদীয় মুপে ইতিবৃত্ত প্রবণ করিলেই সমত বিষয় জ্ঞাত হইতে পারিবে। ভগবান এই বলিয়াই তিরোহিত হইলেন।

এদিকে যে চারিটি হংসের যোগলংশ হয় নাই, ভাঁছারা ঐ নগরেই পূর্ববিৎ জাতিশার হইয়াএক বৃদ্ধ বিজ্ঞোর গৃহে জ্ঞা পরিগ্রহ করিলেন। তৎকালে তাঁহারা ধৃতিমান্, তত্ত্বদর্শী, বিদ্যা-বস্তুও তপোৎস্কুক নামে অভিহিত হইলেন, দেহ ধারণের পর কিয়াক্ষন অভিবাহিত হইলেই তপস্তাচরণে তাঁচ্ালিগের অভি-লাব হইল। তাঁহারা বনবাদী হইয়া দিকিলাভার্প প্রামশ্ করিলেন।

বৃদ্ধ ব্ৰাহ্মৰ পুঞ্জিদিগের সেই মন্ত্ৰণা অবগত হইবা কহিলেন, হে পুজ্ঞাৰ ৷ বৃদ্ধ, বিশেষত: অর্থহীন পিতাকে পরিত্যাগ করিয়া গমন করা ধর্মাসজত নহে, তোমরা আমাকে ছঃথে নিপাতিত कतिका यनश्मनभूर्वक कि भूग प्रकाश कतिरव ? छाहा इहेरल তোমরা কি সঙ্গতি লাভ করিতে পারিবে গ

পিতার এইরূপ কাতর বচন শ্রবণ করিয়া পুত্রচভূত্তর কহি. লেন না। তিনি বলিলেন, রাজন্ । আপনার সমত ই অলীক । লিন, ছে পিতঃ । যাহাতে আজীবন মুধখ্যজনে আপনার

ত্রয়েবিংশতিত্য অধ্যায়।

নারদ কহিয়াছিলেন, বিষ্ণু প্রভৃতি দেবতা-গণের সামান্ত পূজা ও মন্ত্র বলিতেছি। "সমস্ত-

জীবিকা নির্বাহ হর, আমরা তাহার উপার নির্দিষ্ট করিয়া রাখিয়াছি। আমরা আপনার নিকট একটা ইতিবৃত্তমূলক লোক বলিতেছি, বামিনীপ্রভাতে রাজসমীপে গমন করিয়া সেইটা পাঠ করিলেই বিপুল ধনরাশি প্রাপ্ত হইবেন। তাহা প্রবণ করিলেই মহীপতি প্রসর হইয়া আপনাকে সহস্র প্রাম ও বহুধন সমর্পণ করিবেন সন্দেহ নাই। হে পিতঃ! সে সকল ব্রাহ্মণ পূর্বের ক্রুজাঙ্গলে অবস্থিতি কবিত, যাহারা দশার্ণদেশে ব্যাধ্য গ্রেছ জন্ম গ্রহণ করে, এবং তৎপবে কালঞ্জর গিরিতে মুগ, সর্খীপে চক্রবাক ও পরিশেষে মানস স্বোব্রে হংসরুপে দেহ ধারণ করে, আমরাই সেই বিপ্তা, এক্ষণে আমবা পরম সিদ্ধি শাভ করিয়াছি।

পুত্রচত্ইয় পিতাব নিকট এই ইতিবৃত্ত বর্ণন করিয়া অবি-লম্বেট বনে গমন করিলেন; বৃদ্ধ ওপ্রভাতে মনোরথ সাধনোদ্ধেশ রাজপ্রীতে উপনীত হইয়া ইতন্ততঃ পরিভ্রমণ করিতে লাগিলেন।

এদিকে নরপতি এজনত হরির আদেশারুদারে প্রভাতে গাত্তোখানপুকাক মহিবী ও মন্ত্রিরের সহিত রাজোলানে পরি-ভ্রমণ করিতেছিলেন; সহসা দেখিলেন, একটা বৃদ্ধ আদ্ধণ ভাহাদিগের অভিমুখে আগমন করিতেছেন, এবং ধলিভেছেন,

"সপ্তব্যাধা দলার্শেষ্
মূগঃ কালস্করে গিরৌ।
চক্রবাকাঃ সংখীপে
হংসাঃ সবসি মানসে।
তেহপি জাতাঃ কুরুক্তেরে
রাজণা বেদপারগাঃ।
প্রেছিতঃ দ্রমধ্বাদং
মূরং তেভাোহবসীদত।"

অর্থাৎ কুক্জাক্ষণবাসী যে আক্ষণজুমারের। প্রথমে দশার্গদেশে ব্যাধ, তৎপরে কালঞ্চর গিরিতে মৃগ,তদনত্তর সর্বীপে চক্রবাক, অবশেষে মানস সর্বোবরে হংসক্রপে জন্মধারণ করিয়াছিল, আম-রাই সেই আক্ষণ, আমরা পর্ম সিদ্ধিলাভ করিয়াছি, কিন্তু ভোমরা তিন জন যোগবাংশ নিবন্ধন অবসন্ন হইয়া পড়িবাছ। পরিবারায় অচ্যতায় নম:" অর্থাৎ "দমন্ত পরিবারদমষিত অচ্যতকে নমস্কার" এই মন্ত্র বারা বিষ্ণুর
পূজা করিবে। পরে ধাতা, বিধাতা, গঙ্গা, যমুনা,
নিধি, বারণী, বাস্তদেবতা, শক্তি, কুর্মা, অনন্ত,

ব্রাদ্ধণ প্রথম এই ইতিবৃদ্ধ শ্রহণমাত্র ব্রহ্মদন্তের জাতিভ্বতি লাভ হইল, তথন ভ্:সহ শোক সমুখিত হইরা তাঁহার হাল বিদীণ করিতে লাগিল। তিনি কমনি মোহাভিভ্ত হইরা ধরণীপুঠে নিপতিত হইলা ব্রহ্মদন্তের মন্ত্রিরপে জন্মগ্রহণকরিয়াছিলেন, তাঁহাদিগেরও জাতিশ্বরত্ব সমৃদিত হইল, স্বভারত তাঁহারাও উভরে সেই বিপ্রসমূথে মুজ্তিত হইরা পড়িলেন। তাঁহারাও উভরে সেই বিপ্রসমূথে মুজ্তিত হইরা পড়িলেন। তাঁহারাও জলন ধরাতলে লুঠিত হইরা বিলাপ প্রকাশপূর্বক কহিতে লাগিলেন, হায়। কামনাপরতন্ত্র হওরাতেই আমাদিগের বোগলংশ হয়াছে, আমরা কর্ম্মলালে আব্রহ হইয়াছি,কতদিনে যে মুক্তিপ্রের পথিক হইব বলিতে পারি না। তাঁহারা বহুক্ষণ এইক্ষণ বিলাপ করিয়া পুনংপুনং প্রান্ধের প্রশংসা করিতে লাগিলেন; কাংল পিতৃগণের প্রসাদেই তাঁহাদিগের জাতিশ্বতি ও যোগালীল হাদি ক্রম্মাছিল।

অনন্তর ব্রহ্মনত নেই বৃদ্ধ ব্রাহ্মণকে সহস্র গ্রাম ও বহুধন প্রেদান পূর্বাক বিদায় দিয়া প্রীয় পুত্র বিহুসেনকে রাজপদে প্রতিষ্ঠিত করিলেন। তথন অপর যোগী আড়চতুইয়ের সাহত মিলিত হইতে তাঁহার বাসনা হইল। তিনি গৃহ পরিত্যাগ প্রাক মন্ত্রিয় সহ গমনে সমুদ্যত হইলে রাজমহিনী সম্নতি কহিলেন, হে রাজন্ ! আমা হইতেই আপনাকে বনবাসী হইতে ইইল, আমিই আপনার এই ছঃখের আদিকারণ সঞ্জেই নাই।

তথন একদন্ত মহিবীকে পুন:পুন: সাধুবাদ প্রদানপূর্থক কৃছি-লেন, হে দেবি ! তোমার বাক্য মিথ্যা নহে, তোমার অমূ-গ্রহেই আমি অভ্যুত্তম কল প্রাপ্ত হইলমে ৷

জনতর তাঁহার। তিন জনে বনগমনপূর্বক যোগবল্ছন করি-লেন, জনতিবিল্ছেই নাসারদ্ধ দিরা তাঁহাদিগের প্রাণবায়ু বহিন্ত হুইল, তাঁহার। প্রমণ্ড কাভ করিলেন।

পিতৃগণ প্রীত হইলে কি ধন, কি আরু, কি রাজ্য, কি মোক, সকলই প্রাপ্ত হওয়া যার। পিতৃগণ সকল মনোরথই পূরণ কবিতে পারেন। একাস্তাচিত্তে ভক্তিসহকারে এম্বদন্ত সম্বীয় এই পিতৃমাহাত্ম অধায়ন বা শ্রবণ করিলে প্রস্থাম লাভ হইয়। থাকে, সন্দেহ নাই।

পৃথিবী, ধর্ম, জ্ঞান, বৈরাগ্য, ঐশ্বর্য্য, অধর্ম প্রভৃতির অর্চনা করিয়া পদ্ম, কেশর, কর্ণিকা প্রভৃতির পূজা করিবে। তৎপরে ঋক্ প্রভৃতি বেদ, সম্থাদি অর্কমণ্ডল, জ্ঞান, ক্রিয়া, যোগী, প্রঘী, সত্যা, ঈশান, তুর্গা, গিরি, গণ ক্ষেপ্র ও বায়ুদেবাদির পূজা করিতে হয়। অনস্তর, শির, শূল, বর্মা, নেত্র, অন্ত্র, শন্ম, চক্রন, গদা, পদ্ম, শ্রীবৎদ, কৌন্তভ্রভ্রননালা, শ্রী, পৃষ্টি, গরুড়, ইন্দ্র, অগ্নি, যম, জল, বায়ু, কুবের, ঈশ, অনন্ত, বাহন প্রভৃতির পূজা করিবে। তৎপরে মণ্ডলাদিতে বিষক্দেন প্রভৃতির অর্চনা করিতে হয়; এইরপে যথাবিধানে পূজামুষ্ঠান করিলে দিন্ধিলাভ হইয়া থাকে।

অনস্তর সামান্ত শিবপূজার অমুষ্ঠান করিবে। প্রথমতঃ নন্দীর অর্চনা করিয়া মহাকাল, গঙ্গা, যমুনা, গণাদি, জ্রী, সরস্বতী, গুরু, বাস্তদেব, শক্ত্যাদি ও ধর্মাদির পূজা করিতে হয়। তৎপরে বামা, জ্যেষ্ঠা, রোজী, কালী, বলাধিকারিণী, বলধি-করিণা, বলপ্রমথিনী, সর্ববস্তুতদমনী, মদনোমাদিনী, ও শিবা প্রভৃতির পূজা করিবে। * "ওঁ হাং হুং হাং

* গরত্ব্বাণে । শবপুলার বিষয় এইরুপ লিখিত আছে বে,
ভাছান্ত মন্ত্রের আচমন করিয়। জ্ঞানেজিয় লপন করিবে।
তৎপরে মাজুকাল্পাস ও প্রাণায়ামাদি করিয়া স্ব্যাপস্থান করত
স্থামত্ত্ব আর্চনা করিবে। অনস্তর ভ্রাচার, বিভৃতি প্রভৃতির
পূলা করিয়া স্থামুর্ত্তির পূলা করিবে। তদনস্তর আদিতা,
নোম, মলল, বৃধ, বৃহল্পতি, শুক্র, শনি, রাছ ও কেন্তুর আর্চনা
কবিয়া পুনরার ল্লান করিতে হয়। অনস্তর অর্থাপাত্র ভাগনপূলাক সেই জল ছারা প্রভাপকরণাদি প্রোক্ষণ করিবে। পরিশেবে ঘরেদেশে নক্ষী, মহাকাল, গলা, যমুনা, সরস্থী, স্ত্রী,
ত্রজা ও গণপতির অর্চনা করিয়া মধান্তলে পূর্বাদিক্রমে দশানিব
পূলা করত শিবসমূধে গণেশের পূলা করিবে। অনস্তর আ্রান্
হল, স্থাপন, সরিধাপন, বিবোধন, সকলীকরণ, প্রভৃতি মুদ্রা।
প্রদর্শনপূর্ণক স্থাপন ও নিজন্তন করিয়া বসন ভ্রণ নৈবেদ।
প্রভৃতি উপচার ছারা বিধানাসুসারে শিবের পূলা করিতে হয়।

শিবমূর্ত্তয়ে নমঃ" এই মন্ত্রে শিবপূজা "ব্রীং গোর্হিয় নমঃ" এই মন্ত্রে গোরীপূজা এবং "গং গণপতয়ে নমঃ" এই মন্ত্রে গণপতির পূজা করিতে হয়।

ন অনন্তর সূর্য্যপূজার বিষয় বর্ণন করিতেছি। া

পূজাবদানে শক্তানুদারে জপ করিয়া স্তবপাঠ ও প্রথামপূর্ব্বক ত্বপ সমাপন করিবে।

অনন্তর শিবসন্থ্য কৃতাঞ্চলিপুটে এইরপ প্রার্থনা করিবে বে, ছে ভগবন্! কি স্কৃত, কি ছয়ত, আমি যে কোনরূপ কর্মের অনুষ্ঠান কবিয়াছি, আপনি তৎসমস্ত বিনাশ করুন; আমি যেন শিবস্কপ হইতে পারি। শিবই দাতা, শিবই ভোকা এবং এই নিথিল বিশ্বই শিবস্থরূপ; আমি শিব হইতে ভিন্ন নহি। হে দেব! আমি যে কোন কর্ম করিয়াছি এবং ভবিষাভেও যাছা করিব, তৎসমন্তই আপনাকে সমর্পণ করি-লাম। হে শিব! কি পৃথিবী, কি জল, কি অনিল, কি আকাশ, কি অনল, কি শন্ম, কি লগ্ম, কি উপস্থ, কি শ্রেন, বি ক্ল, কি নেত্র, কি রুলনা, কি নাদিকা, কি প্রবণ, কি মন, কি বৃদ্ধি, কি অহছার নকলই আপনি। এই সমন্ত আপনার স্বরূপ জানিয়াই জ্ঞানিগণ আপনার সাক্ষপ্য লাভ করিয়া থাকেন।

† গরুড়পুরাণে স্থাপুরার বিধান এইরপ বর্ণিত আছে যে,
পবিত্রন্থানে কর্নিকার্ক অষ্টলল পদ্ম অন্ধিত করিয়। তরাধাে
আবাহনী মুদ্রা প্রদর্শনপূর্ক্ত আবাহন করিবে। মধ্যস্থলে
মন্ত্রমূর্তি দেবতার আনা করনা, দক্ষিণদিকে হৃদ্য, ঈশানদিকে
মন্তক এবং নৈশ্বতদিকে শিখা বিস্থাস করিবে। অনন্তর ভক্তিসহকারে একান্তচিতে প্রাদিকে ধর্ম, বায়ুকোণে নেত্রন্থ এবং
পশ্চিমাদকে মন্ত্রন্থাস করিয়া ঈশানদিকে সোম, তাহার পূর্বদিকে লোহিত, দক্ষিণদিকে বুধ, তৎপার্যে বৃহ্পতি, নৈখতে
গুক্ত, পশ্চিমে শনি, রায়ুকোণে কেডু এবং উত্তরদিকে রাহর
আহ্বান করিবে।

অনস্তর বিতীয় কক্ষায় ভগ, ত্ব্য, অর্থানা, মিত্র, বরুণ, স্বিতা, ধাতা, বিবস্থান্, স্বী প্রা, ইক্স ও বিষ্ণু এই বাদশ আদিতোর পূজা করিতে, হয়।

তংশরে শ্রহা ও ওক্তিসহকারে পূর্বাদিক্রমে ইপ্রাদি দিক্-পালগণের অর্চনা করিয়া শক্তামুসারে সহস্পা ও অভায়

প্রথমতঃ পূবা, পিঙ্গল, উচ্চৈঃ শ্রবা, বিমল, অরুণ, প্রভৃতির পূজা করিয়া মধ্যস্থলে কন্দাদি ও দীপ্তি, সূক্ষা, জয়া, ভদ্রা, বিভৃতি, বিমলা, বিহ্যাতা প্রভৃতির অর্চনা করিবে। তদনস্তর অকাসনের পূজাপূর্ব্যক যথাবিধি অঙ্গন্তাস সমাপন করিয়া "হ্রাং হ্রীং দঃ দূর্য্যায় নমঃ" এই মন্ত্র দারা দূর্য্যের পূজা করিতে হয়। তৎপরে অগ্নি বায়ু, সো^{ষ,} অঙ্গার, বুধ, রুহস্পতি, শুক্রা, শনি, রাজ্ কেতু, তেজ, চণ্ড প্রভৃতির পূজা করিবে। অনন্তর যথাবিধি অঙ্গভাদ করন্তাদ করিয়া বিষ্ণাদর, বিষ্ণু-মূর্ত্তি ও শহা চক্রচ গদা মুষল, খড়গ, শাঙ্গ পাশ, बङ्ग औवरम को जुल, वनमाना औ महानक्षी গরুড় গুরু ইন্দ্রাদিদেবগণ, সরস্বতী, লক্ষ্মী, মেধা কলা, ভূম্বি, পুষ্টি, গৌরী, প্রভামতী, তুর্গা, কেত্র-পাল, গণপতি, গোরী ত্বরিতা ত্রিপুরা প্রভৃতির অর্চনা করিবে। যাবতীয় দেবতার পূজাতেই অত্যে প্রণব ও বীজ এবং শেষে নমঃ উচ্চারণ করিতে হইবে।

এইপ্রকারে পূজা সমাপন করিয়া তিলন্বতাদি বারা হোমানুষ্ঠান করিতে হয়। এইরূপ বিধানানুসারে মন্ত্রপাঠপূর্বক সূর্য্যপূজা, সূর্য্যার্য্যদান ও হোম
করিলে ইংলোকে পরম স্থসম্ভোগপূর্বক অন্তিমে
স্বর্গলাভ করা যায়। * সনাতন-ধর্মাবলম্বী ব্যক্তি-

উপচার ধারা জয়া, বিজয়া, জয়ন্তী, অসহাজিতা এবং শেষ, বাহুকি প্রভৃতি নাগগণের পূজা করিবে।

- খবিগণ এজাকে জিজাপ। করিরাছিলেন, ছে এজন্। জান্তর-দেব কোন্তানে অবস্থিতি করেন এবং স্থাপ্রাদিরই বা কি ফল, জবণ করিতে অভিলায় করি।

একঃ মুনগণের প্রার্থনা প্রবণপূর্বক কহিলেন, করণনাগরের প্রিত্ত তীরে একটি প্রমুদ্ধ রুম্বীয় দেশ আছে; উত্তর সর্বত্ত যাত্রেরই পূজা ও হোমাদির অসুষ্ঠান করা কর্তব্য;

বালুকারাশিতে পরিপূর্ব। তথার চল্পার, বরুল, অলােক, প্রাগ, করবীর, নাগকেশর, কর্নিকার, করা, তপ্রা, বাণ, আডিন্তুল, ক্রাক, নাগতী, কুল, মন্নিকা প্রভৃতি মৃত্ অনুষ্ণাত কুছ্মন্দ্র নিবল্পর বিক্ষিত হওয়াতে পরম শোজা সল্পাহিত হইতিছে। তথার কলম্ব, নকুচ, শাল, তাল, তমাল, পনস্ক, মেরনার, মরল, মৃচ্কুল, চলান, করিখ, আইখ, গগুণর, আন্তর, আন্তাতক, গুলাক, নারিকেল প্রভৃতি তর্করাছি প্রেণীবছ্নভাবে বিরাজিত থাকাতে দর্শকর্দ্রের নয়নমন হরণ করিতেছে। সেই স্থানেই ভ্রানিই ত্রনবিখ্যাত স্থাক্তের বিরাজমন। ঐ ক্ষেত্র চারিলিকে এক যোলন বিস্তার্ণ, ঐ স্থান সল্পান করিলে ভূজিও মৃত্রিলাভ হইয়া থাকে। ভাষরদেব অধার করিছের জ্বার অধিটিত আছেন। স্থাদেব তথার কোণ্ডাজিতা নামে বিধ্যাত। মাঘমাদের তর্কপানীর সংগ্রী তিথিতে নিষ্ত্রেজ্য হইয়া উপবাসপূর্বক তথার সিয়া মান করিলে থকু পুণ্য লাজ হইয়া থাকে।

र विश्राग ! क्रजामी । विश्व इतेश कास्त्रामनाक पारन করত বিধানামুসারে স্থান করিয়া নিয়তচিত্তে দেবতা ও পিতৃ-গণের তর্পণ করা বিধেয়। তৎপরে জীর্মে সমুস্তীর্শ হইবা বিমল শুল্র বস্তু পরিধান করিবে এবং তৎকালে সমুদ্রতীরে পূর্ব্ধান্ত इटेब्रा উপবেশনপূর্বক চলনবারি ছারা স্বালেবের পথে পছ চিত্রিত করিবে। সেই পদ্ম **অইদল কেশর ছারা নমলঙ্ক** ও বর্ত্ত লাক্ততি হওয়াই উদিত। অনস্তর ভাত্রপায়ের, ভিন্, ত খুল, জ্বল, রক্তচন্দন, রক্তপুশা ও কুণ প্রাঞ্চিপ্ত করিবে। তারপারের অভাবে আকক্ষণতের স্পাট্ক করিয়া ভাহাতে তিলাদি সংস্থাপনপূৰ্ব্বক অঞ্চপাত্ৰ ছারা উহা সমান্ত্ৰক করিবে। তৎপরে অক্সাস, কয়ভাস সমাধা করিবা ডক্তিমহুমারে আঞ্ লাকে প্রারুপী বলিয়া ভাবনা করিছে। তলন্তর উক্ত অইকল भाषात मधापारम व्यक्ति, निवासि, कांबू ब्याकृष्टित वार्कमा कतिका দিবাকরের ধ্যানপূর্বক পাদ্যাদি ছারা ভারার পূজা ক্ষরিতে হয়। তথপায়ে যুদ্রা প্রান্ত্রপূর্বক পূর্বেষ্টিক পায়া এক্ষ ৰবিৰা ভুতলে আনুৰৰ পাঁডিত করত মত্র উচ্চারণন্ধকারে क्र्यार्था अकान कतिरवः दश दिस्त्रणः । दीवानिरायत शैक्यन সংস্থার হর নাই, উাহারা কেবল ক্র্যানাম ক্রায়াই অর্থ্য আলাল कतिरदम । अहे अवेकारक कार्यकाम अधिमनाक वहेरम परि रेमकुछ, बाबू ଓ विवासरकारन कवर शृक्षांक छात्रिवास वस्त, বিধিবিহিত প্লাহোমাদির প্রভাবে ভারতবর্ষবাদী-

भित्र, स्था, वर्ष, रम्य এवः व्यक्षिय भूका कहिरवः व्यवस्थित व्यवद्गिकः, भूष्य, धून, भीष अदिस्टक्षा निरुक्तमभूक्षक व्यव छव सरक्षात अपूजा कार्यन्ति कत्रक विश्वकार कहिरक स्था।

এতে দ্নিগণ। বঁলের। এইরপে ভক্তি সহকারে বিনীতভাবে ও অকণটল্লের স্বাধ্য প্রদান কবেন, তাহালিগের মনোবধ সিয় ও দেবারে পরম গতি লাভ হইরা থাকে। ভগবান্ দিবা কর জিছ্বমের প্রকাশক ও পরম দেবতা। ভক্তিভাবে স্থা দেবার ধান করিলে পরম অথজানী হওয়া বার। হে বিজ গণ। ভ্রাথা প্রবান না করিলে কি বিষ্ণু, কি শিব, কি ভ্রমা, কাহারও প্রার অধিকারী হওয়া বার না; স্থতরাং প্রভাই বন্ধ সহকারে দিন্দ্দির অর্থালান করা সর্বভোজাবে বিধের। বিশেষতঃ স্থমী তিথিতে পবিত্র হইয়া মনোহর ভ্রগমি কৃত্যম ও চক্ষনদি থারা ভ্রাথ্যি প্রদান করিলে মনোবাহা ফলবতী হইয়া থাকে। ভ্রাথ্যি প্রদান ধারা ধনাথীর ধন, বিদ্যাপীর বিদ্যা এবং প্রার্থীর প্র লাভ হয়। একাগ্রচিতে যথাবিধি ভ্র্যার্থা প্রদান করিলে নেগ্রী রোগ হইতে আও মৃক্তি লাভ করে, তাহাতে সন্দেহ্রাজ নাই; বস্ততঃ বে যে কামনা কবিয়া আর্থান করিবে, তাহার দেই কামনাই ভ্রগম হইবে।

ছে বিশ্বগণ । কি নব, কি নারী যে কেছ সাগবল্পতা প্রবাদন কবিরা স্থাছিল দান ও স্থাকে প্রথম কবে,তাছাব দশটি অখনেধ যজের ফল লাভ হয়। জাহুবীসলিলে সান কবিরা অথবা কুশ্বরো মন্তকে জাভিবেক কবিরা স্থাছিছিল বিধান কবিলে যাবতীয় পাপবালি বিধানিত হুট্যা থাকে। যে ব্যক্তি এই নিয়মে স্থাছিছিল কবেন, তিনি দেহাবসানে প্রথমতঃ অর্পে গ্রমন প্রকৃত জাবশেষে স্থালোকে প্রতান কবেন। অভ্যাব ভাকিনত হুট্যা পদ্ধপুশাদি ছারা জাহুবীসলিলে স্থাপুজা কবিরা ভাছাকে প্রকৃতিক প্রতাদিন ও অর্থানান কবা স্ব্তিভালেব বিধের।

হে বিপ্রগণ। যে বাকি নিবাঞানর তিথিতে অকণটন্ধরে ভক্তিনহ্বারে গ্রুক পূলা ধূল দীপ ও নৈবেদ্যাদি ধারা স্বাপুঞ্জা, স্থাপ্রদান করে, ভাহার বারতীর পপোপ্রালি বিধ্রিত হইরা যার এবং নে বাক্তি দেহাত্তে দিবা দারীর ধারণ পূর্বক অর্ক্রন বিমানানেছেণ করিয়া ভাষ্কবলোকে প্রদান করে, ভাহা ধারা ভলীয় সপ প্রপ্তকর ও সপ্ত পর পূক্ষর উদ্ধান প্রে, ভাহা ধারা ভলীয় সপ প্রপ্তকর ও সপ্ত পর পূক্ষর উদ্ধান প্রেই ক্যান প্রাটি হর সন্দেহ নাই। নেই বাক্তি প্রায় প্রাটি ক্যান করিয়া পূল্য ভয়ার ভাইতি পূক্ষক বিবিধ দিনা তথা সভ্যোপ করিয়া পূল্য ভয়ার হেটি তুক্ষক বিবিধ দিনা তথা সভ্যোপ করিয়া পূল্য ভয়াই ব্যাক্তি প্রেটক্রের দেহ ধাবণ বিভাগতে ।

গণের যাবতীয় মনোরথই সিদ্ধ হইতে পারে। †

হে বিলগণ ! ধে সকল একে নিক্তব ভ ক্তনুক চলরে আলি ত্যালেবের উপাসনা কবেন, তাঁছারা চতু কালী হন এবং বুহস্পতির যোগ প্রাপ্ত হটয়। তৎপ্রভাবে মুক্তি প্রাপ্ত হটয়। ব্যাকেন।

হে বিপ্রগণ! যৎকালে দিবাকর সম্পতি হন এবং যৎ-কালে অন্তঃচলে প্রস্থান করেন, সেই সময়ে, সংক্রান্তিতে, রবিবাসবে, রবিভি থতে এবং অন্তাক্ত পর্কাদিবসে সংঘতেক্রিয় ছটয়া মদনভঞ্জিক। যাত্রা কবিলেও প্র্যালোক প্রাণ্ডি হয়; ছে রাজি উক্ত প্রাদিবসসমূহে মদনভঞ্জিক। যাত্রা করেন, তিনি দেহাবসানে অর্ক্রণ বিমানে আর্চ্ছইয়া যথাস্থানে গ্রম করিয়া থাকেন।

ব্রহ্মা কহিবেন, ছে মুনিগণ । ঐ সাগবতীবে স্থান্দের সন্নিধানে কামেশ্বর নামে এক শিখ বিদ্যানান আছেন। যে সকল বাক্তি সমুদ্রনলিকে অবগাহন পূর্বক ঐ শিবনিঞ্চ সন্দর্শন ও শক্তিমত উপচার হারা ও জনহকারে তাঁহার পূজা করেন, তাহাদিগেব রাজস্ব ও অধ্যমেধ হজের ফল লাভ হইয়া থাকে। তাঁহাবা অতাৎক্রট সিদ্ধিলাভ করিষা দেহাবসানে কি ক্ষনীজাল হুডিত ব্যাণীয় বিমানযোগে শিবলোকে গমন কনেন, সেই সময় গদ্ধকাপ তাঁহাদিগকে তাব কবিয়া থাকেন। ঐ সকল সন্ধ্যান্ত্রাবা প্রালয় প্রয়ন্ত শিবধামে অব্নিনিক কবিয়া দিবা আনন্দ উপভোগ পূর্কক পুণাক্ষয় হুইবা প্রনাম ইহলোকে অব্নতীর হন এবং চতুর্ক্ষী ও পরিশেষে শিব্যোগ প্রাপ্ত হুইয়া মুতি লাভ কবিয়া থাকেন।

হে বিপ্রাণ। যে বাক্তি উলিপিত স্থাকেতে কীয় স্থাতি ধনবালি বিস্কান করেন, তিনি স্থালোকে গ্রম পূর্বক বস্ত্রাল তথার আন্মানতোগ কবিয়া প[্]তশেষে পুনবার ম্র্তালোকে অবতীপ হন এবং ধরণীতলে ধান্তিক ন্তপতি ১ইরা অংশ্য মুখ্যাতি লাভ পূর্বকি দেহাবদানে দিবাকৰ যোগ প্রাপ্ত হইরা মুক্তি লাভ করিয়া থাকেন।"

† ত্ৰন্ধপুণাণে ভাৰতবৰ্ষের মাহাত্মা ও বিবৰণ যেকপ বৰ্ণিত আছে, তাহা সংক্ষেপে লিখিত হইল যথা—

"জগতীতলৈ ভাবতবৰ্ষট কণ্মভূম বলিয়া অভিহিত। ইছা প্ৰাক্ষেত্ৰ ও ভূজিম্ভি এল বলিয়া বেলে ঘণিত আছে। ভাৱত বৰ্ষবাদিগণ গুভ কণ্মান্তান কৰিয়া গুভ ফল এবং অগুভ কণ্মের অফুটান করিয়া অগুভ ফল প্রাপু হইয়া থাকে। ভাবতবর্ষে কি এাদ্ধণ, কি কাত্রিয়,কি বৈশু, কি শুদ্র, স্ক্লেই সংযত হইয়া

বস্তুতঃ বিশেষ বিবেচনা করিয়া দেখিলে স্পাউই | প্রতীতি হয় যে, কর্মাভূমি আইক্টার্মেটি/আসমন

नमाक्तम कथासूर्वाम शृक्षक ७७ वन धारा दर मत्सद नारे। us बार्स स्नुतास्त हरेता कचा छुड़ाम कवित्त सर्व, व्यर्थ, काम ও মোক চতুর্মাই লাভ হট্যা থাকে। ইক্রামি ক্রগণও এই कार बर्दा मरकर र्यंत कार्यान कतिया प्रतिस्पाद स्वयु श्री श ছট্রাছেন। প্র প্র শ্বে শ্বে শ্বে স্থার ৪ শ্বে শ্বে রাগ্ दियामिथिहीन महाचाता अरे वर्ष कर्माष्ट्रहान कतिया मुक्ति गास कविशास्त्रमा बाँहारा निवस्त्र खुवशास अधिवनकि करवन ও বাঁহারা বিগতজাব হটগা সদানদেশ নিমত বিমানে অবস্থিতি कतिरेडर्डिन, এই जावजवर्ष कन्नानकत कर्याव अधूर्शनहे তাহাদিগের তত্তৎ দিবা স্থান ব্যাপ্তির দুবীভুত কার্ব। এই জন্তই স্থান্ত সৰ্বাদ। ভাৰতৰৰোঁ ৰাস করিতে অভিলাধ করিয়া থাকেন এবং উছোদিগের মূখে নিবস্কর এই বাকাও শ্রুতিগোচর ছইয়া থাকে যে 'যে ভানে স্থানি অপবৰ্গ লাভ হটনা থাকে. আম্বা কতদিনে সেই পুণ্যক্ষেত্ৰ ভারতবর্ষে অধিবস্তি কবিব ?' ভাৰতবৰ্ষ ব্যতিৱেকে অঞ কুত্ৰাপি কোন কৰা প্ৰাদ ও পাপপ্রদ হয় না, অন্ত কোন ভূমিতেই মানবদিগের কমকাও বিভিত হয় নাই।

এই ভাৰত ধৰ্ষ নৱ ভাগে বিভক্ত, সমুদ্ৰ হারা ঐ সকল অংশ পুৰককৃত হুইয়াছে। ঐ নয় অংশ ইক্স্থীপ, ক্লেক্সং, ভাষাবৰ্ণ, গভস্তিমং, নাগৰীপ, সৌমা, গান্ধ্ৰকা, বাকণ ও ভাওতবৰ্ষ নামে व्य नक्षा हेहा शन्तिम अ छेखर नहव्य रगावन विखीर्न। हेहार পুরুদিকে কিবাতগণের বাসভূমি, পশ্চিমে মবনগণ এবং অবশিষ্টভাগে ত্রাত্মণ ক্ষত্রির বৈশু ও শুক্রগণ অবস্থিতি করে। এই চারি ভাতি যথাক্মে যজ, যুদ্ধ, বাণিজ্য ও কৃষিকর্ম বাবা জীবিকা নিৰ্মাহ করে। ভারতবর্ষে দাতটি প্রমৃত কুলাচন दिनिया अभिक्ष, उप्हारा भरहत्त, भनग्र, नक्, मिकिमान्, सक्क, विका ও পারিপাত্র নামে অভিছিত। ঐ দকল পর্বতের সমীপে আরেও বছদ বাক শৈল বিদ্যমান আছে। সেই সকল গিরিও উন্ত ও বছবিস্কৃত , ভাছাদিনের শুল সমূহ নানাবিধ বর্ণে স্থর श्चितः के मन्त्र शर्वाख्य मत्या (कानाइन, देवसाब, मन्त्र, দৰ্দ র, বাতৰ্ম, রৈবত, মৈনাক, সুংস, জ্ঞীপৰ্বত ও চকোর এই करतकार अधान, धारे सुझन कृष्य पातारे स्मानन नमूद विक्रित हरेबाए ।

উপরিলিখিত পর্বত সমূহ বারা মে স্কল দেশ বিভিন্ন হর-হাছে, ভত্ততা মধিবাদীগণ যে সকল নদীৰ জল পান কৰে, সেই

त्रक नि दिका बनाइ छाएडि नक्छ इतेर्ड त्रबंदना । स्वारका गत्रा, मध्यकी, निश्च, स्टब्स्यागा, रम्मा, मखक्त, दिम्प्रका, विश्वका, मेराव ी, कृष्ट्, श्लामकी, धुक्रमामा, बाह्या, मुर्मक्की, श्लामका, वंक्, निकीता, तक्षकी धरे तकत सबी विभागत व्हेट्क अनेत्र. भाग (कोलिको, मन्युक्ति (मनवकी, वार्ख्यी, दवसा, संस्था), नवानीता, वर्की, क्यांबळी, विविधा, (ध्यूबढी), मिश्रा, कावसी, (मान, प्रशासनी, सर्वमा, खुदमा, किन्ना मनार्था, हिटकार भना, प्रमा-किनी, हिज्कृते, (रखरहो, क्रश्रामा, निमाहिका, नमझका, निशायनी, देवदशा, श्रुद्धमञ्चा, श्रुक्तिमञ्जी, बिश्वमी, जिल्ला, क्षत्र धन्यामा, द्वारा, द्वाराहिनी, श्रामाको, निर्मिका, छाती, देवछत्रकी, निमिवाली, बुधवछी, दमवा, बहारश्रीकी, स्वता, व्यतः मीना এই कत्त्रकृष्टि विश्वानाम इटेट्छ वहिर्म्छ इटेबा खना-হিডা ইইতেতে। এই সকল ভর্লিণী বিমলভোৱা ও পুণ্যক্ষী। चात्र (शानावती, कीयव्यी, इक्षत्वना, कृत्रकता, ख्वासाशा, ইলারা মহাপ্রত হটতে সমুখ্পর , ইহাদিগের ছুলিলে অবগাহ্ন ও কল স্পর্ণ করিলে পালরালি ধ্বংস হুইয়া ঘাতে। এডব্যতীত কুত্মালা, ডাগ্রপরী, পুপারতী, উৎপলাবতী, মলমুগিরি হইছে এবং পিতৃকুল্যা, সোমকুল্যা, ঋষিকুল্যা, ইঞ্বাত্তি, দিবানলঃ ও লাঞ্চলিনী মহেক্রপ্সতি হটতে সম্প্রর। এই সম্ভঃ নহী প্রাবাহিতা হইয়া সাগ্রে নিপ্তিতা হইতেছে, এত্রাতিরেকে আবিও সহস্ৰ সহস্ৰ কৃত্ৰ কৃত্ৰ নদন্দী আছে, তৎসমন্ত প্ৰাৰ্ট-কালে বহুদ্ধলে প্ৰপূৰ্ণা ও বেগৰতী হটয়া খাকে।

ভারতবর্ষের মধ্যে মংছ, কাশিক, কুগুল, জুবুটকুলা, উৎ भन, अञ्चक, कशित्र, शासर, तुक এडे जकन स्नमभए स्थार्टन ৰবিলা বৰ্ণিত। বেভানে গোলাব্বী নদী আৰোহিভঃ হইভেছে, যে দশ সঞ্গিরির উত্তরে সংস্থিত, উহা অতীব বমণীয়। মহাস্থা ভার্গবের মনোরম গোবর্দ্ধনপুর, বালীক, ঘাটধান, আভীর, चनवास, मज (कत्रक, शासाय, वरम, निकू, शोदीह, बाह्यक, শততে, কলিজ, পারক, হার্যা, মৃবিক, মাঠর, কনক, কৈকেয়, मध्यानिक, कविद्यार्शनदिय, देश्केट्रन, मृत्यक्न, कार्याक, बकार, हीस, कुदाव, किंर, बाघ এडे मकन सम खेबीहा बनिया व्यनिष्य। व्यान्ताकारण वक्षक, मध्यत, चावकिंव, वहिकिंव, चान, वक, भागम, मानवर्शिक, उन्नाज्य, अक्रिक्टा, स्वार्थाक, आश् (कार्डिक, विरावत, क्रांडिकेस, मनाम, श्र कारामा आ प्राचित्रकारणन (বলামান আছে। দাকিণাতা পূর্ণ, কেওল, গোলাগুল, ইবিক,

করিয়া শান্তবিহিত কর্ম্মের অনুষ্ঠান না করিলে স্বর্গগতি লাভের সম্ভাবনা নাই। অধিক কি,

কৃষিক, মহারাষ্ট্র, ষহিষক, কলিজ, অভীর, আটব, শাবন, বৃষিক্ষ, ফোলেল, বৈলজ, বৈলজ, দগুক, পণিক, মৌজিক, আশাক, ভোজবদ্ধক, কৌলিক, কুগুলোম, গুল্ক, কালনীক প্রভৃতি দেশে নমাকীণ। সুর্যাবিক, কালিবন, উষ্ণ, ভালকট, প্রভৃতি দেশে অপরান্ত বলিরা প্রসিদ্ধ; মনক, কর্ম্মণ, মেনক, উৎকল, উত্তমর্ণ, দশার্ণ, ভোজ, কিছিল্লা, গুপল, কোষল, তৈপুর, বৈদিশ, ভূখাব, ভূপুর, অভ্যু, ভূপি, কের, বীতিহোল, ও অন্ধবর্তি প্রভৃতি জনপদ বিদ্ধানিবিতে সংস্থিত।

নীহাব, তৃষমার্ণ, কুক্লব, তৃত্বল, থস, কুঞ্জপ্রসাবণ, উর্ণাটবা, কুলক, চিত্রমার্থ, মালব, কিবতে ও ভোমব এই সকল জ্বনপদ প্রতান্ত্রিত।

যাহার অপ্রে, লক্ষণে ও পূর্ব্বে মহাসাগৰ এবং উত্তবে গিরি বর হিমালয়, এই সেই ভারতবর্ষ সকল ধন্মেব বীল্পজ্ম। জীব গণ স্থা করত হুকুত হুকুত কর্মেব কলে এই ভাবতবর্ষেই প্রজ্মত, দেবজ, তিথাক্যোনিত্ব প্রভাবনানিত্ব প্রাপ্ত হইমা থাকে। যে সকল ক্মান্তবর্গনিত্ব প্রাপ্ত কর্মান্তবর্গনিত্ব পালর, এই জন্ম দেবগণও নিবস্তার এইরূপ কামনা করেতে পারে, তালে ধ্বাভলে ভাবতবর্ষের তুলা বর্ষ আব বিশ্বচনা করিছে গোলে ধ্বাভলে ভাবতবর্ষের তুলা বর্ষ আব বিভায় নাই। ভাবতবর্ষে কি ব্রাহ্মণ, কি ক্ষব্রিয়, কি বিল্ল, বিজ্ঞান কবিল্লা স্থান করিয়া স্থাকে, বস্তাত কি ব্রহ্মান্তব্যাব কল, কি গার্হস্ত্যান্তব্যাব কল, কি জনানা সংকর্মের কল, সমন্তেই ভারতবর্ষে প্রাপ্ত হওয়া যায়, জন্য কুত্রাপি প্রাপ্তির স্প্তাবনা নাই।

ষে হানে মহুবারূপে অবতীর্গ হইতে স্থরগণও অভিলাষ কংনে, দেই ভাবতবর্ষের গুণ বর্ণনা করা কাহারও সাধ্য নহে।

এই প্ণাক্ষেত্র ভারতবর্ষের বিববণ ক্ষধান্ত্রন, ও শ্রমণ করিলে সর্বাপাপ ধ্বণস, ধনলাভ , ধলোলাভ ও বৃদ্ধিবর্দ্ধন হইরা থাতে । বে ব্যক্তি সংঘতে শ্রম হইরা প্রত্যন্ত এই উপাধ্যান পাঠ বা শ্রমণ করে, তাহার যাবতীয় পাপবাশি বিধ্বংসিত হয়, সে দেহাবলানে শ্রক্তিলাভ পূর্বক দিবা রিমানে আরোহণ করিয়া বৈকুর্ভগ্যমে প্রস্থান করে।

বিষ্ণুপুরাশের ছিত্রীর অংশের তৃতীর অব্যাহে বর্ণিত আছে। পদও ভারতবর্ষে গুণগান করিরা বাকেন।

প্ররগণও কর্মাসূষ্ঠানের ফলেই শ্রেষ্ঠত্ব লাভ করিয়াছেন।

> ইত্যাদিমহাপুরাণে আগ্রেদে বাস্থদেবাদিপুরাকথন নামক অদ্যোবিংশতিত্য অধ্যান সমাপ্ত।

বে, সাগবের উভরে ও হিমালেরের দ কণে যে স্থান, তাহাবই
নাম ভারতবর্ষ; ইংর বিস্তার নবসহল যোজন। ভরতবংশীর
মহায়ারা ঐ স্থানে অধিবস্তি কবেন। ঐ বর্ষ স্থার্গ ও মোকা।
কাজ্জীদিগের কল্মভূমি। ভারতবর্ষ বাতীত অক্ত কুতালি
মানবগণের স্থানোক্ষাদি লাভের সন্তাবনা নাই। এই জন্তই
উহা কর্মভূমি বলিয়া প্রসিদ্ধ। ভারতবর্ষে মহেল, মলয়, সহু,
গুজিমান্, (শক্তিমান্) ঋক্ষ, বিদ্ধা ও পাবিপাত্র নামে সাত্টী
কুলাচল আছে। এই ভারতবর্ষেই পুরুষগণের তির্যাক্র
ও নবড়াদি জ্লিয়া পাকে।

ভবতবর্ধ নয় অংশে বিভক্ত , ঐ নয় ভাগ ইন্দ্রনীপ, কেশব বান, (কসেবমর্থ) ভাষ্ণবান, (ভাষ্ণবৰ্ণ) গভন্তিমৎ, নাগরীপ, সীমা, গান্ধর্ব, বাক্ষণ ও ভাৰতবর্ধ নামে অভিচিত। ভাবত বর্ষের পুরে কিবাভদেশ, পশ্চিমে ব্রন্দেশ। এই দ্বীপের মধ্যে আন্ধণ ক্ষতিয়, বৈশ্ব ও শুল্র এই চতুর্কিধ মানব অধিবসভি করে। যথাক্রেমে যজ্ঞ, বৃদ্ধ, বাণিজা ও দান্তব্রভিদাবা উহাদিগের জীবিকানির্কাহ হয়। ভারতব্যে যে ক্ষেব্রী কুলপঞ্জাত বিদ্যান আছে, ভাহা হইতে নক্ষদা, স্থান্সা, ভাপী, পয়ন্থতী, নিক্ষিয়াা, গোদাববী, ভীমর্থী, ক্ষ্মা, বেশা, অিষামা, ঋষিকুল্যা, কুমারা, শতক্র, চক্সভাগা, প্রভৃতি নদী বহির্গত হইয়াছে, ভ ভয় উহাদিথের শীথাপ্রশাধা বিনর্গত হইয়া নানাদিকে গম্ন করির রাছি। কুক্র, পাঞ্চাল, প্রভৃতি দেশের লোকেরা ঐ সকল নদনদীর ক্ষশা পান করে।

ভারতবর্ষেই স্ত্যা, তেতা, হাপর ও কলিমুর, অন্ত কোন বর্ষে যুগভেল নাই। তপদীগণ নিরম্বর ভারতবর্ষে তপঃসাধন করিতেছেন। বাঁহারা কর্মানসী, তাঁহারাও কর্মাফুঠান করিয়া আবদ্ধ হইতেছেন। অস্থীপের সর্বাত্ত সকলেই বিশ্বুর আরা ধনা করেন। যুদ্ধ কথ্বীপের সকল আংশই পুণাভূমি, ওথাপি তক্মধ্যে ভারতবর্ষ অভিশন্ধ পরিত্র এবং শ্রেষ্ঠ। একমাত্র ভারত-বর্ষ কল্মভূমি, অন্ত বর্ষ সকল ভোগান্ধ্যমিয়াত্র। জীবন্ধ সহজ্ সহজ্ঞ বার জন্ম গ্রহণ করিয়া আর্জিত পুণাবৃশতঃ কলান্তিং এই ভারতবর্ষে মন্ত্রাক্ষর লাক্ষ করিছে সুমর্ষ হয়। এই জন্য স্থ্র-গ্রহতবর্ষের গুলগান করিয়া বাহেক।

চতুৰিংশতিত্য অধ্যায়।

নারদ কহিলেন, ক্রিয়াদি সাধনের জন্ম অগ্রে স্নান করা কর্ত্তব্য; অতএব সেই স্নানের বিধি বর্ণন করিতেছি।

প্রথমতঃ নৃসিংহ মন্ত্রোচ্চারণপূর্বক কিঞ্চিৎ
মূলিকা গ্রহণ করিয়া উহা ছই ভাগে বিভক্ত
করিতে হয়; উহারই একাংশ দ্বারা মানসিক
স্নান করিবে। অনন্তর জলমধ্যে অবগাহন করিয়া
আচমনপূর্বকি সিংহমন্ত্রোচ্চারণ দ্বারা সেই মূল্তিকা
সংস্থাপন করত আত্মরক্ষা করিতে হয়। তৎপরে
বিধিস্নান করিবে। তদনন্তর প্রাণায়াম করিয়া!

* এই অধ্যায়টা এবং একবিংশ ও ছাবিংশ অধ্যায় অনেকগুল হস্তলিথিত প্তকে দৃষ্ট হয় না; স্থতয়াং ইছায় প্রকৃত মর্মা অবগত হওয়া স্থকঠিন বিবেচনায় আময়া সমস্ত গুলিয়ই অল্বাদ প্রকাশিত করিলাম।

† বিধিয়ান অর্থাৎ জলমধ্যে নিমশ্ন হইয়া জলোপরি
মগুলাদি অঙ্কিত করত শাস্ত্রানুসারে স্নান করিবার যে নিয়ম
আছে, উহাকেই বিধিয়ান কছে। স্নান করিবার সম্ম নাভিজ্ল পর্যাপ্ত অব্যাহন করিতে হয়, তাহার প্রমাণ যথা——

> "নাভেরছ'ং হবেদায়ু: নাভেরধ তথেকায়ঃ। নাভেঃ স্থং জ্বং ছিডা স্থানং তপ্ৰমানীয়ে দুঁ।"

অৰ্থাৎ নাভির উন্ধালনে নিমশ্প হইয়া বিধানাছ্সারে য়ান করিলে আয়ুক্ষয় এবং নাভির অধস্থ ললে নিমা হইয়। যান করিলে তপ:ক্ষয় হইয়া থাকে; অতএব নাভিদ্য হলে অবস্থিতিপুর্কক স্থানতপ্শাদি করিবে।

‡ প্রাণারাম—দক্ষিণ হত্তের অকৃষ্ঠ হারা দক্ষিণ নাস।
ধারণপূর্বক নিদাস রোধ করিরা বামহত্তে বোড়শবার মূলমন্ত্র
ক্রণ করিবে, পরে দক্ষিণ অকৃষ্ঠ হারা দক্ষিণ নাসা এবং দক্ষিণ
হত্তের অনামিকা ও মধ্যমাকৃলি হারা বাম নাসা ধারণপূর্বক
চতু:বটিবার ক্রপ করিয়া বামনাসা পরিত্যাগপূর্বক নিযাস
পরিত্যাগ করিবে এবং পুনরার দক্ষিণ অকৃষ্ঠ হারা হক্ষিণ
নাসা ধারণপূর্বক বামহত্তে হাতিংশংবার মূলমন্ত্রপ করিতে
হয়। তিনবার এইক্রপ ক্রপ করাকেই প্রাণারাম কহে।

হরিকে হৃদয়ে ধানপূর্বক পূর্বোক্ত মৃতিকা গ্রহণ করত অফাক্ষর মন্ত্রোচ্চারণ হারা উহা বিভাগে বিভক্ত করিতে হয়। * তৎপরে সিংহ্মান্ত জপপূর্বক দিগ্বন্ধন † এবং বাহুদেবমন্ত্র জপপূর্বক দিগ্বন্ধন † এবং বাহুদেবমন্ত্র জপপূর্বক বিধানামুসারে তীর্থ আবাহন করিয়া বেদাদি মন্ত্রদারা গাত্রে পূর্ব্বাক্ত মৃতিকা লেপন করিবে।! অনন্তর আরাধ্য দেবতার বীজমন্ত্রোচ্চারণপূর্বক অঘমর্ষণ করিয়া বন্ত্র পরিধান করত করতলে কিঞ্চিৎ জলগ্রহণ করিবে; ঐ জল দৃারা বারদ্র মুখমার্জন করিয়া নারায়ণ মন্ত্র দৃারা চিন্তসংযম পূর্বক শ সেই জল আন্ত্রাণ করত নিক্ষেপ করিবে। ঐ জলকে হরিবৎ জ্ঞান করাই সমুচিত। তৎপরে দৃাদশাক্ষর মন্ত্রদৃারা। অর্থ্য প্রদান পূর্বক শত বার আরাধ্য মন্ত্র জপ করিয়া যথানিয়মে মন্ত্র, দিক্পাল, ঋষি, পিতৃগণ প্রভৃতির আস করিবে।॥

- ভাষার মন্ত্র—"ওঁ নমো বাস্থাদবার।"
- † দিগ্বদ্ধন—ভূতলে বারতার বামপাঞ্চির আঘাত করিয়া ছোটিকা ধারা মন্তক বেষ্টন পূর্কক দক্ষিণ হল্তের তর্জ্ঞানী ও মধ্যমাকৃলি ধারা বাম করতলে তিনবার আঘাত করিবে, ইহাকেই দিগ্বদ্ধন কহে; দিগ্বদ্ধন ধারা ভৌম ও অন্তরীক্ষন্থ বিল্ল সকল বিদ্বিত হয়।
 - ‡ ভীর্থ স্থাবাহনের মন্ত্র ম্থা----

"ওঁ গলে চ যমুনে চৈব গোলাবরি সরক্ষতি।
নর্মানে নিজো কাবেরি কলেছিলন্ সলিধিং কুরু।।"
বেলালি মল্ল—"ওঁ"

- শ নারায়ণ মন্ত্র—ও নমো মারায়ণার।
- § बामनाकत मञ्ज—र्ड नामा क्रनवाक वाक्टानवाब :
- । জাস বছবিধ; তথাধ্যে সর্কাষা প্রচলিত করেকটি এই স্থানে সরিবেশিত হইল; ইহার মধ্যেও অনেক স্থান প্রকা করিয়া লিখিলাম বধা——

অবশেষে অঙ্গভাসাদি সমাপন করিয়া সংহারমূত্রা

শিরসি ও নারদ খবরে নমঃ, মুথে ও গারতী ছন্দদে নমঃ, ছদি ত্রীমংবান্ধবেবার নমঃ। (বৈঞ্চব লানের বিধি বলিরা আমরা বান্ধবেবের নামোরেও করিলাম, কিন্তু অন্যান্য কেবভার প্রদাব সমর সেই সেই দেবভার নামাদি উর্লেও করিতে হটবে।)

ধীজন্যাস—হীং নমো ব্ৰহ্মরন্ধে হীং নমো ক্রমধ্যে, হীং নমো নাভৌ, হীং নমো গুহের, হীং নমো বক্তে, হীং নমো স্কাকে।

মাতৃকান্যাস—প্রথমতঃ কুতাঞ্জলি হইরা এই মন্ত্র পাঠ ক্রিকে যথা——

অস্ত মাতৃকামস্থল ব্রন্ধরিঃ গায়তীছবো মাতৃকা সরস্থতী দেবতা হলোধীলানি স্বরাঃ শক্তরঃ অব্যক্তং কীলকং মাতৃকা-ন্যানে বিনিয়োগঃ।

অনত্তব শিরঃ প্রভৃতি হানে পশ্চারিথিত মহুহার। স্পর্শ কবিবে।

শিবসি ও বন্ধাৰে ঋষয়ে নমঃ, মুখে ও পায়তী ছক্ষে নমঃ, कृति अ गाइका मध्यरिष्ठा स्वयंत्रारित्र समः, श्रास्त्र व इस्लाल्या বীছেটো নমঃ, পাদয়োঃ ওঁ স্বারেডা শক্তিডো নমঃ, স্কাঞ্চে ওঁ কাব্যক্ষীলকায় নমঃ। আং কং থং সং ঘং ৪৯ং আনং অকুঠাভাাং নমঃ, ইং চং ছং জং ঝং এখং ঈং তৰ্জনীভাাং স্বাহা, उत्ति है: के एक एक महासा कार (वीवष्, अर कर पर मर ধংনং ঐং, অনোমিকাভাগে হুং, ওঁ পংফং বং ভং মংঔং क निष्ठां छा १ (बोधिए, प्यास्य दश्याः वश्याः स्थाः स्थाः स्थाः स्थ অ: করতলপুঠাভ্যাং জন্তায় ধট্। অংকং ধং গং যং ওং আৰু সদ্যায় নমঃ, ইং চং ছং জং ঝং এবং ঈং ভৰ্জনীভাং ভাছ।, উ॰ ট॰ ঠং ফ্রং চং বং উটং মধামাভ্যাং বৌষটু, এং ডং থং দং धः नः और व्यनामिका**ख्याः हः**, उँ भः कः वः, चः मः छेः किनिकाला: (बोबर्), कार गर गर लर वर मर वर मर इस लर कर कर कत्रजनপृत्राच्यार कार्यात्र करें। का कार हर हर छर छर बर श्रर हर कर कर या अबर हैर केर मटको, एर हर भर खर धर मर बर मर भर कर लिक्षम्टल, वर छर भर यर तर लर मृताभारत, वर मर यर मर हः कः क्रब्रागा।

অনপ্তর মাতৃকার গানি কবিবে যথা—-

"ওঁ পঞ্চাশরিপিভি বিভক্তম্থদের প্রাধ্যক্ষ্কাং ভাস্তন্মৌলিনিবদ্ধচক্রশক্রামাপীনতৃদ্ভনীং।

প্রদর্শনপূর্বক ষাগগৃছে গমন করিতে হয়।

मूखामक्ष खपः स्थाहाकनमः विमाक रखासूरेकः

বিভাগাং বিষদপ্রভাং তিনরমাং বাগ্দেবতামাশ্রয়ে ॥'' এইরূপ ধ্যান করিয়া পুনরার নিয়গিপিত মন্ত হারা যথাযথ স্থান স্পূর্ণ করিবে যথা——

चार नत्या ननाटि, चार नत्या मुश्तु त्व, देर केर नयः
हक्त्याः, छेर छेर नयः कर्त्याः, चार क्षर नयः निकत्याः,
रा द्वर नयः গগুराः धर नयः अर्थान्द्वभरको, चार न्या वक्ष्यत्व, अ नयः
छक्ति छभरको, छेर नयः चर्यान्द्वभरको, चार नत्या वक्ष्यत्व,
चार नत्या मृत्य, कर नयः कक्ष्यान्युत्न, धर नयः कर्भृत्व, गर
नयः मित्रवस्त, चार नयः चक्ष्यान्युत्न, धर नयः चक्ष्याद्य,
हर छर अर धर धर नयः वायवाङ्ग्लम्बार्ध्यम्, हर हर धर नरः नयः
वायभानम्बार्ध्यम्, भर नयः मिक्नभार्ध्यम्, छर धर नर धर नयः नयः
वायभानम्बार्ध्यम्, भर नयः मिक्नभार्ध्यम्, चर नयः छम्तः,
स्ति वर नयः भृत्ये, छर नयः नार्ध्यो, यर नयः छम्तः, यर नयः,
कृति, वर नयः भृत्यानि मिक्नभार्त्यः, यर नयः क्ष्यानि वायभार्यः,
पर नयः क्ष्यानि मिक्नभार्तिः, सर नयः क्ष्यानि वायभार्यः,
पर नयः क्ष्यः नयः क्ष्यानि मुत्रः ।

পীঠনাদ কৰা- সভদেৱে, ও আধারশক্তমে নমঃ, ও প্রাকৃতিয় নমঃ, ও কুমায় নমঃ, ও অনস্তায় নমঃ, ও পৃথিৱৈয় नमः, अं की दममुखास नमः, अं तक्ष्मीभास नमः, अं मिनमञ्जास নমঃ, ও পারিজাতার নমঃ, ও মণিবেদিকরৈ নমঃ, ও রড় সি হা-সনায় নমঃ: দক্ষিণক্ষকে ও ধন্মায় নমঃ, বামক্ষে-- ও জানায় नगः। वारभारको--- अ देवतानाम नगः, मृक्तिरगारको-- अ खेच-বায়েন্ম:। বামপার্মে—ও অভানায়ন্ম:।নাভৌ ও অবৈ-द्वालाम्य नमः, तिक्क्ष्मभार्ष्य- ७ व्यटेन्यगात्र नमः, भूनः यहति- अंत्रकात्र नमः, । तः भक्तात्र नमः, सः पृथ्यध्यात्र भाग्य-কলাত্মৰে নমঃ, উং সোমমগুলায় যোড়শকলাত্মন নমঃ, সং সভাগ নমঃ, সং বছাৰে নমঃ, তং ভমৰে নমঃ, আং আ আনুন नगः, यः अञ्चराचारमे नगः, शः श्रत्याच्यरम नगः। द्वीः स्थानायरम নম:। হুৎপদ্মত পূর্কোদিপত্রাগ্রেকু—ও ব্রীং ক্ষয়াবৈ নম:, 📽 डोर विख्वादेव नषः, ह" होश बीदेर्का नवः व" होर धृटेना नमः, र्ख हीर व्यक्तारेव्र नमः, ब्ह हीर अक्षारेव नमः, ब्ह हीर (महारेव स्यः, e होर क्षरेका स्थः। (क्ष्मटवर्— e हीर क्षकारेष निमः, उँ द्वीर मामादेश नमः, उँ द्वीर सम्रादेश नमः, उँ ट्वीर

এই প্রকার অভাত দেবতার পূজার পূর্বেও তত্তৎ দেবতার বীজমন্ত দ্বারা স্নান করা বিধেয়। ইত্যাদিমহাপ্রাণে আগ্রেমে বৈফবলানবিধিকথন নামক চতুর্কিংশভিতম অধ্যায় সমাপ্ত।

পঞ্চবিংশতিত্য অধ্যায়।

নারদ কহিলেন, একণে পূজাবিধি বর্ণন করি-তেছি শ্রবণ কর। এই পূজার ফলে যাবতীয় মনোরথই দিদ্ধ হইয়া থাকে।

প্রথমতঃ পাদপ্রকালন, তদনন্তর আচমনপূর্বক বাগ্যত হইয়া বিধানানুসারে আত্মরকা করিবে। তৎপরে স্বস্তিকাদন, পদ্যাদন, অথবা অন্যবিধ আদন বন্ধনপূর্বক পূর্বিমুখে উপবেশন করিয়াঃ

ळूबाटेंग्र नगः, अंडीः विश्वकाटेंग्र नगः, अंडीः निक्टिना नगः, अंडीः ऋळालाटेंग्र नगः, अंडीः मर्कानिक्षाटेग्र नगः।

কথন্যাস ও অঙ্গনাগস বথা—ত্ব স্ব অভীষ্ট ও আরিধ্য দেবতার বীজ মন্ত্র বারাই করাঙ্গন্যাস করিতে হর, পথস্ত মারা-বীজ (ক্রীং) দ্বারা সকল দেবতার উদ্দেশেই করাঙ্গন্যাস বিহিত আছে।

করন্যাস— ও ব্রাং অক্টাভাগে নমঃ, ও ব্রাং তর্জনীভ্যাং ব্যহা, ও বুং মধ্যমভ্যাং ব্যবট্, ও ব্রেং জনামিকাভাগি হং, ওং রোং কনিষ্ঠাভ্যাং বৌষট্, ও ব্রঃ কর্তলপৃষ্ঠাভ্যাং অস্তাম কট্। অসন্যাস—— ও ব্রাং ক্রমায় নমঃ, ও ব্রীং নির্সি ব্যহা, ও ব্রং শিথারৈ ব্যট্, ও হৈং ক্রচায় হং, ও ব্রৌং নেত্র-ক্রমার বৌষট্, ও ব্রং কর্তলপৃষ্ঠাভাগং অস্তাম কট্।

* কথল, রক্তকশ্বল, রঞ্জাজিন, বাজেচয় ও কুশাসন, এই
পঞ্জিও আসনোপতি সমাসীন হইয়া পূজালির অনুষ্ঠান করাই
বিধেয় যথা ।—

"কাম্যার্থং কম্বন্ধবৈ শ্রেষ্ঠিক রক্তকম্বনং।
ক্ষাজিনে জানসিদ্ধিঃ শ্রীমোকৌ ব্যাম্বচশ্বনি॥
কুশাসনে মন্ত্রসিদ্ধি নাতি কার্যা বিচারনা।
ধরণাাং তৃংখসভূতি দেঁ ডিগ্যাং দাক্তর্শননে।
বংশাসনে কারিস্তাং স্থাৎ পাবানে ব্যাধিশীড়নং।

নাভিমধ্যে "ষং" এই বীজ ধ্যান করিবে; ঐ বীজকে প্রচণ্ড অনিলাত্মক ও ধূর্রকর্প শ্বরূপ ভাবনা করা উচিত; ঐ বীজ ধ্যান দারা শরীর হইতে যাবতীয় পাপরাশি বিদ্রিত করিবে। অনপ্তর হংপদ্মমধ্যে "কোং" এই বীজ ধ্যান করিতে হয়; উহা তেজারাশির নিধিস্বরূপ; উহাকে হুদর্মধ্যে ধ্যান করত এইরূপ ভাবনা করিবে যে, উহার সমস্তাৎপ্রস্ত শিখাসমূহ দুরা দেহত কল্মমরাজি দম্মীভূত হইল। পরিশেষে কণ্ঠদেশে শশাক্ষাকৃতিবং বীজ ধ্যান করিবে এবং উহার স্কর্নাভীব্যাপী স্থাম্য় কিরণপটল দ্বারা স্বীয় সমস্ত দেহ আপ্লাবিত করিবে।

এইরপে দেহশোধন করিয়া তস্থ্যাস, করশুনি, ব্যাপক্যাস, করাঙ্গন্তাস প্রভৃতি সমাধাপূর্বক মূলমন্ত্র দারা দেহে এবং অফীক্ষর মন্ত্র দারা
হৃদয়, শির, শিথা, কবচ, নেত্র, করভল, উদর,
পৃষ্ঠ, বাহু, উরু, জাকু ও চরণে ন্যাস করিতে
হয়। অনভর যথাবিধি মুদ্রা প্রদর্শনপূর্বক
অফৌতরশতবার বিকুনাম জপ করিয়া পূজা

তৃণাসনে যশোহানিঃ পল্লবে চিন্তাবভ্রম:। জপধানতপোহানি বস্তাসনং ক্রোতি ছি॥''

অর্থাৎ কাম্যকশ্বাস্থানকালে কছল অথবা হক্তকল্বলাসনই প্রশন্ত, ক্রফাজিনাসনে উপবেশনপূর্বক ক্রিয়ান্ত্রাধন করিলে জ্ঞানলিছি, বাাশ্বচর্মাদনে শ্রী ও বােল এবং কুশাসনে সমাসীম ইইয়৷ কার্যাস্থান করিলে মন্ত্রালিছি লাভ ইইয়া থাকে সন্দেহ নাই। পূজানিকালে মুভিকার উপবেশন করিলে ছাথ, কার্যাসনে উপবিষ্ট ইইলে দারিছা, পারাণে উপবেশন করিলে ব্যাধি, তৃণাসনে উপবেশন করিলে যশোহানি, পরবোপরি উপবেশন করিলে হলাকর চিত্রবিজ্ঞন এবং বস্ত্রাসনে সমাসীন ইইলে লগ ধ্যাদ ও তপংক্রম হইয়৷ থাকে।

‡ **তত্মসাস— মূলমস্থ তিথও করিয়া আলাগতে "ওঁ আ**আ তত্ময় স্থাহা" এই বলিয়া পালাদি নাভি পর্যান্ত স্পর্শ করিবে, ঐরপ করিবে। নৈবেদ্যাদি বামদিকে এবং পুষ্পাদি
দক্ষিণদিকে সংস্থাপন করাই বিধেয়। তদনশুর
সামান্যার্ঘ্য স্থাপন করিয়া § তাহার কিঞ্চিৎ জল
দ্বারা নৈবেদ্যাদি অভিযেক করিবে; নৈবেদ্যাদিতে
এক একটি গন্ধপুষ্পা প্রক্ষেপ করা উচিত। তৎপরে হত্তে কিঞিৎ জল লইয়া ইউমন্ত্র জপপুর্ব্বক
ঐ জলকে হরিদ্বরূপ জ্ঞান করিয়া "ফট্" এই
মন্ত্রোক্তারণপূর্বক তাহা পূর্ব্বোক্ত দ্রব্যাদিতে
প্রক্ষেপ করিবে।

অনস্তর পীঠপুজা করিতে হয়; অগ্ন্যাদিকোণে
ধর্মা, জ্ঞান, বৈরাগ্য, ঐশ্ব্যা, পূর্বাদি দিগ্ভাগে
অধর্মাদির, পীঠে কূর্মা, অনস্ত, যম ও সূর্য্যমণ্ডলের
এবং কেশরে বিমলাদির পূজা করিবে। গা

বিতীয় থতে "ওঁ বিদ্যাতৰ্থে স্বাহা'' এই মন্ত্ৰ দ্বারা নাভি হইতে হৃদয় পৰ্যান্ত এবং তৃতীয় খণ্ডে "ওঁ শিবতক্ষয় স্বাহা'' এই মন্ত্ৰাৰা হৃদয়াদি শিব পৰ্যান্ত স্পূৰ্ণ কবিতে হয়।

ব্যাপক জ্ঞান—মূলমন্ত্রোচ্চারণপূর্বক উভয় হস্ত ধারা স্থশ-বীবে সাতবার স্থাস করিতে হয়।

র দামাত্র অর্থা স্থাপনের নির্ম্ বর্থা — স্থীয় বামভাগে বিকেশেমণ্ডল কবিয়া "ওঁ আধারশক্তরে নমঃ,ওঁ কুর্নার নমঃ,ওঁ অনস্থায় নমঃ, ওঁ পৃথিবৈর নমঃ" এই মন্ত্র হারা সেই মণ্ডল পৃক্ষা করিবে; তৎপরে "ওঁ অব্রায় ফট্" এই মন্ত্র হারা অর্থা পাল প্রকালন পূর্কাক উহা পূর্বোক্ত মণ্ডলোপরি রাখিরা গদ্ধা পূর্বা ও «অক্ষত হারা উহা পূজা করিতে হয়। তদনন্তর 'ওঁ অকমণ্ডলায় হাদশকলাছনে নমঃ" এই মন্ত্র হারা আধার এবং ''ওঁ বহিমণ্ডলায় দশকলাছনে নমঃ" এই মন্ত্র হারা আধার এবং ''ওঁ বহিমণ্ডলায় দশকলাছনে নমঃ" ও ''ওঁ সোমমণ্ডলায় বেডিকলাছনে নমঃ" এই মন্ত্র হারা তারি হারা "ওঁ গঙ্গে চ বমুনে চৈব গোলাবির সরস্বতি। নার্মণে সিন্ধো কাবেধি জলেহ শ্বন্ সন্ধিবিং কুকা॥" এই মন্ত্র হারা তীর্ধ আবাক্তর্মক ধেরমুদ্ধা প্রদর্শন হারা আফ্রাক্রণ করিলে। অনস্তর মণ্ডমুদ্রা প্রদশন হারা আফ্রাক্রণ করিল। অনস্তর মণ্ডমুদ্রা প্রদশন হারা আফ্রাক্রন করিলে। অনস্তর মণ্ডমুদ্রা প্রদশন হারা আফ্রাক্রন করিল। অইবার প্রশ্ব ক্রন্ত হয়।

পীঠপুজার নিয়ম অনেক শ্বলে এইরপ প্রচলিত দেখা
 নায় য়ণ'———

০ তদনন্তর স্থলতে ধ্যানপূর্বক মানলোপচারে পূজা করিয়া আবাছনপূর্বক বাস্থদেবের পূজা করিতে হয়। পাদ্য, স্বর্বা, আচমনীয়, মধুপর্ক, স্নানার্থ জল, বস্ত্র, উপবীত, ভূষণ, গদ্ধ, পূজা, ধূপ, দীপ, নৈবেদ্য প্রভৃতি দারা পূজা করিবে। । তৎ-

প্রথমতঃ পীঠোপরি "ওঁ কৃত্মায় নমঃ, ওঁ পৃথিবৈয় নমঃ, ওঁ বম্জার নমঃ" এইরপ পৃঞ্জা করিয়া অয়য়ালি কোণে "ওঁ ধত্মায় নমঃ, ওঁ জানায় নমঃ, ওঁ বৈরায়ায় নমঃ, ওঁ ঐত্তামিয় নমঃ" এইরপ পৃর্বাদিদিক্সকলে "ওঁ অধর্ত্মায় নমঃ, ওঁ অজানায় নমঃ, ওঁ অবৈবায়ায় নমঃ, ওঁ অবৈবায়ায় নমঃ, ওঁ অবৈবায়ায় নমঃ, ওঁ অবৈবায়ায় নমঃ, ওঁ ত্বামণ্ডলায় নমঃ, ওঁ উং লোমনগুলায় নমঃ, ওঁ পল্লায় নমঃ, ওঁ ত্বামণ্ডলায় নমঃ, ওঁ উং লোমনগুলায় নমঃ, ওঁ মং বছিমণ্ডলায় নমঃ, সং সত্মায় নমঃ, বং বজদে নমঃ, তং তমদে নমঃ, আং আয়ায়ান ময়ঃ, অং অভবায়ান নমঃ, পং পরমাজানে নমঃ, আং অভবায়ান নমঃ, পং পরমাজানে নমঃ, উং জ্যাবৈ নমঃ, আং ত্রামান নমঃ, উং নিশু জাবিয় নমঃ, ওঁ নিলিনা নমঃ, ওং ভ্রাজাবৈ নমঃ, আং বিজয়াবৈয় নমঃ, ওং স্বালামঃ, বং বিজয়াবৈয় নমঃ, ওং স্বালামঃ নমঃ, আং বিজয়াবৈয় নমঃ, ওং স্বালামঃ নমঃ, আং বিজয়াবৈয় নমঃ, অং স্বালামিয় নমঃ, ওং ত্রামান সমঃ, আং স্বালামিয় নমঃ, আং স্বালামিয় নমঃ, আং স্বালামিয় নমঃ, ওং ত্রামান সমঃ, আং স্বালামিয় নমঃ, আং স্বালামার নমঃ, আং স্বালামার নমঃ, আং স্বালামিয় নমঃ, আং স্বালামার নমঃ, আং স্

॥ অঞ্চান্তমতে পীঠপূজাব পূর্বেই মানসপূজা প্রচলিত দেখা বার এবং পাল্যাদি বাবা পূজাকালীন যে অর্থা প্রদান কবিতে হয়, উহা মানসপূজার পূর্বেই সংস্থাপন কবা বিধেয়। ঐ সময়ে ফ্ইটি অর্থা স্থাপন করিবে। একটি পূজাকালীন এবং বিতীয়টি পূজাকমান্তির পর প্রদান করিতে হয়। ঐ অর্যাহয় সংস্থাপনের নিয়ম যথা—

শ্বামে জিকোণ মণ্ডল করিরা "ওঁ আধারশক্তরে নমঃ, "ওঁ কুলার নমঃ, ওঁ অনকার নমঃ, ওঁ পৃথিবৈ নমঃ" এই মন্ত্র হারা উই। পূজা করিবে; তলনন্তর "অস্তার ফটু" এই মন্ত্র হারা বারতর শব্ধ প্রকালনপূর্বাক সেই মণ্ডলোপরি স্থাপন করত "নমঃ" এই মন্ত্র হারা শক্ষোপরি সন্ধ পূপা দুর্বা ও অক্ষত প্রদান করিতে হয়। তৎপরে কং লং ২ং সং বং শং বং লং রং যং মং ভং বং ফং পং নং ধং কং অঃ অং ওং ওং জং এং কং জং ছং চং ভং দং সং বং কং অঃ অং ওং ওং জং এং মুং মং বং জং উং উং জং ইং আং অং আহা" এই মন্ত্র এবং মূলমন্ত্র পাঠ পূর্বাক কল হাবা শব্ধ পুরিত করিরা "মং দশকলাব্যাপ্তরহ্মিণ্ডলার নমঃ" এই মন্ত্র হারা আধারেব, অং হাদশকলাব্যাপ্ত স্থান্য লাম নমঃ" এই মন্ত্র হারা শব্ধের এবং "উং বোড়শকলান্য প্রত্

পরে পরম ভক্তিসহকারে, আমিই ত্রক্ষকরপ হরি, এইপ্রকার ভাবনা করিয়া, হুদয়ে বিস্থাস করিবে। এইপ্রকার ভাবনাবলে শীন যতক্ষণ দির থাকে, ভাবৎ তাঁহারে আত্ময়ররপে চিন্তা করিয়া, একে একে শহা, চক্রে, গলা, ধসু, পায়, কৃগুল, শ্রীবৎস, পীতবসন, গরুড়, সনকাদি পারিষদ্বর্গ ইত্যাদিও যথাবিধানে ভাবনা করিবে এবং ভক্তি ও শ্রহ্মারপ নির্মান উপহার প্রদান প্রংসর আত্মাকে অর্পণ করিয়া, ক্ষমা কর, বলিয়া বিস্ক্রন করিবে। '

তংকালে ইহাও বলিয়া আত্মসমর্পণ করিবে, "হে বিভো! হে অনন্ত!হে ভূমানন্দ বহাপুরুষ! আমি রোগে শোকে পরিপূর্ণ পাপে তাপে অবসম, লোভে ক্ষোভে জীর্ণ শীর্ণ এবং ক্রোধমোহে নিরতি-শয় ক্ষীণভাবাপন সংসাররূপ গভীর গর্তে ঘোর অন্ধকারমধ্যে পতিত হইয়া যারপর নাই প্রাণা-ন্তিক ও মর্মান্তিক বেদনা অমুভব করিতেছি; ইহার উপর আবার ফুধার তাড়না, কামের তর্জনা, ভৃষণার প্রতারণা, আশার ছলনা, বাসনার বিজ্মনা ইত্যাদি দারুণ বিপাক পদে পদে সংঘটিত হইয়া, আমার যার পর নাই ভয়াবহ শোচনীয় দশার আবির্ভাব করিয়াছে । এই সকল কারণে সংসারবাস, অতি কঠোর কারা-বাদের স্থায়, আমার নিতান্ত অস্থ হইয়াছে। হে নাথ! আমাকে সত্তর উদ্ধার কর। ঐ দেশ, স্ক্রাণিনী স্বরা ব্যান্তীর স্থায় সম্পুথে তর্জন করিতেছে: ঐ দেখ, রোগ দকল দহ্যর স্থায় শরীরে প্রছার করিতেছে; ঐ দেধ, রুড়া মোর

ব্যাপ্ত সোমমপ্তলার নমং" এই মন্ত বারা জলের পূজা করত "গঙ্গেচ ব্যুনেটেব" ইত্যাদি মন্ত্র বারা ও অকুশ মূজা বারা তীর্থ আবাহন, থেছ মূজাবারা অমৃতীকরণ এবং মৎত মূজাবারা অর্থ্য-পাত্র আছোদনপূর্বাফ সুনমন্ত্র অটবার কপ করিবে। নিবিড় জন্ধকারের ভাগু নরনপথ ক্লম করিবার উপক্রম করিতেছে; ঐ দেখ, বিষর্ত্তাপ বিষম বিবে
জর্জারিত হইয়া, আমার আত্মা পদে পদেই বৃণারমান ও অবসম হইতেছে। নাগা এই সকল
সকটে তুমি ভিন্ন আন্ন উদ্ধারের উপার নাই।
অতথ্র আমি তোমারই পদশোন্তে আন্দরনর্পন
করিলাম।"

অনন্তর এই বলিয়া আত্মনৃত্তি প্রার্থনা করিবে,"হে অনন্ত। হে অক্ষয়। হে মহানের মহান্। হে পথনাভ! হে দেব। তুমি কালেরভ কাল, মহাকাল। হে দেব। তুমি যে সভ্যবলে ত্রিবিক্রম-রূপে সপ্তসূর্য্যসদৃশ বিপুল দেহে আকাশপাভাল ব্যাপ্ত করিয়াছিলে, সেই সভ্যবলে আমাকে উদার कतः। यथनं भाकां म इरेट हस्तमूर्यः धककारमरे তিরোহিত হয়েন এবং যজ্ঞ ও তপস্থা প্রাকৃতি ক্রিয়াকলাপের প্রসঙ্গাত্র থাকে না, যখন খোর নিবিড় গাঢ় তিমিরে সমস্ত সংসার আছেন হয় এবং একমাত্র অপার জলরাশি প্রাচ্নভূতি হইয়া, সমস্ত প্লাবিত করে, তখন ভূমি যে সত্যনিবন্ধন লোক-স্প্রির চেক্টা করিয়া থাক, সেই সন্ত্যবলে আমাকে छेकात कत। शृत्व क्षणजनमत्त्र महर्षि मोर्करक्ष যে সত্যবলে তোমার জঠরমধ্যে প্রবেশ করিয়া খনস্তকোটি ব্ৰহ্মাণ্ড তথায় একত্ত সমবৈত দৰ্শন করিয়াছিলেন, সেই সতাবলৈ আমাকে উদার কর। তুমি যে সত্যবলে সমস্ত ভুবন স্থান্ট ক্রিয়া পালন ও পুনরায় তাহার সংহার করিয়া থাক এবং যে সভ্যবলে বরাহবিত্রহ পরিত্রহপূর্বক অপার-সলিল্ময় পুথিবীর উদ্ধার ও হিরণ্যাক্ষকে সংহার ক্রিয়া, দেবগণের ভয় নিরাক্রণ ক্রিয়াছ, সেই সত্যবলৈ আমাকে উদ্ধার কর। হে বিভো হে ভুমাপুরুষ! যোগিখণ যে সত্যবলে ভোমাকে

দর্শন করিয়া অমৃত ও অভয়লাভ করেন, তপশ্বিগণ যে সত্যবলে অনবর্ত বিমলমানন্দ অমূভব করিয়া অপার আনন্দনিধি তোমাকে প্রাপ্ত হয়েন এবং দেবগণ যে সত্যবলে স্বর্গে প্রতিষ্ঠিত ইইয়াছেন দেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার কর। তুমি যে সত্যবলে চন্দ্র ও সূর্য্যকে হৃষ্টি করিয়া, যথাস্থানে **স্থাপনপূর্ব্বক** সমস্ত ভূবন প্রকাশ করিতেছ, যে সত্যবলে অগ্নিকে দর্বদা প্রস্থালিত করিয়া, সংসার-ন্থিতির উপায়বিধান করিয়াছ, যে সত্যবলে বায়ুর স্ষ্টি করিয়া লোকের প্রাণরক্ষা করিতেছ এবং বে সভ্যবলে মেঘসকল রচনা করিয়া যথাকালে সলিলপাত দারা অনন্তকোটি ব্রন্থাণ্ডের জীবন-স্থিতি বিধান করিয়াছ, সেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার কর। হে সচ্চিদানন্দ আদিপুরুষ পরমেশ্ব ! যে সত্যবলে পিতামাতার স্থষ্টি করিয়া, লোক-পরম্পরা বিস্তৃত করিতেছ, যে সত্যবলে জননীর স্তনে চুগ্ধ সঞ্চার করিয়া জীবের ভবিষ্য জীবন সমুন্নত করিবার উপায় বিধান করিয়াছ যে সত্যবলে ক্ষেত্ ও মমতা রচনা করিয়া সংসারে অপূর্ব্ব পালনপথ আবিকারপূর্ব্বক লোকদিগকে হর্ষিত করিতেছ, সেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার কর। যে সভ্যবলে মন্তক, অন্থিও মন্তিক এক-कारलहे र्वनिनोक्तरम हुन कतिया अक इक्षारतहे হিরণ্যকশিপুর প্রাণবায়ু হরণ করিয়াছিলে, সেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার কর। হে ভূমন্! যে সত্যবলে দেব দানব গন্ধবর্ব মহোরগ ও যক্ষসম বেত এই অনম্ভ ব্ৰহ্মাণ্ড কোনকালেই তোমার অস্ত করিতে সমর্থ হয় না; যে সত্যবলে ভূমি স্থল অপেকাও দূকা এবং মহান্ অপেকাও মহান্ হইয়া নিকটে, দুরে, হৃদয়ে ও আত্মায় সর্বত্ত অব-স্থিতি করিতেছ যে সত্যবলে এই অনস্ত অপার

অসীম আকাশ বিনা অবলম্বনে উর্দ্ধে স্থাপন করি-য়াছ, যে সত্যবলে অতি কুদ্র বীজগর্ভে অতি বৃহৎ বা অতি মহান প্রাণিদেহ নিহিত রাখিয়াছ এবং যে সত্যবলে সলিলমধ্যে অগ্নি প্রস্থালিত করিয়া বিচিত্র ঐন্দ্রজালিক লীলা বিস্তার করিতেছ, সেই সত্যবঙ্গে আমাকে উদ্ধার কর। হে দেবাদিদেব পরমদেব। হে সত্যপুরুষ সনাতন ব্রহ্ম! যে সত্যবলে বেদার্থসমূদায় প্রকটনপূর্বক ব্রহ্মাকে তাহা প্রদান করিয়াছিলে, যে সত্যবলে বাক্যের স্ষ্ঠি করিয়া জীবের জ্ঞানমার্গ বিস্তৃত করিয়াছ এবং যে সভ্যবলে সর্বব্যাপী ছইয়াও সকলের অদৃশ্য রহিয়াছ, দেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার কর। তোমার যে সত্যবলে মহর্ষি দীর্ঘতমা গুরুশাপে জন্মান্ধ হইয়াও পুনরায় বিমূল দৃষ্টিশক্তি প্রাপ্ত হয়েন, সেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার কর। হে স্চিদানন্দ! হে নিত্যস্ত্য প্রমপুরুষ! তোমার যে সত্যবলে গভীর গর্ভমধ্যে গাঢ় অন্ধ-কার গহ্বরে মৃত্রশ্লেমাদিদাগরে অনায়াদেই সন্তান অবস্থিতি করে সেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার কর। হে অনাদিনিধন-আদি-মধ্য-মহাভূত। হে অপার **অনস্ত পূর্ণানন্দ পরম গুরু** ! যে সত্যুবলে তুমি সমস্ত শংসার যথানিয়মে পালন করিতেছ কোনকালে কোনরূপে কোন অংশে বিশৃত্বলা বা অনবন্ধা ঘটিয়া তাহার ব্যতিক্রমঘটনার সম্ভাবনা নাই. সেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার কর। হে জ্ঞান-ময় ধর্মময় মহাপুরুষ। তোমার যে সভ্যবলে আকাশের ঐ চন্দ্র, ঐ সূর্য্য বা ঐ নক্ষত্রমালা কেহ কাহাকেলজ্ঞ্মন করিয়া ছন্দাংশেও স্থাষ্টির প্রতি-কুলে ধাৰমান হয় না এবং যে সত্যবলে নদীসকল নিত্যপ্রবাহিত, বায়ু নিত্য দঞ্জিত, খাদ প্রখাদ নিত্য সমুদ্ভুত, মেঘ নিত্য বর্ষিত ও রৃষ্টি নিত্য 🦠 পতিত হইয়া, যথাবিধানে ও যথাক্রমে স্পৃষ্টি রক্ষা করিতেছ দেই সত্যবলে আমাকে উদ্ধার ক্র।

হে ভক্তবৎসল ় আমি সংসাররূপ গভীর অন্ধ-কৃপে পতিত হইয়া অন্ধ ও অসহায় মণ্ডুকের ভায় অনবরত ঘূর্ণায়খান হইতেছি, ঐ দেখ, ভয়ক্কর কালসর্প মোহজিহবা বহির্গত করিয়া, ক্রোধভরে আমার সমুখীন হইতেছে; আমি একাস্ত নিরু-পায় ও অসহায়, আমাকে উদ্ধার কর, উদ্ধার কর। জন্মিলেই মরিতে হয়, এ নির্মমের কোনরূপ ব্যক্তি-চার বা ব্যতিক্রম নাই। স্বতরাং তজ্জ অ আমার কোনরূপ পরিতাপ বা পরিবেদনা নাই। কিন্তু নাথ! আমি এই পাপতাপপরিপূর্ণ তুঃখসহত্তে জীর্ণ শীর্ণ ও শোকসহত্রে সমাকীর্ণ অসার সংসারে যে অবস্থায় পদার্পণ করিয়াছি, আজিও তাহার কিছুই উন্নতি করিতে পারি নাই। অনবরত বিষয়-চিন্তায় ব্যাপৃত হইয়া, অনর্থক বিবাদ বিদংবাদে কালযাপন করিয়াছি: কখন বা মত্ত ও প্রমন্ত হইয়া, বিষয়লোভে লোকের সর্বনাশ করিয়াছি: আমার জন্ম কত সতী বিধবা, কত জননী পুত্র-হীন, কত পরিবার উদ্বাস্ত ও কত সংসার এক-वादबरे विनके रहेगाएक, विलवाब नरह! नाथ! যে কার্য্যের অনুষ্ঠান করিলে, আত্মা ও পরমাত্মা উভয়ই অপ্রসন্ন হয়েন, স্বর্গ ও অপবর্গ উভয়ই ভ্রম্ট হইয়া থাকে এবং অর্থ ও পরমার্থ উভয়ই অবসন্ধ হয়, আমি পদে পদে সেই দকল কার্য্যেই প্রবৃত্ত হইয়া, জীবন কলুষিত, মরণ ঘোরায়িত ও পরিণাম দূষিত করিয়াছি। অতএব নিজগুণে ক্ষমা করিয়া, অনাথ অধ্য অসহায় ভাবিয়া, আমাকে উদ্ধার ও নিজমার্গ প্রদর্শন কর।"

অনন্তর ভগবান্ নারায়ণের গুন্থ নাম সমস্ত কীর্ত্তনপূর্বক এই বলিয়া স্তব করিবে—

"হে অনন্ত! নর হইতে নলিলের হইয়াছে, এইজত উহার নাম নার। অর্থাৎ সলিল পূর্কো তোমার অয়ন অর্থাৎ আঞ্রয় ছিল, এইজন্ম ডোমার নাম নারামণ। সেই নারায়ণের শরণাপন্ন হই। বাঞ্চ নিবাস ও দেব শব্দে প্রকাশক : ভূমি প্রভাকম-রূপে করনিকর বিকিরণ করিয়া, সমুদায় ভুবন প্রকাশ কর এবং সমুদায় ভুবন ভোমাতেই বাস অর্থাৎ অধিষ্ঠান করিতেছে, এইজন্য তোষার নাম বাস্থদেব। আমি সেই বাস্থদেবের শরণাপন ছই। विकृ भटक गंछि, छेरशामनकर्छा, मीखिमान, गाधिनीम अवर धारम ७ निर्शरम सान, देंछगनि অর্থ বুঝাইয়া থাকে। তুমি জীবগণের একমাত্র গতি ও উৎপাদক, সমস্ত সংসার ব্যাপ্ত করিয়া আছ ও সর্বাপেকা সমুজ্বল দীপ্তিবিশিষ্ট এবং তোমা হইতে সমস্ত জীব উদ্ভূত হইয়া তোমাতেই লান হইতেছে, এইজন্ম ভোমার নাম বিফু; আমি সেই বিষ্ণুর শরণাপন্ন হই। লোকে দমগুণসহায়ে দিদ্ধি লাভ করিবার**ু** আশয়ে ত্রিলোকরপী তোমারে কামনা করে: এই কারণে তোমার নাম দামোদর। আমি সেই দামোদরের শরণাপ্র হই। পুশ্লি শব্দে বেদ, জল, অমৃত ও অম ইত্যাদি বৃথাইয়া থাকে। ঐ সকল পদার্থ তোমার গর্ভমধ্যে নিহিত আছে, এই জন্ম তোমার নাম পুশ্লিগর্ড। মহর্ষিগণ বলিয়া থাকেন, পূর্বের একভ দিত উভবে দমবেত ছইয়া ত্রিতকে কুপমধ্যে নিপাতিত করিলে, ত্রিড, হে পুশিগর্ভ ; স্থামারে উদ্ধার কর, ইত্যাদি বাক্যে তোমার নামোচ্চারণ করত কৃপ হইতে মুক্তিলাভ করেন। আমি দেই পুরিগর্ভের শরণাপন হই। সূর্য্য, চন্দ্র ও অগ্নিব যে সমস্ত কিরণমালা ভুবনবিবরে প্রতিফলিত

হইয়া, সমস্ত প্রকাশিত করে, তৎসমস্ত তোমার কেশ। এইজন্ম ব্রাক্ষণগণ তোমাকে কেশব নামে অভিহিত করেন। উতথ্যের পুত্র রহস্পতির শাপে জন্মান্ধ হওয়াতে, দীর্ঘতমা নামে বিখ্যাত হয়েন। কিন্তু তিনি সাঞ্চলোধ্যয়নসমাপনান্তে বারংবার ভোমার কেশব নাম স্মরণ করিয়া, দিব্য দৃষ্টিলাভ করেন। তদবধি তাঁহার নাম গৌতম হইয়াছে। আমি সেই কেশবের শরণাপন হই। একদানসমূৎপন্ন জনল ও চন্দ্র উভয়ে তাপপ্রদান ও পদার্থপ্রকটন দারা সমস্ত সংসার হর্ষিত করিয়া থাকেন : এইজন্ম তাঁহাদের নাম হয়ী। ঐ অনল ও চন্দ্র উভারে তোমার কেশ, এইজভা তোমার নাম হ্যীকেশ হইয়াছে, আমি সেই হ্যীকেশের শরণাপন হই। অথবা, অনলরপী সূর্য্য ও চক্ত সর্ব্বদা সংসারের আনন্দ সংসাধন করেন। তাঁহারা তোমার চক্ষু ও তাঁহাদের করনিকর তোমার কেশ; এইজন্ম ভোমাকে স্বধীকেশ বলিয়া থাকে। আমি সেই হৃষীকেশের শরণাপন হই। তোমার বর্ণ হরিথাণির ভায়ে এবং ভূমি মন্ত্র দ্বারা আহত হইয়া, যজভাগ গ্রহণ করিয়া থাক; এই জন্ম তোমার নাম হরি। অথবা তুমি স্মরণমাত্রেই ভক্তগণের সমস্ত শোকতাপ হরণ কর, এইজন্ম ভোমাকে হরি বলিয়া অভিহিত করে। তুমি প্রলয়কালে দর্ববদংহর রুদ্ররূপে আত্মাতে সমস্ত বিশ্ব হরণপূর্বকে সমিহিত কর; এইজন্ম তোমার নাম হরি। অথবা, ভুমি পাপরাশি হরণপূর্ব্বক শান্তিস্থাপন করিয়া থাক; এইজন্ম তোমার নাম হরি ইইয়াছে। আমি দেই হরির শরণগ্রহণ করি। ভূমি সকল লোকের ধামস্বরূপ এবং খাত অর্থাৎ সত্যের বিচার করিয়া থাক, তজ্জ্য বেদে ভোমার নাম ঋতধামা বলিয়া নির্দিক্ট

হইয়াছে। আমি সেই ঋতধামার শরণগ্রহণ করি। পূর্ব্বে পৃথিবী গোরূপ ধারণপূর্ব্বক রসাতল-গামিনী হইলে, তুমি তাহার উদ্ধার করিয়াছিলে, তদৰ্ধি তোমার নাম গোবিন্দ হইয়াছে। সেই গোবিদের শরণাগত হই। তুমি শিপি অর্থাৎ তেজ:প্রকাশপুরঃসর সকল পদার্থে অনু-প্রবিষ্ট হইয়া আছু, এইজন্ম তোমার নাম শিপি-বিষ্ট। মহর্ষি জাস্ক সমূদায় ষড়েই তোমার গুঢ় নাম উদ্দেশ করত স্তব করিয়া, ছদীয় প্রসাদে রসা-তল হইতে নিরুক্তশাস্ত্রের উদ্ধার করিয়াছেন। আমি সেই শিপিবিষ্টের শরণ গ্রহণ করি। ভূমি সর্ব্বদা সকল শরীরে আত্মারূপে অধিষ্ঠান করিতেছ। কোনকালে ভোমার জন্ম নাই; এইজন্য ভোমার নাম অজ বলিয়া পণ্ডিভদমাজে পরম পুজিত হইয়া থাকে। আমি সেই অজের শরণগ্রহণ করি। তোমার বাক্য কখন শ্বলিত বা অন্যরূপে প্রতিপন্ হয় না এবং সৎ অসৎ সকল পদার্থই তোমার অনুপ্রবেশে অনুপ্রাণিত হইয়া থাকে। এইজক্ত ভোমার নাম সত্য। আমি সেই সত্যের শর্ণ গ্রহণ করি। তুমি একমাত্র সন্তগুণ আশ্রয় করিয়া বিরাজমান হইতেছ এবং দ**বগু**ণ একমাত্র তোমা হইতেই প্রাত্ত হইয়াছে। জ্ঞানবান্ পুরুষগণ সত্তণময় জ্ঞানযোগ সহায়েই তোমার সাক্ষাৎ-কার প্রাপ্ত হয়েন এবং ডুমি সর্ববদা পাপসম্পর্ক-পরিশূত্য হইয়া, সভুগুণসহকারে সকল কার্য্যের অনুষ্ঠান কর; এইজন্ম তোমার নাম সাভূত হইরাছে। সেই সাভুত আমারে রক্ষা করুন। जूमि लोक्रलकनकतरण शृथियो कर्यण कत्र धवः তোমার বর্ণ কৃষণ, এইজভ তোমার নাম কৃষণ হইয়াছে। সেই কৃষ্ণ আমারে রক্ষা করুন। তুমি অকুণিতচিতে জলের সহিত পৃথিবীকে, বায়ুর

সহিত **আকাশকে ও তেজের সহিত বায়ুকে** মিশ্রিত করিয়া, সংসার প্রতিপালন করিতেছ; এইজভ তোমার নাম বৈকুণ্ঠ হইয়াছে। অথবা, যাহা কখন কুণিত হয় না, ভাহাকে বিকুণ্ঠ বলে। সভুগুণ কোনকালেই কুণ্ঠিত হয় না; এই কারণে তাহার নাম বিকুণ্ঠ। তুমি মর্বাদা এই বিকুঠে বিহার করিয়া থাক, এইজ্বভ তোমাকে বৈকুণ্ঠ বলিয়া, পণ্ডিতগণ পরম ভক্তিদহকারে পূজা করেন। সেই বৈকুণ্ঠ আমার সহায় হউন। তোমার স্তব করিলে, পরম পুণ্য দঞ্চিত ও অজ্ঞান-রূপ তমোরাশি তিরোহিত হয়,এই কারণে তোমার নাম পুণ্যশোক ও উত্তমশ্লোক বলিয়া প্রথিত হই-য়াছে। সেই পুণাশ্লোক ও উত্তমশ্লোক আমার সহায় হউন। পুরুষ শব্দে আত্মা, তুমি সেই আত্মার মধ্যে শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ পরমান্তা: এইজন্ম তোমাকে পুরুষোভ্য বলিয়া থাকে; দেই পুরুষোভ্য আমার দহায় হউন। মধু শব্দে পরমপ্রমাথী ইন্দ্রিয়বর্গ। ভুমি সেই ইন্দ্রিয়গ্রাম সূদন অর্থাৎ নিপীড়িত করিয়া, স্থাষ্ট রক্ষা করিয়াছ; এইজগ্য তোমার নাম মধুসূদন। সেই মধুসূদন আমার সহায় হউন। তুমি আনন্দসরূপে সমস্ত সংসার আনন্দিত কর, এইজন্ম তোমার নাম নন্দ, গো অর্থাৎ বিশ্ব পালন কর, এইজন্ম ভোমার নাম গোপ এবং কু অর্থাৎ অমঙ্গল বিনাশ কর, এইজন্ম তোমার নাম কুমার ; এইরূপে তোমার নন্দ-গোপ-কুমার নাম সংদারে বিখ্যাত হইয়াছে। সেই নন্দগোপকুমার আমার সহায় হউন। বহু শব্দে দিব্য তেজ এবং দেব শুন্দে লীলাপরায়ণ, তুমি দিব্য তেজ:দহায়ে লীলা কর, এইজভ তোমার নাম বাহুদেব। সেই বাহুদেব আমার সহায় रुष्टेन। ८१ ज्रुक्ट वरमम ! क मर्का खका **ध**वः ।

नेन नरक महाराव, अहे जन हे हैं। रहा के अब हो के रकन বলে। সেই কেশ (অর্থাৎ ব্রহ্মা ও মহাটের) তোমার অঙ্গ হইতে উভুত হ**ইরাছেন, এইজ্**ড তোমার নাম কেশব। সেই কেশব **আমার সহা**য় হউন। ভূমি বৃহৎ অর্থাৎ অতীব মহান্ এবং রংহণ অর্থাৎ স্মষ্টিকর্তা বলিয়া ত্রন্ম নামে অক্লিহিছ হইয়াছ। দেই **একা আমার সহায় ইউন**। ভূমি नित्रविष्टित्र लाटिकत कन्यांग मत्रुमुखारन कत्र, अहे-জন্ত তোমার নাম শঙ্কর; সেই শঙ্কর আমার সহায় হউন। হে পুশ্লিগর্ভ! মা শব্দে বিদ্যা वा लक्षी अवः धव गटन श्रामी वा नाम्रकः। प्रृपि বিদ্যার স্বামী। এইজন্ম মাধ্ব নামে বিখ্যাত। সেই মাধব আমার সহায় হউন। ভূমি গো অর্থাৎ ৰাণী বিন্দ অৰ্থাৎ অবগত আছ, এইজন্ত সোৰিন্দ, তি অর্থাৎ বেদত্তায় বিশেষরূপে আক্রমণ অর্থাৎ আশ্রেয় করিয়া আছু, এইজন্ম ত্রেবিক্রম ত্রবং প্রণু অর্থাৎ সুক্ষা বলিয়া বামন নামে বিখ্যাত হইয়াছ। ভগবান্ গোবিন্দ, ত্রিবিক্রম ও বামনদেব আরার সহায় হউন। হে বিভো! তুমি কথনও আপনার নির্বাণময় ব্রহ্মস্বরূপ হইতে চ্যুত হও না ; এই-জন্য তোমার নাম অচ্যুত। ভগবান্ অচ্যুত আমার বহায় হউন। অধঃ অর্থাৎ পুথিবী, অক অর্থাৎ আকাশ ও জ অর্থাৎ ধারণকর্তা। ভুমি পৃথিবী ও আকাশ ধারণ করিয়া আছে, এইজন্ম তোমার নাম অধোকজ। ভগবান্ অধোকজ আমার সহায় ছউন। প্রাণিগণ যদার। ব্যাণধারণ করে, সেই য়ুত তোমার তেজ, এইক্লড তোমাকে বৈদে ফুতার্চি বলিয়া স্তব করিয়াছে। ভগবান্ প্লতার্চি আমার সহার হউন। জননামক অহুর লোকের ভোজনবেলায় উপস্থিত হইয়া, অত্যাচার করিত। ভুমি ভাহাকে হত্যা করিয়া, তাহাদের কণ্টক

শৃক্ত করিরাছ, এইজক্ত ভোমার নাম জনাদিন হই-शांद्ध व्यथवा अन भटक अन्य धावः व्यक्त भटक বিনাশ। যাহা ভোমার স্মরণ, মনন, কীর্ভন ও উপাসনা করে, তাহাদিগকে আর জন্মগ্রহণপূর্বক দারুণ সংসারকারায় বন্ধ হইয়া, অপার যন্ত্রণাভোগ করিতে হয় না, এইজন্ম তোমার নাম জনার্দন বলিরা বিখ্যাত হইয়াছে। ভগবান্ জনার্দন আমার সহায় হউন। হে অনন্তঃ তুমি গো অর্থাৎ পুথিবীর পালন কর, এইজন্য ভোমার নাম পোপাল। অথবা গো শব্দে অসামান্য বিভূতি, তুমি তন্থারা সমস্ত বিশ্ব পালন করিয়া থাক, এই-জন্য তোমার নাম গোপাল। ভগবান্ গোপাল আমার সহায় হউন। মূচ ধাতুর অর্থ মুক্তি এবং দ শব্দে দাতা। ভূমি মুক্তিদান কর বলিয়া,তোমার নাম মুকুন্দ হইয়াছে। ভগবান্ মুকুন্দ আমার महात इडेन। ८२ ७८ता : ८२ मिल्लानम्न ! वाबू, পিত ও প্লেমা এই তিবিধ কৰ্মজ ধাতৃ ভারাই व्यानिभागत व्यानधातम इहेशा थाएक। धहे धाकु-ত্রয়ের অভাব হইলেই, শরীরে ক্ষদশার আবি-র্ভাব হয়। ভূমি ঐ ধাতুত্ত্ত্যরূপে দকল শরীরেই অবস্থিতি করিতেছ, এইজন্য আয়ুর্কোদে তোমাকে ত্রিধাতু বলিয়া নির্দেশ করিয়াছে। ভগবান্ ত্রিধাতু আমারে সর্বদা রক্ষা করুন। সকল লোকের আধার ও আশ্রয় ভগবান্ ধর্মা র্ধনামে বিখ্যাত, তুমি সেই ধর্মস্বরূপ, এইজন্য তোমার নাম ব্য। আর কপি শব্দে মহাবরাহ, তুমি মহাবরাহরূপে আবিভূতি হইয়া,পৃথিবীর উদ্ধার করিয়াছ, এইজন্য তোমার নাম বৃষাকপি হইয়াছে। ভগবান্ বৃষাকপি আমারে রক্ষা করুন। হে আদি! হে অনাদি! হে ঈশ! হে অনীশ! তোমার একবারমাত্র নিমেষেই মহাপ্রলয় উপস্থিত হইয়া, ব্রহ্মাদিস্থাবর-

পর্যান্ত সমুদার বিশ্ব নি:শেষিত করে। এইজন্য ভূমি চকুর নিমেষ না ফেলিয়া, সর্ব্যদা জাগরুক নয়নে চরাচর বিশ্ব অবলোকন করিতেছ। তরি-বন্ধন তোমার নাম অনিমিষ হইয়াছে। ভগবান্ অনিমিব আমায় রক্ষা করুন। হে ভূমন্! যোগিগণ তোমাতে রমণ অর্থাৎ তোমার পরমপূর্ণা-নন্দময় বিচিত্রস্বরূপ অনুভব করিয়া, সর্বদা বিচিত্র আনন্দ সম্ভোগ করেন, এইজন্ম তোষার নাম রাম বলিয়া বিখ্যাত ইইয়াছে। অথবা, রমা শব্দে লক্ষী। ভূমি সেই লক্ষীরও রমণ-স্থান, এইজন্ম রাম নামে পরিগণিত হইয়াছ। অথবা, তুমি আপনার অভিরাম গুণগ্রাম দারা সংসারধান আনন্দের আরাম করিয়া থাক, এই-জন্য তোমার নাম রাম। ভগবানু রাম আমায় রক্ষাকরুন। হেমুকুন্দ। তুমি সর্বাদা লক্ষী-সম্পন্ন, এইজন্য লক্ষ্মণ, সর্ববদা সকলের ভরণ কর, এইজন্য ভরত এবং সর্বাদা সকলের শক্র সংহার কর এইজন্য শক্রম ; এইরূপে ভূমি রাম-লক্ষ্ণ-ভরত-শত্রুদ্ব, এই চতুর্ব্যহে অবচ্ছিন্ন হইয়া সংসার পালন করিতেছ। তোমার ঐ চতু-বুহি মূর্ত্তি আমার সহায় হউন। হে অজ! দশরথ শব্দে আবা। ভূমি সেই আত্মায় বিহার কর, এইজন্য দাশর্থি নামে বিখ্যাত হইয়াছ। তোমার ঐ দাশরবিশ্বরূপ আমার দহায় হউন। সংসারে কেহই তোমার আদি, মধ্য বা অন্ত অবগত নহে। এইজন্য তোমার নাম অনাদি, অমধ্য ও অনন্ত হইয়াছে। তোমার এই অনন্তস্ক্রপ আমার সহায় হউন। সকলে তোমায় চিন্তা করে, এই-জন্য তোমার নাম চিন্তাময়; দকলে তোমার উদ্দেশে তপদ্যা করে, এইজন্য তপোময়; সক-লের মন অর্থাৎ বুদ্ধি তোমা হইতে প্রণোদিত হইয়াছে, এইজন্য মনোময় এবং তুমি সংসারস্থিতি-বিধান জন্য ধর্ম রূপে অবতীর্ণ ইইয়াছ, এইজন্য তোমার নাম ধর্মময়। এইরূপ, ভূমি সকলের ছঃখের শান্তি করিয়া রক্ষা জন্য পৃথিবীতে নিজধাম গোলোক হইতে দয়া প্রেরণ করিয়াছ, এইজন্য তোমার নাম দয়াময় হইয়াছে। তোমার ইচ্ছা-তেই দমস্ত বিধান সম্পন্ন হইতেছে, এই কারণে তোমার নাম ইচ্ছাময়। তুমি লীলাবশে এই অনন্ত কোটি ত্রন্ধাওরপে বিরাজমান ইইতেছ, তন্নিবন্ধন তোমাকে লোকে লীলাময় বলিয়া পূজা করে। তুমি স্মষ্টির পূর্ব্বে বর্তমান থাক. এই কারণে সকলের আদি এবং স্প্তীর পরেও বর্ত্তমান থাক, এই কারণৈ অন্ত নামে বিখ্যাত হইয়াছ। লোকে তোমার উদ্দেশে যজ্ঞপরস্পরা বিস্তৃত করে এবং বিবিধ ক্রিয়াকলাপে প্রবৃত্ত হইয়া থাকে। এই কারণে তোমার নাম যজ্ঞময় ও ক্রিয়াময় হইয়াছে। তুমি সমস্ত লোকে এবং সমস্ত লোক তোমাতে অধিষ্ঠিত, এই কারণে তোমার নাম লোক্ষয়। বেদশব্দে প্রম্বিজ্ঞান। দেই বিজ্ঞান তোমা হইতে প্রান্নভূতি হইয়াছে। ত্রস্বিক্ষন তোমার নাম বেদময়। জ্ঞান, ব্রক্ষ ও সত্য তোমার স্বরূপ, এইজন্য ভূমি জ্ঞানময়-ব্ৰহ্মময় ও সত্যময় নামে বিখ্যাত। সমস্ত দেবতা তোমাতে অধিষ্ঠান করেন, তদিবন্ধন তোমার নাম দেবময় হইয়াছে।"

> ইত্যাগ্রেরমহাপ্রাণে আদিষ্ঠিপুরাদিবিধিকথননামক পঞ্জিংশ অধ্যার সমাধ ।

ষড়বিংশ অধ্যায়।

নারদ কহিলেন, পূর্ব্বে ভগবান্ ভূতভাবন মহাদেব স্বয়ং বক্ষ্যমাণ মন্ত্রে বাস্থদেবের স্তব ও উপাদনা করিয়াছিলেন;—

হে আদিদেব! তুমি সূর্যা ও চন্দ্ররূপ বিশাল লোচন বিস্তার করিয়া, চরাচর বিখের তদাদি-তদন্ত সর্বাদা দর্শন করিতেছ। হুতরাং কেছ গোপনে পাপ করিতে পারে না। আবার, ভুমি অন্তরে অন্তরাত্মারূপে দিবারাত্র বিহার করি-তেছ; হুতরাং মনে মনেও পাপ করা কাহারো সাধ্য নহে। আমি তোষায় নমকার করি। হে অনন্ত: উপরে ঐ অনন্ত বিজ্ঞ অসীম আকাশ এবং নিম্নে এই অপার বিশাল অসীম জলধি দর্শন করিয়া যাহারা তোমার স্বরূপের কিছুমাত্রও অনুধাবন করিতে সমর্থ, আমি তাহাদিগকেও নমস্কার করি। ঐ পর্বত-প্রমাণ প্রকাণ্ড হস্তী,অথবা এই অণুপ্রমাণ সামান্য কীট, এই উভয় পর্য্যবেক্ষণ করিয়া, তোমার অসীম দৃষ্টিকৌশল যাহাদের হৃদয়কে ভোমার পথে শানয়ন করিতে না পারে,তাহারা কি মূঢ়। বিভো! প্রাণ ও চেতনা তোমা হইতে আদিয়াছে। এই জগৎপ্রাণ সমীরণ সেই প্রাণ বহন করিয়া,লোকের শরীরে শরীরে সর্বদা বিচরণ করিতেছ। এ কথা যাহারা ভাবিতে না পারে তাহারাও কি জান-শুনা! তাহাদের জীবন কি বিজ্পনাময়! হে মহা-ক্লব্র । প্রেম তোমার মনোহর বিচিত্র ভাব । স্বর্গের উপরে উহার অধিষ্ঠান। এই প্রেম ধরাতলে অব-তরণপুর্বকে পিতার হৃদয়ে মমতা, জননার হৃদয়ে স্নেহ্ বন্ধুর হৃদয়ে সন্তাব- দম্পতির হৃদয়ে প্রপথ, ভাতা ও ভগিনীর হৃদয়ে প্রীতি এবং পুত্রের হৃদয়ে

ভক্তি ও শ্রদ্ধা ইত্যাদি বিবিধ রূপে তোমার আজায় বিভক্ত ও দমিহিত হইয়া,তোমার এই অনন্ত রাজ্য প্রতিপালন করিতেছে। আমি ভোমায় নমস্কার করি। হে অনাদে! আমি যথন দেখিতে পাই, পশু পক্ষী প্রভৃতি ইতর প্রাণীরা নিতান্ত জ্ঞানশূত্য হইলেও, কখন সন্তানস্তেহ বিস্মৃত বা দাম্পত্য-বন্ধন-লিপ্দাপরিবর্জ্জিত হয় না, তথনই তোমার চুরন্ত মায়া বুঝিতে পারিয়া আমি অবাক্ ও হতবুদ্ধি হইয়া থাকি। ঐ মায়াই এই সংদার-ক্লপে বিস্তৃত হইয়া আছে। ঐ মায়াবলেই বিমো-হিত ও হতজ্ঞান হইয়া, লোকে কেহ আপনাকে প্রভু, কেই শান্তা, কেই রাজা ও কেই দণ্ডমুখ্রের কর্ত্তা বিধাতা বলিয়া মনে করে। কিন্তু তোমার প্রেমের রাজ্যে ও শান্তির অধিকারে এরূপ বিধান নাই। ভূমি সকলকে সমান ভাবিয়া, আপনার শান্তির ক্রোড়ে গ্রহণ করিয়া থাক। এইজ্য তোমার নাম মায়াতীত মহেশ্বর হইয়াছে। ভূমি এই অনস্তকোটি ত্রসাণ্ডের রাজা ও আমাদের मकर्टन क्रेश्वत । मःमादि ध्यम एक चार्छ (य. ভূমি, অন্ন ও প্রাণ তিনই দান করিতে পারেন? কিন্ত ভূমি নিজের প্রাণে আমাদিগকে অমুপ্রাণিত করিয়া, সর্ববদা ভূমি ও অন্ন দান করিয়া, আমাদের রক্ষা করিতেছ। অথবা তুমিই ভূমি,ভূমিই অন্ন এবং তুমিই প্রাণ। তোমা ভিন্ন এই তিন কিছুই নহে, অথবা কিছু হইলেও তোমা ভিন্ন থাকিতে পারে ন। তোমার কি অপার অসীম ও অনির্বচনীয় মহিনা! দেখ, তুমি অত্থে ভূমি, পরে অম ও তদন-ন্তর প্রাণ বিধান করিয়া, আমাদের সকলের স্থষ্টি করিয়া থাক। সন্তান কবে ভূমিষ্ঠ হইবে, কিন্তু বহুদিন পূর্বেই জননীর স্তনে তুগ্ধ সঞ্চার হইয়া থাকে। যাহারা এই সকল বুঝিতে না পারে

অথবা বুঝিবার চেফা না করে, তাহারা কি মকুষ্য-পদের বাচ্য ? অথবা তাহারা দেবতা হইলেও, কি দেবতা বলিয়া পরিগণিত হইবার যোগ্য ? কথনই নহে।

হে আত্মানন্দ দৰ্কতোভদ্ৰ মহাপুৰুষ! যে অশরীরী মহান্ ভূত ভুত ভবিষ্য বর্ত্তমান সকল কাল ব্যাপিয়া,আকাশ পাতাল স্বৰ্গ দকল স্থান ব্যাপিয়া এবং দেবতা মনুষ্য তির্য্যক্ সকল পাত্র ব্যাপিয়া, অবস্থান করিতেছেন; তুমিই দেই পরম অদ্ভুত মহাভূত। আবার যে অশ্রীরী মহাভূত স্বীয় অনুষ্ঠাব্য স্বরূপে অনায়াসেই ঐ অনন্ত বিস্তৃত অপার আকাশের প্রত্যেক স্থল ব্যাপিয়া, এই অকুল অসীম জননিধির প্রত্যেক অংশ ব্যাপিয়া, ঐ অজভেদী উত্ত পর্বতের তদাদি-তদস্ত সমস্ত ব্যাপিয়া এবং ভূমি, আমি, ঐ, এই ইহা, যে त्म, इंड्रांकि मकत्नबंदे चार्ख्यांच मगुर बःभा ওতপ্রোত ব্যাপিয়া সৃষ্টির আদি ও অবসান সকল অবস্থায় বিরাজমান হয়েন: তুমিই দেই অশ্রীরী মহাস্ত। হে মহাস্ত। তোমার আকার নাই: কিন্তু অপরিভাব্য ছুরবগাহ আকাশ ভোমার শাকার। তোমার রূপ নাই ; কিন্তু এই অনন্ত-কোটি ব্রহ্মাণ্ডের বিকাশ তোমার রূপ। তোমার বর্ণ নাই; কিন্তু প্রজ্বলিত বহ্নি তোমার বর্ণ। যাহারা এই রহস্ত অবগত আছে, তাহারাই প্রকৃত জ্ঞানযোগী মহাপুরুষ। আমি দেই দকল মহা-পুরুষকে নমস্কার করি।

হে বিভো! তোমার শান্তির রাজ্য হইতে প্রতিদিন প্রতিক্ষণে ঐ যে বায়ুরূপে নিশাস আসিয়া জীবের প্রাণ রক্ষা করিতেছে, উহা কি শীতল, হুখদেব্য ও স্বাস্থ্যময়! হে অমৃত! ঐ যে উদীয়মান ভাক্ষর হইতে মৃতু মৃতু কিরণবিন্দু বিনিঃস্ত হইতেছে, ও সকল সাক্ষাৎ ভোমার করুণাবিন্দু। উহার উদ্দেশ্য অতি মহৎ। রজনীর সমাগমে সংসারের যে অবসাদ ও জাড্য উপস্থিত হয়, ঐ কিরণবিন্দুর সংস্পর্শে তাহা ডিরোহিড হইয়া যায়। আহা। প্রভাতকালীন সমীরণ কি অভূতপূৰ্বৰ অদ্ভুত পদাৰ্থ! উহাতে ভূমি সাকাৎ অমৃতরাশি নিহিত রাখিয়াছ। সেইজ**ভ** উহার স্পর্শমাত্রেও লোকের অবসাদজাত্য নিরা-কুত হইয়া থাকে। ইহা অপেকা তোমার করুণার অপারতা কি আছে? আমি তোমায় বার বার নমস্কার করি। হে অনস্ত ! তুমি নিজেই বীজ আধান করিয়া, নিজেই প্রসৰ কর, এইজন্ম তুমিই পিতা ও তুমিই মাতা। স্বাবার, তোমা অপেক্ষা প্রাণের বন্ধুও কেহ নাই। কেন না, তুমি বিপদ সম্পদ সকল অবস্থাতেই আমাদের সহায় হইয়া, যথাবিধানে তত্ত্বাবধারণ কর। সংসা-(तत वसुभारक है थात मन्त्ररामत, विशासत नरह । কিন্তু ভূমি বিপদের পরমবন্ধু বলিয়া বিখ্যাত। যাহার কেছ নাই, ভূমি তাহার সর্বস্থ। আমি ভোমায় নমস্কার করি।

হে ঈডা! তুমি অনল কি অনিল, হুখা কি বিষ, হর্ষ কি বিষাদ, গুণ কি অগুণ, বস্তু কি অবস্তু, আলোক কি অন্ধকার, প্রাণ কি মৃত্যু, সম্পদ্ কি বিপদ্, ডেজ কি মৃত্তুতা, ইহা কেহ জানে না বা বলিতে পারে না। অথবা, তুমি আছ কি নাই, শৃত্ত কি পূর্ণ, সদ্ভাব কি অভাব, বভাব কি বিকার, ইহাও কেহ জানে না বা বলিতে পারে না। তথাপি, কি ধনী, কি দিয়নে, কি আনী, কি অজানী, কি বৃদ্ধ, কি যুবা, কি গ্রী কি প্রকার, কি ভোগী, কি রোগী, কি গৃহী, কি সন্ধানী, কি কামী, কি বিজামী, কি প্রভু, কি ভৃত্য, কি নীচ,

कि छक् कि कूछ, कि महर, कि त्राका, कि ध्येका, ফলতঃ, অৰ্গ, মৰ্ত্ত্য ও পাতাল সমস্ত সংসার তোমাকে পাইবার জন্ম ঐকান্তিক উৎস্থকতা ও নিরতিশর ব্যথাতা প্রদর্শন করে; তত্ত্বর প্রাণ পর্য্যন্তও পরিহার করিতে কৃষ্ঠিত হয় না। ইহা অপেকা তোমার অপার মহিমা কি আছে? কেহ বলে, সংসারে পুত্র অপেকা পরম হথ আর नारे: (कह राल मण्येन व्यापका धार्यनीय व्याज নাই; কেহ বলে প্রভুতা অপেক্ষা প্রীতির বিষয় আর নাই। কিন্তু আমি বলি, তোমা অপেকা পরম স্থ্ পরম বাঞ্চিত ও পরম জীতির বিষয় (कर्डे नरह। (कन ना, **পूछा य**नि भन्न **छथ र्डेड**, তাহা হইলে যাহার পুত্র হইয়াছে, সে ব্যক্তিও কি হেতু তোমাকে পাইবার জন্ম উৎস্ক হইবে ? ঐ দেখ, লোকে পিভাপুত্রে একত্র হইরা ভোমার উপাদনা করিভেছে। এই রূপে, যে ব্যক্তি অভূল সম্পদের অধিকারী ও অদীম বিষয়ের প্রভূ, সেও আপনার পরম অভীষ্ট সম্পদ্ ও পরম অভীষ্ট বিষয় ত্যাগ করিয়া, তোমার উপাদনা করিয়া থাকে। হে আনন্দ! হে অভয়। পতি অপেকা পত্নীর প্রিয়তম এবং পত্নী অপেক্ষা পতির প্রিয়তমা কে আছে ? কিন্তু তাহারা উভয়ে একতা হইয়া পরম প্রিয়তম বোধে এক মনে তোমাকে পাইবার জন্ম বিবিধ চেক্টা করিয়া থাকে। অথবা, ছুমি সর্বাপেকা আত্মীয়। সেইজভ[্] পিতামাতা, ভ্রাতাভগিনী, জ্ঞাভিবাদ্ধব, সকল স্বাস্থীয়ে একত দনবেত হইয়া, দমভাবে তোমার প্রাপ্তিকামনায় পরমধ্যাসবান্ হয় ৷ আবার, লংসারে সকলে সকলের আত্মীর হইতে পারে না; বিশেষতঃ আমি ঘাহারে আত্মীয় বোধ করি, আমার বিপক্ষ হয় ত তাহারে সেই কারণে অগ্রাহ

থাকে। কিন্তু ভোষার সন্থন্ধে সকলের সমভাব ও সমান পক্ষপাত। কেন না, তুমি সকলেরই আত্মীয়, এবিষয়ে শব্রু থিত্রে প্রভেদ নাই। শব্রু-মিত্র সকলেই ভোষাকে পাইবার জন্য সমান বত্র ও সমান আয়াস অবলম্বন করিয়া থাকে। আমি ভোষাকে বারংবার নমন্ধার করি।

হে নিত্যজীব-নিত্যজ্ঞানপূর্ণ-পরম্পিত! লোকে তোমারে জানিবার জন্ম যতই যত্নীল হয়, ততই তাহার জানের পর জ্ঞান ও বিজ্ঞানের পর বিজ্ঞান প্রাত্নভূতি হইয়া, উন্নতির পর উন্নতি বিধান করে। সংসারে এবিষয়ে দৃষ্টাস্তের অভাব নাই। প্রতি-দিন প্রতিক্ষণে সহজ্র সহজ্র নিদর্শন জান্ধল্যমান क्राप्त पर्मनत्गाहत इहेशा थाटक । भृथिवीत भत्र वर्ग, স্বর্গের বৈকুণ্ঠ, আবার পৃথিবীতে মৃত্যু, স্বর্গে অমৃত ও বৈকুঠে অভয় আছে ; এ সকল কাহার স্থাই, কাহার আবিষ্কার ও কাহার বা গবেষণার ফল গ লোকে তোমারে পাইবার জন্ম পরম আগ্রহে टाकी कतिया, अन्य उत्तरम उत्तरम अवनिविक्तारनत ममूनरय ঐ সকল উত্তরোভর উন্নতি অধিকার করে। তুমিই তাহাদের পুরস্কার জন্ম ঐ দকলের যথা-ক্রমে স্মষ্টি করিয়াছ। অভএব ভোমাকে বারংবার নমস্কার করি।

হে পূর্ণাতিপূর্ণ পরম মহান্! লোকে বলে, চন্দ্র, দূর্য্য ও অগ্রিইহারা স্বতন্ত্র পদার্থ এবং জল, আকাশ ও ভূমি প্রভৃতি যেমন, ইহারাও তেমনি এক একটি বস্তু। কিন্তু একথা কথনই সত্য ও সঙ্গত নহে। কেন না, ইহারা সামাভ্য স্বতন্ত্র পদার্থ হইলে, প্রতিদিন কিরণমালা ও তেজঃপুঞ্জ বিকিরণ করিয়া, এতদিনে অভাভ্য সামাভ্য পদার্থের ভায় ইহাদের কয় হইয়া যাইত। কিন্তু যুগের পর যুগ অভীত হইয়া যাইতেছে এবং অক্টের পর

व्यक्त व्यामित्हरहः उथानि देशामत कर नारे। যাহারা পিতাপুজে শত বৎসর এই চন্দ্র ও এই সূৰ্য্য দেখিয়া এবং এই অগ্নি স্থালিয়া, কোন্ কালে বা কোন্ যুগে মরিয়া গিয়াছে, তাহাদের পুত্র, পোত্ৰ, প্ৰপোত্ৰ, বৃদ্ধ প্ৰপোত্ৰ ও অতিবৃদ্ধ প্ৰপোত্ৰ, অধিক কি. সেই অভিবৃদ্ধ প্রপোত্রেরও বংশাবলী আবার ঐরপে একই চন্দ্র দূর্য্যের দর্শন ও একই অগ্নির দেবা করিতেছে, করিয়াছে ও করিবে, তথাপি ইহাদের কর নাই; ইহার কারণ কি? (উত্তর) জ্যোতির জ্যোতি পরম জ্যোতি তোমার কলেবর হইতে যে বিমল বিচিত্র অন্তুত জ্যোতি নিরবচ্ছিন সমুলাত ও সমুদ্ভূত হইতেছে, তাহারই কিয়দংশ ঘনীভূত বা রাশীকৃত হইয়া, এই চক্র, দূর্য্য ও অগ্নিরূপে প্রাত্নভূতি হইয়াছে। এইজন্য ইহাদের নির্বাণ নাই। শুনিয়াছি, যখন প্রলয় উপস্থিত হুইবে, তখন ইহারা সকল পদার্থের নির্ম্বাণ করিয়া, তোমার শরীরে আশ্রয় লইবে। আবার প্রলয়ের অবদানে তোমার ইচ্ছা ও আজ্ঞার সহিত প্রান্নভূতি হইয়া, **এইরূপে স্ঞ্রি** করিবে। হে পরমপূর্ণ! এইরূপে জ্যোতিতে একাধারে সন্তাপন, দহন ও আপ্যায়ন পরস্পর-বিরুদ্ধ এই তিন ভাব সর্ববদা বিদ্যমান ইহা অপেকা তোমার মহতু বা মাহাত্ম কি আছে • অভএব আমি ভোমাকে নমকার করি। ভূমি প্রদন্ধ হইয়া, আমাকে ঐ জ্যোতিঃ প্রদর্শন কর। 👌

হে সত্যপুরুষ! তুমি গহনে, গহুরে, পর্বক্তে, প্রান্তরে, রণে, বনে, জ্বলে, অনলে, কুটারে প্রাসাদে ভবনে হৃদয়ে আত্মায় ফলতঃ সমস্ত বস্তুসমেত অনস্ত ব্রহ্মাণ্ডের প্রত্যেক অণুতে সর্বদা বিরাজ করিতেছ; একক্ষণও বিরহিত নহ। এইরপে ভূমি নর্বদা সর্বত্তে আছ, বলিয়াই [ব্রক্ষাও অবস্থিতি করিতেছে। যেমাত্র তোমার অধিষ্ঠানবিরহিত হইবে, সেইমাত্রই সমস্ত ঘণায়-মান হইয়া, কোখায় লয় পাইবে,কে বলিভে পারে ? তোমার ঐরপ অধিষ্ঠানবিরহই প্রলয় বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে। দারুণ প্রলয় দময়ে ভোমার এই কেলিগৃহ ব্রহ্মাণ্ডের রত্বপ্রদীপ স্বরূপ সুর্ব্য,চন্দ্র ও অগ্নি যথন সহসা নির্বাণ হইয়া, ভোমাতে অন্তর্হিত হয় তখন 'যে ঘোরতর গাঢ় নিবিড় অন্ধকার কোণা হইতে প্রাত্নভূতি হইয়া সমস্ত আচ্ছন্ন ও অদৃশ্য করে, তাহা কে বলিতে পারে ? হে বিভো! তোমার স্বচ্ছ ফুন্দর বিশ্ব-বিগারী নিত্য উচ্ছু দিত অনন্ত জ্যোতি ব্যতিরেকে ঐ অন্ধকার নিরাকরণের উপায়ান্তর নাই। মনীযি-গণ বলিয়া থাকেন এবং আচার্যোরাও শিষকে উপদেশ করেন যে, রোগ, শোক, পরিতাপ, বধ, वस्त विशान, विशव ज्ञा ज्ञवनान ध्यमान त्यांह, অজ্ঞান জোধ, মদু অন্নতা, আধি, আত্মানি, উন্মাদ, প্রলাপ, ইন্দ্রিয়প্রাবল্য, অসূয়া, ঈর্য্যা দ্বেষ, হিংসা, অহঙ্কার, উৎসেক, অভিমান, ক্রোধ, অমর্থ, মিথ্যা, নরক, লোভ, কাম, তৃঞা, বিষয়,ভূন্ট-গ্রহ, তুর্দেব, তুরদৃষ্ট ও মৃত্যু ইত্যাদি মৃত্যুগণ নামক উপদ্রব সমস্ত উল্লিথিত প্রলয় অন্ধকারের সাক্ষাৎ অংশ। স্বতরাং তোমার প্রাণময় ও আত্মায় দিব্য জ্যোতির সাক্ষাৎকার ব্যতিরেকে ঐ সকল উপদ্ৰব বিনাশের কোনই মম্ভাবনা নাই। এইজন্য যোগিগণ সমন্তই ত্যাগ ও বৈরাগ্যযোগ অবলম্বনপূর্বক স্থানুস্পার তমঃপারে গমন করিয়া, উল্লিখিত ক্যোতিঃসাধন ও শোকমোহাদির হস্ত অতিক্রম করেন।

হে ভক্তানন্দ : তোমায় তারণ করিলে, হৃদয় ।

পবিত্র হয়: তোমায় মনে করিলে, আত্মা শীতল হয়: ভোমায় কীর্তন করিলে, শরীর স্লিগ্ধ হয় এবং তোমার পরিচর্য্যা করিলে, চতুর্বর্গ সিদ্ধ হয়। আমি তোমায় নমস্কার করি। হে দর্ব-লোকনমস্ত সনাতন জ্বন ৷ ভূমি আত্মার আত্মা, প্রাণের প্রাণ্ মনের মন, বিপদের বিপদ, ভয়ের ভয় ও মৃত্যুর মৃত্যু। দেবগণ অমৃতের জভা ও ঋষিগণ অভয়ের জন্য তোমার উপাসনা করেন। তুমি পর্ম আরাধ্য, পর্ম আত্রয়, পর্ম গতি, পরম কারণ, পরম কর্ত্তা, পরম কার্য্য ও পরম পুরুষ। তোমাকে নমস্কার করি। হে আদ্য! এই সংসার তোমাকর্ত্তক তোমাকে আশ্রয় করিয়া তোমা ছারা তোমা হইতে সমুৎপন্ন হইয়া তোমা-তেই অধিষ্ঠান করিতেছে এবং একমাত্র তোমারই আশ্রিত হইয়া জানযোগের আবির্ভাবে সমস্তই তোমাকে প্রদান করে। অতএব ভূমিই কর্তা, তুমিই কর্ম, তুমিই করণ, তুমিই অপাদান তুমিই সম্প্রদান এবং তুমিই সমন্ধ ও তুমিই অধিকরণ। আবার, আমি ভূমি সে ঐ ইহা এই যে সে ইত্যাদি সমস্তই তুমি। অতএব তুমিই দৰ্বনাম। তোমা ভিন্ন সংসারে নামরূপ কিছুই নাই। অত-এব আমি ভোমার শরণাপন্ন হই।

হে পরমণত্য ! মন যখন তোমার উপাসনায়
গাঢ় সমিবিই হয় তথন প্রাণের ভিতর, হদয়ের
ভিতর ও আত্মার ভিতর অক্সান্তসারে অমৃতের সঞ্চার হইয়া থাকে। এই অমৃত দেবগণেরও হুর্লভ ৷ যে ব্যক্তি একবারহাকে এই
অমৃতের আবাদ অমৃত্ব করে, তাহার নিকট
সংসারের আধিপত্য এমন কি ইন্দ্রভ অতি
তুচ্ছ ও অতীব হেয় হইয়া থাকে। আবার
স্বর্গের কথা কি, অপবর্গও তাহার সামান্য জ্ঞান

হয় ৷ শত শত ব্যক্তি এই অমৃতের জন্ম দৰ্বন ज्यांनी यद्गानी **हरे**या, **करन,** धनरन,शहरन,कानरन, পর্বতে, প্রান্তরে, একাকী বাস করিতেছে। সংসা-রের কোন হুখ, কোন প্রীতি, কোন আমোদ ও কোন আহলাদই তাহাদিগকে আকর্ষণ করিতে পারে না এবং স্বর্গের অমুতও তাহাদিগকে প্রলো-ভিত করিতে সমর্থ হয় না। পাপে তাপে জীর্ণ শীর্ণ ও নিতান্ত সন্তাপসম্পন্ন হত আস্থার শান্তি ও পুষ্টি বিধান পূর্ব্বক তাহাকে তোমার আশ্রয়-চ্ছায়ায় উপস্থিত করিয়া, যাবৎ-কাল নির্বাণস্থ প্রদান করিবার জন্ম ঐ অমৃতের স্পষ্টি হইয়াছে। যে ব্যক্তি ঐ অমতের অধিকারী, দেবগণও তাহার আজ্ঞাকারী হইয়া থাকেন। তাহার স্থান নিত্য আনন্দে, নিত্য সম্পদে ও নিত্য পূর্ণ বিরামে। তাহারই নাম প্রকৃত আত্মারাম। হে আত্মন্! সে র্যক্তি আছার বিমল দর্পণে তোমার সর্ব্বভুবন-लांखन, मर्वकालञ्चभाषन ७ मर्वदलाकवित्याहन, পরম রম্পীয়, পরমানন্দময় ও পরম পবিত্র বিচিত্র মূর্ত্তি দর্শন করিয়া, পদে পদেই যে হুখ, যে শান্তি ও যে তৃত্তি অমুভব করে, সেই হুখ, শান্তি ও তৃত্তি আপনিই আপনার তুলনা; সামান্ত সংসা-রের সামাত্য হুখাদি কিরূপে তাহাদের তুলনা ছইবে ? ভাগ ! তোমারে নমস্কার।

হে পূজ্যাতিপূজ্য ! শুনিয়াছি,ত্মি স্বীয় বিরাট
নস্তকে ঐ অনস্ত বিস্তৃত বিপুল আকাশ ধারণ
করিতেছ। সেইজন্য উহার পতন নাই; সেই
জন্য উহা নিরবলম্ব শুন্যে শুন্যেই স্বম্থিতি ক্রেরিতেছে। যুগের পর যুগ, প্রালয়ের পর প্রশার,
কল্পের পর কল্প অতিবাহিত হইয়াছে, ইইতেছে
ও হইবে, তথাপি উহার পতন হয় নাই, হইতেছে
না ও হইবেও না। চক্র সূর্য গ্রহ নক্ষত্র বায়ু

ইত্যাদি সৃষ্টির হিতিসাধন পদার্থ সকলের অনা-য়াসে ত্থসজ্জে ও পরস্পরের অবিরোধে গতি-বিধি হইবে, এই আশয়েই ডুমি ঐ আকাশের রচনা করিয়াছ। উহা তোমার বিরাট রূপের ঐকদেশিক আভাস মাত্র। এই জন্য তোমাকে মহাকাশ শব্দে নির্দেশ করে। হে মহাকাশ। ঐ আকাশ কি বিস্তৃত ৷ অপার সমুদ্র সহিত অসীম পৃথিবীও স্বয়ং উহার পরিচ্ছেদ করিতে সমর্থ হয় না। সর্বভুবনপ্রকাশক চন্দ্র ও সূর্য্যও অনুবৎ উহার একদেশে অবস্থিতি করিতেছে, যেন বহ্বায়ত প্রাদাদের এক কোণে নির্বাণোন্মুখ একটী কুদ্র দীপ মৃত্র মৃত্র স্থালিতেছে। যাহারা এই আকাশ পরিদর্শন করিয়াও, তোমার মহাকাশ-স্বরূপের পরিচয় করিতে দমর্ম হয় না, তাহাদের জীবন কি বিভন্নিত! আমি যেন ঐ সকল জীবা-ধমকে চিরকালই য়ুণা করিতে শিথি। তোমায় নমস্কার।

হে বিরাট ! চন্দ্র তোমার স্থান্থি মুখজ্যোতিঃ, সূর্য্য তোমার দৃষ্টি, অগ্নি তোমার তেজ ও বায়ু তোমার নিম্বাদের সূক্ষাংশ এবং পুষ্প সকলের সৌরভ ও সৌন্দর্য্য তোমার প্রসমতার আংশিক অবতার ৷ চন্দ্র ও সূর্য্যের রশ্মিতে রস সঞ্চার করিয়া, তুমি প্রতিদিনের অন্ধ সংস্থান করিয়া রাখিয়াছ; তোমার অক্ষয় ভাণ্ডার চিরকালই পূর্ণ; যুগের রর যুগ অতীত হইতেছে এবং তৎসহকারে কোটি কোটির পর কোটি কোটি অনাহারী জন্মিতেছে, তথাপি ভাণ্ডার পূর্ণ রহিয়াছে ৷ সমস্ত সংসার একত্র হইয়া, শত হস্তেও ব্যয় করিলে ক্ষয় হইবার সম্ভাবনা নাই ৷ আমি তোমার তোমার শরণাপন্ন হই ।

हेळारवनमहाभूबारनभूकरवालमदिधिनाम सस्विश्म व्यक्षात ममाश्च ।

সপ্তবিংশতিতম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, অধুনা আপনার ও অস্তের মার্চ্জননালী রক্ষাবিধি বর্ণন করিব। ঐরপে রক্ষা-বলে মনুষ্যের সকল হুঃও দূর ও হুও সম্পন হইয়া থাকে।

'ওঁ পরমার্থ পুরুষকে নমস্কার। তিনি মহাত্মা, পরমাত্মা, সর্কব্যাপী, অরূপ ও বহুরূপ। সেই নিক্ষাম ও শুদ্ধস্বরূপ ধ্যানযোগরত পুরুষকে নমস্কার করিয়া, যাহা বলিব, তাহা সিদ্ধ হউক।'

'তিনি বরাহ, তিনি নৃসিংহ, তিনি বামন, তিনি মহামুনি,ভাঁহাকে নমস্কার করিয়া যাহা বলিব,তাহা সিদ্ধ হউক।'

'তিনি জিবিজম, তিনি রাম, তিনি বৈকুণ, তাঁহাকে নমস্কার করিয়া, যাহা বলিব, তাহা দিদ্ধ হউক।'

'হে বরাহ! হে নরসিংহেল! হে বামনেশ! হে ত্রিবিক্রম! হে হয়গ্রীবেল। হে সর্কেল। হে হুষীকেল। অভভ বিনাল কর এবং চক্রাদি অথণ্ডিত-প্রভাব-সম্পন্ন অপরাজিত আয়ুখচতুষ্ঠীয় হারা সমুদায় ছুই হরণ কর। হে মহাবিক্রো! অমুকের ও আমার সমস্ত হুরিত বিনাল ও সর্কে-প্রকার কল্যাণ বিধান কর এবং পাপ করিলে মৃত্যু, বন্ধন, আর্ত্রি ও ভয় ইত্যাদি রূপ যে বিষম ফল ভোগ করিতে হয়, তাহাও বিনাল কর। পরের অনিই করিবার আশয়ে যে অভিচার প্রয়ো-জিত হয় এবং সংক্রোমক-ব্যাধি-গ্রেক্ত পুরুষ্থের সহবাসনিবন্ধন যে মহারোগ প্রান্তভূতি হয়, জরা-প্রভাবে তৎসমন্ত কর্জ্বিত কর।

'ওঁ বাস্তদেবকে নমসার। কৃষ্ণ ও খড়গীকে নমস্কার, পদ্মপদাশলোচন ও কেশবকে নম-

কার এবং আদিচক্রী ও আদিম**হাভূতকে রম**কার। ষিনি পদাপরাগশতিম পীতবর্ণ মির্দ্ধান বস্ত্র পারিধান করেন, ঘিনি ভুর্নিবার ভুন্ন জ্বা জ্বা করেন এবং যিনি হৃদয়ন্থিত মহার্ছ মণিয়া সমুদ্দল প্রতিভায় সমস্ত অন্ধকার হরেন, তাঁহাকে সম্বন্ধার। বাঁহার প্রসাদে অমৃত ও ক্রোবে মৃত্যু, বাঁহার হাস্তে অভয় ও জ্রকুটিডে মহাভয়, বীহার আজায় বায়ু বহিতেছে, অগ্নি ছলিভেছে, মেঘ ধর্বিভেছে. मुर्या हिलाएक, हता छिपिएक ध्वर नम नहीं প্রবাহিত ও পর্বতাদি অফিলিত विद्राहि : তাঁহাকে নমস্কার। তিনি বরাহমূর্তী ধারণপূর্বক হুবিশাল দুশনাত্রে পুথিবীকে উদ্ধার ক্রিয়াছেন এবং অদ্যাপি তাঁহাকে ধারণ করিয়া আছেন। তাহাতেই পৃথিবী রদাতলগানিনী ইইভেছেন না এবং তাহাতেই পৃথিবী সর্বংস্ ইইয়া, বিৰিধ कीरवत्र व्यथिष्ठीकी स्टेब्राह्म । क्रिनि द्यत्यम् আত্মময় ও মনোময়: ভাঁহাকে নমস্কার। তিনি মহাযজ্ঞবরাহ ও শেষনাগপর্যাক্তে কারণললৈলে শয়ন করিয়া, যোগনিদ্রা অসুভব করেন। ভাঁছার क्य नार, बता नारे, जम नारे, युष्टा नारे, चारि नारे, याधि नारे, क्य नारे, कावना नारे। किनि নির্বিকার, নিরঞ্জন, নিঞ্চাঙ্গ, নির্লিপ্ত ও নিত্য সভ্য মহাপুরুষ। ভাঁহাকে নমস্কার।

ওঁ কারণশরীরীকে নমকার। তিনি আমাদের সকলের বিধাতা ও পরম পিতামাতা।
তিনি ভূত্তমঃ সমস্ত প্রসব করিয়াছেন। তাঁহার
তেজঃ পরম বরণীয়। তিনি আমানের সকলের
বৃদ্ধি প্রেরণ করিয়াছেন এবং মনের সন্থায় অদ
প্রত্যক্ষ বিধান করিয়া, আমানিগকে সংসারের
উপযোগী করিয়াছেন। ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক
এই চতুর্বর্গ তাঁহারই বিহিত ও প্রয়োজিত।

স্বৰ্গ ভাঁহা হইভেই প্ৰাত্ত্ ভ ইইয়াছে। দেবগন সেই ভূমাপুক্লবের প্ৰদাদবলে আত্মপ্ৰদাদ লাভ করিয়া,উল্লিখিত দিব্য প্ৰাদাদে বাদ করিতেছেন। নন্দনকানন কামধেকু, অমৃত, উচ্চৈঃপ্ৰবা, প্ৰয়াবত ও লক্ষ্মী ও সকল ভাঁহার সাক্ষাৎ প্ৰদাদসক্ষপ দেব-গণের চিরভোগ্য ইইয়াছে; ভাঁহাকে নমস্কার।

হে দিব্যসিংহ। তোমার কেশাগ্র তপ্তকাঞ্চনছুয়ভিবিশিন্ট, লোচনবুগল প্রস্কলিত পাবকপ্রতিম,
নধরসমূদার বজ্রাধিকথরস্পর্শ, গর্জন প্রলয়কালীন
শত-সংবর্তক জলদংধনি সদৃশ এবং তোমার
বিক্রমের পার নাই, পরাক্রমের সীমা নাই,
তেজের উপমা নাই ও বলের ইয়ন্তা নাই।
তোমার দংখ্রী সকল কুডান্ডের হেতি অপেক্রাও
তীক্ষ এবং জিহ্বা সাক্রাৎ মৃত্যুর জিহ্বা অপেক্রাও
ভয়ন্তর ও প্রলয়কালীন সর্বসংহর পাবকশিখা
অপেক্রাও ভীষণ; তোমাকে বারংবার নমস্কার
করি।

হে কল্পশন্তদয়ানন্দ বামনদেব ! তুমি অতীব কুন্তদেহে বলিবজ্ঞ সমস্ত বিশ্ব ব্যাপ্ত করিয়াছিলে। আহা, স্বর্গ মর্ত্ত্য পাতাল একত্র হইয়াও তোমার সেই কুন্তদেহের পর্য্যাপ্ত হয় নাই ! তুমি অনায়াসেই নদ, হ্রদ, সাগর, পর্বত, খীপ, কানন, প্রাম, নগর, রাজ্য ও জনপদ সমস্ত আচহন ও ব্যাপ্ত করিয়া ঐ কুন্তদেহের মহান্ মহিমা প্রদর্শন করিয়াছিলে। তাহাতে কি দেব, কি দানব, কি ঋষি, কি মহর্ষি, কি পিশাচ, কি গন্ধর্বে, কি নাগ,কি যক্ষ, কি উরগ, কি পতাগ, কি কিমর, কি অভার দকলেই মোহিত হইয়াছিল। হে অতিহ্রস্ব ! ঋক্ যক্ষ্ ও সাম এই বেদত্রেয় তোমার ভ্রশ, তোমাকে নমস্কার।

ভূমি স্বয়ংই স্বর্গের পর স্বর্গ বৈকুঠের পর বৈকুঠ এবং গেলোকের পর গোলোক। ভোমা ভিন্ন অন্য অর্গ, বৈকৃষ্ঠ বা অতন্ত্র গোলোক নাই।
বাঁহারা ভোমার সন্তম্ম সিংহাসনের সামিধ্যে
বিচরণ করেন, ভাঁহারাই দেবতা। ভঙ্কির আর
কেহই দেবপদের বাচ্য হইতে পারে না; যিনি
ফ্রাপ দেবগণের প্রভু, তাঁহাকেই ইন্দ্র কহে।
স্তরাং চণ্ডালও ভোমার সামিধ্যরূপ প্রসাদ প্রাপ্ত
হইলে দেবশন্দে বাচ্য হয়; ভাহাতে আর
সন্দেহ কি ? ভোমাকে নমস্কার।

হে বরাহ! তোমার দংখ্রী অতি বিশাল তীক্ষ ভয়াবহ ও শান্তিময়। তুমি তহ্বারা আমার অশেষ কলুষ নাশ, সমস্ত দোষ বিনাশ ও সমুদায় পাপকল মর্দ্ধন কর—মর্দ্ধন কর—মর্দ্ধন কর

হে নরসিংহ। তোমার বদন অতি ভয়াবহ;
দশনপ্রান্ত প্রজ্বলিত-পাবক-প্রতিম; কেশরছটা
বিচ্যুদ্বটার স্থায় যোরায়িত এবং তোমার চীৎকার
রোদোরক্র বিদারণ করিতে সমর্থ। তুমি সেই
যোর গভীর চীৎকারধ্বনি দারা আমার ও ইহার
হৃষ্ট সকল ভয় কর, ভয় কর।

হে বামনরপধারী জনার্দন! ঋক্ যজু ও সামগর্ভ বাক্যপরত্পরা দারা সমস্ত ছঃখ শান্তি কর।
হে গোবিন্দ! ঐহিক জ্বর, দাহিক জ্বর, জিনিবসজ্বর, চাতুর্থক জ্বর, সভত জ্বর, দোষজ্বর, সনিপাতজ্বর, আগস্তুক জ্বর এবং অস্তান্ত জ্বর আন্ত শান্তিক্বর এবং সমস্ত বেদনা ছেদন কর ছেদন কর।
হে চক্রধের! হে পুরুষোত্তম! হে গালাধর!
হে বিফো! নেত্রত্বংখ, শিরোত্বংখ, উদরজ্বনিত
ছঃখ, অন্তঃখাস, অতিশাস, পরিতাপ, বেগপু,
ভহারোগ, জাণরোগ, অভিযুরোগ, কুঠরোগ,
ক্ষয়রোগ, কামলাদি রোগ, অতি দারুণ প্রমেহরোগ, ভগন্দর, অভিসার, মুধরোগ, জ্বারী মৃত্র-

কছে এবং অন্তান্ত দারুণ রোগ সকল বিনাশ কর বিনাশ কর। বায়ু হইতে পিত্ত হইতে, কর হইতে এবং সন্নিপান্ত অর্থাৎ এই ভিনের পরস্পার নিলন হইতে যে সমন্ত রোগ সমৃত্ত হয় সেই সকল রোগ, আগন্তুক রোগ ও বিস্ফোট প্রভৃতি রোগ সম্দায় বাস্থদেব কর্তৃক অপমার্জ্জিত হইয়া একবারেই দ্রীভূত এবং বিষ্ণুর নামোচ্চারণমাত্তে ও তদীয় চক্রের আঘাতে নিংশেবে ক্ষয় ও লয় প্রাপ্ত হউক। আমি সত্য সর্ভ্য বলিতেছি, অচ্যুত, অনস্ত ও গোবিন্দের নামোচ্চারণমাত্তে ভীত, হইয়া, ঐ সকল রোগ বিন্ট হইয়া থাকে।

আমি জনাৰ্দ্দনের নাম কীর্ত্তন করিতেছি। তিনি ऋावत विष, कक्षम विष, कृत्विम विष, मटखाद्धव विष, নখোন্তববিষ, আকাশপ্রভব বিষ, লুডাদিসমূদ্র ড বিষ ও অন্যান্য ক্লেশজনক বিষ সর্ববতোভাবে বিনাশ করুন। দেবগণ তাঁহার প্রানাদে অমৃত ভোগ করেন। আমার ও আমার প্রতিবেশী মাত্রের সেই অমৃত ভোগ হউক এবং সকল ভয়, দকল রোগ, দকল তাপ ও দকল ছুঃখ নিঃশেষে দুর হউক। কেন না. আমি বারংবার তাঁহার নামোচ্চারণ করিতেছি। সেই বালক বিষ্ণুর চরিত কথা গ্রহ, প্রেডগ্রহ, ভাকিনীগ্রহ, বেতাল, পিশাচ, গন্ধর্কা, রাক্ষদ, শকুনী ও পৃতনাদিএছ, বৈনায়কগ্ৰহ, মুখমণ্ডী, জুর রেবভী, হন্ধা রেবভী, বুদ্ধকনামক এছ ও অভ্যুতা মাতৃত্ৰহ সমুদায় विनाम कलक। सुनिः एइत मृष्टिमार्ट्स द्वा वानक ও यूवा अस्मार्टिंग मध र्छेक। अभ-তের কল্যাণকর মহাবল করালান্য ভগবান নর-সিংহ সর্বদাই গ্রহ সকল নিঃশেষিত করুন। হে মহাসিংহ হে নরসিংহ! তোমার মুখমগুল অগ্নিলিখারালির ন্যায় উচ্জুল। এবং ভূমি

নকলের ঈশর। এই নকল ভক্ষণ কর, ক্ষেত্র কর।

হে অগ্নিলোচন। তোমার নাম কার্ত্তনমাজেই আমাদের নকলের এই নকল নিংশেষিত ক্ষেত্র ক্রিয়া
মে রূপে নথর প্রহার প্রহারর অন্তর্বরের হল্প্রকন্দর বিদারিত করিয়াছিলে নেইরূপে ক্রমন্ত
গ্রহ বিনাশ কর বিনাশ কর।

পরমাত্মা বিশ্বাত্মা জনার্দ্দন রোগ সকল, মহোৎ পাৎ সকল, মহাগ্রহ সকল, জ্বুর ভূত সরুল, নারুণ গ্রহপীড়া সকল ও শস্ত্রক্ত দোষ সকল সমূলে উন্মূলিত করুন। তিনি অমৃতের আকার, অভ-য়ের আধার, পরম কল্যাণের হেতু, আত্মপ্রসালের নিধান ও সমুদায় অথের বিধাতা। ভাছা ছইতে সকল-ভুবন-প্ৰকাশক জ্যোতি আদিয়াছে, সকল-ভু:খ-বিনাশক দয়া আদিয়াছে, সকল-ভয়-নিরাসক বৈরাগ্য আসিয়াছে এবং সকল বিরামবিধায়ক শান্তি আদিয়াছে। এই দকল আছে বলিয়াই সংসার আজিও রহিয়াছে। যদি তিনি প্রাণ**রূপে**, আনন্দরপে, চেতনারপে, জ্ঞানরপে, ধর্ম ও সত্য-রূপে এবং শান্তি ও ন্যায়রূপে বিশ্বস্তপতে মা থাকি-তেন, তাহা হইলে, কেই বা বাঁচিত, কেই বা থাকিত, কেই বা আনন্দ বোধ করিন্ত এর: কৈই বা হুখের বার্তা অবগত হুইছে 🖟 ভাঁহার আক্রায় বর্গে যেমন অমৃত গৃহে গৃহে বিচরণ করে, ইছ্-লোকে মৃত্যু তেমনি ভাঁহার ভয়ে ভীত হইয়া বারে হারে ভ্রমণ করিতেছে। তিনি **আয়ানের** সকলের সেই মৃত্যু মাশ করিয়া কছুভবিধান क्ट्रन ।

হে দেববর । হে অচ্যুত ! াছে বাহ্নদেব । তুমি জালামালাভিভীষণ াছ্মদৰ্শন চক্র নিক্ষেপ করিয়া, দকল সুক্ত শান্তি কর। হে হুদর্শন । ভোমার শিখা অতি বিশাল, রব অতি প্রচণ্ড এবং

তোমাকে দেখিলে নিরতিশয় ভয় উপস্থিত হয়।
তুমি তমোগুণের অবতার হিংসা ছেষ প্রভৃতিরস্বরূপ দৈত্য ও দানবমগুলে নিক্ষিপ্ত হইয়া, তাহাদের সমূল ধ্বংস করিয়াছিলে। তুমি বাস্থদেবের
সাক্ষাৎ শান্তিময় ক্রোধ। এই ক্রোধে যুগপৎ
য়ত্য ও জীবন বাস করিতেছে। তুমি ঐ মৃত্যু
রূপে সমস্ত ভূউবিনাশ কর, বিনাশ কর। তোমার
প্রভাবে রাক্ষ্য সকল ক্ষয়প্রাপ্ত হউক।

বিশালা নৃসিংহ গভীর গর্জনপূর্বক পূর্বব, পশ্চিম, উত্তর, দক্ষিণ সকল দিকেই রক্ষা করুন। তাঁহার ঐ ঘোর গর্জনে দকল দিক পূর্ণ হইয়া থাকে এবং ভূত, বেতাল, পিশাচ, ডাকিনী ও শন্মিনী প্রভৃতি দেই গর্জন শ্রবণে দূরে পলায়ন করে। ভনিয়াছি নৃসিংহের চীৎকারশব্দে অগু-कंगेर विमीर्थाय इरेशां इल ; रेखां मि दमवंशत्वत হাদয়ৰম্প উপস্থিত হইয়াছিল; প্ৰগভীয় পাতাল-রক্ষ প্রপুরিত হওয়াতে সমস্ত নাগলোক বহুবার বিচলিত হইয়াছিল: यसः (गर्मांग व्यनस्त्रद्र মস্তক ঘূর্ণায়মান হইয়া, পুথিবী স্থালিত হইবার উপক্রম হইয়াছিল; দাগর দকল উচ্ছালিত ও উদ্বেল হইয়াছিল; পর্বত সকল কম্পিত হইয়া-**ছिण**; मभीद्रश अनयकानीनवर महात्वरश अवाहिल হইয়াছিল এবং আরও কত কি রোমহর্ষণ তুমুল ব্যাপার সংঘটিত হইয়াছিল; সেই নৃসিংহ আমাদের সকলের রক্ষা করুন।

ভগবান্ বছরপী জনার্দন বর্গে, মর্ত্ত্যে, অন্ত-রীক্ষে, পার্থে, পশ্চাতে, সন্মুথে, সকলদিকে রক্ষা কর্মন। তিনি সর্বব্যাপী,শর্ববগামী,সর্বজ্ঞ,সর্বদর্শী, সর্বোত্মা, সর্বনাম, সর্বব্যরপে, সর্বন্ধ, সর্বভাবন, সর্বেশ্বর, সর্বব্যাকাশ, সর্বজ্ঞবা ও সর্বাসম্পাদের হেডু। তাঁহার নান নাই, কিন্তু তিনি সর্বনাম;

তাঁহার রূপ নাই, কিন্তু তিনি দক্তরপ ; তাঁহার গতি নাই, কিন্তু তিনি সক্র্পতি। তিনি দেবাহুর সকলের রক্ষা করেন। তাঁহার শ্মরণমাত্রে সকল পাতক দূর ও সকল হুথ সমুংপন্ন হয়, সকল সম্পদ ও স্কল ঐশ্ব্যা সমাগত হয় এবং স্কল বিশ্ব ও সকল বিপদ দূর হয়। তিনি আমাদের मकल्लद्र मकल हुके नांग कब्रन, नांग कब्रन। বেদান্তে তাঁহাকে পরমাত্মা, পরমজ্যোতি, পরম দত্য, পরমকারণ, পরমপুরুষ, পরম জ্ঞাম ও পরম-পূর্ণ বলিয়া থাকে। তিনি সকল ছুষ্ট বিদুরিত করুন। তিনি দেবলোকেও যজেখর বিষ্ণু বলিয়া পরিপূজিত হয়েন। তিনিই যজা, তিনিই যজেশ তিনিই যাজক, আবার তিনিই যাজ্য। আমি যাহা যাহা বলিলাম, বলিতেছি ও বলিব, তৎ-শমস্তই তাঁহার প্রদাদে ও অমুগ্রহে গুণিদ্ধ হউক, অর্থাৎ অমুকের কল্যাণ হউক, আমারও মঙ্গল হউক এবং অমূকের শান্তি হউক, আমারও পরম স্বস্থি সম্পন্ হউক।

সেই বাহ্ণদেবের শর্মার হইতে কুশ সমুখিত হইরাছে। আমি তন্ধারা নির্মান্থন করিলাম। অতএব আমাদের সকলেরই শান্তি ও পরম মঙ্গলাভ এবং সমুদায় চুক্ট প্রশমিত হউক। ব্যাং স্বর্ধ সংহ্র কাল ও ব্যাং ভয়ও জাঁহাকে ভয় করে এবং তাঁহার জভঙ্গিতে মহাপ্রলয় বাদ করিয়া থাকে। তাঁহার ভয়ে ভীত হইয়া দিবাকর তাপ দিতেছেন, এবং অ্মি প্রজ্বলিত ও বায়ু প্রবাহিত হইতেছেন। তিনি কুভান্তের কুভান্ত ও কালের কাল। সংসারে- কানিবার, ভনিবার, বলিবার, ভাবিবার ও চিন্তিবার যাহা কিছু আছে, তিনিই তৎসমুদায়। তিনিই অধ্যাক্স, তিনিই অধিদেব। তিনিই ক্র্ডা,

তিনিই কার্য্য ও তিনিই কারণ। তাঁহা ভিন্ন किছूरे नारे; किन्छ जिन नकन रहेरा जिना তিনিই স্ষ্টি করেন, পালন করেন, আবার তিনিই শংহার করিয়া থাকেন। সংসারের যাহা কিছ তিনিই তৎসমূদায় ;. কিন্তু তৎসমূদায় কখন তিনি নহে। তিনি চকু দিয়াছেন, দেখিবার পদার্থ দিয়াছেন, আবার যাহাতে দেখা যায়, সেই আলোক দিয়াছেন এবং আলোকের অক্ষয় ও অনন্ত ভাণ্ডার সুর্যাকে দিয়াছেন। এইরূপে তিনি কোনবিষয়ে কোন জংশেই আমাদের কোনরূপ অভাব রাখেন নাই। স্থতরাং তাঁহার নিকট আমাদের কোনরূপ প্রার্থনা করিবার আবশ্যক নাই। আমরা নিজের দোষেই কেবল অভাব ও ক্লেশ অনুভব করি। আমাদের কুধা হইবে বলিয়া নানাপ্রকার অপূর্ব্ব ও উপাদেয় থাদ্যদ্রব্যের সৃষ্টি করিয়া, তিনি আপনার অপার করুণার পরিচয় প্রদান করিরাছেন। এইরূপ, আমাদের তৃষ্ণা হইবে বলিয়া তিনি হুরদ পানীয় প্রচুররূপে সর্বত্য সমিহিত করিয়াছেন। বৃদ্ধির দোষে ও কর্ম্মের বিপাকে আমরা রোগে পড়িব বলিয়া, তিনি নানাজাতীয় ঔষধের ব্যবস্থা করিয়া রাখিয়া-ছেন। এই সকল চিন্তা করিলে, মন আপনা হইতেই কৃতজ্ঞ ও উৎহাক হইয়া, তাঁহার অমুগত হইতে ধাৰ্মান হয়। তিনি আমাদের সকল বিশ্ব ও সকল বিপদ অপবাহিত করুন।

তিনি যখন যজ্ঞবরাহরূপে অবতীর্ণ হন, তথ্য চারি বেদ টাছার চারি দন্ত হইয়াছিল,সূর্য্য ও চক্ক তাঁহার দুই নয়ন হইয়াছিল;গভীর ঝঞ্চানিল তাঁহার নিখান হইয়াছিল; বজের ভীষণধ্যনি তাঁহার সর্বলোকভয়াবহ ফুৎকার হইয়াছিল; প্রশন্ত্র-কালীন ছভাশনের শিখা সকল তাঁহার জ্ঞান হইয়াছিল; পৃথিবী তাঁহার পাৰবুগলের প্রবার্থার হইয়াছিল; হুবিশার রোদার প্রতাহার করি হইয়াছিল; করি আকাশ তাঁহার করি হইয়াছিল; করি তাঁহার প্রথমবারি হইয়াছিল; করি প্রত্যাতির তুই গও হইয়াছিল এবং প্রান্থিও কমা তাঁহার হুবিমল দৃষ্টি ইইয়াছিল। করিপ্রথ ও দেবগণ বেদবাক্যে তব করিতে করিতে তাঁহার অনুগামী হইয়াছিলেন। দেই আদিবরাহ আমাদের রক্ষা করুন, রক্ষা করুন। তাঁহার শরীরহ্ম পর্মপ্রতি রোম সকল কুশরূপে প্রান্থ ত হইন্যাছে। এইজন্ম কুশের নাম প্রতি।

ভগবান গোবিন্দ অপমার্জন করুন। তিনি নর তিনি নারায়ণ, তিনি ধাতা, তিনি রিশাতা এবং তিনি সকলের পর্য পিতা ও পর্ম পাড়া। আমরা ডাঁহার জপ করি ও ম্যান করি। তৎ-প্রভাবে আমাদের সকল তুঃখের একবারেই শান্তি হউক। তিনি শান্তিস্বরূপ পরব্রহ্ম। সকলকে সর্ব্বদা হথ বিতরণ করেন। তাঁছার দৃষ্টিতে অনবরত অমৃতক্ষরণ হইতেছে; ভক্তগণ সেই অয়তপানানন্দে দৰ্মদাই মোহিত ও বাহ-ক্ষানশূর। এইজয় হ্রহু:খ, লাফালাভ, ইকী-নিউ, ভাষাভাষ সমস্তই তাঁহাদের সমান জ্ঞান হয়। এইজন্ম শক্রমিক, সান্ধীয় সনান্ধীয় 🗳 নিজ্পর কিছতেই তাঁহাদের প্রভেদ বা অনুমঞ্জান নাই। এইজন্য তাঁহারা বিষ অমৃত ও ভয় অভয় সমান বোধে তুচ্ছ করিয়া থাকেন। এইজন্ফ স্বর্গের ঐশব্য ও পৃথিবীর সাজাজ্য কিছুই জাঁহাদের চিত আকর্ষণ করিতে প্রাত্তে নাক্ত দেই ভক্তগণ আমা-एत्र क्षिक कृशामृष्टि कक्रम । च्छाकृष महाग्र **र**हेल ভগবানকে প্রাপ্ত হওয়া যায় ৷ যেহেতু, ভক তাঁহার প্রাণ। সেই প্রাণে আফার্দের প্রাণ সমু-

প্রাণিভ হউক। ভাষা হইলেই, সামাদের সকল ছুঃথ দূর ও সকল শান্তি লাভ হইবে।

এই অপ্যাৰ্জনরপ শস্ত্র, সকল রোগানি নিবা-রণ করে। আমিই হরি এবং কুশই বিফু। আমি এই কুশবারা তোমার রোগ সকল বিনন্ট করিলাম।

> ইত্যারেরে মহাপুরাণে কুশাপনার্জননামক স্থাবিংশভিত্য অধ্যার স্বাপ্ত।

অফীবিংশতিতম অধ্যায়।

অগ্রি কহিলেন, বাহুদেবাদি দেবগণের আলয় নির্মাণ করিলে, যে ফলাদি প্রাপ্ত হওয়া যায়, অধুনা তাহা কীর্তন করিব। যে ব্যক্তি দেবাল-রাদি নিশ্বাণের অভিলাষ করে: তাহারও সহত্র-**জন্মের পাপকালন হই**য়া থাকে। বিশেষতঃ এক-মাত্র সত্ত্রপময় ভগবান্ বাহ্নদেব হইতেই, সকল কল্যাণ সমৃত্ত হয়। সূর্য্য বেমন তেজনীর क्षधान, शृद्ध दिवन म्लर्गनाम् लतार्थ जकरतन्त्र क्षधान, বিনর বেমন সদ্তাণের প্রধান ও ভগবানের আরা-ধনা যেমন দকল অনুষ্ঠানের প্রধান, প্রমান্তা বাস্থদেব তেখনি সকলের প্রধান। তিনিই সক-লের আর্থা, প্রাণ, মন, বৃদ্ধি ও হৃদয়স্বরূপ। এই নেহ জড়পিওযাত্ত। আত্মারূপী হরির আবির্ভাব না হইলে, অস্ত কোন উপায়ে ইহার চেফাদি সম্পদ্ধ হয় না। প্রদীপ যেমন প্রজ্লিত হইবা-মাত্র গ্রহের যাবতীয় অন্ধকার দূর হয় এবং তত্মধ্য-স্থিত পদার্থ সকল হুস্পট দেখিতে পাওয়া যায়, ভজ্ঞপ বাহ্নদেব স্বরং আত্মারূপে এই জড়দেহে অমুপ্রবেশ করিলে, ইক্রিয়াদি সকল চেতনা-विभिक्षे रहेशा, च च विषय धारमान हत्। अधिक

কি, তিনি হকীয় অসামান্ত ও অনুস্ভাব্য প্রভাববলে শরীরের প্রত্যেক অনুতে চেতনারূপে অবছিতি করিভেছেন। এইকল্য পদের নথাপ্র হইতে
মন্তকের কেশাগ্রপর্যন্ত গ্রমন কোন ছান নাই,
যাহাতে অমুভবসমেত স্পদ্দন শক্তি নাই। ফলতঃ
ব্রহ্মা তাঁহার আজ্ঞায় কেবল জড়পিওরূপে সমন্ত
স্থিটি করিয়াছেন। বাহ্ণদেব আত্মারূপে ভাহাতে
প্রাণ ও চেতনার সঞ্চার করিয়া, সকলের পালন
করিতেছেন। যেমাত্র তাঁহার এই পালনীশক্তির
বিরহয়োগ সংঘটিত হয়, সেইমাত্রই মহাপ্রলয়
উপস্থিত হইয়া থাকে। অত্পর দেবাদিদেব
পরমদেবতা জ্ঞানে সর্ব্বাপেক্যা সমধিক ভক্তিযোগসহকারে বাহ্ণদেবের আল্যাদি নির্মাণ করিয়া
নিত্য পূজা করিবে।

মনে মনেও বাস্থদেবের গৃহনির্মাণে সংকল্প করিলে, শভরূমের পাপ দূর হয়। যাহারা স্বয়ের মন্দিরনির্মাণে অমুমোদন করে, তাহারাও সর্ব্ধ-পাপবিনিমুক্তি ও অচ্যুতলোক প্রাপ্ত হইয়া থাকে। হরির মন্দির প্রস্তুত করিয়া দিলে, অতীত ও ভবিষ্য অযুত কুল বিফুলোকে গমন করে। যাহারা কৃষ্ণমন্দির নির্মাণ করে, তাহাদের পিতৃলোক নরকত্বঃখ পরিহারপূর্বক অলঙ্কত ও ह्यांविक हरेशा, विकृत्नांक वान करत्न। तनवा-লয় প্রস্তুত করিয়া দিলে, ব্রেমাহত্যাদি গুরুতর পাতক সমুদায় লয়প্রাপ্ত হয়। যজ্ঞসমূহের অনুষ্ঠান দারা যাহা প্রাপ্ত হওয়া যায় না, দেবালয় দারা তাহা লাভ হইয়া থাকে। দেবালয় করিয়া দিলে, সমস্ত তীর্থস্নানের ফলপ্রাপ্তি হয়। যে ব্যক্তি একমাত্র আয়তন নির্মাণ করে, সে স্বর্গে গমন করে। এইরূপ, ছুইটি দেবগৃহ নির্মাণ করিলে, बन्नाताक, शांठि कतिता निवानाक,

করিলে বিশ্বলোক এবং বোলটি করিলে ভূজিমৃক্তি লাভ হইরা থাকে। উত্তন মধ্যম ও অধন
এই তিন প্রকার হরিগৃহ নির্মাণ করিলে, বথাক্রমে
নোক, বৈষ্ণবলোক ও সূর্গপ্রাপ্তি সংঘটিত হয়।
ধনবাদ্ উত্তম মন্দিরপ্রতিষ্ঠা হারা যে ফল লাভ
করে, অধন ব্যক্তি কনিষ্ঠ গৃহ হারা সেই ফল
প্রাপ্ত হয়। কন্টেশুন্টে সূরমাত্র অর্থ উপার্জনপূর্বক ভদারা হরির গৃহ করিয়া দিলেই অধিক
বর লাভ হইয়া থাকে। লক্ষ্ক, সহত্র বা শতার্জ
অর্থ ব্যয় করিয়া, হরিমন্দির রচনা করিলে, গরুড়
ধ্বজ ভগবানের সামিধ্যলাভ হয়। যাহারা বাল্যকালে ক্রীড়াচ্ছলে পাংশু রারা হরিমন্দির প্রস্তত্ত
করে,ভাহারাও ভদীয় লোকে সমাগত হইয়া থাকে।
তীর্থে, আয়তনে, দিছক্ষেত্রে ও আশ্রমে হরিগৃহপ্রতিষ্ঠা করিলে, অগণ্য ও অসংখ্য ফল লাভ হয়।

(य व्यक्ति वक्षुक श्रृष्ण विन्तान्त्र्वक छ्था-পক্ষ স্বারা বিষ্ণুগৃহ লেপন করে, সে ইম্রাদি দেব-তারও পুন্ধনীয় হইয়া থাকে এবং সে পতিত পতমান ও অৰ্দ্ধপতিত স্বকীয় পূৰ্ব্বপুৰুষদিগকে উদ্ধার করিয়া ভগবৎপুর সন্দর্শন করে। পতিত বিফুমন্দিরের পুরুরুদ্ধার করিলেও ভগরৎপুর প্রাপ্ত इইয়া থাকে। হরির মন্দিরে যাকং ইউক সকল থাকে, তাবৎ সেই মন্দিরকর্তা স্বীয় বংশের সহিত বিষ্ণুলোকে মহিত হয়। রাক্তি ভগবান্ বাহুদেবের আয়তন প্রস্তুত করিয়া নেয়, সেই ব্যক্তিই পুণ্যবান্, পূজ্য ও পন্নম ভাগ-ধেয়সম্পন্ন। সে ব্যক্তি জাতমাত্র আপনার কুল পবিত্র করে এবং পরমকীর্ত্তি লাভ করিয়া থাকে। রুদ্র ও সূর্য্য প্রস্থৃতি অভান্য দেবগণের নিল-য়াদি প্রতিষ্ঠা করিলেও তত্তৎ লোক লাভ হয়; ইহাতে কোনই দলেহ নাই।

্ত ধন কথনও চিরস্থায়ী সংহ। । শালের স্থার ভায়, ভাহার কোনরাপ গৌরবংবা প্রারক্ষা नारे। अधिकरके ७ वहन काश्राम पर्ने केशा-র্জিত হইয়া থাকে। ভাহার রকা করা নহক ব্যাপার নহে। ধনের শত্রু পদেপদেই। গুপুঞ হইতেও ধনবানের ভয় হইয়া থাকে বিশ্বাহার ধন আছে, রাত্রিতে তাহার উত্তমরূপ নিদ্রা হয় না ; এই জন্ম অর্থকে সাকাৎ অনুষ্ঠ ও বিপদের হেতু বলিয়া থাকে। নানাপ্রকার সংকার্য্যের অমুষ্ঠানকল্পে ব্যয় করিলেই উল্লিখিত ক্লেশময় ষ্মর্থের সার্থক্য হইয়া থাকে; বিষ শ্বারা যদি রোগ নিবারণ হয়, তাহাকেই অমৃত কলে িসেই-রূপ ধন ছায়া যখন সৎকার্য্যের অকুষ্ঠান ছয় তখন তাহাকে প্রকৃত অর্থ বা পরমার্থ-বলিছে शाहा यात्र। (वटम, (वमाटक देखिहारम, शुद्रारम, लाकाहारत गर्वदेखेंहे विकृतायनक गकन मद অফুষ্ঠানের সার ও প্রধান বলিয়াছেন। পার্কথ্য य राक्ति नेप्रभ चनात वर्ष धारामभूक्तक निक् মন্দির প্রতিষ্ঠা না করে তাহা অংশক্ষা মৃত ও অজ্ঞান আর কে আছে? তাহার বনরাশিও পাংশুরাশির ভায় একান্ত বিকল ইইরা থাচে । সেই ধন বারা যদি আছি করে, ভাহা হইলে পিতৃগণ কথনও ভাহাতে প্রীত ও পরিষ্ঠি হরেন ন। সেই ধন ছারা যদি কোন যজ্ঞ করে, ভাহাতে দেবগণ কোন মতেই ভাগ এইনে উৎ-স্থক হয়েন না এবং সেই ধন ছারা যদি ক্ষত কোন দেৰভার পূজা করে ভাহাতে সেই পদেৰভাও সম্ভুট না হইয়া বরং বিরক্তাই হইয়া পাকেন। এইরূপে দাংসারিক কোন বিষয়েই তাদৃশ অসার অর্থ প্রয়োগ ঘারা কোনরূপ ইক্টাপত্তি লাভের সম্ভাবনা নাই।

যিনি আত্মার চরম শাস্তি বিধান করেন, পুনঃ পুনঃ জন্মযন্ত্রণা নিবারণ করেন, প্রতিদিন নিয়মিত আহারাদি প্রদান ছারা যথাবিধানে পালন করেন এবং যিনি বিপদে সম্পর্টে পরম বন্ধু, সেই দেবা-দিদেব বাস্থদেৰের বিষয়ে যাহার প্রীতি নাই, শ্রদ্ধা নাই এবং অনুরাগ নাই যে প্রীতি, শ্রদ্ধা ও অনুদাণে নির্বাণ মুক্তি স্বয়ং বিরাজমান, সে ব্যক্তি জড় ভিন্ন আর কিছুই নহে; ইতর পশুর দহিতও তাহার তুলনা হইতে পারে না। অতএব ঘদি ধনের সার্থকতা করিতে অভিলাষ থাকে, স্বর্গ-ছারের কপাট পাটন করিতে ইচ্ছা থাকে ই**হ**-লোকের ক্লেশময় ও বিষময় বিষম সংদর্গ ত্যাগ করিয়া, পরলোকের পরম প্রদর্ম মুখ দর্শনপূর্বক আশ্বস্ত হইতে অভিলাষ থাকে এবং যদি উন্নতির পর উন্নতি লাভ করিয়া,নিরস্তর অমৃতযোগ ডোপ করিতে কামনা থাকে, তাহা হইলে চরাচরগুরু পরমদেব বাহাদেবের আয়তনাদি বিধান কর: ভাহাতেই সকল অভীফ দিন হইবে। সংসারে আসিয়া কোন্ ব্যক্তি গৃহে বাস না করে এবং কোন্ ব্যক্তি নিজ উদর পূর্ণ না করে ? কভজন লোকে গৃহ অভাবে বা অমাভাবে উপবাদী शांदक ? त्य वांकि तिवामानि निर्माण ७ गृह-हीत्मत गृह् विशाम करत अवः स्टिवास्करण प्राथमि দান করে ও দরিদ্রদিগকেও বিতরণ করিয়া থাকে; তাহারই গৃহবাদ প্রকৃত গৃহবাদ এবং তাহারই উদমপুর্ত্তি প্রকৃত উদরপূর্তি। পশুগণত ভক্ষণ করে এবং পক্ষিগণও কুলায় বন্ধনপূর্বক বাদ করে। এইরূপে স্তিতে কোন জীবই গৃহ-শূন্য ও অন্থূন্য নহে। আবির সন্ত পলান বা উৎকৃষ্ট শালিতগুল ভক্ষণ না করিলেই যে, ভক্ষণ হইল না, এমন নহে এবং উৎকৃষ্ট প্রাসাদো-

পরি অকোমল পুল্পশ্যার শরন না করিলেই যে,
শয়ন হয় না, তাহাও নহে। সংসারে একমাত্র
মন লইরাই কথা। মন সম্ভক্ত থাকিলে ধনবান্
ও দরিদ্রে কোন বিশেষ নাই। এই সকল চিন্তা
করিয়া, বৃদ্ধিমান্ পুরুষ উল্লিখিত সদস্পানকল্লে ধন
নিয়োজিত করিবেন। ধন কথন সম্পুট বা মঞ্জা
প্রভৃতিতে সঞ্চিত থাকিবার জন্ম স্থট হয় নাই।
যদি তাহা হইত, তাহা হইলে বিধাতা তাহাকে
চিরকালই ভূগর্ভে প্রোথিত করিয়া রাখিতেন;
কদাচ মনুষ্বের দৃষ্টিপথে উপস্থিত করিতেন না।

পুনশ্চ যাহার ধন পিতৃগণ,দেবগণ,দিজাতিগণ, ও বন্ধুগণ,কাহারই উপভোগ্য না হয়, তাহার ধনা-গম দৰ্বথা বিফল। দামান্ত বনজ শাকেও এই পাপ উদর পূর্তি হইয়া থাকে। অতএব ইতস্ততঃ ভ্রমণপূর্বক বছল আয়ান স্বীকার করিয়া ঐরপ অর্থ সঞ্চয়ে প্রয়োজন কি ? মানুষের মৃত্যু যেমন নিশ্চয়,ধনবিনাশও সেইরূপ নিশ্চয় ও অবশ্যস্তাখী। य राक्टि व्यक्षांशी कीवन ७ व्यक्षांशी वर्ष अहे উভয়ে গাঢ় আতাহ প্রদর্শন করে, ভাহা অপেকা মূর্থ আর কে আছে ? ঐযে সূর্য্য চল্ল গ্রহ অন-বরত অভ্যুক্ত আকাশ পথে বিচরণ করিতেছে. কালবলে উছাদেরও অবশ্য পতন হইবে। এ যে উভ্যুঙ্গ পর্বত অচলভাবে অবস্থানপূর্বক ৰজের শত আঘাতও সহু করিয়াছে, উহাকেও অবশ্য পতিত, হইতে হইবে। এইরূপে এই সংসারের किहुरे खाशी नरह। अर्थ कित्रत्थ खाशी रहेर्द, আশা করা যাইতে পারে ? যথর ইন্দ্রাদি *দে*ব-তারও হিরত্ব নাই, তখন সামান্য ধূলিমৃষ্টিস্বরূপ অর্থের কথনও স্থায়িত্ব হুইতে পারে ? ভবে কেন ত্ত্রাচার সমুষ্য ধন সঞ্চয়ে অভিলাষী হইয়া, তাহার জন্য প্রাণ পর্যান্ত ত্যাগ করিয়া' থাকে ?' মাহার

জন্য পিতা পুজেও বিবাদ হয়, আছীয় ও বন্ধু বিচেহদ সংঘটিত হয় এবং তদ্বাতীত অন্যান্য নানা-প্রকার অনর্থ আপতিত হইয়া থাকে। হতভাগ্য মামুষ সেই অনুর্থের জন্য কি রূপে আগ্রহ করে।

ফলতঃ যাহার ধন দানের জন্য, ভোগের জন্য, কীর্ত্তির জন্য ও ধর্ম্মের জন্য নহে: তাহার সেই ধন থাকা না থাকায় বিশেষ কি ? অভএব দৈব-যোগে কিংবা স্বীয় পুরুষকার প্রভাবে ধন প্রাপ্ত হইলে, তৎক্ষণাৎ দেবোদেশৈ তাহার ব্যয় করা কর্ত্তব্য। জীবিত অবস্থায় মনুষ্য নিজহুতে যে দান করে, তাহাই তাহার প্রকৃত দান। ছাগীর গলদেশে যে স্তন হয়, তাহা যেমন কোন কাৰ্য্য-কারক নহে, দেইরূপ মৃত ব্যক্তিরে দানও বিফল হইয়া থাকে। আবার যাহা দান করিবে আপন ইচ্ছায় ও সরল চিত্তে করিবে। সরল চিত্তের দান ভিন্ন অন্য দানে পুণ্য নাই। অনেকে যশোলিপা ও নামলিপা হইয়া দান করে, তাহার নাম তামদিক দান। তামদিক দান নরকের হেতু ও অধর্মের সেতু। দেবোদেশে ঐরপ তামসিক দান করিতে নাই: ভগবান বাহুদেব সকলের অন্তর্যামী। যে, যে মনে দান করে, ভিনি তাহার তাহা জানিতে পারেন। ,অতএব শাঠ্য ও কাপট্য ত্যাগ করিয়া দেবোদ্দেশে দান করিবে: লোক দেখাইবার বাসনায় কথনো দান করিও না। অর্থ যখন কোন মতেই স্থায়ী নহে এবং মরিলেও সঙ্গে যাইবে না, তখন শঠতা করিয়া দান করিবার প্রয়োজন কিং যাহা দিবে, ভাহার শতগুণ পাইবে, এই সিদ্ধ বাক্য মনে করিয়া দান করিবে। যে ব্যক্তি দেবাদির উদ্দেশে দানাদি করিয়া অর্থের मन्दार करत, जारात मान सकत्र विकृत्नादक, এবিষয়ে কোন সংশয় নাই।

ভূত, ভবিষ্য ও বর্ত্তমান, কুল; কুলা গ্ল'কুজ, উচ্চ, নীচ ও মহৎ এবং আন্তেক্সন্তৰ্পৰ্যাক্স ক্ষত বিশ্ব একমাত্র বিষ্ণু হইতে সমৃ**ভূত হইরাছে। जिनि कार्या, कार्रा ७ कर्डी । जाहारक कानिस्म** সমস্ত জানা হয় তাঁহাকে চিন্তা করিলে সমস্ত চিন্তা করা হয়, তাঁহার উদ্দেশে কার্যা করিলে সমস্ত কর্ত্তব্য সাধন করা হয়, তাঁহার বিষয়ে কথা বলিলে সমস্ত বক্তব্য শেষ করা হয় এবং তাহাকে ধ্যান করিলে দমস্ত ধ্যান করা হয়। এইরূপে যাহা বলিতে, করিতে, শুনিতে ও শ্মরণ করিতে হয়, সমস্তই তিনি। তিনিই দান, ধর্ম ও সমস্ত किशाराणाः (यथन मनीमकल, ननमकल, इनमकन ও ত্রদিশীসকল মহাসাগরে লীন হয়, সংসারের সমু-দায়নাম ওরূপ তেমনি একমাত্র দেই মহানের মহান্ পরম মহানে লয় পাইয়া খাকে। আবার ফেমন কোন মহাজলাশয় হইতে কুদ্র জলাশয় সকল উৎপন্ন হইয়া থাকে, সেইরূপ ভাঁহা হইতে সমস্ত সমুত্ত হইরাছে। তিনি অচফুর চ**কু, অহঞে**র हरु, अभारतत भार ७ अमाधानक माधन के बासूरदत ধন, পুত্ৰ, লক্ষী, বিলাস, বিভব, যান, বাহন, নুমন্তই তাঁহার প্রদাদে লক্ষ্ম ও ভোগ হইয়া থাকে। তিনি বল্পমাত্র প্রসম ছইলে, প্রতিমাত্র বর বা অভীষ্ট লাভ হয়; আবার শ্রুমাত্র রুষ্ট হইলেই মহাপ্রলয় উপস্থিত হইয়া থাকে 🖂

আকাশের ঐ গভীর বক্ত অপেক্ষাও তাঁহার
শব্দ গভীর ও খোরায়িত। কিন্তু পুণ্যান্দার নিকট
ভাহা স্থান্দর বংশীনাদ অপেক্ষাও স্থান্দ্র হইয়া
থাকে। পাপান্ধা প্রতিপদেই ঐ শব্দে ঘোর
মৃত্যুর আশকা করে। ঐ যে বিছ্যুৎ বর্তর
প্রভার ত্রিস্থান চালিত করিয়া ইতন্ততঃ বিচরণ
করিতেছে, বোধ হর, যেন সমস্ত আকাশমর ব্যাপ্ত

ইইরা পড়িরাছে; ঐ বিজ্যুৎ ভাঁহার জোধকরায়িত দৃষ্টির কিরদংশমাতা। পুণাাতা উহার
অভ্যন্তরে তারে তারে অন্তও ও অভ্যালক্ষ্য করিয়া
থাকে; কিন্তু পাপাত্মা উহাকে দাক্ষাৎ কৃতান্তের
করাদ্যক্তিরা ভাবিয়া, ভয়ে বিহলে ও অবসম হইয়া
তৎক্ষণাৎ দৃষ্টি সমূচিত ও চক্ষু নিমীলিত করে।
সেই সর্কনা মহাত্মা দেবাদিদেব বাহ্দেবের গৃহ
নিবেশিত করিলে, পুনরায় ক্ষমগ্রহণ করিতে
হয় না।

প্রতিমাকরণ অপেকা দেবালয়করণের অধিক কল! প্রতিমাপ্রতিষ্ঠা ও যাগ উভয়ত্তই অনস্ত ফল লাভ হইয়া থাকে। মৃথ্য মন্দির অপেকা দাক্রময়, দাক্রময় অপেকা পাযাণময় ও পাষাণময় অপেকা হেমাদি ধাতুময় মন্দির নির্মাণে অধিক কল প্রাপ্তি হয়। দেবালয়প্রতিষ্ঠার উপক্রমেই দক্তক্ষের পাপ দূর হয়, স্বর্গলাভ ও নরক পরাহত এবং শতক্ষা সমৃদ্ত হইয়া বিষ্ণুলোক প্রাপ্ত হয়।

ষম স্থীয় দৃতদিক্ষক কহিয়াছিলেন,হে দৃতগণ!
বাহারা দেবালয় ও প্রতিমাপৃদ্ধাদি করে, তাহাদিগকে কদাচ যমপুরে আনয়ন করিও না; বাহারা
ঐ সকল না করে, তাহাদিগকেই আমার গোচরে
আনয়ন করিবে; কদাচ কোনয়পে অভায় মার্গে
প্রস্তুত হইও না; ষথাবিধানে আমার আজ্ঞা
পালন করিবে,কোনমন্তেই ভাহা লক্ষন করিও না।
দেবাদিদেব বাহ্মদেব সমস্ত জগতের পিতা, মাতা
ও বিধাতা। এবং দেবগণেরও দেবতা। ভাঁহার
আরাধনা করিলে, সমস্ত দেবতার আরাধনা করা
হয়। সমস্ত হথ, সন্তোষ, সম্পদ, সমৃদ্ধি তাঁহাতেই
প্রতিতিত। যে সকল ব্যক্তি সেই ভৃতভাবন
ভগবান্ হরির একান্ত আল্রিভ, তোমরা সর্বদা

नावधान इरेशा, ভारानिशंदक পরিহার করিবে। হুৰে যেমন পাপীয় অধিকার মাই, স্বর্গে যেমন অহারুতির সমাগম নাই এবং় স্ববিনরে ফেমন যশের সম্পর্ক নাই, সেইরূপ ভগবস্তক্ত পুরুষগণের এই পুরে আগমন বা কোন সম্পর্ক নাই। অভ্যাব তোমরা প্রস্কৃলিত বহ্নিবৎ তাহাদিগকে স্পর্শ করিলেই দক্ষ হইবে। ভাহারা ভগবানের ভেজে অসুপ্রবিষ্ট ও অসুপ্রাণিত হইয়া সর্বাদাই প্রস্কৃ লিত হইতেছে। প্রলয়-সময়-প্রাছ্মস্থত সংবর্তক বহ্নিও তাহাদের তেজে তিরস্কৃত হইয়া থাকে। অতএব কোনমতেই তাহাদের ত্রিদীমায় যাইও না। ফলতঃ যাহারা তচ্চিত্ত ও তৎপরায়ণ হইয়া. ভগবান্ বাহ্নদেবের দর্বদা পূজা করে, অতি দূর হইতেই তাহাদিগকে ত্যাগ করিবে। যাহারা শয়ন, অশন, পান, গমন, অবস্থান ও স্থালন, সকল সময়েই ভগবান্ গোবিন্দের স্মরণ ও কীর্ত্তন করে. তাব্তাদিগকেও ভোষরা স্থদূরে পরিত্যাগ করিবে। যাহারা নিত্যনৈমিতিক বিধানে জনার্দনের উপা-মনা করে, তাহাদের প্রতি দৃষ্টিপাত করিও না। যাহারা অতিবল্লভ পুম্প, ধূপ, বস্ত্র ও ভূষণপরম্পরা দারা বাস্থদেবের অর্চনা করে, তাহাদিগকে কখন গ্রহণ ∰করিও না। যাহারা কৃঞ্মন্দির লেপন ও দুমার্জন করে, ভাহাদিগকে এবং ভাহাদের পুজ-পৈত্রিদিকে ও বংশপরস্পরাকে সর্ববণা ভ্যাগ করিবে। যাহারা ক্লফমন্দির নির্মাণ করে, তাহা-দের কুলসম্ভূতি শত পুরুষকেও দুফাবুদ্ধিতে দর্শন করিও না। যে ব্যক্তি বাস্তদৈবের দারুময়, মুগ্ময় বা শুক্তরময় আলয় নির্মাণ করিয়া দেয়, সে সর্ব্ধ-পাপবিনিশ্ম ক্ত হইয়া থাকে। অহরহঃ যজ্ঞ बाता यक्षम कतिरल, यं महाकन लाख हत, वाद-দেবের আলয় করিয়া দিলে, সেই ফল প্রাপ্তি হইরা থাকে এবং অতীত ও আগানী শতকুল বিষ্ণুলোকে সমাগত হয়। বিষ্ণু দাক্ষাৎ সপ্তলোক ময়। তাঁহার গৃহপ্রতিষ্ঠা করিলে, ক্ষক্ষ লোকের উদ্ধার ও অক্ষয়লোকপ্রাপ্তি হইরা থাকে। যে ব্যক্তি প্রতিমা নির্মাণ করে, সে চরমে ভগবানে লীন হইয়া থাকে এবং যে ব্যক্তি দেবালয়াদি নির্মাণ করে; দে নারায়ণের গোচরে বাস করে।

> ইত্যালেরে মহাপুরাণে দেবাল্রাদিনিশ্বাণমাহাল্য-বর্ণন্নাসক অস্টাবিংশতিভ্য অধ্যায় সমাপ্ত।

ঊনত্রিংশ.অধ্যায়।

ভগবান কহিলেন, শঙাচক্রগদাপদ্মধর ওঁকার-রূপ কেশবকে নমস্কার:শত্যচক্রগদাপদাধর বিখাত্মা নারায়ণকে নমস্কার: শঙ্খচক্রগদাপদ্মধর মাধবকে নমস্কার; শৃষ্চক্রপদাপ্রধর শুদ্দসম্রূপী গোবি-ন্ত্র নমস্কার: শহাচক্রেগদাপ্রধর বিষ্ণু আমায় রক্ষা করুন: শভাচক্রেগদাপায়ধর মধুসূদন আমায় উদ্ধার করুন:—ঐ—ঐ—ত্রিবিক্রমকে ভক্তি-ভরে প্রণাম করি: এ-এ-নামনদেব সর্বাদা আমায় রক্ষা করুন; ঐ--এ--শ্রীধর ক্রামার সক্ষতি বিধান করুন; ঐ---ঐ---ছষীকেশ আমায় রকা করুন: ঐ--এ--পদ্মনাভ আমায় অভীষ্ট বর প্রদান করুন: ঐ-এ-ভগবান বাস্থদেব আমার কল্যাণ বিধান করুন ; ঐ ক্রিনামানর সমস্ত সংসার রচনা করিয়াছেন, তাঁহারে বারংবার প্রণাম করি: ঐ-ঐ-সক্ষর্ণ প্রলম্পন্য়ে সমস্ত সংসার সংহার করিয়া থাকেন, তিনি আমার সহায় হউন: এ-এ-প্রস্তান্থ সকলের প্রস্তু 🛊 নিয়ন্তা, তিনি আমার সহায় হউন ; ঐ—ঐ—

এইরপে ভগবান্ মহাবিষ্ণু বাহুদেবাদি মূর্জ্তি পরস্পরায় আবিভূতি হইয়া, সমস্ত বিশ ব্যাপ্ত করিয়া আছেন এবং মন, অহঙ্কার ও বৃদ্ধি প্রভৃতি প্রেরণ করিয়া সকলের পালন করিভেছেন। ভাঁহা হইতে আলোক আদিয়াছে, উত্তাপ আদিয়াছে জ্যোতি আদিয়াছে, তেজ আদিয়াছে, দুখ্য আদি-য়াছে, আবার দ্রুষ্টা আসিয়াছে। ফলডঃ সংগার-ন্থিতি বিধানার্থ যাহা কিছু প্রয়োজন, সমস্তই তাঁহা হইতে আসিয়াছে। এইজক তিনি সর্বনের ও বিখময় বলিয়া বিখ্যাত। এইজ্যু তাঁহাকে বিধাতারও বিধাতা ও কর্তারও কর্ত্তী বলিয়া বেদে বেদাঙ্গে তন্ত্রে, ইতিহাসে সর্বত্রে পান ও স্কর করিয়াছে। এইজন্ম সমস্ত বিশ্ব ভাঁছাকে পাইবার অস্থা নিতান্ত উৎহাক হইয়া, তাঁহারই উদেশে विविध किश्वकारायत अपूर्णन करता । केंग्रित ভরস্ত সায়াক অনিৰ্বাহ্য শাসনমূলে হে সকল পাপাত্মা ও হতভাগ্যের বৃদ্ধি নিকৃত্ত ও তক্ষয় উন্মাদ্বিশেষ উপস্থিত হুইয়াছে,তাহারাই নান্তিক-মার্গের অনুসরণপূর্বক ভাঁছার বিরুদ্ধে অভ্যুত্থান

কৰে। শামি যেন তাঁহার প্রসাদে ও পদুগ্রহে ঐ সকল ছুরাচারের সঙ্গ ত্যাগ করিয়া সর্বাদা সর্বাধা হাবী হাইছে পারি।

উপরে ক্ষাবাদ্ নারায়ণের যে চতুর্বিংশতি মৃত্তির নাম করা হইল, কেশবাদি ভেদে এক এক মৃত্তির হ্যাক্রমে তিনবার করিয়া ঘাদশাক্ষর মজে ন্তব পাঠ বা এবন করিলে, পরমশুদ্ধি লাভ হইরা থাকে; তাহাতে অনুমাত্র সন্দেহ নাই। অধিক কি, যে স্থানে শুব পাঠ বা প্রবেশ হয়, দে স্থানও তীর্ণরাপে পরিগত হইয়া থাকে। কেমনা ভগ-বান্ বাহ্মদেব স্বয়ং তীর্থেরও তীর্থ স্বরূপ; পরম তীর্ম ভাগীরথী তাঁহার চরণার্মিক্ষের অমৃত্যয় মকরন্দরাপে বিনিক্তিক্ষিত হইয়াছেন, এইজন্য ভাহার নাম তীর্থপাদ।

> ইত্যাগ্ৰের মহাপুরাশে চতুর্বিংশতিমূর্ত্তি জোঝনামক উনজিংশ অধ্যায় সমস্তে।

ত্রিংশ অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, অধুনা মংস্থাদি দশাবতার-লক্ষণ কার্ত্তন করিতেছি, এবণ কর।

ভগবান্ নারায়ণ যে মৎস্থাবতারলীলাপ্রকটন পূর্ববিক স্পৃষ্টি স্থিতি বিধান করেন, সেই মৎস্থের আকার প্রাকৃত মৎস্থের স্থায়।

এইরপ, কুর্মের আকার কুর্মের ন্যায়।

বরাহের আকার মনুষ্যের ন্যায় অকপ্রত্যক-বিশিষ্ট। হত্তে শখ্চজ্রগদাপক্ষ ইত্যাদি। দক্তিণে ও বামে শখ্, লক্ষ্মী বা পদ্ম। বাম কুর্পরে জ্রী, চরণ যুগলে পৃথিবী ও অনস্ত। এইরপ বিধানে বরাহষ্ট্রি স্থাপন করিলে, রাজ্যলাভ ও সংসারসাগ-বের পারপ্রাপ্তি হইয়া থাকে, সন্দেহ নাই। নরসিংহের বদন ব্যাদিজ, বাম উরুতে, ক্ষত-দানব, গলদেশে মাল্য, হচ্ছে ক্লুক্ত ও গদা; এই অবস্থায় তিনি দৈত্যপতির বক্ষু বিদারণ করিতে-ছেন।

বার্মনের আকৃতি ব্রস্থ, মস্তবে ছত্র, হরেও দশু এবং বাহু চারিটি।

পরশুরামাবতারের হতে সশর শরাসন, **ব**ড়গ ও পরশু।

রামাবভারের ছই ভুজ, ঐ ছই ভুজে ধযু, শর, ধড়ুগ ও শব্দ শোভা পাইতেছে।

বলরামের চারি বাহু, গদা ও লাঙ্গলে অল-ক্ষত। তথ্যধ্যে বাম হন্তের উর্দ্ধে লাঙ্গল ও অধো-দেশে হুশোভন শছা এবং দক্ষিণ হন্তের উর্দ্ধে মুষল ও অধোদিকে চক্র।

ভগবান্ বুদ্ধের মৃষ্টি অতি শাস্ত; তাঁহার কর্ণ লম্বিত, অঙ্গ গোরবর্ণ, পরিধান হুন্দর বস্ত্র, আসন উদ্ধপদ্ম; তিনি বর ও অভয় প্রদান করেন।

মেছগণের উৎসাদক ভগবান্ কল্ধী ব্রাক্ষণ-মৃর্জি। তাঁহার স্থাসন অথ, হল্তে ধমু, ভূণ, থড়গা শন্ম, চক্র ও শর।

দক্ষিণোর্দ্ধে গদা বামোর্দ্ধে চক্র, তুই পাখে ব্রহ্মা ও মহেশ্বর, এইরূপ বিধানে বাহ্নদেবমূর্ত্তি নির্মাণ করিতে হইবে।

ছুই বা চারি বাহ; তাঁহাতে লাঙ্গল, মুবল, গদা, পদ্ম ও শহা বিরাজমান ইহাই বলরামের মূর্ত্তি।

দক্ষিণেচর্কে, বাংশিশত্থ ধকু শর বা গদা ইত্যাদি প্রান্থ্যস্থান্তির লক্ষণ।

অনিক্লচ্চের চারি বাঁহ; ভাহাতে বর, অভয়, অমৃত ও কেম বিরাজমান।

নারায়ণের চারি বাহু, চারি মুখ রুহুং জঠর,

नय क्र, मखरक अनेजिन, मिक्टन जक्त्रें, बास्य व्यव, क्रिका^{" क} जाकायांनी; वामनिक्रत माविखी ७ महत्रकी।

অউস্থ, গরুড়, দক্ষিণ হতে ধরুগ পদা ও শর, বাম হত্তে ধেটক ও কার্মুক, ইত্যাদি বিষ্ণু-মূর্তির লক্ষণ।

বরাহের চারি বাহু, পাণিতলে শেষ নাগ, বাম বাহুতে পুথিবী ও ক্যলা।

হয় গ্রীব মূর্ত্তির দক্ষিণ হত্তে শূল ঋষ্টি, বামহত্তে গদাচক্রে, পাখে গৌরী ও লক্ষ্মী, হত্তে বেদ; শেষ-নাপের মন্তকে বামপাদ এবং কুর্মের পৃষ্ঠে দক্ষিণ চরণ।

ভগবান দভাতের দিবাছ এবং **ঠাহার** বাম ক্ষকে লক্ষী।

> ইত্যাধেরে মংকাদি প্রতিমালকণ নামক বিংশ অব্যায় সমাপ্ত।

একত্রিংশ অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, চভূঃষষ্টি যোগিনীর নামাদি বর্ণন করিব, প্রবণ কর। ইহাদের নাম ক্রমান্তরে বথা—অক্ষোড়া, ক্রক্কনা, রাক্ষসী, ক্রপণা, অক্ষয়া, পিরাক্ষী, ক্ষয়া, ক্রেমা, ইলা, লীলালয়া, লোলা, লক্তা, বলাকেশী, লালসা, বিমলা, হুডালা, বিশা-লাক্ষী, হুজারা, বড়বামুখী, মহাক্রেরা, ক্রোথনা, ভরঙ্করী, মহাননা, সর্বজ্ঞা, তরলা, তারা, শুক্তেরা, হয়াননা, সারা, লখা, ডালক্ষমী, রক্ষাকী, বিহ্যু-জিহ্বা, করন্ধিনী, মেঘনাদা, প্রচণ্ডা, উন্তা, ক্লাক-কর্ণা, চন্দ্রাবলী, প্রপঞ্চা, প্রলয়ান্তিকা, শিশু-বজ্রা, পিশাচী, পিশিভাশা, লোল্পা, ধ্রমনী, ভাপনী, রাগিণী, বিহ্নভাননা, বায়ুবেগা, বৃহৎক্কী,

विक्रुडा, विश्वक्राणिका, वनक्रिया, क्रिय লয়বিকা, বিভালী, রেবতী,পুতলা,বিজয়া,শার্কিল वतमा ७ क्षापता । हेशारमत मर्गा र्यम अस्टिस **८कर ठष्ट्ररेखा धारः मकरमारे मर्सिमिकिः धारान** করেন। **শত**এব সর্বতোভাবে ইহাদের^শশূকা कतिरवन । देशारात मध्या छगवछी छित्रवी मध्य-প্রধানা এবং ভগবান ভৈরবেরও পূজা করিতে रहेरत। अहे जित्रदात हरक मुर्वा, मकाक कर्णा, कारल हक्त अवः हरख बढ़न, बहुन, क्ठात, हेवू, চাপ, ত্রিখুল, খটাঙ্গ ও পাশ। পরিধান লাজ-চর্ম্ম, ভূষণ দর্গ, এবং অশন প্রেম্ভ। ্বীরভদ্রেরও পূজা করিতে হইবে। চারিমুখ ও রুষ বাহন। দেবী শেরীর ছুইছুক, তিন চকু এবং হত্তে দর্পণ ও শুল । চতীর দশ হাত তাহাতে ধড়গ, খুল, শক্তি ধঃশব্দ; নাগ-পাশ, চর্ম, অঙ্কুশ, কুঠার ও ধসু এবং বাহন **দিং**হ।

> ইত্যাধ্যেরে যোগিন্যাহিনক্ষণকথন মাধ্যক এক্সিংশ অধ্যায় সমাপ্ত।

দাত্রিংশ অধ্যায়।

অয়ি কহিলেন, অধুনা পৃথিবী ও বীলান্তির
লক্ষণ সমেত ভ্ৰন কোষ বৰ্ণন করিব। রাজহি
প্রিয়ন্ততের দলপুত্র, যথা, ক্ষয়িন্ত, ক্ষ্মিনাক, বপ্মান্, ছ্যাতিমান্, মেখা, মেখাতিখি, জ্ব্যু, স্বন,
পুত্র ও সভ্যনামা জ্যোতিমান্। শিল্পা, প্রিয়ন্তত
ইহাদের লাভজনকে সাজ্জীপের আধিপভ্যে
নিয়োজিত করেন। তদশুসারে অগ্নিন্ত জ্ব্যুদ্বীপ, মেধাতিথি প্লক্ষীপ, বপুত্রান্ লাক্ষ্মিপ্র,

ক্লোভিয়ান জ্পনীপ, ছাজিনান ক্লোকনীপ, ভব্য পাকনীপ ও সবন পুক্তননীপ অধিকার করেন। আর হরিবর্ত নৈকর, ইলার্ড মেরুমধ্য, হিরহান্ শ্রেভবর্ব। ফুক্স ক্রুবর্ব, ভত্রাথ ভত্রাথ এবং ক্রিভুমাল ক্রেড্যাল বর্বের রাকা হয়েন।

মহাভার প্রিয়ন্ত পৃত্রবিশকে রাজপদে প্রতিভিত্র করিয়া, অরণ্যে প্রস্থান এবং শালগ্রামে
ভপ্রতা করিয়া, রিমূলোক প্রাপ্ত হয়েন। হে
সন্তম! কিম্পুকর প্রভৃতি সম্বায় বর্ষেই আপনা
হইতে সিদ্ধিলাভ হইরা থাকে। ডক্সত যত্র
করিতে হয় বা; তথার জরা নাই, ভয় নাই,
য়ুজ্যু নাই, উভ্র মধ্যম অধন ভেদ নাই। স্থ

হাজির ঔরলে মেরুদেবীর গর্ভে থাবভের জন্ম **হর : খরভের পুত্র ভর**ত। তিনি ভরতকে রাজনী প্রদান করিয়া, শালগ্রামে তপকরণাত্তে ভগবাৰে লয় প্ৰাপ্ত হয়েন। ভরত হইতে ভারত-বর্ষ ও ত্মতির জন্ম হয়। ভরতও পুত্রকে রাজ-নক্ষী শুক্ত করিয়া, পিতার অমুরূপ গতি লাভ করেন। যোগপ্রস্তাবে এই যোগী ভরতের চরিত পুনরায় বর্ণন করিব। হৃষতির পুত্র ইন্দ্রছাল, ইস্রত্যুদ্ধের পুত্র পরমেন্ডী, পরমেন্ডীর পুত্র প্রতী-হার, প্রতীহারের পুত্র প্রতিহর্তার পুত্র ভূব, ভূবের পুত্র প্রস্তার, প্রতারের পুত্র বিভু, বিজুর পুত্র পৃধু, পৃগুর পুত্র নক্ত, নক্তের পুত্র পুল, কারের তন্ম নর, নরের তন্ম বিরাট, विकारिक शुख त्रश्वीर्या शीयान्, शीयात्वत আত্মক মহান্ত, মহান্তের তন্য সন্ত, সনক্তের পুত্র ছন্টা, ঘটার আক্মন্স বিরন্ধা, বিরন্ধার পুত্র রজ: রজের পুত্র সত্যজিৎ এবং সত্যজিতের শত পুত্র মযুভূত হইয়াছিল। তাহাদের गरश বিশেজ্যোতিঃ প্রধান এবং তাহাদের হইতেই ভন্নতবংশ বর্দ্ধিত হইয়াছে।

> ইত্যারেরে স্বারস্থ্রসর্গনামক ব্যক্তিংশ স্থ্যার সমাপ্ত।

ত্রয়োত্রিংশ অধ্যায়।

অমি কহিলেন, জন্ম, প্রক্ষা, লাকলি, কুল, ক্রেন্ড, লাক ও পুদ্ধর এই সাতন্ত্রীপ। এই সপ্তান্ত্রীপ সপ্তসাপরে বের্ন্তিত। এ সকল সাগরের নাম ব্যাক্রমে লবণসাগর, ইক্ষুসাগর, হ্রাসাগর, স্পিসাগর, দ্বিসাগর, হ্রাসাগর ও জলসাগর। মেরুপর্বতে জন্মুন্ত্রীপের অন্তর্গত। ইহার দক্ষিণে হিমবান, হেমকৃট ও নিষধ এবং উত্তরে নীল, খেত ও শৃলী নামক বর্ষ পর্বতে সকল পরস্পর সর্বনা সাক্ষাৎ করত আকাশ অবলোকন করিতেছে।

ভারত প্রথমবর্ষ, তাহার পর কিম্পুরুষ, হরিবর্ষ মেরুর দক্ষিণে বিরাজমান। হে মহাভাগ!
মেরুর পূর্বের মন্দর, দক্ষিণে গদ্ধমাদন, পশ্চিমে
বিপুল ও উত্তরে স্থপার্য। জঠর ও দেবকুট এই
স্থইটি দীমা পর্বেত। এই দীমা শৈলের বাহিরে
ভারত, কেসুমাল, ভজার ও কুক্লবর্ষ—লোক
পথের পথস্করূপ বিরাজমান হইতেছে। মেরুর
পশ্চিম দিগ্ভাগে আর চুইটি মর্যাদা পর্বেত
ভাছে। তাহাদের নাম নিষধ ও পারিপাতা।
ত্রিশুর ও রুধির ইহারা উত্তর বর্ব পর্বেত।
কৈলাস ও পদ্ধমাদন ইহারা উত্তর বর্ব পর্বেত।
কৈলাস ও পদ্ধমাদন ইহারা দক্ষিণোত্তরে বিস্তৃত
এবং নীল ও নিষধ পর্যান্ত আয়হ।ইহাদের আয়াম
পরিমাণ অশীতি যোজন।

পরম পবিত্র ভাগীম্বথী স্বীয় সর্বলোকপাবন

দলিলপ্রবাহে ভারতবুর্র পবিত্রিত করিরা, সাগরে
মিলিত হইরাছেন। শ্রীবিক্লর চরণারবন্দ ইহার
উদ্ভবক্ষেত্র। এতন্তির ভারতভূমি কর্মভূমি বলিরা
বিখ্যাত। দেবগণও এইজন্ম ইহাতে জন্মগ্রহণ
করিতে অভিলাষ ক্রেন।ইহাতে বেদবিহিত বিবিধ
যাগযজ্ঞের অনুষ্ঠান হইয়া থাকে; ধাহার প্রভাবে
অক্ষয় কল প্রাপ্তি হয়। এইজন্ম ভারতবর্ষ
অন্যান্য বর্ষ অপেকা প্রধান।

ভগবান্ হরি ভদ্রাশ্ববর্ষ হয়প্রীবরূপে, কেতুমালে বরাছরূপে, ভারতে কৃশ্বরূপে, ক্রবর্ষে
মংস্তরূপে এবং সর্বাত্র বিশ্বরূপে বিরাজমান ও
পরিপুজিত হয়েন। তাঁহার একমূর্ত্তিই ভিন্ন ভিন্ন
রূপে প্রাত্ত্র্ভ হইয়াছে। এক অগ্রি বেমন
কার্তমাত্রেই নিহিত আছেন, ভগবান্ হরিও
তেমনি একাকী বহুরূপে বিরাজ করেন। কিন্তু
পণ্ডিভগণ ভাঁহাকে একই ভাবিয়া থাকেন।

কিম্পুরুষ প্রভৃতি অফবর্ষে ক্ষুদ্রয় ও শোকাদির ভয় নাই। তথায় চতুর্বিংশভিসহত্র প্রছা অনাময় জীবন সম্ভোগ করে। ঐ সকল বর্ষে क्रजानि कहाना नाहे। अनुभाग मुक्त नतीयांज्य, (मनबाज्क नरह। अकारनारकत ग्रहर आशरे অরের ও লক্ষীর মুভাব নাই। যে সকল পাপ করিলে অবশ্য পড়িত হইতে হয়, সে সকল পাত্রেরও তথায় প্রাবন্য নাই। সত্য ও ধর্মই তত্ত্ত্য লোকের একমাত্র অবলঘন। এইজন্ম লোকের গৃহে হাহাকার নাই। সকল বর্ষেই শত শত কুলাচল আছে। সেই সেই পর্বাত হইজে শত শত নদা তীর্ধরূপে প্রাছ্রভূ ভ হই-शारकः। के तकत नतीत कत भान कतिरल, भन्नीत শীতল, সম, স্থিয় ও শুদ্ধরূপ প্রাপ্ত হয়। এই জম্ম প্রধান প্রধান নদীর তীর সকল ঋষিগণের

পবিত্র আজ্ঞান সম্পারে ও আলোকত্রা করণারসমূহে প্রশোভিত ও অলাছত। এইজনা স্থানীয়া
পুরুষ সকল তথায় বাস করেন।

হে মুনে ! ভান্নভবৰ্ষে বে বে জীৰ পাছেঁ. দে সকল বলিভেছি, শ্ৰহণ কয়।

> वेड्याद्यद्वतं सद्दाण्तारमं क्वमदकाच नामक करणः विश्व व्यवस्थातं नयांश्च ।

চতুক্তিংশ অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, হে সুনিসন্তর্ম ! সমুদার তীর্থ মাহাত্মা কীর্ত্তন করিব, যাহা দারা ভূক্তি ও সুক্তি লাভ হইয়া থাকে।

বাহার পদযুগল সৎপথে ধাবদান, হতময় সং-কার্য্যের অফুষ্ঠানে তৎপর ও মন সর্বভোভাবে भारतक धादा दय द्राक्ति विषान, क्रमेंची क कीर्विमान् তাহারই ভীর্থফল লাভ হইয়া থাকে। এরপ যে ব্যক্তি প্ৰতিগ্ৰহপরামুধ, লবাহারী, জিডেক্সির ও নিম্পাপ হইয়া তীর্ঘাত্র। করে, তাহাঁর সমুদায় यरखन कन नाच रहेना थारक। ट्नांट वित्रावि উপবাস,ভীৰ্ষগমন এবং হুবৰ্ৰ ওগোদান না করিয়াই म्बिल रहेश कथाधर्ग कट्य। असः धर्माताक यम কহিয়াছেন, হত্তপদসত্ত্বেও যে ব্যক্তি ভীর্থযাত্তা ও অন্যান্য সংকার্য্যের অমুষ্ঠান না করে, সে দ্যাজি আমার পুরী দৃষিত করিয়া থাকে। अইঞ্জন্য আমি দুভগণ খারা তাহাদিখকে পুরীর বাহিরে চিরকাল বিষ্ঠাকুতে নিহিত করিয়া স্থার্থি। তথায় তাহারা কৃষি হইয়া, কুষার সময়ে 'অফু ক্রবা না পাইয়া, আপনাআপনি ভক্ষণ করিয়া থাকে।

যজ্ঞাদির অমুষ্ঠান ক্রিদেও, যে ফল না হয়, তীর্থগমন হারা দেই ফল প্রাপ্ত হওয়া যায়। পুষ্
র সর্বাপেকা উৎকৃষ্ট তীর্থ। তথায় দশ
কোটিসহল তীর্থ ত্রিদক্ষ্যা সদিহিত আছে।
দেবগণের সহিত ত্রক্ষা ও স্বর্গাভিলারী ঋষিরণ
তথায় বাস করেন। দেবগণ তথায় সিদ্ধিলাভ
করিয়াছেন। তথায় সান করিয়া, পিভৃগণ
দেবগণের পূজা করিলে, সিদ্ধিসম্পন্ন হইয়া
থাকে এবং অখনেধ যজের ফললাভাত্তে ত্রক্ষা
লোকে গতি হয়। ফার্তিক মাসের পূর্ণিমায়
তথায় অন্ধদান করিলে, সর্ববিপাপ মোচন, নিরতিশয় শুদ্ধিসংঘটন ও ত্রক্ষাদন প্রাপ্তি হয়।

পুক্রে গমন করা তুকর, পুক্রে তপস্থা করা তুকর, পুক্রে দান করা তুকর এবং পুক্রে বাস করাও অতীব তুকর। তথায় বাস করিলে, জ্বপ করিলে, আদ্ধ করিলে ও দেবতাগণের আরাধনা করিলে, শতকুলের উদ্ধার হয়। ঐ পুক্রেই জন্মার্গ ও তণ্ডলিকাশ্রম তীর্থ বিদ্যামান আছে।

অনন্তর কর্ণাঞ্জম, কোটিতীর্থ, নর্মনা, অর্ব্যুদ, চর্মণৃতী, সিক্ষু, সোমনাথ, প্রভাস, সরস্বতীসাগর-সঙ্গম, সাগরতীর্থ, পিণ্ডারক, মারকা, সর্বসিদ্ধিদা গোমতী, ভূমিতীর্থ, ত্রহ্মাতুঙ্গ, পঞ্চনদ, ভীমতীর্থ, গিরীক্ষ্র, পাপনাশিনী দেনিকা, পাপনাশক নগো-স্কেদ, পরমপ্রিত্র বিনশন ও ক্যারকোটি এই সকল উৎক্ষে তীর্থ প্র্যুটন করিবে।

ক্রুক্কেত্রে গমন করিব ও ক্রুক্কেত্রে বাস করিব, সর্বাদা এই প্রকার বলিলেও, পাপ মৃক্ত, শুদ্দিসম্পদ্ধ ও স্বর্গলাভ হইয়া থাকে। এই কুরু-ক্ষেত্রে বিফুপ্রভৃতি দেবগণ নিত্য সন্ধিহিত আছেন। স্তরাং এই স্থানে বাস করিলে, চরমে ভগবান্ নারায়ণকে প্রাপ্ত হও্যা যায়। প্রেয়:কাম পুক্ষ সর্বাদা পবিত্র হইয়া, তথায় বাস করিবেন। সরিদ্ধা সরস্থতী তথায় সন্ধিহিত আছেন। এই নদীতে স্নান করিলে, ব্রন্ধুলোক লাভ হইয়া থাকে। কুরুক্তেরে পাংশু দকলও পরম গতি সম্পাদন করে।

অনস্তর ধর্মতীর্থ, হংবর্ণতীর্থ, গঙ্গাধারতীর্থ ও পরমপ্রিত্র কণখলতীর্থে গমন করিয়া, তথা হইতে ভদ্রকর্ণ হ্রদ নামক উৎকৃষ্ট তীর্থে সমাগত হইবে। অনস্তর গঙ্গা, সরস্বতীসঙ্গম, অন্যাবর্ত্ত, ভৃগুভূঙ্গ, কৃষ্ণাত্র, গঙ্গোদ্ভেদ, বারাণদী, অবিমুক্ত, কপালমোচন, তীর্থরাক্ষ প্রয়াগ, গোমতী, গঙ্গান্সঙ্গম, এই সকল তীর্থে যথাবিধানে সানাদি করিলে, পিতৃলোকের উদ্ধার ও আত্মার সম্পতি হইয়া থাকে; তিরিষয়ে অনুমাত্র সন্দেহ নাই। পরমপূজ্য জননী ভাগীরথী সর্ব্বত্তই স্বর্গ সাধন করেন। ধেহেতু, তিনি সাক্ষাৎ ভগবান নারায়ণের পরম পরিত্র চরণ হইতে প্রাভূষ্ঠ হইয়া-ছেন। তাঁহার অপেকা পরিত্র তীর্থ পৃথিবীতে বিতীয় লক্ষিত হয় না।

অনন্তর পরম পবিত্র রাজগৃহ, শালগ্রাম, বটেশ, বামন, কালিকাসসম, লোহিত্য,করভোয়া, শোণ, প্রীপর্বত, কোলগিরি, সহ্ছ, মলয়, গোদাবরী, তুপভন্রা, কাবেরী, তাপী, পদ্যোষ্টী, রেবা, দশুকারণ্য, কালঞ্জর, মুঞ্জবট, স্থপারক, মন্দাকিনী, চিত্রকৃট, শৃঙ্গবের পুর, পরম তীর্থ অবস্তী, পাপনাশিনী অযোধ্যা ও নৈমিষ ইত্যাদি তীর্থ সকল গমন করিলে, পরম সদ্গতি সমাহিত হয়। নৈমিষ অতি উৎকৃত তীর্থ। তথায় গমন করিলে, ভুক্তিও মুক্তি সম্পন্ন হইয়া থাকে। প্রের্ব ধ্বিগণ তথায় সমাগত হইয়া, ভগবান্ বাহ্যদেবের প্রসাদ লাভ কামনায় বহুতর সভ্জের অস্টান করিয়া-ছিলেন।

পঞ্চত্রিংশ অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, হে নারদ! অধুনা দেবাদিদেব মহাদেবের স্তব ও পূজাবিধি কীর্ত্তন করিতেছি, শ্রেবণ কর।

দাধকপুরুষ প্রয়ত হইয়া, যথাবিধি উপাচারে সমস্ত আহরণ পূর্বক স্বাহান্ত মন্ত্রতিতয় উচ্চারণ ও জ্ঞানেব্রিয় স্পর্শ করিয়া, একমনে মহাদেবের পূজা করিবে। পূজা সময়ে চতুঃষষ্টি যোগিনী ও ভূত প্রেতাদির অর্জনা করিতে হইবে। অনস্তর পূজা সমাধা হইলে, এই বলিয়া স্তব করিবে, হে রুদ্র! তুমি সকলের স্থষ্টি করিয়াছ, সকলের পালন করিতেছ, এবং সকলের অন্তরে আত্মা রূপে বিরাজ করিতেছ। তোমাকে নমকার। লোকে যে কোন যজ্ঞের অনুষ্ঠান করুক, ভোষার অর্চনাই তৎসমন্তের উদ্দেশ্য। ভূমি সকলের কর্তা: তোমার তুরবগাহ মায়ায় সমস্ত সংসার মোহিত হইয়া আছে। তোমার এই মারার নাম ভগবতী। দেবী ভগবতীর অর্চনা করিলেই, সমন্ত দেব দেবীর পূজা করা হয়। আমি ভোমার নমস্কার করি।

হে ভর্গ! হে বরেণ্য! আমি হুদয়, মন,
বৃদ্ধি ও আয়া সমস্তই তোমাতে অর্পণ করিতেছি,
তুমি আমার প্রতি প্রদম হও। হে পরমজ্যোতিঃ!
তুমি নারায়ণ, তুমি কিছুতেই লিও নহ; অথচ
সকল পদার্থেই বিরাজমান। তোমার অন্ত মাই,
এই বিশাল প্রকাণ্ড তোমার হরপ; এই জ্জ্ঞ
তোমার নাম বিরাট। তুমি আপনিই আপনার
প্রকাশক; এইজন্য তোমার নাম হুরাট। তোমার
প্রভাবে ধর্ম নিরাক্ত হয়। যাবতীয় ভূত তোমার
আপ্রতি ও আ্জ্রাবহ। তোমার মূর্ত্তি অতি প্রতণ্ড,

তুনি ত্রিলোকের রক্ষা কর্দ্ধা এবং ভোষা ছইতেই ইন্দ্রিয়গ্রাম পরিচালিত হইয়া থাকে । আট্রি হুছ শরীরে জীবিত থাকিয়া এই যে কার্য্য করিতেই, ইহা তোমারই অনুগ্রহ ও প্রভাব। ভূমি প্রাণ ও চৈতক্য রূপে আমার শরীরে বিচরণ করিতেই, এই জন্ম আমি বাঁচিয়া আছি এবং ইচ্ছামত গমনাগমন পূর্ববিক সকল কার্য্য করিতেছি, অভএব তোমাকে বারংবার নমস্কার করি।

হে নিতা। চকু কর্ণ প্রভৃতি ইন্দিয়গণ তোমাকে জানিতে গিয়া অবসন্ন হইয়া পড়ে। এই জত তোমার নাম অতীন্দ্রের। হে অতীন্দ্রিয়। হে অতীন্দ্রিয়। তুমি ইন্দিরের যশযোগ্য বিষয় সকল স্থান্তি করাতেই সংসার বাস এরূপ হথের হইয়াছে। ভূমি যদি চকুমাত্র স্থান্তি করিয়াই কান্ত হইতে,দেখিবার পদার্থ সকল দৃষ্টি না করিতে এবং বদি সূর্য্য চন্দ্রাদির রচনা করিয়া আলোক প্রদান না করিতে, তাহা হইলে কি বিভূষনা হইত। লোকে যে পুত্র প্রভৃতিকে আলিঙ্গন করিয়া, ভ্রশীতল সলিল দেখন করিয়া, অথবা প্রাতঃকালীন স্থান্ম স্থীরণে অবশ্বন করিয়া, অথবা প্রাতঃকালীন স্থান্ম স্থীরণে অবশ্বন করিয়া, প্রথা মন দেহ আপ্রাত্তিক করে, ইহা তোমারই করুণা। ভূমি স্পর্ণেন্তিরে প্রদান করিয়া, প্র সকল ভ্রথের পথ সমুভাবিত করিয়াই, তোমাকে নমকার করি।

হে সত্যক্ষরপ পূর্ণানন্দ পরম বিভো! ছুমি
সকলের প্রধান ও উৎকৃত্ত এবং জক্ষর ও অবিচলিত শুস্তরূপে সমস্ত ভুবন ধারণ করিয়া আছে,
এই জন্ম সহলা প্রকার উপস্থিত হয় না। আহা,
তোমার বিশ্বরাজ্যের কি শৃথকা ও স্থাবস্থা!
সূর্য্য ও চন্দ্র প্রতিদিন যথাসমন্তর্মই উদিত ও অন্তমিত হইয়া,যথাবিধানে ও যথাযথক্রপে লোকযাত্রা
সম্পাদনে ব্যাপৃত সহিরাছেন; একদিন একক্ষণের

জন্মও স্থায় মধ্যাদা লজ্জ্মন করেন না। ইহা দেখি-য়াও যাধারা তোমার প্রতি প্রেদ্ধাহীন হয়, তাহারা জীবিত জড়, কোন সন্দেহ নাই। আমি তোমায় বারংবার নম সার করি।

হে অচল ৷ তুমি তুর্নিবার, ছঃসহ, ছুরতিক্রম, তুর্দ্ধর্য, ছুম্প্রকম্প ও তুরবগাহ। তোমাকে আয়ভ করা কাহারো সাধ্য নহে। তুমি জয়, বিজয় ও ও চুর্হা। তুমি তেজ ও ডেজাফী, তুমি প্রভাব ও প্রভূ। তুমি চন্দ্র, যম, কুধা, শীত, উষণ ও জরা-রূপী। তেখাকে শ্বরণ করিলে, মনোব্যথা দূর হয় ৷ তুমি রোগ ও ঔষধ স্বরূপ এবং তুমিই বিবঁও অমৃত, ভয় ও অভয় স্বরপ। দাকাৎ অপবর্গ তোমার দক্ষিণা মূর্ত্তি। তোমার প্রাসাদ প্রাপ্ত পুরুষগণ কদাচ স্বর্গভোগের অভিলাষী হয়েন না। তোমা হইতে ব্যাধি ও আধি সকল সংসারে গমনাগমন করিয়া থাকে। তুমি শিথতী, পুগুরী-কাক পুত্রীক বনবাদী, দত্তধারী, পরম দেবতা, পৃষ্ঠপতি, জনৎপতি ও মরুৎপতি। প্রলয় এক-মাঠ্র তোমাতেই প্রতিষ্ঠিত। তুমি মৃত্যু হইতে রকা 😉 প্রমান্স বিধান কর। তুমি সতেজ, না অক্ষকার, না স্ত্রী, না পুরুষ, না নপুংসক; অঁথচ ভূমিই তৎসমূদায়। এইরূপে তোমার প্রকৃত স্বন্ধপ নিরূপণ করা কাহারও সাধ্যায়ত নহে। তুমিই জল অধীৎ বল এবং তুমিই তেজ অর্থাৎ অগ্রিরূপে শরীরমধ্যে সঞ্চরণপূর্বক শোণিত রাশি সমুদ্রাবন করিয়া, অপূর্বকোশলে প্রাণ রক্ষা জলে ও অনলে একত্র অবস্থিতি করিতেছ। ৰ্ভোমা ভিন্ন আৰু কাহারও বিধান কোন মতেই সম্ভব হয় না; আমি তোমায় নমন্ধার করি, ভূমি প্ৰীসম হও।

হে নিত্যানৰ ! তুমি বিশ্বস্ৰুষ্টা, বিশ্বরূপ,

বিশ্বমুখ ও বিশ্ববাছ। এই বিশ্ব কিরূপে তোমা হইতে উন্তুত **হইল, তাহা কেমন** করিয়া বলিব ? আমি জন্মিয়াছি, কেবল এইমাত্র জানি। আমার পিতা ও মাতাও আমার ন্যায় জন্মিয়াছেন, জানি। তন্তিম আর কিছুই জানি না ও বলিতে পারি না। কিন্তু তুমি সকলই জান ও বলিতে পার। তোমার অবিদিত ও অনির্ব্বাচ্য কিছুই নাই; যাহা তোমার অবিদিত ও অনির্ব্বাচ্য,তাহা কিছুই নহে, আকাশ-কুত্রমের ন্যায় অলীক ও শব্দমাত্র। অতএব আমি যেন সর্বাদা ভোমার বিদিত থাকি। ভুমি আমার প্রতি প্রদম হও: হে শান্তকরপ! তোমাকে জানিয়াছে এবং তুমি যাহাকে জান, তাহারা কি ভাগ্যবান মহাপুরুষ! লোকে কতি-পয় ব্যক্তিমাত্রের বিদিত হইলে, কতই অহস্কার করে. কিন্তু তাহারা জানে না যে মনুষ্য ঈশ্বর নহে। অতএব তাহার জানা, না জানা একই কথা। বিশেষতঃ ক্ষয়শীল সংসারে কোন বস্তুই স্থায়ী নহে ; অতএব তুমি যাহাদিগকে জান,ভাহা-রাই প্রকৃত বিদিত পুরুষ; আমি তাহাদিগকে সর্ব্যান্তঃকরণে নমস্কার করি; ভূমি আমার প্রতি প্ৰদন্ধ হও।

হে পরমপুরুষ! পিতা ও মাতা একমাত্র পুত্রেরও প্রার্থনা পূরণ করত সকল সময়ে সমর্থ হয়েন না। কিন্তু তুমি আবহমান কাল এই অনন্ত কোটি ব্রহ্মাণ্ডের প্রার্থনা পূরণ করিয়া আসিতেছ। একদিন এককণের জন্যও তাহাতে কথমও বিফল হও না। এইজন্য তোমাকে পরম পিতা ও পরম মাতা বলিয়া থাকে। আমি সেই পরম পিতা ও মাতা ভোমার শরণাপন্ন হই। ওঁ পশুপতি পূর্ব-দিকে আমায় রহ্মা করুন। ভূতনাথ পশ্চিমদিকে আমায় বহুলা করুন। বিশ্বাত্মা দক্ষিণদিকে আমায় রক্ষা করুন। প্রাণপতি উত্তর্গিকে আমায় রক্ষা করুন। মহাকাল উর্দ্ধিকে আমায় রক্ষা করুন। ভবদেব অধোভাগে আমায় রক্ষা করুন। ভবদেব অগ্নির্ন্তী আমায় অগ্নিকোণে এবং বায়ুরপী আমায় বায়ুকোণে রক্ষা করুন। হে বেদ্য! আমি যেন তোমার অনুগ্রহে দকলকালে দকল দেশে ও সকল ব্যক্তিতে স্থরক্ষিত হই। তুমি আমার ও আমার প্রতিবেশীর ছফ্ট দমন কর, দমন কর। ও আং হ্রীং হ্রং স্বাহা ও স্বস্থি স্বস্থি ও ।

হে দেবা! হে অনাদে! অক্ষা তোমার বৃদ্ধি,
সরস্বতী তোমার বাক্য, অনল ও অনিল তোমার বল
এবং দিবা ও রাত্রি তোমার চক্ষুর নিমেষ ও
উন্মেষ। এইরূপে ভূমি বিশ্ব ব্যাপ্ত করিয়া আছ।
কিন্তু কেহই তোমায় দেখিতে পায় না, ভূমি
সকলকেই দেখিতেছ। তোমার কথা কেহ শুনিতে
পায় না, কিন্তু ভূমি সকল শুনিতেছ। সেইজন্য
তোমাকে বিশ্বচক্ষু বিশ্বপ্রবা বলিয়া থাকে। পিতা
যেমন উরসপুত্রকে পালন করেন, ভূমি তেমনি
আমাদিগকে রক্ষা কর। ভূমি ভিন্ন আমাদের
রক্ষার উপায় নাই। ভূমি স্বয়ং রক্ষাস্বরূপ।
ওঁ স্বাহা সর্ববিব্যাপী মহাদেব তোমায় নমস্কার,
নমস্কার।

হে ঈশান! আমি বখন সমুদ্রের উপকৃলে
দণ্ডায়মান হই, তখন তোমার জলময়ী মহামূর্ত্তি
আমার শ্বৃতিপথে সমুদিও হইয়া, আমাকে পদে
পদেই বিহলে করিয়া থাকে। উপরে যখন দৃষ্টিপাত করি, তখন তোমার মহাকাশমূর্তি আমার
উৎস্ক ও তোমাকে পাইবার জন্ম ব্যক্তিক্রদ্রের
পদগ্রহণ করিয়া, আমাকে একবারেই জ্ঞানশৃত্য ও

প্রান্ধন্য করে। আবার, যথন অনবর্ত অনাহত বেগে ধাবমান শীতল সমীরণ সেবন করি,
তথন তোমার আকাশ, পাতাল, স্বর্গ, মর্ত্য, সমস্ত
ভ্বনব্যাপী বায়ুমূর্ত্তি সহসা চিন্তাপথে সমুদিত
হইয়া, আমার মনপ্রাণ সমুদায়ই অধিকার করিয়া
ফেলে। ফলতঃ, এইরূপে প্রতিপদেই তোমার
বিরাটরূপের মহিমা আমার জ্ঞানপথ আচ্ছম ও
হৃদয় বিহরল করিয়া থাকে। আমি তখন কি
বলিয়া, তোমার স্তব করিব, ভাবিয়া পাই না।
ভোমাকে নমকার!

হে মহেশর! ভক্ত তোমার প্রাণ। তুমি
চুর্লক্ষ্যস্বরূপে দকলকে আবরণ করিয়া, কোথায়
বাদ করিতেছ, কেহই তাহা জানে না। এইজন্য
তাহারা হুর্গম কৈলাদে ও স্বচ্নপার দাগরপারে
তোমার ছান নির্দেশ করে। কিন্তু আমি জানি
তুমি আমার হুচয়ে, মনে, প্রাণে ও আস্থার অভ্যভরে চেতনারূপে, জ্ঞানরূপে, চেন্টারূপে, চিন্তারূপে, ফলতঃ দমন্ত প্রস্তুরূপে বাদ করিভেছ।
অভ্যব তোমাকে নম্কার। নাথা তোমার
করুণা কি অদীম! তুমি ক্ষুধা দিয়াছ, ক্ষ্ধার
উপযুক্ত প্রচুর আহার দিয়াছ, আবার, আহার
দাধনের উপযুক্ত পরিপাকশক্তি দিয়াছ। এইরূপে
তুমি আমাদের দকল অভাব পূর্ণ করিয়াছ। আমি
তোমার অনন্তশক্তির শর্ণাপম হই, রক্ষা কর,
রক্ষা কর।

द यालीकशान ! स्थारन त्यांक नाहे, यूषा नाहे, द्वांग नाहे, ज्वा नाहे, क्या नाहे, क्या माहे, स्थारन निज्य जानम, निज्य स्थ, निज्य माखांब, निज्य क्षीजि छ निज्य जारमान विवाज-मान, स्थारन हिश्मा नाहे, स्वय नाहे, क्या नाहे, जमुद्दा नाहे, श्वराताह छ श्वद्यानि नाहे, स्थान

मर्ककानक्रशावर, मर्काताक त्रभीय ७ मर्क मरक्रा-ষের আধার, যেকানে নিত্য শান্তি, ক্ষমা, দয়া, সততা, ধৃতি, লক্ষ্মী, সমৃদ্ধি, সম্পদ ইত্যাদি পূর্ণ-ভাবে বিরাজ করিয়া থাকে, তাদুশ স্থাবহ, স্থলর ও স্লুসম্পন্ন সর্বাধা স্থানই ডোমার ভক্তগণের বাস। পাপাত্মারা উহার ত্রিদীমার যাইতে পারে না। তথায় পূৰ্ণচন্ত্ৰ নিত্য উদীয়মান ও মলয়ানিল নিত্য প্রবহমান এবং সমুদায় ঋতু নিত্য একত্রে বিরাজমান হইয়া থাকে। হে বিভু! আমি যেন তোমার প্রদাদে দর্বদা উল্লিখিত স্থানে বাদ করি এবং আমার প্রতিবেশীবর্গও যেন তথায় চিরকাল স্থান প্রাপ্ত হয়। আমি যাহাদের সহিত একত্র ক্রীড়া করিয়াছি, কৌতুক করিয়াছি, শয়ন করিয়াছি, ভোজন করিয়াছি, আমোদ করিয়াছি, অথবা এই দকল না করিয়াছি, অথবা যাহারা আমার ও আমার পক্ষীয়গণের বিপক্ষ বা বিপ-কের অমুগত, তাহারাও সকলে যেন ঐ স্থানে বাস করে। অথবা, আমি যাহাদের সহিত এক পৃথিবীতে বাদ করিতেছি, সজাতি হউক, বিজাতি হউক, সকলেরই ঐ স্থান লাভ হউক।

হে সত্য! ইহসংসারে মানবগণের সহস্র সহস্র পিতা মাতা ও শত শত জীপুত্র জন্ম গ্রহণ করি-তেছে, করিয়াছে ও করিবে। কিন্তু সবিশেষ পর্য্যালোচনা করিলে, স্পান্টই প্রতীত হয়, কাহা-রও সহিত কাহার কোন সম্পর্ক নাই। আমি কাহারই নহি এবং কেহই আমার নহে। কিন্তু ভূমি সকলের এবং সকলেই তোমারি। তোমার সহিত আমাদের চিরকালই সম্পর্ক, কোনমতেই তাহার লয় হইবার সম্ভাবনা নাই। ভূমি ইহ-লোকে, ভূমি পরলোকে, ভূমি ইহকালে, ভূমি পরকালে, এইরূপে সর্বর্ত্তই ভূমি। ভূমি ভিন্ন

किছूरे नारे, ছिल ना खेदर शंकित्द अना। खरे ক্ষেহময় পিতা, এই ক্ষেহময়ী জননী এই মুস্থর্ডেই সমুদায় স্নেহ মমতা সঙ্গে লইয়া কালের কবলে লয় পাইতে পারেম। এদিকে আবার চাহিয়া দেখি, ঐ প্রীতির পুত্তলিস্বরূপ পরম প্রণয়ময়-প্রণয়ময়ী পুত্রকভা দারুণরোগে জীর্ণ হইয়া, রজ-নীর দমাগমে স্তকোমল স্তকুমার পদ্মের ন্যায়, নয়নযুগল মুকুলিত করিয়া চিরকালের জন্য নিদ্রায় আচ্ছন হইল। আর ভাহাদিগকে জানিতে হইবে না: আমার বলিয়া সংসারে তাহাদের সহিত যে সম্পর্ক ছিল, এইখানেই ভাহার লয় ও নির্ব্বাণ হইল। আর ডাহাদিগকে পুত্র ও কন্যা বলিরা কোন কালেই ডাকিবার ও আদর করিবার সম্ভা-বনা নাই। এইরূপে সংসারের ঘাহা কিছু, সমস্তই অলীক, অসার, অসথন্ধ, ক্ষণভঙ্গুর ও নাম্মাত্তে মধুর। কিন্তু ভূমি চিরকালই আহত ছিলে ও थाकिरंत। दर्भान कारलई दर्भागत करा नाहे, ना নাই। তুমি পর্ম সত্যস্বরূপ। অতএব আমরা তোমাকে ছাড়িয়া আর কাহার শরণাপন হইব ? তুমি আমাদিগকে রক্ষা কর, রক্ষা কর।

হে আদ্য! হার ও অহারগণ সর্বনাই ভোমার অর্চনা করে। তুমি সহজ্ঞলোচন ও সমস্ত যজ্ঞের ঈশ্বর। তোমার হস্ত, পদ, মস্তক, চক্ষু, কর্ণ ও মুথ সর্বত্র বিরাজমান রহিয়াছে; বিশ্বের এমন হান নাই, যেখানে ঐ সকল নাই। হাভরাং সংসারে যথন হাহা ঘটে, তুমি ভাহা দেখিতে পাও ও শুনিতে পাও। লোকে ভোমাকে গোপন করিয়া কোন কার্যাই করিতে পারে না। তুমি শঙ্কুকর্ণ, মহাকর্ণ, কুম্বকর্ণ, গজেক্ষকর্ণ, গোনকর্ণ ও পাণিকর্ণ। তুমি শতোদর, লভাবর্ত, শতজ্জির ও শতহন্ত। পণ্ডিভগণ ভোমাকেই ক্রমা,

ইক্র ও আকাশের ভায়, নির্লিপ্ত বলিয়া থাকেন এবং তুমিই জল, মেঘ, বিস্থাৎ, বজ্ঞ, করকা ও বাম্পাষরপ। দাগর ও আকাশের কায়, তোমার মহীয়দী মূর্ত্তির ধারণা ও ইয়তা করা ছুক্কর। কেহ কথন তাহা পারে নাই ও পারিবেও না। গোসমূহ ষেমন গোষ্ঠে বাদ করে, দেইরূপ ভোমার মহা-মূর্ত্তি সমস্ত দেবতার আলয়। ভূমি কার্য্য, কারণ, ক্রিয়াও করণ। স্থুল, সূক্ষ্ম যাহা কিছু, সমস্তই তোমাতে উৎপন্ন ও লয় পাইয়া থাকে। ভৰ मर्ख, क़िक्क, वतन, शश्चभिक, तनवतनव, मश्रात्मव, ত্রিজট, ত্রিশীর্য, ত্রিশূলী, ত্রাম্বক, ত্রিনেত্র, ত্রিপুরম, চণ্ড, কুণ্ড, অণ্ড, অণ্ডধর, দণ্ডী, नमकर्ग, मिथमूख, छेक् मः है, छेक् दिक्न, विश्वक, বিশ্বময়, বিলোহিত, ধূড্র, নীলতীব, বিরূপাক্ষ ও দঞ্চ ইত্যাদি বিৰিধ নামে তুমি সংসারে বিখ্যাত। তোমার দদৃশ বা তোমা অপেকা অধিক বা উৎকৃষ্ট আর কেহই নাই। আমি ভোমাকে নমস্কার করি-নমস্কার করি। তুমি প্রসন্ন হও, প্রসম হও।

হে শান্ত! তোমার রূপ নানারূপ ও অব্যক্ত।
ভূমি আমার নিকটে, দূরে, পাশ্বে, সম্মুখে, উদ্ধে
পশ্চাতে, হৃদযে, অন্তরে, প্রাণের অভ্যন্তরে ও
আক্মার মধ্যে সর্বাণা অধিষ্ঠান করিতেছে। কিন্তু
আমি দেখিতে পাইতেছি না। ঘোর সন্ধান্তরে
যেন ঘূর্ণায়মান হইতেছি। তোমারই ক্যোতি
হইতে আমার চক্তুতে দৃষ্টি আসিয়াছে, মনে বোধ
আসিয়াছে, দেহে কান্তি আসিয়াছে এবং প্রাণে
চেন্টা আসিয়াছে। তুমি শিব, শান্ত ও পরম
শান্ত। তুমি হিরণ্যক্বচ, হিরণ্যক্তি

তোমার করুণকটাকের লেশমাত্র প্রাপ্ত

হইলেও, সমস্ত সংসারের আধিপক্তা লাভ ইইয়া থাকে। মনীধিগণ ভোষাকে শুক্তা **ভূয়মান এবং** দর্বভূতের অন্তরাত্মা, দর্বভক্ষ, আব্দাশন্ধরণ, সকলের নাভিষরণ ও কিলকিলাম্বরপ ইত্যাদি দার্থক নামে অভিহিত করেন। তুমি মাবরক-দিগের আবরণ কর। তুমি জ্যেষ্ঠ শ্রেষ্ঠ, কাল-নাথ, কল্ল, প্রালয় ও লয়স্বরূপ। তুমি - কুশাঙ্গ, কৃশ ও সংহাউ। ভোমার হাস্ত হুন্দুভিম্বনবৎ ভীষণ ও গভীর। তুমি ভীষণ, ভীষা, উগ্র-ও অত্যুগ্ৰ, উথিত ও অবস্থিত, ধাৰমান ও স্থির, শয়ান ও জাগরুক। তুমি স্ষ্টিকর্তা, ধর্ম্বের- হিউ-কারী ও ধর্মস্বরূপ। ভূমি বর ও বরদ, বি**পদ্ ও** সম্পদস্করপ, বায়ুর ভার বেগশীল, সাকাৎ দয়া ও হিংদাস্থরূপ এবং দত্ব, রঞ্জ ও ডমোগুর্লের আধার। ভূমি রাগী ও বিরাগী, ধ্যান্তা ও ধ্যের, মিলিত ও পৃথক্, ছায়া ও আতপ, গ্রীয়া ও লৈডা-স্থরপ, অঘোর ও ঘোররূপ এবং তুর্নি অপাদ 🔏 বহুপাদ,অহন্ত ও বহুহন্ত,অচকু ও বহুচকু, কুটো 🛎 মহান্, তট, নদী ও সাগরশ্রপ। তুমি কাল 📽 ষহাকাল। তোমার উদরে সমস্ত ভ্রহ্মাও বাস করে। তোমাকে বারংবার প্রণাম করি, পূরা করি ও স্তব করি।

হে অতিঘার ! তুমি অয় ও অয়দাতা । তুরি
বালক, যুবা ও রদ্ধ । তুমি প্রভুর প্রভু, অর্করিউ
ভক্ত এবং মহানের মহান্ পর্মমহান্ । তুমি
ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক্ষবিষয় স্বরূপ । তুমি
কাম, কামদ ও কামস । তুমি প্রাক্ষণ । মেই,
বৈশ্য, শুদ্র ও অভাত অধম বর্ণস্বরূপ । মেই,
বিছ্যুৎ, মেঘণর্জন, সংবৎসর, ঋতু, মাস, প্রক্র,
যুগ, নিমের, কণ, নক্ষত্র, গ্রহ, কলা, কাঠা,
যুহুর্জ, সমুদায়ই তুমি । তুমি বর্ণহীন, উত্তর্বর্ণ

ও বর্ণকরা। তুমি কাল, অকাল, অতিকাল ও দুকাল। তুমি নিলমুখ, ভীমমুখ, অমুখ, তুমুখ, তুমুখ, চতুমুখ বস্তুমুখ, অগ্নিমুখ, নিমুখ, বেদমুখ ও বিখ্যুখ। তুমি ভেল, বিছেব, রাগ, বিরাগ, রোগ, বৈরাগ, কোম, জেম, কোম, কোম, কোম, কোম, কোম, কোম, কোম, বেলাভ, জয় ও পরাজয়য়রপ। তুমি বাহা, অধা, বঘট্কার ও নমকারম্বরপ। তুমি নদীমধ্যে গলা, বর্ণমধ্যে তালাণ, মুগমধ্যে ব্যান্ত্র, পক্ষিমধ্যে গরুড, সর্পমধ্যে বাহ্নকি, সমুদ্রমধ্যে ক্লীরোদ, যন্ত্রমধ্যে ধক্র, অক্রমধ্যে বক্ত, ত্রতমধ্যে সত্য ও ইন্তিয়েমধ্যে মনস্বরূপ। আমি তোমার শরণাপ্ত হট। আমায় রক্ষা কর, রক্ষা কর।

`হে পিডামহ! ভূমি পিতার পিতা পরম পিতা, যাতার মাতা পরম মাতা এবং ভূমি গুরুর গুরু পর্মগুরু ও দেবতার দেবতা পরম-দেবতা। বে ব্যক্তি যেরপ প্রবৃত্তির লোক, তুমি তাহাকে ভত্তপ ফল প্রদান করিয়া থাক। স্বর্গ ও নরক: হুখ ও চুঃখ: সম্পদ ও বিপদ; লাভ ও আংলাক ; ভাব ও অভাব ; জয় ও অজয় ; ভয় ও অভয়: মৃত্যু ও অমৃত : বন্ধন ও মৃক্তি : হর্ষ 😉 বিপদ; শোক ও কশোক; আশা ও নৈরাশ্র ইত্যাদি সমস্তই তোমার অধীন। যথন যাহা মনে কর, **ডেখনই ভাহা ক**রিতে তোমার ক্ষযতা আছে। ঐ ক্ষমতার কোনকালে কোনদ্রপ ব্যক্তি-চাৰ নাই। এই অভভেদী উত্তৰ্পনিরাজও একদিন বিচলিত ইউতে পারে: ঐ অপার অসীম অসমিধিও একদিন ৩ক হইতে পারে: স্প্রির আৰু হইতে নিরবলম্বে অধিষ্ঠিত ঐ শ্ববিশাল আকাশও একদিন সহসা ভাঙ্গিয়া পড়িতে পাৰে; অথবা দিবারাত্রি অনাহতবেণে ধাবমান এই বায়ু প্রবাইও একদিন রুদ্ধ বা প্রস্কাত্তের প্রত্যেক

অণুত্তে তেজরূপে ব্যবস্থিত এই অগ্নি একদিন হয় ত একবারেই নির্বাণ ছইতে পারে: কিন্তু তোমার ঐ ক্ষমতার কোনকালেই কোনরূপে লয় নাই। ইহাই ভোমার ঈশরত্ব: অথবা ঐ কম তাই সাক্ষাৎ ভূমি। ভূমি ভিন্ন এরূপ ক্ষমতা আর কাহাতে আছে, ছিল বা থাকিবে অথবা থাকিতে পারে? লোকে এইমাত্র যে ইচ্ছা করে, পর ক্ষণেই তাহা বিফল বা বিপরীতরূপে পরিণত হয়। কোনরপেই ইহা নিবারণ করিতে তাহার ক্ষমতা হয় না। কোন্ ব্যক্তি আপনার ও পুতাদির দীর্ঘ-জীবন ইচ্ছা না করে ? কিন্তু কোন্ ব্যক্তি তাহাতে কৃতকাৰ্য্য হই:া থাকে ? মৃত্যু দ্বগ্ৰ পশ্চাৎ কিঞ্ছি সকলকে আপনার কবলসাৎ করে: লোকের ইচ্ছা বা অনিচ্ছায় ইহার কোনরূপ অন্যথাদির সম্ভাবনা নাই। প্রভাত, অনেক হলে দেখা যায়, পিতামাতা কায়মনে পুত্রের দীর্ঘন্ধীবন কামনা করিতেছেন, কিন্তু মৃত্যু অতি অল্লবয়দেই তাহাকে আসিয়া গ্রাস করে ;--পিতামাতার সমুদায় আশা ভরদা ও ইচ্ছাদি একবারেই সমূলে উন্মূলিত হইয়া যায়। কোনমতেই এবিষয়ের নিরাকরণ করা দাধ্য इरेश উঠে ना। मकल विषय्त्ररे धरेक्रश धनवल, दुक्षिवल, विद्यावल, खानवल, मनूरशाह । साहाती ইহা দেখিয়াও সংসারের মায়া ছাড়িয়া তোমার অমুগত না হয় এবং দর্কপ্রভু ও দর্কা-নিয়ন্তা ভাবিয়া তোমার ইচ্ছার উভর করিতে না শিখে, তাহারা কি হতভাগ্য! মাসি যেন সেই সকল হতভাগ্যের নামগন্ধেও না থাকি. প্রসম হইয়া, আমারে এইরূপ বর প্রদান কর। ভোষারে নমস্কার, নমস্কার। ওঁ শান্তি স্বস্তি ওঁ।

হে পরম ঈশর! আমি কণ্যাত্র তোমা ছাড়া নহি। ভূমিও ক্লমাত্র আমাকে ছাড়িও না।

সমস্ত সংসারওক্ষণমাত্র ভোমাকে ছাড়িয়া থাকিতে পারে না। ভূমি ব্রহ্মাণ্ডের প্রত্যুক প্রমাণুতে সভারপে অধিঠান করিতেছ। যদিনা করিতে, তাহা হইলে এই সুর্যা চন্দ্র সাগর পর্বত ও নগ-রাদি সমেত সমুণায় প্রক্ষান্ত এখনই সুণীয়খান ও অধঃপতিত হইত, ইহা কি আর বলিতে হয়। ঐ যে গ্রহনকতা সকল স্ব স্ব কক্ষার পরিবর্ত্তন করিতেছে, ইহারাও এই মুহুর্তে ঘুরিয়া পড়িরা যাইত ; ভাহাতে আর বিচিত্র কি আছে ? বলিডে কি, ভূমি আমাদিগকে নিমেষমাজও ছাড়িয়া রহিলে, আমরা যে যেথানে, সে সেইথানেই কার্ছ-লোট্রবং স্থির নিশ্চল ও স্তম্ভিত হইয়া পড়িতাম, সমস্ত সংদার তৎক্ষণে শূক্ত ও অবদন্ধ হইয়া ঘাইত অথবা একবারেই অদৃশ্য ও নামমাত্রে পরিণত হইত, তাহাতে আর দদেহ কি আছে ? মানুষ এই ইতন্তত: চেন্টাচরিত করিয়া, সংসার যাত্রা নির্বাহ করিতেছিল, তাহার রাজার সামারে লক্ষী, সাগরত্রোতের ভায়, উপলিয়া উঠিয়া-ছিলেন: কত শত ব্যক্তি তাহার ঘারস্থ, তাথার সংখ্যা নাই; কভ শত লোক ভাহার মঙ্গে প্রতি-পালিত, ভাহারও সংখ্যা নাই; ভাহার মান, ভা-হার কীর্ত্তি ও ভাহার যশ,পোর্ণমাদী-শশি কিরণের ন্যায়, দিণ্দিগন্ত লঙ্ঘন করিয়া, সংসারপারে ধাব-মান: এইরূপে কোনদিকে কোন খংশে ভাহার পার্থিব হুখ সমূদ্ধির অনুমাত্র অভাব নাই; দৈবাৎ অভাব হইলে, ভাহা হয় ভ আপনিই পূর্ব হইয়া উঠে । ইত্যাদি বিধানে তাহার দৌফিক সৌভা-গোর ধথন পর্বকালীন সাগরপ্রবাছের ভায়, পর্ম পূর্ব অবস্থা এবং যথন সে বরং ও ডাহার প্রতি-বেশী ও অমুচরবর্গ সকলেই চিন্তা করে, বে, এই-क्रश मिन हिंद कॉन है बोकिएव। एक श्रवम मछा

আদিদেব। ঐরূপ সম**রে মৃত্যু কে†ধা**ু**ত্**ইতে সহসা উপস্থিত হইয়া, সুর্নিবার জল **সাধ্যে**নর ভায়, ভাহাতে কোথায় আকর্ষণ ক্রিয়া লইয়া যায়, তাহা কেহই বলিতে পারে না এবং নিশারণ করিতেও সমর্থ হয় না। আর,তাহার সে দেকিলাগ্য নাই, সেই বিষয়, বিভব বা সে সমৃদ্ধি নাই। সমু-লারই যেন ছায়ার ফার, দেখিতে দেখিতে কর প্রাপ্ত হয়। এইরূপে কত নগর, কত রাজ্য, কড আম, কড জনপদ, কড পরিবার, কড়: গৃহ উচ্ছিল, অনাথ ও নিরাশ্রের হুংতেছে, 'হুইরংছে ও इहेरव, छाडा विनवात नरह। अव्या, अविमिन সমস্ত ভ্রহ্মাণ্ড ঐরূপে মহাপ্রলয়ের গর্ভদাৎ ইইবে, তাহাতে সন্দেহ নাই। এই সকল ঘটনার কারণ কি না ভূমি ছাড়িয়া যাও। তাহাতেই একপ ঘটিয়া থাকে। তুমি হাহাকে না ছাড়, সেই অসর ও অক্ষর পদে অধিকাঢ় হর। ঐ মাসুষ্ ৰীরদর্পে বেড়াইতেছে: ঐ শিশু পদামূলভূল্য, জন্মীর ক্রোড় খালোকিত করিতেছে ; ঐ সূতী সাহ্মাৎ লক্ষীর স্থায়, স্বামীর পার্ম শোভা বিস্তার-করি-য়াছে : ঐ বালক, ঐ বালিকা, স্নেছের পুন্তলিকার খায়, গৃহমধ্যে জীড়া করিডেছে; কে ৰদিধে, ইহারা এই মুহুর্তে মরিবে, এই আশরে ভাছাদের পিতা মাতাও স্বামী প্রভৃতিরাকত কি যত্নে 🛎 উৎসাহে ভাগদের জন্ম প্রাণ দিয়াও মত কি সুংগ্রহ করিয়া রাধিরাছে ও,রাখিতেছে; কিন্তু,দেখিতে নেরিতে তাহাদের নাড়ী জীশ, দৃষ্টি জীশ; কলং-शक्ति मीम ७ चात्रु धकवादतरे विशेष **रहेश रंगण**ा ইহার কারণ কি, না,ভূমি ছাজিয়া দিলে; তোমার প্রেরিত মৃত্যু আদিয়া তাহাধিগকে গ্রহণ করিল। হে নাথ! আমি যেন কথনও ভোমা ছাড়া না ইই। আমার আত্মীয় ও সম্ভাত প্রাণিনাত্তেও

যেন তোমা ছাড়া না হয়। তোমাকে নমস্কার, নমস্কার। ।

হে পরম। ভূমি আপনিই আপনার উপমা; আপনিই আপনার সমান বা সমকক এবং আপ-মিই আপনার অবধি। তুমি সাকার, নিরাকার, অরপ, সরপ : সগুণ, নিগুণ এবং ক্রিয়াহীন ও ক্রিয়াময়। যাহারা তোমায় দাকার ও দরপ বলিয়া নির্দেশ করে, তাহারা বলিয়া থাকে, ভুবনে ভোমার রূপের তুলনা নাই। সংসারের যাহা किছু त्रीमध्, त्रीक्राधा, बाध्धा, अथवा बता-হারিতা সমস্তই তোমার রূপের অংশাংশ। শান্তি, গাম্ভীর্যা, প্রদন্ধতা, ভয়, বিস্ময়, দংভ্রম, শ্রন্ধা, প্রীতি ও অমুরাগ ইত্যাদি তোমার মূর্ত্তিতে সর্ব্বদা বিরাজমান। এই জন্য ভোমাকে দদাশিব বলিয়া উল্লেখ করে। স্মশানের ভূতপ্রেতাদিও তোমার গুণে মোহিত। ইহা অপেকা তোমার মাহাত্ম্য কি আছে! কিছুতেই তোমার বিকার নাই এবং সর্ব্বেই তোমার সমদৃষ্টি এই জন্য তোমার মহিমা দংসারে সমষ্টিক প্রথ্যাপিত ইইয়াছে; তোমাকে নমস্কার করি।

েহে বিভো! তোমার সাকান্তরপের লোহিত-লোচন, বিশাল আশু, হ্ববিপুল উদর, উর্জ্বপ্রভ কেশকলাপ, হ্রিৎবর্গ শাশ্রু ও সূচিসম লোমরাজি দর্শন করিলে,ভক্তের প্রাণে ও হৃদয়ে যেরীপ আনন্দ সঞ্চার হয়, অভক্তের প্রভোধিক ভয় ও মোহ সন্তাবিত ছইয়া থাকে। শুমিয়াছি, ভোমার প্রতি যাহাদের শ্রেদ্ধা নাই, তাহারাই ভূতপ্রেতা-দির ভয়ে আফান্ত হইয়া থাকে। ভূমি আমায় রক্ষা কয়, রক্ষা কয়। তোমার কেশপাশে জলধয়, অঙ্গমধ্যে নদীসমুদায় এবং জঠয়োপরি সমুদ্রে বিরাজমান; এইজন্ম ভোমাকে সলিলাত্মা বলে।

সংসারের কোন বিষয়ই তোমার অবিদিত নাই।
অতীব গভীর গর্ত্তের অভ্যন্তরে, অতলম্পূর্ণ জলনিধির ছুর্বিগাছ গর্ভমধ্যে, অথবা, বছদুরবিস্তৃত
ভূধরের অন্তর্ভাগে, ফলতঃ অগম্য ও অবিস্থ্
প্রদেশমাত্রে তোমার জান ও দৃষ্টি সমভাবে হস্তামলকবৎ চলিয়া থাকে। অধিক কি আলোক ও
অন্ধকার উভয়ত্রই তোমার সমান দৃষ্টি, অর্থাৎ
আলোকে যেমন, অন্ধকারেও তেমনি ভূমি দেখিতে
পাও। অথবা, তোমা হইতে সকলের স্বষ্টি
হইয়াছে। আমায় রক্ষা কর, আমি তোমার
শরণাপর।

হে দদামন্দ মহাপুরুষ ! তুমি সর্বদা আত্মাতে যে নির্মাল আনন্দ অমুভব কর, আমাকে অন্ততঃ তাহার অণুমাত্র প্রদান কর। আমি সংসারের অনস্ত যাতনায় অভিভূত হইয়াছি। মানুষ যাহাকে হুথ বলে, তাহা ছঃথের প্রকারভেদমাত্র। পৃথিবীর আমোদেও বাস্তবিক আমোদ নাই। বিষয় বিভ বাদিতে বস্তুতঃ হৃথ নাই। ধনের পর ধন, এখ-ব্যার পর এখব্য হয়পত হইতেছে, তথাপি লোকের আশা নির্ত্তি ও তৃঞানিবৃত্তি নাই। ছুর্নিবার প্রবৃত্তির বশীভূত হুইয়া, হুথের জন্ম সক-লেই ব্যতিব্যস্ত। কিন্তু হুখ সংসার হইতে তিরো-হিত হইয়াছে। ইহা কেহই বুঝে না। বুঝিলেও মোহবশে পুনরায় মতের ন্যায়, ইতস্ততঃ ধাবমান হইয়া থাকে। কি আন্দর্যা। যে বিষয় প্রাপ্ত হইয়া, পদে পদেই বঞ্চিত হুইভেছে,তাহারই জন্য আবার প্রাণ দিয়া শরীর সঁপিবার চেকী করি-তেছে। দিবারাত্র বিশ্রাম নাই, তথাপি, হুখের নামমাত্র ও লেশমাত্র নাই। লোকে বোধে বান্তবিক বিষদঞ্চয়েই ব্যক্ত ও ব্যাপুত। সকলেই আত্মার উন্নতি কামনা করে।

কিরূপে তাহা সম্পন্ন ইইতে পাবে, সে বিষয়ে কাহারই জ্ঞান নাই। প্রত্যুত, যে পথে গমন করিলে, স্বর্গের সোপান লক্ষিত ও আক্ষোরতি শাকাৎকৃত হয়, দে পথ ত্যাগ করিয়া, নরকের অভিমুখে বিপথেই ধাৰমান হইয়া থাকে। যদি দৈবাৎ কেহ কথন কোনরূপে কিছুমাত্র স্থার বার্তা অবগত হইতে দমর্থ হয়, বাস্তবিক তাহা-হ্ৰথ কি হুংথ ভাহার স্থিরতা না থাকিলেও, স্বর্যা ও অসুয়াদিবশতঃ একে অন্তকে তাহা বলিতে অভিলাষী ইয় না। সকলেরই ইচ্ছা, পৃথিবীর সমস্ত সৌভাগ্য যেন সে একাকী সভোগ করে এবং সকলেরই এইরূপ জ্ঞান, যেন তাহারই একাকী ভোগের জন্ম পুণিবীর সৃষ্টি হইয়াছে। এইরূপে এই দংদারে যেমন হুথ নাই, তেমনি নানাপ্রকার ছঃথের দার আবিস্কৃত হইয়া, দিন দিন ইহার দারুণ তুরবন্ধা উপস্থিত হইতেছে। হে বিভো! আমি ঈদৃশ অসার সংসারে কিছুমাত্র অমুরক্ত এবং ইহার স্থসচ্ছন্দেও কিছুমাত্র অভি-লাষী নহি। পিতামাতা, পুত্ৰ-ক্সী, বন্ধুরাদ্ধব স্কুলাই আমাকে ভ্যাগ ক্ষুক্, আমি ভাহাতে কিছুমাত্র হুঃখিত ও অমুতত্ত নহি। আমি জানি, পৃথিবীর কাহারই স্বারা কাহারও কিছুমাত্র ইন্টা-প্রির সন্তাবনা নাই। ভূমিই একমাত্র অভীষ্ট, তোমাকে প্রাপ্ত হইলে, সমুদায়ই প্রাপ্ত হওয়া যায়। অতএব আমি ধ্নে একমাত্র ভোমাকেই লাভ করি। যদি ভোমাকে লাভ করিবার জক্ত আমায় সমস্ত ত্যাগ করিতে হয়, তাহাতেও আমি निरमरवत अन्य भताबा्थ नहि। आमात देश मृह প্রতীতি আছে, তোমাকে প্রাপ্ত হইলে, ছঃখের মধ্যে ও স্থুখ এবং বিপদেও সম্পদ লক্ষিত হটয়া থাকে। এইরূপ বিষে অমৃত ও বিপদে সম্পদ

প্রদর্শন করাই তোমার মাহাত্ম। এইজন্ম জক্ত-গণ তোমাকে ছাড়িতে চাহে না। তোমার মূম-ক্ষার করি, তুমি আমার প্রতি প্রসম হও, প্রসম হও।

হে ক্লড়ে ! ঐ মৃত্যু ভীষণ বদন বাাদান ক্ষরিয়া আমার অত্যে গৃহে কুধার্ত ব্যাত্রের জার, মহাবেগে ও মহারোধে বিচরণ করিতেছে, নানা-প্রকার রোগ, শোক, বধ, বন্ধন, ভয়, পরিতাপ ইত্যাদি ভয়ন্বর উৎপাত সকল তাহার সঙ্গে সঙ্গে ঐ প্রচণ্ডবেশে ধাবমান হইতেছে। যেন সমত্ত সংসার আস করিবে, এইরূপ সংকল্প করিয়াছে! হে অনাদে! যাহারা তোমার প্রতি প্রীতিমান, তাহাদিগকে এই মৃত্যু ও উপদ্ৰব সকল কথনই আক্রমণ করে না । যাহারা তাদুণী প্রীতির ও ভক্তির অধীন নহে, তাহারা পদে পদেই মৃত্যুর বশীভূত ও উপদ্ৰবে অভিভূত হইয়া থাকে। ফলতঃ, ভক্তের পালন ও অভক্তের অপালন জম্মই উল্লিথিত অনুচরবর্গের সহিত মৃত্যুর স্ষ্টি হই-য়াছে। অথবা, ভদ্ধ মৃত্যু নহে, ঐ সকল পাপা-আর জন্ম অশেষ যাতনাসহিত জ্পেরও সৃষ্টি হই-য়াছে। অর্থাৎ যে সকল জীবাধন মোহরূপ দারুণ অন্ধকারপ্রভাবে হতদৃষ্টি ও হতজ্ঞান হইয়া, তোমার প্রতি বিষমতা বা বিরাগ প্রদর্শন করে, দেই সকল হতভাগ্যকে পুনঃ পুনঃ জন্ম**াই**ৰ कतिया, मःमात्रक्रण नात्रनभरथ चेकि द्रार्ग गमना-গমনপূর্বক অংশষ যাতন। ভোগ করিতে: ছর।। এইরূপে দংদারে জন্ম ও মৃত্যু উভয়ই অনস্ত যন্ত্রণার হেডু। বরং মৃত্যু অপেকা জন্ম সমবিক ক্লের কারণ ও আধার। কেন না জীব যেমাত্র জন্মগ্রহণ করে, সেইমাত্র কাল, কর্মা, দৈব ও অদৃষ্ট তাহার প্রভু ও নিয়ন্তা হইয়া থাকে এবং

তাহার সমুদার স্বাধীনতা একবারেই তিরোহিত হইমা যায়। যাহার স্বাধীনতা নাই, তাহার যে কিছুমাত্র স্থথ নাই, ইহা প্রতিপাদন করা বাহুল্য। এইরূপে, কিয়দিনের জন্ম সংসারে আগমনপূর্বক পরের বিষম দাসছে জীবন যাপন করা, বিভূপনা ও নরকভোগমাত্র, তাহাতেও সন্দেহ নাই। হে বিভো! আমি তোমার শ্রণপিন। আমার জন্ম মৃত্যু উভয়ই নিরাক্ত কর।

ইত্যাগ্ৰেমে মহাপুৰাণে মহাদেব কোত্ৰৰিধি নামক শঞ্জিংশ অধ্যায় সমাপ্ত ।

ষট্তিংশ অধ্যায়।

্ অগ্নি কহিলেন, ত্রহ্মপূজা বিধি কীর্ত্তন করি, ভাবণ কর।

ভগবান্ কমলযোনি সকলের পিতার পিতা, এইজন্য তাঁহাকে পিতামহ বলে। সবিশেষ ভক্তিসহকারে তাঁহার পূজা করা সকলেরই কর্ত্ব্য।
পরম দেবতা ব্রহ্মার পূজা করিলে, ধন, পূক্র, স্থথ,
আয়ু ও লক্ষী লাভ হয়। পুকরে এই ব্রহ্মমূর্ত্তি
প্রতিষ্ঠিত আছে; নারদ! কার্ত্তিকা শুক্রপৌর্ণমাসীতে, সংক্রান্তি সময়ে অথবা চন্দ্রসূর্য্যের
গ্রহণকালে যে ব্যক্তি পরমেন্তী ব্রহ্মাকে আহান
করে, তাহার সমস্ত পাতক দূর হইয়া থাকে।
ভগবান্ ব্রহ্মাও তাহার প্রতি তৎক্ষণাৎ প্রীতিমান্
হয়েন।

দেবগণ কার্ত্তিকী পৌর্ণমাসীতে পুক্রসমাগত আক্ষণ, ক্ষত্র ও বৈশ্যগণের ভক্তি পরীকা করিয়া থাকেন। থাহারা পৌর্ণমাসী তিথির সমাগমে যথাবিধানে দেবাদিদেব ভগবান্ ব্রক্ষার ভক্তি ও শ্রদ্ধানহক্ত পূজা করে, তাহারাই পরম ভক্তমধ্যে পরিগণিত হইয়া থাকে। * ব্রহ্মপূজাদময়ে সমস্ত বিষয়ই শুদ্ধপর করিবে। যে ব্যক্তি আত্মাতে শুক্ত ও পরমেশ্বর উভয়ের উপলব্ধি করে, তাহারই ভক্তিলাভ হয়। শুক্তকে পূজার পূর্কে এই বলিয়া প্রসম করিবে, হে দেব। আপনার প্রদাদে আমি যেন সংসাররূপ সাগরসক্ষটে সমুত্তীর্ণ হই। আমার যেন সর্কামনা পূর্ণ হয়। আপনি প্রসম হইয়া, আমারে পরব্রহ্ম উপদেশ এবং বিরিঞ্জির আরাধন, সহস্রশীর্ষ জপ ও ধ্যানধারণাদি সকল বিষয় বিশিষ্ট রূপ শিক্ষাপ্রদান কর। আমি পিতামহের পূজা করিয়া, ঐহিক লক্ষ্মীলাভে সমুৎস্কক হইয়াছি। অমুগ্রহপূর্কক আমাকে এ বিষয়ে কৃতার্থ করুন।

মেধাবী শিষ্য গুরুদেবকে এই প্রকারে প্রসম করিয়া, অর্চনানস্তর দীক্ষার্ব তাঁহাকে করিবে। অনন্তর কার্ত্তিকী চতুর্দশী তিথিতে ভগ-বান্ ভাদ্ধর,দেবাদিদেব বাহ্নদেব ও পরমদেব মহা-দেবের অর্চনা করিয়া, যথাবিধানে গুরুর পূজা ও প্রণাম করিবে। তৎকালে দ ভাষাবননিৰ্শ্বিত ক্ষীরিকা রক্ষের একটি কার্ন্তিকা সম্প্রদান করিবে। এইরূপে পূজাবিধি সমাধা হইলে, নদী, ও সাগর হ্রদ, পুষ্ণরিণী, কিংবা গৃহমধ্যে বিধি অনুসারে জল পান করিবে। এই জল পানের যে প্রকার বিধান ব্যবস্থিত আছে, তাহাও শ্রবণ কর। আপোহিষ্ঠ, এই বৈদিক মন্ত্র ধারা সপ্তবার অভিমন্ত্রণ করিয়া পরে, দেবসছে, এই মন্ত্রে জপ সমাধানান্তে হতে সলিল গ্রহণ করিবে এবং ইরাবভী ধেমুমতৈয় ত্রক্ষোদন স্বাহা, এই প্রকার মজ্রোচ্চারণ পুরঃসর কিঞিৎ জন পান করিয়া, অবশিষ্ট দলিল দূরে প্রকেপ করিবে। তৎকালে, যে জল হস্ত হইতে পতিত হইয়ার্ছে, সেই পতিত দলিলের প্রতি দৃষ্টি-পাত করিতে হইবে। অনন্তর সন্মুথে কিংবা

পরাধ্যুথে, অথবা বামে কিংবা দক্ষিণে দণ্ডায়মান হইয়া, প্জাভূমি বিবিধ লক্ষণে অলক্ষত করিয়া, যোড়শার নয়টি পদ্ম অক্ষিত করিবে। যোড়শদল পদ্ম নির্মাণ না করিয়া, অফ্টদশ করিলেও, কোন রূপ অনিফাপভির সম্ভাবনা নাই।

নারদ! ততৎ পূজামগুলে ক্রমে ক্রমে ইন্দ্রাদি দেবগণের পূজা করিবে। লোকপালগণের পূজা সময়ে বৈশ্বানর অনলের যথাবিধি অর্চনা করা কর্ত্তব্য। লোকপাল পূজার দক্ষিণদিকে ধর্ম-রাজের, নৈঋতে নিঋতিদেবের, পশ্চিমে সলিল-রাজ বরুণের এবং বায়ুকোণে সদাগতি বায়ুদেব-তার অর্চনা করিতে ইইবে। পূর্ব্বদিকে কমগুলু, দক্ষিণে দণ্ড, পশ্চিমে হংস, উত্তরে প্রাথন আয়েয়ে র্ষী, নৈশ্বতে পাছকা, বায়ুকোণে যোগপট্ট এবং ঈশানে গণিকা স্থাপন করিবে। পূজা মণ্ডলের পূৰ্ব্বদিকে ভগবান বিষ্ণু, দক্ষিণে মহাদেব, প্ৰশিচমে আদিত্য ও উত্তরে ঋষিগণের পূজা করিবে। মগু-লের মধ্যে স্বয়ং পদ্মজন্মা ব্রহ্মার পূজা করিতে হইবে। পিতামহ কমলযোনির দক্ষিণদিকে দেবী গায়ত্রী ও উত্তরে পদ্মপলাশলোচনা সাবিত্রীর व्यर्कना कतिरव। मछल्तत शृक्विं एक श्राह्म । निकर्ण यञ्जूर्व्वन, পन्চित्य नामर्यन ७ উत्तर অথর্ববেদ বিশুস্ত করিবে এবং এই প্রকার ক্রম অনুসারে সমস্ত ইতিহাস, পুরাণ, ছন্দ, জ্যোতিষ ও ধর্মাশান্ত সমুদায় যথাবপ্র স্থাপন করিবে।

অনন্তর পদোর পূর্বদলের দক্ষিণদলে প্রচ্যান্তর, পশ্চিমদলে অনিক্লকের ও উত্তরদলে বাস্থদেশের যথাবিধি পূজাবিধি সম্পাদন করিবে। দেবাদিদেব বাস্থদেব সকল পাপের বিনাশকর্ত্তা, সকল স্থের বিধাতা, সকল মঙ্গলের দাতা, সকল ত্বংথের হন্তা, সকল কলুষের শাস্তা এবং সকল স্বস্তির মূল। অতএব বিহিত বিধানে তাঁহার পূজা করিয়া, যথা-বিধি তত্ত্ব করিবে।

বাস্থদেবের অর্চনা ছইলে, পূর্ব্বদিকে ঈশানদেব, পশ্চিমে বামদেব, দকিণে সদ্যোজাত দেব,
উত্তরে পুরুষদেবের পূজা করিবে। নারদ এই
প্রকার পূজা করিবে। নারদ এই
প্রকার পূজা করিবে। অনন্তর পূর্ব্বদিকে
ভাস্কর, দক্ষিণদিকে দিবাকর, পশ্চিমদিকে প্রভাকর ও উত্তর দিকে গ্রহরাজের অর্চনা করিবে।
এইরপ বিধি অনুসারে সকল দেবতার যথাযথ
পূজা করিয়া পরে পরমেষ্ঠী ব্রহ্মার পূজা করিবে।
তাঁহার পূজা বিধি এইক্ষণ, যথা———

शृक्तिमि अछेमिटक यथाविधि अछेकझ विन्याम পূর্ববক বেন্ধাপুজার জন্ম বেন্ধা ও নবসংখ্যক বেন্ধা-কলস কল্পনা করিবে। মুক্তিলাভের অভিলাষী পুরুষ ত্রহ্মঘটস্থিত জল দারা, দ্রীলাভের অভিলাসী পুরুষ বরুণদিকস্থিত কলসের সলিল ছারা ত্রক্ষারে স্থান করাইবে। এইরূপ স্থলাভের অভিলাষী দক্ষিণদিকস্থিত ঘটের সলিল ছারা, দ্রব্যলাভের অভিলাষী ব্যক্তি আগ্নেয় ঘটবারি ছারা, সমৃদ্ধি-লাভের অভিলাষী পুরুষ যাম্যকলসম্লিল মারা, হুষ্টধ্বংসের অভিলাষী নৈখতদিকস্থ কলস দারা এবং জ্ঞানলাভের অভিলাষী পুরুষ রুদ্রদিকস্থ খট-বারি ও সমুদায় কলসদলিল ঘারা পিতামহ ব্রহার স্থানবিধি সমাধা করিবে। নারদ। এইরপে অফিকলদস্থ দলিল ুখারা পিতামহের স্নানবিধি ममाधा कतिरल, ममञ्जू भाभ विनष्टे 😕 दिवामापृथा লাভ ইইয়া থাকে।

অনন্তর প্রশান্তবৃদ্ধি গুরুদের উল্লিখিত বিধি
অনুসারে লোকপালগণ ও দেবগণের পূজা করিয়া,
পরীক্ষিত শিন্যকে যথাবিধি ধারণায় প্রবর্তিত

कतिर्वन। चारमशी भातना चाता (नर नश्च छ বায়ু ধারণা ভারা তম বিনাশ এবং সোম ধারণা করিবেন। আপ্যায়ন সম্পাদন স্থিধানে এইরূপ ধারণা করা বিধি। অনন্তর দীক্ষিত শিষ্যকে দেবতা, বিষ্ণু, ভ্ৰাহ্মণ, ইন্দ্ৰ, আদিত্য, অগ্নি, লোকপাল, গ্রহ, গুরু ও মুনীক্রগণ এবং আপনার সর্বপ্রকার দীক্ষার নিন্দা করিতে নিষেধ করিবে পরে প্রজ্বিত অনলে, "ওঁ নমঃ ব্রহ্মণে ভগবতে দর্ব্বরূপিণে স্বাহা।" এইপ্রকার বোড়হাক্ষর মন্ত্র হারা আত্তি প্রদান করিবে। দীক্ষিত শিষ্যের গর্ভাধানাদি যাবতীয় সংস্কার আহুতিযোগেই বিহিত হুইয়া থাকে। নারদ! এইরূপে পিতামহ একার সামিধ্যে তিন বার আহুতি প্রদান করিয়া হোম সমাপনপূর্বক শিষ্যকে দীক্ষিত করিবে। পরে গুরু দক্ষিণা গ্রহণ করিবে! শিষ্য হন্তী, অখ, যান, শকট ও স্বর্ণ-থচিত প্রস্তর গুরুকে দক্ষিণা দিবে। অথবা, দাধ্যামুদারে এই দকলের এক একটি দান করিবে। গুরুকে যাহাই দিবে, তাহা বর্ণের সহিত প্রদান করা কর্ত্তব্য।

জনস্তর এই বলিয়া, ভগবান পিতামহের স্তব করিবে। হে দেব! এই বিশ্বসলিল যথ্ন প্রলয়সলিলে আচ্ছন্ন ছিল, না তেজ, না অন্ধকার, না আলোক, না জ্যোতি কিছুই ছিল না; তথন ভূমি প্রজাস্তির অভিলাষে স্বয়ং দেবদেব মহাবিষ্ণুর নাভিকমলে সমুৎপন্ন হুইয়াছ। তোমারে নমকার করি। তোমা ইইতে চক্র সূর্য্য সমূলত প্রকাশুবিশ্ব প্রায়ুভূতি হইয়াছে, তোমারই করুণার অবস্থিতি করিতেছে এবং তোমারই মহিমার যথাব্য প্রতিপালিত হইতেছে। তোমার মহিমার থার নাই, প্রভাবের দীমা নাই, গুণের অন্ত নাই এবং

স্বরূপের কোনপ্রকার অবধারণ নাই। ভূমি সকলের অন্তরে অন্তরাত্মারূপে বিরাক্ত করিতেছ ; এইজন্ম তোমাকে অন্তর্যামী মহাপুরুষ বলিয়া থাকে। তৃমি এই আকাশে, এই পৃথিবীতে, এই স্বর্গে এবং সকলের অন্তরে ও বাহিরে সর্বত্ত বিরাজ করিতেছ, তোমাকে নমকার। পাপতাপ শাস্তির নিমিত্ত ; রোগ, শোক, পরিহার নিমিত্ত; বিধাদ, অবদাদ, দূর করিবার নিমিত্ত এবং পুনঃ পুনঃ জন্মযন্ত্রণা নিবারণ করিবার নিমিত্ত যথাসাধ্য কায়মনে তোমার পূজা করিতেছি, ভুমি প্ৰদল্ভ, প্ৰেদল হও। হে দেব। ভূমি দমস্ত সংগারের জনক ও জননীম্বরূপ। তোমার প্রভাবে সমস্ত দূরিত বিদূরিত হয়; তোমারে ভক্তিভাবে নমস্কার করি। হে তাত ! ভূমি সমুদায় দেব-। তার অগ্রগণ্য। সমুদায় হুখের বিধাতা ও সমুদায় কল্যাণের আকর ও সমুদায় গুণের আধার। দেবগণ সর্বদা তোমার পূজা ও স্তব করেন: তোমার চরণকমল সংশাররূপ ভীষণ মহাসাগর পারের নৌকাম্বরূপ। আমি বারং-বার উহার বন্দনা করি, তুমি আমার প্রতি প্রসন্ম হও। হে বরদ। এ সংসারের সমস্ত পাতক নিবারণ কর। আমি যেন তোমারই নাম করিতে করিতে এই অসার দেহভার পরিহার করিতে পারি। তুমি তিভুবনেশ্বর, তোমার। নামমাত্র স্থারণ করিলে, অতিমাত্র পাপাতারও দেবছর্লভ মৃক্তিলাভ হইয়া থাকে। হৃতরা ওপ, জপ, দান বা অখ্যেধাদির অফুর্চানে এয়োজন **कि** ?

নারদ! যাহারা তোমার পূজাবিম্ধ, মূক্তি ৪ ভূক্তি তাহাদিগকে বিমুখ হঁইয়া থাকে। কি সম্পদ, কি বিপদ, সকল অবস্থাতেই আফি মেন তোমার পৃকা করি। তোমার পৃকা করিলে, যে হথ, সংগও সে হথ লাভের সন্তাবনা। ঐ যে হল্রবিসারী অনন্ত আকাশে উজ্জ্বল নক্ষত্রকূল দৃষ্টিপথের আনন্দ সঞ্চার করিয়া বিরাজমান হই-তেছে, শুনিয়াছি, যে সকল মহাভাগ মহাপুরুষ তোমার ভক্তি ও শ্রদ্ধানহক্ত পূকা সমাধানান্তে কলেবর পরিহার করিয়াছেন, ঐ এক একটা নক্ষত্রে তাঁহাদেরই অতি নির্মালবিশিক আত্মার স্বরূপ। শুনিয়াছি, ঐ সকলের সহসা বা সহজে পতন হয় না। এমন কি, ইন্দ্রাদি লোকপাল সহিত স্বর্গাদি যাবদীয় ভ্রবন, স্থালিত ও চালিত হইলেও ঐ সকলের স্থান বা চলন হয় না। ইহা অপেকা হলীয় পূজার মাহাত্ম আর কি হইতে পারে ?

হে দেবদেব! তোমা ব্যতিরেকে কোন পদার্থেরই আবির্ভাবের সন্থাবনা নাই। স্তরাং
ব্রহ্মাণ্ডের যাহা কিছু, তৎসমস্তই তোমার অধীন,
আঞ্জিত, অনুপ্রবিষ্ট ও অনুপ্রাণিত। এই জন্ত
সকলদেবতার অগ্রেই তোমার পূজা করিতে হয়;
আমি শ্রদ্ধা ও ভক্তি সহকারে বারবার তোমার
পূজা করি। তুমি প্রশন্ন হও, প্রসন্ন হও। শুনিয়াছি, স্প্রির যাহা কিছু স্থবৈশ্র্য্য, সমস্তই একমাত্র
তোমার প্রসাদ ও অনুগ্রহসাপেক্ষ। ইন্দ্রাদি
লোকপাল সহিত অমরবর্গ বথন কোন বিপদে
পড়েন, তথনই তোমার শরণাপন্ন হইয়া থাকেন।
এই জন্ত আমি বিহিত বিধানে তোমার আশ্রম
গ্রহণ করিতেছি। তুমি আমার সকল বিপদ ও
বিশ্ব বিদ্রিত কর।

নাথ। সকলের আদিকারণ ও আদিকর্তা পর্ম পুরুষের সন্ধ, রজ ও তমোভেদে যে আদি মূর্ত্তিরেয় কল্লিত ইইয়া থাকে,ভূমি তাহার অফ্লতর। স্কতরাং তোমার পূজা করিলে, হরি ও হর এই উভয় দেব-

তারও পূলা হইয়া থাকে এবং তোমার প্রমান
লাভ হইলে, তাহাদেরও প্রমাদ লাভে কৃতকার্য্য
হওয়া যাইতে পারে। হে দেব! শুনিয়াছি,
বিতীয় মূর্তি তোমাতেই ঐ চুই মূর্তির নিত্য অন্তর্ভাব বা প্রতিষ্ঠা আছে। এই জন্ম তোমার শেষ
নামেই তাঁহাদের সাধন হইয়া থাকে! আমি
বারবার তোমায় নমস্কার করি।

হে ঈডা! হে আদা! আমি পৃথিবীর যাব-তীয় বিষয় ত্যাগ করিয়া, একমাত্র তোমাকেই পাইবার জন্ম তোমার আরাধনা করিতেছি, তোমাকে পাইলেই আমার সকল কামনা পূর্ণ হইবে।

ওঁ পিতামহ আমার মন্তক রক্ষা করুন।
বেদগর্ভ আমার বাক্য রক্ষা করুন; হিরণ্যগর্ভ
আমার মন রক্ষা করুন। পল্লযোনি আমার
আত্মা রক্ষা করুন। দেবদেব আমার সকল দিক্
রক্ষা করুন। স্বাস্ত্রবিশ্বাপী আমার সকল লোক
রক্ষা করুন। আজ আমার সংসারে অনাবৃত্তি
রক্ষা করুন। স্প্রিকর্তা আমার স্থিতি রক্ষা
করুন।

নারদ! এক্ষপৃজা সময়ে সাবিজীদেবীরও
পূজা ও যথাবিধি ন্তব করিবে। কেননা, যেখানে
এক্ষা, সেই খানেই সাবিজী, বয়ং ভগবান্ এই
রূপে দাবিজীর ন্তব করিয়াছেন। মারি পতিজ্ঞতে।
তুমি সকলের ঈশ্বরী; তুমি সর্বজেই গমনাগমন ও
সর্বভ্তেই দর্শন দান করিয়া থাক। তুমি সমন্ত সংসার
সর্বতোভাবে ব্যাপ্ত করিয়া, সকলের নিয়ন্ত্রী ও
বিধাজীরূপে অধিষ্ঠান করিতেছ। এই সপ্তত্ত্বনের যে কিছু বন্ত, সমুদায়ই তুমি। তোমাভিম
এই সংসার কিছুই নহে। তুমিই ইহার স্কাপ,
তুমিই ইহার অধিষ্ঠাজী এবং তুমিই ইহার স্কাপ।

८६ फूवरनश्रति । ज्ञि अहेक्राल नर्व्यक्रवनगांशिनो ও সর্বত্র বিরাজমানা হইলেও, সিদ্ধিকাম ও ভূমি-কাম ব্যক্তিগণ ভোমারে যে যে স্থানে অবলোকন ও যে যে রূপে শ্বরণ করিয়া থাকে, তাহা আমার অবিদিত নাই। একণে আমি তৎসমস্ত ষ্থায়থ বর্ণন করিব। হে শুভে । ভূমি ভীর্থগণাত্রগণ্য পুৰুৱে দাবিত্ৰী, বারাণদীতে বিশালাকী, নৈমিবে निष्ठधातिनी, अग्राटन निर्जादनरी, नेश्वमान्टन কামুকা, মানদে কুমুলা, অন্বরে বিশ্বকায়া, গোমতে পোমতী, মন্দার তীর্থে কামচারিণী, চৈত্ররথে মদোৎকটা, হস্তিনাপুরে জরস্তী, কাম্যকুজে গোরী, মলয় পর্বতে রম্ভা,একান্তকে কীর্ত্তিমতী, বিশ্বেখরে विश्वा, कर्निटकं भूत्रहुछी, टकमादत मार्गमाशिमी, হিমালয় পুষ্ঠে নন্দা, গোকর্ণে ভদ্রকালিকা, স্থানে-খরে ভবানী, বিশ্বকে বিশ্বপত্রিকা, খ্রীশৈলে মাধবী-**८**मरी, ভट्यभदा ভजा, वताहरेनल अया, कमना-লয়ে কমলা, রুদ্রকোটিতে রুদ্রাণী, কালঞ্জর পর্বতে কালা, মহালিঙ্গে কপিলা, কর্কোট তীর্থে मूक्रियती, भानधारम महारावी, निविनास जन-প্রিয়া, মায়াপুরীতে নীলোৎপলা, ললিত তীর্থে नंग छी, महञ्राक्त छेर्यनाकी, सर्हार्यक हित-ণ্যাক্ষী, গঙ্গাতে মঙ্গলা, পুরুষোত্তমে বিমলা, বিশালাকেত্রে অমোঘাকী, পাওুপর্কতে পাওলা, হুপার্শে নারায়ণী, ত্রিকুটে রুদ্রহন্দরী, বিপুলে িবুলা, মলয়াচলে কল্যাণী,কোটরীতীর্থে কোটরী, গদ্মাদনে দগদা, কুজাত্রকে ত্রিদদ্ধা, গঙ্গাঘারে হরিপ্রিয়া,শিবচতে শুভাচগুা,দেবিকাতটে নিদ্দনী. चात्रविटिङ ऋखिणी, दुन्नावरन ब्राधा, मधुतात দেবকী, পাতাল তীর্থে পরমেশ্বরী, বিদ্যাপর্বতে मीठा, कालिन्मी ठीएर्थ (क्रोफ़ी, इतिम्हटक हिस्सका, नाम छोर्थ विमला यमूनाम मुगावकी, कतवीरत महा-

লক্ষী, বিনায়কে উমাদেবী, অরোগ তীর্থে রোগ-हती, भराकात्म मरहचत्रो, उक्ष जीर्थ जल्या, বিদ্ধ্য কন্দরে অমৃতা, মাগুৰ্য তীর্থে মাদ্রবী, মহে-খরে মহাগৌরী, গণেশা তীর্থে প্রচন্তা,অমরকণ্টকে চণ্ডিকা, বরাছ তীর্থে দোমেশ্বরী, প্রভাদে পুরুরা-বতী, সরস্বতী তীর্থে মাতাদেবী, পারতটে পারা, महानरत महाभवा, भरमाकी जीर्थ भिन्नतमधी. কৃতদৌরে সিংহিকা, কার্ডিকেয় তীর্থে শঙ্করী, উৎপলাবর্ত্তকে কালাদেবী, সিদ্ধুসঙ্গমে হুভন্রা, দিন্ধুবনে লক্ষীমাতা, ভরতাশ্রমে তরঙ্গা, জালন্ধরে विश्वसूथी, विश्वरेभारत जातका, त्मवनाक्रवरन शृष्टि, কাশ্মীর মগুলে মেধা, হিমালয়ে ভামাদেবী, দেতু-বন্ধে ঈশ্বরী, কপালমোচন তীর্থে শুদ্ধা, কায়াব-রোহণে মাতাদেবী, শভোদ্ধার তীর্থে ধ্বনি, পিণ্ডা-রকবনে ধৃতি, চন্দ্রভাগা তীর্থে কালী, অক্ষোদ-क्टाब मिकिमाशिनी, नजनाताश **छीरर्थ** (मवी, वन-রিকাশ্রমে উর্বেশী, উত্তরকুলে ওষধীশা, কুশদ্বীপে কুশোদকা, হেমকুটে মম্মথা, কুমুদ তীর্থে সত্য-वांकिनो, ध्वंभगालरम् अश्वयवस्त्रनी, বেদশালায় গায়তী এবং ব্রহ্মসামিধ্যে সাবিত্রী। অধিক কি. তুমি দূর্য্যবিমে প্রভা, মাতৃগণের মধ্যে বৈষ্ণবী, সভীগণের মধ্যে অরুক্ষভী, রামাগণ মধ্যে ভিলো-ভুমা, ব্রজমধ্যে ব্রহ্মকলা এবং শরীরিদিগের শক্তি-স্বরূপা। ছে দেবি! তোমার এই অফোত্তরশত নাম উদ্দেশতঃ উল্লিখিত হইল। এই অক্টোত্তরশত নামে অকাধিক শত তীর্থ প্রাত্নভূতি হইয়াছে। যে ব্যক্তি ভক্তিপূর্বক এই অফৌতরশত মাম জপ বা প্রবর্গ করে এবং যে ব্যক্তি এই অফীধিক শত তীর্থে স্থান করিয়া, সেই সেই রূপে ভোমারে দর্শন করে, ভাহার সমুদায় পাপ বিগলিত হইয়া যায় এবং সে ব্যক্তি কলকাল ব্রহ্মলোকে অধিষ্ঠান

করে। হে শুভে! যে ব্যক্তি ভক্তিযোগ পরিত্রিত প্রদাসহকারে এক্ষার সমিধানে পোর্ণমাসী ও অমা-বস্থাতে, এই অউপতক আবণ করায়, তাহার বহু-পুত্র লাভ হয়, তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। গোদানে, প্রাক্ষানে ও দেবগণের আরাধনা সময়ে অথবা প্রতিদিন ইহা অবণ করিলে, বিঘান্ ব্যক্তি নিশ্চয়ই পরব্রক্ষের সাক্ষাৎকার প্রাপ্ত হয়েন।

গায়ত্তীরও তৎকালে বেদমাতা নারদ ! यर्थाक्रविधात शृक्षा कतिया, यथायथ खर कतिरव । পূৰ্বেৰ ভগবান্ ক্লুদ্ৰ বক্ষ্যমাণ বাক্যে তাঁহার স্তব-করিয়াছিলেন; হে দেবি! ভোমা হইতেই সমুদায় বেদ প্রাত্নস্ত হইয়াছে, এই জন্ম তুমি বেদমাতা বলিয়া বিখ্যাত। হে অফ্টাক্ষর বিনো-দিতে ! ভূমি গায়ত্রী, ভূমি তুর্গতারিণী, ভূমি স্পুবিধ বাণী, ভুমি সমুদায় অক্ষর, ভুমি সমুদায় লকণ, ভূমি সমুদায় ভাষ্য, সমুদায় শাস্ত্র, তোমারে নমস্কার করি। হে দেবি ! ভূমি স্থনির্মাল শশ-ধরের ন্যায় দাতিশয় শুভ্রকান্তি। তোমার ঊরু-যুগল নিরতিশয় বিশাল ও কদলীগর্ভের স্থ্যায় নিতান্ত কোমল। তোমার হন্তে এণশুঙ্গ ও বিক্ষিত দিব্য ক্মল শোভা পাইতেছে। পীত-বর্ণ বিচিত্তদর্শন ক্ষোম বদনে তোমার অঙ্গলতার স্বাভাবিক দৌন্দর্য্য বর্দ্ধিত হইয়াছে। তোমার হুদ্যদেশ স্থাচিকণ হারগুচেছ অলঙ্কত; স্থানির্মাল শশির্থার ভার উহার প্রভা কি মনোহারিণি! হে শুভে! তুমি দিব্যকুগুলসম্পন্ন ভাবণযুগলে সুশোভিতা হইয়া, চদ্রমচিত্রিত মনোজ্ঞ মুকুটে এবং গ্রন্থিত্রয় বেষ্টিভ বিচিত্র কেশবন্ধনে ত্রিভূ-বনের লোচনানন্দ সম্পাদন করিয়া, সতত বিরাজ-মান হইতেছ। তোমার ভূজগাভোগ দদৃশ ভুজযুগলের অসীম বিভায় সমুদায় দিয়াওল সমু-

ন্তাসিত হইতেছে। হে দেবি! তোমার পয়ো-ধর যুগল পীন, কঠিন, নিরতিশয় বর্ত্ত 😻 লম-চুচক। তোমার জঘন অতিশয় বিস্তৃত ও নিতান্ত স্পান্ট। তোমার চরণ, আনন, নিতম ও ত্রিবলি সমুদায় অঙ্গই অন্দর, অকুমার ও অনুষ্ঠা। হুচারু উরু ও হুণ্টিত পদ্মসূষণে তোমার শোস্থা-বিভবের একশেষ হইয়াছে; ভূমি এই ত্রিভূবনের সর্বত্যে গতিবিধি ও সমুদায় জগৎ পবিত্র করিয়া থাক। হে মহাভাগে। ভূমি সকলের বরদা ও সকলের অভয়দায়িনী হইবে। পুক্ষরতীর্থে তোমার याजा निक्त है मण्लां कि इटेरन। एहं एनरि! ভুমি জ্যৈষ্ঠমাদী পৌর্থমাদীতে দকলের নিকট ব্রতপূজা লাভ করিবে। যে সকল মানব তোমার প্রভাব পরিজ্ঞাত হইয়া, দ্বনীয় পূজায় প্রবৃত্ত হইবে, ভাহাদের ধন বা পুত্র কিছুই তুর্লভ इंडेटव ना । १ ८२ कन्गां । **यादां वा काला**द्य নিপতিত, যাহারা মহার্ণবে নিমগ্ন অথবা যাহারা দস্ত্যকর্ত্তক রুদ্ধ ও হৃতসর্বস্থ, তুমি তাহাদের পরম গতি। হে মঙ্গলরূপিণি! তুমি সিদ্ধি, তুমি শ্রী, তুমি ধুতি, তুমি পুষ্টি, তুমি ক্রিয়া, তুমি বুভি, ভূমি কমা, ভূমি সন্ধ্যা, ভূমি রাতি, ভূমি প্রভা, তুমি নিদ্রা, তুমি কালরাতি, তুমি অম্বা, ভূমি কমলা, ভূমি ভ্ৰমাণী, ভূমি ভ্ৰমপাবনী, ভূমি দকল দেবের জননী, ভূমি পরম গতি। ভূমি জ্য়া, ভুমি বিজয়া, ভুমি পুষ্টি। হে বরবর্ণিনি। ভূমি সকলের বরদাত্তি, তুমি পিতামহের চেট্টারূপিণী, তুমি বছরপা, বিশ্বরূপা, স্থনেতা ও পঞ্চারিণী। ভুমি বিশালাকী, ভুমি হুরপা, ভুমি ভক্তগণের রক্ষাকারিণী। হে বরাননে! ভূমি প্রধানতম নগরে, আ্রাশ্রেমে, আয়তনে, কাননে ও উপবনে मर्दिमा कादशाम कब्र अदः मगूमांत्र अभाषात छ

ব্রাক্ষণগণে অধিষ্ঠিত। রহিয়াছ। হে দেবি। ভূমি ব্রহ্মচারীর দীকা, শোভাবানের শোভা,ক্যোতিফ-গণের প্রভা, নারায়ণের লক্ষ্মী ও মুনিগণের ক্ষ্মা। ভূমি নক্ষত্র সমূহের মধ্যে রোহিণী ও নারীগণের মধ্যে উমা। ভূমি দেবরাজ ইচ্ছের সহত্র নয়ন-সদৃশী <mark>স্থচার দৃষ্টি</mark>শালিনী। হে ভগবতি! ভূমি ঋषिগণের ধর্মপঞ্চী, দেবগণের পরায়ণী, সমুদায় ভুতগণের ধনধান্তদা এবং স্ত্রীগণের বৈধব্য বিদূরিত করিয়া থাক। তোমার পূজা করিলে, ব্যাধি, মৃত্যু ও ভয় সমুদায় তিরোহিত হইবে। হে বর-প্রদে! যে ব্যক্তি কার্ত্তিকী পৌর্ণমাসীতে সম্যক্-রূপে তোমার পূজা করিবে, তোমার প্রসাদে তাহার সমুদায় কামনা হুসিদ্ধ হইবে। যে ব্যক্তি ভক্তিসমন্তিত হইয়া, এই স্তোত্ত পাঠ বা শ্রবণ করে, তাহার দর্বপ্রকার অর্থনিদ্ধি লাভ হইয়া থাকে, তাহাতে দদেহ নাই।

ফলতঃ যে দকল ব্যক্তি ভক্তিসমন্তি ইইয়া, প্রাদাহকারে পিতামহ ব্রহ্মার পূজা করিবে, তাহাদের ধন, ধান্ত, পূত্র কলত্র, গৃহ, বিভ, প্রথণ পোলাগ্য লাভ হইবে। তাহাদের আলয় অবিক্রিম হথ ও পুত্রপোত্রে দর্বদা পরিপূর্ণ থাকিবে। উপযুক্ত অমবস্রের জন্ত তাহাদের কথন লালায়িত হইতে হইবেনা। তাহারা দর্বপ্রকার অভিন্থিত বিষয় সম্ভোগ করিয়া, চরমে মোক্ষম্বথ প্রাপ্ত হবৈ। যে ব্যক্তি কার্ত্তিকমাদে ব্রহ্মাণ্ড বিনির্মাণ ও তাহাতে ব্রহ্ম প্রতিমা প্রতিষ্ঠা করিয়া, যথাবিধানে তাহার পূজা করিবে, সর্বপ্রকার বক্ত, সর্বপ্রকার তপত্যা, সর্বপ্রকার দান ও দর্বপ্রকার তীর্থে স্থান করিলে, যে ফল প্রাপ্তি হয়, উল্লিখিত ব্যক্তি দেই প্রতিষ্ঠা দারা তাহার কোর্টিগুণিত লাভ করিবে। যে ব্যক্তি কার্ত্তিকী পূর্ণনায়

উপবাস করিয়া, ভজিপুর্বক প্রতিপদ তিথিতে বিহিত বিধানে ভাঁহার পূজা করিবে, ভাঁহার বুকা-পদ প্রাপ্তি হইবে, দন্দেহ নাই। কার্ত্তিকমাদে দেবদেব ব্রহ্মার রথযাত্রা নিরূপিত হুইয়া থাকে। ভক্তিসমন্বিত হইয়া, এই রথযাত্রা বিধান করিলে নিশ্চয়ই বুদ্মপদ প্রাপ্ত হওয়া যায়; অত্যে ব্রাহ্মণ ভোজন করাইয়া, পরে ইহার পূজা করিবে। পূজা সমাহিত হইলে, গীত ও বাদ্যধ্বনি সহকারে রথে আরোহণ করাইবে। রথাগ্রে এই দেব-দেবের বিহিতবিধানে পূজা করিয়া, ভ্রাহ্মণগণ দারা স্তন্তিবাচন ও পরিপূর্ণাগ্রমণ্ডল সম্পাদনপূর্ব্বক ইহাঁরে রথে অধিরূঢ় করিবে এবং প্রজাগর দারা রজনী অতিবাহন করিবে। নানাপ্রকার প্রেক্ষণ ও মনোহর বেদধ্বনি দারা এইরূপে প্রজাগর করিয়া, প্রভাত হইলে, ভক্তিসহকারে বহুবিধ ভক্ষ্য ভোজ্য প্রদানপূর্বক ব্রাহ্মণদিগকে ভোজন করাইবে। পরে অন্থান্য ব্যক্তিদিগকে ভোজন कतारिया, वृद्धिमान् वाक्ति यथाविशान माखाकात्रन এবং জল ও পায়দ সহকৃত আজ্য প্রদাননিস্তর ব্রাহ্মণ দ্বারা স্বস্ত্যাদি বাচন সম্পাদন করিবে। সমাধান করিয়া, ত্রকার অনন্তর পুণ্যাহশক প্রচালিত এবং চতুর্বেদপারগ ছিজাতি-গণ দ্বারা তাহা পরিজ্ঞামিত করিবে। তৎকালে ব্রনার দক্ষিণ পাখে গায়ত্রী ও সম্মুখভাগে পদ্ম স্থাপন করিতে হইবে। এইরূপে স্মধুর শভ্ ও হৃদ্দর বাদিত্রধ্বনি পুরঃসর ব্রহ্মরথ পরিভ্রমণ ও ममूनाग्न পूत्र প্রদক্ষিণ করিয়া যথাবিধি নীরাজন-পূর্বক পরে স্বন্থানে স্থাপন করিবে। যে ব্যক্তি এইরূপে রথযাত্রা সম্পাদন, যে ব্যক্তি ভক্তিভরে তাহা দদ্দৰ্শন এবং যে ব্যক্তি দেই রথ আকর্ষণ करत, जाहारनत जन्मभननाच र्हेशा शारक, मरन्नर

नारे। कार्डिकमाणी वामानकार भएक विकास करिय शुक्तक वर्षांग्रेटर बन्नात शुक्ता करितेरले. भित्रव भेरी প্রাপ্ত হওয়া যায়। যে স্ব্যক্তি উল্লিখিড 'দৰ্শনৈ বস্থায় মাল্য, গদ্ধ, আৰু ও পুন্দানি উপহার এটান করিয়া, তাঁহার পূঞা করে, শে কর্সের উপরি ত্রন্ধ-লোকে গমন করিয়া থাকে। এই সমাবক্তা ভিথি यात शत नारे भूगुणानिनी ও मर्कशकांत भनन-বৰ্জিনী। এই তিখিতে ত্ৰাক্ষণদিগকে যথোপচাৱে ভোলন করাইবে। যে ব্যক্তি আন্দাণ বৈশেষতঃ আলাকে ভোজন করায়, সে অমিততেজা ভগবান িফুৰ প্ৰম স্থান প্ৰাপ্ত হইয়া থাকে। চৈত্ৰ-মাংসের প্রতিপদ ভিথিও, নিরতিশর পুণ্যশালিনী। যে নরোত্তম এই পবিত্র তিথিতে যথাবিধি স্লান করিয়া, পিতামহের পূজা করে, তাহার সমুদায় তুবিত বিদুবিত, সমুদায় ব্যাধি বিগলিত ও সমুদায় আনি তিবোহিত হইযা যায়। এই তিগিতে দান করা ধর্বথা কর্ত্ত। গোষা মহিষ অর্থবা অন্য যে কোন পদার্থ দান কর, সমুদায়ই সমুদ্ধির্দ্ধির কারণ রূপে পরিণত হয। অতএব সকলেই বস্ত্র ও স্ব্রিপ্রকার অলঙ্কারাদি ছারা বিভূষিত করিয়া, ব্ৰাহ্মণদিগকৈ ভোক্ষাভোজ্য প্ৰদান করিবে।

> ইত্যাব্যেরে মহপুরাদে, এত্মপুরাবিধি নামক বটু জিংশ অধ্যয়ত্ব সমাপ্ত ।

সপ্তত্তিংশ অধ্যার।

অন্নি কহিলেন, নারদ! মানুষ মাতি ব্যারণীর
ও স্বলায়; তাহার উপর আবার বিবিধ রোগ
শোক প্রভৃতি উপদ্রবন্যুহে সর্বাদাই অভিভৃত।
এরপ অব্দার সোভাগ্য লাভ করা তাহার পক্ষে

নিতাত প্রাণাবা। অতএই যাককৈ আন্তর্গন বা অতি নহতে ভাহার অসীন সৈতিকিক ক্ষাত্র হইতে পার্বে,ভাইার হুসাবা বা হুসুর ক্ষাত্র ক্ষাত্র তেহি, প্রবর্গ কর।

शृक्तकारी मेब्राह (स्वंडा म्यट्डा মাসুদের সোভাগ্যন্তথের জন্ম সবিষয়ে ও স্বিট্রি আগ্রহদহকারে পিতামই জন্মার নিকট নিমেক্ট করিলে, তিনি বক্ষামাণ বাক্ষাে তাইাদিদকে উপ-(मण करतम, (मवर्गन! (स्वामिएनेव वाक्र्रमव वंडिंड-রেকে মানুষের সোভাগ্যসাধন বিতীয় নাই। আহি স্ষ্টি করি, মহাদেব সংহার করেন এবং বাহুদেব নিজ গুণে ও নিজ মহিমায় পালন করিয়া থাকেন। অতএব তাঁহার অকুগ্রহযোগ সংঘটিত ছইংলই. অপরিসীম সোভাগ্যযোগ উপস্থিত হইয়া থাকে। বযং লক্ষী, শ্ৰী, পুষ্টি, ভুষ্টি, মেধা, ব্ৰী, বৃদ্ধি, খুডি, কীর্ছি, শান্তি, কান্তি, ছ্যুতি, ছুক্তি, মুক্তি, ঋরি, গতি, স্থিতি, স্থান্তি, সংবিৎ, বিদ্যা, শোভা,প্রতিষ্ঠা, প্রতিপত্তি, খ্যাতি ও আদৃতি, ইত্যাদি সেই 🕬 🏝 দেব মহাদেব বাস্তদেবের একান্ত অমুগত পারিহার বা পরিকর মধ্যে পরিগণিত। **জাহার প্রসাং**দ তাহার পরিবারগণেরও নিরতিশয় প্রদাদ সমুপাইউ हरेग्रा थाटक । चर्ना ८य डेशार्त डीहात 'अभाव লাভ হয় বলিতেছি, প্রবণ কর।

মাঘমাদের শুক্লাদশনী স্থাগত হৈলে, ক্রিই

দিবস যুত ঘারা অভ্যন্তন করিয়া ভিলক্ষান ক্রিটেশ

অনন্তর নিত্যক্রিয়ার অস্তানান্তর 'নমে ক্রিটিন্স

মণার' এই মার্র ঘারা ভগবান বিভ্রুর অভিনা
করিবে'। যথাবিধি উপচারে ক্রেই ফ্রেমে ভাহার
পাদাদি সম্লার অসেরও অর্ডনা করিতে হইবে।
এই অসম্ভানা করিবার সময়ে 'ক্রুয়ার' বলিয়া
চরণক্ষলে ও 'স্ব্রান্ধনে' বলিয়া মন্তব্দে পূজা

क्षित्य । - शमखन् : क्रेज़्ड्ड्रिंग निकार : 'स्टर्फ क्षिक्षका कुर्विष्यम् । अस्तित । अस्तिका । कानुरक मन्त्राक्त १६ क्षणीकानानानाम :- अवः भीन-रिता मीनात विश्वास्टक विनिया भूका कतिरव । अह न्यस् । अपन्यस्य नाटमारहाथ - कतिश्र नमः नटकत मिक मुक्क क्रिया भारत भारत, बक्की, खूड़ि, श्री शार्ष, भी अहे करमक्रि स्परीत्व मध्यमाशा थुजा कतिया विक्षवाद्य विविधानी वाश्रविभागी বিষ্ট্রকার গরুড়ের অর্চনা করিতে ছইবে। এই-শ্লাপে গৰু, পুন্স, ধুন্স,দীপ, মান্য ও উপচারসামগ্রী बाना छ गरान् नातात्रात्र शृक्षा नमाश करिया छ मा-পতি শৃক্ষরের ও গলাননের পূজা করিবে। পরে গব্য পাৰুস বৃত্তদংখুক্ত করিয়া, ভগবান্কে নিবে-দনপুর্বক , বয়ং সেই প্রসাদ ভোজন করিবে। ভৌজনাবলানে পভপদমাত্র গখন করিয়া, সংক্থা-কাপানে সমস্ত দিবস অতিবাহিত করিবে। তদমন্তর সাধ্যকোল সমাগত হইলে, সন্ধ্যাবন্দনাদি ক্রিয়া যথাবিধি সমাপ্দ করিয়া, আমি ভগবান নারায়ণে **শাল্পমর্পণ করিলাম, এই** বলিয়া তাঁহার স্মরণ পূর্ণক কুশাদন বিস্তীর্ণ করিয়া, তত্নপরি শ্যান **হবিরা সমস্ত** রজনী অভিবাহিত করিবে।

শ-এই প্রকারে রজনী যাপন করিয়া, প্রভাবে গাতোখাদ করিবে। পরে স্নানাদি প্রাভঃকৃত্য সম্বাদ্ধ করিবে। প্র দিবদ একাদশী, কদাচ ভোজন করিবে না, নিরাহার থাকিয়া ভগবান্ কেশবের অর্চনা করত, এই বিদ্ধা প্রার্থনা করিবে, হৈ বাহ্ণদেব! হে পৃথদীক্ষাক্ষা অদ্য -একাদশী, অত্তএব আমি এই ভিরিতে নিরাহার থাকিয়া, প্রদিব্দ ভালনীতে বিশ্বাহার থাকিয়া, প্রদিব্দ ভালনীতে বিশ্বাহার বাহ্নিয়া গোলনা করিব এবং দীর্ঘান্ত্রাক্ষানাম্বাদ্ধ ভোজনকালে মৌনাব্দহ্ব

क्षिक्षं भौकित्, स्वानिः हेवादः क्ष्यक्षंत्रप्तः कवित ना । क्षमञ्ज क्ष्मवस्क्षण्यस्य सङ्ग्रिक क्ष्मवान् नात्रात्र-ट्या क्षिक्षक्षं कीर्तम् ॥ हेक्षिक्षांति क्षेत्रभः कवित्रा, स्थाक्रम क्षमी क्षित्रांट्य क्षिक्षाः

अरेफ़रन बाखि क्षण्ड **इरेल**्काङकाल भारकाशान कतिहा, जानार्थ नमेडीरत शमन क्रिटर। ७थाव विधिवध स्त्रान, महत्रावस्त्रन ও তর্পণাদি ক্রিয়া সমাপন করিয়া গ্রহে প্রত্যাগত इडेरव । তৎकारम शामधमः मर्ग वर्कान कता मर्ल-তোভাবে বিধেয়। যাহাহউক,পরে শেষপর্যকশায়ী ভগৰান হুৰীকেশকে প্ৰণাম করিয়া গৃহের সম্মুখে একটা সঙ্গ প্রস্তুত করিবে। এই মধ্যা দশহত-পরিমিত ছউবে এবং ইহা তোরশাদি দারা তদ-क्किक शक्रित। ঐ মতপে ভগবান বিষ্ণুর মূর্তি স্থাপন করিয়া পুৰামাস সকলের আবাধনা করিবে। মণ্ডপের উর্দ্ধে জলপূর্ণ সচ্ছিত্র এক কলস কুঞ্ছাজিনের উপরে রাথিয়া স্বয়ং নিম্নে বলিয়া স্থীয় মন্তকে জলধারা থারণ করিবে। সমুদায় দিবস এইক্লপ জলধারাধারণে অতিবাহিত ক্রিতে পারিলে ভগবান নারায়ণ পরম পরিভৃষ্ট হইয়া থাকেন। ষথন মন্তকে জলধারা ধারণ করিবে, তথন বিষ্ণুর মস্তকে ঐরূপ প্রশ্বধারা দিবে। এবং বেদির চারিদিকে চারিকুও প্রস্তুত করিবে, তমধ্যে পূর্বদিকে চতুরতা কুগু, দকিণে অর্ধ-চন্দ্রের ভায়, পশ্চিমে ব**র্জাকৃতি** এবং উত্রে অখতপত্রাকৃতি কৃও স্থাপন করিয়া, বেদিমধ্যে হস্তপরিমিত কুণ্ড প্রস্তুত করিবে। তদনস্তর বিষ্ণু-মত্রে ভিল ও ছাত মারা বৈক্ষাব মাথ করাইবে। सागनमाधा इहेरन, अखरक वादिशाता धवः विकृ-मञ्जल द्वे छर्पाता व्यक्तान कतित्व। एम विधासन धे भारा धारमां क्रिएड इस. चामि भूटक्ट -वनि-

माहि। सम्बद्ध दकानश्चकारमः विद्याः तित्रकः कृतेरम ना, मानभारतः शादाशाद्धः कृतिहत्तः

धाँदे (पतित्र निकारे जाताविक जन्माज्ञका, कार् বস্ত্র, উড়ুধরপত্তঃ এবং পঞ্চরত্বসমন্তিত ক্রপূর্ণ ত্রয়োদশ কৃত্ত স্থাপন করিবে। হোমের সময়ে अधारमद्वाभ द्यांभ कतिए इस्। स्ट्रिक् छन-বান্ বিষ্ণু ও শিল ইহাঁরা একই দেবভা, কেবল লোকরকার্থ বিবিধ রূপে প্রকাশিত হইয়া থাকেন। হোতা উত্তরমুখন্থিত ছইয়া, চারিটি ঋকের ভারা বিষ্ণুর হোম ও চারিটি ঋকের দারা ক্লন্তের হোম করিবে। যজুর্ব্বেদপারগ দিফাতি-গণের ছারা রুদ্রক্ষণ ও সামবেন্ডা ব্রাহ্মণগণ ছারা विकृक्षण कीर्जन कतिए हहेरव। धहेन्नराभ विकृ পূজা সমাধা করিয়া, বার জন ত্রাক্ষণকে বস্ত্র, মাল্য, অমুলেপন, অঙ্গুরীয়ক, কটক ও হেমসূত্র নির্শ্বিত বদন দারা পূজা করিবে। যদি প্রভৃত বিত্তশালী এই পূজা করে, তবে তিনি স্বীয় শক্তি অনুসাবে এই সমুদায় উপকরণদামগ্রী দারা অসংখ্য ভ্রাহ্মণের পূজা করিবে। অনন্তর তাঁহা দিগকে উত্তম উত্তম সামগ্রী ভোজন করাইয়া. প্রত্যেককে রম্থীয় শ্যা দান করিবে। বিভ্রশাস্ত্র করিবে মা । বিভ্রশাস্ত্র করিলে অনিউ चरिंद्रा थोटक । ८इ ८६ त्रवंश ! बामनी निवटम अहे-রূপ কার্ব্য সমাধা করিয়া, গীত, মঙ্গলধ্বনি ও ইতিহাসাদি ঘারা মমস্ত নিশা জাগরথ করিবে। খিনি এই পূজাবিধির উপদেশ প্রদান করেন, সেই উপদেষ্টা গুরুকে ইহার বিগুণতর দ্রবাদি গ্রহান করা কর্ত্বর । এই প্রকারে দশমী হইতে সংগ্রী প্রান্ত দিবসভ্রয় ত্রতাকুর্চানকার্য্যেই অভিবাহিঙ করিবে।

৩ পরদিবস ত্রোদশী তিথিতে সবস্ত ব্যস্তার-

नाम गोद्रम्बिक भवविनी नामी होते हैं। त्राजीत दक्षापटमण कारदम् । ऋतः मुख्यः शुक्ते कारक अवः गृत स्वर्ण स्वित्र बहुद्वे । बाजीव नर्कादक इन्यन ७ वज युक्त कतिया, ब्रह्मेश्वन्तक प्रान করিবে। যথাশক্তি ব্যাহাণ ভোজন, স্কুটুইনা, ककात, कश्चर श्र क्यांमिय खन्त कक्क कहिंदूत । পরে পুত্র ও আচার্যাসমন্ত্রিত রুইয়া, অউপুদ পুত্র-পূৰ্বক এই প্ৰাৰ্থনাৰত্ত্ব পাঠ ক্রিকে, আযার এই ব্রতাচরণে ক্লেশবিনাশক দেরদেহবশ কেশব আমারে প্রসন হউন। ভগবান্ বিষ্ণুই সাক্ষাৎ শিবক্লগী ও শিবও সাকাৎ বিষ্ণুষরূপ, কদাচ আমি এই উভয় দৈবে প্রভেদ দর্শন করি না়া প্রতএব ভাঁহারা উভয়েই আমার প্রতি প্রসম হটন। এই-প্রকার প্রার্থনা করিয়া, সেই সমুদার কুম্ব ও গাভী এবং বস্ত্ৰ ও শ্যাদি ত্ৰব্য সকল আক্ৰণগণের গ্ৰহে প্রেরণ করিবে। যদি এইরূপ শয্যা দান করিতে অশক্ত হয়, তবে সমস্ত উপকরণ দ্রুব্যের সহিত একটিমাত্র শ্য্যাদান করিবে। ব্রত্থমাঞ্জিদিবদে ইতিহাস ও পুরাণ প্রভৃতি অবণ ও ভগবংকুথালা-পন দারা অভিবাহিত **করিবে। হে দেব্**গণ! যদি বিপুল জ্ৰীলাভ কামনা থাকে, ভবে এই-প্রকার অনুষ্ঠান করিও। **ইহার অনুষ্ঠান** করিলে কোনরূপ তাপে তাপিত হইতে হয় ুনা, শোক. রোগ ও পরিতাপ প্রভৃতি যাবতীয় ক্লেশ বিন্নই হ্ইয়া পাকে। ইহা অতি গুহু, আহি ছোমা দিগ্রের উপর সর্বনাই প্রয়য়। এই নিমিত্ত এই সভি শুভ মহৎ সমুষ্ঠান উপদেশ করিবাম।

নারদ। মর্গে যে সমুদার বেশ্বা ইতেরে সভার
দুজ্যালি করে, ভাহার মধ্যে উর্নেশী সদৃশী সর্কস্থাকণা আর কাহাকেও দেখিছে পাওয়া যার
না। ঐ উর্নেশী আভীরক্তা ছিল। এইপ্রকার

অমুষ্ঠানপ্রভাবেই উহার এতাদৃশ অবস্থান্তর ঘটি-রাছে। অধুনা দে কিরূপ দোভাগ্যবতী হইরা, रमवराज्ञ शूरद्र, वमिं कदिरा एह, जाहा दर्गा कहा ছুলাধ্য। অধিক কি, দেবরাজপত্নী শচী যেরূপ স্থদমৃদ্ধি লাভ করিয়াছেন, উহা স্বৰ্গলোকবাদী দেবতাদিগেরও তুর্লভ। দিতিনন্দন দানবগণ ঐ ভোগাভিনাষে কতপ্রকার উপদ্রব করে এবং পরমতপ্রা মুনিগণ বছকটে ঐ তথ ভোগ করিয়া থাকেন। বাঁহারা বিশেষরূপে রাজসুরাদি ছুরুহ কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিতে পারেন,তাঁহারাই কথঞ্ছিৎ ইন্দ্রপুবে গমন করেন,কিন্তু বৈশ্যকুলোদ্রবা শচী এই অনুষ্ঠানপ্রভাবেই অনায়াদে ইচ্দ্রের ভার্য্যা হইয়া-ছেন। নারদ! তুমি ভগবানের ভার্যা সভ্যভামার দৌভাগ্যপর্বে স্বচক্ষে দেখিয়াছ, তিনি সর্ব্বদা উহাঁর আজ্ঞাকারী এবং অস্থান্ত মহিষীগণের বাদনাপুরণে যত ব্যস্ত না হন, ইহার বাদনা অতি তুঃদাধা হই-লেও, শ্রুতমাত্র তাহা সম্পাদন করেন। ইহার কারণ আর কিছুই নহে। এই সত্যভাষা ইন্দ্র-ভার্য্য শচীর পরিচারিকা দাদী ছিল, কিন্তু এই অনুস্থানপ্রভাবে ভগবানের প্রণয়িনী হইয়াছে।

এই তিথিতে ভগবান্ বিষ্ণুরে ছ্রাগারায় অভিবেক করিলে, ছ্রাসিক্ত শরীর যেরূপ পৃষ্টতাপ্রাপ্ত হয, অভিযেতনকারী সেইরূপ উত্তম দেহ প্রাপ্ত ইয়া থাকে। মহেন্দ্রপ্রমুখ সমস্ত বিবৃধ্বণ ও সম্দার দেবারি দৈত্যগণ শভকোটি জিহ্বা ধারণ করিয়। এটি ইহার মাহাত্ম বর্ণন করিতে আরম্ভ করে। তথাপি ইহার ফলাধিক্য বর্ণনা করিতে

সক্ষ হয় না। যাহা হউক কলিকলুফবিদারিণী কল্যাণিনী ছাদশী সীয় প্রভাবে নরকক্ষ প্রাণিপুত্ধকেও উদ্ধার করিতে পারে। যে ব্যক্তি ডক্তিপুর্বিক ইহার স্বিশেষ বিধি শ্রমণ করে, সে কি পর্যান্ত পুণ্যপ্রাপ্ত হয়, তাহা বলিতে পারি না।

অনন্তর পূজাবদানে এই বলিয়া বিষ্ণুর বিদ-ৰ্জন করিবে। হে দেবদেব। ভূমি সর্বব্যাপী ন্থতরাং তুমি সর্বাদাই **আমার অন্তর** বাহির সর্ব্ব-ত্রই বিরাজ করিভেছ। তোমাকে নমস্বার করি। হে লক্ষীপতে! তোমার প্রদাদে ও অফু ্র হ[া] আমার ও আমার সজাত যাবতীয় লোকের লক্ষ্মী-লাভ ও বৃদ্ধি হউক। হে জগৎপতে ! এই চক্র। ও সূর্য্য তোমার লোচন। তুমি তন্দারা চরাচর ^চ সংসার সর্ববত্তই নিরীক্ষণ করিতেছ। কিন্তু যাংগরা পাপপথে বিচরণ করে, ভাহারা ভোমার দৃষ্টির বহিভূতি। এইজন্ম তাহারা নরকে পণ্ডিত হট্যা থাকে। আমি যেন কখন পাপপথে পদা-প্ণপুৰ্বক ছুৰ্নিবার নরকছঃখে প্ৰভিত না ইই।। তুমি আমার ভত্তভুগে বিনাশ কর, বিনাশ কব! হে আলা ! যে সকল ব্যক্তি তোমার অনুগ্রাহের পাত্র ও যোগ্য, আমি যেন ভাছাদের সকলের আদিতে অধিষ্ঠান করি। কেননা আমার পাপ যেম্ন অদীম ও অপরাধ যেমন অপার, তোমাব দয়াও তেমনি অসীম ও ক্ষমার তেমনি পার নাই। অতএব সংসারে আমা অপেকা আর কোন্ ব্যক্তি তোমার দয়ার ও ক্ষমার পাত্র বা যোগ্য আছে :

ইত্যাথেরে মহাপুরাণে বিকৃত্রসালক্ষিধি নাদক সপ্রতিংশ অধ্যায় সমার্থ।

অফীত্রিংশ অধ্যায়।

অগ্রি কহিলেন, গঙ্গামাহাত্মা কীর্হন করিব। ভগবতী ভাগীরথী ভূক্তি মৃক্তি প্রদান করেন। অভএব সর্বান্তঃকরণে তাঁছার সেবা করা কর্ত্ব্য। জ্ঞ নিদানী যে সকল দেশের মধ্য দিয়া প্রবাহিত হয়েন, তৎসমস্ত অসাম্য জনপদ অপেকা সর্ব-প্রকারে বরিষ্ঠ ও পবিত্রতাজনক। যাহারা সর্বদা মুক্তিশাভের উপায় বা পরিণানে সদ্গতি কামনা বা অম্বেষণ করে, এই ভাগীরখীই তাহাদের তারা শম্পাদন করেন। ভাগীরখীর সেবা করিলে, উভয় বংশেরই উদ্ধার হয়। সহস্র চান্দ্রায়ণব্রত অপেকা গঙ্গাস্লিলভক্ষণ উৎকৃষ্ট বা প্রেষ্ঠ ভাষাপ্র। একমাদ ভাগীরধীর দর্শনাদি করিলে, দর্বব ফভের ফন লাভ হয়। যিনি সকলের আদি, সকল কার-ণের কারণ ও সকল কামনা সফল করেন, সেই সর্বসিদ্ধিদাতা সর্বাত্মা সর্বেশ্বর স্ব্রন্থর বাত্ত-দেবের পাদপদ্ম হইতে ভাগীরথীর উদ্ভব হই-য়াছে। এই জভা ইইার সলিল পান ও উহাতে অবগাহন এবং উহার দর্শন ও কীর্ক্তনাদি করিলে, সকলপাপশান্তিও সকলবর্দ্মসঞ্চয় হুইয়া থাকে। **এই क्छ (मर्यो छात्री अर्थो नकलक नुयनिर्द्र तश्र व्यक्** চরমে স্বর্গভোগ বিধান করেন। গঙ্গায় যাবৎ অস্থি থাকে, তাবৎ লোকের স্বর্গভোগ হয়। পতিত वाक्तिवां शकांव दमवा कतित्व, त्रवंगांव मन्नत्व প্রতিষ্ঠিত হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি গলায়ভিকা মস্তক্ষে বারণ করে, সে পূর্ব্যের ফারু পালক্ষমি বিনাল করিয়া থাকে। গঙ্গান্ত মর্পুন, ক্লাপ্রি, ক্রীউন াও স্মরণমাত্রে পত- কোটি জন্ম-দক্ষিতঃ পাগপ্রতি প্রকালিত ও পদ্ধন পুণ্য সঞ্চিত ক্রীয়া খাটেক। যাহারা ভাগীরথীর নিন্দা করে, ভাহারের ক্রবিটারে ক্রাট পতিত ও নরকের দার উদ্ঘটিত ইর'।

> ইত্যায়েরে গঙ্গবাহাত্তা নামক অইতিংশ অধ্যার সমার ।

উনচন্ধারিংশ অধ্যার।

অমি কহিলেন, অধুনা প্রয়াগমারাক্ষ্য কীর্ত্তন করিব। উহা প্রাবণ করিলে, ভূজিমুজিলাভ ইইয়া থাকে।

প্রয়াগে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও ইন্দ্রাদি দেবকণ, প্রধান थ्यांच सूचिशन, महिर ७ महतायत्रमकलः ध्रम् निष् গন্ধবৰ, অপ্লৱ ও কিম্ববৰ্ষ অব্ছিতি ক্ষরেন। তথায় যে তিনটি অগ্নিকুণ্ড আছে, তশ্বধো কাৰুৰী বিরাজমান হইতেছেন। এই ছাফারী সকল তীর্থের অগ্রগণ্যা। ত্রিভুষনে যাঁহার খাম ও মহি-মাদি বিখাতি, সেই তপনতুহিতাও প্রয়াবে বিরাক্ত করিতেছেন। গঙ্গাও যথুনা এই উভরের মধ্য স্থলকে পুথিবীর জঘন বলিয়া থাকে। **ঋষিশণ** অবগত আছেন, প্রয়াগ সেই ক্রমণেশের আন্তর্কু-পৃষ্। অধিকন্ত, প্রতিষ্ঠান মহিত প্রয়াপ, কর্মন ও অখতর এবং ভোগরতী তীর্থ,ইহারা প্রস্তাপতিয় বেদী বলিয়া পরিগণিত। সমস্ত বেদ ও সমস্ত यक पूर्तिमान् इहेश, अशारण विज्ञाक करते। अशा-গের তব করিলে, নাম সংকীর্তন, করিলে, এমন কি, মুভিকা আলম্ভন করিলেও,নকল পাপ মোচন 18 नकेल भूरनात जक्षत्र इहेशा प्रारम् । अधारण क्षेत्रायसूनामक्रदम प्रान, व्याद ७ जशांकि । शाहा किहू विश्वास कहा बाब, छारारे चक्क स्रोत कार्य करता। ट्र निका! कि दात्रवहन, कि दलक्षेत्रवाका, कियू-टिं क्षेत्राश्चमत्रभारकहा फार्ट्श कहा कर्डवा स्ट्रह ।

ষষ্টিকোটি দশ সহ্স তার্থ প্রয়াগে নিত্য সন্ধিহিত আছে। এইজন্য প্রয়াগ পরমতীর্থ। এবং এই
কারণে বৃদ্ধিমান্ পুরুষেরা সর্বান্তঃকরণে প্রয়াগমৃত্যু কামনা করেন। যে ব্যক্তি প্রয়াগে প্রাণ
ত্যাগ করে, তাহার আত্মা কথনও পতিত বা
আবিত হয় না। বাস্ত্রিতীর্থ ভোগবতী ও হংসপ্রপতন ইত্যাদি তার্থ সকল প্রয়াগে দর্বদা সন্ধিহিত আছে। মনীষিগণ নির্দেশ করেন, মাঘমাদে
প্রয়াগে তিন দিন স্নান করিলে, যে ফল লাভ হয়,
কোটি কোটি গো প্রদান করিলেও, সেই ফল
প্রাণ্ডি হইয়া থাকে।

হে বিপ্র! গঙ্গা, আর সর্বতেই হুলভ, কেবল গঙ্গান্তার, প্রয়াগ ও গঙ্গাদাগরদঙ্গম, এই তিন ছানে হুর্লভ। প্রয়াগে দান করিলে, স্বর্গলাভ ও পরজন্ম রাজেন্দ্র হইয়া জন্মগ্রহণ করিতে পারা যায়। অত্ত্যে বটমূলে ও সঙ্গমাদি পবিত্র ক্ষেত্রে প্রাণত্যাগ করিলে, বিফুপুরী লাভ হইয়া থাকে। রমনীয় উর্বাণীপুলিন, সন্ধ্যাবট, কোটিতীর্থ, অহান্দেতীর্থ গঙ্গায়মূন, মানস তীর্থ ও অভ্যুৎকৃষ্ট বাদরক তীর্থ ইত্যাদি তীর্থ সকল পরম পবিত্র ও সর্বাপেকা উৎকৃষ্ট।

ইভারেরে প্রয়াগমাছাম্মানাম ক উনচ্ছারিংশ অন্যায় সমাধা ।

চত্বারিংশ অধ্যার।

অগ্নি কহিলেন, স্বয়ং মহাদেব সহাদেবী গোরীকে বলিয়াছেন, যে, বারাণদী অভি উৎকৃষ্ট তীর্থ ও পরম পবিত্র এবং এখানে বাদ করিয়া, দেবাদিদেব বাস্থদেবের নামাদি কীর্ত্তন ও শ্রবণ করিলে, ভুক্তিম্ভিলাভ হইয়া থাকে।

রুদ্র কহিলেন, দেবি ! আমি কখনও এই পবিতা কেতা মৃক্ত অর্থাৎ পরিত্যাগ করি না, এই জন্য ইহার নাম অবিমৃক্ত হইয়াছে। এই অবি-মুজ্তে তপ, জপ, হোম ও দান করিলে,ভাহা অক্ষয় হইয়া থাকে। এখানে আমার নিত্য অধিষ্ঠান বশতঃ দকল দেবতারই সামিধাযোগ হইয়া থাকে। অতএব পাদৰ্য পাষাণে আহত বা কতবিক্ষত করিয়াও, সর্বাস্তঃকরণে কাশীতে বাস করিবে, শত কন্ট হইলেও, কোন মতেই ত্যাগ না। পরমঞ্জ হরিশচক্র. পরমগুহ জপ্যেমর, আত্রতিকেশ্বর শ্রীপর্বত, পরমগুরু মহালয়, পরমগুরু চণ্ডেম্বর ও ভৃত্ত এবং পরমগুছ কেদার, এই আটটি উৎ-কুট ভীৰ্থ কাশীতে নিত্য অধিষ্ঠিত। এই জন্য কাশীর মাহাত্ম্য সর্বতে বিখ্যাত ও পরিগণিত। ফলতঃ কাশী গুহু সকলের মধ্যে পরমগুহা। এখানে স্থান, দান, আভতিবিধান, দেবার্চনা, জপ ও প্রাণ-তলগ, প্রাদ্ধ, বাদ ও অন্যান্য স্থকার্য্যের অনুষ্ঠান করিলে, ভুক্তিমুক্তিপ্রাপ্তি হইলা থাকে। বরণা ন্দীর মধ্যে বলিয়া ইহার নাম বারাণ্দী হইয়াছে। তিথিবিশেষে পৃথিবীর যাবতীয় পবিত্র তার্থ ও ক্ষেত্র সমুদায় এই বারাণদীক্ষেত্রে সমবেত হইয়া থাকে। তখন দেবগণ, ঋষিগণ, সিদ্ধাণ, গন্ধৰ্ব-গন, অপ্সরোগন, কিলরগণ ও পরমর্যিগণ দকলে মিলিত হইয়া,এই স্থানে দ্মাগত হয়েন। ইত্যাদি বিবিধ কারণে কাশী অতি পবিত্র ও উৎকৃষ্ট তীর্থ বলিয়া পরিগণিত। বিদ্বান ও বৃদ্ধিমান পুরুষ এই জনা সর্ব্যান্তঃকরণে কাশীমৃত্যু কামনা করেন ও করিবেন। কাশীতে মৃত্যু হইলে, আমার সাবুজ্য লাভ হয়। আর তাহাকে পুনঃ পুনঃ জন্মযন্ত্রণা ভোগ করিতে হয় না ৷ দেবি ৷ আমার সহিত

তোমার সর্ককালিক সালিধ্যযোগে এখানে অধি-ষ্ঠান বলিয়া, কাশীর অপর নাম গৌরীক্ষেত্র। ইত্যায়েরে কাশীমাহার্যানামক চ্যারিংশ অধ্যার সমধ্য।

একচম্বারিংশ অধ্যায়।

অগ্রি কহিলেন, বিপ্র! অধুনা আমি নর্মাণাদিন
মাহাত্য কীর্ত্তন করিব। গঙ্গা ও নর্মাণাদিলে
দর্শনমাত্র সদ্য: পবিত্রতা বিধান করে। এই
নর্মাণা যোজনশত বিস্তৃত ও যোজনছয় আয়ত।
অমরকন্টকে পর্যতের সমস্তাৎ ষষ্টিসহত্র কোটি
ভীর্থ বিরাজমান। তংশমস্ত অতি পবিত্র ও
পুণজেনক। তাহাদের দেবা করিলে, স্বর্গ, অপবর্গ ও পরম অভীন্ট ফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে।
কাবেরীসঙ্গমও নিতান্ত পবিত্র ও পুণ্ডেনক বলিয়া
বিথ্যাত। তথার স্নান, দান, জপ, তপ, হোম
ও অন্যান্য সদন্তীন করিলে, সমস্তই অক্ষয় ও
অমোন্য হইয়া থাকে।

অতঃপর, প্রীপর্বচের বিষয় কার্ত্রন করি, জাবন কর। ভগবতী পোরী প্রীর রূপ ধারণ করিয়া, এই স্থানে তপস্থা করিয়াছিলেন। ভগবান্ হরি তদীয় তপস্থায় সাতিশয় সন্তুই হইয়া, সাক্ষাংকারে অবতরণপূর্বক কহিলেন, স্নভগে! তুমি অধ্যাত্ম লাভ করিবে। আর, এই পর্বত তোমার নামে বিখ্যাত ও ইছার চতুর্দিকে শত্রেমার করেন প্রমান পরিছে হইবে। অধানে মৃত্যু হইলে শিবলোক লাভ হইবে। ভগবান্ ভব দেবী ভ্যান্নীর সহিত এই স্থানে বিহার করেন। হিরশ্যুন

কশিপু এই শ্রীপর্বতেই তপস্থা করিয়া, অভিনিধিত বলসমূদ্ধি প্রাপ্ত হইয়াছিল এবং মুনিগণও এখানে তপোমুর্ভানপূর্বক অভীকীদিদ্ধি বাভ করিয়াছেন। অতএব আত্মার হিতকামী পুরুষ প্রয়ত হইয়া, তথায় বাদ করিবে।

ইত্যাথেছে নৰ্গদাদিমাহাত্মা নামক একচতারিংশ অধায়ে সমাপ্ত।

দ্বিচত্ব রিংশ অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, তীর্থের মধ্যে যে সকল তীর্থ উৎকৃষ্ট, গরা তাহাদেরও মধ্যে আঠে। গরার মাহাল্মা কীর্ত্তন করিব, প্রাণ কর। প্রাহ্রর তপভায় প্ররুত্ত হইলে, তদীয় তপংপ্রভাবে হ্রন-গণও সন্তপ্ত হইয়া উঠিলেন! তদবস্থায় তাঁহারা সকলে কীরসাগরতীরে সমাগত হইরা, সম্চিত্ত তব ও প্রণতিসহকারে কৃতাঞ্জলিপুটে ভগবান্ কীরসাগরশায়ী নারায়ণকে কহিলেন, দেব। আমাদিগের সকলকে গ্রাহ্রর হইতেরক্ষা করুন। আমরা তদীয় তপভাগ্ন সাতিশয় ভীত ও বিব্রত হইয়া উঠিয়াছি।

ভগবান্ নারায়ণ দেবগণের প্রার্থনায় সম্মত

হইয়া, দৈতোর নিকট গমনপূর্বেক কহিলেন, তুমি

বর গ্রহণ কর। দৈতা কহিল, আমি সকল ভীর্থ

অশেকা পবিত্র হইতে বাসনা করি। ভগবান,

বাহদেব তথাস্ত বলিয়া, তৎকণাৎ তথা ভইতে

স্থানে প্রহান করিলে,গয়াহরও অন্তর্হিত ইলা।

তথন পিতামহপ্রম্থ দেবগণ দৈতা বা জনার্দন,

কাহাকেও দেবিতে না পাইয়া, স্বর্গে প্রভ্যাগমন

ক্রিলেন; পৃথিবী শূনা অবস্থায় রহিলেন।

অন্তর দেবতারা নারায়ণসাহিধ্যে সমাগ্ত:

হুইয়া করপুটে কহিলেন ভগবন্ পৃথিবী ও স্থা দৈত্যের দশনাৰ্ধি শূন্যভাবাপন হইরাছে। তথ্য নারায়ণ জ্বন্ধাকে কহিলেন, আপনি যজের জন্য দেবগণ সহিত সন্মিলিত হইয়া, দৈতোর দেহ প্রার্থনা করুম। পিতামহ এই কথা আক-র্ণন করিয়া, দেবগণের সহিত মিলিত ইইয়া, গয়া-স্থরকে কহিলেন, আমি অভিধি, যজ্ঞ করিব। সেইজন্য স্থায় পবিত্র দেহ প্রার্থনা করিতেছি। গয়াহর এই একার অভিহিত হইয়া, তাহাই হইবে বলিয়া, যেমাত্র স্বীকার করিল, দেইমাত্র তাহার শির পতিত হইল। অনন্তর পিতামহ তাহার দেছে যজ্ঞ করিতে প্রবৃত ছইয়া, পূর্ণাহতি थामास मगुमाछ इहेत्न, थे (मह विव्यवित इहेन) ভদ্দনি ভিনি পুনরায় বিষ্ণুকে কহিলেন, যজ্ঞ পূর্ণ হইবার সময়েই অত্রদেহ বিচলিত হইয়া উটিয়াছে। ভগবান বিফু পিতামহৈর কথায় धर्मात्क बाह्यान कतिया किरिलन, एक्ट्रिश मकरल সমবেত ইউয়া, ইহার উপরে দেবময়ী শিলা ধারণ ও সেই শিলার অবস্থান করুন। আমিও গদাধর মৃৰ্ত্তিতে দেবগণের সহিত ইহাতে অবস্থিতি করিব। ধর্ম ভগবানের আদেশবশংবদ হট্য়া তৎক্ষণাৎ (नवस्यो मिला धात्र कतिरलम ।

ধর্মনৃতার গর্ডে ধর্মের ধর্মত্রতা নামে বিশ্ব-বিখ্যাতা স্থাহতার জন্ম হয়। ঐ স্থাহিতার বিবাহযোগ্য সময়ে সমাগত হইলে, পিতা ধর্ম উপযুক্ত পাত্রান্থেরণে প্রায়ত হইয়া, পিতামহের পরমন্তবদশ্পন পুক্র প্রদিদ্ধ তপোধর্মপরায়ণ মরীচিকে পত্নীক্ষরপ কন্যাসম্প্রদান ক্ষিলেন। মরীচি যেমন অলোকিক গুণগ্রামে ভূষিত, ধর্ম-ব্রতাও দেইরূপ অসামান্য গুণরাশির আধার। মুত্রাং, এই পরিণয় স্ব্যাংশেই স্থাস্ত ও মুখ্মম হইল। হরি যেমন লক্ষীতে, মহাদেব থেমন গোরীতে ও ইন্দ্র যেমন লচীতে, মরীচি তেমন ধর্মবতীতে পরম ঐতিযোগ অমুভব করিতে লাগিলেন। ধর্মবিভা যেমন নিয়ত প্রদংযতা ও দূচব্রতা হইয়া, অভিলাষামূরপ পরিচর্যাসহকারে স্থামির সন্তোষসাধনে কায়মনে প্রস্তু, পরম-গুণবান্ মরীচিও তেমনি মিইবাক্য ও কামনা-পূরণ ইত্যাদি উপায়ে পল্লীর পরিতোষ সাধনে নিযুক্ত হইলেন।

এইরপে কিয়ৎকাল অতীত হইলে একদা
মহাতপা মরীচি অরণ্য হইতে কুশ, সমিধ, কাষ্ঠ
ও পুল্পাদি আহরণজন্ম নিতান্ত পরিপ্রান্ত হইয়া, ভোজনাবসানে প্রিয়তমা পত্নীকে প্রীত বাক্যে
সম্বোধন করিয়া কহিলেন, অন্য আমি অভিমাত্ত পরিপ্রান্ত ওঅবসর হইয়া পড়িয়াছি। তুমি আমার পদ সংবাহন কর। পতিত্রতা ধর্মত্রতা স্থাম-বাক্যের অমুক্রতা হইয়া, গীরে ধীরে ছদীয় পাদ-সংবাহনে প্রন্তা হইলেন।

এই রূপে তিনি একান্তিক হৃদয়ে স্থানির
ভশ্রেষা করিতেছেন এবং ভগবান্ মরীচি স্থে
নিদ্রা ষাইতেছেন, এমন সময়ে পিতামহ প্রকা
সহদা তথায় সমাগত হইলেন। তদর্শনে ধর্মপ্রতা চিন্তা করিতে লাগিলেন, আমি এখন পিতামহ প্রকার অর্চমা করিব, কি, স্বামার পদসংবাহন
করিব ! প্রকা আমার গুরুর গুরু; অভ্এব
স্ক্তিভাতাবে ইহার পূজা করা আমার অবশ্য
করিব! এইপ্রকার চিন্তা করিয়া, তিনি অর্হণাদি
আহরণ করিয়া, পিতামহের ষ্ণাবিধি পূজাবিধি
সমাধা করিলেন। মরীচি আপনার আভাজদনিবন্ধন কৃপিত হইয়া, পতিপ্রতা ধর্মপ্রতাকে
এই বলিয়া শাপ দিলেন, তোমাকে আমার

আদেশলঙ্গনজন্য শিলা হইতে হইবে। ধর্মপ্রতা কহিলেন, আমি আপনার পাদসংবাহন পরিত্যাগ করিয়া, আপনার গুরু ব্রহ্মার পূজা করিয়াছি। এ বিষয়ে আমার অপরাধ কি ? যাহা হউ চ, আপনি অকৃতাপরাধে আমারে অভিশপ্ত করিলেন। এই কারণে ভগবান্ ভৃতভাবন ভবানীপতি আপনাকেও শাপ দিবেন।

ধর্মব্রতা সামীকে শাপ দিয়া, অযুত সহজ্র বংসর যথাবিধানে তপন্থা করিলেন। পতিব্রতার ছুন্চর তপন্থায় চরাচর জগৎ সস্তপ্ত ও শঙ্কিত হইয়া উচিল। তথন বিষ্ণুপ্রমুখ দেবগণ সাক্ষাৎকারে সমাগত হইয়া, তাঁহাকে সান্ধনা করিয়া, মুত্রবাক্যে কহিলেন, অরি হভগে! আমরা তোমার গুরুভুতি, তপন্থা ও সত্যনিষ্ঠাপ্তণে সাতিশয় সন্ত্রত হইয়াছি। তুমি এই অধ্যবসায় হইতে বিনির্ভ হইয়া, অভিমত বর গ্রহণ কর। লোকে যেজন্ম তপন্থা করে, তোমার তাহা স্কল হইয়াছে।

ধর্মব্রতা কহিলেন, দেবগণ! আপনারা চরাচর জগতের প্রভু ও নিয়ন্তা। যদি প্রসন্ধ হইয়া
থাকেন, তাহা হইলে এই বর দিন, স্বামী অকারণ
কূপিত হইয়া আমাকে যে শাপ দিয়াছেন, ভাহার
যেন নিরাকরণ হয়। ইহা ভিন্ন আমার অক্য
অভিল্যিত বা অভিপ্রেভ নাই।

দেবগণ কহিলেন, তোষার স্থামী মরীটি
পিতামহের অংশ ও মৃর্ডিমান্ ধর্ম এবং শরীরিশী
তপস্থা। অভএব তিনি যে শাপ দিয়াছেন, তাহা
কর্থন ব্যর্থ হইবার নছে। ভোমার স্থায় বৃদ্ধিমতী
রমণীকে এ কথা বলা বাহুল্য যে, সংসারে কেহ
কাহারও শান্তা বা শাপদাতা নাই। লোকে স্থ স্থ
অদুষ্টের ফল ভোগ করিয়া থাকে। এ বিষরে

শুণাগুণ বা অপরাধ অনপরাধ কারণ নহে। অভঞৰ অদৃউবশে বা দৈবপ্রভাবে যাহা ঘটিয়াছে, ভাষা অবিচারিত চিত্তে ভোগ কর। যাহার প্রতিকার বা পরিহার নাই, তাদৃশ বিষয়ে যতই শোক ও ছাঁথ করা যায়, ততই মনঃকট বর্জিত হইয়া থাকে। তোমার আয়, পতিব্রতা রমণীকে অধিক কলা বাছলা।

धर्मां बंठा कहिरलन, रमवंशन । यमि**छ व्यम्**से छिद्र উপায় বা পথ নাই; কিন্তু আপনারা অনুটের ও দৈবের নিয়ন্তা। স্মতএব যদি একান্তই স্বামাকে শাপ ভোগ করিতে হয়, তাহা হ**ইলে, আমি** যাহাতে সামান্ত শিলারূপে পরিণত না হই ভাষার উপায় বিধান করিয়া দিম। দেবগণ পতিক্রভার এই বাক্যে পরম প্রীত হুইয়া কহিলেন, ছুভগে 🕫 कृति यादा वेलिएल, छाटाहे इंहर्व ; कृति (प्रव-গণের পরমার্চিত পরম পবিট্রা শিলা হৃইবেঃ বর্তমানে ভোমার নাম ধর্মত্রতা বলিয়া বিশাত 🕸 দেবশিলা অবস্থায় দেবত্রতা নামে তোমার স্থাতি ও প্রতিপত্তি সর্বভূবনব্যাপিনী ইইবে। গরাম্বরের গতিরোধজক্ত পর্মপবিজ **(मर्व्यक्षी मर्व्यक्रियामिक्राणिनी स्मर्वाणिनामुर्कि धान्नम** कतिद्वा

দেবগণের এই কথার ধর্মতা তংকণাম দেবতারণে প্রাত্ত হয়। কহিলেন, দেবলা। আপনারা যদি আনার প্রতি সন্তুঠ ইয়া থাকেন, তাহা হলৈ, আপনাদিগকে অনুগ্রহপূর্বক সকলে আনাতে অবিচান করিতে ইইবে। জ্বানি, বিশু, মহেলের, গৌরী, লক্ষী ইত্যাদি শনন্ত দেব দেবীই আমার উপর অবস্থিতি করিবেন। ক্রপা করিয়া আমাকে এই বর দান করুন। বলিতে কি, আপনাদের সামিধ্যযোগ ভোগ করিতে পাইলে,

আমি শিলা অপেক্ষাও অন্ততর নিরুষ্ট যোনি পরমসোভাগ্য জ্ঞান করি।

ভাষি কহিলেন, বিপ্র! দেবজার কথা ভাষিয়া, দেবগণ পরম প্রতি হইলেন এবং সাদর বাক্যে তাঁহাকে কহিলেন, ভদ্রে! তোমার স্থায় বুজিমতা, ধর্মব্রতা, সত্যপরায়ণা ললনা অতি তুর্লভ। তুমি আপনার অলোকসামানা পাতিব্রত্যাধনে বিধাতার নারীস্থি অলঙ্কত করিয়াছ। যাহা প্রার্থনা করিলে, তাহা অবশ্য দিল্ধ হইবে। পিতামহ ও বাহ্দেব প্রভৃতি সমুদার দেববর্গ সর্বাদা তোমাতে অবস্থিতি করিবেন। আজি হইতে তুমি পবিত্র হইতেও পবিত্র হইলে। তোমার সোজাগোর সীমা নাই। এই বলিয়া, দেবগণ সকলে স্থামতলে প্রস্থান করিলেন।

· अभित्क (मेरे रावश्यो भिला माकार धर्मकर्द्धक ধুত হইলেও, গ্রাহার তৎসমভিব্যাহারেই পূর্ববিৎ চলিতে আরম্ভ করিল। তথন রুদ্রাদি দেবগণ আপনাদের প্রতিশ্রুতপরিপালনজন্য শিলার উপর বথাবিধানে অধিষ্ঠান করিলেন: কিন্তু গয়াস্থর তাঁহাদিগকৈও লাইয়া, চলিতে আরম্ভ করিল। ভদর্শনে দেবগণ ক্ষীরোদগর্ভে সমাগত হইয়া. তথার বিরাজমানভগবান বাস্তদেবকে প্রদন্ধকরিয়া कश्टिलन, (पर ! श्रांभिन मकल विश्वास मकलत রক্ষাকর্তা। এইজন্ম আমরা সকলে আপনার শরণাপম। যাহা করিলে, ভাল হয়, আপনার ভাষা অবিদিত নাই। অতএব সম্বর সম্চিত বিধান করিরা,উপস্থিত বিপদ নিরাকরণ ও সংসার कका करून। भागता वार्जाह्य वा मःवाननाजा-মাত্র। বার্তাহরণ ভিন্ন আমাদের অন্য কোন ক্ষমতা নাই। বলিতে কি, আপনার সৃষ্টি আপ-निरे तक। कक्रन।

ভগবান্ মধুদ্দন দেবগণের এই প্রার্থনায় পরম প্রদান হইয়া, আপনার জ্ঞীগদাধরমূর্তিপ্রদানপূর্বক প্রশান্ত গন্তার মধুরোদার রমণীয় বাক্যে কহিলেন, দেবগণ! তোমরা হুখে প্রস্থান ও নিরুদেরেগ অব-স্থান কর, তোমাদের কোন ভয় বা আশক্ষা নাই। আমি স্বয়ং দেবৈকগম্য মূর্তিতে গমন করিব।

এই বলিয়া, ব্যক্ত ও অব্যক্তরূপ দ্বিধেষরূপ-ধারী ভগবান্ আদিগদাধর গয়াজরের গতিরোধ জন্য গুদাধরমূর্ত্তি ধারণপূর্ব্তক দেবশিলায় অধি-ষ্ঠান করিলেন। পুর্কেব গদ নামে অত্বর ছিল। ঐ অহর মৃর্ত্তিমান্ গদের ভাগে, লোকের উৎপীড়ন করিত। দেবগণ ও ঋষিগণ তাহার অত্যাচারে নিতান্ত বিব্ৰত ও লোকরক্ষায় একান্ত উৎস্থক ছইয়া, দেবদেব বাহ্নদেবের শরণগ্রহণপূর্বক, উপ-শ্বিত বিপদ্বার্ত্তা বিনিবেদিত করিলে, তিনি তৎ-ক্ষণাৎ অহুরের প্রাণ সংহার করিলেন। গদাস্তর নিহত হইলে, লোকসকল নিক্ষণ্টক ও নিরুপদ্রব ছইল। দেবগণের আহলাদের দীমা রহিল না। বিশ্বকর্মা তাহার অন্থিদকল সকলন করিয়া,ভদ্মারা আদ্যুগদা নির্মাণ করিলেন। গদাধর ঐ আদ্যু-গদার সহায়তায় হেতিপ্রমুথ মহাবলপরাক্রান্ত রাক্সদিগকে সংহার করিয়া, তদবধি আদিগদাধর নামে বিখ্যাত হইলেন।

দে যাহাহউক, আদিগদাধর ভগবান্ বিফু ঐ
রূপে দেবনরী শিলাতে অধিষ্ঠান করিলে, গরাস্থরের চলৎশক্তি রহিত হইল। তখন পিতামহ
ব্রহ্মা পরম প্রীত ও নিরুদ্বেগ হইয়া, পূর্ণাছ্তি
প্রদান করিলেন। আছতিদান সমাহিত হইলে,
গরাহ্তর দেবগণকে কহিল, আপনারা আমাকে কি
জন্ত বঞ্চনা করিলেন । ভগবান্ বিষ্ণু আজ্ঞা
করিলে, আমি কি তৎক্ষণাৎ নিশ্চল হইতাম না ?

যাহাহউক, দেবগণ! আপনারা যথন আনাকে আক্রমণ করিয়াছেন,তখন বর দান করিতে হইবে। দেবগণ কহিলেন, আমরা তীর্থকরণজ্ঞতা ভোমাকে নিশ্চল করিলাম। অতএব তোমার অধিষ্ঠানক্ষেত্র ব্রহ্মা, বিষ্ণুও মহেশ্বরের পবিত্র আয়তন ও সর্ববিত্তি অপেক্ষা সমধিক প্রদিন্ধ হইবে এবং পিত্রাদি লোকগণের ব্রহ্মলোকগতি বিধান করিবে। এই বলিয়া, দেবগণ ও দেবীগণ যথোক্তা বিধান তথায় অধিষ্ঠান এবং তীর্থপ্রভৃতি ও সমিধান করিল।

অনত্তর পিতামহ ত্রন্ধা যজ্ঞান্তে ঋত্বিদিগকে পঞ্চক্রোশ গয়াক্ষেত্র দান করিলেন। এতন্তিম, তিনি ত্রান্ধাদিগকে পঞ্চপঞ্চাশৎ আম, স্বর্ণের পর্বত, তৃগ্ধ ও মধুর নদী, দধি ও ঘতের সরোবর, অন্নাদির পর্বতি এবং আর তাঁহারা ক্ষুদ্রজনের নিকট যাচ্ঞা না করেন, এই কারণে তাঁহাদিগকে কামধেতু, কল্পতরু ও স্বর্ণরূপ্য গৃহ সকল প্রদান করিলেন।

এই রূপে ব্রাহ্মণের। ধর্ম্মযাগে প্রলোভবশতঃ
ধনাদিগ্রহণ করিয়াও, যথন গয়াক্ষেত্রে বাদ করিতে
লাগিলেন,তথন পিতামহ তাঁহাদিগকে শাপ দিলেন,
তোমরা বিদ্যাবিবর্চ্চিত ও তৃষ্ণাযুক্ত হইবে এবং
পাষানরূপ শৈলমূর্তি ধারণ করিবে।

ব্রাক্ষণেরা শাপগ্রস্ত হইয়া, দবিনয়ে পিতামহকে কহিলেন, ভগবন্! শাপ দিয়া, দকল নফ
করিলেন। একণে জীবনের জন্ম আমাদিগের
প্রতি প্রদাদ ও অনুগ্রহ বিভরণ করুন। পিতামহ তাঁহাদিগকে কহিলেন, যাবৎ চন্দ্রন্ত্র্য,
তাবৎ ভোমরা তার্থোপজীবী হইবে। যে দকল
ব্যক্তি গ্যায় আগমন করিয়া, হব্য, কব্য, ধন ও
ভাদ্ধ দারা তোমাদিগের পূজা করিবে, তাহাদের

শতকূল নরক হইতে স্বর্গে এবং স্বর্গ হইতে পরম পদে প্রতিষ্ঠিত হইবে।

অনন্তর গ্রান্তরও বহু আয় ও বহু দক্ষিণা দান-সহকারে যজ্ঞ করিল। ঐ অন্তরের নামেই গয়া-পুরী বিখ্যাত হইয়াছে। পাগুবগণ এই স্থানে ভগবান হরির আরাধনা করিয়াছিলেন।

> ইত্যায়ের গ্রমোহাত্মানামক বি-চত্যিকংশ অধায় সম্প্র ।

ত্রিচত্বারিংশ অধ্যার।

অয়ি কহিলেন, গয়াগমনে প্রবৃত্তি হইলে,
যথাবিধানে প্রাদ্ধ, কার্পটিবেশে গ্রাম প্রদক্ষিণ,
সংযম ও অপ্রতিগ্রহর্ত্তি অবলম্বন করিয়া,
গমন করিবে। গয়াগমনসংকল্প করিয়া, গৃহ
হইতে চলিতমাত্র লোকের পিতৃপুরুষের ফর্গারোহণসোপান পদে পদেই নির্দ্ধিত হইয়া
থাকে। পুত্র যদি গয়ায় য়য়, তাহা হইলে,
ত্রহ্মজ্ঞানে প্রয়েজন কি ? গোগৃহরণে আবস্যকতা
কি ? এবং ক্রুক্কেত্রেবাসেই বা ফল কি ? পুত্র
গয়ায় গমন করিয়াছে দেখিলে, ইহাই ভাবিয়া
পিতৃগণের আমোদ হয়, য়ে, পুত্র পদম্বয়েও জলস্পর্শ করিয়া আমাদিগকে কি না প্রদান করিবে ?

বেদ্যজ্ঞান, গয়াপ্রাদ্ধ, গোগৃহে মরণ ও ক্র-ক্লেবে বাস, প্রুষ্থের এই চতুর্বিধ মুক্তি। পিতৃ-গণ নরকভয়ে ভীত হইয়া, এই মানসে পুজকামনা করেন, পুজ যদি গয়ায় বায়, আমাদের পরিবোগ করিবে। সকল তীর্থেই মন্তক মুন্তন ও উপবাস এইমাত্র বিধি, কিন্তু গয়াতীর্থে কালাদি নিয়ম নাই; নিতাই পিওদান করিবে। পক্ষত্রে গয়ায় বাস করিলে, সপ্তকুল পর্যান্ত প্রিত্রে হইয়া থাকে।

গ্রাকেত্রে অইকা, বৃদ্ধি ও মৃতবাদর এই সকলে কেবল পৃথক্রপে মাতার আদ্ধ করিবে; অম্যত পিতার সহিত মাতার শ্রাদ্ধ করিতে হয়। প্রথম দিন উত্রমানদে স্নান করিবে। এই উত্রমানস পরমপবিত্র। আয়ু ও আরোগ্যবৃদ্ধি, সর্বাপাপ-বিনাশ ও মুক্তির জন্য তথায় স্নান করিবে। পরে, আমি দিব্য আন্তরীক্ষ ও ভৌমস্থ দেবগণের তর্পণ ক্রিতেছি, বলিয়া, দেবতা ও পিত্রাদির সন্তুপ্তি সমাধানপূর্বক আন্ধ করিয়া, পিগুদান করিবে। অনম্ভর দিব্য আন্তরীক্ষ ও ভৌমাদি পিতৃমাত্রাদির তর্পণ করিয়া, পিতা,পিতামহ, প্রপিতামহ, মাতা, পিতামহী, প্রপিতামহী, মাতামহ, প্রমাতামহী, ও বৃদ্ধ প্রমাতামহ ইহাঁদিগকে ও অন্যান্যদিগকে উদ্ধারার্থ এই পিওদান করিতেছি। ওঁ সোম ভৌম, বুধ, বুহস্পতি, শুক্র, শনৈশ্চর, রাক্ত ও কেতুরপী সূর্য্যকে নমকার, এই বলিয়া, পিণ্ড-मान कतिरव । উত্তরমানদে স্নান করিলে, দকল কুলের উদ্ধার হইয়া থাকে।

উলিখিত বিধানে সূর্য্যকে নমস্কার করিয়া, মৌনী হইয়া, দক্ষিণ মানদে সমাগত হইবে এবং আমি পিতৃগণের তৃত্তিবিধানজন্য গয়ায় আসিয়াছি ও দক্ষিণমানদে সান করিতেছি। আমার পিতৃ-গণ সকলেই স্বর্গে গমন করুন, এই বলিয়া তথায় স্নান, প্রান্ধবিধান ও পিওদান করিয়া, সূর্য্যকে প্রণাম পুরঃসর এই প্রকার কহিবে, ওঁ, সকলের ভর্তা ভাসুকে নমস্কার। হে বিভো। আমার কল্যাণবিধান কর এবং মদীয় পিতৃ-লোকের ভূক্তি ও মুক্তি লাধন কর। করেবালা-নল, সোম, মম, অর্থামা এবং অগ্রিষান্তা, বহিষদ ও আজ্ঞাপ এই সকল পিতৃদেবতা; আপনাদের কর্তৃক রক্ষিত হইয়া, মাতৃমাতামহাদি মদীয় মহা-

ভাগ পিতৃপণ সকলে আগমন করুন, আমি ভাঁহা-দের পিগুলান করিব বলিয়া গয়ায় আদিয়াছি ।

মৃগুপৃষ্ঠের উত্তরদিকে কনধল নামে যে ত্রিজুবনবিখ্যাত দেবর্ষিগণপূজিত তীর্থ আছে, দিছা
গণের প্রীতিজনক ও পাপাত্মাগণের ভরক্বর
লোলহান মহানাগগণ দর্বদা ঐ তীর্থ রক্ষা করিতেছে। তথায় স্নান করিলে, ফুর্গলাভ ও ঐহিক
স্থপসমৃদ্ধি ভোগ ইইয়া থাকে।

তথা হইতে মহানদীতে অবস্থিত ফল্প তীর্থে গমন করিবে। এই ফব্রতীর্থ গ্যাশির নামে অভিহিত হইয়া থাকে। এই তীর্থ মুগুপৃষ্ঠ নাগাদি অপেক্ষা উৎকৃষ্ট। উহাতে স্নান করিয়া, গদাধরকে দর্শন করিলে, স্থকৃতকারী মাসুষের কি না পর্যাপ্ত হয় ? পৃথিবীতে সমুদ্রপর্যান্ত যে সকল তীর্থ আছে, তৎসমস্ত দিনের মধ্যে একবার এই তীর্থে সমাগত হইয়া থাকে। তীর্থশ্রেষ্ঠ এই তীর্থে ভক্তি ও শ্রদাসহকারে স্নান করিলে, পিতৃলোকের ব্রহ্মলোকপ্রাপ্তিও আত্মার ভুক্তি মুক্তি সিদ্ধ হয়। তথায় স্থান, আছে ও পিওদান সমাধান করিয়া, এই বলিয়া, দেব পিতামহকে প্রণাম করিবে, কলিতে লোক সকল মাহেশর হইবে, এই কারণে ভগবান গদাধর ও পিতামহ লিঙ্গরূপী হইয়া, এখানে বিরাজ করিতেছেন। সেই মাছ-শ্বরকে নমস্কার। পদাধ্র, বলরাম, কাম, অনি-क्रक, नांबायन, खन्ना, विकू, नृतिः इ, ও वदाहानित्क নমকার। অবস্থার গদাধরতে দর্শন করিয়া কুল-পুত উদ্ধার করিবে।

বিভীয় দিবস ধর্মারণ্যে গমন করিবে। তথার মহাতপা মতক্ষের উৎকৃষ্ট আশ্রামে যে মতক্ষবাশী শ্রতিষ্ঠিত আছে, উহাতে বিধিমতে স্নান করিরা, শ্রাদ্ধ ও পিও দান করিবে এবং স্থানিদ্ধানের প্রধান মতক্ষেশকে প্রণাম করিয়া, এইপ্রকার কহিবে, দেবগণ সকলে প্রমাণ ও লোকপালবর্গ সকলে সাক্ষী হউন, আমি এই মতঙ্গাপ্রমে আসিয়া পিতৃগণের নিক্কৃতি করিলাম।

খনতথ ত্রন্তীর্থ নামক কৃপে যথাবিধানে মান, তর্পণ ও শ্রাদ্ধাদি করিবে। সেই কৃপন্থ যুপের মধ্যে প্রাদ্ধ করিলে, কৃলশত সমৃদ্ধৃত হইয়া থাকে। তত্ত্ত্য মহাবোধ ভরুকে প্রণাম করিলে, ধর্মবান্ ও স্বর্লোকভাক্ হইতে পারা যায়।

তৃতীয় দিবস যত্ত্রত হইয়া, ত্রহ্মাণরে প্রান করিবে। তৎকালে এইপ্রকার কহিতে হইবে যে, আমি ত্রহ্মাস্তরপ প্রাপ্তিকামনায় এই ত্রহ্মার তীর্থে প্রান করিতেছি। পিতৃগণের ত্রহ্মানোক-বিধানজন্য এই ত্রহ্মার্বিগণসেবিত পবিত্র ত্রহ্মার্বের তর্পণ, প্রান্ধ ও পিগুদান এবং বাজপেয়ার্থী হইয়া ত্রহ্মাপ্ত প্রদক্ষিণ করিবে। যে ব্যক্তি একাকী মোনী হইয়া, কুম্ভ ও কুশাগ্র হস্তে তত্ত্বত্য আন্তন্ত্র মূলে সলিল দান করে, আন্তন্ত্র্য সিক্ত ও তাহার পিতৃগও তৃপ্ত, হইয়া থাকেন। এইরূপে একমাত্রে ক্রিয়ায় বিবিধ ফল লাভ প্রাসন্ধ আছে। ত্রহ্মাকে তথায় নমস্কার করিলে,শতকুল উদ্ধার প্রাপ্ত হয়।

চতুর্থ দিবদে ফল্কতীর্থে সুান করিয়া, দেবাদি-তর্পণ সমাধানান্তে গয়াশিরে সপিও প্রান্ধ করিবে। গয়াক্ষেত্র পঞ্চক্রোশ এবং গয়াশির একক্রোশ। ভগায় পিঞ্চান করিলে কুল্গভ উদ্ধার পার।

ধীমান্ মহাদেব মৃগুপৃষ্ঠে পদ নাজ করিয়া ছিলেন। মৃগুপৃঠিক শির নাক্ষাৎ গ্রাশির বলিয়া অভিহিত হয়। তথায় অয়ত প্রবাহিত হই-তেছে। পিতৃগণের উদ্দেশে দান করিলে, ভাহা অক্সয় হইয়া থাকে। দশাখনেধে সান, দেবদেব পিতামহের দর্শন
ও রুত্রপাদস্পর্শ করিলে,পুনরায় দংশারে জন্মগ্রহণ
করিতে হয় না। গয়াশিরে শমীপত্রপ্রমাণে পিত
দান করিলে নরকন্থ পিতৃপুরুষেরা স্থাগমন ও
ক্রিন্থেরা মোক লাভ করেন।

রুদ্রপদে পায়স, পিউক, শক্তু, চরু, ততুল, বা তিলমিশ্রিত গোধ্য দারা পিওদান করিবে।

ঐরপে পিও দিলে, শত পুরুষের উকার হয়।
বিষ্ণুপদে শ্রাদ্ধ ও পিওদান করিলে, পিতাদির গুণ
মুক্ত, শতকুল সমৃদ্ধৃত ও আত্মার মোচন হয়।
ত্রহাপদে শ্রাদ্ধ করিলে পিত্লোকের ত্রহ্মলোক
প্রাপ্তি হইয়া থাকে। এইরপ দক্ষিণাগ্রিপদে ও
আহবাগ্রিপদে এবং গার্হপত্যাদি পদে শ্রাদ্ধ
করিলে, যজ্ঞফললাভ হয়। আবস্থা, চন্দ্র, সূর্যা,
গণ, অগন্ত্য ও কার্তিকেয় ইহঁদদের পদে শ্রাদ্ধ
করিলে বংশের উদ্ধার হইয়া থাকে। আদিত্যরথকে প্রণাম করিয়া পরে কর্ণাদিত্যকে নমক্ষার্দ্ধ
করিবে। অনন্তর কনকেন্দ্রপদে প্রণাম করিয়া,
গয়াকেদারকে নমস্বার করিলে সকল পাল বিন্দী
ও পিতৃগণের প্রহ্মলোকলাভ হয়।

রাজপুত্র বিশালের পুত্র হয় নাই। তিনিও
গয়াশিরে পিও দিয়া পুত্র প্রাপ্ত হয়েন। পূর্বে বিশালানগরে প্রবলপরাক্রান্ত এক রাজা ছিলেন, ভাঁহার পুত্র বিশাল। তিনি অনেক তপজা, দান, ধ্যান ও অনেক ত্রতনিয়মাদির অফুর্চান করেন। তথাপি তাঁহার পুত্র হইল না। পুত্রমুখদর্শনিইকে বন্ধিত হওয়াতে, সংসারের কোন ইবই ভাঁহাকে স্থলানে সমর্থ হইল না। ভজ্জভ সমন্ত রাজ্য-সম্পদ বিষম বিপদ্ধ ভাঁহার প্রতীতি হইতে লাগিল এবং সমন্ত সংসার জীর্ণ অরণ্যবং বোধ করিয়া, তিনি দিন দিন কীল ও মলিন হইতে লাগিলেন। আনোদে আমোদ নাই, স্থাথ স্থ নাই এবং সন্তোষেও আর সন্তোষ নাই,এই প্রকার অবস্থায় কিয়ৎকাল অতিবাহিত হইলে, তিনি একদা নিতান্ত অসহমান হইয়া, সভাস্থ বিজ্ঞাতি-বর্গকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, কিরূপ উপায়ে আমার পুত্রাদি লাভ হইতে পারে বলুন।

ভাক্ষণেরা কহিলেন,রাজকুমার ! আপনি পরম-পবিতর গণাকেতে গমন করিয়া, যথাবিধানে পিগু-প্রদান করিলে, আপনার সকল মনোরথ সিদ্ধ হইবে, তাহাতে দলেহমাত্র নাই। তখন রাজকুমার বিশাল গয়াক্ষেত্রে গমন করিয়া, যথাবিধি পিও দান করিলেন। পিওপ্রদান সমাও হইলে. আকাশে দিত ও রক্তবর্ণ পুরুষগণ তাঁহার দৃষ্টি-বিষয়ে নিপতিত হইল। তিনি আকাশবিহারী তাদৃশ পুরুষদিগকে জিজ্ঞাদা করিলেন, আপনারা কে ? তথন দেই দকল পুরুষের মধ্যে সিতবর্ণ একজন কহিলেন, বিশাল। আমি তোমার জনক। পুণ্যবলে ইন্দ্রলোকে গখন করিয়াছি। আর এই রক্তবর্ণ পুরুষ আমার পিতা এবং কৃষ্ণবর্ণ পিতা-মহ। আমরা সকলেই নরকে পতিত ছিলাম। ভূমি আমাদিগকে উদ্ধার করিলে। একণে আমরা পিওলাভবলে একালোকে গমন করিতেছি। তুমি হুখে থাক ও চিরজীবী হও এবং এইরূপে পিতৃ-গণের ভৃপ্তিবিধান কর। লোকে যেন তোমার স্থায় সংপুজের পিতা হয় ৷ এই বলিয়া, তাহারা সকলে ত্রকলোকে গমন করিল। এদিকে বিশালাধিপ বিশালও পিগুদানপ্রভাবে অভিমত পুত্রাদি প্রাপ্ত হইয়া, যথাবিধানে রাজ্য করিয়া, চর্মে ভগবান নারায়ণে লীন হইলেন। ফলতঃ, যে কোন ব্যক্তি আন্তরিকশ্রদ্ধাসহকারে গয়ায় গমন ও পিওদান করে, তাহারই পিতৃলোকের উদ্ধার হয়।

পূর্বে কোন প্রেতরাক্ষ প্রেতগণের সহিত
নিতান্ত আর্ত ইয়া, আপনার মৃক্তির জন্ম কোন
বিণিককে কহিয়াছিল, ভূমি আমার ধন গ্রহণ করিয়া,
গয়ায় গমন ও পিও প্রদান কর। এই বলিয়া, সে
বিণিককে আপনার স্থিত ধনকুন্ত প্রদান করিল।
বিণক্ সেই ধন গ্রহণপূর্বক গয়ায় গিয়া, তাহার
উদ্দেশে পিওপ্রদান করিল। পিওদানমাত্র প্রেতরাজ তৎক্ষণাৎ প্রেতগণের সহিত মৃক্ত ও বৈকুঠপূরে নীত হইল।

গয়াশিরে পিগুদান করিলে, আপনার ও স্বকীয় পিতৃগণের উদ্ধার হ'ইয়া থাকে। এই বলিয়া পিগুদান করিতে হইবে যে. আমার পিতৃবংশে, অথবা মাতৃবংশে কিংবা শুরু খণ্ডর ও বন্ধুবংশে যাঁহারা মরিয়াছেন, অথবা আমার বংশে যাঁহাদের পিণ্ডলোপ হইয়াছে, যাঁহারা স্ত্রীপুত্র-বিৰৰ্জ্জিত হইয়াছেন, অথবা যাঁহাদের জিয়ালোপ হইয়াছে, অথবা আমার বংশে ঘাঁহারা জন্মাবধি অন্ধ, পসু,বিরূপ,আমগর্ড কিংবা জ্ঞাত বা অজ্ঞাত, আমি তাঁহাদের সকলেরই উদ্দেশে পিণ্ডদান করি-লাম: উহা অক্য হইয়া তাঁহাদের অধিগত হউক। আমার পিতৃগণের মধ্যে যে কেহ প্রেত হইয়া আছেন, আমার এই পিগুদান ভারা তাঁধারা मकरनारे निवस्त इशि चनुष्ठ कक्रम। कन्छः, কুলতারকগণ সকলেরই উদ্দেশে যথাবিধি পিগু-প্রদান করিবে। অধিক কি, অক্ষয় লোকলাভের ইচ্ছা থাকিলে, আপনার উদ্দেশেও পিওদান করা কর্ত্তব্য ।

বৃদ্ধিমান ব্যক্তি পঞ্চম দিবলে পরমপাবন গয়া-প্রকালন তীর্থে স্নান করিবে ৷ তৎকালে মস্ত্রো-চ্চারণপূর্বক এই কথা বলিতে হইবে, হে জনা-দিন ! আমি সংসাররোগশান্তির জন্ম এই স্থানে স্নান করিতেছি। তোমার প্রসাদে আমার খেন
সকল রোগ ও সকল শোক শান্তি হয়; সকল
তাপ ও সকল সন্তাপ বিনষ্ট হয়; সকল বিষাদ
ও সকল অবসাদ নিরাক্ত হয়; সকল আধি ও
সকল ব্যাধি দুর হয় এবং সকল স্থপ ও সকল
সন্তোষ প্রাপ্তি হয়। এই পাপতাপপরিপূর্ণ
রোগে শোকে অবসম, স্থবিষম সঙ্কটাপন্ন, অসার
সংসারে বারংবার গতায়াত করিয়া, আমি একান্ত
প্রান্ত ও নিতান্ত বিজ্ঞান্ত হইয়া পড়িয়াছি। সেই
জন্ম তোমাকে স্মরণ করিয়া, তোমারই পরিপালিত এই তীর্থে স্থান করিতেছি, আমাকে উদ্ধার
ও নিজ পরিজন বলিয়া গ্রহণ কর। আমি আর
পাপসংসারে আসিতে কোন মতেই সম্মত নহি।

অনন্তর অক্যাবটকে নমসার করিবে। এই
অক্ষাবট অক্ষাস্থা প্রদান করে। ইহার তলদেশ
অশেষক্রেশবিনাশন। উহাতে প্রাদ্ধ করিয়া, প্রাক্ষান
দিগকে ভাজন করাইবে। তাহাতে, পিতৃগণের
অক্ষা স্থাভাগ ও সকলপাপবিমোচন হইবে,
এবিষয়ে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। এই অক্ষাবট
সাক্ষাৎ স্থাবের সোপান। ইহার তলদেশে একমাত্র প্রান্ধভাজন করাইলেও,কোটি প্রাক্ষাণভোজন
করান হয়, বছ প্রাক্ষাণভোজনের কথা আর কি
বলিব ! এই স্থানে পিতৃগণের উদ্দেশে যাহা প্রদান
করা যারা, ভাহাই অক্ষা হইয়া থাকে।

যে ব্যক্তি গ্রায় অগ্নদান করে, পিভূগণ ভাহা ভারা প্রকৃত পুত্রবান্ হইয়া থাকেন। অক্ষয়বট ও বটেশ্বর, উভয়কে প্রণাম করিয়া, পরে প্রপিতা-মহের পূজা করিবে। অক্ষয়বটের অর্চনা করিলে, অক্ষয় লোকলাভ ও শতক্লসমূদ্ধার হয়। ক্রম বা অক্রম, যে কোন রূপে হউক, গ্যাযাত্রা মহাফল প্রস্ব করে।

চতুশ্চমারিংশ অধ্যায় 🖟

অমি কহিলেন, প্রাতঃকালে গায়ত্রী উচ্চারণ পূর্বক মহানদীতে লান করিয়া, সন্ধ্যাবন্দনা করিবে। তৎকালে গায়তীদেবীর সম্মুখে আইছ ও পিওদান করিলে, তাহা অক্ষয় হইয়া থাকে। धनस्त्र द्वा माविखीत मचूर्य मस्तावस्त्रा कतिया, **उनी** श्राम शिक्षमान कतित्व । श्राप्त अभुखाशतम পিগুপ্রদান করিলে, যোনিছারে প্রবেশপূর্বক নিৰ্গত হইয়া, পুনরায় ভাহাতে প্রবেশ করিছে হয় না: অনায়াদেই সংসারসাগর পার হুইয়া शांक ! अनुसुत काकिनाम विनिधनामभूतः नत কার্ত্তিকেয়কে নমস্কার করিবে। পরে স্বর্গমার, দোমকুণ্ড, বায়ুতীর্থ, আকাশগঙ্গা ও কপিলা, এই সকল তীর্থে পিগু দান করিবে। অনম্ভব্ন কপি-লেশ্বর শিবকে প্রণাম করিয়া, রুক্তিকুণ্ডে পিও नित्व। (कार्षिकीर्थ (कार्षिश्वतक श्राम क्रिया, चर्यापणम् गर्नात्नान् कान्यतम् ७ त्राधानाः अह সকল তীর্থে পিওদানানন্তর, বৈতরণীতে গোপ্রণাম कतिता, धकरिश्म क्ल ममूकृष्ठ इटेंग्ना बाटक। अन-छत टक्नोकशान ब्याद्ध कतिया, शिक्षमान कतिरव । পরে তৃতীয় বিশালা, নিশ্চিরা, ঋণমোক ও পাপ-মোকতীর্থে পিগুপ্রদানপুরঃসর ভর্মকুণ্ডে ভন্ম দারা স্নান করিলে, সকল পাপের নিছতি হইয়া থাকে।

তথার ভগবান্ জনার্দনকে এই বলিয়া প্রণাম ও পূজা করিবে, হে সর্বশক্তিমন্। তোমার প্রসাদে ছর্লভ লাভ সংঘটিত, পাপভাপ পরিহৃত, রোগশোক বিদ্রিত, স্থসম্পদ সমাগত, ভুক্তি-মৃক্তি স্বিহিত এবং স্বর্গ গুল্পপ্রপ্র সংসাধিত হইয়া থাকে। তুমি সংসারের আদি, এইজক্ত আদিদেব নামে বিখ্যাত। তুমি অপার করুণাদাগর; এইজন্ম মনুষ্টোর উদ্ধারজন্ম নিজ অংশ প্রদান কর। তাহাতে রাম কৃষ্ণ ইত্যাদি বিবিধ অ্ব-তার প্রাহুত হইয়া, দারুণ সঙ্কটসময়ে সংসা-রের মহোপকার সাধিত হইয়া থাকে। তোমার মহিমা দেবগণের অবিদিত; ক্ষুদ্র আমি কিরুপে বিদিত হইব। এই তেজোময় সূর্য্য, শুনিয়াছি, তোমারই অপার তেজঃপুঞ্জের অণুমাত্ত। এই চক্ত. শুনিয়াছি, ভোমার পাদজ্যোতির একমাত্র রশ্মি। আহা। উহা কি শীতল ও অ্থস্পার্শ উহার উদয়ে অক্ষাণ্ডের যেন নবজীবন সঞ্জিত হুইয়া থাকে ৷ নাথ ! আমি বহু যত্নে এই পুণ ক্ষেত্ৰ গ্যায় আদিয়া, তোমার হন্তে এই পিও প্রদান করিলাম। আমি যখন পরলোকে গমন করিব, তথন ইহা যেন তোমার প্রসাদে অক্ষয় হইয়া, আমার দকাশে উপস্থিত হয়। ফলতঃ, গয়াকেত্রে ভগবান জনার্দন সাকাৎ পিতৃরূপে বিরাজমান। তাঁহারই পবিত্র সান্ধিগ্রহোগে গ্যার মাহাত্ম্য মর্বতা বিখ্যাত ও মর্বলোক পরিগৃহীত হুই-য়াছে। তাঁহাকে দর্শন করিলেই ঋণত্রয় মোচন হইয়া থাকে।

অনন্তর মাকিণ্ডেয়েশর ও গৃথেশর ইইাদের উভয়কে যথাক্রমে প্রণাম করিয়া,মুলক্ষেত্র মহেশধারায় পিগুপ্রদান করিবে। পরে গৃপ্রকৃট, গৃপ্রবট,
ধৌতপাদ, পুক্ষরিণী,কর্দমাল ও রামতীর্থে পিগুদান
করিয়া, প্রভাসেশ্বরকে নমস্কার করিবে। অনন্তর
প্রতশিলায় এই বলিয়া পিগুদান করিবে,আমার
যে দিব্য, আন্তরীক্ষ ও ভূমিন্তি পিতৃগণ ও বাক্ষবাদি প্রেতাদিরূপ হইয়া আছেন, আমার প্রদত্ত
পিগু ঘারা তাঁহারা সকলেই মুক্ত হউন। গয়াশির,
প্রভাস ও প্রেতকৃগু এই তিন স্থানে প্রেতশিলা

অতিশয় পবিত্রতা বিধান করে। তথার পিওদান করিলে, বংশের উদ্ধার হয়।

অনস্তর বশিষ্ঠেখরকে নমস্কার করিয়া, ভাঁহার অত্যে পিগু দিবে। পরে গ্যানাভি, ত্যুলা, মহা-কোপী, গদাধরাতা, মৃগুপৃষ্ঠ ও দেবীসন্নিৰি এই সকল স্থানে পিণ্ড দান করিবে। প্রথমে ক্লেজ-পালাদি সংযুক্ত মুগুপৃষ্ঠে প্রণাম করিবে। মুগু-পৃষ্ঠের পূজা করিলে, ভয় দূর ও বিষরোগাদি বিনষ্ট হয়। ব্রহ্মাকে নমস্কার করিলে, বংশের ব্রদ্রনোক প্রাপ্তি হইয়া থাকে। স্বভদ্রা, বলভদ্র ও পুরুষোত্তমকে পূজা করিলে, সর্ব্যকামনা সিদ্ধি, বংশের উদ্ধার ও স্বর্গলাভ হয়। হুষীকেশকে নম-স্বার করিয়া, তদর্থে পিগুদান করিবে। মাধবকে পূজা করিলে, বৈমানিক পদপ্রাপ্তি হইয়া থাকে। भश्तक्यी, शोती, भक्षना ও मत्रवंडी देशांत्र ভক্তি ও শ্রদ্ধাসহকারে পূজা করিলে, পিভূগণের উদ্ধার ও এহিক সমস্ত হথ ভোগ করিয়া পরি-ণামে স্বৰ্গলোকে গমন করা যায়। ছাদশ আদিত্য, অগ্নি, রেবস্ত, ইন্দ্র,ইহাঁদের দবিশেষ পূজা করিলে রোগাদি মুক্ত ও স্বর্গলাভ হইয়া থাকে। কপদী. विनायक ও कार्जिटकरयन यथाविधि शृङ्गा कतिरल, নিৰ্বিদ্ন ও দিলিদ**ম্পন হ**ওয়া যায়। সোমনাথ, कारमध्य, त्रमात, व्यिभिडांभर, निरक्ष्यत, ऋत्य খর, রামেশ্র ও ত্রহ্মাকেশ্র এই প্রমগুছ অন্ট-লিকের পূজা করিলে, সর্ব্দকামনা সিদ্ধি ও সকল ভোগসম্পন্ন হইয়া থাকে।

শ্রীকামী ব্যক্তি নারায়ণ, নারসিংহ, বরাহ এবং অশেষ অভীউপ্রদ ব্রহ্ম-বিষ্ণু মহেশরাভিধ ত্রিপুরস্ব, সীতা, গরুড় ও বামন এই সকলের বিহিত বিধানে পূজা করিলে, দর্বকামনা দিদ্ধি পিতৃলোকের ব্রহ্মলোক প্রাপ্তি হইয়া থাকে। দেবগণ সহিত আদি গদাধরের সবিশেষ শ্রেদাদি-সহকারে পূজা করিলে, ঋণত্রেয় মৃক্তিও সকল বংশের উদ্ধার হইয়া থাকে। ফলতঃ, গয়ায় এমন স্থান নাই, যাহাতে তীর্থ নাই, এমন তীর্থ নাই, যাহাতে শ্রাদ্ধাদি করিলে, তাহার স্বক্ষয় কল লাভ হয় না। স্থাবার, এমন ব্যক্তি নাই, যাহার নামে পিও দিলে, তাহার শাশ্বত ত্রাহ্ম প্রাপ্তি সংঘটিত না হয়।

ফল্গীশর, ফল্লচণ্ডী ও অঙ্গারকেশ্বর, ইহাদিগকে প্রণাম করিয়া, মতঙ্গপদে ও ভরতাশ্রমে
প্রাদ্ধ করিবে। হংসতীর্থ, কোটিতীর্থ, অগ্নিধারা
ও মধুপ্রবং এই সকল স্থানে পিগুদানানন্তর, রুদ্রেশ্বর, কিলকিলেশ্বর ও বৃদ্ধিবিনায়কের পূজা
করিবে। অনন্তর ধেমুকারণ্যে পিগু দিয়া, ধেমুর
পদে প্রণাম করিবে। সরস্বতীতে পিগু দান
করিলে, সমস্ত পিতৃলোকের উদ্ধার হয়। সায়াক্রে
সন্ধ্যাবন্দনা করিয়া, দেবী সরস্বতীকে প্রণাম
করিবে। বেদবেদাঙ্গপারগ ব্রাহ্মণ ব্রিস্ক্যা করিবেন। গদা প্রদক্ষিণ করিয়া, গ্য়াবিপ্রদিগকে যথাবিধি পূজা করত, অন্ধানাদির অনুষ্ঠান করিলে,
তৎসমন্তই অক্ষয় হইয়া থাকে।

তথায় আদিদেব গদাধরকে ন্তব করিয়া, এই বিষদংসারের প্রত্যেক অণুতে অনুপ্রবিষ্ট হইয়া প্রকার তাঁহার নিকট প্রার্থনা করিবে, আমি ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক্ষের জন্ম গদাধরকে প্রণাম করি। তিনি নিত্য গয়ায় অধিষ্ঠান, পিতৃগণের গতিবিধান ও যোগদিদ্ধি সম্প্রদান করেন। তাঁহার প্রকাশমান ও চেন্টাশীল। তাঁহাকে সর্বান্তঃকরণে করেমার নাই, মন নাই, বৃদ্ধি নাই, প্রাণ নাই ও অহস্কার নাই। তিনি নিত্য ওদ্ধ সত্যবন্ধপ লার প্রিয়তর নাই; মনের আর প্রীতিকর নাই বন্ধান করেন। করেমার করি। তিনি আনক্ষার আর অভীইতর নাই। তিনি সাক্ষাৎ অমৃত অভয়বরূপ; তাঁহাকে নমক্ষার করি। তাঁহার বন্দনা করেন এবং দেব ও দানবগণ তাঁহার বন্দনা করেন এবং দেব ও দেবীগণ নিত্য হে দেব গদাধর। আমি পিতৃকার্য্যের জন্ম স্থাীয়

তাঁহার সমভিব্যাহারে বিরাজ করেন। ভাঁহাকে সর্ববদা প্রণাম করি। তিনি কলিকল্মষ বিনাশ করেন, কালভয় নিবারণ করেন, বনমালা পরিধান करतन, मकल लांक भामन करतन, भकल रमांघ প্রশমন করেন, কালেরও কাল সম্পাদন করেন, ভয়েরও ভয় বিধান করেন, মৃত্যুরও মৃত্যু প্রেরণ করেন, যোগক্ষেম সম্প্রদান করেন, অভয় ও অমৃত প্রণয়ণ করেন এবং পাপ তাপ নিবারণ করেন। তাঁহাকে নিত্য প্রণাম করি। তিনি সর্বদা আছেন, ছিলেন ও থাকিবেন। তিনি আলোক ও পুলকম্বরূপ। ভাঁহার হ্রাস নাই, ক্ষম নাই। তাঁহাকে প্রণাম করি। তিনি **আমার অন্তরে** বাহিরে বিরাজমান, দূরে নিকটে বিদ্যমান এবং সম্মুখে, পশ্চাতে, পাখে ও উপরে বর্ত্তমান। তিনি দর্কানান, দর্কারপ ও দর্কার্ক। ভাঁছাকে প্রণাম করি। তিনি ব্যক্ত, অব্যক্ত, বিভক্ত, অবিভক্ত ইত্যাদি দর্ব্যস্করপ। তিনি আপনি আপনাতে অধিষ্ঠিত, এবং সকলের সার ও স্থির-তর। **ভাঁ**হার নামমাজে ভয়ন্তর পাতকসকলও দুরে প্লায়ন করে। তাঁহাকে বারংবার নমকার করি। তিনি কার্য্য, কারণ ও করণ ত্রিবিধন্মরূপে বিশ্বদংসারের প্রত্যেক অণুতে অমুপ্রবিষ্ট হইয়া সকলের স্থিতিবিধান ও প্রাণদংবিধান করিতে-ছেন। তিনি পুণ্যস্বরূপ, পরম্পাবন প্রমাত্মা। এই অনন্তাকাটি ব্রহ্মাণ্ড তাঁহার অধিষ্ঠান স্তায় প্রকাশমান ও চেন্টাশীল। তাঁহাকে সর্বান্তঃকরণে ও সর্বতোভাবে প্রণাম করি। তিনি ভিন্ন প্রাণের আর প্রিয়তর নাই: মনের আর প্রীতিকর নাই ও আজার আর অভীষ্টতর নাই া তিনি সাকাৎ অমৃত অভয়স্বরূপ: তাঁহাকে নমকার

প্রিত্র ক্ষেত্র গয়ায় আগমন করিয়াছি। এক্ষণে তুমি আমার সাক্ষী হও, আমি পিতৃঞ্চ শোধ করিয়া, তোমার প্রদাদে অধাণী হইলাম। হে দেব! এই আমি সর্বান্তঃকরণে তোমারে প্রণাম করিতেছি। তুমি প্রসন্ন হইয়া, আমারে পিতৃ-গণের সহিত সদ্গতি প্রদান কর। আর যেন আমার বংশাবলীতে কাহাকেও পুনংপুনঃ যাতা-য়াতক্ষী ভোগ করিতে না হয়। প্রক্ষা ও ঈশান প্রস্তুতি সমূদায় দেবগণও সাকী হউন. গয়ায় আসিয়া, পিতৃগণের নিষ্কৃতি বিধান করি-লাম। লক্ষ্মী ও মাহেশ্বরীপ্রমুখ দেশীগণও সকলে দাকী হউন, আমি যথাবিধি পিশুবিধি সমাধা করিয়া, পিতৃগণের ঋণ পরিশোধ করিলাম। আদিত্য ও নক্ষত্র প্রভৃতিও সকলে সাক্ষী থাকুন, আমি গয়ায় আদিয়া, পিতৃগণের উদ্ধার করিলাম।

ভগবন্দেবদেব জনাদিন! তোমার প্রসাদে আমার বংশাবলীতে কেছ যেন কোন কালে পতিত না থাকে। সকলেরই যেন উদ্ধার ও সদ্গতি লাভ হয়। যাহারা আমার প্রতিবেশী, যাহারা আমার মিত্রপক্ষ, অথবা যাহারা আমার বিপক্ষ, হে পতিতপাবনপরমপুরুষ গদাধর! ভাহাদেরও যেন উদ্ধার হয়। ফলতঃ, ভোমার প্রসাদে আমার প্রদত্ত এই পিশু যেন অক্ষয় হয়, পিতৃগণ যেন সর্বদা তৃপ্ত থাকেন।

> ইত্যাপ্রেমে মছাপুরাবে গ্রামাহাস্থানানক চতু:কভারিংশ অধ্যায় নমাপ্ত।

পঞ্চত্বারিংশ অধ্যায়।

অত্রি কহিলেন, পূর্ব্বে ঈশ্বর কার্ত্তিকেয়কে কহিয়াছিলেন, ষন্মুথ! সংস্কার দীক্ষা বিধি

কীর্ত্তন করিব, শুবণ কর। বহ্নিস্থ মহেশ্বরের মন্তক্ষ হদয়ে আবাহন করিবে। অনন্তর পরস্পার সংশ্লিষ্ট আরি মহেশ্বরকে বিহিতবিধানে পূজা ও হৃদয়াত্মনোগে সন্তুপ্ত করিয়া, তাঁহাদের সামিধ্যলাভের জন্য পুনরায় ঐ হৃদয়াত্মযোগেই আহুতিপঞ্চক প্রদান করিবে, পরে অস্ত্রলিপ্ত কুস্থমসহায়ে হৃদয়ে সেই শিশুর তাড়না করিবে এবং তথায় বিশিষ্ট-রূপ ফুর্তিবিশিষ্ট তারকের ন্যায় আকারসম্পন্ন চৈতন্য ভাবনা করিবে। অনন্তর তথায় রেচক্রে ভাবনা করিবে। অনন্তর তথায় রেচক্রেরা ভাবা আকর্ষণপূর্বক, পূরক দ্বায়া হৃদয়ে ন্যায় তাহা আকর্ষণপূর্বক, পূরক দ্বায়া হৃদয়ে ন্যায় করিবে। পরে হৃৎসংপৃটিত মন্ত্রসহক্ষত রেচক দ্বায়া উদ্ভবসংক্তিত মৃদ্রাহোগে বাগীশ্বর-যোনিতে উহা বিনিক্ষিপ্ত করিবে।

"ভঁ হাং হাং হাং আজানে নমঃ।"

এই বলিয়া, জাজ্বামান নিধ্ম বহিংতে ইফসিদ্ধির নিমিত্ত হোম করিবে। অপ্রবৃদ্ধ সধ্ম
অগ্নিতে হোম করিলে, সিদ্ধ হয় না। হোম
সময়ে সিদ্ধ,প্রদক্ষিণাবর্ত্ত ও স্থান্ধ অনলই প্রশস্ত।
এতত্তিন্ন, বিপরীত ক্ষুলিঙ্গসম্পন্ধ ভূমিম্পানী
বহিত্ত প্রশস্ত হইয়া থাকে।

ইত্যাদি চিহ্ন দারা পাপভক্ষণ হোমদহায়ে আহুতি দানপুরঃদর শিষ্যের কল্মষরাশি দগ্ধ করিবে, যথোক্তবিধানে হোমদমাহিত হইলে, গুরু, শিব ও অগ্নির সমুচিত পূজা দমাধা করিয়া, শিষ্যকে এই বলিয়া, আত্মপ্রণতি ও নিয়ম দকল প্রবণ করাইবেন।

কখন দেবনিন্দা বা শাস্ত্র নিন্দা করিবে না।
নির্দ্যাল্যাদি বা পূজ্য ব্যক্তির ছায়া লজ্ঞন করিবে
না। যাবজ্জীবন শিব, অগ্লিও গুরুদেবের পূজা
করিবে. দেবতাজ্ঞানে পিতামাতার দেবা করিবে.

আত্মার অর্দ্ধজ্ঞানে স্ত্রীর ভরণপোষণ স্থায়মত বিধান করিবে, নিজম্বরূপ বোধে পুত্তের যথাবিধি লালনপালন করিবে। বালক, মূর্য, র্দ্ধা স্ত্রী,ভোগ-ভুক্ ও পীড়িতদিগকে যথাশক্তি অর্থ দান করিবে, কাহারও বিজোহে প্রয়ন্ত হইবে না, রাগ রোয দর্ব্বদা গোপন করিবে; লোভ মোহ ত্যাগ করিয়া, সৎপথে পদচালনা করিবে, যাহাতে লোকের অনিষ্ট হয়, এরূপ বিষয়ে কদাচ প্রয়ন্ত হইবে না, আত্মার অব্যাঘাতে পরের উপকার করিবে।

ইত্যায়েরে মহাপুরাণে সংস্কারদীকাকথন নামক পঞ্চতারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত।

ষট্চত্বারিংশ অধ্যার।

ভগবান কহিলেন, গুরু ঐশানীদিকে কুণ্ড সমুৎপাদন,বিষ্ণুর উদেশে অগ্নি সমুদ্রাবন ও গায়ত্তী জপদহকারে অফীশত হোম দমাধানাতে সম্পাত-বিধি অনুসারে ঘটনকল প্রোক্ষণ এবং মূর্ত্তিপাল শিল্পি ব্রাহ্মণগণ সমভিব্যাহারে কারুশালায় গমন করিবেন। তথায় ভূর্য্যধ্বনিপুরঃদর বিষ্ণুরে, শিপি-বিক ইত্যাদি মন্ত্রপাঠান্তে দর্ঘপ দহিত উর্ণাসূত্রে पिकिंग इस्ड कोकुक वस्त्रम कतिर्यम । दिनिरकत्र হস্তে পট্রস্ত্রের কৌতুক বান্ধিয়া দিবেন। পরে মণ্ডপমধ্যে বস্ত্রমণ্ডিত প্রতিমান্থাপনানন্তর তাহার পুজা ও স্তব করিয়া, তাঁহাকে এইপ্রকার নিবেদন করিতে হইবে, হে স্থরেশানি ! স্বয়ং বিশ্বকর্মা ভোষাকে নির্মাণ করিয়াছেন, ভোষাকে নমন্ধার। তুমি অনন্তকোটি ব্রহ্মাণ্ড প্রদাব করিয়া, ধারণ করিয়াছ এবং সর্ব্বদা পালন করিতেছ, তোমাকে বারংবার নমস্কার করি। হে ঈশ্বরি! আমি তোমাতে দেবদেব জগদ্তারু অনাময় নারায়ণের পূজা করিতেছি; তুমি শিল্লিদোষবিবর্ণিজত ও দর্বদা ঋদ্মিযুক্ত হও।

ইত্যাদি বিজ্ঞাপনানন্তর প্রতিযাকে স্নানমগুপে লইয়া যাইবে। তৎকালে শিল্পিকে দ্রব্য দান দারা দক্ষট ও গুরুকে গোপ্রদান করাইবে। অনন্তর চিত্রংদেবেতি মূল ছারা প্রতিমার নয়ন উন্মালিত ও অগ্নির্জ্যোতিতি মস্ত্র দারা, দৃষ্টিদান করিবে। পরে শেতপুষ্প, য়ত, সিদ্ধার্থ, দূর্ববা ও কুশাগ্র এই সকল প্রতিমার মন্তকে প্রদান করিবে। তৎপরে গুরু, মধুবাতেতি মন্ত্রে প্রতি-মার নেত্র অভ্যন্তন ও হিরণ্যগর্ভ মন্ত্রে ইমংমেডি কীর্ত্তন করিবেন। ভদনন্তর মুক্তবতী পাঠ করিয়া পশ্চাৎ মৃত হারা অভ্যপ্তন ও অত্যেদেবেতি মজে মধুর পিষ্ট দারা উদ্বর্তন করিয়া, তেগে ভি মন্ত্র প্রতিমা কালন পাঠসহকারে উঞ্চ সলিলে করিবে। পরে ক্রপদাদিবেতি মন্ত্রে অমুলিপ্ত ও আপোহিফেতি মলে অভিধিক্ত করিবে। অনস্তর হিরণ্যেতি বলিয়া পঞ্মতিকাদারা ইমংমেতি বলিয়া, সিকতাসলিল দারা তৰিকোঃ ইত্যাদি বলিয়া বল্মীকোদক কলস ছারা, ওষধিতি বলিয়া ওয়ধিসলিল দ্বারা এবং যজায়জ্ঞেতি বলিয়া পঞ্-গব্য দারা প্রমেখরকে স্নান করাইবে 1•

অনস্তর এই বলিয়া,দেবেশের আহ্বান করিবে, হে লোকাসুগ্রহকারক ভগবান বিষ্ণু! এই স্থানে অধিষ্ঠান করিয়া, এই যজ্ঞভাগ গ্রহণ কর। হে বাহুদেব! তোনাকে নমস্কার। এই প্রকার আহ্বানাস্তে কোছুক মোচন করিয়া, মুঞামি ছেতি সৃক্তিপাঠপূর্বক শিষ্যেরও কোছুক মোচন করিবে। পরে হিরথায় মন্ত্রে পাদ্য, অভোদেবেতি মন্ত্রে অর্য্য, মধুবাতা মন্ত্রে মধুপর্ক, মিয়গৃহ্লামি মত্রে আচমন, অক্ষন্মীমদন্তেতি মত্ত্রে দুর্বাক্ষত, গদ্ধবতীতি মত্ত্রে গদ্ধ, উন্নয়ামীতি মত্ত্রে মাল্য, ইদং বিষ্ণুঃ মত্ত্রে পবিত্রে, রহম্পতে মত্ত্রে বস্ত্রযুগ্ম, বেদাহমিতি মত্ত্রে উত্রীয়, ধ্রদীতি মত্ত্রে ধুপ, বিজ্ঞাট্ সৃক্তি মত্ত্রে অঞ্জন, মুঞ্জতীতি মত্ত্রে তিলক দীর্ঘায়ুন্টেতি মত্ত্রে মাল্য, ইক্ষছত্ত্রেতি মত্ত্রে ছত্র, বিরুদ্ধতঃ মত্ত্রে আদর্শ, রথস্তরসূক্তে ভ্ষা, বিকর্ণ সৃক্তে চামর, বায়ুদৈবত্য সূক্তে ব্যজন এবং মুঞ্জামি স্থেতী সূক্তে পুষ্পা প্রদান করিয়া, পুরুষসূক্ত অনুসারে ভগবানের স্তব করিবে।

অনন্তর দেবের উথানসময়ে সৌপর্ণসূক্ত উচ্চারণ করিবে এবং শাকুলস্ক্তে তাঁহাকে সমুখাপিত
করিয়া, শয়ামগুপে লইয়া যাইবে। তথায় লইয়া
যাইয়া, মৃগরাজ, রুষ, নাগ, ব্যজন, কলস, বৈজয়ন্তী,
ভেড়া ও দীপ এই অফুমঙ্গল অশ্বস্ক্ত পাঠ পুরংসর
প্রদর্শন করিবে। অনন্তর ত্রিপাৎ ইত্যাদি মস্তে
উথা, পিধান, পাত্র, অম্বিকা, দব্বী, মুষল, উল্থল,
শিলা, সমার্জনী, ভোজন ভাগু সমূহ এবং গৃহোপকরণ সমস্ত প্রদান করিয়া, শিরোদেশে নিদ্রাথ্য
ঘট,বস্তা,রত্ব ও খণ্ডখাদ্যে পূর্ণকরত স্থাপন করিবে।
ইত্যাদি অমুষ্ঠানকেই স্থাপন বিধি বলো।

ইত্যাগ্রেমে মহাপুরাণে স্থাপমবিধিনামক বট্-চতারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত।

সপ্তচত্বারিংশ অধ্যার।

ভগবান্ কহিলেন, নারায়ণের সামিধ্যকরণকে অধিবাদন কছে। ওঁ স্লার দহযোগে দর্বজ্ঞ, দর্বাগ ও আত্মস্বরূপ পুরুষোত্মকে হৃদয়ে ধারণপূর্বক তদভিমানিনী চিৎশক্তিকে নিঃসারিত করিয়া, স্ব স্থ রূপ, দর্বাগত, বিভবশক্তি দমস্বিত, দেই নারায়ণ

আত্মৈকতা বিধানানস্তর পৃথিবীকে বায়ুদারা সংযো-দ্বিত ও বহ্নিবীজে প্রদীপিত করিবে। পরে বায়ু সহায়ে অগ্নি সংহরণ পূর্বক ঐ বায়ুকে আকাশে, আকাশকে মনে মনকে অহস্কারে অহস্কারকে মহানে, মহান্কে অব্যাক্ততে ও অব্যাকৃত অর্থাৎ প্রকৃতিকে জ্ঞানরূপে জয় করিবে। এই জ্ঞানরূপই বাহুদেব শব্দে অভিহিত হয়েন। ভগবান বাস্তদেব সৃষ্টি কামনায় উল্লিখিত অব্যাকৃতি মায়া অবস্টন্ধ করিয়া, স্পর্শরপী সম্বর্ধণের সৃষ্টি করেন। পরে উল্লিখিত মায়ায় ক্ষুৰ করিয়া, তেজোরূপ প্রহ্যান্থের নির্মাণ করিয়াছেন। তৎপরে পূর্ব্বোক্ত বিধানে রসরূপী অনিরুদ্ধ ও গদ্ধরূপী এক্ষার সৃষ্টি হইয়াছে। অনি-রুদ্ধ ও ত্রন্মে বিশেষ নাই। এই ব্রহ্মা আদিতে জলের সৃষ্টি করেন। পরে সেই জলে পঞ্ছত-বং হিরগায় অণ্ড নির্মাণ করিয়াছেন। ঐ অণ্ডে প্রথমে জীব সংক্রমিত হয়েন। প্রাণ এই জীবে সংযুক্ত হইলে, বৃত্তিমান্ বলিয়া, কথিত হয়। অন-ন্তর প্রাণের যোগে অফবৃত্তি সম্পন্ন বৃদ্ধি সমৃৎপন্ন হইলে, পরে অহস্কারের জন্ম হয়। অহঙ্কার হইতে মুন্ত সমুদ্ভূত হইয়। থাকে। তদনন্তর শব্দ, ম্পূৰ্ন, রূপ, রুদ ও গন্ধ এই পঞ্চ বিষয় প্রান্তভূতি হয়। বিষয় হইতে জ্ঞানশক্তিসম্পন্ন ইব্রিয়বর্গের স্ষ্টি হইয়া থাকে। ইন্দ্রিয় দিবিধ, বুদ্ধীন্দ্রিয় ও কর্মেন্ডিয়। তন্মধ্যে ত্বক্, শ্রোত্র, ভাগ, চক্ষু ও জিহ্বা এই পাঁচটি বুদ্ধীন্দ্রিয় এবং পাদ,পায়ু, পাণি, বাক্য, উপস্থ, এই পাঁচটি কর্মেন্দ্রিয়।

অতঃপর পঞ্চ ভূতের বিষয় শ্রেবণ কর।
আকাশ, বায়ু, তেজ, জল ও পৃথিবী এই পাঁচটি
বুলাভূত। ইহাদের যোগে সর্বাধার দেহ সমুৎপন্ন হইনা থাকে। আয়ের জন্ম ইহাদের উৎকৃষ্ট
বাচকমন্ত্র কীর্ত্তিত হইতেছে। ম্থা, মকার জীব-

ন্তরূপ। উহা ভগবানের ব্যাপক রূপে ন্যাস করিবে। ভকার প্রাণস্বরূপ এই জীবোপাধিতে ভাস করিবে। এইরূপ বৃদ্ধিতত্ত্ব বকার, অহঙ্কার-তত্ত্ব ককার, উভয়কে হানয়ে, মনস্তত্ত্ব পকারকে সঙ্কলে, শব্দতখাত্রতত্ব নকারকে মন্তকে, স্পর্শা-অুক ধকারকে বজে, রূপতত্ব দকারকে হাদেশে, রসতশাত্রতত্ব থকারকে বস্তিতে ও গন্ধতমাত্র-রূপী তকারকে জ্বজাদ্বয়ে এবং ণকারকে উভয় কর্ণে, ঢকারকে ছকে, ভকারকে নেত্রছয়ে, ঠকা-রকে জিহ্বায়, টকারকে নাদিকায়, ঞকারকে वांद्रि, बेकांद्रक क्रवयुत्या, क्रकांद्रक अन्द्रा, ছকারকে পায়ুতে, চকারকে উপস্থে, পৃথিবী-তত্ত ঙকারকে পাদযুগো, ঘকারকে বস্তিতে, তৈজ্ঞসতত্ত্ব গকে হৃদয়ে, বায়ুতত্ত্ব থকারকে নাসি-কায়, আকাশতত্রকারকে নিত্য মন্তকে এবং সূর্য্যদৈবত যকারকে হৃৎপুগুরীকে অন্ত করিবে।

ওঁ আং পরমেষ্ঠ্যাত্মনে, আং নমঃ পুরুষাত্মনে, ওঁ বাং মনোনির্ত্যাত্মনে, নাঞ্চিখাত্মনে নমঃ, ওঁ বং নমঃ সর্বাত্মনে, এই পাঁচটি শক্তি কথিত হইয়াছে। তথ্মধ্যে প্রথম শক্তি, ছানে যোগ করিবে; বিতীয় শক্তি আদনে, ভ্রুক্তি শক্তি পানে এবং পঞ্চম শক্তি প্রত্যান্ত চর্যায় সংযোজিত করিবে; ইহাকেই পঞ্চ উপনিষদ্ বলে।

খনন্তর মন্ত্রময় হরিকে ধ্যান করিয়া, মধ্যদেশে জ্লার বিভাস করিবে এবং যে মূর্ত্তি স্থাপন
করিবে, তাহাতেই মূলমন্ত্র ভাস করিবে। ওঁ
নমঃ ভগবতে বাহ্নদেবায়, এইটি মূলমন্ত্র। শির,
ভাগ, ললাট, মুখ, কণ্ঠ, হৃদয়, ভূজদ্বয়, জঙ্গীদির,
পদস্বয়, এই সকল স্থানে যথাক্রেনে কেশবকে ভাসা
করিবে। পরে নারায়ণকে বক্তে, মাধ্বকে গ্রীবায়

এবং গোবিন্দকে ভুজন্বয়ে শ্বস্তু ক্রিয়া, জন্মে বিষ্ণুর ভাগ করিবে। অনস্তর পুষ্ঠে মধুবুদন, জঠরে বামন, কঠে ত্রিবিক্রম, জন্মায় প্রীধর, দক্ষিণাঙ্গে ক্ষীকেশ, গুল্ফে পদ্মনাভ এবং পান-ক্রিলাম।

ঘয়ে দামোদরকে ন্যস্ত করিবে। হে সভ্তম। আদি মূর্ত্তির এই সাধারণ অধিবাসবিধি কীর্ত্তন

অথবা প্রারম্ভে যে দেবতা স্থাপন করিবে, **डाँ**शतरे मूलम्टल मङीवकत्रण कतिरव। ट्य मूर्छित যে নাম, তাহার আদ্য অক্ষর হাদশ শরে ভেদ করিয়া, অঙ্গ সকল পরিকল্পনা করিবে। দেবে যেমন দেহেও তেমনি ততুসকল বিনিয়োঞ্জিভ করিবে। তথাহি, চক্রাজমগুলে গদাদি বারা বিষ্ণুর পূজা করিয়া, পূর্ববৰ শান্ত ও দ্পরিক্র আসন ধ্যান এবং পরমপ্রি ত্রচক্রও উপরিষ্ঠাৎ চিস্তা করিবে। অনস্তর প্রা**জপুরুষ পৃষ্ঠদেশে প্রকৃতি** প্রভৃতি সমিবিউ করিয়া, দাদশারে দাদশাস্থা সূর্যোর পুনরায় পূজা করিবে। তৎকালে হোজুল-কলাসংযুক্ত যন্ত্রেরও ধ্যান করিবে। অনস্তর পদ্ম-মধ্যে দ্বাদশদল পদ্ম চিন্তা করিয়া,তন্মধ্যে পৌরুষী শক্তির ধ্যান ও অর্চনা করত, প্রতিমাতে হল্লির স্থান ও দেবগণের সহিত তাঁহার পূজা করিবে। তৎকালে ছাদৃশাক্ষর বীজ্যোগে, গৃহ্ধপুল্পাদি সহায়ে সম্যগ্রিধানে যথাক্রমে অঙ্গ ও আব্রণ সহিত কেশবাদির অভ্যৰ্চনা করিবে। হে বিক্ত ! দাদশারমণ্ডলে যথাক্রমে লোকপালাদির পূঞা করিয়া, পুনরায় গন্ধপুলাদি দানা প্রতিমার অর্চনা করিবে। পৌরুষসূক্ত ও 🗐 সুক্ত ছারা পিণ্ডিকার পূজা করিয়া, পরে জননাদি ক্রমবিধানে বৈষ্টবাগ্নি সমুদ্রাবিত ও বৈষ্ণবমন্ত্রে ঐ অগ্রিতে হোম সমাহিত করিয়া, শান্তিজল বিধান করিবে।

অনস্তর ঐ জল প্রতিমার মন্তকে দেচন করিয়া, বহ্নিপ্রানয়ণ্**দমাচরণে প্রবৃত হইবে। ধ্থা, অ**গ্রিং ভ্তমিতি বলিয়া,দক্ষিণকুত্তে অগ্রি প্রণয়ণ করিবে। অগ্নিগীতি বলিয়া পূর্বাকুণ্ডে অগ্রি দমাধান করিবে এবং অগ্রিমগ্রীত হবামহে, বলিয়া, উরুর কুণ্ডে অগি প্রণয়ন করিবে। তৎকালে প্রতিকুণ্ডে পলাশস্মিধের অক্টোতর সহত্র হোম এবং ত্রীহি, লাজা, তিল **ও মৃত আহতি** দান করিয়া, শান্তি-হোম করিবে এবং দাদশাকর মত্রে পাদ, নাভি, হৃদয় ও মস্তকস্পার্শ করিয়া, য়ত, দধি ও হুগ্ধ আত্তি দিয়া, মন্তক স্পর্ণ করিবে। পরে শির, নাডি ও পাদম্পর্পপুরঃসর ঘথাক্রমে গঙ্গা, যমুনা, গোদাবরী ও সরম্বতী এই নদীচতুষ্ট্য নামোচ্চারণ সহকারে স্থাপন করিবে। এই সকল সমাহিত হইলে ভাঙ্গণভোজনাত্তে দামাধিপতিগণের তৃষ্টির জক্ত গুৰুকে গোদান ও দিক্পতিদিগকে বলি প্ৰদান পূর্বক রাত্রি জাপরণ করিবে। বেদগানাদিপুরংসর উল্লিখিত বিধানে অধিবাস করিলে, সর্বভাগী হওয়া যায় !

> ইত্যাধ্যের মহাপ্রাবে অধিবাসন নামক সপ্রচন্ধারিংশ অধ্যার সমাপ্ত ১

অফটব্ৰারিংশ অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, প্রতিষ্ঠাপঞ্চক কীর্ত্তন করিব। প্রতিষা পুরুষের আত্মা এবং পিণ্ডিকা প্রকৃতির স্বরূপ। পুরুষ ও প্রকৃতি এই সুয়ের যোগকে প্রতিষ্ঠা বলে। এইজন্ম ইচ্ছাকলাধী পুরুষগণ প্রতিষ্ঠা করিয়া থাকেন। গুরু গর্ডসূত্র নির্মাণপূর্কক প্রান্ধানের অগ্রে অধ্যাদি ক্রেম অন্ত, যোড়শ বা বিংশতি মণ্ডপ এবং স্নানার্ধ, কলশার্থ ও যাগদ্রখ্যার্থ তাহার অদ্বাংশে জিভাগ বা অদ্ধভাগ দারা হৃদ্দর বেদিনির্মাণপূর্বক কলশ, ঘটিনা ও বিতানাদি দারা তাহা ভূষিত করিবেন। অনন্তর পঞ্চাব্য দারা দকল দ্রব্য সম্যকরূপে প্রোক্ষণপূর্বক তথায় স্থাপন করিয়া, অলম্পত হইয়া আত্মরূপী বিষ্ণুর ধ্যানপুরঃদর পূজা করি-বেন। পরে দিকে দিকে যথাবিধি তোরণ স্থাপন করিয়া, ভোরণস্তন্তের মূলদেশে পবিত্র অন্তর্ম ও কলশ দকল এবং উপরিভাগে স্থাদনিচক্র বিধান করিবেন। তোরণের বহির্ভাগে প্র্বাদি দিকে হিরণ্য ও উদক সহিত বস্ত্রকণ্ঠ ঘট দকল স্থাপন এবং বেদির কোণে আজিত্যেতি মজে কুন্তচতুষ্টয় বিনিবিষ্ট করিবে। কুন্ত দকলে পূর্বাদিক্রমে যথা—

হে দেবরাজ ইন্দ্র ! তুমি বজ্রহন্তে গজারো-হণে দেবগণের সহিত আগমন করিয়া, আমার পূৰ্ববদাৰ রক্ষা কর। তোমাকে নমস্কার করি। এই বলিয়া, ভাতারমিক্ত ইত্যাদি মন্ত্রে ইল্ডের অর্চনাকরিয়াযাগ করিবে। পরে হে অগিু! তুমি শক্তিসম্পন্ন ছাগবাহন ও বলশালী। দেব-গণের সহিত আগমনপূর্বকে আমার পূজাগ্রহণ ও আগেয়ী দিক রকা কর। তোমাকে নমস্কার করি। এই বলিয়া অগি ুমূর্কেতি ম**লে অগি** ুর বাগ করিবে। পরে হে যম। তুমি মহিষবা**হনে আগ**া মন করিয়া, আমার দকিণবার রক্ষা কর। বৈবস্বত! তুমি অতিয়াত্র বলশালী, তোমাকে নমকার করি। এই বলিয়া বৈৰ্পত্সক্ষন্ম্ ইত্যাদি মজ্রে যমের পূজা করিয়া, হে নৈশ্তি! ভূমি খড়গছস্ত ও বলবাহনসংযুক্ত। আগমন করিয়া, এই অর্থ্য ও এই পাদ্য গ্রহণ এবং নৈথ ত দিক্রকা কর। এই বলিয়া, এম তে নৈশ্বতে

ইত্যাদি মত্রে অর্ঘ্যাদি দারা তাঁহার অর্চনা कत्रिया, ८१ मकत्रां कर भश्चिम शामश्ख वक्षण ! আগমন করিয়া পশ্চিম ছার রক্ষা কর। কর, ভোশাকে নমস্বার করি। এই বলিয়া, উক্লংহি রাজা, বকুণং ইত্যাদি মল্লে অর্ঘ্যাদি ছারা গুরু উাহার পূজা করিবেন। ন্তর, তে ধ্বজহন্ত বায়ু! স্বল্বাহনে আগমন করিয়া দেবগণ ও মরুদ্গণ সহিত আমার বায়ব্য দার রক্ষা কর, তোমাকে নমস্কার করি। এই বলিয়া, বাত ইত্যাদি মন্ত্রে তাঁহার অর্চনা করিবে। অনন্তর হে দোম। ভূমি দবলবাহনে গদাহন্তে আগমন করিয়া কুবেরের সহিত উত্তর ছার রক্ষা কর। তোমাকে নমকার করি। এই বলিয়া, সোমং রাজানং অথবা সোমায় বৈ নমঃ ইত্যাদি মন্ত্রে সোমদেবের পূজা করিয়া, পরে হে শূলহস্ত রুষন্থিত সবল ঈশান! আগমন করিয়া, যজ্ঞমণ্ডপের ঈশান দিক রক্ষা করু ভোমাকে নমস্কার করি। এই বলিয়া ঈশানমস্তেতি অথবা ঈশানার নমঃ ইত্যাদি মস্ত্রে ঈশানদেবের পূজা সমাধানান্তে. হে ভ্ৰুকজ্ঞৰ ব্যগ্ৰহন্ত-হংসন্থ ব্ৰহ্মন্! ভূমি এই যজ্ঞের দলোক উর্দাদক রক্ষা কর। ছে অজ । তোমাকে নমকার। এই বলিয়া, হিরণাগর্ভেডি মন্ত্রে ডাঁহার অর্চনা করিয়া, হে অহিগণেশ্র-চক্রহস্ত-কুর্মান্থিত অনস্ত! আগমন করিয়া, আথোধিক্রকা কর। ছে ঈশ। হে অনন্ত। তোমাকে নমস্কার করি। এই বলিয়া নমোন্তে সূৰ্প অথবা অনন্তার নম: ইত্যাদি মধ্যে ভাঁহার অর্চনা করিবে।

> ইত্যারেরে মহাপুরাণে নিক্পতিযাগদামক অই-চভারিংশ অধ্যায় সমাক্ষ ।

উনপঞ্চাশত্ত্র অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, তুমি পরিগ্রহপূর্বক, নার-নিংহ মন্ত্রে পঞ্গব্যসহায়ে রক্ষোছ সর্বপ ও ব্রীহি-দকল প্রোক্ষণ করিয়া, ক্ষেপণ করিবেঃ পরে রত্বসংযুক্ত ঘটে ভূমি ও অঙ্গসহিত হরির সবিশেষ পূজা করিয়া, অস্ত্রমন্ত্রে কবচের অর্চনান্তে অভিছ ধারায় ত্রীহিদকল দিক্ত ও দংস্কৃত করিয়া লইবে। পরে বিকিরোপরি প্রদক্ষিণ বিধানে কলদ পরি-ভাষিত করিয়া, সেই দবস্ত্র কলদে পুনরায় 🕮-সহিত বিষ্ণুর পূজা করিবে এবং যোগেযোগেতি মন্ত্রে মগুলমধ্যে শয়া ও কুশের উপরি ভুলিকা ম্মন্ত করিবে। অনস্তার দিক ও বিদিক সমুদায়ে विक्षु, मध्युमन, जिविजन, वामन, औथन, श्वीरकण, পদ্মনাভ ও দামোদরের পূজা করিয়া পশ্চাৎ সবে-দিক সান্যগুপে সমস্ত হেব্য আনয়ন ও সানকৃত সমূহে নিক্ষেপ করিবে। অনন্তর চতুর্দিগবর্তী তত্তৎ কৃষ্ণ অধিবাসিত করিয়া, অভিষেকার্থ আদের সহকারে কলস সকল স্থাপন করিবে।

এই সকল ব্যাপার যথাবিধি সমাহিত হইলে, প্র্বিদিকস্থ কুন্তে বট, উড়্ম্বর, অশ্বর্থ, চম্পাক, অশোক, প্রীদ্রুম, পলাশ, অর্জ্ব্ন, প্লক্ষ, কদম, বকুল, আত্র এই সকল ব্যক্তর পদ্লব যত্ত্বপ্রক আনয়ন করিয়া, বিনিক্ষিপ্ত করিবে। এইক্ষপ দক্ষিণদিকস্ত কুম্বে পত্র, রোচনা, মুর্বা, দর্জনিক্ষ, জাতীপুন্প, কুম্বপুন্প, চম্বন, রক্তচম্মন, বিভাগ, তগর ও তওুল অন্ত করিবে। অ্বর্ণ, ব্যক্ত, সমুদ্রগামিনী নদীর ছই কুলের মুক্তিকা বিশেষতঃ জাহ্বীমৃত্তিকা, গোমর, যব, শালী ও তিল, এই সকল পশ্চিম্দিক্স কুম্বে নিক্ষেপ করিবে। বিষ্ণু-পর্ণী, শ্রামনতা, ভুলরাক্স, শতাবরী, সহদেবা, মহা-

দেবী, বলা, ব্যান্ত্রী, লক্ষ্মণা, এই সকল মঙ্গলদ্রব্য ঐশানীদিকস্থ কৃন্তে অস্ত করিবে। অপর ঘটে সপ্তস্থান হইতে উত্তোলিত বল্মীকমৃত্তিকা অম্যতর কৃষ্টে জাহ্নবী বালুকাতোয়, অপর ঘটে বরাহ্রয় ও নাগেন্দ্রের বিষাণ সমৃদ্ধৃত মৃত্তিকা, পদ্মমূলমৃত্তিকা ও কুশ মৃত্তিকা, অম্যতর কলমে তীর্থ-পর্বত মৃত্তিকা, অপর কৃষ্টে নাগকেশর পুষ্প ও কাশ্মীর, অন্য কলমে চন্দন অগুরু কপুরি ও পুষ্প, অপর ঘটে বৈদ্ধ্য বিক্রেম মৃত্তা, স্ফটিক ও বস্ত্র এই সকল একত্তে নিক্ষেপ পূর্বক স্থাপন করিবে। অপর ঘটে নদী, নদ ও তড়াগ সলিল এবং মণ্ডপমধ্যে একাশীতি পদে অন্যান্য ঘটসমূদায় গদ্ধোদকাদিতে পূর্ণ করিয়া, সমিবিষ্ট ও শ্রীস্থান্ত অভিমন্ত্রিত করিবে।

এইরপে কৃত্ত হাপন হইলে, যব, সিন্ধার্থ, গদ্ধ, কৃশাগ্র, অক্ষত, তিল, ফল, পূচ্প ইত্যাদি দ্রব্য অর্যার্থ পূর্বাদিকে; পদ্ম, অসামলতা, দূর্বা, বিষ্ণুপনী ও কৃশ ইত্যাদি দ্রদ্য পাদ্যার্থ দক্ষিণদিকে; কন্ধোল, লবঙ্গ, জাতীফল ইত্যাদি দ্রব্য আচন্মার্থ উত্তর্গিকে,নীরাজনার্থ দ্রব্য ও অক্ষতসমেত পাত্র অগি,ভাগে এবং বারুকোণে উত্তর্জন, ঐশানীতে গদ্ধ ও পুষ্পসমেত পাত্র ন্যন্ত করিবে। এইরূপে, নীরাজনার্থ অক্টদিকে মৃষ্টিদীপ, ঐশানীদিকস্থ পাত্রে মুরামাংসী, আমলক, সহদেবা, ও নিশাদি বিবিধ দ্রব্য এবং হেমাদিপাত্রে নানাবর্ণাদি পুষ্পাসমেত শন্ধা, চক্র, শ্রীবৎদ, কৃলিশ ও প্রজাদি স্থাপন করিবে।

ইভ্যাথেরে মহাপুরাণে কলপ্রিধিনামক উনপঞ্চাশন্তম অধ্যার সমাপ্ত।

পঞ্চাশত্তম অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, ধীমান্ ব্যক্তি পিণ্ডিকাস্থাপন জন্য গর্ভগৃহ সপ্তধা বিভাগ করিয়া, অক্ষভাগে প্রতিমা স্থাপন করিবেন। হে অওজ।
আক্ষভাগ লজ্জনপূর্বক দেব, মানুষ ও পৈশাচ
এই সকল ভাগের কিয়দংশেও কখন প্রতিমা
স্থাপন করিবে না। দেব ও মানুষভাগ সহায়ে
যত্নপূর্বক পিণ্ডিকা স্থাপন ও নপুংসক শিলায়
রক্তন্যাস সমাচরণ করিবে। নার্দিংহ মত্তে হোম
করিয়া, পূর্বাদি নবগর্তে ত্রীহি, রত্ন, লোহাদি
ত্রিধাতু ও চন্দনাদি যথাক্তি বিন্যস্ত করিবে।

অনন্তর ইন্দ্রাদি মন্ত্রপাঠপুরঃদর গুগ্ওলে গর্ত্ত আরুত ও রত্ন্যাস্বিধি স্মাহিত করিয়া, গুরু প্রতিমা আলভন এবং শলাকা ও সহদেব সমশ্বিত দর্ভসমষ্টিসহায়ে পঞ্চাব্য ছারা শোধনপূর্বক দর্ভ দলিল ও নদীতীর্থজন এই উভয় সলিল ছারা প্রোক্ষণ করিবে। তৎপরে, চতুর্দ্ধিকে সিকতা দ্বারা হোমার্থ দার্দ্ধহন্তপ্রমাণ চতুরত্র পরমন্ত্রনর ছণ্ডিল নিৰ্মাণ ও অফদিকে যথাবিধানে কলম সকল স্থাপন করিবে। অনন্তর সংস্কৃত অগি আন্যান করিয়া, ছমগ্লেছ্যুভিঃ ইত্যাদি গায়ত্রী প্রয়োগপুরঃ-মর সমিধসকল আহুতি দিবে এবং অফমন্ত্রে অই-শত আজ্য প্রদানান্তে পূর্ণাহুতি বিধান করিবে। পরে নূলমন্ত্র সমুচ্চারণপূর্বক, আত্রপত্র ছারা শত-মন্ত্রিত দলিল, শ্রীশ্চতে ইত্যাদি ঋক্দহকারে প্রতিমার মস্তকে গেচন করিবে। অনন্তর হে একা-পতি! উত্থান কর, বলিয়া, আক্ষানা সহায়ে তাঁহাকে উত্থান করাইয়া, তদ্বিষ্ণো ইত্যাদি মন্ত্রে প্রাদাভিমুখে লইয়া যাইবে। তৎপরে হরিকে শিবিকায় স্থাপন পূর্ব্বক পুরাদি ভ্রমণ করাইয়া,

গীত ও বেদাদি শব্দ পুরংগর প্রাদাদের ঘারদেশে ছাপন করিবে। পরে ক্রী ও বিপ্রগণ ঘারা মঙ্গলন্ম অফগটদাললে ভগবানের স্নানবিধি সম্পাদনানন্তর মূলমন্ত্রে গলাদিয়ারা অর্চনা এবং অত্যোদনানন্তর মূলমন্ত্রে গলাদিয়ারা অর্চনা এবং অত্যোদনানন্তর মূলমন্ত্রে গলাদিয়ার অর্চানিবেদন করিয়া, তাঁহাকে ছির লয়ে দেবস্তাত্বতি মন্ত্রে পিণ্ডিকাম্বার ধারণ করিবে এবং ওঙ্কার উক্তারণপূর্বক হে ত্রিবিক্রম! ভূমি তিন পদে তিন লোক ব্যাপ্ত করিয়াছিলে, তোমাকে নমস্কার করি, এই বলিয়া, পিণ্ডিকা স্থাপন করিয়া, তাঁহাকে ছির করিবে। পরে প্রুবা দেশঃ ও বিশ্বতশ্চক্ষ্ণ ইত্যাদি মন্ত্রে পঞ্চাব্যে স্নান ও গ্রেমাদকে প্রকালনপূর্বক অঙ্গ ও আবরণ সহিত হরির পূজা করিবে।

অনন্তর আত্মাকে তাঁহার মূর্ত্তি ও পৃথিবীকে তাঁছার পীঠিকারপে ধ্যান করিয়া, তৈজদ পর্মাণু দারা তদায় বিগ্রহ কল্পনা করিয়া লইবে। পরে বিনি জীবস্বরূপ, চৈত্যুস্বরূপ ও প্রমানন্দস্বরূপ, বিনি পঞ্চিংশতি তত্ত্বের অতীত ও জাগ্রৎ স্থপ্নের অবিষয়ীভূত, যিনি দেহ ইক্রিয় মন বুদ্ধি প্রাণ ও অহন্ধার এই সকল বর্জিত, যিনি আছেন, ছিলেন ও থাকিবেন, যিনি ক্ষয় হীন, নাশহীন, দোষহীন ও রোগহীন; যাঁহার তুলনা নাই; উপমানাই ও দীমা নাই; যিনি অভয়, অমূত, ও অনন্তস্থরপ। যিনি জ্ঞান किয়াছেল; মন দিয়া-**ट्रिन ७ तृष्कि निशार्ट्स, यिनि जम्मानि उप्यर्शि**ख যাবতীয় বস্তুতে সন্তারূপে,শুতিভারূপে ও প্রকাশ-রূপে বিরাজমান এবং যিনি প্রত্যেক হাদয়ে ও অনন্তকোটি ব্ৰহ্মাণ্ডের প্রত্যেক অণুতে অমুপ্রবিষ্ট মেই ভগবান্কে আমি আবাহন করিব। হে পরম পুরুষ পরমেশ্ব ! ভুমি হৃদয় ইইতে এই প্রতিমা-বিদ্বে অধিষ্ঠান ক্রিয়া, স্থির হও এবং বাহা ও

অভ্যন্তরে অবস্থানপূর্বক এই বিশ্বের ক্ষাবিতা দাধন কর। তুমি অসুধ্যাত্র পুরুষরূপে দেহো-পাধিতে অবস্থান করিতেছ। তুমি জ্যোভিষারূপ, ভ্যানস্বরূপ, এক ও অদিতীয়স্বরূপ পরব্রকা। এই বলিয়া, সজীবকরণপূর্বক প্রণবসহায়ে নিবোধিত করিবে এবং হৃদয় স্পর্ণ করিয়া, সামিধাকরণ নামক জপদমাধানাত্তে পৌরুষ সৃক্ত ধানি পুরঃসর বক্ষামাণ গুহুমন্ত্র জপ করিবে, তুমি হুরগণের ঈশ্বর ও সন্তোষ্বিভবাত্মা, তেঃমাকে নমকার। তুমি ভ্যানবিজ্ঞানস্বরূপ ও ব্রহ্মাতেদের অনুযায়ী। তুমি ভ্যানবিজ্ঞানস্বরূপ ও ব্রহ্মাতেদের অনুযায়ী। তুমি ভ্যাবিজ্ঞানস্বরূপ ও ব্রহ্মাতেদের অনুযায়ী। তুমি ভ্যাবিজ্ঞানস্বরূপ, মহায়া ও পুরুষ। তুমি অক্ষয় ও পুরাণ, তোমাকে নমকার। হে বিশ্বেষ। সমিহিত হও। যাহা ভোমার পর্মজ্ঞ একং যাহা ভোমার জ্ঞানময় শরীর, ভংসমন্ত এক্ট মিলিত হইয়া, এই দেহে বিশ্বেষ হউক।

এই রূপে আত্মস্রূপ হরিকে স্থিহিত করিয়া. স্বনাম ও স্বমুদ্রাদহায়ে ত্রন্ধাদি পরিবা**রবর্গ**ু 🗪 আয়ুধাদি স্থাপন করিবে। याका बनाहि পরে সমাধানপুর্বাক ভগবান হরি সন্ধি**হিত ছইরাছেন**, জ্ঞান করিতে হইবেক। তথন গুরু প্রণাম, জ্বপ ও ন্তবাদি দ্বারা অক্টাক্ষর জপ কল্পিয়া নিনির্গমন পূর্বক দারস্থ চন্ত ও প্রচণ্ডের অভ্যার্চনা এবঃ দায়ি-মগুপে আদিয়া গরুড়ের স্থাপন ও পূজা করিবের। অনন্তর দেশিক দিক্পতি দেবগণকে স্থাপন 🥕 পুজা করিয়া, বিশ্বকৃদেনের স্থাপনানস্তর পার্যারার দির পূজা করিবে এবং সমুদায় পার্বক 🚉 👺 👺 গণের উদ্দেশে বলি অর্পণ করিয়া, ভঙ্কাক ব্রাক্ত ও সুবর্ণাদি দক্ষিণা দিবে এবং ক্লাচাঞ্চাকে মাগোপ-যোগী দ্রবাদি ও ঝাছক্দিপকে তাহার অর্দেক দক্ষিণা দান করিবে। পরে অন্যাক্সদিগকে মথাবিধি দক্ষিণা দিয়া,ব্ৰাহ্মণদিগকে ভোজৰ করাইনে 🕼

এই রপে প্রতিষ্ঠাকর্ত্তা আপনার সহিত সমুদায় বংশ বিষ্ণুতে নীত করে। অভাভ সমুদায় দেবতার প্রতিষ্ঠাসমধ্যেও এই প্রকার সাধারণ বিধি।
কেবল তাঁহাদের মূলমন্ত্র পৃথক্; আর সকল কার্য্য
সমান।

ইভ্যাথেরে মহাপুরাবে বাহুদেবপ্রতিষ্ঠাদিকথন নামক পঞ্চাশভ্য অধ্যার সম্প্র ।

একপঞ্চাশত্তম অধ্যার।

ভগবান্ কহিলেন, অবভ্তস্নানবিধি কীর্ত্তন করিব। বিষ্ণুস্ক ইত্যাদি মন্ত্রে হোম ও একা-শীতিপদে কুন্ত স্থাপনপূর্মিক তাঁহার সংস্থাপন করিবে। পরে গন্ধপূম্পাদি যোগে তাঁহার পূজা ও বলি দান করিয়া, শুরুর স্পর্চনা করিবে।

একশে ছার প্রতিষ্ঠা কীর্ত্তন করিব। ছারের আধানিকে স্বর্গ দান করিবে। পরে গুরু অফ-কাস সহিত উত্থর শাখাদ্য স্থাপন করিয়া, গন্ধাদি ও বেদাদি মন্ত্রে অভ্যর্চনাপূর্বক সমিধ, লাজ ও তিলাদি দারা কুণ্ডসমূহে বহিল হোম করিবেন। পরে অধ্যেদিকে শয্যাদি দান পূর্বক আধারণক্তি অর্পণ করিয়া, শাখাদ্যের মূলদেশে চণ্ড ও প্রচণ্ড এই ছই দেবতার প্রতিষ্ঠাপন করিবেন। অনন্তর উত্তাগে স্তরগণার্চিত দেবী লক্ষ্মী ও পিতানহের স্থাপন ও প্রস্থিকে পূজা করিয়া, আচার্য্যাদিকে প্রিকলাদি দক্ষিণা দিবে।

ত্ব অধুনা, প্রাসাদপ্রতিষ্ঠা প্রবণ কর। শুক্নাসা সমান্ত হইলে, বেদির পূর্ববিদকন্থ দর্ভমন্তকে স্থাময়, বেপাসাময়, অথবা শুক্রনির্মাল কলস সলিল-পূর্ব করিয়া, অফরত্ব ওবিধি, ধাতুবীজ লোহ, বস্ত্র, ও পল্লবসহিত অধিবাদিত এবং নৃসিংহ্মন্ত্রে হোম

সমাধান পুরঃহর নারায়ণাখ্য তত্ত্বে প্রাণস্থরপ স্থাপন করিবে। হে স্করেখর! উছাই প্রাদা-দের বৈরাজস্বরূপ ধ্যান করিতে হইবে।

অনস্তর ধীমান্ পুরুষ প্রাসাদকে সাক্ষাৎ পুরুষরূপ চিন্তা করিয়া, অধাদেশে স্থবর্ণ দান ও তত্ত্বভূত ঘটনিভাসপুরঃসর গুরুপ্রভূতিকে দক্ষিণা দান
ও ব্রোক্ষণদিগকে ভোজন করাইবে। তদনন্তর
বেদিবন্ধন, তদুদ্ধে কঠবন্ধন, তদুদ্ধে চুর্ণকবিধান
ও স্থদর্শন চক্রবিভাস অথবা কলস ও তদুদ্ধে চক্র স্থাপন করিবে। হে অজ! বেদির চারি দিকে
আন্টবিন্থের স্থিনিন্ট করিবে। অথবা চারি দিকে
চারিটি গরুড় স্থাপন করিবে।

যাহা দারা ভূতাদি বিন্ঠ হয়, সেই ধংগা-রোহবিধি কীর্ত্তন করিব। প্রাসাদবিষের অন্তর্গত जुवा मकलात यावर পतिभाग, ध्वकारताह्म कतिल. তাবৎ সহস্রবর্ষ বিফুলোক ভোগ হইয়া থাকে। পতাকা প্রভৃতি দণ্ড সাক্ষাৎ পুরুষ এবং প্রাসাদ वाञ्चरमद्वत अनुज्ज मूर्जि, क्रानित्व। धरेक्ररभ शाविशातक धत्री, श्वितितक व्याकाम, व्याधिक टिंड, छङ्गोनिटक ऋभ, अज्ञानिमर्गनटक तम, धूभानि शक्रतक शक्त. शुक्रनामारक नामिका, तथरक वाह, অওকে শির, কলদকে কেশ,কণ্ঠকে কণ্ঠ, বেদিকে ক্ষম, প্ৰণালম্বয়কে পায়ু ও উপান্থ, হুধাকে ত্বকু, দারকে মুখ, প্রতিমাকে জীব, পিণ্ডিকাকে শক্তি, আফুতিকে প্রকৃতি, গর্ভকে প্রকৃতির নিশ্চলত্ব এবং অধিষ্ঠাতাকে কেশব জ্ঞান করিবে। এই রূপে সাক্ষাৎ হরি প্রাসাদরূপে অধিষ্ঠিত হয়েন। তাঁহার জন্তায় শিব, ক্ষমে ধাতা এবং উদ্ধভাগে বিষ্ণু।

অধুনা,আমার নিকট ধ্বজরূপে প্রাসাদ্থতিষ্ঠা । ভাবণ কর। স্থারগণ শস্ত্রাদি চিহ্নিত ধ্বজ নির্মাণ

করিয়াই, অস্থরদিগকে জয় করেন। , অত্থের উদ্বে কলস ও কলসের উদ্বে ধ্বন্ধ বিন্যাপ করিবে। পরে বিষের অর্দ্ধক বা ডিভাগ পরি-মাণে অফীর বা দাদশার চক্র নির্মাণ করিবে। নারসিংহ ও গারুড় মন্ত্রে ধ্বজদণ্ড নিৰ্মাণ করিলে, উহা নির্ভ্রণ হইয়া থাকে। প্রাসাদের যে বিস্তার, তাহাই দণ্ডের পরিমাণ, অথবা শিখরের অর্ক্ক তৃতীয়ার্ক, কিংবা ছারদেশে দৈর্ঘ্য অপেক্ষা দ্বিগুণ পরিমাণে দণ্ড কল্পনা. করিবে। দেবগুহের ঈশাণী বা বায়ু কোণে ধ্বজ ষষ্টি স্থাপন করিবে। কেমাদি দারা এক বর্ণের বিচিত্র ধ্বজ নির্মাণ ও ঘণ্টাচামরকিঙ্কিণী দারা ভূষিত করিবে। ধ্বজের বিস্তার যেন বিংশ অঙ্গুলি হয়। অধিবাদবিধানানুদারে দেববৎ কার্যা সম্পাদন করিয়া, চক্র, দণ্ড ও ধ্বজের মণ্ডপ-স্থপনাদি পুর্বেরাক্তরূপে সমুদায় বিধান করিবে। কেবল নেত্রোশ্মীলন করিবে না। দেশিক বিধানা-কুসারে শহ্যান্থাপনপূর্বকে অধিবাসবিধি সমাধান করিবে। অনস্তর সহস্রশীর্ষ ইত্যাদি সূক্ত এবং মনস্তভ্ স্থরূপ হুদর্শনমন্ত্র চক্রে দল্লিবিই করিবে। মনোরূপেই তাহার সজীবকরণ বিধিবোধিত।

হে হরোত্তম ! চজের অর সকলে কেশবাদি
মূর্তিন্যাসপুরঃসর নাভ্যজ্ঞ-প্রতিনেমিসমূহে তত্ত্ব
সকল বিশুন্ত করিবে। কিংবা, বিশ্বরূপ ও নৃসিংহমূর্তি অজ্ঞমধ্যে সদিবিশ্ব করিবে। অনন্তর জীব
সহিত অথও সূত্রাক্সাকে ঘণ্ডে এবং নিক্ষল পরমাজা হরিকে ধ্যানপুরঃসর ধ্বজে শুন্ত করিবে।
পরে ধ্বজরূপে তাঁহার চলাচলাব্যাপিনী শক্তির
ধ্যান করিবে এবং ঐ শক্তি মন্তপে স্থাপনপূর্বক
অর্চনা করিয়া কুভ্রমধ্যে হোম করিবে। অনন্তর
কলসে ক্রিক্লস ও পঞ্বত্ব স্থাপনপূর্বক অধ্যা-

ভাগে চক্রমন্তে খণ্চক্র প্রতিষ্ঠিত এইং পরিদ্ধারা সংপ্লাবিত করিয়া, নেত্রপট্ট দারা ভারা ভারা আছাদিত করিবে। তদনতর চক্রসাধেশ করিয়া তদ্মধ্যে নৃহরি সারণ করিবে। ওঁ ক্লোং নৃসিংহকে নমস্কার, বলিয়া, হরির পূজা ও স্থাপন করিবে। আনন্তর যজনান স্থান্ধবে ধ্বজগ্রহণপূর্বক দ্ধিভাগ্র্ক্ত পাত্রে তাহার অগ্রভাগ বিনিবেশিত করিবে এবং প্রবাদ্য কড়ন্ত মন্ত্রে ধ্বজপ্রাদ্মাধানপূর্বক নারায়ণকে সারণ করিয়া, ঐ পাত্র মন্তকে ধারণ ও ভূর্যা,মঙ্গলশব্দপূর্যনের প্রদক্ষিণ করিবে। পরে অন্টাক্র মন্ত্রে দণ্ডনিবেশপূর্বক মুঞ্চামি ছেতিস্ক্তে ঐ ধ্বজ মোচন এবং পাত্র, ধ্বজ ও কুঞুকাদি আচার্য্যকে দান করিবে।

ধ্বজারোহণের এই সাধারণ বিধি উল্লেখ করিলান। একংশ যে দেবতার যে চিহ্ন, সেই মত্র স্থির সমাচরণ করিবে। ধ্বজ দান করিলে, স্থেগ গমন করিয়া, পুনরায় পৃথিবীতে বলশালী বিদ্যান্ত্রী ইয়া জন্মগ্রহণ করে।

हेड्याद्यद्य महाश्वाद श्ववाद्यांश्वनामक कुछ-शक्षाव्य अवशास मनार्थ ।

দিপঞ্চাশক্তম অধ্যার।

ভগবান কহিলেন, সাকল্যে দেবাদি প্রভিষ্ঠ। কীর্ত্তন করিব। প্রথমে লক্ষীর প্রতিষ্ঠা ও পরে অভাত দেবীগণের প্রতিষ্ঠা বলিছেছি প্রবণ কর।

মগুপ ও স্নপনাদি পূর্ববিৎ সকল বিধান করিয়া, ভদ্রপীঠে লক্ষী ও অফ ঘট ঘট ছাপন করিবে। পরে মূলমন্ত্রে ম্বত ছারা অভ্যঞ্জন ও প্রকার্য ছারা স্নপন করিয়া লক্ষীর নেত্রেষয় উন্দী-

লন,তন্ম থাবহে ইত্যাদি মন্ত্রে মধুর এয় প্রদান এবং অশ্ববপূর্বেতিমন্ত্রে পূর্বেকু ন্তুস নিলে তাঁহার অভিবেক করিবে। অনন্তর কামোলিতেতি বলিয়া যাম্য কলাদে,চন্দ্রংপ্রভাগাং ইত্যাদি বলিয়া পশ্চিম কলাদে, আদিত্যবর্ণেতি বলিয়া উত্তর কলাসে,উপৈতু মেতি বলিয়া আয়েয় কলাদে, ক্ষুৎপিপাদেতি বলিয়া নৈখাত কলাদে, গ্রন্থারেতি বলিয়া বায়ব্য কলাদে এবং মনসং কামমাকৃতিম্ ইত্যাদি মন্ত্র বলিয়া, ঈশানকলাদে সাম করাইবে।

অনতর লক্ষ্যাবীজ দ্বারা চিচ্ছক্তি বিন্যাস করিয়া পুনরায় অভ্যর্চনা, শ্রীসূক্ত দ্বারা মণ্ডপে ক্ওসমূহে অজ্ঞসকল হোম, কিংবা শত বা সহস্র করবীর আহতি দিরা শ্রীসূক্ত দ্বারাই গৃহোপ-করণান্তাদি অর্পণ করিবে। পরে পূর্ববিৎ সমুদার প্রাসাদসংক্ষার বিধান ও পিণ্ডিকা নির্দাণ করিয়া, লক্ষ্মীর প্রতিষ্ঠা এবং পূর্ববিৎ শ্রীসূক্তে তাঁহার সামিধ্য ও প্রত্যেক ঋক জপ করিবে। এই সকল সমাহিত হইলে, গুরু ও ব্রহ্মাকে ভূমি, স্বর্ণ, বস্তু, গো ও অন্ধাদি প্রদান করিবে। এইরূপ বিধানে সকল দেবীকেইস্থাপন করিবে।

ইত্যাগ্ৰেষে মহাপুৰাণে লক্ষ্মীস্থাপননামক

বিপঞ্চাশতম অধ্যায় নমাপ্ত।

ত্রিপঞ্চাশত্রম অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, এই রূপে বিক্র কায়, গরুড়, চক্র, অন্ধা ও নৃদিংহেরও স্ব স্ব মন্ত্রে প্রতিষ্ঠা করিবে। উহা বলিতেছি, প্রবণ কর।

হে মহাচক্র স্থদর্শন। তুমি শান্তস্বরূপ এবং তুটগণের ভয় সমুংপাদন করিয়া থাক। পরমাস্ত্র স্কল ছেদ কব, ছেদ কর; ভেদ কর, ভেদ কর;

বিদারণ কর, বিদারণ কর; প্রাস কর, প্রাস কর; ভক্ষণ কর, ভক্ষণ কর; ভৃতদিগকে জাসিত কর, জাসিত কর; হুং ফট্ স্লাসনিকে নমস্কার।

ওঁকোং নরসিংহ উগ্ররূপ স্থলাত্বল প্রস্থল বাহা।

পাতালাথ্য নরসিংহের এই মন্ত্র।

ওঁকোং নমো ভগবতে নরসিংহায় প্রদীপ্ত সূৰ্য্যকোটিসহস্ৰসমতেজনে বজ্জনখদংখ্ৰীয়ুধায় স্ফুট বিকটবিকীর্ণকেসরস্টা প্রস্কুভিত মহার্ণবাজ্যেদ-সর্কামান্ত্রোভারণায় তুন্দুভিনির্যোগায় ভ্ৰেছোহি ভগবন্ধরসিংহ পুরুষপরাবর ভ্রহ্মসত্ত্যন ফার ফার বিজ্ঞ বিজ্ঞ আক্রম আক্রম গর্জ্জ গর্জ মুঞ্চ মুঞ্চ দিংহনাদান বিদারয় বিদারয় বিদ্রাবর বিদ্রাবর আবিশ আবিশ সক্ষমন্ত্ররপাণি সর্ক্ষন্ত্র জাতায়শ্চ হন হন ছিন্দ ছিন্দ সজ্জিপ সজিপ সর সর দারয় দারয় ক্র কর্ট কেন্ট্র কোটয় **ক্লোমালা**-সংঘাত্ৰয় সৰ্বতোনন্ত জ্বাবিজ্ঞাণনি চক্তেণ সর্বপাতানান উৎসাদয় উৎসাদয় সর্বাতোনন্ত-জ্বালাবজ্রশরপঞ্জরেণ সর্বরপাতালান্ সর্কপাতালাজ্রহাসিনাং হৃদয়ানাকর্ষয় আকর্ষয় শীত্রং দহ দহ পচ পচ মথ মথ শোষয় শোষয় নিকুন্তয় নিকুন্তয় ভাবদ্যাবন্মে বশ্মাগতাঃ পাতা-লেভাঃ ফট্ অস্তরেভা ফট্ মন্ত্রমে**ভা ফট্** সংশ-য়ান্মাং ভগন্তরসিংহরাপ বিষ্ণো সর্বাপদভা সর্বা-মন্ত্ররপেভ্যঃ রক্ষ রক হং ফটু নমোস্ততে।

ইহার নাম নরসিংহ বিদ্যা। এই বিদ্যা

যাকাং হরিস্বরূপ ও অর্থসিদ্ধি প্রদান করে।

তৈলোক্যমোহনমন্ত্রে দক্ষিণে তৈলোক্যমে হ্ন
গলাধারা শান্তিকর হিভুজ বা চতুভুজি হরিকে
স্থাপন করিবে। বামোর্দ্ধে চক্র, অধ্যেদিকে বল,
ভদ্রা, শ্রী ও পৃষ্টি সহিত পাঞ্জন্ত এবং প্রামাদে,

গৃহে বা মণ্ডপে বিষ্ণু, বামন, বৈষ্ণু, হয় গ্রীব, অনিরুদ্ধ, মংস্থাদি অবতারমূর্তি, সক্ষণ, বিশ্বরূপ, রুদ্রমূর্তি, অর্জনারীখর, হরি, শঙ্কর, মাতৃকগণ, ভৈরব, সূর্ব্যা, গ্রহ্মমন্ত ও বিনায়কমূর্তি স্থাপন করিবে।

ইত্যায়েরে মহাপ্রাণে স্থলনিচক্রাদি প্রতিষ্ঠানাম্ক বিশেষাশন্তম অধ্যায় স্থাপ্তঃ

চকুঃপঞ্চাশত্তম অধ্যায়।

অধুনা পুস্তক প্রতিষ্ঠা,লেখন ও তদ্বিধি কীর্ত্তন করিব। গুরু স্বস্থিকমণ্ডলে শরপত্রাদনে অধিষ্ঠিত লেগ্য ও লিখিত পুস্তকের অভ্যর্কনা विमा ও विकूत शृक्षा कति: वन। यक्षमान श्राद्याच रहेगा, स्माक्पक्षक त्यंत्रम्यक छङ्ग, तिमा, হরি, লিপিকুৎ পুরুষ ও লক্ষ্যার ধ্যান করিবে; तीलामगी वा अर्गगती (लयमी (पार्य मानवा-ক্ষরে ঐকপ শ্লোক নিখিতে হইবেক। পরে শক্তি অসুসারে ত্রাহ্মণভোজন করাইয়া, দক্ষিণা দিবে। পুর্বমণ্ডপপাখে ঈশান দিকে ভদ্র-পীঠে গুরু, বিদ্যা ও হরির যথাবিধি পূজা করিয়া, পুরাণাদি লিখিবে এবং দর্পণে পুস্তক দেখিয়া, পূর্ববিৎ ঘট স্বারা সেচন করিবে। পরে নেত্রো-শীলনপূর্বক শ্যাায় স্থাপন করিয়া, পুস্তকে পৌরুষসূক্ত ছান্ত করিবে এবং সজীবকরণ সমাধা-নান্তে দবিশেষপূজা ও চরুহোম করিয়া, সম্প্রাশনান-স্তর দকিণা হারা গুর্বাদি প্রাক্ষণদিগকে ভোষন করাইবে। অনন্তর রথ বা হন্তী ছারা পুস্তককে ভ্রমণ করাইয়া, দেবালয়াদি গৃহে ভাপনপূর্বক পূজা করিবে এবং বস্তাদি ছারা ভাদ্যন্ত বেষ্টন পূর্বক অর্চনা করিয়া, জগতের শান্তি অবধারণান-

ন্তর ঐ পুত্তক পাঠ করিবে। পাঠনবান্তি হইনে ক্সানিবে যজনানানির অভিনয়ক কৈ বিটাৰ নি পালে বাজানেক ঐ পুত্তক নিলে, কলের অবিটি থাকে না। গো, ভূমি ও বিদ্যা এই ভিনতি অভিদান বলে। হে অন্য ! ঐরপ বিদ্যা বাল করিলে, পুততের পত্ত ও অক্ষর সংখ্যা ইত, উটি সহত্র বৎসর কিফুলোকে বাস করিতে পরিয় ইয়ে । প্রাত্ত দান করিলে, এক বিংশ কুল উদ্ধার করিয়া, প্রমন্তত্ত্ব লয় হইয়া থাকে ।

ইত্যাথেকে মহাপুরাণে প্রকল্পতিট্টা কথন নারীক চতু:পঞ্চাশক্ষম অধ্যার সমাপ্ত ।

পঞ্চপঞ্চাশত্ৰ অধ্যায়।

০ ভগবান্ কহিলেন, কৃপ, বাদ্দী ৩০ তট্যাগ, আই সকলের প্রতিষ্ঠা কীর্তন করি, প্রবণ কর। দাক্ষাৎ হরি, দোম ও বরুণ ইইতে অভিন। সমুবার বিশ্ব অগ্লীবোমনয় : ভলস্বরূপ বিষ্ণু তাহার কাবণ। হেম. রৌপ্য বা বন্ধ **এই সকলোঁ** বরুণের প্রতিমা নির্মাণ করিবে। ঐ প্রতিমা ইংস-পূর্তে প্রতিঠিত এবং দ্বিহত্তবিশিষ্ট ইইবে। তমধ্যে দক্ষিণ হতে অভয় ও বাম হতে নাগপানী এবং চতুর্দিকে নদী ও নাগাদি মুর্তী থাকিবে। যাগম গুপমধ্যে কুগুমন্তিত বেদী এবং কঁরব কিউ বারুণ কুম্ভ ও ভোরণ স্থাপন করিয়া, ভট্রকৈ অর্ন্নচন্দ্রের, অব্যিকে অথবা ধারদেশে কুছসমূর্হ স্মিবিক ও আপাকুতে জ্যাধান স্থানানীতি পূর্ণাক্তি প্রদান করাইরে। পরে থেটিউপটিউটি. বলিয়া, বরুণকে স্নানপীঠে সংস্পৃত করিয়া, মূল মন্ত্ৰে য়ত ছাৱা অভ্যঞ্জনপূৰ্ব্বক, শলোদেবীতি দ্বীক্ত পবিত্রে সলিলে অফীকুম্ভ প্রকালনান্তর বাসিত করিবে। তল্মধ্যে পৃথবিকুল্ডে স**ম্**টেসলিল,

ভাষের কুন্তে গদাদলিল, দক্ষিণ কুন্তে বর্ধাদলিল, নৈথত কুন্তে নির্বরদলিল, পশ্চিম কুন্তে নদী-দলিল,বারবা কুন্তে নদোদক, উত্তর কুন্তে উদ্ভিজ্জ দলিল এবং ঐশান কুন্তে তীর্বোদক স্থাপন করিবে। এই সকল না পাইলে, যাসাংরাজেতি মন্ত্রপাঠ-পুরদের নদীদলিল নিক্ষেপ করিবে।

अमस्त्र वक्रगरमवरक पूर्मिक्दप्रिक्षिमस्त निर्मा-ৰ্জ্মন ও নিৰ্মান্তন করিয়া, ভাঁহার নেত্র উন্মালিত ও মধুর ত্রমদহায়ে ঐ চক্ষু জ্যোতিঃপুরিত করিবে। পরে গুরুকে হেমনির্মিত গো প্রদান করিয়া, वक्रगरक मनुष्राकारशेषित्रस्य शृक्षक्छ मनितन, নগু দংগচ্ছেতিমন্ত্রে গঙ্গাদলিলে,সোমোধেন্বিতিমন্ত্রে বর্বাসলিলে, দেবীরাপোইভ্যাদিমজে নির্বরস্লিলে, পক্ষাতঃ ইত্যাদি মন্তে ৰণদলিলে, উন্তিদ্ভ্য ই ভ্যাদি**মন্ত্রে উদ্ভিজ্ঞস**্ত্রিকে,পাব**মান্তা ইভ্যাদিমন্ত্রে** जीर्यनितल, चार्लाहर्का हेजानिमस्य शक्रारवा, হিরণাবর্ণেতিমান্ত্র অবজে, মালোমন্ত্রেতিমত্রে বর্ষা দলিকে, ব্যাহ্নতিদহায়ে কুপোদকে, আপো-দেবাতি বলিয়া পাঠতাসলিলে এবং বরুণনোতি বলিরা একাশীতি ঘটে স্নান করাইবে। জ:লাৰকণ ইত্যাদি মন্ত্ৰে অৰ্ঘ্য, ব্যাহ্নতি ছাল মধুপর্ক, র্হম্পতেতি বলিয়া বস্তু ও বরুণে庵 বলিয়া পশ্বির উত্রীয় এবং চামর, দর্পণ, ছত্র,: वास्त्रम्, देवस्रशासी अ शूल्शानि अनाम करित्व। शदव मुत्रबरक डिकिं - सनिमा, डिवान कतारेश, तरह রাত্তি অধিৰাদন করাইবে। অনন্তর দামিধ্যকরণ-পুরঃদর পূজা করিয়া মূলমন্ত্রে দজীবকরণপূর্বাক পুরুরা। পদাদি স্থারা অর্জনা করিবে। পরে মণ্ডপমধ্যে পূর্ববৎ অর্চনা করিয়া, কুণ্ডসমূহে मंत्रशांनि वर्षग्र्यिक द्यमानिवृद्ध भक्षामा दश्कू-চতুঞীয়-লোহন করিবে।

ভদনস্তর দিকে দিকে য্যচরুস্থাপন ও হোম করিয়া, ব্যাহ্যতি বা গায়ত্তী অথবা মূলমন্ত্র খারা এইরূপে আমন্ত্রণ করিবে;—

সূর্যায় প্রজাপতয়ে দ্যো: স্বাহা অন্তরিক্ষক: ।
তাদ্য পৃথিবৈয় দেহধুতৈয় ইহ স্বধুতয়ে ততঃ । ইহ
রতিয় চেহ রমত্যা উত্রো ভীমশ্চ রে)ফ্রক:। বিষ্ণুশ্চ
বক্ষণো ধাতা রায়ম্পোষো মহেক্রক:। অগ্রির্ধমো
নৈশ্ব তোথ বক্ষণো বায়ুরের চ।কুবের ঈশোনভোধ
ব্রহ্মা রাজা জলেখর:। তামে স্বাহেদং বিষ্ণুশ্চ তদ্বিপ্রাথেতি বলিয়া হোম করিবে। অনন্তর সোমোধেষিতি বলিয়া, ছয় বায় হোম করিবে। পরে দশ
দিকে যলিদানপূর্বক গদ্ধ ও পুস্পাদি ছারা অর্চনা
ও প্রতিমাকে মমুখাপিত করিয়া,মণ্ডলমধ্যে স্থাপন
এবং পুনরায় যথাক্রমে গদ্ধপুস্পাদি ছারা পূজা
করিবে।

অনন্তর দেশিকোত্য দিগ্ভাগে বিশ্বির পরিয়াণে জলাশ্য ও দিকভাষ্য রমণীয় এই স্থিল করিয়া, বরুণদা ইত্যাদি মজে আজাদহিত অই শত ব্যম্য চরু হোম করত শান্তিজল ব্যবহার করিবে। অনন্তর দেবস্ততে জলদেক করিয়া, দিজাবকরণবিধানান্তে গোরা ও নতনদীগান্ত্যেত বরুণের ধ্যান করিবে। পরে ও বরুণিক নন্ত্রার, বলিয়া, অভ্যর্জনাপূর্বক সামিয়া সমাচরণ করিবে এবং সচমস চরু হোম করিয়া, নাগপ্তাদি হারা তাঁহাকে জমণ করাইবে। অনন্তর আপোহিতেতি বলিয়া, মধ্জেয়াক্ত ঘটে নিক্ষেপ ও জলাশ্য়মধ্যে স্থলের করিয়া, বরুণ ও জ্বলাগুদ্ধক স্থির ধ্যান স্যাধানান্তে অথিবীজ্ব স্থান্তর স্থানিক করিয়া, বরুণ ও জ্বলাগুদ্ধক স্থির ধ্যান স্যাধানান্তে অথিবীজ্ব স্থান্তর স্থান্তর স্থানিক করিয়া, দেই জ্বা পুধিন স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থানিক স্থান্তর স্থানিক স্থান্তর স্থানিক স্থান্তর স্থানিক স্থান্তর স্থানিক স্থান্তর স্থানিক স্থান স্থান্তর স্থানিক স্থানিক স্থান্তর স্থানিক স্থ

বীতে প্লাবিত করিবে। তদনন্তর আপোষয় সমুদায়
লোক এবং তদস্তর্গত জলমধ্যন্থ ভগবান্ বন্ধণের
ধ্যান করিয়া চত্রস্র, অন্তাস্ত্র অথবা বর্ত্ত লাক্বতি
কিংবা হৃবর্ত্তিত নৃপ সন্ধিবেশ করিবে এবং আরাধনানন্তর সেই যুজ্ঞীয়-রক্ষ-সমুখিত দেবলিঙ্গ দশহস্ত যুপ কৃপমধ্যে বিশুস্ত করিবে। তাহার মূলদেশে হেমময় ফল স্থাপন করিবে। বাপীতে
পক্ষদশ হস্ত, পুন্ধরিণীতে বিংশ হস্ত, তড়াগে পঞ্চবিংশ হস্ত এবং যুপত্রক্ষেতি মস্ত্রে যাগমগুপাঙ্গণেও
ঐরপ যুপ নিখাত করিয়া, বস্ত্র ছারা তাহার
উপরে পতাকিকা বেকীন করিবে। তৎপরে গন্ধাদি
ছারা তাহার অর্জনা করিয়া, জগৎশান্তিবিধানানন্তর গুক্তকে গো,ভূ,হেম ও জলপাত্র এবং অভ্যাগত ভ্রামণ্দিগকেও ভোজনসহ দক্ষিণা দিবে।

আব্রহ্মন্তম্বপ্রান্ত যে কেই স্থানিল প্রার্থনা করে, তাহারা সকলেই তড়াগস্লিল দারা তৃপ্তি লাভ করুক, এই বলিয়া জল উৎস্থা ও পঞ্চাল্য বিনিক্ষেপ করিবে। অন্তর আপোহিষ্ঠেতি বলিয়া, দ্বিজ্পণের বিহিত শাত্তিজ্ঞল ও প্রবিত্র তীর্থোদক নিক্ষেপপূব্যক ব্রাহ্মণ্দিগকে গোক্ল দান করিবে।

সহত্র সংগ্র অশ্বমেধ ক্রিলে, যে ফল, একাহ সলিল স্থাপন করিলে, তাহা অপেক্ষা অযুতাত্ত, ফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে এবং স্থাপয়িতা স্বর্গে ও বিমানে বিহার করে; কোনকালেই নরকে গমন করে না। থেহেতু গবালি ঐ জল পান করে, সেইহেতু পাতক বিন্ট হইয়া যায়। ফলতঃ, সলিল দান করিলে, সর্ক্রদান্দল ও স্বর্গপ্রাপ্তি হইয়া থাকে।

ইত্যাথেরে মহাপুরাণে কুপ্রাণীতভাগাদিকতি চাকধন নামক-শঞাশস্তম অধ্যায় সমাধ্য।

रहेशकानलग व्यक्तांत्री

्षशि कहिरलन, शैशान् गुक्ति_य निर्का<u>श</u>ृहि দীক্ষাসমূহে অউচতারিংশৎ সংস্কার সম্পাদ্র করিবে। সেই সকল সংস্কার প্রবণ কর। গর্জা-ধান, পুংদবন, সীমন্ডোময়ন, জাতকর্ম, নামকরুণ, অনাশন, চূড়া, অক্ষচৰ্য্যত্ৰতসমূহ, বৈষ্ণবী, পাৰ্থী, ভৌতিকী, শ্রোত্রিকী, গোদান, স্নাতকত্ব, দপ্তবিধ পাক্যজ্ঞ, অফকা, পাৰ্বণশ্ৰান্ধ, আবণী, অগ্ৰায়ণী, চৈত্রী, অশ্বযুদ্ধী, আধান, অগ্নিহোত্র, দর্শ, পৌর্ণ-মাদ, চাতুর্মাস্ত, পশুবন্ধ, সোত্রামণি, অগ্নিটোম, অত্যগ্রিষ্টোম, উক্ধ, ধোড়ণী, বাজপেয়, অতি-বাত্র, আত্থোর্যাম, হিরণ্যাজিয় হিরণ্যাক হিরণ্য-মিত্র হিরণ্যপাণি হেমাক হেমাক হেমপুত্র হিরণ্যাম্ত হিরণ্যাম্ হেমজিল্ল ও হিরণ্যান্ সর্ববহজের অধ্যমের এবং সর্বভূতে দ্যা, ক্ষান্তি, ঋজুতা, শৌচ, অনাযান, নঙ্গল, অকার্পণ্য ও অম্পূহা এই অ'ি ধ গুণ, সমুদায়ে অন্টহরারিংশৎ সংক্ষার। সংক্ষার সাধ্যে মূলমত্রে শত বার হোম করিবে। এই সকল সংস্কার ছারা সংস্কৃত হইলে, ভুক্তিমুক্তিলাভ, সকলরোগনিন্দু ক্তিও দেবভাব-প্রাপ্তি হইয়া থাকে এবং দেবদেব বাহ্নদেবে জ্বপ, रहाम, शृक्षा ও शान कतिरल, अजीखेलाच मः परिठ হয়।

हेज्याद्यद्य यहान्याद्य च्यडेत्वा विश्वरणस्वाहक्यस्य । वृह्नकृत्वक्षम् व्यवद्याद्य ।

সহাপঞ্চালত্ত্ব অধ্যান্ত্ৰণ

নারদ কহিলেন, যাহা ভারা সাধক সিদ্ধিসম্পন ও রোগী রোগমুক্ত হয়, দেই ুল্ভিবেক্রিবি কীর্ত্তন করিব। ইহা দারা রাজা রাজ্য, স্থত, প্রা ও পাপক্ষয় প্রাপ্ত হয়েন। মধ্যপূর্বাদিক্রমে স্থানারত্বসম্পন্ন মূর্ত্তিকুস্তাসকল ক্যাস করিয়া, তৎ-সম্প্ত সহস্রাবর্তিত বা শতাবর্তিত করিবে। পরে স্থাপে মণ্ডলে ঈশানভাগে পীঠমধ্যে বিফুকে পূজা-পুরংসর সন্নিবিউ এবং সাধকাদিকে শকলীকৃত করিয়া, পূজা ও গীতাদিসহকারে অভিষেক এবং খোগপীঠাদি প্রদান করিবে। তৎকালে শুরু শিষ্যকে গোপনে সময়সকল উপদেশ করিবেন।

> ইত্যায়েল মহাপ্ৰাণে আচাৰ্য্যাভিষেক নামক স্থাপঞ্চাৰৎ অধ্যায় সমাথ্য ৷

অফীপঞ্চাশত্তম অধ্যায়।

নারদ কহিলেন, মন্তলের মধ্যপদ্মে ব্রহ্মার,
পূর্ববপদ্মে অঙ্গন্থিত অজনাভির, আগ্রেষপদ্মে
প্রকৃতি, যাম্যপদ্মে প্রুষ্থের, প্রুষ্থের দক্ষিণে
নৈয়তে বহ্নির, বাকণে অনলের, সৌম্যে আদিত্যের, ঐশানে য়ক্ ও যত্র এবং ষোড়শকপদ্মে,
সাম, অথবর্ব, আকাশ, বায়ু, তেজ, জল, পৃথিবী,
মন, শ্রোত্র, স্বক্, চক্ষ্, রসনা, আণ, ভু ও ভূব
এই ষোড়শ পদার্থের পূজা করিষা, পরে চতুবিংশতি পদ্মে যথাক্রমে মহর্লোক, জনলোক,
তপোলোক, সত্যলোক, অগ্রিকৌম, অত্যগ্রিফৌম,
উক্থ, ষোড়শী, বাজপেয়, অতিরাত্র, আপ্রোর্যাম,
মন, বৃদ্ধি, অহক্ষার, শব্দ, স্পর্শ, রপ, রস, গন্ধ,
জীব, মনোধিপতি, অহংতত্ব, প্রকৃতি ও শ্বদমাত্র
এই চতুর্বিংশতির পূজা করিষে।

শানন্তর রজঃপাত করিবে। তাহার প্রকার বলিভেছি, প্রবণ কর। কর্ণিকা পীতবর্ণ এবং রেথাসকল সমান ও শেতবর্ণ হইবে। শুক্লবর্ণে

পদ্ম, কৃষ্ণ বা ভাষে বর্ণে সন্ধিদকল, কেশরসকল ब्रक्टभी उदर्व ७ ८कांन मकत ब्रक्ट वर्र्स शृंदर ध्वरः যোগপীঠ সর্ব্যপ্রকার বর্ণে ভূষিত করিবে। এই রূপ, লতাবিতানপত্রাদিতে বীথিকা হুশোভিত, পীঠয়ারে শুরু রক্ত ও পাতসহায়ে শোভাবিধান এবং নীলবর্ণে উপদোভা সম্পাদন করিবে ৷ অন-ন্তর দিতরক্ত ও কৃষ্ণবর্ণে ত্রিকোণ, রক্তপীতে দ্বিকোণ, কুঞ্চবর্ণে নাভি ও চক্র এবং পীতরক্তে অর সকল বিভূষিত করিয়া, বাহুদেশে দিত, শ্যাম, অরুণ, কৃষ্ণ ও পীতরেখা সকল বিন্যন্ত করিবে। শালিপিফীদি ছারা শুক্লবর্ণ, কৌস্কুম্ভাদি ছায়া রক্তবর্ণ, হবিজা ছাবা হারিজবর্ণ ও দগ্ধ ধান্ত দ্বারা ক্লেবর্ণ এবং শ্মীপত্ত দারা শ্যামবর্ণ প্রস্তুত করিতে হইবে। লক্ষ্ণ জপ দারা বীজ সকলের, চতুলক দারা মন্ত্রসমূহের, এক দারা বিদ্যালকলের প্রযুত দারা বুদ্ধবিদ্যার ও সহস্র জপ দারা স্তোত্রসকলের **শুদ্ধি হইয়া** शांदक ।

যাহা দারা মন্ত্রজনিত ফলপ্রাপ্তি হয় সেই
মন্ত্রধ্যান কীতন করিব। শব্দময় সুলরপকে বাহ্
বিগ্রহ বলে এং জ্যোতিময় সৃক্ষরপকে হাদ ও
চিন্তাময় কহে। আর, চিন্তারহিত রূপ পররপ বলিয়া পরিকার্ত্তিত হইযা থাকে। তন্মধ্যে বরাহ সিংহশক্তির প্রধানতঃ স্থুলরপ বাহ্মদেবের চিন্তারহিত রূপ এবং অন্তান্ত অবতারের রূপ হাদ্যি ও
চিন্তাময়। তথাহি, স্থুলরপকে বৈরাজ, সূক্ষর্বকে লিঞ্চিত ও চিন্তারহিত রূপকে ঐবর

যাহা বীজ, বীজাত্মক ও ভ্যোতিংম্বরূপ, করু-নাশ ও হ্রাদরহিত এবং যাহা কদম্মুম্নের ভারে আকার্যস্পন্ন, হুৎপুওরাকে বিবাদমান সেই চৈত- ন্যের খ্যান করিবে। ঐ চৈততা আকাশ পাতাল
কর্ম মর্ত্র দর্ববিশাসী ও দর্ববেগ। উহারই প্রভাবে
বিখের সন্তা, ক্রুর্ত্তি প্রকাশ ও প্রতিভাগি সম্পর
হইতেছে। যোগিগণ একাগ্রন্থনে ঐ চৈতন্যের
খ্যান করেন। অণিখা ও লঘিমা প্রভৃতি অইবিধ
সিদ্ধি ঐ চৈতন্যের প্রাণব। জপ ধ্যান ও মন্ত্রনিষ্ঠ
পুক্ষ সম্যুগ্রন্থ যোগতেল দেহসমীরণ জয় করিয়া
মন্ত্র কন ভোগ করে।

ইত্যায়েরে মহাপুশানে মণ্ডলা ধার্ণন নামক আই-পঞ্চানত অধ্যায় স্বাস্থা।

উন্ধঞ্চিত্র অগ্রার।

্ অটি কহিলেন, ঋক্যজুও সাম বঁহোব রূপ, শব্দ খাঁহার দেহ, সমস্ত সংগারে খাঁহার ব্যাপ্তি ও আছিতি, সকল পৰাৰ্থ ই বাঁহাৰ স্বৰূপ, দেবগণ শীশার নিতা অনুরত, সতা বাঁহার গুণ, দেই जमानारमव व्यवस्था श्रीमतरक नमकात, अह প্রকার মন্ত্রমহাতে যাণস্থানে প্রবেশ ও তাহা ভূষিত করিবে। অনস্তর মণ্ডল লিখন ও দাব প্রমায यात्रम्यानि बाह्रन, ह्युभन व्यक्तानन, वर्षा बहन, व्यर्व मिलात श्वाद श्वाद प्रमापि (धाकन कतिया. ছারবাগ স্বারম্ভ ও তোরণপালদির্গের বিশেষ পূজা ক্রিবে। পরে অব্ধ, উত্তর, বট ও প্লক এই गकल पूर्वानिग वृक्त, आहीनितक देखरागान्त शक, যমন্ত্র বন্ধু ও শাম,তোরণাতর্বাতী পতাকাসমূহ, ও ঘটৰর এই সকংশর নামে নংযে প্রভাকে ভারে कार्कना कतिया शृद्धनिटक शृर्वभूकत, मक्तिएव धारनम ও নন্দন, বীরদেন হুষেৰ এবং দৌ ম্যা সম্ভব,প্রভব ও দ্বারপালগণের আরাধনা করিবে। অনভর অক্সজপুপকেশপুর:সর বিশ্ব সকল উৎসংরিত

করিয়া প্রবেশ ও ভৃতত্তির বিবার 🙉 বিভাস পূৰ্বক কৃতমুদ্ৰ হইয়া কট্ডানাত্ত ভিগাৰপ লক্ষা-धानाट छ निरक निरक नर्भनकत विरक्षण अवर विक् দেশমন্তে গোমুত্র, সকর্ষণমতে প্রেটারার প্রজ্ঞারমতে পর ও ডক্ষাতদরি এবং নারায়ণ ব্যন্ত ব্যন্ত প্রচেশ করিবে। এই সকল ভ্রব্যাহ্রভগতের একরে করিলে, शक्ति नारम केनाकक रहेगा थाएक 🕒 अहे नाक-গবোর একাংশ মন্তপটেশ্রাক্ষণ ও একালে ব্রালানের জনা আহরণ করি**রা দশ দ্বেজ-ইন্দ্রানি।ব্যোরপা**ল-গণের পূজা করিকে। : এবং পুজাতে কাঁহানের ও হরির আজা তাহণপূর্বক যাগে দ্রকার্মণাঞ্জারকণ ও বিকির্গকল বিকির্গ করিয়া, ঐশান দিকে কুত্ত ও বৰ্জনী স্থাপন করিবে। সেই কুম্মে অস সহিত হরির অভ্যক্তনা করিয়া, বর্জনীছে; সংস্কের পুজা করিবে। व्यवस्थत व्यव्स्थिता वर्षकीः महात्यः योगग्रहत চতুর্দিক অভিধিক করিয়া, স্থিরাসনে কুছের পূজা করিবে। পরে গদ্ধাদি ধরে। পৃঞ্চবত্ব ও বজ্ঞ মণ্ডিত কুল্লে নারায়ণের ও ছেমগর্ফ বর্দ্ধনীতে অস্বে পূজা করিয়া, তংশমীশে বাজনক্ষী ও ভূণিনায়কের অর্জনা করিবে। **অন্তর্যা সংক্রনভা** দিতে বিফুর সাম্বিধি সমাধা কলিয়া স্বত্থাণে নঘটী নিত্রণি পূর্ণ কুম্ম স্থাপনপূর্বাক পাদা, স্বর্থ্য, व्याहमनीय, शक्षाया ध्वर व्यशामिकतार में शक्षावाक ও জলাদি নিক্ষেপ করিবে।

দ্ধি, ক্ষীর, মধু ও উক্ত ক্ষেত্র, লালেরে, এই
চারি অস। আর পরা, ভামাক, দুর্বা, বিষ্ণু
পরী, পাদা, যব, গদ্ধকর ও। ক্ষত এই আটটা
অর্য্যের অস। কৃশ, নিবার্ত্তি, শৃশ্যু ও বিল
এই সকল অর্থা এবং ক্ষম । কৃশ্যু ক্রিয়ালয়ক
আচমনীয় প্রদান করিয়া। গ্রহারে পঞ্চায়ত ক্রবোগে নারায়ণকে ক্ষান করিয়া। গ্রহার ৪ ডুক্কালে ক্রা

ভাগত কৃত্ব বারা তাহার দক্তকে শুব লগ নিকেপ, কলস হইতে বিনিংস্ত সেই জল স্পর্ণ এবং পরিত্র তারে পান্ত অর্থ্য ও আচমনীর দান করিয়া পদিয়ারী তরীর অস পরিমার্জন পূর্বক বন্ত্র পরাইরা দিয়া মাওলে লইরা ঘাইবে। এবং তথার প্রাণ সংযেশকৃর্বক তাহার অর্জনা করিয়া কৃতা বিতে হোম করিবে। পরে হস্তবর প্রকালন-পূর্বক পূর্বাগ্রমানিনী তিন রেখা, দক্ষিণ হইতে উত্তরাহে পানিনা অপর তিন রেখা এবং উত্তরাগ্র-গানিনা অন্যতর রেখাত্ররে অর্থাসনিলে সম্যক্রপে প্রাক্ষণ করিরা যোনিসুদ্রা প্রদর্শন করিবে ।

অনন্তর অগ্রিরপ ধ্যান করিয়া, কুণ্ডমধ্যে অগি নিকেপ করিবে। পরে প্রণীতাপ্রোকণী-পাত্রে প্রাগায় কুশ নাাস ও জল দারা প্রণীতা পরিপুলে পূর্বাক ভগবানের ধ্যান ও পূজা করিয়া প্রণীতাকে দ্রেণ্য সকলের মধ্যে অগ্রভাগে স্থাপন क बिर्व । अम् छत ८ शक्ति पेरक कल पूर्व ७ मरिए गर অর্চনা করিয়া দকিণে স্থাপনানন্তর অগিতে চরু প্রেপণ ও দ্রেকাকে দক্ষিণে বিন্যন্ত করিবে। পরে কুণাস্তরণপূর্বক পূর্কাদি দিকে পরিধি স্কাপন अ गर्छ। धानामि बाता रेवश्ववीकत्र विधान कतिरव। গভাষান, পুংদ্বন, দীমজোম্যন, জাতকৰ্ম, নাম-করণ, চুড়া হরণ, অরপ্রাশন ও সমাবর্তন এই আট আহুত প্রদান করিবে। পরে পূর্ণাছতি বিধানান্তে কুওম্বো ঋতুমতা লক্ষীর চিন্তা করিয়া হোম করিতে হুংবে। কুগুলক্ষীকে ত্রিগুণাত্মিকা প্রস্থৃতি বলে। এই দক্ষারপা প্রকৃতিই যাবভায় বিদ্যা ভ মন্ত্রপ এবং ভূতসমূহের বোনি। খার, অগ্রি দাকাং মুক্তিদাতা ও মুক্তির কারণ পরমাজা। **छेदात्र नित्र पूर्विविटक, वार्**चन टकाल्, कक्यांबर्ग

লগান ও আংগ্রভাগে, কুগু উদর, বোনি থোনি
এবং মেথলা গুণত্তমন্ত্রপা, এই প্রকার চিন্তা
করিয়া, মৃষ্টিমৃত্রাসহযোগে পঞ্চাধিকদশ সমিধ
আছতি দিবে। পরে মূল মস্তে আজ্যভাগ ঘারা
হোন করিয়া, ব্যাহ্যতিসহায়ে পল্লমধ্যক্ষ সংস্কৃত
বাহ্নর ধ্যান করিবে। সেই বৈক্ষব বহিনর সপ্তজিহ্লা, প্রভা সূর্যাকোটির সমান এবং চক্র তাঁহার
মূধ ও সূর্য্য তাঁহার লোচন। অনন্তর মূলমস্তে
অন্ত শত হোন করিবে।

ইড্যায়েরে আছিমহাপুরাপে অল্লিকার্যাকথন নামক উনব্যান্ত অধ্যার সমাধ্য ১

যঞ্চিতন অধ্যার।

নারদ কহিলেন, যাহা দারা সর্বাভীষ্টসিদ্ধি ছয়_,সেট স্টাক্ষাবিধি কীর্ভন করিব। দশগীতে সমস্ত যাগদ্র সংগ্রহ করিয়া মণ্ডলে অব্দর্যের নারায়-ণের যাগ করিবে। ঐ সকল দ্রুণ্য নার্লিংছ মস্ত্রে শত বার সম্মন্ত্রিত করিয়া বিন্যাস করিতে হইবে। পরে ফট্ উচ্চারণ পূর্বক দকল দিকে রক্ষোদ্ম সর্যপ সকল নিক্ষেপ ও প্রাসাদরূপিণী সর্ব্বাত্মিকা শক্তি ন্যাস করিয়া সর্ব্বৌষ্ধি স্মাহরণ ও বিকির্গকল অভিমন্ত্রিত করিবে। অনন্তর বাহ-দেবাদি মন্ত্রে তৎসমস্ত উত্তানহস্তে নিক্ষেপ করিয়া পূর্বসুথে আদীন হইয়া, তিন বার ছদয়মধ্যে বিফুর ধান ও বর্জনী সহিত কুন্তে অঙ্গসহ তাঁহার সমাগবিধানে পুলা করিবে। পরে অস্ত্রদহারে শভ বার অভিমন্ত্রণপূর্বক অভিমেধারায় বর্জনীসেচন ও ঈশানাস্তে আনয়ন করিবে এবং কলস্গ্রহণপূর্বক পুঠভাগে বিকিরোপরি স্থাপন ও তৎসমস্ত সং**হরণ** করিয়া, দর্ভসমষ্টি যারা কুল্লেশ ও কর্করীর পূজা

क्तिर्त । अनस्त पश्चिनमध्य भक्तम ७ वर्ष-मक्षिण नाताशालत भूजा कतिया, चित्रगरवाच भूर्य-বং সমুক্তপসহকারে ভাঁহার অর্চনা করিবে। পরে পুণরীক মন্ত্রে প্রকালন ও অন্তর্বিলেপন-পূর্বক হুগদ্ধি আরু ও গোক্ষীরে উধাসম্পূরণ ও वाक्ट (प्रवासि मटक काटनां हन किया, महर्सभान হ**ন্তে আ**ঞ্জানংস্পৃত্ত ততুল मक्न মুৰ:স্কৃত कीस নিকেপ ক্রিবে প্রত্যন্ত্রাদি এব: মস্তে দতী বারা উত্তমরূপে উহা আলেড্ন ও ধীরে ধীরে সংঘট্টন করিয়া, পকা হইলে, অনি-রুদ্ধাদিমন্ত্রে উত্তারিত করিবে। পরে প্রকালন ও আলেপনপূর্বক ভস্ম দারা উদ্ধপুণ্ডু বিধান করিয়া উল্লিখিত স্থশংস্কৃত চরু প্রত্যেক পার্খে নিবণন कतिरव। उৎकारन के इक्षत्र क्रकांग रानवंडारक, দিতীয়ভাগ কলদকে এবং তৃতীয়ভাগে আহতি ত্ত্রর প্রদান করিয়া, চতুর্থ ভাগ আত্মবিশুদ্ধির জন্য, প্রকুশিবো ভক্ষণ করিবে।

ইত্যাদি কাষ্য দকল সমাপ্ত ছাইলে, আচমন
ও পূজাগারে প্রবেশপূর্বক অর্চনানস্তর বিষ্ণুকে
দক্ষিণমুখে পূর্বভাগে স্থাপন করিয়া বক্ষামাণ
বাক্যে নিবেদন করিবে, হে দেব! দংশারদাগরমগু পশুগণের পাশুমুক্তির জনা ভূমিই একমাত্র
আপ্রয়া হে ভক্তবংসল! ভূমি রূপা করিয়া,
সর্বাদা পশুস্করপ মানবগণের মোহপাশ ছেদন
করিয়া থাক। ভোমা ভিন্ন পাশমুক্তির দিন্তীর
উপায় নাই। হে দেব! অনুমতি কর, আমি
ভোমার প্রসাদে এই দকল পশুর মোচন করিব।
ইহারা প্রাকৃত পাশবদ্ধনে একান্ত বহু মুইয়াছে।

এইপ্রকার নিবেদনান্তে সম্প্রবিষ্ট হইদা, পশু-দিগকে পূর্ববৈৎ ধাবণাদারা সংশোধন, স্থলনাদি দারা সংক্রণ, মূর্ক্তি দারা সংযোজন ও নেত্রক্ষন পুন্দক প্রকাশ করিছে। করাজাল লালাল পুনি পুনি পুনি নিজেপ ও ভরাম প্রেলিরা, করিবা, পুনিবং ধরাজালে অন্তর্ম আর্কনা করাইবং । তা মুর্ভিতে পুলা পতিত হইবে, ভাষার লিমানালে তাহার নাম নির্দেশ করিতে হইবের । নামানির বিষ লীন হর, যাহা হইতে নিমানার করিবা, করাজালে বিষ প্রতিতিত হর, নেই প্রকৃতি, করাজালে বির প্রতিতিত হর, নেই প্রকৃতি, করাজালে করিত রক্তবর্ণ লিগুলীর প্রতিতা করিরা, করিবাল প্রকৃতিক পালাকাল রাছার লাবং নেই সূত্র ক্রপার্শে পরাব্যবেশ্য নিহিতে, করিবে। ইত্যাদি ব্যাপার সমস্ত সম্পান হইবে, অধিবাদসমাধানপূর্বক যথানিরমে ভক্ত শিষ্যকে দীক্ষিত করিবে।

অধুনা দীকা ও হোমাদিদাধন প্রয়োগমন্ত্র কীর্ত্তন করিব।

ওঁ যং ভূতানি বিশুদ্ধং হং ফট্। ইত্যাদিমন্তে তাড়ন ও বিযোজন করিবে।

ওঁ যং ভূতাভাপাতয়েহং। ইন্ডাদি মন্ত্রে আদান সমাধানান্তে, প্রকৃতি বোজন করিবে। প্রবণ কর।

ওঁ যং ভূতানি পুংশ্চাহো।

অত.পর হোমমন্ত্র ও পূর্ণাহুতিমন্ত্র কীর্দ্ধন করিবে। যথা,

ওঁ ভূতানি সংহর স্বাহা। ওঁ সং ওঁ. মধ্যো ভগৰতে বাহুদেবার বেষ্টি।

ধীমান্ প্রাক নমোতে ক্ষীশ্লহালে ভাড়নারি প্রংসর এইরূপে ধ্বাক্রনে সম্ভঃ ভাড় সংশোধন করিবে।

ওঁ বাং কর্মেজিয়াণি। ওঁ লেং বৃদ্ধীজিয়াগি।

র্ভিং শক্ষতকাতে বিষ্কার হং ফট্। ওঁস শ্লাহিংহা। ওঁ সংকংক এক্ত্যা। ওঁ হংহং প্রতিমাতে সংহর কাহা।

খনন্তর উত্তরে পূর্ণান্ততি প্রয়োজিত হইরা থাকে।

ওঁ বাং রসভনাতে। ওঁ ডেং রপভনাতে। ওঁ রং স্পর্করাতে। ওঁ এং শক্তনাতে। ওঁ ভং নমঃ। ওঁ গোং অহকারঃ। ওঁ নং বুদ্ধ। ওঁ ওঁ প্রকৃতে।

সংক্রেপে এই দীক্ষাযোগ প্রকীর্তিত হইল।
নববুংহাদিকে এই প্রকাবই প্রয়োগ হইয়া থাকে।

ইতাংগ্ৰেছে মহপুৰাৰে সভাৰীকাকগ্ৰন।মক ষ্টিত্ৰ অধ্যাহ সমাপ্ত।

এক্যফিট্র অধ্যার।

্ষারপালদিশের পূজাবিধানপূর্বেক গুলুদেশে প্রবেশ ও সমাকর্বান্তে ধারণা করিবে। পরে পূর্বাণি বাদিত বস্ত্র আভরণ ও গ্রাদি দ্রুণ্য এবং নির্মাল্য সমস্ত্র নিংগারিত করিয়া, দেবস্থাপনানতর তাঁহার পূজা করিবে। পঞ্চায়ত, কষায় ও শুদ্ধাবদাদক সমন্তিশ্যহারে পূকাধিবাদিত বস্ত্র, গদ্ধ ও পূকা প্রদান এবং নিত্যবং আগৃতে আহতি দিয়া, দেবত র নিকট প্রাণনা ও প্রণাম করিবে। তং কালে ভগবান্কে সমস্ত কর্মা নিবেদন করিয়া, নৈমিতিক গজা বিধানান্তে এই প্রকার প্রার্থনা করিবে, হে কৃষ্ণ। হে কৃষ্ণ। তোমাকে নমস্কার। পনিত্রীকরণজন্য এই বর্ষপূচাকলপ্রদ পবিত্র প্রদান করিছেছ, গ্রহণ কর এবং স্থামি যে স্কৃষ্ণ করিয়াছি, ভাহা হইতে স্বান্থ আমাকে

পবিত্র কর। হে ইংরেশর! হে দেব। ছুমি পবিত্রস্বরূপ ও শান্তস্বরূপ এবং অপাপবিদ্ধ শুদ্ধ-সন্ত্র মহাপুরুষ। তোমার প্রসাদে অন্য আমি পবিত্র হইব।

व्यवस्त्र क्लोगुमट्स व्यासा ७ लविछ धरः বিফুক্স্ত, এই সকলের অভিষেক ও সমাগ্ৰিধানে ८ शाक्त गुर्वक ए ए रम मोर्टि ग्रम क ब्रिट थकः तकारकारिम क्रिने पूर्विक याञ्चल छ अवान्तक अहे বলিয়া পৰিত্ৰ প্ৰদান করিবে, ছে সংসারনিয়ন্তা সর্বশক্তিমান্ পুরুষোত্তম ! স্বামি কর্মপরিপ্রণ ও দোষশান্তির নিমিল এই যে ত্রহাসূত্র কল্পনা করিয়াছি, গ্রহণ কর। অনস্তর বহ্নিতে যথাবিধি হোম ও তন্মধ্যবন্তী বিষ্ণু প্রভৃতি দেবতাকে সবি-শেষ অর্জনাদহকারে পবিত্র প্রদানপূর্বক মূলমন্ত্র অনুসারে প্রায়ণ্ডিতের জন্ম পর্ণাছতি দিবে। পরে পঞ্চোপনিষদসহায়ে অটে। বর শত হোম कतिया, अहे अका कि हिर्देत, एहं एतर । एहं इन्ह-বৎসল ! আমি এই মণিবিক্তনমালা ও মন্দার-কুন্তুমাদি মারা তোমার সাংবৎদরী পূজা করি-তেছি। হে গরুড়ারজ! তুমি যেমন সতত কৌস্তভ ও কঠে বনমালা ধারণ কর, তেমনি আমার প্রদত এই পবিত্র তন্ত্রসমূহ ও পদ্ধা হৃদয়ে বহন কর। হে দেব! আমি নিয়মপ্তাসময়ে काम् छः वा सकाम छः विधिवत्य विद्यत्वाल किस्रा, যাহা করিয়াছি, তাহা পরিপূর্ণ হউক ; **তুমি সকল** মঙ্গলের মঙ্গল ও সকল কারণের কারণ। **তোমার** প্রভাবে চক্র সূর্য্যের গভি নিয়মিত হইয়াছে। বারু যথাবিহিত প্রবাহিত হইতেছেন এবং অগ্রির অন্নিত্ব বিহিত হ্ইয়াছে। তুমি রূপা করিয়া, আমার দকল পোষ দকল অপরাধ ও দকল জেটি মাৰ্জনা কর।

এইথকার প্রার্থনা, গ্রাণান ও করা বিকা করিয়া, কণীয় মন্তকে পৃথিত্র অর্পণ করিছে। অনস্তর দক্ষিণাসহ বলিদানপুর্বকে আক্ষণনিশকে এক বিধান ও বন্তাদি প্রদানপূর্বক আক্ষণনিশকে এক দিন বা এক পক্ষ ভোজন করাইবে। ক্লানকালে পবিত্র অবভারণ করিয়া, সমর্পণ করিবে এবং অনিবারিত অন্ধ দান করিয়া, পরে স্বয়ং ভোজন করিবে। পরে বিসর্জন দিনে সবিশেষ পূজা করিয়া, এই বলিয়া পবিত্র বিসর্জন করিবে। হে পবিত্র। আমি ভোমাকে বিসর্জন করিবাম। ভূমি যথাবিধি আমার এই সাংবংসরী পূজা সম্পান্দন করিয়া ইদানাং বিফুলোকে গমন কর।

আনন্তর পোষ ও ঈশর এই উভয়ের মধ্যে বিশ্বক্সেনের পূজা করিয়া, সবিশেষ আর্চনাসহকারে রাহ্মণকে পবিত্র প্রদান করিবে। সেই পবিত্রের যতগুলি তন্ত, তত্ত্বগুসহক্র বিষ্ণুলোকে বাস হইয়া থাকে এবং অধন্তন দশ, উদ্ধাতন দশ ও শতকুল উদ্ধার করিয়া, বিষ্ণুলোকে স্থাপন পূর্বাক অয়ং মৃক্লিলাভে সমর্থ হওয়া যায়।

ইত্যাধেরে সহাপ্রাণে বিস্পৃথিজারোরণ নামক একবাইতম অধ্যায় সমাধ্য।

দিষ্ঠিতম অধ্যায়।

্ অমি কহিলেন, নৃসিংহমন্ত্রে জপ ও অক্রসহায়ে রক্ষা এবং সম্পাতাত্তি হারা অভিষেক করিয়া, পবিত্র সকলের অধিবাসন করিবে। পরে তংশদত বস্ত্রসভিত ও পাত্রন্থ করিয়া, অভিমন্ত্রণ প্রংসর একবাব কি তুই বার বিন্ধাদিদলে প্রোক্ষণ করিয়া লইবে। অনন্তর কুন্তপান্থে স্থাপন ও রক্ষা বিধান করিয়া, সম্বর্গাদিমন্ত্রে পূর্ববিদিক

नचकार्छ ७ मानगर, श्राप्तामा কণ্মতিল অনিক্রমানিময়ে, বাস্ক্রীয়েক इंडिका, नाजाश्रगाविता मानाविता मानीविता জনাদিমত্তে ক্ষামিতে, কুমুন, ও ব্যাচনা একঃ ক্ষা महारम खेणानिमटक थुन, निशामहारम केनकरक भूक्ष अवः कवनविज्ञास्यः साम्हासारम् , तिराक्षमान् জল,অক্ত, দধি ও দুৰ্কা স্থাপন ক্ষরিবে। ভদ**নস্ক** ত্ৰিসূত্ৰে গুৰুষেইৰ ও পুৰুষায়, নিদ্ধাৰ্থ- নিকেপ कतिया, शृक्षाक्रम अनुगाद्य अहे विशेषा विकृ কুন্তে বারপাল প্রভৃতিকে, প্রবিত্ত, প্রায়ৰ, ক্রিবে, আমি এই বিফুতেজসমুদ্ধ বা সর্কাপাজ্ঞ বিনাশন, সর্ব্ধকামপ্রদ, পর্মমনোজ্ঞ পবিত্র অলে ধারণ করিতেছি। পরে ধুপদীপাদি বারা বিধিৰৎ পূজা করিয়া, বারসমীপে গমনপূর্বক 👊, 🐙 🗷 অক্ষতোপেত পৰিত্ৰ অৰ্পণ কৰিবে। এই পৰিব্ৰ সাক্ষাৎ বিষ্ণুর ভেক ও মহাপা**ডক রিমাশ ক্**রিয়া থাকে। আমি উহা বর্মকামার্থনিতির জন্য স্বীয় আছে ধারণ করিতেছি। এই ধলিয়া, স্মালয়েন, পরিবারাদিতে ও গুরুকে পবিত্ত গান ক্রিয়া, গন্ধাদি ভারা বিশিক্টরূপে অর্কনানকর বিশুক্ত গন্ধ, পূত্ৰ ও সক্ততাদিসম্পন্ন পৰিয়ে মাধ্য ক্ষিত্ৰিৰে। उৎकारन अहे अकार्त कि**रांड होरेय, चानि नाहे** বিফুতেজসমূহ ত, সর্বাপাতকবিদাশন, শর্কিশার্ প্রদ্ পর্মমনোজ্ঞ পবিক্ত অব্দে ধারণ করিতে

অনন্তর বহিন্দ ভগবান্কে পৰিত্র দান ক্ষীয়া, এই বলিয়া ভাঁহার নিকট প্রার্থনা ক্ষীরে, হে দেব! ভূমি কীরোদসাগরগর্ভে মহান্যুগলবায়ে শয়ন কর। আমি প্রাতঃকালে ভোঁমার পূজা করিব। হে কেশব! সারিধ্যে অধিষ্ঠান কর।

অনন্তর ইপ্রাদি অফাভ দেববর্গ ও বিকুর পার্ষনগণের পূজা করিয়া, বিশুর শুনোভাগে বাসযুগ্ধ, গোরোচনা, চন্দ্র, কাশীর ও গন্ধাদিজল এই সকল জব্যে অলক্কত কুন্ত গঞ্চপুল্পাদিতে ভূষিত করিয়া, বিষ্ণুর অত্যে গ্লমন্তে পূজা করিতে ভূষিত করিয়া, বিষ্ণুর অত্যে গ্লমন্তে পূজা করিতে ভূষিত করিয়া, বিষ্ণুর অত্যে গ্লমন্তে পূজা করিতে ভূষিত করিয়া, বিষ্ণুর অত্যে গ্লমন্তি বিলিপ্ত মণ্ডলত্ত্বে যথাক্রমে পঞ্চান্য, চরু, দস্তকাঠ, পুরাণ্ডাবণ, স্তোত্রপাঠ ও রাত্তিজ্ঞাগরণ করিবে।

> ইত্যাশ্লের আদিমহাপুরাণে প্রিকাধিবাস নামক ধ্রিষ্টিতম অধ্যয় স্মাপ্ত।

ত্রিষ্ঠিতন অব্যার।

অয়ি কহিলেন, সংক্ষেপে সমস্ত দেবতার পবিজারোহণ তাবণ কর। পবিতা সর্কালকণে ক্ষিত হওয়া বিধেয়।

• হে জগদ্যোনে! পরিশার সমভিন্যাহারে আগমন কর; আমি নিমন্ত্রণ করিভেছি। প্রতিঃকালে তোমাকে পবিত্র প্রদান করিব। তুমি জগতের স্টেকর্জা, তোমাকে নমস্কার। এই বর্ষ-পূজাকলপ্রদ পবিত্র গ্রহণ করিয়া, আমারে পবিত্র কর। আমি পবিত্রীকরণজন্যই ইহা প্রদান করি-ভেছি। হে শিবদেব! তোমাকে নমস্কার। এই পবিত্র গ্রহণ কর। হে বেদবিৎপতে! মণি, বিজ্ঞমন্যালাও মন্দার কুমুন প্রভৃতি ভারা এই সাংবৎদরী পূলা প্রদান করিভেছি, গ্রহণ কর। ভোমার প্রসাদে আমার সর্বাদোব ও সাম্বিপৎ লান্ত ছউক। হে পবিত্র! তুমি আমার এই-প্রকার সাংবৎদরী পূলা থলাবেধানে সম্পাদন করিয়া, স্ট্রামীং স্বর্গলোকে গমন কর। আমি ভোমার বিস্কুলন করিলাম।

্ 🚓 সূর্ব্যদেব ! তোনাকে নমফার। আমার

এট পবিত্র গ্রহণ কর। আমি পবিত্রীকরণজন্য ইহা প্রদান করিতেছি। একবর্ষ পূজা করিলে, যে ফল, ইহা দারাও সেই ফললাভ হইয়া থাকে। হে শিব-দেব! তোমাকে নমস্কার। তুমি ইহা গ্রহণ কর।

হে গণেশর । তোমাকে নমস্কার । তুমি আমার দর্ববিপাপপ্রকালনপূর্বক আত্মশুদ্ধিদাধনার্থ এই বর্ষপূজাফলপ্রদ পবিত্রে গ্রহণ কর ।

হে শক্তিদেবি! তোমাকে নমস্বার। পবিত্রীকরণার্থ বর্ষপূজাফলপ্রদ এই পবিত্র গ্রহণ কর।
আমি এই নারায়ণময় ও অনিরুদ্ধময় বর্ষপূজাফলপ্রদ সূত্র তোমাকে সংপ্রদান করিতেছি।
আমি এই ধন, ধান্য, আয়ু ও আরোগ্যজনক কামদেবময় ও সংকর্ষণময় উৎকৃষ্ট সূত্র ডোমাকে
সম্প্রদান করিতেছি। আমি এই বিদ্যা, সন্ততি,
সোভাগ্য ও স্থপ্রদ এবং ধন্ম, কাম, অর্থ ও
নোক্ষজনক বাস্তদেবময় বরসূত্র সম্প্রদান করিতেছি। আমি এই সংসারসাগরপারসংঘটক,
সর্বাপ্রদ ও সর্বাপাপবিনাশক বিশ্বরূপময় সূত্র
তোমায় দান করিতেছি। আমি এই অতীত ও
আনাগত বংশসমৃদ্ধারের হেতুভূত বরসূত্র ডোমায়
সম্প্রদান করিতেছি।

ইভারেরে মহাপ্রাণে সক্ষদেরপ্রিত্তাবোহ-রিধি নামক তিয়ন্তি চন ক্ষায়ে সম্ভে।

চ ভুঃ ফি তম ভাষ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, ত্রন্ধান্। প্রাসাদমধ্যে যে রূপে যে দেবতার স্থাপন করা কর্ত্তি, বলিতেছি, প্রবণ কর।

পঞ্ায়তনন্ধ্যে বাস্থ্যেক, স্বাগ্রেয়ে বামন,

নৈশ্তি নরদিংহ, বায়ব্যে ছয়গ্রীব ও ঈশানে বরাহন্তি ছাপন করিবে। অথবা মধ্যে নারায়ণ, আরেয়ে অন্ধিকা, নৈশ্তি ভাক্ষর, বায়ব্যে ত্রকাও ঈশানে লিঙ্গপ্রতিমা প্রতিষ্ঠিত করিবে। কিংবা মধ্যে বাহুদেব, পূর্বাদিতে বামনাদি ও নবধাম সমূহে ইন্দ্রাদি লোকপালগণের ছাপন করিবে। অথবা পাঁচটা আয়তন করিবা, মধ্যে পুরুষোভ্রম, পূর্বে লক্ষ্মা ও বৈপ্রবণ, দক্ষিণে মাতৃগণ, পশ্চিমে ক্ষন্দ, গণেশ, ঈশান ও সূর্যাদিগ্রহসমন্ত, উত্তরে মহন্তাদি দশ অবতার মূর্তি, আরেয়ে চিওকা, নৈশ্তি অন্ধিকা, বাষ্থ্যে সরস্বতা, ঈশানে পদ্মা, অথবা মধ্যে নারায়ণ বা বাস্ত্রদেব এবং ত্রেয়োদশ আলয়েয় মধ্যভাগে বিশ্বরূপ ও পূর্বাদিতে কেশ্বাদি প্রতিমা স্থাপন করিবে।

মৃথায়ী, দাক্ষয়ী, লোহময়ী, রক্সম্থা, শৈলম্থী, গদ্ধম্যী ও কুজ্মম্থা, এই দাতপ্রকার প্রতিমা নির্দিন্ট আছে। তন্মধ্যে মৃথ্যা, গদ্ধম্যী ও কুজ্মম্থী প্রতিমা তৎকালমাত্রপুজিতা ও সর্বিকাম ফলপ্রদা ইইয়া থাকে।

তক্ষণে শৈলমথী শিলার লক্ষণ ও উহা যেগানে পাওয়া যায়, বলিব। পর্বত শিলা অভাবে ভূগর্ভশিলা গ্রহণ করা যাইতে পারে। পাওয়, অরুণ, পীত ও কৃষ্ণবর্ণ শিলাই প্রশস্ত। এইপ্রকার বর্ণের শিলাপ্রাপ্তি ভূর্বট হইলে, সিংহ-বিদ্যাসহায়ে বর্ণাদ্যাপাদন হোম করিবে। তাহাতেও কার্যাসিদ্ধি না হইলে, প্রতিমার্থ বনে গিয়া, বন্যাগে প্রস্তুত্ত ইয়া, তথায় খনন ও উপলেপনপূর্বক্ষ ওপে হরির অর্জনা করিবে।পরে বলিদানপূরঃ দর টকাদি কর্মশাস্তের পূজা ও শালিতোয়েহাম করিবে। তোমে করিয়া অন্ত্রসহায়ে শিলা প্রোক্ষণ করিবে। অনন্তর পূর্ণান্ততি সমাধানাত্তে

এই বলিয়া, ভূতবলি প্রদান করিবে, যে এই স্থানে যাতৃধান, গুহুক ও দিদ্ধ প্রভৃতি অক্যান্ত ধে সকল প্রাণী অবস্থিতি করিয়া আছেন, আমি উাহাদের সকলেরই বিহিতবিধানে পূজা করিয়া, ভাঁহাদের সকলেরই নিকট কমা প্রার্থনা করিতেছি। তাঁহারা অনুগ্রহ করিয়া এস্থান হইতে একণে অপক্ত হউন। বিফুর প্রতিমান্থাপনজন্ম তাঁহারই আজায় আমরা এই বনে আদিয়াছি। বিফুর জন্ম যে কার্য্য হইণে, তোমাদের জন্মও তাঁহাই হইণেক। আমি যে এই পূজা দিতেছি, ইহাতেই তোমরা সর্ব্বথা প্রীত হও। এবং এই স্থান ত্যাগ করিয়া, সম্বর যথাম্বথে অন্ত প্রস্থান কর।

ইত্যাদিবিধানে প্রবোধ প্রদান করিলে, উল্লি-থিত ভূতসকল তৃপ্ত হইয়া, যথাস্থা তথা হইতে অন্তত্ত গমন করিবে। তথন শিল্পিণের সহিত চক্র প্রাণনপূর্বকে রাত্তিতে এইরূপ স্থামন্ত্র জপ করিবে, ও নমঃ সকললোকায় বিফবে প্রভাবিদ্বে। বিশ্বায় বিশ্বরপায় স্থাধিপত্য়ে নমঃ। আচক্ষ দেবদেবেশ প্রস্থান্তিবান্তিকম্। স্থান স্বাণি কার্যাণি হাদিস্থানি তু যানি মে॥ ও উল্লেখ্য ফট্ বিহুবে স্বাহা।

এইপ্রকার মন্ত্র জপানন্তর শুভ স্বপ্ন দেখিলে, শুভ ঘটিয়া থাকে। অশুভ স্বপ্ন দেখিলে, দিংহ-হোমপুরংদর প্রাতঃকালে শিলায় অর্য্য দিয়া, আস্ত্র দারা কুদ্দাল,টক ও অভাত্ত অস্ত্রের পূজা করিবে। তৎকালে আত্মাকে বিষ্ণু ও শিল্পীকে বিশ্বকর্মা-স্থরূপ চিন্তা করিয়া বিষণাত্মক শস্ত্র দান ও মুখ-পৃষ্ঠাদি প্রদর্শন করিবে। অনন্তর শিল্পী ইন্দ্রিয়-গ্রাম সংযত করিয়া, টক হন্তে চতুরক্র শিলাবিধান পূর্বক পিণ্ডিকার জন্য কিঞ্চিৎ ন্যুন কল্পনা করিবে। পরে ঐ শিলা রথে শ্বাপন ও বস্ত্রবেউন- পূর্ব্বক কারুগৃহে আনয়ন করিয়া, পূজান্তে প্রতিমা নির্মাণ করিবে।

> ইত্যাপ্লেমে মহাপুরাণে ভৃতলাজ্যাদিবর্গন নামক চতুঃষ্টিতম অধ্যায় সমপ্তে।

পঞ্চাষ্টিতম অধ্যায়।

ইবার কহিলেন, ওঁ গুহুক্জিকে হং কট্
মম সর্বোপদ্রবান্ যন্ত্রমন্ত্রন্তর্ভূপপ্রয়োগাদিকং যেন
কৃতং কারিডং কুরুতে করিষ্যতি কার্য়িষ্যতি
তান্ সর্বান্ হন হন দংখ্রীকরালিনি হৈং হ্রীং হং
শুহুক্জিকায়ে যাহা। হ্রীং ওঁ থে বোং গুহুকৃজিকায়ে নমঃ।

द्वीः मर्क्स करका ज्या कर्ना क्रूक विशेष छः। ७ त्थः थाः मर्क्स करणकती ७ कर्ना का ज्या । ७ त्थाः मर्क्स करस्य नि थेः थः त्थाः का ज्या । कः और कीः औः द्वीः तकः यत्वः तक तक द्वः करे द्वीः नमः।

ওঁ ব্রাং কে বচ্ছে কে কো ব্রীং ফট্নবেয়ং দ্রিত। পুনভেরোর্চিতাজয়ে।

ত্রীং দিংহায়েত্যাদনং স্থাৎ ত্রীং কে হালয়মীরিতন্। বচ্ছেথ শিরদে বাহা ছরিতায়াঃ শিরঃ
ছাতঃ॥ কৈং ত্রীং শিথায়ৈ বৌষট্ স্থান্ভবেৎ কেং
কবচায় হং। হুং নেত্রেয়ায় বৌষট্ ত্রীমন্তঞ্
ফড়স্তকন্। ত্রীং কারী খেচরী চণ্ডা ছেদনী কোভণী
ফিয়া। কেমকারী চ ত্রীং কারী ফট্কারী নবশক্তয়ঃ। ছাথ দ্তীঃ প্রবক্যামি প্রাা ইন্দ্রাদিগাশ্চ ডাঃ।

ব্রীং নলে বহুতৃণ্ডে চ খণে ব্রীং খেচরে স্থালিনী স্থল থ থে ছ ছে শববিভীষণে চ ছে চণ্ডে ছেদনি করালি থ থে ছে কে খরহাঙ্গী ব্রীং। কে বর্কে

किशित ह एक दूर कृ एक की बिक तो कि मां कः ही र एक दि एक एक विकास विकास भूषि शूषि एपात हर करे जन्मा दिना भरता।

পুনরায় ছরিতার গুহাস ও তত্ত্ব সকল বলি-তেছি। হীং হুং হঃ ছরিতার হাদয়, হোং হ শিরঃ, ফাং জ্লজ্ল ইত্যাদি শিথা, ইলে হুং হুং হুং বর্দ্ম, ক্যোং ক্ষ্থীং নেত্র এবং ক্ষোং ছরি-তার অস্ত্র। অনন্তর ফট্ অথবা হুং থে বচ্ছে কেঃ হুীং কেং হুং ফট্।

ব ঈশ, ছে মনোম্মানী, মক্ষে তাৰ্ক, ছীং মাধব, কেং ত্ৰহ্বা এবং হুং আদিত্য।

> ইত্যাবেরে মহাপুরাণে ছরিতাপুজাদিনামক পঞ্চতিম অধ্যার সমাধা।

ষট্ ষঞ্চিতম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, পৃথিবীতে বে দকল বর্ধ আছে, তন্মধ্যে ভারতবর্ধ অন্যতর। মহারাজ হুলান্তের পুত্র মহাভাগ ভরত এই বর্ষের প্রতিষ্ঠাতা, তাঁহার নামেই ইহার নামকরণ হইয়াছে। ভরত বিবিধ অলোকিক গুণগ্রামের আধার ও মূর্ত্তিমান্ধর্ম এবং পুণ্যের সাক্ষাং জন্মভূমি ও শরীরিণী বদান্সতা বলিয়া বিধ্যাত ছিলেন। তাঁহার নাম করিলে, পরমপুণ্যক্ষার পাপরাশি প্রকালিত হইয়া থাকে।

তাহার প্রতিষ্ঠিত এই ভারতবর্ব পৃথিবীতে ও দেবলোকে সমান বিখ্যাত ও দবিশেষ গোর-বের আধার। স্বয়ং জগবান এই ভারতবর্বে বিবিধ আকারে অবতীর্ণ হইয়াছেন। তজ্জ্য ইহার নাম কর্মজ্ম বলিয়া, সর্বতে বিখ্যাত। এই ভারতে জন্মহর্পপূর্বক যে রাজি কর্মের অনুষ্ঠান করে,

তাহার জীবন, জন্ম শরীর সকলই রুধা। এই । স্থানে কর্মানুষ্ঠান করিলে, স্বর্গ ও অপবর্গ লাভ हहेबा थाकि। এইজন্ত কেই ইহাকে স্থার্ম ও কেই মোকভূমি বলিয়া থাকেন। এই বর্ষ সমুদ্রের উত্তরে ও হিমালয়ের দক্ষিণে প্রতিষ্ঠিত এবং বিবিধ রমণীয় পদার্থের উদ্ভব ক্ষেত্র ও আধার স্থান। মহেন্দ্র, মলয়, সহু, শুক্তিমান্, হেমপর্বত, বিদ্ধা, পারিপাত্র এই দাঁডটি পর্বাত ইহার কুলপর্বাত। এই দকল পর্বতে বিবিধ অন্তুত ও মনোরম পদার্থের অধিষ্ঠান লক্ষিত হইয়া থাকে। ইদ্ৰদ্বীপ, কলেৰু, তাত্রবর্ণ, গভস্তিমান্, নাগদীপ, দৌম্যা, গন্ধর্ব, বারুণ ও ভারতবর্ষ লুইয়া সর্ববশুদ্ধ নয়টা দ্বীপ। তন্মধ্যে ভারতবর্ষ মহাদাগরে বেষ্টিত। এই মহা-সাগর বিবিধ রভের আধার। এই ভারতবর্ষের পরিমাণ নয় সহজ্র যোজন এবং দক্ষিণ হইতে উত্তর পর্যান্ত ইহার বিস্তার দ্বি সহত্র যোজন। সর্ববশুদ্ধ ইহা নয় ভাগে বিভক্ত। ইহাতে কিরাত. যবন ও ব্রাহ্মণ প্রভৃতি নানাজাতির ব্রাহ্মণগণ বেদপাঠনিরত, ইক্টনিষ্ঠ ও বিবিধ-গুণবিশিষ্ট। অন্যান্য জাতিও যাহার যে গুণে অল-कुछ। এই বর্ষে অনেক নদী আছে! তন্মধ্যে বিন্ধ্য হইতে নৰ্মদা,সহ্য হইতে তাপ্তী ও পয়োঞ্চি (शामायती, जोमतथी, कृष्णत्या ७ जनामा नमी, মলয় হইতে কৃতমালাদি,মহেন্দ্র হইতে ত্রিদামাদি, ভক্তিমান হইতে কুমারাদি, হিমালয় হইতে চক্ত-ভাগা প্রভৃতি নদীর জন্ম হইয়াছে। ইহার পশ্চিমে কুরু, পাঞ্চাল ও মধ্যদেশাদি প্রতিষ্ঠিত।—

ভগবতী জহ্ম নিশনী সকললোকপাবনী ধারা বিস্তার সহকারে ইহার মধা দিয়া প্রবাহিত হই-তেছেন। এই জাহ্নবী সাক্ষাৎ সহগুণরূপিণী, ইহার পবিজ্ঞতার সীমা নাই। ইবি স্বর্গলোক হইতে অবতরণ করিয়াছেন। বে দেশে ইহাঁর অধিষ্ঠান নাই, সে দেশ নহে।

> ইতি ভারতবর্ষ নামক বট্বটিওম অধান সমাধ্য।

সপ্তথ্যিত্তিম অধ্যার।

সম্বর কহিলেন, সর্ব্যস্ত্রবিষর্দনী ত্রৈলোক্য-বিজয়বিদ্যা কীর্তন করিব।

ওং হৃং কৃং হৃং ওং নয়ো ভগবভি দংষ্ট্ৰিণ ভীমবক্তে মহোতাক্রপৈ হিলি হিলি রক্তনেতে किलि किलि महा नियान कृतु छै विष्टा जिल्हा কুলু ওং নির্মাংদে কট কট গোনসাভরণে চিলি চিলি শ্বমালাধারিণি জাবয় ওং মহারৌক্রিসার্ত্র-চর্মকৃতাচ্ছদে বিজ্ঞ ডং নৃত্য অসিলতাধারিণি জ্রকুটিকুভাপাকে বিষমনেত্রকুতাননে বৃদামেদো-বিলিপ্তগাত্তে কহ কহ ওঁ হদ হদ ক্ৰন্ধ ক্ৰেদ ওং নীলজীমৃতবর্ণে অভ্রমালাকৃতাভরণে বিকার ওং ঘণ্টারবাবকীর্ণদেহে ওং সিংদ্রিছে অরুণবর্ণে ওং शः शैः एर दोजकाल हुः हीः शः कीः ७ हीः ष्ट्रः अः कां कर्व धः धृन धृन धः एक हः धः विक्रुनि কং কং কাং কোধরপিণি প্রত্বল প্রত্বল ওং ভামভীষণে ভিন্দ ওং মহাকায়ে ছিন্দ ওং করালিনি কিটি কিটি মহাস্তমাতঃ দর্বপুষ্টনিবারিণি জয়ে ওং বিজয়ে ওং ত্রৈলোক্যবিজয়ে ছুং কট স্বাহা।

এই ত্রৈলোক্যবিজয়বিদ্যার বর্ণ নীল, আসন প্রেত এবং হস্ত কুড়িটি। বিজয়লাভার্থ পঞ্চাল-ন্যান ও রক্তপুল্পোহার হোম করিয়া; ইহার পূজা করিবে। নিম্নলিখিত মস্ত্র পাঠ করিলে, সংগ্রামে দৈন্যভঙ্গ ইইয়া থাকে।

ওং বহুরপার গুরুষ গুরুষ ওং মোহর ওং

সর্বশক্তন্ দ্রাবয় ওং ব্রহ্মাণমাকর্র বিষ্ণুমাকর্ষয় ওং মাহেখরমাকর্ষয় ওং ইন্দ্রং টালয় ওং পর্বতান্ চালয় ওং সপ্তসাগরান্ শোষয় ওং ছিন্দ ছিন্দ বহুরপার নম:।

অনন্তর এই বলিয়া স্তব করিবে,ছে ত্রৈলোক্য-বিজয়ে ! রুদ্ররূপী মহাদেব সংহার্রূপে ভোমাকে স্থৃষ্টি করিয়াছেন, ভোমাকে নমস্কার। যাহারা অকারণ মুুষারক্ত নিপাতিত করিয়া, পৃথিবী দূষিত করে, যাহারা সিংহব্যাত্রাদি হিংস্র পশুর नाश अनोशारमहे त्वाकविष्कारह श्रवल हहेश. যুদ্ধবিগ্রহাদির অবভারণা করে, যাহাদের হৃদয় বজ্রদার্ময়, অথবা বজ্রদার অপেক্ষাও অন্যতর কঠিন পদার্থে নির্শ্নিত, তঙ্জন্ম যাহারা অনায়াদেই প্রভুত্ব বিস্তারও সংগ্রাম স্মাবিষ্কার করিয়া অবলীলা-ক্রমেই শত শত প্রাণী হত্যা করিতেও কুঠিত হয় না, আমি দেই দকল শত্ৰুজয়ের নিমিত্ত **সবিশেষ শ্রদ্ধাসহ**কারে তোমার পূজা করিতেছি, তোমাকে নমকার। তুমি আমার প্রতি, আমার প্রতিবেশীর প্রতিও আমার আগ্রীয় পক্ষের প্রতি প্রদর হইয়া, সমস্ত শক্ত বিনাশ কর, বিনাশ কর। ওং কিলি কিলি স্বাহা। ওং হিলি হিলি স্বাহা। ওং উৎকটা আমার পূর্বাদিক রক্ষা করুন। ওং ভৈরবী আমার দক্ষিণ, ওং ভীষণা আমার পশ্চিম, তং বছরূপা আমার উত্তর দিকু রক্ষা করুন। ভং তাপিনী আমার পুঠ, ত্রাবিণী আমার পাখ, नाविशे आशाद छेक, मिन्नी आशाद अधः, अर्फिनी আযার সকল দিক রক্ষা করুন। আয়ার শত্রুকুল নির্মাল ও মিত্রপক্ষ বিষ্কিত হউক। পৃথিবী শাস্ত হউক। রক্তপাত নির্ভ হউক। প্রাণিহত্যা কান্ত হটক। জ শান্তি: শান্তি: ওং।

অফ্ট ফিডিম অধ্যার।

ঈশ্বর কথিলেন, যাহার অন্ততর নাম সংগ্রাম-বিজয়া বিদ্যা, সেই পদমালা কীর্ত্তন করিব।

ওঁ ব্রীং চামুত্তে শাশানবাদিনী থটাসকপাল-হত্তে মহাপ্রেত্সমারতে মহাবিমানসমাকুলে, কাল-রাত্রিমহাগণপরিরতে মহামুথে বহুভুজে ভমকুকিঙ্কিণীঅট্টাট্টহাদে কিলি কিলি ও হুং ফট্ দংষ্ট্রাঘোরাদ্ধকারিণি নাদশকবহুলে গজচর্ম-মাংসদিধে লেলিহানোগ্রজিহের প্রার্ডশরীরে মহারাক্ষসি রৌদ্রদংখ্রাকরালে ভীমাট্টাট্রংলে স্ফুর-দ্বিত্যুৎপ্রতে চল চল ওঁ চকোরনেত্রে চিলি চিলি ওং ললজ্জিছের ওং ভীং ভ্রুকুটিমুখি স্কারভয়ত্রাসণি কপালমালাবেষ্ঠিতজ্টামুকুটশশাস্ক্ধারিণি অটাট্ট হাদে কিলি কিলি ওং হ্নুং দংষ্ট্রাঘোরাস্ককারিণি স্ক্ৰিছবিনাশিনি ইদং কক্ষ সাধ্য সাধ্য ওং শীড্ৰং কুরু কুরু ওং ফট্ ও অঙ্গুশেন শমর প্রবেশয় রঙ্গ রঙ্গ কম্পায় কম্পায় ওঁ চালয় ও রুধিরমাংস মদ্যপ্রিয়ে হন হন ওং কুট্ট কুট্ট ওং ছিন্দ ওং মারয় ওং অমুক্রময় ওং বদ্রশরীরং পাতয় ওং ত্রৈলোক্য-গতং তুঊমতুঊং বা গৃহীতমগৃহীতং বা আবে-শয় ওং নৃত্য ওং বন্দ 'ওং কোটরাফি উদ্ধিকেশি উলুকবদনে করঙ্কিণি ওং করঙ্কমালাধারিণি দহ ওং পচ পচ ওং গৃছ ওং মণ্ডলমধ্যে প্রবেশীয় ওং কিং বিলম্বদি ক্রন্মদত্যেন বিষ্ণুদত্যেন রুদ্রদত্যেন ঋষি-সভ্যেন আবেশয় ওং কিলি কিলি ওং থিলি থিলি বিলি বিলি ওং বিকৃতরূপধারিণি কৃষ্ণভূজঙ্গবেষ্টিত-শরীরে সর্ব্বএহাবেশনি প্রলম্বেটিনি জভঙ্গলয়-নাদিকে বিকটমুখি কশিলজটে ত্রান্সি ভঞ্জ ওং জ্বালামুখি স্থন এং পাত্য ওং রক্তাফি ঘূর্ণয় স্থূমিং পাত্য ওং শিরো সৃহু চকুর্মীশয় ওং হস্তপানে

গৃহু মুদ্রাং ফোটয় ওং ফট ওং বিদারয় ও তিশৃ-লেন ছেদয় ওং বজ্ৰেণ হন ওং দণ্ডেন তাডয় তাড়য় ওং চক্রেণ ছেনয় ছেনয় ৩ং শক্তা ভেনয় मरहेशा की नश se कर्निकशा शांठेश se कक्रूटमन গৃহু ওং শিরোক্ষিত্বরমৈকাহিকং দ্যাহিকং ত্যা-हिकः চাতুর্থিকং ভাকিনীস্কলগ্রহান্ মুঞ্চ মুঞ্চ ওং পচ ওং উৎদানয় ওং ভূমিং পাতয় ওং গৃহু ওং ব্রহ্মাণি এহি ওং মাহেশ্বরি এহি ওং কৌমারি এহি ওং বৈষণ্ডবি এহি ওং বারাহি এহি ওং ঐন্দ্রি এহি ওং চামুত্রে এহি ওং ব্লেবতি এহি ওং আকাশ-त्ववि अहि अः श्विमवकाविभि अहि **अः** कृक्मिकिन অভবক্ষজরি আকাশগামিনি পাশেন বন্ধ বন্ধ অঙ্গুশেন কট কট সময়ং তিষ্ঠ ওং মণ্ডলং প্রবেশয় ওং গুহুং মুখং বন্ধ ওং চক্ষুৰ্বন্ধ হস্তপাদে চ বন্ধ ष्ट्रेश्चेशन् मर्त्वान्तक ७: किट्गानक ७: विकिट्गा-বন্ধ ওং অধস্তাদ্বন্ধ ওং দৰ্কবংবন্ধ ওং ভদ্মনা পানীয়েন মৃত্তিকয়া বা দৰ্বপৈৰ্ব্বা দৰ্ববানাবেশয় ওং. পাত্য **७: हामूर७ किनि किनि ७: विरुट्ट ए: कहे** याश ।

এই জয়নাদ্মী পদমালা দকল কর্মা দর্বতোভাবে দাধন করে। দর্বেনা ইহার হোম, জপ ও
পাঠাদি করিলে, দংগ্রামে বিজয় লাভ হয়। অন্তাবিংশভুজার ধ্যান করিবে। তাঁহার চুই ভুজে অদি
ও খেটক,অপর ভুজন্বয়ে গদা ও দণ্ড,অত্য সূয়ে শর ও শরাদন, অপরন্থয়ে মৃষ্টি ও মুদার, অত্য ভূয়ে শরা ও থড়ার্গ, অপরন্থয়ে ধ্বজ ও বজ্ব, অত্য ভূয়ে দক্তি ও কুন্ত, অপরন্থয়ে ডমক ও দর্পন, অত্য ভূয়ে শক্তি ও কুন্ত, অপরন্থয়ে ডমক ও দর্পন, অত্য ভূয়ে শক্তি ও কুন্ত, অপরন্থয়ে ডমক ও দর্পন, অত্য ভূয়ে পাশ ও তোমর, অপরন্থয়ে চকা ও পনব এবং অত্য ভূই ভূজে অভয় ও মৃষ্টিকা। এই বেশে তিনি মহিনাস্থরকে তর্জন করিতেছেন। হোম করিলে,অরাতি জয় করিয়া থাকেন। ত্রিমধুসম্পন্ন তিল্ছারা হোম করিতে হইবে। এই বিদ্যা যাহাকে ভাহাকে দেওয়া উচিত নহে।

> ই ত্যাগ্ৰেমে মহাপুৰাণে সংগ্ৰামবিজয়বিদ্যানামক অষ্ট্ৰষ্টিতম অধ্যায় সমাপু।

উনসপ্ততিত্য অধ্যায়।

ঈশর কহিলেন, যাত্রাদিতে ফলপ্রদ নক্ষত্রচক্র কীর্ত্তন করিব, শ্রেবণ কর। **অন্যিন্যাদিতে**ত্রিনাড়ীপরিস্থিত চক্র অঙ্কিত করিবে। তন্মধ্যে
অধিনী, আর্দ্রা, পূর্বেফান্তুণী, উত্তরফান্তুণী, হস্তা,
জ্যেষ্ঠা, নূলা, বারুণী, অজৈকপাৎ, এই কয়টি
প্রথম নাড়ী। পুষা, ভাগ্যা, মুগশির, চিত্রা, মৈত্র,
আপ্যা, বাদব, এই কয়টি দ্বিতীয় নাড়ী। আর,
কৃত্তিকা, রোহিণী, চিত্রা, স্বাতী, বিশাখা, প্রবণা,
রেবতী ইত্যাদি তৃতীয় নাড়ী। এই নাড়ীত্রিতয়সংযুক্ত গ্রহ হইতে শুভাশুভ ফল জানিবে।

অ, ভ, কু, রো, য়, জা, পু, পু, জ, ম, পূ, উ, হ, চি, সা, বি, অ, জ্যে, মূ, পূ, উ, ঞা, ধ, শ, পূ, উ,রে, এই সপ্তবিংশতি নক্ষত্র।

> ইতাাগেরে মহাপুরাণে নক্ষত্রচক্রনামক উনসপ্ততিতম অধ্যায় সমাধা।

সপ্ততিতম অধ্যায়।

ঈশ্বর কহিলেন, শক্তবিমর্দদী মহামারী বিদ্যা
কীর্ত্তন করিব।

ওং ফ্লীং মহামারি রক্তাক্ষি কৃষ্ণবর্ণে যম-আজ্ঞাকারিণি দর্বজ্তসংহারকারিণি অমুকং হন হন ওং দহ দহ পচ পচ ওং ছিন্দ ছিন্দ ওং মারয় মারয় ওং উৎসাদয় উৎসাদয় ওং সর্বসন্ত্রশঙ্করি সর্বকামিকে হুং ফট্ স্বাহেতি।

ওং মারী হৃদয়ার নমঃ। ওং মহামারি শিরদে বাহা। ওং কালরাত্রি শিখারৈ বোষট্। ওং কৃষ্ণ-বর্ণে থং কবচায় হুং। ওং তারকাক্ষি বিদ্যুক্তিহের দর্বসভ্রত্মক্ষরি রক্ষ রক্ষ দর্বকার্যেয়ু হুং ত্রিনেতায় বষট্। ওং মহামারি দর্বস্কৃতদমনি মহাকালি অক্সায় হুং ফট।

সাধক এইরূপে মহাদেবীর স্থাস করিবে এবং
হস্তত্ত্বয়পরিমিত চতুকোণাকৃতি শবাদি বস্ত্র সংগ্রহ
ও তাহাতে বিচিত্রবর্ণ পট নির্মাণ করিয়া, কৃষ্ণবর্ণা
দেবীমূর্তি অঙ্কিত করিবে। ঐ মূর্তির তিন মূথ,
চারি বাহু এবং বাহুসকলে যথাক্রমে ধনু, শূল,
কর্ত্বা ও খট্টাঙ্গ লিখিতে হইবে। তদ্মধ্যে প্রথম
মূথ কৃষ্ণবর্ণ। তাহার দৃষ্টিমাত্র দেবী সন্মুখবর্তী
মন্মুব্যকে তৎক্ষণাৎ ভক্ষণ করেন। যাম্যভাগপ্রতিষ্ঠিত ষিতীয় মূথ রক্তবর্ণজিহ্বাবিশিষ্ট, অভীব
ভীষণ ও লেলিহান এবং দংষ্ট্রাপক্তির সান্ধিয়বশতঃ
উৎকট ও ভয়ানক। তাহার দৃষ্টিনিপাত্রমাত্রেই
হয়াদি ভক্ষিত হইয়া থাকে। দেবীর তৃতীয় মূথ
শ্বেতবর্ণ ও দৃষ্টিমাত্রেই গ্রাদি ভক্ষণ করে।

গন্ধ, পুষ্প, মধু ও আজ্যাদি দ্বারা পশ্চিমাভিমুখে পূজা করিবে। মন্ত্রন্মরণমাত্রেই অক্ষিরোগ
ও শিরোরোগাদি বিনষ্ট হয়, যক্ষ ও রাক্ষমাদিরা
বশীভূত হয় এবং শত্রুগণ বিনাশপ্রাপ্ত হইয়া
থাকে। অজ্ঞারক্তে মিশ্রিত নিম্ব কাঠে হোম
করিবে। এই প্রকার হোমপ্রভাবে হোমকর্ত্তা
ক্রোধসংযুক্ত হইয়া, যাহাকে ইচ্ছা তৎক্ষণাৎ
মারিতে পারেন, সন্দেহ নাই। শত্রুসৈন্ডের
উদ্দেশে ঐরপে সপ্তাহ হোম করিলে, সমস্ত সৈন্ড
ব্যাধিরাক্ত ও রণে ভগ্ন করিলে, সমস্ত সৈন্ড

নামে অউসহত্র সমিধ হোম করা যায়,স্বয়ং ত্রকারকা করিলেও, সে ব্যক্তির শীত্র মৃত্যু হয়। এই-রূপ রক্তবিষযুক্ত সমিধে সহত্র হোম করিলে, দিনত্রয়মধ্যেই সসৈক্তে শক্রর নাশ, রাজিকালবণে হোম করিলে, তিন দিনেই তাহার ভঙ্গ, ধররক্তে হোম করিলে, তাহার উচ্চাটন এবং কাকরক্তে হোম করিলে, তাহার উৎসাদন হইয়া থাকে।

সাধক ব্যক্তি সংগ্রামসময়ে স্বীয় শরীর মন্ত্ররূপ কবচে হ্রক্ষিত করিয়া, কুমারীদ্বয় সমভিব্যাহারে গজে আরোহণপূর্বক এই বিদ্যা দ্বারা দূরশভাদি বাদ্য সমুদায় অভিমন্ত্রিত করিবে। তৎকালে মহামারাপট গ্রহণ করিয়া, উচ্ছেদনবিধানে গ্রহত হওয়া বিধেয়। শক্রেসৈন্তের দিকে মুখ করিয়া, উল্লেখিত মায়াপট প্রদর্শনপূর্বক সেই স্থানে কুমারীদিগকে ভোজন ও পশ্চাৎ পিণ্ডিকা ভ্রমণ করাইবে। অনস্তর সাধক শক্রেসৈত্যকে পাষাণের স্থায়, নিরুৎসাহ, নিশ্চল, বিভয় ও মুহুমান চিন্তা করিবেন।

আমি ভোমার নিকট এই যে স্তম্ভ কীর্ত্তন করিলাম, ইহা যাহাকে ভাহাকে দেওয়া ধায় না।

> ইত্যাণ্ডেমে মহাপুৰাৰে মহামানীবিদ্যা নামক একদপ্ততিতম অধ্যান্ত সমপ্তে।

একসপ্ততিত্য অধ্যায়।

করিবে। এই প্রকার হোমপ্রভাবে হোমকর্ত্তা আয়ি কহিলেন, লক্ষযোজন বিস্তৃত জন্মুখীপ ক্রেণ্ডল হইয়া, যাহাকে ইচ্ছা তৎক্ষণাৎ লক্ষযোজন পরিমাণ ক্রীরসাগরে সমস্তাৎ বেপ্তিত। মারিতে পারেন, সন্দেহ নাই। শক্রুসৈন্ডের প্রকাশে প্ররমাণরকে বেন্টন করিয়া প্রতিউদ্দেশে প্ররপে সপ্তাহ হোম করিলে, সমস্ত সৈন্ড জিত আছে। মেধাতিথির সাত পুত্র এই খীপের ব্যাধিগ্রস্ত ও রণে ভয় ইইয়া থাকে। যাহার অধীশ্বর। ভাঁছাদের নাম ম্থাক্রমে শান্ত ভয়,

শিশির, হথোদয়, আনন্দ, শিখ, ক্ষেম ও জব।
ইহাদের প্রত্যেকের নামে এক এক বর্ষ আছে।
গোমেধ, চন্দ্র, নারদ, ভুন্দুভি, দোম, হুমনা এই
কয় পর্বত ইহার মর্য্যাদাশৈল। অত্ত্য ব্যক্তিমাত্রেই পবিত্রাচারসম্পন্ন। এখানে সাভটি প্রধান
নদী প্রবাহিত। জীবিতকাল পঞ্চনহন্দ্র, ধর্ম বর্ণাশ্রমময় এবং চন্দ্র উপাস্ত দেবতা। ইহার পরিমাণ
দিলক্ষ যোজন।

শালাল দ্বীপ ইহার দ্বিগুণ, হ্বরাসাগরে পরিবৃত। বপুয়ানের সপ্ত পুক্র ইহার অধিপতি।
ভাঁহাদের নাম শ্বেত, হরিত, জীমৃত, লোহিত,
বৈছাত, মানস ও হ্প্রত। ভাঁহাদের নামে বিখ্যাত
সপ্তবর্ষ এই দ্বীপে বিরাজমান। এতদ্যতীত, কৃমৃদ, অনল, বলাহক, দ্রোণ, কল্প, মহিষ ও ককুন্মান নামে সাত পর্বত এবং অনুমতী, সরম্বতী,
ক্ছু, সিনীবালী,নন্দা, রাকা ও রজনী নামে সাত্টি
প্রধান নদী তথায় প্রতিষ্ঠিত আছে। অত্তা
ব্রাহ্মণাদিবর্শ কপিল, অরুণ, পীত ও কৃষ্ণ এই
চারি ভাগে বিভক্ত। ভাঁহারা বায়ুর উপাসনা
করেন।

কুশদীপ শাল্যলদ্বীপের দিগুণ। জ্যোতিমানের পুত্র উলিজ, ধেমুমান, দৈরথ, লম্বন, ধৈর্য্য,
কপিল ও প্রভারক, ইহারা কুশদীপের ঈশর।
এখানে দ্বিমুখ্য নামে বিখ্যাত ব্রাহ্মণাদি বর্ণচতুইয়
ব্রহ্মরপের উপাসনা করেন। বিজ্ঞান, হেমশৈল,
হ্যতিমান, পুশ্পবান, কুশেশয়, হরি ও মন্দর এই
সাতটি এখানকার বর্ষপর্বত। মৃতসাপর ইহার
চতুর্দিক্ বেইটন করিয়া আছে।

ক্রোঞ্জীপ কুশ্রীপের বিশুণ। ছ্যুতিমানের দাত পুত্র ইহার অধিপতি। তাঁহাদের নামে যথাক্রমে কুশল, মনোসুগ, উষ্ণ, প্রধান, অন্ধ-

কারক, মুনি ও ছুন্দুভি এই সাত বর্ষ এখানে প্রতিভিত। তন্তির, সপ্তপর্বত ও সপ্তনদী এই দীপে সমিবিষ্ট আছে। পর্বতসকলের নাম ক্রেক্তি, বামন, অন্ধকারক ও ছুন্দুভি ইত্যাদি। এখানকার অধিবাসী বিপ্রাদি বর্ণসকল পুরুর, পুরুল, ধয়া ও তীর্থ নামে বিখ্যাত। তাঁছারা হরির উপাসক। দ্বিসাগর এই দ্বীপের চতুর্দিক বেইটন করিয়া আছে।

ক্রোঞ্ছীপের বহির্ভাগে শাক্ষীপ। জলদ, ক্মার, স্থক্মার, মন্দবক, কুশোন্তরণ, মোদকী ও ক্রম এই সাতজন ইহার অধিপতি। তাঁহাদের নামে সাত বর্ষ এবং উদয় জলধর, রৈবত, স্থাম, কোদ্রক, আন্বিকেয় ও রম্য এই সাত পর্বত ও সাতটি প্রধান নদী এথানে প্রতিষ্ঠিত আছে। এখানকার অধিবাসীরা সূর্য্যের উপাসক। তাঁহা-দের নাম দানত্রত, সত্যত্রত ও ঋতত্রত ইত্যাদি।

ইহার পর পুদ্ধর দ্বীপ, বিস্তারে ইহার বিশুণ
এবং স্বসমপরিমাণ স্বাস্থ্যাগরে বেটিত। সবলের সুই পুত্র, মহাবীত ও ধাতকি ইহার অধিপতি। ইহাঁদের নামে এখানে সুইটা বর্ব আছে।
এখানে একমাত্র পর্বত, তাহার নাম মানস।
ইহার আকৃতি কলসের স্থায়। ইহার বিস্তার ও
উচ্ছায় সহত্র যোজন। এখানকার অধিবাসীরা
দশসহত্রজীবী এবং ত্রন্মের উপাসক। এখানকার
সম্দ্রসলিলে শুক্র ক্ষণ্ড উভয় পক্ষে চত্তেরে উদ্
যান্ত সময়ে উনাতিরিক্ততার আবির্ভাব হয় না।
এখানকার ভূমি স্বাদ্দকশালিনী, বিবিশ্বতণশোভিনী, হেমম্য়ী ও জন্তবর্জিত।

স্বাতুদাগরের পর লোকালোক পর্বত, লোকালোক প্রদেশের অস্তরালে অযুত্যোজন ব্যাপ্ত করিয়া, প্রতিষ্ঠিত আছে। এই পর্যত বছ- দুর বিস্তৃত ও ধ্বেলোক অপেক্ষাও উন্নত এবং অওকটাহের বহির্ভাগে সীমানির্গয়স্ত্রপ বিধাতা-কর্তৃক স্থাপিত হইয়াছে। এই অওকটাহ লইয়া ভূমির পরিমাণ বিস্তারে পঞ্চাশৎকোটি যোজন।

> ইত্যাধের মহপুরানে শ্বীলাদিবর্ণন নামক একসপ্ততি তম অধ্যায় সমাপ্ত।

দিসপ্ততিত্য অধ্যায়।

অমি কহিলেন, ভূমির বিস্তার সপ্ততি সহস্র ও উচ্চায় দশ সহতা হোজন। ইহার অধোভাগ যথাক্রমে অতল, বিতল, হতল,তলাতল, মহাতল, রদাত্তন ও পাতাল প্রতিষ্ঠিত। ইহারা প্রত্যেকে বিস্তারে ভূমির সমান এবং পরস্পর দশসহত্র যোজন অন্তরে অবস্থিত। এখানকার ভূমি কৃষণ, পীত, অরুণ ও খেতাদি বিবিধ বর্ণে অনুরঞ্জিত এবং স্বৰ্গ অপেকাও রমণীয় উপবন্ ভবন্ ক্রীড়া ও বিহার প্রদেশ সমূহে অলক্ষত। দৈত্য, দানর ও কাদ্রবেয়গণ স্ব স্ব অনুরক্ত ও নিত্যপ্রমোদিত পুত্র, মিত্র ও কলতাদি দ্যভিব্যাহারে পর্যন্ত্থে ভত্তংস্থানে বাস করে। তত্ত্তা উদ্যান সকল বিবিধ রমণীয় পাদপরাজিতে বিরাজিত। তাহা-দের শাখাপরম্পরা হুকোমল কিশলর ও ফল-কুহুমে সেবাদিই অবনত, ভূমিত ও অলঙ্কত। ভগ-বানের তামসমূর্ত্তি শেষ ইহার অংধাভাগে বিরাজ করিতেছেন। তাঁহার গুণের অন্ত নাই, এইজন্য তাঁহার মাম অনস্ত। তিনি স্বকীয় মন্তকে এই পূথিবী ধারণ করিয়া আছেন।

ভূমির অধোভাগে নরক সকল প্রতিষ্ঠিত। বৈষ্ণবশ্য কথনই ভত্তৎ নরকে নিপতিত হন না। ভগবান্ বিষ্ণুর অকৃত্রিম আরাধনাবলে তাঁহাদের নরকজনক দোষদকল এককালেই তিরোহিত হইয়াছে। সেইজভ নরকরকল তাঁহাদের অ্দূর-পরাহত হইয়া থাকে।

পৃথিবীর যাবৎ অংশ সূর্যাকর্ত্ক প্রতিভাসিত তাবং নত বলিয়া পরিক্ষিত। হে বলিষ্ঠ। ভূমি হইতে লক্ষযোজন অন্তরে রবিমগুল, রবি হইতে লক্ষযোজন অন্তরে চন্দ্রমগুল, চন্দ্র হইতে লক্ষযোজন অন্তরে নক্ষত্রমগুল, নক্ষত্র হইতে দিলক্ষযোজন অন্তরে নক্ষত্রমগুল, নক্ষত্র হইতে দিলকে যোজন অন্তরে বুধ, বুধ হইতে দিলকে শুক্ত, কুজ হইতে দিলকে গুক, গুরু হইতে দিলকে গুরু, কুজ হইতে দিলকে ক্রে, গুরু হইতে দিলকে প্রতিষ্ঠিত ক্ষাছে। এই প্রতি তিলোক্যের উচ্ছায়সীমা।

ধ্বেব হইতে কোটি যোজন অন্তরে মহর্লোক, তথার কল্পবাদীগণ বাদ করেন। জনোলোক এই লোকের বিকোটি যোজন দূরে প্রতিষ্ঠিত। তথার দনকাদি মহর্ষিগণ বাদ করেন। জন হইতে তপোলোক আটকোটি যোজন দূর। বৈরাজনামক দেবতারা এই লোকের অধিবাদী। তপোলোক হইতে দত্যলোক ষর্বতিকোটি যোজন। তথার গমন করিলে, পুনরার জন্মিতে বা মরিতে হয় না। ক্রিইবার পর ত্রমন্ত্রাক।

মহান্দ্ধ আশ্রয় করিয়া, প্রধান স্থপদে প্রতিষ্ঠিত আছে। এই প্রধান অনন্ত স্বরূপ। ইহার অন্ত বা সংখ্যা নাই। হে মুনে। এই প্রধানই অশেষ পদার্থের হেভুভূত। এইজন্য ইহাকে পরাপ্রকৃতি বলে। এই প্রধানেই অসংখ্যাত অন্ত দকল সমৃত্ত হইয়া থাকে। অগ্নি যেমন কার্ছে, অথবা, তিল যেমন তৈলে, পুরুষ তেমনি প্রধানে প্রতিষ্ঠিত হয়েন। এই পুরুষ স্ক্রিয়াপী, চৈতন্ত-

স্করপ ও আত্মবেদন; অর্থাৎ ইনি আপনিই আপনাকে জাদেন। আর কেহ ইহার প্রকৃতস্বরূপ
অবগত নহে। অয়ি মহাপ্রাক্ত! সর্বভূতের আত্মা
স্করপ বিষ্ণাক্তি এই প্রধান ও পুরুষ উভয়কেই
আরত করিয়া আছেন। ইহারা এই শক্তির
আশ্রয় ভিন্ন থাকিতে পারে না। এই শক্তিই
পূথক্তাবে উভয়ের করিল।

● হে মহামুনে! বিষ্ণুর এই প্রধানপ্রতিপাদিকা শক্তি আশ্রয় করিবাই, 'দেবাদির জন্ম হইয়া থাকে। এই বিষ্ণু স্বয়ং ক্রন্ধ। ইহাঁ হইতেই সমস্ত জগৎ প্রাচ্ছুত হইযাছে এবং ইহাঁকেই আশ্রয় করিবা আছে। বিষ্ণুর যে জগৎশক্তি, তাহাও এই প্রধানপ্রতিপাদিকাশক্তির আশ্রিত। স্প্রি-সময়ে এই শক্তি হইতেই গুণসকলের পরস্পর সংঘর্ষ সংঘটিত হইষা, ভূত, ইন্দ্রিয় ও দেবতা-রূপ তিবিধ স্প্রি প্রাহ্নুত হইয়া থাকে। অতএব সর্বতোভাবে এই বিষ্ণুর আশ্রয় করা করিবা।

হে মুনিসভম। ভাস্করের রথ নয়সহস্রযোজন বিস্তৃত।ইহার ঈশাদণ্ডের পরিমাণ ইহার দ্বিগুণ। ইহার অক্ষ সপ্তনিযুতাধিক সার্দ্ধকোটি যোজন বিস্তৃত। উহাতে চক্র প্রতিষ্ঠিত আছে। এই চক্রের তিন নাভি, পাঁচ অর ও হার নেই। এই রূপ অয়নদ্বয়াত্মক সংবৎসরময় কৃৎস্থ কালচক্র প্রতিতিত আছে। হে মহামতে! ভাস্কররপের দ্বিতীয় অক্ষের পরিমাণ সার্দ্ধপঞ্চতারিংশৎ সহস্র যোজন গায়ত্ত্যাদি সপ্ত ছন্দ এই রথের সাতটি অশ্ব। হে স্থাত বিশ্ব বিশ্

সপ্তর্ষিশুলের উদ্ধেতিরে যে ছানে এব প্রতিষ্ঠিত আছেন, ভাহাই তৃতীয় বিষ্ণুপদ। এই পদ পরম জ্যোতিয়ান্ ও দিব্যভাবে অলম্ভা। গাঁহাদের দোষপক্ষ এককালেই প্রকালিত হই-যাছে, সেই যতিগণের ইহাই উৎকৃষ্ট আশ্রেম-ছান। যাঁহার মারণমাত্রে সমস্ত পাতক বিনফ্ট হয, সেই ভগবতা গলা এই বিষ্ণুপদ হইতে প্রাত্ত-ভূত হইয়াছেন। হে প্রভো! ভগবানের শিশু-মারাকৃতি রূপ স্বর্গমণ্ডলে প্রতিষ্ঠিত আছে, জা-নিবে। ধুব ঐ শিশুমারের পুচ্ছে ভ্রমণপূর্বক গ্রহদিগকে ভ্রমণ করাইতেছেন!

আদিত্যের রথে দেবগণ, ঋষিগণ, গন্ধর্বগণ, সর্পাণণ ও রাক্ষসগণ অধিষ্ঠিত আছে। ভগবান্ রবিই হিন,উষ্ণ ও বারিবর্ষণের কারণ এবং ভিনিই সকলের শুভাশুভবিধাতা ও শ্লাক্বেদাদিময় বিষ্ণু-স্বরূপ।

সোমের রথ তিচক্র। তাহার দশ অশ্ব বামে দক্ষিণে যোজিত। তাহাদের বর্ণ কুন্দসন্ধিত। সোম এই রথে আরোহণ করিয়া, বিচরণ করেন। তায়স্তিংশৎ সহত্র তায়স্তিংশৎ শত তায়স্তিংশৎ শেবতা এই চক্রকে পান করেন। তামধ্যে পিতৃগণ এক কলা ভক্ষণ করিয়া থাকেন। চক্রপুত্র বুধের রথ বায়্য়িরের্সসন্তুত এবং অন্ট, তুরগে পরিচালিত। বুধ এই রথে আরোহণ করিয়া, বিচরণ করেন। এই রূপ শুক্র, ভৌম, রহস্পতি, শনি, স্বর্ভান্ম, কেতু সকলেরই রথ অন্টামেক পরিচালিত।

হে বিপ্র! এই পর্বতাদিশালিনী পদ্মাকৃতি বহুদ্ধরা দাক্ষাৎ বিষ্ণুর দেহ, কি জ্যোতিঃসমূহ, কি ভুবনমগুল, কি নদী, পর্বতে, সমুদ্র ও বন, সম স্তই বিষ্ণুর স্বরূপ। এরপ কার্য্যের স্বরূতান

করিবে, যাহাতে সত্য, জ্ঞান ও অনস্তস্থরূপ বিষ্ণুতে লীন হইতে পারা যায়।

> ইতাথেরে মহাপুরাণে ভূবনকোবনামক হিসপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত।

ত্রিসপ্ততিতম অধ্যায়।

ঈশ্ব কহিলেন, ওং ডে থ খ্যাং সূথ্যায় সংগ্রামবিজয়ায় নমঃ। হৃবাং হৃীং হৃ্ং হেং হেণি হৃঃ। এই ছয়টি, সংগ্রামে বিজয়প্রদ সূর্য্যের প্রধান অঙ্গ। ওং হং খং খাশোক্লায় স্বাহা। ক্ষুং হৃুং হুং ক্রেং ওং হ্লাং ফ্রেং।

প্রভূত বিমল দার পরমন্ত্য এবং ধর্ম, জ্ঞান, বৈরাগ্য ও ঐম্বর্যাদি অউপদার্থের পূজা করিয়া, পরে অনস্তাদন, দিংহাদন, পদ্মাদন, কর্ণিকাকেশর, দ্র্যাদোমাগ্রিমণ্ডল, অমোঘ বিদ্যুৎ, দর্বতোমুখী নবমী, দত্ব, রজ, তম, প্রকৃতি, পুরুষ, আত্মা, অন্তরাক্সা ও পরমাত্মা এই দকলের ওস্কারসংযোগে অর্চনা করিবে। উষা, প্রভা, দদ্যা, মায়া, অন্তরারপাল, স্বয়ং দ্র্যা, চণ্ড, প্রচণ্ড, এই দকলেরও গশ্ধকাদি দ্বারা পূজা করিতে হইবে। জপ ও হোমাদিপুরনের পূজা করিলে, যুদ্ধাদিতে বিজয়লাভ হইয়া থাকে।

ইত্যাধেয়ে মহপূরাণে সংগ্রামবিক্যপূজানামক তিমপুতিভয় অধ্যায় সমাপু।

চতুঃসপ্ততিতম অধ্যায়।

ঈশর কহিলেন, হোমপ্রভাবে যুদ্ধানিতে বিজয়লাভ, রাজ্যপ্রাপ্তি ও বিশ্বনাশ হয়। প্রাণা-য়ামসহকৃত কৃচ্ছুসহায়ে শুদ্ধিসমুৎপাদনপূর্বক

অন্তর্জনে গায়ত্রী জপ করিয়া, পূর্ব্বাহ্নে ধোল বার প্রাণায়াম ও অগ্নিতে য়তহোম করিষে। ভিকা-লব্ধ যাবক ভক্ষণ, অথবা ফলমূলাশন, কিংবা ক্ষীর শক্তব্ন হাতাহার অথবা একাহার আপ্রয় করিবে। হে পার্বিতি! যাবৎ লক্ষ হোম সমাপ্তি না হয়, তাবৎ এইরূপ নিয়ম অবলম্বন করিবে। লক্ষহোম শেষ হইলে, গো, বস্ত্র ও কাঞ্চন এই সকল দ্রব্য দক্ষিণা দিবে। সর্ব্বোৎপাত্তসমূৎপত্তিতে পঞ্চদশ ব্রাহ্মণসহায়ে এই হোম করিবে। পৃথিবীতে এমন উৎপাতই নাই, এই হোম দারা যাহার শান্তি না হয় এবং এমন প্রমমঙ্গলজনক বিষয় নাই, ইহা অপেক্ষা যাহার প্রাধান্য আছে।

যে রাজা পূর্ববিৎ ব্রাহ্মণ দ্বারা কোটি হোম
সম্পাদিত করেন, মুদ্ধে কদাপি তাঁহার শক্রণণ
কোন মতে তিষ্ঠিতে পারে না। অথবা তাঁহার
রাজ্যমধ্যেও কথন মারক ও ব্যাধির আবির্ভাব হয়
না; অতির্ষ্ঠি, অনার্ষ্ঠি, শলভ, মুষিক, শুক,
ও রাহ্মসাদি উৎপাতসকল এবং সংগ্রামে শক্রকুল,
সমুদায়ই এই হোমবলে বিনক্ট হইয়া থাকে।
কোটি হোমে বিংশতি,শত বা সহস্রবাহ্মণ নিযুক্ত
করিবে এবং যথেক্ট ভৃতি প্রদান করিবে। ব্রাহ্মণ,
ফাত্রিয় বা বৈশ্য, যে কেহ কোটি হোম করিলে,
যাহা ইচ্ছা, তাহাই প্রাপ্ত হয় এবং স্পরীরে স্বর্গে
প্রস্থান করে। গায়ত্রী, গ্রহমন্ত্র, কুম্মান্তী ও জাতবেদসমন্ত্র অথবা ঐন্দ্র, বারুণ, বায়ব্য, যাম্য,
আগ্রেয়, বৈক্টব, শাক্তেয়, শাক্তব বা সৌরমজ্রে
হোম করিবে।

অযুতহোমে অল্পনিদ্ধি, লক্ষহোমে অধিলার্তি বিনাশ এবং কোটিহোমে সকলাভীষ্টসিদ্ধি ও সর্পণীড়াদি নিরাস হইয়া থাকে। যব, ত্রীহি, তিল, ক্ষার, মৃত, কুশ, প্রমাত্তিক, পক্ষম্প, উশীর, বিষ ও আত্রপল্লব এই দকল দ্রব্যে হোম করিতে হয়। কোটিহোমে অফ্টইস্তপরিমাণে খাত করিতে হইবেক। লক্ষহোমে তাহার অর্কিপ্রমাণ খাত বিহিত হইয়া থাকে। আজ্যাদি দারা অযুত, লক্ষ ও কোটিহোম অনুষ্ঠিত হয়।

> ইত্যাগ্রের আদিমহাপুরাণে অব্তলককোট্ছোন নামক চতুঃসপ্ততিওম অধ্যায় সমাপ্ত।

পঞ্চসপ্ততিত্ব অধ্যার।

ঈশর কহিলেন, অধুনা কপিলাপূজা কীর্ত্তন করিব। বক্ষ্যমাণ মন্ত্র দারা কপিলার পূজা করিবে। যথা,—

ওং কপিলে নন্দে নমঃ ওং কপিলে ভদিকে নমঃ। ওং কপিলে স্থনীলে নমঃ ওং কপিলে স্থনদে নমঃ ওং কপিলে স্থনদে নমঃ ওং ভুক্তিমুক্তিপ্রদে নমঃ। তুমি স্থরভির গর্ভে জিমাছ; তুমি জগতের মাতা; তুমি দেবগগকে অমৃত প্রদান কর; তুমি বরদা; আমার প্রদত্ত এই গ্রাদ গ্রহণ করিয়া, আমাকে অভীক প্রদান কর। ধীমান্ বশিষ্ঠ ও বিশ্বামিত্র ভোমাকে বন্দনা করেন। হে কপিলে। আমি যে স্কুভির অমুষ্ঠান বা পাপ করিয়াছি, তৎসমস্ত হরণ কর। গোসকল নিত্য আমার অত্যে, পৃষ্ঠে ও হৃদ্যে বিরাজ করুন এবং আমিও যেন নিত্য তাহাদের মধ্যে বাদ করি। হে কপিলে। আমার প্রদত্ত এই কবল গ্রহণ কর। তাহা হইলে, আমার প্রক্রপাপক্ষালন হইবে এবং আমার দেইও পবিত্র হইবে।

অনন্তর বিশিষ্ট রূপে বিদ্যা ও পুগুক সকলের অর্চনা করিয়া, গুরুর চরণে নমস্কার ও মধ্যাহ্ন স্থান করিয়া, অষ্টপুষ্পিকা দ্বারা শিবের পূজা করিবে। পরে মধ্যাহ্নে হুন্দররূপে লিপ্ত ভোক্তনগৃহে পাক আন্মনপূর্বক বেণ্ডিন্ত মৃত্যুক্তর মত্ত্রে
সাতবার জপ করিয়া,দর্ভ ও শুখান্থ বারিবিন্দুসমূহে
তাহাকে সিঞ্চন করিবে। অনন্তর সর্ব্বপাকাঞ্জ
উদ্ধার করিয়া, শিবের উদ্দেশে বিহিত বিধানে
নিবেদন পূর্বক যথাবিধি চুল্লাশোধনপুরঃসর,
হে শিব! ভুমিই অয়ি, এইপ্রকার ধ্যানাস্তে
বক্ষ্যমাণ মন্ত্রে চুল্লিকাগ্লিতে সমিবিই করিবে, ওং
হাং অয়িকে নমস্কার, ওং হাং চল্লকে নমস্কার।
ওং হাং সূর্ব্যকে নমস্কার, ওং হাং বহস্পতিকে
নমস্কার, ওং হাং প্রক্র্যাতিকে নমস্কার, ওং হাং বিষ্টিকৃৎ অয়িকে নমস্কার। অনন্তর পূর্বাদিতে এই
সকলের অর্চনা করিয়া, স্বাহান্ত আহ্নতি দানাস্তে
ক্মাপ্রার্থনাপূর্বক বিস্ত্রন করিবে।

অনন্তর নমংশব্দসমুক্তারণপূর্বক চুল্লীর দক্ষিণ বাহুতে ধর্মের, বাম বাহুতে অধর্মের, কাঞ্চিকাদি ভাণ্ডে রসপরিবর্ত্তন বরুণের এবং মধ্যস্তত্তে কার্ত্তি-কেয়ের পূজা করিয়া বাস্তবলিপ্রদানপূর্বক সৌবর্ণ পাত্রে অথবা পদ্মিন্যাদির দলাদিতে, ভঙ্গনা করিবে। বট, অশ্বত্থ, অর্ক, বাভাবি, সর্জ্জ, ভল্লা-তক এই সকল ত্যাগ করিবে। ভোজনকালে মৌনাবলন্থন করিবে।

> ইত্যায়ের আদিমহাপ্রাণে কলিলাদিপ্রাবিধি নামক পঞ্সগুতিতম অধ্যায় সমাপ্ত।

যট্সপ্ততিতম অধ্যায়।

ঈশর কহিলেন, অনন্তর শিবান্তিকে গমন করিয়া, হে ভগবন্! আমার এই পূজাহোমাদি গ্রহণপূর্বক পুণ্যফল প্রদান কর, বলিয়া, উদ্ভব

নাপ্লী মুদ্রাযোগে অর্য্যোদক দ্বারা স্থির চিত্তে নিবে-मन कतिरत। अनस्तत शृक्तियः भिरवत अर्फना, ন্তব ও প্রণামপূর্বক পরাধা খে অর্ঘ্য দান করিয়া, ক্ষমা কর বলিয়া, নাবাচযুদ্রাসহকারে সংহারানন্তর মূর্ত্তিমন্ত্রে লিঙ্গবোজন করিবে। অনন্তর স্থভিলে দেবপূজাসমাধানান্তে আত্মাতে মন্ত্রসংঘাতনিয়োগ-পূর্বক ক্ষ্যমাণ বিধানে চণ্ডের পূজা করিবে, 'জং চণ্ডেশানকে নমস্কাৰ, চণ্ডমূর্ত্তি ধুলিচণ্ডেশ্বরকে নম-স্কার, হৃং ফট্ স্বাহা এই বলিয়া ভাঁহাকে আহ্বান করিবে। ওং চওছদয়কে নমস্বার, হতং ফট্। ওং চও শিরাকে নমস্কার। অনন্তর হনুং ফট্বলিয়া ক্রচ ও চতাত্ত্রের পূজা করিয়া, রুদ্রাগ্রিজ চড়ের সারণ বা পূজা করিবে। ঐ চণ্ডের হস্তে শূল, টঙ্ক, অক্ষসূত্র ও কমগুলু। পরে যথাশক্তি দশাংশতঃ অন্নকলের জপ করিয়া, গো, ভূ, হিরণ্য, বস্ত্র, মণি ও হেমাদি ভূষণ বিসৰ্জ্ঞনপূৰ্ব্যক শেষনিৰ্মাল্য চত্তে**শকে নিবেদন ক**রিবে এব॰ হে চণ্ড। আমি শিবের আজ্ঞায় তোলাকে চলা, চোষ্যা, লেহা, তামূল, মাল্য, বিলেপন, নিশাল্য ও থাল্য প্রদান করিলাম। আমি যদি মোহবশতঃ কোন রূপে ন্যুনাধিক করিয়া থাকি, তোমার আজায় আমার এই সমস্ত ক্রিয়াকাণ্ড সর্পদা পরিপূর্ণ হউক। এই-প্রকার বিজ্ঞাপনান্তে দেনেশকে অর্ঘ্যদান ও সারণ করিয়া, সংহারমুদ্রাসহকৃত সংহারমূর্তিমন্ত্রে ধীরে ধীরে আত্মাতে মন্ত্রদকল যোজনা করিবেক। পরে গোমরবারি ছারা নিম্মাল্যাপনয়নন্থান লেপন এবং অল্লাদিপ্রোক্ষণ ও বিমার্জনপূর্ত্বক আচমন করিয়া অন্যান্য কাষ্য অমুষ্ঠান করিবে।

> ই গালেখে মধাপুনাৰে চন্তপূজাৰ থন নামক মন্দ্রতি এম অধ্যায় সমাপ্ত।

সপ্তসপ্ততিত্য অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, মস্থান্ত সকল কীৰ্ভনি কৰিব। প্ৰথম সায়জুব মাসু। ইহাঁর পূত্ৰে সামীপ্ৰ প্ৰভৃতি। এই মন্ভাৱে যামনামা দেবেগাণ, উৰ্বাদি সাপুৰি এবং শতক্ৰতু ইন্দ্ৰ।

ইহাবপর স্বারোচিষ মন্বত্তর।ইহাতে পারাবত । ও তুনিতাদি দেবতা, বিপশ্চিৎ ইন্দ্র, উৰ্জ্জন্তস্তাদি ব্রাহ্মণ এবং চৈত্রকিম্পুরুষাদি ইহঁার পুত্র।

তৃতীয় মতু উত্তম। ইহাতে স্থান্তি ইন্দ্র, বশিষ্ঠের পুত্র স্থামাদি দেবতা ও অজাদি দপ্তর্ষি।

চতুর্থ মন্তর নাম তাপস। ইহাঁর অধিকারে স্বরূপাদি দেবগণ, শিথিখ, ইন্দ্র, জ্যোতির্ধামাদি ব্রাহ্মণ এবং ইহাঁর খ্যাতিমুখপ্রভৃতি নয় পুত্র।

রৈবতময়ন্তেরে বিতথ ইন্দ্র, অমিতাভাদি দেব গণ, হিরণ্যরোমাদি সপুর্বি এবং প্রং এভৃতি পূজ। চাক্ষুৰ ময়ন্তরে মনোজন ইন্দ্র, ফাড্যাদি দেব-গণ, অমেধাদি সপুর্বি এবং পুরু প্রভৃতি পূজ।

ইহার পর আদিনের মন্তর অধিকার। এই । অধিকারে আদিত্য, বায়ু ও রুদ্রোদি দেবগণ, পুর লব ইন্দ্র, বশিষ্ঠ, কাশ্যপ, অত্রি, জমদগ্রি, গোতম, । বিশ্বামিত্র ও ভরদ্বাজ ইহারা সপ্তর্যি এবং ইক্ষাকু । প্রভৃতি পুত্র। এই ময়ন্তরে হরি অংশে অবতীণ । হয়েন।

অন্তম মনু সাবর্ণি। ইহার অধিকারে হৃতপাদি দেবগণ, পরমতেজন্দী দ্রোণিকাদি সপ্তবি, বলি ইন্দ্র এবং পুক্র বিরজ্ঞমুখ।

নবম মকু দক্ষদাবর্ণিনামে বিখ্যাত। এই মধ্ব-স্তরে পারাদি দেবগণ, অদ্ভুত ইন্দ্র, স্বর্ণাদি সপ্তর্বি এবং ধৃতকেতুপ্রভৃতি পুত্র। ইহার পর ব্রহ্মদাবর্ণিমন্বত্তরে স্থাদি দেবগণ, শান্তি তাঁহাদের ইন্দ্র, হ্বিষ্যাদি ঋষিগণ এবং স্থাক্ষেত্রাদি পুত্রগণ।

ইহার পর ধর্মদাবর্ণি মনুর অধিকার। এই অধিকারে বিহঙ্গাদি দেবগণ, গণ ইন্দ্র, নিশ্চরাদি দগুর্ষি ও দর্ববিত্রগাদি পুত্র।

অনন্তর রুদ্রদাবর্ণি মমুর অধিকার। ইহাতে প্লতধামা ইন্দ্র, হরিতাদি দেবতা, তপস্থাদি সপ্তর্ধি ও দেববং প্রভৃতি পুত্র।

ত্রোদশ মন্থর নাম রোচ্য। এই মম্বন্তরে সূত্রামাণাদি দেবগণ, দিবস্পতি ইন্দ্র, নির্মোহাদি সপ্তর্যিও চিত্রসেনাদি পুজ্র।

চতুর্দ্ধ মনু ভৌত্যের অধিকারে শুচি ইন্দ্র,
চাক্ষ্যাদি দেবগণ, অগ্নিবাত্ প্রভৃতি সপ্তর্বি এবং
উরু প্রভৃতি পুত্র। এই ময়ন্তরে সপ্তর্বিগণ স্বর্গ
হইতে পৃথিবাতে অবতরণপূর্বক বেদ সকল প্রবতিতি করেন; দেবগণ যজাংশ গ্রহণ করেন এবং
উরুপ্রভৃতি পুত্রেরা পৃথিবী পরিপালন করেন।

হে জন্। জনার দিবসে এই চতুর্দশ মনু
যথাক্রমে প্রাকৃতি ইইয়া, পৃথিবী রক্ষা করেন।
ছাপরযুগের শেষে ভগবান্ হরি বেদব্যাদরূপে
অবতরণ করিয়া, বেদবিভাগ করিয়া থাকেন।
আদ্য বেদ চতুম্পাদ ও শতসহজ্ঞশাখাসমন্বিত।
একমাত্র যজুর্বেরদ ছিল। তাহাকেই চারিভাগে বিভাগ করেন। তন্মধ্যে যজুসমূহে
আথর্বার, ঋকসমূহে হোত্র, সামসমূহে উদ্গাত
এবং অথব্রসমূহে আক্ষান্ত বিধান করিয়াছেন।
ব্যাদের শিষ্য পৈল ঋগ্বেদে পারদর্শী হয়েন।
ইক্র প্রমতিকে, প্রমতি বান্ধলকে, বান্ধল বৌধ্যাদিকে নিজসংহিতা চতুর্দ্ধা প্রদান করেন। তন্মধ্যে
যক্রব্রেদতকরে শাখাদংখ্যা সপ্তবিংশতি; ব্যাদ-

শিষ্য বৈশম্পায়ন ঐ শাখা কল্পনা করেন। ব্যাদের অভতম শিষ্য জৈমিনি সামবেদতরুশাখা কল্পনা করেন এবং অপর শিষ্য ভ্রমন্ত অথব্যতরুক বিভাগ করিয়া, পৈপ্যলাদি সহস্র সহস্র শিষ্যকে অধ্যয়ন করাইয়াছিলেন। আর সূত ব্যাদের প্রসাদে পুরাণসংহিতা প্রণয়ন করেন।

> ইত্যারেয়ে মহাপুরাণে মহস্কবনামক দপ্তদপ্রতিতম অধ্যায় সমাপ্ত।

অফসপ্রতিত্য অধ্যায়।

উপর কহিলেন, অতংপর ষষ্টিসংবৎসরের শুভাশুভ কার্তিন করিব, শ্রাবণ কর।

প্রভবনামক বংসরে যজ্ঞসকলের অনুষ্ঠান হয়। বিভবে লোকসকল হুখী হয়। শুক্লে সকল-প্রকার শশু সমূৎপন্ন হয়। প্রমোদে লোকসকল সর্ববিথা প্রমূদিত হয়। প্রজাপতিনামক বৎসরে সকলের সমৃদ্ধি স্মাহিত হয়। অঙ্গিরায় ভোগ বৃদ্ধি হয়। শ্রীমুখনামক কর্ষে লোকসকল বর্দ্ধিত হয়। ভাৰনামক বৰ্ষে ভাৰদমৃদ্ধি দাধিত হয়। পুরণে দেবরাজের সহায়তায় সকল কামনা পূর্ণ হয়। ধাতানামক বৎসরে সকলপ্রকার ওষধি সমুৎপন্ন হয়। ঈশবের কেম, আবোগ্য, বহুধান্য ও স্তুভিক্ষ হয়। প্রমাথীনামক বর্ষে মধ্যমপ্রকার বারি বর্ষিত হয়। বিক্রমে শস্ত সম্পদ লাভ হয়। বুসনামক বৰ্ষে দকল হুখসমৃদ্ধি লাভ হয়। চিত্ৰ-ভানুতে বিচিত্রতার আবির্ভাব **হয়। স্বর্ভানুতে** ক্ষেম ও আরোগ্য প্রাত্তভূতি হয়। তারণে মেগ দকল প্রসন্ন হয়। পার্থিবনামক বংসারে শস্ত-সম্পত্তি অতিবৃষ্টি ও জয় হয়। সর্বজিতে উত্তম বৃষ্টি ও সর্বধারীতে হুভিক্ষ সমুদ্রত হয়। বিরোধী

नाचक वर्मात (अधमकल विनके रूप्त। विक्रार यहा छत्र व्याक् कृ कि हत्। थदनामक वर्ष श्रुक्रव वीर्याणानी इय। नन्तत প্রজালোকের আনন্দ वृद्धि इप्त । दिश्यानांमक वर्भात भक्त नाम इप्त । মশ্বথে স্বরেরেরের আবির্ভাব হয়। তুকরে প্রজা-म्कन पूक्त रहा। पूर्य (लाकनकन पूर्व रहा। ছেমলম্বনামক বৎদরে সম্পদ বিন্ঠ হয়। হে মহা-দেবি ! বিলম্বনামক সংবৎদরে হুভিক্ষের প্রাচ্নভাব হয়। বিকারীতে শক্রকোপ সমূৎপন্ন হয়। প্রব-নামকবর্ষে জলপ্লাবন হয়। শোভনে প্রজাসকল সদ-মুষ্ঠানতৎপর হয়। রাক্ষদনামক বৎসরে লোকে নিষ্ঠ্র হয়। আননে বিবিধ ধান্ত সমূৎপন হয়। পিঙ্গলে কোন কোন হলে হুবৃষ্টি হয়। কালনামক বংসরে ধনক্ষয় হয়। সিদ্ধার্থে সকল সিদ্ধি সম্পন্ন ইয়। রোদ্রনামকবর্ষে রোদ্র প্রবর্ত্তিত হয়। তুর্ম-তিতে বৃষ্টিমধ্যম এবং জুন্দুভিনামক বর্বে ক্ষেম ও ধাতা সমূৎপন হয়। অবতে রুধিররৃষ্টি হয় এবং ক্ষারনামক সংবৎসরে লোকসকলের ধনক্ষয হয়। এই ষষ্টিদংবৎদর কীর্ত্তন করিলাম।

> ইত্যাথেয়ে মহাপুনানে ষ্টিসংবৎসবনামক অষ্টস্পতিত্য অধ্যায় সমাপ্ত।

ঊনাশীতিত্য অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, পাদপগণের প্রতিষ্ঠা কীর্ত্রন করিব। উহা দ্বারা ভুক্তিমুক্তি লাভ হয়। রক্ষদিগকে সক্ষোধিসলিলে সিক্ত, পিউাতকে বিভূষিত ও মাল্য দ্বারা অলক্ষত করিয়া, বস্ত্রবেষ্টিত করিবে। স্থানমী সূচী দ্বারা সকলের কর্ণবেধ করা কর্ত্তব্য। অনস্তর হেমশলাকা দ্বারা অঞ্জনাক্ত করিয়া, বেদীতে সাতটি ফল ও প্রত্যেকের উদ্দেশে ঘট দকল অধিবাদিত এবং বলি নিবেদন করিবে। অনন্তর ইন্দ্রাদির অধিবাদ ও বনস্পতির উদ্দেশে হোম করিয়া,রক্ষমধ্য হইতে গো উৎসর্গ করিবে। পরে অভিষেকমন্ত্র, ঋকষজুদামমন্ত্র ও বারুণ-মন্ত্রসহায়ে রক্ষবেদিছ কুন্তুসলিলে তরুগণের ও যজমানের স্নানবিধি সম্পাদিত করিবে। এই সকল সম্পন্ন হইলে, অলক্ষত হইয়া, গো, ভূ, ভূষণ ও বস্ত্র দক্ষিণা এবং যাবদিনচভূষ্ট্য় ক্ষীরভোজনপ্রদান, পলাশসমিধ ও তিলাদি দ্বারা হোমবিধান এবং আচার্য্যকে দিওণ দান করিবে। রক্ষ ও আরাম প্রতিষ্ঠা করিলে, পাপনাশ ও পরমসিদ্ধি সম্পন্ন হয়।

ই গ্রাথেরে আদিমহাপুরারে পাদপারামপ্রতিষ্ঠা কথন নামক উনাশীতিজম অধ্যায় সমাপ্ত)

অণীতিত্য অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, জীর্ণোদ্ধারবিধি কাঁন্ত্রন করিব। গুরু ব্যঙ্গ, ভগ ও অভিজার্ণ প্রতিমা পরিত্যাগ করিয়া, পূর্ববং গৃহমধ্যে বিবিধ অল-স্কারসম্পন্ন প্রতিমা ন্যাস করিবে। সংহারবিধির অনুসরণপূর্বক তত্ত্বসকল সংহার করিয়া,নারিদিংহ্মক্রে সহস্রহোমসমাধানান্তে তাহার উদ্ধার করিবেন। দারুমগ্নী প্রতিমাকে অগ্নিতে বিদারিত, শৈলমগ্নীকে সলিলে প্রক্রিপ্ত এবং ধাতুমগ্নী ও রত্বময়ী প্রতিমাকেও অগাধ জলে বা সাগরে নিক্ষেপ করিবে। জীর্ণাঙ্গকে বক্রাদি দ্বারা প্রচ্ছানিক্ষেপ করিবে। জীর্ণাঙ্গকে বক্রাদি দ্বারা প্রচ্ছানিক্ষ ও যানে আরোপিত করিয়া, বাদ্যধ্বনিসহকারে জলমধ্যে প্রক্রেপ ও গুরুকে দক্ষিণা দান করিবে। ঐ প্রতিমার যে পরিমাণ ও যে যে দেব্যে নির্মাণ, অবিকল তদ্মুরূপ প্রতিমা সেই দিনেই স্থাপন করিবে।

কৃপ, বাপী ও তড়াগাদির জীর্ণোদ্ধারেও মহা-ফল লাভ হইয়া থাকে।

> ইত্যায়ের মহাপুরারে জীর্বোদ্ধার কথন নামক অশীতিকম অধ্যায় সমাধ্য।

একাশীতিত্য অধ্যায়।

ঋষি কহিলেন, ত্রহানু! প্রবণ কর; স্লপ-মোৎসববিস্তর বর্ণন করি। প্রাদাদের অত্যে মগুপে ও মগুলে কুম্ভ সকল স্থাপন এবং আদিতে হরির ধ্যান, অর্চ্চন ও হোম করিবে। পূর্ণান্ত্তি প্রদান পূর্বক সহস্র বা শত হোম করা কর্ত্তব্য। অনন্তর স্নামদ্রব্য আহরণ করিয়া, কলস সক্ষ বিভাদ ও অধিবাদন সমাধানপূর্বক মণ্ডলমধ্যে সূত্রকণ্ঠ ঘটসকল ধারণ করিবে এবং চতুকোণ পুরনির্মাণান্তে রুদ্রমন্ত্রে যথায়থ বিভাগ ও মধ্য-ভাগে চরু স্থাপন করিয়া, পার্যে পংক্তি প্রমার্জন कतिरव । श्रमस्तर भागिपृर्गानि घाता शृतन कतिया, পূৰ্বাদি নবকে কুম্বনুদ্ৰা বন্ধন ও তথায় ঘট আন-য়ন করিবে। পরে পুগুরীকাক্ষমন্ত্রে ঐ সকল দর্ভ বিস্তভ্তন ও মধ্যভাগে জলপূর্ণ সর্বারত্বসম্পন্ন घर शांभन धरः श्रकें पिटक यत बीहि, जिल, मीवाइ, শ্যামাক, কুলখ, মূদল ও দিল্পার্থ যথাক্রমে বিশ্বন্ত করিবে। পরে ঐন্দ্রনবক মধ্যে ঘুতপূর্ণ ঘট ও পলাশ, অখন্থ, অংগ্রাধ, বিল্প, উচুম্বর,শিরীষ, জন্থ, শমী, কপিথ ইহাদের ছক্ও ক্ষায়সংযুক্ত অফ ঘট, যাম্য নৰকমধ্যে তিল তৈলঘট ও নারক, क्षत्रीत, श्रक्तुत, मृषिका, नातिरकल, পृश, नाष्ट्रिम ७ পলাশ নৈখত নবকমধ্যে কীরপূর্ণ ঘট ও কুকুন, নাগপুষ্প, চম্পক, মালতী,মলিকা, পুমাগ, করবীর ও মহোৎপল, বারুণ নবকমধ্যে নারিকেল ও

নাদের, সামুত্র, সারস, কোপ, বর্মন্ত, হৈন্দ্র, নৈর্মন্ত্র ও গাল সলিল; বায়ব্য নবক মধ্যে কালনীকাল, সহদেবী, কুমারী, সিংহী, ব্যান্ত্রী, অয়্তরা, বিশ্বু-পর্ণী, শতশিরা, বচা ও দিব্যোষধিসমূহ, পূর্বাদি সৌমা নবক মধ্যে দধিঘট, পত্র, এলা, অক্, কুর্ছ, বালক, চন্দনম্বর, লতা, কন্তু রিকা, ক্ষণত্রক এবং পূর্বাদিতে সিদ্ধন্তব্য, একতঃ শান্তিজল, চন্দ্রতার, গিরিসার, ত্রপু, ঘনসার, শীর্ষ ও রক্ত ক্ষরেব। মৃত্য করিবে। মৃত্য করিবে। মৃত্য করিবে। মৃত্য করিয়া, মৃলমন্ত্রে সান করাইবে। অনন্তর গন্ধাদি দারা পূজা করিয়া, বহিনতে পূর্ণান্ততি প্রদান পূর্বাক সর্বাদ্রি বিধান ও দক্ষিণাদান সহকারে ভোজন করাইবে। এইরূপে দেবতা স্থাপন করিবে। অফ্টোভর সহত্র ঘটে স্থানমহোৎসব সম্পাদন করিলে, সর্বাসিদ্ধি লাভ হয়।

ইত্যায়েরে মহাপুরাণে চপ্তপুজাক**বন নামক** একাদীতিতম সংগার সমা**র**।

দ্যশীতিত্য অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, প্রতিমা স্থাপিত ছইলে, তাহার উদ্দেশে যেরপ উৎসববিধি অনুষ্ঠান করা কর্ত্ব্য, তাহা বলিতেছি, প্রবণ কর। যে বৎসর প্রক্রান্ত্রি, প্রতিমা প্রতিষ্ঠা করিবে, সেই বৎসর প্রকরান্ত্রি, তিনরাত্রি বা আটরাত্রি উৎসব করিবে। যেহেডু বিনা উৎসবে প্রতিষ্ঠা করিলে, কোন ফলই হয় না। অয়নে বা বিষুবে শয়নোপবনে বা সৃহে দেবতার উদ্দেশে যাত্রা করাইবে। তইকালে মঙ্গলময় অনুরারোপণ ও নৃত্যুগীত কাদ্যাদি সম্পাদন করিতে হইবেক। শরাব ও ক্টিকা প্রভৃতিতে অনুরারোপণ বিশেষ উপক্রান্ত্রী ইইরা থাকে। বর,

শালী, তিল, মৃদ্যা, গোধুম, সিতসর্থপ, কুলখ, মাষ ও নিপাব সকল জলে ধৌত করিয়া,বপন করিবে এবং রাজিতে দীপসহায়ে পুরভ্রমণপুরঃদর পূর্ব্বা-দিতে ইন্দ্রাদি, কুমুদাদি ও ভূতগণের উদ্দেশে বলি প্রদান করিবে। এইরূপ অনুষ্ঠান করিলে, পদে পদেই অশ্বযেধ যজের ফল লাভ হইয়া থাকে, ভাহাতে সন্দেহ নাই।

শুরু দেবগৃহে প্রবেশ পূর্ব্বক দেবতার নিকট এই প্রকার নিবেদন করিবেন, হে দেব! হে স্থরোত্তম! আগামী কল্য তীর্থ যাতা করিতে হইবেক। আপনি এ বিষয়ে দর্ববধা অমুজ্ঞা বিধান করুন।

এই প্রকার বিজ্ঞাপনাস্তে কার্যানুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হইবে এবং প্ররোহ ও ঘটিকা সমভিব্যাহারে স্তম্ভ-চতুক্টয়ভূষিত স্থাস্ভিত বেদিতে গমন করিয়া, তথ্যপো স্থান্তিকে প্রতিমা থাস করিবে। অনন্তর লেখ্য চিত্রে স্থাপন করিয়া, তথায় অধিবাস ও বৈষ্ণবপণার সহিত মূলমন্ত্র দারা অভ্যঙ্গবিধি সমা-হিত করিবে। অথবা, সমস্ত রাজি য়তধারায় অভিষেক করিয়া, দর্শন প্রদর্শন পূর্বক গীত বাদ্য সহারে নীরাজন এবং গদ্ধপুল্পাদি দ্বারা পূজা করিবে। পরে প্রতিমা ও ভক্তগণের মন্তকে হরিছো, মূল্য, কাশ্মীর ও শুক্রচুর্ণাদি ধারণ করিলে, স্বাহ্বিতির কল লাভ হইয়া থাকে।

> ই চ)ারের বিহাপুথারে দেববারোৎসব নামক ব্যাণীভিত্য অধ্যার সমাধা।

ত্র্যশীতিতম অধ্যার।

ভশবান্ কহিলেন,সাধারণ প্রতিষ্ঠাবিধি কীর্ত্তন করিব। এই প্রতিষ্ঠা, বাস্তদেব প্রতিষ্ঠার ভাগে। আদিত্যগণ, বস্থগণ, রুদ্রগণ, সাধ্যগণ, বিশ্বেদেব- গণ, অধিনীদ্ব এবং ঋষিগণ ইহাঁদের সকলের প্রতিষ্ঠা বিশেষরূপে বলিব।

যে দেবতার যে নাম, তাহার আদ্য অকর প্রহণ করিয়া, মাত্রা ঘারা ভেদ করিয়া, দীর্ঘ অঙ্গ সকল ভেদ করিবে। প্রথমে স্বিদ্দু বীজ কল্পনা করিয়া, পরে সকলের মূলমস্ত্রে পূজন ও স্থাপন করিবে।

নিয়ম, ত্রত, কৃচ্ছু, মঠ, সংক্রম, বেশ্ম এবং মালোপবাদ ইত্যাদির স্থাপনবিধি বলিতেছি, প্রবণ কর। শিলা, পূর্ণঘট ও কাংদ্যাসন্তার স্থাপন করিয়া, ত্রহ্মকূর্চ দমাহরণ পূর্বক যবময় চরু প্রপণ করিবে। তদ্বিফো ইত্যাদি মস্ত্রে কপিলাক্ষীরে ঐরপ চরু প্রপণপূর্বক প্রণবদহায়ে অভিঘারণ ও দববী ধারা দংঘটন করিবে। এইরপে চরু প্রস্তুত ও অবতারিত করিয়া, বিফুর অর্চনাস্তে হোমকার্ব্যে প্রবৃত্ত হইবে। তৎকালেব্যাহ্যতি ও গায়ত্রাদহকৃত তদ্বিপ্রাদ ইত্যাদি মন্ত্র জপ করিবে।

এইরপে হোম করিয়া, আদরপূর্বক চরুর ভাগসকল দান ও দিগ্বলি বিধান করিবে। পরে অকশত পলাশসমিধ ও আজ্য হোম করিয়া, পুরুষসূত্তে ইরাবতী তিলাইক সম্পাদন করিবে। অনন্তর প্রক্ষা, বিষ্ণু, মহেশর ও দেবগণ, তাঁহাদের অমুযায়িবর্গ, গ্রহসমূহ, লোকেশর সকল এবং পর্বত,নদী ওস মুদ্রসকল ইহাদের উদ্দেশে আছতি দিয়া, তিনবার অন্বপূর্ণাছতি প্রদান করিবে। বৌষভ্ত বৈষ্ণবমন্ত্রে এইরপ বিধান করিবে। অনন্তর পঞ্গব্য ও চরুভক্ষণ এবং আচার্যকে হেমযুক্ত তিলপাত্র, বস্ত্র ও অলক্বত গো দক্ষিণা দিয়া, ভগবান্ বিষ্ণু আপ্যায়িত হউন, বলিয়া, প্রত্র উৎস্যা করিবে।

বিস্তার পূর্বক মাসোপবাসাদির অন্যবিধ প্রতিষ্ঠা কীর্তন করিতেছি, শ্রবণ কর। যজ্ঞ দারা দেবেশের সস্তোষ সম্পাদন করিয়া, তিল, তণ্ডুল, নীবার, শ্যামাক, অথবা যব দারা চরু শ্রপণ করিবে এবং আজ্য দারা ঐ চরু আঘারণ ও অবতারণ করিয়া, মূর্ত্তিমন্ত্র দারা হোম করিবে। তপত্তে পুনরায় মাসপাল বিষ্ণু প্রভৃতি দেবগণের উদ্দেশে বক্ষ্যমাণ মন্ত্রে হোম করিবে। যথা, ওং বিষ্ণবে স্থাহা। ওং বিষ্ণবে শিপিবিষ্টায় স্বাহা। ওং নরসিংহায় স্বাহা। ওং পুরুষোত্তমায় স্থাহা।

অনস্তর ররাট মস্ত্রে বিফুর উদ্দেশে হতসংপ্লুত দ্বাদশ অশ্বথে সমিধ হোম ও দ্বাদশ আন্ততি বিধান করিবে ৷ ইদংবিফুরিরাবতী ইত্যাদি মন্ত্রে ছাদশ আহতি হোম করিয়া, বিপ্রাদেতি মন্ত্রে তদ্বং আজ্যাহুতি হোম করিবে। পরে শেষ হোম করিয়া, তিন বার পূর্ণাহুতি বিধান ও জপ সমা-ধানাত্তে প্রণবসহকারে পৈপুপলপাত্তে চরু ভক্ষণ করিবে। পরে মাসাদিপতিগণের উদ্দেশে দ্বাদশ ত্রাহ্মণ ভোজন করাইবে। শুরু ইহাঁদের মধ্যে অয়োদশ। ইহাঁদিগকে ব্রতপূর্ত্তির জন্য ছত্র, উপানং, স্বাদ্ধ দলিল, বস্ত্র, স্বর্ণ ও মাল্য-সম্পন্ন ত্রোদশ কুন্ত প্রদান করিবে। গো সকল প্রীত হউক এবং সহর্ষে বিচরণ করুক,এই বলিয়া গোগণের গমনাগমনপথ পরিত্যাগপুর্বক প্রপ্ व्याताम, मर्ठ ७ मःकम्मनानि चटन मन इन्छ यून নিখাত করিবে। তৎকালে যথাবিধানে সর্ব্ব-প্রকারে হোম করিতে হইবেক। অনন্তর গৃহী পূৰ্বোক্ত বিধানে গৃহে প্ৰবিষ্ট হইবে।

বিচক্ষণ পুরুষ যথাশক্তি ত্রাক্ষণকে দক্ষিণা দিবেন। যে ব্যক্তি আরাম নির্মাণ করে, সে চির কাল নন্দনে বাস করিয়া থাকে। যে ব্যক্তি মঠ
প্রদান করে, সে স্বর্গে অবিদ্বিতি করে। প্রশা
দান করিলে, বরুণলোকে বাস করিতে পারা
যায়। সংক্রম নির্মাণ করিলেও বরুণলোক লাভ
হইয়া থাকে। ইউকাসেতু প্রতিষ্ঠা করিলে,
গোলোকে বাস হইয়া থাকে। পথ প্রস্তুত্ত করিয়া দিলে, গোলোকে বাস করিতে পারা
যায়। নিয়মকৃৎ ব্যক্তি সাক্ষাৎ বিষ্ণুস্করূপ, কৃত্তুকৃৎ ব্যক্তি সর্ব্যপাপ বিনাশ করে এবং গৃহকৃৎ
ব্যক্তি প্রলয় পর্যান্ত স্বর্গে বাস করে।

ইত্যাথেরে আদিমহাপুরাণে সম্বায় প্রতিষ্ঠা কথন নামক জালীভিত্য অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুরশীতিতম অধায়।

ভগবান্ কহিলেন, সভাদির স্থাপন ও প্রবর্তন-বিধি কীর্ত্তন করিব।

ভূমিপরীকা হইলে, বাস্তবাগ করিবে। পরে স্থেকামুসারে সভা করিয়া, স্বেক্টাক্রের্যে দেবতা স্থাপন করিবে। চতুম্পথে বা প্রামাদিতে সভা করিবে, শুন্ত স্থানে করিবে না। সভাস্থাপয়িতা সর্বপাপবিম্ক হইয়া, স্বীয়কুলসম্প্ররণপূর্বক পরিণামে স্বর্গে বিহার করেন। বক্ষামাণ বিধানক্রেমে ভগবান্ হরির রাজাদিবৎ সপ্তভৌম গৃহ নির্মাণ করাইবে। কোণভূক্দিগকে ফর্মন করিয়া চতুঃশাল বা ত্রিশাল, বা হিশাল, অথবা একশাল গৃহ প্রস্তুত করিবে। কোনজ্মেই বায়্বাহল্য করিবে না। ভাহাতে দোষাপতি হইয়া থাকে। আয়াধিকে পীড়া জ্বেম। তক্ষ্ম সম্বর্ষ বিধান করিবে।

ইত্যাদি কাৰ্য্য সকল সম্পন্ন হইলে, প্ৰাত:-

কালে সর্কোষধি সলিলে কৃতস্থান, শুচি গু অত-দ্রিত হইয়া মধুর স্বারা ব্রাহ্মণ ভোজন সমাধা-নান্তে গোপুঠে হস্ত দিয়া বিছাতি দারা স্বস্তি-বাচন ও দৈবজ্ঞগণের অর্চনাপুরঃদর গৃহ্মধ্যে প্রবেশ করিবে এবং তথায় প্রবেশপূর্বক সমাহিত হইয়া বক্ষামাণ পুষ্টুকর মন্ত্রপাঠ করিবে, ওং নন্দে! ভূমি বশিষ্ঠের পরিপালিতা; বহু ও প্রজাগণের দহিত আমার আনন্দ বিধান কর। ভূমি জয়া, ভূমি ভার্গবের দায়াদা, ভূমি প্রজা-গণের বিজয়াবহা, তুমি পূর্ণসভাবা, তুমি আঙ্গি-রার দায়াদা। আমাকে পূর্ণকাম কর। ভূমি ভদ্রা ও কশ্যপের দায়াদা। আমার বৃদ্ধিকে দং-পথে চালিত কর। তুমি সর্ব্বপ্রকার ওষ্ধিবীজে পরিপূর্ণ ও দর্কাপ্রকার রত্নৌষ্ধিতে পরিবৃত। তুমি পরম শোভাশালিমী ও সকলের আনন্দ-জননী। তুমি নন্দা ও বশিষ্ঠের পরিপালিতা। আমার এই স্থানে দর্কাদা বিহার কর। তুমি প্রজা-পতির পুদ্রী। তুমি দেবী। তুমি চতুরজা ও মহীয়দী। তুমি স্বভগা ও স্ববতা। তুমি কাশ্যপী। তুমি দর্ব্বভুতধরিত্রী। এই গৃহে বিহার কর। তুমি পরমাচার্য্যগণের পরমপৃজিতা গন্ধমাল্যে অলম্কতা ও ভবস্থৃতিবিধায়িনী। তুমি দেবী ও ভার্গবী। এই গুহে বিহার কর। তুমি ব্যক্তা, অব্যক্তা, পরিপূর্ণরূপা ও অঙ্গিরার ত্হিতা। ছে ইফকৈ! তুমি আমার অভীষ্ট সম্পাদন কর। আমি ভোগার প্রতিষ্ঠা করি। তুমি দেশস্বামী, পুরস্বামী ও গৃহ-স্বামীর পরিগ্রহ। মনুষ্য, ধন, হস্তী ও অভাভা পশুগণের বৃদ্ধিবিধান ও আমার সকল কামনা পুরণ কর।

> ইত্যাথেয়ে মহাপ্ৰাণে সভাগৃহস্থাপন নারক চতুরশীতিত্ব অধ্যায় স্থাপ্ত।

পঞ্চাশীতিতম অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, অধুনা, শাল গ্রামাদি চক্রাফ-প্জাবিধি কীর্ত্তন করিব। ইহা আবন করিলে, দিদ্ধিলাভ হইয়া থাকে।

ভগবান্ হরির পূজা তিন প্রকার; কাম্য, থকাম্য ও উভয়াজ্মিকা। তন্মধ্যে মীনাদ্য পঞ্চ অবতারমূর্তির পূজা কাম্য বা উভয়াত্মক। বরাহ, নৃসিংহ ও বামনের পূজা মুক্তি বিধান করে। শাল-গ্রামের পূজাপ্রকার প্রবণ কর। যাহাতে কোন-রূপ ফলকামনা নাই, তাদৃশী পূজা উত্ম; যাহাতে কল কামনা আছে, তাহা মধ্যম, আর মৃত্তিপূজা অধমপূজা।

কারে প্রাণ প্রবং কর ও দেহে ষড়ঙ্গন্যাস করিয়া, মুদ্রাজয় বিধান করিয়া, চজের বহির্দেশে পূর্বাদিকে গুরুর পূজা করিবে। অনস্তর বারুণ দিকে গণদেব, বায়বে ধাতা, নৈখতে বিধাতা, দক্ষিণে কর্ত্তা, সোম্যে হর্তা, ঈশানে বিহক্দেন, আয়েয়ে ক্ষেত্রপাল,প্রাগাদিতে ঋগাদিবেদসমূদায়, আধাররূপী অনস্ত, পৃথিবী, পীঠ, পদ্ম, অর্ক চন্দ্র, ও অনল নামক মণ্ডলজয়, আসন এবং ছাদশমন্ত্রে সেই আসনে স্থাপনপূর্বাক শিলার অর্জনা করিবে। প্রণব ছারা সকলের ঘণাক্রমে পূজা করিয়া, পরে বিষক্দেন, চক্র ও ক্ষেত্রপাল এই তিন দেবতার উদ্দেশে তিন মুদ্রা প্রদর্শন করিবে।

পূর্ববং বোড়শার সপদ্ম মগুল অক্কিন্ত করিয়া,
শন্তা, চক্র, গদা ও থড়গসহায়ে গুর্বাদির পূর্ববং
পূজা করিবে এবং বেদাদ্য মদ্রে পূর্বে ও দোম্যাদিকে বসু, বাণ ও আসন প্রদান এবং ছাদশার্ণে শিলা বিস্থাস করিবে। তৃতীয় পূজা প্রবণ
কর। অকার পদ্ম অক্কিত করিয়া, পূর্ববং গুক

প্রভৃতির পূজা করিবে এবং অন্টার্শে আসন দান করিয়া, শিলা বিন্থাস করিবে।

> ইত্যায়েরে মহাপুরাণে শালপ্রামাদিপুরাক্থন নামক পঞ্চাশীতিতম অধ্যাহ সমাপ্ত।

বড়শীতিত্য অধ্যায়।

ভগবান্ কহিলেন, চণ্ডীর বিংশতি হস্ত। তন্মধ্যে দক্ষিণ হস্ত সমূহে শূল, অসি, শক্তি, চক্রং প্রাশ, থেট, আয়ুধ, অভয়, ডমুরু ও শক্তিকা এবং বামকরসমূহে নাগপাশ, থেটক, কুঠার, অঙ্কুশ, ধকু ঘণ্টা, ধ্বজ, গদা, আদর্শ ও মুদ্দার। অথবা, চত্রীর দশ বাহু। তাঁহার অধোভাগে ছিন্নমূর্দ্ধা ও পাতিতমস্তক মহিষ। ক্লোধভারে হস্তে অস্ত্রধারণ করিয়া আছে। ঐ মহিষের গ্রীবা হইতে এক পুরুষ উদ্ভ হইয়াছে। তাছার হত্তে শূল, মুথে রক্ত বমন হইতেছে এবং তাহার কেশ, মাল্য ও পুরুষ বিংহকর্তৃক আম্বাদ্যমান। চণ্ডীর দক্ষিণ পদ সিংহের ক্ষন্তে এবং বামপদ নীচগ অহুরের পৃষ্ঠদেশে বিশ্বস্ত। এই ত্রিনেত্রা, সশস্ত্রা ও রিপু-মর্দিনী ছুর্গারূপিণী চত্তীকে নবপন্মান্ত্রক স্থানে স্থ-মূর্ত্তিতে পূজা করা কর্তব্য।

আর এক ষ্ঠির অকীদশ বাছ। তথাব্যে দক্ষিণকরসমূহে মৃত, থেটক, আদর্শ, তর্জনী, চাপ, ধরজ, ডমুক্ত ও পাশ এবং বামহন্তসমূহে শক্তি, মৃদগর, শৃল, বজ্ঞ, ওড়গ, অঙ্কুশ, শর, চক্রে ও শলাকা। অবশিষ্ট মৃতির বোড়শ বাহু। ফল্রে চণ্ডাদি নর মৃতির হতে ডমক্র ও তর্জনী ভিন্ন উলিধিত সমস্ভ অক্রই বিরাজমান। ক্রন্তেচণ্ডাদি শন্দে ক্রন্তেণা, প্রচণ্ডা, চণ্ডোগ্রা, চণ্ডনারিকা, চণ্ডা,

চণ্ডবতী, চণ্ডরূপা, অভিচণ্ডিকা ও উপ্রেচণা।
এই সকলের বর্ণ যথাক্রমে স্নোচনাভ, অরুণ,
অসিত, নীল, শুরু, পীত ও খেত। ইহারা
সকলেই সিংহের উপর আরোহণ পূর্বক আলীচা
হইয়া, মৃষ্টি দারা মহিদ্ব ও তাহার গ্রীবাসস্ভূত
শক্রশালী পুরুষের কচ গ্রহণ করিয়া, বিরাজ করিতেছেন। ইহাঁদিগকে নবহুর্গা বলে। পুল্রাদিবৃদ্ধির জন্ম ইহাঁদের প্রতিষ্ঠা করা কর্তব্য।

আদ্যচণ্ডিকা গৌরী। তাঁহার হত্তে কুন্ডী, অকর, দন্ত ও অমি। তিনিই রম্ভাবলে বিনা অমিতে সিদ্ধিলাভ করেন।

ললিতার বাম হন্তে ক্ষম্ন ও মন্তক এবং দক্ষিণ করে দর্পণ।

লক্ষীর যাম্য করে পদ্ম ও বাম হত্তে ঞীফল। সরস্বতীর হত্তে পুস্তক, অক্ষমালা ও বীণা।

কাহ্নবীর হত্তে কুম্ভও অজ, বর্ণ খেত এবং তাঁহার আসন মকর।

যমুনা শ্চামবর্ণা এবং কুত্ত হতে কুর্মোপরি আসীনা।

তুৰুক শুক্লবৰ্ এবং শূল ও বীণা**হন্তে মাতার** পুরোভাগে রুষে আরুচ।

গোরী চভূমুখী, ব্রহ্মচারিণী ও অক্ষালা হত্তে বিরাজ্যানা।

. শাহরী খেতবর্ণা ও হংসগামিনী। ইহাঁর বাস হত্তে কুণ্ড ও অক্ষপাত্র এবং দক্ষিণ হত্তে শর ঋ
চাপ।

কৌমারী দ্বিবাছকা, রক্তবর্ণা, শক্তিছন্তা ও শিথিপৃঠে আসীনা।

বারাহী দণ্ড,শন্থ,অসি ও গদা হত্তে মহিষপৃঠে অধিরাঢ়া; বাম হত্তে চক্ত এবং পাৰো গদাপদা-ধারিণ্ট লক্ষ্মী বিশ্বাসমানা। ইন্দ্রাণী সহত্রলোচনাও বাম হত্তে বক্সধারিণী।
চামুণ্ডার তিন নয়ন কোটরে ময়, দেহে মাংদ
নাই, অহিমাত্র সার, কেশ সকল উর্দ্ধা, উদর
কুশ, পরিধান জীপিচর্মা, বামহত্তে কপাল ও পটিশ,
দক্ষিণহত্তে শূল ও কর্ত্রী,অহি ভূষণ ও শব আসন।

বিনায়কের আকার মনুষ্যের ন্যায়,কুক্ষি রহৎ, কানন গজসদৃশ, শুণু রহৎ, গলে উপবীত, মুখ সপ্তফলপরিমিত, শুণু বিস্তারে ও দৈর্ঘ্যে ষট্ত্রিংশ-দক্ল, ঞীবা সাদ্ধফলোচ্ছিত, কর্ণ ষট্ত্রিংশদঙ্গল, শুছু অধ্যদ্ধ অঙ্গুল।

যক্ষিণীদিগের লোচন স্তব্ধ ও দীর্ঘ; শাকিনী-দের দৃষ্টি বক্ত এবং অপ্লরাদের নয়ন পিঙ্গলবর্ণ ও শরীর সৌন্দর্য্যে পূর্ণ।

দারপাল নন্দীশ্বর অক্ষমালা ও ত্রিশূল হস্ত।
মহাকালের হস্তে অসি, মুগু, শূল ও থটক।
ভূলী কুশদেহ ও নৃত্যপরায়ণ। বারভদ্রাদিগণ সকলের বর্ণ ও বদনাদি গজ ও গ্রাদিবৎ। ঘণ্টাকর্ণ
পাপরোগের নিহন্তা ও অক্টাদশ বাহুবিশিষ্ট।
তাহার হস্তে বজ্ঞ, অসি, দণ্ড, চক্র, ঈয়ু, অঙ্কুশ,
মুদ্যাব, তর্জ্জনী, থেট, শক্তি, মুগু, পাশ, চাপ,
ঘণ্টা,কুঠার ও তুই হস্তে তুই শূল। এই ঘণ্টামালাদমাকুল ঘণ্টাকর্ণ বিফোটক বিমর্দ্ধিত করেন।

ক্ষেচচিচকা উদ্ধান্তপাদশালিনী ওগজচাৰ্মপরি-ধানা এবং অউবাহুদ্বিশিকী।

ক্রুচামুগু নাটের ঈশ্বরী ও নৃত্যপরারণা।
ইনিই মহালক্ষী, চতুমুখী ও দর্বদা উপবিষ্টা
হইযা, হস্তন্থিত নৃ, বাজী, মহিষ ও গজদকল
ভক্ষণ করিতেছেন। ইহার বাহু দশ ও নয়ন তিন।
দক্ষিণহস্তে শস্ত্র, অদি ও ডমুক্ত এবং বাম হস্তে
ঘণ্টা, খেটক, খটুগাস ও ত্রিশূল। ইনিই দিদ্ধ
চামুগু নামে দিদ্ধযোগের ঈশ্বরী ও দর্বাদিদ্ধি

প্রদান করেন। রূপবিদ্যা ভৈরবী ছাদশভূজশালিনী। ইইাদিগকে অস্বাফীক বলে। শাশানে
ইহাদের আবিভাব।

ইতালেরে মহাপুরাণে দেবী প্রতিমালকর নামক বড়্দীভিতম অধারে সমাপু।

সপ্তানীতিত্ব অধ্যার।

ভগবান্ কহিলেন, সূর্য্য পদাদয় হস্তে সপ্তামপরিচালিত একচক্র রথে আরত; তাঁহার দক্ষিণে
কুণী মসীভাজন ও লেখনা হস্তে বিরাজনান এবং
বামে দণ্ডধর পিঙ্গল আসান। ইনিই রবির গণ,
পাম্বে হায়া ও রাজ্ঞী বাল ব্যজন ধরিষা আছেন।
অথবা, সূর্য্য একাকী অস্থে আরেচ, এই রূপে
নির্মাণ করিবে।

দিক্পালগণ সকলেই বরদ ও দ্বিপদাহস্ত এবং ষথাজ্ঞমে মুদার, শূল, চক্র ও অজ ধাবণ করেন। সূন্য, অন্যমা ও নৈখতোদি অন্যাদি বিদিক্ষিত ও চতুহন্ত। বরুণ, সূর্য্য, সহস্রাণ্ড, ধাতা, তপন দবিতা, গভন্তিক, রবি, পর্জ্জন্তু কুন্টা, চিত্র ভ বিফু ইছারা মেষাদিরাশিস°ছ। ই**হাঁ**দের বর্ণ যথাক্রমে কৃষ্ণ, রক্ত, ঈষৎ রক্ত, পীত, পাওর, দিত, কপিল, পীত, **শু**কাভ, ধ্বল, ধূত্র ও নীল 🖟 এবং ইহাদের শক্তি যথাক্রমে ঈড়া, সুরুলা, विश्वाहि, हेन्सू, अमर्किनी, अहर्विंगी, महाकाली, কপিলা, প্রবোধনী, নীলাম্বরা, মনান্তমা ও প্রমৃতা। চন্দ্রের হন্তে কুণ্ডিকা ও দ্ধপমালা কুল্কের হত্তে শক্তি ও অক্ষমালা; বুধের হত্তে ধকু ও অক্ষালা, জীবের হত্তে কুণ্ডী ও অক্ষালা, শুক্রের কুণ্ডী ও অক্ষমালা,শনির কটিতটে কিরিণী, ! সূত্র, রাহুর হত্তে অর্ছচন্দ্র, কেতুর হত্তে খড়গ ও

দীপ। অনন্ত, তক্ষক, কর্ক, পদ্ম, মহাপদ্ম, শহ্ম
ও কুলিক ইহারা সকলেই ফণবক্তু ও মহাপ্রস্থা।
ইন্দের হন্তে বক্ত ও বাহন ঐরাবত। অগ্রি ছাগ্যপ্রে হন্তে দণ্ড ও
আরোহণ মহিষে। নৈঝাতের হন্তে খড়গ। বরুণ
পাশ হন্তে মকরে আদীন। বায়ু ধ্বজ হন্তে মৃগ্যপ্রে উপবিষ্টা কুবের মেষস্থাও গদাহতা।
ঈশান জটাজুটমণ্ডিত ও র্ষারাচ়। লোকপালগণ
সকলেই ছিহন্তা। বিশ্বকর্মা অক্ষ্যাত্তং, হত্যান্
বজ্রন্তা ও পদ্বয়ে সম্পীড়িতাশ্রয়; কিল্লরগণ
সকলেই বীণাহন্ত, বিদ্যাধ্রেরা মাল্যপাণি;
পিশাচগণ ছুর্বলদ্বের, বেতালেরা বিক্তানন,
ক্ষেত্রপালগণ শূলহন্ত এবং প্রেতগণ কৃশ ও মহোদ্র

ইত্যারেয়ে মঃ পুনালে সূর্য্যাদিপ্রতিমালকণ সপ্তাণী ততম অধ্যায় সমপ্তে।

অফাশীতিত্য অধ্যায়

হয় গ্রীব কহিলেন, ব্রহ্মন্! বিষণ্ণাদির প্রতি-ঠাদি কীর্ভন করি, শ্রবণ করুন। আমি আপনার নিকট পঞ্চরাত্র, দগুরাত্র, হয়শীর্ষতন্ত্র, ত্রৈলোক্য-মোহন তন্ত্র, বৈভব ও পৌক্ষরতন্ত্র, নারদীয় ও শাণ্ডিল্যতন্ত্র, বৈশ্বক ও শোনকতন্ত্র, জ্ঞানসাগর বাশিষ্ঠতন্ত্র, প্রহলাদসার্গ ও গালবপ্রোক্ত তন্ত্র, স্বায়-স্কুব তন্ত্র ও কপিলতন্ত্র, তাক্ষ্য ও নারায়ণীয় তন্ত্র, আত্রায় ও নারসিংহ তন্ত্র, আনন্দ ও আরণ তন্ত্র, বৌধায়ন, আর্ম ও বিশোক্ত তন্ত্র বর্ণন করিয়াছি।

কছেদেশ, কাবেরী, কোস্কণ, কামরূপ, কলিন্স, কাঞ্চী, কাশ্মীর ও কোশল এই সকল দেশ, সম্ভব ত্রাহ্মণকে ভাগা করিয়া, মধ্যদেশাদি সমুভূঙ বিজ্ঞাতি দ্বারা প্রতিষ্ঠাকার্য্য স্বাধা করিবে।
আকাশ, বায়ু, তেজ, জনু, পুথিবী ইহাদিগকে
পঞ্চরাত্র বলে। দেশিক আপনাকে ব্রহ্মা ও পরম
বিশুদ্ধভাব বিশ্বুস্বরূপ জ্ঞান করিবে। যিনি তন্ত্রপারগ, সর্বলকণহীন হইলেও তিনিই গুরু।

দেবপ্রতিমাদকল মগরাভিমুপে স্থাপন করিবে, পরাঘু থে স্থাপন করা কর্ত্তব্য নহে। পূর্বাদিকে ইন্দের, অগ্নিকোণে অগ্নির, মাতৃকাগণের, ভূতদমূহের ও যমের; দক্ষিণে চতিকার, নৈখতে পিতৃদেবতাদির, বাক্ষণে বরুণাদির, ববায়ব্যে বায়ুর ও নাগের, সোম্যে যক্ষ ও গুছের, ঈশানে চতীশ্বর ও মহাদেবের এবং দকল দিকে বিষ্ণুর ও মধ্যভাগে ত্রহ্মার মন্দির প্রতিষ্ঠা করিবে। বৃদ্ধিমান ব্যক্তি জানিয়া শুনিয়া প্রাচীন দেবকুলের পাড়নপূর্বক স্বল্প বা দম বা অধিক প্রমাণে প্রাদাদ প্রতিষ্ঠিত করিবেন না। উভয়ের দ্বিগুণ গীমাত্যাগ করিয়া অন্য প্রাদাদ নির্মাণ করিবে; কথনও উভয়ের পীড়ন করিবে না।

ভূমি শোধিত হইলে, প্রাকারদীমাপর্যান্ত
ভূপরিএই করিরা পরে, ভূতবলি আহরণ করিবেক
এবং মাধ, ইরিদ্রাচূর্ণ, লাজ, দধি, শক্ত ও মুক্তাদকল অন্টাক্ষর মন্ত্রে অন্ট দিকে নিপাতিত করিয়া
এইপ্রকার কহিবে, এই ভূতলে যে সকল রাক্ষ্য
ও পিশাচ অবস্থিতি করিতেছে, তাহারা সকলে
অপগমন করুক; আমি ভগবান্ বিফুর প্রভিন্ন
করিব। এই বলিয়া গোদিগকে হলবাহন প্রাকৃ
ভূবিদারণ করিবে।

আট পরমাণুতে এক রথারেণু, আট রথা-রেণুতে ত্রসরেণু, আট ত্রসরেণুতে বালাগ্র, আট বালাগ্রে লিখ্যা, আট লিখ্যাতে যুকা, আট যুকায় যবসধ্য, আট যবসধ্যে অঙ্গুল, চতুর্বিংশতি অঙ্গুনে হস্ত এবং একহাত চারি অঙ্গুনে এক পদ্ম-হস্ত।

> ইতাতেরে আদমহাপুরাণে ভূমিপরিগ্রহনামক অইাণীতিভম অধ্যার নমাথ।

ঊননবতিতম অধ্যার।

ভগবান কহিলেন, পূর্ত্বে সর্বভ্তভয়ন্তর এক মহাভূত প্রাত্নভূতি হইয়াছিল। দেবগণ উহাকে নিহত করেন। ঐ ভূতই পৃথিবীতে বাস্তপুরুষ নামে বিধাতি।

ষষ্টিষষ্টি পদক্ষেত্রে কোণার্দ্ধগান্তিত ঈশানের ঘুত ও অক্ষতযোগে পূজা করিয়া, পরে উৎপল-জনে পদা পর্জন্ম, পতাকা দারা দ্বিপদম্ভ জয়ন্ত, সর্ব্বাক্ত দারা এককোষ্ঠস্থ মহেন্দ্র, বিতান দারা পদস্থ রবি, যুত দারা অর্দ্রপদস্থ সভ্য, শাকুন মাংদে কোণাৰ্দ্ধপদদংস্থিত ব্যোম, ত্ৰুক দারা অর্দ্ধপদ গবহিল, লাজ দারা একপদস্থ পুষা, স্বর্ণ দারা দ্বিপদস্থ বিত্তথ, মথন দারা গৃহাক্ষত, মাংস ও ওদন দারা একত্তে অবস্থিত ধর্মা ও ঈশ্ গন্ধ দারা দ্বিপদ গদ্ধর্বে, নীলপট দারা একন্থ ও উদ্ধন্থ মল এবং কুশার দারা পিতৃগণের তৃপ্তি বিধান করিবে। অনন্তর দন্তকার্ছ দারা পদস্থ দৌবারিক যাবক দারা হুগ্রীব, কুশস্তম দারা পুষ্পদন্ত, পদ্ম মারা অরুণ, গুরা মারা অন্তর, য়ত সলিলে শেষ, যব দ্বারা পদার্দ্ধক পাপ, মগুক দ্বারা অর্দ্ধ রোগ मध्र, नान भूरा नान, जका बाता मुखा, मुस्तापन ঘারা ভ্রাট, মধু ঘার। দোম শাল্ক পায়ন বারা ঝ্রামি, লেপিকা, দিভি, পুঞ্জি দারা ाপ, পয়ঃ হারা ঈশাধ, দধি হারা চাপবৎস, ্রভুক দারা মরীচি, রক্তপুষ্প দারা ব্রহ্মাধঃ কোণ কোষ্ঠন্থ সূধ্য, কুশোদক দারা তাহার অধ্যকোষ্ঠন্থ দাবিত্রী, খেতচন্দন ঘারা চতুপদন্থ বিবস্থান, অন বারা বকোধঃ কোপকোঠত ইন্দ্র ইন্দ্রের অধঃ-কোণকোটস্থ ইক্সজয়, দ্বতাম দারা এবং গুড়পায়দ দারা চড়ঃপদস্থ ইন্দ্রকে পরিতৃপ্ত করিবে। পরে वायुत्र व्यथटकां छेष्ट क्राप्तटक श्रक्त भारत, जनवंदिकांग-(कार्ष्ठश्च रक्तरक आर्क्षकल, ठ्रुष्ट्राक्य भरीजन्दरक মাষ ও মাংদান, মধ্য চতুষ্পাদে ব্রহ্মাকে তিল-তগুল, চরকীকে মাংস ও দর্পি,ক্ষলকে কৃথশরা ও রক্ত, বিদারীকে রক্তপদা, কন্দর্পকে ফলোদন, পূতনাকে পল ও পিভ, জন্তকে মাংস ও অস্ক, পাপাকে পিত্, রক্ত ও অস্থি, পিলিপিচ্ছকে মাল্য ও শোণিত, ঈশানে রক্তমাংস ও তাহার অভাবে অক্ষতপ্রদান এবং রক্ষোগণ,মাতৃগণ,পিশাচাদিগণ, পিতৃগণ, ও ক্ষেত্রপালগণ, ইহাঁদিগকে প্রকামতঃ व्यक्तना कतिरव । इंदाँरिनत छिप्परम रहाम वा इंदा-দিগকে তৃপ্ত না করিয়া কথনও প্রাদাদদি প্রতিষ্ঠা করিবে না।

ইহাঁদের পূজানি হইলে, পশ্চাৎ ব্রহ্মন্থানে হরি, লক্ষ্মী, গণ, বাস্তময় মহান্থর, বর্জনী সহিত ঘট, মধ্যভাগে ব্রহ্মা, ক্ষুমধ্যে ব্রহ্মানি দিগীখর-বর্গ এই সকলের সবিশেষ অর্জনা করিবেক। পরে পূর্ণান্থতি প্রদানপুরঃসর স্বস্তিবাচন, প্রণাম ও কর্করী গ্রহণ করিয়া সম্যক্ বিধানে মণ্ডল প্রদক্ষণ করিবে। অনস্তর ব্রহ্মাকে সম্বোধনপূর্বক সূত্তনাগানুসারে ভোয়ধারা ভ্রমণ করাইয়া, উলিখিত মার্গে পূর্ববহু সপ্তবীজ নিবাপন করিবে। সূত্তনাগানুসারে থাতপ্রারম্ভ বিধানপূর্বক মধ্যক্ষেকে হস্তমাত্রপ্রমাণ গর্ভ খনন ও অধোদিকে চারি অঙ্গুল স্থান লেপন করিয়া, অর্জনা করিবে এবং চতুর্ভুক্ত বিষ্ণুর ধ্যান করিয়া অর্যানান ও কর্করী

দারা গর্ভ পূরণ পূর্বক দেভপুপ্প সকল ছাভ করিবে। এইরূপে অর্যাদান বিনিপ্পন্ন হইলে, গুরুকে গো বস্ত্রাদি প্রদান করিয়া কালজ, স্থপতি ও বৈশুবাদির অর্চনা করিবেক।

> ইত্যালেয়ে অফিনহাপ্রাণে অফটালানকথন নামক উন্নৰ্ভিত্য অধ্যায় সম্পো

নৰভিত্ৰ অধায়।

অগ্নি কহিলেন, ভগবান্ হরির এক বৎসর পূজা করিলে, যে কল, ভাঁহার পবিত্রারোহণে সেই কল প্রাপ্তি ইইয়া থাকে। উহা কীর্ত্তন করিব। আঘাঢ় ইতে কার্ত্তিক পর্যন্ত প্রতিপৎ তিথি বনদ বলিয়া পরিগণিত। ঐ তিথিতে ভগবানের পবিত্রারোহণ করা কর্ত্তব্য। দ্বিতীয়াদি তিথিক্রমে জ্রী, গোরী, গণেশ, সরস্বতী, গুহ, মার্ত্তপ্ত, মাতৃগণ, তুর্গা, নাগ, ঋষি, হরি, মন্মথ, শিব ও জ্রন্থা এই সকল দেবতার পবিত্রারোহণ সম্পাদন করিবে। ফলতঃ, যে, যে দেবতার ভক্ত, তাহার পক্ষে দেই তিথিই পবিত্র। পবিত্রারোহণে মন্ত্রাদি যদিও পৃথক্, কিন্তু বিধির কোন প্রভেদ নাই।

স্বর্গ, রজন্ত, তাত্র ও কার্পাসাদি, এই সকল দ্রব্যে নির্মিন্ত, কিংবা বোল্লণী কর্তৃক কর্তিত, তদ-লাভে সংস্কৃত ত্রিগুণ সূত্র ত্রিগুণীকৃত, করিয়া, তদ্ধারা পবিত্র প্রস্তুত করিবে এবং হে প্রভো! ভূমি যাহা বলিয়াছিলে, ক্রিয়ালোপ বিঘান্তার্থ আমি দেইরূপে পবিত্র প্রস্তুত করিতেছি। হে নাথ! হে জয়স্বরূপ! হে অব্যয়! আমার যেন সকল বিল্ল দূর হয়। এই বলিয়া, সবিশেষ অর্চনা সহকারে প্রথমে মগুলে উহা বন্ধন করিবে। তৎ- কালে, ওং নারায়ণায় বিদ্যাহে বাস্থাদেবায় ধীমহি।
তামাবিফ্ঃ প্রচোদয়াৎ। ইত্যাদি গায়তী জপ
করিতে হইবেক। প্রতিমাদমূহে জাকু, উরু ও
নাভি নাম পর্যান্ত পবিত্র বন্ধন করিবে, আর, বনমালা পাদ পর্যান্ত বিস্তৃত করা কর্ত্রা।

সান ও সন্ধ্যাদি সমাধান করিয়া, রোচনা,
মগুরু, কপূরি, হরিদ্রা ও কুরুমাদি অথবা চন্দনাদি
দ্বারা সূত্রদকল রঞ্জিত করিয়া, একাদনীতে যামগৃহে ভগবানের অর্চনা ও পীঠমধ্যে সমস্ত পরিবারকে বলি প্রদান করিবেক। ক্রোং বলিয়া
দ্বারান্তে ক্রেপালকে, দ্বারোপরি জ্রীকে, দক্ষিণে
ধাতা, বিধাতা, গঙ্গা ও যমুনাকে এবং মধ্যে শঙ্গা
ও পদ্মনিধি উভয়কে পূজা করিয়া, দ্বির হইয়া,
বক্ষ্যমাণ বিধানে ভৃতশুদ্ধি বিধান করিবে; ওং
হুং হঃ ফট্ হুং রসতন্মাত্রং সংহরামি নমঃ। ওং
হুং হঃ ফট্ হুং রসতন্মাত্রং সংহরামি নমঃ। ওং
হুং হঃ ফট্ হুং রপতন্মাত্রং সংহরামি নমঃ। ওং
হুং হঃ ফট্ হুং ক্পভন্মাত্রং সংহরামি নমঃ।
ভং হুং হঃ ফট্ হুং শক্তন্মাত্রং সংহরামি নমঃ।

পঞ্জিবাত দারা পাদ্যুগ্ম মধ্যন্তিত, ইন্দ্রাধিদৈবত, বজুলাঞ্ডিত, কঠিন, পীতবর্ণ, চতুরত্র গদ্ধতথাত্ররূপ ভূমিমণ্ডল শারণ করিবে। অনস্তর এই
রূপ ক্রেম রসত্যাত্র শোধনপূর্বক রসমাত্র ও
রূপমাত্রে প্রবিলাপিত করিয়া, সংহার করিবে।
যথা, ওং ক্রী হং ফট্ ক্রু রসত্যাত্রং সংহরামি
নমঃ। ওং ক্রুং হং ফট্ ক্রুং রপত্যাত্রং সংহরামি
নমঃ। ওং ক্লীং হং ফট্ ক্রুং স্পর্শক্ষাত্রং সংহরামি
নমঃ। ওং ক্লীং হং ফট্ ক্রুং স্পর্শক্ষাত্রং সংহরামি
নমঃ। ওং ক্লীঃ হং ফট্ ক্রুং শক্ষত্যাত্রং সংহরামি
নমঃ। ওং ক্লীঃ হং ফট্ ক্রুং শক্ষত্যাত্রং সংহরামি
নমঃ।

এই রূপে উদ্যাতচতুষ্টয় দারা রসত্যাত্র শুদ্ধ করিয়া ধ্যান করিবে। ইহা দাসু নাভি মধ্যগত, খেতবর্ণ, পদালাঞ্চিত, অর্দ্ধচন্দ্রাকৃতি ও অরুণদৈবত।

অনন্তর রূপতমাতে সংহার করিবে। যথা, এং হৃং হঃ ফট্ হৃং রূপতন্মাত্রং সংহরামি নমঃ। এং ঐং হঃ ফট্ ঐ স্পর্শতিমাত্রং সংহরামি নমঃ। এং ঐং হঃ ফট্ ঐং শব্দতমাত্রং সংহরামি নমঃ।

এইরপ উদ্যাত তায় সহায়ে শোধনপূর্বক তিকোণ, রক্তবর্ণ, স্বস্তিকলাঞ্চিত, নাভিকণ্ঠমধ্য-গত, বহ্নিমণ্ডলস্বরূপ, অগ্নিদৈবত রূপতন্মাত্রকে স্পর্শতন্মাত্রে সংহার করিবে। ওং ক্লোং হঃ ফট্ হুং স্পর্শতন্মাত্রং সংহরামি নঃ। ওং ক্লোং হঃ ফট্ হুং শক্ষতন্মাত্রং সংহরামি নয়।

এইরপে বায়ুমগুলরপে কণ্ঠনাসামধ্যগত, বর্তু লাকৃতি, ধূমবর্ণ, শুদ্ধেন্দ্লাঞ্চিত, স্পার্শতিয়া-ব্রকে উদ্ঘাত্দিত্য দারা শোধন ও ধ্যান করত শব্দত্মাত্রে লীন করিবে। ওং ফেণিং হং ফট্ ফ্রুং শব্দত্মাত্রং সংহরামি নমঃ।

এইরপ একমাত্র উদ্যাত দারা নাদাপুটশিখা-ন্তম্ব শুদ্ধস্ফটিকদন্ত্রিভ আকাশস্বরূপ শব্দতন্মাত্রকে আকাশে উপদংহৃত করিবেক।

অনন্তর উল্লিখিত বিধানে শোদণাদি দ্বারা দেহশুদ্ধি করিয়া, পাদাদি হইতে শিখা পর্যান্ত শুক কলেবর ধ্যান করিবে। অনন্তর থং বং ও রং বীজসহায়ে ব্রহ্মরন্ধু হইতে নিনিগতি জালান্যান্যান্ত অমৃতবিন্দু ধ্যান করিয়া,তদ্ধরো ভত্মকলেবর সংপ্লাবিত করিবে। এই রূপে দিব্য দেই সম্পাদন এবং করে ও দেহে আস করিয়া, মানস্থাপ করিবে। পরে মানসক্ষমাদি দ্বারা মূল্মন্তে হৎপদ্মে অঙ্ক সহিত ভুক্তিমুক্তিদ হুরেশ্বরহর এই বলিয়া বিহিতবিধানে পূজা করিবে, হে দেবদেবেশ! তোমার স্বাগত। হে কেশব!

সন্মিহিত হও এবং প্রকৃত রূপে পরিভাবিত মানসী পূজা গ্রহণ কর।

অনন্তর মধ্যভাগে আধারশক্তি কৃর্মা, অনন্ত ও মহী, অগ্নাদিতে ধর্মাদি ও ইন্দ্রমুখ্য দেবগণের পূজা করিয়া, মধ্যে সন্তাদি গুণত্রয়, মায়া ও বিদ্যাখ্য তত্ত্ব, পদ্ম, কালতত্ব, সূর্য্যাদিমগুল, পক্ষিরাজ গরুড, এই সকলের অর্জনা করিবে। অনন্তর গণ, সরস্বতী, নারদ, নলকৃবর, গুরু, গুরু-পাছকা, পরগুরু ও পরগুরুর পাছকা, কেশের মধ্যস্থ পূর্বদির ও পরদির শক্তিসমূহ, লগ্নী, সরস্বতী, প্রতি, কার্তি, শান্তি, কান্তি, পুষ্টি, ভৃষ্টি, মহেন্দ্রাদি দেবতা, আবাহিত হরি, ধ্বতি, জ্রী, রতি ও মূলমন্ত্রে স্থাপিত অচ্যুত, ইহাদের পূজা করিবেক।

পরে, ওং উচ্চারণ পূর্ববক অভিনুথ ও দরি-হিত হও, এই প্রকার প্রার্থনান্তে অর্থ্যাদি বিভাগ ও দান করিয়া, গদ্ধাদি সহকারে মূলমন্ত্রে বিসুগুর পূজা করিবে এবং পুনরার তংভীষয় ভীষয় হৃৎ-শিরস্ত্রাময় মর্দ্র মর্দ্য শিখা অগ্ন্যাদৌদশস্ত্রতোক্তকন तक तक अध्यः नग्न अध्यः नग्न कवष्ठां स्व ; अः इवः ফট্ অস্তায় নমঃ ইত্যাদি বিধানে মূলবীজে অসা-র্জনা করিবে। পরে পূর্ব্ব, দক্ষিণ, উত্তর ও পশ্চি-মাদি দিগ্বিভাগে বাহ্নেব, দংকর্ষণ, প্রত্যুদ্ধ ও অনিরুদ্ধ ইত্যাদি মূর্ত্যাবরণ পূজা করিয়া, অগ্র্যাদি কোণে ভগবান্ হরির 🖺, ধ্রতি, রতি ও কান্তি এই সকল মুর্ত্তির ২জনা করিবেক। অনন্তর অগ্ন্যা-দিস্থ শঙ্খ, চক্রন, গদা ও পদ্ম পূর্বেকাদিস্থ শাঙ্গী, মুষল ও থড়গ, বহিদিকে বনমালা, ইন্দ্রাদি দেবতা ও অনন্ত, নৈখতিত বরুণ, ইন্দ্র ও ঈশান এই উভয়ের মধ্যে ত্রক্ষা, বহির্ভাগে অজ্রাবরণ ঐরা-বত, ছাগ, মহিয়, বামর, ঋষ, মুগ, শশ, রুমভ, 🖟

কূর্মা, হংম, পুমিগর্ভ, কুমুদাদ্য, দ্বারপালগণ, ইহা-দের পূজা করিয়া, হরিকে প্রণাম ও অর্হণা প্রদান করিবে। পরে বিষ্ণুর পার্ষদদিগকে নমকার-পূৰ্বক বলিতীৰ্থে বলি দিয়া, ঈশান দিকে ভগ-বানের অর্চনা করিবে। তদনস্তর দেবের দক্ষিণ হত্তে এই বলিয়া রক্ষাসূত্র বন্ধন করিবে যে, আমি দংবৎসর পূজা করিলে, তাহার যে ফল লাভ হয়, পবিত্রারোহণে সেই ফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে। সেই পনিত্রারোহণ জন্ম এই কৌতুক ধারণ কর; তোমাকে নমস্কার ওং। অনন্তর, হে দেবদেবেশ। আমি উপবাদাদি নিয়ম অবলম্বন পূর্বক তোমার সন্তোষ সাধনে প্রবৃত্ত হইয়াছি। হে পরম-পুরুষ! অন্য হইতে শেবদিন পর্যান্ত তোমার প্রদাদে কামফোধাদি রিপুগণ যেন কোনরূপে আমার ত্রিগীমায় থাকিতে না পারে। ফলতঃ, আমার বাহাশত্রা ও আন্তর্শত্রা সকলই যেন দুর হয়। এই বলিয়া দেবদালিধ্যে উপবাদাদি নিয়ম বিধান করিবেক। ইত্যাদি কার্য্যমন্ত মথাবিধি সমাহিত হইলে, হোম ও স্তব করিয়া, এই বলিয়া তাঁহার বিসর্জন করিবে, ওং হ্রীং শ্রীং শ্রীধরায় তৈলোকামোহনায় নমঃ।

> ই চাংগ্রেম মহাপুরাণে পবিত্রারোহণবিধি নামক নবভিত্য অধায়ে সমাধা

একনবভিত্য অধ্যার।

ক অগ্নি কহিলেন, নমাদি মহাভাগগণ সম্যক্ রূপে অনুষ্ঠান করিয়া, যে সকল ভুক্তি ও মুক্তি জনক ধর্ম অর্জন করিয়াছেন, পুক্ষর বরুণের প্রমুখাৎ প্রাথণ করিয়া তৎসমস্ত পরশুরামকে উপদেশ করেন। পুকর কহিয়াছিলেন, মন্থাদি মহাভাগগণ বাহৃদেবের ভূষ্টিজনক ও দর্ব্বাভীষ্ট সাধক যে দকল বর্ণাশ্রমেতরধর্ম কীর্ত্তন করিয়াছেন, ভাষা কীর্ত্তন করিব। অহিংদা, দত্যবচন, দয়া, ভূতামুগ্রহ, তীর্থাকুদরণ, লান, ত্রহ্মচর্য্য, অমৎদর, দেব ও দিজাতিশুক্রাবা, গুরুদেবা, দকলধর্ম শ্রেবণ, পিতৃপুজা, রাজভক্তি, নিত্য সংশাস্ত্রের আলোচন, আনৃশংস্থা, তিতিক্ষা, আন্তিক্য, ইত্যাদি, সমুদায় বর্ণাশ্রমের সাধারণ ধর্ম।

যজন, যাজন, দান, বেদাদির অধ্যাপন, প্রতিতাহ ও অধ্যয়ন এই কয়েকটি আক্ষণের ধর্ম।
দান, অধ্যয়ন, যজন, এই কয়েকটি ক্ষজিয়ের ও
বৈশ্যের ধর্ম। তনাধ্যে পালন ও ছুফদমন ক্ষজিযের এবং কৃষি, গোরক্ষা ও বাণিজ্য বৈশ্যের
বিশেষ ধর্ম। আর, ঋজদেবা ও সর্বপ্রকার শিল্প
এই কয়েকটি শুদ্রের ধর্ম। মৌঞ্জাবন্ধন হইলেই,
ভ্রাক্ষণাদির দ্বিতীয় জন্ম হয়। এইজন্য ইহাঁদিগকে দিজ বলে।

আনুলোম্যানুসারে বর্গ সকলের জাতি মাতৃসমান পরিগণিত হইয়া থাকে। প্রতিলোমজনে
চণ্ডাল আক্ষণীর পুজ। আর, ক্ষজ্রেয় হইতে সৃত
ও বৈশ্য হইতে দেবল জন্মগ্রহণ করিয়াছে। এইরূপ পুরুণ ক্ষত্রিয়ের পুজ এবং মাগধ বৈশ্যের ও
আয়োগব শুজের প্রদান। বৈশ্যার গর্ভে প্রতিলোম হইতে সহল্র সহল্র প্রতিলোমের জন্ম
হইয়াছে। ইহাদের বিবাহজিয়া পরস্পার সমকক্ষের সহিত বিহিত হইয়া থাকে; উভম বা
অধ্যের সহিত হয় না।

বধ্যের বধ চণ্ডালের কার্য্য, ক্রীজীবন বৈদেহের কার্য্য, অশ্বসার্থ্য সূতের কার্য্য, ব্যাধত্ব পুরুশের কার্য্য, স্তৃতিক্রিয়া মাগধের ও আয়োগবের কার্য্য। চণ্ডালজাতি গ্রামের বাহিরে বাদ, মৃতচেল ধারণ ও শিল্প দারা জীবন যাপন করিবে এবং কাহাকেও স্পার্শ করিবে না।

> ইত্যাপ্রের মৃহপুরাণে বর্ণেত্রধন্ত নামক একনবভিত্য অধ্যায় স্মণ্ড।

ছিনবতিত্য অধ্যার।

পুকর কহিলেন, গাহ্ছাশ্রম দকল আশ্রমের শ্ৰেষ্ঠ। এই আশ্ৰম দিদ্ধ হইলে, অন্তান্ত আশ্ৰম অনায়াদে দিদ্ধ হইয়া থাকে, তাহাতে দন্দেহ নাই ৷ দেবতা ও অতিথিদেবা এবং খাণত্রয়মোচন ইত্যাদি জীবনের প্রধান উদ্দেশ্য দকল আশ্রমে সম্পন্ন হইয়া থাকে। ধ্রতি, পুষ্ঠি, ক্লান্তি, খ্রী, কার্টি, কান্তি, শান্তি, ক্ষান্তি, দয়া, নিষ্ঠা, রতি, ভক্তি, ভুক্তি, মুক্তি ইত্যাদি দেবীগণ এই গৃহাত্রমের অনুগত। ইহলোক ও পরলোক-দিদ্ধিও গার্হাশ্রমে প্রাপ্ত হওয়া যায়। অভঃ-করণের দংবৃত্তি দকল এই আশ্রমে নিত্য পরি-তৃপ্ত হইরা থাকে। দানের অপেকা পুণ্য নাই, দ্যার অপেকা ধর্ম নাই এবং সংকীর্তির অপেকা স্থ নাই। গৃহস্থাশ্রমে এই সকল অনাগ্রামেই সম্পন্ন হট্যা থাকে। এথানে থাকিলে, পিতৃগণ তৃপ্ত হন এবং স্বয়ং বিধাতাও সহজে তুই হন। অধিক কি, চরাচর ওক্ত নারায়ণ নানবরূপে এই করিয়া থাকেন। তিনি গৃহস্তার্থ অব্তর্ণ কখন রামরূপে জন্মিয়া রাবণাদির সংহার করিয়া-ছেন: কখন বাস্থদেবরূপে আবিভুত হইয়া পৃথিবীর নানাভার মোচন করিয়াছেন; কখনও পরশুরামরূপে অবতরণ করিয়া পিতৃভক্তির পরা-কাঠা শিক্ষা দিয়াছেন এবং এইরূপ ও অভারূপ বিবিধ রূপে গৃহীর গৃহে অবতরণ করিয়া সংসারের কত উপকার করিয়াছেন, তাহার সংখ্যা নাই।

ব্লাহ্মণ এই আশ্রমে থাকিয়া যথোক্ত বিধানে স্বীয় কর্মানুষ্ঠানপূর্বক জীবন যাপন করিবেন। আপদ্ভিন্ন কখনও কাত্র, বৈশ্য ও শুদ্রধর্মের সেবা করিবেন না। যদিও তিনি কুষি, বাণিজ্য ও গোরক্ষা এবং কুদীদ ব্যবহার করিবেন, কিন্তু কদাচ গোরস, গুড়,লবণ, লাক্ষা ও মাংস ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইবে না। ইহাতে ত্রহ্মণ্যের হানি হইয়া থাকে। কীট ও পিপলী হত্যা করিয়া ভূমি ভেদ ও ঔষধিচ্ছেদ করিলে, যজ্ঞ ও দেব পূজা দ্বারা কর্ষক ব্রাহ্মণের সমস্ত পাতক বিম্ট হয়। জীবিত-লাভের অনুরোধে অটিট গো বা ছয়টি গো ষারা হল ঢালনা করিলে, অধ্বর্ষ্য না। নৃশংদে-রাই চারিটী গো ও ধর্মঘাতিরাই ছুইটী দারা হল চালনা করে। খত ও অমৃত ছারাই জীবনযাত্রা নিৰ্কাহ করিবে। সভ্যান্ত বা শ্বুভিদেবা দ্বারা কখনও করিবে না 🗓

> ইত্যাধের মহাপুকাণে গহরবৃত্তিনামক হিন্তুতিক অধ্যায় সমাধ্য।

ত্রিনবতিত্য অধ্যায়।

পুদর কহিলেন, বাহা দারা ভুক্তি, মুক্তি
লাভ হয়, আশ্রমিগণের তাদৃশ ধর্ম কীর্ত্তন করিব,
শ্রেবণ কর। স্ত্রী গাভুমতী হইলে যথাবিধানে
পুত্রার্থী পুরুষ তাহার সহবাস করিবে। গর্ভ হইয়াছে, স্পেষ্ট জানিতে পারিলে, আর তাহার
সংসর্গ করিবে না। ঐরপ মনেস্থিক সংস্কে
লিপ্ত হইলে, জ্রণহত্যার পাপভাগী হইতে হয়।
পুত্র জন্মিলে জাতকর্মাদি বিধান করিয়া অশো-

চাত্তে নামকর্ম দমাধা করিবে। ব্রাহ্মণের শর্মান্ত, কব্রিয়ের বর্মান্ত, বৈশ্যের শুপ্তান্ত এবং শুদ্রের দাসান্ত নাম প্রশস্ত। ব্রাহ্মণের অফম বর্ষে, ক্ষব্রি-রের একাদশ বর্ষে এবং বৈশ্যের দ্বাদশ বর্ষে উপ-নয়ন সমাধা করিবে।

শুরু শিষ্যকে উপনীত করিয়া প্রথমে শোচ,
আচার,অগ্নিকার্যা ও সন্ধ্যোপাদনা শিক্ষা দিবেন।
দায়ং প্রাতঃ হোম করিবে। অমেধ্য বস্তু স্পর্শ করিবে না। মধু, মাংস, মৃত্যু, গাঁত এই সকল ত্যাগ করিবে। বিশেষতঃ, হিংসা, পরপরিবাদ ও অল্লীল এককালেই বর্জন করিবে। জীর সহিত্ আলাপ করিবে না। অল্লীল পুস্তকাদি পাঠ করিবে না। দর্বদা সংশাজের আলোচনা ও শাধুসঙ্গে বাস করিবে। নিজ্জনে বীরাসনে আসীন হইয়া পরভ্রন্মের ধ্যানধারণায় যাপন করিবে।

> ইত্যাণ্ডেয়ে মহাপুথাণে ব্ৰহ্মচৰ্য্যাক্ষমনামক জ্বিৰতিত্য অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুর্শবতিত্য অধ্যায়।

পুলর কহিলেন, আক্ষণ চারিটি বিবাহ করিতে পারেন। ক্ষত্রিয় তিন, বৈশ্য ছুই এবং শুদ্র এক-মাত্র পত্নী পরিগ্রহ করিবে। অসবর্ণা জ্রীর সহিত কোনরূপ ধর্ম কার্য্য করা বিধেয় নহে। সবর্ণা জ্রীর পাণিগ্রহণ করিবেন। ক্ষত্রিয় শর, বৈশ্য প্রতোদ ও শুদ্র দশা আদান করিবে। একবার-মাত্র ক্সা দান করা যায়। দহু ক্যার পুনর্দান করিলে, দাতাকে চৌরের ন্যায় দশু দেওয়া বিধেয়। যে ব্যক্তি কন্যা বিক্রেয় করে, তাহার

নিক্ষতি নাই। কন্যাদান, সতীযোগ, বিবাহ ও চতুর্থিকা, এই চারিটা বিবাহের নাম।

বিবাহবিধি বিধাতার স্বাভাবিক নিয়ম।
কেননা, এই বিবাহ হইতেই বংশপরম্পরা প্রাত্থভূতি ও বিস্তৃত হইয়া, স্ম্প্রিপ্রবাহ রক্ষা করিয়া
থাকে। উপযুক্ত পাত্রের সহিত কন্সার বিবাহ
দেওয়া সর্ক্রথা বিধেয়। পতি পত্নীর পরস্পার
উপযুক্ততা পরস স্থথের হেছু ও মোক্ষের সেছু
স্বরূপ, তাহাতে সন্দেহ নাই। যে পরিগয়ে মনের
মিলন হয় না বা আত্মায় আত্মায় যোগ হয় না,
তাহা বন্দীভাব বলিয়া পরিগণিত হয়।

ষামী নিরুদ্দেশ, য়ত,প্রবিজিত, লীব ও পতিত হইলে, এই পঞ্চিধ আপদে দ্রীগণের পত্যন্তর-পরি গ্রহ বিধেয় হইয়া থাকে। স্থামীর মৃত্যু হইলে, দেবরকে পতিছে বরণ করিবে। তদভাবে যথেচ্ছ ব্যবহার করিবে। বিবাহে পূর্বাষাঢ়া, পূর্বভাদ্রপদ ও পূর্বকান্ত্রনী, উভরাষাঢ়া, উভর-কান্ত্রনী ও উভরভাদ্রপদ, আগ্রেয়, বায়ব্যু ও রোহিণী এই সকল নক্ষত্র প্রশস্ত । হে ভার্গব! স্মানগোত্রা বা একার্বেয়া ক্যার পাণিগ্রহণ করিবেনা। পিতৃপক্ষে সপ্তমের উদ্ধি এবং মাতৃপক্ষে পঞ্চমের উদ্ধি বিবাহ প্রশস্ত হইয়া থাকে।

কুলশীলযুক্ত সংপাত্রকে আহ্বান করিয়া,
দান করার নাম ব্রাক্ষবিবাহ। ঐরপ বিবাহে
যে সন্তান সমুৎপন্ন হয়, তাহা হইতে পুরুষগণের
উদ্ধার হইয়া থাকে। গোনিপুনদানপূর্বক বিবাহকে আর্ষ বলে। এই রূপ প্রার্থিতাদানকে প্রাজ্ঞাপত্য, শুক্ষ ব্রাহকে আ্রুর, পরস্পার বরণকে গান্ধর্ব, যুদ্ধে হরণ পূর্বক বিবাহকে রাক্ষস এবং ছলপূর্বক কন্যাগ্রহণকে পৈশাচিক বিবাহ বলে। বৈবাহিক দিবসে কুপ্তকারমৃত্তিক। দ্বারা শচী
নির্মাণ ও জলাশয়ে তাহার পূজা করিয়া, বাদ্যোদ্যমসহকারে খ্রীকে গৃহে আনয়ন করিবে। হরিশয়নে বিবাহ করা কর্ত্তর। পৌদমাস, চৈত্রমাস,
কুজদিন, রিক্তা ও বিষ্টিতিথি, শুক্র ও জীবের
অস্তগমন, চন্দ্রগ্রহণ ও ব্যতীপাত এই সকল সময়ে
বিবাহ করা বিধেয় নহে। সৌম্য, পিত্র্যা, বায়ব্যা
সাবিত্র্যা, রোহিণা, উত্তরাত্রিতয়, মূল, মৈত্র্যাও
পৌষ্ণ এই সকল নক্ষত্র বিবাহনক্ষত্র। এইরূপ
মাকুষ লয় ও মাকুষ অংশ বিবাহে প্রশস্ত এবং
সূর্য্য, সূর্য্যপুত্র ও চন্দ্রতনয় ইইারা তৃতীরে, ষষ্ঠে,
দশমে, একাদশে বা অফ্রমে থাকিলে, বিবাহ করা
বিধেয়; কিন্তু কুজ অফ্রমে থাকিলে অবিধেয়।
ইত্যায়েয়ে মহাপ্রালে বিবাহবিধি নামক

পঞ্চনবভিত্তন অধ্যায়।

চড়ৰ্বভিত্য অধায়ে স্মাপ্ত ।

পুদর কহিলেন, ত্রাক্ষ মূহূর্ত্তে উপান করিয়া, বিফুপ্রমুথ দৈবতগণের স্মরণ করিবে। দিবাভাগে উত্তরমুথে মূত্র পুরীষ বর্জন করিবে; রাত্রিতে দক্ষিণে এবং উভয় সন্ধায় দিবাবৎ মলমূত্র ত্যাগ করা বিধি। মার্গাদিতে, জলে বা নহুণ বাঁথিতে কথনও মলমূত্র বিদর্জন করিবে না। মলমূত্র-বিদর্জনাত্তে শৌচ ও আচমন করিয়া, দওধাবন করিবে।

সান না করিয়া, কোন কার্য্য করিলে, তাহার ফল হর না। অতএব প্রাতঃস্নান করিবে। উদ্বৃত অপেক্ষা ভূমিষ্ঠ জল পবিত্র; ভূমিষ্ঠ অপেক্ষা প্রস্রবণোদক পবিত্র, প্রস্রবণোদক অপেকা সারস-দলিল পবিত্র, সারস অপেকা নাদেয় বারি পবিত্র ও নাদের অপেকা তীর্থতোর পবিত্র; আর গঙ্গা-জল সর্বাপেকা পবিত্র ও পুণ্যজনক।

প্রথমে মলসংশোধনপূর্বক জলাশয়ে নিমগ্ন হইয়া, উপস্পর্শন করিয়া পরিমার্জন করিবেক। তৎকালে শলোদেবী, আপোহির্ছ, ইদমপঃ ইত্যাদি মন্ত্র প্ররোগ করা বিধি। অনন্তর জলাশয়ে মগ্ন হইয়া, অন্তর্জলজপ, কিংবা মহমর্বণসূক্ত বা ক্রপদা জপ করিবে। পৌরুষ সুক্তে জলাঞ্চলি প্রদান করিয়া, পরে যথাশক্তি দানবিধি সমাচরণপূর্বক বিহিত বিধানে অগ্নিহবনে প্রবৃত্ত হইবে। অনন্তর গোগক্ষেম্বিধানজন্ম ইশ্বরের উপাসনা করিবে।

ভারবাহী, গর্ভিণী ত্রী ও গুরু ইহাদিগকে পথ ছাড়িয়া দিবে। উদিত, অন্তমিত বা দলিলত্থ मृट्यात नर्गन कतिरव ना। नशा छी, कृष ७ मृत्य স্থান এই সকলেও দৃষ্টি প্রদান করিবে না। অস্থি, ভত্ম বা মন্তান্য কুৎসিত দ্রব্য স্পর্শ করিবে না। অন্তঃপুর, বিভগৃহ ও পরদৌত্য এই দকল আশ্রয় করিবে না। বিষম নৌকায়, রুক্ষে ও পর্ব্বতে আরোহণ করিবে না। যে ব্যক্তি লোট্টমদ্দন, তৃণজেদন ও নথভক্ষণ করে, তাহার বিনাশ অবশ্বস্কারী। কদাচ মৃগাদি বাদন ও রাত্রিতে 🧗 প্রদীশীবিনা গমন করিবে না ; কথা ভঙ্গ করিবে না, বস্ত্রবিপর্যয় করিবে না। অভদ্র কথা উচ্চারণ বা অনিষ্ট বাক্য প্রয়োগ করিবে না; পলাশ-নির্মিত আসনে উপবেশন করিবে না, দেবাদির ছায়ায় বা পূজ্য ব্যক্তিদ্বয়ের মধ্যে গমন করিবে না: উচ্ছিফ হইয়া তারকাদি দর্শন করিবে না. ছুই হত্তে কণ্ডয়ন করিবে না, দেব ও পিতৃগণের ज्रुलंग मा कदिया, मनीभारत गमन क्तिरव मा, ।[™] জলমধ্যে মলাদি প্রক্ষেপ করিবে না, নগুহইয়া 🖁

স্নান করিবে না, স্নাপনা স্বাপনি মাল্যাপনয়ন कतिरव ना, थतां नित तक न्यार्भ कतिरव ना, शीन-ব্যক্তিদিগকে উপহাদ করিবে না, তাহাদের দহিত গমন করিবে না, যেখানে রাজা নাই, বৈদ্য নাই শই য়েছে ও ল্রী, ভাদৃশ কুস্থানে বাস করিবে না, রজস্বলা ও পতিভাদির সহিত সম্ভাষণ করিবে না, অসংবৃত মুখে হাফা জ্ঞা বা ক্ষুৎ ভ্যাগ করিবে না, প্রভু বা গুরুজনের অবমাননা করিবে না, ইন্দ্রিয়ের অনুকুলে বিচরণ করিবে না, বেগ রোধ করিবে না, হে ভার্গব ! ব্যাধি বা রিপু অল্ল হই লেও উপেক্ষা করিবে না,পথিমধ্যে আচ্যনকরিবে না, আর্দ্রপদে শয়ন করিবে না, অগ্নি ও বারি ধারণ করিবে না, পদ ছারা পদ আক্রমণ করিবে না, পরোক্ষ বা অপরোক্ষে কাহারও দম্বন্ধে অপ্রিয় বাক্য প্রয়োগ করিবে না, বেদ, শান্ত্র, ताका, श्राव ७ (नवशरगंद निन्ना कतिरव ना, जाल-নার নাম, গুরুর নাম, কুপণের নাম, ক্যেষ্ঠপুত্রের नाम ७ खीत नाम कतिरव ना, खीरलारकत नेर्या বা তাহাদিগকে বিশ্বাস করিকে: না. ধর্ম ও দেব-গণের প্রতি বিরাগ প্রদর্শন করিবে না, অসাধু গণের সংসর্ফো বাস করিবে না, নগু, কুরা শয়ন করিবে না, অধ্যের ও অসত্যের জিলানী গ্রন कतिरव मा, रय कार्या कतिरल, वा रय कथा कहिएल, লোকের মনে বেদুনা জন্মে তাহা কথন মনেও कतिरव ना, जनानकरख (मारमतं ও विव्यानवानित পূজা করিবে, কোনমতেই অবহেলা করিবে না. ষষ্ঠী, চতুর্দশী ও অউমাতে অভ্যঙ্গ করিবে না গৃহের নিকটে কদাচ মল মূত্র ত্যাগ করিবে না, উত্তম পুরুষগণের দহিত শক্রতা করিবে না, অপ-বিত্র স্থানে বাস করিবে না, একাকী মিউ ভক্ষণ ∤ সকলের আশ্রয় ও গতি। তিনিই স্প্রি করেন,

করিবে না,আত্মাকে ও পোষ্যবর্গকে বঞ্চনা করিয়া সঞ্চয় করিবে না, স্ত্রী, বৃদ্ধ ও বালকদিকে উপহাস বা প্রতারণা করিবে না।

দদা সত্য কহিবে, মিফ কথায় সংসার বশ হয় জানিয়া দর্কদা ভাহার অভ্যাস করিবে, যে কার্য্যের অনুষ্ঠান করিলে ইহলোক ও পরলোক জয় হয় তাহাতে প্রবৃত্ত হইবে, পরের উপকার করিবে, দদা সম্ভুক্ত হইবে, সচ্চরিত্র অভ্যাস করিবে, আজা ও ইন্দ্রিয়দিগকে আয়ত্ত করিবে, মনের লোযে দকল নফী হয় জানিয়া, ভাছাকে বশে রাখিবে, গুরু ও দেবতার প্রতি ভক্তি করিবে, পরলোকে বিশ্বাদী হইবে, অনান্তিক ও শ্রহালু হইবে, ঈশ্বরে ভক্তি করিলে মুক্তিলাভ হয়, ইহা দৰ্কতোভাবে অবগত হইয়া, দৰ্কদাই ভক্তিমার্গে প্রবৃত্ত হইবে। মনেও কাহারো অনিক চিন্তা করিবে না। ছঃথীর ছঃথমোচনে দর্কদা উদ্যুক্ত হইবে। বিপমের বিপদ্ উদ্ধারে স্বতঃ পরতঃ সচেন্ট হইবে। ধন থাকিলে ভাহার সদ্ব্যয় করিলে; জ্ঞান থাকিলে, অফাকে প্রকৃত উপদেশ দারা দৎপথে আনয়ন করিবে: দংসারে কেহ কাহারই নহে ইহা জানিয়া বৈরাগ্যের অকু-সর্ব পূর্বক সকল ভয় পরিহারপ্রাপ্তির চেষ্টা করিবে।

> ইত্যাগ্রেয়ে মহপুরাণে আচারাধাণায়ন্দিক প্রবৃতিভ্য অধ্যায় সম্পুর্

যগ্লবভিত্য অধ্যায়।

পুক্ষর কহিলেন, হে ভাগব। ভগবান্ বিষ্ণু

巫

পালন করেন ও সংহার করেন। তাঁহা হইতেই স্থায়, ধর্মা, সত্যা, শান্তি ও দয়া প্রভৃতি লোক-রক্ষার উপায়ভূত সদৃগুণ ও সংপ্রবৃত্তি সকলের আবিভাব হইয়াছে। তিনি মেঘরূপে বারিবর্ধণ, সূর্যারূপে সলিলশোষণ ও চন্দ্ররূপে জল নিযমন করিয়া, অয়াদি বিধান দ্বারা এই অনন্তকোটি বিশাল বিশ্ব একপরিবারের ভায়, অনায়াদেই পালন করিতেছেন। যে ব্যক্তি তাঁহার ভক্ত ও অনুরক্ত, তাহার কোন অভাবই নাই। তাঁহার অভক্ত ও অনুসুরক্তেরই অভাব ও অসদ্ভাবের এক-শেষ উপস্থিত হইয়া থাকে। লোকে সংস্কৃত বা অসংস্কৃত,পতিত বা অপতিত,যাহাই হউক, এক-মাত্র হরিমারণেই তাহার স্বর্গ ও অপবর্গ লাভ হইয়া থাকে। পিতাও ত্যাগ করিতে পারেন, মাতাও ত্যাগ করিতে পারেন এবং পরম বন্ধুও ত্যাগ করিতে পারেন, কিন্তু তিনি কথনও ত্যাগ করেন না।

ভগবতী ভাগীরথী তাঁহার পাদকমলবিনিঃসত দেবছুর্লভ অমৃত হইতে প্রাত্ত্রভূত ইইয়াছেন।
এই জন্ম তাঁহার পবিত্রতার দীমা নাই,মৃতব্যক্তির
অফি দকলের কণামাত্রও তাঁহার পবিত্র দলিলে
প্রক্রিপ্ত ইইলে, তাহার নিরতিশয় অভ্যুদয় লাভ
ইয়া থাকে। ফলতঃ, গলাদলিলে লোকের
অফি যাবৎ অবস্থিতি করে, তাবৎ তাহার স্বর্গে
বাদ হয়। আজাত্যাগী ও পতিতদিগের কোন
ক্রিয়াই নাই। কিন্তু তাহাদেরও অফি গলাভ
ভলে পতিত হইলে, পরম উপকার হইয়া থাকে।
হে ভাগব। তাহাদের উদ্দেশে যে জল বা অয়
প্রদান করা যায়, তাহা আকাশে লীন হইয়া
থাকে। অতএব অমুগ্রহ পূর্বক তাহাদের জন্ম
নারায়ণবলি প্রদান করিবে, কেননা, যাহার কেহ

নাই, নারায়ণই তাহার সহায় ও আশ্রয়। বিশে-ষতঃ, পদ্মপলাশলোচন বিষ্ণু অক্ষয়স্বরূপ। স্বতরাং তাঁহাতে দান করিলে উহাও অক্ষয় হইয়া থাকে। বেদে, পুরাণে, তন্ত্রে, সংহিতায়, ফলতঃ সর্বত্রই এই প্রকার উপদেশ ও আদেশ বিহিত হইয়াছে। তিনি অনাথের নাথ, অসহায়ের সহায় ও পতি-তের পাবন। বিশেষতঃ তিনি পতন হইতে পরি-ত্রাণ করেন, এইজন্ম তাঁহাকে পাত্র ক**ছে। অত**-এব পতিতগণের উদ্ধার জন্ম সূর্ব্বতোভাবে ভাঁহার পূজা করা কুর্ত্তির। ভাঁহার পূজা করিলেই সক-লের পূজা করা হয় এবং তাঁহার প্রদাদ লাভ হইলেই, সকলের প্রদাদ লাভ হইয়া থাকে। তিনি বিশ্বের দেবতা ও প্রভু এবং তিনি কালেরও কাল মহাকাল। স্বতরাং তাঁহার অমুগ্রহলাভ হইলে, একবারেই দকল ভয়ের পরিহার হইয়া থাকে এবং পরম নির্ভিযোগ ভোগ করিতে পারা ষায়। মনীষিগণ বলিয়া থাকেন, একমাত্র হরিই পতিতগণের ভুক্তি ও মুক্তি প্রদান করেন, তিনি ভিন্ন উদ্ধারের উপায়ান্তর নাই। ব্রহ্মা সৃষ্টি করেন ও মহাদেব সংহার করেন এবং তিনি পালন করেন। অতএব কায়মনে তাঁহার স্মরণ, মনন ও চিন্তা করিবে। তাঁহার স্মরণে শোক দূর হয়, ভাঁহার চিন্তা করিলে, সকল চিন্তার অবসান হয় এবং তাঁহার পূজা করিলে, সংসারনির্ত্তি হইয়া থাকে। প্রহলাদ ও ধ্রুব প্রস্তৃতি পরমভাগ-বত ব্যক্তিগণ এ বিষয়ের দৃষ্টাস্ত। ফলতঃ তাঁ**হাকে** স্মরণ করিয়া, মনন করিয়া, ভাবনা করিয়া, আরা-ধনা করিয়া ও পূজা করিয়া, কেছু কখনও বিফল হইয়াছে, শুনিতে পাওয়া যায় না। তিনি মৃত্যুর মৃত্যু, ভয়ের ভয়, বিপদের বিপদ ও আপদের আপদ। তাঁহাকে আত্রয় করিলে, মৃত্যু ভয় ও ত বিপদ বিদূরিভ, পরম নির্ভি সংঘটিত, স্বর্গ ও অপবৰ্গ স্থবিহিত এবং আত্মার পরম উৎকর্ষ मम्मानिक स्टेटन, जाहाटक मटलह कि ? जाहात्र সেবক ও ভক্তগণের কোনকালেই পতন মাই. त्माक नाहे, विश्वान नाहे, अवमान नाहे अवः त्कान-রূপ গ্লানি বা ছুঃখ নাই। তিনি সকলকে পিতার ভাগে পালন করেন, জননীর স্থাধ স্নেহ করেন, গুরুর কায় সংশিকা প্রদান করেন এবং বন্ধর স্থায় সকল বিপদে সাহায্য করেন। তিনি না থাকিলে, কেহই থাকিতে পারে না, তিনি না রাখিলে কেইই রাখিতে পারে না এবং তিনি না মারিলে কেইই মারিতে পারে না। পতিত অপ-তিত, তিনি সকলেরই রক্ষাকর্তা, আশ্রেষদাতা ও সাহায্যবিধাতা। অতএব সর্বতোভাবে সকল कारल मकल रमर्ग छाहात्र शृक्षा कन्ना कर्छवा। এ বিষয়ে কোনরূপ হৈধ করা উচিত নহে। লোকে অনবরত মরিতেছে ! ধর্মই তাহাদিগের একমাত্র সহায় জানিয়া, সর্ববর্ণা ধর্মাচরণে প্রবৃত্ত হইবেক। মৃত বন্ধু কখন মৃত ব্যক্তির অনুগমন করিতে পারে না। যে পথে ঘমালয়ে করিতে হয়, প্রিয়তমা পত্নীও দে পথে দঙ্গে গমন করে না। যিনি পরমক্রেছে পালন ও পোষণ করেন, সেই পিতা বা সেই মাতাও মরিলে সঙ্গে যান তাঁহারা মরিলেও ডাঁহাদের অকুগামী হওয়া তোমার সাধ্য কি ? অতএব ধর্মাকুঠানে প্রবৃত্ত হও। ধর্মাই একমাতা বন্ধু ও সহায়। মানুষ যে কোন ছানে গমন করুক না কেন. ধর্ম তাহার অনুগমন করে ৷ কোন মতে কোন কালে কোন অবস্থায় কোন স্থানে ভাষাকে ত্যাগ करत ना।

অদ্যকার কার্যা কলা করিব বলিয়া রাশিনা দিবে না। প্রভাত, কল্যকার কার্য্য **খল্য করিছে ।** अमन कि. अश्रतारक रच कार्या कतिरा स्टेरन, পূর্বাছেই তাহার অমুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হইবে। কেন-না, মৃত্যু শোণিতলোলুপ ব্যাদ্রের ভাষে, সর্বাহাই উনুধ হইয়া আছে : তোমার কার্য্য শেষ হউক বা না হউক, কোন মতেই প্রতীকা করিবে না। বুকী যেমন মেষশাবক গ্রহণ করিয়া প্রস্থান করে, মৃত্যু তেমনি ভোমাকে গ্রহণ করিয়া গমন করিবে; তুমি কেত্ৰে, আপণে, গৃহে বা অশ্ব হৈ কোন विषयि भागक थाक वा यन निविधे कत, यूष्ट्रा কথনও তাহা দেখিবে না বা শুনিবে না অথবা কোন মতেই অপেকা করিবে না। এই মুড়া পিতামাতার কোমল ক্রোড় হইতেও পরমক্ষেহ-নিধি সংসারসারসর্বস্বস্থৃত একমাত্র প্রিয় পুত্রকেও বলপূর্ব্বক গ্রহণ করিয়া থাকে। সংসারে কালের কেহ প্রিয় বা অপ্রিয় নাই। স্থতরাং ভা**হার** নিকট রাজা-প্রজা, ধনী-দরিত্র, অনাথ-সনাথ, সবল-ভূর্বল, বালক রুদ্ধ, কাহারই পরিহার নাই। त्रान, वरन, भक्कनाधिमास वर्षा जरनम् वरा কোন ভাষণ ছুৰ্গম সঙ্কটাপন্ন অন্ত বে কোন স্থানে গমন কর, মৃত্যুর হস্ত দেখানেও তুমি স্থবিস্তৃত तिथिति । कलण्डः, व्यायुष्य कर्म कम व्याथ हरेलारे, মৃত্যু তৎক্ষণাৎ বলপূর্ব্বক হরণ করে। কাহারও উপরোধ, অনুরোধ বা প্রতিরোধ গ্রাহ্ম করে না। যদি কাল পূৰ্ব না হয়, শত শত শরে বিভ ছইলেও মৃত্যু হয় না; আবার কাল পূর্ণ হইলে, কুলাতোর সংস্পর্শেও প্রাণত্যাগ হইয়া থাকে। আক্রমণ করিলে, মন্ত্র, ঔষধ বা অক্ত কোন উপা-য়েই পরিত্রাণ প্রাপ্ত হওয়া যায় না। প্রাকৃত

কর্ম, বংগ যেমন মাতার, তদ্রপ কর্তার অনুগমন করে, সে আকাশে যাইলেও আকাশে যায়, পাতালে প্রবেশ করিলেও পাতালে প্রবেশ করে এবং জলে মগ্র হইলেও জলে মগ্র হইয়া থাকে। কোন মতেই পরিত্যাগ করে না।

এই জগতের আদি ও অবসান উভয়ই আব্যক্ত; মধ্য কেবল ব্যক্ত হইয়া থাকে; উহা নামনাত্র। ফলতঃ, ইহা পূর্ব্বে ছিল না এবং পরেও থাকিবে না। মধ্যে কেবল নামমাত্রে থাকে; বাল্যযোবনাদিদশাপরিবর্ত্তের ভায়, ইহা পূনঃ পূনঃ পরিবর্ত্ত হইয়া থাকে। কখনও মনুষ্য যোনি ও কখনও বা অভাভ্য যোনিতে পতন হয়। লোকে যেমন পুরাতন বন্ত্র ত্যাগ করিয়া, নৃতন বন্ত্র পরিধান করে, শরীরের বিষয়েও সেইরপ। দেহী নিত্য ও অবধ্য। ইহার ছেদ নাই, ভেদ নাই ও ক্লেদ নাই। ইহা জানিয়া শোক ত্যাগ করিবে।

ইঞাধ্যের আন্নমহাপুরাণে শৌচনামক ব্রব্তিক্তর অধ্যায় সমাপ্ত।

সপ্তনবতিতম অধ্যায়।

পুরুর কহিলেন, অধুনা বানপ্রস্থ যতিগণের ধর্ম কীর্ত্তন করিব, শ্রেবণ কর।

জটাজ্ট ধারণ করিবে, নিত্য হোম করিবে, অজিন পরিধান করিবে, বনে বাস করিবে, সঙ্গ পরিহার করিবে, লোকালয় ত্যাগ করিবে, ফল মূল নীবার ও জলমাত্রে প্রাণ ধারণ করিবে, প্রতিগ্রহ পরিত্যাগ করিবে, জিসদ্ধ্যা স্নান করিবে, ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন করিবে, দেবতা ও অতিথিগণের পূজা করিবে। ইহা বনবাদীর ধর্ম। গৃহী ব্যক্তি পুদ্রপোত্র দর্শন করিয়া অরণ্য
আঞায় করিবেন। তথায় যাইয়া একাকী বা দ্রীর
সহিত আয়ুর ভৃতীয় ভাগ যাপন করিবেন এবং
প্রীম্মে অগ্রিমধ্যে, বর্ষায় জলমধ্যে ও হেমস্টে
আর্দ্র তপস্থার অনুষ্ঠান করিবেন। গৃহে যত
দিন ছিলেন, তত দিন বিষয়ভোগ হইয়াছে,
ভাবিয়া, তাহার প্রতি আর মনঃসংযোগ করিবে
না। সর্বদা ঈশ্বরের ধ্যানপরায়ণ হইয়া, সত্য
ও ধর্মের আলোচনা করিবেন। যাহাতে আর
পাপতাপপূর্ণ জীর্ণ সংসারে আসিতে না হয়,
তাহার চেটা করিবেন। জননীর গর্ভকারা অতীব
ভয়ক্ষর ভাবিয়া, সর্ব্ধা সাবধান হইবেন। উপচারতি বা উপশান্তি লাভের চেটা করিবেন।
সংসারের কিছুই কিছু নহে ভাবিয়া যাহা প্রকৃত
বস্তা, তাহারই জন্ম স্বতঃপরতঃ যম্বশীল হইবেন।

ইত্যাব্যের মহাপ্রাণে বানপ্রস্থান্ন নামক

সপ্তনবভিতম অধ্যায় দমাপ্ত।

অফনবতিত্য অধ্যায়।

পুক্ষর কহিলেন, অতঃপর যতিধর্ম কীর্ত্তন করিব। ঐ ধর্মের অমুষ্ঠান করিলে, জ্ঞান ও মোক্ষাদি লাভ হইয়া থাকে। আয়ুর চতুর্থভাগ উপস্থিত হইলে, দঙ্গ ত্যাগ করিবে। যে দিনে ধীরতাদহকারে দঙ্গত্যাগী হইবে, দেই দিনেই প্রজ্ঞা আশ্রয় করিবে। প্রাহ্মাণ প্রান্ধাণতা ইপ্তি নিরূপণ পূর্বক আত্মাতে অগ্নি দকল দমারোপণ করিয়া, গৃহ হইতে প্রব্রজ্ঞিত হইবেন এবং একাকী বিচরণ করিবেন; দকল বিষয়েই উপেক্ষা করিবেন, দেইন অবলম্বন করিবেন এবং জ্ঞান উপার্জ্ঞন করিবেন।

কপাল, বৃক্ষয়ল, কুচেল, জনভসহায়তা ও সমদর্শিতা, এই কয়টি মুক্তির লক্ষণ। জীবন বা
মরণ কিছুরই অভিনন্দন করিবেন না; স্থুখ বা
ছংখ কিছুতেই বিকৃত হইবেন না এবং শোক বা
হর্ষ কিছুতেই মনকে বিচলিত হইতে দিবেন না।
ভূত্য যেমন প্রভুর নিদেশ প্রতীক্ষা করে, তদ্বৎ
একমাত্র কালের প্রতীক্ষা করিবেন। দৃষ্টিপ্ত
পাদ প্রক্ষেপ করিবেন,বন্ত্রপ্ত জল পান করিবেন,
সত্যপ্ত বাক্য প্রয়োগ করিবেন এবং মনঃপ্ত
ব্যবহার করিবেন। অলাবু, দাকপাত্র ও মৃগ্য়পাত্র ব্যবহারই যতির পক্ষে প্রশস্ত।

লোকে ষথন ভোজন করিয়া, মুঘল মতে ও অগ্নি নিৰ্ম্বাণ করিবে এবং যখন তাহাদের গৃহ ধুমশূন্য হইবে, তথন যতিব্যক্তি তথায় গিয়া ভিকা করিবেন। মাকৃকর, অসংক্লিন্ত, প্রাক্পণীত, অযা-চিত ও তাৎকালিক উপপন্ন, এই পঞ্বিধ ভিকা পরিগণিত আছে। নিত্য পাণিপাত্র ছইবে। সর্বাদা লোকের কর্মদোষসমূদ্র গতি পর্যাবেকণ করিবে। যে দে আশ্রমে রত ছইয়া, শুরভাবে ধর্মচর্য্যায় প্রবৃত্ত হইবে এবং সর্ব্বভূতে সমদর্শিতা অবলম্বন বা সমভাব আশ্রেয় করিবে। দণ্ডাদি ধারণ কখন ধর্মের কারণ হইতে পারে না ৷ কতক-বুক্ষের ফল যদিও জল পরিকার করে,কিন্তু তাহার নাম করিলেই কখন জল পরিষ্কৃত হয় না। তথাহি, ভক্মাদি লেপন করিলেই যদি ধার্মিক হওয়া যায়, তাহা হইলে, ভত্মভূষিতদেহ কুরুরাদিরও ধার্মি-কছ প্ৰসিদ্ধ হইতে পারে।

ভূতগণের আবাদস্তরপ এই দেহ ভাগি করিবে। ইহা অন্থিরপ সুগাবিশিষ্ট, স্নায়ুদম্ছে পরিবাাপ্ত, মাংদশোণিতে উপলিপ্ত, মৃত্রপুরীবে পূর্ণ, তুর্গন্ধর, চর্মানন্ধ, জরাশোকে সমাবিষ্ট,

রোগের আয়তন, আতুরভাবাপন, রজোময় ও অনিত্য। ইহাতে কিছুই দার বা বস্তু নাই। অবশ্য একদিন ইহা ত্যাগ করিতে হইবে। কেহই এই নিয়মের বহিভূতি নহে।

ধৃতি, কমা, দম, অন্তেয়, শৌচ, ইন্দ্রিয়নিগ্রহ, ত্রী, বিদ্যা, সত্য, অন্তোধ, এই দশটি ধর্মের লক্ষণ।

অহিংসা, সত্য, অন্তেয়, ব্রহ্মচর্য্য, অপরিপ্রছ, পঞ্চবিধ ঘম ও নিয়ম, শোচ, সন্তোষ, তপজা ও বাধ্যায়, ঈশ্বরপূজা এবং পদাকাদি আসন এই সকল যতিগণের ধর্ম।

প্রাণায়াম দ্বিবিধ; সগর্ভ ও নিশর্ভ। তদ্মধ্যে জপ ও ধ্যান সমন্থিত প্রাণায়াম সগর্ভ এবং তদিত্ব নিগর্ভ। পূরক, কুম্বক ও রেচকসহায়ে সগর্জ ও নিগর্ভ প্রাণায়াম আবার প্রত্যেকে জিবিধ। তদ্মধ্যে বায়ুর পূরণ হইতে পূরক, নিশ্চলত্ব হইতে কুম্বক ও রেচক হিছিত রেচক নির্দিষ্ট হইয়া থাকে।

ইন্দ্রিয়দিগের যথ বিষয় হইতে প্রত্যাহরণ,
ধ্যান, ঈশ্বচিন্তন, মনংসংঘম, ধারণা, সমাধি ও
বেক্ষন্থিতি এই দকল, জাপকগণের ধর্ম। এই
আত্মাই সত্যথরপ, জ্ঞানস্বরূপ ও অনন্তথ্যরূপ
পরব্রন্ম। যিনি বিজ্ঞানস্বরূপ ও আনন্দম্বরূপ পরব্রন্ম, তিনিই আমি এবং তিনিই তত্ত্বিদ। বাহ্যদেবই জ্যোতিশ্বরূপ ও আত্মস্বরূপ পরব্রন্ম এবং
দর্বথা বিমৃক্ত ও ওছার্থররপ। ত্রীয়স্বরূপ ব্রেক্ষর
জাগ্রং, বর্ম ও প্রয়ুপ্ত।দি কোন প্রকার অবস্থা নাই
এবং দেহ, ইন্দ্রিয়, মন, বৃদ্ধি, প্রাণ ও অহম্বারও
নাই। যাহা নিত্য, শুদ্ধবৃদ্ধ, বৃদ্ধ, বৃদ্ধ, স্ত্রু,
আনন্দ ও অহ্যস্বরূপ, দেই প্রব্রন্ধই আমি এবং
দেই দর্বগামী, অক্ষর ও জ্যোতিশ্বরূপ ব্রেক্ষই

বাহ্নদেব। ঐ যে অথগু ও ওঙ্কারস্বরূপ আদিত্য-পুরুষ, আমাতে ও উহাঁতে কিছুই ভেদ নাই।

যে ব্যক্তি দর্কারম্ভ পরিত্যাগ করেন,লোকের হথে হথ ও হঃথে হঃখ বোধ করেন, কেছ কোন-রূপ অপরাধ করিলে তাহা দহ্ম করেন এবং ধাঁহার আশায় ও অন্তঃকরণ বিশুদ্ধ, তিনি ব্রক্ষাণ্ড ভেদ করিয়া, ব্রক্ষম্বরূপ প্রাপ্ত হয়েন।

শাষাট়ী পোর্ণমাদীতে চাতুর্মাস্থ ব্রত অমুষ্ঠান করিবে। ধ্যান ও বায়ুদংযমই যতিগণের প্রায়-শ্চিত।

> ইত্যাগ্রেষে মহাপ্রাণে ব্তিধর্ম নামক অস্টনবভিত্ম অধ্যায় সমাধা।

একোনশততম অধ্যায়।

পুকর কহিলেন, মনু,বিষ্ণু, যজ্ঞবন্ধা, হারীত, আত্রি, যুম, অঙ্গিরা, দক্ষ, সংবর্ত্ত, শাতাতপ, পরানর, আপস্তম্ব, উশনা, ব্যাস, কাত্যায়ন, রহস্পতি, গোতম, শহা ও লিখিত, ইহারা যে ভুক্তিমুক্তিদ ধর্ম কীর্ত্তন করিয়াছেন, তাহা সংক্ষেপে বর্ণন করিব, প্রবণ কর।

বেদে, দিবিধ ধর্ম উপদিক হইয়াছে, প্রবৃত্ত ধর্ম ও নিরত ধর্ম। তন্মধ্যে যাহা কাম্য অর্থাৎ কোনরপ ফলকামনায় অনুষ্ঠিত হয়, তাহার নাম প্রবৃত্ত ধর্ম। আর, যাহা জ্ঞানপূর্বক বিহিত হয়। থাকে, তাহাকে নির্ত্ত ধর্ম কহে। কাম্য ধর্মে স্বর্গাদি লাভ ও নির্ত্ত ধর্মে নির্বর্গাশ্মক্তি প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

বেদাভ্যাদ, তপস্থা, জ্ঞান, ইন্দ্রিয়দংযম, অহিংসাও গুরুদেবা,এই দকল ছারা নিঃভৌয়ুদ্রলাভ হয়। আত্মজান এই সকলের মধ্যে প্রধান বলিয়া, কীর্ত্তিত হইয়া থাকে। অথবা, এই আত্মজান, সকল বিদ্যার শ্রেষ্ঠ । ইহা দারা অমৃত্ত ও অভ্যু লাভ হয়, আত্মেৎকর্ষ বিহিত হয়, মৃক্তির দার আবিষ্কৃত হয়,নরকের দার আবৃত্ত হয় এবং সংসারজ্য সাধিত হয়। ইহা যাহার নাই, তাহার কিছুই নাই। আত্মযাদ্দী পুরুষ আত্মজান, সমদর্শিতা ও বেদাভ্যাদে যত্রপরায়ণ হইয়া, আত্মাকে সর্বাভ্তিত ও সর্বাভ্তিত আত্মতে সমভাবে অবলোকন করিয়া, স্বারাজ্যে অধিগমন করেন। আত্মজানই দিজগণের, বিশেষতঃ, ব্রাহ্মণের সামর্থ্য। বাঁহার আত্মজান নাই, তিনি নিতান্ত ত্বেলন।

বেদশাস্ত্রার্থতভু সবিশেষ অবগত হইয়া, যে সে আত্রমে বাস করত ইহলোকে থাকিয়াই, ত্রশ্বরূপ প্রাপ্তি হইয়া থাকে। যথাবিধানে গায়ত্র্যাদি উপাদনা করিবে, যথাবিধানে গুরুর षातारमा कतिरव, यथाविशास मर्गारळ ब्याला-চনা করিবে এবং যথাবিধানে আত্মলাভের কামনা করিবে, ইহাই ভ্রাক্ষণের প্রকৃত লক্ষণ। শাস্ত্রা-দিতে যে সময়ে যে কার্য্য করিতে নিষেধ বা বিধি আছে,দর্বভোভাবে তাহার পরিত্যাগ বা অনুষ্ঠান করিবে। একমাত্র পরব্রহ্মকে পরিজ্ঞাত ছও-য়াই প্রকৃত ব্রাহ্মণত্ব, ইহা বিশেষরূপে বিদিত হইয়া, যথাবিহিত ধ্যান, ধারণা, প্রাণায়াম ও নিদি-ধ্যাদনাদিতে প্রবৃত্ত হইবে এবং ঈশ্বরই বিশের অন্বিতীয় আশ্ৰয়, ইহা বিশিষ্টরূপে জানিয়া, সর্বাদা তদাত চিত্তে তাঁহারই উপাসনা করিবে। **५**३ मकल यथाविधि अनुष्ठीन कतित्वरे. खान्नाग्ड-রক্ষা ও চরমে প্রম্পদ্রাপ্তি হইয়া থাকে. তাহাতে অণুমাত্র দলেহ নাই। এই সকলের কোনরূপে ব্যভিচার বা ব্যভিক্রম করিলেই প্রাক্ষ

ণোর হানি ও পরিণামজংশ সংঘটিত হয়, তাহা-তেও কিছুমাত সংশয় নাই।

> ইজাটেয় মহাপুর্তে ধর্মলান্ত্রনামক নবনবভিত্ন অধ্যাহ সমাধা।

শতত্য স্ধার।

পুদ্ধর কহিলেন, শ্রীকাম, শান্তিকাম, বৃষ্টিকাম, আয়ুকাম ও পৃষ্টিকাম ব্যক্তি গ্রহণাগ করিবেন। সূর্য্য, সোম, মঙ্গল, বৃধ, রহস্পালি, শুক্র, শনৈশ্চর, রাহু ও কেছু এই নয়টি গ্রহ। যথাক্রমে ভামা, ফাটিক, রক্তচন্দন, মর্ধ, রজভ, লৌহ ও শীশ এই সকলে ঐ সকল গ্রহমূর্ত্তি নির্মাণ করিবে। অথবা, গন্ধমগুলে ঐ সকলের প্রতিমূর্ত্তি অন্ধিত করিয়া, স্থবর্ণ হারা পূজা করিবে এবং যথাবর্ণ বস্ত্র, ক্রুম, গন্ধ, বলি, ধুপ ও গুগ্গুলু। এই সকল দ্রব্য প্রদান করিবে। প্রতি গ্রহের উদ্দেশে মস্ত্রোচ্চারণ পূর্বকি চরু দান করা কর্ত্রবা। আরুক্ষেণ ইমং দেবা, অগ্রিমূর্কা। দিবঃ করুৎ ও উদ্বৃধ্যম্ব এই আটটী ঋক্ যথাসংখ্য প্রকীর্তিত হইয়াছে।

অর্ক, পালাদ, থদির, অপামার্গ, পিপ্পল, উচুন্বর, শমী, দুর্বা, কুশ ও দমিধ যথাক্রমে এই সকলে এক এক এছের উদ্দেশে মধু, সর্পি ও দধি যোগে অউশত বা অভাবিংশতি হোম করিবে এবং গুড়োদন, পায়দ, হবিষ্য, দংগ্যোদন, হবি, পূপ, মাংদ ও বিচিত্র অন্ধ প্রদান প্রঃদর ব্রাহ্মণ-দিগকে ভোজন করাইবে। এইরূপে যথালাভ, যথাশক্তি ও যথাবিধি সহকারসহকারে ভোজন করাইয়া, ধেলু, শহা, অনড়ান্, হেম, বস্ত্র, হয়, ক্ষেবর্ণ গাভী ও আয়স ছাগ দক্ষিণা প্রদান করিবে। যে গ্রহ ধে সময়ে যাহার প্রতি প্রতি

ক্ল, সেই সময়ে সেই এত্বের মন্থ্যকৈ পুজা করা কর্ত্বা। রাজাদিগের উন্নতি ও অবনতি সমস্তই এহাধীন এবং জগতের ভাবাভাবও এত্বলেই অথ জংগ, হর্ষ বিষাদ ও শোক অবসাদ ইত্যাদি ভোগ করে। এহ প্রসন্থ না হইলে, কোন কার্যোই ভদস্থতা হয় না। স্বরং পিতামহ এহদিগকে এইপ্রকার বর দিয়াছেন যে, তোমরা প্রজিত হইলে, লোকের অভীক্টিদিন্ধি ও সমৃদ্ধি সাধন করিবে।

ইতাবেৰে অদিনহাপ্ৰাণে নৰএহহোম নামক শতভ্য অধায় স্থাপ্ত।

একাধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, যিনি হৃদয়ে দীপবং বিরাজ করিতেছেন, সেই পরমগ্রভাববিশিষ্ট আত্মার ধ্যান করিবে। তিনি সর্কব্যাপী ও সর্ক্ষয় এবং তিনি সকলের নিয়স্তা।

শ্রাদ্ধে গব্য দধি, স্বত ও দুগ্ধ প্রদান করা কর্ত্ব্য। প্রিয়ঙ্গু, মসূর, বার্ত্তাকু ও কোদ্রব ইত্যাদি দ্রব্য প্রদান করা কর্ত্তব্য নহে। পর্বন্দির সন্ধি সময়ে যৎকালে সৈংহিকের সূর্য্যকে আস করে, তাহাকে হস্তিচ্ছায়া জ্ঞান করিবে। ঐ ছায়া প্রান্ধদানাদি সকল কার্য্যে অক্যু ফল প্রস্বাকরে।

যে ব্যক্তি আত্মা ভিন্ন মিতীয় অবলোকন করেন না,সেই আত্মরত নির্মালম্বভাব যোগী একা-ভূত হয়েন।

বলপূর্বক উপভূক্তা বা শক্ররহন্তগতা হইলে,

স্ত্রী কখনও জারসংসর্গে তাদৃশ অবস্থায় দূষিতা হয়না।

যাহারা বিষয় ও ইন্দ্রিয় এই উভয়ের যোগ-কেই যোগ বলে, তাহারাই অপণ্ডিত। তাহারা ধর্মজ্ঞানে অধর্মের দেবা করিয়া থাকে। কেহ কেহ আছা এবং মন এই উভয়ের সম্যক্রপ মিল-নকে যোগ বলে। তাহারাই প্রকৃত পণ্ডিত-পদের বাচ্য। মনকে বৃত্তিহীন ও ক্ষেত্রজ্ঞকে পর-মাত্মায় একীকৃত করিলেই, বন্ধন হইতে বিমুক্ত হওয়া যায়। ইহারই নাম উত্ম যোগ। যে ব্যক্তি মনের সহিত অভাভ ইন্দ্রিয়গ্রামজয় করে, দেব, অহুর বা মনুষ্য কেহই তাছাকে জয় করিতে পারে না। সমূদায় বহিশ্ম খকে অভিমুখ করিয়া, ইত্রিম্বদিগকে মনে এবং মনকে আত্মায় সংযো-দ্বিত করিবে। অনন্তর সর্ব্যভাববিনির্মাক্ত ক্ষেত্র-জ্ঞকে পরত্রেলা অস্ত করিবে। ইহাই প্রকৃত জ্ঞান ও প্রকৃত ধ্যান। তদ্তিম, আর যাহা কিছু সমস্তই গ্রন্থবিস্তর্মাত। ইহা যে জানে, দেই প্রকৃত জ্ঞানী।

যাহা নাই, তাহাই আছে, এই রূপে যাঁহাকে লইয়া বিরোধ উপস্থিত হয় এবং যাঁহার বিষয় বলিতে ও হৃদয়ঙ্গম করিতে লোকে দমর্থ হয় না, এইরূপে যাঁহার প্রকৃতস্বরূপপরিজ্ঞানে দক্ষম হওয়া যায় না, তিনিই ব্রহ্ম। কুমারা বেমন স্ত্রীহৃথ জানে না, জাত্যন্ধ যেমন ঘট অবগত নহে, অথবা জড়বুরি যেমন প্রকৃত হৃথ বিদিত হইতে পারে না, অযোগী তেমনি এই ব্রহ্ম বিষয় পরিজ্ঞাত নহে। এই ব্রহ্মকে জানিলেই দকল জানা হয়, এই ব্রহ্মকে পাইলেই দকল পাওয়া হয়, এই ব্রহ্মকে ভাবিলেই দকল ভাবা হয় এবং এই ব্রহ্মকে ভাবিলেই দকল ভাবা হয় এবং

ব্রহ্ম সংসারের কিছুই নহেন; অথচ তিনিই সম্দায়। অতএব সর্বাদা তাঁহার ধ্যান করিবে। বাহ্মণকে সম্যাস অবলম্বন করিতে দেখিলে, ভাক্ষর ফ্রন্থান হইতে বিচলিত হয়েন। কেননা, তিনি মনে করেন, ইনি আমার মণ্ডল ভেদ করিয়া প্রব্রেছ্ম অধিগমন করিতেছেন।

একাক্ষরই পরব্রহ্ম, প্রাণায়ামই পরমতপস্থা এবং সাবিত্রীই পরমণাবন বলিয়া পরিগণিত হয়েন। আত্মজানই পরমজ্ঞান, ধর্মই পরমসহায় এবং ব্রহ্মপদই পরমপদ প্রগাত হইয়া থাকে।

পূর্বের সোম, গন্ধর্ব, অগ্নিও দেবগণ জ্রীদিগকে ভোগ করিয়াছেন, পশ্চাৎ মানুষেরা ভোগ করি-তেছে। ইহারা কাহারও কর্তৃক দূষিতা হয় না। অসবর্ণ কর্তৃক জ্রীর যোনিতে গর্ভ নিষিক্ত হইলে, যাবৎ শল্যমোচন না হয়, তাবৎ নারী অশুদ্ধা থাকে; কিন্তু শল্য বিনিঃস্ত হইলে, রজঃপাত দ্বারা তাহার শুদ্ধি সম্পন্ন হয়।

ধ্যান দ্বারা যেমন পাপকর্মের শোধন বা পরিহার প্রাপ্তি হয়, আর কিছুতেই সেরূপ হয় না। চণ্ডালের অমাদি ভক্ষণ করিলেও, ধ্যান দ্বারা শুদ্ধিলাভে সমর্থ হওয়া যায়। ফলতঃ, অগ্নিতে যেমন স্বর্ণাদির মলাদি নিক্ষাশিত হয়, ধ্যান দ্বারা তেমনি আত্মার মলনির্হরণ হইয়া থাকে। আত্মা ধ্যাতা, মন ধ্যান, বিষ্ণু ধ্যেয় এবং হরি ধ্যানের ফল।

যতি শ্রাদ্ধে পংক্তি-পাবন পাবন হইলে,
সক্ষয় ফল লাভ হইয়া থাকে। কেন না, দেই
আাদ্ধে পিতৃগণের পরম তৃপ্তি সমুপন্থিত হয় এবং
পিতৃগণ পরিতৃপ্ত হইলেই, শ্রাদ্ধকর্তার অশেষ ফল
লাভ হয়, তাহাতে সন্দেহ কি ?

ट्यांक कतिर्दर, मान कतिर्दर, मेंडा विनादर,

সৎপথে চলিবে, সংসঙ্গ করিবে এবং সৎস্বরূপ নারায়ণে ঐকান্তিক ভক্তিপরায়ণ ও অনুরাগবান্ হইবে। তাহা হইলে আশু পরমপ্রশস্ত মুক্তি-মার্গ দর্শন করিবে। আবার, ইংগর নাম প্রকৃত ধর্মপথ, নে পথে অভয়, অমৃত, জয়, বিজয় এবং নিত্য হ্রথ ও শাধত সন্তোষ একত্রে বিচরণ করিয়া থাকে। যে ব্যক্তি ইহা জানে, দেই জানে। আর যে ইহা না জানে, সেই মূর্থ ও শোচনীয়। তুমি কখন শোচনীয় হইও না।

যে ব্ৰাহ্মণ নৈষ্টিকধৰ্ম অবলহনপূৰ্ব্যক ভাহা হইতে প্রচাত হন, তাহার কোন রূপ প্রায়শ্চিত দেখিতে পাই না। দেইরূপ, আত্মঘাতীরও প্রায়শ্চিত নাই। অতএব উল্লিখিত ভাক্ষণ ও আত্মঘাতী উভয়েই এক পদার্থ এ বিক্যে অণুমাত্র সন্দেহ নাই।

যাহারা প্রভ্যা স্বলম্বনপূর্ক্ক পর্ত্বাতে বীর্য্য নিষিক্ত করে, তাহারা ও তাহাদের দন্তান সন্ত-তিরা বিতুরনামক চণ্ডাল হইয়া জন্ম গ্রহণ করে, তাহাতে সংশয় নাই।

একমাত্র যোগই হাজ্রর করিবে। যোগ ভিন্ন অন্য মন্ত্র অঘমর্ঘণ নহে।

> ইড়াপ্রেয়ে মহাপ্রাণে নান্ধিখনামক একাধিকপত্ততম মধ্যার সমাপ্ত।

দ্যধিকশততম ত্রায়।

পুষ্ণর কহিলেন, মতঃপর বেদস্মার্ত্রধর্ম কীর্ত্তন করিব। ধর্ম পঞ্চিধ।

একমাত্র বর্ণস্থ আশ্রেয় করিয়া যে অধিকার প্রবর্ত্তি হয়, তাহাই বর্ণধর্ম কানিবে ৷ যেমন উপনয়ন : আর, আশ্রম আশ্রয় করিয়া, যে পদার্থ জিতা পুনরায় গ্রহয়ক্ত কীর্ত্তন করিতেছি। গ্রহ্যজ্ঞ

সংবিহিত হয়, তাহাকে আশ্রমধর্ম বলে। ভিন্নপিগুদিক। উভয় নিমিন্তবোগে যে সংপ্রবর্ত্তিত হয়, তাহাকে নৈমিত্তিক বলে। যেমন প্রায়শ্চিত্রবিধি।

অউচত্থারিংশৎ সংস্কার দ্বারা <u>ব্রহ্মণোকে</u> গমন করিতে পারা যায়। গর্ভাধান, পুংস্বন, দীমভোন্যন, জাতকর্ম, নামকরণ, অল্পাশন চুড়াকরণ, উপনয়ন, বেদব্রতচতুইয়, স্নান, স্বধর্ম-চারিণীদোগ, দেবযজ্ঞ, পিতৃযজ্ঞ, নৃযজ্ঞ, ভূতযজ্ঞ, ব্রহ্মযজ্ঞ, সপ্রপাক্যজ্ঞস্থ অউকা, পার্বণশ্রাদ্ধ, শ্রাবণী, অগ্রহায়ণী, চৈত্রী, আশ্বযুজী, সপ্তহবি-র্যজ্ঞ অন্টকা, অগ্নাধ্যান, অগ্নিহোত্র, দর্শ, পৌর্ণ-মাদ, চাতুর্মাস্ত, অগ্রহায়ণেষ্টি, দৌত্রামণি, অগ্রি-টোম, উক্থ, যোড়শী, বাজপেয়, অতিরাত্ত এবং দয়া, ক্ষমা, অনসূয়া, অনায়াদ, মঙ্গল, অকার্পণ্য, অস্পূহা ও শোচ এই অইবিধ আত্মগুণ যাঁহার আছে, তিনিই পর্যপদ প্রাপ্ত হয়েন।

প্রচার, মৈথুন, প্রস্রাব, দন্তগাবন, স্থান ও ভোজন এই ছয় বিষয়ে মৌনাবলম্বন করিবে। মিথ্যা সাক্ষ্য প্রদান করিবে না। অপ্রিয় সভ্য বলিবে না। জানিয়া কখনও মিথ্যা কহিবে না। গুরুকে দেখিলেই, প্রণাম করিবে। আগন ভাঁছাকে বৃদিতে দিবে না। স্থান করিয়া পুষ্প গ্রহণ করিবে না। তাহা হইলে, ঐ পুষ্প দেবতার অযোগ্য হইয়া থাকে।

'ত্ৰাধিকশতত্ম অধ্যায়।

অগ্রি কহিলেন, এ, শান্তি ও বিজয়াদি লাভ

তিনপ্রকার; অযুত্রহামাত্মক, লক্ষহোমাত্মক ও কোটিহোমাত্মক।

বেদীর ঈশানে অগ্রিকুণ্ড হইতে গ্রহদিগকে আবাহন করিয়া, মগুলে স্থাপন করিবে। সোম্যে कुक, त्रेभारन दुध, श्रृद्धनत्त एक, व्यारशुरस मंत्री, निकटन (क्षेत्र, मरना जाकत, बारना मनि, निक्ष एक রাছ, বায়বে কেডু, ঈশান, উমা, গুছ, বিষ্ণু, ব্রহ্মা, ইন্দ্র, যম, কাল, চিত্রগুপ্ত, অধিদেবগণ, অগ্নি, জল, शृथिवी, इति, भंठी, প্রজেশ, অহি, विधि, গণেশ, তুর্গা ও অনিল এবং আকাশ ও অধিনীকুমার যুগল ষ্থাক্রমে ইহাঁদের স্বিশেষ পূজা করিয়া, বেদজ ষীজসহারে অর্জনা করিবে। অর্ক, পালাশ, থদির অপামার্গ, পিপ্পল, উত্তর, শমী, দূর্বা, কুশ ও স্মিধ যথাক্রমে এই সকল দ্রব্য দ্ধি,মধু ও আজ্য মিশ্রিত করিয়া, অন্টশত হোম করিবে এবং এক. অফ বা চারি কুম্ভ পুরণপূর্বক পূর্ণাহুতি প্রদান করিবে। অনস্তর বহুধারাসহকারে দক্ষিণা দান করিয়া, দমন্ত্রক কুন্তুচতুষ্টয়ে যলমানকে অভিধিক্ত করিবে। তৎকালে এই প্রকার বলিতে হইবে,---

ভ্রন্ধা, বিষ্ণু ও মহেশ্বপ্রপ্রমুথ হ্রগণ ভোষার অভিষেক করুন। জগরাথ বাহুদেব, প্রাভু দক্ষর্বণ, প্রভুলের ও অনিরুদ্ধ, ইহারা ভোষার বিজয় বিধান করুন। , আখণ্ডল, অণ্ডি, ভগবান্ যম, নৈপ্লতি, বরুণ, পবন, ধনাধ্যক্ষ, শিব, ভ্রন্থা, শেষ, এবং নিক্পালগণ, দকলে দর্কদা ভোষার পালন করুন। কার্তি, লক্ষ্মী, ধৃতি, মেধা, পৃষ্টি, শ্রন্ধা, ক্রিয়া, মতি, বৃদ্ধি, লক্ষ্মা, বপু, শাস্তি, ভুষ্টি, কান্তি, মাহুণণ এবং ধ্যের পত্নীসমৃহ, ইহারা দকলে ভোষাব অভিষেক করুন। আদিতা, চন্দ্রমা, ভৌষ, বুণ, জীব, শিত, শনি, রাজ্ ও কেছুপ্রমুখ গ্রেগণ তপিত হইয়া, ভোষার অভিষেক করুন।

দেবগণ, দানবগণ, গদ্ধবিধণা, যক্ষণণ, রাক্ষ্যণণ, প্রকাগণ, ঋষিগণ, মনুসাণ, শোগণ, দেবখাভূগণ, দেবপদ্ধীগণ, রক্ষণণ, নাগগণ, দৈত্যগণ, ক্ষান্যান, গণ, অন্ত্রগণ, শান্ত্রগণ, নরপতিগণ, রাহনপণ, উমধ্যণ, রহুগণ, কালাবয়বগণ, সরিম্পাণ, সাগর্পণ, শৈলগণ, ভীর্থগণ, মেঘগণ, ও নদগণ, ইহারা সকলে সর্ব্বামার্থসিদ্ধির জন্ম তোমার অভিষেক করেন।

অনন্তর অলঙ্কত হইয়া, হেম গো, অন্ন ও ভূমি প্রভৃতি দান করিবে।

হে কপিলে। হে রোহিণি ! ভূমি দেবগণের পূজনীয়া এবং ভূমি দর্বনেব ও দর্বতীর্থময়ী। অতএব আয়াকে শান্তি প্রদান কর।

হে শহা ! তুমি পুণ্যসকলের মধ্যে পুণ্য ও
মঙ্গল সকলের মধ্যে মঙ্গল ৷ বিষ্ণু ভোমায়
নিত্য সমতে ধারণ করেন। অতএব তুমি আমায়
শান্তি প্রদান কর।

হে ধর্ম ! তুমি র্ষরূপে জগতের আনন্দ বিধান করিয়া থাক এবং তুমি অইম্র্তির অধিষ্ঠান, অতএব আমায় শান্তি প্রদান কর।

হে ছেম। তুমি হিরণ্যগর্ভের গর্ভে অবস্থিতি কর। তুমি বিভাবস্থর বীজ এবং তুমি অনস্ত পুণ্য-ফ্ল প্রদান করিয়া থাক, অতএব তুমি আমায় শান্তি প্রদান কর।

হে বিষ্ণু! পীতবন্ত্রমুগল তোমার পরমগ্রীতি-প্রদ। আমি তাহা প্রদান করিতেছি, অতএব তুমি আমার শান্তি প্রদান কর।

বিষ্ণু তুমি মৎস্যারপে অমৃতের উদ্ভবক্ষেত্র এবং চন্দ্র ও দূর্য্য তোমার বাহন। অভএব তুমি আমার শাস্তি প্রদান কর।

(ह পृথিবी ! ভূমি কেশব সদৃশ সকল কাম

লোহন ও সকল পাপ হরণ করিয়া থাক। অভএব তুমি আমায় শান্তি প্রদান কর। সন্দায় আয়স কর্ম লাসলাদি আয়ুধ সর্বাদা তোমার অধীন। অভএব আমায় শান্তি প্রদান কর।

যেহেতু, তুমি সমুদায় যজ্ঞের অঙ্গরূপে বিরাজ-মান ও বিভাবস্থর যোনি। অতএব আমায় নিত্য শাস্তি প্রদান কর।

যেহেতু, গোর অঙ্গদকলে চতুর্দশ ভুবন প্রতিষ্ঠিত, দেইহেতু ইহলোকে ও পরলোকে আমার মঙ্গল সংঘটিত হউক।

যেহেতু, শিব ও কেশবের শয়ন কখন শুন্য হয় না, সেইহেতু, আমি এই শয়া প্রদান করি-লাম। জন্ম জন্ম যেন কখন আমার এই শয়াও শৃত্য না হয়।

সমুদায় রত্নে সমুদায় দেবগণ প্রতিষ্ঠিত আছেন, তজ্জন্য রত্ন প্রদান করিতেছি। হ্ররগণ সকলে আমায় শান্তি প্রদান করুন।

অন্যান্য দান সমুদায় ভূমিদানের ধোড়শ কলারও যোগ্য নহে। অতএব আমি ভূমি দান করিতেছি, আমার শান্তি সমুদ্ধ ত হউক।

অযুতহোমাত্মক গ্রহযক্তে দক্ষিণা দান দ্বারা সংগ্রামে জয় লাভ হয় এবং লক্ষ হোম ও কোটি হোমগ্রহযক্তে সমুদায় কামনাই সিদ্ধ হইয়া থাকে।

অযুতহোমসময়ে গৃহদেশে মণ্ডপমধ্যে মেখলা-মোনিসংযুক্ত হস্তমাত্র কুণ্ড নির্মাণ ও চারি জন ঋত্বিক্ নিয়োগ করা বিধি। ইহাতে সমস্তই দশ গুণ হইয়া থাকে। এই লক্ষ হোমে এই বলিয়া তাক্ষের পূজা করিবে, তুমি পরমেন্ডীর বাহন ও সামধ্বনি তোমার শরীর এবং তুমি বিষয় সকলের বিনাশ করিয়া থাক। অতএব আমায় নিত্য শাস্তি প্রদান কর। পূর্ববহু কুণ্ডামন্ত্রণপুরঃসর লক্ষ হোমাচরণ এবং বহুধারাসহকারে শয্যা ও ভূবণাদি প্রদান করিবেক। লক্ষ হোম করিলে, পুজ, জর, রাদ্ধ্য, বিজয়, ভূক্তি ও মুক্তি প্রভৃতি প্রাপ্ত হওরা যায়। এই হোমে দল বা আট জন ঋষিক্ নিয়োগ করিবে। কোটিহোমে সমুদায় শক্তে নাশা হইয়া থাকে। চতুর্হন্ত বা অক্টহন্ত কুণ্ড নির্মাণ করিয়া, ভাদশ জন ঋষিক্ হারা এই হোম নির্বাহ্ত করিবে। ইহা ঘারা সর্ববিকামনা সিদ্ধি ও বিষ্ণু-লোক প্রাপ্তি হইয়া থাকে। গ্রহ্মন্ত্র, বৈশুব মন্ত্র, আগ্রেয় মন্ত্র, শৈব মন্ত্র ও বৈদিক মন্ত্র এবং গায়ত্রীজ্ঞপপুরঃসর হোম করিবে। তিল, যব, য়ত ও ধানাদি হারা ঐরপে হোম করিলে, অখ্ব-মেয়মন্তর ফলাদি লাভ হইয়া থাকে।

বিষেষণ ও অভিচারাদিতে ত্রিকোণকৃণ্ড নির্মাণ করা বিধি এবং বামহন্তে শ্যেনান্থির অমি-সংযুক্ত সমিধ সকল নিক্ষেপ করিবে। তৎকালে রক্তবর্ণ ভূষণসমস্ত ধারণ করিয়া মুক্তকেশে শত্রুর অশিব চিন্তা করিতে হইবে।

ইন্ড্যাগ্লেরে মহাপুরাণে অযুত্তলক্ষকোটিহোম নামক জ্রাধিকশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুরধিকশততম অধ্যায় i

ুপুদ্ধর কহিলেন, পাপ করিয়া, প্রায়শ্চিন্ত না করিলে, রাজা তাহার দণ্ড করিবেন। অতএব, কামতঃ বা অকামতঃ বিহিত প্রায়শ্চিন্ত করা কর্ত্ব্য। মত, কুদ্ধ, আতুর, মহাপাতকী, উদকী, গণ, গণিকা, বার্দ্ধ্ব, গায়ন, অভিশপ্ত, ষণ্ড, পর-পুরুষগামিনী স্ত্রী, রজক, নৃশংদ, বন্দী, কিতব, মিধ্যাতপন্থী, চৌর, দণ্ডিক, কুণ্ড, গোল, স্ত্রীজিত, বেদবিক্রমী, শৈল্য, তন্ত্রবায়, কৃতত্ব, কর্মার, নিষাদ, চেলনির্ণেজক, মিথ্যাপ্রব্রজিত, পুংশ্চলী, তৈলিক, আর্ঢ়পতিত ও বিদ্বিউ, এই সকলের অন্নভক্ষণ করিবে না। এই রূপ,ব্রাহ্মণকর্ত্তক অনি-মন্ত্রিত হইয়া, প্রাহ্মণের অর ভক্ষণ করিবে না এবং শুদ্র নিমন্ত্রিত হইয়াও, ব্রাক্সণের অন্ন ভকণ করিবে না। অজ্ঞানবশতঃ ইহাদের মধ্যে অন্য-তমের অন্ন ভক্ষণ করিলে, তিন দিন উপবাস করিবে এবং জ্ঞানপূর্বক বা সম্মতিক্রমে ভক্ষণ করিলে, কুচ্ছ আচরণ কবিবে। চণ্ডাল ও শ্বপচের অন্নভোজন করিলে, চাদ্রায়ণ করিবে। প্রেভান্ন. গবাদ্রাতার, শৃদ্রের বা কুরুরের উচ্ছিন্টার এবং পতিতাম ভোজন করিলে, তপ্তকুচ্ছের অনুষ্ঠান এবং অশোচে শুদ্ধ কৃত্যু সমাচরণ করিবে। যাহার অশোচে যে ভোজন করে, দেও ভাহার ন্যার অশোচ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

কুপমধ্যে পঞ্চনথ জন্ত মৃত বা অন্য কোন অমেধ্য বস্তু পতিত হইলে, কোন দ্বিজোভম যদি তাহার জন পান করেন, তিনি তিন দিন উপবাদী থাকিবেন।

বিট্, বরাহ, খর, উপ্র,গোমায়্, কপি ও কাক, ইহাদের মৃত্র ও পুরীষ ভক্ষণ করিলে, চান্দ্রায়ণ করিবে। শুক্ষমাংদ, প্রেতায় এবং ক্রব্যাদ, শ্কর, উপ্র, গোমায়্, কপি, কাক গো, নর, অশ্ব ও উপ্র ইহাদের মাংদাদি ভক্ষণ এবং গ্রাম্য কুক্ট ও হস্তির মাংদ ভোজন করিলে, তপ্ত কচ্ছের অমুষ্ঠান দারা শুদ্ধিলাভ হইয়া থাকে। আমশ্রাদ্ধে ভোজন করিলে, ব্রহ্মচারী হইয়া মধ্-মান্ত পান করিবে। লশুন ও গৃঞ্জন ভক্ষণ করিলে, প্রাজাপত্যাদি দারা শুদ্ধিলাভ হয়। আলুকৃত মাংদ ভক্ষণ করিলে, চান্দ্রায়ণ করিবে। গো, মহিয় ও অজ এই সকল পশু বর্জিয়া, অন্য কোন পশুর ক্ষীর পান করিবে না। শশক, শলকী, গোধা, খড়গী ও কৃর্মা, এই কয়টি পঞ্চনখ জস্তু ভক্ষ্য, তদ্বাতীত অভক্ষ্য। পাঠীন, রোহিত ও সিংহতুও মৎস্য ভক্ষণ করিবে, তদ্যতীত অন্যান্য মৎস্য অভক্ষ্য। যব, গোধ্য ও ছুম্মের বিকার-মাত্রেই ভক্ষণ করা যাইতে পারে।

ব্রহ্মহত্যা, হুরাপান, চৌর্য্য ও গুরুপত্নীগমন এবং ঐ ঐ পাপীর সহিত সংদর্গ, এই কয়টিকে মহাপাতক বলে ৷ মিথ্যাবিষয়ে দমুৎকর্ষ, রাজার প্রতি পিশুনতা ও গুরুর সম্বন্ধে অলীক নির্বন্ধ. এই কয়টি ব্রহ্মহত্যার সমান। ব্রহ্মত্যাগ, বেদ-নিন্দা, কট্যাক্ষ্য, মিত্রবধ, গর্হিত আজ্য ও অন্ন ভক্ষণ, এই ছয়টি স্থরাপানের সমান। ন্যাসাপ্ররণ, বজ্রহরণ ও মণিহরণ,মনুষ্যহরণ,অখহরণ, রেগপ্যহরণ, ভূমিহরণ, স্বর্ণহরণের সমান। স্বযোভা, কুমারী, অন্ত্যজা এবং সথার ও পুত্রের স্ত্রীতে রেতঃদেক গুরুপত্নীগমনের সমান। গোবধ, অ্যাজ্য হাজন, প্রদার্মর্ঘণ,ভাাত্মবিক্রয়,গুরুমাতৃপিতৃত্যাগ,স্বাধ্যায়-বর্জন, অগ্নিবিসর্জন, পুত্রত্যাগ, পরিবেদন, তাহা-দের হস্তে কন্যাদান, তাহাদের যাজ্যজিয়া,তড়াগ-বিক্রয়, আরামবিক্রয়, স্ত্রীপুত্রবিক্রয়, ভ্রাত্যতা, বান্ধবত্যাগ, ভূতাখ্যাপন, অবিক্রেয়বিক্রয়, ভূতাধ্যয়ন ও ভূতাদান, ওষধিহিংদা, স্ত্রীঙ্কীবি ও ক্রিয়ালজ্বন, ইন্ধনের জন্য অশুক রুক্ষ সকলের নিপাতন, যোঘিদ্গ্রহণ, স্ত্রীনিন্দকসমাগম, আত্মার্থে ক্রিয়ারম্ভ, নিন্দিতান্নভক্ষণ, অনাহিতাগ্লিতা, ত্তেয় ঋণানপকরণ, অসৎশান্ত্রশিক্ষা, দুঃশীলতা, ব্যসনজিয়া, ধান্যহরণ, কুপ্যহরণ, পশুহরণ, मन्रश्रञ्जीनित्सवन, खोवध, मृज्यवध, दिभारवध, क्रज-বধ, নান্তিক্য, উপপাতক, ব্রাহ্মণপীড়ন, প্রয়েয়

ও মদ্য এই উভয়ের ছান, পুংমৈথুন ইত্যাদি
পাতক সকল জাতিভ্রংশ ও পরলোকভ্রংশকর
বিলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে। উট্রহত্যা,
গর্দভহত্যা, কৃক্রহত্যা, দিংহহত্যা, ছাগহত্যা,
মেষহত্যা, মীন, আহি ও নকুলের সঞ্চীর্ণকরণ,
নিশিত ব্যক্তির ধনগ্রহণ, বাণিজ্য, শুদ্রসেবা,
মিথ্যাকথন, অপাত্রীকরণ, কৃমিকীটবয়োহত্যা,
মদ্যামুগতভোজন, ফলহরণ, কার্চহরণ, পুষ্পাহরণ
এবং অধৈর্য্য পরমপাতকের হেতু। অতএব,
সর্ব্বান্তঃকরণেও সর্বতোভাবে এই সকল বর্জন
করিবে। সর্ব্বথা ধীর, শাস্ত, শুদ্ধচিত্ত, জিতেক্রিয়, জিতপ্রাণ ও জিতাত্ম হইয়া, নারায়ণের
স্মরণ, মনন, ধ্যান ও কীর্ত্তন করিবে। ইহাই পরমপুণ্য ও প্রেয়োজনক।

ইত্যাধ্যমে আদিমহাপুগাণে মহাপাতকাদিকথন নামক চতুরবিশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

পঞ্চাধিকশততম অধ্যয়।

পূদ্ধর কহিলেন, একণে উল্লিখিত পাতক দক-লের প্রায়শ্চিত কীর্ত্তন করিব।

যে ব্যক্তি ভ্রক্ষহত্যা করে, সে অরণ্য মধ্যে কৃটার নির্মাণ করিয়া, ছাদশ বৎদর বাদ করিবে। শবশিরধক করিয়া, আত্মবিশুদ্ধির জন্ম ভিক্ষা করিবে; আত্মাকে প্রস্কৃতিত হুতাশনে নিক্ষেপ করিবে; অন্থমেধ বা গোমেধ যজ্ঞের অনুষ্ঠান করিবে; অন্থতম বেদ জপ করিতে করিতে শতযোজন গমন করিবে; অথবা বেদবিৎ ভ্রাক্ষণকে সর্বস্থ দান করিবে। এই প্রকার ভ্রত দকলের অনুষ্ঠান দারা মহাপাত্তির মল ব্যপোহিত হুইয়া থাকে।

গোহত্যা করিলে, একমাস যব ভক্ষণ করিবে, ক্তবাপ ও হত গোর চর্মারত হইয়া, গোঠে বাস করিবে; চতুর্থ কালে অক্ষার ও অলবণ মিত ভোজন করিবে; ছইমাস নিয়তেন্দ্রিয় হইমা, গোমূত্রে সান করিবে; দিবসে গোসকলের অমুণ্যমন করিবে; উদ্ধাবস্থানপূর্বক রজঃ পান করিবে, বিহিত্তবিধানে ব্রতাচরণপূর্বক একাদশ র্ষভ দান করিবে; অবিদ্যমানে বেদবিৎ ব্রাহ্মণকে সর্বস্থ নিবেদন করিবে। শুসভঙ্গ, অন্থভঙ্গ ও লাঙ্গুল-চ্ছেদন, এই সকল ঘটনায়, গো যত দিন না হুন্থ হয়, ততদিন যাবক ভক্ষণ করিবে এবং গোস্ততিনামক গোমতী বিদ্যা জপ করিবে।

ব্রাক্ষণ মোহবশতঃ স্থরাপান করিলে, অগ্নিবর্ণ স্থরাপান করিবেন। অথবা অগ্নিবর্ণ গোমূত্র কিংবা অগ্নিবর্ণ জল পান করিবেন।

ব্রাহ্মণ স্থর্ণ চুরি করিলে, রাজার নিকটে যাইয়া, স্বীয় দোষ প্রস্থাপনপূর্বক কহিবেন, আপনি আমার শাসন করুন। রাজা মুষলগ্রহণ করিয়া, তাঁহাকে একবার আঘাত করিবেন। সেই আঘাতে অথবা তপশ্চরণ দ্বারা ব্রাহ্মণের শুদ্ধিলাভ হইয়া থাকে।

গুরুপত্নী গমন করিলে, স্বরং শিশ্প ও ব্যণ ছেদন করিয়া, অঞ্জলিতে ধারণপূর্বক শৈশ তিতে গমন করিবে। অথবা, নিয়তেন্দ্রির হইয়া, তিন-মাস চান্দ্রায়ণ অভ্যাস করিবে।

যাহাতে জাতি ভ্রন্ট হইতে পারে, এরপ কর্ম করিলে, ইচ্ছামতে শান্তপন ও অনিচ্ছাতে প্রাজাপত্য প্রতের অনুষ্ঠান করিবে। ক্ষত্রিয়কে বধ করিলে, ব্রহ্মহত্যার চতুর্থাংশ পাপভাগী হইতে হয়। রভ্রন্থ বৈশ্যবধে অন্তমাংশ ও শুদ্রহত্যায় যোড়শাংশ পাতক অশিরা থাকে। মার্জার, নকুল, ভাস, মত্ক, ক্রুর, গোধা, উল্ক ও কাক হত্যা করিলে, শ্দ্রহত্যা ব্রতের অমুষ্ঠান করিবে। সপাদি অমিহীন জন্তুর বধে রাত্রিতে বায়ুদংঘম করিবে। অন্তের গৃহ হইতে অল্পসার বস্ত হরণ করিলে, কুচ্ছু শান্তপন ব্রতে প্রবৃত্ত হইবে। ভক্ষ্য, ভোজ্য, যান, শ্যা, আসন, পুষ্প, ফল ও মূল হরণ করিলে, পঞ্গব্য দারা শুদ্ধিলাভ হইয়া থাকে। তৃণ, কাঠ্য, ক্রুম, শুদ্ধার, গুড়, চেল, চর্ম্ম ও আমিষহরণে তিনরাত্রি ভোজ্যন না করিলে, শুদ্ধিলাভ হয়। মণি, মুক্তা, প্রবাল, তাত্র, রজত, লোহ, কাংস্ফ, উপল, এই সকল দ্রব্য হরণে দাদ-শাহ কণামভোজন করিবে।

স্থানিতে, সথা ও পুত্রের দ্রীতে, কুমারীতে ও অন্তাজাতে রেতোনিষেক করিলে, গুরুতন্ত্রব্রতের অনুষ্ঠান করিবে। পিতৃষপ্রেয়ী, ভাগনী ও মাতৃষ্প্রীয়াতে গমন করিলে, চান্তায়ণ করিবে।
অমানুষী, উদকী, অযোনি ও জল এই সকলে রেত দেক করিলে, কুছু শান্তপন ব্রতানুষ্ঠানে প্রস্তুত্ত হইবে। গোষানে, জলে বা দিবদে মৈথুন করিলে, সবস্ত্রে স্নান করিবে। ব্রাহ্মণ অজ্ঞানবশতঃ চণ্ডালাত্ত্য দ্রীতে গমন, ভোজন বা প্রতিগ্রহ করিলে, পতিত হয়েন এবং জ্ঞানতঃ করিলে, তাহার সমান হইয়া থাকেন।

ন্ত্রী বিপ্রত্নতা হইলে, স্বামী তাহাকে একদিন বেশ্মে নিরোধ করিবেন এবং পুরুষ প্রদার করিলে, যে ব্রত করিতে হয়, তাহাকে তাহার অনুষ্ঠান করাইবে। পুনরায় ঐরূপে ব্যভি-চার করিলে, তাহাকে কুচ্ছু চান্দ্রায়ন করাইবে। তাহাতেই তাহার শুদ্ধি হইবে।

> ইত্যাগ্রেয় মহাপুরাণে প্রায়েশ্চিত নামক পঞ্চাধিকশক্তম অধ্যায় সমাপ্ত।

ষড়ধিকশতিতম অধ্যায়।

তপুন্ধর কহিলেন, মহাপাপ করিলে, যে প্রায়-শ্চিত্ত করিতে হয়, বলিতেছি।

পতিতের সহিত ব্যবহার করিলে, একবৎসর পতিত হইতে হয়। যে ব্যক্তি যে পতিতের সহিত সংসর্গ করে, সে তাহার ব্রতানুষ্ঠান করিবে। তাহা হইলেই শুদ্ধিলাভ হইবে।

অসতের নিকট প্রতিগ্রহ করিলে, তিন সহস্র সাবিত্রী জপ ও একমাস গোষ্ঠমধ্যে প্র পান করিলে, শুদ্দিলাভ হয়।

ব্রাত্যগণের যাজন করিলে, কুচ্ছত্রয় দারা পাপশুদ্ধি ইইয়া থাকে। শরণাগত পরিত্যাগ ও বেদবিপ্লাবন করিলে, এক বৎসর আহারসংযম ঘারা পাপ ফালন হয়। গ্রাম্য কুরুর, শৃগাল, গর্দভ, উষ্ট্র, অশ্ব, বরাহ বা মনুষ্য দংশন করিলে, প্রাণায়াম বারা শুদ্ধিলাভ হয়। ব্রাক্ষণের শোণিত উৎপাদন করিলে, কুচ্ছাতিকুচ্ছের করিবে। চাণ্ডালাদি অস্পৃশ্যজাতি অজ্ঞাতে যাহার গৃহে বাদ করে, দে ব্যক্তি কালদহকারে সম্যক্-রূপে তাহার পরিচয় প্রাপ্ত ইইলে, যথাবিধানে পাতকশোধন করিবে। এরূপ অবস্থায় চান্দ্রায়ণ বা পরাক ছারা ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশ্যের এবং প্রাজাপত্যধারা শূদ্রের পাপশোধন হইয়া থাকে। গুড়, কুহুম্ভ, লবণ ও ধান্যাদি যে কোন পদার্থ সেই গৃহে থাকে, তৎসমস্তই গৃহদ্বারে স্থাপন করিয়া, তাহাতে অগ্নি দিবে এবং মুগ্নয়ভাওদকল একবারেই ত্যাগ করিবে। অন্তান্ম দ্রব্য সকলের শান্ত্রবিহিত বিধানে শোধন করিবে। যাহারা চণ্ডালের দহিত এক কূপে জল পান করিবে, তাহারা উপবাস বা পঞ্গব্য দ্বারা -আত্মশুক্তি

সম্পাদন করিবে। যে ব্রাহ্মণ চপ্তালকে স্পর্শ করিয়া, স্বইন্দায় ভোজন করেন, তিনি চাম্রায়ণ বা তপ্তক্চভুর অনুষ্ঠান করিবেন। অস্তাজগণের ভূক্তশেষ ভোজন করিলে, ব্রাহ্মণাদি বর্ণব্রয় চাম্রায়ণ ও শুদ্র তিন রাব্রি উপবাস করিবে। তাহাতেই তাহাদের শুদ্ধিলাভ হইবে। অফ্রান্বশতঃ চন্ডালের কৃপ বা ভাতে জল পান করিলে ব্রাহ্মণাদি শাস্তপন ও শুদ্র এক দিন উপবাস করিবে। চণ্ডালসম্পৃত ইয়া, জল পান করিলে, ব্রাহ্মণাদি তিন রাব্রি ও শুদ্র দিনমাত্র অনশন. করিবে।

কুরুর, বা শূদ্র অথবা উচ্ছিষ্ট স্পর্শ করিলে, ব্রাহ্মণ এক রাত্রি উপকাসানন্তর পঞ্চাব্যসহকারে শুদ্ধ হইবেন এবং বৈশ্য বা ক্ষত্রিয়ের উচ্ছিষ্ট স্পর্শ করিলে, রাত্রিতে স্নান করিবেন। ব্রাহ্মণ প্রকাম হত্তে কান্তারে বা অনুদকপ্রদেশে পথি-মধ্যে গমন করিবার সময় প্রস্রাব বা বিষ্ঠা ভ্যাগ করিলে, শৌচসমাধানান্তে সেই দ্রব্য সূর্য্য বা অগ্রিকে প্রদর্শন করিবেন।

রজস্বলা অবস্থায় হীনবর্ণা দ্রী স্পর্শ করিলে, যাবং শুদ্ধিলাভ না হয়, তাবং ভক্ষণ কামবে না। শুদ্ধ সান ঘারাই তাহার শুদ্ধিলাভ হইরা থাকে। পথিমধ্যে গমনসময়ে মৃত্রত্যাগ করিয়া বিশ্বতিজ্ঞমে জল পান করিলে, অহোরাত্র উপবাদান্তে পঞ্চাব্য ঘারা শুদ্ধিলাভ করিবে। ব্রাহ্মণাদি বর্ণতায় মৃত্রোচ্চারপুরংদর আত্মশুদ্ধি না করিয়া, মোহবশতঃ ভক্ষণ করিলে, ত্রিরাত্র যব পান করিবে, তাহাতেই শুদ্ধিলাভ হইবে।

অপবিত্র উপানহ মুখ স্পর্শ করিলে, মৃত্তিকা ও গোময় এবং পঞ্চাব্য দারা আত্মশুদ্ধি বিহিত হইয়া থাকে। রজস্থলা অবস্থায় চণ্ডালাদি স্পর্শ করিলে, চতুর্থ দিবদে ভাহার ভারিলাভ হয়।
বপচ, পূব, সৃতিকা, শব বা শবলশ্বীটক লাশ করিলে, সান বারাই শুদ্ধ হইরা থাকে। সম্মেহ নরান্থি স্পর্শ করিলে, আক্ষণ স্থানমাত্রেই শুদ্ধি লাভ করেন।

> ইত্যানের মহাপুরাণে প্রারন্ডিত্ত নামক বড়বিকশততম অধ্যার সমাস্ত ।

সপ্তাধিকশততম অধ্যায়।

পুকর কথিলেন, মামুষের মন যথন প্রদার. পরদ্রব্য ও জীবহিংসাদিতে প্রবৃত্ত হয়, স্তুতিই তাহার প্রায়শ্চিত্ত হইয়া থাকে। যথা---নিত্য বিষ্ণুকে, বিষ্ণুকে, বিষ্ণুকে, বিষ্ণুকে নম-কার। চিতত্ত ও অহকারগতি বিফুকে নমকার। তিনি চিত্তক, দকলের ঈশ্বর অব্যক্তর অন্তর অপরাজিত, সর্বব্যাপী, সকলের পূজ্য, অনানি-निधन, পরমপ্রভাববিশিষ্ট এবং প্রলয়সময়ে স্ক-লের সংহার করেন। বিষ্ণু আমার চিত্তে আছেন. বুদ্ধিতে আছেন, অহকারে আছেন ও আমাতে আছেন এবং তিনি স্থাবর জঙ্গম সকলের কর্মারূপে সমুদায় কার্য্য করেন। আমি ভাঁহার চিন্তা করিতেছি; আমার সমুদায় পাপ বিন্ঠ , হউক। তাঁহার ধ্যান করিলে, তিনি সমস্ত পাপ হরণ করেন এবং ভাবনাবলে স্বপ্নে দর্শন করিলেও. সমস্ত পাপ বিনাশ করিয়া থাকেন। আমি দেই প্রণবার্তিহর হরি উপেক্ত বিফুকে নমকার করি। এই নিরাধার জগৎ তমঃদাগরে মগ্ন হাইলে, দেই পরাৎপর বিষ্ণুই হস্তাবলম্বন হ**ইয়া থাকেন**। তাঁহাকে প্রণাম করি।

হে সকল ঈশরের ঈশর সর্কশক্তিমন্ পর-

माज्यन बर्धाक्रज ! (र ह्यीर्क्ग, ह्यीर्क्ग, ह्यी-কেশ! তোষাকৈ নমস্কার। হে নৃসিংহ অনস্ত গোবিন্দ ভূতভাবন কেশব ! আমি যে তুর্বাক্য বলিয়াছি ও চুক্ষর্ম করিয়াছি, তক্ষর যে পাপ হইয়াছে, তাহার শান্তিবিধান কর; তোমাকে নমস্কার করি। হে কেশব ! আমি স্বচিত্তের বশ-বন্ত্রী হইয়া, যে তুশ্চিন্তা করিয়াছি, আমার সেই অতীব ভয়ঙ্কর মহৎ অকার্য্যের শান্তি বিধান कत्र। (रु ज्ञानारामय भारतार्थभत्रायन रभाविन्म ! হে জগন্নাথ জগদ্বিধাতঃ অচ্যুত! আমার পাপ শান্তি কর। আমি অপরাক্তে, সায়াত্রে, মধ্যাত্রে অথবা রাত্তিতে কায়মনোবাক্যে না জানিয়া অথবা জানিয়া, যে পাপ করিয়াছি, কিংবা স্বপ্লাবস্থাতেও ষে পাপ করিয়াছি, হে হুষীকেশ ! ছে পুগুরী-কাক ! হে মাধব ! তোমার এই নামত্রয় সমু-চ্চারণমাত্র সেই পাপ ক্ষয়প্রাপ্ত হউক। হে হুষী-**त्रिम! (इ. श्रृश्वतीकाकः! (इ. माध्यः अना** আমার শারীর ও বাচিক পাপ বিনষ্ট কর। আমি ভোজন, শরন, অবস্থান, গমন বা জাগরণসময়ে কায়মনোবাক্যে যে কুয়োনিজনক নরকাবহ পাপ ক্রিয়াছি, তাহা স্কল্প বা মহৎ যাহাই হউক, বাস্ত-দেবের কীর্ভনমাত্র সর্ববেতাভাবে ক্ষয় প্রাপ্ত হউক। যিনি পরব্রকা, পরমধাম ও পরমপবিতা, দেই বিষ্ণুর নাম করিতেছি, আমার সমুলায় পাপ-শান্তি হউক। যাহাতে গন্ধ নাই, স্পর্শ নাই, রূপ বা শব্দাদি নাই এবং সুরিগণ যাহা প্রাপ্ত হইলে, আর নির্ভ হয়েন না, বিফুর সেই পরম পদ আমার সমস্ত পাপ শান্তি করুন।

দে ব্যক্তি এই পাপপ্রণাশন স্তোত্ত পাঠ বা শ্রবণ করে, দে কায়জ, বাক্যজ ও মনোজ সমস্ত পাতকে পরিহার প্রাপ্ত হয় এবং সর্ববাপগ্রহাদি হইতে বিমৃক্ত হইয়া, বিষ্ণুর পরমপদে গমন করে। অতএব পাপ করিলে, এই দর্বাঘমর্ঘণ স্তোত্র জপ করিবে। প্রায়শ্চিত, স্তোত্রজপ ও ব্রতামুঠান,এই দকল উপায়ে পাতক বিনক্ট হইয়া থাকে। অতএব, ভূক্তি, মৃক্তি ও দর্বাথা দিন্ধি লাভ জন্য ঐ দকলের অমুঠান করিবে।

> ইড্যাল্লেরে মহাপুরাণে প্রপনাশনভোত্তনামক স্থাধিকশতভ্য অধ্যায় স্মাধ্য।

অফীধিকশততম অধ্যার।

শ্বমি কহিলেন, ত্রহ্মা যাহা কহিয়াছেন এবং যাহা দ্বারা পাপশান্তি হইয়া থাকে, তাদৃশ প্রায়-শ্চিত্ত কীর্ত্তন করিব।

যাহা দারা প্রাণবিয়োগফল সংঘটিত হয়, তাদৃশ কার্য্যকে হনন বলে। নিজেই হউক, আর পরের দারাই হউক, রাগ, দেয় বা প্রমাদবশতঃ যে ব্যক্তি প্রাক্ষণকে বধ করে, তাহাকে প্রক্ষাবী অনেক বাক্তির মধ্যে এক জনের দারা হত্যাকাণ্ড সংস্টিত হইলে, সকলকেই ঘাতক বলা যায়। প্রাক্ষাপ্র হাজাপ, তাড়ন বা ধনপীড়ন প্রযুক্ত যাহার উদ্দেশে প্রাণত্যাগ করেন, তাহাকেও ঘাতক বলিয়া থাকে। সহুদ্দেশে উপকারার্থ ইমধাদির প্রয়োগ করিলে, যদি কাহারও মৃত্যু হয়, তাহাতে পাতক হয় না। অথবা পুক্ত, নিষ্যু ও ভার্যাকে শাসন করিবার সময় মৃত্যু হইলেও, তাহাকে ত্যা বলে না।

দেশ, কাল, শক্তি ও পাপ পর্যালোচনপূর্বক যত্নসহকারে প্রায়শ্চিত করিবে। গরার্থে বা বাহ্মণার্থে সদ্য প্রাণ পরিত্যাগ কিংবা জ্মিতে

আত্মাকে তৎকণাৎ নিক্ষেপ করিবে। তাহা হইলে, ব্রহাহত্যার পাতক মুক্ত হইবে। হত্যা করিয়া, শিরঃকপাল ও ধ্রজ ধারণ, ভৈক্ষামে জীবন যাপন ও স্বৰ্ককৰ্ম জ্ঞাপন করত দাদশ বং-সর মিতভুক্ হইলে, শুদ্ধিলাভ হয়, অথবা, ছয় বৎসর শুদ্ধাচারী ইইলে, পাপনিষ্ণৃতি হইয়া থাকে। অনিচ্ছায় ব্রহ্মহত্যা করিলে, যে পাপ হয় এবং যেরূপ প্রায়ন্চিত্ত করিতে হয়,ইচ্ছাক্রমে করিলে, তাহার দ্বিগুণ পাপ ও দ্বিগুণ প্রায়শ্চিত বিহিত হইয়া থাকে। ক্ষত্রিয় বন্ধহত্যা করিলে, দ্বিগুণ, বৈশ্য করিলে, তাহার দ্বিগুণ এবং শুদ্র করিলে, তাহার ত্রিগুণ পাপ ও ত্রিগুণ প্রায়শ্চিত্ত বিধি। ক্ষত্রিয়হত্যা করিলে, চতুর্থাংশ, বৈশ্যে অন্তমাংশ ও শুদ্রে ষোড়শাংশ পাতক অর্শিয়া থাকে। অপ্রভুষ্টা স্ত্রী হত্যা করিলে, খুদ্রহত্যা-বৃত আচরণ করিবে। গোহত্যা করিলে, এক মাদ দংঘত হইয়া, পঞ্গব্য পান করিবে এবং গোঠে শ্য়ন গোগণের অনুগ্রন ও গোদাম করিলে শুদ্ধিলাভ হইয়া থাকে।

অতিবৃদ্ধা, অতিকৃশা,অতিবালা রোগিণী ক্রীকে হত্যা করিলে, দ্বিজ পূর্ববং বিধানে অদ্ধবৃত অমুষ্ঠান এবং যথাশক্তি ব্রাহ্মণডোজন করাইয়া, হেঃও তিলাদি প্রদান করিবে। কার্চ দ্বারা গোহত্যা করিলে শান্তপন, লোপ্ত দ্বারা গোহত্যা করিলে প্রাদ্ধাপত্য, পাষাণ দ্বারা গোহত্যা করিলে প্রজ্ঞাপত্য, পাষাণ দ্বারা গোহত্যা করিলে গুলুক্ত, ও শক্ত দ্বারা গোহত্যা করিলে, অতিকৃত্ত, ও শক্ত দ্বারা গোহত্যা করিলে, অতিকৃত্ত, ও শক্ত দ্বারা, গোধা, নকুল, মণ্ডুক, কৃত্তর ও পতত্তি বধ করিলে, তিন দিন ক্রীর পান ও কৃত্ত্তান্ত্রারণ করিবে। সমন্ত্রপাপকালনজন্য শতবার প্রাণায়ার করিবে।

ভাক্ষমধুক, থাৰ্জ্ব, তাল, ঐক্ষব, মাধ্বীক,

টক্ষমাধ্বীক, মৈরেয়, নারিকেলজ এবং পৈষ্টী হ্বরা, (যাহাকে সমুদায় মদ্যের প্রধান বলে) এই সকল মদ্য ব্রাহ্মণালি ধর্ণত্রয়ের পক্ষে নিষিদ্ধ। দৈবাৎ পান করিলে, তপ্তসালিল পান ও তপশ্চরণ ছারা শুদ্ধি লাভ করিবে। অথবা এক বংসর কণ ভক্ষণ কিংবা নিশাযোগে একবারমাত্র পিণ্যাক ভোজন করিবে। কিংবা, বালবন্ত পরিধান এবং জটা ও ধ্বজ ধারণ করিলে, সুরাপান জন্ত পাপের পরি-হার হইয়া থাকে।

অজ্ঞানবশতঃ বিষ্ঠামূত্র উদরস্থ করিলে, আক্ষ-ণাদি বর্ণত্রেয় পুনঃ সংস্কার বিধান করিবে ৷ মদ্য-ভাগুছিত জল পান করিলে, সপ্তদিন ব্রত করিবে। চণ্ডালের জল পান করিলে, ছয় দিন ঐক্রপ করিবে। চণ্ডালকুপভাণ্ডে জল পান করিলে, শান্তপন করিবে। অন্ত্যজের জল পান করিলে, ত্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয় ত্রিরাত্তান্তে পঞ্গব্য পান করিবে। মৎস্থকণ্টক, শস্বৃক, শস্থ, শুক্তি ও কপর্দ্দক ভক্ষণ করিলে, নবোদক পান করিয়া, পঞ্চাব্য সহায়ে শুদ্ধ হইবে। শবকৃপোদক পান করিলে, তিন রাত্রে শুদ্ধি লাভ হয়। অন্ত্যাব-দায়ির অম ভক্ষণ করিলে, চাক্রায়ণ করিবে। আপৎকালে শৃদ্রগৃহে অনভক্ষণ করিলে, মনস্তাপ শুদ্ধি লাভ হয়। শূদ্রের পাত্তে ভোজন করিলে. উপবাস করিয়া, পঞ্চাব্য দারা শুদ্ধিলাভ করিবে স্নান না করিয়া ভোজন করিলে, উপবাদী থাকিয়া. দিনান্তে জপ করিয়া শুদ্ধ হইবে।

কেশ-কীটযুক্ত, পাদস্পৃষ্ঠ, জ্রনহত্যাকারী কর্তৃক অবেক্ষিত,উদক্যাকর্তৃক সম্পৃষ্ঠ, কাকাদির অবলীয়, কুরুর কর্তৃক স্পৃষ্ঠ, অথবা নিবাদিকর্তৃক আত্রাত অন ইচ্ছাপূর্ব্বক ভোজন করিলে, তিন দিন উপবাস করিবে। রেড, বিষ্ঠা বা মৃত্র ভক্ষণ করিলে, প্রাজাপত্য করিবে। নিষদ্ধ ভক্ষণ করিলে, উপবাস দারা প্রায়শ্চিত করিবে। লশুন ভক্ষণ করিলে, শিশুকুচ্ছু করিবে। অভোজ্য-গণের অন্ন, স্ত্রী ও শৃদ্রের উচ্ছিষ্ট এবং অভক্ষ্য মাংস ভক্ষণ করিলে, সপ্তরাত্র জল পান করিবে। মধ্মাংস ভক্ষণ করিলে, ত্রক্ষাচারী, যতি বা ত্রতী কুচ্ছু প্রাজাপত্য করিবেন।

অভায় পূর্বক পরধন গ্রহণ করিলে, তাহাকে চুরি বলে। স্বর্ণ চুরী করিলে, রাজার ম্বলাঘাতে তাহার শুদ্ধি পংঘটন হয়। স্বর্ণচৌর, স্থনাপায়ী, ব্রুম্বাতী, গুরুতল্লগামী ও চৌর ইহারা অধঃশয়ন, জটাধারণ, ফল মূল পত্ত ভক্ষণ ও একবারমাত্ত ভোজনপূৰ্ব্বক ঘাদশাব্দে শুদ্ধিলাভ করিয়া থাকে। চুরি করিলে ও মদ থাইলে, এক বৎসর কৃচ্ছাচরণ कतिरव। भिन, भूका, ध्वरान, जाञ, तक्क, লোহ, কাংস্থ ও উপল চুরি করিলে, ছাদশ দিন কণান্ন ভোজন করিবে। মনুষ্য, ক্রী, ক্লেত্র, গৃহ, বাপী, কৃপ ও তড়াগ এই সকল হরণ করিলে, চাত্রায়ণ স্বারা শুদ্ধিলাভ হইয়া থাকে। ভক্ষ্যু ভোজ্য, যান, শায্যা, আসন, পুল্পা, ফল ও মূল হ্রণ করিলে, পঞ্গব্য দারা তাহার শোধন হয়। তৃণ, কাঠ, দ্ৰুম, শুকান, গুড়, চেল, চম ও আমিষ হরণ করিলে, তিন রাত্রি শভোজন করিবে। পিতার পত্নী, ভগিনী, আচার্য্যতন্যা, আচার্য্যাণী ও স্বীয় ছহিতা গমন করিলে, গুরুতল্লগমনের পাপ অর্শিয়া থাকে। তত্তে লোহদ্রবে পাক ও প্রজনিত শৃশ্মী আলিঙ্গন পূর্বেক মৃত্যু হইলে, তাহার শুদ্ধি হইয়া থাকে। অথবা, তিনমাদ চান্দ্রায়ণ করিবে। তাহাতেই শুদ্ধিলাভ হইবে।

পুরুষ পরদার করিলে, তাহার যে প্রায়শ্চিত-ব্যবস্থা, স্ত্রী ভ্রম্টা হইলে, তাহাকেও দেই প্রায়- শ্চিত করাইবে। কুমারী, চাণ্ডালী, পুত্রী এবং দপিও ও পুজের পত্নীতে বীর্দ্ধ নিষেক করিলে, প্রাণত্যাগ বিধি। ছিজ একরাত্রি র্ঘলী গমন করিলে, নিত্য জপপরায়ণ ও ভৈক্যভুক্ হইয়া, তিনবর্ষে শুদ্ধি লাভ করেন। পিতৃব্যপত্নী, ভাতৃভার্যা, চাণ্ডালী, পুরুষী, সুষা,ভগিনী, দখী, পিতৃভার্যা, চাণ্ডালী, পুরুষী, সুষা,ভগিনী, দখী, পিতৃভার্যা, নিক্ষিপ্তা, শরণাগতা, মাতুলানী, স্বসা, দগোত্রা, অস্থাসক্তা, শিষ্যভার্যা ও গুরুভার্যা। এই সকলে গমন করিলে, চান্ডায়ণ করিবে।

ইতাাগেরে আদিমহাপ্রাণে প্রায়ণ্ডিরনান অষ্টাধিশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

নবাধিকশততম অধ্যায়।

ত্র অগ্রি কহিলেন,দেবাশ্রমাদির অর্চ্চনাদির লোপ হইলে, যে প্রায়শ্চিত করিতে হয় বলিতেছি, প্রবণ কর।

পূজালোপে অন্তশত জপ ও দিগুণ পূজা করিবে এবং পঞ্চোপনিষদ মত্রে হোম করিয়া ব্রাহ্মণ ভোজন করাইবে। সূতিকা, অন্তাজ বা উদক্যা দেবতা স্পর্শ করিলে, শত জপ, পকোপনিষদসংয়ে দিগুণ পূজা ও স্নান করিবে। হোম-লোপে ব্রাহ্মণভোজন,হোমস্নান ও অর্চনা করিবে। হোম-লোপে ব্রাহ্মণভোজন,হোমস্নান ও অর্চনা করিবে। হোমন্রব্য মূষিকাদি কর্তৃক ভক্ষিত এবং কীটছুই হুইলে, তাবৎমাত্র পরিত্যাগ ও প্রোক্ষণ করিয়া দেবাদির পূজা করিবে। পূজাকালে মস্ত্র ও দ্রব্যাদির ব্যত্যাস হুইলে, দেবমাসুম্বিদ্ধ মূল-মন্ত্র জপ করিয়া,পুনরায় জপ করিবে। হন্ত হুইতে দেবতা পতিত হুইলে, কুন্তসহায়ে অন্তশত জপ করিবে এবং ভিন্ন বা নাই হুইলে, উপবাস ও শত্ত হোম করিবে।

পাপ করিয়া, ভক্ষন্ত অনুভাপ উপশ্বিত হইলে, পুরুষের তাহাতেই প্রায়শ্চিত হইয়া থাকে। অথবা একমাত্র হরিম্মরণ করিলেই, সেই পাপে শুদ্ধিলাভ হয়। চান্দ্রায়ণ, পরাক বা প্রাঞ্জালিত ছারাও পাপ ক্ষালন হইয়া থাকে। সূর্য্য, ঈশ, শক্তি ও শ্রীশাদি মন্ত্র জপ করিলেও, পাপশুদ্ধি হয়। গায়ত্রী, প্রণব, স্থোত্র ও মন্ত্র জপ করিলেও, পাপ পরিহাত হইয়া থাকে। চভূর্যাম্ভ ও নমোন্ত ও ব্রীমাদি মন্ত্র সকলও সকল কামনা পূর্ণ করে। নৃসিংহ মন্ত্র, ছাদশাক্ষর মন্ত্র, অফাশ্কর মন্ত্র ও মালামন্ত্রাদিও পাপনোদন করে। আমেয় পুরাণ পাঠ ও প্রবণদি করিলেও, পাপ বিন্ত্র হয়।

সকল শাস্ত্রে ও সকল বেদেই বিষ্ণুকে দিবিদ্যা-রূপী ও অগ্রিরূপী, পরমাত্রা ও দেবমুখ্য বলিয়া স্তব করিয়াছেন। কি প্রবৃত্তি, কি নিরৃত্তি উভয় স্থলেই ভূক্তিমুক্তিদাতা বিষ্ণুর অর্চনা ইইয়া থাকে। অগ্রিরূপ বিষ্ণুর হবন, ধ্যান, অর্চন, জপ, স্ততি ওপ্রণতি করিলে, সমস্তপাপ বিনফ হয়। দশাক্ষর মন্ত্র, দান, ধ্যান, দাদশাক্ষর মন্ত্র, তুলাপুরুষ-প্রধান ঘোড়শ মহাদান এবং অন্নদানও অশেষ পাশ নির্হরণ করিয়া থাকে। তিথি, বার, নক্ষত্র, সংক্রান্তি ও মন্বাদিকালে সূর্য্যেশ,শক্তীশ ও শ্রীশাদির উদ্দেশে ব্রতাদি করিলে, পাপপরিহারপ্রাপ্তি সংঘটিত হয়। গঙ্গা, গয়া, প্রয়াগ, কাশী, অযোধ্যা, অবস্তিকা, কুরুক্তের, পুকর, নৈমিয়, পুরুষোত্তম, শাল-গ্রামণ্ড প্রভাগাদি তীর্থণ্ড পাত্রক সকল সংহার করে।

আমিই পরম জ্যোতি স্বরূপ ত্রহ্ম, এই প্রকার ভাবনা করিলেও, পাপকালন হয়। আমের ও ব্রাহ্মপুরাণ, ত্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশ্বর, অবতারসমূহ, সর্বপ্রকার পূজা, প্রতিষ্ঠা, প্রতিমাদি, জ্যোভিঃ- শাস্ত্র, প্রাণসমূহ, স্থৃতিসমন্ত, ভপোত্রত, অর্থশাস্ত্র, আয়ুর্বেদ, ধতুর্বেদ, শিক্ষা, ছন্দ, ব্যাকরণ,
নিরুক্ত, অভিধান, কল্প, তার, মীমাংসা ও অত্যাত্ত্র
সম্দারশাস্ত্র, সমন্তই সর্বশক্তিমান্ হরি। হরিই
সর্বেষ্, হরি ইইতেই সম্দার প্রাত্ত্ত্তইয়াছে এবং
হরিতেই সম্দার লীন ইইরা থাকে। ইহা বিনি অবং
গত, তিনি সাক্ষাৎ হরিস্বরূপ। ভাঁহাকে দর্শন
করিলে, সমন্ত পাতক বিনক্ত ইইরা থাকে। হরি
অন্তাদশবিদ্যারূপ, স্থুল ও স্ক্রের্কা ও নির্মালক্তাব বিষ্ণু। ভাঁহার ম্মরণ, সনন, ধ্যান, কীর্ত্তন ও
ত্তব-করিলে, সম্দার পাপ বিনক্ত ও পর্য প্রাণ্ঠ
সঞ্চিত ইইরা থাকে।

य वाकि यथायथ भर्यात्नाहनाभृक्षक वर्ग, নরক, ধর্মা, অর্থ, কাম, অপবর্গ ও পুণ্য প্রভৃতি ধ্যান করে, তাহারও পাপ পরিহৃত হয়। পিতা-মাতার ভক্তিসহকৃত সেবা ও অক্যাম্য গুরুগণের খায়োপেত শুশ্রুষা করিলেও, দেহস্থ পাতক দকল বিনষ্ট হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি সৎপাত্তে নিরহক্ষার দান করে, নিঃসার্থ হাইয়া ধর্মাদির অকু-ষ্ঠান করে, কামনাশৃত হইয়া ভগবানের আরাধনা করে, আত্মার অব্যাঘাতে অন্যের যথাসাধ্য উপ-কার করে, ভগবন্তক্ত সাধুগণের সেবা করে, ভগ-বৎকথাপ্রসঙ্গে সময় যাপন করে, পরলোক ও ইছ-লোক উভয় লোকেরই হিতকর কার্য্যদকলের অনুষ্ঠান করে এবং ভক্তি ও শ্রদ্ধাসমন্তি ইইয়া ঈশরপ্রীতিকামনায় সৎক্রিয়া সকল স্মাধান করে, তাহারও সমুদায় পাতক বিনঠ ইইয়া খাকে, ইহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই 🕆

> ইত্যাবেরে আদিমহাপুরাপে প্রার্থিতনাধক নবাধিকশততম কথারে স্বাত ।

দশাধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, হে ধশিষ্ঠ ! তিথি, বার, ঋক, দিবদ, মাদ, ঋভু,অব্দ ও সূর্যদেংক্রম,ইত্যাদি সময়ে স্ত্রী পুরুষের যে ত্রতাদি বিধেয় হইয়া থাকে যথাক্রমে বলিব, প্রবণ কর।

শারোদিত নিয়মকে ত্রত ও তপস্থা বলে।

দমাদি, ত্রতেরই বিশেষ বিশেষ নিয়ম। উপবাসাদি ঘারা কর্তার সন্তাপ সমূৎপাদন করে,এইজন্য

ত্রতকে তপ বলে এবং ইন্দ্রিয়গ্রামের নিয়মন করে,

এইজন্ম ত্রতের নাম নিয়ম। যে সকল ত্রাহ্মণ

অনগ্রি, ত্রত, উপবাস, নিয়ম ও বিবিধ দান ঘারা

তাঁহাদের শ্রেয় সম্পন্ন হইয়া থাকে। ঐপ্রকার

দানাদির অনুষ্ঠান ঘারা দেবাদিরা প্রীত ও ভূক্তিমুক্তি প্রদান করেন।

পাপ হইতে নির্ভ পুরুষের গুণের সহিত যে বাস, তাহার নাম উপবাস জানিবে। উপবাস করিয়া, সর্ব্ধপ্রকার ভোগ পরিত্যাগ করিতে হয়। তথাহি, উপবাদ করিয়া, কাংস্ত, মাংদ, মদুর, চণক, কোরদূষক, শাক, মধু ও পরান্ন ত্যাগ क्रिरिय । भूष्ण, अलक्षांत्र, रुख, धूभ्यक्षां भूरलभ्यः দন্তধাবন ও অন্তন এই সকলও উপবাদে প্রশস্ত নিছে। প্রাতঃকালে দন্তকাষ্ঠ ও পঞ্চাব্য করিয়া. ত্রতাচরণ করিবে। অসকুৎ জল পান, তাদ্বল ভক্ষণ, দিবাস্বপ্ন ও মৈথুন দারা উপবাস দূষিত হইয়া থাকে। ক্ষমা, সত্য, দয়া, দান, শোচ. ইন্দ্রিয়নিগ্রহ, দেবপূজা, অগ্নিহ্বন, সস্তোষ ও অস্তেয়, এই দশবিধ ধর্ম দামান্যতঃ দকল ভ্রতেই অবলম্বন করা বিধেয়। পবিত্র মস্ত্র সকল জপ করিবে, যথাশক্তি হোম করিবে, নিভ্য স্নান করিবে, পরিমিত ভোজন করিবে, গুরু দেব ও

ষিজাতির অর্চনা করিবে, ক্ষার, ক্ষোত্র, লবণ, মধুও মাংস বর্জন করিবে। তিল ও মুদা ব্যতি-রেকে শস্য, গোধুম ও কোদ্রব, চানক, দেবধান্য, শমীধান্য, ঐক্ষব, শিতধান্য, পণ্য ও মূল ইহাদিদিককে কারগণ বলে। ত্রীহি, ষষ্টি, মুদা, কলায়, তিল, যব, শ্যামাক, নীবার ও গোধুমাদি ত্রতে প্রশস্ত। কৃষ্মাও, অলাবু, বার্তাকু, পালক্ষী ও পৃতিকা এই সকল ত্রতে ব্যবহার করিবে না। চরু, ভৈক্ষ্য, শক্তুকণ, শাক, দধি, য়ত, পয়, শ্যামাক, শালি, নীবার, য়ব, মূল, তওুল ও হবিয়্য এই সকল অগ্নিকার্যাদিতে ব্যবহার করিলে, শ্রেমাজনক হইয়া থাকে। অথবা, মধুও মাংস ব্যতিরেকে অন্যান্য দ্রব্য প্রতে হিত সমুৎপাদন করে।

তিন দিন প্রাভঃকালে, তিন দিন সায়ংকালে ও তিন দিন অ্যাচিত ভক্ষণ করিবে এবং তিন দিন পরায় ভক্ষণ না করিয়া, প্রাজাপত্য স্মাচরণে প্রের্ভ হইবে। তিন দিনে তিন প্রাস্মাত্র ভক্ষণ করিবে এবং ক্ষতিকৃচ্ছাকুষ্ঠান সহকারে তিন দিন উপবাস করিবে। গোমূত্র, গোময়, ক্ষীর, দধি, মর্পি, কুশোদক ও একরাত্রোপবাস, এই সকলকে কৃচ্ছুশান্তপন কহে। শান্তপন দ্রব্য সহিত ছয়দিন উপবাস করিয়া, সপ্তাহে ভোজন করিলে, তাহার নাম মহাশান্তপন। এই মহাশান্তপন পাপ বিন্তু করে। আদশদিন উপবাস করিলে, তাহাকে পরাক বলে। পরাক দারা সর্ব্বপাপ বিদ্রিত হয়। পরাক্রের তিন গুণ উপবাস করার নাম মহাপরাক।

ত একপল কপিলামূত্র, অদ্ধান্ত্র গোময়, দপ্তপল ক্ষীর, সূইপল দধি, একপল দ্বত ও একপল কুশো-দক দান করিবে। পায়ত্রী দারা গোমূত্র, গদ্ধদারেতি বলিয়া গোময়, আপ্যায়স্থেতি বলিয়া ক্ষীর, দধি- জাব্ণেতি বলিয়া দধি, তেজোদীতি বলিয়া আজ্য ও দেবদ্যেতি বলিয়া কুশোদক গ্রহণ করিবে। ইহার নাম ব্রহ্মকূর্চ। উপবাদী থাকিয়া, অঘমর্যণসূক্ত অথবা প্রণবসংযোগে আপোহিছেতি অক্জপসমা-ধানান্তে এই কূর্চ পান করিলে, সর্বপাপপরিহার ও বিষ্ণুলোক প্রাপ্তি হইয়া থাকে। উপবাদী, সায়-জোজী, যতি, ষষ্ঠাত্মাকালবান, মাংসবজ্জী, অম্ব মেধী ও সত্যবাদী ইহাদের স্বর্গলোক লাভ হয়।

মলমাদেস অগ্নাধান, প্রতিষ্ঠা, যজ্ঞদান ব্রত: দেববুত, রুষোৎদর্গ, চূড়াকরণ, মেথলা, মাঙ্গল অভিষেক ইত্যাদি কার্য্যানুষ্ঠানে নির্ভ হইবে। विवाहां मिर्क तमी ब्रमामं, युक्कां निर्क मार्चनमाम अवर আব্দিক পিতৃকার্য্যে চান্দ্রমাস প্রশস্ত। রবি কন্যায় গমন করুন বা না করুন, আধাঢ়া হইতে আরম্ভ করিয়া, যে পঞ্চম পক্ষ প্রাপ্ত হইবে,তাহাতে শ্রাদ্ধ করিবে। ভাক্ষর যে নক্ষত্রে অস্ত যান,তাহাতে উপ-বাস করিবে। রুদ্রযুক্ত ছাদশী,চতুর্দশীযুক্ত পূর্ণিমা ও প্রতিপৎযুক্ত অমাবদ্যা, ইহাদের নাম তিথিযুগা। এই দকল যুগ্ম তিথিতে কার্য্য করিলে, মহাফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে। বৃত্ত করিতে করিতে কোন রূপে অশুদ্ধও তজ্জন্য বৃত্তানই হইলে, সন্যের দারা তাহা সম্পাদিত করিবে। ক্রোধ, প্রমাদ বা লোভ বশতঃ ব্তভঙ্গ হইলে, দিনত্তয় অনশন বা মন্তক মুগুন করিবে। অসামর্থ্যে পত্নী বা পুত্র দারা বত করাইয়া লইবে। জন্ম ও মৃত্যুতে প্রায়ক পূজা পরিত্যাগ করিবে। বৃতস্থ ব্যক্তি মূর্চ্ছিত হইলে, গুরু তুগ্ধপানাদি দারা ভাহার উদ্ধার করিবেন। कल, यूल, कल, छुध, मुख, तांचानकांगा, खं करांका ও ঔষধ এই আটটি অবুতন্ন।

হে ব্তপতে! আমি কীর্ত্তি, সন্ততি, বিদ্যাদি

সোভাগ্য ও আরোগ্য বৃদ্ধি এবং পাপশুদ্ধি, ভূক্তি ও মুক্তির জন্ম বৃত করিতেছি। আমি ভোমার ममरक अहे ट्लार्थ वर्ष धार्ग कतिलाम । दह खगर-পতে! তোমার প্রসাদে ইহা নির্বিত্রে সিদ্ধিলাভ করুক। ভূমি সাধুগণের পতি ও সকলের সহায়। তোমা বিনা আর গতি মুক্তি বা আশ্রয় নাই। তোমাতে যাহার নির্ভর বা অবলম্বন নাই, সে চিরকালই শুল্যে থাকিয়া, শৃন্য জীবন যাপন করে। তাহার জীবনে ও জড় জীবনে প্রভেদ নাই। এই-জন্য আমি তোমাতে নির্ভর ও তোমাকেই অব-লম্বন করিয়া, কায়মনোবাক্যে প্রার্থনা করিতেছি, আমি এই শ্রেষ্ঠ বৃত গ্রহণ করিলাম, যদি পূর্ণ না **इहेट इस्तिया याहे, ट्यामात श्रमार हेहा ए**यन দৰ্শতোভাবে পূৰ্ণ হয়। তুমি ব্ৰতমূৰ্ত্তি ও জগ-ভূতি। তোমাকে সর্বাসিদ্ধির নিমিত আবাহন করিতেছি। তোমাকে নমস্কার। কেশব। ভূমি দন্ধিহিত হও। আমি আন্তরিক ভক্তি সহকারে কল্পিত পরমপবিত্র পঞ্গব্য ও পঞ্চায়ত সলিলে তোমাকে স্নান করাইতেছি। তুমি আমার সমূ-দায় পাতক নির্হরণ কর। হে অর্য্যপতে ! ভোমার প্রদাদে অনায়াদেই ইজ্রাদি পদ প্রাপ্তি হইয়া থাকে। তুমি দকল পদের আস্পদ পরম পদ। তোমাকে প্রাপ্ত হইলে, সকলই প্রাপ্ত হইয়া থাকে। আমি পরম ভক্তি সহকারে গদ্ধপুষ্প-দলিলযুক্ত পবিত্র অর্ঘ্য, পাদ্য ও আচমনীয় প্রদান করিতেছি, গ্রহণ করিয়া, আমারে সর্বাদা অর্য্যার্ছ কর। তোমার প্রদাদে ঋতি সামাশ্র ব্যক্তিও দেবগণের পূজনীয় হইয়া থাকে। তুমি অল বল্ল ও ভূষণাদির পতি। তুমি প্রদন্ন হইলে, কাহারই কোন কালেই কোন রূপেই অমবস্তাদির অভাব হয়না। আমি এই পরমপবিতা ফুলার বন্তা প্রদান

করিতেছি। গ্রহণ করিয়া, স্ব্রদা আমাকে পরম-স্থন্য অলঙ্কারাদি ও বস্ত্রাদি দ্বারা সর্বতোভাবে ও স্থন্দররূপে আচ্ছাদিত কর। আমার যেন কোন কালেই ঐ দকলের অভাব হয় না। স্বামি যেন তোমার প্রসাদে নিত্য অন, বন্ত্র ও অলঙ্কারাদি প্রচুর পরিমাণে দান করিয়া, ভোমার প্রদাদ-লাভে সমর্থ হই। তুমি গন্ধমূর্ত্তি ও গন্ধপতি। এই বিমল স্থগন্ধি গন্ধ প্রদান করিতেছি, গ্রহণ কর। এবং আমাকে পাপগন্ধবিহীন ও নিত্য পুণ্যগন্ধে আমোদিত কর। তোমার প্রদাদে আমার আলা পবিত্র হউক: পরলোক ও ইহলোক পবিত্র হউক ; স্বৰ্গ ও অপবৰ্গ লাভ হউক ; অৰ্থ ও পর-মার্থ অধিগত হউক এবং দকল কামনা ও দকল বাদনা পূর্ণ হউক। তুমি পূর্ণাতিপূর্ণ পরমপূর্ণ। তোমার প্রদাদে সকল বিষয়েরই পূর্ণতা প্রান্তি হইয়া থাকে। হে পুষ্পাদিপূর্ণ পরমপুরুষ! আমি আয়ু ও আরোগ্যবৃদ্ধির জন্ম পুষ্প প্রদান করিতেছি। তুমি ইহা গ্রহণ করিয়া, আমাকে পবিত্র ও স্থতিত কর। কেশর! এই গুণ্গুল ও মৃত্যুক্ত দশাক ধুপ এহণ করিয়া, আমাকে ধূপিত কর। তুমি সর্বনা সধূপ ও ধূপিত সংপতি। হে দীপমূর্ত্তে ! এই অখিলভাসক ঊর্দ্ধ-শিখ দীপ্ত দীপ গ্রহণ করিয়া, আমাকে সর্বদা প্রকাশশীল ও উদ্ধৃণতি প্রদান কর। হে অমাদি-দৎপতে! এই অন্নাদি নৈবেদ্য গ্রহণ করিয়া, আমাকে দর্বদা দর্বদ, অন্নদ ও অন্নাদিতে পূর্ণ কর। হে সর্বাক্তিমন ! হে ব্রতপতে ! আমি মন্ত্রহীন, ভক্তিহীন অথবা জিয়াহীন করিয়া, যে পূজা করি-য়াছি, তোমার প্রসাদে তাহা পরিপূর্ণ হউক। আমাকে শৰ্ম দাও, ধন দাও, সোভাগ্য দাও, গুণ-সন্ততি দাও, কীর্ত্তি দাও, বিদ্যা দাও, আয়ু দাও,

মর্গ দাও, মৃক্তি দাও। হে ব্রতপতে। অধুনা এই পূজা গ্রহণ করিয়া, বরদান ও পুনরাগমনার্থ প্রছান কর। ভোমার প্রদাদে আমার দকল অভীউ দিছ হউক। তুমি লক্ষ্মীপতি, ধর্মপতি, ধরাপতি, বিদ্যাপতি ও ঐশ্ব্যপতি। তুমি পতিতপাবন, প্রপদ্যাতিবিনাশন ও প্রমপদ্বিধাতা। তোমার প্রদাদে আমার দকল অভীই ও দকল কামনা দিছ হউক।

ত্রতবান্ ব্যক্তি স্নান করিয়া, সকল ত্রতেই ত্রতমূর্ত্তি সকলের ফথাশক্তি পূজা করিবে। তৎ-কালে ভূমিশয়ন করিতে হইবে। সামান্ত ব্রতান্তে জ্বপ, হোম, দান এবং চতুর্ব্বিংশ, ঘাদশ, পঞ্চ, ত্রি বা এক জন বাক্ষণের পূজা, গুরুভোজন ও শক্তি অনুসারে দক্ষিণা দান করিবে। স্থবর্ণাদ্য গো, পাছকা, উপানহ, জলপাত্র, অমপাত্র, ভূমি, ছত্র, আসন, শ্যা, বক্রমুগ্য ও কুস্তুসমূহ দান করা বিধেয়।

তোমার নিকট এই বুতপরিভাষা কীর্ত্তন করিলাম।

> ইভাবেমে আদিনহাপুরাবে এতপরিভাবানানক দশ্ধিশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

একাদশাধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, একণে প্রতিপদ্ প্রভৃতি তিথি সকলে যে যে বুভ করা বিধের, সমস্তই কীর্ত্তন করিব।

কার্ত্তিক, আখিন ও চৈত্র মাস, এই তিন মাসের প্রতিপৎতিথিকে ব্রহ্মতিথি বলে। পঞ্চ দশীতে অনশন করিয়া, প্রতিপদে, ও তৎসৎ বুহ্মণে নমঃ, ইত্যাদি বিধানে গায়ত্রী সহিত ব্রামের পূজা করিবে। দক্ষিণে অক্ষমালা ও ক্রেব, বামে ক্রেচ ও কমগুলু, এবং দীর্ঘকুর্চবিশিষ্ট জটাধর ব্রুমার অর্চনায় প্রবৃত্ত হইবে। ত্রুমা আমার প্রতি প্রীত হউন বলিয়া যথাশক্তি ক্রীর প্রদান করিবে। যে ত্রামাণ এই প্রকারে ক্রমার আরাধনা করেন, তিনি সর্বাকলুষ্বিনির্মাক্ত ও বর্গভাগী হইয়া, পরিণামে পৃথিবীতে জন্মগ্রহণ পূর্বক ধনী হয়েন।

যাহা দারা অধন্য ধন্য হয়, সেই ধন্যত্রত কীর্ত্তন করিব। মার্গশীর্ষত্রয় প্রতিপদ তিথিতে রাজিতে হোম করিয়া, উপবাস করিবে এবং অগ্রিকে নমক্ষার, এই প্রকার কহিয়া, তাঁহার অর্চনা করিলে, সর্বভোগী হইয়া থাকে। প্রতিপদ তিথিতে একভ্রনশী হইয়া, কপিলা প্রদান করিলে, বৈশ্যানর পদ প্রাপ্তি হয়। ইহার নাম শিথিত্রত।

ইত্যাথের মহাপ্রাণে শুভিপদ্রতন্ত্রের একাদশাধিকশভত্য অধ্যায় স্মার্য।

দ্বাদশাধিকশতত্য অধ্যায়।

অগ্নিকহিলেন, দিতীয়া বুত কীর্ত্তন করিব।
উহা দারা ভুক্তিমৃক্তি প্রভৃতি সম্পন্ন হইয়া থাকে।
পুস্পাহারী হইয়া, দিতীয়া তিথিতে অশ্বিনীকুমার
দয়ের অর্চনা করিবে। তাহাতে রূপ সোভাগ্য
ও স্বর্গ লাভ হইবে। কার্ত্তিক মানের শুরূপক্ষের
দিতীয়াতে যমের পূজা করিবে। তাহাতে স্বর্গলাভ ও নরক পরিহার হইবে।

অবৈধব্যাদি ফলদায়ক অশৃষ্যবুত কীর্ত্তন করিব, শ্রেবণ কর। প্রাবেণমাসের কৃষ্ণপক্ষীয় দিতীয়া ভিথিতে এই বৃত্তের অমুষ্ঠান করিবে এবং কহিবে, হে শ্রীবংসধর! হে শ্রীকান্ত! হে শ্রীধানন! ত্র তেনা ওালের।

হে অব্যয় ! হে প্রীপতে ! আমার পার্ক্যা বেন
কোন কালেই নই না হয় এবং যেন ধর্মার্ক্সামপ্রদ তোমান্তেই সংসক্ত হয় । তোমার প্রসালে
আমার অগ্নিসকলও যেন প্রণক্ত না হন, দেবতারা
যেন প্রণক্ত না হন, পিতৃগণ যেন প্রণক্ত না হন,
এবং আমাদের দাল্পত্য যেন কোন কালেই
বিচ্ছিন্ন না হয় । আপনি যেমন কোন কালেই
লক্ষ্মীর বিরহযোগ ভোগ করেন না, হে দেব !
আপনার প্রসাদে আমারও কল্তেসফল্ল যেন
তেমনি অবিচ্ছিন্ন হয় । হে বরদ ! হে বিছো !
আপনার শ্যা যেমন কোন কালেই লক্ষ্মীসমাগ্র
শৃত্য হয় না, হে মধুস্দন ! আমারও শ্যা রেন
তেমনি অশ্ন্য হয় ।

এইপ্রকারে বিফ্ ও লক্ষ্যীর বৎসরাবার পূজা করিয়া, প্রতিমাসে শয়া ও ফল এবং সোমের উদ্দেশে সমন্ত্রক অর্থ্যদান করিবে। তৎকালে এই প্রকার বলিতে হইবে, হে চন্দ্র: তুমি গগনরূপ বিশাল অঙ্গনের পরমপ্রজ্বলিত প্রদীপস্বরূপ। তুমি ক্ষীরোদ্যাগরগর্ভ হইতে প্রান্ত্রন্ত হইরাছ। সমস্ত দিখ্যগুল তোমার নির্মাল করিবে বিদ্যোতিত হইরা থাকে। তুমি লক্ষ্মীর অনুদ্ধ। তোমাকে নমস্কার।

অনন্তর, ওঁ ঞীং শ্রীধরায় নমং, বলিয়া সোমরূপী হরির এবং ঘং ঢং ভং হং শ্রিটয়ঃ নমঃ বলিয়া
সেই দশরূপ মহাত্মার পূজা করিবে। পরে
রাত্রিতে দ্বত বারা হোম করিয়া, প্রাক্ষণকে শয্যা,
দীপামভাজনসমেত আসন, ছত্ত্ব, পাছকা, জলকুন্ত, প্রতিমা ও পাত্র প্রদান করিবে। সন্ত্রীক
এইপ্রকার অমুষ্ঠান করিলে, ভুক্তিমুক্তি লাভ
হইয়া থাকে।

অধুনা, কান্তিত্রত কীর্ত্তন করিব। কার্তিক

বাসের শুরুপকে বিতীয়া তিথিতে নক্তাহারী হইরা, এই ব্রতের ক্ষুষ্ঠান ও রামক্তকের পূজা করিবে। এক বৎসর এই প্রকার করিলে, কান্তি, শায় ও খারোগ্যাদি লাভ হইরা থাকে।

অধুনা বিষ্ণুত্রত বলিব। এই ব্রভ করিলে, সৰুদায় মনোবাঞ্চা পূর্ণ হয়। পৌষশুক্লের দিতীয়া ডিথি হইতে আরম্ভ করিয়া, দিনচভূতীয় যাবৎ এই হভ করিবে। প্রথম দিন সিদ্ধার্থ দারা,বিভীয় দিম কুঞ্জিলে, তৃতীয় দিন বচার ও চতুর্থ দিন भटकी एशिनलिएन ज्ञान कतिरव । बृता, मांश्मी, वहां, कुर्छ, रेमरलय, तकनीयय, मठी, ठम्मक ও युखा हेहारमञ्ज बाग मटर्कोषधिभन । कृष्ण, चहुउछ, खनस, स्वीत्कन, देखानि नात्य शृक्षा कतिवा, यशाकात्य भने. हस. भभक ७ हेम् मःखा महारा शाल, নাভিতে, চকুতে ও মস্তকে পূজা করিবে। যাবৎ চন্দ্রমা উদিত থাকেন, তাবৎ রাত্রিতে ভোজন করিবে। এই প্রকার ত্রত করিলে, ছয় মাদে সমস্ত পাপকালম ও বৎসরাস্তে সকল কামনা পূর্ণ হয়। পূর্বের হুরাদি সকলে এই ত্রত করিয়া-ছিলেন। গাঙ্গাদিরও এই ত্রত করা কর্তব্য।

> ইজারেরে আদিষ্যপুরাণে বিতীয়ারত নামক ছাদশাধিকশততম অধ্যাহ সমাধে।

ত্রয়োদশাধিকশততম অধ্যার।

ষ্ঠি কহিলেন, স্থানা ভোমার নিকট ভুক্তি-যুক্তিপ্রদ ভৃতীয়াত্রত কীর্ত্তন করিব। ললিতঃ ভৃতীয়াতে স্বসূঠেয় মূল গৌরীত্রত প্রবণ কর।

মহাদেব চৈত্র মাদের শুরুপক্ষায় তৃতীয়া তিথিতে গৌরীকে বিবাহ করেন। ঐ দিন তিল-স্নাত হইয়া, গৌরীর সহিত মহাদেবকে হৈম- क्लामि बादा अर्फमा कदित्व। পांग्रेलारक नयकात বলিয়া দেবী ও শিবের পদ পূজা করিবে। এই রূপ, শিবকে ও জয়াকে নমস্কার বলিয়া গুল্ফরয়ে পূজা করিবে। ত্রিপুরারি রুজ ও ভবানীকে নমস্কার বলিয়া, জঞ্জাযুগলে আরা-ধনা করিবে। রুদ্ররূপী ঈশ্বর ও বিজয়াকে নমঃ विनया कारूबुर्या व्यक्तना कतिरव । जेनरक नमः বলিয়া দেবীর কটি ও শঙ্করতে নমঃ বলিয়া শঙ্করকে পূজা করিবে। কোটবীকে নমঃ বলিয়া कुक्तिकरमञ्ज ७ भृत्रभागिरक नम रतिया, भृतीत আরাধনা করিবে। ভূমি মগলা, ভোমাকে নম-স্কার বলিয়া উদরের অর্চনা করিবে। সর্বাত্মাকে नमः विभागं ऋत्यात्र, धेर्णानीत्र नमः विभागः कृत-ঘয়ের, দেবাত্মাকে নমঃ বলিয়া শিবের, হ্রাদি-নীকে নমঃ বলিয়া কণ্ঠের, মহাদেবকে নমঃ বলিয়া শিবের অনস্তকে নমঃ বলিয়া করদ্বয়ের, ত্রিলো চনকে নমঃ বলিয়া হরের, কাল্যনলপ্রিয়াকে নমঃ বলিয়া বাহুব, দোভাগা ও মহেশকে নমঃ বলিয়া ভূষণ সকলের, অশোকমধুবাদিনী ও ঈশ্বরকে নমঃ বলিয়া ওর্চম্বনের, চতুন্মু থপ্রিয়া ও স্থাণুরূপী रत्रक नमः विलया आस्त्रकारमञ्जू आर्द्धनात्रीम इत ও অমিতাঙ্গীকে নমঃ বলিয়া নাদিকার, উত্তকে नयः-दुनिया लाटकरणत, ननिजारक नमः वनिया क्रिवरीसत्र, मर्स्वरक नमः विलेशा जिश्रुसर्खाद, वाम-ন্তীকে নমঃ বলিয়া ভালুর, শ্রীকণ্ঠনাথা ও শিতি-কণ্ঠকে নমঃ বলি কেশের এবং হরপিণী ভামোত্রা ও সঞ্চাত্মাকে নমঃ ৰলিয়া শিরো-দেশের পূজা করিবে।

মল্লিকা, অশোক, কমল, কুন্দ, তগর, মালতী, কদম, করবীর, বাণ, অমান কুন্ধ্য ও সিদ্ধ্বার এই দকল পুল্পে যথাক্রমে সমুদায় মালে পূজা

করিতে হইবে। উমাও মহেশ্বের পূজা করিয়া তাঁহাদের পুরোভাগে দৌভাগ্যান্টক স্থাপন করিবে। ন্বত, নিম্পাব, কৃহস্ক, কীর, জীবক, তরুরাজ ইক্ষু, লবণ ও কুস্তুস্ক এই আটটাকে সোভাগ্যাঞ্চক বলে। চৈত্রমানে শৃঙ্গোদক পান করিয়া, দেব-দেবীর অগ্রে শয়ন করিবে। পরে প্রাভঃকালে স্নান ও সম্যক্ রূপে দেব দেবীর পূজা করিয়া, ব্রাহ্মণদম্পতীর অর্চনা করিবে এবং দেবী ললিতা আমার প্রতি প্রসম হউন বলিয়া, ত্রাক্ষণকে উল্লি-খিত আটটী দ্রব্য দান করিবে। চৈত্রাদি মাসে मानकारल यथाक्ररम, निल्छा, विकश्न, ভजा, ভवानी, क्यूना, निवा, वाञ्चरत्वी, त्यांत्री, यनना, কমলা ও সভী আমার প্রতি প্রীতিমতী হউন, विवास यथाक्रास भृत्त्रामक, त्रामस, सन्तात, विब-পত্র, কুশোদক, দধি, ক্ষীর, পৃষদাজ্য, গোমৃত্রাজ্য, কুফুতিল, পঞ্গব্য ও জুমাশন এই সকল দ্রব্য দান করিবে। ত্রভান্তে একমাত্র ফল, পবিত্র আজ্য ও শ্যা প্রদান করিবে। এবং গুরুদম্প-তীকে পূজা করিয়া, স্বর্ণের উমা মহেশ্বর, গো ও রুষভ এবং বস্ত্রাদি দান করিলে, ভুক্তি যুক্তি লাভ হইয়া থাকে।

সৌভাগ্যশরনবৃত করিলে, সৌভাগ্য, আরোগ্য ও আয়ু লাভ হয়। প্রাবণ অথবা বৈশাথ, কিছা অগ্রহায়ণ মাসের শুরুপকীয় তৃতীয়াতে কলিতা দেবীকে নমকার করিয়া অর্চনা করিবে। প্রতি-পক্ষে পূজা করিয়া, ব্রতাক্ষে চতুর্বিংশতি বিপ্র-দশ্যতীর ব্রাদিপ্রদানপুরঃসর অর্চনা করিলে, ভৃতিমৃত্তিপ্রতিপ্রাপ্তি হইয়া থাকে।

অধ্না, সোভাগ্যত্তত বলিতেছি, প্রবণ কর। কাস্ক্রনাদি তৃতীয়া তিথিতে যে র্যক্তি লবণ বর্ণ্দ্রন করে এবং ত্রত সমাপ্ত হইলে, উপস্করসমেত বৃহৎ শয্যা দান করে, তাহার সোভাগ্য লাভ হয়। তবানী ভাষার প্রতি প্রতি। হউন বলিয়া তৎকালে প্রাক্ষণদম্পতীর বিশিক্তরূপ পূজা করিতে হইবে। এই বৃত করিলে, গৌরীলোক-লাভ হয়। মাঘ, ভাদ্র ও বৈশাধ মানে ভৃতীয়া বৃত করিবে।

চৈত্রমাদে দমনকত্তীয়া বুত করিলে, পরম সোভাগ্য লাভ হয়। দমনকসহায়ে এই বুতে প্রায়ত হইবে। মার্গত্তীয়া আরম্ভ করিয়া,গোরী, কালী, উমা, ভন্তা, চুর্গা, কান্তি, দরস্বতী, বৈশ্ববী, লক্ষ্মী, প্রকৃতি, শিবা ও নারায়ণীর মথাক্রেমে পূজা করিলে, সোভাগ্য ও স্বর্গ প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

> ইত্যায়েরে আদিমহাপুরাণে তৃতীয়াব্রতনামক । ত্রোদ্শাধিশস্ততম অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুর্দশাধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, ভূজিমুক্তিপ্রদ চতুর্থীবৃত সমু-দায় অধুনা কীর্ত্তন করিব।

মাঘ মাদের শুক্র চতুর্থীতে অনশন করিয়া, গণদেবতার পূজা করিবে। পঞ্চনীতে তিলার ভোজন করিলে, ব্রান্তে নির্বিদ্ধ হংশলাভ হইয়া থাকে। গং স্বাহা, ইহাই গণদেবপূজার মূল-মন্ত্র। মূলমন্ত্রে আগচ্ছোদ্ধায় বলিয়া, আবাহন এবং গচ্ছোদ্ধায় বলিয়া বিস্কুলন করিবে। মোদ-কাদি ও গঙ্কাদি প্রদান পূর্বক পূজা করিবে।

ওঁ মহোক্ষার বিষয়েহে বক্ষতৃগুয়ে ধীমহি তাম। দন্তী প্রচোদয়াৎ।

ভাত্রমানে চতুর্থী করিলে, শিবসাক্ষাৎপ্রাপ্তি হয়। তৎকালে চতুর্থীত্ব অসারকে গণপূজা করিলে, সমস্ত সিদ্ধি হইয়া থাকে। ফাস্তুনমাসের চতুর্থীকে অবিশ্বাধ্যা চতুর্থী বলে। চৈত্র মাসের চতুর্থীতে দমন ছারা গণদেবভার পূজা করিলে, ক্ষী হওয়া যায়।

> ইত্যাথেয়ে আদিমহাপুৰাৰে চতুৰীব্ৰত নামক চতুৰ্দশাধিকশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

পঞ্চদশাধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, অধুনা পঞ্চমীবৃত কীর্ত্তন করিব। উহা দারা আরোগ্য, স্বর্গ ও অপবর্গ লাভ হইরা থাকে। প্রাবণ, ভাতে, আশ্বিন ও কার্ত্তিক মাদের শুক্লপকে বৃত করিয়া, যথাবিধানে পূজা করিলে, বাহ্নকি, তক্ষক, কালীয়, মণিভত্ত, প্রবাবত, শ্বভরাষ্ট্র, কর্কোটক ও ধনঞ্জয় ইহারা অভয়, আয়ু, বিদ্যা, যশ, খ্রী ও সম্পত্তি প্রদান করেন।

> ইন্যাপ্রেষ আধ্যমহাপুরাণে পঞ্জীপ্রত নামক পঞ্চপানিকশ্ততম অধ্যায় সমাপ্ত।

ৰোড়শাণিকশততন অধ্যায়।

পান্ন কহিলেন, অধুনা ষষ্ঠীত্রত কীর্ত্তন করিব।
এই ত্রত কার্ত্তিকাদিনাদে অনুষ্ঠান করিবে। ষষ্ঠীতে
কলাশী হইনা, অর্য্যাদি দ্বারা পূজা করিলে, ভুক্তি,
মুক্তি ও আরোগ্যাদি প্রাপ্তি হইয়া থাকে। ইহার
নাম ক্ষমণাশীত্রত। ভাদ্র মানের ষষ্ঠীতে যে কোন
কার্য্য ক..। যায়, তাহাই অক্ষয় হইয়া থাকে।

অধুনা কৃষ্ণবন্ধীত্রত কীর্ত্তন করিব। মার্গশীর্বে এই ত্রত করিবে। অনাহারী হইয়া, একবর্ষ এই ব্রত করিলে, ভূক্তিমুক্তিপ্রাপ্তি হইয়া থাকে।

ইত্যাধ্যের মহাপুরাণে বটীত্রতনামক ব্যোজ্শাধিক-

শতক্ষ অধ্যার স্মাপ্ত।

সপ্তদশাধিকশততম অধ্যায়।

অমি কহিলেন, সপ্তমীত্তত কীর্ত্তন করিব।
উহাদারা সকলেরই ভুক্তিমুক্তি লাভ হইয়াথাকে।
নাঘ নাদের শুক্রপক্ষে সপ্তমীতে সূর্য্যের আরাধনা
করিলে, শোক দূর হয়়। ভাদ্রনাদের সপ্তমীতে
সূর্য্যের পূকা করিলে, সমস্ত অভীক্ট সিদ্ধি হয়়।
পৌষমাদের শুক্রপক্ষে সপ্তমীতে উপবাস করিয়া,
সূর্য্যের পূজা করিলে, পাপ বিনফ্ট হইয়া থাকে।
মাঘমাদের কৃষ্ণপক্ষের সপ্তমীতে সূর্য্যের পূজা
করিলে, সমুদার অভীক্ট লাভ হয়়। ফাল্কনমাদের
শুক্রপক্ষের নন্দাসপ্তমীতে সূর্য্যের পূজা করিলে,
ফার্লাভ হয়়। মার্গনীর্ষের শুক্রপক্ষের সপ্তমীতে
অপরাজিতা সপ্তমী বলে। কেছ কেছ ইহাকে
ব্রীজাতির পুত্রীয়া দপ্তমী কহিয়া থাকে। এই
সপ্তমীতে সূর্যের পূজা করিলে, পুত্র প্রাপ্তি হয়়।

ইভাবেরে আদিমহাপুরাণে সপ্তমীরতনামক সপ্তদশ্ধিকশতভ্য অধ্যায় স্মাপ্ত ।

অফাদশাধিকশতত্ম অধ্যায়।

০ অগ্নি কহিলেন, অফমী ত্রত সকল কীর্ত্তন করিব। রোহিণীতে প্রথম ত্রত করিতে হয়। ভাদ্রমাদের অফমীতে রোহিণীনক্ষত্রে অর্ন্ধরাত্র সময়ে শ্রীকৃষ্ণ জন্ম গ্রহণ করেন। এই ছাত্র উহার নাম জয়ন্তী অফমী। এই অফমীতে উপবাদ করিলে, দপ্তজন্মকৃত পাপ হইতে পরিহার প্রাপ্তি হইয়া থাকে। ভাদ্রমাদের কৃষণকে অফমীতে রোহিণীনক্ষত্রে উপবাদ করিয়া, কৃষ্ণের অর্চ্চনা করিলে, ভুক্তি মুক্তি লাভ হয়।

व्यामि कुछः, वन्छल, रमवकी,वस्राप्तय ७ शरमा-

দাকে আবাহন ও পূজা করিতেছি। হে কৃষ্ণ। তোন মাকে নমকার। ভূমি যোগস্থারূপ, যোগপতি ও যো-গেশ, তোমাকে নমকার, নমকার। ভূমি যোগাদি-সম্ভব গোবিন্দ, তোমাকে বার বার নমকার করি।

এই বলিয়া কৃষ্ণকৈ স্নান করাইয়া, পূজা कतिरव। कृति यस्त्र, यरकायत्र ७ यस्त्रमकरलत পতি। তোমাকে নমস্কার। তুমি বজাদিসম্ভব গোবিন্দ, তোমাকে বারংবার নমস্কার। দেব! তোমার প্রিয় এই দকল হুগদ্ধি পুষ্পগ্রহণ কর। হে দেববন্দিত আদিদেব! আমার সকল কামনা পূর্ণ কর। হে ধুপধৃপিত। ছুমি ধূপস্বরূপ, এই ধুপ গ্রহণ কর। হে হুপন্ধ! হে হরে! আমারে मर्ज्यमा धृष्णगञ्जमण्यनं कत्र । ८६ मीष्पमीख । जूमि মহাদীপস্তরপ। তোমারই দীপ্তিতে সমুদায় প্রকা-শিত হইয়াছে ও হইতেছে। চক্র ও সূর্য্যাদি দীপ্রপদার্থ দকল ভোমার্থ দীপ্তিতে দীপ্তিময় इहेगा था का जुमि यथन अहे मीखि मश्हतन कत, তথনই বোর নিবিড় তিমিরপ্রাগ্ভার প্রাছুস্ত হইযা, মহাপ্রলয় সমুপত্তিত করে। ইহারই নাম দকলের দংহারকাল। হে বিভো! হে অনন্ত! তুমি দর্বদা দীপদীপ্তি প্রদান কর, তোমারে নম-আমার প্রদন্ত এই প্রদীপ গ্রহণ করিয়া, আমার উদ্ধগতি বিধান কর। তুমি বিশ্ব, বিশ্ব-পতি ও বিশ্বেশ্বর, তোমারে বার বার নম্দার। তুমি বিশাদিসম্ভব গোবিন্দ, তোমারে আত্মনিবে-प्रम कतिलाग, व्यायात छेकात कत, छेक्कात कत। ভূমি ধর্মা, ধর্মাপতি ও ধর্মেশ, তোমাকে নমকার, नमन्द्रात । जुनि धर्मानिमञ्जय शायिन्त, भन्नन कन्न । তুমি দৰ্ব্ব, শ্ৰহণতি ও সৰ্বেশ্বর, তোমাকে নম-কার, নমকার। তুমি সর্বাদিসম্ভব গোবিন্দ। আমাকে পবিত্র কর।

হে শশাক। ভূমি কীরোদসাগরে কমগ্রহণ করিয়াছ এবং অতিনেত্র হ**ইতে সমৃদ্ধ ও হইয়াছ।** একণে রোহিশীর সহিত বিলিত হইয়া. আনার প্রদত্ত এই অর্ঘ্য গ্রহণ কর। এই বলিয়া দেবদেব বাহুদেব, চন্দ্রসহিত রোহিণী, দেবকী, বহুদেব, যশোদা, নন্দ ও বলভদ্ৰকে স্থগ্ৰিলে স্থাপন ও পূজা করিবে এবং অর্বরাক্ত সময়ে শুড়ুস্পিন্মেড পয়োধারা পাতিত করিবে। এতী ব্যক্তি বস্ত্র ও হেমাদি প্রদান পুর: সর ব্রাহ্মণদিগকে ভোজন করাইবে। জন্মাঊমী ত্রত করিলে, পুত্রান্ ও বিষ্ণুলোকগামী হয়। পুত্ৰাৰ্থী হইয়া, ৰূৰ্বে ৰূৰ্বে এই ব্রত করিলে, কোন ভয়ই থাকে না। তৎ-কালে এই প্রকার বলিতে হইবে, ছে দেব! আমায় পুত্র দাও, ধন দাও, আয়ু দাও, আরোগ্য দাও, সন্ততি দাও, ধর্ম দাও, কাম দাও, সৌভাগ্য मांख, वर्ग मांख ७ मूकि मांछ।

ইত্যারেরে মহাপ্রাণে জরতাইমীনামক অটারশাধিক-শতভম অধ্যার সমাধা।

ঊনবিংশত্যধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, চৈত্রমাদের কুষাউমীতে

ক্রীকৃষ্ণের পূজা করিলে,অর্থনিদ্ধি লাভ হইয়া থাকে।
ইহার নাম কৃষ্ণাউমী ত্রত। মার্গশীর্ষ মানে এই
ত্রতে প্রবৃত্ত হইবে। রাত্রিতে শুচি হইরা, গোমুত্র
ভক্ষণ করিবে এবং ভূমিশায়ী হইরা, নিশাকালে
শক্ষরের পূজা করিবে। পৌষমানে ফুচ ভক্ষণ
করিয়া শভ্র, মাথে কীর ভোজন করিয়া মহেখরের, ফান্তুরে, অনশন ও তিল ভক্ষণ করিয়া মহাদেবের, চৈত্রে য্বাদী হইয়া স্থানুর, বৈশাথে স্কুলোদক্ষ পান করিয়া শিবের, জ্যেতে শ্রেলাকাশী হইয়া

ক্ষিণাভিত্য, শাষায়ে গোমনা ক্ষুণ্ড পূর্বক ক্ষেত্রর, আগবনে অর্কুত্ হইনা সংক্রি, কামেণারে ক্ষুণ্টারের বিবপরাণী হইনা ক্রান্ত্রেকর, আগিনে ভণ্ডুল, ক্ষান্ত্রের পূর্বাক সপোর, কার্ত্তিকে দধ্যাণী হইনা ক্রান্ত্রের এবং বর্ষান্তে হোম করিনা ছতিলে মহাদেবের পূঞা করিবে। ভৎকালে শুক্রকে গো, বস্ত্র ও হেম-দান পুরংসর বাচ্ঞা করিয়া, ভাহ্মণদিগকে ভোজন করাইলে, ভুক্তি মুক্তি প্রাপ্তি হইনা বাক্ষে।

প্রত্যেক অন্তর্মীতে নক্তাশী হইয়া, বৎসরাত্তে

থেকু দান করিলে, পৌরন্দরপদ প্রাপ্তি হইয়া
থাকে। ইহার নাম স্থাতিবৃত। উভয় পক্ষের
ব্ধবারে অন্তর্মী উপস্থিত হইলে, গুড়মাত্র ভক্ষণ
করিয়া,এই ত্রত করিলে, ত্রতকর্তার সম্পদ্ কথনও
থক্তিত হয় না। অন্তর্মুপ্তি তণুলের অসুলিছয়
বর্জন করিয়া, তাহাতে অন্ধ প্রস্তুত করিবে।
কথা প্রবণ পূর্বেক সান্ত্রিক অঙ্গ পূজা করিয়া,
ঐ অন্ধ ভক্ষণ করিবে এবং যথাশক্তি তণুল ও
কর্বোটিকা দক্ষিণা দিয়া ত্রাক্ষণগণের ভৃপিবিধান
করিবে।

ধীর নামে ত্রাক্ষণ; তাঁহার রস্তা নামে ভার্য্যা,
কৌশিক নামে পুত্র, বিজয়া নামে তুহিতা এবং
ধনদ নামে রষ। কৌশিক সেই রষকে লইয়া
গোপার্লগণের সহিত চবাইয়া বেড়াইতেন। একদা
র্ঘচারণ করিতে করিতে, ভাগারথীতে স্নান করিতেছেন,এমন সময়ে কতিপয় চৌর তাঁহার র্ঘহরণ
কবিয়া লইল। তিনি স্নান করিয়া দেখিলেন,
র্য অদৃশ্য হইয়াছে। তথন ইতত্ততঃ তাহার অথেধণ করিতে লাগিলেন। ভগিনী বিজয়া তাঁহার
সমাভিব্যাহারিণী হইলেন। অনন্তর কোন সরোবরে অবলোকন করিলেন,দিব্য রমণীরা ত্রত করি-

त्वरहन रः केंग्बाहा,सरका क्रिकी मेक्सकरे निकास क्षा कर्तिका क्षा के नाम के नाम किरोबिय त्माकम कविशाहे, यम शार्थता , विश्वास (नर् छात्रकातिनी त्रमनीता करिस्त्रव, कृति अक्रिथि হইয়াছ, ভোজন কর। অনস্তর কৌশিক বুত করিয়া ভোজন করিলে, রুষ প্রাপ্ত হইলেন। তথন বিজয়ার সমভিব্যাহারে সহর্বে গৃহে গমন করি-লেন এবং যমকে ভগিনী সম্প্রদান করিয়া, স্বয়ং অবোধ্যার রাজা হইলেন। বিজয়া মনালয়ে গমন করিয়া, পিত। মাতাকে নরকার্হ দেখিয়া অতিমাত্র ব্যাকুলা হইলেন এবং মুগরাগত বমকে কহিলেন, পিতা মাতা কিরূপে নরক হইতে উদ্ধার প্রাপ্ত হইবেন ? ধম কহিলেন, বতৰয়ের অফুষ্ঠান করিলেই জোমার পিতা মাতা মুক্তি লাভ করি-বেন। তোমার ভাতা বৃত করিয়া, তৎপ্রভাবে আমার হস্তে তোমাকে সম্প্রদান করিতে সমর্থ হইয়াছেন। ফলতঃ, বত করিলে, কাছারই অভি-প্রায় বা অভিলাষ বিফল হয় না। অনস্তর যমের আদেশে কৌশিকের পিতা মাতা উভয়ে বত করিয়া, তৎপ্রভাবে স্বর্গলোক লাভ করিলেন। তাঁহারা যে বুত করিলেন, তাহার নাম বুধাউমী। তথন বিজয়াও ভুক্তি মৃত্তি সিদ্ধির জন্ম সহর্বে বত করিলেন।

যাহারা পুনর্বন্থ নকতে চৈত্রমাদে শুরুপকীয়
অফমীতে অফ অশোককলিকা ভক্ষণ করে,
তাহারা কখনও শোক প্রাপ্ত হয় না। তাহাদের
আয়ু, আরোগ্য ও হখ দৌভাগ্য রুদ্ধি ও পরিগামে অপবর্গ লাভ হইয়া থাকে। হে অশোক!
তুমি মহাদেবের পরমপ্রিয়সাম্প্রী। মধুনাদে
তোমার জন্ম হইয়াছে। আমি শোকসন্তপ্ত
হইয়া, তোমাকে পান করিতেছি, তুমি সর্বদা

আমাৰে অংশক করণ । এই বলিয়া ভালোকের । পূজা করিলৈ, সম্পায় শোক বিনাপ হয়।

ৈটোদি মাসের অউমীতে মাতৃকাগণের পূজা করিলে; রিপুক্ল নির্দ্ধ; আরোগ্য লাভ ভ সৌভাগ্য রন্ধি হইরা থাকে।

ইত্যায়ের আদিমহাপুরাণে অইমীরত নামক ঊনবিংশভাধিক শত্তম অধান সমাধান

বিংশতাধিকশৃততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, যাহা দারা ভূক্তি মুক্তি প্রভৃতি বিবিধ দিদ্ধি লাভ হয়, দেই নবমীবৃত কীর্ত্তন করিব। আখিনমাদের শুক্লপকে দেবী গৌরীর পূজা কবিবে। ইহাব নাম গৌরীনবমীবৃত।

(मिवीत शृका कतियां, शिकानी इंटरत। अह নবমীর নাম পিউকনবমী। আখিন মাদেব শুক্র-পক্ষীয় অউমাতে কন্তা, দুৰ্য্য ও ঘূলনক্ষত্ৰ সংক্রম হইলে, তাহাব নাম অপার্দ্ধনা নবমী। তৎ-কালে চণ্ডা, প্রচণ্ডা, রুদ্রচণ্ডা, চণ্ডোগ্রা, চণ্ড-নাবিকা, চণ্ডবতী, চণ্ডরূপা, অতিচণ্ডিকা, উগ্রচন্তা ও মহিষমর্দিনীর পূজা করিবে। ওঁ ভূর্গে ভূর্গে রক্ণি সাহা: ইইাদের প্রভার এই দশাকর মন্ত্র। অঙ্গুষ্ঠাদি কনিষ্ঠান্ত অঙ্গ সকল ন্যাস করিয়া,শিবাব জপ করিবে। যে ব্যক্তি এই প্রকাঃ গুছা জপ করে, কেইই তাহার বিশ্ব করিতে পারে না! কপাল, খেটক, ষণ্টা, দর্পণ, তর্জ্জনী, ধর্মু, ধ্বজ্ ভমরু, পাশ ইত্যাদি আয়ুধ সকল দেবীর বাম হত্তে বিরাজমান। শক্তি, মুদার, শুল, বজ্ঞ, খড়গ কুন্ত, দাখ্ৰ চক্ৰ ও শলাকা এই সকল আয়ুধ দক্ষিণ হত্তে প্রতিষ্ঠিত আছে। তৎসমন্তের পূজা করিয়া, कानी कानी वनिया जल नमाधानानस्त्र थका बाता । वुरू वनिव।

> ইত্যায়েরে আদিমহাপুরাণে নব্মীব্রতনামক বিংশত্যধিকশক্তকম অধ্যায় সমাধ্য।

একবিংশত্যধিকশততম অধ্যায়।

অগি কহিলেন, ধশাকামাদিসিদ্ধিক্ষনক দশমী বৃত বর্ণন করিব। দশমীতে একভজাশী হইয়া, বৃত সমাপ্ত হইলে, দশ ধেকু দান করিবে। তৎ-কালে কাঞ্চনম্যী দিক্ সকল দান করা বিধি। তাহা হইলে বাহালগণের আধিপত্য লাভত সম্থ হইবে।

ইড্যায়ের মহাপুরাণে দশমীরতনামক একবিংশভাধিক-শতকম অধ্যার সমাধা ।

দ্বাবিংশত্যধিকশততম অধ্যায় । অমি কহিলেন, ভুক্তিমৃক্তিপ্রদায়ক একাদশী বলব। দশমীতে আহারদংহম ও মাংসমৈপুন বর্জন করিয়া, উভয়পক্ষের একাদশীতে অনশন করিবে। বেখানে ঘাদশী ও একাদশী, ভগবান্ হরি সেই খানেই নিত্য সমিছিত এবং সেইখানেই সমস্ত পবিত্র তীর্থ ও সমস্ত পবিত্র আয়তন এবং সেই খানেই সমস্ত বজ্ঞ বিরাজমান। হেখানে কলামাত্র একাদশীর পর ঘাদশী,সেখানে ত্রয়োদশীতে পারণে পরম পবিত্র ক্রভুশত বিরাজমান। একাদশী মিজ্ঞা দশমীতে কোন মতেই উপবাস করিবে না। উপবাস করিলে, নয়ক লাভ হইয়া থাকে। একাদশীতে নিরাহার থাকিয়া, পরদিন ভোজন সময়ে, হে পুগুরীকাক্ষ! হে অচ্যুত! আমি ভোজন করিব, আমার সহায় হও ও আমারে আশ্রয় প্রদান কর; এই প্রকার কহিয়া, যথাবিধি পারণ

পূর্ণনক্ষত্রযুক্ত শুক্রপক্ষীয় একাদশীতে উপ-বাস করিলে, অক্ষয় ফল লাভ ও সমস্ত পাপকর हरेश थात्क। आवशयुक्त धकानमा वा चानमीत्क বিজয়া বলে। উহা ভক্তগণের বিজয়দায়িনী। ইহাই ফাল্পন মাদে পুষ্যানক্তব্যুক্ত হইলে, সাধু-গণ তাহাকে কোটিকোটিগুণোত্তরা বিজয়া নামে অভিহিত করেন। একাদশীতে বিষ্ণুপূজা করিলে, সর্বোপকার লাভ হয়। অতএব সর্বান্তঃকরণে বিষ্ণুর পূজা ক্রিবে। তাহা হইলে, ধনবান, পুত্রবান্ ও বিষ্ণুলোক প্রাপ্ত হয়। তৎকানে এই বলিয়া বিষ্ণুর পূজা করিবে,হে দেবদেব! ছে জগৎ-পতে! হে জনাৰ্দন! হে মধুসূদন! হে যোগ-মায়াধীখর! হে দর্বব্যাপী মহেশ্বর! আমি তোমার উদ্দেশে অনশন করিতেছি এবং তোগার নিকট অন্নপ্রার্থনা করিতেছি, আমারে অক্ষয় অন্ন প্রদান তোমার প্রদানে আমার গৃহে কোন- কালেই যেন অন্নের অভাব না ছয়। লক্ষ্মী যেন চিরকাল অচলা হইয়া, পূর্ণভাবে আমার গৃহে বাদ করেন। কেহ যেন কোন কালেই অয়াভাবে আমার গৃহে অমশন না করে। আমি যেন দপরি-বারে ও পুরুষাসুক্রমে চিরকাল ভোমার প্রীতি-কাম হইয়া রাশি রাশি অয়দান ছায়া প্রচুর পুণ্য দক্ষম করিতে পারি। হে যজেল। হে যজ্ঞপতি। তুমি দকল অন্নের অধিপতি ও অধিষ্ঠাতা। তোমাকে বারংবার নমস্কার করি।

ইত্যাবেরে আদিমহাপুরারে একাদশীত্রত নামক দ্ববিংশত্যবিক শত্তম অধ্যার সমাধ্য।

ত্রয়োবিংশত্যধিকশত্তম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, ভুক্তিমুক্তিজনক দাদশীত্ৰত কীর্ত্তন করিব। এক ভক্ত, অথবা অঘাচিত ভক্ত, কিংবা উপবাদ অথবা ভৈক্ষ্য দ্বারা দ্বাদশিক ত্রত করিবে। হৈত্রমাদে শুক্লপক্ষে দ্বাদশীতে মদন ও হরির পূজা করিলে, ভুক্তিমুক্তি লাভ হইয়া থাকে। ইহার নাম সদন্বাদশীত্রত। মাঘ মাপের শুক্র-পক্ষীয় দাদশীতে ভীমদাদশী ব্ৰত অমুষ্ঠিত হইয়া থাকে। নমো নারায়ণায় বলিয়া বিষ্ণুর পূজা করিলে, দর্বাসিদ্ধিলাত হয়। ফাব্তুন মাদের শুক্র-পক্ষে গোবিন্দদাদশীত্রত করিলে, গোবিন্দ সদয় হন। আখিন মাসে বিশোক ঘাদশী ব্রত করিয়া, ভগবান নারায়ণের পুজা করিলে, সকল শোক বিনাশ প্রাপ্ত হয়। নার্গশীর্ষের ভরম্বাদশীতে নারায়ণের পূজা করিয়া লবণ দান করিলে, সমস্ত রদদান জন্ম ফলপ্রাপ্তি হইয়া থাকে। ভাদ্রেমাদে গোবৎদের পূজা করিবে। ইহার নাম গোবৎদ-দাদশীবৃত। মাখমাদের প্রবণযুক্ত কৃঞ্দাদশীকে

जिल बाननी यत्न। धरे बाननीटि जिल्लान. जिनाराम, जिनारेनरवहा, जिनारमामक, जिन-তৈলদীপ, তিলোদক ও শুদ্ধ তিল দানপুরংসর वाकानिगरक मितरभव विधारन व्यक्तना कतिरव। তৎকালে ঘথাবিধি হোম ও উপবাস করিয়া, ওঁ নমো ভগবতে বাহুদেবায়, বলিয়া তাঁহার পূজা করিবে। ষট্তিলঘাদশীবৃত করিলে, কুলের সহিত স্বৰ্গলাভে সমৰ্থ হওয়া যায়। ফাল্পনমাদের শুরুপকে মনোরথ দাদশীত্রত করিয়া, ভগবানের আরাধনা কবিবে। কেশবাদি ছাদশ নাম ছারা নাম ঘাদশালভ করিয়া, একবর্ষ ভগবানু নারায়ণের পদা করিলে, পধিণামে স্বৰ্গলাভ হয়, কথনও নরক গমন করিকে হয় না। ফাল্লুন মাদের শুক্ল-পক্ষে স্মৃতিদাদশীব্রত করিলে, স্মৃতি লাভ হয়। তংকালে এই বলিয়া ভগবানের আরাধনা করিবে, ८२ कृत्छ ! (इ अमछ ! ८२ वृद्धिनियुष्ठां ! जूबि আমাদের বৃদ্ধি প্রেরণ ও প্রদান করিয়াছ,ভোমাকে নম্বার। তুমি সকল বুদ্ধি নিয়মন করিয়া থাক, আমাকে স্তমতি প্রদান কর। তোমার প্রদাদে কথনো যেন আমার কুমতিঘটনা না হয়। আমি বেন সকলে সদ্বুদ্ধির অনুসারী হইয়া, সৎপথে বিচরণ করিয়া, সংপতি তোমার আরাধনা করি। আমার মতি যেন কদাপি তোমার প্রতি বিপ-রীত ভাব অবলম্বন না করে। তোমাকে নমস্কার। (ह (गाविम्म ! इ गिडियम ! इ गर्मम ! इ । ণদাধর! হে সর্বহর! তোমাকে বারবার নম-স্কার করি। ভূমি আমার হৃষতি বিধান কর বিধান কর। হে প্রাণপতি! তুমি আমাকে সদৃ-বুদ্ধি প্রদান কর্ তোনাকে নমস্কার।

ভাক্রমাদের শুরুপক্ষে অনস্তম্বাদশীত্রত করিলে, অশেষ ক্লেশ শান্তি হয়। আশ্লেষা নক্ষত্রে অথবা ম্লাসংজ্ঞান মাঘ মালে কুঞার নমঃ বলিরা, তিল সকলে হোম করিয়া,ভগবানের আরাধনা করিবে। ইহার নাম ভিল্পাদশীত্রত। ফাল্পন মালের শুল-পক্ষে, জয় কৃষ্ণ। ভোমাকে নমস্কার, তুমি অগ-ভির গভি, পভিতের পাবন, অনাথের নাথ, অস-হায়ের সহায, অবলের বল ও অনাশ্রায়ের আশ্রেয়, আমাকে স্থাভি প্রদান কর, এই বলিয়া ভগবানের আরাধনা করিবে। দাদশীতে এইপ্রকার করিলে স্থাভি লাভ হয, ভুক্তিমুক্তি সম্পন্ন হয় ও স্থাপি-বর্গপ্রাপ্তি হয়। ইহার নাম স্থাভিদাদশী।

পোষ শুক্লঘাদশীতে সম্প্রাপ্তিয়াদশী ত্রত করিবে। যে ব্যক্তি যথাবিধানে এই ত্রত করে. তাহার কোন বিষয়েরই অভাব হয় না। তৎকালে এই বলিয়া ভগবানের আরাধনা করিবে, হে অজ ! হে অনাদিনিধন। ভুমি আমার প্রতি প্রদন্ম হও। তোমার প্রদাদে যেন আমার দকলমুখসম্প্রাপ্তি হয়। আমি তোমাকে বারবার নমস্কার করি। তুমি লক্ষীপতি, বিদ্যাপতি ও সমুদায় ঐশ্বর্য্যের অধিপতি। অংমার যেন লক্ষী, বিদ্যা ও ঐশ্বর্য্য লাভ হয়। হে অব্যয় ! আমি যে চুছ্ণতি করি-য়াছি, তাহার যেন শান্তি বিধান হয়। আমি না জানিয়া যদি কোন ক্রটি করিয়া থাকি, ভোনার প্রসাদে সেই ক্রটি জন্ম কোন দোষ ধেন আপ-তিত না হয়। আমার এই ত্রত পূর্ণ হউক, আমার যাহা কামনা তাহা সিদ্ধ হউক, আমার প্রতিবেশি-গণেরও, আমার ব্যায়, সকল অভিলাম সম্পন্ন হউক, ইহাই আমার একমাত্র প্রার্থনা। আমি রণে, বনে, শক্রজলাগ্রিমধ্যে কথনও যেন অবসন্ধ না হই। আমার শত্রুপক বিন্ট ও মিত্রপক বৰ্দ্ধিত হউক এবং ধৰ্ম্ম,সত্য ও শান্তি সম্পন্ন হউক। আমার মন সংগণে প্রবৃত্ত হউক, আশর নির্মাল হউক, হৃদয়গ্রন্থি ছিল্ল হউক ও সকল সংশয় নিরা-কৃত হউক।

ইত্যায়েরে আলিমহাপুরাণে বিবিধবাদশীরত নামক অবোবিংশভাধিকশততম ক্ষধ্যার স্মাধ্য।

চতুরিংশত্যধিকশতত্য অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, আবণভাদশীত্রত কীর্ত্তন করিব।
ভাত্রমাদের সিতপকে আবণযুক্ত ভাদশী পরম
প্রশস্ত বলিয়া পরিগণিত। ঐ ভাদশীতে উপবাস
করিলে, ভাহার ফল অক্ষয় হইয়া থাকে। এমন
কি, নদীসক্ষমে স্নান করিলে, যে ফল, এই দ্বাদশীতেও সেই ফলপ্রাপ্তি হওয়া যায়।

বুধ ও প্রেবণযুক্তা ছাদশীতে দানাদি যে কোন কার্ষ্যের অনুষ্ঠান করা যায়, তাহাতেই মহা-ফল লাভ হইয়া থাকে। ত্রয়োদশীতে পারণ हहरलंड, अहे खरक করা নিষিদ্ধ করা বিধেয়; ভাহাতে কোনরূপ দোষস্পর্শ হয় নাঃ দাদশীতে নিরাহার থাকিয়া আমি বামনের পূজা, ত্রয়োদশীতে পারণ, শহুচক্র-ধারী বামনরূপী বিষ্ণুর আবাহন এবং ছত্র, পাছকা ও সিতবন্ত্রমুগাচ্ছাদিত ঘটে তাঁহার স্নানবিধি সমা-হিত ক্রিব, এইপ্রকার দংকল্ল করিয়া,পঞ্চায়তাদি-দহকুত নির্মাল জলে তাঁহাকে স্নান করাইয়া, এই বলিয়া পূজা করিবে, বামনকে নমস্কার, নম-স্কার। আমি ছত্ত্রদণ্ডমণ্ডিত বিষ্ণুকে প্রণাম করিয়া এই অর্হ্য দান করিতেছি। হে দেবদেবেশ! তুমি এই অর্থ্যাদিসহায়ে বিশেষরূপে পূজিত হইয়া, আমারে ভুক্তি, মুক্তি, প্রজা, কীর্ত্তি ও সর্বৈশ্বর্য্য-সম্পার কর। তোমার প্রদাদে আমার আয়ু,,, আরোগ্য ও হুথ দৌভাগ্য বর্দ্ধিত হউক। ওঁ

वासनरक नमकात। ७ जनमिनरक नमकात। ७ पृक्षिणर्डरक नमकात। ७ मधुमूननरक नमकात। ७ मधुमूननरक नमकात। ७ रक्षिस्थमरक नमकात। ७ जनमिरक नमकात। ७
जनमक्रमरक नमकात। ७ वाल्यरमवरक नमकात।
७ रमवरमवरक नमकात। ७ वाल्यरमवरक नमकात।
७ रमवरमवरक नमकात। ७ मर्व्यप्रिक नमकात।

অনন্তর ওঁ বাস্থদেবায় নমঃ বলিয়া, শিবপূজা कतिरव: श्रीधवाय नमः विनया मूथ, कृष्णाय नमः বলিয়া কণ্ঠ, জ্রীপতারে নমঃ বলিয়া বক্ষ, সর্কাত্র ধারিণে নমঃ বলিয়া ভুজ, ব্যাপকায় নমঃ বলিয়া নাভি, বামনায় নমঃ বলিয়া কটি, ত্রৈলোকাজয়-কাম নমঃ বলিয়া মেঢ়, হরুয়ে নমঃ বলিয়া জঙ্বা, मर्खाधिशठरम् नैमः विलया शानयूत्रल अवः मर्खाः আনে নমঃ বলিয়া গুল্ফদ্যের পূজা করিয়া, স্ত-পक, रेनरवना, नरभानन ও ঘটসমূহ প্রদান করিবে। রাত্তিতে জাগরণ ও প্রাতঃকালে সঙ্গম-সলিলে স্থান করিয়া পুষ্পাঞ্জলি হইয়া, গন্ধপুষ্পাদি সহায়ে পূজা করত এই প্রকার বলিবে, হে বুধ-শ্রেবণ-সংক্ষিত গোবিন্দ ! তোমাকে বারংবার নম-স্কার করি। ভূমি আমার সমুদায় পাপ তাপ নিরা-কুত করিয়া, আমার স্থ্যসম্পত্তি বিধান কর। হে দেবদেব! হে জনাৰ্দ্দন! আমার প্রতি প্রদন্ম বামন আমায় বুদ্ধি দান করেন, বামন আমায় সমস্ত প্রদান করেন, বামন আমার সকল দ্রব্যে বিরাজ করেন, বামন আমার প্রতিগ্রহ করেন এবং বামন জামায় দান করেন। বামন নিত্য আমার দ্রেষ্ হরেন। বামনকে নমস্কার, নমস্কার ৷

এই প্রকারে পূজা করিয়া,বিপ্রদিগকে দক্ষিণা-দানসহকারে ভোজন করাইয়া,স্বয়ং ভক্ষণ করিবে।

जनसङ धेरे विनिहा नकनाक विनाय निवि, ८१ দিজাতিগণ ৷ আপনারা দেবতারূপে পৃথিবীতে বিচরণ করেন। আপনারা বিফুশ্বরূপ। আমি যথাবিধি আপনাদের পূজা করিয়া, 'প্রার্থনা করি-তেছি, আমার গৃহে যেন নিত্য আপনাদের অধি-ষ্ঠান ও পদার্পণ হয়। আপনারা পুনরায় আগ-ভ সৈজি সংক্তিওঁ। মন জন্ম গমন কর্মন।

> ইত্যাথের মহাপ্রাণে শ্রবণরারণীরভ্নামত চতুৰিংশত।ধিকশঙ্ভম অধ্যয় স্মাপ্।

পঞ্চবিংশত্যধিকশতত্য অধ্যায়।

অগ্লি কহিলেন, যাহা দারা ব্রত সম্পূর্ণ হয়. সেই অথগুদাদশীত্রত কীর্ত্তন করিব।

মার্গণীষীয় শুক্লপক্ষের দাদশীতে সম্যক রূপে অন্শন পঞ্গব্য জলে স্নান ও পঞ্গব্য ভক্ষণ করিয়া, ভগবান্ বিফুর পূজা করিবে এবং ভ্রান্ধ-ণকে যুব ও ত্রীহিযুক্ত পাত্র প্রদান কবিবে।

আমি সপ্তজন্ম যে কিছু খণ্ডৱত করিয়াছি, হে ভগবন ! তোমার প্রসাদে তাহা আমার একণে অথও হউক। হে পুরুষোত্ম! ছুমিই যেমন এই সমস্ত অথওজগং, সেইরূপ আমার ব্রত সম-সুও অখণ্ড হউক।

প্রত্যেক মাদে এইরূপে বিষ্ণুর পূজা করিতে ছইবে। যে ব্যক্তি উক্ত প্রকারে বিষ্ণুর পূজা করে, তাহার আয়ু, আরোগ্য, সৌভাগ্য ও রাজ্য ভোগাদি প্রাপ্তি ইইয়া খাকে।

> ইভাবের আদিমহাপুরাণে অথওদাদনীবভনামক लक्षतिः महाधिकनहरूम व्यथाति मगाय ।

S4/2, Bearing Street. CALCULATION STREET. TENTISE TO SEE SALITY I

০অগ্নি কহিলেন, যাহা ছারা সমস্ত হইয়া থাকে, সেই ত্রয়োদশীব্রত সকল কীর্তন করিব। অনঙ্গ প্রথমে যাহাতে ত্রতাঁফুঁন্ঠান করিয়া-ছিলেন, দেই অনঙ্গত্রয়োদশী বর্ণন করিব।

মার্গনীর্ষের শুক্লপক্ষীয় তায়োদশীতে অনস ও মহাদেবের পূজা করিবে। রাত্তিতে তিলাকত-সমেত মৃত হোম করিয়া, মধুপান করিবে। পৌষ-মাদে চন্দনাশী ও কৃতাহুতি হইছা, যোগেশবের অর্চনা করিবে। মাঘমাদে মুক্তিকাম হইয়া, মহে-भारतत छेशामना कतिरम, अर्गनाच रहेशा थारक। ফাল্লনমানে কাকোল ও নীরপ্রাশন পূর্বক মহা-८मरवत পूजा कतिरव। टिख्यारम कपूर्वाभी स्हैग्रा, বিশ্বরূপের পূজা করিলে, সেভিগ্যাহখ সম্পন্ন হইয়া থাকে। বৈশাথে জাতাফলনাত্র ভক্ষণ করিয়া মহারূপের পূজা করিবে। জ্যৈছে লবঙ্গাদী হইয়া, প্রত্যাম্বের অর্চনা করিবে। আধাঢ়ে তিলজল পান করিয়া, উমাপতির পূজা করিবে। আবণে গঙ্গা-জলানী হইগা শূলপাণির পূজা করিবে। ভাক্ত-यात्म मत्नाकार स्का कविशा शक्र त्मा वक्री করিবে ৷ অধিনমাদে স্থর্ণবারি পান করিয়া, ত্রিদশপতি ইন্দ্রের উপাসনা করিবে। কার্ঠিকে মদনাশী হইয়া, বিখেশবের আরাধনা করিবে। বর্ষান্তে স্বর্ণের শিব নির্মাণ করিয়া, স্পাঞ্জদল স্বারা আচ্ছাদন পূৰ্বাক পূজা করিবে এবং বস্ত্ৰদান স্বারা অর্চনা করিয়া, প্রাহ্মণকে গো, শ্যা, ছত্ত, কল্প, পাতুকা ও রসভাজন প্রদান করিবে। শুক্লীয় ত্রগোদশীতে মদনকে শারণ 😕 সিন্দ্র দারা অশোকাখ্য নগ লিখন পূর্বক অবপূজা করিবে। ইহার নাম অনঙ্গত্রোদশী এত।

আত্রয় করিলে, কামফললাভ হইয়া এই ব্ৰত থাকে !

> रेजारश्रद्ध चामियहाशुरात्य ज्ञाहाम्यीत्रजनावक বভূবিংশভ্যধিকশভভম অধ্যার সমাপ্ত।

সপ্তবিংশত্যধিকশতত্ম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, ভূক্তিমুক্তিপ্রদায়ক চতুর্দশী-ব্রস্ত কীর্ত্তন করিব। কার্ত্তিকমাদের চতুর্দ্দশীতে নিরাহার হইয়া, শিবের উপাদনা করিবে। এক-বংসর এইরূপে শিবচতুর্দশী ব্রত করিলে, ভোগ, ধন ও আয়ুর রুদ্ধি হয়। মার্গশীর্বের সিতাইমী বা তৃতীয়াতে মুনিব্ৰত হইয়া, দ্বাদশী কিংবা চতু-ৰ্দশীতে ফলাহার করত দেবপূজা করিবে। ফল-চতুর্দশী করিয়া, ফল ত্যাগ করত স্বয়ং প্রাহ্মণ-দিগকে তাহা দান করিবে। উভয় পক্ষের চতু-র্দ্দশী ও অফীমাতে অনশন করিয়া শিবের পুজা করিলে, স্বর্গলাভ হইয়া থাকে। কুফপক্ষের অফমী ও চতুর্দশীতে রাজিযোগে মহাদেবের করিলে, ইহলোকে ভোগস্থ ও পরলোকে শুভ গতি প্রাপ্ত হওয়া যায়। কার্ত্তিকমানের কুষ্ণচতু-র্দশীতে স্থান করিয়া, ধ্বজাকৃতি ষষ্টিদয়হে মহে-ন্দের আরাধনা করিলে, লোকে স্থী হইয়া शादक।

অনস্তর শুক্লভুর্দশীতে কুশসমষ্টি দারা হরির প্রতিমা নির্মাণ করিয়া, শালিপ্রন্থে পূপপিউক প্রস্তুত করত অন্ধিক বোক্ষণকে দান ও অপরান্ধি আত্মাতে যোজনপুরঃসর সেই অনন্তের পূজা করিবে এবং এই প্রকারে তাঁহার স্তব করিবে হে বাস্থদেব ! দংশাররূপ মহায়মুদ্রের পার নাই।

ইহাতে মগ্র হইয়াছি, ভূমি ব্যতিরেকে থামাদের আর উদ্ধারের উপায় নাই। অতএব আমাদিগকের উদ্ধার করিয়া, স্বীয় অনস্তস্ক্রপে লইয়া যাও। ভুমি অনস্তরপী, তোসাকে বারংবার নমস্বার। হে মুকুন্দ! আমরা অনন্ত শোক ও অনন্ত ব্যাধিতে সর্বাই অভিভূত। তুমিই সামাদের একমাত্র গতি ও আশ্রয়। অতএব নিজগুণে করুণা করিয়া, অনাথ ও অসহায় আমাদের উদ্ধার করু উদ্ধার কর। ভূমি অনন্তরূপ, তোমাকে বার বার নম স্কার করি।

এই প্রকারে ভগবান্ অনন্তের পূজা করিয়া, সীয় করে বা কণ্ঠে মন্ত্রিত সূত্রে বন্ধন করিয়া, যে ব্যক্তি অনন্তত্তত করে, ভাহার অনন্ত মুখ সৌভাগ্য লাভ হইয়া থাকে।

ইতাংগ্রেম মহাপুরাণে চতুর্নশীবভনামক সপ্তবিংশতাধিক-শহতম অধ্যয়ে সমাধা।

অফবিংশত্যধিকশত্ত্য অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, শিবরাত্তি ব্রক্ত বলিব, প্রাবণ কর। উহা দারা ভুক্তি মুক্তি প্রাপ্তি হইয়া থাকে। মাঘ ও ফাব্ধনমাদের মধ্যে যে কৃঞা চতু-র্দ্দশী, তাহাতে রাত্রিজাগরণ উপবাদ করিয়া করিবে।

আমি চতুর্দশীতে অভোজন করিয়া, শিবরাত্রি ত্রত, রাত্রিজাগরণপুর:দর মহাচদবের পূজা এবং ভুক্তিমুক্তিপ্রদায়ক শস্তুকে আবাহন করিব। হে শিব ! তুমি নরকরূপ মহাসমুদ্র পার হইবার নৌকাস্থরূপ, ভোমাকে নমস্কার করি। তুমি শান্ত-স্বরূপ, অথিলম্বরূপ ও পূর্ণস্বরূপ। তোমার আরা-আমরা পুত্র পৌত্রাদির ভারে অবসম হইয়া, ^{ছি}ধনানা করিলে, প্রজাও রাজ্যাদি লাভ হয় না।

তোমাকে নমস্কার করি। হে মঙ্গলালয় মহেশ্বর! তুমি সোভাগ্য, ভাগ্য, আরোগ্য, বিদ্যা, অর্থ, স্বৰ্গ, অপবৰ্গ ও স্থুখনাৰ্গ বিধান করিয়া থাক। যাহারা তোমার ভক্ত ও অনুগত, তাহারা কথনও তুৰ্গতি বা ছঃস্থিতি হয় না। তোমার কটাক্ষ-বিক্ষেপে প্রলয়'উপস্থিত হইয়া থাকে। মৃত্যু ও মহামোহ দকাদা তোমার আজ্ঞাকারী এবং অমৃত ও অভয় ভোগার তুই হস্ত। তোমাকে নমস্কার করি। হে হর! হে বিশ্বস্তর! হে বিশ্বেশ্বর! হে শ্ৰিশেখন! হে গঞ্চাধর! হে মহেশ্ব! হে-ত্রিপুরদংহর! হে কৈলাস ভূধরনিলয়বর! ভূতগণেশ্বর! হে সন্ট্রসংহরকালমূর্ত্তিধর! আমারে সকল ভয়ে ও নকল বিপদে উদ্ধার কর, উদ্ধার কর। আমি বারবার তোমারে প্রণাম করিতেছি। তুমি আমান প্রতি প্রদার হও। হে শিব! হে মহাদেন! হে গৌরীপতে! আমাকে ধর্ম দাও, ধন দাও, কাম দাও, ভোগ দাও, গুণ দাও; কীৰ্ত্তি দাও, স্তুপ দাও, স্বৰ্গ দাও, অপবৰ্গ দাও এবং স্বীয় লোকে স্থান দাও।

প্ৰকে হুদ্দর্শন নামে এক ব্যাধ ছিল। দে প্রতিদিন শত শত প্রাণিহত্যা করিয়া, পাপজীবন যাপন করিত। দে এইরূপে যে মহাপাতক দংগ্রহ করে, ভাহাতে ভাহার ইহলোক ও পর-লোক উভয়লোকই বিনষ্ট হইয়াছিল। তাহার মুক্তির আশাও এককালেই দুর হইয়াছিল। সমু-দায় নরক তাহাকে পাইবার জন্য উন্মুখ হইয়া-ছিল। ভাছার স্বর্গের দার একবারেই রুদ্ধ হইয়া-ছিল। ধর্মাও সত্য তাহার নিকট হইতে দুরে পলায়মান হইয়াছিল এবং তজ্জন্য হুখ ও বীস্তিও তাহাকে পরিহার পূর্মেক লুকায়িত ইইয়াছিল। এই জন্য অহরহ অন্তর্গাহরূপ ছব্বিষহ দহনে রও স্বামী যেন তেমনি তাঁহার প্রদাদে মৃত্যুকে

তাহার অন্তরাত্মা দগ্ধ হইত। অবশেষে সে শিব-রাত্রি ব্রত করিয়া, পরম পুণ্যসঞ্য়পুরঃসর সকল শৌভাগ্য ও সকল তথ সম্পন্ন হইয়া, শিবলোকে গমন করে।

ইত্যায়েয়ে আদিমহাপুরাণে শিবরাতিত্রত নামক অষ্টবিংশ-ভাগিকশভভম অধায় স্মাপ্ত।

ঊনত্রিংশত্যধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, অশোকপূর্ণিমাত্রত কীর্ত্তন করিব। সৈতপক্ষীয় ফাল্লুনী মক্ষত্তে ভূমি ও ভূধ-রের পূজা করিবে। তাহা হইলে, ভুক্তি মুক্তি প্রাপ্ত হইবে। কার্ত্তিকীতে রুষোৎদর্গ করিয়া, নক্তবত করিলে, শৈবপদ প্রাপ্তি হইয়া থাকে। ইহার নাম র্যব্রত। পিতৃগণের অধিকৃত অমা-বদীতে পিতৃগণের উদ্দেশে দান করিলে, অক্ষয় হইয়া থাকে এবং উপবাদী থাকিয়া পিতৃগণের পূজা করিলে, দকল পাপ পরিহার ও ফর্গলোক হয়। মাঘমাদের পঞ্চশীতে অভপূজা করিলে, সকল সিদ্ধি সংঘটিত হয়।

জ্যৈষ্ঠমানের পঞ্চশীতে ব্টমূলে মহাস্তীর পূজা করিবে। তিনরাত্রি উপবাসী থাকিয়া, দপ্তধান্যসহায়ে ঐরপ পূজা করা বিধি। সাবিত্যৈ সভাবতে নমঃ বলিয়া ব্রাহ্মণকে নৈবেদা দান করিবে এবং প্রভাতে নৃত্য গীত সমাধানান্তে নিজ গৃহে গমন করিয়া, ব্রাহ্মণভোজনানন্তর স্বয়ং ভোজন পূর্বক এই বলিয়া সাবিত্রীর বিদর্জন করিবে,দেবী সাবিত্রী প্রীত হউন এবং পুনরাগমন জন্ম গমন করুন। তাঁহার প্রভাবে তাঁহার পতি ুযেমন মৃত্যুর হস্ত অতিক্রম করিয়াছিলেন, আমা-

অতিক্রম করেন এবং আমার যেন সৌভাগ্যাদি লাভ হয়।

> ইভাবেরে আদিমহাপুরবে তিথিবত নামক উন্তিংশতাধিকশততম অধ্যায় সমাধ।

ত্রিংশত্যধিকশতত্ম অধার।

অগ্নি কহিলেন, ভুক্তিমুক্তিজনক বারত্রত সকল কীর্ত্তন করিব। আদিত্য বারে আদ্ধ করিলে সপ্ত জন্ম দ্বোগ ভোগ করিতে হয় না। সূর্য্য বারে সংক্রান্তি হইলে, তাহাকে আদিত্যহন্দয় বলে। হস্তে সূর্য্যবার করিরা নক্ত ভৌজন করিলে, সর্বভোগী হওয়া বায়। বিশাখাতে বৃধবার করিলে, এহার্তিত্য:খভোগ করিতে হয় না। ইত্যাধের মহাপ্রাণেবারত্রতনানক কিংব-

ভাবিকশভম অধ্যায় সমাধা।

একব্রিংশত্যধিকশতত্ম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, নক্ষত্রত কীর্ত্তন করিছি।
নক্ষত্রে ভগবান্ হরির পূজা করিলে অভীক সিছি
হয়।

চৈশ্রেমানে নক্ষত্র পূরুষ হরির পূজা করিবে।

মূলনক্ষত্রে পাদ্বর, রোহিণী নক্ষত্রে জজ্মার্গল,
অধিনী নক্ষত্রে জাকুর্যা, আষাঢ়াতে উরুযুগল,
পূর্বেবাভরাতে নেত্র, কুভিকাতে কটি, ভাত্রপদাতে
পার্য, রেবতীতে কুক্ষি, জনুরাধাতে স্তন্বর, ধনিঠাতে পৃষ্ঠ, বিশাখাতে ভুজযুগল, পুনর্বস্থতে
অসুলি পংক্তি, অল্লেষাতে নথরাজি, জ্যেষ্ঠাতে
কঠা, শ্রবণাতে কর্ণসূগল, পুষ্যায় মুখ, স্বাভিতে
দন্তাত্র, বারুণীতে আস্থা, মঘাতে নাসা, মৃগণীর্বে

নেত্র, চিত্রাতে ললাট, আর্দ্রাতে কচ এবং অব্যাত্তি স্বর্ণময় হরির পূজা করিবে। গুড়পূর্ণ ঘটে অভ্যর্থনা করিয়া, শয্যা, গো ও অর্থানি দক্ষিণা দান প্রঃসর নক্ষত্রপুরুষ শিবাত্মক বিষ্ণুর পূজা করা কর্ত্তব্য ।

শান্তবায়নীয় ত্রত করিয়া, মাদ নক্ষত্রে হরির
পূজা করিবে। কার্তিকে কৃতিকায় ও মুগণীর্বে
মুগাস্থে অচ্যুতার নমঃ বা কেশবায় নমঃ, ইত্যাদি
প্রকারে নামমালা উচ্চারণ করিয়া ভগবানের উপাদনা করিবে। কার্তিকমাদে কৃত্তিকানক্ষত্রে মাদ
নক্ষত্রে হরির এই বলিয়া পূজা করিবে, আমি ভুক্তি
মুক্তি সিদ্ধির জন্ম শান্তবায়নীয় ত্রত করিব।
তক্ষন্য সর্বেদায়ক কেশবাদি মহামুর্তির আবাহান
করিতেছি। আয়ু, আরোগ্য, হুখ, সৌভাগ্য ও
সমুদ্ধি রৃদ্ধির নিমিত অচ্যুতের পূজা করিব। এই
বলিয়া ভগবানের পূজা করিবে।

কার্ত্তিকাদি মাসচত্তীয়ে সকাসার অন্ধ, ফান্তুণাদি মাসচত্তীয়ে কুশরাম ও আবাঢ়াদি মাসচত্উদ্ধে শাইসাম প্রদান করিয়া দেবপূজা ও প্রামাণাকরিয়া করিয়ে শিক্পব্য জলে স্নান ও তাহাই
ভক্ত করিয়া, উচি হইয়া, এই বলিয়া পূজা
করিবে:—

বিভাদি সকলা অকয় ও সন্তানসন্ততিও অবিনয়র ইউক। হে অনন্ত! আমার প্রতিবেশিগণও তোমার প্রসাদে ও অকুকম্পায় অকয়সমূদ্ধি-সম্পদ্ধ হউক। হে পরাত্মন্। তুমি যেমন অচ্যত এবং পর হইতেও পর ও পরমন্ত্রক্ষস্ত্রস্প, সেইদ্ধপ আমার বাঞ্চিত অচ্যত করিয়া, আমাকে স্থীয়

পরাৎপরস্বরূপ পরত্রহ্মস্বরূপে লীন করে। হে অপ্রমেয়! আমি যে পাপ করিয়াছি, তাহা জ্ঞান-কৃত বা অজ্ঞানজনিত, যাহাই হউক, হরণ করিয়া, আমারে মুক্তি দান কর। হে অচ্যুত, হে আনন্দ ! **८ र शांविष्म ! श्रम इंड । ८ व्याम श्रम् ! ८ र** পুরুষোত্তম ! আমি যাহা বাঞ্ছা করিয়াছি, তাহা অক্যু ভাবে পরিণত কর।

এই রূপে সপ্তবর্ষ পূজা করিলে, ভূক্তি মৃক্তি লাভ হইয়া থাকে, তাহাতে কিছুমাত্ৰ সন্দেহ নাই। অতএব সর্বান্তঃকরণে উল্লিখিত বিধানে ভগবানের পূজা করিবে।

অধুনা, নক্ষত্ৰতে খনন্ত ব্ৰত বিধি কীৰ্ত্তন করিব। এই ব্রত করিলে, অভীষ্ট সিদ্ধি হয়। मार्गभीर्स मुगमिरत शामुख भान कतिया जगवान् অন তরপী হরির পূজা করিবে: পূজা করিলে, ভগবানের প্রসাদে অনন্ত ফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে. ইহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। তৎকালে এই-প্রকার কলিতে হইবে, ভগবান্ খনগুই সমন্ত কামনার অনন্ত ফল। আমি এইজনা তাঁহার প্রদান করুন।

এই রূপে পৃত্দ किएन, नाराश्राम्ब क्षानात অনন্ত ফল লাভ হীৱা থাকে 🖟 🐗 মহাত্ৰত অনন্ত পুণা ইছি সাধন কৰে কৰে বে-রূপ কামনা করে, তাহার ভাহা করিয়া থাকে। পাদাদি পূজা করিয়া, রাত্রিতে তৈলহীন ভোজন করিয়া, মাদচতুষ্টয় হোম করিবে। তমধ্য চৈতাদি চারিমাদ শালিছোম ও ত্যাবণাদি চারিমাস পরোহোম করিবে। এই-রূপ প্রথিত আছে যে, রাজা যুবনাখের পুত্র হয় নাই। তজ্জন্য তিনি ব্যানক যজ্ঞ করেন। তাহা-

তেও उाँहात অভিলাষ मिक्क इस नाहै। अवरभरव ভগবান্ অনস্তের উদ্দেশে ব্রক্ত করিয়া, তিনি স্কপ্র-দিদ্ধ পুত্র প্রাপ্ত হয়েন। ঐ পুত্রের নাম মান্ধাতা। ভুবনবিখ্যাতবলবীৰ্য্যবশোধৰ্মসভ্যসম্পন্ধ মহাভাগ মান্ধাতা এইরূপে দাকাৎ অনন্ত ব্রতের क्ता।

ইত্যাধের মহাপুরাণে নক্ষত্রভনামক একতিংশভাধিক-শততম অধায়ে সমাপ্ত ৷

দাত্রিংশত্যধিকশততম অধ্যায়।

॰ অগ্নি কহিলেন, দিবসত্রত কীর্ত্তন করিব। প্র-থমে ধেমুত্রত বলিতেছি, প্রবণ কর। যে ব্যক্তি প্রভূত কনকযুক্ত উভয়মুখী ধেমু দান ও পয়ো-মাত্র ভক্ষণ করিয়া, দিবস যাপন করে, তাহার পরম পদ প্রাপ্তি হইয়া থাকে। তিন দিন পয়ো-ত্রত করিয়া, কাঞ্চনকল্প পাদপ দান করিলে, ত্রন্ধা-পদ লাভ হয়। ইহার নাম কল্পবৃক্ষত্রত। বিংশ-পলাধিক স্থবর্ণের পৃথিবী করিয়া দান ও একদিন আরাধনা করিতেছি। তির্বিশীনির অসম কর্মীশরোত্রত করিলে, চরমে রুমুপদে আরোহণ 🚉 ইয়া থাকে। পক্ষে পক্ষে ত্রিরাত্র একভক্তে যাপন করিলে, বিপুল ধনলাভ হয়। ইহার নাম ত্রিরাত্তি ব্রত। মাসে মাসে ত্রিরাত্ত একভক্তে অতিবাহিত করিলে, গণেশত্বা প্রাপ্তি হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি জনার্দনের উদ্দেশে এইরপে তিরাত ব্রত করে, সে শতকুলসমভিব্যাহারে অধিরত হয়। মার্গশীর্ষীয় শুক্লপকে নবনীতে যথাবিধানে ত্রিরাত্র ব্রস্তে প্রবৃত্ত হইবে। ওঁ নমো বাফ্রদেবায় বলিয়া সহজ্র বা শত জপ করিবে। অফুমীতে একভক্তাশী হুইয়া, দিনত্র্য অনশন করিবে। কার্ত্তিক মাদের ছাদশীতে ব্রত করিয়া,

বিষ্ণুর পূজা করিবে এবং ত্রাহ্মণভোজনানন্তর তাহাদিগকে শয়ন, আদন, বদন, ছত্র, উপবীত ও পাত্র দান করিয়া, তাঁহাদের নিকট এই প্রকার প্রার্থনা করিবে, হে ছিজাতিগণ! এই ব্রত নিতান্ত ভুক্ষর। অতএব যদি কোনরূপে ইহাতে অঙ্গ হানি হইয়া থাকে, তাহা হইলে আপনাদের অনুত্রাহু যাহে তাহা যেন আমার পরিপূর্ণ হয়। আমি আপনাদের অনুত্রানুসারে ইহাতে প্রর্ত্ত হইয়াছি। এইরূপে ত্রিরাত্র ব্রত করিলে, দর্ববিকার ভোগ সম্ভোগ করিয়া, পরিণামে বিষ্ণুলোক লাভ হইয়া থাকে।

ভুক্তিমুক্তিজনক কার্ত্তিকবৃত কীর্ত্তন করিব, কার্ত্তিকমানের দিতপক্ষে দশমীতে পঞ্গব্যাশী ও একাদশীতে উপবাদী থাকিয়া, বিফুর অভ্যৰ্কনা করিলে, দেববিমানে গমন করিতে পারা যায়। চৈত্রমাদে ত্রিরাত্র নক্তাশী হইয়া, অজ্ঞাপঞ্চ প্রদান করিলে, পরম স্থমম্পন্ন হইয়া থাকে। কার্ত্তিক মাদের শুক্লপক্ষীয় ষষ্ঠ্যাদি ত্রিরাত্র তুগ্ধমাত্র পান ও তিন দিন অনশন করিবে। ইহার নাম কুচ্ছ-মাহেন্দ্রত। কার্ত্তিক মাসীয় একাদশীতে পঞ্চরাত্র পয়ঃপান, দধি আহার ও উপবাস করিয়া, বিষ্ণুর পুজা করিবে। ইহার নাম দর্কাভীক্টজনক ভান্ধর। দিতপদ্ধীয় পঞ্চম্যাদিতে যবাগু, যাবক, শাক, দধি, ক্ষীর, মৃত ও পান করিবে। নাম কৃচ্ছাশান্তপন। এই কুচ্ছাশান্তপন করিলে, সকল কুচ্ছু দূর ও পরম শান্তি লাভ হইয়া থাকে। সর্বান্তঃকরণে ইহার অনুষ্ঠান করিবে।

ইত্যালেয়ে আদিমহাপুৰাণে দিবসব্তনামক বাজিংশ ত্যানকশভ্তম অধ্যায় সমাপ্ত।

বয়স্ত্রিংশত্যধিশততম অধ্যায়।

কহিলেন, ভুক্তিমুক্তপ্রদায়ক মাসবুত কীর্ত্তন করিব। আষাঢ়াদি মাসচতুষ্টয়ে ধীমান্ ব্যক্তি অভ্যঙ্গবর্জন করিবেন। বৈশাথে পুষ্পা-ভরণ ত্যাগ করিয়া, গোদান করিলে, রাজা হওয়া যায়। ভামবৃতাতুঠানপূর্বক মাদোপবাদদী হইয়া, গোদান করিলে, হরিসাযুজ্য লাভ হইয়া থাকে। আশাঢ়াদি চতুর্মাদে প্রাতঃমান করিলে, বিষ্ণু-লোকে গমন করিতে পারে। মাঘ কিংবা চৈত্র মাদে গুড়ধেকু প্রদান করিবে ততীয়াতে গুড-বুত করিলে, গৌরীখরস্বরূপ লাভ হইয়া থাকে। মার্গশীর্ঘাদিমাদে নক্তব্ত করিলে, বিষ্ণুলোক প্রাপ্তি হয়; ফলবৃতে প্রবৃত্ত হইয়া, চতুর্মাস ফল ত্যাগ করিয়া, বাহ্মণদিগকে ফল দান করিবে। আবেণাদি চতুর্মাসত্রতসকল বিধান করিলে, সর্ব-সিদ্ধি সম্পন্ন হইয়া থাকে। আধানুমাদের দিত-পক্ষে একাদশীতে উঞ্বাস করিলে, পরম অভীষ্ট সিদ্ধি হয়। আগাঢ়ী সংক্রান্তিতে কর্কটসংক্রমে চাতুর্মাস্থ বৃত সকলের পরিকল্না করিয়া, হরির উপাদনা করিবে।

হে দেব। আমি আপনার সমুখে এই বুত গ্রহণ করিলাম। আপনার প্রসাদে নির্কিল্লে ইহা দিদ্ধি প্রাপ্ত হউক। হে দেব। এই বুত গ্রহণ করিলাম। হে জনার্দিন। ইহা উদ্যাপন না করিয়া যদি মরিরা ঘাই, তাহা হইলে, তোমার প্রসাদে যেন ইহা সম্পূর্ণ হয়। এই বলিয়া ভগবানের উপাসনানন্তর বৃত্ত গ্রহণ করিবে।

একান্তর উপবাদ, মাংসবর্জন ও কৈল ত্যাগ করিয়া ত্রিরাত্র বিষ্ণুর উপাদনা করিবে। তাহা ছইলে বিষ্ণুলোক লাভে সমর্থ হইবে। চান্দ্রায়ণ করিলে বিফুলোক, মৌনত্তত অবলম্বন করিলে,
মুক্তি এবং প্রাজাপত্য ত্রতে প্রস্তুত হইয়া, শক্তবুযাবক ভক্ষণ করিলে, স্বর্গলোকপ্রাপ্তি হইয়া
থাকে। পঞ্চাব্য, জল ও ছয়াদি আহার করিয়া,
বিষ্ণুর উপাসনা করিলে, স্বর্গলাভ হয়। শাক,
মূল ও ফলাহারী হইয়া, ভগবানের উদ্দেশে বুত
করিলে, বিষ্ণুলোক লাভ হইয়া থাকে। মাংসবর্জন,যবাহরণ ও রসবিসর্জ্জন বুত করিলে, চরমে
হরিকে প্রাপ্ত হওয়া যায়।

কৌমূদ ব্ৰত বলিব, আবণ কর। আখিনমাদের ছাদশীতে অনশন পূর্বক পদ্মোৎপলাদি
ছারা প্রলিপ্ত করিয়া বিষ্ণুর পূজা করিবে। স্থত,
তিলতৈল ও প্রদীপস্নেত নৈবেদ্য অর্পণ করিয়া,
ওঁনম: বাহ্নদেবায়, বলিয়া মালতীমাল্যে পূজা
করিবে। এইরূপে কৌমুদ্বুত করিলে, ধর্মা,
কাম, অর্থ ও মোক্ষ লাভ হইয়া থাকে, তাহাতে
সন্দেহ নাই।

মাদে মাদে বৃত করিয়া উপবান্ হরির অর্চনা করিলে, সর্কিদিদ্ধি সম্পন্ন হইরা থাকে। মাদোপবাস বৃতে এই বলিয়া নারায়ণের উপাসনা করিবে, হে দেব! হে জনার্দন! হে অজিত! তোমার প্রসাদে আমার বৃত নির্কিন্দে সম্পন্ন হউক; ভূমি অগতির গতি। মাহারা তোমার ভক্ত ও তোমা-তেই সংসক্তচিত্ত, তাহাদের কোন অভাবই অসম্পূর্ণ থাকে না। ইন্দ্রাদি দেবগণও তাহাদের প্রভু হইতে পারে না। তাহারা কালকেও অতিক্রম করিয়া থাকে। হে অনাদে! হে আদিদেব! ঘদি এই ব্রতে কোন রূপে কোন অঙ্গহানি হইয়া থাকে; নিজ মহিমায় তাহা পূরণ করিয়া দাও। আমি একমাত্র তোমারই ভক্ত ও অনুরক্ত; আমার প্রতি প্রসন্ন হও।

চতুব্রিংশদধিক শততন অধ্যার।

ু অগ্নি কহিলেন, ভুক্তিমুক্তিপ্রদ ঋতুত্রতসকল কীর্ত্তন করি, প্রবণ কর।

যে ব্যক্তি বর্ষাদি চারিমাস ইন্ধন প্রদান করে,
সে অগ্রিব্রতী ব্রাহ্মণ হইয়া, জন্ম গ্রহণ করে।
মাসান্তে মৌনী হইয়া, সন্ধ্যাসময়ে হৃতকুম্ভ এবং
ভিল, ঘণ্টা ও বন্ধদান করিলে, হৃথী হইয়া থাকে।
ইহার নাম সারস্বতব্রত। এই ব্রত করিয়া, পঞ্চামৃত দ্বারা স্থান করত ধেমু দান করিলে, রাজা
হওয়া যায়। চৈত্রমাদের একাদশীতে নক্তাশী
হইয়া, হেময়য় ভক্ত নিবেদন করিলে, বিষ্ণুপদ
প্রাপ্তি হয়। ইহার নাম বিষ্ণুসদ্ব্রত। পারস
ভক্ষণ ও গোযুগ দান করিয়া, পিতৃগণ ও দেবগণকে নিবেদন পূর্ব্বক স্বয়ং ভক্ষণ করিলে, প্রী ও
রাজপদ প্রাপ্তি হয়। ইহার নাম দেবীব্রত।

বর্ষত্রত সকল কীর্ত্তন করিয়াছি। অধুনা, দংক্রান্তিত্রত কীর্ত্তন করিব। সংক্রান্তিতে রাত্রি জাগরণ করিলে, স্বর্গলোক লাভ হয়। অমাবস্থাযুক্ত সংক্রান্তিতে শিব ও সূর্য্যের পূজা করিলে, দেবলোক প্রাপ্তি হইয়া থাকে। তৃতীয়া ও অইমীতে উমাত্রত করিয়া, গৌরী ও মহেশরের পূজা করিলে, জ্রীলোকের শ্রী ও সোভাগ্য লাভ হয়। মূলত্রত ও উমেশত্রত করিয়া, উমা ও মহেশরের পূজা করিলে, অবিয়োগাদি প্রাপ্তি হইয়া থাকে। যে স্ত্রী সূর্য্যের প্রতি ভক্তিসম্পন্ধা, সে নিশ্চয়ই পুরুষ হইয়া থাকে।

ইত্যাল্লের আদিমহাপুরাণে নানার্তনাম্ক চতুলিংশ-দ্ধিকশত্তম অধ্যায় সুমাধ্য।

পঞ্জিংশদ্ধিকশততম অধ্যায়।

অমি কহিলেন, ভুক্তিমুক্তিপ্রদায়ক দীপদানব্রক্ত বলিব। একবংসর দেব ও দ্বিজাতি গৃহে
দীপদান করিলে, সর্কাসিদ্ধি লাভ হয়। চভুর্মাস
ঐক্ধপ করিলে, বিফুলোক প্রাপ্তি হয় এবং কর্ত্তিক
মাসে দীপদান করিলে, স্বর্গলোক লাভ হইয়া
খাকে। ফলতঃ, দীপদান অপেকা শ্রেষ্ঠ ব্রত নাই,
হয় নাই এবং হইবেও না। দীপদান করিলে,
আয়ুম্মান, লক্ষ্মীমান, পুক্রপৌক্রাদিমান্ ও সৌভাগ্যবান্ এবং স্বর্গলোকপ্রাপ্তি হয়। বিদর্ভরাজত্বতা
ললিতা দীপ দান করিয়া, আত্মভাগিনী হইয়াছিলেন। ললিতার একশত সপত্নী ছিল। তিনি
বিফুগৃহে সহস্র দাপ দান করিয়া, তাহাদের সকলের শ্রেষ্ঠ হইয়াছিলেন। রাজা তাঁহাকে প্রধান
মহিষীপদ প্রদান করেন।

দপত্নীগণ দীপদানমাহাত্য জিজ্ঞাদা করিলে, তিনি তাহাদিগকে বলিয়াছিলেন, পূর্বেব দৌবীর-রাজের পুরোহিত মৈত্রের মংকর্তৃক প্রেরিত হৈয়া, আপনার যজমানের বিনির্মাত দেবিকাতিই বিষ্ণুনন্দিরে কার্ত্তিকমাদে দীপদান করিয়াছিলেন। ভয়বশতঃ মাজ্জারের মুখপ্রান্ত হইতে পলায়মানা মূদিকা কর্তৃক তৎক্ষণাৎ ঐ প্রজ্ঞানত প্রদীপ নিকাণ হইয়া যায়। তজ্জ্যু রাজতনয়ার মৃত্যু সংঘটিত হইয়াছিল। সে যাহাইউক, আমি যে বিষ্ণুমন্দিরে প্রদীপ দিবার জন্ম পুরোহিতকে অসংকল্লিত প্রেণ করিয়াছিলাম, তাহারই ফল এক্ষণে ভোগ করিতেছি। আমি জাতিস্মরা হইয়া জন্মিয়াছি। সেইজন্মই প্রতিদিন ভক্তিপ্রক প্রদীপ দকল দান করিয়া থাকি। একা-দ্নীতে দীপ দান করিলে,বিমানে আরোহণকরিয়া,

স্বৰ্গস্থ ভোগ করিতে পারা যায়। দীপ হরণ করিলে, পরজন্মে মূক বা জড় হইতে হয় এবং দেহাত্তে চুম্পার অন্ধতমোনামক নরকে হইয়া থাকে। সেই নরকে পতিত ও শুরুতর প্রহারে আহত হইয়া, চীৎকার করিতে আরম্ভ করিলে, যমকিল্লরেরা তাহাদিগকে বলিয়া থাকে, ভোমাদের বিলাপ করিবার ফল কি ? নরকে বিলাপ করিবার প্রয়োজন নাই। ফল অবশ্যই ভোগ করিতে হয়। তোমরা বহু-যোনি ভ্রমণ করিয়া, সমুষ্যজন্ম প্রাপ্ত হইয়াছ, কিন্ত প্রমত হইয়া তাহা উপেক্ষা করিয়াছ। তোমরা দেমন অজ্ঞানপ্রযুক্ত বিষয়াস্বাদ করিয়াছ, দেই ফলে নরকে আসিয়া ক্রন্দন করিতে **হ**ই-তেছে। তোমরা প্রীতির জন্ম পরস্ত্রীর কুচমর্দন করিয়াছ; সেই পাপেই তোমানের ঈদুশ ছঃথ উপস্থিত হট্য়াছে। মুহূর্ত্তকাল বিষয়াস্বাদ করি-লেও, অনেককোটি অব্দ নরক ভোগ করিতে পরস্ত্রীর মন হরণজ্ঞ তোমরা দিবারাত্র গান করিয়াও, পরিস্রান্ত হও নাই। সেই সকল মনে কর ৷ রুথা কেন বিলাপ করিতেছ ? ভগ-বান্ বাহ্নেবের নাম করিতেও তোমাদের কি অতিমাত্র ভারবোধ ইইরাছিল 📍 তোমরা ভুলেও যেমন তাঁখার নাম কর নাই, তেখনি এখন বিলাপ করিতে হইতেছে। স্বল্লমূল্য বর্ত্তিতেও সচরাচর অগ্নি প্রাপ্ত হওয়া যায়। তোমরা তদ্দানেও অশক্ত হইয়া, হরির দীপ হরণ করিয়াছিলে। তজ্জ্ভা এই তুঃখ উপস্থিত হইয়াছে। এখন আর বিলাপ করিলে কি হইবে ? যাহা ঘটিয়াছে, তাহা সহ কর।

অগ্নি কহিলেন, ললিতার এই কথা শুনিয়া তাহারা দীপ দান করিয়া, সকলেই স্বর্গে গ্রুন করিল। অতএব দীপ দান করিলে, দমস্ত ব্রক্ত অপেকা অধিক ফলপ্রাপ্তি হইয়া থাকে।

> ইতাাগ্রেয়ে আদিমহাপুরাণে দীপদানব্রতনামক পঞ্জিংশদ্ধিকশত্তম অধ্যয়ে সমাপু।

ষট্ ত্রিংশদধিকশততম অধার।

অগ্নি কহিলেন, নবৰাহাৰ্চন কীৰ্ত্তন করিব।
ভগবান্ হরি নারদকে ইহা উপদেশ করেন। মণ্ডল
পদ্মে মধ্যভাগে অবীজ বাসদেব ও আবীজ সম্বর্ধণ,
দক্ষিণে প্রত্যায়, নৈখাতে অনিক্রদ্ধ, বারুণে ওঁস্বরূপ নারায়ণ, বায়বো তৎসৎ ব্রহ্মা, ত্পররপ
বিষ্ণু, ক্ষোণস্বরূপ নৃদিংহ, উত্তরে বরাহ, পশ্চিমে
ক ট দ শ স্বরূপ গরুত্বান্, দক্ষিণে ফট্ বলিয়া
দ ছ ব ভ্সরূপ পূর্ববিক্ত্র, খ ঢ ফ ও শ স্বরূপ গদা,
ব ণ ন ও ফ স্বরূপ কোণেশ ও ঘ দ ভ ও হ
স্বরূপ প্রীর অন্তনা করিবে। অনন্তর উত্তরে পুষ্টির,
পশ্চিমে বন্মালার ও শ্রীবিৎসের পূজা করিবে।

হৃদয়মধ্যে ভগবান্ বাহ্নদেবের পূজা করাকে অনিশাল্য পূজা বলে। আর, মঞ্লাদিতে যে পূজা, তাহার নাম দনিশাল্য। শিদ্যগণ বন্ধনেত্র হইয়া, যে মূর্ত্তিতে পূজ্পক্ষেপ করিবে, তাহার নাম করিতে হইবে। শিষ্যকে বামপাথে উপবেশন করাইয়া, তিল, ত্রাহি ও য়তহোম করিবে। কায়-শুনির জন্ম অফোতর শত হোম করিয়া, ধন দারা গুরুর পূজা করিবে। তৎকালে এই বলিয়া বিফুর স্তব করিবে,—

হে ভগবন্! তুমি দিন ও রাত্রিস্করপ, অন্ধন কার ও আলোকস্বরূপ; মৃত্যু ও অয়তস্বরূপ; রজঃ ও তমস্বরূপ; সৃষ্টি ও প্রলয়স্বরূপ। তোমার মহিমার পার নাই। তুমি অনন্ত, বাস্তদেব, পূর্ণা- নন্দ, মহাপুরুষ, মহাদেব, মহেশ্বর, পুরুষোত্ম, পরাৎপর, পরমাত্মা, পরমেশ্বর, পরমপিতা, পরম-মাতা, পরমকারণ ও পরমকার্য। তুমি আদিদেব, দেবাদিদেব, আদিকারণ, আদিকর্ত্তা ও আদি-বরাহ। তুমি যজ্ঞ, যজ্ঞা, যজনীয় ও সর্বদেবময়। তোমার পূজা করিলে, সকল দেবতার পূজা করা হয়।

ইতাংগ্রেষে মহাপুরাণে নবব্যেস্চিন নামক হট্জিংশ-দ্ধিকশতভ্য অধায়ে স্থাপ্ত ।

সপ্তত্ৰংশদধিকশতত্ম অধ্যায়।

অগ্লি কহিলেন, ভগবান্ হরি পুষ্প, গন্ধ, ধুপ, দীপ ও নৈবেদ্য দারা সম্ভক্ট হইয়া থাকেন। অত-এব যে যে পুষ্প দেবতাকে দেওয়া যাইতে পারে, ও না পারে, তংদমস্ত কীর্ত্ন করিব। মাল্ডী অতি প্রশস্ত পূষ্প। তমাল দান করিলে, ভুক্তি মৃক্তি প্রাপ্তি হয়। মল্লিকাদানে সর্বাপাপ বিনষ্ট হয়। যুথিকাদানে বিফুলোক লাভ হয়। অতি-মুঞ্জদানেও ঐরপ হয়। পাটলদানেও বিষ্ণুলোক প্রাপ্তি হয়। করবীরদানেও তদ্বৎ ফললাভ হয়। জবাপুষ্প প্রদান করিলে, অংশন পুণ্য দঞ্চিত হয়। পাবন্তী, কুজ ও তগরদানে বিফুলোকপ্রাপ্তি হয়। কর্ণিকার প্রদান করিলেও, তদ্বৎ ফল লাভ হয়। কুরুগ দানে পাপবিমাশ হয়। পদা, কেতক ও কুন্দপ্তপ প্রদান করিলে, প্রমগতি প্রাপ্তি হয়। বাণপুষ্প ও কৃষ্ণবর্করা দান করিলে, হরিলোক-গতি হয়। অশোক ও তিলক দানেও তদ্বং হয়। বিল্পতা দানে মুক্তি ও শমীপত্তে পরা গতি লাভ হয়। ভৃত্তরাজ ও তমাল দান করিলে, বিষ্ণুলোক প্রাপ্তি হয়। কৃষ্ণগৌরাখ্যা তুলদী, কহলার, উৎ-

পল, পল, কোকনদ, শতাজমালা, নীপ, অর্জ্বন, কদল, সুগন্ধি বকুল, কিংশুক, মুনিপুষ্প, গোকর্ণ, দন্ধ্যাপুষ্প, বিল্পত্র, রঞ্জনীপত্র, কুমাগুতিমিরপত্র, কুশ কাশ ও শরপত্র এবং মন্যান্য স্থান্ধ পত্র প্রদান করিলেও, দেবদেব ভগবান্ ভূট, ভূক্তি-মুক্তি সংঘটিত এবং সমস্ত পাপ প্রণষ্ট হইয়া থাকে। পুষ্প লক্ষ স্থা অপেক্ষাও প্রেষ্ঠ এবং মালা কোটিগুণে প্রেষ্ঠ। বিশীর্ণ, অধিকাঙ্গ বা মোটিত পুষ্পে হরির অর্চনা করিবে না। কাঞ্চনার-উন্মত্ত, গিরিকর্ণিকা, কুটজ, শাল্মলীয় ও শিরীষ পুষ্পে নরকাদি সংঘটিত হয়।

স্থান্ধ পদ্মে এক্ষার, নীলোৎপলে হরির এবং অর্ক, মন্দার ও ধৃস্তুর পুষ্পে হরের পূজা করা বিধি। কুটজ বা কর্কটী পুষ্প হরকে দেওয়া উচিত নহে।

অহিংদা, ইন্দ্রিয়জয়, ক্ষান্তি, জ্ঞান, দয়া, প্রত ইত্যাদি ভাবাই পুলে দেবগণের পূলা করিলে, ভুক্তিমুক্তিলাভ হইয়া থাকে। অহিংদা ইন্দ্রিয়নিগ্রহ, দয়া, শান্তি, দম, তপস্থা, ধ্যান ও দত্যা, এই অইবিধ পুলে হরির পূজা করিলে, তিনি সন্তুই হয়েন। হে মনুজোতম! এতঘ্যতীত বহুবিধ বাছপুল্পও আছে। দয়া ও ভিল্নিস্কার্নের পূজা করিলে, বিষ্ণু প্রদল্ল হয়েন। বারলণ পুল্প দলিল, দৌম্য পূল্প য়ত পয় ও দবি, প্রাজ্ঞানতা পুল্প অয়াদি, আয়েয় পূল্প ধূপ দীপ, বানন্দাত্য পুল্প ফলপুল্পাদি, পার্থিব পুল্প কুশমূলাদি বারবা পুল্প গ্রহদন ও বিষ্ণুপুল্প গ্রহ্মা, এই অইপুল্পিকা সর্ব্বথা প্রশন্ত।

ইড্যায়েরে মহাপ্রতে পুশাধ্যায়নায়ক দপ্ততিংগদ্ধিক-গশুভন অধ্যায় সমাপ্ত।

অফব্ৰিংশদধিকশততম অধ্যায়:

অমি কহিলেন, পুস্পালি ছারা বিষ্ণুর পূজা করিলে, কথনও নরকে যাইতে হয় না। একণে নরক সকল কীর্ত্তন করিব।

ইচ্ছা না থাকিলেও, লোকে আয়ুর শেষে প্রাণবিযুক্ত হইয়া থাকে। জল, অগ্নি, বিষ, শন্ত্র, কুধা, ব্যাধি, পর্বত হইতে পতন, ইত্যাদি কিঞ্চিন্মাত্র নিমিত্ত প্রাপ্ত হইলেই, দেহীর প্রাণবিয়োগ হইয়া থাকে। তথন দে স্বকর্মবংশ যাতনীয় অপর দেহ পরিপ্রহ করে। তন্মধ্যে পাপীর ছঃখ ও ধার্মিকের হংখ সংঘটিত হয়। সর্বপ্রাণীভয়ঙ্কর যমদ্তগণ পাপাত্মাকে কুপথে দক্ষিণ দ্বার দিয়া যমের নিকট লইয়া যায় এবং ধার্মিককে পশ্চিমাদি দ্বারে নীত করে। তন্মধ্যে পাপাত্মা যমের আজ্ঞায় নরক সকলে নিক্ষিপ্ত এবং ধর্মাত্মা স্বকীয় পুণ্য-প্রভাবে স্বর্গে সমানীত হয়েন।

গোহত্যা করিলে, মহাবীটী নরকে লক্ষ বংসর যন্ত্রণাভোগ হইয়া থাকে। অক্ষহত্যা ও ভূমি
হরণ করিলে, মহাদীপ্ত আমকুস্ত নরকে প্রলয়
পর্যান্ত যন্ত্রণা ভোগ করিতে হয়। স্ত্রী, বালক ও
বদ্ধ হত্যা করিলে, যাবং চতুর্দশ ইল্রের অধিকার
কাল রোরবে যাতনাপরস্পরা ভোগ হইয়া
থাকে। গৃহ ও ক্ষেত্রাদিতে অগ্নি দান করিলে,
মহাভয়ন্কর মহারোরবে এককল্প দন্ধ হইতে হয়।
চৌর্যান্ত্রি আত্রয় করিলে, তামিত্রনরকে পতিত
হইয়া, যমকিন্ধরগণের শূলাদির আঘাত অনেককল্প
সন্থ করিতে হয়। অনক্তর তথা হইতে মহাতামিত্র
নরকে পতিত হইলে, দর্প ও জলোকাদিরা দংশন
পূর্বক নিযন্ত্রিত করিয়া থাকে। মাতৃপিতৃহত্যা
করিলে, যাবদ্ভূমি অনিপত্রবনে অনির আঘাত

স্ফ্ করিতে হয়। যে ব্যক্তি কাহাকে দশ্ধ করে,দে করম্ভবালুকানরকে অনেককল তপ্ত বালুকাদিতে দগ্ধ হইয়া থাকে। একাকী মিষ্ট ভোজন করিলে, কুমি ও বিষ্ঠা ভক্ষণ করিয়া কাকোলনামক মহা-নরকে যন্ত্রণা ভোগ করিতে হয়। পঞ্চযজ্ঞীয় জিয়া পরিহার করিলে, কুটল নরকে মূত্র ও রক্ত পান করিয়া থাকে। অভক্ষ্য ভক্ষণ করিলে, স্বত্তু-র্গক্ষ নরকে রক্তভোজী হইয়া বাস করিতে হয়। প্রপীড়ন করিলে, তৈলপাকে তিলবৎ নিপীড়িত হইয়া থাকে। শরণাগত হত্যা করিলে, তৈলপাক নামক মহানরকে পচিতে হয়। রস বিক্রয় ও দাননাশ করিলে, নিরুচ্ছাদ পথে পতিত হইয়া, অনন্ত যাতনা ভোগ করিয়া থাকে। কথা কহিলে, বজ্রকপাটযুক্ত মহাপাত নরকে, পাপে বৃদ্ধি করিলে মহাত্মাল নামক নিরয়ে এবং অগম্য গ্রম করিলে, ক্রকচে পতিত ইইতে হয়। তথায় যে সকল যাতনা ভোগ হইয়া থাকে, তাহা স্থারণ করিলেও, শারীর রোমাঞ্চিত হয়। বর্ণসক্ষর করিলে, গুড়পাকে; পরমর্ম্ম পীড়ন করিলে, ক্ষার-গুহে: প্রাণিহত্যা করিলে, ক্লুরধারে; ভূমি হরণ করিলে, অন্বরীষে;গো ও স্বর্ণ হরণ এবং ক্রম-চেছদন করিলে, বজ্রশস্ত্রে: মধু হরণ করিলে, পরি-তাপে: পরস্ব অপহরণ করিলে,কালসুত্রে; অত্যন্ত মাংশাসা হইলে,কশালে; পিওদান না করিলে,উতা-গল্ধে: कांচ ভক্ষণ করিলে, তুর্দ্ধরে; বেদনিন্দা করিলে, মঞ্জুষে; কুটদাক্ষ্য প্রদান করিলে, পৃতি-বক্তে; ধন হরণ করিলে,পরিলুঠে; ব্রাহ্মণ পীড়ন कतिरल कतारल, मनुष्राम कतिरल विरल्ए अवर শুরুনিন্দা করিলে কুম্ভীপাকে পতিত হইতে হয়। পরস্ত্রী আক্রমণ করিলে, শাল্মলনরকে প্রজ্বলিত

নিরয়ে প্রস্থলিত লোহপুরুষকে আলিজন করিতে হয়। মাতৃপুত্র্যাদি গমন করিলে, অঙ্গাররাশিতে পতিত হইয়া থাকে। তথায় ক্লোরেরা ক্ষুর দারা বিদীপু করে এবং স্থীয় মাংস ভোজন করিয়া, অনস্ত যাতনা সহু করিতে হয়। যে ব্যক্তিমাসোপবাদ করে, দে কখনও নরক লাভ করে না। একাদশীব্রত ও ভীম্মপঞ্চক ব্রত করিলেও, নরকে পরিহার প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

ইত্যাগ্রেয়ে আদিমহাপুরাণে নরকল্পক্রপ বর্ণন নামক অইক্রিংশ-দ্ধিকশ্ভতম অধ্যায় স্মাপ্ত।

উনচত্বারিংশদধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, সর্ব্বোৎকৃষ্ট মাসোপবাদ ব্রন্ত কীর্ত্তন করিব।

বৈশ্বৰ যজ্ঞ সম্পাদন ও গুৱার অনুজ্ঞা গ্রহণ পূর্বক আপনার শক্তি বুঝিয়া, কুছুাদি দ্বারা মাসোপবাস ত্রত করিবে। হে মুনে! বানপ্রস্থান যতি অথবা বিধবা স্ত্রী আখিনমাসের অমলপক্ষে একাদশীতে উপবাস করিয়া, যাবৎ জিংশদিন এই ত্রত গ্রহণ করিবে।

চ্ছেদন করিলে, বজ্রশস্ত্রে; মধু হরণ করিলে, পরিতাপে; পরস্ব অপহরণ করিলে, কালসূত্রে; অত্যন্ত
নাংশাসা ইইলে,কশালে; পিওদান না করিলে,উগ্রগন্ধে; কাচ ভক্ষণ করিলে, ভূর্দ্ধরে; বেদনিন্দা
করিলে, মঞ্জুষে; কুটদাক্ষ্য প্রদান করিলে, পৃতিবক্তে; ধন হরণ করিলে,পরিলুপ্টে; ব্রাহ্মণ পীড়ন
করিলে করালে, মদ্যপান করিলে বিলেপে এবং
করিলে করিলে কুন্তীপাকে পতিত ইইতে হয়।
পরস্ত্রী আক্রমণ করিলে, শাল্মলনরকে প্রজ্বলিত
লোইনিলা এবং বহুপুক্ষরতা ইইলে, উল্লিখিত
তিহু বিষ্ণা ! অদ্য প্রভৃতি যাবৎ ভূমি উথান
না কর, তাবৎ ক্রিংশং দিন আমি অনশন করিয়া,
তেমার অর্চনা করিব। ভূমি পরমারাধ্য, পরম
প্রক্ষা। ভূমি মুক্তিদাতা বিধাতা। তোমার
অর্চনা করিলে, সকল অতীক্ত দিদ্ধ হয়, সকল
কামনা সফল হয়, সকল লোক লাভ হয় এবং
সকল অর্থ স্থানন হয়। ভূমি যাবৎ উত্থান না
কর, তাবৎ কার্তিক ও আখিন ওই তুই মাদের
অন্তরালে যদি আমি মরিয়া যাই, আমার যেন
লোইনিলা এবং বহুপুক্ষরতা ইইলে, উল্লেখিত

করিয়া, গদ্ধপুষ্প দারা তিনবার বিষ্ণুর পূজা করিবে এবং তাঁহার জপ, ধ্যান ও গীতাদি সমা-ধান করিবে।

ব্রতী ব্যক্তি র্থাবাদ পরিহার করিবে, অর্থাকাজ্যা বিসর্জন করিবে, দেবতায়তনে অবস্থান
করিবে; দেবকথা কীর্ত্তন করিবে, সাধুসঙ্গ আশ্রয়
করিবে, ব্রতহান ব্যক্তির স্পর্শত্যাগ করিবে এবং
বিকর্মস্থদিগের সহিত আলাপ বর্জন করিবে।
যাবৎ ত্রিংশংদিন এইপ্রকার করিবে। দ্বাদশীতে
পূজানস্তর দক্ষিণাদান সহকারে ব্রাহ্মণ ভোজন
করাইয়া, পারণ করিবে। এইপ্রকার অমুষ্ঠান
করিলে, ত্রয়োদশকল্প ভুক্তি মুক্তি প্রাপ্ত হওয়া
যায়।

ত্রতান্তে বৈশ্বব যক্ত সমাধান করিয়া তেরজন ত্রাহ্মণ ভোজন করাইবে এবং তাবৎসংখ্য বস্ত্র-যুগ্ম, ভাজন, আসন, ছত্ত্র, পবিত্রে, পাছকা, যোগ-পট্ট ও উপবীত প্রদান করিবে। এইপ্রকার অফুষ্ঠান করিলে, দিব্যবিমানে আরোহণ করিয়া, বিফুম্বরূপ ধারণ পূর্বক বিষ্ণুলোকে গমন করা যায় এবং শতকুলের উদ্ধার ও বৈকৃতি প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

যে দেশে মাসোপবাস ব্রতের অনুষ্ঠান হয়, সে দেশ'পবিত্র হইয়া থাকে, ব্রতীর কুল উন্ধার পাইবে, তাহাতে আর কথা কি ? ব্রতন্থ ব্যক্তির মূচ্ছা হইলে, ক্ষীর ও আজ্যপান করা ইবে। ব্যাক্ষাগণের অনুমতি অনুসারে এইপ্রকার করিলে, ব্রতহানি হয় না।

ইত্যাগ্রেরে আদিমহাপ্রাদে মানোপ্রাস্ত্রতন্মেক উন্চর্জা রিংশ্বধিকশ্তত্ম অধ্যায় সমধ্য ।

চন্থারিৎশদধিক শততম অধ্যায়।

অগ্রি কহিলেন, যাহার অনুষ্ঠান করিলে, সর্বা-সিদ্ধি সম্পন্ন হয় এবং যাহা সমুদায় ত্রতের রাজা, সেই ভাষ্মপঞ্চ কীর্ত্তন করি। কার্ত্তিকমাদের অমলপক্ষে একাদশী করিয়া, পাঁচদিন তিনবার স্নান ও মৌনাবলম্বনপূৰ্বক পঞ্চত্ৰীহি ও তিল সহায়ে বেদবিপ্রাদির তর্পণ ও ভগবান বাস্তদেবের পূজা করিবে। পঞ্চগব্য ও পঞ্চামৃত দারা বিষ্ণুর ম্বান ও চন্দ্রাদির ছারা সমালেপনপূর্বক হৃত সহিত গুগ্গুল দান করিবে। দিবারাত্রি দীপ ও পরমান্নক নৈবেদ্য প্রদান পূর্ব্বক, ওঁ নমো বাস্ত্-দেবায়, বলিয়া অস্টোতর শত জপ করিবে ৷ অন-স্তর স্বতাভ্যক্ত তিল ও ত্রীহি হোম করিয়া,স্বাহাকার সমেত ষড়ক্ষর মক্ত্রে প্রথম দিনে কমল দ্বারা বিষ্ণুর পাদযুগল, দ্বিতীয় দিনে বিল্পত্র দারা জারু ও সক্থি, তৃতীয় দিনে ভৃঙ্গরাজ ঘারা নাভি, চতুর্থ দিনে বাণ বিল্প ও জবাপুষ্পে এবং পঞ্চম দিনে মালতীকুস্থমে পূজা করিবে। দেববত পিতামছ ভীম এইপ্রকার অনুঠানানন্তর চরমে ভগবান হরিকে প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। তিনি তৎকালে এই বলিয়া ভাঁহার স্তব করিয়াছিলেন,-----

হে ভক্তবংশল ভগবন্! ভক্তের প্রতি তোমার স্নেহ প্রীতির সীমা নাই। তুমি যে কালে কালে অবতীর্ণ হও, ভক্তগণের স্থপাধন ও অভক্তের নিরাকরণই তাহার একমাত্র উদ্দেশ্য। আমি যেন জন্ম জন্ম তোমার ভক্ত হইতে পারি। হে প্রিয়! হে আজন্! হে ঈড্য! তুমি দর্বদা আমার হাদয়ে অবস্থান কর, দর্বদা আমার প্রাণে অবস্থান কর, দর্বদা আমার প্রাণে অবস্থান কর, দর্বদা আমার শারীরে অবস্থান কর, দর্বদা

আমার পাশ্বে, সন্মুখে, পৃঠে, উর্দ্ধে, মন্তকে, বাক্যে, দৃষ্টিতে ও শ্রুতিতে অবস্থান কর। আমি এই যে ত্রত করিতেছি, ইহা তোমারই প্রীতির জন্ম; তহ্যতীত আমার অক্স উদ্দেশ নাই। কেননা, তোমার প্রতিই সর্বস্থা। উহাতেই স্বর্গ, অপবর্গ, অর্থ, পরমার্থ, ভুক্তি, মুক্তি, ফলতঃ, সংসা-বের যাহা কিছু, তৎসমন্তই প্রতিষ্ঠিত। এইজন্ম আমি সকল দেশে, সকল কালে, সকল অবস্থাতিই তোমার ঐ প্রীতিমাত্র প্রার্থনা করি। বিভো! আমার এই ত্রত যেন সিদ্ধ হয়; যে উদ্দেশে ত্রত করিয়াছি, তাহা যেন সিদ্ধ হয় এবং আমি যদি ত্রত করিতে করিতে মরিয়া যাই, তাহা হইলে, ইহা যেন অপূর্ণ না হয়।

ইত্যায়েরে মহাপুরাণে জীয়পঞ্জ নামক চড়ারিংশ-দ্বিকশতভ্য অধ্যায় স্মাপু।

একচত্ববিংশদধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, অগস্ত্য দাক্ষাৎ ভগবান্ হরি।
তাঁহার অর্চনা করিলে, হরিকে প্রাপ্ত হওয়া যায়।
ভাস্কর কন্তারাশিতে গমন না করিলে, উপবাদ
করিয়া, তিন দিন ভাগত্রর প্রদানপুরঃদর অগস্ত্যের
পূজা ও অর্য্যদান করিবে এবং প্রদোষে ঘটমধ্যে
কাশপুপ্রময়ী মূর্ত্তি বিন্তস্ত ও রাত্রিতে দেই মূর্ত্তির
পূজা করিয়া, জাগরণ করিবে। তৎকালে এইরূপ
কহিবে, হে মুনিশার্দ্ল, তেজোরাশি, মহামতি
অগস্ত্যা স্বীয় পত্নীর সহিত আমার এই পূজা
গ্রহণ করুন। আপনি দাক্ষাৎ নারায়ণ। এই
বলিয়া আবাহনপূর্বক চন্দনাদি দ্বারা দম্যগ্রিধানে
পূজা করিবে এবং প্রাত্যকালে জলাশয়দ্মীপে
লইয়া গিয়া অর্য্য অর্পণপূর্বক এইপ্রকার কহিবে;

হে কাশকুস্মদল্লিভ! হে অগ্রিমারুতদন্তব! হে মিত্রাবরুণনন্দন! হে কুম্ভযোনে! ভোমাকে নম-ক্ষার করি। যিনি আতাপিকে ভক্ষণ, বাতাপিকে গলাধঃকরণ ও সমুদ্রশোষণ করিয়াছেন, সেই অগন্ত্য আমার সম্মুখীন হউন। আমি কায় মন কর্ম্মে অগস্ভ্যের নিকট প্রার্থনা ও পরলোক-কামনায় তাঁহার অর্চনা করিব। এই চন্দন দ্বীপা-ন্তরদমুংপন্ন, দেবগণের প্রিয় ও দমন্ত রক্ষের রাজা, ইহা প্রতিগ্রহ করুন। এই পুষ্পকলিকা ধর্মার্থকামমোক্ষের ভাজনিকা, সমস্তপাপবিনাশিকা এবং সৌভাগা, আরোগা ও লক্ষীদায়িকা, ইহা প্রতিগ্রহ করুন। হে দেব। এই ধূপ গ্রহণ করুন: আমার ভক্তি অচলা করুন। পরলোকে শুভগতি বিধান করুন। হে মুনিশ্রষ্ঠ ! আপনি সর্বকামফলপ্রদ। আপনার প্রসাদে দকল স্থাসিদ্ধ হয়। আমি এই বন্ত্র, ত্রীহি, ফল ও স্বর্ণমেত অর্ঘ্য দান করিলাম, গ্রহণ করুন, গ্রহণ করিয়া, আমার অভাষ্ট সাধন করুন। আমি যাহা মনে করিয়াছি, তৎসমস্ত আপনাকে জানাইব। আমি দলময় অর্ঘ্য দান করিব, হে মহামুনে! আপনি ভাষা **গ্ৰহণ কৰুন** |

হে অগন্ত পেরী লোপামুদ্রে ! তুমি পরমযশঃশালিনী, রাজনন্দিনী, মহাত্রতচারিণী ও দেবগণের
ঈশ্বরী । তোমাকে নমস্কার । আমার এই অর্ধ্য
গ্রহণ কর ;—এই বলিয়া, তাঁহাকে পঞ্চরত্বসমাযুক্ত, হেনরপাসমন্বিত, সপ্তধাশ্যপরিবৃত্ত ও
দ্ধিচন্দনদংযুত পাত্র দান করিবে।

প্রী ও শূদ্রজাতীয়েরা অগস্তাকে অবৈদিক অর্ঘ্য দান করিবে এবং এইপ্রকার কহিবে, হে অগস্তা! আপনি মুনিগণের শ্রেষ্ঠ, তেজের রাণি, এবং সমস্ত দান করিতে সমর্থ। আমার এই পূজা গ্রহণ করিয়া, শান্তির নিমিত্ত গমন করুন।

এই বলিয়া অগন্ত্যের উদ্দেশে ধান্য, ফল ও রস

ত্যাগ করিয়া, রোক্ষণদিগকে য়ত, পায়স ও
মোদকসমেত অমডোজন করাইবে এবং তাহাদিগকে গো, হিরণ্য ও বন্ত্রাদি দক্ষিণা দিবে।

অমন্তর মৃতপায়সযুক্ত পাত্র ছারা আচ্ছাদিত্যমুখ

হবর্ণসহিত সেই কৃত্ত ব্রাক্ষণসাৎ করিবে। সাত

বৎসর এইরূপ অর্য্য দান করিলে, সকলের সকল

অভীক দিম্ব হয় এবং স্ত্রীলোক এই ব্রত করিলে,
পুত্র, সোভাগ্য ও স্বামীস্থভগতা লাভ করে।

ইত্যায়েরে মহাপুরাণে অগন্তাঘাদাননামক একচ্ছারিংশ-দ্ধিক শত্তম অধ্যায় সমাধ্য।

দ্বাচন্বারিংশদ্ধিকশতভ্য অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, আশ্বিনমাদের শুক্লপকে আমার কথিত কৌমুদত্তত অনুষ্ঠান করিবে। একার্নশীতে উপবাদ করিয়া, একমাস হরির উপা-দনা করিবে। আশ্বিনমাদের শুকুপকে আমি একাহার ও হরির জপ করত একমাদ ভুক্তিযুক্তির জন্ম কোমুদ ভ্রত করিব। এইরূপ সংকল্পান্তে উপবাস করিয়া দ্বাদশীতে চন্দন, অগুরু ও কাশ্মীর দারা বিলেপনপূর্বক কমল, উৎপল, কহলার অথবা মালতীপুস্পদমেত তৈলপূর্ণ দীপদান-দহকারে মৌনী হইয়া, অহোরাত্ত হরির অর্চনা করিবে ৷ পায়স, অপুপ ও মোদকযুক্ত নৈবেদ্য দিবে এবং নমো ৰাস্তদেৰায় বলিয়া ক্ষমা প্ৰাৰ্থনা করিবে। ক্ষমা প্রার্থনার বিধি এই ;— হে ভগ-বন্! হে ক্মাপতে! আমি মনুষ্; আমার কুদ্রকারিতা ও কুদ্রুদ্ধিতার দীমা নাই। তজ্জ্য আমি ইহজীবনে যে অপরাধ করিয়াছি ও করিব, তৎসমত ক্ষমা করিতে হইবে। আর যেন ক্ষামি কখন অপরাধ না করি। তুমি প্রসন্ধ হইরা আমার সকল দোষ, সকল ফ্রেটি ও সকল অপরাধ ক্ষমা কর। আমি পাপে তাপে আর কতকাল দম্ম হইব; সংসারের কুমি হইরা, আর কতকাল নর্রক্ষপ্রণা ভোগ করিব! কুপথে বিপথে পদার্শি করিয়া আর কতকাল ছুঃখে ছুঃখে জীবন অবস্দ করিব! তুমি আমায় উদ্ধার কর, ক্ষমা কর, রক্ষা কর রক্ষা কর। এইরপ ক্ষমা প্রার্থনাত্তে ভোজনাদি প্রদান করিবে।

ইত্যাবেরে আদিমহাপুরাণে কৌমদএতনামক ভাচতারিংশদ্ধিকশত্তম অধ্যয়ে সম্প্রে ৷

ত্রিচত্বরিংশদ্ধিকশতত্ম অধায়।

অগ্রি কহিলেন, আমি সংক্ষেপে ও সামান্য বিধানে ব্রতদানপরম্পরা কীর্ত্তন করিব।

প্রতিপদাদি তিথি, সূর্য্যাদি, কুত্তিকাদি, বিষুত্তাদি, মেষাদি ও গ্রহণাদি, যে দময়ে যে দান, যে বত, যে দ্রব্য ও যে নিয়মাদি বিহিত ইয়াছে, তত্তৎ দ্রব্য ও কালাদি সমস্তই বিষ্ণু- দৈবত জানিবে। রবি, ঈশ, ব্রহ্মা, লক্ষ্মী ও সরস্বতী প্রভৃতি দকলেই বিষ্ণুর বিভৃতি। অত্তব্য বিষ্ণুকে উদ্দেশ করিয়া ব্রত, দান ও পূজাদি করিলে, দকল অভীষ্ট দিছ হয়। হে জগৎপতে! সমাগত হইয়া, এই আসন, পাদ্য, অর্ঘ্য, মধুপর্ক, আচমনীয়, স্মান, বন্ত্র, গন্ধ, পুষ্পা, ধূপা, দীপা ও নৈবেদ্যাদি গ্রহণ কর। ভোমাকে নমস্কার। ইত্যাদি বিধানে পূজা করিবে। এক্ষণে দানবাক্য প্রবণ কর।

অদ্য অমুকগোত্ৰসন্ত ত অমুকশৰ্মা আকাণ

ভোমাক্রে এই দ্রব্য দান করিতেছি। এই দান প্রভাবে আমার সর্ব্রপাপ শান্তি, সর্ব্রপ্ণা সম্প্রাপ্তি, আয়ু ও আরোগ্যর্ত্তি, সোভাগ্যম্থাদি সমৃত্তি, গোত্রসন্ততির উন্নতি, বিজয় ও ধনসন্তি, ধর্ম ও ঐশ্বর্যা প্রাপ্তি এবং সংসারম্ভিক সংঘটিত ইউক। এই কারণে আমি তোমায় দান করিলাম। সর্বলোকপতি পরম শক্তিসম্পন্ন ভগবান্ হরি ইহা ছারা প্রীত ইউন। হে যজ্ঞদান ব্রতপতে! আমায় বিদ্যা দাও, কীর্ত্তি দাও, ধন দাও, ম্মুক্তি দাও ও ভুক্তি দাও। ফলতঃ, আমি ঘাহা মনে করিয়াছি, তৎসমন্তই প্রদান কর। হে ব্রতপতে! হে লক্ষ্মীপতে! হে জগৎপতে! হে লোকপতে! হে বিদ্যাপতে! হে অর্থপথে! আমায় চতুর্ব্বর্গ প্রদান কর।

যে ব্যক্তি ভক্তিপূর্বক প্রতিদিন এই ব্রতদান-সমুচ্ছা পাঠ বা প্রবণ করে, সে প্রাপ্তকাম ও নির্মাল হইয়া, ভুক্তি মুক্তি লাভ করে; ইহাতে সন্দেহ নাই।

ইত্যাবেরে আদিমহাপুরাণে ব্রতদান সমূচ্চর নামক ত্রিচড়ারিংশ দ্ধিকশতভব অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুশ্চত্বারিংশদধিকশততম অধ্যায়।

তথা কহিলেন, দানধর্ম কীর্ত্তন করিব; প্রবণ করুন। এই দানধর্মের অনুষ্ঠান করিলে, ভুক্তি মুক্তি প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

দান,ইউ ও পূর্ত্তধর্মের অনুষ্ঠান করিলে, সর্বা-ভীউ সিদ্ধি হয়। বাপী, কৃপ, ভড়াগ, দেবায়তন, অমপ্রদান ও আরাম ইহার নাম পূর্তধর্ম। ইহার অনুষ্ঠানে মৃক্তি লাভ হয়। অগ্নিহোত্র, তপস্থা,

मठा, द्वाधात्रम, चाक्रिशा । देवश्राप्त विन ইহার নাম ইউ। ইহার অনুষ্ঠানে বর্গ লাভ হয়। এহোপরাগ, সুর্য্যসংক্রমণ ও দানশাদিতে যে দান করা যায়, ভাহাতেও স্বৰ্গপ্ৰাপ্তি হইয়া शांक। तम, कान ७ भांक मान क्रित्न. কোটিগুণ কল লাভ হয়। অয়ন, বিষুব, ব্যক্তি-পাত, मिनक्य, यूगामि, मरकाखि, इकूर्मि, बर्खेबी. मिड १९ १ में, मर्स बाननी, व्यक्तेका, युक्त, छे ९ मत् বিবাহ, ময়ন্তরাদি, বৈধৃত ও দৃউত্যু: ব্যা সকলে দ্ৰব্য ও ব্ৰাহ্মণ লাভ অমুদারে অথবা যে मिन अका इंटेरन, त्मरेमिनहे मान कतिरव। **अ**ग्रन-ष्य, वियुवध्य, सङ्गीजिह्युक्येय, विक्थानीहजूक्येय, ঘাদশ সংক্রান্তি, কন্সা, মিপুন, মীন ও ধকু এই সকলে রবিদংক্রম, ইত্যাদি সময়ও দানের পক্ষে অতি প্রশস্ত। শুক্লপকের কার্ত্তিকমাসীয় নবমীতে সভাযুগ নির্গত হয়। এইরূপ বৈশাখমানের সিত-ভৃতীয়ায় ত্রেভাযুগ, মাঘমাসীয় দর্শে দ্বাপরযুগ ও আবণ মাদের ত্রেদেশীতে কলিযুগের উৎপত্তি হয়। এই সকল অতি প্রশস্ত কাল। আখিন-মাদের শুক্লনব্যা, কার্তিকের ছাদশী, মাদের তৃতীয়া, ভাদ্রপদের তৃতীয়া, ফাল্লন মাদের অমা-বস্তা, পৌষের একাদশী, আষাঢ়ের দশমী, মাথের সপ্তমী, আবণের কৃষ্ণাউমী, আষাঢ়ের পূর্ণিমা এবং কার্ত্তিক,ফাল্পন ও জ্যৈষ্ঠমাদীয় পঞ্চদশী,অইকান্তেয় ও অভेकाछेमी এই সকল সময়ে দান করিলে, অক্যু হইয়া থাকে। ভক্তিসহকারে শক্তি অফু-সারে উপযুক্ত দেশ, কাল ও পাত্র প্রাপ্ত হইলেই, যথাবিধি দান করিবে। কোনমতেই নিবৃত্ত হইবে না। কেননা, দান দারা সঞ্চিত অর্থের সার্থক্য লাভ, পুণ্যদঞ্য ও চরমে পরমপদে প্রতিষ্ঠান হয়, এ বিষয়ে অনুমাত্র সংশয় নাই।

গয়া,গঙ্গা ও প্রয়াগাদি তীর্থ ও দেবালয়াদিতে অপ্রাথিত দান করিবে। পূর্ববৃথ হইয়া দান ও উত্তর মুখ হইয়া, উহা গ্রহণ করিবে। ইহাতে দাতার আয়ুর দি ও গ্রহীতারও উহা ক্ষম হইয়া থাকে। দানকালে আপনার নাম গোত্র বলিতে হইবে। স্থান করিয়া, ব্যাহ্নতিসহায়ে অভ্যক্তনা পুরঃসর জলসমেভ দান করিবে। কনক, অখতিল, নাগ, দাসী, রথ, মহী, গৃহ, কন্থা ও কপিলা ধেমু এই দশ্টী মহাদান বলিয়া বিখ্যাত।

অসীকার করিয়া দান না করিলে, শতকুল বিনষ্ট হয়। স্থতরাং পিতা, নাতা, গুরু ও দেবতা ইহাদিগকে প্রতিশ্রুত দান করিবে। প্রযন্ত্রপ্র্বাক অর্চ্ছিত পুণ্য দান করিবে। প্রীতিলাভ প্রত্যাশায় ধন দান করিলে, তাহা ব্যর্থ হইয়া থাকে। শ্রহ্মা দারাই ধর্ম সাধিত হয়। শ্রদ্ধাপূর্বক বারিদান করিলেও, অক্ষাফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে ৷ যিনি জানশীলগুণদম্পন্ন প্রপীড়াবহিষ্কৃত এবং অজ্ঞ-গণের পালন ও তাণ করেন: তিনিই প্রমপাত্র বলিয়া পরিগণিত হয়েন। মাতাকে দান করিলে, শতগুণ, পিতাকে দান করিলে দহস্রগুণ, ছুহি-তাকে দান করিলে, অনম্ভণ ও দোদর্য্যে দান করিলে, অক্ষয় ফল লাভ হয়। অমনুষ্য ও পাপা-স্থাকে দান করিলে, সমান মহাফল জানিবে। বর্ণসঙ্করে দান করিলে, দিগুণ,শূদ্রকে দান করিলে, চতুগুণ, বৈখ্যে দান করিলে, অফণ্ডণ ও ক্ষত্রে দান করিলে, যোড়শগুণ ফল লাভ হয়। বেদাধ্যা-গ্রীকে দান করিলে, শতগুণ, বেদবোধকে দান করিলে অনন্তগুণ, পুরেণ্ডিত ও যাজকাদিকে দান করিলে, অক্ষয় ফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে। জীবি-হীন ও যন্ত্রাকে দাধ্য করিলেও, অক্ষয়ত্ব সংঘটিত হয়। স্বাধ্যায়হীন, তপস্মাহীন, প্রতিগ্রহপ্ররত । ব্রাক্ষণকে দান করিলে, সমস্ত পশু হইয়া যায় এবং তাহার দঙ্গে মগ্ন হইতে হয়। মনীবিগণ বেদাদি বিচারপূর্বক যে সকল সৎপাত্র নির্ণয় করিয়াছেন, তাহাদিগকে দান করিলে, দানকল অক্ষয় হইয়া থাকে।

স্নান ও সম্যক্বিশ্বনে আচমনপূর্বক প্রয়ত ও শুচি হইয়া, প্রতিগ্রহ করিবে এবং প্রতিগ্রহকালে সর্বনাই সাবিত্রী জপ করিবে। অনন্তর সেই গৃহীত দ্রব্যের সহিত দৈবত নাম কীর্ত্তন করিবে। আক্ষণের নিকট প্রতিগ্রহ কালে, উচ্চৈঃস্বরে উহা পাঠ করিবে। ক্ষত্রিয়ের নিকট প্রতিগ্রহকালে অসুচ্চস্বরে, বৈশ্যের নিকট প্রতিগ্রহকালে উপাংশু এবং শৃদ্রের নিকট প্রতিগ্রহকালে উপাংশু এবং শৃদ্রের নিকট প্রতিগ্রহকালে মনে মনে কীর্ত্তন এবং স্বস্তিবাচন করিবে।

७क्करन, रय खरनात रय रेमचन, वनिरन्हि, শ্রবণ কর। অভয় সর্ববৈদবত; পৃথিবার দেবতা বিষ্ণু, দাস দাসী কন্সা গজ ইহাদের দেবতা প্রজা-পতি, অশ্বের দৈবত যম, মহিষ ও একশঞ্চ পশুরও দেবতা যম, উদ্ভের নৈঋতি, ধেনুর রোদ্রী, ছাগের অগ্নি, মেষ দিংহ ও শুকরের জল, আরণ্য পশুর অনিল, জলাশয়ের ও বারিধানী ঘটাদির বরুণ, সমুদ্রজাত রত্ব এবং স্বর্ণ ও লোহের দেবতা অনল। এইরূপ, শস্তের দৈবত প্রজাপতি, পকা-মের দৈবত ঐ, গল্পের দৈবত গন্ধর্বা, বস্ত্রের দৈবত বৃহস্পতি, পক্ষির দৈবত ৰায়ু, বিদ্যা ও অন্তের দৈৰত ব্ৰহ্মা, পুস্তকাদির দৈৰত সরস্বতী, শিল্পের দৈবত বিশ্বকৰ্মা, জ্ৰুমাদির দৈবত ৰনস্পতি, ছত্ৰ কৃষ্ণাজিন শয্যা রথ আসন উপানৎ ও যান এই দকলের দেবতা উত্তালাদিরা, রণোপকরণ শস্ত্র ধ্বজাদি ও গৃহ ইহারা সর্বটেদ্বত। আর বিষ্ণু

ও শিব সকলের দেবতা। কোন দ্রব্যই তাঁহা-দের ছাড়া নহে।

দানসময়ে তত্তৎ দ্রব্যের নাম গ্রহণ করিয়া, भरत हर्ल कननान कतिरव । देशहे नात्नत नियम বলিয়া পরিগণিত। বিষ্ণুই দাতা এবং বিষ্ণুই দ্রব্য। আমি উহা প্রতিগ্রহ করিতেছি। এই-প্রকার বলিতে ইইবে। প্রতিগ্রহধর্ম সর্কাথা মঙ্গলজনক। ভুক্তিও মৃক্তি তাহার তুই ফল। গুরু বা ভূত্যদিগকে, বঞ্চনা করিয়া, পিতৃগণ ও দেবগণের পূজা করিতে নাই। সকলের নিক্ট প্রতিএহ করিবে: কিন্তু স্বয়ং তাহাতে উদর পূর্ত্তি করিবে না। শুদ্রের ধন প্রতিগ্রহ করিয়া, তাহাতে যজ্ঞ করিবে না। কেননা, শৃদ্রেরই তৎ-ফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে। সংসার হইতে নিরুত্ত পুরুষ শৃদ্রের নিকট গুড়, তক্র ও বসাদি গ্রহণ করিতে পারেন। আর, যে ত্রাহ্মণের কোনরূপ জীবিকা নাই এবং তহ্জন্য যাঁহার কটের সীমা নাই, তিনি সকলের নিকট প্রতিগ্রহ করিতে পারেন। ত্রাহ্মণ দাক্ষাৎ অগ্নি ও দুর্য্যের দমান। এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই। স্নতরাং অধ্যাপন, যজন বা গাৰ্হত প্ৰতিগ্ৰহ, কিছুতেই ভাঁহার দোষ সম্ভাবনা নাই।

সত্যরুগে স্বয়ং গিয়া দান করিয়া থাকে; ত্রেতায় গৃহে আনিয়া দান করে, দ্বাপরে যাচ্ঞা
করিলে দান করে এবং কলিতে আফুগত্য
করিলে, দান করিয়া থাকে। মনে মনে পাত্র
উদ্দেশ করিয়া, ভূমিতে জল বিনিক্ষেপ করিবে।
সাগরেরও অন্ত আছে; কিন্ত দানের অন্ত নাই।
আকাশেরও সীমা আছে,কিন্ত দানের সামা নাই।
যে ব্যক্তি শক্তিসত্তে দান না করে, পরজন্ম সে
দরিদ্রদশায় পতিত হয় এবং যে যাচককে বিমুধ

करत, তাহারই ছারস্থ হইয়া থাকে। দানের
অধিক পুণ্য নাই, হরণের অধিক পাপ নাই এবং
শক্তিগত্তে যাচককে বিমুখ করা অপেকা নরক
নাই; পৃথিবী দ্রব্যময়ী হইয়াছেন। ইহার
কারণ কি? সকলের কিছু সকল বস্ত থাকে না।
ইহা দ্রির নিশ্চয়, একজনের ভোগের জন্ম এই
সকল দ্রব্যের স্প্তি হয় নাই। দান করিলে,
ঈশ্বর সস্তুউ হন এবং কথনও ভাহার অভাব হয়
না। যে যাহা দান করে, সে ভাহার অভাব হয়
না। যে যাহা দান করে, সে ভাহার আভাব হয়
কান অভাব নাই এবং মনে করিলেই যে ব্যক্তি
দান করিতে পারেন, ভাহার তুল্য সৌভাগ্যশালী
নাই।

আদা সোম সূর্য গ্রহণ ও সংক্রান্ত্যাদি সময়ে আমি গঙ্গা গয়া ও প্রয়াগাদি পরম পুণ্যপ্রদ তীর্থ-ক্ষেত্রে অমুকগোত্রীয় অমুকশর্মা বেদবেদাঙ্কযুক্ত পরম মহাত্মা পাত্রকে পুজ, পৌজ, গৃহ, প্রত্মায়, পত্রী, ধর্ম, অর্থ, কীর্ত্তি, বিদ্যা, মহাকাম, সোভাগ্য, আরোগ্য, সমৃদ্ধি, সর্ব্বপাপ প্রকালন। স্বর্গ এবং ভুক্তি ও মুক্তির জন্য বিষ্ণু রুদ্রাদি দৈবত মহাদ্রব্য যথানাম সম্প্রদান করিতেছি, ভগবান্ হরি ও মহাদেব প্রসম হইয়া সকল অভীষ্ট সম্পাদন করুন, দিব্য অন্তরীক্ষ ও ভৌমাদি উৎপাতপরম্পুরা ধ্বংস ককন এবং ধর্মার্থকাম ও মুক্তির জন্য প্রকালোক বিধান করুন। যথানাম ও যথাগোত্র অমুক শর্মা ব্রাহ্মণকে এই দান প্রতিষ্ঠার্ধ স্থবর্ণ দক্ষিণা দান করিতেছি। এইপ্রকার দানবাক্যে সমস্ত দান প্রদান করিবে।

ই ত্যাথেরে মহাপুরাণে দনেপবিভাষা নামক চতুশ্চরারিংশ দ্ধিকশততম অধ্যায় স্মাপু।

পঞ্চত্বারিংশদধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, সর্ব্ধপ্রকার দান ও হোড়শ মহাদান কীর্ত্তন করিব।

শুভদিন সমাগত হইলে, তুলাপুরুষ, হিরণ্য-গর্ভ, ব্রহ্মাণ্ড, কল্লরক্ষ, গোদহত্র, হিরণ্যকামধেমু, হিরণ্যাখ, হিরণ্যাখরথ, হিরণ্যহন্তিরথ, পঞ্চলাঙ্গল, ধরা, বিশ্বচক্র, কল্লতা, সপ্তদাগর, রত্নধেনু ও মহাস্থৃত ঘট এই দকল মহাদান করিবে। মণ্ডপে ও মণ্ডলে দেবগণের অর্চনা করিয়া, ব্রাহ্মণকে ঐ দকল অর্পন করিবে। মেরু দান করিলে, পরম পুশা সঞ্চিত্ত হয়। দশবিধ মেরুদান প্রসিদ্ধ, শ্রবণ কর।

একদহল্র ধান্ত জোণে উত্তম ধান্যমের হয়।
তাহার অর্জাংশে মধ্যম ও তাহার অর্জাংশে
অধম। যোড়শ দোণে উত্তম লবণাচল করা
কর্ত্তব্য। দশভারে উত্তম গুড়াদ্রি হয়। তাহার
অর্জকে মধ্যম ও তাহার অর্জকে অধম। এক
পলসহল্রে উত্তম স্বর্ণমের করা কর্ত্তব্য। তাহার
অর্জার্দ্রে মধ্যম ও অধম হইয়া থাকে। দশ দোণে
উত্তম তিলাদ্রি, পঞ্চদোণে মধ্যম ও তিনদ্রোণে
অধম। বিংশভার কার্পাদে উত্তম কার্পাদ পর্বত্ত,
দশ ভারে মধ্যম ও পঞ্চভারে অধম হইয়া থাকে।
বিংশতি স্নতক্ত্তে উত্তম স্নতাচল এবং তাহার
অর্জার্দ্রে মধ্যম ও অধম সাধিত হইয়া থাকে।
দশপল সহত্রে উত্তম রজতাচল, তাহার অর্জার্দ্রে
মধ্যম ও অধম। অইভারে উত্তম শক্রাচল, চারি
ভারে মধ্যম ও তুই ভারে অধম হইয়া থাকে।

যাহা দান করিলে ভুক্তিমুক্তি প্রাপ্তি হর, সেই দশংধনু কীর্ত্তন করিব। প্রথম গুড়ধেনু, দিতীয় য়তধেনু, তৃতীয় তিলধেনু, চতুর্থ জলধেনু, পঞ্চন ক্ষীরধেক, বর্চ মধুধেক, সপ্তম শর্করাধেক, অফ্রম দধিধেক, নবম রসধেক এবং দশম স্বরূপ-প্রসিদ্ধ ধেক । কৃষ্ণ ছারা রসাদি ধেক এবং রাশি ছারা অন্যান্ত ধেক করনা করিবে। চতুর্বস্ত কৃষ্ণা-জিন পূর্ববিত্রীবা করিমা, ভূমিতে বিক্তস্ত করিবে এবং ঐ ভূমি গোময়ে অনুলিপ্ত ও সর্ববিতাভাবে দর্ভাস্তরণে পরিব্যাপ্ত করিয়া বৎসের জন্যও তদ্বং লঘু কৃষ্ণাজিন পরিকল্লিত করিবে। পূর্ববিকে মুথ এবং উত্তর দিকে পদ এই ভাবে সবৎসা ধেকু কল্পনা করিতে হইবে।

চারি ভারে উত্তম গুড়ধেকু সচরাচর হইয়া থাকে। একভারে বংস কল্পনা করিবে। তুই ভারে মধ্যম গুড়ধেকু এবং অর্ধ ভারে বংস। আর এক ভারে অধম গুড়ধেকু ও ভাহার চতুর্থাংশে বংস পরিকল্পিত হয়। থাকে। গুড়বিত্তাকুসারে এই প্রকার কল্পনা বিহিত হয়।

পঞ্চক্ষণে একমাষ,যোড়শ মাসে স্থবর্ণ, চারি-ত্ববর্ণে পল, শত পলে তুলা, বিংশতি তুলায় ভার, এবং চারি আঢ়কে এক দ্রোণ হয়।

গুড়ের ধেনু ও বংস উভয়কেই সিত সূক্ষা বস্ত্রে পরিবৃত করিয়া, শুক্তি দ্বারা কর্ণ, ইক্ষু দারা পাদ, শুচি মুক্তাফল দ্বারা চক্ষু, সিতসূত্রে শিরা, সিতক্ষলে কম্বল, তাত্র দ্বারা পড়্ডুক ও পৃষ্ঠ, সিতচামরে রোম, বিক্রেম দ্বারা ক্রযুগ, নবনীত দ্বারা স্তন, ক্রোম দ্বারা পুচ্ছ, কাংস্থারা দোহনপাত্র, ইন্দ্রনাল দ্বারা চক্ষ্তারক, স্বর্ণ দ্বারা শৃঙ্গাভরণ, রজত দ্বারা ক্র্র, বিবিধ ফল দ্বারা দন্ত ও গদ্ধ দ্বারা দ্রাণ রচনা পূর্বক, হে দ্বিজ্ঞাত্ম! বক্ষ্যমাণমন্ত্রে ধেমুযোজনা করিবে। মন্ত্র, যথা,—

যিনি সর্ব্যভূতের লক্ষা ও যিনি সর্ব্যদেবতার অবস্থিতা, ধেমুরূপে সেই দেবী আমার শান্তি

विशान करून। यिनि नकल भंदीरद अधिष्ठान करदन, যিনি শিবের প্রিয়া রুদ্রাণী, ধেসুরূপে সেই দেবী আমার পাপ ব্যপোহিত করুন। যিনি বিষ্ণুবক্ষে লক্ষী যিনি অগ্নিবকে স্বাহা, যিনি চক্রবকে রোহিণী, যিনি সুর্যাবক্ষে ছায়া, যিনি শিববক্ষে রুদ্রাণী ও যিনি ব্রহ্মবক্ষে পিতামহী, ধেকুরূপা (मरे (मरी आमात ओ विशान कक़न। यिनि **ए**ष्ट-মুথের লক্ষী, যিনি কুবেরের লক্ষী, যিনি লোক-পালগণের লক্ষী, সেই ধেকু আমার বরদা হউন। তুমি পিতৃমুখ্যগণের স্বধা। তুমি যজ্জভুগ্গণের স্বাহা। তুমি সমস্ত-পাতকনিহন্ত্রী। তুমি সর্বভূথ-বিনাশিনী, আমার শান্তি বিধান কর। তুমি দকল লোকের লক্ষ্মী। ভূমি সর্বদেবতার দেবতা। তুমি সকল তুবনের অধিষ্ঠাতী, আমার শান্তি বিধান কর। আমি সকল-কামনা-সিদ্ধি, সকল-সমৃদ্ধি-লাভ ও সকল-সৌভাগ্য-দংগ্রহজন্য তোমার পজা করিতেছি। তোমার প্রদাদে আমার সমস্ত স্থসিদ্ধ হউক। এইরূপে আমন্ত্রিত ধেনু ব্রাক্ষণকে भित्तिन दतित्व: अग्रीग **मम्छ (धनुमानिब**ध এইপ্রকার বিধি। যে ব্যক্তি এই সকল ধেকু দান করে, দে দর্বপাপবিনির্দ্ম ও ভূক্তি মৃক্তি প্রাপ্ত হয়, তাহাতে দন্দেহ নাই। ধেঝুদানান্তে স্বৰ্ণ-শৃঙ্গা, রোপ্যশফা, স্থশীলা, বস্ত্রসংবৃতা, কাংসদোহ-সম্পন্ন, তুপ্ধবতী গাভী দক্ষিণা স্বরূপ দান করিবে। উহা দান করিলে, মনুষ্যাশরীরে যত রোম, তত বংসর স্বর্গভোগ হইয়া থাকে। কপিলা দান করিলে, দাতার আদপ্তম কুল উদ্ধার প্রাপ্ত হয়। যাহার মৃত্যু আদম হইয়াছে, দে ব্যক্তি পূর্বেৰাক্ত বিধানে স্বংগা ধেকু প্রদান করিবে। মহাঘোর যমধারে অভ্যুক্তদলিলবাহিণী বৈতরনী নদী প্রবা-হিত হইতেছে। উহা পার হওয়া সহজ নহে।

প্রের্নির প্রির্নির বিশ্বর ব

ইত্যায়েরে আদিমহাপুরাণে মহাদাননামক প্রুচডারিংশদ্ধিকশত্তম অধ্যায় সম্প্রে।

ষ্ট চত্বারিংশদ্ধিকশততম অধ্যার।

অগ্নি কহিলেন, যাহার দশ গো আছে, সে একটা গো দান করিবে; যাহার একশত আছে, সে দশটা দিবে এবং যাহার সহত্র গো আছে, সে একশত গো দান করিবে। সকলেরই সমান ফল লাভ হইয়া থাকে। যেথানে হুবর্ণময় প্রাসাদ সকল বিরাজমান, যেখানে বহুধারা সকল শোভমান, যেখানে গন্ধর্ব ও অপ্সরোগণের গীতবাদাদি সর্বদা ক্রেমাণ এবং অসীম ও অনন্ত হুখ সমৃদ্ধি উত্তরোত্তর উপচীয়মান, সহত্র গো দান করিলে, সেই হানে গমন করিতে পারা যায়। শত গো প্রদান করিলে, নরকার্ণব হইতে মৃক্তিলাভ হয়। বৎসত্রী দান করিলে, ক্রহ্থভোগ হইয়া থাকে। ফলতঃ, গোদান করিলে, আয়ু, আরোগ্য, দোভাগ্য, হুগ ও অপবর্গ প্রাপ্তি হয়।

ইন্দ্রাদি লোকপালগণের যিনি শুভভাবসম্পন্ন।
রাজমহিষী, মহিষীদানমাহাত্ম্যে তিনি আমার
সকল কামনা পূর্ণ করুন। বাঁহার পুদ্র ধর্মরাজের
সাহায্যে প্রতিষ্ঠিত এবং যিনি মহিষাস্থরের জননী,
তিনি আমার বরদা হউন। এইপ্রকার কহিয়া

মহিষী দান করিবে। মহিষী দান করিলে, সোভাগ্য ও বৃষ দান করিলে, স্বর্গ লাভ হয়। সংষ্ঠা হল-পংক্তি দান করিলে, সর্বকলপ্রাপ্তি হইয়া থাকে। বৃষসংযুক্ত দারুজ দশ হলে এক পংক্তি হয়। দৌবর্ণপট্ট সংনদ্ধ ঐরপ দশহল দান করিলে, স্বর্গে স্থভাগ হইয়া থাকে।

জ্যেষ্ঠ পুকরে দশ কপিলা দান এবং ব্যভ মোকণ করিলে, তাহার ফল অক্ষয় হয়, এইরূপ নির্দিষ্ট হইয়াছে। তুমি চতুম্পাদ ধর্ম। এই চারিটা কপিলা তোমার প্রিয়। তুমি ত্রাক্ষণ্য-দেবেশ। তুমি পিতৃগণ, ভূতগণ ও ঋষিগণের পোষক। ভোমাকে মোচন করিলাম। আমার নিরাময় অক্ষয় লোক সকল লাভ হউক। দেব-গণের নিকট, পিতৃগণের নিকট, ভূতগণের নিকট ও মনুষ্যগণের নিকট আমার যে ঋণ আছে, তোমার মোক্ষণে তাহার মোক্ষণ হউক। আমি যে সকল পাপ করিয়াছি, দোষ করিয়াছি, অপ-রাধ করিয়াছি ও ক্রেটি করিয়াছি, তৎসমস্তপ্ত কালিত অপনীত ও ব্যাপোহিত হউক। তুমি সাক্ষাৎ ধর্ম। তোমাতেই লোক সকল প্রতিষ্ঠিত আছে। তোমার শরণাগত হইলে, যে গতি হয়, ভোমার প্রদাদে আমারও দেই গতি হউক। ইহাতে যেন কোন রূপে অন্তথা বা বিপ্রতিপত্তি না হয়। এইপ্রকার মন্ত্রোচ্চারণ সহকারে বৃষ্ঠে চক্র ও শুল দ্বারা অঙ্কিত করিয়া, উৎসর্গ করিবে। একাদশাহে যে প্রেতের উদ্দেশে বৃষ উৎসৃষ্ট হয়, প্রেতলোক হইতে ছয় মাদ মধ্যেই তাহার মুক্তি হইয়া থাকে।

গো,ভূ ও হিরণ্যসমেত কৃষ্ণাজিন দান করিলে, ব্রহ্মসাযুজ্য লাভ হয়। সর্ব্যপ্রকার তুদ্ধৃত কর্ম্মে ব্যাপুত থাকিলেও, ঐক্সপ সিদ্ধি সম্পন্ন হইয়া থাকে। তিল ও মধুপূর্ণ পাত্র এবং মগধদেশো
তব কৃষ্ণ তিল একপ্রস্থ প্রদান করিবে। প্রদান
করিলে, স্বর্গলাভ হয়, সন্দেহ নাই। সগুণা শধ্যা
দান করিলে, ভুক্তি মুক্তি প্রাপ্তি হইয়া থাকে।
আপনার হৈমময়ী প্রতিকৃতি নির্মাণ পূর্বক দান
করিলে, স্বর্গ লাভ হয়। বিপুল গৃহ প্রস্তুত করিয়া,
দান করিলে, ভুক্তি মুক্তি প্রাপ্তি হইয়া থাকে।
গৃহ, মঠ, সভা ও প্রতিপ্রস্তুর প্রদান করিলে, দেবলোক লাভ হয়। গোগৃহ নির্মাণ করিয়া, দান
করিলে, নিজ্পাপ ও স্বর্গপ্রাপ্তি হয়। যমমাহিব
দান করিলে, পাপ প্রকালন ও দেবলোক লাভ
হয়। মহিষের শিরভেছদন করিয়া দান করিলে,
স্বর্গলোক প্রাপ্তি হয়; ইহার নাম ত্রিমুখাথ্য
দান। ইহা গ্রহণ করিলে, ব্রাহ্মণ পাপভাগী
হন।

রোপ্যময় চক্র নির্মাণ ও তাহা শিরোধার্য করিয়া, দান করিবে। হেমময় চক্র দান করিলে, চক্রী প্রসন্ন হয়েন। ইহার নাম কালচক্র।

যে ব্যক্তি আত্মতুল্য লোহ দান করে, তাহার
কখন নরক লাভ হয় না। যে ব্যক্তি পঞ্চাশ
পল সংযুক্ত লোহদণ্ড বস্ত্রে আচ্ছাদন করিয়া
ব্রাহ্মণকে দান করে, তাহার কখনও যমদণ্ড থাকে
না। মৃত্যুজয় উদ্দেশ করিয়া, আয়ুর রৃদ্ধিজন্য
ফলমূলাদি দ্রব্য একত্রে বা পুথক্ দান করিবে।

রোপ্যের দন্ত, স্বর্ণের চক্ষু, হন্তে উদ্যত থড়গ,
শরীর দীর্ঘ, মণ্ডলে জবাকুস্থম, পরিধান রক্তবন্ত্র,
গলে মাল্য, হন্তে শন্থাদি,পদম্বয়ে উপানৎ, পার্খে
কৃষ্ণকন্থল, করে মাংসপিও ও বামে কালপুরুষ,
এইরূপ বিধানে কৃষ্ণভিলের পুরুষ নির্মাণ করিয়া,
গন্ধ পুল্পাদি দ্বারা ব্রাহ্মণনাৎ করিবে। তাহা
হইলে, মরণব্যাধিহীন ও রাজরাজেশ্বর হইবে।

ব্রাহ্মণকে গোর্ষ ও রেবন্ড্যাধিন্ঠিত ছেমময় আধ দান করিলে, আর কখনও মৃত্যু হয় না। ঘন্টাদিপূর্ণ একমাত্র আধও দান করিলে, ভুক্তি মৃক্তি প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

কাঞ্চন দান করিলে, দমন্ত কামনা স্থপিদ্ধ হয়। স্থবর্ণ দানে রোপ্যের দক্ষিণা দেওয়া বিধি। অন্যান্য দ্রব্য দানে স্থবর্ণের দক্ষিণাদান বিহিত ইইয়াছে।

পরমপ্রাজ্ঞপুরুষ বৃত্থাদান কালে তবর্ণ, রজত, তাত্র, মণি, মুক্তা ও বহু এই সকল দান করিবেন। যে ব্যক্তি বহুদ্ধরা দান করে এবং তজ্জ্ঞ্য কোনরূপে অহস্কার ও পরিতাপ না করে অথবা কাহারও নিকট তদ্বিষয়ে বর্ণন না করে, তাহার পিতৃলোকস্থ পিতৃগণ ও দেবলোকস্থ দেব-গণ পরম পরিত্থা হয়েন।

খেটক, থবঁট, গ্রাম,শস্তপূর্ণ ক্ষেত্র, শতনিবর্তন
অথবা তদর্জ, কিংবা গৃহাদি অথবা গোচর্মপরিমাণেও ভূমি দান করিলে, দর্কদিদ্ধি দম্পন্ন
হয়। সলিলমধ্যে তৈলবিন্দু যেরপ প্রদর্পিত হয়,
সমস্ত দানেরই তেমনি একজন্মাপুণ ফল ব্যাপ্ত
হইয়া পড়ে।

ভূ, স্বৰ্ণ ও গোরী দান করিলে, দপ্তজন্ম তাহার ফল ভোগ হয়। কন্যা দান করিলে, ত্রিদপ্ত কুল উদ্ধার করিয়া, ত্রহ্মলোক লাভ করিতে পারা যায়। দদক্ষিণ গজ দান করিলে, দমস্ত পাপ প্রকালিত ও স্বর্গলোক অধিগত হয়। অখ দান করিলে, আয়ু, আরোগ্য, দৌভাগ্য, স্বর্গ ও অপবর্গ প্রাপ্তি হইয়া থাকে। দাসী দান করিলে, অপ্রাপ্তে হওয়া যায়। পঞ্চশত-পলনির্দ্ধিত ভাত্রময়ী স্থালী দান করিলে, অথবা ভাহার অন্ধার্কের অন্ধ্ ও প্রদান করিলে, ভুক্তি

মুক্তি প্রাপ্তি হইয়া থাকে। ব্রষদংযুক্ত শকট দান
করিলে, দিব্যবিমানে আরোহণ করিয়া, স্বর্গলোকে
গমন করা যায়। বন্ত্রদান করিলে, আয়ু, আরোগ্য
ও অক্ষয় স্বর্গ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। ধান্ত, গোধুম,
কলম ও যবাদি দান করিলে, স্বর্গভোগ করিতে
পারা যায়। আসন, তৈজস পাত্র, লবণ, গন্ধ চন্দন,
ধূপ, দীপ, তান্থূল, লৌহ, রৌপ্য, রত্ন ও অন্তান্ত্র হইয়া থাকে। তিল ও তিলপাত্র প্রদান করিলে,
স্বর্গলাভ হয়।

অয়দান অপেক্ষা প্রেষ্ঠ দান নাই, হয় নাই ও
হইবে না। হস্তী, অশ্ব, রথ, দাদ, দাদী ও গৃহ
ইত্যাদি সর্বপ্রকার দানই অয়দানের ধোড়শ অংশেরও যোগ্য হইতে পারে না। মহাপাপ করিয়াও, পশ্চাৎ অয়দান করিলে, সমস্ত পাতক
প্রকালিত ও অক্ষয়লোক সকল লাভ হইয়া
থাকে। অয় লোকের প্রাণ ও সাক্ষাৎ শক্তি এবং
আয়েই লোক প্রতিষ্ঠিত। অতএব যে ব্যক্তি
অয় দান করে, দে সমস্ত দান করে, তাহাতে
সন্দেহ কি ! অয়দান অপেক্ষা পুণ্য নাই। একমাত্র অয়দানেই সমস্ত অক্ষয় লোক প্রতিষ্ঠিত।
সংসারে সকলেই অ্রশালী হয় না; কিন্তু অয়ই
প্রাণ। এইজন্য, অয়হীনকে অয়দান করিবে।

পানীয় ও প্রপ দান করিলে, ভুক্তিনুক্তি প্রাপ্তি হইয়া থাকে। মার্গাদিতে অগ্রি ও কাষ্ঠ দান করিলে, দীপ্ত্যাদি লাভ হয়। মৃত, তৈল ও লবণ দান করিলে, স্বর্গে গমন করিয়া, দিব্যবিমানে দেব ও গন্ধর্কাগণের নারীর সহিত বিহার করিতে পারা যায়। ছত্র, উপানং ও কাষ্ঠাদি দান করিলে, স্বর্গে গিয়া, স্থু ভোগ করা যায়।

প্রতিপতিথিমুখ্যে, বিষ্কুম্ভাদি যোগে, চৈত্রাদি

মাদে, বংশরাদিতে এবং আশিনাদি নক্ষত্রে হরি, হর, একাা ও লোকপালাদির বিশিষ্টরূপ পূজা করিয়া, দান করিলে, মহাফল লাভ হয়। ফলতঃ, যেকোন দেবতার পূজাদিতে দান করা কর্তব্য। তাহাতেই অক্ষয় ফল লাভ হইয়া থাকে। স্ষ্টিকর্ত্তা দানের জন্মই এই সকল পদার্থের স্ষ্টি করিয়াছেন; একাকা ভোগের জন্ম নহে। অত্তরে যে ব্যক্তি শক্তিসত্ত্বেও দান না করে, তাহার পর জন্ম দরিদ্রদশায় যাপিত হইয়া থাকে।

রুক্ষ, আরাম, ভোজনাদি, মার্গদংবাহনাদি ও পাদাভ্যস্থাদি দান করিলে,ভুক্তিমৃক্তিপ্রাপ্তি হইয়া থাকে।

গো, পৃথী ও দরস্বতী, তিনেই তুল্য ফল লাভ হয়। আন্দা দরস্বতী দান করিলে, নিম্পাপ, নিজলুষ ও স্বর্গভাগী হওয়া যায়। যে ব্যক্তি অন্ধা-জান করে, তাহার সপ্তস্থীপা মহী দান করা হয়। কেননা, অন্ধাজ্ঞান অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ বা উৎকৃষ্ট জ্ঞান আর নাই। অন্মই জগৎ এবং অন্মই মুক্তি। অন্মকে জানিলে, দকল জানা হয়। এবং অন্ধাকে পাইলে, দকল পাওয়া হয়। এই জন্ম অন্ধান দান করা দ্বিথা কর্ত্ব্য।

যে ব্যক্তি সর্বভূতে অভয় দান করে, তাহার সর্বাভীকৃসিদ্ধি হয়। কেননা, মামুদের বিত্র বিপত্তি পদে পদে! যিনি সেই বিপৎ নিরাকরণ করেন, তিনি কি না করেন ?

পুরাণ, ভারত অথবা রামায়ণ লিখিয়া পুস্তক দান করিলে, ভুক্তিমুক্তি লাভ হয়। যে ব্যক্তি বেদশাস্ত্র ও নৃত্য গীত শিক্ষা দেয়, তাহার স্বর্গ ভোগ হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি উপাধ্যায়কে ধন্ ও ছাত্রনিগকে ভোজনাদি সম্প্রদান করে, সেই ধর্মকামাদিদশী পুরুষের কি না দান করা হয়?

সম্প্ৰিধানে সহত্ৰ বাজপেয় সম্পাদন করিলে, যে ফল, একমাত্ৰ বিদ্যাদানে দেই ফল, তাহাতে সন্দেহ নাই। যে ব্যক্তি শিবালয়ে, বিষ্ণৃত্হ ও সূহ্যভবনে পুক্তক বাচন করে, তাহার সমস্ত দান করা হয়। ত্রৈলোক্যে যে পৃথক্ পৃথক্ চারি বর্ণ ও চারি আশ্রম আছে, তৎসমস্ত এবং ব্রহ্মাদি সমস্ত দেবতাই বিদ্যাদানে প্রতিষ্ঠিত। বিদ্যা কামছ্ঘা ধেমু, বিদ্যা অমুত্তম চক্ষ্ এবং বিদ্যাই প্রকৃত জীবন। বিদ্যা অপেক্ষা বিশিষ্ট বস্তু আর ক্রি আছে ? অতএব যিনি বিদ্যাদান করেন, তাঁহার সমস্ত দান করা হয়। বিদ্যাই রূপ, বিদ্যাই সম্পদ এবং বিদ্যাই বিত্ত, তাহাতে সন্দেহ কি ?

উপবেদ প্রদান করিলে, গন্ধর্বলোকে স্থ-ভোগ হইয়া থাকে। বেদাঙ্গ দান করিলে, স্বর্গ-লোক প্রাপ্ত হয়। ধর্মাণান্ত প্রদান করিলে, ধর্মের সহিত বিহার করিতে পারা যায়। দিদ্ধান্ত-শান্ত প্রদান করিলে, মুক্তি লাভ হয়, তাহাতে সন্দেহ কি ? পুস্তক দান করিলে, বিদ্যাদানের ফল প্রাপ্ত হইয়া থাকে। পুরাণ ও অক্যান্ত শান্ত প্রদান করিলে, সর্বাভীষ্ট দিদ্ধ হয়। শিক্ষাশান্ত প্রদান করিলে, পুগুরাকফলপ্রাপ্তি হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি তাহা দান করিয়া, জীবিকা নির্বাহ করে, তাহার অন্ত ফল লাভ হয়।

আপনার যাহা প্রিয় এবং সংসারে যাহা প্রেষ্ঠ-তম, পিতৃগণের অক্ষয় কামনা বশংবদ হইয়া, তৎ-সমস্ত তাঁহাদিগকে দান করা কর্ত্তব্য।

বিষ্ণু, রুদ্র, পদ্মযোনি, দেবী, বিদ্বেশ ও অভাভ দেবতার পূজা করিয়া, পূজাদ্রব্য দান করিলে সর্বাভীষ্ট সিদ্ধ ইইয়া থাকে।

দেবালয় ও প্রতিমা প্রতিষ্ঠিত করিলে, সকল

কামনা সম্পন্ন হয়। সন্মার্ক্তন ও উপলেপন করিলে, দমস্ত পাপ বিনই হয়। বিবিধ মণ্ডল নির্মাণ করিলে, মণ্ডলাধিপত্য প্রাপ্তি হয়। গন্ধ, পুন্প, ধূপ, দীপ, নৈবেদ্য, প্রদক্ষিণ, ঘণ্টা, ধ্বজ, বিতান, প্রেক্ষণ, বাদ্য, গীত এবং বস্ত্রাদি দেবো-দেশে দান করিলে, ভুক্তিমুক্তি সম্পন্ন হয়। কস্তু-রিকা, শিহ্বক, প্রথিও, অগুরু, কপূর, মুস্ত, গুণ্গল, বিজয়, এই সকল দ্রব্য গ্রতপ্রস্থানত সংস্থা-পনপূর্বক সংক্রান্তিতে দান করিলে, সকল অভীষ্ট সিদ্ধ হয়।

শত পলে স্নান, পঞ্বিংশতিতে অভ্যঙ্গ ও সহস্র পলে মহাস্নান পরিকীর্তিত হইয়াছে।

দেবোদেশে দাস, দাসী, অলক্ষার, গো, ভূ, আহ ও গজাদি দান করিলে, সোভাগ্য, ধন ও আয়ু লাভান্তে স্বর্গে গমন করিতে পারা যার।

ইত্যাপ্তেরে আদিমহাপ্রাণে নানালান নামক ষট্চছা-রিংশ্লধিকশত্তম অধ্যার সমাপ্ত।

সপ্তচত্বারিংশদধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, যাহা বারা সর্ক্রকাম স্থসম্পন্ন হয়, সেই। কাম্যদানপরম্পরা তোমার নিকট কীর্ত্তন করিব।

মার্গনির্ধে মহাদেবকে বিহিত বিধানে পূজা করিয়া, পিউনির্মিত কমল ও অখ দান করিলে, সূর্যলোকে চিরকাল বাদ করিতে পারা যায়। পোষমাদে পিউময় গজ দান করিলে, ত্রিদপ্ত কুল উদ্ধার হইয়া থাকে। মাঘমাদে পিউকনির্মিত কমল ও অখরথ দান করিলে, নরকপরিহার হয়। কাছনে পৈউক রুষ দান করিলে, রাজা ও স্বর্গ-বাদী হওয়া যায়। চৈত্রমাদে দাদদাদীদমন্তিত ইক্ষুময়ী গাভী দান করিলে, চির্কাল স্বর্গে থাকিয়া পরে মহীপতিপদ প্রাপ্ত হয়। বৈশাথে সপ্তত্তীহি দান করিলে, শিবময় হওয়া যায়। আযাদ্যাদে অমরাশিসহকারে বলিমগুল দান করিলে, শিবম্ব-প্রাপ্ত হয়। প্রাবণে পুল্পের বিমান প্রদান করিলে, স্বর্গলাভ হইয়া থাকে। শতদ্বয় পল দান করিলে, কুলের উদ্ধার ও রাজপদ প্রাপ্তি হয়। ভাদ্যাসে গুগুজাদি দান করিলে, স্বর্গ-প্রাপ্ত ও রাজা হওয়া যায়। আঘিন্যাসে ক্ষার ও সর্পিপূর্ণ পাত্র প্রদান করিলে, স্বর্গলাভ হয়। কার্তিক্যাসে গুড়েখণ্ড ও আজ্যা দান করিলে, স্বর্গ ও রাজপদ প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

যাহা হারা ভুক্তিমুক্তি লাভ হয়, সেই হানশমেরু দান কীর্ত্তন করিব। কার্ত্তিকীতে সেরুব্রেত
করিয়া, ব্রাহ্মণকে রক্সমেরু দান করিবে। সমস্ত
মেরুপ্রমাণ ক্রমশঃ প্রাবণ কর। বক্ত, পদ্ম, মহানীল, নীল, ফাটিক, পুল্প, মরুক্ত ও মুক্তা এই
সকলের প্রস্থপ্রমাণ মেরু উত্তম; ইহার অর্দ্র
মধ্যম এবং তদর্ভ্ব অধম। বিত্তশাঠ বর্জন করিবে।
করিয়া, পূর্ববিতঃ মাল্যবানের পূজা করিবে। তথপূর্বেব ভদ্রের, তথপরে অশ্বরক্ষের, দক্ষিণে নিষ্
ধের, তথপরে হেমকুটের, তথপরে হিমালয়ের,
অনন্তর সৌম্যভাগে নীল, শ্বেত ও শূর্কীর, পশ্চিমে
গদ্ধমাদনের, তথপরে বৈকৃষ্ক ওই হাদশ মেরু।

সান ও অনশন করিয়া, বিষ্ণু বা মহাদেবের পূজা করিবে এবং ভাঁহাদের অগ্রে মস্ত্রোচ্চারণ-সহকারে মেরুর পূজা করিয়া ব্রাহ্মণকে দান করিবে। আমি অমুকগোত্রীয় অমুকশর্মা ব্রাহ্মণকে এই বিষ্ণুদৈবত দ্রব্যময় মেরু দান করিতেছি, ইহার প্রভাবে আমার ভৃত্তিমুক্তি লাভ হউক। এই রূপে মেরু দান করিলে, ইপ্রলোক, প্রক্ষালাক, শিবলোক ও বিষ্ণুলোকে বিমানে বিহার করিতে পারা যায় এবং দেবগণের পূজা লাভ ও কুল উদ্ধৃত হইয়া থাকে।

সংক্রান্তি প্রভৃতি অক্যান্ত সময়েও মেরু দান করিবে। একপলসহত্রে শৃক্ষত্রয়সম্পন্ন ভ্রন্ধা-विकृष्त्ररेष्ट्रक (इमरमञ्ज धक्रिक धदः धक धक শন্ত পলে ভাছার এক এক পর্বাত প্রস্তুত করিবে। গ্রহণাদি সময়ে ও অয়নে বিষ্ণুর সম্মুথে তাঁহার অর্চনানন্তর স্বর্ণমেরু ভাঙ্মাণকে দান করিলে, विक्रुरलारक हित्रकाल बाम कहा याग्न अवर यक भन्न-মাণু আছে, ভতকাল রাজপদে, প্রতিষ্ঠিত হইয়া थाटक। मःकज्ञभूर्वक घानना जियुक्त दिशे नर्रास्य দান করিলে, প্রাগুক্ত ফল লাভ হয়। বিষ্ণু ও বিপ্রাপুরু করিয়া, ভুমিমের দান করিলে, পূর্ব-**२९ कल धार्शि इरेशा शांक । चानगां जिमगांयुक** হস্তিমের দান করিলে, অনস্ত ফল লাভ হয়। হ্য়দ্বাদশসংযুক্ত ত্রিপঞ্চাশ তুরক্ষমে অখনেরু कक्रमाशृद्धक विक्षांनित्र शृङ्धा क्रिया मान क्रिल, ভুক্তভোগী ও রাজপ্রদ প্রাপ্ত হওয়া যায়। मःथा। श्रमार्ग शृक्वव विषात (शामक मान করিলে, পূর্ববিৎ ফল লাভ হয়। ভারমাত্র পট্ট-বস্ত্রে বস্ত্রমেরু দান করিলে, কোন কালেই অন বা বস্ত্রের অভাব হয় না। মৃতপদহত্রে মৃত-মেরু দান করিলে, অনস্তফল প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই রূপে পঞ্চাশৎ পলে এক এক মেরু নির্মাণ করিয়া, তাহাতে ভগবান্ হরির পূজা করিবে। এইপ্রকার খণ্ডমেরু করিয়া দান করিলে, মহাফল লাভ হয়। পঞ্খারে ধান্যমেরু হয়। অভান্ত পর্বত এক এক খারে নির্মাণ করিবে এবং স্বর্ণের ভিন শৃদ্ধ করিয়া, জন্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বরের পূজা করিবে। অথবা সর্বাত্ত বিশেষরূপে বিষ্ণুর পূজা করিলে, অক্যা কল প্রাপ্তি হুইয়া থাকে।

এইরপ দশংশ পরিমাণে তিলমের করনা করিবে। পূর্ববৎ তাহার তিন শুঙ্গ করিতে হইবে। তিলমের প্রদান করিলে, বন্ধুগণের দহিত স্বর্গভাগী হওয়া যায়। ভূমি বিষ্ণুস্বরূপ, ভোমাকে নমস্কার। ত্রেন্সা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর তোমার ভিন শৃঙ্গ। পৃথিবী ভোমার নাজিতে প্রতিষ্ঠিত। তোমাকে নমস্কার। তুমি ছাদশ মেরুর নাথ। তুমি দর্কপাপ বিনাশ করিয়া থাক। ভূমি বিফুভক্ত ও শাস্ত-স্বরূপ। সর্বাথা খামায়ে পরিত্রাণ কর। ভোষার প্রসাদে ও প্রভাবে আমি যেন পিতৃপণের সহিত বিষ্ণুলোক প্রাপ্ত হই। ওঁ নমঃ, ভূমি হরি। আমিও বিষ্ণু। বিষ্ণুর অগ্রে বিষ্ণুকে ভক্তিপূর্বক নিবেদন করিতেছি: আমার ভুক্তিমুক্তিপ্রাপ্তি হউক, ওঁ তোমাকে নমস্কার। এইপ্রকার কহিয়া তিলমের দান করিবে।

ইত্যাগ্নেরে আদিমহাপুরাণে মেরুদাননামক সপ্তচভারিংল দ্ধিকশততম অধ্যায় স্মাপ্ত।

অষ্টচত্বারিংশদধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, পৃথিবীদান কীর্ত্তন করিব।
পৃথিবী ত্রিবিধা নির্দিষ্ট হইয়া তম্মধ্যে শতকোটিযোজনবিস্তৃত সপ্তমীপ ও সাগরসমেত জম্বীপাবিধি পৃথিবী উত্তম বলিয়া পরিগণিত। পঞ্চভার
কাঞ্চনে উত্তম পৃথিবী প্রকল্লিত করিবে। তাহার
অন্ধান্তরে কৃশ্ম ও পল্ম নির্দ্মণ করিবে। ইহার
নাম উত্তম পৃথিবী। ইহার তুই ভাগে মধ্যম এবং

ত্রিভাগ হবর্ণে অধন পৃথিবী নির্মিত হইয়া থাকে।

একপলসহত্র স্বর্ণে করপাদপ মূল দণ্ড পত্র ফল
ও পৃষ্পানমেত করনা করিবে। ঐরূপ পঞ্চয়নবিশিষ্ট করপাদপ সংক্রপ্র্বেক দান করিলে,
ত্রন্ধালোকে পিতৃগণের সহিত চিরকাল আমোদ
করিতে পারা যায়।

পঞ্চলতপল স্থবর্ণে কামধেকু নির্মাণ করিয়া
বিষ্ণুর অথে ত্রাহ্মণদাৎকরিবে। বিষ্ণু, ত্রহ্মা ও
মহাদেব প্রভৃতি দেবগণ ঐ ধেকুতে অধিষ্ঠান
করেন। হুডরাং ধেকুদানই সর্ববদান এবং সকল
কামনা পূরণ ও ত্রহ্মালোক বিধান করে। বিষ্ণুর
অথে কপিলা দান করিলে, সকল কুলের উদ্ধার
হইয়া থাকে। অলুক্কতা করিয়া স্ত্রী দান করিলে,
অখনেধের ফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে। সর্ববাস্ত্রপ্রবাহিণ্ট ভূমি দান করিলে, সর্ববাস্ত্রীই দিনি
হয়। গ্রাম বা পূর বা থেটক বা থর্বটি দান
করিলে, স্থী হওয়া যায়। কার্ত্তিকাদিতে র্বোৎসর্গ করিলে, বংশের উদ্ধার হয় এবং পুণ্যাহ্বোগে
ভূম্ববতী সবৎসা ধেকু দান করিলে, অক্ষয় ফল
লাভ হইয়া থাকে।

ফলতঃ, উপযুক্ত দেশ কাল পাত্র উপন্থিত
হইলেই, ষথাশক্তি ও যথাবিধি দান করিবে।
দেই দানের ফল অবশ্যই প্রাপ্ত হইবে। কোনরূপ প্রত্যাশা না করিয়া, অকপট হাদরে বিফুকাম হইয়া দান করা বিধি। যে ব্যক্তি ঐরপ
সাত্তিক দান করে, ভগবান্ বিষ্ণু ভাঁছার অধিকৃত
হয়েন, তাছাতে অণুমাত্র সংশয় নাই। সাত্তিক
দানই একমাত্র মোক্ষেরিতে ও সম্ভাব প্রতিষ্ঠিত।

ইত্যাথেরে মহাপুরাণে পৃথীদাননামক অইচড়ারিংশ-ছবিকশন্ততম অধ্যায় সমস্থে।

উনপঞ্চাশদ্ধিকশততম অধ্যার।

পুকর কহিলেন, শুদ্ধিজনক রহস্যাদিপ্রায়-শিচত কহিব, প্রবেশ কর।

একমান পৌক্রবস্ক্ত জপ করিলে, পাপবিনাশ হয়। তিন বার অঘমর্যণ জপ করিলে, সমস্তপাতকমুক্ত হওয়া যায়। বেদজপ, বায়ুসংযম,
গায়তী ও ত্রত করিলে, পাপ বিনফ হয়। সমস্ত
কচ্ছেই মৃগুন, স্নান, হোম ও হরির আরাধনা
করা বিধি।

দিবাভাগে উত্থিত হইয়া অবস্থান ও রাত্রিতে উপবেশন করিবে। ইহার নাম বীরাদন। ক্লছু-কারী পুরুষ তন্ধারা নিম্পাপ হয়েন।

প্রত্যহ অউপ্রাসে যতিচাক্রারণ বিনিষ্পন্ন হয়। প্রাতে ও সায়াকে আসচতুষ্টয় এহণ করিলে, তাহাকে শিশুচাক্রায়ণ বলে। একমাস যথা-কথঞ্জিৎ দ্বিশতচন্দারিংশৎ প্রাস প্রহণ করিবে। ইহার নাম হারচাক্রায়ণ।

তিন দিন উষ্ণ জল, তিন দিন উষ্ণ চুগ্ধ এবং
তিন দিন উষ্ণ হত পান করিয়া, তিন দিন বায়ুমাত্র ভক্ষণ করিবে। ইহার নাম তপ্তক্ষেদ্র। এই
রূপ, তিন দিন শীতল জল, ভিন দিন শীতল ছগ্ধ
ও তিন দিন শীতল ছাত পান করিবে। ইহার
নাম শীতক্ষ্য । একবিংশতি দিন পায়ং পান
করিলে, কুচ্ছাতিকুচ্ছ সমাহিত হয়।

গোদ্ত্র, গোময়, ক্ষীর, দধি, সর্পি, কুলোদক এবং একরাত্র উপবাদ, ইহার নাম কুচ্ছুশান্তপন। প্রত্যহ এইরূপ অভ্যাদ করিলে, মহাশান্তপন বলিয়া থাকে এবং তিন দিন অভ্যাদ করিলে, অতিশান্তপন নামে অভিহিত হয়।

ছাদশ দিন উপবাসের নাম পরাককৃচ্ছু। ফল

ৰারা ফলকৃচ্ছ, বিল বারা জীকৃচ্ছ, পুপা বারা পুষ্পকৃচ্ছ, পত্র বারা পত্রকৃচ্ছ জল বারা তোর-কৃচ্ছ, মৃত্র বারা মৃত্যকৃচ্ছ এবং দধি বারা দধিকৃচ্ছু বিনিষ্পার হয়।

একমাদ পাণিপুরাম ভোজন করিবার নাম বায়ব্যকৃচ্ছ।

দাদশরাত্রি তিল ভক্ষণ করার নাম আগ্নেয়কুছু । ইহা দারা আর্ত্তি বিনাশ হয়। চতুর্দ্দশীতে
উপবাস করিয়া, পঞ্চদশীতে পঞ্চলব্য ভক্ষণ
করিবে, অনন্তর হবিষ্যাশী হইবে। একমাস তুইবার এইপ্রকার করিলে, সর্ব্বপাপ বিন্ট হইয়া
থাকে। শ্রীকাম, পুষ্টিকাম, স্বর্গকাম ও পুণ্যকাম
পুরুষ কুচ্ছুকারী হইয়া, দেবারাধনা তৎপর হইবেন। তাঁহার সমস্ত স্থাদিদ্ধ হইবে, তাহাতে
সন্দেহ নাই।

ইত্যাথেরে আদিমহাপ্রাণে কুচ্ছরহস্তাদিনামক উন-পঞ্চাশদধিক শতুত্ম অধ্যায় সমস্তে।

পঞ্চাশদধিক শতত্ত্ব অধ্যায়।

অগ্রি কহিলেন,নাড়ীচক্র কীর্ত্তন করিব,ঘাহা পরি-জ্ঞাত হইলে,ভগবাদ্ হরিকে জানিতে পারা যায়।

নাভির অধােদেশে যে কন্দ আছে, তাহাতে অকুর সকল নির্গত হইয়াছে। উহাদের সংখ্যা ছাসপ্ততিসহস্র। উহারা নাভিমধ্যে ব্যবস্থিত আছে
এবং তির্য্যক্, উদ্ধি ও অধঃ সমন্তাৎ ব্যাপ্ত করিয়াছে। চক্রবৎ সংস্থিত ঐ সকল নাড়ীর মধ্যে
দশটী নাড়ী প্রধান। উহাদের নাম ইড়া, পিঙ্গলা,
স্বযুনা, গান্ধারী, হস্তিজিন্তা, পৃখা, যশা, অলফুষা,
হস্ত্ ও শ্ছিনী। এই দশ নাড়ী প্রাণবহা বলিয়া
পরিকীর্তিত হইয়াছে।

প্রাণ, অপান, সমান, উদান, ব্যান, নাগ, কুর্মা, কুকর, দেবদক্ত ও ধনঞ্জয় এই দশ্টীর মধ্যে প্রাণবায়ু প্রথম ও সকলের প্রভু এবং প্রাণিগণের উরস্থলে অবস্থানপূর্বক প্রাণকে প্রাণিত ও নিত্য আপুরিত করে। যেহেড়ু এই প্রাণ জীবসমাশ্রিত হইয়া, নিখাদ, উচ্ছাদ ও কাদ দাহায়ে প্ররাণ করে, এইজন্ম ইহার নাম প্রাণ। মামুষ যাহা আহার করে, মূত্রশুক্রবাহ বায়ু ভাহা অধন্থ করিয়া থাকে। এইজন্য তাহার নাম অপান। পীত, ভক্ষিত ও ছাদ্রাত এবং রক্ত, পিত কফ ও অনিল এই সকলকে সর্বশরীরে সমান-ভাবে নীত করে, এইজন্য সমান বায়ু নাম হই-शांदि । (यद् कृ छेनानवाशु बक्त ७ व्यवह स्थानिक, নেত্র রাগ ও প্রকোপন উদ্ভাবিত এবং মর্ম্মদকল উদ্বেজিত করে, এইজন্য ইহার নাম উদান হইয়াছে। ব্যান বায়ু অঙ্গ বিনির্দ্ধিত ও ব্যাধি প্রকোপিত করে, এইজন্য উহাকে ব্যান বলে। যাহা ছারা উদ্গার হয়, তাহার নাম নাগ। দারা উন্মীলন হয় তাহার নাম কৃশ্ম, যাহা দারা আহার নিষ্পন্ন হয়, তাহার নাম কুকর, যাহা দারা জ্ঞ্ভণ হয়, তাহার নাম দেবদন্ত এবং যে বায়ুষোনে প্রতিষ্ঠিত, তাহার নাম ধনঞ্জয়। এই ধনঞ্জয়, মৃত্যু হইলেও, ত্যাগ করে না।

জীব উল্লিখিত ধনজয় সহায়ে দশ প্রকারে
নাড়ীটকে প্রয়াণ করে। ঐ দশ প্রকারের নাম যথা,
সংক্রোন্তি, বিযুব, দিন, রাজি, উত্তরায়ণ, দক্ষিণায়ন
অধিমাদ, য়ণ, ঊন ও ধন। তদ্মধ্যে দক্ষিণকে
উত্তর, বামকে দক্ষিণ, হিকাকে উনরাত্র, বিজ্জিকাকে অধিমাদ, কাদকে য়ণ, নিখাদকে ধন এবং
মধ্যস্থলকে বিযুব কহে।

মধ্যম অঙ্গে স্ব্লা, বাম অঙ্গে ইড়া, দক্ষিণ

আংক পিক্লা এবং উদ্ধে প্রাণ প্রতিষ্ঠিত আছে। হে বিপ্র! এই প্রাণকে দিন ও অপানবায়ুকে রাত্রি বলে। এই রূপে একবায়ু দশ রূপে বিভক্ত হইয়াছে।

দেহমধ্যন্থ আয়ামকে সোমগ্রহণ ও দেহাতিতত্ত্ব আয়ামকে আদিত্যগ্রহণ বলে। যাবৎ
ঈিশেত, তাবৎপরিমাণে বায়ুদহায়ে উদর পূর্ণ
করিবে। এইরূপ দেহপূরক প্রাণায়ামকে পূরক
কহে। নিখাস ও উচ্ছ্বাদবিবর্জ্জিত হইয়া, দর্কাভার পিধানপূর্কক সম্পূর্ণ কুস্তবং অবস্থিতি
করিবে। এইরূপ প্রাণায়ামের নাম কুস্তক।
অনস্তর মন্তবিৎ ব্যক্তি একমাত্র খাস সহায়ে উর্জদিকে বায়ুমোচন এবং উচ্ছ্বাদযোগযুক্ত হইয়া,
দেই উদ্ধ্বিয়ুকে বিরেচন করিবেন।

যেহেভূ, স্বদেহস্থ শিব স্বয়ং উচ্চরিত হয়েন,
সেইহেভূ ভাঁহাকেই তত্ত্ববিদ্গণের জপ বলিয়া
থাকে। যোগীন্দ্র পুরুষ দিনরাজির মধ্যে তূই
অর্ত একসহত্র ছয় শত বার জপ করিবে। অজপানাল্লী গায়জী ব্রহ্মবিস্কুরও মহেশ্বরী। এই অজপা
জপ করিলে, পুনরায় জান্মতে হয় না। এই
অজপাকে চন্দ্রায়ি রবিসংযুক্ত আদ্যা কুণ্ডাল্লিনী
বলে। ইনি হুংপ্রদেশে অঙ্কুরাকারে অবস্থিতি
করেন, জানিবে। এই স্থানেই স্গাবলম্বনসংঘ্
টিত স্প্রিভাস হইয়া থাকে এবং এই স্থানেই অয়তফরণ হইতেছে। সাত্তিকাত্তম পুরুষ উহা চিন্তা
করিবেন।

দিনি দেহত, তিনি সফল এবং যিনি দেহবজ্জিত, তিনি নিজ্জা। যিনি হংস হংস এই জিংশং কলাযুক্ত প্রাদাদ যাঁহার পরিজ্ঞাত নাই,
প্রকার বাক্য প্রয়োগ করেন, তিনি সদাশিব দেবহংস। তিলে যেমন তৈল এবং পুষ্পে যেমন গন্ধ রূপ, যিনি ওঁকার, গায়ত্তী ও রুদ্রাদি দেবতাকে
সন্নিহিত আছে, পুরুষের দেহে তেমনি হংসরূপী বিশিক্ষরণ অবগত, ভাঁহাকেই শুরু বলে। যিনি

দেব বাহাভান্তর ব্যাপিয়া অবস্থিতি করেন।
হাদয়ে ব্রহ্মা, কণ্ঠে বিষ্ণু, জামুতে রুদ্র, ললাটে
মহেশ্বর এবং প্রাণাগ্র নামে বিদিত শিবের অস্তে
পরাপর, এইরূপে যিনি পঞ্চধা দেহে বিরাজমান,
তাঁহাকে সকল বলে, আর তদিতর নিজল নামে
অভিহিত।

যাহাঁতে আত্বা প্রদন্ধ হয়, দেই প্রাদাদনাদি উত্থাপিত করিয়া, যদি শততস্তু অপ করা যায়, তাহা হইলে, যোগযুক্ত পুরুষ ছয়মান মধ্যে দিছি লাভ করিতে পারেন, তাহাতে সংশয় নাই। সমাগম পরিজ্ঞাত হইলে, দর্ব্বপাপ ক্ষয় হইয়া থাকে এবং ছয় মানেই অণিমাদি গুণৈখাৰ্য্য প্রাপ্ত হওয়া যায়। তুল, সূক্ষা ও পর এই ত্রিবিধ প্রাদাদ আমি উল্লেখ করিয়াছি। হ্রস্থ, দীর্ষ ও প্লুত এই তিন প্রকারে প্রাদাদ লক্ষ্য করিবে। তত্মধ্যে হ্রস্থ পাপ দথ্য ও নার্য মোক প্রদান করে; আর মন্তকে বিন্দুবিভ্ষিত প্লুত আপ্যায়িত করিয়া থাকে। হ্রস্থ প্রাদাদের আদি ও অন্তে ফট্কার বিনিয়োজিত হইলে, মারণে উপকারী হইয়া থাকে।

যণাবিধানে আসনবন্দনপূর্বক দেবের দক্ষিণা মূর্ত্তি পঞ্চলক জপ করিবে। জপান্তে দশসাহক্রেক শ্বতহোম করা বিধি। এই রূপে আপ্যামিত মন্ত্র বশ্য ও উচ্চাটনাদি করিয়া থাকে।
যাহার উর্দ্ধ শৃত্য, অধঃ শৃত্য ও মধ্য শৃত্য, দেই নিরাময়
ত্রিশৃত্যকে যিনি জানেন, তিনি নিশ্চয়ই মুক্ত
হয়েন। পঞ্চমন্ত্ররূপ মহাদেহ বিশিষ্ট ও অফ্টত্রিংশৎ কলাযুক্ত প্রাদাদ বাঁহার পরিজ্ঞাত নাই,
তাঁহাকে আচার্য্য বলা যাইতে পারে না। এইরূপ, যিনি ওঁকার, গায়ত্রী ও রুদ্রাদি দেবতাকে
বিশিক্টরূপ অবগত, ভাঁহাকেই শুকু বলে। যিনি

এই সকল প্রকৃত রূপে পরিজ্ঞাত হইয়া, শিষ্যকে যথায়থ হৃদগত বৃথাইতে পারেন, তিনিই উত্ম গুরু বা আচার্য্য। শিষ্য ভক্তি ও শ্রহ্মাসহকারে ঐরূপ গুরুর নিকট উপদেশ গ্রহণ করিবে।

মন্ত্র দাক্ষাৎ মহাদেব ও দাক্ষাৎ মৃত্তি, যিনি ইহা অবগত, তিনিই যথাৰ্থ জ্ঞানী। মন্ত্ৰ সিদ্ধ বা আপ্যায়িত হইলে, তৎসহায়ে সৰ্বভিষ্টি সাধন করা বাইতে পারে। মন্ত্রের আদিতে মহাদেব, মধ্যে বিষ্ণু ও অস্তে ত্রহ্মা। যাহা মনন করা যায়, যাহা দারা, ভাহাই দিদ্ধ হইয়া থাকে ভাহার নাম মন্ত্র। মন্ত্রের এই গুঢ় রহস্থ বিদিত হইলে, সমস্তই বিদিত হওয়া যায়। ওফার মূল-মন্ত্র। ইহাতে সৃষ্টি, স্থিতি ও পালনী শক্তি প্রতি-ষ্ঠিত আছে। হুতরাং, মন্ত্র দাক্ষাং হরি, হর ও ব্ৰহ্মা। যিনি ইহা অবগত হইয়া, মন্ত্ৰের আপ্যা-য়নে সমর্থ তিনিই প্রকৃত আচার্যাপদের উপ-যুক্ত। শিষ্য ভক্তিপত হৃদয়ে শ্রদ্ধানহকারে শাস্ত ও প্রয়তচিত্তে ঐরপ আলার্য্যের নিকট উপ-प्रिके इहेर् बबर वर्ता छः कतरा मख मानरमत मम्-চিত যত্ন ও চেষ্টা করিবে। মন্ত্রই সাক্ষাং গুরু এবং গুরুই দাকাৎ হরি। স্তরাং মন্ত্র ব্যবগত হইলে, হরিকে জানিতে পারা যায় এবং তৎ-প্রভাবে উক্তি, মুক্তি, আয়ু, আরোগ্য, সোভাগ্য ও সমৃদ্ধি প্রভৃতি লাভ হইয়া থাকে, সন্দেহ নাই।

ইত্যাথেরে আদি মঙাপুথাণে মন্তমাহাত্মানামক পঞ্চাশ-দ্ধিকশতভ্ন অধ্যায় সমাপু।

একপঞ্চাশদ্ধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, যিনি ওঙ্কার অবগত, তিনিই যোগী এবং তিনিই হরি। এই ওঙ্কার সকল মন্ত্রের সার ও সর্বাভীষ্টসাধক। এইজন্য ওঙ্কার অভ্যাস করিবে। সকল মন্ত্র প্রয়োগেই ওঙ্কার অভ্যাস করিবে। সকল মন্ত্র প্রয়োগেই ওঙ্কার প্রথম বলিয়া পরিগণিত। যে কার্ম্য ওঙ্কারপরিপূর্ণ, তাহাই সিদ্ধ বা পূর্ণ হয়, তদিতর সর্ববিধা অসিদ্ধ।তিনটি অব্যয় মহাব্যাহৃতিই ওঙ্কারপ্রবিধা অসিদ্ধ।তিনটি অব্যয় মহাব্যাহৃতিই ওঙ্কারপ্রবিধা অসিদ্ধ।তিনটি অব্যয় মহাব্যাহৃতিই ওঙ্কারপ্রবিধা অসিদ্ধ।তিনটি অব্যয় মহাব্যাহৃতিই ওঙ্কারপর্বিধ প্রয়োজিত হইয়া থাকে। ত্রিপদা সাবিত্রী সাক্ষাৎ ব্রহ্মার মূথ, জানিবে। যে ব্যক্তি তিন বৎসর প্রতিদিন অতক্রিত হইয়া, এই সকল অধ্যান করে, সে বায়ু ভূতও আকাশরূপী হইয়া, পরব্রহ্ম প্রাপ্ত হয়।

একাক্টরই পরত্রহ্ম, প্রাণায়ামই পরম তপস্থা, সাবিত্রীই সকলের শ্রেষ্ঠ এবং মৌন অপেক্ষা সত্যই বিশিষ্ট।

শতবার গায়ত্রী জপিলে পাপনাশ, দশবার জপিলে স্থারালয় প্রাপ্তি এবং একশত আটবার জপিলে সংসারসাগর উত্তীর্ণ হইয়া থাকে। রুদ্রকুষাগুঙ্গপ অপেক্ষা গায়ত্রী সর্ববিথা প্রেষ্ঠ। গায়ত্রীর পর জপ নাই এবং ব্যাহ্নতির সমান হোম নাই। গায়ত্রীর অর্জপাদ, ঝগর্জ এবং ঝক্ এই সকল আর্ভি করিলে, প্রক্ষহত্যা, সুরাপান, স্বর্গন্তেয় ও গুরুত্রগমন এই সকল পাপে পরিহারপ্রাপ্তি হইয়া থাকে। পাপ করিলে, তিলহোম ও গায়ত্রী জপ তাহার সাক্ষাৎ প্রতিকার নির্দিষ্ট হইয়াছে। উপবাস করিয়া, সহস্রবার গায়ত্রী জপ করিলে, সমস্ত পাপ বিনষ্ট হইয়া থাকে। লক্ষবার জপ করিলে, গোহত্যা, পিতৃহত্যা, মাতৃহত্যা, ব্রক্ষা-

হত্য, গুরুতয়গমন, স্বর্ণচুরী ও স্থরাপান প্রভৃতি পাতক দকল বিদ্রিত হয়। অথবা, স্নান করিয়া, শতবার অন্তঃদলিলে জ্বপ করিলে, ঐ দকল পাপে পরিহার প্রাপ্ত হওয়া যায়। কিংবা, শত বার জপ করিয়া, জলপান করিলে, দমন্ত পাপ নন্ট হয়।

পুনশ্চ, শতবার গায়জী জপ করিলে, পাপনাশ এবং সহস্রবার জপ করিলে, উপপাতক
সমস্ত পর্যুদন্ত হয়। ,আর, কোটিজপ করিলে,
সর্বাভীউসিদ্ধি এবং দেবছ ও রাজত্ব প্রাপ্তি
হইয়া থাকে। প্রথমে ওক্ষার ও পশ্চাৎ ভুভূবঃয়ঃ উচ্চারণ করিবে। বিশ্বামিত্র ঋষি, গায়ত্রী
ছন্দ, সবিতা দেবতা এবং জপে ও হোমে বিনিয়োগ। এইরূপে গায়ত্রীপ্রয়োগ উদাহত হইয়াছে।

অগ্নি, বায়ু, রবি, বিচ্যাৎ, যম, জলপতি, গুরু, পৰ্জন্ম, ইন্দ্ৰ, গন্ধক, পূষা, মিত্ৰ, বৰুণ, স্বন্ধী, বস্থাণ, মরুদ্যাণ, শশী, অঙ্গিরা, বিশ্ব, অস্থিনীকুমার রুদ্র, ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও অন্তান্য সমুদায় দেবতা গায়ত্রী-জপ কালে অভিহিত হইলে, পাপবিনাশ করেন। পীত, শ্যাম, কপিল, মরকত, আগ্রেয়, স্বর্ বৈছ্য়ং, ধৃত্র, কৃঞ্চ, রক্ত, গৌর, ইন্দ্রনীলভ, স্ফাটিক, স্বর্ণাণ্ডান্ত, পদারাগ, হেমধুমা, রক্তনীল, রক্তকৃষ্ণ, স্বর্ণভ, শুক্রকৃষ্ণ, পালাশাভ, এই দকল যথাক্রমে গায়ত্রীর বর্ণ। গায়ত্রীর ধ্যান করিলে, পাপনাশ ও হোম করিলে, দর্ব্বাভীষ্ট দিদ্ধ হয়। গায়ত্রীসহায়ে তিলহোম করিলে, সমস্ত পাতক প্রকালিত হইয়া থাকে। শান্তিকাম ব্যক্তি যব দারা, আয়ুকাম ব্যক্তি গুত দারা, ব্রহ্মবর্চসাম ব্যক্তি পয় ছারা, পুত্রকাম ব্যক্তি দধি ছারা, ধান্তকাম ব্যক্তি ধান্ত দারা, গ্রহণীড়ার উপশান্তি- কাম ব্যক্তি কাঁরিরক্ষের সমিধ দারা, ধনকাদ ব্যক্তি বিশ্ব দারা, জীকাম কমল দারা, আরোগ্য-কাম দুর্বা দারা, গুরুৎপাতবিনাশকাম ঐ, সোভাগ্যকাম গুগুগুল দারা,এবং বিদ্যাকাম ব্যক্তি পায়দ দারা গায়ত্রীসহায়ে হোম করিবে। অযুত হোম করিলে, উক্তদিদ্ধি, লক্ষ্ণহোম করিলে, মনোবাঞ্চা পূর্ণ এবং কোটিহোম করিলে, ত্রহ্মবধ-মুক্তি, কুলের উদ্ধার ও বাহ্মদেবত্ব প্রাপ্ত হইয়া থাকে। গ্রহ্মজ্ঞপুরঃসর বা অযুত্রমুথ হোম করিলে, অর্থদিদ্ধি সংঘটিত হয়।

প্রথমে গায়ত্রীর আবাহন, পরে ওয়ার আভাদ, অনন্তর ওয়ার স্মরণপূর্বক শিথাবন্ধন করিবে। পুনরায় আচমন করিয়া, হৃদয়, নাভি ও ছই কম স্পর্শ করিবে। প্রগবের ঋষি ত্রহ্মা,গায়ত্রী ছল্দ, দেবতা পরমাস্থা অগ্রিবিনিয়োগ সকল কার্য্যে। তুমি শুরুবর্ণা, অগ্রিমুখী, দিব্যভাবসংযুক্তা, কাত্যায়নের সগোত্রা, ত্রিলোকীর লোক তোমার বরণ করে। তুমি পৃথিবীর আধারসংযুক্তা, তুমি অক্ষসূত্রধারিণী। তুমি দেবী। তুমি পামাসনগতা। তুমি শুভা। ওং, তুমি তেজ, তুমি মহ, তুমি বল, তুমি ভাল। ওং, তুমি তেজ, তুমি মহ, তুমি বল, তুমি দিবিগ্র, তুমি দেবগণের ধান, তুমি বিশ্ব, তুমি বিশায়্র, তুমি সর্কা ও সর্কায়্র; ওং অভিভূঃ। হে দেবি! হে বরদে। আগমন কর। আমার জপে সন্ধিহিত হও। ইত্যাদি বিধানে গায়ত্রীর আবাহন করিবে।

সমস্ত ব্যাহ্নতিরই ঋষি প্রজাপতি এবং ব্যস্ত্যা বা সমস্তা সকলেরই ত্রাহ্ম অকর ওং। মিশ্বামিত্র, জমদয়ি, ভরদ্বান্ত, গোতম, অত্রি, বশিষ্ঠ, কাশ্যপ, অমি, বায়্, স্ব্য, ব্হস্পতি, বরুণ, ইন্দ্র বিষ্ণু, ইহারা যথাক্রমে ব্যাহ্নতিসকলের দেবতা এবং গায়ত্রী, উষ্টিক, অমুষ্টুপ, বৃহতী, পংক্তি, ত্রিষ্টুপ ও জাতি এই সকল যথাক্রমে তাহাদের ছন্দ এবং প্রাণায়াম ও হোম এই ছুই স্থলে ইহাদের বিনি-য়োগ হইয়া থাকে। আপোহিষ্ঠা, ক্রপদাদি, হিরণ্য-বর্ণা ও পাবমানী ইত্যাদি ঋক্সহায়ে অন্ত বিশ্রেষ উৎক্ষেপণ করিলে, আজ্মার্ক পাপজয় ছইয়া থাকে। অন্তর্জলে ঋতঞ্ছ ইত্যাদি বলিয়া, তিনবার অধ্যর্ষণ এজপ করিবে; আপোহিষ্ঠা ইত্যাদি ঋকের সিন্ধুদ্বীপ ঋষি, গায়ত্রী ছন্দ, দেবতা জল এবং বিনিয়োগ মার্জনে ও অধ্যমেধ যজ্ঞান্তর্মানে। অধ্যর্ষণই অধ্যর্ষণসূক্তের ঋষি, অসুক্রুপ ছন্দ ও ভাবরত্ত দেবতা।

আপজ্যোতিরস ইত্যাদি গায়ত্রীর শির, প্রজা-পতি ঋষি, ছন্দ নাই, ত্রন্ধা অগ্নি, বায়ু ও সূর্য্য দেবতা। প্রাণরোধ হইতে বায়ু, বায়ু হইতে অগ্নি, অগ্নি হইতে জল ও জল হইতে শুদ্ধি আবি-ভূতি হয়। অনন্তর আচমন আচরণ করিবে।

চিত্রংদেব ইত্যাদি ঋচকে কোৎদ ঋষি, ত্রিউপুথ ছন্দ ও সূর্য্য দেবতা। উত্নত্যং জাতবেদদ, ইত্যাদিতে প্রক্ষে ঋষি, গায়ত্রী ছন্দ, সূর্য্যদেবতা, অতিরাত্রে নিয়োগ ও অগ্নীষোম নিয়োগক।

ইত্যায়েরে আদি মহাপ্রাণে সন্ধ্যাবিধি নামক একপঞ্চান-দ্যকিশ্ভতম অধ্যায় সমগ্রে।

দ্বিপঞ্চাশদ্ধিকশতত্ত্ব অধ্যায়।

ম্প্রি কহিলেন, এই রূপে সন্ধাবিধি সমাপ্ত করিয়া গায়ত্রী জপ ও স্মরণ করিবে। গায়মান গুরু ফেছেতু শিষ্য, স্ত্রী ও প্রাণ এই সকলকে জ্ঞান করেন, এইজন্ম ইহাঁর গায়ত্রী নাম হইয়াছে। আর, যেছেতু সবিভাকে প্রকাশ করেন এইজন্য

ইহার নাম সাবিত্রী। বাগ্রূপা বলিয়া ইহার জন্ততর নাম সরস্বতী। তৎশব্দে জ্যোতিস্বরূপ ক্রন্ধা।
ভর্গঃ শব্দে তেজ, বরেণ্য শব্দে সমস্ত তেজ
অপেকা প্রের্ছ বা পরমপদ অথবা স্বর্গ ও অপবর্গ
লাভের অভিলাষী পুরুষগণ সর্বনাই যাহার বরণ
করেন, যেহেতু রুণ ধাতুর অর্থ বরণ করা। যিনি
জাগ্রহ ও স্বর্গাদিবর্জিভ, নিত্য, শুদ্ধ, বৃদ্ধ ও
অবিতীয়, সেই সত্যস্বরূপ সম্বরের ধ্যান করি।

অথবা, তৎশব্দে জ্যোতিঃস্বরূপ ভগবান্ বিষ্ণু,
যিনি সমস্ত জগতের জ্মাদির কারণ। কেই কেই
তৎশব্দে শিব,কেই শক্তি,কেই সূর্য্য এবং অমিহোত্রী
বৈদিকেরা তৎশব্দে অমিকেই নির্দেশ করেন।
কেননা, অমিপ্রভৃতিস্বরূপ বিষ্ণুই বেদাদিতে ক্রম্ম
বিলয়া গীয়মান হয়েন। তিনি জগতের প্রস্বকর্তা।
এইজন্ম তাঁহার নাম সবিতা। তৎশব্দে সবিতাস্বরূপ
বিষ্ণুরপরমপদ। কেই কেই বলেন, জ্যোতিঃস্বরূপ
সর্ববশক্তিমান্ বিষ্ণু স্বয়ং মহৎ আজ্যু প্রস্ব করেন
এবং পর্জ্জন্ম, বায়ু ও আদিত্য ইইারা শীত ও
উষণাদি লারা পাক করিয়া থাকেন। অগ্নিতে প্রদত্ত
আল্তি সম্যুগ্বিধানে আদিত্যে উপস্থিত হয়।
আদিত্য হইতে বৃদ্ধি, বৃষ্টি ইইতে স্ক্রম ও স্কর্ম
ইইতে প্রজ্ঞা সমুৎপন্ন হয়।

কোন কোন মতে তৎ শব্দে দর্কাব্যাপী ও
ভগ শব্দে জ্ঞান। এবং দবিতা শব্দে ব্রহ্মা বিষ্ণু
মহেশ্বররূপী আদিদেবের জ্ঞান
হইতেই সংসারে সকলের বৃদ্ধি প্রেরিত হইয়াছে।
অর্থাৎ তিনি বৃদ্ধি দিয়াছেন, এইজন্য আমরা
বৃবিত্তে পারি। যদি তিনি আমাদের দৃষ্টি করিয়াই
নির্ত্ত হইতেন, তাহা হইলে কার্চ লোট্রাদি জড়ের
সহিত আমাদের হস্তপদাদি মাত্র প্রভেদ হইত।
আমাদের ইন্দ্রিয় সকল চালক অভাবে অ অ

ব্যাপার পরিশৃত হইত। কিন্তু তিনি বৃষ্ণিবার শক্তি निहा, जामानिरगंद्र मकत ज्ञांव शूर्व कहिया-८इन। এইজয় তাঁহার ঐ জ্ঞান বরেণ্ড য়বলিয়া. অভিহিত হইয়াছে। দিব ধাতুর অর্থ লীলা। ভিনি লীলাময়,এইজন্ম, ভিনি দেবশব্দে বিখ্যাত। অথবা, যিনি পরন পূজ্য, তাঁছাকে দেব বলে। কেননা, তাঁহা অপেকা পূজ্য আর কেহ নাই। তিনিই দকলের পূজা। তিনিই আত্মাও তিনিই প্রভু: তিনিই আদিত্যের অন্তরে ভর্গ নামে বিরাজ করেন। জন্মমৃত্যুনিরাস, ত্রিবিধচুঃখ-বিনাশ ও মুক্তিলাভকামনায় ধ্যানপরায়ণ হইয়া, সূর্য্যমন্তলমধ্যে বিরাজমান সেই তেজোরূপী পুরু-ষকে দর্শন করা কর্ত্তব্য। বিষ্ণুর যে পরম্পদ্ তাহাই চিৎস্বরূপ ব্রহ্ম, তাহাই তত্ত্বসি শব্দে অভিহিত। তাহাই জগৎপ্রস্বিতা দেবতার বর-ণীয় তেজ এবং তাহাই ভুরীয় নামে পরিগণিত। যিনি আদিত্যের অভ্যন্তরে পুরুষরূপে বিরাজ করেন, তিনিই আমি, তিনিই অনন্ত এবং তিনিই ভ্রন্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর। তাঁহার ধ্যান করি। তিনিই সর্ব্বদা জান ও কর্মাদি প্রবর্ত্তিত করেন। তাঁহা হইতেই জীবন ও চেতনা সঞ্জিত হয় : তিনিই আলোক ও অন্ধকারের কর্তা। তাঁহাকে ধ্যান করি !

ইত্যাথেরে আদি মহাপুরাণে গায়ত্রীনির্মাণনামক ছিপঞাশ-দ্ধিকশতভন অধ্যায় সমাপ্ত।

ত্ৰিপঞ্চাশদধিকশততম অধ্যায়।

শ্বা কহিলেন, ভগবান্ বশিষ্ঠ লিক্সমূর্ত্তি মহা-নেবের গায়ত্তীসহক্ত তত্ত্ব করিয়া, যোগবল ও নির্বাণস্বরূপ পরব্রুল প্রাপ্ত হইয়াছিলেন।

(वननिक्रक नम-कनकनिऋटक नग्रक्षात्र। কার। প্রমলিঙ্গকে নমকার। **८वाप्रिमिक्टिक** নমকার। সহত্রলিঙ্গকে নমকার। বহিন্দীসকে ন্মকার। পুরাণলিক্তে ন্মকার। আইভিলিক্তে নমস্কার। পাতাললিঙ্গকে नमकात् । লিঙ্গকে নসকার। রহস্থালিঙ্গকে নমকার। সঞ্জ-ছীপোর্ছ লিক্তে নমক্ষার। সর্বাছলিক্তে নম-স্থার। সর্বালোকাত্মলিঙ্গকে নমস্কার। অব্যক্ত-निक्रांक नश्कात । वृद्धिनिक्रांक नशकात । अर्-কারলিঙ্গকে নমস্বার। ভূতলিক্ষকে নমস্কার। ইন্দ্রিয়লিঙ্গকে নমস্কার। তত্মাত্রনিঙ্গকে নমস্কার। পুরুষলিঙ্গকে নমস্কার। ভাবলিঙ্গকৈ নমস্কার। রজোর্দ্ধলিঙ্গকে নমস্কার। সত্তলিঙ্গকে নমস্কার। ভবলিঙ্গকে নমস্কার। ত্রৈগুণ্যলিঙ্গকে নমস্কার। অনাগতলিঙ্গকে নমকার। তেকোলিঙ্গকে নম-কার। কয়্র্দ্ধলিঙ্গকে নমস্কার। শ্রুতিলিঙ্গকে নমস্বার। অথব্রলিঙ্গকে নমস্বার। সামলিঙ্গকে নমস্কার। যজ্ঞাঙ্গলিঙ্গকে নমস্কার। যজ্ঞানিজকৈ নমস্কার। তত্তিঙ্গকে নমস্কার। দেবাসুগত-লিঙ্গকে নমকার। হে দেব! হে মহাদেব! হে কামরূপ! হে মহেশ্র! আমাকে পর্ম যোগ,আত্মামুরপ অপত্য, অক্ষয় ব্রহ্মা ও নির্বাণ-শান্তি প্রদান করুন। আমি সংসারতাপে অতি-মাত্র দক্ষ হইয়া, আত্মার উদ্ধারকামনায় আপ-নারই শরণাপন হইলাম। আমাকে ধর্মে অক্ষয় মতি প্রদান ও আমার বংশকে অক্ষয় করুন।

অগ্নি কহিলেন, পূর্বের জ্রীপর্বতে ব**শিষ্ঠক**র্তৃক স্তুত ও তৃষ্ট হইয়া, ভগবান্ ভব **ভাঁহাকে** বর দিয়া, দেইস্থানেই অন্তর্হিত হয়েন।

ইত্যাধ্যেরে আনি মহাপুরাণে গায়নীসির্কাণ নামক ত্রিপঞ্চাল-দ্ধিক শশুভান অধ্যায় সম্প্রে।

চতুঃপঞ্চাশদধিকশততম অধ্যার।

পুৰুষ কহিলেন, রাজা ও দেবাদির অভিবেক-মন্ত্র কীর্ত্তন করিব। উহা ছারা অখনদন হয়। কুস্ত হইতে কুশোদকদহায়ে অভিষেক করিবে। তাহাতে সমস্ত অসিদ্ধ হয়। দেবগণ এবং ব্ৰহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর তোমাকে অভিবেক করুন। বাস্থদেব, দর্মধণ, প্রত্যুদ্ম ও অনিরুদ্ধ, ইহাঁরা তোমার বিজয় বিধান করুন। ইস্রাদি দশদিক্-পালগণ, রুদ্রে, ধর্ম, মৃত্রু, দক্ষ, রুচি ও আছা তোমার বিজয় বিধানে প্রবৃত্ত হউন। অত্রি, বশিষ্ঠ, সনক, সনন্দ, সন্ৎকুমার, অঙ্গিরা, পুলন্ত্য, পুলহু, ক্রডু, মরীচি, কশ্যপ ও অন্যান্য প্রজাপতিগণ ভোষার পালন করুন। প্রভান্তর বর্হিষদ ও অগ্নিছাভাগণ ভোমার রক্ষা করুন। জ্ব্যাদ, আজ্ঞাপ এবং লক্ষ্যাদি ধর্মবল্লভারা তোমারে অগ্নিগণের সহিত অভিবেক করুন। বছপুক্র কণ্যপের পরম প্রিয় আদিত্যাদি পুত্রগণ, কুশাখ ও অরিষ্টনেমির ভার্য্যাসকল, অখিন্যাদি দেবগণ এবং চন্দ্র ও পুলস্ক্যের পত্নীদকল তোমারে অভিষেক করুন। ভূতা, কপিশা, দংখ্রী, হুরদা, সরমা, দকু, শ্যেনী, ভাসী, ক্রেকিটী, গুতরাষ্ট্রী, শুকী, ইহাঁর। পুলস্তোর পদ্ধী। এতন্তিম অর্ক-দারথি অরুণ তোমারে রক্ষা করুন। আমতি. নিয়তি, রাত্রি, নিক্রা, উমা, মেনা, শচী, ধুমোর্ণা, নিখ তি, ইহাঁরা তোমার জয় সাধন করুন।

গোরী, শিবা, ঋদ্ধি, বেলা, নড্বলা, অশিক্রী, জ্যোৎস্না, বনস্পতি, মহাকল্ল, কল্ল, ময়ন্তর ও মুগদকল তোমারে অভিধেক করুন। দংবৎদর ও বৎদর দকল, অয়নম্বয়, ঋতু, মাদ, পক্ষ, দিন. রাত্রি, দক্ষ্যা, তিথি, মুহুর্ভ, কলা, কাঠা, ক্ষণ, লব ও দণ্ড প্রভৃতি কালাবয়ব দকল ভোমারে অভিবেক করুক। সূর্যাদি গ্রহণণ ও স্বায়স্কুবাদি
মন্ত্রকল্প তোমারে পালন করুন। স্বায়স্কুব,
স্বারোচিষ, উভমি, তামস, রৈবজ, চাক্লুব, বৈবস্বত,
অক্ষাপুত্র, সাবর্ণ ধর্মনন্দন, রুদ্রতনয়, দক্ষর, রোচ্য,
ও ভৌত্য, এই চতুর্দিশ মন্ত্র। ইহারা সকলে
ভোমাকে অভিষেক করুন। বিশ্বভৃক্, বিপশিচ,
স্রচিত্তি, শিখী, বিস্তু, মনোজব, ওজন্বী, বলি, রুষ,
ঋতধামা, দিবস্পৃক্, কবি, ইন্দ্র, রেবস্ত, কুমার,
বংসবিনায়ক, বীরভদ্র, নন্দী, বিশ্বকর্মা, পুরোজব, এই সকল প্রধান প্রধান দেবতা সমাগত
হইয়া তোমারে অভিষেক করুন।

(भवरेवम्) अधिनीवयः क्ष्योमि अछे वस्रः मून আফিরস ও বেদসকল সিদ্ধির জম্ম তোমারে অভিবেক করুন। আত্মা, আয়ু, মন, দক্ষ, মদ, প্রাণ, হবিত্মান্, গরিষ্ঠ ঋত, সত্যু, ইহারা ভোমারে 🖟 রক্ষা করুন। ক্রেডু, দক্ষ, বহু, সত্যু, কালকাম, ধুরি, ইহাঁরা তোমার বিজয় বিধান করুন। পুরু-রবা. মাদ্রব ও বিশ্বেদেবগণ, রোচন, অঙ্গারকাদি সূর্য্য, নিখাতি ও যম **তোমাকে** পালন,করুন। অজৈকপাৎ, অহিত্তপ্পি ধূমকেতু রুদ্রাত্মজগণ, ভরত, মৃত্যু, কাপালি, কিছিণী, ভবন, ভাবন, স্বজন্ম ও স্বজন, ভোমারে রকা করুন। ক্রভুগ্রবা, মৃদ্ধা, যাজন, অভ্যুগনা প্রদর, অব্যয়, দক্ষ, ভৃগুবর্গ ও দেবগণ, মনোমুমন্তা প্রাণ ও নবোপান ভোমারে অভিষেক করুন। বাঁতি-হোত্র, নয়, দাধ্য, হংদ ও নারায়ণ তোমারে রক্ষাকরুন। বিভু, প্রভু, ধাতা, মিত্র অর্য্যগা পূষা শক্ত বরুণ, ভগ, মুষ্টা বিবস্থান্ সবিতা ও বিষ্ণু এই দ্বাদশ আদিত্য তোমার বিজয়ে অভ্যু-থিত হটন।

একজ্যোতি, দিজ্যোতি, ত্রিজ্যোতি, চতু-ক্রোতি, সহস্রজ্যোতি, একশক্র, দিশক্র, ত্রিশক্র, ইক্র ও প্রতিমক্ত জগতের হৈতকারী এই সকল স্থরক্রেষ্ঠ ডোমারে অভিষেক কর্মন। মিত্র-দক্মিত, অমিন্ত, ঝতজিৎ, সত্যজিৎ, স্থ্যেণ দেন-জিৎ অতিমিত্র, অসুমিত্র, পুরুমিত্র, ঝত, ঝতবান্-ধাতা, বিধাতা, ধারণ, গুব, বিধারণ, ইক্রের পরম দথা ঈদৃক্ষ, অদৃক্ষ, এতাদৃক্, অমিতাশন, ক্রীড়িত্র, দদৃক্ষ, সরভ, ধর্তা, ধূর্য্য, ধূরি, রাম, কাম, জন্ম, বিরাট এই একোনপঞ্চাশৎ মরুৎ তোমাকে রক্ষা কর্মন।

চিত্রাঙ্গদ, চিত্ররথ, চিত্রদেন, কলি, উণায়ু, উত্তদেন, ধৃতরাষ্ট্র, নন্দ, হা হা হু হু, নারদ, বিখা-বস্তু, তুমুরু, এই দকল গন্ধর্ক বিজয়ের নিমিত্ত তোষাকে অভিষেক করুন। মেনকা স্থকেশী, দহজনী, ক্রতুষ্ণা, গ্লভাচী, বিখাচী, পুঞ্জিকস্থলা, প্রয়োচা, উর্বাণী, রস্থা, পঞ্চুড়া, তিলোভ্যা, চিত্রলেখা, লক্ষণা পুগুরিকা বারুণী এই সকল প্রধান প্রধান অপারা তোমারে অভিষেক করুক। প্রহলাদ, বিরোচন বলি, বাণ, বাণের পুত্র সকল এবং অভাত দানবগণ ও নিশাচরবর্গ ভোমারে অভিষেক করুক। হেতি, প্রহেতি, বিচ্যুৎ-ফার্জথু যক্ষ্য দিদ্ধাত্মক, মাণিভদ্র নন্দন, পিঙ্গাক্ষ্ ত্যুতিমান্ পুষ্পাবন্ত, জয়াবহু, শভা, পদ্ম, মকর, কচ্ছপ, নিধি উদ্ধিকেশাদি পিশাচগণ ভুম্যাদি-বাসী ভূতগণ, মহাকাল ও নরসিংহ এবং মাভূকাগণ ইহাঁরা তোমারে অভিষেক করুন।

গুছ, ক্ষন্দ, বিশাথ, নৈগমেয়, ডাকিনীগণ, বোগিনীগণ, খেচরগণ, ভূচরগণ, গারুড়, অরুণ ও সম্পাতিপ্রমুখ খগগণ, সকলে সমাগত হইয়া তোমারে অভিষেক করুন। অনস্তাদি মহানাগ- গণ, শেষ, বাহুকি, তক্ষক, ঐরাবত, মহাপায়, কম্বল, অন্থতর, শহা, কর্কোটক, প্রতরাষ্ট্র, ধনপ্রয়, ক্মৃদ, ঐরাবণ, পায়, পুস্পদন্ত, বামন, হুপ্রতীক, অপ্রন, এই দকল নাগ দর্বদা তোমারে রক্ষাকরন। পিতামহের হংস, মহাদেবের র্যস্ত, তুর্গার দিংহ, যমের মহিষ, অন্থপতি উচ্চঃপ্রেরা, ধরন্তরি, কৌন্তভ, শহারাজ, বজ্র, শূল, চক্রে, নন্দক, এই দকল দর্বতোভাবে রক্ষাকরক। ধর্ম, চিক্রেণ্ড, দণ্ড, তোমারে পিঙ্গল, মৃত্যু, কাল, বাল-বিল্যাদি মুনিগণ, ব্যাস ও বাল্মীকিম্ব্যু মহর্বিগণ, নারদাদিপ্রম্থ দেবর্বিগণ, বিশ্বামিত্রপ্রস্থ রাজর্বিগণ ও বশিষ্ঠাদিম্ব্যু ত্রক্ষর্বিগণ, তোমারে অভিষেক কর্মন।

পূথু, দিলীপ, ভরত, গুল্বস্তু, শত্রুজিৎ, বলী, মল, ককুৎস্থ, অনেনা, যুবনাশ্ব জয়ক্রথ, সান্ধান্তা, মুচুকুন্দ, পুরুরবা, এই দক্ষ রাজর্ষি তোমারে পালন করুন। বাস্তদেবগণ, পঞ্চিংশৎ তত্ত্ব, রুক্তিম শিলাভোম পাতাল, নীলমূর্তি, পীত-রক্ত, ক্ষিতি, খেতভৌম, রদাতল, ভূর্লোক, ভূব-র্লোক ও জন্ম দীপাদি দীপসমূহ, তোমার বিজয় বহন করুক। উত্তরকুরু, রম্যক, হিরণ্যক, ভদ্রাশ্ব (कड़मान, वनाइक, इतिवर्ध, किन्शूक्रम, इल्रामीश, কশেরুমান্, তাত্রবর্ণ, গভন্তিমান্, নাগদীপ, দৌম্যক্, গন্ধৰ্ক, বৰুণ, ইহারা ভোমাকে পালন করুক। হিমবান্ হেমকুট, নিষঠা নীলা শেত, শুঙ্গবান্ যেক মাল্যবান্, গল্মাদন মহেন্দ্র, মলয়, সহ, শুক্তিমান, ঋকবান, বিদ্ধা পারিপাত্র ও অক্যান্য প্রধান প্রধান পর্বতবর্গ তোমারে শান্তি দান করুক।

श्चक्रत्वन, भागरतन, राजुर्स्तन, धार्थस्रायन, सङ्ख्या, रस्तिन, जाशुर्स्तन, शास्त्रस्रायन, छेशरतन, सङ्ख्या, ইতিহাস পুরাণ শিক্ষা কল্প ব্যাকরণ নিরুক্ত, জ্যোতিষ ছন্দ্র মীমাংসা, ন্যায়বিস্তর, ধর্মাণাস্ত্র, পুরাণ, সমুদায় বেদ, সমুদায় বিদ্যা সাংখ্য যোগ, পাশুপত পঞ্চাত্র, কুতান্তপঞ্চ গায়ত্রী শিবা তুর্গা, বিদ্যা, গান্ধারী ইহাঁরা তোমার শান্তিবিধান ও রক্ষা করুন। লবণসাগর, দধিদাগর, স্থরাদাগর, ইকুদাগর দর্পিদাগর তুগ্ধদাগর সাগর, পুকর, প্রয়াগ প্রভাস নৈমিষ গয়া-শির ত্রন্ধশির উত্তরমানস, কালোদক নন্দিকুগু, পঞ্চনদ ভৃগুতীর্থ প্রভাস, অমরকণ্টক, নির্মাল জম্ব-মার্গ, কপিলাশ্রম, কর্ণাশ্রম, গঙ্গাঘার, কুণাবর্ত্ত, विका, भोलभर्वेज, वहाइभर्वेज, क्रनथल, क्रांलक्षत्र, কেলার, রুদ্রকোটি, মহাতীর্থ বারাণদী, বদরী, বারকা, জীগিরি, পুরুষোত্তম, শালগ্রাম, বারাহ, দিঝুদাগরদঙ্গম, ফল্পতীর্থ, বিন্দুদর, করবীরাশ্রম, এই সকল প্রধান তীর্থ তোমারে অভিষেক করুন।

গঙ্গা, সরস্বতী, শতক্র, গগুকী, অচ্ছোদা, বিপাশা, বিতস্তা, দেবিকা, কাবেরী, বরুণা, নিশ্চিরা, গোমতী, পারা, চর্মাণুতী রূপা, মহানদী মন্দাকিনী, তাপী, পয়োক্ষী, বেণা, গোরী, বৈত-রণী, গোদাবরী, ভীমরখী, তুঙ্গভদ্রা, প্রাদী, চন্দ্র-ভাগা, শিবা, গৌরী, এই সকল নদী ভোমারে রক্ষা ও গাভিষেক করুক।

ধৃষ্টি, পুষ্টি, ক্ষমা, কান্তি, জী, ব্রী, ধৃতি, কৃতি, ঝিন্ধি, সমৃদ্ধি, বৃদ্ধি, শান্তি, দান্তি, যম, সংযম, নিযম, ধর্মা, নাায়, সত্যা, বিনয়, নয়, শীল, দয়া, কুপা, করুণা, অনুকম্পা, অনুগ্রহ, অক্রোধ, অমাৎসর্ব্যা, অলোভ ও অকাম, এই সকল প্রধান প্রধান ওণ ভোমারে অভিষেক ও রক্ষা করুক।
আকাশ, পাতাল, দিক্, বিদিক্, সাগর, পর্ব্বত, নদ, ব্রদ, বন, উপবন, কানন, নগর, গ্রাম, ইত্যাদি

সকলে সমবেত হইয়া,তোমারে অভিষেক করুক।
যজ্ঞ, দান, মহোৎসব, আনন্দ, আহলাদ, প্রীতি,
সন্তোব, হুখ, হর্ব, ইহারা তোমারে অভিষেক
করুক। তুমি স্বপদে, হুথে প্রতিষ্ঠিত হইয়া,
প্রজাকুলের মঙ্গল বিধান কর। ভোমার শান্তি
হউক, জয় হউক, সিদ্ধি হউক ও রদ্ধি হউক।
তোমার শাদনে ও প্রসাদে পৃথিবী প্রসন্ম ইউন।

ইত্যায়েরে আদিমহাপুরাণে অভিষেক্ষরনামক পঞ্চ-পঞ্চাশ্যাক শততম অধ্যার সমাপ্ত।

পঞ্চপঞ্চাশদধিকশততম অধ্যায়।

পুদ্ধর কহিলেন, কোন্স্থর শুভ ও কোন্ স্থা অশুভ, কীর্তন করিব। যাহা দারা ফুঃস্থর-হরণ হয়, তাহাও বলিব।

নাভি বিনা শরীরের অন্যান্য অংশে ড়ণ বৃক্ষা-দির জন্ম, মস্তকে কাংস্চূর্ণন, মুগুন, নগুড়া, মলিন বস্ত্র পরিধান, অভ্যঙ্গ, পঙ্কদিশ্বতা, উচ্চ হইতে পতন, বিবাহ, গীত, তন্ত্রীবাদ্য বিনোদ, দোলা-রোহণ, পদ্ম ও লোহার্ল্জন, দর্পবধ, রক্তকুত্বম বৃক্ষপ্রকলের ছেদন, চণ্ডালহত্যা, বরাহহত্যা, গৰ্দভহত্যা, উষ্ট্রহত্যা, কুকুবহত্যা, আরো-হণক্রিয়া, পক্ষিমাংসভক্ষণ, তৈলপান, কুশরা-হার, মাতৃজঠরে প্রবেশ, চিতারোহণ, শক্রধ্বজের পতন, শশিসূর্য্যের পতন, দিব্য আন্তরিক্ষ ও ভৌম উৎপাত দর্শন, দেব দ্বিজাতি রাজা ও গুরুর কোপ, নর্ত্তন, হদন, তন্ত্রীবাদ্যবিহীন বাদ্যদকলের বাদন, স্রোতোবহের অধোগমন, গোময় সলিলে পক্ষোদকে ও মদীতোয়ে স্নান, কুমারীর আলি-ক্ষন, পুরুষের মৈথুন, স্বগাত্রছানি, বিরেক, বমন-ক্রিয়া, দক্ষিণ দিকে গমন, রোগাভিভব, কলোপ-

হানি, ধাতুভেদন, গৃহপতন, গৃহদন্মার্জন, পিশাচ ক্রব্যাদ বানর ও চণ্ডালাদির দহিত ক্রীড়া, পরাভি-ভব, তজ্জনা ব্যদনোদ্ভব, কাষায় বন্ত্র পরিধান, কাষায়বস্ত্রধারণানন্তর ক্রীড়া, তৈলপান ও তৈলা-বগাহন ও রক্তমাল্যাকুলেপন ইত্যাদিকে অশুভ স্থা বলে। ইহাদের বিষয় না বলাই ভাল।

এই সকল হুঃস্থপ্প দর্শন হইলে, স্নান, দ্বিজা-চ্চন, তিলসহায়ে হোম, হরি হর ব্রহ্মা ও গণেশের পূজা, সূর্য্যার্চন, স্তৃতিপাঠ,পুংসূক্তাদি জপ ইত্যাদি বিবিধ সংকার্য্যের অনুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হইবে।

প্রথম যামে স্বপ্ন দেখিলে, সংবৎসরে তাহার ফল হয়। বিতীয় যামে হয় মাসে, তৃতীয় যামে তিন মাসে চতুর্থ যামে অর্দ্ধমাসে এবং অরুণোদয়ে স্বপ্ন দেখিলে, দশ দিনে তাহার বিপাক সংঘটিত হয়। একরাজিতে একবার শুভ, আরবার অশুভ স্বপ্ন দেখিলে, পশ্চাৎ যাহা দেখা যায় সেই স্বপ্নেরই ফল হইয়া থাকে, এইপ্রকার নির্দিষ্ট হইয়াছে। অতএব শুভস্পন্ন দর্শন হইলে, আর শয়ন করা প্রশস্ত নছে। শুভস্বপ্নের লক্ষণাদি যথা,

শৈল, প্রাদাদ, নাগ, অশ্ব ও বৃষ্টে আরোহণ, গগনে শ্বেতপুস্পর্ক্ষ দর্শন, নাভিতে ক্রমত্ণোদ্তব, বহুবাহুতা, বহুশীর্ষতা, পলিডোছেব, স্বশুক্ষ বস্ত্রপরিধান,চন্দ্র সূর্য্য ও তারা-প্রাহণ, শক্রপজালিঙ্গন, ধ্বজোচ্ছায়ক্রিয়া, অস্থুধারা গ্রহণ, শক্রগণের বিক্রিয়া, বিবাদে দূয়তে ও সংগ্রামে জয় লাভ, আর্দ্রমাংসভক্ষণ, পায়সপান, ক্রধিরদর্শন, ক্রধিরশ্বান, স্থ্রা ক্রধির মদ্য বা ক্রার্র পান, ভূমিতে অস্ত্রবিচেইন, নির্মান আকাশ, মুখ ছারা গো ও মহিয়ীগণের দোহন, সিংহী, হস্তিনী ও বড়বাগণেরও ভক্রপকরণ, দেবছিজের প্রাাদাদ

প্রাপ্তি, গুরুগণের অনুগ্রহলাভ, সলিলে অভিষেক, গোশৃরপরিচ্যত জলে স্নান, চক্র পরিজ্ঞন্ট সলিলে অবগাহন; রাম! এই সকল স্থপ্ন পরস্থাশস্ত এবং রাজ্যলাভ সংঘটিত করে।

তুঃস্থা দর্শন করিলে, ভগবান্ নারায়ণের নাম গ্রহণ ও অর্কনা করিবে। কেননা, তিনি সকল মঙ্গলের মঙ্গল, সকল পাপের প্রণাশন ও সকল শান্তির মূলনিকেতন। তিনি প্রান্ত্র ইইলে, সকল পাপ শান্তি, সকল তাপ নিছ্বতি ও সকল তুঃধের অবদান প্রাপ্তি ইইয়া থাকে। এইজন্য শয়নে স্থারে বিপদে সম্পদে রোগে শোকে হর্ষে বিহাদে প্রমাদে অবদাদে ফলতঃ সকল সমরে ও সকল অবস্থায় তাঁহার নাম করিবে; পূজা করিবে; ধ্যান করিবে; স্মরণ করিবে; মনন করিবে; জপ করিবে ও স্তবগান করিবে। তিনি প্রশন্ত ইইলে সংগার প্রশন্ত হয়, সম্পেহ নাই।

ইত্যাগ্নেরে আদি মহাপুরাণে অপ্রাধ্যারনারক পঞ্চপকা-শদ্ধিক শতভ্য অধ্যার সমাপ্ত।

ষট্পঞাশতদধিক শততম অধ্যায়।

পুকর কহিলেন, যুক্ত ঔষধ; কৃষ্ণধান্য, কার্পাদ; শুক্তৃণ; গোময়; ধন; অঙ্গার; গুড়; সর্জ; মৃত্যাভূতে; নয়; অয়ঃ; পঙ্ক; চর্মা; কেশ; উন্মত; নপুঃশক
চণ্ডাল; শুপচ; বন্ধনপাল; গর্ভিনী জ্রী: বিশ্বা;
পিণ্যাকালি; মৃত; তুষ; ভত্ম; কপাল; আন্ধি; ভিন্ন
ভাণ্ড; বাদ্যধ্বনি; গমনসময়ে পৃতাহ্বান; সন্মুথে
থাকিয়া; য়াভ; এইপ্রকার বাক্য প্রয়োগ; কোথা
যাভ; থাক; য়াইও না; সেখানে মাইয়া তোমার
কি হইবে; ইত্যাদি অনিষ্ট শক্ত; ঘারাদিতে;
ক্রব্যাদ; বাহনগণের শ্বলন; শস্ত্ভঙ্গ; ঘারাদিতে;

শিরোঘাত; ছত্রবাসাধিপতন; এই সকল অমঙ্গল সংঘটন হইলে, ভগবান্ নারায়ণের পূজা ও স্তব দারা ভাঁহার শান্তি বিধান করিবে।

খেতপূপা পূর্ণকৃত্ত মাংস নংস্য দূরণক একমাত্র বৃদ্ধ ছাগ গো অখ হন্তী দেব প্রজ-লিত অধি দূর্কা আর্দ্রগোময় বেল্যা অর্ণ রোপ্য রক্ত বসা সিদ্ধার্থ মুদ্গ আর্ধ থড়গ ছত্র পীব রজোলিক রোদনবর্জ্জিতশব পল স্বত দধি পয় অক্ষত আদর্শ মাক্ষিক শন্থ ইক্ষ্ গুড়, শুভবাক্য, ভক্তবাদিত্র ও সঙ্গীত গন্তীর মেঘ-গর্জন তড়িৎ সানসীতৃষ্টি ফলতঃ এক দিকে সমস্ত শুভদর্শন ও অন্তাদিকে মনের সন্তোব যাত্রাদি কার্য্যে পরম প্রশস্ত।

> ইত্যাথেরে আদিৰহাপুণ্ণে নার্ল্যাধ্যারনামক বট্পঞাশদ্ধিকশততম অধ্যার সমাতঃ

স্প্রপঞ্চাশদধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, পুক্ষর যাহা কহিয়াছেন এবং রাম লক্ষণকে যাহা উপদেশ করিয়াছিলেন, সেই ধর্মাদিবর্দ্ধিনী বিজয়দায়িনী নীতি তোমারে কহিব।

রাম বিলয়াছিলেন, স্থায়ামুদারে অর্থের অর্জন, বর্জন ও রক্ষণ করিয়া, স্থায়ামুদারে সং-পাতে ছাহা দান করিবে; ইহাই চতুর্বিধ রাজ-র্ত্ত। বিনয়ই নয়ের মূল। শান্তনিশ্চয়দহযোগে বিনয়ের উৎপত্তি হয়।ইন্দ্রিজয়ই বিনয়। বিনয়যুক্ত হইয়া, রাজা পৃথিবী পালন করিবেন।

শাস্ত্র, প্রজ্ঞা, ধৃতি, দক্ষতা, প্রগল্ভ, ধারয়িফুতা, উৎসাহ, বাক্যদংযম, উদার্য্য, আপৎকালে
সহিষ্ঠা, প্রভাব, শুচিতা, মৈত্র, ত্যাগ, সত্য,

কৃতজ্ঞতা, কুল, শীল, দম এই সকল গুণ সম্পত্তির হেতু।

ইন্দ্রিয়সকল মত্ত হস্তীর ছায়ে, স্বভাবতঃ উদ্ধাম হইয়া হাদয়কে বিদ্রাবিত করিয়া, বিষয়ক্ষপ বিশাল অরণ্যে দতত ধাবনোমুথ হইতেছে। ভ্রানরূপ অকুশ দারা তাহাকে বশ করা অবশ্য কর্ত্তব্য। रय वाक्ति ७ विषयः चवछा वा चम्यायांश করে,দে শিরোদেশে প্রস্থালিত বহ্নি স্থাপন করিয়া निक्षा यात्र ; व्यवचा, शनरनरम <u>इर्डत उभनश्र</u> লখিত করিয়া জলে সম্ভরণ করে। শত্রু অগ্নি. জল, ইন্দ্রিয় ইহাদিপের কাহাকেই বিশ্বাস করিতে নাই। বিশেষতঃ সর্ব্বাপেক্ষা ইন্দ্রিয়ের শক্তি ও বেগ অধিক। যোগদিত্ব পরমর্ষিদিগকেও দহনা ইন্দ্রিয়বেগে বিচলিত হইতে দেখা যায়। ধৈর্য্য রূপ আলানে জ্ঞানরূপ শৃঙ্গলে বন্ধন না করিলে. ইন্দ্রিয়ন্ত্রপ মতহন্তীর বশীকরণ করা কথনই সাধ্য হয় না। ইন্দ্রিয়বেগে বুদ্ধি বিচলিত হয়, মন ঘূর্বিত হয়, হৃদয় চঞালা হয়, আত্মা অবসম হয়, চৈতন্য বিক্লির হয় এবং জ্ঞান বিপন্ন হয়। অতএব সর্ববর্থা যত্নপর হইয়া ইন্দ্রিয়হন্তীকে বশ করিবে। ইন্দ্রিয়রপ চুর্দান্ত দন্তী বশীভূত হইলে, সংসার এমন কি স্বয়ং ঈশ্বরও বশ ও পরাজিত হয়েন এবং ঈশ্বর বশ হইলে নির্ব্বাণমুক্তিরূপ পরমপদ প্রাপ্ত হওয়া যায়, ভাহাতে অনুমাত্র সন্দেহ নাই!

কাম; ক্রোধ; লোভ; হর্য; মান; মদ ইহাদের
নাম ষড়বর্গ। এই ষড়বর্গ পরিহার না হইলে,কোন
মতেই স্থলাভের সন্তাবনা নাই। শাস্ত্রে কামকে
বিষায়িস্বরূপ বর্ণন করিয়াছেন। কেননা ইহার
জ্বালা বিষ ও মায় অপেকাও ভয়ানক। নিতান্ত
প্রশান্ত চিত্ত ও কামানলে পতিত হইলে একান্ত
অন্থির হইয়া থাকে। সংসারে কামপ্রভাবে যেরূপ

লোকের শাশু পতন হয়, এরপ জার কিছুতেই নহে। অতএব সর্ববধা জ্ঞানরপ হুশীতল সলিলে কামানল নির্বাণ রাখা একাস্ত কর্ত্তব্য।

যতপ্রকার শক্ত আছে; তৎসর্কাপেকা ক্রোধ প্রধান শক্ত। এইজন্য ক্রোধকে মহারিপু বলে। শরীরে ক্রেবি থাকিলে অন্ত শত্রুর প্রয়োজন হয় ना । श्रेनम्ह ८ जांध ममन्ह शृथिवीरक विशक्त करतः; মাদ্মীয়কেও অনাশ্মীয় করে এবং বন্ধুকেও বিকৃত করিয়া থাকে। ক্রোধ ও বিষধর অঞ্চগর উভয়ই এক পদার্থ। লোকে দর্প দেখিলে যেমন ভীত হয়; ক্রোধশীল ব্যক্তি হইতেও তেমনি ভীত ও উদ্বেজিত হইয়া থাকে। ক্রন্ধ ব্যক্তির কার্য্যা-कार्या विठात नाहै; वाजाबाज ख्वान नाहे वदः গুরুলযু বোধ নাই। অনেকে ক্রোধবশে আত্ম-ঘাতী হইয়াছে; শুনিতে পাওয়া যায়। কোধ সাক্ষাৎ কৃতান্ত এবং অনায়াদেই প্রজাকুল সংহার করে। রুদ্রের অংশে তমোগুণ হইতে প্রজাসংহার বা স্প্রিবিনাশজন্যই জোধের জন্ম হইয়াছে ; এই জন্য ক্রোধকে ত্যাগ করিলেই ত্বথ: না করিতে পারিলে চিরকালই অন্তথ ও অস্বস্তি ভোগ করিতে হয়। ক্রোধপরতন্ত্র ব্যক্তি কোনকালেই শান্তি লাভ করিতে পারে না। অথচ শান্তি না হইলে জীবন রুণা ও বিভূমনামাত্রে ! জানিয়া শুনিয়া ক্রোধকে আশ্রয় দেওয়া কখনই উচিত নহে। লক্ষণ। তুমি দর্ববথা জোধ পরিত্যাগ করিবে। বিশেষতঃ যাহারা রাজপদে প্রতিষ্ঠিত: তাহাদের ক্রোধ পরিত্যাগ করা ও সর্বতোভাবে ক্ষমাপর হওয়া অবশ্য কর্ত্তব্য ও পরমধর্ম। ক্রেধিপর নরপতি কখনও রাজপদের উপযুক্ত নহেন। তাঁহার অনায়াদেই পতন হইয়া থাকে।

লোভের আকার প্রকার ও বভাবাদি অতীব

ভীষণ। সমস্ত সংসার পাইলেও উহার পরিভৃপ্তি হয় না। লোভ অপেকা মহাপাপ আর নাই। লোভ বুদ্ধি বিচলিত ও বিষয়লিকা প্রাচ্তৃতি হয়।বিষয়পিপাসীয় অভিভৃত ব্যক্তির কোন লোকেই স্থুথ নাই। দে স্থের অন্বেষণে সভত ধাবমান হয়; কিন্তু স্থুখ তাহাকে ভ্যাগ করিয়া দূরে দূরে অবস্থান করে। এইজভা লোভীর স্থুখ আকাশক্ষ্মবৎ, শশবিষাণবৎ ও স্থাক্সনাবৎ একান্ত অলীক; অসম্ভব ও অবান্তব হইয়াছে।

মোহের নাম পূর্ণবিকার। অন্তাক্ত বিকারের প্রতিকারের সন্তাবনা আছে; কিন্তু মোহবিকারের প্রথম নাই এবং বৈদ্য নাই। একমাত্রে সদ্গুরু ও সংশিক্ষা ইহার প্রকৃত ঔষধ। মাঁহার হল্তে শত শত প্রজার ধন প্রাণের ভার ন্যন্ত, সেই নরপতি কথনও মোহাচ্ছম হইবেন না। সতত সদ্গুরুর আপ্রয়ে সংশিক্ষাধীনে কাল্যাপন করিবেন। মোহ হইতে মৃত্যুর স্মন্তি হইয়াছে। অতএব মোহকে দূরে পরিহার করা একান্ত কর্ত্ব্য়।

হে লক্ষণ। আষীকিকী, অয়ী, বার্ত্তা, দণ্ডনীতি এই কয়বিষয়ে ঘাহারা বিশেষ অভিজ্ঞ ও
ক্রিয়াবান্; নরপতি বিনয়াখিত হইয়া, তাহাদের
সমভিব্যাহারে উহাদের যথায়থ আলোচনা করিবেন। আমীক্ষিকীতে অর্থবিজ্ঞান; অয়ীতে ধর্মাধর্ম, বার্ত্তাতে অর্থনির্থ ও দণ্ডনীতিতে নয়ানয়
প্রতিষ্ঠিত আছে।

অহিংসা সূন্ত বাক্য সত্য শৌচ দয়া ও
ক্ষমা এই কয়েকটী মনুষ্যমাত্রের সাধারণ ধশ্মে
প্রজাদিগকে সম্যক্ষিধানে অনুগ্রহ বিতরণ
করিবে; যথাবিধি আচারসংস্থানে প্রবৃত্ত হইবে;
সত্ত প্রিয় বাক্য বলিবে; পরের জুঃখদুরীকরণে
অভিলাধী হইবে; দরিদ্রদিগকে ভরণাদি

করিবে; তুর্বল ও শরণাগতের রক্ষা করিবে। ইহাই সাধুগণের রুত্ত; ইহাই দৎপুরুষের ত্রত; ইহাই সর্বাধা প্রশন্ত এবং ইহাই সর্বাপেক্ষা উপকারী।

যে দেহ আধিব্যাধির মন্দির, যে দেহ অদ্য কিংবা কল্য অবশ্যই বিনক্ত হইবে, যে দেহ মাংস মূত্র ও পুরীষাদি অসার বস্তুর সমষ্টি, কোন্ রাজা সেই পাপ শরীরের জন্য অধর্মমার্গে বিচরণ করিতে পারেন ?

আপনার স্থাছায় কখনও ক্লপণছনের পীড়ন করিবে না। নিজের স্থলাভেছা যেমন বল-বতী; ব্যক্তিমাত্রেরও দেইরূপ জানিয়া আপ-নার প্রতি যেমন, অন্যের প্রতিও তেমন ব্যবহার করিবে; বিশেষতঃ যাহাদের রক্ষার জন্য রাজ-পদের স্প্তি হইয়াছে; দেই প্রজাকুল নির্মাল করা অপেক্ষা মহাপাপ আরু কি আছে ? কুপণ ব্যক্তি পীডামান হইলে শাশ দিয়া বা ছঃখ করিয়া রাজাকৈ নিপাতিত করে। ইহা জানিয়া কুপণ-পীড়নে নিবৃত্ত তাহাদের পরিপালনে প্রবৃত্ত হইবে।

লোকে যেমন পুজনীয় সজ্জনকৈ অঞ্জলি প্রদ-র্শন করে; কল্যাণকামনায় ছুর্জ্জনের নিকট তেমনি বা তাহা অপেকাও স্থানরবিধানে অঞ্জলি বিধান করিবে।

কি সাধু কি অসাধু কি শক্ত কি মিত্র অথবা কি তুর্জন কি হুজন সকলকে সর্বদা প্রিয়-বাক্যে মস্তায়ণ করিবে। মিউবাক্য অপেক্ষা উৎ-কৃষ্ট বা শ্রেষ্ঠ বশীকরণ আর নাই। শত অপ-রাধও মিউকথায় তৎক্ষণাৎ ক্ষালিত হইবার সম্ভা-বনা। ইহা জানিয়া সর্বদা মিউ বাক্য প্রয়োগে প্রেরুত্ত হইবে। মাহারা প্রিয়বাদী তাহারাই দে- বতা এবং যাহারা ক্রবাদী তাহারাই পশু। পশু ও দেবতার এইমাত্র প্রেল। ভক্তি ও আন্তিক্য-প্তহ্লরে সর্বাদা দেবতার পূজা করিবে। দেবতা-বং গুরুজনের ও আত্মবং হুহুদ্গণের অর্চনা-দিতে প্রবৃত্ত হইবে। প্রণিপাত দারা গুরুকে, সত্য ব্যবহার দারা সাধুকে, হুরুত কর্মা দারা দেবতাদিগকে, প্রেম ও দান দারা স্ত্রী ও ভূত্য-বর্গকে এবং দাক্ষিণ্য দারা ইতর জনকে,বশীকৃত ও অভিমুখ করিবে।

পরকৃত্যে অনিকা; স্থার্মের পরিপালন; কুপণ জনে দয়া; সর্বত্ত মধুর বাক্য; অকৃত্রিম মিত্রে প্রাণ দিয়াও উপকার; গৃহাগত ব্যক্তিকে আশ্রয় প্রদান; শক্তি অনুসারে দান; সহিফুতা; স্থীয় সম্-দ্বিতে অনুৎসেক; পরের উন্নতিতে অমৎসর; যাহাতে লোকের মনস্তাপ জন্মে এরূপ কথা না বলা; যাহাতে লোকের ছন্দাংশেও অনিক্ট হইবার সন্তাবনা এরূপ কার্য্য না করা; যাহাতে ইহলোক ও পরলোক বিন্ত হয়; এরূপ কার্য্যে প্রবৃত্ত না হওয়া; যাহাতে আত্মার ও পরের প্রানি জন্মে; এরূপ ব্যবহারে নিবৃত্ত থাকা; মৌনত্রত্বরিফুতা; বন্ধুগণের সহিত বন্ধসংযোগ; স্বজনে চতুরপ্রতা এবং যাহা করা বিধেয়; তাহার অনুবিধায়িতা এই সকল মহাস্থাগণের চরিত্র।

ইত্যায়েরে আদি মহাপ্রাপে রামোকনীতিনামক সপ্তপঞ্চাশ-দধিকশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

অঞ্চপঞ্চাশদধিকশততম অধ্যায়।

শ্রীরাম কহিলেন, স্বামী;অমাতা; স্কৃৎ; কোষ; বল; ভূর্গ ও রাষ্ট্র পরস্পার উপকারী এই সাভটীকে রাজ্যের অঙ্গ বলে। রাজ্যাঙ্গের মধ্যে রাষ্ট্র প্রধান দাধন। সর্ববদা সাবধানে ও বিবেচনাসহকারে উহা পালন করিবে।

কুল, শীল, বয়দ, সত্ত্ব, র্দ্ধদেবা, দাক্ষিণ্য, ক্ষিপ্রকারিত্ব, অবিসংবাদিতা, সত্ত্য, কৃতপ্রতা, দৈবসম্পন্নতা, বৃদ্ধি, অকুদ্রপরিবারতা, শক্যসাম-স্ততা, দৃঢ়ভক্তিতা, দীর্ঘদশিতা, উৎসাহিতা,শুচিতা, স্থললক্ষিতা, বিনীত্তা, ধার্মিকতা, ইত্যাদি সাধ্-নুপতির গুণ।

মহীপতি আত্মহিতকামনায় যাহার বংশ প্রথ্যাত, যাহার জ্বতা নাই, যে ব্যক্তি লোক-সংগ্রহে নিপুণ ও সর্ব্ধা পবিত্রস্থভাব, এইরূপ লোককে পরিচারপদ প্রদান করিবেন।

বাক্পটুতা, প্রগল্ভতা, স্মৃতিমতা, অনৌদ্ধতা, বলবভা, বশিদ্ধ, দশুনেতৃত্ব, নৈপুণ্য, কৃতশিল্প-পরিগ্রহত্ব, পরাভিযোগদহিষ্ট্ত্ব, দর্বহৃষ্টপ্রতিক্রিয়া, পরর্ভাসুবেক্ষণ, দল্লিবিগ্রহত্ত্বুবেদিতা, গৃঢ়মন্ত্রপ্রচারজ্ঞতা, দেশকালবিভাগজ্ঞাতা, অর্থসকলের সম্যক্রপে আদানসামর্থ্য, বিনিযোক্তৃত্ব, পাত্রজ্ঞান, অক্রোধ, অলোভ, ভয়শূন্যতা, অন্দোহ, অদন্ত, অচাপল্য, পরোপতাপবিম্থতা, অপৈশুন্থ, অমাৎস্থ্য, অস্থারাহিত্য, স্ব্রারাহিত্য, স্ব্রারাহিত্য, সত্যশীল্তা, রদ্ধোপদেশসম্পন্নতা, শক্তি, মধুরশীল্তা, গুণাসুরাগিত্ব, স্থিতিশীলত্ব ও ইহাদিগকে আত্মসম্পদ্ভান নামে পরিগণিত করে।

মহীপতির-মন্ত্রীসকল কুলীন, শুচি, শূর, শ্রুতবান্, অমুরাগী ও দগুনীতিপ্রয়োগবিষয়ে নিপুণত্ব ইত্যাদি গুণবিশিষ্ট হইবেন।

যে ব্যক্তি বাগ্মী, প্রগল্ভ, চক্ষুত্মান্, উৎসাহ-সম্পন্ন, প্রতিপত্তিবিশিষ্ট, স্তস্ত্রহীন, চাপল্যহীন, মৈত্র, ক্লেশসহিষ্ণু, শুচি, সত্যসম্পন্ন, সত্ত্রশালী, ধীর, ধৃতিমান্, ক্রিজ্বিশিষ্ট, প্রভাবসম্পন্ন, নীরোগ, কৃতশিল্প, দক্ষ, প্রজ্ঞাবান্, ধারণান্থিত, দৃচ্ভক্তিবিশিষ্ট এবং যে ব্যক্তি বৈরিতা নাশ করে, তাহাকেই সচিবক্ষী প্রদান করিবে।

স্থৃতি, অর্থতংপরতা, চিত্তজ্ঞতা, কার্যানিশ্চয়, জ্ঞাননিশ্চয়, দৃঢ়তা ও মন্ত্রগুণ্ডি এই কয়**টাকে** মস্ত্রিসম্পাৎ বলে।

রাজার পুরোহিত ত্রয়ী ও দগুনীতিতে নিপুণ হইবেন এবং অথর্ববেদমতামুদারে শান্তিক ও পোষ্টিক কার্যা করিতে পারগ হইবেন।

বৃদ্ধিমান্ রাজা তদভিজ্ঞ পুরুগণ সহায়ে অমাত্যগণের চক্ষুতা ও শিল্প এই ছুইটী গুণ পরীক্ষা করিবেন। তিনি স্বজনগণের নিকট তাহা-দের কুল, স্থান, অবগ্রহ,পরিকর্ম্পে দক্ষতা, বিজ্ঞান, ধাবয়িষ্ণুতা, প্রাগৃদ্ভ ও প্রীতিতা বিশেষরূপে বিদিত হইবেন। কথাযোগে উহাদের বাগ্মিতা ও সত্যবাদিতা বৃদ্ধিয়া লইবেন। আপৎকালে উৎসাহ, প্রভাব, ক্লেশহিষ্ণুতা, ধৃতি, অনুরাগ ও কৈর্ম্য লক্ষ্য করিবে। ব্যবহার ঘারা ভক্তি, মৈত্রী ও গুচিতা অবগত হইবেন। সংবাদীঘারা বল, সম্ব, আরোগ্য, শীল, অন্তর্জতা, অচাপল্য ও বৈরিতার অকীর্ত্তন বৃদ্ধিয়া লইবেন; আর প্রত্যুক্ষে বা সাক্ষাতে ভদ্রতা ও ক্ষুদ্রতা বিদিত হইবেন। সর্ব্যুত্র ফল ঘারাই পরোক্ষগুণবৃত্তির অনুমান হইয়া থাকে।

যাহাতে শশু আছে, আকর আছে, খনিদ্রব্য আছে,প্রচুর জল আছে, বিবিধ পুণ্যজনপদ আছে, জলপথ ও স্থলপথ উভয় পথ আছে, যাহা দোষ-হীন, গোগণের উপকারী, অদেবমাতৃক, রমণীয় ও কুঞ্জরবলবিশিষ্ট, এইরূপ ভূমিই রাজাদের পক্ষে প্রশাস্ত ও ভূরি পরিমাণে ভৃতিজনক। যাহাতে শুদ্র আছে, শিল্পী আছে, বণিক আছে, ক্ষীবল আছে, বিবিধ মহৎ কার্য্যের অনু-ষ্ঠান আছে, শক্রুর প্রতি দ্বেষ আছে, রোগে সহিষ্ণুতা আছে, বিবিধদেশবাসী বাস আছে, ধর্ম আছে, পশু আছে, ধল আছে, বিদ্বান্ আছে, ঈদৃশ জনপদই প্রশন্ত।

যাহার সীমা অতিবিস্তৃত, থাত অতিরহৎ, প্রাকার ও তোরণ অতি উচ্চ এবং যাহা সরিৎ, শৈল, মরু বা বনাপ্রিত, তাদৃশ পুরই রাজার বাস-যোগ্য।

ঔদক, পার্ব্বত, বাক্ষ, ঐরিণ, ধন্মিন এবং জল-বং ও ধনধান্যবং কালদহ মহৎ চুর্গ এই ছয়প্রকার চুর্গ প্রশস্ত।

যাহা ঈশ্দিতদ্রব্যদম্পূর্ণ, পিভূপৈতামহোচিত, ধর্মাবুদারে অর্জ্জিত ও ব্যয়দহ, তাদৃশ কোণই ধর্মাদির্দ্ধির হেতু।

যোগজ্ঞ, দভ্রদাপান, মহাপাক্ষ, প্রিয়বাদী, আয়তিক্ষম, দৈধরহিত, দংকুলদম্ৎপান, এরপ ব্যক্তিকে মিত্র করিবে। দূর হইতে অভিগমন, স্পান্টার্থ হৃদয়ামুগামী বাক্য ও দংকারপুরঃদার প্রদান এই তিনটী মিত্রসংগ্রহ। ধর্ম্ম, কাম ও অর্থ দংযোগ মিত্র হইতে এই ত্রিবিধকল প্রাপ্ত হওয়া যায়। মিত্র চারিপ্রকার জানিবে; উরদ, দল্ল, বংশক্রমাগত ও ব্যদন হইতে রক্ষিত। দত্যবাদিতা, অকাপট্য, দমানস্থবহুঃথতা, ইত্যাদি মিত্রগুণ বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে।

অধুনা ভৃত্যগণের ব্যবহারাদি কীর্ত্তন করিব।
ভূত্য যথাবিধানে রাজার দেবা করিবে। দক্ষতা,
ভূদ্রতা, দৃঢ়তা, ক্ষমাপরতা, ক্রেশসহিষ্ণৃতা, সন্তোষ,
সংস্থভাব, উৎসাহ, এই কয়টী গুণ অনুজীবির
ভূষনস্বরূপ। ইত্যাদি গুণসম্পন্ন ভূত্য নয়ামুসারে

যথাকালে রাজার দেবা করিবে। পরস্থানগমন, জুরতা, উদ্ধৃত্য, মংসর, এই কয়েকটা দোষ ত্যাগ করা ভৃত্যের অবশ্য কর্ত্তর্য। সেকখন শ্রেষ্ঠ ব্যক্তির সহিত বিগ্রহপুরঃদর কথা কহিবে না। স্বামীর গুহা মর্ম্ম বা গুপ্ত মন্ত্রণা প্রকাশ করিবে না। অমুরক্ত প্রভুর নিকট রক্তিলাভের চেন্টা করিবে। বিরক্ত প্রভুকে ত্যাগ করিবে। অকার্য্যে প্রতিষেধ ও কর্ত্তব্য বিষয়ে প্রবর্তনা করিবে। আমি যথা-সংক্ষেপে তোমার নিকট বন্ধু, মিত্র ও ভৃত্যবর্গের দ্বাচার কার্ত্তন করিলাম।

রাজা, পর্জ্জনেয়র ন্থায়, সকল প্রাণিরই উপজীব্য হইবেন। কেননা, সকলের রক্ষার জন্য
তাঁহার স্ষ্টি হইয়াছে; তাঁহার সামান্য বুদ্ধিদাষে
অসামান্য উৎপাত ও অনিষ্টঘটনা সম্ভব, তাহাতে
অগুমাত্র সংশয় নাই। আয়দ্ধারে অত্যর্থ ধন
আদান করা রাজার অবশ্য কর্ত্তব্য। সর্ব্ধপ্রকারে
উদ্যোগদম্পন্ন, এরূপ ব্যক্তিদিগকে তিনি অধ্যক্ষ
পদে বরণ করিবেন। কৃষি, বণিকপথ, তুর্গ, কেতু,
কুঞ্জরবন্ধন, থন্যাকরবলাদান, শৃন্যানিবেশন, ইহাদের নাম অষ্টবর্গ। সাধুর্ত্ত রাজা এই অফ্টবর্গের
যথায়থ পালন করিবেন।

আযুক্তিক, চৌর, পৌর, রাজবল্লভ ও শ্বয়ং রাজার লোভ, এই পাঁচ প্রকারে প্রজাগণের ভয় সমুৎপন্ন হইয়া থাকে। নরপতি যথাকালে এই ভয় পর্য্যবেক্ষণপূর্বক করগ্রহণ করিবেন। দেহ, মন ও রাষ্ট্র রক্ষা করিবেন; দণ্ডার্হদিগের দণ্ড করিবেন, আপনাকে, দ্রীকে ও পুত্রদিগকে রক্ষা করিবেন; এবং শক্রকে সর্ব্বথা অবিশ্বাস করিবেন।

> ই চাাগ্রের আদিমহাপুরাণে রাজধ্মনামক আই-পঞ্চাংধক শতভ্য অধ্যায় স্মাপ্ত।

ঊনষ্ট্যদ্ধিকশৃত্ত্ম অধ্যায়।

পুকর কহিলেন, পূর্বের দেবরাজ পুরন্দর রাজ্যলক্ষীর স্থিরত্ব জন্য যেরূপে দেবী শ্রীর স্তব করিয়াছিলেন নরপতি বিজয়লাভার্থ সেইরূপে স্তব করিবেন। ইন্দ্র বলিয়াছিলেন, তুমি সকল লোকের জননী, ভূমি দাগরে জন্ম গ্রহণ করিয়াছ : তুমি না থাকিলে, সংসারের কোনরূপ শোভা থাকে না, ভোমার অধিষ্ঠানেই হুথসমূদ্ধি ও দোভাগ্য, যেখানে তুমি নাই, সেখানে কিছুই নাই; তুমি আমারে প্রদন্ধ হও; তোমাকে নম-कात। (२ (मिर्वि! (२ मर्व्यालाकवारतमाः) তোমার নয়নকমল উন্ধিদ্র। তুমি বিষ্ণুর বক্ষঃস্থলে বিরাজ কর। জগতে তোমার তুলনা নাই ও হয় না। ভূমি আপনিই আপনার উপমা। তোমাকে নমস্কার করি। তুমি গিদ্ধি, তুমি স্বধা, তুমি স্বাহা, তুমি গুধা,তুমি সকল লোকের পাবনী, তুমি সন্ধা, তুমি রাত্রি, তুমি প্রভা, তুমি ভূতি, তুমি মেধা, তুমি প্রদ্ধা, তুমি সরস্বতী, তুমি যজ্ঞ-বিদ্যা, তুমি মহাবিদ্যা, তুমি গুহাবিদ্যা, ভুমি শোভা, তুমি কান্তি, তুমি ঋদ্ধি, তুমি সমৃদ্ধি, তুমি দম্পত্তি, তুমি আজুবিদ্যা, তুমি পরাবিদ্যা, তুমি বেদবিদ্যা, তুমি যোগবিদ্যা, তুমি জ্ঞপ্তি, তুমি ধৃতি, তুমি চিতি, তুমি সংবিৎ, তুমি চিৎ, তুমি চৈত্ত, তুমি জ্ঞান, তুমি বিজ্ঞান, তুমি মুক্তি. ত্মি পুষ্টি, তুমি তুষ্টি, তোমাকে নমস্কার। হে শোভনে! ভূমি বিমুক্তি ফল প্রদান করিয়া थाक। जूमिह वाशीककी, खरीवार्छ। ७ मन নীতি। হে দেবি! তুমিই বিবিধ সৌম্যুর্টিতে সমস্ত সংসার ভূষিত করিয়া, বিরাজমান হইতেছ। তুমি যাবতীয় হৃদ্দর পদার্থের শ্রেষ্ঠ। তুমি

দাক্ষাৎ দোভাগ্য ও অপবর্গ স্বরূপিণী। ভিন্ন আর কে আছে ? তোমার দেহ সর্বশোভা-ময়। ভূমি দেবদেব বিষ্ণুর যোগিগণেরও চিন্ত-নীয় দৰ্ববয়জ্ঞমাৰী শরীর আশ্রয় করিয়া, বিরাজ করিয়া থাক। হে দেবি ! ভুমি ভ্যাগ করিলে, সমস্ত ভুবনত্রয় তৎক্ষণাৎ বিন্দী প্রায় হইয়াছিল। অধুনা তুমি অনুগ্রহ করিয়া, পুনরায় তাহা দমে-ধিত করিয়াছ। অয়ি মহাভাগে। তুমি যাহার প্রতি করুণাকটাক্ষবিক্ষেপ কর্ সে ব্যক্তি নিড্য ধনধান্তসম্পন্ন, স্ত্রীপুত্রে পরিবৃত ও প্রসাদ ও অট্রা-লিকাদিতে সমলক্ষত হয়। কোন কালেই তাহার এই সকলের অভাব হয় না। হে দেবি! তুমি याहानिशतक अञ्चाह कत, छाहारनत आरतात्रां, দোভাগ্য,ঐশ্বৰ্য্য,শক্ৰপক্ষকয় ও স্থথ কোন কালেই তুর্লভ হয় না। নিত্যই ঐ সকলের উপচয় হইয়া থাকে।

তুমি দর্বভূতের জননী, আর দেবদেব ভগবান্
হরি তাহাদের দকলের পিতা। মাতঃ ! তুমি ও
বিষ্ণু তোমরা উভয়ে প্রকৃতি ও প্রুফ্ষরূপে দমন্ত
দংসার ব্যাপ্ত করিয়া, বিরাদ্ধ করিতেছ। তোমাদের কুপালেশ প্রাপ্তি হইলেই, দমন্ত দিদ্ধি দংঘটিত হয়, তাহাতে অনুমাত্র দংশয় নাই। তুমি
দিদ্ধিরূপে ও মুক্তিরূপে এবং বিষ্ণুর পরম্পদরূপে
দর্বদা বিরাজমান হইতেছ। এইজন্য আমি
ভক্তিভরে তোমারে প্রণাম ও নমন্ধার করিতেছি,
আমার প্রতি প্রদাম হব, প্রদাম হব। তোমার
শুভদ্পিতে আমার পদোলতি বিহিত হউক,
দকল অভাব দূর হউক, দকল শান্তি দম্পন্ন হউক
এবং দকল তাপ নিরাক্ত হউক।

হে শোভনে! হে মুক্তিরূপিণি! হে দর্ক-পাবনি! তুমি আমার মান, কোধ, কোঠ, গৃহ, পরিছেদ, শরীর, কলতা, পুত্র, মিত্র, পশু, অল- 🖯 ফার, কিছুই ত্যাগ করিও না। বিফুর বক্ষঃক্ল তোমার আলয়। অয়ি অমলে! ভূমি বাহা-দিগকে ত্যাগ কর, মন্ত্র, শত্য, শীল ও শৌচাদি গুণপরম্পরা ভাষাদিগকে তৎক্ষণাৎ ত্যাগ করে। আবার ভূমি যাহাদিগকে কটাক্ষেও অবলোকন কর ভাহারা নিগুণ হইলেও, কুল, ঐশ্ব্যা ও শীলাদি অথিল গুণপরাম্পরায় দদ্য ভূষিত হইয়া থাকে। ইহাই তোমার মহিমা এবং ইহাই ভোমার ব্রূপ, সভাব বা অনন্যসাধারণ লক্ষণ। এইজন্ম সমস্ত সংসার তোমার উপাদনা করে। হে দেবি ! ভূমি যাহাকে অবলোকন কর, দেই भाषा, त्महे खेगी, त्महे कूलीन, त्महे धंख, त्महे गान्छ, त्मारे भाग, त्मारे वृक्षिमण्यम, त्मारे भूत अवः **मिट्टे वाक्टिंट विभिक्टेज़** भ विक्रम विभिक्टे। कृमि বিষ্ণুবল্লভা ও জগদ্ধাত্রী। তুমি পরাধাুথী হইলে, শীলাদি দকল গুণই দদ্য বিগুণতা প্রাপ্ত হয়। ভূমি অশেষগুণশালিনী, স্বয়ং বিধাতার জিহ্বাও তোমার গুণসমুদায় বর্ণনা করিতে পারে না। হে দেবি! হে পদ্মলোচনে! আমার প্রতি প্রসন্ন হও। আমাকে কখনও ত্যাগ করিও না। আমার আত্মীয় ও বন্ধুবান্ধবদিগকেও কথন ত্যাগ করিও নাঃ ভূমি ত্যাগ করিলে, সংসার ত্যাগ করে: ইহা আমি বিলক্ষণ বিদিত আছি। আমি কায়-মনে তোমার প্রদাদ কামনা করিতেছি। আমাকে অনুগ্রহ বিতরণ ও প্রীতি দান কর। আমার রাজ্যসম্পদ্ প্রাপ্তি হউক এবং সকল সিদ্ধি সমা-হিত হউক।

পুদ্ধর কহিলেন, দেবরাজ এইপ্রকার স্তব করিলে, দেবী প্রদর্মা হইয়া, তাঁহাকে সংগ্রাম-বিজয় ও স্থিররাজত্ব প্রভৃতি অভীফ বর প্রদান করিলেন। এই শ্রীন্তোত্র পাঠ ও প্রবণ করিলে, ভুক্তিমৃক্তি ও বিজয়াদি লাভ হয়। প্রতএব লোকে স্বাস্থ্যকরণে সর্বাদ্ধ ইহা পাঠ করিবে।

ইত্যাগ্রেয়ে আদি মহাপুরাণে জ্রীজোত্তনামক উন্বটাল-ধিক শততম অধ্যার সমাপ্ত।

ষষ্ট্যধিকশততন অধ্যায়।

পুক্র কহিলেন, যাতাবিধানপূর্বক সাংগ্রা-নিক বিধি কীর্ত্তন করিব।

রাজ্ঞা সপ্তাহমধ্যে যাতা করিবেন, স্থির হইকে, মোলকাদিসহায়ে ভগবান্ হরি, শস্তু গণদেবের পূজা করিবেন। বিতীয় দিনে দিক্পালগণের বিশেষরূপে পূজা করিয়া, শয়ন করিবেন।

শ্যায় বা তদত্রে দেবগণের পূজা করিয়া
এই বলিয়া মতু স্মারিবেন, হে শস্তু! তুমি ত্রিনেত্র। তুমি রুদ্র। তুমি বরদ। তুমি বামন।
তুমি বিরূপ। তুমি স্বপ্রাধিপতি, তোমাকে বার
বার নমস্বার করি। তুমি সর্ব্বশক্তিসম্পন্ন ও ঘট্ডশ্বর্যাবিশিষ্ট। তুমি দেবগণেরও দেবতা ও তাঁহাদেরও ঈশ্বর। তুমি শুলধারী ও র্ষবাহন। তুমি
নিত্য ও সত্যক্ষরপ। নিজ্ঞাবেশে স্বপ্নে আমার
ইক্টানিক্ট নির্দেশ কর। অনন্তর যন্ত্রার অত্যে
পুরোহিত দূরমিতি মন্ত্র উচ্চারণ করিবেন।

তৃতীয় দিনে দিক্পালগণ,রুদ্রগণ ও দিক্পতিগণের পূজা করিবে। চতুর্থ দিনে গ্রহগণের ও
পঞ্চম অখিনীকুমারদ্বয়ের অর্চনা করিবে এবং
পথিমধ্যে যে দকল দেবতা ও যে দমস্ত নদী
আছে, তাহাদের পূজা, দিব্য অস্তরীক্ষন্থ ও ভূতলবিহারী দেবগণের উদ্দেশে বলিপ্রদান, রাত্রিতে
ভূতগণের ও বাহ্দেবাদির পূজা করিবে। অনস্তর

ভদ্রকালী ও শ্রীদেবীর অর্চনা করিয়া, এই বলিয়া সকল দেবভার নিকট প্রার্থনা করিবে, যাস্থদেব, দক্ষর্ণ, প্রহ্লাস্ক, অনিক্রন্ধ, নারায়ণ, ভ্রন্ধা, বিষ্ণু, নারসিংহ, বরাহ, শিব, ঈশ, তৎপুরুষ, অংঘার, দতী অজ, সূর্য্য চন্দ্র, কুজ, বুধ, বুহস্পতি, শুক্রা, শনৈশ্চর, রাছ্ড কেছু, গণপতি, সেনানী, চণ্ডিকা, উমা লক্ষ্যী সরস্বতী চুর্গা ব্রহ্মাণীপ্রমুখ গণসকল, একাদশ রুদ্রু ইন্দ্রাদি সর্বাদেবতা, অগ্নি, নাগগণ, তাক্ষ্য এবং দিব্য অন্তরীক্ষন্ত ও ভূবাদী দেবগণ সকলে আমার বিজয় বিধান করুন এবং আমি এই যে বলি প্রদান করিতেছি ইহা গ্রহণ করিয়া, সংগ্রামে আমার, শত্রুকুল সংহার করুন। তে দেবগণ! আমি পুত্র, ভূত্য ও জননীর সৃহিত অপিনাদের সকলের শরণাপত্র হইলাম। আপ-নারা সকলে আমার মঙ্গল বিধান করুন এবং দৈন্যগণের পৃষ্ঠদেশে গমন করিয়া, আমার রিপু-কুল নির্মাল করুন। আমি আপনাদের সকলকে নমকার করিতেছি। আমি সংগ্রাম হইতে বিনি-্ত হইয়া, অধুনা যে পূজা দিলাম, তাহা অপেকা অধিকতর বলি প্রদান করিব।

ষষ্ঠ দিনে অভিষেক্বৎ বিজয় স্নান বিধান করিবে। সপ্তম দিন যাত্তার দিন। ঐ দিন ভগবান ত্তিবিক্রেমের পূজা করিবে। নীরাজনোক্ত মন্ত্র স্থারা আয়ুধ ও বাহনের অর্কনা করিবে এবং পুণ্যাহজয়শব্দসহায়ে বক্ষ্যমাণ মন্ত্র শ্রবণ করিবে;—

স্বর্গবাদী অন্তর্গাক্ষবাদী ও ভূমিবাদী স্তর্গণ দকলে তোমার আয়ু বিধান করুন। তুমি দেব-দিদ্ধি প্রাপ্ত হও। তোমার এই যাত্রা দেব্যাত্রা হউক। দেবগণ দকলে তোমার রক্ষা করুন, মনক্ষামনা দিদ্ধ করুন এবং বিজয় বিধান করুন।

এইপ্রকার মন্ত্র শ্রহণ করিয়া নরপতি যাত্রা করিবেন। ধতুর্নাগ ইত্যাদি মন্ত্র উচ্চারণপূর্বক সশর শরাসন গ্রহণ ও তথিকোঃ ইত্যাদি জপ সমাধানান্তে রিপুর্বৃত্থে পদ প্রদান করিবে। অনস্তর यथाज्ञास लाज्ञानि नित्व चाजिः नर निक्निने न गमन ক্রিয়া ঘণাক্রনে নাগ, রথ, অশ্ব ও ধুর্য্যপশু সকলে সমারত হইবে। পরে যানারোহণে বাদ্যধ্বনি-পুরংসর পশ্চাতে দৃষ্টিকেপ না করিয়া গমন করিবে এবং ক্রোশমাত্র গমনপূর্ব্বক বিশ্রাম ও দেব-विकारनेत भूका कतिरव। भरत भरेमस्मृत तका কর্ত প্রদেশে প্রস্থান ক্রিবে। নরপতি বিদেশে সমাগত হইয়া দেশপালের রক্ষা ও দেবগণের পূজা করিবেন। তত্তত্য আরক্ষেদ বা তদ্দেশীয়-मिशरक **खरमानना क**तिरवन ना । **जग्रनमाधानारस** সীয় পুরে প্রত্যার্ভ হ্ট্য়া পুনরায় দেবগণের পূজা ও দান করিবেন।

বিতীয় দিনে সংগ্রাম সময়ে যথাবিধানে অশ্ব ও গজসকলকে আন করাইয়া, নৃসিংহদেবের ও ছত্রাদি রাজলিক ও শস্ত্রসকলের পূজা এবং নিশা-যোগে গণদিগের অর্জনা করিবে। পরে প্রাতঃ-কালে অশেষবিধানে বাহনদিগের সহিত নৃসিংহের পূজা করিয়া পুরোহিতকর্তৃক আহত অয়িদর্শন ও তাহাতে আহতিদানপুরঃসর ব্রাহ্মণগণ্ণের পূজা করিবে। পরে সশর শরাসনগ্রহণ ও গজে আরো-হণ করিয়া, অদৃশ্য হইয়া শক্রের রাজ্যে গমন ও প্রকৃতি কল্পনা করিবে। যোধসংখ্যা অল হইলে, তাহাদিগকে সংহত করিয়া যুদ্ধ করাইবে, বহু হইলে যথেক্ছ বিস্তার করিবে। বছর সহিত অল্পের যুদ্ধে স্চীমুখ অনীক কল্পনা করিবে। প্রাণ্যক্রপ ও দ্রবারূপ এই দ্বিধি ব্রাহ কীর্তিত হইয়াছে;—ধ্বা গক্ষড়ব্রহ, মধ্রব্রহ, চক্রব্রহ, শ্যেনবৃাহ, অর্চন্দ্রবৃাহ, বজ্রবৃাহ, শকটবৃাহ, মওল-বৃহে, দৰ্বতোভদ বৃহে, দূচীবৃাহ ইত্যাদি। সমস্ত বাহেরই পাঁচপ্রকারে দৈত্তকল্পনা হইয়া থাকে। বৃংহমাত্রেরই ডুই পক্ষ ও চুই ঋতুপক্ষ। একভাগ, না হয়, ছুইভাগ দহায়ে যুদ্ধ করিবে। তাহাদের রক্ষার্থ ভাগত্র স্থাপন করিবে। রাজা স্বয়ং যুদ্ধ করিবেন না। কেননা মূলোচ্ছেদে সর্বনাশ সম্ভা-বনা, ষহীপতি জোশমাত্র ব্যবধানে দৈত্যের পশ্চা-দ্দেশে অবস্থিতি করিবেন। তথায় যোধগণের ভগ্ন সন্ধারণ পরিকীর্ত্তিত হইয়াছে। সৈন্মের প্রধান দল **७**त्र फिटल, व्यवस्थान कत्रा विरक्षय नरह । वृह्यरक्ष যোধদিগকে সংহত বিরল রূপে স্থাপন করিবে না। হাহাতে মায়ুধ্দকলের পরস্পার সংমদি না इत, এক্লপ বিধানে তাহাদিগকে ব্যহিত করিবে। শক্রদৈষ্ঠ ভেদ করিতে বাসনা হইলে, সংহতযোধ-সাহায্যে ভেদ করিবে। আবার, শত্রুপক্ষ যাহাতে ঐ রূপে ভেদ করিতে না পারে, তাহার উপায় করিবে। ইচ্ছাতুশারে শক্রর ব্যুহে নিজ ব্যুহ ভেদাবহ করিবে।

হে দ্বিজ ! গজের পাদরক্ষার্থ চারি রণ, রথের রক্ষার্থ চারি অপ, সংখের রক্ষার্থ চারিজন চন্দ্রী নিয়োগ করিবে। অন্যে চন্দ্রী, পশ্চাৎ ধন্ধী, ধন্ধীর পশ্চাৎ অস্ব ও রশ্ব এবং রথের পশ্চাৎ কুপ্তরদৈন্ত স্থাপন করিবে। যাহাতে সক্ষমাত্র দেখা যায়, এরূপে শূরদিগকে প্রমুখে প্রদান করিবে। ভীরুসমানহায়ে শক্তর বিদ্রোবণ করা বিধেয়। ভীরুদিগকে সন্মুখে স্থাপন করিবে না। কেন না, তাহারা পুরোভাগ বিদারিত করিয়া থাকে। শূরগণ সন্মুখে থাকিয়া ভীরুদিগকে যুদ্ধে প্রোৎসাহিত করে। যাহারা উন্নত্রায়, শুকবৎ নাসাবিশিষ্ট, সরলদৃষ্টিদম্পন্ন, সংহতক্রযুগদংযুক্ত, কোপনস্বভাব, কলহপ্রিয়,

নিত্য ছফ প্রহায় ও কামপরায়ণ, তাহারাই শূর জানিবে।

সংহত ও হতদিগের রণ হইতে অপনয়ন, গজ সকলের প্রতিষ্কা, তোয়দানাদি এবং আয়ুধানয়ন, এই সকল পত্তিগণের কর্ম। শত্রুভেদাভিলাষী হইলে, স্বদৈন্থের রক্ষা ও সংহতগণের ভেদ করা চন্মীদিগের কার্যা। যুদ্ধে প্রতিপক্ষীয়দিগকে বিমুখ করা ধন্মীগণের কার্যা। হুহত ব্যক্তি দ্বাপসরণ, যান ও রিপুসৈন্থের ত্রাসোৎপাদন, এই কর্যী রথকর্ম। সংহতগণের ভেদন ও ভিন্নগণের সংহতি এবং প্রাকার, তোরণ, অট্টাল ও দ্রুমাদির ভঙ্গ করা গজকর্ম বলিয়া পরিগণিত। পত্রিরা বিষমভূমিতে ও রথ আখসকল সমভূমিতে এবং নাগণণ সকর্দম ভূমিতে অবস্থান পূর্বক যুদ্ধ করিবে।

এইরূপে বৃহে রচনা ও দিবাকরকে পশ্চাতে করিয়া অনুকুল শুক্র, শণি দিক্পাল ও মৃত্যারুতে যুদ্ধে অবতরণপূর্বক নাম, গোত্র ও অবদান নির্দেশ করত এই বলিয়া যোধণণকে সমূতেজিত করিবে. হে যোধবর্গ! শত্রু জয় করিলে ভোগপ্রাপ্তি ও যুদ্ধে মৃত্যু ইইলে স্বর্গলাভ ও স্বামিপিভের নিষ্কৃতি হইয়া থাকে। অতএব যুদ্ধের সমান গতি নাই। শুর্গণের রক্তসমাগমে পাপ পরিহার হয়। এবং রণমধ্যে ঘাতাদিত্বথ দহ্য করা পরমতপস্তা, শ্রপুরুষ যুদ্ধে প্রাণত্যাগ করিলে, সহস্র সহস্র বরাপ্সরা তাহার আবুগত্য করে। যুদ্ধে ভঙ্গ দিলে বা পলায়ন করিলে স্বামী তাহার সমস্ত হাকৃত গ্রহণ করেন এবং তাহাদের পদেপদেই ত্রহ্মাহত্যার সমান ফল হইয়া থাকে, এইরূপ নির্দ্ধিউ আছে। যে ব্যক্তি সহায়বর্গকে ত্যাগ করিয়া প্রস্থান করে, লেবগণ তাহাকে বিনাশ করেন। যাহার। যুদ্ধে

পরাত্ম্ব না হয়, তাহাদের অখ্যেধ যভেরে ফল প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

রাজা ধর্মনিষ্ঠ হইলে, জয় লাভ করেন। যুক সমানে করিবে। গজাদির **দ্যা**নে সহিত গজাদি যুদ্ধ করিবে। যাহারা পলায়ন করে, তাহাদিগকে হত্যা করিবে না। এই রূপ দর্শক, প্রবিষ্ট, শস্ত্রহীন ও পতিতদিগকেও সংহার করিবে না। শক্ত শান্ত, নিজ্রাভিত্তত ও নদীবন অর্কোতীর্ণ হইলে, কিংবা ছুদ্দিন উপস্থিত হইলে, তাহার বিনাশার্থ যুদ্ধে প্রবন্ত হইবে। তৎকালে বাহু প্রগৃহীত করিয়া তারস্বরে এইপ্রকার কহিবে, শক্ররা রণে ভঙ্গ দিল, ভঙ্গ দিল; বহুপরিমাণে মিত্রবল উপস্থিত হইয়াছে; শত্রুপক্ষের প্রধান পরিচালক প্রাণত্যাগ করিয়াছে : সেনানী নিহত হইয়াছে এবং রাজাও বিদ্রুত হইয়াছেন।

যোধগণ ভঙ্গ দিলে, তাহাদিগকে অনায়াসেই সংহার করা যাইতে পারে। হে ধর্মজ্ঞ ! যাহাতে শত্রুগণের মোহ জন্মে, এরূপ ধূপ, পতাকা ও বাদিত্রগণের ভয়াবহ সন্তার নিয়োগ করিবে। যুদ্ধে জন্মলাভ হইলে, দেব ও বিপ্রগণের পূজাকরিবে। সংগ্রামে বন্দীকৃত শত্রুকে মুক্ত করিয়া পুত্রবং পরিপালন করিবে। তাহার সহিত পুনরায় যুদ্ধ করিবে না; দেশাচারাদি পালন করিবে। অনন্তর স্বীয় পুরে সমাগত হইয়া জ্বুব নক্ষত্রে গৃহে প্রেশে পূর্বক দেবাদির পূজা ও যোধকুটুন্বের রক্ষা এবং প্রাপ্ত দ্রবাদি ভ্তাদিগকে যথাযথ বিভাগ পূর্বকে দান করিবে।

আমি তোমার নিকট এই রণদীকা কীর্ত্তন করি লাম। ইহাদারা রাজার জয়লাভ হয়,সন্দেহ নাই।

> ইত্যালেরে আদিমহাপু⊲াণে রণদীকান্যক ষ্টাধিকশতত্ম অধ্যায় সমাপু।

একষ্ট্যধিকশক্তিন অধ্যায়।

পুক্ষর কহিলেন, নরপতির প্রতিদিন যেরূপ কার্য্য করা কর্ত্তব্য, তাহা কহিব; উহার নাম অজস্রকর্ম।

রাত্রি দ্বিমুহূর্ত্ত থাকিতে, রাজা, গীত, বাদ্য ও বন্দিগণের স্তবে নিদ্রা ত্যাগ করিয়া গুড় নরদিগকে দর্শন করিবেন। অনন্তর যথাবিধি আয়ব্যয় আবণ कतिया, त्वरणामर्थारस आनग्रह श्रविके इहेरवन । তথায় দন্তধাবনপূর্ববিক স্নান করিয়া সন্ধ্যা 😕 জপ সমাধানান্তর বাহুদেবের পূজা করিবেন। অনন্তর বহ্নিতে পবিত্র হোম করিয়া সলিলযোগে পিতৃ-গণের তর্পণ করিবেন। পরে ত্রাহ্মণগণকে হর্ণ-ধেত্ব দান করিয়া তাঁহাদের আশীর্কাদগ্রহণান্তে অসুলি ও ও অলঙ্কত হইয়া দর্পণে মুখ দর্শন করি-বেন। পরে দিবসাদি প্রবণ, ভিষক্তোক্ত উষ্ধ দেবন ও মঙ্গলালভন, গুরুদর্শন ও তাহাদের আশীর্বাদ গ্রহণানন্তর সভান্ধ্যে গমন করিবেন। তথায় অধিষ্ঠানপূৰ্বেক ত্ৰাহ্মণ, অমাত্য, মন্ত্ৰী ও প্রতীহারীনিবেদিত প্রকৃতি, ইহাদিগকে যথাবিধি দর্শন করিবেন। অনন্তর ইতিহাস শ্রবঞ্জে কর্ত্তব্য অবধারণপূর্বক ব্যবহারকার্য্য পরিদর্শন ও মন্ত্রি-গণের সহিত মন্ত্রণা করিবেন। একজনের বা অনেকের সহিত মন্ত্রণা করিবেন না। মুর্য ও অনাত্মীয় ইহাদিগকে মন্ত্রণাদময়ে ত্যাগ করিয়া গোপনে মন্ত্রণা করিবেন, প্রকাশ্যে করিবেন না। যাহাতে রাষ্ট্রের কোনরূপ বাধা না জন্মে, এরূপে সন্ত্র স্প্রপ্রতিষ্ঠিত করিবেন। রাজার আকারগ্রহণেই প্রধানতঃ মন্ত্রকা ইইয়া থাকে। কেননা, প্রাক্ত ব্যক্তিরা আকার ও ইঞ্চিত হারাই মন্ত্র এইণ করেন।

সংবৎসর, ষ্দ্রী ও বৈদ্য ইহাঁদের বচনাস্বর্ত্তী
হইলে, রাজার বিভব প্রাপ্তি হয়। কেননা, ঐ
সকল ব্যক্তিই রাজাকে ধারণ করে। মন্ত্রশনন্তর
প্রশন্ত যামে ব্যায়ামচর্চা করিবে। নরপতি
নিংসভাদিতে স্নান করিয়া স্করেরপে পূজিত
বিষ্ণু, হুত অগ্নি ও ব্রাহ্মণদিগকে দর্শন করিবেন।
পরে ভূষিত হইয়া, স্কর্মরেপে পরীক্ষিত অম
ভোজন করিবেন। ভোজনান্তে তাফুল গ্রহণ
ও বাম পার্দের্গ সংস্থানপূর্বক কাষ্ঠায়ধ, গৃহ ও
যোধদিগকে দর্শন করিয়া শান্ত্রচিস্তায় প্ররত হইবেন। পরে পশ্চিমসন্ধ্যাবিধি সমাধান ও কর্ত্তব্য
চিস্তা করিয়া চরদিগকে সংপ্রেষণ ও আহারান্তে
অন্তঃপূরে প্রবেশ করিবেন। এইরূপে গীতবাদ্যাদিসহকারে স্বর্ক্ষিত হইয়া নরপতি নিত্য কাল
যাপন করিবে।

ইত্যাগ্রেরে আদিমহাপ্রাণে প্রত্যাভিকরাছ কথননামক এক স্টাধিক শতভ্যম অধ্যায় সম্পে।

দিন্ট্যধিকশতত্ব অধ্যায়।

পুন্ধর সহিলেন, যাহার প্রভাবে রাজার প্রম গতি লাভ হয়, দেই দণ্ড প্রণয়নবিধি কীর্ত্তন করিব।

ত্রিয়বে এক কৃষ্ণল ও পাঁচ কৃষ্ণলে একমাব, জানিবে। রাম! ঐরপ ষাটী কৃষ্ণলে এককর্ষার্ম কার্ত্তিত হইরাছে। বোড়শ মাধে এক স্তবর্ণ, চারি স্থারে এক নিক্ষ ও দশনিক্ষে একধরণ, তাত্র, রূপ্য ও স্থারের এই প্রকার মানকীর্তিত হইয়াছে। সার্দ্ধ বিশতপণে প্রথম সাহস, পঞ্চশতে মধ্যম ও এক সহত্রে উত্তম সাহস।

চোরে চুরি না করিলেও, যে বাক্তি মিখ্যা

করিয়া আমার চুরি গিয়াছে বলে, ভাহাকে সেই চুরির পরিমাণ দণ্ড করিবে। যে ব্যক্তি যে পরি-মাণে মিধ্যা বলে বা যে ব্যক্তি ষেরূপ বিপরীত বলে, তাহাদের উভয়কে তাহার দিগুণ দও দিবে। কৃটসাক্ষ্য প্রদান করিলে, তিন বর্ণকেই শাস্তি প্রদান করিবে। আক্ষণকে কেবল নির্কা সিড করিবে। নিকেপ করিলে হয়ণ, নিকেপের मभान मृला एक कतिरव। (१ धर्माञ्ड! (य वाकि খ্যাস হরণ করে এবং যে ব্যক্তি নিক্ষেপ না করিয়া তাহা প্রার্থনা করে, তাহাদের উভয়কেই চৌরবৎ শাসন করিবে, অথবা নিক্ষেপের দ্বিগুণ দম বিধান क्रिंदर। ना क्रानिशा, প्रदित क्रिया विक्रय क्रिंति, (कान (माय इस ना ; किन्छ क्वानिया विक्रय क्रिल, চোরবৎ দণ্ডাই হইয়া থাকে। মূল্য গ্রহণ করিয়া শিল্পদান না করিলে, দগুপ্রাপ্ত হইবে। অঙ্গীকার করিয়া, না দিলে, এক স্থবর্ণ দণ্ড করিবে। ভৃতি এহণ করিয়া, কর্মানা করিলে, অফ্ট ক্লফল দভার্হ হইবে। অকালে ভূত্যকে ত্যাগ করিলেও, ঐ প্রকার দম বিহিত হইয়া থাকে। কোন কিছু ক্রুয় বা বিক্রয় করিয়া, যাহার অনুশয় হুইবে, সে দশ দিনের মধ্যে তাহা গ্রহণ বা প্রত্যর্পণ করিবে। দশদিনের পর হইলে, আর আদান প্রদান নাই। ঐরপ আদান প্রদান হইলে, রাজা তাহার ছ্যুশত পণ দণ্ড করিবেন। বরকে দোষ ব্যক্তনা করিয়া কোন ব্যক্তি क्या वदन क्दिल, ঐ क्या म्ह হুউক বা না হুউক,ভাহার শতদ্ম দণ্ড করা বিধি। দত্ত কতা পুনরায় দান করিলে, দানকর্তা উত্তম সাহসদগুভাগী হয়।

একজনের সহিত সত্যবন্ধ হইয়া, লোভবশতঃ অন্য ব্যক্তিকে সেই দ্রুব্য বিক্রেয় করিলে, তাহার ছয়শত দণ্ড করিবে। ধেকুপাল ভক্তবেতন গ্রহণ

क्रिया, ८४२ मान वा त्रका ना क्रिटन, ताका ভাহার শত দণ্ড বিধান করিবেন। ্রামের চতুর্দিকে শতধেমু বিস্তার এবং নগর অপেক্ষা দ্বিগুণ বা ত্রিগুণ বিস্তৃত করিয়া, উষ্ট্র অবলোকন করিতে না পারে, এ প্রকার রৃতি বিধান করিবে। তাহাতে ধান্য অপরিবৃত্ত ও হিংসিত হইলে, দণ্ডপ্রয়োগ বিধি নহে। প্রদর্শনপূর্বক গৃহ, ক্ষেত্র, উদ্যান বা তড়াগ হরণ कतिरल, शांष्ठमा १ पछ कतिरंव धवर ना कानिया इत्रण क्रित्ल, चिन् प्र विरिध्य इहेशा थारक। मर्गामा-ভেদকমাত্রেরই প্রথম সাহস দণ্ড করা কর্ত্তব্য। ব্রাক্ষণের প্রতি আজোশ প্রকাশ করিলে, ক্ষত্রিয় শতদভার্হ ইয়া থাকে। রাম! এরপ হলে বৈশ্যের দ্বিশত ও শূদ্রের বধ দণ্ড প্রয়োগ করা বিধি। ক্ষত্রিয়ের অভিশংদন করিলে, প্রাক্ষণের পঞ্চাশৎ দণ্ড করিবে, বৈশ্যের করিলে,অদ্ধপঞ্চাশৎ এবং শুদ্রের করিলে, ছাদশ দম বিধেয় হইয়া থাকে। ক্ষত্রিয়ের অভিশংসন করিলে, বৈশ্যের প্রথম সাহস দণ্ড এবং শুদ্রের জিহ্বাচেরুদন कतिरव ।

রাজ্মণের ভাষ, ধর্ম্মোপদেশ প্রদান করিলে,
শুদ্রের দিগুণ সাহস দণ্ড দান বিধেয়। যে ব্যক্তি
পাপাচরণপূর্বক সাধুদিগকে অবমানিত করে,
ভাহার উত্তম সাহস দণ্ড করিবে। আমি প্রমাদপূর্বক এইপ্রকার করিয়াছি, বলিলে, সে ব্যক্তির
অর্জ্বণণ্ড করিবে। মাতা, পিতা, জ্যেষ্ঠ ভাতা,
শৃশুর ও গুরুর অবমানাদি করিলে এবং গুরুকে
পথ না দিলে,ভাহাকে শতদণ্ড দিবে। অন্ত্যজাতি
যে অঙ্গসহায়ে ভ্রাক্ষণের নিকট অপরাধী হইবে,
ভাহার সেই অঙ্গ তৎক্ষণাৎ ছেদন করিবে। দর্পবশতঃ অবনিষ্ঠীবন করিলে, ভাহার ওর্ডময় ছেদন

করিয়া দিবে এবং অপমৃত্তন করিলে মেদু, অপশব্দ প্রয়োগ করিলে গুছ ও উৎকৃষ্ট আসনে আদীন হইলে, সেই নীচ ব্যক্তির অধোদেশ নিকৃন্তন করিবে।

নাগ গজ অন্থ ও উট্র হত্যা করিলে. হত্যা-কারীকে অর্জহন্ত ও অর্জপাদ করিবে। রক্ষকে ফলহীন করিলে এক হুবর্গ দণ্ড করিবে। পথ, সীমা ও জলাশয় ছিন্ন করিলে। দ্বিগুণ হুবর্গ দম প্রয়োগ করিবে। জ্ঞানতঃ বা অজ্ঞানতঃ কাহারও কোন দ্রব্য হরণ করিলে, তাহার সম্ভোষোৎপাদন পুরংসর রাজার নিকট দণ্ড দান করিবে।

কুপ হইতে ঘট ও রজ্জু হরণ করিলে, তাহার মাষ দণ্ড করিবে। কুপ ছিম করিলেও ঐরপ শাসান করা বিধি। প্রাণিতাড়নেও ঐ প্রকার করিবে।

দশকুম্ভ অপেক্ষা অধিক ধান্ত হরণ করিলে তাহার বধ করিবে। শেষে তাহার একাদশ গুণ শান্তিবিধান করিবে।

স্থবর্ণ ও রজতাদি হরণ করিলে, তাহাকে দর্ধ করিবে; কেবল ভ্রাহ্মণকে বধ করিবে না। যে যে অঙ্গি দ্বারা ঐরূপ চুরি করে, নরপতি প্রত্যা-দেশ জন্ম দেই , দেই অঙ্গি কর্তুন করিবেন।

ব্রাহ্মণ স্বল্প পরিমাণে শাক ধাঞাদি গ্রহণ করিলে, দোষভাগী হন না।

গৃহক্ষেত্র হরণ করিলে, পরদারমর্যণ করিলে, অফি ও বিষপ্রয়োগ করিলে এবং উদ্যভায়ুধ হইলে, বধদণ্ড বিধি।

নরপতি গবাভিচারাদ্য ও আততায়ীদিগকে বধ করিবে। পরস্ত্রীকে সম্ভাষণ ও প্রতিবিদ্ধ হইয়া প্রবেশ করিবেন না। স্বয়ং পতিংবরা স্ত্রীকে দশু দিবেন না। জ্বন্য ব্যক্তি উচ্চবর্ণের স্ত্রীতে গমন করিলে, বধার্হ ইইয়া থাকে।

যে স্ত্রী স্বামীকে লঙ্খন করে. তাহাকে কুরুর

দিয়া হত্যা করিবে। সবর্ণদূষিতা স্ত্রীকে পিগুমাত্রোপজীবিনী করিবে। জ্যেষ্ঠ কর্ত্ক দূষিতা
স্ত্রীর মুগুন করিয়া দিবে। বৈশ্যাগমনে ভ্রাক্ষপের এবং অন্ত্যজাগমনে ক্ষত্রিয়েরও ঐরপ শাসন
করা কর্ত্ব্য। ক্ষত্রিয় ও বৈশ্য শূদ্রা গমন করিলে,
উভয়েরই প্রথম সাহদ দণ্ড করিবে।

বেশ্যা বেতন গ্রহণ করিয়া, লোভবশতঃ অন্তত্ত গমন করিলে, বেতনের দ্বিগুণ গ্রহণপূর্ববক দ্বিগুণ দণ্ড দিবে।

ভার্য্যা, পুত্র, দাস শিষ্য ও সোদর জাতা অপরাধ করিলে, রক্ষ্য বা বেনুদল ছারা পৃষ্ঠে বা মস্তকে তাড়না করিবে।

রক্ষাধিকৃত পুরুষগণ প্রজালোপে প্ররত হইলে তাহাদের, সর্ববৈষ্থাহণ পূর্বাক নির্বাদন করিবে। ফকার্য্যে নিযুক্ত হইয়া, কর্মিগণের কার্যহানি করেল, সেই মৃণাহীন ও ক্রমনাদিগের সর্ববি হরণ করিবে।

অমাত্য বা প্রাড়্বিবাক কার্য্যের অন্তথা ক-রিলেরাজা ভাহার সর্বস্থান্তে নির্বাদন করিবেন।

পাপ করিলে শুদ্রাদিকে হত্যা ও ব্রাহ্মণকে বিপ্রবাসিত এবং মহাপাপ করিলে তাহাদের ধনসম্পত্তি বক্তণকে উপপাদিত করিবে।

গ্রামমধ্যে যে কেহ চৌরদিগকে ভক্ত কোষ ও ভাগুার প্রদান করিলে তাহাদের সকলকেই হত্যা করিবে।

রাষ্ট্রমধ্যে রাষ্ট্রাধিকৃত সামন্তেরা পাপ করিলে, তাহাদিগকে নিপাত করিবে।

ষে সকল তক্ষর রাত্রিতে সন্ধি করিয়া চুরি

করে, রাজা হস্তদ্ম ছেদন পূর্বক ভাহাদিগকে তীক্ষ শূলে নিকেপ করিবেন।

তড়াগ ও দেবাগার ভেদ করিলে, রান্ধা তাহা-দিগকে ঘাতিত করিবেন।

আপৎ ভিন্ন অন্য দমরে রাজপথে অমেধ্য উৎ-স্ব করিলে, কার্বাপণ দণ্ড করত তাহাকে দেই অমেধ্য শোধন করাইয়া লইবে।

প্রতিমা ও সংক্রম ভেদ করিলে, পঞ্চাত দণ্ড করিবে। সমানের সহিত বিষম ব্যবহার করিলে, প্রথম বা মধ্যম দম প্রাপ্ত হইবে।

বণিক্গণের দ্রব্য গ্রহণ করিয়া, মূল্য না দিলে, রাজা উত্তম সাহদ দণ্ড করিবেন। দ্রব্যদূষক ও প্রতিচ্ছন্দ্রবিক্রয়ী মধ্যমণ্ডার্ছ এবং কুটকর্তা উত্তম-দণ্ডভাগী হইয়া থাকে।

শূদ্র বা ব্রাহ্মণ অভক্ষা ভক্ষণ করিলে, কৃঞ্জ দম প্রয়োগ করা বিধি।

বিষ ও অগ্নি দান এবং পতি, গুরু, বিপ্র ও অপত্যপ্রমাপণ করিলে নাসা, কর্ম ও হস্তচ্ছেদ পুরঃসর ক্রালোককে গোপুষ্ঠে নির্বাসিত করিবে।

ক্ষেত্র, বেশ্ম, প্রাম ও বনবিদারণ এবং রাজ-পত্নী গমন করিলে, কটাগ্নিতে দগ্ধ করিবে। নূন বা অধিকরূপে রাজশাসন লিখিলে, উত্তমদগুর্হ হইয়া থাকে।

রাজার যান ও আসনে আরোহণ করিলে, উত্তম দাহদ দণ্ড করিবে।

ন্থায়ানুসারে পরাজিত হইলেও, যে ব্যক্তি আপনাকে অপরাজিত মনে করে, সে ব্যক্তি পুন-র্জন্ন করিয়া আগমন করিলে, দ্বিগুণদমার্হ ইইয়া থাকে।

ইত্যালেয়ে আদি মহাপুরাণে দণ্ডপ্রণরমনামক বিষ্ঠ্য ধিকশততম অধ্যাস সমাপ্ত ।

ত্রিষষ্ট্যধিকশততম অধ্যার।

পুদ্ধর কহিলেন, দেহান্তরার্ডিজত স্থীয় কর্মকেই দৈব জানিবে। সেইজাঁগু মনীষিগণ পোকমকেই শ্রেষ্ঠ বলেন। দৈব প্রতিকূল হইলে,
পৌক্ষম দারা বিহত হয়। পৌক্ষম বিনা,
প্রাক্তন দান্তিক কর্মাবলে দিছিলাভ হইয়া থাকে।
হে ভার্গব! দৈবসম্পত্তি সহায়ে পৌক্ষম কালে
ফলিত হয়। দৈব ও পুরুষকার এই উভয়ই পুরুধের ফলোৎপাদন করে। রৃষ্টিসমাযোগে কৃষির
যথাকালে ফলসিদ্ধি হয়। অতএব অলস বা
দৈবপর না হইয়া, পৌক্ষমকে ধর্মযুক্ত করিবে।

সামাদি উপায়বলে সমস্ত উপক্রম সিদ্ধ হইয়া থাকে। সাম, দান, ভেদ, দগু, মায়া উপেক্ষা ও ইন্দ্রজাল, এই সপ্তবিধ উপায়। ইহাদের র্ত্তান্ত শ্রবণ কর। সাম দ্বিবিধ কথিত আছে, তথ্য ও অতথ্য। সাধুগণের আক্রোশ জন্মই অতথ্য সাম প্রয়োজিত হয়। যাঁহারা মহাকুলীন, সরল, ধর্মনিত্য ও জিতেন্দ্রিয়, সামবলে তাহাদিগকে সাধন করা যায়। রাক্ষসগণও অতথ্য উপায়ে বশীকৃত হইয়া থাকে।

যাহারা পরস্পার বিদ্বিন্ট, ক্রুদ্ধ, ভীত ও অব-মানিত, তাহাদের ভেদ প্রয়োগ ও পরম ভয় প্রদর্শন করিবে। আত্মীয়দিগকে আশা দিবে। যে দোষে লোকে ভয় পায়, দেই দোষ দেখাইয়া শক্রদিগকে ভেদ করিবে। জ্ঞাতিভেদকের রক্ষা করিবে।

দান সমস্ত উপায়ের শ্রেষ্ঠ। দানবলে উভয় লোক লাভ হয়। এমন ব্যক্তিই নাই যে, দান দারা বশীভূত না হয়। দানবান ব্যক্তি সংহত শত্রু-দিগকেও অনায়াসে ভেদ করে।

गांग, नाम ७ ८७८म याहा मा इस अक्सांक नर्छ তাহা দিছ হইয়া থাকে। দণ্ডে সমস্ত প্ৰতিষ্ঠিত আছে। অতএব অনুষ্ঠোর দণ্ড ও কথার্হের অনুণ্ড कतित्त, ताष्ट्रांटक विनक्षे इष्टेंटल इस् । यपि प्रश्र পালন না করে, তাহা হইলে দেব, দৈত্য, উরগ, नतः निक, पृष्ठ । পত जिश्ला मकरल है ये य सर्वाना অতিক্রম করে। যেহেতু অদান্তদিগকে দমিত এবং অদণ্ডাদিগকে দণ্ডিত করে, দেইছেতু পণ্ডিতগণ দণ্ড বলিয়া জানেন। রাজা - তেজঃপ্রভাবে প্রনি-রীক্ষ্য বলিয়া ভাস্করের সমান, দর্শনবশাৎ লোকের প্রশাদ বিধান করেন বলিয়া চল্ডের সমান চার-গণ সহায়ে জগৎ ব্যাপ্ত করেন বলিয়া বায়ুর সমান দোষ নিগ্রহ করেন বলিয়া যমের সমান ভবুদ্ধি দহন করেন বলিয়া অগ্রির সমান, অনবরত দান করেন বলিয়া কুবেরের সম্মান, ক্ষমাবলে লোক-দিগকে ধারণ করেন বলিয়া পার্থিব এবং উৎসাহ মন্ত্র ও শক্তি প্রভৃতি দারা রক্ষা করেনু বলিয়া শাকাৎ হরি।

ইত্যাধেরে আদিমহাপুরাবে সামালাপারনামক ভিষ্ট্য-ধিকশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুঃষষ্ট্যধিকশতত্ব অধ্যার।

পুদর কহিলেন মহীপতি রাজপুত্রের রক্ষা করিবেন। ধর্ম, অর্থ ও কাম শাস্ত্র ধসুর্বেদে ও শিক্ষত করিবেন; শরীররক্ষা ব্যাক্তে ইহাঁর রক্ষী সকল নিযুক্ত করিবেন; কুর লুর ও বিমানিত এই সকল লোকের সঙ্গ বিবক্তিত করিবেন এবং এইরূপে স্থাপিক্ষত করিয়া সর্ব্বপ্রকার অধিকারে তাঁহাকে বিনিয়োজিত করিবেন।

রাজা মুগয়া পান ও অক ত্যাগ করিবেন: দিবাস্থা র্থা পর্যটন ও বাক্পার্ধ্য বর্জন করি-বেন; নিন্দা দওপারুষ্য ও অর্থ দূষণ বিস্ত্রন করিবেন; কাম, জেলাধ, মদ, মান, লোভ ও দর্প পরিহার করিবেন অনন্তর ভূত্য জয় করিয়া পৌর ও क्रांन भन्न क्षय कतिरवन : भरत वांच भक्ति गरक পরাজয় করিবেন। বাহা শক্ত তিন প্রকার। যথা কুল্য, অনন্তর ও কুত্রিম। ইহারা যথাপূর্বে গুরু। হে মহাভাগ! মিত্রও তিন প্রকার স্বামী অমাত্য জনপদ তুর্গ দণ্ড কোষ্মিত্র হে ধর্মজ্ঞ ! এই সাতটী রাজ্যের অঙ্গ। তথ্যধ্যে স্বামী সকলের মূল। ইহাকে সর্বথা রক্ষা করিবে। বিশেষতঃ রাজ্য সর্বতোভাবে রক্ষণীয়। যে ব্যক্তি রাজ্যা-স্পের বিদ্রোহী, তাহাকে বধ করিবে। সময়ে তীক্ষ ও সময়ে মৃত হইবে।

নরপতি ভূত্যের সহিত হাস্থ পরিহাদাদি ত্যাগ ক্রিবেন। রাজা হর্ষণদংকথ হইলে ভৃত্যেরা তাঁহাকে পরিভব করে।

লোকদংগ্রহজন্ত ক্তক-বাদন হইবে এবং থাতপূর্বে সম্ভাগণপূর্বেক সর্বদা লোকদিগকে সন্তুষ্ট করিবে। দীর্ঘসূত্র নরপতির নিশ্চয়ই কার্য্য-श्रीन बहेशा थारक। तारम, मर्स्स, मारन, टफारइ, পাপকার্য্যে ও অপ্রিয় বাক্যেই দীর্ঘসূত্রিতা প্ৰশংস্কীয় 🚶

রাজা গুওমন্ত্র ইইবেন। গুওমন্ত্র রাজার বিপৎপাতের সম্ভাবনা নাই। আরক্ত কর্ম কেহ যেন জানিতে না পারে, কার্য্য সমাপ্ত হইলে কল ছারা যেন তাহার পরিচয় হয়, এইরপে রাজা কাষ্য করিবেন। আকার, ইঙ্গিত, গতি, মন্ত্রণা করিবেন না, আবার অনেকেরও সহিত মন্ত্রণা করিবে না। বহুলোকের সহিত পুথক্ পৃথক্ মন্ত্রণা করিবে: মন্ত্রিগণের মধ্যেও মন্ত্র প্রকাশ করিবে না । কদাচিৎ কাহারও প্রতি লোকের বিখাদ হইয়া থাকে; দকলের প্রতি সকলের সচরাচর বিশ্বাস হয় না। অভএব এক-জন পশুতের দহিত মন্ত্রণ। নিশ্চয় করিবে।

অবিনয়ী রাজার রাজ্যনাশ এবং বিনয়ী হইলে রাজপদ স্থায়ী হইয়া থাকে। ত্রৈবিদ্য হইতে ত্রয়াবিদ্যা, শাখতী দণ্ডনীতি, আহীক্ষিকী, অর্থ-বিদ্যা ও বার্ডারম্ভ এই সকল বিশেষরূপে অবগত हहेर्द ।

জিতেন্দ্রিয় রাজাই প্রজাদিগকে বশে রাখিতে সমর্থ। দেব ও দ্বিজগণের পূজা ও ভাঁহাদিগকে দান করিবে। দিকে দানই অক্সমনিধি। উহা কাহা কর্ত্তক বিনষ্ট হয় না।

সংগ্রামে অপলায়িতা,প্রজালোকের পরিপালন এবং ব্রাহ্মণদিগকে দান, এই কয়টীও রাজার মুক্তিজনক। রূপণ, অনাথ, বৃদ্ধ, বিধবা ন্ত্রী, ইহা-দের যোগক্ষেম ও বৃত্তি পরিকল্পনা করিবে। বর্ণা-শ্রম ব্যবস্থান ও তাপসপূজা, এই চুইটা বিশেষ-রূপে অমুষ্ঠান করিবে। সর্বত্ত বিশ্বাস করিবে না । কিন্তু তাপদজনে বিশ্বাদ করিবে।

বকবৎ অর্থচিন্তা, সিংহবৎ পরাক্রম প্রকাশ. রুকবৎ অবলুস্পন, শশবৎ বিনিষ্পত্তন, শূকরবৎ দৃত্ প্রহার, শিথিবৎ চিত্রাকারকরণ, অশ্ববৎ দৃত্-ভক্তিপ্রকটন, কোকিলবৎ হুমিউভাষণ, কাকবৎ শঙ্কানুসরণ এবং অজ্ঞাতবাদে নিতা করিবে। অতাে পরীকা না করিয়া, কথনও চেষ্টা, বাকা, নেত্রবক্তবিকার, ইত্যাদি উপায়ে। ভোজন বা শয়ন করিবে না। বাহার পরিচয় অন্তর্গত ভাব পরিজ্ঞাত হইয়া থাকে। একাকী বিশ্বজ্ঞান নাই, ভাদৃশ স্ত্রীসঙ্গম করিবে না এবং অল্পান্ত নৌকাতেও আরোহণ করিবে না। রাষ্ট্র-কর্মী হইলে, রাজা রাজ্যজ্ঞকী ও প্রাণবিষ্ণুক্ত হয়েন। ফুল্ফরেনে পরিপালন করিলে, বংস ধেমন জাতবল ও কর্মযোগ্য হয়, অয়ি মহাভাগ! যথাবিধানে ভরণাদি করিলে, রাষ্ট্রও তেমনি কর্মানহ হইয়া থাকে। দৈব ও পৌরুষ এই উভয় বিধানে সমস্ত কর্ম আয়ন্ত। ভন্মধ্যে দৈব অচিস্তা, পুরুষকার একমাত্র ক্রিয়ার আধার। রাজার রাজা মহীশ্রী জনাসুরাগ হইতেই প্রাহুভূতি হইয়া থাকে।

ইত্যাশ্যের আদিমহাপ্রাণে রাজধর্মনামক চতু: ঘটাধিকশতত্ব অধ্যায় সমাধা।

পঞ্চষট্যধিকশতত্ব অধ্যায়।

পুক্র কহিলেন, নরপতি অমাত্যের সহিত অভিষিক্ত হইয়া, শক্রজয় করিবেন। ত্রাহ্মণ বা ক্ষতিয়কে সেনাপতিপদে প্রতিষ্ঠিত করা কর্ত্তব্য । সেনাপতি কুলীন ও নীতিশাস্ত্রজ্ঞ হইবে। হার নীতিবিৎ হইবে। দূত প্রিয়বাদী, অক্ষীণ ও অতিশয় বলবান হইবে। তামূলধারী স্ত্রী বা পুরুষ, ভক্ত, প্রিয় ও ক্লেশসহিষ্ণু হইবে। সাজি বিগ্রাহিক ষাড়গুণ্যাদিবিশারদ হইবে। রক্ষক থড়গধারী হইবে। সার্থি বলাদিবিৎ হইবে। সুদাধ্যক হিত ও বিজ্ঞ হইবে। ধর্মজ্ঞ ও লেখক আক্ষরবিৎ ও হিতকারী হইবে। দৌবারিকগণ আহ্বানকালজ্ঞ হইবে। ধনাধ্যক রত্নাদিবিজ্ঞ হইবে। অফুদানী হিত হইবে। বৈদ্য আয়ুর্কেবিবিৎ, গজাধ্যক্ষ হস্তিবিৎ, গজা-রোহী জিতপ্রম, হয়াধ্যক হয়াদিবিৎ, তুর্গাধ্যক हिंड ও धीमान् धदः ऋপिंड वाञ्चर्यमित् इहेरव। শত্রাচার্য্য যন্ত্রমুক্ত, পাণিমুক্ত, অমুক্ত, মুক্তপারিত ও নিযুদ্ধ এই সকলে নিপুণ ও রাজার হিতকারী হইবে। অন্তঃপুরাধ্যক্ষ রৃদ্ধ হইবে। পঞ্চাশন্ত্রার্থিক ত্রী ও সপ্ততিবর্ষদেশীয় পুরুষগণ সকল কর্মে বিচরণ করিবে। আয়ুধাগারে সকলো জাগ্রহ থাকিবে। বিশেষ জানিয়া বৃত্তি বিধান করা কর্তব্য। উত্তম, মধ্যম ও অধ্য ভেদে ক্যিসকল অবধারণপূর্ব্যক উত্তম, মধ্যম ও অধ্য পুরুষদিগকে তত্তৎ কার্য্যে নিয়োগ করিবে।

পুধিবীক্সয়ে অভিলাষ হইলে, হিতকারী সহায়-निगटक चानश्रन कत्रिशा, धर्मिकं निगटक धर्माकाटर्श. শ্রদিগকে সংগ্রামকর্মে, নিপুণদিগকে অর্থকুত্যে এবং শুচিদিগকে সর্বব্রে নিযুক্ত করিবে। এই রূপ, নপুংদকদিগকে স্ত্রীবিষয়ে দারুণ কর্মে, ফলতঃ শুচিম্বাসুসারে যাহাকে যে বিষয়ে পারগ বলিয়া বোধ হইবে, তাহাকে ধর্মে, অর্থেও কামে এবং অংশদিগকে অধমকার্য্যে নিয়োজিত করিবেন। পিতৃপৈতামহ ভৃত্যদিগের হত্তে সমস্ত কার্য্যভার স্মস্ত করিবে। क्वित मात्रामकार्या जोशीमगरक निरम्ना कतिर्व না। আশ্রকামনার পররাজগৃহ হইতে সমা-গত হইলে, তুষ্টই হউক বা অতুষ্টই হউক, ভাষা-দিগকে যত্নাতিশয়দহকারে আত্রায় দিনে। তুষ্ট জানিলে, তাহাকে বিশ্বাস করিবে না, আপনার বলে রাথিবে ৷

দেশান্তর ছইতে সমাগত ব্যক্তিদিগকে চার হারা পরীক্ষা করিয়া, স্বগৃহে স্থাপন করিবে। এক দিকে শক্তা, অগ্নি, বিষ, দর্গ ও নিস্তিংশ এবং অক্তদিকে কুভ্তা ও স্থভ্তা, ইহাদিগের স্থাবাদি বিদিত হইবে। নরপতি চারচক্ষু হইবেন এবং দর্মদা চারদিগকে নিযুক্ত করিবেন। একজনের কথায় কথন অবিহিত, সৌম্য, পরম্পর অজ্ঞাত, বিনিক্, মন্ত্রকুশল, সাংবৎসর, চিকিৎসক, প্রব্রজিতাকার ও বলাবলবিবেকী এই সকল ব্যক্তিকে বিশ্বাস করিবে। ভ্তাগণের রাগাপরাগ, লোকের ভাগাঞ্ডণ এবং ভাভাভভ বিশেষরূপে পরিজ্ঞাত হইবে। তাহা হইলে, কাহারও পরাধীন হইতে হইবে না। অনুরাগজনক কার্য্যের অমুষ্ঠান ও তদিতর কর্মা বিসর্জ্ঞন করিবে। কেননা, জনামুরাগা লক্ষ্মী ও জনরঞ্জন এই দ্বিষিধ উপায়ে রাজা হওয়া যায়।

ইতাাথেরে আদিনগগুৰাণে সংগ্রনশান্তিনামক পঞ্চিতিবিকশভ্তম অধ্যায় সমাপু।

यहे्यक्तिविकगठ्य अक्षाय ।

পুকর কহিলেন, ভৃত্য শিষ্যের ভায় রাজাজা পালন করিবে। কথনও তাঁহার বাক্য লজ্মন করিবে না। অনুকৃল প্রিয়বাক্য প্রয়োগ করিবে, নির্জ্জনে অপ্রিয় হিত্রাক্য বলিবে। নিযুক্ত হইয়া কথনও বিত্ত হরণ করিবে না এবং কদাত প্রভ্রে অবমাননা করিবে না। তাঁহার ভায় বেশ ভাষা ও ব্যবহার করিবে না। তাঁহার ভায় বেশ ভাষা ও ব্যবহার করিবে না। তাঁহার সংস্প করিবে না। তাঁহার গুছ্ প্রকাশ করিবে না। কিঞ্চিৎ কোশলপ্রদর্শনপূর্বক রাজাকে বিশেষিত করিবে। রাজা কোন গুছ্ কথা বলিলে, লোকের নিক্ট তাহা প্রকাশ করিবে না। রাজা অন্য বাজিকে কোন কার্য্য করিতে আজ্ঞা করিলে, নিজে তৎকার্য্য সাধন জন্ম অগ্রসর হইবে। রাজদত্ত বস্ত্র, অলক্ষার ও রত্র সর্বদা ধারণ করিবে। আদিক্ট না হইলে, ভারে প্রবেশ করিবে না। রাজার সমক্ষে

কথনও অযোগ্য স্থানে উপবেশন করিবে না। জ্ম্ভা, নিষ্ঠীবন, হাস্থা, কোপ, পর্যান্তিকাঞায়, জ্রকুটী, বাত ও উদুগার, এই সকল রাজসমীপে পরিহার করিবে। আপনার গুণবর্ণনে যুক্তিসহ-কারে পরকেই নিয়োগ করিবে। লোলতা, পিশুনতা, নান্তিকতা, কুদ্রতা ও চপ-লতা, এই সকল রাজদেবাকালে এককালে পরি-ত্যাগ করিবে। ভূতিবর্দ্ধন ব্যক্তি প্রুত, বিদ্যা ও শিল্প এই সকলে আত্মাকে আত্মা দ্বারা সংযো-জিত করিয়া, রাজার দেবা করিবে। তাহা হইলে তাহার ভূতি লাভ হইবে। রাজার পুত্র, বল্লভ ও মন্ত্রীদিগকে সর্ববদা নমস্কার করিবে। সচিবদিগকে কিছুই বিশাস নাই। সর্ববদা রাজার মনঃশ্রীতি-কর বিষয়ের অনুষ্ঠান করিবে। রাজবিৎ ভূত্য বিরক্তি ত্যাগ করিয়া অনুরাগ সহকারে স্বকার্য্য शाधन कतिरव : जिल्हाशा ना कतिरल (कान বিষয়ে কোন কথা কহিবে না; কেবল আপং-কালে ঐরূপ করিবে; প্রদন্ন ও বাক্যমংগ্রাহী হইবে: কোন গুহু বিষয়ে আদেশ তাহাতে কোন রূপ সন্দেহ বা ভয় করিবে না; দৰ্বদা কুশলাদি জিজ্ঞাদা ও আদন দান করিবে। তাঁহার কথা শ্রবণসাত্র হৃষ্ট হুইবে এবং অপ্রিয়ও প্রিয়বোধে অভিনন্দন করিবে; দানও বছ বলিয়া এহণ ও কথান্তরে क्रिंद्रव ।

এই রূপে অনুরক্ত রাজার দেবা ও বিরক্তের বর্জন করিবে।

ইত্যাংগ্রে আদিনগপুরাণে অফ্জীবিশ্বতনামক ষট্

সপ্তৰ্মীধিকশততন অধ্যায়।

পুকর কহিলেন, অধুনা তুর্গদম্পত্তি কীর্ত্তন করিব। রাজা তুর্গদেশে বাস করিবেন। যাহার অধিবাসী অধিকাংশই বৈশা ও শূদ্র এবং কিঞিছ ব্রাহ্মণ, যাহা শক্রগণের অনাহার্য্য, যাহাতে অনেক কর্মকরের বাস, যাহাতে পুষ্প আছে, ফল আছে ও ধান্য আছে, যাহাতে ব্যাল ও তক্ষরের নাম-মাত্র নাই, যাহা পরচক্রের অগম্য, এরপে অদেব-যাতৃক ভক্তজন দেশই প্রশস্ত।

হে ভার্গব ! ধমুত্র্বর্গ, মহীত্র্য, নরত্র্য, রক্ষতর্গ, অমুত্র্য ও গিরিত্র্য, এই ছয় ত্র্যের
নধ্যে একতম তুর্য নিমাণ করিয়া তাহাতে
রাজা বাদ করিবেন। ইহাদের মধ্যে শৈলত্র্য দর্কোত্তম, অভেদ্য এবং অভাতেদ্ন। তথায়
অন্যের ত্র্যম, উংকুট, অমুযন্ত্রায়্র্য সম্পান
এবং হটাদি ও দেবলেয়াদি বিশিই পুর হাপন
করিবে।

অধুনা রাজরক্ষা কীর্ত্তন করিব। রাজা বিধাদিত হইলে, তাঁহাকে তদবস্থার রক্ষা করা বিধি।
পঞ্চাঙ্গ শিরীষ, মৃত্রপিন্ট, বিষাদিন, শতাবরী, ছিন্নকহা, বিষশ্পী, তণুলীয়ক, কোষাত্তনী, কল্হারী,
রাশ্মী, চিত্রপটোলিকা, মণ্ড্কপর্লী,বারাহী, ধাত্রী,
আনন্দক, উন্মাদিনী, সোমরাজ এবং বিষশ্ব রক্ষ,
এই সকল রক্ষার উপায়।

নরপতি বাস্তলক্ষণসম্পন্ধ ছুর্গে বাস করিয়া, দেবগণের পূজা, প্রজালোকের পালন, ছুই্টদিগের দমন ও বিবিধদানানুষ্ঠান করিবেন। কখনও দেবদ্রের হরণ করিবেন না; উহাতে কল্লকাল নরকে বাস হইয়া থাকে। দেবপূজাতংপর হইয়া দেবালয় সকল প্রতিষ্ঠা, হুরালয় সকল পালন ও

দেবতাসকল স্থাপন করিবেন। মুখ্য অপেকা माजया ट्यार्ड, माज्या याराका देखेकमा, देखेक-ময় অপেক্ষা প্রস্তরময় এবং প্রস্তরময় অপেক্ষা স্বর্ণ-ময় ও রত্বময় শ্রেষ্ঠ ! হরগৃহ প্রতিষ্ঠা করিলে, ভুক্তিমুক্তি প্রাপ্তি হয়। চিত্রনির্মাণ, গীতবাদ্য, প্রেকণীয় ও দানাদি অমুষ্ঠান এবং তৈল, ঘুত, गर् ७ श्वां निमशास (नवजार मान कवाहरन, স্বর্গলাভ হইয়া থাকে। সর্ব্বদা ব্রাহ্মণগণের পূজা ও পালন করিবেন; কদাচ ত্রক্ষস্থরণ করিবেন না৷ একমাত্র স্থবর্ণ, একমাত্র গোও একাসুল ভূমিও হরণ করিলে, নরক লাভ হইয়া থাকে। কাহারও দ্বেষ করিবেন না; পাপীকেও গ্লণা করিবেন না। ত্রহ্মহত্যা অপেকা গুরুতর পাপ আরে নাই। মহাভাগ ত্রাহ্মণগণ অনুদ্রকেও দৈব এবং দৈৰকেও অদৈৰ করিতে পারেন। অত-এব সর্বাদা ভাঁহাদিগকে নুমুম্বার করিবেন। বান্সণের অশ্রুপাতে কুল, রাজ্য ও প্রজা সমস্তই নকট ছয়। ধান্মিক মবপতি সাংধী স্নীর পালন করিবেন। সাংলী জীর লক্ষণ যথা.---দর্মদা প্রকুল্ল হইবে, গৃহকার্য্যে অভিমাত্র দক্ষ হইবে, ব্যায়ে অনুভাহস্ত হুইবে, উপস্কর সকলসুদং-कृठ कतिरव, यांगीरक मर्वामा रमवा कतिरव, সামীর মৃত্যু হইলে, ত্রেলচর্য্যের অনুষ্ঠান করিবে, পরগৃহে রুচি-পরিহার করিবে, কলহণীলতা বিদ-জ্জন করিবে, স্বামী প্রবাসন্থ ইইলে মণ্ডনবৰ্দ্জন করিবে, দেবতারাধনে তৎপরতা প্রদর্শন করিবে, স্বামিহিত কায়মনে দাধন করিবে, মঙ্গলার্থ কিঞ্চিৎ অলঙ্কার ধারণ করিবে, ভর্তাগ্লিতে প্রবেশ করিলা স্বৰ্গলাভ করিবে, লক্ষ্মীর পূজা করিবে, গৃহ সম্মার্জনাদি করিবে এবং কার্ত্তিক্যাদের দাদশীতে বিষ্ণুপুজা ও ভছুদেশে স্বৎ্যা গাভী প্রদান

করিবে। সাবিত্রী সভ্যাচারত্রভবলে স্বামীকে রক্ষা করিয়াছিলেন।

ইতাথেরে আদি মহাপ্রাণে রাজধর্মনামক সপ্তমষ্ট্য-ধিকশতভম অধ্যায় সমাপ্ত।

অষ্টংষ্ট্যধিকশততন অধ্যায়।

পুক্ষর কহিলেন, রাজা আমের অধিপতিকে দশ আমের অধিপতিতা নিয়োগ, দশ আমের অধিপতিতা নিয়োগ, দশ আমের অধিপতিকে শত আমের ঈশ্বর এবং শত আমের ঈশ্বরকে বিষয়ের অধিপতি করিবেন। এই রূপে কর্মান্সারে তাহাদের ভোগ বিভাগ করা বিধেয়। চরপুরুষগণ স্থারা নিতাই তাহাদের পরীক্ষা করিবে।

গ্রামমধ্যে কোনরূপ দোষ সমুৎপদ্ধ ইইলে, গ্রামেশ তাহার শান্তি করিবে। অশক্ত ইইলে দশগ্রামপতিকে নিবেদন করিবে। দশপাল এবিষয়ে যুক্তিবিধান করিবে। স্বাধিকার হুরক্ষিত ইইলে, রাজার বিভলাভ হয়। ধনবানেরই ধর্মা এবং ধনবানেরই কামনা সম্পন্ন ইইয়া থাকে। গ্রীম্মকালে নদী যেমন শুক্ত হয়, ধন বিনা ক্রিয়াকলাপ তেমনি উচ্ছিন্ন ইইয়া যায়। পতিত ও নির্দ্ধন এই উভয়ে কোন রূপ প্রভেদ নাই। পতিতের নিকট যেমন লোকে গ্রহণ করে না, দরিদ্রেও তেমনি কাহাকে কিছু দিতে পারে না। ধনহীনের একমাত্র ভার্যাও তাহার উপবর্ত্তিনী হয় না।

রাষ্ট্রপীড়ন করিলে, রাজার চিরকাল নরকে বাস হইয়া থাকে। গর্ভিণী সহধর্মিণী যেমন নিজের তথ ত্যাগ করিয়া গর্ভেই স্থথ আবহন করে, রাজারও তদ্বৎ হওয়া আবশ্যক। যাহার প্রজার ক্ষিত না হয়, তাহার যজ্ঞ ও তপস্থার প্রয়োজন কি? যাহার প্রজা স্বাক্ষত, স্বর্গ তাহার গৃহের স্থায়। আর যাহার প্রজা অর্ক্ষিত, নরকই তাহার মন্দির। কি স্কৃত, কি চুক্কুত সকলেরই যড়ভাগ রাজা গ্রহণ করেন। রক্ষায় ধর্মালভ হয় এবং অরক্ষায় পাপসঞ্চয় হইয়া থাকে। রাজবল্লভ এবং তক্ষরগণ, বিশেষতঃ কায়স্থগণ প্রজাভক্ষণে প্রবৃত্ত হইলে, বিট ভীতা স্থভগার স্থায়,প্রজারক্ষা করা রাজার অবস্থা কর্ত্বব্য প্রমধ্মা; না করিলে, ঘোর নরক লাভ হয়। প্রক্ষপে রক্ষা করিলে, প্রজালোক রাজারই হইয়া থাকে এবং অরক্ষা করিলে তাহাদেরই ভোজন-রূপে কল্পিত হয়।

হৃষ্টগণের দমন ও শাস্ত্রোক্ত কর গ্রহণ এবং গৃহীত করের অর্দ্ধাংশ কোষে স্থাপন ও অর্দ্ধাংশ দিজাতিগণে বিভরণ করিবে।

কেই মিথ্যা বলিলে, ভাহার বিভের অইমাংশ
দণ্ড করিবে। অধিকারী নির্দেশ না ইইলে, ভাহার
ধনদম্পত্তি তিন বংদর রাখিয়া দিবে। ইহার
পূর্কের্ব ধনস্বানী আদিলে, ঐ ধন পাইতে পারে।
তিন বংদর অতীত ইইলে, রাজা স্বয়ং উহা গ্রহন
করিবেন। যে ব্যক্তি, আমার ঐ ধন, বলিবে,
দে যথাবিধানে রূপ ও সংখ্যাদি নির্দেশ করিলে,
উহা পাইতে পারে।

বালক যত দিন না বয়ঃপ্রাপ্ত হয়, তাবৎ রাজা তাহার সম্পত্তি অমুপালন করিবেন। বাল-পুত্রা, কুলহানা, পতিব্রতা, বিধবা ও আভুরা এই সকল ত্রীকে নরপতি রক্ষা করিবেন। জীবিত অবস্থায় দায়াদগণ তাহাদের সংহরণ করিবেন, রাজা তাহাদিগকে চোরের শান্তি প্রদান করিবেন। সামাততঃ চোরে চুরি করিলে, রাজা স্বয়ং তাহা

প্রদান করিবেন এবং চোররক্ষাধিক্ত পুরুষগণের
নিকট সেই হৃত গ্রহণ করিবেন। চুরি না হইলেও, চুরি হইয়াছে বলিলে, সে ব্যক্তিকে দওদান ও নিক্ষাশন করিবে। গৃহণত ব্যক্তিগণ
আপনা আপনি চুরি করিলে, রাজা তাহার
দায়ী হইবেন না।

হে ছিজ! নরপতি আপনার রাষ্ট্রপণ্য হইতে বিংশতি অংশ গ্রহণ করিবেন। বণিকের যাহাতে লাভ হইতে পারে, তাহা জানিয়া ডিনি শুক্ষ কল্পনা করিবেন। বণিক বিংশাংশ লাভ আদান করিবে। তাহার অন্তথা করিলে, দগুনীয় হইবে। স্ত্রী ও প্রত্রাজিতগণের নিকট তরশুল্ক গ্রহণ করিবে না। শুকধান্তে ষড়ভাগ ও শিষিধান্তে অফীম-ভাগ, দেশকালাফুরূপে গ্রহণ করিবে। এইরূপ, পশু 📽 হিরণ্যের পঞ্চয়ভাগ আদান করিবে। গন্ধ ভ্ষমি ও রদ্পুজা, মূল, ফল, পত্র, শাক ও ज्न, वः म, देवनव ও हन्त्र, देवमन, ভাগু, मर्व्यकात অশাময় দ্ব্য, মধু, মাংদ, স্ত ইহাদের বড়ভাগ গ্রহণ করিবে। মরিলেও, ভ্রাহ্মণের নিকট কর আদান করিবে না। যে রাজার অধিকারে শ্রোতিয় ভ্রাহ্মণ ক্ষুধায় অবসন্ন হয়, ভাহার রাষ্ট্র ব্যাধি,ছর্ভিক্ষ ও তক্ষর ছারা অবসন্ন হইয়া থাকে। শ্রুত ও র্ভ সবিশেষ পরিজ্ঞাত হইয়া, তাহার বৃত্তি কল্পনা করিবে। পিতা যেমন উরস পুত্রকে, তেমনি তাহাকে রক্ষা করিবে। যে ব্যক্তি রাজা কর্ত্তক সংরক্ষিত ইইয়া, প্রতিদিন ধর্মানুষ্ঠান করে, তাহা ছারা রাজার ছায়ু, রাজ্য ও সম্পত্তি বৃদ্ধি হইয়া থাকে।

> ইত্যাল্লেরে আদিনহাপ্ৰাণে রাজধর্মানক অইবইাধিকশততম অধ্যার সমাপ্ত।

উনসপ্তত্যধিকশতত্য অধ্যায়।

পুকর, কহিলেন, এক্ষণে ধর্মাদি পুরুষার্থ ও অন্তঃপুরচিন্তা কীর্ত্তন করিব। এই পুরুষার্থ দক-লের পরস্পার রক্ষা ছারা নরপতি দ্রীদেবা করি-বেন। অর্থরূপ মহারক্ষ; ধর্ম তাহার মূল ও কর্ম তাহার ফল। সর্বতোভাবে রক্ষা করিলে, এই ত্রিবর্গপাদপের ফল পাওয়া যার।

রাম ! ক্রী দকল কামাধীন তজ্জতা রতুসংগ্রহ। বিষয়েষী ভূপতি ভাহাদের দেবা করিবেন: কিন্তু অতিমাত্র দেবা করিবেন না। ভাহার মৈথুন, নিক্রা, এই সকলের অতিশয় দেবা করা উচিত নহে। কেননা উহাতে রুগ্ন ছইবার সন্তা-বনা। মঞ্চাধিকারে স্বরামিকা জীর সেবা করিবে। যে ত্রী ছফ ব্যবহার করে, স্বামীর কথা অভিনন্দন না করে, শত্রুর সহিত সংমিলন করে, গর্বর ও ঔদ্ধত্য প্রকাশ করে, চুম্বন করিলে, বদন মার্চ্জন করে, দান করিলে, ভাহার বছমাননা না করে. প্রথমে শয়ন করে, শয়ন করিয়া পশ্চাৎ নির্দ্রা হইতে উত্থান করে, স্পার্শ করিলে, গাত্র কম্পান ও গাত্র রোধ করে, প্রিয়কথা বলিলেও পরাগ্মখী रहेश नेष्य धार्य करत, व्यानात्व पृष्टिक्म ना करत, জঘনদেশ গোপন করে, স্বামীকে, দেখিলে বদন মলিন করে, স্বামীর মিত্রজনেও অন্সুরাগ প্রকাশ করে, অভান্য জ্রীগণ স্বামীর প্রতি কামিতা হইলেও মধ্যস্থার ভাষে প্রাক্ত প্রদর্শন করে এবং যে স্ত্রী মণ্ডনকাল উপন্থিত জানিয়াও মণ্ডন কার্য্য না করে, এইরূপে যে স্ত্রী বিরাগপরায়ণা, তাহাকে ভ্যাগ করিয়া, সামুরাগা স্ত্রীর ভজনা করিবে।

যে ক্লী সামীর দর্শনমাতে ছাফা হয়, স্বামীকে দেখিলেই লজ্জায় অবনতমুখী হয়, দর্শনপথে পতিতা হইলে চঞ্চলদৃষ্টি অন্তত্ত ক্ষেপণ করে, প্রায় সহকারে গহিত অঙ্গ গোপন করে, স্বামীকে দেখিলে বালককে আলিঙ্গন ও চুম্বন করে, সন্থান্দ করিলে, সভ্য কথা বলে, স্পর্শ করিলে পুলক্তিত ও স্থিমদেহা হয়, হে রাম! স্বামির নিকট স্থলভ দ্রব্য প্রার্থনা করে, তাহাও আবার স্প্রন্মাত্র প্রাপ্ত হইলে পরম পুলকিত হয়, নামসংকী-র্ভনমাত্রেই আহ্লাদিত হইয়া বহুমান করে, স্বামীর নিকট করজান্ধিত ফল প্রেরণ করে, ও স্বামীর প্রেষিত ফল আদরপুরঃসর হলয়ে ধারণ করে, যাহাকে আলিঙ্গন করিলে, শরীরে যেন অয়ত-দিঞ্চন হয়, স্বামী শয়ন করিলে পর, যে ক্রী শয়ন করে ও তাহার পূর্কে জাগরিত হয় এবং উরু স্পার্শ করিয়া হপুস্বামীকে জাগরিত করে, তাহার নাম সামুরাগা স্ত্রী।

রাম! শোচ, আচমন, বিরেচন, ভাবনা, পাক, বোধন, ধূপন ও বাসন, এই অইবিধ কর্মানিদিই ইইয়াছে। তন্মধ্যে কপিথ, বিল্ল, জন্মু, আত্র ও করবীর এই সকলের পত্রে উদক করিয়া, যে দ্রব্য শোচিত হয়, তাহার নাম শোচন। এই সকলের অভাবে মুগদর্শজলে শোচ করিবে। নথ, কুষ্ঠ, খন, মাংদী, স্পৃক, শৈলেয়জ, জল, কুন্মুন, লাক্ষা, চন্দন, অগুরু, নীরদ, সরল, দেবকাষ্ঠ, কপুর, কান্তা, বাল কুন্মুরু, গুগুওল, জ্রীনিবাদ ও সর্জ্জরদ এই একবিংশতি ধূপদ্রব্য হইতে ফেছাক্রমে হই ছইটা দ্রব্য সক্জভাগের সহিত গ্রহণ করিয়া, নথ, পিণ্যাক, মলয় ও মধুর সহিত

দ্বক্ নাড়ী, ফল, তৈল, কৃদ্ধুম, গ্রন্থি, পর্বৰ, শৈলেয়, তগর, কান্তা, চোল, কপূরি, মাংসী, স্থরা, কুষ্ঠ, এই সকল হইতে স্বেচ্ছাক্রমে দ্রব্যত্রয় গ্রহণ করিয়া মৃগদর্শের সহিত যোগ করত স্নান করিলে, কন্দর্শবৃদ্ধি হয়।

মঞ্জিষ্ঠা, তগর, চোল, হক্, ব্যান্তনখ, নথ ও গন্ধপাত্র বিশুস্ত করিলে, স্থন্দর গন্ধতৈল প্রস্তুত হয়। রাম! পুষ্পাধিবাদিত তিল্বারা তৈল নিপ-ড়ীত করিলে, বাদনবশাৎ পুষ্পদদৃশ স্থান্ধি তৈল বিনিষ্পান হইয়া থাকে।

এল, লবঙ্গ, ককোল, জাতীফল, কপুর এই কয়টী দ্রব্য জাতিপত্রিকার দহিত একত্র করিলে স্বতন্ত্র মুখবাদক হয়। রাম! কপুরি, কান্তা, মুগদর্প, হরেণুক, কর্কোল, এলা, লবঙ্গ, জাতি, কোশক, ত্বক্পত্র, ক্রটি, মৃস্ত, লভা, কস্ত্র-রিক,লবঙ্গকভিক,জাতির ফল ও পত্র এবং কটুফল এই দকল দ্রব্যে কার্ষিক প্রস্তুত করিবে। ইহা-দের চুর্ণে চারিভাগ খদিরসার প্রদানপূর্বক সহ-কার সংযোগে হুন্দর গুটিকা সকল প্রস্তুত করিয়া, মুখমধ্যে ग्रन्थ করিলে, মুখরোগ বিনষ্ট হয়। পঞ পল্লববারি ছারা হুন্দররূপে প্রকালন পূর্বক শক্তি অনুসারে গুটিকা দ্রব্যের সহিত কটুক ও দন্তকাষ্ঠ তিন দিন গোনূত্রবাসিত করিয়া, পুগবৎ করিলে, মুখদোগন্ধিকারক বিনিষ্পন্ন হয়। ও পথ্য এই চুই দ্রব্যের সমাংশ অদ্ধভাগ কপুরের দহিত একতা করিলে, মনোহর মুখবাদ নাগবল্লী-সম শোভমান হয়।

পৃথিবীপতি এই রূপে দর্বদ। স্ত্রীগণের রক্ষা করিবেন। ইহাদিগকে, বিশেষতঃ যে স্ত্রীর পুত্র হইয়াছে, তাহাকে কথন বিখাদ করিবেন না। রাত্তিতে স্ত্রীগৃহে শয়ন করিবেন না। তাহাদিগকে কৃত্রিম বিশ্বাদ করিবেন।

ইত্যাঘেরে আদিমহাপুরাণে স্ত্রীরক্ষাদিকামশাস্ত্রনামক উনসপ্ততাধিকশততম অধ্যায় সমপ্তে।

সপ্রত্যধিকশততম অধ্যায়।

পুক্ষর কহিলেন, যেরূপে রাজার অভিষেক করিতে হয়, বলিব।

অভিষেকের পূর্বে পুরোহিত ঐন্দ্রী শান্তি বিধান করিবেন। অভিষেকদিনে উপবাসী থাকিয়া বেদ্যগ্নিতে বৈষ্ণব, ঐন্ত্র, সাবিত্র, বৈশ্বদৈবত, ও সৌম্য ইত্যাদি আয়ুক্তর অভয়জনক শর্মাদ মন্ত্র সকল হোম ও স্বস্তায়ন করিবে। অগ্নির দক্ষিণপার্থ স্থ সম্পাতশালী হেম্ময় কলস. অপরাজিতার **স্**হিত গৰূপুষ্পাগে পূজা করিবে। প্রদক্ষিণ আবর্ত্ত শিখাসম্পন্ন, তপ্ত-কাঞ্নের ন্যায় প্রভাবিশিন্ত, র্থসমূহ ও মেঘের ভায় নির্ঘোষযুক্ত, ধুমহীন, অনুলোম, হুগদ্ধশালী, ষান্তিকবৎ আকারসংযুক্ত, প্রদন্ন অর্চিবিশিষ্ট, ফুলিঙ্গবিহীন, মহাশিখাসম্পন্ন অগ্নিই প্রশস্ত। হোমদময়ে মার্জ্জার, মুগ ও পক্ষীগণ যেন মধা দিয়া গমন করিতে না পারে।

নরপতি পর্বতা গ্রন্থতিকা দারা মন্তকশোধন করিবেন; বল্মীকা গ্রম্ভিকা দারা কর্ণ, কেশবালয় মৃতিকাদারা মৃথ, ইন্দ্রালয়মৃতিকা দারা গ্রীবা, নৃপাল-মৃতিকা দারা হৃদয়, করিদন্তোদ্ধৃত মৃতিকা দারা দক্ষিণ ভূজ, র্ষশৃপোদ্ধৃত মৃতিকা দারা বাম ভূজ, সরোমৃতিকা দারা পৃষ্ঠ, সঙ্গমমৃতিকা দারা উদর, নদীকুলদ্বয়মৃতিকা দারা ভূই পার্ম, বেশ্যাদ্বার-মৃতিকা দারা কটিদেশ, যজ্জন্মমৃতিকা দারা ভিক্রদ্বয়, আগস্থানমৃতিকা দারা জামুদ্বয়, বিশ্বনা মৃতিকা দারা জামুদ্বয় ও পঞ্চাব্য দারা মৃত্বক শোধিত করিবেন।

অনন্তর অমাত্যচতুষ্টর ঘটদলিলে ভদ্রাদনগত রাজাকে অভিষেক করিবেন। তন্মধ্যে প্রাক্ষণ অমাত্য স্তপূর্ণ হেমকুম্ভ দারা পূর্ব্ব দিকে, ক্ষত্রিয় অমাত্য ক্ষীরপূর্ণ রূপ্যকৃত্ত দ্বারা যাম্যদিকে, বৈশ্য অমাত্য দধিপূর্ণ তাত্রকুম্ভ দ্বারা পশ্চিমদিকে এবং শুদ্র অমাত্য জলপূর্ণ মুখ্যয় কুন্ত দারা উত্তর দিকে অভিষেক করিবেন। অনন্তর বহর্চপ্রবর ব্ৰাহ্মণ মধু ছারা ও ছন্দোগ ব্ৰাহ্মণ কুশো ছারা অভিষেক করিবেন ৷ তদনস্তর পুরোহিত দদস্য-বর্গে যথাবিধি বহ্নিরক্ষাবিধান করিয়া, সম্পাত-বানু কলস দারা অভিষেক করিবেন। তৎপরে তিনি বেদিমূলে পমন করিয়া শতচ্ছিত্র সৌবর্ণ পাত্রসহায়ে যা ওষধী ইত্যাদি মন্ত্রে ওষধি দ্বারা অথ ইত্যাদিমন্ত্রে গন্ধ দারা, পুস্পাবতীতিমন্ত্রে পুষ্প দ্বাষা, ব্ৰাহ্মণেতি মন্ত্ৰে বীজ দ্বারা, আভঃ শিশান ইতি মন্ত্রে রত্ন দারা এবং যে দেবা ইভ্যাদি মন্ত্রে কুশোদক স্বারা অভিষেক করিবেন। অনস্তর যজুর্কেদী ও অথক্ববেদী ব্রাহ্মণ গন্ধদারেতি বলিয়া স্পর্শ করিবেন। তৎপরে ত্রাহ্মণগণ রোচনা ও সর্ববিতীর্থজন দারা শির ও কণ্ঠ অভিষিক্ত করিয়া গীতবাদ্যাদি নির্ঘোষ ও চামরব্যজনাদিসহায়ে সর্বেষিধিময় কুন্ত রাজার অত্যে ধারণ করিবেন। অনস্তর রাজা ত্রহ্মা, বিষ্ণু, ইন্দ্রাদি দেবগণ ও গ্রহেশ্বরদিগকে বিশেষবিধানে অর্চনা দর্পণ মৃত ও মঙ্গলাদি দর্শন করিবেন। তথ্য পুরোহিত ব্যাস্রচর্মের উত্তরবিশিষ্ট শয্যায় উপ-বিষ্ট হইয়া, মধুপর্কাদিদানপুরঃদর পট্টবন্ধ সম্পা-দিত করিবেন এবং রাজার পঞ্চর্মোত্তর মুকুট-वञ्च अर्थान कतिरवन। शक इन्स् यथा, वृधक, ঘূষদংশজ, দ্বীপিজ, দিংহজ ও ব্যাত্রজ। তৎকালে ধ্রুবাদ্য ইত্যাদি মন্ত্র প্রয়োগ করিতে হইবে।

এবং প্রতীহারী সমাত্য ও সচিবদিগকে প্রদর্শন করিবে।

ইত্যাধ্যেরে আদি মহাপ্রাণে রাজ্যাভিষেকনামক সপ্তত্য-ধিকশততম অধ্যায় সমপ্তে।

একস্তুত্যধিকশতত্ম অধ্যায়।

পুকর কহিলেন, নৃপতি যথন বুঝিতে পারিবেন যে, বলবান্ আফ্রন্দ কর্তৃক মনীয় পাঞ্চিগ্রাহ অভিছৃত হইয়াছে, তথন যুদ্ধযাত্রার আয়োজন করিবেন। অথবা আমি যোধদিগকে পোষণ
ও ভৃত্যদিগকে ভরণ করিয়াছি, আমার বলও
প্রভূত। অধুনা আমি যুলরক্ষায় সমর্থ হইয়াছি,
এইপ্রকার বুঝিতে পারিলেই, তিনি তাহাদের
সহিত শিবিরে গমন করিবেন। অথবা, শক্র্
ব্যসনাপন্ন ও দৈবাদি কর্তৃক নিপীড়িত হইলেই,
তিনি তাঁহাকে আক্রমণ করিবেন। প্রশন্ত শরীরফ্রিলি তাঁহাকে আক্রমণ করিবেন। প্রশন্ত ভ্রমিত্ত
ভ্রম্পানন্দর্শন অথবা শুভ ও নিমিত্ত
ভ্রম্পান্দর্শন অথবা শুভ ও নিমিত্ত
ভ্রম্পান্ত হইলেই,তিনি শক্রপ্রে যাত্রা
করিবেন।

বর্ষাকালে পদাতিহস্তিবক্ল দেনা সংযোজিত করিবে; হেমন্তে ও শিশিরে রথবাজিদমাকুল এবং বদন্তে ও শরমুথে চতুরঙ্গ দৈন্ত নিয়োগ করিবে। পদাতিবক্ল দেনা সর্বদা শক্ত জয় করে। শরীরের দক্ষিণভাগক্ষুরণই প্রশস্ত; বামভাগে অথবা পৃষ্ঠ ও হৃদয়ের ক্ষুরণ প্রশস্ত নহে। স্ত্রীলোকের বামভাগ ক্ষুরণ প্রশস্ত।

ইত্যাগ্রে আদিমহাপুরাবে বৃদ্ধাাতানামক একসপ্তজ্য-ধিকশততম অধ্যার সমাপ্ত।

দ্বিসপ্ত্যধিকশত্তম অধ্যায়।

পুকর কহিলেন, গমন, অবস্থান ও প্রশ্ন এই
সকল বিষয়ে শক্নসকল পুরুষের শুভাশুভ বিজ্ঞান
পত করে। শক্ন ছই প্রকার, দীপ্ত ও শাস্ত।
দৈবজ্ঞেরা নির্দেশ করেন, দীপ্ত শকুনে অশুভ ফল
এবং শাস্ত শকুনে শুভফল সংঘটিত হইয়া থাকে।
বেলা, দিক্, দেশ, করণ, রুত ও জাতি বিভেদ
অকুসারে শকুনদীপ্তি ষট্প্রকার নির্দিষ্ট হইয়াছে। ইহাদের মধ্যে পূর্বে পূর্বে বলবভর।
তশ্মধ্যে দীপ্তদিকে শকুনকে দিগ্দীপ্ত বলে, আর
প্রামে আরণ্য, অরণ্যে গ্রাম্য ও নিন্দিত পাদপ
ইত্যাদি অশুভদেশে শকুনকে দেশদীপ্ত, স্বজাভিতে অসুচিতক্রিয়কে ক্রিয়াদীপ্ত, ভিন্নভেরবনিস্থনকে রুতদীপ্ত এবং কেবল মাংসভোজীকে
জাতিদীপ্ত বলিয়া থাকে।

গো, অশ্ব, উপ্র, গর্দভ, কুরুর, সারিকা, গৃহগোধিকা, চটকা, ভাদ ও কূর্মাদি ইহারা প্রামবাদী। অজ, মেষ, শুক, নাগেজ, কোল, মহিষ,
বায়দ, ইহারা প্রাম্যারণ্য এবং অক্সান্ত দকলে বনগোচর। মার্জার ও কুরুট ইহারা প্রাম ও
অরণ্য উভয়বাদী। রূপভেদ অনুসারে ইহাদের
পরিচয় হইয়া থাকে। গোকর্ণ, শিখী, চক্রবাক্,
থর, হারীত, বায়দ, কুলাহ, কুরুভ, শ্রেন, কপিজ্বল, ফেরু, থঞ্জন, বানর, শতম্ব, চটকা, শ্যাম,
চাদ, তিত্তিরি,শতপত্র, কপোত, থঞ্জরীট, দাত্যুহ,
শুক, রাজীব, কুরুট,ভারন্বাজ ও দারক্ষ এই দকল
দিবাচর, জানিবে।

বাছরি, উলুক, শরভ, ক্রেঞ্চ, শশক, কচছপ, লোমাদিক ও পিঙ্গলিক ইহারা রাত্রিচর।

হংস, মৃগ, মার্জার, নকুল, ঋক, ভূজসম,

র্কারি, বিংহ, ব্যাত্র, উট্ট, গ্রামশ্কর, মানুষ, প্রাবিদ্ থাবভ, ব্যোমায়, ব্রক, কোকিল, সারদ, ভ্রঙ্গ, কোপীমনর ও গোধা ইহারা উভচর।

উল্লিখিত জন্ধণ দলবন্ধ হইয়া বলপ্রস্থানের পুরস্তাৎ বিচরণ করিলে, নিধনসাধন হয় ৷ চাস পক্ষী গৃহ হুইভে গমন পূর্বকে সন্মুখে অবস্থান করিয়া শব্দ করিলে রাজার অবমান এবং বামে থাকিলে কলহ ও আহার সমাবেশ হয়। প্রস্থান সময়ে তাহার দর্শন শুভ। রাম ! ময়ুর বামভাগে শব্দ করিলে, দ্রব্যাদি চুরী হইয়া থাকে। সময়ে সম্মুথলৈশে মুগদর্শন করিলে মুত্যু সংঘটন হয়। ঋক আখু জন্ম কাজে সিংহ, মার্জার ও গর্দভ ইহার৷ প্রাতিলোম্যে গমন করিলে, খর বিকৃতস্বরে শব্দ করিলে এবং বামদিকক্ত কপিঞ্জল मिक्रिगिरिक व्यवस्थान क्षित्राल, मङ्गलघरेना इत्र: কিন্তু তিত্তিরি পূর্তদেশ আত্রয় করিলে নিন্দিত ফল লাভ হইয়া থাকে। এণ, বরাহ, বুষভ ইহারা বাম হইয়া দক্ষিণ হইলে অর্থসাধন এবং বিপরীত হইলে অনর্থসম্পাদন করে।

বৃষ, অশ্ব জন্ব, ব্যাত্র সিংহন মার্জ্রার গর্দত ইহারা দক্ষিণ দিক্ হইতে বামে গমন করিলে বাঞ্চিত অর্থ সাধন করে, জানিবে। শিবা, শ্যামাননা, ছু চহু, পিঙ্গলা, গৃহগোধিকা, শুকরী, কোকিলা ও পুংসজ্ঞ জীবগণ বামদিকে এবং কপি, প্রীকর্ণ, ভাস, করেষ ও স্ত্রীসংজ্ঞ জীবগণ দক্ষিণ দিকে প্রশস্ত । বৃষ, সর্প, শশ, ক্রোড় ও গোধার কীর্ত্তন শভ। বানর ও ধাক্ষের প্রতীপ সন্দর্শন অনিষ্টকর । শিবা এক, তুই, তিন বা চারিবার ডাকিলে শুভ, পাঁচ বা ছয় বার ডাকিলে, অশুভ এবং সাতবার ডাকিলে প্রশস্ত; ইহার উর্ক্ত নিক্ষল হইয়া থাকে। মানবগণের রোমাঞ্চলনী ও

বাহনগণের ভরপ্রদা সূর্যামুখী জালানলা ভর্তার্কিনী জানিবে। শুভদেশে প্রথম সারঙ্গ দর্শন শুর্ভ। একবংসর পরে ইহার ফল জানিতে পারা যায়।

> ইত্যাগ্রের অ'দিমহাপুরাণে শকুননামক বিষপ্তভাধিকশততম অধ্যায় সমাধ্য

ত্রিসপ্তত্যধিকশততম অধ্যার।

পুকর কহিলেন, বহুদংখ্য বায়দ যে পথে পুর-প্রবেশ করে, দেই পথে রুদ্ধ পুরীর গ্রহণ হইয়া থাকে। কাক যদি ত্রস্ত ও ভয়াতুর হইয়া, দেনা-গণের বামদিকে শব্দ করে, তাহা হইলে ফুস্তর ভয় উপস্থিত হয় ; পুরোভাগে রক্তন্মান করিলে, বন্ধন ঘটিয়া থাকে ; হে ভার্গব ! পাতদ্রব্য, স্বর্ণ বা রোপ্য উপনীত করিলে, তত্তৎদ্রব্যের লাভ **হ**য়, গৃহ হইতে কোন দ্রব্য অপনীত করিলে, তাহার হানি হয়, পুরোভাগে আমমাংস ছর্দন করিলে ধন লাভ হয়, মুন্তিকা ক্ষেপণ করিলে, ভূলকি ও রত্ব অর্পণ করিলে রাজ্যপ্রাপ্তি হয়: প্রস্থানসময়ে অনুকূল হইলে লোকে কেম ও কর্মকম হয়, প্রতিকূল হইলে ভয়াবহ ও অনর্থদাধক হয়, শব্দ করিতে করিতে সম্মুখীন হইলে যাত্রার ব্যাঘাত-কর হয়: বামদিকে অবস্থান করিলে প্রশ্নন্ত ফল लां इयः ; मिक्किंगिरिक थाकिरम व्यर्थ विनाम इयः ; বামদিকে অনুলোম গমন করিলে শ্রেষ্ঠ ও দক্ষিণ-দিকে অনুলোম গমনে মধ্যম : বামদিকে প্রতি-লোম গমন করিলে যাত্রা নিষিদ্ধ; গুছে গমন করিলে যাত্রার্থ অভিপ্রেত সূচনা করে; সুর্যোর দিকে দৃষ্টি করিলে ভয় সংঘটন হয়; কোটরে বাস করিলে মহান্ অনর্থ হয়; ঊষর ভূমিতে অবস্থান করিলে অশুভ: অংক্ষে পঙ্কলিগু থাকিলে

প্রাশস্ত এবং অমেধ্যপূর্ণবদন হইলে, সর্বার্থদিদ্ধি হইয়া থাকে। হে ভ্তনন্দন! অন্যাত্য পতত্তিগণ কাকবৎ জানিবে।

কুরুরগণ কন্ধাবারের অপসব্যন্ত হইলে, विপত्তि नां एश ; हेक्टकारन मंक कतिरल नरत-ক্রের, গোপুরে পুরেশের ও অন্তর্গুহে থাকিয়া শব্দ করিলে গৃহেশের মৃত্যু হয়। কুরুর যাহার বাম অস্ত্রাণ করে, তাহার অর্থসিদ্ধি হয়; দক্ষিণ অঙ্গ ও বাম ভুজ আপে করিলে ভয়দংঘটন হয়; যাত্রাদনয়ে প্রতিমুখে স্মাগত হইলে যাত্রার ব্যাঘাত হয়, হে ভার্গব। পথ রোধ করিয়া थाकित्न जनामि চूরि हय, तब्बू होत वा व्यक्ति মুখে থাকিলে লভ্যের হানি হয়, উপানহ বা মাংস মুখে থাকিলে অভিপ্ৰেত দিদ্ধি হয়; কেশ ও অ্যাফ্ত অমঙ্গল্য মূথে থাকিলে শুভ হয়; দমুখে অবমূত্রন করত গমন করিলে, ভয়সংঘটন হয় এবং ঐরপ অবস্থায় শুভদেশ বা বৃক্ষ অথবা কোন मन्ना ख्वा नगौर्भ शमन कतिरन यांवाकातीत অর্থসিদ্ধি হয়। রাম ! জমুকাদি অন্যান্য পশু কুকুরবৎ জানিবে।

গোগণের অনিমিত রোদন স্বামীর ভয় সূচনা করে। তাহারা রাজিতে ঐরপ বিকৃত রব করিলে চৌরভয় ও মৃত্যু হয়। রাজিতে বলীবর্দ্দ শব্দ করিলে স্বামীর মঙ্গল লাভ হয়। স্বকীয় দত গোসকল ভক্ষণ করিলে অভয় হয়; বৎসগণে মেহশৃষ্ঠ হইলে গর্ভক্ষয় হয়; ব্যাকৃল ও শঙ্কিত হইয়া পাদ দারা ভূমিলিখন করিলে ভয়সংঘটন হয় এবং আর্জাঙ্গ, হৃষ্টরোমা ও শৃঙ্গে মৃতিকালগ্ন হইলে শুভ হয়। মহিষী প্রভৃতি অন্যান্য পশুসকলে এইরাশ জানিবে।

সপর্য্যাণ অশ্ব জলে উপবেশন বা ভূমিতে পরি-

বর্তন করিলে অনিষ্ট হয়; অনিমিন্তে শয়ন করিলে বিপৎপাত হয়; অকুলাৎ যব ও খোদকে বিতৃষ্ণ হইলে অমঙ্গল হয়; রুধির বমন ও শরীর কম্পন করিলে অনিষ্ট হয়; এক কপোত ও সারিকার সহিত ক্রীড়া করিলে মৃত্যু হয়; সাশ্রুদ নেত্রে জিহ্বাযোগে পাদ লেহন করিলে বিনাশ হয়; বামপাদ দ্বারা ভূমি লেখন করিলে অভভ হয়; দিবসে বাম পার্খে শয়ন করিলে অমঙ্গল হয়; নিদ্রাবিল বদনে সকুমুত্র ত্যাগ করিলে অমঙ্গল হয়; নিদ্রাবিল বদনে সকুমুত্র ত্যাগ করিলে ভয়সংঘটন হয়; আরোহণ করিতে না দিলে বা প্রতিক্লভাবে গৃহেগমন করিলে অথবা বাম পার্মা ম্প্রাপ্র করিলে অয়লাভ হয়। পাদ দ্বারা শক্রেসৈন্য স্পর্শ করিলে জয়লাভ হয়।

নৈথুনপ্রস্তু মাতঙ্গ প্রামে গমন করিলে দেশ নই হয়। প্রসূতা নাগবনিতা মন্ত হইলে রাজার বিনাশ হয়; আরোহণ করিতে না দিলে অথবা প্রতিক্লভাবে গৃহে গমন করিলে রাজার ব্যাঘাত হয়; বামপাদ দক্ষিণপাদে আক্রমণ করিলে ভভ হয় এবং কর দ্বারা দক্ষিণ দন্ত মার্জন করিলে মঙ্গললাভ হয়।

র্ষ, অখ বা হস্তী রিপুদৈন্যে গমন করিলে, অশুভ হয়।

যাত্রাকালে এই নক্ষত্র প্রতিকূল, সন্মুখবায়ু প্রবাহিত ও ছত্রাদি পতন ইইলে ভয়সংঘটন হয়; এবং লোকসকল হাই ও গ্রহসকল অনুকূল ইইলে জয় হয়।

কাকগণ দারা যোধগণের অভিভব ও ক্রব্যাদ-গণ দারা মণ্ডলক্ষয় হইয়া থাকে।

প্রাচা, পশ্চিম ও ঐশানী দিক্ প্রসন্ন হইলে শুভ কল লাভ হয়।

চতুঃসম্বত্যধিকশততম অধ্যায়।

পুষ্ণর কহিলেন, রাজধর্ম উপলক্ষে সর্ববপ্রকার যাত্রাস্বরূপ কীর্ত্তন করিব।

শুক্র অস্তমিত, নীচগত, বিকল, রিপুরাশিন্থ, প্রতিকূল ও বিধবন্ত হইলে যাত্রা বিসর্জন করিবে। বুধ প্রতিলোম ও দিক্পাল গ্রহ অনমুকূল হইলে যাত্রা ত্যাগ করিবে। বৈধৃতি, ব্যতীপাত নাগ, শক্নি ও চতুষ্পাদ কিন্তুল্ল, এই দকলে যাত্রা বিব-র্জন করিবে। বিপন্তার নৈধন, প্রত্যারি জন্ম, গণ্ড ও রিক্রাতিথি এই দকলে যাত্রা বিদর্জন করিবে। উদীচীর সহিত প্রাচী, এবং পশ্চিমের সহিত দক্ষিণ দিকের ঐক্য কথিত হইয়াছে। বায়ু গ্রিদিক্সমুদ্ভ পরিঘ্যোগ লক্ষ্যন করিবে না। আদিত্য, চন্দ্র ও শৌর এই কয় দিবদ যাত্রায় প্রশস্ত নহে। পূর্ব্বে কৃত্তিকাদি, যাম্যে মহাদি, পশ্চিমে মৈত্রাদি ও উত্তরে বাদবাদি নক্ষত্র প্রশস্ত।

অধুনা ছায়ামান কীর্ত্তন করিব। আদিত্যে বিংশতি, চন্দ্রে যোড়শ ভৌমে পঞ্চদশ, বুধে চতুর্দশ, জীবে অয়োদশ, শুক্রে দাদশ এবং দৌরে একাদশ সর্বাক্রে কীর্ত্তিত হইয়াছে। জন্মলয়ে ও সম্মুধশক্রচাপে যাত্রা করিবে না। শুভ শকুনাদিতে হরিম্মরণপুরঃসর জয়জন্য যাত্রা করিবে।

সম্প্রতি তোমার নিকট মণ্ডলচিম্ভা কীর্ত্তন করিব। রাজার রক্ষা করা সর্বতোভাবে কর্ত্তব্য। স্বামী, অমাত্য, তুর্গ, কোষ, দণ্ড, মিত্র ও জন এই সাত্টী রাজ্যের অঙ্গ। সপ্তাঙ্গ রাজ্যের বিম্নকর্তাদিগকে বিনাশ করিবে। রাজা সমস্ত মণ্ডলেই রুদ্ধি বিধান করিবেন।

রিপু তিনপ্রকার, কুল্য, অনম্ভর ও কৃতিম।

ইহাদের মধ্যে পূর্ব্বপূর্ব্ব গুরু ও চুশ্চি কিংস্ততম।
প্রাতন পূরুষগণ মিত্র দারা শক্রের উচ্ছেদ্বে
প্রাতন পূরুষগণ মিত্র দারা শক্রের উচ্ছেদ্বে
প্রাতন প্রাতন। মিত্রও সময়ে শক্রে হইয়া
থাকে। স্বয়ং সমর্থ হইলে জিগীবু রাজা শক্রেকে
উচ্ছিন্ন করিবেন। যাহাতে লোকে উদ্বিশ্ন বা
অবিশ্বস্ত না হয়, এরূপে জিগীবু ও ধর্মবিজ্ঞানী
রাজা ভাহাকে বশীভূত করিবেন।

On The Land

ইত্যাথেরে আদিমহপুরাণে যাতামগুলচিস্তাদিনামক চতুঃলপুত্যধিকশততম অধ্যায় সমাপ্ত ।

পঞ্চসগুত্যধিক শতত্ম অধ্যায়।

পুষর কহিলেন, আমি তোমার নিকট সাম, দান, ভেদ ও দণ্ড কহিয়াছি এবং স্বদেশে যেরূপে দণ্ডপ্রয়োগ বিধি, তাহাও বলিয়াছি। অধুনা পরদেশে প্রযোজ্য দণ্ডাদি কার্ত্তন করিব।

প্রকাশ ও অপ্রকাশভেদে দিবিধ দণ্ড কথিত হইয়া থাকে। তন্মধ্যে লুঠন, গ্রামঘাত, শস্ত্র-ঘাত, অগ্রিদীপন, বিষ, বহ্লি ও বিবিধ পুরুষদহায়ে বধ এই কয়টি প্রকাশ দণ্ড। আর সাধুদ্ধণ ও উদকদ্ধণ ইহাদের নাম অপ্রকাশ দণ্ড। দণ্ডপ্রণয়ন কীর্ত্তন করিলাম।

হে ভার্গব ! এক্ষণে উপেক্ষাবিধি জুবণ কর ।
নৃপতি যথন বুঝিবেন যে, শক্র আমার কিছুমাত্র
উপদ্রব করিতে সক্ষম নহে এবং আমিও তম্বৎ
অক্ষম, তখনই তিনি উপেক্ষা আশ্রয় করিবেন।
এইরূপে নরপতি শক্রেকে অবজ্ঞা দারা উপহত
করিবেন।

অধুনা মায়োপায় কীর্ত্তন করিব। বিবিধ অনৃত উৎপাত বারা শিবিরস্থ শক্তের উদ্বেগ উৎ-পাদন করিবে। হে বিজ্ঞ। বিপুল উল্লা নির্মাণ করিয়া বিসর্জ্জন ও উল্লাপাত প্রদর্শন করিবে। এইরূপ অক্সান্ত বহুবিধ উৎপাত প্রয়োগ এবং বিবিধ কুহক সহায়ে শক্রুর উদ্বেজন করিবে।

সাংবংসর ও তাপসগণ শত্রুর বিনাশ কীর্ত্তন করিবেন। তন্থারা জিগী গুরাজা শত্রুকে উদ্বে-জিত করিবেন এবং দেবগণের প্রসাদ কীর্ত্তন করিয়া সংগ্রামসময়ে এইপ্রকার কহিবেন, আমা-দের মিত্রবল সমাগত হইয়াছে; এদিকে শত্রু-গণ্ড রণে ভঙ্গ দিয়াছে, তোমরা নিঃশঙ্গে প্রহার কর। তংকালে, শত্রু হত হইল বলিয়াও ক্ষেড়ন ও কিলকিলা শব্দ করিবে।

অধুনা ইন্দ্রজাল কীর্ত্তন করিব। নরপতি যথাকালে ইন্দ্রজাল প্রদর্শন করিবেন এবং শক্রকে দেখাইবেন যে, তাঁহার সাহায্যার্থ দেবগণের চতু-রঙ্গ বল সমাগত হইয়াছে। এইপ্রকার প্রদর্শন নাল্ডে শক্রর উদ্দেশে রক্তর্ম্থি এবং প্রাসাদের অত্যে শক্রর ছিন্ন মন্তকপরম্পরা প্রদর্শন করিবে।

সম্প্রতি ষাড়্গুণা কীর্ত্তন করিব। ষড়্গুণের
মধ্যে দক্ষি ও বিগ্রাহ শ্রেষ্ঠ। দক্ষি, বিগ্রাহ, যান,
আদন, বৈধীভাব ও সংশ্রেয় এই ষড়্গুণ কীর্ত্তিত হইয়াছে। তন্মধ্যে পণবন্ধের নাম দক্ষি, অপকারের
নাম বিগ্রাহ, জিগীয়ু রাজার শক্রবিজয়ে যাতার
নাম যান, বিগ্রাহদহকারে স্বীয় দেশে অবস্থিতির
নাম আদন, বলার্দ্ধহায়ে প্রয়াণের নাম দৈধীভাব। সমানের দহিত দক্ষি এবং হীনের সহিত্ত
বিগ্রাহ করিবে।

ইত্যালেরে আদিনহাপুরাণে উপ্যেবভ্রণদিন্মক পঞ্ সপ্তঃবিকশ্তত্যভাষায় সমাপু।

ষ্ট্,সপ্তভ্যধিকশতভ্য অধ্যায়।

শ্রীরাম লক্ষণকে কহিয়াছিলেন, নরপতি
ভাদশরাজক মুখ্য মণ্ডল চিন্তা করিবেন। ভারি,
মিত্র, ভারিমিত্র, মিত্রমিত্র, ভারিত্রমিত্র, বিজিগীবুপুর, পাফি গ্রাহ, আক্রন্দ, আসার, অনল,
বিজিগীবুমণ্ডল এবং ভারি ও বিজিগীবুর ভূম্যনন্তর
মধ্যমমণ্ডল এই ছাদশ রাজ্মণ্ডল।

লক্ষণ! তোমার নিকট সন্ধি, বিগ্রহ, যান ও আসনাদি কার্ডন করিব। বলবান কর্ত্ক বিগৃহীত হইলে, কল্যাণার্থ সন্ধি করিবে। কপাল, উপহার, সন্তান, সঙ্গত, উপন্যাস, প্রতীকার, সংযোগ, পুরু-যান্তর, অদৃষ্টনর, আদিষ্ট, উপগ্রহ, পরিক্রম, ছিন্ন, পরদূষণ, ক্ষমোপনেয় ও সন্ধি এই বোড়শবিধ সন্ধি কীর্ত্তিত ইইয়াছে।

বালক, বৃদ্ধ, দীর্ঘরোগাক্রান্ত, বন্ধুবহিন্ধ্রত, জীক্ল, ভীরুজন, লুর্র, লুর্জন, বিরক্তপ্রকৃতি, বিষয়স্থাথ অতিমাত্র আদক্ত, অনেক-চিত্ত-মন্ত্র, দেবব্রাহ্মাননিন্দক, দৈবোপহত, দৈবনিন্দক, ছার্ভক্ষব্যসনসম্পন্ন, বলব্যসনসংযুক্ত, স্বদেশস্থ, বহুরিপুযুক্ত, কালয়ক্ত, সত্যধর্মবর্জিত এই একবিংশতি.
পুরুষের সহিত দন্ধি করিবে না; কেবল বিগ্রহ করিবে। পরস্পারের অপকার হারাই বিগ্রহ উপস্থিত হইয়া থাকে। আত্মার অভ্যুদয়াকাজ্ফী অথবা শক্তকর্তৃক পীত্যমান হইলে নরপতি দেশকাল-বলোপেত হইয়া বিগ্রহে প্রস্ত হইবেন।

রাজ্য, ত্রী, স্থান, দেশ, জ্ঞান ও বল, এই সক-লের অপহরণ; মদ, মান, বৈধয়িকী পীড়া, জ্ঞান, আত্মশক্তি ও ধর্ম এই সকলের বিঘাত, দৈব, মিত্রার্থ, অপমান, বন্ধুবিনাশন, ভূতাকুগ্রহবিচ্ছেদ, মগুলদুষণ এবং একার্থাভিনিবেশ এই কয়টি বিগ্র-

হের হেছু। সাপত্ন্য, বাস্তজ, স্ত্রীজ, বংগ্রু ও অপ-রাধজ এই পঞ্বিধ বৈর কথিত হইয়াছে। সাধন-সহায়ে ইহার শান্তি করিবে।

যাহাতে কিঞ্চিৎ ফল আছে, যাহা নিক্ষল, যাহার ফল সন্দিশ্ধ, যাহা আপাততঃ দোষজনক, যাহা পরিণামে নিফল, যাহা বর্ত্তমান ও ভবিষ্যৎ উভয়ত্রই দোষজনন, যাহা তদাত্বে ফলসংযুক্ত, যাহা পরিণামে ফলবর্জিত, যাহা ভবিষ্যতে ফল-বিশিষ্ট, যাহা তদাত্বে নিম্ফল, যাহা পরের জন্ম, যাহা স্ত্রীনিমিত্তক,ইত্যাদি ষোড়শবিধ বিগ্রহে প্রবৃত্ত হইবেনা। যাহার তদাত্ব ও আয়েতি উভয়ই নির্দোষ, এরূপ কার্য্যের অফুষ্ঠানেই নরপতি मर्कामा প্রবৃত্তিবিধান করিবেন। স্থাপনার বল হৃষ্টপুষ্ট জানিয়া তদিপরীতকে আক্রমণ করিবে। মিত্র, আক্রন্দ ও আদার ইহারা নিজের প্রতি দৃঢ়-ভক্তি ও শত্রুর প্রতি তদ্বিপরীতভাবাপর হইলে, বিগ্রহে প্রবৃত হইবে। যান পঞ্চিধ, বিগ্রহপূর্বক, সন্ধানপূর্বক, প্রদঙ্গপূর্বক, উপেন্ধাপূর্বক ও সন্ত-বন পূৰ্বক।

তুই বলবান্ শক্রর মধ্যে বাক্য ছারা আত্ম-সমর্পণপূর্ব্বক কাকাক্ষিবৎ অলক্ষিত হইয়া, দৈধী-ভাবসহকারে অবস্থান করিবে। উভয়ের সম্পাত সংঘটিত হইলে, অপেক্ষাকৃত বলবানের সেবা করিবে। বলবান্ শক্রুকর্ক উল্লিম্ হইয়া কোন প্রকার প্রতিকার উপায় না থাকিলে সত্যশীল, আর্য্যভাবাপন্ন বলোৎকটের আশ্রয় করিবে।

ইতা৷প্রে আদিমহাপুরাণে বড়ে গুণানামক ষটুসপ্তা: ধিক শতভম অধ্যায় সমাপু।

সন্তুসপ্তত্যধিকশতত্য অধ্যায়।

অপেকা মন্ত্রশক্তি প্রশস্ত। শুক্রাচার্য্য প্রভাব ও উৎদাহশালী হইলেও, দেবপুরোহিত রুহস্পতি তাঁহাকে পরান্ধিত করেন। অনাপ্ত ও অপ্তিতের সহিত মন্ত্রণা করিবে না। বিনাক্রেশে অশক্য কামরতির ফলপ্রাপ্তির সন্তাবনা অজ্ঞান্তবিষয়ের জ্ঞান, জ্ঞাতবিষয়ের নিশ্চয়, অর্থ-ৰৈধের দল্দেহচেছদন এবং পরিণামদর্শন, এই কয়টি মন্ত্রণার ফল। সহায়, সাধন, উপায়, দেশকাল-বিভাগ ও বিপৎপ্রতীকার এই পাঁচটি মন্ত্রের অঙ্গ ৷

মনঃপ্রসাদ, শ্রদ্ধা, করণপটুতা ও সহায়োখান-সম্পদ এই কয়টি কার্য।সিদ্ধির লক্ষণ।

মদ, প্রমাদ, কাম, স্বপ্রপ্রপাপ, এই ক্রীট মন্ত্র ভেদ করে।

প্রগল্ভ, স্মৃতিমান্, বাগ্মী, শস্ত্রশাস্ত্রস্পণ্ডিত ও অভ্যস্তকর্মা, এইরূপ ব্যক্তিই রাজদুত হইবার উপর্ক। দূত ত্রিবিধ; নিস্ফীর্থ, মিতার্থ ও শাসনহারক। ইহারা পরস্পর একপাদ নিকৃষ্ট। অবিজ্ঞাত হইয়া শক্তর পুরে বা সভায় প্রবেশ করিবে না: কার্য্যার্থ কাল প্রতীক্ষা করিবে এবং অনুজ্ঞা পাইলে নিষ্পতিত হইবে। দৃষ্টি ও গাত্র-চেন্টা দারা শক্রর রাগাপরাগ এবং ছিক্র, কোষ, মিত্র ও বল এই সকল জানিবে। উভয় পক্ষেরই পঞ্চিধ স্তোত্র করিবে। লিঙ্গী ও তপস্থীগণের দহিত একত্রে বাস করিবে। এই সকল দূতের কার্য্য ।

চর দিবিধ; প্রকাশ ও অপ্রকাশ। বণিক, কুষীবল, লিঙ্গী ও ভিক্ষুক প্রভৃতির আকার পরিগ্রহ করিবে।

দূতচেষ্টিত নিকল হইলে ব্যসনাপন শত্ৰুকে জ্রীরাম কহিলেন, প্রভাব ও উৎসাহশক্তি আক্রমণ করিবে এবং প্রকৃতিব্যুসন পর্য্যালোচনা

করিয়া সমূৎপতিত হইবে। বাহা অনয়প্রায়ৃক্ত শ্রেয় বিনাশ করে, তাহার নাম ব্যসন। ব্যসন দ্বিধি; দৈব ও মানুষ। তন্মধ্যে দৈব ব্যসন পঞ্চবিধ; অগ্নি, জল, ব্যাধি, তুর্ভিক্ষ ও মরক। পুরুষকার ও শান্তি সহায়ে দৈবব্যসন প্রশমিত করিবে। আর উত্থাপিত ও নীতিবলে মানুষ ব্যসন পরিহার করিবে।

মস্ত্র, মন্ত্রকলপ্রাপ্তি, কার্য্যানুষ্ঠান, পরিণাম, আরব্যয়, দণ্ডনীতি, শত্রুপ্রতিষেধ, ব্যসনপ্রতীকার, রাজ্য ও রাজার রক্ষা এই কয়টি মন্ত্রীর কার্য্য। মন্ত্রী ব্যসনাম্বিত হইলে এই সকলের বিনাশ করিয়া থাকে।

শ্রজা ব্যসনাপন্ন হইলে হিরণ্য, ধান্য, বস্ত্র, বাহন ও অভাভ দ্রব্যের সহিত আজ্মাশ করে। ভৃষ্ণী, যুদ্ধ, জনতাশ, মিত্রাসিত্রপরিগ্রহ, এই

ভূফী, যুদ্ধ, জনতাণ, মিত্রামিত্রপরি গ্রহ, এই সকল সামস্ভব্যমনে বিন্ত হয়।

স্ত্রগণের ভরণ, দান, নিত্রামিত্রপরিগ্রহ, ধর্মকামাদিভেদ ও তুর্গদংক্ষারভ্বণ এই দকল কোষ-ব্যদনে বিন্ত হয়। কোষ্ট্রাজার মূল।

মিত্রানিত্র ভূমি ও হেম্বাধন, রিপুমর্দন, দূর-কার্য্য ও আশুকারিত্ব, দণ্ডব্যসনে এই সকলের বিনাশ হয়।

রাজা ব্যসনী হইলে সমস্ত রাজকার্য্য বিনাশ করেন। বাক্পারুষ্য, দণ্ডপারুষ্য, অর্থদুষ্ণ, পান, স্ত্রী, মুগয়া, দূরত, এই কয়টি রাজার ব্যসন। আলস্য, স্তর্কতা, দর্প, প্রমাদ, দ্বৈধকারিতা, এই কয়টি প্রেরাপদিউ সচিবব্যসন।

খনার্ষ্টি ও পীড়াদিকে রাষ্ট্রব্যসন বলে। যন্ত্র, প্রাকার ও পরিখার বিশীর্ণতা, শস্ত্রাভাব এবং সৈন্মের ক্ষীণতা ইহার নাম তুর্গব্যসন। ব্যয়াক্ষত, পরিক্ষিপ্ত, অপ্রজিত, অস্কিত ও দৃষিত দশা উপস্থিত হইলে ভাহাকে কোষব্যসন বলে।

উপরেধে, পরিক্ষেপ, বিষাননা, অবমান, ভরণাভাব, ব্যাধি, প্রান্তি, দ্রাগমন, নবাগমন, অত্যন্ত
ক্ষীণতা, প্রতিঘাত, প্রহতাগ্রতরতা, আশানির্বেদভূয়িষ্ঠতা, অন্তপ্রাপ্ততা, কলত্রগর্ভতা, নিক্ষিপ্ততা,
অন্তঃশল্যতা, শৃক্যমূলতা, স্থামিশুন্যতা, অসংহততা,
ভিন্নকৃটতা, ভূজাফি গ্রাহতা, ইহাদিগকে বলব্যান বলে।

ক্রোধবশতঃ অর্থদূদণ,বাক্পারুষ্য, দণ্ডপারুষ্য, মুগয়া, দ্যুত,পান ও স্ত্রী এই কয়টী কামজ ব্যুদন। তন্মধ্যে বাকৃপারুষ্য লোকের উদ্বেগ উৎপাদন এবং অতিমাত্র জনর্থ সংঘটন করে। দণ্ড অসিদ্ধ সাধন করে। অতএব নরপতি যুক্তিসহকারে দগুপ্রণয়ন করিবেন। দগুপারুষ্য দ্বারা লোক-মাত্রেরই উদ্বেগ দমুৎপাদিত হইযা থাকে। লোক সকল ঐরূপে উদ্বেজিত হইলে, শক্রের আত্রা গ্রহণ করে। শত্রুবৃদ্ধি ইইলে বিনাশ সংঘটিত হয়। পানবংশ কার্যাদির জ্ঞান নফী হইয়া থাকে। মুগ্যারত হইলে শত্রু হইতে ক্ষয় হয়। দ্যুতাসক্ত হইলে ধর্মার্থ ও প্রাণনাশাদি সংঘটিত ও কলহাদি প্রাবুভূতি হয়। স্ত্রী হইতে কালাতিপাত ও ধর্মার্থপীড়া সমুদ্র ত হইয়া থাকে এবং পানদোষে প্রাণনাশ ও কার্য্যাকার্য্যবিবেক ভ্ৰন্ট হয়।

ক্ষাবারনিবেশজ্ঞ ও নিমিত্ত হইলে, রিপু-জয় স্থাব্য হইয়া থাকে। ক্ষাবার মধ্যে কোষসহিত রাজগৃহ স্থাপন এবং তাহার চতুর্দিকে যথাক্রমে গৈল্ফ সন্ধিবেশিত করিবে। সৈল্ফের একদেশ সমন্ধ হইয়া,সেনাপতিকে পুরস্কৃত করিয়া, রাত্রিতে বহির্ভাগে মণ্ডলক্রমে চম্বর সকলে পরি- ভ্রমণ করিবে। দ্রদামাস্তচারা পুরুষের নিকট স্বকীয় বার্ত্তা অবগত হইবে। সকলেই উপলক্ষিত হইয়া প্রবেশ ও নির্গমন করিবে।

সাম, দান, ভেদ, দগু, উপেক্ষা, ইন্দ্রজাল, মারা এই দপ্ত উপায় সাধনার্থ প্রয়োগ করিবে। দাম চতুর্বিধ, মিথঃসম্বন্ধকথন, মৃতুপূর্ব ভাষণ, আয়াতদর্শন এবং আমি ভোমারই বলিয়া বাক্য-মাত্রে আত্মমর্মপণ।

দান পঞ্চিধ, সংপ্রাপ্ত ধনের উত্তম, মধ্যম ও অধ্যক্রমে উৎসর্গ, সেই ধনের প্রতিদান, গৃহীত ধনের অকুমোদন, অপূর্ব দ্রব্য দান ও ক্যংগ্রাছ-প্রবর্তিন।

ভেদ ত্রিবিধ; মেহরাগাপনয়ন, সংহর্ষোৎ-পাদন ও মিথোভেদ।

দণ্ড ভিন প্রকার; বধ, অর্থহরণ ও পরিফ্রেশ। উপনিষদ্যোগ ও শক্তাদিছারা বিশেষরূপে শক্তকে বধ করিবে। জাতিমাত্র আহ্মণকে বধ করিবে না, সামসহায়ে বশে আনয়ন করিবে।

লোকের মনকে অতিযাত্র বশীকৃত, দর্শনিয়াত্র সমাক্রপে পীত ও অমৃতকে যেন কবলিত করিয়া সাম প্রিয় বাকা প্রয়োগ করিবে।

মিথ্যাভিশস্ত, শ্রীকাম, আহ্বান করিয়া প্রত্যা-থ্যাত, রাজদেষী, অতিকর, আত্মসম্ভাবিত,বিদ্ধিন্ধ-ধর্মকামার্থ, ক্রুদ্ধ, মানী, বিমালিত, অকারণে পরি-ত্যক্ত, কৃতবৈর, হৃতদ্রব্যক্লত্র এবং পূজার্হ হই-লেও অপ্রতিপূজিতবং শক্রপক্ষে অবস্থিত, নিত্য-শক্ষিত এই দকল ব্যক্তিকে ভেদ করিবে। দাম-দৃষ্টামুসন্ধান, অভ্যুগ্রভ্যদর্শন ও প্রধান দান মান এই কয়টি ভেদোপায় কীর্তিত হইয়াছে।

রাত্তিতে দ্রীবস্ত্রসংহত অভুতদর্শন পুরুষ, বেতাল, উল্কা ও পিশাচগণের স্বরূপধারণা, কাম- রূপিত, শত্র অগ্নি ও প্রস্তরবর্ষণ, তম, অনিল মেঘ ইত্যাদি অমানুষী মায়া। ভীম জীমরূপ পরিগ্রহ করিয়া কীচককে বধ করিয়াছিলেন।

অভায় ব্যসন ও যুদ্ধে প্রবৃত্তের অনিবারণকে উপেকা বলে। হিড়িমা রাক্ষনী প্রাতাকে উপেকা করিয়াছিল।

আশ্চর্যাদর্শন ইত্যাদিকে ইন্দ্রজাল কছে। শক্র্যাণের ভীতিজন্য উহা কল্পনা করিবে।

ইত্যাধ্যের অদি মহাপ্রাণে সামাদিনামক সপ্তসপ্তত্য-ধিকশততম অবাধি সমাপ্ত।

অফসণ্ডত্যধিকশতত্য অধ্যায়।

জীরাম কহিলেন, মোল, ভূত, জেণি, স্ক্রং, দিবং ও আটবিক, এই ছয়প্রকার বল বৃহত্তি করিয়া দেবগণের আরাধনানন্তর শলর উদ্দেশে যাত্রা করিবে।

নদী, অদ্রি ও বনস্থাগি যত্ত যত্ত ভয় উপস্থিত হইবে, দেনাপতি ব্যহ্বদ্ধ দৈশুসহায়ে দেই দেই স্থানে সমাগত হইবে।

নায়ক প্রবীর প্রুবগণে পরিবৃত ছইয়া অগ্রে অগ্রেগনন করিবে। মধ্যে কোষ, কলত্র, স্বামী ও অল্পবল গনন করিবে। উভয় পাথে অখবল, অখবলের পাথে রথসমূহ, রথসমূহের পাথে নাগবল, নাগবলের পাথে আটবিক বল; পশ্চাৎ দেনাপতি সকলকে অগ্রে করিয়া যাত্রা করিবে। যাত্রাসময়ে সৈক্যদিগকে উভ্যক্তপে সজ্জিত করিয়া থিল্লিগকে শনৈঃ আখাসিত করিবে।

সম্মুথে ভয়সম্ভাবনা হইলে মকরবৃহে রচনা করিয়া গমন করিবে। অথবা উভ্তপক্ষ শ্যেন বুরুহ কিংবা বীরবক্তা সূচীবৃহহ বন্ধন করিবে।

পশ্চাদ্দেশে ভয়সম্ভাবনা ইইলে শকটবৃহে, পাথে ভয় হইলে বজ্রবৃহে এবং সকলদিকে ভয়সম্ভাবনা হইলে, সর্বভোভদ্রবৃহে কল্পনা করিবে।

ষীয় চমু কন্দরে, শৈলগছনে, নিম্নগাবনসক্ষটে বা দীর্ঘপথে পরিপ্রান্ত, কুৎপিপাসায় অবসন্ধ, ব্যাধি তুর্ভিক্ষ ও মরকপীড়িত, দহ্যকর্তৃক
বিক্রন্ত, পঙ্ক পাংশু ও জলে পতিত, ব্যস্ত, পথিমধ্যে পুঞ্জীকৃত, প্রহুপ্ত, ভোজনব্যক্র অভূমিষ্ঠ,
অহাহিত, চৌর ও অমিভয়ে বিক্রেস্ত এবং রৃষ্টিবাতেসমাহত হইলে রক্ষা করিবে এবং পর্নেস্থ তজ্ঞপ
হইলে নিপাতিত করিবে।

দেশকালবিশিক্ট, প্রকৃতিস্থ ও বলশালী হইলে প্রকাশযুদ্ধ করিবে এবং বিপর্যায়ে কৃটযুদ্ধে প্রবন্ধ হইবে। তত্তৎ অবস্কন্ধনময়ে সমাকুল শক্ষ দৈলকে সংহার করিবে। শক্ষ অভূমিষ্ঠ হইলে স্কুলিষ্ঠ হইলা এবং প্রকৃতিপ্রগ্রহে আকৃষ্ট হইলে পাশ্র প্রবীর পুরুষগণ ও বনচরাদি দ্বারা বধ করিবে। সম্মুখে দর্শন দিয়া তল্লক্ষ্যে কৃতনিশ্চয় হইলে শক্রকে পশ্চাৎ হইতে বেগবান্ প্রবীর বল্দায়ে আঘাত করিবে। অথবা পশ্চাতে সংকুলীকৃত করিয়া সম্মুখে শূর দ্বারা সংহার করিবে। কৃটযুদ্ধে এরূপে উভয় পার্মে আঘাত কীর্ত্তিত হইয়াছে।

দন্ধে বিষমদেশে পশ্চাতে দবেগে এইরপে উভয় পাশে আঘাত করিবে। প্রণমে দৃষ্য অমিত্র ও অটবীবলে যুদ্ধ করাইয়া প্রান্ত, মন্দ নিরাক্রন্দ ও শ্রান্তবাহন হইলে শন্তকে আঘাত করিবে। অথবা প্রন্যহকারে দৃষ্য অমিত্রবলদহায়ে ভঙ্গ দান করিয়া জয় করিয়াছি এইরপ বিশ্বাদবদ হইলে শন্তক আঘাত করিবে। ক্ষশ্বাবার পূর্ব গ্রাম শদ্য মানী ও প্রজাদিতে বিশ্বাদবদ্ধ হইলে শক্রকে অপ্রমন্ত ইইয়া বিনাশ করিবে। অবক্ষন্দ ভয়ে রাজিতে জাগরণ করিয়া ক্তশ্রম এবং তজ্জন্ত দিবদে হপ্ত ও নিদ্রায় ব্যাকুল ইইলে শক্ষ্যাকে আক্রমণ করিবে। অথবা রাজিতে বিশাসপূর্বক সংস্থা ইইলে নাগবল বা খড়গপানি পুরুষগণ ছারা সংহার করিবে।

প্রয়াণে পূর্ববায়িত্ব, বনসূর্গে প্রবেশ, অভিন দৈন্যের ভেদন ভিন্নগণের সংগ্রহ, বিভীবিকা ভারতক্ষ ও কোবরক্ষা এই কয়টি হস্তিদৈন্যের কার্য্য। অভিন্নতেদম ও মিত্রসন্ধান এই কুইটি রথকর্ম। অনুযান ও অপসরণে শীন্ত কার্য্যসাধন, দীনামুসরণ কোটি ও জঘনাঘাত এই কয়টি অখের কার্য্য। সর্বাদা শস্ত্রধারণ পদাতির কর্ম। শিবির ও মার্গাদির শোধন পতির কার্য্য।

পদাতিগণ সাপসর ও নাতিবিষম ভূমিতে থাকিয়া যুদ্ধ করিবে।

যাহাতে স্থল বৃক্ষ ও উপল আছে, যাহা কিরম্বন সম্পন্ন, যাহাতে কিপ্রলভ্যন করা যাইতে পারে এরপ নাগসকল আছে, যাহাতে শর্কর ও পঙ্কের লেশ নাই এবং যাহাতে জনায়াসেই অপহরণ করা যাইতে পারে, এরূপ ভূমিই অশ্বগণের উপ-যুক্ত।

যাহাতে স্থাণু নাই, রক্ষ নাই, কেদার নাই ও কর্দম নাই, তাদৃশী ভূমিই রথের উপযুক্ত। আর যাহাতে কর্দম আছে, তাদৃশী বিষম ভূমিতে অবস্থান করিয়া হস্তীদৈল যুক্তে প্রবৃত্ত হইবে।

মতিমান্ জয়ার্থী রাজা মপ্রতিগ্রন্থ ইইয়া যুদ্ধ করিবেন না। যেখানে রাজা, সেইখানেই কোষ। কোষই রাজার মূল। মাহাতে ব্যায়ামবিনিবর্ত্তনে অসংবাধ হয়, এরপে অসম্ভর যুদ্ধ করিবে। যেহেতু সঙ্কর সকুলতা বিধান করে। মহাসকুল যুদ্ধে মাতক্ষ আশ্রয় করিবে। তিন জন পুরুষ অখের প্রতিযোদ্ধা হইবে। এইরূপে তিন অখকে হস্তীর প্রতিযোদ্ধারূপে সন্ধিবিষ্ট করিবে এবং পনরজন পুরুষকে তাহার পাদরক্ষী করিবে।

বৃংহশাস্থ্র পণ্ডিতগণ উরঃকক্ষ, পক্ষর, মধ্য, পৃষ্ঠ, প্রতিগ্রহ' ও কোটি এই সাতটিকে খৃতের অস নির্দেশ করিয়াছেন।

সেনাপতিরা প্রবীর পুরুষগণে পরিবৃত হইয়া অবস্থান, অভেদেযুদ্ধ ও পরস্পারকে রক্ষা করিবে। মধ্যবৃহহে কল্পনৈয় ও যুদ্ধবস্ত স্থাপন করিবে। নায়কই যুদ্ধের প্রাণ। নায়কহীন যুদ্ধ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ব্যুহের উরস্থলে প্রচণ্ড হস্তীবল, উভয় কক্ষেরথসমূহ ও পক্ষরে অগ্রনিগকে স্থাপন করিবে; ইহার নাম মধ্যভেদী ব্যুহ।

মধ্যদেশে অশ্বলৈক, কিক্ষন্ত রেথলৈন্য ও পক্ষ-দিতয়ে গজদৈন্য, এইয়প ব্যুহকে অন্তর্ভেদী বৃহে বলে।

রথস্থানে অশ্ব, অশ্বস্থানে পদাতি এবং রথা-ভাবে ব্যুহমধ্যে সর্বত্ত হস্তীদৈন্য প্রতিষ্ঠিত করিবে।

অগ্নি কহিলেন, দ্বিজ! রাম রাবণকে বধ করিয়া অযোধ্যায় গমন করিয়াছিলেন। পূর্কে লক্ষণ রামোক্ত নীতির অনুসরণপূর্কক ইন্দ্র-জিতকে বধ করেন।

ইত্যায়েরে আদিমহাপুরাণে রামোক্তরাজনীতিনামক অইস্পতাধিকশততম অধ্যায় সমাপ্ত :

ঊনাশীত্যধিকশতত্ম অধ্যায়।

্ অয়ি কহিলেন, আমি রামোক নীতি কীর্তন করিলাম। রাজন্! পূর্বে সমুত্র গর্গকে জী ও পুরুবের যে লক্ষণ বলিয়াছিলেন, এক্ষণে ভাহা বলিব।

সমুদ্র কহিলেন, ত্রীপুরুবের শুড়াশুড় লক্ষণ কীর্ত্তন করিব।

একাধিক, বিশুর, ত্রিগন্তীর, ত্রিত্রিক, ত্রি-প্রলম্ব, ত্রিকব্যাপী, ত্রিবলিমান্, ত্রিবিনত, ত্রি-কালজ্ঞ ও ত্রিবিপুল পুরুষকে স্থলকণ বলে।

এইরপ চতুর্বেখ, চতুঃসম, চতুরিকু, চতুর্গংট্র, শুসকৃষ্ণ, চতুর্মা, চতুর্মা, পঞ্চীর্ম, বডুয়ভ, অফবংশ, সপ্তারেহ, নবামল, দশপদা, দশ-বৃহি, অত্যোধপরিমগুল, চতুর্দশসমন্দ্র এবং বোড়-শাক্ষ ব্যক্তিই প্রশন্তলক্ষণযুক্ত।

যে ব্যক্তি তেজ যশ ও শ্রী দারা দিগ্দেশ ও জাতিবর্গ ব্যাপ্ত করে, ভাহার নাম ত্রিকব্যাপী।

যাহার উদরে বলীত্রয় বিরাজমান তাহার নাম তিবলীমান ।

বে ব্যক্তি দেব। দ্বিজ ও গুরু এই ভিনের নিকট প্রণত, তাহাকে ত্রিবিলীত বলে।

যে ব্যক্তি ধর্মার্থকামকালজ্ঞ তাহাকে ত্রিকা-লজ্ঞ বলে।

উর ললাট ও বক্ত এই তিন বিস্তীর্ণ হইলে তাহার নাম ত্রিবিস্তীর্ণ।

হস্তদ্বয় ও পদ্ধর ধ্রজছত্রাদিযুক্ত হইলে তাহাকে চতুর্লেথ বলে।

অঙ্গুলি হাদর পৃষ্ঠ ও কটি এই চারি অঙ্গ সম হইলে চতুঃসম বলে।

গগ্ৰতি অঙ্গুলি উৎসেধ হইলে তাহার নাম চ্ছুবিকু।

দংষ্ট্রাচতৃষ্টয় চন্দ্রাভ হইলে চতৃদ্রংষ্ট্র বলে। নেত্রতার, জ্ঞ, শাশ্রু ও কেশপাশ কৃষ্ণবর্ণ হইলে ভাহার নাম চতুঃকৃষ্ণ। নাসিকা, বলন, স্বেদ ও কক্ষন্তম এই চারি অঙ্গে গন্ধযুক্ত ব্যক্তিকে চতুর্গন্ধ বলে।

লিক, গ্রীবা ও জজ্জাদর ব্রম **হইলে ভা**হার নাম চত্ত্রিষ।

অঙ্গুলীপর্বা, নখ, কেশ, দস্ত ও ছক্ এই পাঁচটা সূক্ষা হইলে সূক্ষাপঞ্চ এবং হকু, নেত্র, ললাট,নাসা ও তানান্তর দীর্ঘ হইলে দীর্ঘপঞ্চ বলে।

বক্ষ, কক্ষ, নথ, নাসা, বক্তু ও ক্কাটিকা এই ছয়টী উন্নত হইলে তাহার নাম যভূনত।

ত্বক্ কেশ, দন্ত, লোম, দৃষ্টি, নথ ও বাক্ এই সাতটী স্লিশ্ন হইলে তাহাকে সপ্তস্নেহ বলে।

ছুই নেজ, ছুই নাদাপুট, ছুই কৰ্ণ, মেছু, পায়ুও মুখ অমল হুইলে তাহার নাম নবামল।

জিহ্বা, ওঠ, তালু, নেত্র, হস্ত, পাদ নথ, শিশ্বাগ্র ও মুথ এই দশ অঙ্গ পদ্মাভ হইলে তাহার নাম দশপদা।

পাণি, পাদ, মুখ, গ্রীবা, অবণদ্বয়, হৃদয়, শির, ললাট, উদর, পৃষ্ঠ, এই দশ রহৎ হইলে, দশব্যুহ বলে।

ভুজ দয় প্রসারণ করিলে যাহার মধ্যমা এদয়া-স্তর উচ্চে সমান হয়, তাহার নাম ফাগোধপরি-মগুল।

পাদ, গুল্ফ, স্ফিক্, পার্ম, বক্ষণ, রুষণ, কৃচ, কর্ণ, ওছ, সক্থি, জঙ্মা, হস্ত, বাহুও অকি এই চতুর্দশ দক্ষ সম হইলে, তাহাকে চতুর্দশসম দক্ষ বলে।

যে ব্যক্তি ছুই অফি সহিত চতুর্দশ বিদ্যা দর্শন করে তাহাকে যোড়শাক বলে।

ধতা পুরুদের বাক্যমধুর, গতি মন্তমাতক। সদৃশ এবং রোমসকল এককৃপদমুদ্ভব।

অশীত্যধিকশততম অধ্যায়।

সমুদ্র কহিলেন, যাহার সর্বাঙ্গ হালার, যাহার গতি মন্তমান্তর্গ সদৃশী, যাহার উক্ল ও জঘন গুরু, চক্লু মন্তকপোতসদৃশ, কেশপাশ হানীল, অঙ্গাষ্ট তক্ষু, শরীর বিলোম, দৃশ্য মনোহর, পাদেরয় সমস্থাকি, স্তমন্ত্র, স্তমন্ত্র, সালভ প্রদক্ষিণাবর্ত্ত, গুরুক্ অত্থপত্রসদৃশ, গুল্ফমধ্য নিগৃত্ত, জঠর অপ্রলম্বিত এবং যাহার রোমসকল অরক্ষ, এরপ স্ত্রীই প্রশস্তা। এই রূপ, যে স্ত্রী ঋক্ষরক্ষনদী নালী নহে, সর্বিদা কলহপ্রিয়া নহে লোলুপা নহে, ছর্ভাষিণী নহে, শিরালা বা লোমশা নহে, এবং সংহতজ্রকৃটিলা বা ক্রুরহৃদ্য়া নহে এবং যাহার গণ্ড মধ্কপুপ্রসমিত, তাদৃশী পতিপ্রাণা ও পতিপ্রিয়া স্ত্রীই স্থলকণা।

ইত্যাগ্নেরে আদিনহাপুরাণে স্তীলকণনামক অশীত্যধিকশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

একাশীভ্যধিক শতভ্য অধ্যায়।

অমি কহিলেন, পুশ্প দারা বিষ্ণুর পূজা করিলে দকল কার্য্যেই দিদ্ধি লাভ হইয়া থাকে।

মালতী, মল্লিকা, যুথী, পাটলী, করবীর, পাবস্তি, অভিমৃক্ত, কর্নিকার, কুরুণ্টক, কুজক, তগর, নীপ, বাণ, বর্বর, মল্লিকা, অশোক ভিলক, কুন্দ, তমাল বিশ্বপত্র, শমীপত্র, ভুঙ্গরজ্পত্র, ভুলদীকালভুলদীপত্র, বাদক কেভকীপত্রপূজ্পরক্তোৎপলাদি পদ্ম, ইত্যাদি বিষ্ণুপূজায় প্রশস্ত । অর্ক, উন্মন্ত, কাঞ্চী, গিরিমল্লিকা, ফোটজ, শাল্লনীপুল্প, কণ্টকারী ইত্যাদি অপ্রশস্ত । স্বতপ্রশ্বে

বিষ্ণুকে স্নান করাইলে গোকোটি দানের ফল লাভ ছইয়া থাকে।

ইত্যাপ্লেরে আদিমহাপুরাণে পূপাদিপ্লাফননামক অকাশীত্যধিকশতত্য অধ্যায় দমাধা।

দ্বাশীত্যধিকশতত্ম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, দ্বিজ! অধুনা সাহত্রনামিক বৈষ্ণব স্থোত্র কীর্ত্তন করিব। উহা স্থোত্ররাজ্প নামে বিখ্যাত। এই স্থোত্র পাঠ করিয়া বিষ্ণুর পূজা করিলে, সর্ব্বার্থসিদ্ধি লাভ হয়। স্বয়ং পিতা-মহ এই স্থোত্রে বিষ্ণুর পূজা করিয়া সমস্ত সংসার স্প্রি করেন। পরে তিনি দক্ষাদি প্রজাপতি-দিগকে হুদয়্যোগে এই স্থোত্র দান করিলে, তাঁহারাও ইহার প্রভাবে স্প্রিবিস্তারকার্য্যে কৃত-কার্য্য হইয়াছিলেন। ফলতঃ বিষ্ণুই সকল দেব-তার দেবতা। তাঁহার আদি নাই, অস্ত নাই, নিধন নাই, ক্ষয় নাই। এই রূপে তাঁহার স্তব্ব করিবে;

তুমি অনন্ত জিৎ, সহস্র জিৎ, অব্যক্ত ও ব্যক্ত-রূপ, অদৃষ্ঠ ও দৃশ্যস্বরূপ, মহাশন, মহামায়, যুগ-বর্ত্তি, যুগাদি, প্রভু, কামদিদ্দিদম্পাদক, কাস্ত, কামকর, কামনাশন, অগ্নি বায়ু পাবন ও ঔষধ। তোমারে নমস্কার।

তুমি ভ্তভব্যভবরাথ, সত্যধর্মপরাক্রম, জগৎসেত্, অরেশর, শশবিন্দু, ভারু, অমৃতাংশু-সমুদ্তব, ত্যুতি, ধাম, পবিত্র, মঙ্গল, পর, ঈশান, প্রাণদ, প্রাণ, জ্যেষ্ঠ, শ্রেষ্ঠ, প্রজাপতি, হ্রণ্য-গর্ভ, ভ্গর্ভ, মাধব, মধুসূদন, ঈশ্বর, বিক্রমী, কৃত, কৃতজ্ঞ, তুরাধর্য, অমৃত্রম, ক্রম, বিক্রম, মেধাবী, ধ্রী, আত্বান, স্বরেশ, শরণ, শর্ম, বিশ্বরেতা,

প্রজাভব, অহ ও সম্বৎসর, তোমাকে বার বার নমস্কার করি।

তুমি স্থানার প্রতি প্রদার হও; তুমি সকলের স্বরূপ, এইজন্ম তোমাকে বিশ্ব বলে। তুমি সকল ব্যাপিয়া আছে, এইজন্ম বিষ্ণু; কালত্রেরে নিযমন কর এইজন্ম ভৃতভব্যভবৎপ্রভু। তুমি প্রজানগণের স্থান্তি ও পালন কর, এই জন্ম ভৃতকর্তা ও ভৃতভর্তা নামে পরিগণিত। তুমি বষট্কার ভাব, ভৃতাত্মা পৃতাত্মা ভৃতভাবন পরমাত্মা মুক্তাত্মা ভ্তভাবন পরমাত্মা মুক্তাত্মা অব্যয় পুরুষ সাক্ষী প্রকৃতিপুরুষের নিয়ন্তা, ক্ষেত্রজ্ঞ, অক্ষর, যোগ, যোগবিদ্যাণের নেতা, নৃসিংহ কেশব, প্রিমান্ পুরুষোভ্রম শর্বা ও দর্বা স্থরূপ। তোমাকে নমস্কার।

তুমি ধ্রুব, স্থবির, স্থবিষ্ঠ, তৃষ্টা, মনু, বিশ্বকর্মা, দেবপ্রভু, পদ্মনাভ, অগ্রাহ্য, শাখত, কৃষ্ণ, লোহি-তাক্ষ, প্রতর্জন, প্রভুত, ত্রিককৃৎ, অনাদিনিধন, ধাতা, বিধাতা, অপ্রয়ের, হ্যীকেশ, ব্রহ্মপ্রেষ্ঠ, প্রভু, ইশ্বর, স্বয়ন্তু, শন্তু, আদিত্য, পুকরাক্ষ, মহাস্বন, শিব, হাণু, ভূতাদি, নিধি, অব্যয়, সম্ভাব, ভাবন, ভর্তা, প্রভব, প্রকাশাল্পা, প্রতাপন, ঋদ্ধ, স্পাটাক্ষর, মন্ত্র, চম্রাংশু ও ভাক্ষরহ্যতি। তোমাকে বার বার নুমক্ষার করি।

তুমি সকলের বিশাস স্থান ও সকলকে দর্শন করিয়া থাক, এই জন্ম তোমাকে প্রত্যয় ও সর্বাদিন করে। তোমার জন্ম নাই, তুমি সকলের ঈশ্বর। তুমি ব্যাল ও সিদ্ধিস্বরূপ। তুমি সকলের আদি। তোমার কথনও স্থানন নাই। তুমি অনস্থ-ভাব্যস্বরূপ। তুমি র্যাকপি ও সর্ব্বযোগবহিন্দ্রি তুমি বহু, বহুমনা, সত্যা, সত্যাত্মা, সমাত্মা, সন্মিত, সম, অমোঘ, পুগুরীকাক্ষ, র্যকর্মা, র্যান্
কৃতি, রুদ্র, বহুশিরা, ব্রু, বিশ্বযোনি, শুচিপ্রবা, বি

অমৃত, স্থাণু বরারোহ, মহাতপা, সর্ববস, সর্ববজ্ঞ, ভামু বিলক্ষেন, জনার্দন বেদ বেদজ অব্যঙ্গ বেদাঙ্গ, বেদবিৎ কবি, লোকাধ্যক্ষ, স্থরাধ্যক, ধর্মাধ্যক্ষ ও কৃতকৃত; তোমাকে নমক্ষার।

তুমি চতুরাক্সা চতুর্বি । চতুর্দন্ত ও চতুভুজ। তুমি ভ্রাজিফু, ভোজন ভোজা সহিষ্ণ,
জগদাদি, অনম বিজয় জেতা বিশ্বযোদি পুনব্বিহা, উপেন্দ্র, বামন,প্রাংশু অমোঘ শুচি, উর্জ্জিত,
অতীক্র সংগ্রহ সর্গ প্রতাক্ষা নিয়ম যম বেদ্য,
বৈদ, যোগী, বীর্ঘাতী, মাধ্ব মধ্যু অতীক্রিয় ও
অনেক্মায়। তোমাকে ন্মস্কার।

তোমার উৎসাহ, বল বুদ্ধি শক্তি, বীর্য্য ও চ্যুতি অসীম। তোমার বপু অনির্দেশ্য। তোমার আত্মা অমেয়। তুমি মহাপর্বত ও মহাধমু ধারণ কর। তুমি শ্রীর আশ্রয় ও পৃথিবীর ধারণ কর্তা। সাধুগণ তোমাকে আশ্রয় করেন। কোন কালে কোন স্থানে কোন ব্যক্তিতেই তোমার রোধ হয় না। তুমি দেবগণের আনন্দ সম্পাদন ও সমস্ত ভ্রন পালন কর। তুমি মরীচি দমন হংস স্থপর্ণ ভূজগোত্ম হিরণ্যনাত স্তত্পা পদ্মনাত প্রজাপত। তোমার মৃত্যু নাই। তোমার চক্ষু সর্বব্যাপী। তোমার জন্ম নাই। তুমি সিংহ, সন্ধাত, দন্ধিমান, স্থির, তুর্ম্বর্ণ, শাস্তা বিশ্রুতাল্মা দৈত্যুহতা গুরুত প্রকৃত্য, ধাম স্বত্যু স্ত্রপ্রাক্রম, নিমিষ, অনিমিস ও প্রমীত তোমাকে নমন্ধার।

তুমি নেতা, ধরণীধর, সংকর্তা, সিদ্ধিসাধন, বস্থ, বাচস্পতি, সমীরণ, নির্ভাত্মা, স্থপ্রসাদ, সংক্তিত বিশিষ্ট, ব্যাণ্ডী, বিবিক্ত, বহুরূপী, ব্যক্তপা, প্রচ্জিপাগর, বৃষভ, শাসনকর্তা, সাধু, প্রসন্ধাত্মা, সংবৃত, সহস্রদ্দা, বিশ্বাত্মা, সহস্রাক্ষ, সহস্রপাৎ, আবর্তন, সংপ্রতর্দন, অহঃ, সংবর্তক, বহিল, অনিল,

বিভূ বিশ্বভোক্তা, বিশ্বধারী, জহ্নু, নারারণ নরু, অসংথ্যের, অপ্রমেয়াল্লা,শুচি, সিদ্ধার্থ, সিদ্ধসন্ধরী, সিদ্ধিলাতা, বিষ্ণু, বৃষপর্কা, বৃষোদর, বর্দ্ধন, বর্দ্ধন, বর্দ্ধন, শিবিবিউ, হুভূজ, হুর্দ্ধর, বাগ্মী, মহেন্দ্র, প্রকাশন, ওজা ইউ ও হ্যাতিধর তোমাকে নমস্কার, নমস্কার।

তুমি বাচস্পতি, উদারধী, অগ্রণী, গ্রামণী, শ্রীমান্ ও অন্যায়স্বরূপ। শিক্টগণ তোমার কামনা তোমার প্রমাদ নাই, শোক নাই, গরুড় তোমার ধ্বজ। তোমার নাভিতে পদ্ম ও অক্ষি পদাসন্থিত। তুমি পৃথিবী ধারণ ও সকলকে বহন করিতেছ এবং সকলের প্রাণ দান করিয়া থাক। তুমি বিশিষ্ট, নহুষ, শিথণ্ডী, বৃষ, ক্রো**ধার্হ**, ক্রোধকর্তা, দকল কার্য্যের প্রেরয়িতা, বিশ্বের বহনকর্ত্তা, অপ্রচ্যুত, প্রথিত ও প্রাণম্বরূপ। তোমাতে দকল প্রতিষ্ঠিত আছে। ভূমি জলের আধার। তুমি ইন্দ্রাসুজ প্রতিষ্ঠিত, স্কন্দ, সন্দ ধর, বরদ,বায়ুবাহন, বাস্তদেক রুহন্তাকু আদিদেক পুরন্দর, সকলের তারণকর্তা, তার, শুর, শৌরি ও জলেশর। তুমি শ্রীগর্ভ, পরমেশর, কারণ, করণ, কর্ত্তা, বিকর্তা, গহন, গুছ,ব্যবসায়, অফুকুল, শতাবর্ত্ত, পদ্মী, পদ্মাক্ষ, পদ্মগর্ভ, দেহপোষক, মহর্দ্ধি, বৃদ্ধাত্মা, দাবাত্মা, ভাবিতাত্মা, যোগাত্রা, মহাক্ষ, অতুল, শরভ, ভীম, সমযজ্ঞ, হরি, হবি, দর্বলক্ষণলক্ষিত, লক্ষীবান্, দমিতি-ঞ্জয়, বিক্ষর, রোহিত, মার্গ, হেতু, দামোদর ও সহ। তোমাকে নমস্কার। তুমি আমার প্রতি ও আমার প্রতিবেশীর প্রতি প্রদন্ধ হও।

তুমি মহাভাগ, বেগবান, অমিতাশন, উদ্ভব, ক্ষোভন, দেব, ব্যবস্থান, সংস্থাপন, স্থানদ, গ্রুব, পরার্দ্ধ, পরমস্পাই, তুই, পুই, শুক্তেক্ষণ, রাম, विद्राभ विद्रज भार्थ (नय नय, अनय वीद्र, বলিভোষ্ ধর্ম, ধর্মার, বরু বরদ, কল্যাণ, মঙ্গন, ভদ্ৰ ভভ, পুণা, শাস্ত, ক্ষান্ত, মহীয়ান্, বরীয়ান্, পরীয়ান্, নিত্য উপচীয়মার্ণ ও সর্ববদা বর্দ্ধমান। ष्ट्रिम देवकूर्व, क्षमान, क्षमव, पृथ् मळात्र, हित्रगा-গর্ধাপ্রায়ু অধোকজ ঋতু স্দর্শন, কাল, পরমেষ্ঠী: পরি গ্রহ, উগ্লংবৎদর, দক্ষ: বিশ্রাম: বিশ্বদক্ষিণ; বিস্তার; স্থাবর, স্থাণু; প্রমাণ; অব্যয়; বীজ; অর্থ; অনর্থ; মহাকাশ ও মহাভাগ। তোমাকে নমস্কার।

তুনি অনিবিবিধ, মহাধন, ধর্মযুপ, মহামখ, নক্ষজনেমি, নক্ষজী, ক্ষম, ক্ষাম, সমীহন, যজ্ঞ, ইজা, মহেজা, ক্রতু, সর্ব্রদর্শী, গ্রীবৎসবক্ষা, শ্রীবাস, শ্রীনিবাদ, শ্রীপতি, শ্রীমন্বর, শ্রীশ, শ্রীদাতা, শ্রী-নিধি, প্রীবিভাবন, প্রীধর, প্রীকর, শ্রেয়, শ্রীমান, শীপ্রতিষ্ঠিত, অমণ্য, অকাকৃং, অকা, অকা, অকা-বিবৰ্দ্ধন, অন্মবিৎ, আগাণ, অন্মী, অগাজ্ঞ, আগাণ-প্রিয়, মহাক্রম, মহাকর্মা, মহাতেজা, মহোরগ, মহাক্রতু, মহাযজা, মহাযজা, মহাহবি, স্তব্য, স্তব-প্রিয়, স্তোত্র, স্তুতি, স্তোতা, পূর্ণ, প্রয়িতা, পুণ্য, পুণ্যকীর্ত্তি, বহুরেতা, বহুপ্রিয়, বহুপ্রদ, वाञ्राप्तव, वञ्च, वञ्चमना, मञ्जलि, मध्कृलि, मङा, দন্ত তি, দংপরায়ণ, শূরদেন, দলিবাদ, ত্যামুন, দর্পহা, দর্পদ, দৃগু, ভুর্দ্ধর, বিখমৃত্তি, মহামৃত্তি, দীগু-মৃত্তি, অমৃতিমান, অনেকমৃতি, শতমৃতি, চতুর্মৃতি: চতুর্বাজ্ চতুর্বি, চতুর্গতি, চতুরাজ্মা, চতুর্ভাব, চতুর্বেদবিৎ, कुर्व्हा, ভুরতিক্রম, জুর্লভ, তুর্গম, তুর্গ, তুরাবাদ, তুরারিহা, মহাব্রদ, মহাপর্ত, মহা-ভূত, মহানিধি, যজ্ঞ, যজ্ঞপতি, যজা, যজ্ঞাল, যজ্ঞ-वहिन, यस्त्रकृष, यस्त्रभूष, यस्त्रभूक, यस्त्रभाधन, যজান্তকৃৎ, যজন্তম্, স্বন্তিক্, স্বন্তিকৃৎ, স্বন্তি,

यिङ्क्, येखिनिकन, मस, मसाङिन, मस्महः, नकरूर: मकी: धर्माशाशा: धर्माकृर: শব্দময়: ধৰ্মী ও ধর্ম। ভোমাকে বারংবার করি।

ত্মি বিমৃক্তাত্মা: দৰ্বজ্ঞ, উত্তমজ্ঞান: হুৱত; স্মুখ; সূকা; স্থোষ; স্থালাভা; স্থছৎ; মনোহর; জিতজোধ; বীরবাহু; বিদারণ; স্থাপন; বিবশ; वाभी; यानकाषा; यानकधर्माङ्गः; वरमतः वरमतः বংসী; বিবস্বান্; বিভাবস্থ; বিকস্বর; বিভাকর; বিভাময়; বিরাজমান; বিদ্যানিবাস; বিদ্যাপতি: विम्याधतः, विम्यामाजाः, विम्यानिधि । विम्याविष्टा-তোমাকে নমস্কার। তুমি আমার প্রতি ভূমি হুখ দান কর। ভূমি হুর্য দান ্তুমি শান্তি দান কর। তুমি মুক্তি দান কর। তুমি কান্তি দান কর। তুমি পুষ্টি দান করু | ভুমি ভুষ্টি দান কর। তোমার করুণার নাই। তোমার মহিমার সীমা নাই। সীমা তোমার দয়ার দীমা নাই। তোমার জ্ঞানের: শক্তির; বুদ্ধির; বিবেচনার ও বিচারের সীমা নাই। তোমাকে ভক্তিভরে কায়মনে নমস্কার করি।

ভূমি কাম, কামদ, কামপ্তি, কামনিবাদ, কাম-কর: কামধর ও কামনিধি। তুমি মেধা, শুদ্ধ, বৃদ্ধ, চিত্ত, নিরুপাধি, নির্বিকার, অব্যাকৃত, অপ্রা-कुछ, निक्षन, क्षणमग्र, क्षणभात, मर्खकूर, मर्ख-শক্তি, দর্বগতি, দর্বাধার, দর্বশুদ্ধ, দর্বজ্ঞ, সর্বাদ, সর্বাপতি ও সর্বোধর। তোমাকে নম-স্বার করি। ভূমি কাল্ কালকান্ত, কালপতি, কালকর ও কালভ্ৎ। তুমি শান্ত, শিব, অঘৈত, চেতন, চৈত্রস্বরূপ, **চিৎস্বরূ**প ও চিদাকার। ভূমি না ভেজ, না অন্ধকার, না আলোক, না

বস্তু; না অবস্তু না রূপ না নাম। আবার তুমিই নাম, রূপ, ফলতঃ তুমিই সকল। তুমি জনার্দ্দন যত্নপতি, জয়স্বরূপ, জয়দাতা, বিজয়ী, বিজয়প্রদ, কল্যাণময়, কল্যাণকর ও কল্যাণমূর্ত্তি, তোমাকে নমস্কার করি।

ভূমি পূজ্য পূজিত পূজাধিষ্ঠান, পবিত্র ও পবিত্রকর। ভূমি বনমালী হলায়ুধ, জ্যোতি আদিতা, সহিষ্ণু, শান্তিদ শ্রেষ্ঠ অন্টা, পাতা পিতা ভিষক্ ভেষজ নিষ্ঠা শম নির্বাণ, দাম, দামগ ও ত্রিদামা, তোমাকে নমস্কার করি। তোমার নাম করিলে মুক্তি হয়। তোমাকে ভাবিলে মুক্তি হয়। তোমাকে স্মরণ করিলে মুক্তি হয়। ভূমি ভবাতীত মহেশ্বর, মহাবিষ্ণু নহামহা, মহামহিম, মহাগতি ও মহামায়। ভূমি মহাবিদ্য মহাজান, মহাবৃদ্ধি, মহাশক্তি ও মহামায়। ভূমি মহাবিদ্য মহাজান, মহাবৃদ্ধি, মহাশক্তি ও মহামায়। করি ভূমি আমার প্রতি প্রদক্ষ হও।

ভূমি ধাতা, বিধাতা, হন্তা, কন্তা, দংহন্তা, শস্তু,
স্বান্তু, মহামুনি হার, হরিমেধা, শ্র ও শৌরি।
তোমার বিক্রম অনিত। তুমি তিনপদে সমস্ত ভুবন
আক্রমণ করিয়াছ। তুমি বিপন্নের স্থা, অনাথের
নাথ, অগতির গতি ও অসহায়ের সহায়। আমার
সহায় হও নাথ হও ও স্থা হও। তুমি ক্রর,
অক্রর, অবিজ্ঞাত, অবিচিন্তা, ক্তলক্ষণ, গভস্কি,
নোম, সত্তুম, সিংহা হংস, মহাহংস, সত্তুমরূপ,
স্বার্রপ, রজস্বরূপ ও তমস্বরূপ। তুমি সকলের
গতি মুক্তি ও শক্তি। তুমি ভূতমহেশ্বর আদিদেব, দেবদেবেশ, দেবপালক গুরু উত্তর, জ্ঞানগ্রায়, পুরাত্ন, ভোক্তা, কপীক্র ও ভূরিদক্ষিণ।
তুমি সোম, সোমপ, অমৃত, অমৃতপ, পুরুজিৎ,
পুরত্বন, সত্যুদ্ধ, দশার্হ, জীব, জীব্য়িতা, বিন-

য়িতা, চেত্য, চেত্য়িতা, কারক, কার্য়িতা, ভাবন, ভাবয়িতা, তারক, তার্য়িতা ও তারণ। তোমাকে নমস্কার করি। আমার প্রতি প্রসম হও।

তুমি মুকুন্দ অন্তোনিধি, জ্ঞাননিধি, সত্য-পুরুষ, সদানন্দ চিদানন্দ আশুতোষ, আকাশ, আনন্দসরূপ, আনন্দমিয় আনন্দাধার আনন্দকর, আনন্দপূর্ণ, আনন্দনিলয় ও আনন্দিত। তুমি ভাব, ভাব্য, ভাবক ভাবিত, ভাবন ভাবিয়তা। ও ভাবাধার। তুমি মান, মানদ, মান্য ও মানয়িতা। তুমি এক, অনেক, অন্তিতীয় অপাপবিদ্ধ ও অন্য। তুমি থক, তদ্ এতদ্, ইদম্, কিং, অদস্, লোক-বন্ধু, স্থব্বিণ, সত্যবন্ধু ধর্মধর, ধন্য, প্রগ্রহ, নিগ্রহ, ব্যুগ্র, অব্যুগ্র, অনেকশৃঙ্গ ও গদাগ্রজ, ভোষাকে বার বার নমস্কার করি।

তুমি অনন্তারা, মহার্ছ, স্বভাবস্থ, শত্রুবিজয়ী, প্রমোদন নন্দন, নন্দ, মহর্ষি, কপিলাচার্য্য, মেদিনীপতি, ত্রিপদ, ত্রিদশাধ্যক্ষ, মহাশৃদ্ধ, কুতান্তবাতী, মহাবরাহ, স্থেশ, কনকাঙ্গদী, গুহ, গভীর, গহন, গুপু, গলাধর, গদম, গোপতি, গণেশ, গোবিন্দ, গরুড্বাহন, গতিদ বেধা, স্বাঙ্গ, অজিত, দৃড়, সক্ষর্ষণ, অচ্যুত, বরুণ, বারুণ, রুক্ষ, পুকরাক্ষমহামনা, ভগবান, ভগম্ম, নন্দী, স্রধ্যা, খণ্ডপরশু, দারুণ, দেবিণপ্রদ, দাতা, দিবস্পশী, ব্যাস, বাচস্পতি, অ্যানিজ, নির্বাণ, শুভাঙ্গ, শুভদ, রুষভাক, হ্যপ্রিয়, অনিবতী ও সংক্ষেপ্তা। তুমি আমাকে রক্ষা কর, রক্ষা কর। আমি তোমারই শরণাপন্ন।

ভোমার সংশয় নাই। তোমার বিসায় নাই। তোমার পাপ নাই। তোমার তাপ নাই। তোমার দস্তাপ নাই। তোমার পরিতাপ নাই। তোমার বিষাদ নাই। তোমার অবদাদ নাই। তোমার প্রমাদ নাই। তোমার বিপদ নাই। তোমার প্রানি নাই। তোমার প্রানি নাই। তোমার প্রানি নাই। তোমার ক্ষর নাই। তোমার বায় নাই। তোমার ব্রাম নাই। তোমার ব্রাম নাই। তোমার বেলাম নাই। তোমার বিনাশ নাই। তোমার ক্ষেম নাই। তোমার বেলাম নাই। তোমার কোম নাই। তোমার কোম নাই। তোমার কোম নাই। তোমার কিলার নাই, আকার নাই ও প্রকার নাই। তোমার ফাদেহ নাই ও মাহ নাই। তোমার আদি নাই ও অবধি নাই। তোমার সলেহ নাই ও মাহ নাই। তোমার করি। তুমি আমার প্রতি প্রসম হও। তুমি অভয় ও অমৃতস্করপ। আমাকে অভয় ও অমৃতে লইয়া যাও।

ভূঁ সর্ববিদ্ ও সর্ববাক্ মানার পূর্ববিদিক রক্ষা করুন। ওঁ লোকদারঙ্গ ও হুতস্তু আমার দক্ষিণ দিক রক্ষা করুন। ওঁ অধ্যমা ও উদ্ভব আমার পশ্চিম দিক রক্ষা করুন। ও বাজদন ও অর্ক আমার উত্তর দিক রক্ষা করুন। ওঁ লোকপাল ও লোকপতি আমার দকল দিক রক্ষা করুন। ওঁ হুন্দার ও রহুনাভ আমার আগ্রেয় দিক রক্ষা করুন। ওঁ হুন্দাচন ও জয়ন্ত আমার ঈশান দিক রক্ষা করুন। ওঁ হুন্দাচন ও জয়ন্ত আমার ঈশান দিক রক্ষা করুন। ওঁ হুন্দাচন ও জয়ন্ত আমার ঈশান দিক রক্ষা করুন। ওঁ হুন্দাহিন ও জন্তল ও চল আমার বাযব্য দিক্ রক্ষা করুন। ওঁ অচল ও চল আমার নৈশ্বতি দিক্ রক্ষা করুন। ওঁ ঘৃতাশী ও শূন্ত আমার অধ্যোদিক্ রক্ষা করুন। ওঁ বিষম ও চন্দানাঙ্গী আমার উদ্ধিক্ রক্ষা করুন। ওঁ বিষম ও চন্দানাঙ্গণী আমার উদ্ধিক্ রক্ষা করুন। ওঁ বেয়াঙ্গ ধ্রাষ্ঠ ভ্রেমান্ধ বিরাদ্ধ আমার উভ্র পাশ্ব রক্ষা করুন।

যিনি কর্মা, গতি দৈব কাল ও অদ্উস্করপ; যিনি কুম্দ, কৃন্দর, কৃন্দ, পর্জন্য, পবন, অনিল, অমৃতাশ, অমৃতবপু, সর্বজ্ঞ, সর্বতোমুথ, স্থলভ ও স্থাত; যিনি দিশ্ধ, শক্তজিৎ, শক্ততাপন, দপ্তজিহন, দপ্তধা, দপ্তবাহন, অমূর্ত্তি, ভয়, ভয়কৃৎ, ভয়নাশন ও অভয়; যিনি অণ্, বৃহৎ, কুশ, স্কুল, ভাব, ভাব, ভাব ও ভাব; যিনি উত্নয়র, অশ্বত্থ, চানুরান্ধুনিসূদন, দহস্রার্চি, মহান্, অগ্বত, স্বপ্তত, স্বার্থ ও ভারভৃৎ, দেই হরি আমার সহায় হউন।

যিনি নোগী, যোগীশ আশ্রম, শ্রমনশন, শ্রমণ, কাম, হপর্ল, ধকুর্রর, ধকুর্বেদ, দম, দণ্ড-ধর, দগুরুৎ, দময়িতা, দর্বদহ, নিয়ন্তা,নিয়ম, যমন্ত্রান্, দাত্ত্বিক, সত্ত্ব, অভিপ্রায়, অর্হ, প্রিয়ার্হ, প্রিয়ক্ত্র, প্রিয়বর্জন, হরুচি, ত্তভুক্, বিভু, রবি, বিরোচন, দ্র্যা, দবিতা, রবিলোচন, ভোকান্তালাম্পদ ভোগী, অনেকজ, অগ্রজ, দদামধী, দর্বাধিষ্ঠান, অতুত, দনাত্রন, দনৎকুমার, কপি ও অরোদ্র, দেই কুওলী চক্রী বিক্রমী হরি আনার দহায় হউন।

যিনি একায়া, অনেকায়া, অহস্ত, বত্রস্ত, অপাপ, বহুপাদ, অগতি, দর্বগতি, অচক্ষ্, দর্বন্চক্ষ্, অজীব, দর্বজাব, অকর্ণ, দর্বকর্ণ, অজিহ্ব, দর্বজিহ্ব, অরম ও দর্বরম ; যিনি জাবন, অনন্ত জী, ভয়াবহ, জিতমন্ত্র্য, ক্ষমানিগের অর্থা, ভাম, ভীমপরা ক্রম, পুল্পহাম, প্রজাগর, উর্দ্ধণ, দর্বগ, ভূলোক, ভূবলোক, স্বর্লোক, বৈথান, মামগায়ন, কিতাম, পাপনামন, পিতামহ, আদিপিতা, আয়েন্থানি, দেবকীনন্দন, শহাভূং, গদাভূং, চক্রভূৎ, শার্মভূং, বিদিশ, ব্যাদিশ, দিশ, উত্তারণ, হৃদ্ধ্যুদ্ধিতা শব্দহ হরি আমার বহায় হউন।

এই সাহস্রনামিক বৈষ্ণব স্তোত্ত প্রতিদিন শুদ্ধ চিত্তে যথাকালে শ্রবণ ও কীর্ত্তন করিলে ইহলোক পরলোক সর্বত্তি পরম মঙ্গল লাভ হইরা থাকে

এবং রোগনাশ, রিপুনাশ, ছিদ্রনাশ ও অভ-বিনাশ হয়; তাহাতে সন্দেহ নাই। পূর্বে দেবরাজ শতক্রতু স্বপদভ্রম্ভ ইইলে, দেবগুরু বৃহ-স্পতির আদেশে লক্ষীর সহিত ঐ বৈঞ্চব স্থোত কীর্ত্তন করিয়া পুনরায় স্বর্গের সিংহাসন অধিকার करत्रन । ইशत्र कोर्खरन वन्ननमूख्ति, विभनुमूख्ति ও আপদমুক্তি এবংভয় নাশ ও অভয়সংঘটন হয়। ভগবান বাহুদেবে ভক্তিপরায়ণ হইলে দর্বপাপ-বিমুক্ত ও পরিণামে পরমপদে প্রতিষ্ঠিত হওয়া যায় এবং ক্রোধ, লোভ, তুর্দ্ধি, তুরাশা, ঈর্ধ্যা ও মদ ইত্যাদি কু প্রবৃত্তিদকল কোনকালে আক্রমণ করিতে পারে না। জন্ধাদহকারে এই স্তোত্র পাঠ করিলে জন্ম, মৃত্যু, জরা,ব্যাধি ও বিপদ্ বিদ্রিত, রূপ গুন আয়ু ও বীর্যান্ত্রী পরিবর্দ্ধিত, স্মরণশক্তি সমুদিত, কীর্ত্তি ও অ্থসচ্ছন্দ উপচিত এবং পরমপুণ্য সঞ্চিত হয়। ভগবান বাস্থদেবই যোগ, জ্ঞান, সাংখ্য, বিদ্যা, কলা, বেদ, শাস্ত্র ও বিজ্ঞানপ্রভৃতির জন্ম-দাতা, পাতাও প্রতিষ্ঠাতা। তিনি দিক্ সকল, সমুদ্রদকল ও ভুবন্দকল ধারণ করিয়া আছেন। তিনি একাঞী সর্বত্তি গমন করেন, অবস্থান করেন এবং দকলকে পালন করেন। শ্রেয় ও হুখলাভে বাদনা হইলে, স্বৰ্গ ও অপবৰ্গ লাভে কামনা হইলে, ত্বথ ও স্তিলাভে অভিলাষ হইলে. আরোগ্য ও ঐখর্য্য লাভে ইচ্ছা হইলে, মঙ্গল ও कलाान लाए यानम हरेल जरानिर्वानयुक्तिलाए অভিপ্রায় হইলে, এই স্তোত্রপাঠদহকারে দেই टमवानिटनव महोटनव বাস্থদেবের আরাধনা করিবে।

ট ড্যাগ্রের আদিমহাপুরাদে সাহজনামিক বৈফারজ্যোত্র নামক একাশীভাধিকশভতম অধ্যায় সমাপুর

ত্রাশীতাধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, পূর্ব্বাস্থ্য ইয়া ভোজন করিলে দীর্ঘায়ু হয়, দক্ষিণাস্য হইয়া ভোজন করিলে যশস্বী হয়, পশ্চিমাস্থ ইইয়া ভোজন করিলে ধনাত্য হয় এবং উত্তরাস্য হইয়া ভোজন করিলে সভ্যবাদী হয়।

ক্ষেত্র ও গ্রামের সারিধ্যে এবং জলমধ্যে মল মৃত্র ত্যাগ করিবে না। আর্দ্রপদে শয়ন ও উপ-বেশন করিবে না। অশুচি হইয়া অগ্নি. গো ও ব্রাহ্মণকে স্পর্শ করিবে না এবং চন্দ্র, সূর্য্য ও নক্ষত্র দর্শন করিবে না। আগন্তুক বৃদ্ধকে প্রত্যা-থ্যান করিবে না। ভগ্নাদনে উপবেশন ও ভগ্ন পাত্র ব্যবহার করিবে না। নগ্ন হইয়া স্নান ও শয়ন করিবে না। বিনা উত্তরীয়ে ভোজন করিবে না। অশুচি হইয়া আসন গ্রহণ করিবে না। কাহা-রও মন্তকে প্রহার ও কেশ গ্রহণ করিবে না ৷ চুই হস্ত সংহত করিয়া মস্তক কণ্ডায়ন করিবে না। স্নানান্তে তৈলমৰ্দন করিবে না। অশুচি হইয়া অধ্যয়ন ও অধ্যাপন করিবে না। উচ্ছিট হস্তে বেদপাঠ ও শাস্ত্রালাপ করিবে না। আধ্যয়নকালে বেদ অভ্যাস করিবে না। সূর্য্য অগ্নি গোও ব্রাক্ষণের অভিমুখে মৃত্যাদি ভ্যাগ করিবে না। ত্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় ও দর্শকে অবজ্ঞা করিবে না। পর্ব্ব-काल मखकार्छ रारहाइ कहिएर ना । मखशायन ना कतिया (मवशुका कतिरव ना। (मवशुकाना করিয়া অন্সের নিকট গমন করিবে না। গর্ভিণী ও ঋতুমতী স্ত্রীর দংদর্গ করিবে না। উত্তর বা পশ্চিম মন্তকে শয়ন করিবে না। নান্তিকের সহিত ব্যবহার করিবে না। অন্তের ব্যবহৃত বস্ত্র ও পাছকা পরিধান করিবে না।

উপর পদ স্থাপন করিবে না। দশাহীন বস্ত্রা ব্যব-হার করিবে না। গমনস্মরে কোনদ্রব্য ভোজন করিবে না। দাঁড়াইয়া প্রজ্রাপ করিবে না। পরস্ত্রীগমন করিবে না। বিষয়স্থাপর সেবা করিবে না। পানদাবে আদাক্তি করিবে না। রখা পর্যাটন করিবে না।

শুক্র ব্রাক্ষণের নিকট নত হইবে। ঈশ্বরের পূক্রার রত হইবে। অনান্তিক হইবে। ধর্ম সত্য ও শান্তির অমুগত হইবে। পাপে অফ্রচি বা বীত-ক্পৃহ হইবে। তপজপধ্যানে সংসক্ত হইবে। পর-লোকচিন্তার ব্যাপ্ত হইবে। ইহকালের উন্নতি-দাধনে তৎপর হইবে। নামধি ও প্রাণারামপ্রভৃতি সন্নাচারনিষ্ঠ হইবে। ক্রোধলোভ ত্যাগ করিয়া সত্যধর্মে নিবিফ হইবে। দেব বিজ ও শুক্তভক্ত হইবে। গুকুর সহিত বিতপ্তার বিনির্ভ হইবে। মিথ্যাবাদী গুরুরও প্রতি ভক্তিপ্রকাশে প্রবৃত্ত হইবে।

ইত্যাপ্তের আদিমহাপুরাণে আযুষ্যনান এশীত্য-ধিকশতক্র অধ্যায় সমাধ্য।

চতুরশীত্যধিকশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, সমন্ত অগ্নহায়ণ মাস একা-হার করিয়া পারণান্তে আক্রণভোজন করাইলে পাপব্যাধিবিনাশ ও পর্ম কল্যাণলাভ হয়।

সমস্ত পৌষমাদ একাহার করিলে, ধনধান্য-দম্পন্ন ও দৌভাগ্যযোগ সঞ্চিত হট্যা থাকে।

সমস্ত মাঘ্যাস একাহার করিলে, স্বায়ুর্ছ ও সমুদ্ধি লাভ হয়।

পমন্ত ফান্ত্রণমাদ একাহার করিয়া পারণায়ে

যথাবিধানে ভোজন ও দান করিলে, মহিলাগণের প্রণয়ভাজন ও তাহাদের বশীকর হওয়া যায়।

সমস্ত চৈত্রমাস একাহারে যাপন করিলে, উত্তমবংশে জন্ম হইয়া থাকে।

সমস্ত বৈশাধমাস একাহার করিলে জ্ঞাতিগপ মধ্যে প্রাধান্ত প্রাপ্তি ও কামদেবের ক্রার রূপসমৃদ্ধি লাভ হয়।

সমন্ত জ্যৈত্বাস একাহার হইলে, অতুল ঐব-র্য্যের আধিপত্য অধিষ্ঠান হইয়া থাকে।

সমস্ত আযাচ্মাদ একাহার করিলে ধনধান্য লাভ ও বহুপুত্রের পিতৃপদ প্রাপ্তি হয়।

সমস্ত আবিণমাদ একাহার করিলে, দেশাধি-পত্য লাভ হয়।

সমস্ত ভাজমাস একা**হার করিলে, লক্ষ্মীলাভ** ও আয়ুর্দ্ধি হয়।

সমস্ত আখিনমাস একাহার করিলে, ধনধায় সমৃদ্ধি বৃদ্ধি হয়।

সমস্ত কার্ত্তিকমাদ জিতেক্সিয় হইয়া একাহার করিলে, শোর্য্য, বীর্য্য, কীর্ত্তি ও ধনলান্ত হয়। ইত্যাগ্রেমে আদিমহাপুরাণে একাহারগ্রতনাদ চতুরশী-

ত্যধিকশতভতৰ অধ্যার সমাপ্ত।

পঞ্চাশীত্যধিকতশতত্ম অধ্যায় ৷

অমি কহিলেন, একণে চাতৃৰ্বৰ্ণের সামস্ত ভভাভত বিবেকদ জ্যোতি:শাস্ত্র বলিব; যাহা অবগত হইলে মসুব্য সর্ববিদ্ হইয়া থাকে। রাশি গণনা হারা ষড়ফক বিহাদশ এবং নবশঞ্চকে জ্রা-দিপের বিবাহ ক্ষকর্তব্য। কিছু যদি নক্ষ প্রতি-কর হয় এবং বরক্ষার রাশ্যধিপতি এক হয়, তাহা ইইলে, মিত্রছিদাদশ ও নবপঞ্চক ব্য়ানোধা- বহ হয়। যড়ফকৈ সংযোগ কদাচ কর্ত্তব্য নহে।
সূর্য্যা, গুরুর ক্ষেত্রগন্ত হইলে, বিবাহ প্রশংসিত
নহে; ইহাতে কন্যা বিধবা হয়। গুরুর অভিচারে
ব্রিপক্ষ এবং বক্রগতিতে, চারিমাস ত্রত উদ্বাহানি
কার্য্য কর্ত্তব্য নহে! চৈত্রমাসে, পৌরমাসে, হরিশয়নে রিক্তা ও অবাবস্থা তিখিতে রবি কুল বারে
বিবাহ হইলে শুভফলপ্রদ হয় না। সন্ধ্যাকাল
অভিশন্ন শুভাবহ। রোহিশী, ক্রিউভরা, মূলা, খাতী,
হত্তা ও রেবতী নক্ষত্র এবং ভূলা ও মিবুন লগ্নে
বিবাহ অপ্রশস্ত বলিয়া পরিকীর্ত্তিত হইরাছে।

বিবাহে, কর্ণবেধে, অতকালে, পুংলবনে, অন্ধ্র-প্রাণনে এবং চূড়াকালে বিন্ধ নকতে পরিত্যাগ করিবে। শুবদা, মূলা ও পুষ্যানক্ষত্রে, রবি মঙ্গল এবং রহল্পতিবারে, কৃন্ত, সিংহ এবং বিশ্বনলয়ে পুংলবনকার্য্য প্রশস্ত বলিয়া অভিহিত হইয়াছে! হন্তা, মূলা, মুগলিরা ও অসুরাধা নক্ষত্রে এবং বুধ ও শুক্রবারে নিজ্ঞান হন্তাবহ। হন্তাদিপঞ্চ, কৃতিকাদিত্রের এবং পুষ্যানক্ষত্রে এবং মেষ ও মীন লগ্রে শুমান মঙ্গলজনক; অখিনী, রেবতী, পুষ্যা, হন্তা, ক্যেষ্ঠা, রোহিণী এবং শ্রেবণানক্ষত্রে নবাম ভক্ষণ প্রশন্ত। পুষ্যা, হন্তা, ক্যেষ্ঠা, প্রবণা এবং আখিনী ভিন্ন ক্ষন্য নক্ষত্রে ঔষধ ভক্ষণ পরিত্যাগ করিবে; বাতী, রোহিণী ও পূর্বাত্রেয়ে, মঘা, কৃতিকা ও প্রবণাদিনক্ষত্রে মঙ্গল রবি এবং শনিবারে রোগমুন্তির পর স্লান করিবে।

গোরোচনা এবং কৃত্ব্যদারা ব্রীং এই মন্ত্র ভূর্ত্ত্বপত্তে লিখিয়া বস্ত্রবৈষ্ঠিত করিয়া গলে ধারণ করিলে এই মন্ত্রবলে শত্রু বশীভূত হয়। ওং হুং দঃ, ওং হুং দঃ এই দফ্ষুট মন্ত্র ভূর্ত্ত্ব পত্তাফকৈ গোরোচনা এবং কৃত্ত্ব্য দারা লিখিয়া গলে ধারণ করিলে, মৃত্যু নিবারণ হয়। এক, পঞ্চ, নব, বিষট্ এবং ছাদশ এই কয়টি যোগ প্রীতিদায়ক। বিসপ্ত এবং একাদশে লাভ। চতুর্ঘ, অই এবং ছাদশে রিপুলয় হয়। জন্মরাশি হইতে আরম্ভ করিয়া তন্তু, ধন, সহজ, হস্তং, হুত, রিপু, জায়া, নিধন, ধর্মা, কর্মা, আয় এবং ব্যয় এই ছাদশটীকে, মেষাদি লগ্নে গণনা করিয়া ফল স্থির করিবে। জন্ম, সম্পৎ, বিপৎ, ক্ষেম, প্রভারি, সাধক, নিধন, মিত্র, পরম মিত্র এই নয়টি তারাবল জানিবে।

বৃধ, বৃহস্পতি, শুক্র এবং রবি ও সোমবারে
মাঘাদি মাসষট্কে আদ্যুচ্ডাকরণ প্রশস্ত। বৃধ
ও বৃহস্পতিবারে পুষ্যা, শ্রেবণা এবং চিত্রানক্ষত্রে
কর্ণবেধ শুভদায়ক। ষ্ঠি ও প্রতিপৎ তিথি পরি
ত্যাগ করিয়া পঞ্চমবর্ষে বিদ্যারম্ভ প্রশস্ত। মাঘাদি
ছয় মাস মেখলাধারণকার্য্যে শুভ। চূড়াকরণাদি
কার্যা প্রাবণাদি ছয় মাসে কর্ত্র্যা নহে। রহস্পতি
অন্তগত হইলে এবং চন্দ্রমা ক্ষীণ হইলে,যে বালক
উপনাত হয়, তাহার য়ভূয়, অথবা জড়ভা ঘটিয়া
থাকে। উপনয়নের পর সমাবর্ত্তন কার্য্য ক্ষোর,
ঝক্ষে এবং শুভবারে কর্ত্র্যা। শুভক্ষেত্রে এবং
শুভলমে, অশ্বিনী, মঘা, চিত্রা, স্বাতি, ভরণী,
উত্তরভাদ্রপদ, উত্তরাষাচা, উত্তরফল্ঞনী, পুনর্ব্যম্ন
এবং পুষ্যা নক্ষত্রে ধমুর্বেদারম্ভ প্রশস্ত।

ভরণী, আর্ক্রা, মঘা, অলেষা, বহু এবং পূর্ববিদ্ধানী নকতে ভয়েছু ব্যক্তি বস্ত্র প্রাবরণ করিবে না। ব্হস্পতি শুক্র ও বুধবারে নববস্ত্র ধারণ কর্ত্তব্য নহে। রেবতী, অমিনী, ধনিষ্ঠা এবং হস্তাদি পঞ্চনকতে শব্ধ, প্রবাল এবং রত্নাদি ধারণ প্রশস্ত নহে। ভরণী, সর্প, ধনিষ্ঠা, ত্রিপূর্ববা এবং শতভিষা নকতে দ্রব্য ক্রেয় করিলে হানিকর এবং বিক্রেয় করিলে লাভকর হয়। অম্বিনী, বাতি, চিত্তা

রেবতী, শতভিষা এবং শ্রেবণা নক্ষত্রে দ্রব্য ক্রয় করিলে লাভকর এবং বিজ্ঞান করিলে হানিকর হয়। বহিং, জ্যেষ্ঠা ও বিশাখা নক্ষত্রে নিকিপ্ত এবং প্রযুক্ত ধনেরও উপাসনা করিবে না। উত্তর-ফল্পনী, উত্তরভাদ্রপদ,উত্তরাধাঢ়া, প্রবেশা ও জ্যেষ্ঠা নক্ষত্রে রাঞ্চাদিশের অভিষেচন করিবে।

চৈত্র, জ্যৈষ্ঠ, ভাজ, আশ্বিন, পেষি এবং মাঘমান পরিত্যাগ করিয়া অবশিষ্ট মানে গৃহ-প্রবেশ শুভাবহ। আশ্বিনী, রোহিনী, মূলা, উত্রা-ত্র্য, মূগশিরা, স্বাতি, হস্তা এবং অকুরাধা নক্ষত্র গৃহারস্ত্রে প্রশস্ত। আদিত্য এবং ভৌমবার পরি-ত্যাগ করিয়া বালীখনন এবং প্রাসাদারস্ত

বৃহস্পতি সিংহ রাশিতে গমন করিলে, গুর্বাদিত্য যোগ ঘটিলে এবং শুক্রের বাল্য, র্দ্ধ এবং
অন্তগমনকালে গৃহকর্ম বর্জন করিবে। প্রাবণাদি
পক্ষনক্ষত্রে গৃহকার্য্যের নিমিত্ত তৃণ, কার্চ্চ সংগ্রহ
করিলে, অগ্রিদাহ, ভয়, রোগ, রাত্মপীড়া ও ধনক্ষতি হইয়া থাকে। ধনিষ্ঠা উত্তরাত্রয় এবং
শতভিষা নক্ষত্রে গৃহপ্রবেশ করিতে পারে। দিতীয়া, তৃতীয়া, পঞ্চমী, সপ্তমী এবং ত্রয়োদশী
নৌকাগঠনে শুভদায়ক।

রাজদর্শন, ধনিষ্ঠা, হস্তা, অমুরাধা ও অধিনী
নক্ষত্রে প্রশস্ত । পূর্ব্বাত্তয়, ধনিষ্ঠা, আর্জা, কৃত্তিকা,
য়ুগশিরা এবং অল্লেষা এই নয় নক্ষত্র, ষাত্তায় নিবিদ্ধা । সিনীবালী এবং চতুর্দশী তিথিতে, ত্রিউন্তর্গা,
রোহিণী, প্রবণা, হস্তা, চিত্রা এবং বৈষ্ণমী নক্ষত্রে.
গোষ্ঠযাত্রা এবং সূহপ্রবেশ উভয়ই নিষিদ্ধ । অনিল,
উত্তরাত্রয়, রোহিণী, নৃগশিরা,মূলা,পুনর্বহস্ক, পুরাা,
প্রবণা এবং হস্তা নক্ষত্রে কৃষিক্র্ম করিবে। রোহিনী, রেবতী, অমুরাধা এবং উত্তরাত্রয়ে, পুনর্বহস্ক

ষাতি, পূর্বকস্তুনী, মূলা, ক্লোষ্ঠা ও শভভিষা নক্ষত্রে বৃহত্পতি শুক্র অথবা রবি ও সোমবারে, বৃষ, কন্তা ও মিপুন লয়ে বিতীয়া, পঞ্চনী, দশনী, সপ্তমী, তৃতীয়া ও ত্রয়োদশী তিথিতে সম্পদাভিলানী ব্যক্তিগণ মন্দার ব্যতীত অপর সমন্ত বীজ বপন করিবে। রেবতী, হস্তা, মূলা, প্রবণা, কুর্বকস্কুনী এবং অনুরাধা নক্ষত্রে, পিতৃদৈবে, বৃধবারে ও অঞ্চল্যন মাসে ধাল্যচ্ছেদন প্রশস্ত । হস্তা, চিত্রা, পুনর্বহু, ষাতী, রেবতী, ভ্রনী, ক্ল্যেন্ডা পূর্বকল্কনী এবং প্রবণাদি তিন নক্ষত্রে, ছিরলয়ে এবং বৃধ, বৃহস্পতি ও শুক্রবারে ধান্য প্রবেশন কর্ত্ব্য । ওং ধনদায় সর্ববধনেশায় দেহি মে ধনং স্থাহা ওং নবেবর্ষে ইলা দেবি লোকসংবর্জনি কাম-ক্রপিণী দেহি মে ধনং স্বাহা ।

এই মন্ত্র পত্তে লিখিয়া ধান্মরাশির উপর রক্ষা করিলে, ধান্যবর্জন হইয়া থাকে। ত্রিপূর্বা, বিশাধা, ধনিষ্ঠা, শতভিষা এই ছয় নক্ষত্তে পণ্ডিতরা ধান্য নিজ্রমণ করিয়া,থাকেন। দেবপ্রতিষ্ঠা, আবাদপ্রতিষ্ঠা এবং বাপানি, প্রতিষ্ঠা রবির উত্তরায়ণকালে কর্ত্তব্য। রবি মিধুনরাশিতে পমন করিলে অমাবস্থার পর স্বাদশী তিথিতে হরিশয়ন হইয়া থাকে। সূর্য্য, সিংহ ও তুলারাশিতে গমন করিলে অমাবস্থার পর যে ছই ঘাদশা ইর,তাহার আদ্যে ইক্রেসমুখান এবং দিতীয়ে হরির প্রবাহ্মের হইয়া থাকে। সূর্য্য কন্যারাশিতে গমন করিলে, শুরাফ্রীতে তুর্গার উত্থান হইয়া থাকে। মঙ্গল রবি এবং শনিবারে ত্রিপাদনক্ষত্তে বদি ভটো তিথির যোগ হয়, তাহা হইলে ভাহাকে তিপ্রুল্বা কহে।

সকল কার্য্যেই চক্রতারা বিশুদ্ধি উপাদের বলিয়া অভিহিত হইয়াছে। চক্র যাহার জন্ম- রাশিত্ব এবং তৃতীয়, ষষ্ঠ, সপ্তম, দশম ও একাদশ রাশিত্ব হর তাহার সকল কার্ব্যে শুভ হইবা থাকে। শুরুপক্ষে বিতীয়া, পঞ্চমী এবং নবমী, শুভাবহ। মিত্র, অভিমিত্র, সাধক, সম্পৎ ও ক্ষেমাদি তারকা সকল জন্ম হইলে মৃত্যু, বিপৎ হইলে ধনসংগ্রহ। প্রত্যারিতে মরণ এবং নিধনেও পঞ্চত্ব অবধারিত আছে।

রুষ্ণান্টমীর পর শুক্লান্টমী পর্যন্ত চক্র কীণ এবং অন্তর পূর্ণ বলিয়া অভিহিত। ভামু বুধ, অথবা মিধুনরাশিত্ব হইলে, বৃহস্পতি ও সোমবারে জ্যেষ্ঠা নক্ষত্রে পোর্ণমাসী লংঘটন ইইলে তাহাকে মহাজ্যিষ্ঠা বলে। যদি জ্যৈষ্ঠমাসের শূর্ণিমাতে গুরু ও শশি মুগশিরা মক্ষত্রন্থ হয় এবং রবি রোহিণী-গত হয়েন, তাহা হইলেও মহাজ্যৈষ্ঠা সংজ্ঞা হইয়া থাকে। হর্ষ্যক্ষপাদে স্থাতি ও অধিনী নক্ষত্রে শক্র-ধর্ম্বা উত্থাপন করিয়া সপ্তাহে বিস্ক্তন করিবে।

নিশাকর রাস্কৃত্যন্ত ইইলে, সেই গ্রহণকালে
যে কোন বস্তু দান করা যায়, ভাহা স্থবর্ণদানতুল্য। সকল বিজই ব্রহ্মসদৃশ এবং সকল জলই
গঙ্গাজল সদৃশ ইয়া থাকে। রবির রাশ্যন্তর
সংক্রেনণের নাম সংক্রান্তি। সেই সংক্রান্তি ক্রমে
ধ্যাঙ্কী, মহোদরা, ঘোরা, মন্দা, মন্দাকিনী,
এই ছ্র' সংজ্ঞার শভিহিত ইয়াছে। বালব,
কৌলব, নাগ ও জৈতিল করণে যদি সূর্য্য উদিত
ইয়া সংক্রমণ হয়, ভাহা ইইলে লোক স্থবী হয়।
আর যদি গর, বব বণিজ, বিষ্টি, কিজ্বন্ন ও শকুনি
করণে সংক্রমণ হয়, তবে লোক রাজদোষে ধন
প্রাণে পীড়িত হয়। যদি চতুম্পাৎ, বিষ্টি ও বণিজকরণে রবি শয়িত ইয়া সংক্রমণ করে, ভাহা
ইইলে ছভিক্ল, রাজসংগ্রাম এবং দম্পতিকলহ
প্রস্তি শ্লিকট ঘটিয়া থাকে।

আধানে এবং ক্ষমক্ষাত্রে, ব্যাধি উপস্থিত হইলে, ক্লেশদারক হয়। ক্ষতিকাদক্ষতে হইলে নয় দিন, রোহিণীতে তিন দিন, মুগশিরাতে পঞ্চাতে, আর্ত্রাতে প্রাণনাশ এবং পুনর্বস্থ ও পুয়াতে হইলে সপ্তরাত্রি ভোগ হইয়া থাকে। পূর্বাক্ষাতে হইলে তুই মাস, বিশাখাতে বিংশতি দিন, অনুরাধাতে দশাহ এবং ক্ষেত্রাতে অর্জ্ঞমাস ভোগ হয়।

মূলানক্ষতে রোগ হইনে তাহার মুক্তি মাই।
পূর্ববাবাঢ়ার পঞ্চল দিবস উত্তরাষাঢ়াতে বিংশতি
দিন প্রাবণাতে দিমাস, ধনিষ্ঠাতে অর্কমাস, শতভিবাতে দশাহ, অবিনীতে অহোরাত্র এবং ভরণীতে প্রাণহানি হইয়া থাকে। কিন্তু গায়তী হোম
করিলে শুভ হয়।

সূর্য্য ষষ্ঠান্দ দশা ভোগ করেন। চন্দ্র পঞ্চ দশান্দ, মঙ্গল অফীন্দ, বুধ দশ এবং সপ্ত বর্ষ, শনি দশান্দ, গুরু ঊনবিংশান্দ, রাছ দ্বাদশান্দ, এবং শুক্র একবিংশতি অন্দ দশা ভোগ করিয়া থাকে।

ইত্যাপ্রেরে আদিমহাপুরাবে জ্যোতিঃশান্ত্রদার নামক পঞ্চাদীত্যধিকশতত্ম অধ্যার সমাপ্ত।

ষড়শীত্যধিকশততম অধ্যার।

পুকর কহিলেম, এখন দ্রবাশুদ্ধি বলিব।

মুম্মর দ্রব্য এবং স্থবর্ণ ও ভাদ্ধনম দ্রব্য প্রপাকে শুক্তইয়া থাকে। ভাদ্ধ সমু এবং
বারি সংযোগেও শুদ্ধ হয়। কাংক্ষ ও লোহমম

দ্রব্যের কার্সংযোগে এবং ম্কাদির কালদেই পরিশুদ্ধি ক্রিয়া থাকে। প্রভারময় পাত্র

ক্র-হলৈ প্রধা পাক, মুক্ত ভ কল অপ্রিক্র

हरें(न अध्यक्तान बाहा ७% हरें(द । यक्कार्या জলধারা মার্জন করিলেই অঞ্পাত্ত শুদ্ধ ইইবে। मस्त्रह स्रवा छेक्षवाति बाहा अवः गृहमञ्जाब्द्रन बाता শুদ্ধ হইয়া থাকে। মুক্তিকা কার এবং জল দারা বস্ত্ৰ ছিছে। বছ বস্ত্ৰ হইলে প্ৰক্ষণ ছারাই শুদ্ধ হইয়া থাকে। রাশীকৃত বস্তু হইলে প্রকণ এবং কিঞ্চিৎ উদ্ধৃত করিয়া ফেলিলেই শুদ্ধ। শ্য্যা, আসন, যান, শূর্প, শকট, খড় এবং ইন্ধনও প্রক্ষণ বারা শুদ্ধ হয়। শুক্ষয়, অব্দিময় ও দন্তময় দ্রব্য শেতসর্যপকক্ষ দারা এবং নির্যাস, গুড় ও লবণ,শোষণ দারা শুদ্ধ হইয়া থাকে । কুশুস্তু,উর্ণা এবং কার্পাদ প্রদারিত করিলে শুদ্ধ হয়। গো জাতির মুখব্যতীত সর্বাঙ্গ শুদ্ধ। অশ্ব এবং অদ্ধের মুথ শুদ্ধ। নাবী বংস শকুনীও কুরুরের মুখও শুদ্ধ ব্যলিয়া প্ৰিগণিত হইয়া থাকে। ভোজন করিয়া হাচিয়া, স্থাতোথিত হইয়া, পান করিয়া, রথে আরোহণ করিয়া এবং অবগাহন করিয়া, বস্ত্র পরিধান করিয়া আচমনান্তে শুচি ইইবে। পুনঃ পুনঃ ভ্রমণ করিলেই মার্জ্জার শুদ্ধিলাভ করে। ক্লজন্মলা ন্ত্ৰী চতুৰ্থদিনে শুদ্ধা হয় কিন্তু পঞ্মদিবদে স্লানের পর দৈব পিতৃকার্য্যে অধিকারিণী হইয়া থাকে ৷- শৌচকালে গুহুদেশে একবার. লিঙ্গে একবার, পদন্বয়ে সপ্তরাব এবং উভয় করে তিনবার করিয়া মৃত্তিকা লেপন করিয়া শুদ্ধিলাভ করিবে। ত্রহ্মচারী, বনবাদী এবং যতিগণ ইহার চতুপ্ত ণ শোচক্রিয়া লরিয়া শুচি ইইবেন। পট্টবন্ত্র ঞ্জিকল ভারা এবং ক্লোমবস্তা গোরদর্যপ ভারা শুভ করিবে। মুগলোম, পুষ্প এবং ফল ফল-প্রোক্ষণেই শুদ্ধ হইয়া থাকে।

ইজ্যাথেকে শাদিনহাপুরাণে তারাপুদ্ধিনাম বড়পীতাধিক শক্তম অধ্যায় সমাস্থ্য

সপ্তাশীত্যধিকশতত্ম ভ্রেয়ায়।

ভুকর কহিলেন, একণে প্রেতশুদ্ধি এবং স্ব-তিক। শুদ্ধির বিষয় বলিব। স্পিশু মরণে আক্র-त्व नर्भार, कित्रिय वान्यार, देवटणत शक्तमाह **धवर मृट्छत्र धाक्यान, नावाटनीठ इहेग्रा शाटक।** জননাশোচও এইরূপ। আক্ষণ বালক মরিলে, म्खबनन्पर्यास महा, इंड्राकाम भर्यास जकताजि. উপনয়ন কালপর্যন্ত জিরাজি, তৎপরে দশাহ অশেচি হইয়া থাকে। উনত্তিবৰ্ষ বয়ক শুদ্র বালক মরিলে পঞাহ। তিন বংসর অতীত হইলে ৰাদশাহ এবং ছয় বংসর অভীত হইলে একমাস অশ্যেচ হইয়া থাকে। অকুতচ্ছা কলা মরণে, বান্ধবদিশের একরাত্রি, ক্বছচুড়া হইলে ত্রিরাত্রি এবং বিবাহিতা হইলে, পিতৃকুলে মুশাচ নিবৃত্তি हरेशा छर्क्**रल मञ्जूर्नाटमोह ए**हेटन । यनि विवा-হিতা কন্তা পিতৃগৃহে মরে, ভাহা হইলে পিতা-মাতার ত্রিবাত্রাশোচ হইবে। যদি একটা অশোচ মধ্যে তজ্জাতীয় অপর একটী অশোচ উপন্থিত ভ্য তাহা হইলে পূৰ্বাশেতির প্রথমার্ছে ছইলে পূর্কাশোচের দহিত, এবং বিতীয়ার্শ্বে হটলে পরা-শোচের মহিত অশোচ অপগত হইবে। বিদেশে থাকিয়া যদি জ্ঞাতিমরণ শুনা যায়, তাঁৰে তদ-ट्गीरहत गर्या इहेटल, त्य कम्र मिन व्यवनिके था-কিবে, দেই কয় দিবদাই অশেচ পালন করিছে। আর অশৌচান্তে শুনিলে ত্রিবাত্র অশৌচ গ্রহণ করিয়া চতুর্থাহে শুদ্ধিলাভ করিবে ৷ পথৎসর গত হইলে যদি অশেচিবার্তা ভনিতে পায়, তাহা হইলে স্নান করিলেই শুর্ম হইবেন মাতামহ এবং भागांश वैतिता वितावादशाकः धर्ग कतिरा रव। উচ্চ হ'ন হইতে প্রিড ইইন্ট স্থিন্ধ্য

প্রবেশ করিয়া এবং স্বেছানুসারে বিদ্যুৎ ও সন্ত্রা-হত হইয়া মরিলে সেই আত্মধাতীর অশোচ গ্রহণ করিবে না।

মৈথুনান্তে এবং চিতাধুম স্পাশ করিয়া তৎক্ষণাৎ
মান করা কর্তব্য। শুদ্র প্রাক্ষণের শব দাহ করিবে
না; প্রাক্ষণেরও সেইরূপ শুদ্রপ্রাতীয় শব দাহ
করা নিষিদ্ধ। কিন্তু অনাথ প্রাক্ষণশব বহন করিলে
স্বর্গলাভ হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি অনাথ প্রেত
দাহের নিমিত্ত কাঠি প্রদান করে, সে সংগ্রামে
ছয় লাভ করে।

শব দাংলান্তে সংকল্পূর্থক দক্ষিণাবর্তে চিতা পরিক্রেমণ করিয়া সবস্ত্র স্থান করিবে। স্থানের পর প্রেতের উদ্দেশে প্রত্যেকে ভিন অপ্রলি করিয়া জল দিয়া তপ্প করিবে। অনন্তর দারু এবং প্রস্তান্তর উপর পদক্ষেপ, নিম্বপত্র দংশন এবং বহিংতে অক্ষত নিক্ষেপ করিবা। ক্রিলের বস্তু ভোজন করিয়া ভূতলে পৃথক হইয়া শ্যন করিবে। পিণ্ডাধিকারা প্রতি দিন এক এক পিণ্ড দিয়া দশাহে শ্র্মান্ত করিয়া ভাতি দিন এক এক পিণ্ড দিয়া দশাহে শ্রমান করিয়া ভাতি দিন এক এক পিণ্ড দিয়া দশাহে শ্রমান করিয়া ভাতি দিনে শ্রেত্র্যার্প এবং তিল ছাবা স্থান করিয়া অত্যান্তর পরিধান করা কর্ত্ত্রা। অজ্ঞাতদেও বালক এবং গর্ভক্রত শিশু মরিলে, ভাহার আ গ্রাণক্ষার এবং উদক্রিয়া কিছুই করিবে না। চভূর্থ দিবলে অন্থি সঞ্জয় করা কর্ত্ত্রা, অন্থিদঞ্চয়ের পর অঙ্ক স্পার্শ করিতে যোগ্য হয়।

ইভাৱেৰে আমন্বাপুলৰে পাৰাপে6নামক স্ত্ৰানীতাধিক্লতত্ত্ব অব্যাহ সমাপ্ত।

অন্টাশীত্য ধিকশতত্ম অধ্যায়।
পুষর কহিলেন, আমি একণে সঁত্রপুড়ি
মুনিগণদন্তে পঠ্জাবাশীত বলিব।

ভিন মাস হইতে ছয় মাস পয়াত গঠলাব হইলে, সেই জীর যত মাস তত দিন অশোচ হইয়া থাকে এবং ভাক্ষণীর হইলেএক দিন অধিক, ক্রিয়ার ছই দিন, বৈশ্যার ভিন দিন, শূতার ছয় দিন অধিক হইবে।পিতা স্নানমাত্রে শুদ্ধ হইবেন। সপ্তমান্তমাদে গঠলাব হইলে জীর সম্পূর্ণাশোচ এবং সপিগুদিগের সদ্যোগিচ হয়। তই মাসের গঠপতনে ভাক্ষণীর ভিন দিন, ক্রিয়ার চারি দিন, বৈশ্যার পাঁচ দিন এবং শূতার আট দিন অশোচ হয়।

যেখানে ভ্রাহ্মণের ত্রিরাত্রাশৌচ হয়, তথায় ক্ষত্রিয়ের ছয় দিন, বৈশ্যের নয় দিন এবং শ্রের দাদশাহ হইয়া থাকে। দিবর্ধবয়ক্ষ বালক মরিলে, তাহাকে দাহ না করিয়৷ ভূমিতে প্রোথিত ক-রিবে। জাতদণ্ড বালক মরিলে, সাগ্রিক ব্রেকাণের একাহ অশৌচ হইয়া থাকে। নির্মিদিগের নরণ দিন হইতেই অশৌচ গণনা করিবে। যাহারা সাগ্রিক, তাহাদিগের দাহের পর হইতে অংশাচ গ্রহণ করাই বিধেয়। চারিবর্ণের জ্রন্ধাদিজ মে চতুর্থাহ, পঞ্চমাহ, সপ্তমাহ এবং ন্যমাহে অস্থি সঞ্য করিতে হয়। অনৌরস পুত্র এবং অ**শ্য**-গ্যমিনী ও পরপ্রকা স্ত্রীমরণে ত্রিরাত্রাশোচ হয়। মরণাশৌচ হইলে সপিগুগণ দশরাত্তিতে, সকুল্য-গণ ত্রিরাত্তিতে এবং সগোত্রগণ স্নানমাত্রে শুদ্ধি লাভ করিয়া খাকে। কুমারীগণ পিতৃগোত্তে থাকে। বিবাহিতা হইলে, ভর্ত্গোত্রা হইয়া থাকে। বিবাহের পর উভয়কুলেই তর্পণ করিতে পারে। সপ্তম পুরুষপর্যন্ত স্পিগুড়া চতুদিশ পু-ক্রম পর্যন্তে সমানোদকভাব এবং জন্মনাম স্থারণ পৰ্য্যত্ৰ সংগাত বলিয়া কথিত হইয়া থাকে। याकुलभवरंग शकियो ब्रांकि व्यर्गोह हहा। लिया ঋত্বিক এবং বাদ্ধব মরণেও এইরূপ জানিবে। জামাতা, দেছিত্র, ভাগিনেয়, শ্যালক এবং শ্যালক পুত্র মরিলে স্নানমাত্রেই শুব্ধি হইয়া থাকে। মাতামহ, মাতামহী এবং আচার্য্য মরণে ত্রিরাত্রা-দোচ হয়। তুর্ভিক্ষ, রাষ্ট্রসম্পাৎ, আপৎপতিত এবং অন্যপ্রকার উপদর্গবশতঃ মৃত্যু হইলেও তিরাত্রানোচ জানিবে। বিপ্রহন্তা, গোহন্তা, মৃপহন্তা, অসাধ্য ব্যাধিযুক্ত এবং স্বাধ্যায়ে অশক্ত ব্যক্তির অশোচ প্রহণ করিবে না, বহ্তিপ্রবেশ অথবা জলপ্রবেশ তাহাদের প্রায়শ্চিত।

যে ব্যক্তি অপমানবশতঃ, জোববশতঃ, স্নেহবশতঃ, শোকপ্রযুক্ত এবং পরাজন্মভয়বশতঃ উদ্ধন করিয়া প্রাণত্যাগ করে, সে লক্ষসংখ্যক
নরকে বাস করিয়া থাকে। প্রোত স্মার্ভ কর্ম
হীন বৃদ্ধ ব্যক্তি মরিলে ত্রিরাত্তি অশোচ গ্রহণ
করিবে এবং দিতীয় দিবসে থাহার অন্থিসঞ্চয়,
তৃতীয় দিবসে উদক্তিয়া এবং চতুর্থ দিবসে প্রান্ধ
করা কর্বিয়া বিত্যুৎপাত দ্বারা এবং অগ্রিদাহে
হত হইলেও ত্রিরাত্ত অশোচ গ্রহণ করিবে।

যে ন্ত্রী ভর্ত্বাতিনী এবং প্যেণ্ডাপ্রিডা হয়,
তাহার অশোচ গ্রহণ এবং উদকদান কিছুই ক
রিবে না। যদি কেহ কখন অসপিও প্রেড বহন
করে, তাহা হইলে যে সবস্ত্রে স্নান করিয়া এবং
অগ্নিপর্শ ও স্বতপ্রানন করিয়া শুদ্ধিলাভ করিবে। অশোচার ভক্ষণ করিলে সম্পূর্ণাশোচ
হইয় ধাকে। যে সকল দ্বিজাতি অনাথ ব্রাহ্মণশব বহন করে, তাহারা স্নানমাত্রেই শুদ্ধি লাভ
করিয়া পদে পদে যজ্ঞকল প্রাপ্ত হইয়া থাকে।
ছিজগণ, শৃদ্রের শবানুগমন করিলে তিন দিবস
অশুচি থাকিবে এবং মৃতব্যক্তির বান্ধবন্ধদের
শহিত ক্রন্ধন করিলে সেই অহোরাজ্য দান এবং

আদ্ধাদিকাবোঁ অধিকারী হইবে না। স্বজাতি উপস্থিত থাকিলে শুদ্র আক্ষণের শব বহন করিবে না। যদি করে, তাহা হইলে শবকে স্থান করাইয়া পুল্প ছারা পূজা করিয়া পরে বহন করিবে। নান্দেহ দাহ করা নিষিদ্ধ। সমস্ত ভত্মীভূত না করিয়া কিঞ্জিদংশ পরিত্যাগ করা উচিত। গোত্রজেরা শব ধারণ করিয়া চিতার উপর ভূলিয়া দিবে।

গৃহে যদি শৃদ্রা প্রসূতা হয় অথবা শৃদ্র মরে, তাহা হইলে পাকভাও পরিত্যাগ করিয়া তিন দিবসের পর শুদ্ধ হইবে। সাগ্লিক প্রাক্ষণেরা যথা ভায়ে তিন প্রকার অগ্নিষারা প্রেতদেহ দর্ম করিবে। নিরগ্লিকেরা অপরের ভায় একমাত্র লোকিকাগ্লি দ্বারা দহন করিবেন। বান্ধবেবা প্রেতর নাম গোত্র উল্লেখ করিয়া এক এক অঞ্জলি জল দিবেন। মাতামহ আচার্যা প্রেতীভূত হইলে তাহাদের উদ্দেশেও এইরূপ এক অঞ্জলি জলদারা তর্পন করিবে। স্বি, স্ত্রী শশুর এবং থাছিক প্রেত উদ্দেশে কামনা অনুসারে তর্পন করিতে পারিবে। পুত্র পিতৃউদ্দেশে দশ অঞ্লী জল দ্বারা তর্পন করিবে।

ত্রাক্ষণ দশ পিণ্ড দান করিবেন। ক্তিয় দাদশ পিণ্ড বৈশ্য পঞ্চদশ পিণ্ড এবং শুদ্র তিংশৎ পিণ্ড দান করিবে। পুক্রই হউক, পুক্রিকাই হউক, অথবা অপব কেহই হউক, যে প্রেডকে অগ্নিদান করিবে, দেই পুক্রের ভায় পিণ্ডদানে অধিকারী। পিড়ার শবদাহান্তে পুশ্র স্থান করিয়া, গৃহ দারে নিম্নপত্র দংশন প্রস্তরের উপর পদক্ষেপ, অগ্নি, জল, গোবদর্যপ এবং গোময় স্পর্শ করিয়া আচমন পূর্বকি গৃহ প্রবেশ করিবে। এবং নিশ্মীস অক্ষারলবণান ভোজী হইয়া ভূমি শন্যায় শায়ন করিবে। শাবা শোচ বিষয়ে বেরূপ যেরূপ

ব্যবহারের কথা উল্লিখিত হইল, জননা শৌচেও এই রূপ জানিবে। পুজজন্ম দিনে প্রাদ্ধ করা কর্ত্তব্য অতএব মাতাই কেবল অশুদ্ধা থাকিবেন, পিতা স্নানান্তে এই কার্যো অধিকারী হইবেন। জন্ম দিনে গো, হিরণ্য এবং বস্ত্রাদি দান করিলে, পুত্র আয়ুম্মান্ হইয়া থাকে।

্বদি মরণাশোচ মধ্যে অপর একটা মরণাশোচ পত্তিত হয় কিন্তা একটা জননাশ্যেচ মধ্যে অপর একটা জননাশেচ উপস্থিত হয়, তাহা হইলে পূর্ববাংশাচাত্তেই শুদ্ধিলাভ করিবে। আর যদি জননাশোচ মধ্যে সরণাশোচ উপস্থিত হয় অথবা মরণাশৌচ মধ্যে জননাশৌচ উপস্থিত হয়, তাহা হইলে মরণাশোচাপগমেই পরিশুদ্ধ হইবে। গুরু অশোচ দারা লঘু অশোচ অপনীত হয় কিন্তু লঘু অশোচে গুরু অশোচ অপগত হয় না। মরণা-भोठाखनित अथवा जननारनीहाछितित রাত্রিতে অপর অশোচ পত্তিত হয়, তাহা হইলেও প্রকাশেট দারা ভদ্ধি হইবে। কিন্তু রাত্তি শেষে শুনিলে ছুই দিন এবং প্রভাতে শুনিলে তিন দিন 🧓 রৃদ্ধি হইবে। জনম মরণ উভয় অশোচেই অশুচি দিগের অন্ন ভক্ষণ করিবে না। অজ্ঞানবশতঃ এক ় দিন অশৌচাম ভক্ষণ করিলে অশুচি হইবে না।

> ইতাায়েত্রে আদিমধাপুথাণে প্রাথাশোচনাম ও অটা শীতাধিকশততম অধ্যায় সমাধা।

ঊননবত্যধিক শতত্তম অধ্যায়।

পুষ্ণর কহিলেন, এক্ষণে ভুক্তি মুক্তি প্রদ প্রাদ্ধ কল্প বলিতেছি, প্রবণ কর। পূর্ব্ব দিনে ত্রাহ্মণ-দিগকে নিমন্ত্রণ কবিয়া, পরদিনে স্বাগত আগের পর মধাবিধি অর্চনা করিয়া উপবেশনার্থ, কুশাসন প্রদান করিবে। দেবপক্ষে ভিন এবং পিতৃ পক্ষে একজন ত্রাহ্মণকে পূর্ববাস্ব করিয়া উপবেশন করা-ইবে। মাতামহ পক্ষেও একজন ত্রাহ্মণ উপ-বেশন করাইবে। কুশাসন দানানন্তর যব গ্রহণ করিয়া, ওংকার উচ্চারণ পূর্ব্বক বিখদেবগণকে আহ্বান করিব ! এই প্রশ্ন করিবে। পরে আবা-হনের অমুমতি গ্রহণ পূর্বেক বিখেদেবাদ, এই মন্ত্র দ্বারা আবাহন করিয়া যব বিকিরণ করিবে। বিশ্ব দেবগণ ৷ আমার এই মাহ্বান শ্রবণ করুন, শ্রবণ করিয়া আগমন করুন, আগমন করিয়া এই কুশা-সনে উপ্ৰেশন করুন। এইরূপ বলিবে। যব विकित्रभानस्त्र क्लाक्षलिशूर्वे "विश्वरम्या मृत्रुक" এই মন্ত্র এবং ওষধয় সমবদত্ত" এই উভয় মন্ত্র জ্বপ করিবে। পরেআকাশন্থ বিদিবস্থ ও ধরণীস্থ পুরুরবো মাদ্রব প্রভৃতি বিশ্বদেবগণ আমার এই আহ্বান শ্রবণ করুন। আপনাধা এই আস্ত কুশাসনে উপবেশন করিয়া আনন্দিত হউন। বিশ দেব-গণ! কেবল আপনারাই যে হর্বযুক্ত হুইভেছেন এমত নহে। ওযধিগণও আপনাদিগের নাথ নিশা-করের দহিত আনন্দিত হইয়াছেন।

এইমন্ত্র পাঠ করিয়া দিগুণ কুশ বিস্তরণ পূর্বক "উশন্তন্তে" এই মন্ত্র দ্বারা পিতৃগণকে শাহ্বান করিবে। অনন্তর ধ্বোগি এই মন্ত্র উচ্চারণ পূর্বক দেবপক্ষে যবক্ষেপ করিবে। তিলোনি এই স্বস্ত্র উচ্চারণ পূর্বক পিতৃপক্ষে তিলক্ষেপ করিবে। আবাহনের পব, আয়ান্তনঃ এই মন্ত্র বলিয়া তিল এবং যবমিশ্রিত অর্ঘনান করিবে। প্রথমে পাত্রে সংস্থান পূর্বক পিতৃত্য স্থানমিদি মন্ত্র উচ্চারণ করিয়ো পাত্র স্থান্ধ করিবে। অর্থাৎ পিতৃত্ব পাত্রে পিতৃত্য স্থানমিদি মন্ত্র উচ্চারণ করিয়ো পাত্র স্থান্ধ করিবে। অর্থাৎ পিতৃত্ব পাত্রে পিতৃয়াহ পাত্র পাত্র

মধু বাতা মন্ত্রের অর্থ এই। একোনপঞ্চান্থ বায়ু মধু দান করুন। নিশ্ব সকল মধু ক্ষরণ করুন। অক্ষানীয় ওমধিগণ মধুকল প্রদাব করুন। রজনীগণ মধুরূপ ধারণ করুন। প্রতিঃকাল মধুযুক্ত হও। পৃথিবা সমন্ধীয় ধূলিগণ মধুযুক্ত হও। আকাশ তুমি মধুময় হও। আমাদিগের বনপ্পতি ও সূর্য্য মধুময় হউন এবং আমাদিগের গোগণ মধুময় ক্ষীর প্রদান করুন।

জনন্তর বাক্যত হইয়া যথাত্থ ভোজন কর।
তৃপ্তাংস্থ। এইরূপ তৃপ্তি প্রশ্ন করিবে। পরে
শেষার ভূমিতে বিকিরণ করিয়া এক এক বার জল
দিবে। জনন্তর সকল জন্ম লইয়া, তিল মিজ্রণ
পূর্বেক দক্ষিণাভিম্থ হইয়া উচ্ছিই সন্নিধানে পিতৃযক্ত যথ পিগুদান করিবে। মাতামহ পক্ষেও এই
রূপ জানিবে।

ইহার পর আচমন পূর্বক স্বস্তিবাচন এবং অক্ষয়োদক দান ও যথা শক্তি দক্ষিণা দান করিয়া, স্থাং বাচরিয়ে ? এইরপ প্রশ্ন করিলে, বাচ্যতাং এইরপ অভ্নতাত হইরা স্থপিতৃগণ উদ্দেশে স্থা বলিবে। অনন্তর কুর্য্যু, অন্ত, স্থা এইরপ উক্ত হইরা ভূমিতে জল সেচন করিবে। 'অথবা বিশ্ব-দেবা প্রিয়ন্তাং এই বলিয়া জল দান করিবে।

মনন্তর আমাদিগের দাতাগণ, বেদ সকল ও

সন্ততি সকল বর্ত্তিত হউক। আমাদিগের আজাযেন অপগত না হর এবং আমরা প্রচুরধন লাভ
করি। এইরূপ প্রার্থনা বাক্যের পর প্রাণাম
করিয়া, প্রীতি পূর্বক বাজে বাজে, এই মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া পিত্রাদিজেমে বিসর্জন করিবে। যে
অর্থপাত্রে পূর্বে সংত্রব সংস্থাপন করা হইরাছিল,
সেই পাত্র উঠাইয়া তাছা হইতেও ব্রাক্তণদিগকে
বিসর্জন করিবে। অনন্তর প্রদক্ষিণ করিয়া পিতৃসেবিত ভোজন এবং ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন পূর্বক
ব্রাহ্মণগণের সহিত সে রাত্রি অতিবাহিত করিবে।

বৃদ্ধি উপস্থিত হইলে নান্দীমুথ পিতৃগণকে কর্কন্ধু এবং যব মিশ্রিত পিণ্ড দান করিবে। একোদিন্ট শ্রাদ্ধ দৈবহীন করিবে এবং তাহাতে এক অর্ঘ ও এক পবিত্র দান করিবে। স্মায়িতে হোম এবং আবাহনও করিবে না। পিতৃ বিসর্জন বিষয়ে স্কন্মান্থানে উপতিষ্ঠতাং এই বাক্য বলিবে এবং স্কভিন্নমাতাং এই বাক্য বলিবে এবং স্কভিন্নমাতাং এই বাক্য বলিবে, স্কভিন্নতাম্ম এই প্রভিন্নন দিবে।

দপিতীকরণে গদ্ধ উদক এবং তিল বুক্ত চারিটা পাত্র করিবে, এবং যে সমানায় এই মন্ত্রময় পাঠ করিয়া, অর্থের নিমিত্ত পিতৃ পাত্রে প্রেত্ত পাত্রম্থ জল সেচন করিবে। সম্বংসর মধ্যে যাহার স্পিতীকরণ হয়। তাহার উদ্দেশে বংসর কাল প্রান্তি ক্লাম্মণকে শ্বম এবং জলপূর্ণ কুন্ত দান করা পু্কাদির কর্তব্য। যে বংসর মৃত্যু ছইবে, সেই বৎসর মৃতাহে মাসে মাসে প্রান্ধ করিবে। পরে মাসিকালের ভার বৎসরাত্তে মৃত তিথিতে প্রান্ধ করা কর্ত্তব্য।

হবিধান দারা প্রাদ্ধ করিলে, এক মাদ কাল পায়সদারা করিলে এক বংসর, মংস্থদারা করিলে ছুই মাদ, হরিণ মাংদ দারা করিলে তিন মাদ, কুরজ্র মাংদ দারা করিলে চারি মাদ, শকুন মাংদ দারা করিলে পাঁচ মাদ, মুগ মাংদ দারা করিলে ছুর মাদ, এণ মাংদ দারা করিলে লাভ মাদ, রোরব মাংদ দারা করিলে আট মাদ, বরাহ মাংদ দারা করিলে নয় মাদ,এবং শশ মাংদ দারা করিলে দশ মাদ, পিতৃলোক তৃগুলাভ করিয়া থাকেন। যে ব্যক্তি গয়াম্থ ইয়া, গগুর মাংদ, মহাশল্ক,মধু-যুক্ত অল্ল, লোহামিধ, কালশাক এবং বাদ্ধীনদ মাংদ দারা প্রাদ্ধ করে, দে অনন্তকল লাভ করিয়া থাকে।

বর্ষা দেশীতে এবং মঘাতে আদ্ধ করিলে, কন্সা, প্রজা, বন্দী, দ্বিশক এবং একশক পশু, ওক্ষা বর্চস্বী পুত্র, মুখ্য পুত্র, মৃত, কৃষি, বাণিজ্য, স্বর্ণ, রৌপ্য, রত্ন, জ্ঞাতি-শ্রেষ্ঠতাদি সকল কামনাই লাভ হয়।

শস্ত্রহত ব্যক্তির চতুর্দশীতে শাদ্ধ করিবে।
চতুর্দশী পরিত্যাগ করিযা প্রতিপতাদি ত্রেযাদশ
তিথিতে বিধিবৎ শাদ্ধ করিলে, স্বর্গ, অপত্য,
শোর্য্য, ক্ষেত্র,বল,শ্রেষ্ঠতা, সোভাগ্যবান ও বংশধর
পুত্র, প্রভূত বাণিজ্য, অরোগিতা, প্রভূতা, যশ,
বাত-শোকতা, পরম গতি, ধন, বিদ্যা, ভিষক্সিদ্ধি, রূপ, গো, অজা, অশ্ব এবং দীর্ঘ আয়ু, লাভ
হইয়া থাকে। কৃত্তিকাদি ভরণী পর্যান্ত, নক্ষত্রে
কামনা করিয়া আদ্ধি করিলেও এই সক্ল লাভ
হইয়া থাকে। বহু ক্ষত্রে অদিতিহ্নত প্রভৃতি

প্রাদ্ধ দেবতাগণ প্রাদ্ধ ভারা পরিতৃষ্ট ইইয়া পিতৃ লোককে তৃপ্ত করেন। পিতামহণণ প্রীত ইইয়া আয়ুঃ, প্রজা, ধন, বিদ্যা, স্বর্গ, মোক্ষ এবং নিথিল-স্থা প্রদান করিয়া থাকেন।

ইত্যাথেয়ে আদিমহাপুৰাণে আদ্ধকর নামক উননৰত্য-ধিকশতভম অধ্যায় সমাপ্ত।

নবত্যধিকতশতত্ম অধ্যায় ।

অগ্নি বলিলেন, কাত্যায়ন মূনি প্রান্ধের বিষয় যাহা বলিয়াছেন একণে তাহাই বলিতেছি। গয়াকেত্রে, যথাকালে, অপর পক্ষে এবং সংক্রোন্তি প্রভৃতিতে শাদ্ধ করিলে বিশেষ ফল-দায়ক হয়।

পূর্ববিদিনে যতি, গৃহস্থ সাধু, স্নাতক শ্রোত্রিয়, কিস্বা বনবদ্য কর্মনিষ্ঠ শিষ্ঠাচার সংযুত দ্বিজগণকে নিমন্ত্রণ করিবে।

শ্বিত্রি ও কুষ্ঠরোগী, অদান্ত ও বেদকর্মবিমুখ আক্ষাণদিগকে নিমন্ত্রণ করিবে না।

দৈব পিতৃও মাতামহ পক্ষে তিনটা অথবা এক একটা করিয়া ভ্রাহ্মণ বসাইতে হইবে।

শান্ধ দিনে অক্ষচর্য্য অবলম্বন পূর্বকে অকোপ, অহরিত, মৃত্র, সত্যনিষ্ঠ এবং অপ্রমন্ত ইইবে। অংক্সমন এবং বেদাধ্যমন বৰ্জন করিয়া বাগ্যত ইইয়া থাকিবে।

পরদিন পঙ্ক্তি পাবন দিজগণকে প্রশ্ন করিবে, "বিশ্বে দেবানাবা হয়িষ্যে"? ভাহারা আবাহয়,এই-রূপ প্রতিবচন বলিলে, বিশ্বদেবগণকে আবাহন করিবে।

শ্বনন্তর তিল বিকিরণ পূর্বকে বলিবে। তিলোসি সোমদেবতো গোসবো দেব নিশ্মিতঃ প্রাত্তঃ পৃক্তঃ সংগ্রা পিতৃন্ লোকান্ প্রীণাহিনঃ স্থা।

শান্ধে, হৈম, রাজত, ওতুখর, অথবা পর্ণপাত্রই প্রশস্ত। বামদিকে দেব পাত্র এবং দক্ষিণ দিকে পিতৃপাত্র সংস্থাপন করিবে।

অনন্তর এক এক ব্রাহ্মণকরে এক একটী পবিত্র দান করিয়া –

যাদিব্যা আপঃ প্রদা দম্ভূর্য্যাঃ অন্তরিক্ষা উত-পার্থিবীর্যা:। হিরণার্ণা যজিয়াস্তান আপঃ শিবাঃ সংগোনাঃ স্থহবা ভবস্তা। এই মন্ত্রপাঠ করিবে। পরে বিখেদেবা এধবোহর্ষ্যঃ স্বাহা। এই বলিয়া অর্ঘ দান করিবে। পিতামহাদিপাত্তে দংস্রব করিয়া পিতৃভ্যস্থানমদি এই মন্ত্র বলিয়া অর্থাত্ত নৃক্তে করিবে। অনস্তর গন্ধ, পুল্প, ধুপ, দীপ আচ্ছাদনাদি দান করিয়া, সাগ্রিকগণ স্বতাক্ত অন লইয়া, অন্মে করিয়ে গু এই প্রশ্ন করিবে। পরে কুরুষ এইরূপ অনুজ্ঞাত হইয়া অগ্নিতে হোম করিবে। নির্গ্রিকগণ পিতৃহস্তে পবিত্র দান করিয়া অগ্নয়ে কব্য বাহনায় স্বাহা এই বলিয়া আহতি প্রদান পূর্বক দোমায় পিতৃমতে যুদা-য়াঙ্গিরদে এই মন্ত্রদয় উচ্চারণ করিবে। অন্তর হতশেষ অন্ন পাত্রে প্রদান করিয়া---

পৃথিবীতে পাত্রং দ্যোঃ পিধানং ত্রাহ্মণমুথে অমৃতে অমৃতং জুহোমি স্বাহা। এই মন্ত্র উচ্চারণ করিবে।

ইহার পর ইদংবিষ্ণু: এই মন্ত্র জপ করিয়া অন্নে অদুষ্ঠ প্রদান করিবে। অপহতা মন্ত্র জপ করিয়া তিল বিকিরণ করিবে এবং জুম্মং এই মন্ত্র উচ্চারণ পূর্ব্বক গায়ত্রী জপ করিবে। অনন্তর দেবতাভ্য পিতৃভ্যান্চ মহাযোগীভা এবচ নমঃ মধায়ৈ স্বাহায়ে নিত্যমেব নমো নমঃ। এই মন্ত্র উচ্চারণ পূর্বক পিতৃলোককে তৃপ্ত জানিয়া, অন্ন বিকিরণ করিবে। এবং গায়ত্তী মন্ত্র পাঠ করিয়া এক একবার জল দিবে ও মধু মধু মন্ত্র জপ করিবে। তৃপ্তাংস্থ, এই প্রশ্ন করিলে, তৃপ্তাংস্ম এই প্রতিবচন বলিবে। শেষামের অকুক্তা গ্রহণ পূর্বক সমস্ত অন্ন লইয়া উদ্দিক্ত পাত্রে অবনেজন করিয়া বিস্তৃত কুশের উপরে তিনটা পিও দান করিবে। এবং তাহাতে উদক পূকাও অক্ষত দিবে।

অনন্তর অক-য্যোদক দান করিয়া, এইরূপ আশীঃ প্রার্থনা করিবে।

অংশারাঃ বিভরঃ সন্তু গোত্রনো বর্দ্ধতাং সদা।
দাতারো নোভি বর্দ্ধতাং বেদাঃ সন্ততি রেবচ ॥
আদ্ধাচ নোমা ব্যগ মন্ত দেয়ঞ্চ নোহস্তি, তি।
অন্ধঞ্চ নো বহুভবে দতিধীংশ্চ লভে মহি॥
যাচি তারশ্চ নঃসন্ত মাচ যাচিত্র কঞ্চন।

আশীঃ প্রার্থনার পর স্বধা বাচনীয় কুশ বিস্তৃত করিয়া, স্বধাং বাচয়িষ্যে এই প্রশ্ন করিলে, বাচ্যতাং এইরপ অমুজ্ঞাত হইয়া, ক্রমে পিতা, পিতামহ, প্রপিতামহ ও মাতামহাদির উদ্দেশে এইরপ স্বধা বাচন করিবে। স্বনন্তর পিত্যোপরি জল দিক্ষন করিয়া মুজ্জীরত পাত্র উত্তান পূর্বক ঘর্থাশক্তি দক্ষিণা দান করিবে। বিশ্বে দেবাং প্রীয়ন্তাং এই মন্ত্র বলিয়া ব্রাহ্মণগণকে প্রদক্ষিণ পূর্বক বাজে বাজে মন্ত্র বলিয়া বিশক্তন করিবে। একে ক্রিবে। বিশ্বদেবগণের আবাহন এবং অ্রান্তি হোম করিবে না। ভৃত্তিপ্রশ্নে, স্বদিতং বলিবে, প্রতিবচনে স্ব্যদিতং বলিতে হইবে। প্রতিবচনে অভিরম্যতাং বলিতে হইবে। প্রতিবচনে অভিরত্যের বলিবে।

বৎসরাস্তে অথবা বৎসরের মধ্যেই সপিণ্ডীকরণ করিতে হয়। সপিণ্ডীকরণে পিতৃপক্ষে
তিন এবং প্রেতপক্ষে একটী পাত্র,এই চারি পাত্রে
গন্ধ ও উদক স্থাপন করিবে। পরে যে সমানা,
মন্ত্রহয় পাঠ করিয়া পিতৃপাত্রে প্রেতপাত্র সিঞ্চন
করিবে এবং পূর্ববিৎ পিতৃপূর্বক পিণ্ড দানাদি
করিবে।

আভাদিয়িক প্রাদ্ধে প্রবিৎ সমস্ত অনুষ্ঠান করিবে। তৃপ্তিপ্রয়ে সম্পন্ধং গ প্রতিবচনে হুস-ম্পন্ধং বলিবে। নান্দীমুথ পিতৃগণকে দধি, অক্ষত এবং বদরাসি ঘারা পিশু দান করিবে। আবা হয়িষ্যে এবং বাচয়িষ্যে, এই প্রশ্নে প্রীয়ন্তাং প্রতি বচন বলিবে। পিতা, পিতামহ, প্রপিতামহ এবং মাতামহ, প্রমাতামহ, বৃদ্ধপ্রমাতামহ, ইহাঁদি-দিগকেই নান্দীমুথ পিতৃগণ কহে। এই শ্রাদ্ধে স্থাকার ঘোগ করিবে না এবং যুগ্ম ত্রাহ্মণ ভোজন করাইবে। প্রাম্য শুষধি ঘারা, কন্দমূল-ফল ঘারা, মৎস্থ এবং ছাগ, মেষ, মুগ ও পক্ষী প্রভৃতির মাংস ঘারা প্রাদ্ধ করিলে, পিতৃলোক বিশেষ তৃপ্রিলাভ করিয়া থাকেন।

কাম্য প্রাদ্ধের কর বলিব। প্রতিপদে করিলে বহুধন হয়। দিতীয়াতে করিলে, প্রেষ্ঠা দ্রীলাভ হয়। চৃত্তীতে ধর্ম কাম লাভ হয়। পঞ্চমীতে পুত্রলাভ হয়। ষষ্ঠীতে প্রেষ্ঠতা লাভ হয়। সপ্তমীতে কৃষিকাধ্যের মঙ্গল হয়। অউমীতে অর্থলাভ হয়। নক্ষীতে অব্য, দশ্মীতে বহু গো, একাদশীতে পরিবার, দাদশীতে ধন ধান্ত, ত্রেয়োলাত, এবং অ্যাবস্থাতে করিলে, দর্বাভীষ্ট লাভ হয়। থাকে।

मखवाशि मनातरण मृत्राः कालक्षरत नीरते ।

চক্রবাকাঃ শরদ্বীপে হং দাঃ দর্দি মানদে॥
তেপি জাতাঃ ক্রুকেত্রে ত্রাহ্মণা বেদপাবগাঃ॥
প্রাহ্মধানং যুয়ন্তেভ্যোহ বদীহত॥
শ্রাদ্ধাদিতে এই মন্ত্র পাঠ করিলে, শাদ্ধাদশ্র ত্রহ্মলোকদ হয়। প্রাদি এইরূপে
পিতৃপক্ষে এবং মাতামহ পক্ষে শাৃদ্ধ করিবে।

যে ব্যক্তি এই শাদ্ধকল্ল পাঠ করে, দে নিশ্চয় শাদ্ধকল লাভ করিয়া থাকে।

ভীর্থে গয়াদিতে এবং ময়ন্তরাদিতে শাদ্ধ করিলে, অক্ষয় কল হয়। অশ্বযুক্ শুক্ত নবমী, কার্ত্তিক মাদের ঘাদশী, মাঘ ও ভাদ্র মাদের তৃতীরা ফাল্কন মাদের অমাবস্থা, পৌষ মাদের একাদশী,আবাঢ় মাদের দশমী,মাঘ মাদের দশুমী, শাবণ মাদের ক্রুকান্টমী এবং ক্রৈছে, আবাঢ়, কার্ত্তিক, ফাল্কণ মাদের পূর্ণিমা অক্ষয়া বলিয়া কার্ত্তিত হইয়াছে। এই দকল তিথিতে গয়া, প্রয়াগ, গঙ্গা, কুরুক্তেত্র, নর্মদা, শ্রীপর্বতি, প্রভাদ, শালপ্রাম, বারাণদা, গোদাবরী এবং পুরুষোত্তম ক্ষেত্রে শাদ্ধ করিলে, অক্ষয় ফল লাভ হয়।

ইত্যাগ্রের আদিমহাপুরাণে আদ্ধকরনাম নবচ্যধিক-শত্তম অধ্যায় সমশ্ল :

একনবত্যধিকশতত্ম ভ্রায়।

অগ্নি কহিলেন, সম্প্রতি রন্ধ সকলের লকণ বলিব। বজ্ঞ, মরকত, পদ্মরাগ, মৌক্তিক, ইন্দ্র-নীল, মহানীল, বৈতুর্য্য, চক্রকান্ত, সূর্য্যকান্ত, ফটিক, পুলক, কর্কেতন, পুস্পরাগ, রাজপট্ট, রাজময়, সৌগদ্ধিক, গঞ্জ, শংশ, অক্ষময়, গোমেদ, রুধিরাক্ষ, ভল্লাতক, ধূলী, তুথক, দীস, পীলু, প্রবালক, গিরি বজ্ঞ, ভূজসমমণি, টিট্টিভ, পিণ্ড, ভামর, এবং উৎপল, রাজগণ জয়াদি কার্য্যে এই | সকল রত্ন স্থবর্ণ মন্ডিত করিয়া ধারণ করিবেন।

অন্তঃ প্রভা বিশিষ্ট, বিমল ও সুসংস্থান রত্ন ধারণ করা কর্ত্তব্য। নিম্প্রভ, মলিন, থণ্ড এবং স্থাকর রত্ন ধারণ করিবে না। লঘু, অভেদ্য, বট্ কোন, অর্কসদৃশ তেজোবিশিষ্ট বক্ত মণি। শুক পক্ষের ভায় হরিছণ্, স্নিগ্ধ, কান্তিমান্, বিমল, স্বর্ণ কান্তিনিভ সূক্ষ বিন্দুসকল ছারা পরিশোভিত মরকত মণি এবং স্থাটিকজ, রাগবন্ত, অতিনির্মণ প্ররাগ মণি, এই কয়টা অতি মঙ্গল জনক।

শুক্তিজাত, শংখোছৰ, নাগদন্ত ও নাগকুন্তোভিব,শুকর ও মংস্থজাত বিমলমুক্তা ফলই উৎকৃষ্ট। বেণু নাগভৰ এবং মেঘজ মুক্তাও শ্রেষ্ঠ মধ্যে পরি-গণিত। বৃত্তা, শুক্তা এবং স্বচ্ছতা, মুক্তার এই তিনগুণ।

ইন্দ্রনীল মণি, রজত এবং ক্ষীর সংযোগে অতিশয় শোভা বিশিষ্ট হয়। যে মণি স্বপ্রভায় প্রদীপ্ত হয়, তাহাই অমূল্য বলিয়া পরি কীর্ত্তিত হইয়াছে। নীলবর্ণ ও রক্তবর্ণ বৈদ্ধ্য মণিছারা উৎকৃষ্ট হার নির্মিত হইয়া থাকে।

ইত্যাথেমে আদিমহাপ্রাণে রড় পরীকানাম একনবতা ধিকশতভম অধ্যায় সমাপ্তঃ

দ্বিনবত্যধিকশতত্ব অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন। চামর, হেমদণ্ড এবং উৎকৃষ্ট ছত্র রাজাদিগের প্রশস্ত চিক্ষ। হংস, মযুর, শুক, কিম্বা বক পক্ষধারা ছত্র নির্মাণ করিবে, মিশ্র পক্ষ ধারা কখনও করিবে না। দণ্ড, তিন, চারি, পাঁচ, ছয়, সাত, অথবা অন্ত পর্বে হওয়া আব-শুক। সিংহাসন, ক্ষীর বৃক্ষ ধারা নির্মিত, পঞ্

দশ অসুলি উন্নত,তিহন্ত বিস্কৃত এরং স্বর্ণাদিয়ারা চিত্রিত হইবে। লোহ, শুঙ্গ এবং দারু এই ভিন প্রকার দ্রব্য দারা ধকুঃ নির্মাণ করিবে। চত্ত্য-হস্ত পরিমিত ধকুই প্রশস্ত। ধকুর মধ্যভাগে মৃতি গ্রহণের নিমিত্ত পরিক্ষত স্থান করিকে। কামিনী জা লভার ভাষা ভাষার উভয় কোটি ন্থদংযত করিবে। কুটিল, ফুটিভ এবং সচিত্ত ধতু প্রশন্ত নছে: স্বর্ণ, রক্ত, ডান্ত, কিয়া লোছ নিশ্বিতই হউক, আর চন্দন, বেতস, সাল, ধাবল কিমা ককুত তরু নির্মিত ই হউকে, শরৎ-কালে সংগৃহীত বংশ ছারা যে ধনু নির্মিত হয় जाहारे मर्द्यादक्षे। अंत्र भक्त श्रष्ट्र द्रभवनी छ. স্নায়ুল্লিফ তৈল গোত ক্লৱ-পুথে এবং - ত্ৰপত্ৰক হইবে। ত্রৈলোক্যমোহন খড়গমন্ত্র ছারা ধকু ও শরের পূজা করিতে হয়। যাত্রাকালে এবং অভিষেকাদিতে রাজাদিগের বাণ, ধকু এবং গুণের অর্চনাকরা নিতান্ত কর্ত্তব্য র রাজা এক বং-দরের করদারা অস্ত্র ও পতাকা**দি সংগ্রহ করি**-বেন ৷

কোন সময়ে পিতামহ ব্রহ্মা হ্রমেক্স শিশরে বর্গ গলাতটে যজ্ঞ করিতেছিলেন, তৎকালে তাঁহার যজ্ঞ বিশ্ব জন্মাইবার নিমিন্ত সহসা এক লোহময় দৈত্য উপদ্থিত হইল, পিতামহ দেই দৈত্যকে দর্শন করিয়া কিঞ্চিৎ চিন্তা করিবামাল যজ্ঞীয় আনি হইতে এক মহাবল পুরুষ উৎশন্ত হইল । বিশুপ্রমুখ দেবলণ আদিয়া জাঁহাকে প্রণম করিলেন । বিশু সেই দৈত্যকে অবলাকন মাত্র, রত্ত মুঠি নীলবর্ণ নক্ষক নামক খড়ল নিক্ষামিত করিয়া, দেবগণের সহিত্ত ভাহার প্রতি ধাবমান হইলেন । দৈত্য তৎক্ষণাৎ শতবাহবিশিষ্ট হইয়া গদাহারা দেবগণকে বিদ্যাবিত করিতে

লাপিল। বিকু দৈত্যের এই অত্যন্ত পরাক্রম
দর্শনে প্রতি হইলেন এবং বৃত্তুর্তমধ্যে সেই নন্দক
ধড়া বারা ভাষার শত বাত্ ছেদন করিয়া ভূতলে
পাতিত করিলেন। অনন্তর তাহার অস্থান্য অন্ন
নকল ছেদনপূর্বক বধ করিয়া এই বর প্রদান করিলেন যে, এই পবিত্র অন্ধ সকল ভূতলে অত্যের
নিমিত্র ব্যবহৃত হইবে।

দৈত্য দিব্য দেহ ধারণ করিয়া বিষ্ণুর পদতলে পতিত হইলে তিনি ভাহাকে দালোক্য প্রদান করিলেন। ত্রকাও হরির প্রদাদে নির্কিছে যজ্জ-কার্য্য সমাধা করিয়া বিষ্ণুর ভৃতিসাধন করিলেন। দেই সময় হইতে ভূষওলে লোহাত্রের ব্যবহার আরম্ভ ইইয়াছে।

একণে থড়া লকণ বলিতেছি, প্রবণ কর।
থট্টর দেশজাত থড়া দকল অতিশয় স্থান্য।
আর্ধিক দেশজ থড়া দকল বিলক্ষণ কায়চ্ছিদ
এবং স্থানিক দেশোম্ভব থড়া দমধিক দৃঢ়
হয়। অলদেশ জাত থড়া অতিশয় তীক্ষ হয়
কিন্তু বল্ধ লোভাত থড়া তীক্ষ এবং চ্ছেদ্দহ
উভয় ধর্মাক্রান্ত। অর্দ্ধণত অঙ্গুলি পরিমিত
থড়াই প্রেচি বলিয়া প্রকীর্তিত হইয়াছে। ইহার
অর্দ্ধ পরিমিত ইইলে মধ্যম। উহার ন্যুন পরিমিত থড়া ধারণ করিবে না।

বে থড়গ দীর্ষ এবং যে থড়েগর শব্দ সুমধ্র কিছিনী শব্দ সদৃশ, সেই থড়গ ধারণ করাই প্রশাস্ত । পদ্ম পলাশাস্ত্র, মণ্ডলাস্ত্র করবীর দলাস্ত্র এবং গন্ধণ প্রভা বিশিষ্ট থড়গই স্থপ্রশস্ত বলিয়া প্রভিহিত হইয়াছে। কাকোলৃক বর্ণ থড়গ ক্ষতি বিষম তাহা ধারণ করা কর্ত্তব্য নহে। থড়েগ দর্পবিং মুখ দর্শন করিবে না। এবং উচিছ্টী মুখে স্পর্শ করিবে না।

ত্রিনবত্যধিকশততম অধ্যায়।

শ্বী কহিলেন,যদি পিতা শ্বাং বিভাগ করিয়া দেন,তাহা হইলে পুত্রদিগকে ইচ্ছা শহুসারে ভাগ দিতে পারেন। ইচ্ছা হইলে জ্যেষ্ঠ পুত্রকে শ্রেষ্ঠ ভাগ দিতে পারেন ইচ্ছা হইলে সকলকে সমাংস ভাগীও করিতে পারেন। যদি পুত্রদিগকে সমাংস দেন, তাহা হইলে পত্নীকেও সমাংসিকা করা কর্ত্তব্য। যাহাদিগকে ভর্তা কিস্বা শশুর কোন ক্রীধন দেন নাই, ভর্তা ইচ্ছা করিলে তাহাদিগকে ন্যুভাধিক দিতে পারেন।

পৈতামহ ধনে এবং ঋণে পুত্রগণ পিতার
দহিত তুল্যাংশভাগী, পিতৃদ্রব্য বিনষ্ট না করিয়া
স্বাং যাহা কিছু অর্জন করিয়াছেন, অথবা যাহা
মিত্রলন্ধ ও বৈবাহিক লব্ধ, দায়াদেরা ভাহার
অংশ ভাগী নহেন। পৈতামহ ধন, এক পিতৃক
পুত্রদিগের সমভাপ হইবে। কিন্তু অনেক পিতৃক
হইলে পিতা হইতে ভাগ কল্পনা হইবে।

পিতামহোপাত, ভূমি নিবন্ধ এবং অন্ত দ্রব্যে পিতাপুত্রের তুলা অধিকার। ক্রনাগত ধনে অথবা অপহত ধন উদ্ধার করিলে এবং বিদ্যাবলে উপার্চ্ছন করিলে দায়াদদিগকে তাহার ভাগ দিবে না। পিতামাতা স্নেহ পূর্বক যাহাকে যাহা দান কবেন, তাহা তাহারই ধন।

পিতার উপরমে ভাতৃ কর্তৃক বিভাগে মাতাও এক সমাংস পাইবেন। যে সকল ভাতার পূর্বে বিবাহাদি সংক্ষার হইরাছে, ভাঁহারা সাধারণ ধন-ছারা অসংস্কৃত ভাতাদিগের সংস্কার বিধান করি-বেন এবং নিজ নিজ ভাগের চতুর্ঘাংশ দিয়া অবি-বাহিতা ভগিণীদিগের বিবাহ দিবেন।

যদি কোন সাধারণ দম্পত্তি আত্গণ মধ্যে

কেহ অপহরণ করিয়া থাকে এবং বিভাগ কালে তাহা প্রকাশ হয়, তাহা হইলে উক্তধন সকলে সমাংস করিয়া লইবে।

অপুত্র ব্যক্তি যদি নিযুক্ত হইরা পরক্ষেত্রে সন্তানোৎপাদন করে, তাহা হইলে সেই পুত্র ধর্মতঃ উভয় পিতারই পিওদাতা এবং ঋক্থভাগী হইবে।

ধর্মপত্নীতে স্বয়ং যে পুত্র উৎপন্ন করে, সেই পুত্রকে উরদ কছে, পুত্রিকাপুত্রও তাহার দমান। সগোত্ত অথবা ভিন্নগোত্ত পুরুষ ছারা নিজক্ষেত্রে যে পুত্র জন্মে, তাহাকে কেত্রজ কছে। গৃহে প্রচহরভাবে উৎপন্ন পুত্রকে গৃঢ়জ পুত্র কহে। ক্তুকাবস্থায় যে পুত্র জ্বমে, তাথাকে কানীন কছে। কানীনপুত্র মাতামছের পুত্র বলিয়া পরি-গণিত হইয়া থাকে ৷ কি ক্ষতযোনি, কি অ্কত যোনি যে জ্রীর পুনর্বার বিবাহদংস্কার হয়, তাহাকে পুনভু বলে। পুনভুর গর্ভজাত পুত্র পোনর্ভব বলিয়া অভিহিত হইয়াছে। পিতা মাতা যাহাকে দান করেন, দেই পুত্র গৃহীতার দতক পুত্র বলিয়া অভিহিত হইয়াছে। পিতামাতাকর্ত্ত্ক বিক্রীত যে পুত্র দেই ক্রেভার ক্রীতপুত্র। গুণ-নোষ বিচক্ষণ, পুত্রগুণযুক্ত যে স্বজাতীয় ব্যক্তিকে পুত্র করে, দেই পুত্র কৃত্তিমপুত্র বলিয়া অভিহিত। যে স্বয়ং স্বীকৃত হইয়া অন্যের পুত্র হয়, ভাহাকে मर्शाष्क्र करह । পরিভ্যক্তপুত্তকে গ্রহণ করিলে সেই পুত্র অপবিদ্ধ বলিয়া পরিকীর্তিত হয়।

শাঁস্তে এই একাদশপ্রকার পুত্র নির্দ্ধিট হই-য়াছে, ইহাদের পূর্ব্ব, পূর্বের অভাব হইলে, ক্রমশঃ পিণ্ডাধিকারী এবং ধনভাগী হইয়া থাকে। স্বজা-তীয় পুত্র বিষয়েই এই বিধিবলিলাম।

চাতুর্বণ্য পুত্রদিগের বিভাগে, সমুদার ধন দশ

অংশ করিয়। ব্রাহ্মণীপুত্র চারি অংশ, ক্ষুত্রিয়াপুত্র তিন অংশ, বৈশ্যাপুত্র মৃই অংশ এবং পুত্রাপুত্র এক অংশ লইবেক। দাসী পুত্র ও কামভঃ সমাংসঞ্জাসী হইবে।

অপুত্র মৃতব্যক্তির ধনে, প্রথমে পত্নী, ভাহার অভাব হইলে হিছেল, ভাহার অভাব হইলে পিতাতাহার অভাবে মাতা, তাহার অভাবে জাতা,
তাহার অভাবে লাভূপুত্র, তাহার অভাবে সক্ল্য
তাহার অভাবে বন্ধু, ভাহার অভাবে শিষ্য, ভাহার
অভাবে সহাধ্যায়ী, তাহার অভাবে রাজা অধিকারা হইয়া থাকেন। সকল বর্ণেই অপুত্র মৃতব্যক্তির ধণাধিকার এইরূপ জানিবে।

পিত্রাদির সহিত বিভাগের পর ভাতাগণ একমত হইয়া যদি এইরপ নিয়ম করেন যে, এই
সাধারণ ধনেআমাদিগের সকলের সমান সন্থ।
যাহা ভোমার ধন, তাহা আমার ধন, যাহা আমার
ধন, তাহা ভোমার ধন; কোন বিশেষ নাই।
এইরপ ধনকেই সংস্টে ধন কহে। সংস্টে ধন
বিভাগে সকলের সমাংশ হইবে। সংস্টে ভাত্গণের পুত্র জন্মিলে, সকলে তাহাকে অংশ দিবে
এবং কেহ মরিলে সকলে তাহার অংশ গ্রহণ
করিবে।

বানপ্রন্থ যতি এবং ব্রহ্মচারীদিলোর ধনে, ক্রমানুসারে আচার্য্য, সংশিব্য <mark>এবং সভীর্</mark>থের অধিকার অভিহিত হইয়াছে।

পতিত, পতিতের পুত্র, ক্লীব, পঙ্গু, উন্মন্ত, জড় অন্ধ এবং অচিকিৎন্য রোগযুক্ত ভ্রান্তাদিগকে অংশ দিবে না, কিন্তু অমবক্রাদি দারা প্রতিপালন করিবে। ইহাদিগের ঔরদ, অথবা ক্ষেত্রজাদি পুত্র যদি নির্দোধ হয়, তাহা হইলে সে অংশভাগী হইবে এবং ক্সাদিগকে যত দিন পাত্রসাৎ করা না হয়, ততদিন ভরণ পোষণ করিতে হইবে।
আর ইহাদিগের পুত্রহীনা স্ত্রীগণ যদি সচ্চরিত্রা
হয়, তাহা হইলে তাহাদিগকে যতুপূর্বক প্রতিপালন করিবে। কিন্তু যদি ব্যভিচারিণী অথবা
প্রতিক্লা হয়, তাহা হইলে নির্বাদিতা করিবে।

স্ত্রাগণ পিতা, মাতা, পতি এবং জাতার নিকট হইতে যাহা প্রাপ্ত হয়। বিবাহকালে যাহা প্রাপ্ত হয় এবং পতি দিতীয়বার বিবাহ করিলে, তাহার ছৃষ্টির নিমিত যাহা দান করেন, তাহা-কেই স্ত্রীধন কহে।

অপ্রক্ষা স্ত্রী মরিলে তাহার বন্ধুদত যোতৃক প্রাপ্ত এবং অস্থাধেয় অর্থাৎ বিবাহের পর পিতৃ-কুল অথবা মাতৃকুল হইতে প্রাপ্ত, এই সকল স্ত্রীধন বান্ধবেরা প্রাপ্ত হইবেন। আক্ষা, দৈব, আর্থ এবং গান্ধর্বে এই চারিপ্রকার বিধানে বিবাহিতা স্ত্রীর যাবতীয় স্ত্রীধন ভর্তা প্রাপ্ত হইবেন। কিন্তু আহ্রাদিবিধানে বিবাহিতা স্ত্রীর ধনে নাতা পিতার অধিকার হইয়া থাকে।

চুর্ভিক উপস্থিত হইলে, কিস্বা কোন ধাম কাষ্য উপলক্ষে, অথবা অতিশয় পীড়া উপস্থিত হইলে কিস্বা নিতান্ত অনাটন ঘটিলে, ভর্তা জ্রার নিকট হইতে যে ধন গ্রহণ করেন, তাহা প্রত্য প্রাক্ষিক করিলে প্রত্যবায়ভাগী হইবেন না।

দ্বিতীয় পকে বিবাহিতা স্ত্রীকে পূর্ববপরিণীতা স্ত্রীর সমান যৌতুক দেওয়া কর্ত্তব্য। যে স্ত্রীকে স্ত্রীধন দেওয়া হয় নাই তাহাকে অর্দ্ধাংশভাগিনা করা উচিত।

ই জ্যাপেরে আদিমহাপ্রাণে ধনবিভাগনাম (এনবঙ) ধিকশভতম অধ্যার সমাপু।

চতুৰবত্যধিকশতত্য অধ্যায়।

ঈশ্বর কহিলেন, ধর্মার্থাদি জয়প্রদা শ্রীমতী কুজ্জিকা পূজার বিষয় বলিব। পরিবারযুক্ত হইয়া এই মূল মন্ত্র দারা পূজা করিবে।

উং প্রং ফ্রীং ক্রীং কুজিকে হ্রাং ওং ও ন ণ মে অঘারমুখী ব্রাং ছাং চ্ছ্রীং কিলিকিলি ক্রীং বিচে খ্যাং শ্রীং ক্রোং ওং হ্রীং ক্রং বড্ড্র্ কুজিনি স্ত্রীং ক্রোং ক্রাং ক্রোং ক্রাং ক্রোং ক্রাং ক্রাং জাং বচ্চে ও ক ন ণ মে অঘোবমুখি চ্হাং চ্হাং বিচে ও কিলিকিলি। অনন্তর করাঙ্গন্যাস করিয়া বামা, চ্যেঠা ও রোজী, এই তিন সন্ধ্যায় উপাসনা করিবে।

কং খং গং ঘণ ঙ' আং অঙ্কুষ্ঠাভ্যাম্ নমঃ।
ই' চ' ছ' জা বাং এগ ঈ' চৰ্জ্জনীভ্যাং স্বাহা।
উ' ট' ঠ' ড' চ' গং উ' মধ্যভ্যাং বৌষট্। এং
ত থ' দং ধং ন' এং অণামিকাভ্যাং হ'। ওং পং
কং ব' ভং মং ঔং কনিষ্ঠাভ্যাং বৌষট্। আং ষং
রং ল' বং শং ষং সং হং লং কং আঃ করতল
পৃষ্ঠাভ্যাং অভ্যায় কট্। এবং ছদ্যাদিরু

অনন্তর কুলবাদী শি বিদ্নাহে মহাকালিভি
ধীমহি। ভন্নকৌলি প্রাচোদয়াৎ। এই মন্ত্র উচ্চারণ করিবে। অনন্তর পাদ্যাদি ষোড়শোপচারে
যথাবিধি পূজা করিয়া এইরূপ ন্তর করিবে;—
দেবি! ভূমি চন্দ্র সূর্য্যক্রপ নয়ন ছায়া নিখল জগভের সূক্ষতম স্থান পর্যান্ত অবলোকন করিভেছ;
ভোমার নিকট কোন বিষয় গোপন থাকে না।
ভূমি জীবগণের অন্তরে অন্তর্মান্তারূপে নিয়ত অবশ্বিত আছ: মনে মনে কোন কয়না করিলেও

তোমার অপরিজ্ঞাত থাকে না। ভূমি একাণী, मारहनी, टकीमाती, टिक्स्वी, वाताशी, मारहस्ती, চামুণ্ডা এবং চণ্ডিকা। আমি তোমায় নমকার অনস্তর আবরণ দেবতাদিগের পূজা क्रिया, विलमान क्रिट्रव।

দ্রীং থং স্বং ভং দোং বটুকায় অরু স্বরু স্বর্যং পুজ্পং ধূপং দীপং গন্ধং বলিং পূজাং গৃহ্ধ গৃহু নম-স্তাং। ওং খাং ব্রীং ব্রং কেং কেত্রপালায়, খব-তর অবতর মহাকপিল জ্রটা ভার-ভাষর ত্রিনেত্র জ্বালামুখ এছেহি গদ্ধপুষ্প বলিপূজাং গৃহু গৃহু थः भः ७१ कः ७१ नः ७९ मश्राज्यामताधिपाउदा স্বাহা।

বলিশেষে হোমাদি করিয়া পূজা সমাপন করিবে।

অগ্নি কহিলেন, এক্ষণে বাস্তলক্ষণ এবং বিপ্রা-দির ভূমির বিষয় বলিব। বাদোপযুক্ত ভূমিতে খেত, রক্ত, পীত এবং কৃষ্ণ এই চারি বর্ণ দারা মণ্ডল অন্ধিত করিয়া, তথায় পূজার আয়োজন যুক্ত ভোজ্যদ্রব্য আহরণ করিয়া ত্রাহ্মণগণকে আহ্বান করিবে। অমন্তর কুশ, কাশ, শর এবং তুৰ্বাদি ছারা তাঁহাদিগের অর্চনা পূৰ্বক খাত খনন করিয়া দেই ভূমি নিঃশল্যা করিবে।

পরে চতুঃষষ্টিটী স্থান নির্দেশ করিয়া গৃহ-স্বামী মধ্য চতুষ্পদে ভ্রহ্মার অর্চনা করিবে। পূর্ব্ব-मिटक व्यर्धामा, मिक्करण विवस्तान, शन्करम शिख, উত্তরে মহীধর, বহ্নিকোণে আপবৎস, নৈখতে সাবিত্র, বায়ুকোণে রুক্তব্যাধি এবং ঈশানকোণে স্বিতার পূজা করিবে। অস্থায় পদে মহেন্দ্র, রবিসত্য, ভৃঞ, গৃহকত অর্ধ্যমগ্রতি, গদ্ধর্বগণ, পুপ্শে অহুর, বরুণ, যক্ষ, ভল্লাট, সোম, অদিতি । দেচন করিবে। বিড্রু ও গুডসংযুক্ত শীতল জল

ধনদ এবং নাগ, প্রভৃতিকে স্টেরিকে করিবে।

পর্জন্য, করগ্রহ, গগন, পবন, ধনেশ্বর, মুগ-হু 🖺 বক, রোগ, পুষ্পবিত্তদ, নাগপৈতৃক, গদ্ধর্ম, নাগরাজ, যক্ষারোগ, ভলাট শনি, অদিতি, কুবের, শক্ত, সূর্য্য, স্থাীব প্রভৃতি দেবগণকে যথোক্ত মন্ত্রদারা অর্চনা করিয়া শিলা অথবা ইউকাদি বিনাাস করিবে।

অতঃপর প্রার্থনা করিবে হে, নদ্দে ! বাশিছে ! আমাকে ধনপুত্রের দহিত আনন্দিত কর ৷ হে জয়ে! ভার্গবদায়াদে! আমার প্রজাদিগের জয় পূর্ণে! अक्रित्रनाशांति! বিধান হে আমাকে পূর্ণকাম কর। হে ভদ্রে কাশ্যপদায়াদে! আমার ভদ্রমতি বিধান কর : রুচিরে ! এই স্থানে ক্রীড়া কর। ভুমি সর্ব্ববীজ এবং সর্ব্বরত্ব ও সর্ব্ব-বনৌষধির যোনি, হে মহীময়ে ! প্রজাপতি স্ততে ! হভগে হুত্রতে ভবভূতিকরে ! ডুমি আমার গুছে আনন্দিতা হও।

হে অব্যক্ষে! অক্তে! পূর্ণে! অঙ্গীরদ তনয়ে ইউকে আমি ভোমাকে প্রতিষ্ঠা করিতেছি. আমাকে ইফ প্রদান কর। **মনুষ্য, ধন, হন্তী**, অখ ও পশু বৃদ্ধিকরী হও।

গৃহপ্রবেশে শিলান্যাদ করা কর্ত্ব্য। গৃহের উত্তর দিকে প্লক্ষ হৃক, পূর্ববিদিকে বটবুক্ক, দক্ষিণ দিকে উত্তর বৃক্ষ, পশ্চিমে, অর্থ বৃক্ষ এবং বাম-দিকে উদ্যান থাকিলে তথায় বাদ অতিশয় শুভ-ভানক।

গ্রীম সময়ে দায়ং ও প্রাতঃকালে, শীতকালে দিনশেষে এবং বর্ষারাত্তে ভূমি দকল ভক্ষতা প্রাপ্ত হয়, অতএব দেই সময়ে রোপিত তরুতে জল-

সেচন করিলে স্কুক্ত সকল অভিশয় বর্দ্ধিত হয়।
কলনাশ উপস্থিত হইলে, মান, মূলা, ভিল এবং
যবমুক্ত জল দ্বারা সেচন করিলে, বৃক্ষ সকল বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয়, উৎসেক দ্বারা সকল বৃক্ষেরই কল
প্রুপা বৃদ্ধি ইয়া থাকে। শীতল মৎস্টোদক দ্বারা
আত্রক্ষ সিঞ্চন করা কর্ত্তব্য। অশোক বৃক্ষ কামিনী পদতাড়নে পৃষ্পিত হয়। বর্জ্বর এবং
নারিকেলাদি বৃক্ষ লবণজলে সেচন করিলে অভিশয় বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয়। সকল বৃক্ষের দোহদকালে
বিড়ক্ষ মৎস্থ এবং মাংসোদক দ্বারা সেচন প্রশাস্ত ।

পঞ্চনবত্যধিকশত্ত্য অধ্যায়।

इंड्याखरम व्यानिमशाश्वार गाया मिनीम हर्ज्ज वावडा

ধিকশতভ্য অধ্যায় স্থাপ্ত।

অগ্নি কহিলেন, হে বিজ ! চতুম্পাদ ধনুর্কেদ এবং রথ, নাগ, অশ্ব, পত্তী এবং যোধ, এই পঞ্চবিধ ধলের বিষয় বলিতেছি, শ্রাবণ কর।

সংগ্রামে, যন্ত্রমূক, পাণিমুক্ত, মুক্তসন্ধারিত, অনুক্ত এবং বাহ্যুদ্ধ এই পঞ্চধা প্রয়োগ অভিহিত হইয়াছে। এই সকল প্রয়োগ আবার শস্ত্র ও অস্ত্রভেদে চুইপ্রকার, যুদ্ধ ও ঋজু এবং মায়াভেদে চুই প্রকার।

কেপণী ও চাপ্যন্ত হারা যাহা প্রয়োগ করা যায়, তাহ্তিক যন্ত্রমুক্ত কহে। শিলা এবং তোমন রাদি নিক্ষেপের নাম পাণিমুক্ত। যাহা প্রয়োগ করিয়া প্রতিসংহার করা যায়, তাহাকে মুক্ত-সন্ধারিত কহে। ধড়গাদি প্রয়োগকে অমুক্ত কহে এবং আয়ুধ্বিহীন ইইয়া দল্যমুদ্ধকে নিযুদ্ধ অথবা বাজ্যুদ্ধ কহে। যুদ্ধাভিলাযীগণ জিভশ্রম হইয়া যুদ্ধবিষয়ে এই সকল নিয়োগ করিবে।

ধকুর্বেদে, ত্রাক্ষণ, বর্ণভয়ের শুরু বলিয়া অভি-হিত হইয়াছেন। পুলেরও যুদ্ধে অধিকার আছে। ভাহারা দেশস্থ রাজাদিগের নিকট শিক্ষা করিয়া যুদ্ধ সময়ে ভাঁহাদিগের সহায়তা করিবে।

যোধদিগের অঙ্গৃষ্ঠ গুল্ফ পাশি এবং অজিব্ ইদৃঢ় হওয়া আবিশাক। যুদ্ধ শিক্ষাকালে সম পদ. বিভব্তি পরিমিত স্থানের মধ্যে জানুদ্বয় স্তর। করিয়া অবস্থিতি করাকে বৈশাধ বলে, চতুর্বিব-ভত্তি বিচ্ছিন স্থানে জানুধয় হংসপংক্তির স্থায় করিয়া অবস্থানকৈ মণ্ডল কহে। পঞ্বিতস্তী বিস্তু স্থানে হলাকারে দক্ষিণজামু এবং উরু স্তব্ধ । করিয়া অবস্থিতি করার নাম আলীচু এবং তাহার বিপর্যায়কে প্রত্যালীত কছে। বামপদ তির্যাগ ভূত এবং দক্ষিণপদ ঋজু করিয়া পঞ্চাঙ্গুলাস্তারে গুল্ফ ও পান্ধিগ্রাহে ভারার্পণ করিয়া অবস্থিতি, বামজামু ঋজু এবং দক্ষিণজামু প্রসারিত করিয়া অথবাদফিণজানু কুজা এবং নিশ্চল করিয়া অব-স্থিতি, দিহস্ত পরিমিত স্থানে উভয় চরণ উলান করিয়া অবস্থিতি প্রভৃতি বিবিধ আসনের বিষয় অভিহিত হইয়াছে। হিজপণ স্বতিক প্রথমে ধনুকে প্রণাম করিবে। পরে বাম করে: ধনু এবং দক্ষিণ করে বাণ ধারণ করিয়া, ধন্র কটি-८नम घरस স্থাপনপূর্বক তাহাতে গুণযোগ করিধে।

অনন্তর ধনুর কটিদেশ এবং বাবের কলদেশ অধ্য করিয়া ভূতলে স্থাপন করিবে এবং পরক্ষণেই ভূজধর কুজ করিয়া ভাষা উত্তোলন করিবে। পুঝ্রেশে পদ্রবিশিক বাশই উৎক্ষী বলিয়া উক্ত ইইরছে। ধনুংকোটির বাদশ অসুল ব্যবধানে জ্যা বিন্যাস করা কর্তব্য। নাভিদেশে ধনু এবং নিত্রদেশে ভূণ সংস্থাপন করিবে। বাণ প্রয়োগ কালে হত্তময় উমত করিয়া বামহতে মৃষ্টিবন্ধনপূর্বেক ধন্প্রহণ এবং দক্ষিণহন্তে শর লইয়া কর্ণ
এবং অক্ষির মধ্যস্থলে শরপুত্ম রক্ষণ ও শীত্র দক্ষিণ
হস্ত প্রসারণপূর্বেক লক্ষ্যলে শরক্ষেপ করিবে।
শরক্ষেপ কালে কৃজ, অভিবেন্তিত এবং চঞ্চল
হইবে না। সৈহাত্তগোপেত হইমা দণ্ডবহু অবস্থিতি করা কর্তব্য। ক্ষম শ্রস্ত, প্রীকা নিশ্চল,
মন্তক ময়ুরাঞ্চিক, ললাট নাসিকা ও বজ্তের অংশ
সকল অশ্বহু করিয়া, অবস্থান করা কর্তব্য।
চিবুক এবং অংশের মধ্যভাগে ত্রিঅঙ্গুলি স্থান ব্যব্ধান থাকা আবশ্যক।

শিক্ষাকালে ক্রম্শঃ, প্রথমে ত্রিমস্থলি ব্যবধান দিতায়ে দ্বিস্থলি এবং তৃতীয়ে এক অস্থলিমাত্র ব্যবধান রাখিতে হয়। ভর্জনী এবং অস্থ্ঠ স্থারা সায়ক ধারণ কবিয়া ক্রমে তাহাতে অনামিকা এবং মধ্যাঙ্গলি যোগপুর্বক এরূপ বেগে আকর্ষণ করিবে যে, ধকুর মধ্যভাগ যেন বাণফলকের নিম্ন-ভাগ স্পর্শ করে। এইরূপে উপক্রম করিয়া, ষধা-বিধানে দৃষ্টিনৈপুণ্য এবং লক্ষ্যেন শিক্ষা করিবে।

ধনুঃশান্তবিশারদর্গণ বলিখাছেন যে, কোন
লক্ষ বিদ্ধ করিবার কালে কুর্পরভাগ অধ করিয়া
আকর্ণ আকর্ষণপূর্বক লক্ষ স্থানে বাণক্ষেপ করাই
প্রকৃষ্ট। ঘদেশ অঙ্গুলি পরিমিত সায়ক উৎকৃষ্ট
মধ্যে পরিগণিত। একাদশ অঙ্গুলি মধ্যম এবং
দশমৃষ্টিপরিমাণ নিকৃষ্ট বলিয়া অভিহিত স্ট্রা
থাকে।

ধকুর পরিমাণ, চকুইন্ত উৎকৃষ্ট, সার্দ্ধন্তিহন্ত মধ্যম এবং ত্রিহন্ত নিকৃষ্ট বলিয়া ক্ষেতিহিত। পদাতি, অন্ধ, দ্বথ এবং গ্রামিও উত্তমান্য মধ্যম এই তিন শ্রেণীতে বিভক্ত হইয়া থাকে।

ষয়বত্যধিকশতভা । ।

অগ্নি কছিলেন, গদা, আরমুধ এবং ধকু আ্নিধেনিত করিয়া ষজ্ঞভূমিতে রক্ষা করিরে। যজ্ঞ সমাধা ইইলে সাবধানপূর্বক বানদংশন করা কর্ত্তব্য । দক্ষিণ কক্ষেত্রদৃঢ়রূপে তুণ বন্ধন এবং বিবিধ শরদং গ্রহপূর্বক তাহাতে সংস্থাপন ক-রিবে। তুণ হইতে শর উদ্ধার করিতে ইইলে দক্ষিণ হস্ত ঘারা করা কর্তব্য । ধকু বাম হস্ত ঘারাই ধারণ করিবে।

অবিষধ্মতি হইয়া গুণে বাণপুষা নিবেশ করিবে। বাণপ্রয়োগ বিধানবিৎ ব্যক্তিগণ লক্ষ-গত চিত্ত হইয়া লক্ষ চেছদনার্থে দক্ষিণ করে ধোড়-শাঙ্গুল, চক্দকাক্ষ বাণধারণপূর্বক কর্ণান্ত পর্যন্ত আকর্ষণ করিয়া দক্ষান করিয়া থাকেন।

শিক্ষার্থীগণ প্রথমে চতুরত্র স্থানে বেধ্য নির্দ্ধানিত করিয়া পুনঃ পুনঃ তাহার উপর বাণ নিক্ষেপ পূর্বক অভ্যাস করিবে। নির্ন্ধ, উন্নত, তীক্ষ্ণ এবং দৃঢ় এই চারিপ্রকার বেধ্য নিদ্দিউ ইইয়াছে। তত্মধ্যে প্রিশ্ধ এবং তীক্ষ্ণ তুষ্কর আর উন্নত এবং দৃঢ় সহজ বেধ্য মধ্যে পরিগণিত। মন্তকায়াতন মধ্যান্থত বেধা, চিত্র তুকর বলিয়া বিখ্যাত। এই সকল বিধান পর্য্যালোচনা করিয়া বাণপ্রয়োগ করিলে জিতলক হয়। যদি বেধ্য ভ্রমনান, চঞ্চল এবং জিন্তুগ হয়,তাহা ইইলে পত্তিপত্রমুক্ত মুদ্ধ, বাণ সংযোগ করিয়া এককালে সমন্তাহ নিক্ষেপপূর্বকি তাহাকে চেছদন করিবে। কর্ম্মধ্যোগবিধানক্ষ্র ব্যক্তিপ্র বিশেষরূপে অবগত ইয়া এই বিধি জাচরণ করিবেন। যোগীগণ চক্ষ্ম আরা ধর্মুর্কেন্দ দর্শন এবং মনে ধন্মুর্কেন্দের বিষয় চিন্তা করিয়া থাকেন।

সপ্তনবত্যধিকশতত্য অধ্যায়।

অয়ি কহিলেন, ক্লিডহন্ত, জিমতি এবং দৃষ্টি ও লক্ষ সাধন বিষয়ে সিদ্ধি লাভ করিয়া পরে বাহনে আরোহণ করিবে। পাশাস্ত্রের পরিমাণ দশ হন্ত তাহার কর এবং মুখ রক্ত হওয়া আবশ্যক। কার্পাস, মুঞ্জ, অথবা ভগ্মস্থায়ু দ্বারা গুণ নির্মাণ করিবে। বাম হন্ত দ্বারা নিক্ষেপ্তব্য সংগ্রহ করিয়া, দক্ষিণ হন্ত দ্বারা উদ্ধার করিয়া, ক্গুলাকারে মন্তকের উপর একবার ঘুরাইয়া বর্ম্মধারী পুরুষের প্রতি নিক্ষেপ করিবে। স্থাশিক্ষিত ব্যক্তিগণ বল্পিত, প্লুত এবং প্রব্রজিতের উপর সমযোগ বিধান করিয়া পাশপ্রয়োগ করিবে।

খড়গ কটিদেশে বামভাগে বিল্পিত করিয়া দৃঢ় রূপে বন্ধন করিবে এবং বামহস্তে কোষ ধারণ করিয়া দক্ষিণ হস্ত ছারা নিক্ষাশিত করিবে। ধনুর্বেদে ষষ্ঠ অঙ্গুলি উন্ধত এবং সপ্তহস্ত সম্চিত্রত লোহশলাকা ও বিবিধ বর্ম ধারণের বিষয় অভি-হিত হইয়াছে। যেরূপে ধর্ম এবং শলাকা ভেদ করিতে পারা বায় তাহা বলিতেছি, প্রবণ কর। তুণ এবং চর্মানদাঙ্গ হইয়া উভয় হস্তে বিশাললগুড় গ্রহণ পূর্বক সবলে লোহবর্মোপরি আঘাত ক-রিলে অক্রেশে তাহার বধে সিদ্ধি লাভ করিতে পারিবে।

ইত্যাশ্বের আদিনহাপ্তাবে ধহুরেদনাম সপ্তনবত্য-বিকশততম অধ্যায় স্মাপ্ত।

অফীনবত্যধিকশতত্ম অধ্যার।

অগ্নি কহিলেন,রণে থড়গ ও চর্মা ধারণ, ছাত্রিংশং প্রকারে বিভক্ত। ভাল্ড, উন্তান্ত, আবিদ্ধ, আপ্লাড, বিপ্লাড, হত, সম্পাত, সমুদীশ, শ্যেনপাত, আকুল, উন্তাত, অবধৃত, সবা, দক্ষিণ, অনালক্ষিত, বিস্ফোট, করালেন্দ্র, মহাসখ, বিকরাল, নিপাত, বিভীষণ, ভয়ানক, সমগ্র, অর্জ, তৃতীয়াংশ, পাদ, পাদার্জ, বারিজ, প্রভ্যালীচ, আলীচ, বরাহ এবং লুলিত।

পাশ ধারণ বিষয়ে একাদশ প্রকার ভেদ আছে, যথা পরাবৃত্ত, অপাবৃত্ত, গৃহীত, লঘুদজ্ঞিত, উদ্ধিক্তি, অধঃক্ষিপ্ত, দন্ধারিত, বিধারিত, শ্যেন-পাত, গজপাত এবং গ্রাহগ্রাহ্য।

পাশ ব্যস্ত ছইলে, মহাত্মা ঋষিগণ পাঁচটি কর্মা নির্দেশ করিয়াছেন। যথা, ঋজু, আয়ত, বিশাল, এবং তির্যাক্ড্রামিত। চ্ছেদন, ভেদন, পাত, ভ্রমণ, শয়ন, বিকর্তন এবং কর্ত্তন, এই সাতটি চক্রকর্ম। আক্ষোটন, ক্ষেড়ন, ভেদ এবং ত্রাসান্দোনিতক, এই চারিটি শূলকর্ম।

দৃষ্টিঘাত, ভুজাঘাত, পার্ম্বাত, ঋজু, পক্ষ এবং ইযুপাতন এই ছয়টি ঘাতদজ্ঞিত তোমর কর্ম বলিয়া প্রকীর্ত্তিত হইয়াছে।

আহত, গোষ্ত্রপ্রভুত, কমলাদন, উদ্ধাণাত্র, নমিত, বামদক্ষিণ, আহত, পরাহত, পাদোদ্ত, অবলুত, হংসমর্দ এবং বিমর্দ্দ, এই কয়টী গদাকশ্ম বলিয়া অভিহিত ইইয়াছে।

করাল, অব্যাত, দংশোপপ্লুত, কিপ্তহন্ত, স্থিত, শৃষ্ণ, এই কয়টি প্রশ্বর কর্ম নির্দেশ করি-যাচেন।

তাড়ন, চেরুপন, ঘূর্ণন এবং প্রবনঘাতন, এই

কয়টী মুলারের কর্ম এবং সংজ্ঞান্ত, বিশ্রান্ত, গোবিদর্গ এবং স্মৃত্র্জর এই কয়টি ভিন্দিপাল এবং লগুড়ের কর্ম। অন্তঃ, মধ্য, পরাবৃত্ত এবং নিদেশান্ত, এই কয়টি বজ্ঞের এবং পটিদের কর্ম। হরণ, চেছদন, ঘাত, বলোদ্ধারণ, আয়ত, পাতন এবং ক্লোটন,এই কয়টি কূপাণ কর্ম বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে। আসন, রক্ষণ, ঘাত, বলোদ্ধরণ এবং আয়ত, এই কয়টিকে ক্ষেপণী এবং যস্ত্রের কর্মাবলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন।

সন্ত্যাগ, অবদংশ, বরাহোদ্ধতক, হস্তাবহন্ত, আলীন, একহস্তাবহস্ত দ্বিহস্ত বাত্পাশ, কটিরেচি-তোলাত, উরোললাট ঘাত, ভুজাবিধমন, করো-দ্ভত, বিমান, পাদাহতি, বিপাদিক, গাত্রদংশ্লেষণ, শান্ত, গাত্রবিপর্যয়, উর্জ্ঞহার, ঘাত, স্বাদক্ষিণে গোমূত্র, পারক, তারক, দণ্ড, করবীরন্ধম, আকুল, তির্য্যক্রন্ধ, অপমার্গ, ভীমবেগ, স্থদর্শন, সিংহা-ক্রান্ত, গজাক্রান্ত এবং গর্দভাক্রান্ত, এই গুলিকেও গদা এবং নিযুদ্ধ কর্ম বলিয়া জানিবে। বাহ-মূলের আকর্ষণ এবং বিকর্ষণ, গ্রীবাধি পরিবর্তন, স্থদা-রুণ পৃষ্ঠভঙ্গ, পর্যাদন, বিপর্যাদ্, পশুমার, অজা-বিক, পাদপ্রহার, আন্ফোট, কটিরেচিতক, গাত্রা-স্বন্ধগত, মহীব্যাজন, উরোললাট্ঘাত, বিস্পাফীকরণ, উদ্ধৃত, অবধৃত, তির্যক্মার্গগত, গজকল, অবকেপ, অপরাম্মুখ, দেবমার্গ, অধো-মার্গ, অমার্গ, গমনাকুল, যষ্টিখাত, বহুধা দারণ, ञ्चनाक्रन कांध्रुवक, कुकावक कदर गाळवक, विश्रुष्ट, रमाप्तक एस अवः क्षुद्धार्वाष्ट्रिक अहे मकन छनि-শস্ত্র ও অন্তকর্ম বলিয়া কথিত হইয়াছে।

এক হন্তীর উপরে, শকুশধারী ছই জন, বহু-দ্বারী ছই জন এবং বড়গধারী ছই জন এই হুর জন আরোহন ক্রিবে। গজারোহীদিগের রক্ষার নিমিক্ত তিনজন অখাবেছী নিযুক্ত থাকিবে।
অহ এবং রথ রক্ষার নিমিক্ত তিনজন ধর্ম্মারী বীর
নিযুক্ত থাকিবেন এবং ধকুর্মারদিগের রক্ষার নিমিত্ত
চর্মধারীদিগকে নিযুক্ত করিবে। তৈলোক্যমোহন
ব্যক্ত ভারা অন্তাদির অর্চনা করিয়া যিনি বুদ্দে
যাত্রা করিয়া থাকেন, তিনি অরিজয় এবং পৃথিবী
পালন করিতে সমর্থ হন।

ইত্যাপ্রের আদিনহাপুরাণে ধক্তেদ নামক অষ্টনবড্য-ধিকশত তম অধ্যার সমাধ্য।

নবনবভ্যধিক শতভ্য অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, অধুনা নয়ানয় বিবেকদ ব্যব-হার, চতুষ্পাৎ, চতুঃছান, চতুঃসাধন, চতুর্হিত, চতুর্ব্যাপী, চতুকারী, অন্টাঙ্গ, অন্টাড়শ পদ, শত-শাথা, ত্রিযোনি, দ্বিজভিযোগ, দ্বিদার, দ্বিগতি, ধর্মা, চরিত্র এবং রাজশাসনের বিষয় বলিতেছি, প্রবণ কর।

অভিবেকাদি গুণযুক্ত রাজার প্রজা পালনই
পরম ধর্ম। সেই প্রজাপাল কেবল ছুই নিগ্রহ
ঘারা সম্ভাবিত নৃহে। ছুই পরিজ্ঞান ব্যবহার
দর্শন ব্যতীত হইতে পারে না। অত্তব অহরহ
ব্যবহার পরিদর্শন রাজাদিগের অবশ্য কর্ত্তব্য।

পরস্পর বিরোধে সাকি ছারা আছ্মশ্বনীয় বলিয়া প্রতিপন্ন করার নাম ব্যবহার। ব্যবহারের উত্তর সাধক এবং পূর্বে সাধককে চতুম্পাৎ
বলে। সামাদি উপায়চতৃতীয় ছারা যাহা দিন্ধ
হল ভাহাকে চতুংসাধন কহে। ছাহা ছারা আশ্রম
চতৃষ্টীয়ের রক্ষা হয়,ভাহাকে চতুর্হিভ কহে। কর্তা,
সাক্ষী, সত্য এবং রাজার পাদে ব্যাপ্ত হওয়ার নাম

চতুর্ব্যাপী। ধর্ম, অর্থ,যশ এবং লোকপংক্তি, এই চতুইয়ের রক্ষাকরণকে চতুষ্কারী কছে।

রাজা, রাজপুরুষ, সত্য, শাস্ত্র, গণক, লেখক, হিরণ্য, অগ্নি এবং উদক, এই ক্য়টিকে অফাঙ্গ কহে। কাম, কোধ এবং লোভবশতঃ প্রবর্ত হওয়াকে তিয়োণি কহে। এই তিনটিই বিবাদকারী। শঙ্কাভিযোগ এবং তত্ত্বাভিযোগ, এই চুইটিকে শ্বিভিযোগ কহে। ছয়টি রিপুর সহিত শঙ্কার সংসর্গ আছে এবং তত্ত্বও ছয়ের সংস্গী। পক্ষয়ের অভিসন্ধিহেতু দ্বিদার সংজ্ঞা কথিত হইয়াছে। পূর্ববাদীর পক্ষকে পূর্ববিশক্ষ এবং পর্বাদীর পক্ষকে প্রতিপক্ষ কহে। ভূত ও চ্ছলামু সারিতা ভেদে গতি চুই প্রকার।

দেষ এবং অদেষ, সুইপ্রকার ঋণ আছে। এই উভযবিধ ঋণগ্রহণের নাম ঋণাদান।

স্থীয দ্ৰব্য, নিঃশঙ্কচিত্তে বিশ্বস্তপাত্তে রক্ষা করাকে নিক্ষেপ নামক ব্যবহার কহে।

বণিক্গণ একত্রে মিলিভ হইযা যে কম্ম করে, ভাহাকে সম্ভ্য সমুখান ব্যবহার কহে।

বে ব্যক্তি সমাক্দান করিয়া, পুনর্বার গ্রহণ করিতে ইচ্ছা কবে,ভাহাকে দত্য প্রদানিক নাম্ক বিবাদ পদ কহে।

শুক্রাবিত হইযাও ধদি অধিগত না হয়, তাহা হইলে তাহাকে অশুক্রাবাধ্য বিবাদ পদ কহে।

ভ্তাদিগের বেতনের দানাদান বিধানকে অনপাকর্মবিবাদ পদ কছে। নিক্ষিপ্ত পরদ্রব্য কইয়া, অথবা অপহরণ করিয়া, গোপনে বিক্রেয় করাকে অস্বামি বিক্রেয় কছে।

মূল্য এহণপূর্বক পণ্যন্তব্য বিক্রেয় করিয়া, যদি তাহা ক্রেতাকে না দেওয়া হয় তাহা হইলে তাহাকে বিক্রীয়সম্প্রদান ব্যবহার পদ বলে।

কোন দ্রব্য মূল্য ছারা ক্রয় করিয়া ক্রেতা যদি তাহা ভাল বোধ না করে, অথবা তাহার ছুক্রীত বিবেচনা হয় তাহা হইলে তাহাকে পাষ্ঠ ছিতি সময় কহে।

ক্ষেত্রাধিকার বিষয়ে সেতু এবং কেদার,বিকৃষ্ট ও আকৃষ্ট হইলে যে বিরোধ উপস্থিত হয় তাহাকে ক্ষেত্রজ বিবাদ কহে।

যাহাতে স্ত্রী এবং পুরুষদিগের বৈবাহিক বিধি কীর্ত্তিত হইয়াছে, পণ্ডিতেরা ভাহাকে স্ত্রীপু স যোগ সংস্কৃক বিবাদ পদ কছেন।

পৈতৃক ধন বিভাগের নিমিত পুজাদি যাহা কল্পনা করিয়া থাকেন, বুধগণ তাহাকে দায়ভাগ নামক বিবাদ পদ বলিয়াছেন।

বলদপিত হইয়া সহসা কোন কর্মেব অনুষ্ঠান করিলে, ভাহাকে সাহসাথ্য বিবাদ পদ কহে।

দেশ,জাতি এবং ব'শ উল্লেখ করিয়া আজোশ বশতঃ প্রতিকূল বাক্য প্রযোগ করার নান বাক্ পারুষ্য।

দ্রোহ বৃদ্ধি প্রযুক্ত পরগাতে হস্ত, পদ, আয়ুধ এবং অনি প্রভৃতি হারা আঘাত বরাকে দণ্ড-পারুষ্য কহে।

থক, বস্ত্র এবং শলাকাদি দারা ক্রীড়াকে দ্যুত কহে। পঞ্জন ব্যক্ষের দহিত ক্র্যুড়া করার নাম প্রাণিদ্যুত।

রাজাজ্ঞা লজ্মন এবং রাজাদিউ কর্ম না করাকে প্রকীর্ণক সংজ্ঞাক নিরাশ্রয় ব্যবহার কাহে।

ব্যবহার অক্টাদশ প্রকার, কিন্তু মনুষ্দিগের ক্রিয়াভেদে তাহা শতশাথার বিভক্ত হইয়াছে বলিয়া ভাহাকে শতশাথ কছে।

রাজা, জ্ঞানবান্, অকোপন, শক্রমিত্র সমদশী,

সভা, লোভহীন এবং শ্রুভিজ ব্রাহ্মণগণ দারা ব্যবহার পর্যালোচনা করিবেন। রাগ, লোভ, অথবা ভয়বশতঃ যদি তাঁহারা ব্যবহার দর্শনে অমনোযোগ করেন, তাহা হইলে দণ্ডার্হ হইবেন। শত্রুকর্ভুক যদি স্মৃত্যুক্ত আচার পদ্ধতির বিদ্ব উৎপন্ধ হয় তাহা হইলে রাজার নিকট আবেদন করিবে। রাজা বিশেষ অনুসন্ধান করিয়া ভাহার বিচার করিবেন।

প্রত্যথীর নিকটে অথী ব্যক্তি যে লেখা প্রদান করিবে, তাহাতে বংসর, মাস, দিন, নাম এবং জাতির উল্লেখ থাকা নিতান্ত আবশ্যক। অথী ব্যক্তি প্রতিজ্ঞাপুর্বক যাহা লিখিয়া দিবে, তাহা প্রমাণিত হইলেই সে অভিযোগে সিদ্ধিলাভ করিবে অভ্যা তাহার অভিযোগ নিক্ষল হইবে।

অভিযোগ হইতে উত্তার্থ না হইয়া প্রত্যাভি-যোগ করিবে না। অভিযুক্ত ব্যক্তি অপবের দ্বারা আপন পক্ষ সমর্থন করিবে না। স্বয়ং উপ-স্থিত হইয়া সত্য প্রমাণ করাইবে।

কলহে এবং সনুষ্যানারণ, স্তেয়, পরদারাভিন্ধিণ, পারুষ্য এবং অনৃত এই পাঁচপ্রকার সাহসকর্মে প্রত্যভিযোগ করিবে। কাম্য নির্গন্ধলে উভয় পক্ষের প্রতিভূলওয়া কর্ত্রা। অপলাপ করিলে, অথবা মিথ্যা অভিযোগ উপস্থিত করিলে, রাজা তাহার অর্থদণ্ড করিবেন। কোন অভিযোগ উপস্থিত হইলে, রাজা ইচ্ছানুসারে তৎক্ষণে অথবা অন্য সময়ে বিচার করিতে পারেন।

বিচারকালে শাক্ষীর অথবা অভিযুক্ত ব্যক্তির অঙ্গানির লক্ষণ দেখিয়া দোষাদোষ নির্ণয় করিতে হয়। যে সর্কানা একস্থান হইতে স্থানান্তরে যায়, এবং ওঠপ্রাস্ত লেহন করে,যাহার ল্লাট স্বৈদ্যুক্ত হয়, মুখ বিবর্ণ এবং স্বভাব বিকৃত হইয়া যায়, বিচার কর্তা ভাহাকেই দোষী হির করিবেন।

সাক্ষী বৈধ উপস্থিত হইলে, যে পক্ষে বছজন এক কথা বলে; সেই পক্ষই সত্য স্থির করিবেন। উভয় পক্ষ সমান হইলে গুণবান্ সাক্ষীর কথাই গ্রাহ্ম করিবেন। যে নরাধম জানিয়াও সাক্ষ্য প্রদান না করে, সে দগুনীয় সন্দেহ নাই। উভয় পক্ষের সাক্ষী উপস্থিত হইলে প্রথমে অভিযোক্তার এবং পরে অপর পক্ষের সাক্ষ্য গ্রহণ করা কর্ত্ব্য।

যে ব্যক্তি ধনাদি দান করিয়া কুট সাক্ষ্য দেওযায় সে বিচারে পরাজিত হইলে তাহার যে দণ্ড
হয়, কূটসাক্ষ্য দাতার তাহার বিগুণ দণ্ড হইয়া
থাকে। ব্যবহার বিষয়ে, ন্থায় এবং স্মৃতির বিরোধ
উপস্থিত হইলে ন্থায়েকেই বলবান বলিয়া গ্রাহ্য
করিতে হইবে। অর্থশাস্ত্র অপেকা ধর্মাশাস্ত্র বলবান্।

লিখন, ভোগ এবং সাক্ষী এই তিন দারা বিরোধী বস্তুর প্রমাণ হইয়া থাকে, ইহাদিগের অন্ততমের অভাবে অপর প্রমাণস্থলে গণ্য হইয়া থাকে। সর্ববিপ্রকার বিবাদে শেষে প্রতীকার চেফী করিবে, কিন্তু বন্ধক দান, প্রতিগ্রহ এবং ক্রীতদ্রব্য বিষয়ে পূর্বের বিবেচনা করা কর্ত্রা।

যে ব্যক্তি বিংশতি বৎসর কোন ভূমি ভোগ করে ভাহাতে ভাহার স্বন্ধু জন্মিয়া থাকে। অপর ধন দশবৎসর ভোগ করিলেই স্বন্ধু জন্মায়, কিন্তু নিষ্ঠারিত সময়ের নিমিত্ত বন্ধক থাকিলে এবং ধন-স্থামী জড় এবং বালক হইলে সে ধনে উল্লেখিত কালে অপরের স্বন্ধু হইবে না। যদি রক্ষিত ধন কেহ অপহরণ ক্রে, ভাহা হইলে রাজা অপহর্তার দওবিধান ক্রিয়া ধনকামীকে ধন-দেওয়াইবেন। জন্মাগত ধনে যদি ভোগ প্রমাণ না থাকে, তাহা হইলে স্বভুলোপ হয়। আগত ধনে বিবাদ উপস্থিত হইলে উভরাধিকারী অভি-যোগ করিয়া তাহা উদ্ধার করিবে। মত্ত, উন্মত্ত, ব্যাধিগ্রস্ত, ব্যানাশক্ত এবং অসম্বন্ধকৃত ব্যক্তির ধনাধিকার সিদ্ধ নহে।

বন্ধক দ্রব্য প্রনষ্ট হইলে রাজা দ্রব্যস্থামীকে তাহা দেওয়াইবেন। যদি কোন বিশেষ চিহ্ন বারা দ্রব্য দ্রিরীকৃত না হয়, তাহা হইলে তৎসম বস্তু দেওয়া কর্ত্রতা। চৌরাপহত বস্তু উদ্ধার করিয়া রাজা জনপদের হিতার্থে অর্পণ করিবেন। গচ্ছিত বস্তু মাসিক জ্বশীতিভাগ র্দ্ধির সহিত প্রত্যর্পণ করা উচিত। বন্ধক দ্রব্যে ব্রাহ্মণাদি বর্ণক্রমে দ্বিশত, ত্রিশত, চতুঃশত এবং পঞ্চশত ভাগ র্দ্ধি দান করিবে। বস্ত্র, ধান্ত এবং হিরণ্যবিষয়ে চারিগুণ এবং দ্বিগণ রৃদ্ধি অভিহিত হইন্যাচে।

প্রপন্ন ব্যক্তির প্রার্থনা পূর্ণ করিয়া রাজা দে বিধয় কাহারও নিকট ব্যক্ত করিবেন না।

ইত্যাগ্রের কাদিনহাপুরাণে ব্যবহারোনাম নবনবত্যধিক-শত্তম অধ্যায় সমাপ্ত।

দ্বিত্ত ব অধ্যায়।

আর্থ কহিলেন, অধমর্থন গ্রহণ করিয়া ক্রমে
তাহা পরিশোধ করিবে। যদি ব্রাক্ষণের নিকট
ঝণ থাকে, তাহা হইলে অত্যে তাহা পরিশোধ
। করিয়া পশ্চাৎ ক্ষতিয়াদির ধন দিবে।

যদি হীনজাতীয় অধমর্ণ ঋণ পরিশোধ করিতে অসমর্থ হয়, তাহা হইলে তাহাকে কর্মা করাইয়া লইয়া নিকৃতি দেওয়া কর্ত্তব্য। প্রাহ্মণ ঋণ পরি-শোধে অসমর্থ হইলে রাজা তাহার নিকট

হইতে ক্রমে ক্রমে উত্তমর্গকে ধন দেওয়াইয়া দিবেন।

যদি অধমর্ণ ঋণ পরিশোধ করিবার নিমিত্ত ধন লইয়া উপস্থিত হ'ইলে উভ্নর্থ তৎকালে ভাহা গ্রহণ না করেন ভাহা হইলে, এ বিষয়ে মধ্যস্থ মাম্য করিবে। মধ্যস্থেরা সেই দিবস হইতে র্দ্ধি রহিত করিয়া দিবেন।

শবিভক্ত দ্রব্য বন্ধক রাখিয়া যদি কুট্থ ভরগার্থে ঋণ করে, তাহা হইলে অথ্যে তাহা পরিশোধ করিবে। বন্ধক দ্রব্য বহুদিন উদ্ধার না
করিলে যদি বৃদ্ধির সহিত তাহা দ্বিগুণ হইষা পড়ে
তাহা হইলে মধ্যম্থেরা তদ্রব্য বিক্রেয় করিয়া উত্তমর্ণকে দেওয়াইবেন।

গোপ, শোতিক, শৈল্য, রজক এবং ব্যাধ্রমণীদিগের ঋণ তাহাদিগের ভর্তাগণ পরিশোধ করিবে, যেহেতু গোণকাল হইলে তাহাদিগকেই অধিক বৃদ্ধি দিতে হইবে। স্ত্রী পতির সহিত মিলিত হইযা যদি কোন ঋণ করিয়া থাকেন তবে তিনি তাহা পরিশোধ করিবেন, কিন্তু স্ত্রীর অজ্ঞাতসারে যদি স্বামী ঋণ করেন এবং তাঁহার কোন সম্পত্তিনা থাকে, তাহা হইলে স্ত্রী স্বধন দারা তাহা পরিশোধ করিতে বাধানহেন।

পিতা আশ্রমান্তর গ্রহণ করিলে অথবা পর-লোক গত হইলে পুত্র পৌত্রাদি তাঁহার ঋণ পরি-শোধ করিবেন। তাহারা অপলাপ করিলে রাজা সাক্ষী বাক্য ভারা প্রমাণ করাইয়া তাহা, দেওয়া-ইয়া দিবেন।

রাজা, দণ্ডাবশিষ্ট এবং ভস্কাবশিষ্ট, পৈতৃক ধন, স্থরাদেবনে,কামর্ভি চরিতার্থ জন্ম এবং দ্যুত-কারে র্থাব্যয় করিবেন না। জাতাদিগের, দম্প-ভীর মধ্যে একতমের, পিতার অথবা পুরুষ প্রতি ভূ সম্বন্ধীয় ঋণ, সকলে অবিভক্তরণে পরিশোধ করিবে। দর্শনে, প্রভারে এবং দানে প্রতি ভূ বিধান করিবে। বন্ধকদানকালে ধিনি প্রতিভূ ছিলেন, বাঁহার কথায় বন্ধকদান প্রতায় হইবে, যিনি প্রত্যক্ষদর্শী, যদি তিনি মরিয়া যান, তাহা হইলে তাঁহার পুরাদি উভ্যর্ণের ক্ষতিপূরণে দায়ী হইবেন না। যদি বহু ব্যক্তি প্রতিভূ থাকেন, তাহা হইলে সকলে অংশ করিয়া উভ্যর্ণকে প্রতিভ্যায়াপ্রতি হইলে উভ্যর্ণ ইচ্ছামুসারে যে কোন ব্যক্তির নিকট হইতে লইতে পারিবেন। যদি কোন প্রতিভূ উভ্যর্ণের নিকট এরপ প্রতিভ্রাক্রেন যে তোমার ধন বিন্ত হইলে আমি বিশুণ দিব, তাহা হইলে উভ্যর্ণ ইচ্ছা করিলে ভাহার নিকট বিশ্রণ ধনই লইতে পারেন।

স্বীকার করিলেই বন্ধক দান দিন্ধ হইয়া থাকে কিন্তু কেবল সাক্ষিলিখন দারা অথবা উদ্দেশে দিন্ধ হয় না। প্রযন্ত্রাভিশয় দারা রক্ষা করিলেও যদি বন্ধকীভূত দ্রব্য কালবলে অসারতা প্রাপ্ত হয় অর্থাৎ রন্ধি সহিত দেয় ধনের অপ্য্যাপ্ত হয় তাহা হইলে তন্ম ল্যের দ্রবান্তির রক্ষা করা কর্ত্ব্য।

যদি ধনী ইচ্ছামুদারে অল্প মূল্যের দ্রব্য বন্ধক রাথিয়া বহু ধনদান করেন, কিন্তা বহুমূল্যের বস্ত রাথিয়া অল্প ধন দেন, তাহা ছইলেও রাজা বৃদ্ধির সহিত উত্তমর্শের দমগ্র ধন দেওয়াইয়া দিবেন।

ধন প্রত্যর্পণ করিয়া বন্ধক দ্রুখা করিয়া নিমিন্ত উপন্থিত হইলে যদি উত্তমর্শ বৃদ্ধিলোভে তৎকালে দেই দ্রুব্য প্রত্যর্পণ না করেন, তাহা হইলে তিনি চোরের ক্যায় দণ্ডনীয় হইবেন।

যদি উত্মৰ্গ সন্নিছিত না থাকেন এবং অধমৰ্ণ বন্ধক প্ৰব্য বিক্ৰেয় ক্ষিয়া, তাঁহার ঋণ পরিশোধ করিতে ইচ্ছা করে তাহা হইলে উত্তমর্ণের পুক্রাদি যে কোন অধিকারীর নিকট বৃদ্ধির সহিত ধন দিয়া বন্ধক দ্রুব্য সইতে পারেন। যদি তাহা না ঘটে তাহা হইলে যে দিনে অধনর্গ ঋণ পরিশোধার্থে প্রস্তুত হইরাছিলেন, সেই দিন হইতে বৃদ্ধি রহিত হইবে।

অধমর্ণ অসমিহিত হইলে, উত্তমর্ণ সাক্ষীদিগের সাক্ষাতে বন্ধক দ্রব্য বিক্রেয় করিয়া বৃদ্ধির সহিত আপন ধন গ্রহণ করিতে পারিবেন। কিন্তু যদি বন্ধক দ্রব্যের মূল্য তাঁহার প্রাপ্যধনের বিশুণ হয় তাহা হইলে, অধমর্ণের অসমিধান কালে তাহা বিক্রেয় করিবে না। বন্ধক দ্রন্য ফল ভোগ্য হইলে এবং কালিক নিয়ম থাকিলে, উত্তমর্ণ নির্দ্ধিত কাল মধ্যে ফল ভোগা হারা পরিশোধ লইয়া বন্ধক মোচন করিবেন।

নিক্ষেপ দ্রব্যের আধারস্থত দ্রব্যাস্তরের নাম
বাসন। সেই ৰাসনত্ম বস্তু যদি গোপনে কাহারও হস্তে রক্ষা করিতে দেওয়া হয় এবং রোপ্য
হ্বর্গ ও সংথাদি কি রহিল তাহা কিছু প্রকাশ
করিয়া না বলে, তাহা হইলে ঐ দ্রব্য ঔপনিধিক
সংজ্ঞায় অভিহিত হইয়া থাকে। সেই উপনিধি
যদি দৈবাৎ তস্করাদি ছারা অপহৃতে অথবা নই
হয়, তবে রাজা তাহা দেওয়াইয়া দিবেন না।
যদি ধনসামী, সেই দ্রব্য নই হয় নাই নিশ্চয়
জানিয়া, রক্ষকের নিকট তাহা প্রার্থনা করিলেও
দে তাহা না দেয়,তাহা হইলে রাজা রক্ষকের দশ্চ
বিধান পূর্বক ধনসামীকে তাহা দেওয়াইয়া দিবেন।

যে ব্যক্তি স্থামীর জমুক্তা না লইয়া রক্ষিত বস্তু উপভোগ করে, তাহাকে রাজ দারে দগুনীয় হইতে হয় এবং বৃদ্ধির সহিত সেই দ্রেষ্য ধনীকে প্রত্যুপণ করিতে হয়।

একাধিক দ্বিশততম অধ্যায়।

আমি কহিলেন, যে ব্যক্তি সাক্ষাৎ দর্শন এবং শ্রেণ করে ভাহাকেই সাক্ষী কহে। তপস্থী, দান-শীল, কুলীন, সভ্যবাদী, ধর্মপ্রধান, ঋজু, পুত্রবন্ত, ধনান্থিত এবং পঞ্চয়ন্ত ক্রিয়াযুক্ত, ব্যক্তিগণ সাক্ষী হইবেন। যথাকাতি, যথাবর্ণ, অথবা সকল জাতি ও সকল বর্ণ, সকল ভাতি এবং সকল বর্ণের সাক্ষী হইতে পারে।

ন্ত্ৰী, বালক, বৃদ্ধ, কিতব, মন্ত,উন্মন্ত, অভিশপ্ত, নট পাৰতি কপটলেখ্যকারী, বিকলেন্দ্রিয় পতিত, আপ্ত, সমন্ধী, রিপু এবং তক্ষর, ইহারা সাকী হইতে পারে না। উভয়ের অনুম্ভ, ধর্মবিৎ এক বাক্তি ছারাই সাক্ষীকার্য্য সম্পন্ন হইয়া থাকে। যে নরাধম জানিয়াও সাক্ষা প্রদান না করে দেই কৃট সাক্ষীকে পাপীর সহিত তুল্যদণ্ডভাগী করা কর্ত্তব্য। বাদী এবং প্রতি বাদীর সমিধিতে সাক্ষীদিগকে এইরূপ সত্য শ্রবন করাইবে। উপপাতক ও মহাপাতককারী, অগ্নিদ এবং স্ত্রীবালকঘাতীদিগের যে লোক প্রাপ্তি হইয়া থাকে যে ব্যক্তি মিথ্যা সাক্ষ্য প্রদান করে সে সেই লোক প্রাপ্ত হয়। তুমি শত জন্মান্তরে যে স্থকুতি পঞ্ম করিয়াছ, মিথ্যাদাক্ষ্য প্রদান করিয়া যাহাকে পরাজিত করিতেছ, সেই তোমার সমস্ত স্কৃতি প্রাপ্ত ছইবে।

সাক্ষী দৈধ উপস্থিত হইলে, বহুব্যক্তি যাহা
বলিবেন, তাহাই গ্রাহ্ম হইবে। উভয় পক্ষ উপস্থিত হইলে গুণবান্দিগের কথা গ্রাহ্ম। গুণবান্
দিগের মধ্যে দৈধ উপস্থিত হইলে গুণবভুরের
বচন গ্রাহ্ম। সাক্ষীগণ যাহার বিষয়ে সত্য কথা
বলেন, সেই জয়ী হয় এবং যাহার বিষয়ে অন্তথা

বাক্য বলেন, সে নিশ্চিত পরাজ্য প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

দাক্ষিগণ সাক্ষা প্রদান করিলে, যদি অপর কোন অভিশয় গুণবান্ ব্যক্তি পূর্ব্বাক্তদিগের বিপরীত কথা বলেন,ভাহা হইলে পূর্ব্বাক্ত সাক্ষি-গণই মিথ্যাবাদী বলিয়া গণ্য হইবেন।

যে ব্যক্তি মিধ্যা অভিযোগ উপস্থিত করিয়া তাহা প্রমাণ করাইবার নিমিত্ত ধনদানাদি ছারা কৃট সাক্ষ্য দেওয়ায় সে পরাজিত হইলে যে দণ্ড প্রাপ্ত হইবে, কৃট সাক্ষীও ততুল্য দণ্ডভাগী হইবে সন্দেহ নাই। যদি প্রাক্ষণ এইরূপ কূটসাক্ষ্য দান অপরাধে অপরাধী হয় তাহা হইলে তাহাকে রাষ্ট্র হইতে নির্কাদিত করিবে।

যে ব্যক্তি দাক্ষিত্ব অঙ্গীকার করিয়া দাক্ষ্যদান কালে ক্রোধ অথবা অসন্তোষ বশতঃ আমি দাক্ষী নহি, কিছুই অবগত নহি ইত্যাদি বলিয়া অপলাপ করে, তাহার এই মিথ্যা ব্যবহার প্রকাশ হইলে দে দোষী অপেক্ষা অউগুণ অধিক দণ্ডনীয় হইবে। ভ্রাক্ষণ হইলে নির্বাদিত করাই কর্ত্রা।

বে ভলে সত্য বলিলে কাহারও বধ সম্ভাবনা হয়, তথায় সাক্ষী ভূফী দ্বাব অবলম্বন করিবে। রাজা অনুমান করিয়া যাহা কর্ত্তব্য হয় তাহাই করিবেন। যদি এরূপ স্থলে মিধ্যা কথা বলে, তাহা হইলে, সেই মিধ্যাকথন নিমিন্ত পাপের প্রায়শ্চিক্সরূপ সারস্বত চরু দান করিয়া সে পাপ হইতে যুক্ত হইবে।

দানাদান বিষয়ে ধনী এবং অধমর্ণের পরস্পর যেরপে প্রতিজ্ঞা থাকে, কালান্তরে তাহার বিপ্রতি-পত্তি নিবারণের নিমিত্ত লেখ্য, কর্ত্তব্য। উক্ত লেখ্যে প্রথমে ধনীর নাম এবং শেষে সাক্ষীদিগের নাম লিখিতে হইবে। বংসর, মাস, পক্ষ এবং দিন উলিখিত হইবে। ধনী এবং অধমর্ণের নাম, জাতি, গোত্র এবং পিতার নাম চিহ্নিত থাকিবে।

সাক্ষিপণ সেই লেখ্যে সহস্তে লিখিবেন যে, আমি অমুকের পুত্র অমুক জাতি। অমুকের পুত্র, অমুক, এই লেখ্যে যাহা লিখিলেন, তাহা আমি অবগত আছি। যদি ঋণী, লিপিজ্ঞ না হয়েন,তাহা হইলে যিনি লিখিবেন তাঁহার এইরূপ লেখা কর্ত্তর। আমি উত্তমর্ণ অমুক এবং অধমর্ণ অমুক কর্ত্তক প্রাথিত হইয়া এই লেখা লিখিলাম।

সহস্ত লিখিত লেখ্য, যদি বলপ্রয়োগ স্থারা ছলদ্বারা, লোভ প্রদর্শন দ্বারা এবং ভয় প্রদর্শন পূর্বক লেখান না হয়, তাহা হইলে সাক্ষী ব্যতীত ও প্রমাণ হইবে।

লেখ্যকৃত ঋণে তিন পুরুষ পর্যন্ত দায়ী থাকিবে, কিন্তু বন্ধককৃত ঋণ যত দিন পরিশোধ না করিবে ততদিন উত্তমর্ণ বন্ধক দ্রব্য উপভোগ করিতে পারিবেন। যদি লেখ্য দেশান্তরে পড়িয়া থাকে, অর্থাৎ সহজে পাওয়া না যায়, কিন্বা তাহার অক্ষর সকল কালবশে অস্পত হইরা যায়, অথবা নই, তক্ষরাদি কর্তৃক হৃত, ছিন্ন এবং অমিতে দগ্ধ হয়, তাহা হইলে অথী প্রত্যথী উভয়ের সম্মতিক্রমে পুনর্বার লেখ্য প্রস্তুত করিবে। লেখ্যে সন্দেহ উপন্থিত হইলে অর্থাৎ এই লেখ্য অমুকের হস্ত লিখিত নহে, এইপ্রকার সন্দেহস্থলে, উত্তমর্ণের বহুত্তলিখন, যুক্তি ক্রিয়াচিক্ছ এবং অর্থী প্রত্যথীর পরস্পার বিশ্বাসহেত্ দান গ্রহণাদি সম্বন্ধ, ইত্যাদি ভারা সেই সন্দেহ অপনয়ন করিবে।

যদি অধমর্ণ এককালে সমস্ত ঋণ পরিশোধ করিতে না পারে, তাহা হইলে শক্তি অনুসারে যখন যাহা দিবে, তাহা লেখ্যের পুর্চে লিখিয়া দেওয়া কর্ত্তব্য । উত্তমর্ণও লেখ্যের পৃষ্ঠে স্বহত্তে নিখিবেন যে, আমি এতৎপরিমিত ধন পাইলাম ।

সাক্ষিমৎ ঋণ, অর্থাৎ কেবল ক্লাক্ষী দিগের সমক্ষে যে ঋণ গৃহীত হয়, তাহা সাক্ষি সমক্ষেই পরিশোধ করিবে। তুলা, অগ্লি, অপ্ এবং কোশ, এই কয় দ্রব্য সন্দির্ম বিষয়ে সন্দেহ নির্ভির নিমিত্ত শপথার্থ ব্যবহার করিবে। গুরুতর অভিযোগ উপস্থিত হইলেই উক্ত দ্রব্য সকল অভিযোজার শীর্ষোপরি স্থাপন করিয়া দিব্য করিবে।

রাজ দোহাভি শক্ষাতে, অক্সহত্যাদি পাতকাভিশক্ষাতে অথবা মহা চৌর্যাভিযোগ শক্ষাতে
দিব্যার্থ কল্লিভ উক্ত দ্রব্যসকল শীর্ষকন্থ না করিয়াও, দিব্য করিবে অথবা শুদ্ধির নিমিত্ত বাহন,
শাস্ত্র, গোবীজ, ফলক, দেবতা এবং পিতৃপাদ
অথবা পুজ্ল,দারা ও হৃহদদিগের মন্তক স্পর্শপ্র্বিক
শপথ করিবে।

পূর্ব্ব দিবদ উপবাদী থাকিয়া পরদিন দূর্য্যোদয় কালে সচেল স্থান করিয়া, দিব্য গ্রাহীকে
আহ্বান পূর্ব্বক রাজা, সভ্য এবং ব্রাহ্মণগণের
দমক্ষে দকল প্রকার দিব্য করাইবে।

স্ত্রা, বালক, হৃদ্ধ, অন্ধ, পঙ্গু, ভ্রাহ্মণ এবং রোগী দিগের শুদ্ধির নিমিত্ত তুলা, ক্ষত্রিয়ের অগ্নি অথবা তপ্ত লোহ, বৈশ্যের জল এবং শুদ্রের সপ্ত-যব স্পর্শ পূর্বক দিব্য করিবার বিধান আছে।

সহত্র পণের মৃত্য ছলে তপ্ত লোহ, বিষ এবং তুলা দারা দিব্য করিবে না, রাজদ্রোহাভিযোগে অথবা মহাপাতকাভিযোগে ও উপবাসাদি দারা শুচি হইয়া দিব্য করিবে।

ভুলা পরীক্ষার নিয়ম বলিতেছি, প্রবণ কর।
ভূলা যত্ত্বে আরোহণ পূর্বক ভূলাবিৎ স্থানাদি
কর্তৃক প্রতি মাণ মৃতিকাদি দারা সমান হইয়া,

যে পর্যান্ত জ্লাদণ্ড অবনত হইয়াছিল, তথায় রেথান্ধিত করিয়া অবতরণ পূর্বক এইরূপ প্রার্থনা করিবে।

হে চন্দ্র্যা! হে আনিল। হে অর্গ! হে ভূমি!
হে হলয়। হে য়ম। হে দিবারাত্রি! হে সন্ধান
য়য়। হে য়য়। তোমরা মন্ধ্রের অভাব অবগত আছ। হে তুলে। তুমি সত্যের আন । পূর্বে আদি স্টিকালে ছিরণ্যগর্ভ প্রভৃতি দেবগণ কর্ত্ক নির্দ্ধিত হইরাছ। অতএব তুমি এই সন্দিয়ার্থের স্থরপ দেখাইয়া দাও। হে কল্যাণি! শোভনে! এই সংশয় হইতে আমাকে মুক্ত কর। হে মাতঃ! যদি আমি পাপকারী এবং অসত্যবাদী হই, তাহা হইলে আমাকে অধঃপাতিত কর, আর যদি আমি শুদ্ধ ও সত্যবাদী হই, তাহা হইলে উদ্ধে উলো-লিত কর। এইদ্ধাপে প্রার্থনা করিয়া তুলায় আরোহণ করিলে, যদি অধঃপতিত হয়, তাহা হইলে দোষী অতথা নির্দোষ স্থির হইবে।

অগ্নিপরীক্ষান্থলে অভিযুক্ত ব্যক্তি হস্তদারা বীহি বিমর্জন করিয়া হস্তন্থ চিহ্নদক্ষ অবলোকন পূর্বক নাতটা অশ্বত্থপত্র, হস্তের উপর্রাথিয়া সূত্র দারা বেন্টন করিবে। অনস্তর অগ্নি সমীপে উপস্থিত হইয়া অপ্পলিবদ্ধনলুর্বক বলিবে, হে অগ্নে! তুমি জর্মযুদ্ধ, অওজ এবং স্বেনজ জীবগণের ও উদ্ভিক্ত সমূহের শরীরাভ্যন্তরে দাক্ষারূপে বিচরণ করিতেছ। হে পাবক! এই করে আদিয়া আমার পূণ্য পাপ বিষয়ে সত্য বল। অভিযুক্ত এইরূপ বলিলে, পঞ্চাশৎ পল পরিমিত, অগ্নিবর্ণ এক লোহপিও তাহার উভয় হস্তের উপর অর্পণ করিবে। সে, তাহা লইয়া যোড়শাঙ্গুলি পরিক্তি এবং ষোড়শাঙ্গুলি অন্তর মণ্ডলে ধীরে ধীরে সাত বার প্রদক্ষণ করিয়া অগ্নিতপ্ত অন্ধঃপিশু

পরিত্যাগ পূর্বক জীহি মর্জন করিবে। ইহাতে যদি হস্ত দগ্ধ না হয়, তাহা হইলেই শুদ্ধ, অন্তথা অশুদ্ধ বলিয়া পরিগণিত হইবে। আর যদি প্রদাকণকালে হস্তম্বালিত হইরা পিও পভিত হয়, অথবা অনুষ্ঠান বিষয়ে সন্দেহ উপস্থিত হয়, তবে পুনর্বার ঐরপ করিবে।

উদক পরীক্ষান্থলে অভিযুক্ত ব্যক্তি কল দলিধানে গমন পূর্ববিদ বলিবে, ছে বরুণ ! ভূমি আমাকে দভ্য দ্বারা রক্ষা কর। ছে ভোয় ! ভূমি প্রাণীদিগের প্রাণ, বিধাতার আদি স্ফ, নিখিল দ্রেরে ও নিখিল দেহীদিগের শুদ্ধির কারণ, অভ্যব এই শুভাশুভ পরীক্ষায় আমাকে উভীর্ণ কর। এই বলিয়া নাভিপ্রমাণ কলে অবতীর্ণ হইয়া উদকন্থ ব্যক্তির উরু ধারণ পূর্ববিদ ময় হইবে। মজ্জনদমকালে কোন বেগবান্ ব্যক্তি বাণত্যাগ করিবে। যে স্থলে বাণ পতিত হইবে, তথা হইতে তাহা প্রত্যানয়ন করিয়া, যদি দে জলম্ম ব্যক্তিকে তদবন্থ দেখিতে পায়, তাহা হইলেই অভিযুক্ত, শুদ্ধ, অভ্যথা অশুদ্ধ বলিয়া গণ্য হইবে।

বিষপরীক্ষান্থলে, অভিযুক্ত ব্যক্তি বিষ গ্রহণ পূর্বক হে বিষ! ভূমি ব্রহ্মার পুত্র এবং সত্য ধর্মে ব্যবস্থিত, আমাকে এই অভিশাপ হইতে পরিত্রাণ কর এবং সত্য বারা আমার সম্বন্ধে অয়তময় হও। এই বলিয়া অভিমন্ত্রণ করিয়া হিমশৈলজ, শৃঙ্গ-প্রভব বিষ ভক্ষণ করিবে। এইরূপে বিষভক্ষণ করিয়া যদি অনায়াদে জীর্ণ করিতে পারে, তাহা হইলেই সে শুদ্ধ বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে।

কোশ পরীক্ষান্থলে অভিযুক্ত ব্যক্তি ছুর্গা-দিত্যাদি উগ্র দেবগণের অর্জনাপূর্বক তাঁহা-দিগকে স্নান করাইয়া তিন প্রস্থাতি পরিমিত স্নান-জল পান করিবে। ইহাতে চতুর্দশ দিবসের মধ্যে যাহার রাজদৈবক ঘোরতর ব্যসন না ঘটে, সেই পরীকোতীর্ণ শুদ্ধ, অন্যথা অশুদ্ধ বলিয়া পরিগণিত হয়।

সত্য, বাহন, শস্ত্র, গোবীজ, কনক, দেবতা-গুরুপাদস্পর্শ . এবং ইউপূর্ত ক্ত্যাদি অতিশয় হুকর; স্বন্ধ সংশয়স্থলে এই সকল দিব্য ব্যবহার করিবে।

ইত্যাধেরে আধিমহাপুনাণে দিব্যপ্রমাণনামক ব্যধিক-ছিণ্ডতম অধ্যায় সমধ্যে।

ত্ৰ্যধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, অধুনা দীমাবিবাদ বলিতেছি, ভাবণ কর।

আমদ্য দক্ষীয় ক্ষেত্রের দীমা লইয়া বিবাদ উপস্থিত হইলে সমস্ত রাজগণ, বৃদ্ধগণ, গোপগণ, দীমাকৃষাণগণ তথায় গমন করিয়া প্রোথিত অঙ্গার তুষ, বৃক্ষ, বল্মীক, অস্থি এবং চৈত্যাদি দারা ছিহ্নিত করিয়া দীমানিশ্চয় করিবে।

দীমা চতুকিধ। জনপদদীমা, গ্রামদীমা, ক্ষেত্রদীমা এবং গৃহদীমা। এই কয় দীমা আবার পাঁচ লক্ষণে বিভক্ত। ধ্বজিনী, মৎদিনী, নৈধানী, ভয়বর্জিতা এবং রাজশাদন নীতা। রক্ষাদি লক্ষিত স্থানকে ধ্বজিনী, জলাশয় দরিহিত স্থানকে মৎদিনী, নিথাত তুবাঙ্গায়াদিমতী ভূমিকে নৈধানী, অর্থীপ্রত্যর্থীর পরস্পর সম্প্রতিপত্তির ছারা যাহা নির্দিষ্ট হয়, তাহাকে ভয়বর্জিতা এবং রাজশাদন ছায়া যাহা দ্বিরীকৃত হয়, তাহাকে রাজশাদননীতা দীমা কহে।

এই দীমা লইয়া দ্যুন, আধিকা, অন্তি নান্তি, ভুক্তি অভুক্তি প্রভৃতি বহুধা বিবাদ হইয়া থাকে। সেই বিবাদ নিরাকরণাথে সামস্তগণ এবং সমিহিত আমবাসী চারি জন, আট জন, অথবা দশ জন সীমাজ বাজি রক্তাম্বরধারণসূক্ষক বিবাদাস্পদী-ভূত ভূমিতে উপস্থিত হইয়া পূর্বকৃত চিহ্ন মারা সীমা নির্দারণ করিবেন।

সামন্তাদি, বদ্যপি এইরপ নিপাতিত্বলে নিধ্যা কথা কহেন, তাহা হইলে রাজা তাঁহাদেগের প্রত্যেকের মধ্যম সাহস অর্থাৎ চত্বারিংশং অধিক পঞ্চশত পণ দণ্ড বিধান করিবেন। জ্ঞাতৃচিচ্ছাদি না থাকিলে, রাজা, উভয় পক্ষের সীমা নির্দিট করিয়া দিবেন। আবাস, আয়তন, গ্রাম, নিপান, উদ্যান, গৃহ এবং প্রবর্ধণান্ত্ জলপ্রবাহবিষরে বিবাদ উপদ্বিত হইলেও রাজা তাহাদিগের বিরোধ ভঞ্জন করিয়া দিবেন।

ক্ষেত্রের মর্যাদা প্রভেদ, দীমা অতিক্রম অথবা ক্ষেত্র হরণ করিলে রাজা বথাক্রমে অথম, উত্তম এবং মধ্যম দণ্ড বিধান করিবেন। পরকীয় ভূমি অপহরণ করিয়া কল্যাণকর সেতু নির্মাণ এবং কৃপ, বাপী ও পুক্ষরিণ্যাদি খনন করিলে, ভূষামী তাহাতে নিষেধ করিবেন না।

ক্ষেত্রমানীর অমুমতি না লইয়া যদি কেহ
পর ক্ষেত্রে সেতৃ নির্মাণ করে, তাহা হইলে তত্ত্ৎপদ্দ দ্রব্যে ক্ষেত্রমানীরই অধিকার হইবে, তাহার
অভাবে রাজা অধিকারী হইবেন। যদি কেহ
ক্ষেত্র স্থামীর নিকটে আমি এই ক্ষেত্রে বীজ্ঞ বর্পন
করিয়া আপনাকে কর দিব এই রূপ অস্পীকার
করে এবং অন্থকে বপন করিতে না দিয়া পশ্চাৎ
আপনিও বপন না করিয়া পরিত্যাপ করে, এরপ
স্থলে উক্ত ক্ষেত্র কালাহত্যাত্র হইলেই কর্ষকের
নিকট হইতে ক্ষেত্রস্থামী যথোচিত কর এহণ
করিতে পারিবেন।

যদি মহিব, গো, অজা এবং মেধাদি পশুগণ শক্তহানি করে, তাহা হইলে মহিন্যামী অউপণ, গোস্বামী চতুঃপণ এবং অজা ও মেন্যামী বিপণ দশুনীয় হইবেন। আর যদি পশুগণ পরক্ষেত্রে শদ্য ভক্ষণ পূর্বক অনিবারিত হইয়া দেই স্থানেই শায়ন করিয়া থাকে, তাহা হইলে পশুসামী যথোক্ত দশুরে বিগুণ দশুণীয় হইবেন। পরিরক্ষিত গ্রাদি চরণস্থানের উপঘাত করিলেও এইরূপ দশুর বিধান আছে। গর্দভ এবং উট্র যদি শদ্য ক্ষতি করে, তাহা হইলে তৎস্বামীগণ, মহিষের ধ্রেরূপ দশুবিধান আছে, দেইরূপ দশু প্রাপ্ত হইবেন।

গবাদি দ্বারা শদ্য নষ্ট হইলে, দেই ক্ষেত্রে যে পরিমিত শদ্য উৎপন্ন হইতে পারিত,দামন্তগণ তাহা পরিকল্পনা করিয়া ক্ষেত্রস্থামীকে মূল্য দেও-য়াইবেন,গোপালককে তাড়না করিবেন এবং গো-স্থামাকে প্রেব্যক্ত প্রকার দণ্ড প্রদান করিবেন।

যদি পথের নিকটন্ত ক্ষেত্রের শস্য অকামতঃ
গবাদি দ্বারা বিনফ্ট হয়, তাহা হইলে গোপালক এবং গোস্থামা দোষভাগী হইবেন না। কিন্ত ইচ্ছাপূর্বক গবাদি দ্বারা শস্য নফ্ট করাইলে পালক ঢোরের ভায় দণ্ডপ্রাপ্ত হইবে। রুষ এবং র্ষোৎসর্গ বিধান দ্বারা দেবতোদ্দেশে উৎস্ফট পশু, যাহাদিগের কেহ পালক নাই ভাহারা দণ্ড-নীয় নহে। অভএব ভাহাদিগকে মোচন করিবে।

গোসামী প্রাতঃকালে পালকের হস্তে যত-গুলি গো, গণনা করিয়া অর্পণ করিবেন। পালক সন্ধ্যাকালে গণনা করিয়া সেই গুলি প্রত্যুপণ করিবে। যদি গোপালের অনবধান বশতঃ গো, মৃত অথবা নম্ট হয় তাহা হইলে পালক উপযুক্ত মূল্য ছারা অপর গো ক্রেয় করিয়া গোস্বামীকে প্রদান করিবে। পাল দোধে বিন্ট ইইলে মধ্যন্থ

গণ পালকের অদ্ধাধিক ত্রয়োদশ পণ দও বিধান করিয়া স্বামীকে গোমূল্য দেওয়াইবেন।

গ্রাম্য জনগণের অথবা রাজার ইচ্ছামুসারে গোপ্রচার স্থান নির্দিষ্ট করিবে। ব্রাহ্মণগণ গবাগ্নি দেবতার্থে সকল সময়ে সকল স্থান হইতে তৃণ, কাঠ এবং কুন্তম আহরণ করিতে পারিবেন। গ্রামের শত ধনু পরিমিত অন্তরে, প্রচুর কণ্টক-বিশিষ্ট গ্রামের ছিশত ধনু অন্তরে এবং নগরের চতুঃশত ধনু অন্তরে শস্যক্ষেত্র কল্পনা বিধেয়।

নক্ট কিম্বা অপহৃত আত্মীয় দ্রব্য যদি কোন ক্রেডার হস্তে দেখিতে পায়, তাহা হইলে সেই হর্তাকে এবং ক্রেডাকে স্থান পালাদি দ্বারা ধৃত কবিয়া দিবে । যদি দেশকালাদির অতিক্রম সম্ভাবনা হর এবং স্থানপালাদি সমিধানে না থাকে তাহা হইলে রাজপুরুষদিগের গোচর করিবার পূর্কের স্থাংই ধরিয়া রাজপুরুষদিগের হস্তে অর্পণ করিবে।

যদি ক্রেতা বলে, আমি ইহা অপহরণ করি
নাই,অমুকের নিকট হইতে প্রাপ্ত হইয়াছি। তাহা
হইলে বিক্রেতাকে দেখাইয়া দিলেই সে মুক্তি
পাইবে, পুনর্কার অভিযোজ্য হইবে না।
যে বিক্রেয় করিয়াছিল,তাহার নিকট হইতে ক্রেতা
মূল্য প্রাপ্ত হইবেন, স্বামী দ্রব্য প্রাপ্ত হইবেন,
রাজা অপহর্তার দণ্ডবিধান করিবেন।

ষামী, আগম এবং উপভোগ ছারা প্রথমে
নইসম্পত্তি, আপনার বলিয়া প্রমাণ করিবেন।
অনস্তর ক্রেতা চোধ্যাভিযোগ পরিহারার্থে বিক্রেতাকে আনয়ন করিবে। যদি বিক্রেতাকে উপছিত করিতে না পারে, তাহা হইলেও স্বানীকে
দ্রব্য প্রত্যর্পন করিবে এবং রাজাকে অপহত
দ্রব্যের পঞ্মাংশ দণ্ডপ্রদান করিবে।

ছত অথবা প্রনন্ধ দ্রব্য পর হস্ত হইতে প্রাপ্ত হইরা রাজার গোচর না করিলে বর্ধবতি পণ দণ্ড প্রাপ্ত হয়। শুক্ষাধিকারী এবং স্থানরক্ষী কর্তৃক নন্ধ এবং অপহত দ্রব্য রাজসমীপে আনীত হইলে যদি সম্বাদ্যর মধ্যে স্বামী উপস্থিত হয় তবে রাজা তাহাকে অর্পণ করিবেন, অস্তথা স্বয়ংই গ্রহণ করিবেন।

একশফ অখাদি, মৃনুষ্য, মিইন, উট্র, গো এবং অজাদি প্রণক হইয়াপুনর্বার অধিগত হইলে তৎস্বামী রাজাকে রক্ষণ নিমিত্ত যথাক্রমে অখা-দিতে চারিপণ, মনুষ্যতে পাঁচ পণ, মহিষ, উট্র ও গবাদিতে দ্বিপণ এবং অজাদিতে পাদ পাদ দণ্ড প্রদান করিবে।

আত্মীয় কৃটুত্ব ভরণ করিয়া যাহা উদ্ভ হয়, যদি স্ত্রী পুজ্রাদি না থাকে, তাহা হইলে তাহা দান করিতে পারে। স্ত্রী পুজ্রাদি থাকিলে সর্বাস্থ দান করা কর্ভব্য নহে। কারণ কথিত আছে, শত অকার্য্য করিয়াও রন্ধ পিতা মাতা, সাধবী ভার্য্যা এবং শিশু পুক্রদিগের ভরণ পোষণ করিবে।

আর যাহা দান করিব বলিয়া প্রতিশ্রুত হইবে তাহা দেওয়া কর্ত্ব্য। কোনমতে তাহার অন্থা করিবে না। কোন দ্রব্য প্রতিগ্রহ করিতে হইলে ভবিষ্যতে বিবাদ নিরাকরণের নিমিত্ত তাহা প্রকাশ্যরূপে করা কর্ত্ব্য। বিশেষতঃ স্থাবর দ্রব্য প্রতিগ্রহস্থলে প্রকাশ্যরূপে না লইলে বিবিধ বিবাদ সংঘটনের নিতান্ত সম্ভাবন। দান করিয়া তাহা অপহরণ করা কর্ত্ব্য নহে। ব্রীহি প্রভৃতি বীজ, লোহ, বলীবর্দাদি বাহন, মুক্তাপ্রবালাদি রত্ত্ব, দাসী, মহিষী আদি বাহন, মুক্তাপ্রবালাদি রত্ত্ব, দাসী, মহিষী আদি

হয়, তাহা হইলে যথাক্রমে দশাহের মধ্যে বীজ, এক দিবসের মধ্যে লোহ, পাঁচ দিবসের মধ্যে বাহন, দপ্তাহের মধ্যে রছ এবং এক মাসের মধ্যে দাস দাসীদিগের পরীক্ষার কাল নির্দিষ্ট হইয়াছে। ইহার অভিরিক্ত কাল হইলে প্রভ্যপণ করিতে পারিবে না।

স্বর্গ অমিতে উত্তপ্ত করিয়া দ্রবীভূত করিলে
ক্ষয় প্রাপ্ত হয় না। অতএব বলয়াদি নির্মাণের
নিমিন্ত বর্ণকারকে যে পরিমিত স্বর্গ প্রদান
করিবে, নে তৎপরিমিত স্বর্গ প্রত্যুপণ না
করিলে দশুনীয় হইবে। শত পল পরিমিত্ত
রক্ত উত্তপ্ত করিলে ছই পল মাত্র ক্ষয় হয়।
রঙ্গ এবং দীস শত পলে আট পল ক্ষয় হয়।
শত পল তাম উত্তপ্ত করিলে পাঁচ পল এবং শত
পল লোহ উত্তপ্ত করিলে দাশ পল ক্ষয় প্রাপ্ত
হইয়া থাকে। রঙ্গ এবং তাম এই উভয় সংযোগে
কাংস্য প্রস্তুত হয়; অতএব তত্ত্ভয়ের ক্ষয় পরিমাণানুসারে কাংস্যের ক্ষয় নির্ণয় করিয়া লাইবে।
শিল্পীগণ ইহার অতিরিক্ত ক্ষয় করিলে দশু প্রাপ্ত
হইবে।

স্থুল, উর্ণাসূত্র এবং কাপাসসূত্র হার। কমলাদি প্রস্তুত করিলে তাহাতে শতপলে দশ পল বৃদ্ধি হইরা থাকে। সপেকাকৃত সৃক্ষা সূত্র হারা করিলে পঞ্চপল এবং স্থুক্ষা সূত্র হারা করিলে, ত্রিপল বৃদ্ধি হইরা থাকে। চিত্রিত এবং রোম-বন্ধ বন্ত্রে ত্রিংশংভাগ ক্ষয় প্রাপ্ত হয়। কিন্তু কোশের বন্ত্রে এবং বক্ষলে কিছুমাত্র ক্ষয় হয় না। ক্রিন্দিগিকে বয়নের নিমিত্ত যে পরিমিত সূত্র প্রদান হয় তাহাদের তৎপরিমিত বস্ত্র প্রত্যুপণ করা কর্ত্রব্য অন্তথা দগুভাগী হইয়া থাকে।

শণ নির্শ্বিত বস্ত্রাদি যদি হ্রাদ প্রাপ্ত হয়, তাহা

হইলে রন্ধি ক্ষয়াভিজ্ঞ ব্যক্তিগণ দেশ, কাল, উপ-ভোগ এবং দ্রেব্যের দারাদারতা পরীক্ষা করিয়া, যাহা কল্পনা করিবেন শিল্পীগণকে অসংশয়িত চিত্তে ভাহাই প্রদান করিতে হইবে।

যদি কেই কাহাকেও বলপূর্বক দাস করে, অথবা কেই চোর কর্ত্তক অপহত হইয়া দাসরূপে বিক্রীত হয় তাহা ইইলে তত্তংস্বামী তাহাদের মৃক্তির চেটা না করিলেও রাজা তাহাদিগকে মুক্ত করিয়া দিবেন। স্বামার প্রাণপ্রদ ভক্ত যদি হত অথবা দাসীকৃত হয় তবে তিনি হর্ত্তাদিকে নিক্রয় প্রদান করিয়া তাহাকে মুক্ত করিয়া আনিবেন।

যদি কেহ প্রব্রজ্যা হইতে প্রচ্যুত হয় তাহা হইলে সে আমরণান্ত কাল রাজার দাস হইয়া থাকিবে ইহার মধ্যে আর নিদ্ধৃতি পাইবে না। ব্রাহ্মণাদি বর্ণের অভুলোমক্রমে দাস্থ করিবে। অর্থাৎ ক্ষব্রিয়াদি ব্রাহ্মণের, বৈশ্যাদি ক্ষব্রিয়ের এবং শৃদ্ধ বৈশ্যের দাস্য করিতে পারে। কিন্তু প্রতিলোমে দাস্থ করিবার বিধান নাই।

শিষ্য আয়ুর্বেলাদি শিল্প শিক্ষার্থ গুরুগৃহে
নির্দিষ্ট কালের নিমিত্ত বাস করিবে। যতদিন
বাস করিব বলিয়া প্রতিজ্ঞা করিবে, ততদিন অপ্রমঙ্গোবে বাস করা কর্ত্তব্য। যদি নির্দিষ্ট কালের
মধ্যে তহার শিক্ষাকার্য্য সম্পন্ন না হয়, তবে
স্বয়ং ভোজনাদির ব্যয় নির্বাহ করিবে।

রাজা স্বপুরে স্থনর গৃহাদি নির্মাণ করাইয়া ব্রাহ্মণদিগকে বাস করাইবেন এবং তাঁহাদিশের জীবিকা নির্বাহের নিমিত্ত ভূ হিরণ্যাদি রুতি বিধান পূর্বক বলিবেন, আপনারা স্থার্ম পালন করুন। তাঁহারাও শ্রোত এবং স্মার্ত্ত ধর্মের অবি-রোধী, সময় ধর্ম ও রাজকৃত ধর্ম,যত্নপূর্বক পালন করিবেন। বে ব্যক্তি ব্যামবাদীদিগের অথবা আত্মীর গণের দেবা হরণ করে এবং প্রতিন্তা লজ্জন, করে, রাজা তাহার সর্বান্ধ হরণ করিয়া, তাহাকে রাষ্ট্র হইতে নির্বাদিত করিবেন। সজাতিদিগের মধ্যে যে ব্যক্তি সমূহ হিতবাদী, সকলেই তাহার বাক্যের অনুসরণ করিবে, যাহারা ইহার অত্যথাচরণ করিবে রাজা তাহাকে গুরুতর দশুপ্রদান করিবেন। যে সকল ব্যক্তি সাধারণের হিতকার্য্যের অনুষ্ঠান করেন, রাজা তাহাদিগকে দান, মান এবং সংকারাদি দ্বারা পরিভূষ্ট করিয়া বিদায় করিবেন।

যদি কোন ব্যক্তি সাধারণের কার্য্যের নিমিত্ত
মহাজনগণ কর্তৃক প্রেরিত হইয়া রাজার নিকট
গমন করে এবং রাজা পরিতৃষ্ট হইয়া তাহাকে
বন্ত্র এবং হিরণ্যাদি দান করেন, তাহা হইলে না
জিজ্ঞাসা করিলেও মহাজনগণের নিকট সেবিষয়
প্রকাশ করা তাহার কর্ত্ব্য। যদি স্বয়ং প্রকাশ
না করে, তাহা হইলে প্রাপ্তবস্তর একাদশ গুণ
দশু প্রাপ্ত হইবে।

বর্মজ্ঞ, শুচি এবং লোভহীন ব্যক্তিকে কার্য্য বিচারক পদে অভিষিক্ত করা কর্ত্ব্য। সাধারণের হিতবাদী বিচারকের আদেশ প্রতিপালন করাও অবশ্য কর্ত্ব্য। শিল্লোপজাবী, কর্মজীবী এবং যাহারা বেদের প্রামাণ্য ইচ্ছা করেন, অথবা যাহারা বেদকে পৌরুবের বলিয়া বহুমান না করে, রাজা এই চতুইয়ের প্রভেদ রক্ষা করিবেন, এবং পূর্ব্বোপান্ত রন্তি পালন করিবেন।

কোন কার্য্য করাইবার আদিতে, মধ্যে অথবা অবসানে বেতন দিবার রীতি আছে। যে ব্যক্তি বেতন গ্রহণ করিয়া অঙ্গীরত কর্মনা করে, সে বেতনের বিশ্বণ দশুপ্রাপ্ত হইয়া থাকে। আর যে ব্যক্তি পূর্বে বেতন গ্রহণনা করিয়া কার্য্য করিতে স্বীকৃত হয় এবং দেই কার্য্য না করে, দে বেডনের সমান দণ্ডলগী হইবে অথবা রাজা বল প্রকাশপূর্বক তাহা দ্বারা কার্য্য করাইয়া লইবেন। কার্য্যের উপকরণ দ্রব্য দকল ভৃত্যের রক্ষা করা কর্ত্তর।

যে ব্যক্তি বেতন নির্দিষ্ট না করিয়া ভ্তোর দারা বাণিজ্য, কৃষি অথবা গোরক্ষণাদি কার্য্য করাইয়া লন, তাঁহার ততুৎপদ্ধ দ্রব্যের দশমাংশ ভ্তাকে দেওয়া কর্ত্ব্য। যে ভ্তা পণ্য বিক্রয়ের উপযুক্ত দেশকাল অভিক্রম পূর্বক অনুপযুক্ত দূর-দেশে লইয়া গিয়া ব্যয় বাহুল্যের দ্বারা লাভের স্থাস করে, তাহার বৈতন দান বিষয়ে স্বামী ইচ্ছা-অনুসারে যাহা ভাল বিবেচনা করেন তাহাই করিতে পারেন। আর যদি ভ্তা দেশকালাদি বিষয়ে অভিজ্ঞতা প্রযুক্ত অধিক লাভ করিতে পারে তাহা হইলে তাহাকে অধিক বেতন দেওয়া স্বামীর কর্ত্ব্য।

বহু জন মধ্যে কোন কর্মের যদি বেতন নির্দিষ্ট থাকে তাহা হইলে, যে, যেরপ কর্ম করিবে,পরিশ্রুমানুদারে মধ্যস্থগণ তাহাকে দেইরূপ বেতন
দিবেন। যদি রাজদৈব ঘটনা ব্যতীত কেবল
বাহকেব দোষে কোন দ্রব্য নই হয়, তাহা হইলে
বাহক তাহার উপযুক্ত মূল্য প্রদান করিবে। যদি
কোন বাহক বিবাহাদি মঙ্গলকার্য্যে প্রস্থানৌপণিক
কর্ম করিতে অঙ্গীকার করিয়া, গমনকালে, আমি
এখন যাইতে পারিব না, বলিয়া প্রস্থানের বিদ্ন
উৎপাদন করে তাহা হইলে সে যে বেতনে যাইতে
স্বীকৃত হইয়াছিল, তাহাকে তাহার দিগুণ দণ্ড
দিতে হইবে। আর যে ভ্ত্য কর্ম আরক্ষ করিয়া
অপুর্ণ অবস্থায় তাহা পরিত্যাগ করে, সে বেতনের
দপ্তমভাগ দণ্ড প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

দ্যতক্রীড়ান্থলে, কপট দ্যুতকারী, যদি ধূর্বতা করিয়া অপরকে পরাজিত করে, ভাহা হইলে সেই ধূর্ত্ত কিতব নির্দ্ধারিত পণের বড়গুণ দণ্ডার্ছ হইবে। দ্যুতাধ্যক্ষ জিত ব্যক্তিদিগকে স্বয়ং দেয় অর্পণ করিবেন। যদি ডিনি দেয় অর্পণ করিতে অসমর্থ হয়েন তাহা হইলে রাজা দণ্ড প্রয়োগাদি দারা তাহা দেওয়াইয়া দিবেন। রাজপুরুষাদি সমন্বিত প্রকাশ্য স্থানে দুতেক্রীড়া করিয়া জয়ী হইলে যদি কোন কপটতা প্রকাশ না হয়, তাহা হইলে রাজা ধূর্তকিতব হইতে রক্ষাকরণ হেতু, স্কল্পিত ভাগ গ্রাহণ করিয়া জিতব্যক্তিকে অব-শিষ্টাংশ দেওয়াইয়া দিবেন। অকপট দ্যুত্ত-ক্রীডাতে রাজা প্রতিবন্ধকাচরণ করিবেন না। ঈদৃশ দুয়ত ব্যবহারে, জয় পরাজয় নির্ণয় করিবার নিমিত্ত রাজা দর্শক নিযুক্ত করিবেন। জীড়াভিজ্ঞ ব্যক্তিদিগকেই দর্শক বা দাক্ষী রাখা কর্ত্তব্য। কুটাক্ষক্রীড়কগণ ইহাতে যদি বঞ্চনা করে তাহা হইলে রাজা তাহাদিগকে রাষ্ট্র হইতে याहात्रा किथानि बाता নির্ব্বাসিত করিবেন। অর্থ উপার্জন করে, তাহারাই প্রায় দ্যুতাসক্ত হইয়া থাকে, অতএব দ্যুতকারদিগের চরিত্র পর্যা-লোচনা করা রাজার নিতান্ত আবশ্যক। দূাতে, অর্থাৎ মল, মেৰ, মহিষাদি বারা যে দূাত জীড়া হইয়া থাকে, রাজা তাহাতেই অসুমোদন করিবেন এবং কৃট্যুতকারদিগকে সর্বাদা শাসন कतिरवन।

ইত্যালেরে আদিমহাপুরাণে সীমাবিবাদাধিনামক ত্যাধিক-, ছিশততম অধ্যার সমাধ্য।

চতুরধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, এক্ষণে বাক্পারুষ্যাদির বিষয় বলিব।

নিষ্ঠুর, অল্লীল এবং তীত্রাদিভেদে বাক্পারুষ্য তিন প্রকার। গৌরবাদিজেমে ইহার দণ্ডও তিন প্রকার অভিহিত হইয়াছে। ধিক্ মূর্য, ধিক্ জাল্ম, ইত্যাদি আক্ষেপ বাক্য প্রয়োগের নাম নিষ্ঠুর, নিরুষ্ট অঙ্গ উল্লেখ পূর্বক ভং সনাবাকা প্রয়োগের নাম অল্লীল এবং তৃমি স্থরাপ, গোহন্তা, ইত্যাদি আকোল বাক্য প্রয়োগের নাম তীত্র। করচরণাদি বিকল, নেত্রপ্রোলারাদিরহিত এবং ভ্রুম্মাদি রোগ্যুক্ত ব্যক্তিদিগকে, তৃমি নেত্রমুগল হীন অন্ধ, ইত্যাদি সত্য বাক্য ছারা, তুমি চক্ষুণ্যান্ অন্ধ, ইত্যাদি অসত্য বাক্য ছারা, তুমি চক্ষুণ্যান্ অন্ধ, ইত্যাদি অসত্য বাক্য ছারা অথবা তৃমি বিকৃতাকৃতি ইত্যাদি নিন্দার্থ বাক্য প্রয়োগ দ্বারা ভৎ দিনা করিলে, অদ্ধাধিক ত্রয়োদশ পণ দণ্ডপ্রাপ্ত ছইবে।

বে ব্যক্তি আমি ভোমার ভগিনী, অথবা মাতৃ গমন করি। ইত্যাদি বাক্য প্রয়োগপূর্বক ভৎ-সনা করে রাজা তাহার পঞ্চবিংশতি পণ দণ্ড বিধান করিবেন। পর স্ত্রীকে এবং উভ্ন ব্যক্তিকে এই-রূপ বর্ৎসমা করিলে, দিগুণ এবং অধ্য ব্যক্তিকে করিলে ইহার অর্দ্ধন্ড নির্দিষ্ট আছে।

বর্ণ, জ্বাতি এবং নীচ প্রেষ্ঠাদিভেদে, দণ্ড প্রভেদ করা কর্ত্তব্য। যদি প্রতিলোম ক্রেমে এই রূপ অপবাদ প্রয়োগ করে, তাহা হইলে দিশুণ ও ক্রিগুণ দণ্ডনীয় হইবে এবং অনুলোম ক্রেমে করিলে, অর্থার্চ দণ্ডনীয় হইবে। আমি তোমার বাল্, গ্রীবা, নেত্র অথবা সক্থি, চেছদন করিব। ইত্যাদি বাক্য দারা ভর্মনা করিলে শত পণ্ এবং পদ, নাসা, কর্প ও করাদি চেছদন করিব বলিয়া ভংগনা করিলে তদর্ভ পঞ্চাশৎ পণ দণ্ডপ্রাপ্ত হইবে। ক্ষীণবল ব্যক্তি যদি সবলের প্রতি উক্ত-রূপ তোমার বাছ প্রভৃতি ভঙ্গ করিব বলিয়া ভংগনা করে, তাহা হইলে সে দশ পণ এবং শক্ত ব্যক্তি ক্ষীণের প্রতি এইরপ করিলে, পূর্ব্বোক্ত শত পণ দশুপ্রাপ্ত হইবে। যদি তৎক্ষণে এই দশুপ্রদানে অশক্ত হয়, তাহা হইলে প্রতিভূ প্রদান করিয়া মুক্ত হইতে পারিবে। পাতিস্কর্মক ব্রহ্মন্ন বলিয়া ভংগনা করিলে মধ্যম সাহ্দ এবং উপপাতকজনক গোল্প বলিয়া ভংগনা কবিলে, প্রথম সাহ্দ দশুপ্রাপ্ত হইবে।

ত্রিবেদজ্ঞদিগের, রাজাদিগের এবং দেবগণের প্রতি এইরূপ ভর্মনা বাক্য প্রয়োগ করিলে উত্তম সাহস এবং ত্রাহ্মণ ও মূর্কাভিনিক্ত জাতি-সমূহের প্রতি অথবা গ্রাম ও দেশের প্রতি এইরূপ উক্ত হইলে, মধ্যম সাহস দণ্ড হইয়া থাকে।

যথন কোন ব্যক্তি গুপ্ত আঘাতে আহত হইয়া রাজার নিকট অভিযোগ করে, তখন ত্রণাদি স্বরূপগত চিষ্ট্র হারা, কারণ পর্য্যালোচনাত্মিকা যুক্তি হারা, জনপ্রবাদ দ্বারা এবং বাকা ছারা, প্রথমে তাহার পরীকা করা, রাজার কর্ত্তব্য । পরীকা দ্বারা নিশ্চিত হইলে, সাধন বিশেষে দণ্ড বিশেষ, বিধান করা উচিত। যদি কাহারও গাত্রে ভত্ম, পঙ্ক, অথবা ধূলি নিক্ষেপ করে, তাহা হইলে দশ পণ দণ্ডনীয় হইবে। অমেষ্য দ্বের নিক্ষেপ, পদাঘাত এবং নিক্তৃত প্রক্ষেপ করিলে, ইহার দ্বিগুণ দণ্ডপ্রাপ্ত হইয়া থাকে।

সমকক ব্যক্তির প্রতি ভস্ম পঙ্কাদি প্রক্ষেপ করিলে, উক্ত দশুসকল বিহিত হইবেঃ কিন্তু আপনার অপেকা অধিক প্রুত বুড়াদি সম্পন্নের প্রতি অথবা পর স্ত্রীর প্রতি হইলে পূর্ব্বোক্ত দশ পণের দ্বিগুণ দশুভাগী হইবে। আর যদি আপনার অপেকা হীন ব্যক্তির প্রতি ঐ সকল প্রযুক্ত হয়, তাহা হইলে পূর্ব্বোক্ত দণ্ডের অর্দ্ধ অর্থাৎ পঞ্চ পণ দশুভাগী হইয়া থাকে। মদ্যপান জন্ম মত হইয়া অথবা গ্রহাবেশ বশতঃ উপহত চিত্ত রুত্তি হইয়া উক্তরূপ ব্যবহার করিলে তাহার দশু করা কর্ত্ব্য নহে।

ক্ষতিয়াদি, যদি প্রাক্ষণকে প্রহার করে, তাহা হইলে যে অঙ্গ ছারা প্রহার করিবে, তাহার সেই অঙ্গ চ্ছেদন করা কর্ত্তবা। সেইরূপ বৈশ্যাদি ক্ষতিয়কে প্রহার করিলে, অথবা শূদ্র, বৈশ্যাকে প্রহার করিলেও অঙ্গচ্ছেদনরূপ দগুপ্রাপ্ত হইবে। আর যদি ক্ষতিয়াদি বর্ণত্তয়, প্রাক্ষণ বধের নিমিত্ত দগু উত্তোলন করে, তাহা হইলে উত্তম সাহস দগু এবং বধোদ্দেশে অস্তাদি স্পার্শ করিলে, তদর্দ্ধ দগু প্রাপ্ত হইবে। প্রহারার্থ হস্ত উত্তোলন করিলে, দশ পণ এবং পদোত্যোলন করিলে, বিংশতি পণ দগুর্হ হইবে। স্ক্রাতিবিরোধে পরস্পার বধকামনায় শস্তাদি উত্তোলন করিলে, সকল বর্ণেরই মধ্যম সাহস দগু হইবে।

সহসা কর, চরণ, বস্ত্র, অথবা কেশাকর্ষণপূর্বক পীড়া জন্মাইলে দশ পণ এবং উক্তরূপ আকর্ষণ দ্বারা গুরুতর পীড়াদিলে শত পণ দগুনীয় হইবে। যদি কোন ব্যক্তি কাষ্ঠ লোষ্ট্রাদি দ্বারা এরূপ প্রহার করে যে তাহাতে শোণিতপাত না হয় তাহা হইলে সৈ তিংশং পণ দশু এবং শোণিত পাত হইলে চতুংষ্ট্রি পণ দশু প্রাপ্ত হইবে।

হন্ত, পদ এবং দন্ত ভয় করিলে, নাসা, কর্ণ, চ্ছেদন করিলে, আহত ব্যক্তি যুতকর হয় এরূপ প্রহার করিলে, এবং ত্রণোম্ভেদ করিলে মধ্যম সাহস দণ্ডে দণ্ডিত হইবে। গমন, ভোজন এবং কথনাদির ব্যাঘাত জন্মাইলে, চন্দু এবং জিহ্বা বিদারণ করিলে এবং এবাবা, বাহু, ও শব্মি ভঙ্গ করিলেও উল্লিখিত দণ্ড জানিবে।

যদি বহুজন মিলিয়া একের অঙ্গ ভঙ্গাদি করে, তাহা হইলে প্রত্যেকে যথোক্ত দণ্ডের স্থিপ্র দণ্ডনীয় হইবে। কলহন্থলে যদি কেই কাহারও কোন দ্রেব্য অপহরণ করে, তাহা হইলে রাজা দেই দ্রব্য প্রত্যর্পণ করাইয়া অপহর্তাকে অপহত দ্রেব্য র দ্বিগুণ দণ্ড প্রদান করিবেন।

যদি কেই গুরুতর প্রহার দ্বারা কাহারও গাত্র ক্ষত করিয়া থাকে, তাহা হইলে আহত ব্যক্তির চিকিৎসা বিষয়ে ঔষধ ও পথ্যাদির নিমিত্ত যে ব্যন্ত্র হইবে, তাহা তাহাকেই দিতে হইবে। রাজাও এই অপরাধের নিমিন্ত তাহাকে যথোক্ত দণ্ড প্রদান করিবেন।

মুক্রারাদি দ্বারা ভিত্তিতে আঘাত করিলে, ভিত্তি বিদারণ অথবা চ্ছেদন করিলে, রাজা যথাক্রমে পঞ্চ পণ, দশ পণ এবং বিংশতি পণ দণ্ড প্রদান করিবেন এবং ভিত্তিশ্বামীকে, ভিত্তি নির্মাণ গার্থ উপযুক্ত ধন দেওয়াইয়া দিবেন।

পরগৃহে কণ্টকাদি ছুঃখজনক দ্রব্য প্রক্ষেপ করিলে, যোড়শ পণ দণ্ড এবং প্রাণনাশক বিষ ও ভুজঙ্গাদি প্রক্ষেপ করিলে, মধ্যম সাহস দণ্ড প্রাপ্ত হইবে।

অজা ও হরিণ প্রভৃতি ক্ষুদ্র পশুদিগকে ভাড়ন করিয়া অভিশয় ক্লেশ দিলে, তাহাদিগের অঙ্গ হইতে শোণিভজ্রাব করিলে, অথবা ভাহাদিগের শাখাঙ্গ চেহদন করিলে, যথাক্রমে দ্বিপণ, চড়ঃপণ এবং ষট্পণ দগুনীয় হইবে। আর ঐ সকল ক্ষুদ্র পশুদিগের লিঙ্গ ছেদন করিলে, কিংবা তাহা- দিগকে বধ করিলে, মধ্যম সাহস দণ্ড প্রাপ্ত হইবে এবং তত্তৎস্বামীকে মূল্য প্রদান করিতে হইবে।

গো, অশ্ব এবং হস্তী প্রভৃতি মহাপশুদিগকে উক্তরূপ তাড়ন এবং লোহিত পাতাদি করিলে, পুর্বোক্ত দণ্ডের দ্বিগুণ দণ্ডার্ছ হইবে।

বটাদি রক্ষের অথবা উপজীব্য আফ্রাদি র্ক্ষের শাথা, ক্ষম এবং মূল চেছদন করিলে, যথাক্রমে বিংশতি পণ, চছারিংশৎ পণ এবং অশীতি পণ দণ্ড প্রাপ্ত হইবে। আশ্রমস্থ, শ্মশানস্থ এবং পথপার্মস্থ রক্ষ চেছদন করিলে পূর্ব্বোক্ত দণ্ডের দ্বিগুণ জানিবে। গুলা, গুচহ, ক্ষুপ, লতা, প্রতান, ওমধি এবং বীরূধ চেছদন করিলেও উল্লিখিত দণ্ড প্রাপ্ত হইবে।

সাধারণ দ্রন্য অথবা পরকীয় দ্রন্য বলপূর্বক হরণ করার নাম সাহস। এই প্রকার সাহস কার্য্য করিলে, অপহৃত দ্রব্যের যত মূল্য তাহার বিগুণ কও কিতে হইবে। যদি কেহ এইরূপ কার্য্য করিয়া অপলাপ করে,তাহা হইলে সে ত্ন্যু-ল্যের চতুগুণ দগুনীয় হইবে। যে সাহস কার্য্য করায় সে বিগুণ, এবং যে, তোসাকে অনেক ধন দিব, ইত্যাদি প্রলোভন দেখাইয়া সাহসকার্য্যে প্রেরুত করে, সে চতুগুণ দগুনীয় হর।

যে ব্যক্তি গুরুজনদিগের আজা অতিক্রম করে, জাভ্ভার্যাকে তাড়না করে, প্রতিক্রত, অর্থ, প্রদান না করে, মুদিত গৃহ উদ্যাটন করে, এবং আপনার গৃহ ও ক্লেত্রের নিকটক্ষ গৃহ ও ক্লেত্রসামীদিগের, বান্ধবগণের অথবা গ্রামবাদী ও দেশবাদীদিগের অপকার করে, দে পঞাশৎ পণ, দশু প্রাপ্ত হইবে।

যে, নিয়োগ ব্যতীত, স্বেচ্ছামুদারে বিধবা-

গমন করে,কেই বিপদাপদ্দ ইইয়া আহ্বান করিলে, সমর্থ ইইলেও তাহার রক্ষার নিমিন্ত না যায়, রুধা আক্রোশ করে, যে, চণ্ডালাদি, ব্রাহ্মণাদিকে স্পর্শ করে, (যদি আমি এই কর্ম করি, তাহা ইইলে, মাতাকে গ্রহণ করিব) যে এইরূপ অযুক্ত শপথ করে, যে শূদ্রাদি অযোগ্য অধ্যাপনাদি করে, বলীবর্দি এবং অজাদি ক্ষুদ্র পশুদিগের পুংস্ত্র চ্ছেদন করে, পরস্থামিক ফল এবং প্রসূন, পাতিত করে, সাধারণ দ্রব্য বঞ্চনা করে, দাসীর গর্ভপাত করে, এবং পাতিস্থাদি দোষহীন, পিতা, পুত্র, ভগিনী, ভ্রাতা, দম্পতি, আচার্য্য ও শিষ্যকে পরিত্যাগ করে, তাহারা শত পণ দণ্ডভাগী ইইয়া থাকে।

রজক, যদ্যপি, ধোতকরণার্থ সমর্পিত বস্ত্র স্বাং পরিধান করে, তাহা হইলে তিন পণ দণ্ড-নীয় হইবে। আর যদি ধনলোভে অপরকে ব্যব-হার করিতে দিয়া ভাটক গ্রহণ করে, অথবা স্বীয় স্থহৎদিগকে ব্যবহার করিতে দেয়, তাহা হইলে দশ পণ দণ্ডনীয় হইবে।

পিতাপুত্রে বিরোধ উপস্থিত ইইলে, যে ব্যক্তি
তাহাদিগকে নিবারণ না করিয়া, সাক্ষা ইইতে
সঙ্গীকার করে এবং তাহাদের বিবাদ হৃদ্ধি করিয়া
দেয়,সে চতুর্বিবংশতি পণ দণ্ড প্রাপ্ত ইইয়াথাকে।

যে ব্যক্তি তোলন দণ্ড, প্রস্থ দ্রোণাদি মাণ এবং মুদ্রাচিহ্নিত নিজাদি দ্রব্য কূট করে, অর্থাৎ কোন দ্রব্য দান কিলা গ্রহণকালে তাহার প্রদিদ্ধ পরিমাণের ন্যুনাধিক্য করে, অথবা রক্ত ও স্বর্ণ-মুদ্রা দিতে তাআদি বোগ করিয়া অব্যবহার্ষ্য করে, এবং জানিয়া শুনিয়াও যে ব্যক্তি এবহিধ মুদ্রাদি ব্যবহার করে, তাহারা প্রত্যেকেই শন্ত পণ দণ্ড প্রাপ্ত হইয়া থাকে। বে, মুদ্রাপরীক্ষক তাত্রাদিগর্ভদূবিত মুদ্রাকে, উৎকৃষ্ট এবং বিশুদ্ধ বলিয়া প্রকাশ করে, সেও উল্লিখিত দণ্ড প্রাপ্ত হইয়া খাকে।

যদি কোন ব্যক্তি, আয়ুর্কেদাদি না জানিয়াও চিকিৎসক বলিয়া পরিচয় দেয় এবং জীবিকা-নিকাহার্থে তির্য্যক্, মনুষ্য ও রাজপুরুষদিগের চিকিৎসা করে, তাহা হইলে; সে যথাক্রমে প্রথম, মধ্যম ও উত্তম সাহস দত্তে দণ্ডিত হইয়া থাকে।

যদি কোন রাজপুরুষ রাজাজ্ঞা ব্যতীত, অদ-ভার্হ নিরপরাধ ব্যক্তিকে বন্ধন করে, এবং দণ্ডার্হ অপরাধাকে পরিত্যাগ করে, তাহা হইলে রাজা তাহার উত্তম সাহস্ক দণ্ড বিধান করিবেন।

যে বণিক, ঐছি এবং কার্পাসাদি বিক্রয়কালে, কুটমান এবং কুট তুলা দ্বারা বিক্রেয় দ্রব্যের অফ-মাণ্য অপহরণ করে, সে দ্বিশত পণ দণ্ডনীয় হইয়া থাকে। কিন্তু অপহত বস্তুর ন্যুনাধিক্যামুসারে দণ্ডের ও ন্যুনাধিক্য কল্পনা করা কর্ত্তব্য।

ঔষধ দ্রব্যে, স্থতাদি স্নেছ দ্রব্যে, উশীর, হিস্
ও মরীচাদি গন্ধ দ্রব্যে এবং গুড় ও লবণাদিতে
যদ্যপি অসার বস্তু মিশ্রিত করিয়া বিক্রেয় করে,
তাহা হইলে, বিক্রেতা ষোড়শ পণ দণ্ড প্রাপ্ত
হইবে।

যদি মৃত্তিকা, চর্মা, মণি, সূত্র, লোহ, কার্চ, বল্কল এবং বন্তাদিতে জব্যান্তরসংযোগ দারা রূপান্তর জন্মাইয়া, ভিম জাতীয় বহু মূল্য জব্য বলিয়া ক্রেতাকে প্রতারণা পূর্বক বিক্রয় করে। অর্থাৎ মৃত্তিকাতে, মল্লিকামোদ সঞ্চার দারা, হুগদ্ধ আমলক ফল বলিয়া বিক্রয় করে, মার্জারচর্ম্মের বর্ণোৎকর্ম বিধান ক্রিয়া ব্যাত্রচর্ম্ম বলিয়া বিক্রয় করে, শ্রুটিক মণিতে বর্ণান্তর সংযোগ করিয়া পদ্মরাগ মণি বলিয়া বিক্রয় করে.

কার্পান সূত্রে গুণোৎকর্ষ সম্পাদন করিয়া পট্টসূত্র বলিয়া বিজ্ঞান করে, লোহে উৎস্থা বর্ণ
যোগ করিয়া, রক্ষত বলিয়া বিজ্ঞান করে, বিশ্বকাঠে চন্দন গদ্ধ সঞ্চার পূর্বক চন্দন কাঠ বলিয়া
বিজ্ঞান করে, নিকৃষ্ট জাতীয় বন্ধলকে রূপান্তর
করিয়া উৎকৃষ্ট বলিয়া বিজ্ঞান করে, এবং কার্পানবাস্ত্রে গুণোৎকর্ম দারা কোনেয় বলিয়া বিজ্ঞান
করে, তাহা হইলে বিজ্ঞোতা তত্তৎ পণ্টেব্য থে
মূল্যে বিজ্ঞান করিবে, তাহার অফ্ট গুণ দণ্ডনীয়
হইবে।

রাজা পণ্যদ্রব্যের যে স্লানিন্দিন্ট করিযা

দিয়াছেন, বণিক্গণ মিলিত হইয়া যদি তাহার

ক্রান বৃদ্ধি করে, তাহা হইলে সহস্র পণ দশুনীয়

হইবে। দেশান্তরাগত পণ্যও স্বেচ্ছাক্রমে মহার্ঘে

বিক্রয় করিবে না। পক্ষান্তে বা নাসান্তে, পণ্য
দ্রব্য প্রত্যক্ষ করিয়া মূল্য সংস্থাপন করা রাজ
ধর্ম। অতএব রাজা যে মূল্য নির্দ্ধারিত করিয়া

দিবেন, তদ্ধারা প্রত্যহ ক্রয় বিক্রয় করা কর্তব্য।

ইহাতে যাহা উৎপন্ন হইবে, বণিক্দিণের তাহাই

লাভ।

ক্রম করিষা যদি সদ্যই বিক্রেয় করে, তাহা হইলে বণিক্, স্বদেশ প্রাপ্ত পণ্যে, শক্ত পণে পাঁচ পণ এবং দেশান্তর হইতে সংগৃহীত পণ্যে, শক্ত পণে দশ পণ লাভ গ্রহণ করিবে। কিন্তু যদি কালান্তরে বিক্রেয় করে, তাহা হইলে ইহার অধিক লইতে পারে। পরদেশ ইইতে যে পণ্য সংগৃহীত হয়, গমনাগমনের ব্যয়, ভাগু গ্রহণ ব্যয়, শুল্ফ প্রদানের ব্যয়, ভাহাতে যোগ করিয়া যাহা হইবে, তাহা হইতে শভ পণে দশ পণ লাভ গ্রহণ করা কর্ত্তর্য।

विद्याला, यामनीय विश्वत निक्रे मृत्र वाहन

করিয়া, যদি তৎকালে সে প্রার্থনা করিলেও পণ্য দ্রেরা না দেয় এবং পরে তাহার মূল্য হ্রাস হইয়া যায়,তাহা হইলে ক্রেয়কালে প্রাপ্ত হইলে, ক্রেডার যাহা লাভ হইত, বিক্রেডাকে সেই লাভের সহিত, মূল্য প্রত্যপণ করিতে হইবে। আর যদি কোন পণ্য ক্রেয় করিয়া পরে শক্রেডাবশতঃ ক্রেডা ডাহা না লয়েন, ভাহা হইলে তদুব্য পুনর্কার বিক্রীত হইতে পারে।

যদি বিক্রেতা, বিক্রীত দ্রব্য প্রদান করিলেও ক্রেতা তৎকালে না লয়েন এবং পরে তাহাতে হানি হয়, তাহা হইলে ক্রেতাই ক্ষতিগ্রস্ত হই-বেন। বিক্রেতা দোষভাগী ইইবেম না।

যদি কোন বস্তু, একজনকে বিক্রয় করিব বিলয় মূল্য গ্রহণপর্বক অপর জনকে বিক্রয় করে অথবা সদোষ বস্তুর দোষ গোপন করিয়া নির্দ্ধেষ বিলয়া বিক্রয় করে, তাহা হইলে বিক্রেডা সেই সেই পণ্য মূল্যের দ্বিগুণ দগুনীয় হইবে।

পরীক্ষা পূর্দকে কোন পণা দ্রব্য করেষা
যদি পরে তাহাতে ক্ষতি বোধ হয়, তাহা হইলে
ক্রেতার অনুতাপ করা রুগা। আর যদি অল্ল
মূল্যে বিক্রোত বস্তু, পরে অধিক মূল্যে বিক্রোত
হয়, তাহা হইলে বিক্রেতারও লাভের হানি
হইল বলিয়া অনুতাপ করা নিজ্লন।

অনেকে সমবেত হইয়া কোন কথা করিলে, যে উপচয় অথবা অপচয় হয়, তাহাতে সকলেই সমভাগী; কিন্তু যদি অংশীগণ অর্থদান বিষয়ে ন্যনাধিক্য করিয়া থাকেন,তাহা হইলে তদকুসারে লাভালাভের অংশ কল্পনা করা কর্ত্তব্য।

অংশীগণ মধ্যে যদি কোন বাক্তি, সাধারণের অনুমতি নিরপেক হইয়া কোন পণ্য বিক্রন্ন করে এবং তাহাতে ক্তিগ্রস্ত হয়, তাহা হইলে সেই, তাহার দায়ী হইবে। আর যদি কোন অংশী, চোরাদি কর্তৃক বিপ্লব হইতে পণ্য দ্রব্য রক্ষা করে, তাহা হইলে সে রক্ষিত দ্রব্যের দশমাংশ প্রাপ্ত হইবে। রাজা পণ্যদ্রবেরে মূল্য নির্দারণ করিয়া মূল্যের বিংশভিভাগ শুল্ধার্থ গ্রহণ করিবন। মাণিক্যাদি রাজ্যোগ্য দ্রব্য যদি রাজাকেনা জানাইয়া বিদেয় করে, তাহা হইলে রাজা মূল্য না দিয়া, তাহা অপহরণ করিবেন।

যে বণিক, শুল্ক বঞ্চনের নিমিক্ত পণ্যন্তবার পরিমাণ গোপন কবে, অথবা শুল্ক গ্রহণ স্থান হইতে অপস্ত হয়, এবং যে বণিক্ বিবাদাস্পদী-ভূত পণ্য ক্রেয় বা বিক্রেয় করে, তাহারা পণ্য-দ্রব্যের অইপ্রুণ দগুনীয় হইয়া থাকে।

যেথানে অনেকে মিলিত ইইয়া বাণিজ্য করে, তথায়, ৰদি অংশীদিগের মধ্যে কোন ব্যক্তি, দেশান্তব্যে গিয়া মৃত হয়, তাহা ইইলে তাহার অংশ,
পুত্রাদি অপত্যবর্গ, মাতুলাদি বান্ধববর্গ, মাপ্তবর্গ,
অথবা বাহাদিগের সহিত দেশান্তবে আদিবাছিল,
তাহাবাই গ্রহণ করিবে, এই সকলের অভাবে
রাজা গ্রহণ করিবেন।

অংশীদিগের মধ্যে যদি কেই বঞ্চক হয়, তাহা

ইইলে তাহাকে লাভের অংশ প্রদান না করিয়া
পরিত্যাগ করিবে। যদি কোন অংশী স্বয়ং পণ্য
দ্রব্য প্রত্যবেক্ষণ করিতে অথবা আয় ব্যয় পরীকা

করিতে অসমর্থ হয়েন, তাহা হইলে, তিনি, আপন

কার্য্য অপরের ছারা করাইবেন। ঋত্বিক, কর্যক

এবং কর্মোপজীবীদিগের পক্তেও এই বিধি

অভিহিত হইয়াছে।

যে ব্যক্তি জনসমাজে চোর বলিয়া বিখ্যাত, এবং যে পূর্ববিদ্যাপরাধী ও যাহার বাদস্থান কাহারও বিদিত নহে, রাজপুরুষদিগের তাহাকে ধৃত করা কর্তব্য। আর যাহারা নাম, ধাম, জাতি ও বংশ গোপন করে, যাহারা দ্যুতাসক্ত, জৈণ ও পানাসক্ত হয়, তোমার নিবাস কোথায়, রাজপুরু-বেরা এই কথা জিজ্ঞাসা করিলে, যে শুক্ষমুথে এবং ভিন্নখনে উত্তর দান করে,যে নিকারণে,ইহার কত ধন ও কিরপ গৃহ, ইত্যাদি জিজ্ঞাসা করে, বেশ পরিবর্ত্তন ঘারা আপনাকে গোপন করিয়া বেড়ায়, আয় না থাকিলেও বহু ব্যয়া করে, বিনষ্ট দ্রব্য, ছিন্নবন্ত্র এবং ভগ্ন পাত্রাদি বিক্রেয় করে, এরূপ ব্যক্তিদিগকেও রাজপুরুষদিগের ধৃত করা করিব্য।

যদি কেছ চৌর্য্যক্ষায় প্রত হইয়া, আত্মশুদ্ধির
নিমিউ প্রমাণ প্রদর্শন না করিতে পারে,তাহা হইলে
দে চৌরদণ্ডে দণ্ডনীয় হইবে। যদি অপহৃত দ্রব্যের
সহিত চৌর প্রত হয়, তাহা হইলে হৃতদ্রব্য গ্রহণ
পূর্ববিক তাহাকে বিবিদরূপ প্রহার কবিবে। যদি
চৌর ব্রাহ্মণ হয়, তাহা হইলে চিহ্ন প্রদানপূর্ববিক
রাষ্ট্র ইততে বহিন্ধত করিয়া দিবে।

যদি প্রাম মধ্যে মনুষ্যাদির প্রাণবধ, অথবা ধনাপহরণ সংঘটন হয়, তাহা হইলে প্রামপাল চোর অপেক্ষা দোষী বলিয়া গণ্য হইবে। সেই দোষ পরিহারের নিমিত্ত শ্বয়ং চোরকে ধৃত করিয়া রাজসমীপে অর্পণ করা তাহার কর্ত্তব্য। যদি ভাহাতে অশক্ত হয়, তবে ধনীর যাবং ধন হত হইয়াছে, তাহাকে তৎপরিমিত ধন অর্পণ করিতে হইবে। যদি চোরের পদচিক্ত প্রাম হইতে নির্গত হইয়া না থাকে, ভাহা হইলে যেখানে সেই পদ-চিক্ত প্রবেশ করিতে দৃষ্ট হইবে, সেই শ্বানের অধিকারী অপহত ধন অর্পণ করিবেন।

আমের দীমান্ত পর্যন্ত প্রদেশে, যদি চৌর্য্যাদি হয়, তাহা হইলেও দেই গ্রামবাদীদিগকে অপস্তৃত বস্তু অর্পণ করিতে হইবে। যদি অনেক গ্রামের
মধ্যসীমায় চুরি হয় এবং জন মর্দনাদি ছারা পদচিহ্ন বিলুপ্ত হইয়া থাকে, ভাষা হইলে পঞ্চগ্রামবাসী ব্যক্তিগণ মিলিভ হইয়া হাত বস্তু অর্পণ করিবেন। যদি অন্যের নিকট হইতে দেওয়াইভে না
পারেন, ভাষা হইলে রাজা অ কোশ হইতে গ্রাহা
প্রদান করিবেন।

যে ব্যক্তি অবরোধ হইতে বন্দিদিগকে হরণ করে, হস্তি ও অশ্ব হরণ করে এবং মনুষ্টের প্রাণ বধ করে, রাজা তাহাকে শূলে অর্পণ করিবেন। বস্ত্রাপহারক এবং গ্রন্থিজেদকের হস্তপদ ক্ষেদনরূপ দশুবিধান করিবেন। ক্ষুদ্র মধ্যম এবং মহৎ দ্রব্য হরণে, দেশ, কাল, বয়স এবং শক্তি বিবেচনা করিয়া, তত্তৎদ্রব্যের মূল্য অনুসারে দশু কল্পনা করিবেন। মুৎভাগু, আদন, খট্টা, মন্মি, দারু, চর্মা এবং তৃণাদি ক্ষুদ্র দ্রব্য মধ্যে পরিগণিত। কোশেয় ভিন্ন বস্ত্র, গোভিন্ন পশু, হিরণ্য ভিন্ন ধাতু এবং ত্রীহি ও যব, মধ্যম দ্রব্য বলিয়া অভিহত । হিরণ্য, রত্র, কোশেয় বস্ত্র, গো, গজ, বাজি এবং দেব, ত্রাক্ষণ ও রাজার দ্রব্য উত্তম বলিয়া অভিহত হইয়াছে।

চোর অথবা নরহস্তার ছুরভিসন্ধি অবগত হইযাও, যে ব্যক্তি ভাহাদিগকে ভোজন, বাসস্থান,
শীতাপনোদনার্থ অগ্নি, ভৃষ্ণানিবারণার্থ উদক,
চৌর্যাকার্য্যোপযোগী মন্ত্রণা, দেশান্তর গমনের
ব্যর এবং অপ্রাদি উপকরণ প্রদান করে, সে উত্তম
সাহস দণ্ড প্রাপ্ত ইইয়া পাকে।

পরগাত্তে অস্ত্রাঘাত করিলে, গর্ভপাত করিলে অথবা স্ত্রী কিংবা পুরুষকে বিনাশ করিলে, উত্তয সাহস দণ্ড প্রাপ্ত হইবে। বিশেষভূফা, পুরুষ-ঘাতিনী, স্বর্গর্ভপাতিনী এবং সেজুভেদকারিণী স্ত্রীর भनरमर्ग गिना वस्तनश्र्वक छन्मरधा निरम्भ कतिरव।

যে ন্ত্রী, অপরকে বধ করিবার নিমিত্ত আম পানাদিতে বিষ মিশ্রিত করিয়া দেয়, দশ্ধ করিবার নিমিত্ত গ্রামাদিতে অগ্নি প্রদান করে, নিজ্পতি, গুরু এবং অপত্যদিগকে বধ করে, তাহার নাসা, কর্ণ ও ওষ্ঠ চেছদন করিয়া বধ করা কর্ত্ব্য।

যদি কেছ গুপ্তাঘাতে আহত হইয়া প্রাণত্যাগ করে এবং কে আঘাত করিল তাহার কোন অমুন্
সন্ধান না পাওয়া যায়, তাহা হইলে রাজা মৃতব্যক্তির আত্মীয় স্থজনের নিকট এবং পরপুরুষগামিনী স্ত্রীদিগের নিকট অমুদন্ধান লইবেন যে,
কাহার সহিত ইহার কলহ ছিল, কোন স্ত্রীর
প্রতি ইহার অমুরাগ ছিল, কোন দ্রব্যে প্রীতি
ছিল এবং কাহার সহিত বিদেশে গিয়াছিল।
অনস্তর রাজা, যে স্থানে হত হইয়াছে, তমিক্টবন্তী জনগণের নিকট এইরূপ বিবিধ প্রশ্বেক
হতার নিশ্চয় করিয়া, তাহাকে যথোচিত দও
প্রদান করিবেন।

যে ব্যক্তি অগ্নিদংযোগ দ্বারা প্রকল্প, শভো পেত ক্ষেত্র, থামার, গৃহ, বন এবং গ্রাম দগ্ধ করে এবং যেব্যক্তি রাজপদ্বীতে অভিগমন করে, তাহা-দিগকে ভ্ণাদি দ্বারা বেক্টন করত দগ্ধ করা কর্ত্বয়।

যদি কেছ পরস্তীর সহিত কেশাকেশী করে, তাহা হইলে সে স্বজাতীয়াস্থলে উত্তম দণ্ড এবং অফুলোম জাতা হইলে, মধ্যম দণ্ড প্রাপ্ত হইবে।

যে ব্যক্তি ইচ্ছাপূর্বক পরস্ত্রীর পরিধান গ্রন্থি-প্রদেশ, কৃচপ্রাবরণ, জঘন ও মূর্দ্ধরুহাদি স্পর্শ করে, অথবা নির্জ্জনে, জনতাকীর্ণ স্থানে, কিয়া অন্ধকারারত স্থানে, পরস্ত্রীর সহিত আলাপ করে, অথবা পরভাগ্যার সহিত একাসনে উপবেশন করে, সেও উল্লিখিত দণ্ড প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

পতি অথবা পিতা যাহার সহিত আলাপ করিতে নিষেধ করেন, যে স্ত্রী সেই নিষেধ অতি-ক্রম করিয়া তাহার সহিত আলাপ করে, সে শত পণ দণ্ডনীয় হইবে। পুরুষও যদি এইরূপ গুরু-জন কর্তৃক নিষিদ্ধ হইয়া কাহারও সহিত সন্ত্রা-বণাদি করে,তাহা হইলে উক্তরূপ দণ্ডনীয় হইবে।

স্বজাতীয়া, পরস্ত্রীতে বলাৎকার করিলে, চারিবর্ণেরই অশীতি অধিক সহস্রপণ দণ্ড প্রাপ্ত হইতে হয়। অনুলোমজা শ্রীতে বলাৎকার করিলে, মধ্যম সাহস দণ্ড এবং প্রতিলোমজা হইলে, বধ্দণ্ড অভিহিত হইয়াছে। নারী যদি হীনবর্ণ পুক্র-ধের সহিত ব্যভিচার করে, তাহা হইলে তাহাকে নাসা কর্ণ চ্ছেদনরূপ দণ্ড প্রদান করা কর্ত্রা।

ক্রী দ্ধণে অর্থাৎ অবিবাহিতা কন্সাকে, অপস্মার, রাজযক্ষাদি দীর্ঘ কুৎসিত রোগ সংস্কী বলিলে, এবং মৈথুনদ্বিতা বলিয়া, তাহার কন্সকাবস্থার প্রতি দোষারোপ করিলে, শতপণ দণ্ডনীয় হইবে। অবিদ্যানান দোষাদির উল্লেখ করিয়া, মিথ্যা দোষারোপ করিলে ছিশত পণ দণ্ডনায় হইবে। গো ব্যতিরিক্ত পশুগমনে শতপণ, হীনজাতীয়া স্ত্রী এবং গো গমন করিলে মধ্যম সাহস দণ্ডনীয় হইবে।

অবরুদ্ধা দাসী এবং গণিকা গমন করিলে, পঞ্চাদৎ পণ, শুক্ষাদি প্রদান না করিয়া, স্থৈরি-গ্যাদিতে বলাৎকার করিলে, দশ পণ, অনিচ্ছা প্রকাশ করিলেও যদি বছন্তন এক স্ত্রীতে গমন করে, তাহা হইলে প্রত্যেকে চছুর্বিংশতি পণ, চাণ্ডালী গমনে এবং কুৎসিত বন্ধের দারা ভগা-কার অঞ্জিত করিয়া গমন করিলে, রাষ্ট্র ইউতে বহিচ্ছরণক্রপ দণ্ড প্রাপ্ত ইইবে। যে ব্যক্তি ভূমির রাজন্ব গোপন করে এবং যে রাজপুরুষ পারদারিক ও চোরকে ধৃত করিয়া রাজশাসন অতিক্রম পূর্বক ছাড়িয়া দেয়, তাহারা উভয়েই উভ্যদণ্ডে দণ্ডিভ হইয়া থাকে।

অভক্ষ্য দ্রব্য ভক্ষণ করাইয়া ব্রাহ্মণকে দূসিত করিলে, উত্তম সাহস দণ্ড,ক্ষত্রিয়কে দূষিত করিলে মধ্যম সাহস দণ্ড, বৈশ্যকে দূষিত করিলে, প্রথম সাহস দণ্ড এবং শৃদ্রকে দূষিত করিলে প্রথম সাহ-সের অর্দ্ধন্ত প্রাপ্ত হইবে।

যে স্বৰ্ণকার রস বেধাদি দ্বারা বর্ণোৎকর্ম জন্মা-ইয়া কৃট স্বর্ণাদি বিক্রুয় করে এবং যে সৌণিক, কুরুরাদি সন্ধ্রীয় কুৎসিত মাংস বিক্রেয় করে, ভাহাদিগের নাসা, কর্ণ এবং করচ্ছেদন পূর্বক উত্তম সাহস দণ্ড প্রদান করা কর্ত্তব্য।

অনুপেযুক্ত চালককর্ত্ক চালিত, শৃঙ্গী অথবা দংষ্ট্রীপশুগণ দ্বারা যদি কেহ হত হয়, তাহা হইলে চালকের দণ্ড করা কর্ত্ব্য।

যে স্ত্রী, বংশ কলঙ্ক ভয়ে উপপতিকে চোর বলিয়া প্রকাশ করে এবং যে রাজপুরুষ পারদারি-ককে প্রত করিয়া, উৎকোচ গ্রহণপূর্বক পরিত্যাগ করে, তাহারা উভয়েই পঞ্শত পণ দশুনীর হইয়া থাকে।

রাজার অনভিমত বাক্য প্রয়োগ করিলে, রাজার অপবাদ ঘোষণা করিলে এবং রাজার গৃঢ় মন্ত্রণা প্রকাশ করিলে, তাহাকে জিহ্বাচ্ছেদন পূর্বক রাষ্ট্র হইতে বহিষ্কৃত করিয়া দেওয়াকর্ত্তব্য।

যে বাজি মৃতাঙ্গ লগ্ন বস্তাদি বিজেয় করে,
পিতা এবং আচার্য্যাদি গুরুজনকে তাড়না করে,
অথবা রাজার অনুমতি ব্যতীত তাঁহার যানাসনাদিতে আরোহণ করে, তাহাকে উত্ন সাহস দণ্ডে
দণ্ডিত করা কর্ত্রা।

যে, ক্রোধাদির বশীভূত হইয়া কাহারও নেজদ্বয় ভেদ করে, যে সর্বাদা, রাজার প্রতি দ্বেষ করে

এবং যে ভোজনের নিমিত্ত যজ্ঞোপবীতাদি ভ্রাহ্মণ
চিক্ত ধারণ করিয়া লোকদিগকে প্রভারণা করে,
ভাহারা ভাইশত পণ দগুনীয় হইয়া থাকে।

যে ব্যক্তি রাজ্বারে স্থায়ত পরাজিত হইয়াও উদ্ধৃত্যবশতঃ পরাজয় স্বীকার না করিয়া, কুট-লেখ্যাদি উপন্থাস পূর্বক পুনর্কার ধর্মাধিকরণে উপস্থিত হয়, প্রাড়বিবাকগণ তাহাকে পুনর্কার ধর্মতঃ পরাজিত করিয়া দ্বিগুণ দণ্ড বিধান করি-বেন।

রাজা অন্যায়পূর্বক যে অর্থ দণ্ড গ্রহণ করেন, দোষশান্তির নিমিত্ত তাহার তিনগুণ অর্থ ঋণ দেবতার উদ্দেশে নিবেদন করিয়া আক্ষণদিগকে দান করা কর্ত্তির।

ধর্ম, অর্থ এবং কীর্ত্তি সঞ্চয়, লোকপালন, প্রজাদিগের প্রতি বক্ত্মান এবং ব্যবহার দর্শন, এই কয়টা রাজগুণ, রাজা এই সকল গুণ দ্বারা শাশত স্বর্গ লাভ করিয়া থাকেন।

ইত্যাগ্রেয়ে আদিনহাপুরাণে বাক্পারুষ্যানি প্রকরণনায়ক চতুর্ধিক বৃশত্তম অধ্যায় সম্প্রে।

পঞ্চাধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

স্থাি কহিলেন, রাজর্ষি পুরুর রামচন্তকে, ভূক্তি মুক্তিকর যে ঋক্, যজুং, দাম এবং স্থাধ্ব বিধান বলিয়াছিলেন,তাহা বলিতেছি শ্রবণ কর।

পুদ্ধর কহিলেন, আমি প্রতিবেদোক্ত কর্ত্তনা কর্মের বিষয় বলিব। সম্প্রতি ভুক্তিমুক্তিদ ঋক্ বিধান বলিতেছি প্রবণ কর।

क्लगरश अथवा रहामकारल आगातामपूर्वक

গায়ত্রী জপ করিলে, অভীক নিদ্ধি হয়। যে বিজ
নক্তভোজী হইয়া দশ সূহত্র গায়ত্রী জপ করেন,
তিনি সকল পাপ হইতে মুক্তি লাভ করেন।
যিনি হবিষ্যাশী হইয়া, দশ অযুত গায়ত্রী জপ
করেন, তিনি মোক্ষ লাভে অধিকারী হয়েন।
প্রণবই পরব্রহ্ম, প্রণব জপ করিলেই সর্বপাপ
বিনক্ত হয়। যে ব্যক্তি নাভিয়াত্র জলে অবস্থিত
হইয়া শতবার ওংকার জপানস্তর জলপান করে,
তাহার অনুমাত্রেও পাপ থাকে না। মাত্রতিয়,
বেদত্রেয়, সপ্তমহাব্যাহ্নতি এবং সপ্তলোক উল্লেখ
করিয়া হোম করিলে, অথিল পাপ বিনক্ত হইয়া
পাকে। জলমধ্যে মহাব্যাহ্নতি এবং পরমা গায়ত্রী
জপ করাকে অথমর্থণ কহে।

यिनि विक्रिनवरु, अधिभीतन भूत्राहिरुः। এই সৃক্ত, প্রয়ত হইয়া এক বংসরকাল নিড্য জপ করেন, তিনি অভিলয়িত ইফ লাভ করিয়া থাকেন। বাঁহারা মেধা কামনা করেন, তাঁহারা সদস্য:। এই থাক্ জপ করিবেন। শুণঃশেফ মৃষিং, এই ঋক্ নিত্য জপ করিলে, মৃত্যু নিবারণ হয়। যিনি নিত্যহুথ, মিত্র, প্রজ্ঞা, মারোগ্য, পাপক্ষ এবং ঐশ্বর্য কামনা করেন, তিনি ষোড়শ বার এই ঋক্ জপ করিলে, সিদ্ধকাম হইবেন। হিরণ্য স্তুপং। এই ঋক্ জপ করিলে, শক্ত বিনষ্ট হয়। যে তে পস্থ। এই ঋক্জপ করিলে, পথে কোন বিশ্ব ঘটে না। প্রতিদিন ছয়টী রৌদ্রী ঋকু দারা ঈশানের শুব করিলে এবং রৌদ্র চরু কর্মা করিলে, পরা শান্তি লাভ হয়। যে বাক্তি প্রতিদিন উদস্ত আদিতোর উপাদনা করিয়া **ग** अक्षनो जन धनान करत, छाष्टात मरनाष्ट्रः थ নিবারণ হয়। বিপ্রাস্ত দ্বিষস্তং। এই অর্দ্ধ ঋক্ জপ করিলে, দপ্ত রাতির মধ্যে, অনিউকারী,

নিবৃত্ত হয়। আরোগ্যকামী অথবা রোগী, প্রস্কল্যান্তমং। এই ঋক্ জপ করিবে। মধ্যাহ্র-কালে, উত্তমস্তস্ত। এই অর্থ ঋক্ এবং উদয়ন্ত্যায়ুরক্ষায্যং তেজঃ। এই পূর্ণ ঋক্ জপ করিলে, বিবিধ আসন সিদ্ধ হয়।

সূর্য্য অস্তাচলে প্রতিগমন করিলে যদি, নবয়শ্চ। এই সূক্ত জপ করে, তাহা হইলে শক্ত হইতে অনিষ্ট ভয় থাকে না। একাদশ স্থপর্ণস্থা। এই সূক্ত জপ করিলে সকল কামনা স্থাসিদ্ধ হয়। আধ্যা-জ্বিকীঃ কঃ। এই ঋক জপ করিলে মোক লাভ হইয়া থাকে। যিনি সমিৎপাণি হইয়া, ত্বং সোম। এই সৃক্ত ছারা নবোদিত নিশাকরের উপাসনা করেন, তিনি বাঞ্চিত বন্ত্র লাভ করিয়া থাকেন। আয়ুঃ কামনা করিয়া, এই কৌৎদ দুক্ত জপ করি-শেও সিদ্ধি লাভ হইয়া থাকে। মধ্যবেলায় আ-পনঃ শোশুচ্ছ। এই ঋক্ দ্বারা দিবাকরের স্তব করিলে নিখিল পাপ প্রনষ্ট হয়। পথিমধ্যে জাত-বেদস। এই ঋক্জপ করিলে মহৎ স্বস্তায়ন হয় এবং দকল ভয় হইতে মৃক্তিলাভ করিয়া কুশলে গুছে প্রতিগমন করিতে পারে। রাত্রিকালে ব্যুষ্ঠায়াং। এই সৃক্ত জপ করিলে ছঃস্বপ্ন বিনষ্ট হয়। গর্ভিণী, প্রদবকালে, প্রমন্দিন। এই দৃক্ত জপ করিলে, গর্ডবেদনা অফুভব না করিরা হুখে প্রস্থ করিতে পারে। স্নাত হইয়া, জপন্নিক্রং এবং বৈশ্যানেবং। এই সূক্তবয় উচ্চারণ পূর্বকি সপ্ত আজ্যাহুতি প্রদান করিলে সকল কিল্বিষ নাশ হয়। ইনাম্। এই দৃক্ত নিত্য জপ করিলে, অভীপ্পিত লাভ হয়।

ত্রিরাত্র উপোষিত ও শুচি হহয়া,মানস্তোক।
এই সূক্ত উচ্চারণ পূর্বেক আজ্যসংস্কৃত উভূদ্বরীয়
সমিধ দ্বারা হোম করিলে, সকল মৃত্যুপাশ ছেদন
করিয়া ও রোগবর্জিত হইয়া জীবিত থাকিতে

পারে। যে মমুষ্য উর্দ্ধবাহু হইয়া, মানস্তোক।
এই ঋক ছারা শস্তুর স্তব করে, দে নিঃদংশয়
সর্বাস্থ্রের অনভিভবনীয় হয়। চিত্রং। এই ঋক্
ছারা যে ত্রিসন্ধ্যা, ভাকরের উপাসনা করে,তাহাকেও কেহ পরাজয় করিতে পারে না। যে প্রতিদিন প্র্বাহ্ন ও মধ্যাহ্নকালে স্মিৎপাণি হইয়া,
অথ স্থপ্প। এই ঋক্ জপ করে, সে অভাষ্ট অর্থ
লাভ করিয়া থাকে।

উভেপুমান্। এই ঋক্ একবারমাত্র জপ করিলে ছুঃস্বপ্ন নিবারণ এবং উৎকৃষ্ট ভোজন লাভ হয়। উভেবাদা। এই ঋক্জপ করিলে কামনা পূৰ্ব হয়। নদাগন্। এই ঋকু জপ দারা আতভায়ী হইতে মুক্তি লাভ করিয়া থাকে। কয়াশুভা। এই ঋক্ জপ করিলে জাতিমধে শ্রেষ্ঠতালাভ হয়! ইমনুসোমম্। এই ঋক্জপ করিলে দকল অভীষ্ট লাভ হইয়া থাকে। পথিগমনকালে অগ্নেম। এই সৃক্ত বারা মৃতহোম করিলে নিতা অর্থ লাভ हम्। (य व्यक्ति इरक्षांकः। धहे शक् मर्दाना जन করেন, তিনি বীরপুত্র লাভ করিয়া থাকেন। কঞ্জোন। এই সৃক্ত জ্বপ করিলে সর্ব্ধপ্রকার বিষ হইতে রক্ষাপায়। যোজাত। এই স্ক্র জপ করিলে দর্কাভীক সিদ্ধি হয়। গণানাম। এই স্ক্র ৰূপ করিলে অনুভ্রম তেজোলাভ হইয়া থাকে। যে মে রাজনিতীমান্। এই সূক্ত জপ করিলে ष्ट्रांचर्र धाममन हम। यनि প्रविश्रमनम्भरत भक्त উপস্থিত হয়, তাহা হইলে, ক্বিদঙ্গ। এই সৃক্ত ঘাবিংশভিবার জপ করিলেই তাহা হইতে কোন ভয়ের সম্ভাবনা থাকে না। প্রতি পর্বকালে প্রয়ত হইয়া এই সৃক্ত জপ করিলে এবং কুণুদ্ধ। এই সূক্ত বারা সমাহিত হইয়া হোম করিলে ইক্ট লাভ হইয়া থাকে।

ষিনি শুচি হইয়া হং সঃ, শুচিঃসং এই ঋক্
জপ করিতে করিতে দিবাকারকে নিরীক্ষণ করেন,
বয়ং বিশ্বতোমুখ বহ্নি বিশ্বসমুদ্রের ভাষণ তরঙ্গ
হইতে তাহাকে রক্ষা করেন। কৃষিকার্য্যার্থে কেত্রমধ্যে যথাবিধি স্থালাপাক করিয়া, স্থনী স্থাহা,
ইন্দ্রায় স্বাহা, মরুদ্রুস্থাহা, ভগায় স্বাহা, এই পঞ্চ
ঋক্ দারা আহুতি প্রদান করিয়া, ক্ষীবল, লাঙ্গল
গ্রহণ পূর্বক কর্ষণ করিবে। ধাক্তের নিমিন্ত এবং
সীতার নিমিত্র গন্ধ মাল্য নমস্কারাদি দ্বারা ইন্দ্রের
পূজা করা কর্ত্তব্য। কর্ষণকালে, বপনকালে এবং
কেন্দেনকালে ইন্দ্রাদি দেবগণের উপাসনা করিলে
সকল কর্ম্ম অন্যাহ হয় এবং সর্বদা ক্ষি সংবৃদ্ধিত
হয়।

সমুদ্রাৎ এবং বিশ্বানর। এই সৃক্ত হয় হারা
বহ্নিদেবভার পূজা করিলে, বহ্নি, সর্বাভীষ্ট প্রদান করিয়া থাকেন। অগ্রেছং। এই সৃক্ত হারা
ন্তব করিলে, বিপুলশ্রী, অসুত্রম জয় এবং বাঞ্ছিত
ধন লাভ হয়। প্রজা কামনা করিয়া বক্রণদৈবত
সূক্তময় জপ করা কর্তব্য। প্রাতঃকালে স্বন্তি
প্রভৃতি সূক্তয়য় জপ করিলে মহৎ স্বস্তায়ন হয়।
স্বন্তিপছা। এই ঋক্ জপ করিলে কুণলে পথ
অভিক্রম করিতে সমর্থ হয়। বিজিগীয়ুর্কানম্পতে।
এই সৃক্ত জপ করিলে মৃঢ়গর্জা স্ত্রীদিন্তার অনা
য়ানে গর্তমাঞ্চণ হয়।

রৃষ্টিকামনা করিয়া নিরাহারে এবং আর্ফ্রবন্ত্রে
আঞ্চাবদ। এই সূক্ত জপ করিলে পর্জ্জন্য অচিরে
বর্ষণ করিয়া থাকেন। পশুকামী ব্যক্তি, মনদঃকাম:। এই সূক্ত জপ করিবেন। প্রজাকামী
ব্যক্তি শুচিত্রত হইয়া, কর্দমেন। এই সূক্ত জপ
করিতে করিতে সান করিবেন। যিনি রাজ্যকামনা
করেন, তিনি, অশ্বপূর্কা। এই সূক্ত জপ করিয়া

স্থান করিবেন। রোহিতে চর্মাণি। ব্রাক্ষণগণের এই সূক্ত জপ করিয়া যথাবিধি স্থান করা কর্ত্তব্য। প্রত্যেক জপে দশ সহস্ত হোম করিবার বিধান আছে।

বে ব্যক্তি, আগার। এই সূক্ত দারা গোষ্ঠমধ্যে লোকমাতা সোরভেরীর উপাসনা করেন, তিনি যাহা ইচ্ছা করেন, তাহাই সফল হয়। রাজা, উপেতি, প্রভৃতি ঋকত্রয় দারা তুল্লুভির, অভিভ্রমণ করিলে, তেজ এবং বল লাভ করিয়া, শত্রুনাশে সমর্থ হইয়া থাকেন। দহ্যকর্তৃক আক্রান্ত হইলে তৃণপাণি হইয়া, রক্ষয়ং। এই সৃক্ত জপ করিবে। যেকেচছাে, এই সৃক্ত জপ করিলে, দীর্ঘ আয়ু প্রাপ্ত হইয়া থাকে। যদি রাজা, জীমৃত সৃক্ত দারা সেনাক্ষ সকলের অভিমন্ত্রণ করেন, তাহা হইলে রণে রিপুক্ষয় করিতে কিছুমাত্র ক্রেশ পাইতে হয় না।

খামের প্রস্কৃতি সূক্তয়ের জপ করিলে, অকর ধন প্রাপ্তি ইইরা থাকে। বিষম সূর্গতি উপস্থিত হইলে, অধীবহ; এই সূক্ত জপ ধারা তাহা হইতে মুক্তি লাভ করিতে পারে। ত্রিরাত্র উপোষিত থাকিয়া, ত্রাম্বক। এই ঋক্ উচ্চারণপূর্বক মহাদেবের উদ্দেশে পারস চকর দারা শত আহতি প্রদান করিলে, শত বৎসর স্থাথে জীবিত থাকিতে পারে। বিনি স্নানাতে,তক্তমু । এই ঋক্ জপ করিয়া দিবাকরের উপোসনা করেন, তিনিও শতায়ু হইয়া থাকেন, সন্দেহ নাই। যিনি দীর্য আয়ু এবং জয় ইছল করেন, তিনি, ইক্রা সোমায়। এই সূক্ত জপ করিয়েন। মোহ বশতঃ বাঁহার ত্রত লোপ হয়, অথবা সাবিত্রীভ্রন্টের সহিত বাঁহার সংসর্গ হয়, তাঁহারা উপোষিত ইইয়া অময়ে য়তপা; এই ঋক্

ষারা ঘতাছতি প্রদান করিলে, প্রতভঙ্গজনিত ও সংস্থানত দোষ হইতে মুক্ত হইতে পারেন। সাদিত্য সূক্ত জপ করিলে,বিবাদে জয় লাভ হইয়া থাকে। মহীতি। সূক্ত জপ ঘারা মহৎভয় হইতে পরিত্রাণ লাভ হয়।

বাচংগরী, এবং শরোভব। এই সূক্তদ্বয় জপ দারা শুচি হ্ইয়া, পবিত্র আল ভোজন করিলে, আবোল্য লাভ হইয়া থাকে। যিনি যথাবিধি স্নান এবং হোমাদি কার্য্য সমাধা করিয়া,ছস্ত ছারা शनः। म्लर्भल्किक, छेरूरमन्मः; ७३ मृक् छ्रल করেন, তিনি ব্যাধি এবং শত্রুকর্তৃক পরাভূত হয়েন না। শক্ষোগ্র। এই সৃক্ত দারা হোম করিলে অয়লাভ হইয়া থাকে। কন্সা বার্ষি। এই সূত জপ ছারা বিপ্র, দিগ্দোষ হইতে মুক্তি লাভ করিয়া থাকেন। যদভ্য কব্যেত্যুদিতে। এই সূক্ত জপ করিলে, জগৎ বশীভূত হয়। যদাক্। এই দৃক জ্বপ ছারা সংস্কৃতা বাণী, লাভ হইয়া থাকে। বাচোবিদমিতি। এই ঋক্ জ্বপ করিলে, অতিশয় পৰিত্ৰতা লাভ হয়। ঋষিগণ, বৈখানসা প্রভৃতি ত্রিংশৎ ঋক্কে পরম পবিত্র বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন এবং দর্ব্বকল্মধ নাশের নিমিত্ত পবিত্র-তার নিমিত্ত ও মঙ্গলের নিমিত, স্বাদিইটয় প্রভৃতি সপ্তমন্তি ঋক্ জপ করিবার আদেশ করিয়া-ছেন। এই সকল ঋক্দশোত্তর শত জপ করিলে এবং ইহা দারা তৎপরিমিত হোম করিলে, ঘোর মৃত্যুভয় নিবারণ হয়।

পাপভয় নিবারণের নিমিত, জলে অবস্থিত হইয়া, আপোহিষ্ঠা, এই ঋক্ জপ করিবে। মরু অথবা ধন্দ্রদেশে পতিত হইলে,নিয়ত,প্রদেবয়, এই ঋক্ জপ করিবে। প্রাণান্তিক ভয় উপস্থিত হইলে ও এই দূক্ত জপবারা প্রমায়ু লাভ হইয়া থাকে। প্রভাতে সূর্ব্যাদর হইলে, যদি মা প্রশাম।

এই সূক্ত জপ করে, তাহা হইলে দূতে জয় লাভ
কবিতে পারে। যদি কোন প্রির ইছৎকে ক্ষীণাযু
বলিয়া জানিতে পাবে, তাহা হইলে, পঞ্চাহ কাল,
তাহাব মস্তকে, যন্তেয়ণ। এই স্ক্ত সহস্রসংখ্যক
জপ কবিলে, এবং ইদংমেধা, এই স্ক্ত দারা সহস্র
দ্বত হোম করিলে, সে দীর্ঘাযু লাভ করিয়া
থাকে। পশু কামনা করিয়া গোঙে, এবং অর্থ
কামনা কবিয়া চতৃষ্পথে, বয়ণ স্তপ্রণ। এই শাক্
ত্রপ কবিলে সিদ্ধ মনোর্থ হইতে পাবে।

হান্যভাষণ। এই খাক্ বারদার জল করিলে,
দকল পাপ ধ্বংদা, এবং দকল রোগ শান্তি
হট্যা থাকে। সৃষ্টি কামনা করিরা, বহস্পতে
অতীত্য। এই সৃক্ত জপ করিলে। সৃত্দংকাশ্যপং। এই সৃক্ত নিত্য জপ করিলে, সর্বতঃ
শান্তি, এবং স্থাজা লাভ হট্যা থাকে। অহং
ক্রেছে। এই সৃক্ত জপ করিলে, বাগ্যী হইতে
পারে। রাত্রিকালে রাত্রিস্ক্ত জপ করিলে, স্থে
রাত্রি অতিবাহিত হট্যা থাকে। কল্লমন্তী। এই
ঝাক্ প্রতিদিন জপ করিলে, অরি নাশ হট্যা
থাকে।

যিনি ধৃতপ্রত হইয়া, আরুষ্যং বর্চভাং, এই
দাক্ষাবন মহৎ সূক্ত এবং উতদেনী, এই আম্যন্ন
সূক্ত, জপ করেন, তিনি নিবাম্য হইয়া স্থা কালাতিপাত কবিতে পারেন। অগ্লি ভব উপস্থিত
হইলে, অযময়েজনিতি। এই সূক্ত, এবং বননধ্যে
ভযের বিষয় উপস্থিত হইলে, অরণ্যানী। এই
সূক্ত জপ কবিনে। প্রান্ধী আদি স্ক্তর্য় জপ
করিলে, মেধা এবং লক্ষী লাভ হয়। সংগ্রামে
জয়লাভেক্ত ব্যক্তি, মাস। এই অসপত্রম শ্রুহ
জপ করিবেন। প্রক্ষাণার্যিঃ স্থিদানং। এই

সূক্ত জপ করিলে, গর্ভকোশ এবং স্কৃত্য নিবারণ হয়।

ভিচি ইইয়া, অপৈছি। এই সৃক্ত জপ করিলে ছাংমপ্র নিবারণ হয়। যে নেদং। এই সৃক্ত জপ করিলে, উৎকৃষ্ট সমাধি লাভ হয়। গোণ্টালের মঙ্গল কামনা করিয়া, মণোভূর্বাত। এই সৃক্ত জপ করা কর্ত্তবা। শান্ধরীং, অথবা ইন্দ্র-জালং। এই সৃক্ত জপ করিলে, মায়া নিবারণ হয়। পথের মঙ্গল কামনা করিয়া, মহীত্রীণাম-বরস্তা। এই সৃক্ত জপ করিবে। অময়ে বিদ্বিধ্য এই সৃক্ত জপ করিবে। অময়ে বিদ্বিধ্য এই সৃক্ত জপ করিলে, রিপুনাণ হইয়া থাকে। বাস্তোজ্পত মন্ত্র দ্বারা গৃহদেবতাগণের পূজা করা বিধেয়।

জপ এবং হোমের এই বিধি বলিলাম। হোমান্তে পাপ শান্তির নিমিত্ত দক্ষিণা দেওয়া কর্তব্য। অন্ধ এবং হেমাদি প্রদান করিয়া, হোম শেষ করিতে হয়। সকল কার্য্যেই স্মানান্তে বিপ্রগণের অমোহ আশীর্কাদ গ্রহণ করা উচ্ছিত। দিকার্থক, যব, ধাল, পয়, দিধ, য়ত এবং ক্ষীর ও রক্ষজ্ঞ কার্ছ এই সকল ছারা হোম করিলো, সকল কামনা স্থাসন্ধ হয়়। অভিচার বিষয়ে দমিধ, কণ্টকি, রাজিকা, রুধির, বিষ, দধি এবং ফল ও ফ্ল ছারা হোম করা কর্তব্য।

ইত্যাপ্রেয়ে আদি মহাপুরাণে ঝাথিধান নামক পঞাধিক দিশততম অখার সমাপ্ত।

ষড় ধিক দ্বিশততম অধ্যায়।

শুক্তর কহিলেন, রাম ! অধুনা ভুক্তিমৃক্তিপ্রদ যজুর্কিবান বলিতেছি, প্রবণ কর। বুধগণ স্ক্রিক্লয়বরাশন, শ্রুকোনপ্রদ, মহা-

ব্যাহ্নতি দকল ওংকার পূর্বক উচ্চারণ করিয়া সহস্র আফ্রান্ডতি দারা দেবগণের আরাধনা করি-(तन। এইऋপে দেবারাধনা করিলে, দেবগণ মনোভিলাষ পূর্ণ করিয়া থাকেন। শান্তির নিনিত্ত যব ছারা, পাপাপনোদনের নিমিত্ত তিল ছারা, স্ব্ৰকামনা সিদ্ধির নিমিত্ত ধাতা এবং সিদ্ধাৰ্থক দারা হোম করা কর্তব্য। পশুকামী ব্যক্তির উত্ন মূর কাঠ ছারা হোম করাই প্রশস্ত। অন্ন কামনা করিয়া দ্ধি দ্বারা, শাস্তি ইচ্ছা করিয়া, পয়দ্বারা, এবংবছকনক কামনা করিয়া, অপামার্গ দমিধ দ্বারা হোম করা কর্ত্তব্য। কন্সার্থী,যুগাক্রমে এথিত ঘূতাক্ত, জাতী পুষ্পদারা এবং গ্রামার্থী, তিলতগুল चाता. त्हाम कतित्वम । वश्यकत्र्य भारशाहे ७ व्यशाः মার্গ দারা, এবং ব্যাধিনাশ কার্য্যে, বিষ ও অস্ক্-মিজিতে সমিধ দারা, জুদ্ধ ব্যক্তি শক্তবধ কামনা করিয়া, দর্বব্রীহিময়ী রাজপ্রতিকৃতি দারা হোম করিবে। এইরূপে সহস্র হোম করিলে, রাজা বশীকৃত হইয়া থাকেন। পুল্প দারা হোম করিলে বস্ত্র লাভ হয় এবং তুর্বা ঘারা হোম করিলে, ব্যাধিনাশ হইয়া থাকে। যিনি ভ্ৰহ্মবৰ্চস্থা হইতে কামনা করেন, উাহার, তুষ, কণ্টক এবং ভশ্ম ছারা (हाम कड़ा कर्छन्। रेन्द्रमाधन विषय काक अ পেচক পক্ষা দারা, হোম করিতে হয়। চন্দ্র ছির নিমিত কাপিল মৃত হারা ছোম করা বিধেয়: বচা চুৰ্ণৰারা হোম করিয়া হুত্তশেব ভোজন করিলে অভিশয় মেধাবী হয়।

ছিনতো বধোদীতি, এই মন্ত্র জপ করিয়া, একাদশাসুল পরিমিত লোহ, অথবা খাদির কিলক শত্রুগৃহে প্রোথিত করিলে, শত্রুনাশ হইয়া থাকে। ইহাকে উচ্চাটন কর্মা কহে। চক্ষ্য্যা, এই মন্ত্র জপ করিলে, বিনষ্ট চক্ষু ব্যক্তি, চক্ষু লাভ করিয়া

থাকেন। উপযুজ্ঞত এবং তনুনপায়ে, সং, এই মন্ত্র বিয় উচ্চারণ লুর্বক ছুর্বা দারা হোম করিলে, আর্ত্তি শৃষ্য ইইয়া দিন যাপন করিতে পারে। ভেষজমিন। এই সূক্ত জপ করিয়া,দধি এবং আজ্য দারা হোম করিলে, পশুগণের উৎপাত নিবারণ হয়। ত্রিয়ন্থকং যজামহে, এই সূক্ত পাঠ করিয়া হোম করিলে, সোভাগ্য বর্দ্ধন হয়। সম্বত ধুস্ত্র পুষ্প দারা হোম করিলে, সর্বকাসভাক্ হয়। গুগুঞ্জ দারা হোম করিলে, স্বর্ধে শঙ্করের সন্দর্শন লাভ হইয়া থাকে।

যুঞ্জতে মনোসুবাকং; এই সূক্ত জপ করিলে, দীর্ঘ আয়ু লাভ হয়। বিষ্ণোরবাটং। এই মন্ত্র জপ করিলে, দকল বাধা অভিক্রেম করিতে পারে। অয়রো অগ্নিঃ। এই মন্ত্র পাঠ করিলে, দংগ্রামে জয় লাভ হয়, যশ লাভ হয় ও রাক্ষদ ভয় নিবারণ হয়; সানকালে ইদমাপঃ প্রবহত। এই মন্ত্র পাঠ করিলে, কিছুমাত্র পাপ থাকে না। হে ধর্মজ্ঞ দিজোউম। অগ্নিতে স্বাহামন্ত্র পাঠ করিয়া তিল, যব, অপামার্গ এবং তণ্ডুল দারা হোম করিলে, বল লাভ হইয়া থাকে।

পায়স এবং দ্বত দারা রুদ্রহোম করিলে,
আজা, অখ, কুঞ্জর এবং গোগণের বিদ্ননাশ হয়,
মনুষ্য, রাজা, বালক ও যোষিৎগণের মঙ্গল হয়,
গ্রাম, নগর এবং দেশের কুশল হয়, উপক্রত ও
ব্যাধিতের মুক্তি লাভ হয় এবং মরক অথবা রিপু
ভয়ের শাস্তি হইয়া থাকে। নক্তরেত অবলম্বন
পূর্বক, ভিকালক শক্তু অথবা যবমাত্র ভোজন
করিয়া কুমাও ও য়ত দারা হোম করিলে, সকল
পাপ অপগত হয়। একমাস কাল বহিঃসান য়ভ
হয়য়া, মধুবাতা মন্ত্র দারা হোম করিলে, ত্রন্ধান্ত পাপ হইতে মুক্তি লাভ করিতে

পারে। দধিকান্তা, এই মন্ত্র দারা হোম করিলে, পুত্র লাভ বিষয়ে সংশয় থাকে নাশ য়তবতী, মন্ত্র দারা স্বতহাম করিলে,পরমায়ু রুদ্ধি হইয়া থাকে। দন্তিন ইক্র; এই মন্ত্র দারা হোম করিলে, সর্বাধা বিনষ্ট হয়। ইহগাবঃ প্রজায়ধ্বং; এই মন্ত্র দারা হোম করিলে, পৃষ্টিবর্দ্ধন হয়।

অপামার্গ এবং তণ্ডুল মারা সহস্র য়তাভ্তি প্রদান করিলে, অলক্ষ্মী বিনাশ হয়। রুদ্রঃপাতৃ, এই মন্ত্র পাঠ করিয়া পলাশ সমিধ স্বারা হোম করিলে অভিচারজনিত বিকৃতি হইতে শীঘ্র মৃক্তি-লাভ করিতে পারে। অগ্যুৎপাত হইলে শিবো-ভব : এই মন্ত্র পাঠপূর্বক ত্রীহি দারা হোম क्रिटि । याः तमना : अहे मल घाता त्राम क्रिल তক্ষর ভয় থাকে না। যো অস্মভ্যমবাতীয়াৎ; এই মন্ত্রে কৃষ্ণ তিল দারা হোম করিলে, সহজ্র অভিচার জন্ম বিকৃতি হইতে অব্যাহতি প্রাপ্ত হয়। অনে নার পততি: এই মন্ত্র দারা হোম করিলে, অর লাভ হয়। জলমধ্যে হং সঃ শুচিঃ সং। এই মন্ত্র জপ করিলে সমন্ত পাপ বিনষ্ট হয়। চত্তা-রিভুক: এই দর্ববিগাপহর মন্ত্রও জলমধ্যে জপ করা কর্ত্তব্য। দেবাযজ্ঞে; এই মন্ত্র জপ করিলে ব্ৰন্দোক প্ৰাপ্ত হয়।

ওং বসন্ত এবং স্থপগৈ সি; এই মন্তে আজ্য ষারা হোম করিলে, আদিত্য হইতে বর লাভ করিতে পারে। নমঃ স্বাহা। এই মন্ত্র তিন বার জপ করিলে, বন্ধন হইতে মুক্তি লাভ হয়। অস্ত-জ্ঞানে, ক্রুপদয়। এই মন্ত্র ভিন, বার আরুত্তি করিলে সর্বাপাপ ক্ষয় হয়। ইহগাবঃ প্রজায়ধ্বং। এই মন্ত্রে য়ত, দধি, ছগ্ধ এবং পারদ ঘারা হোম ক্র-রিলে বৃদ্ধিপত্তি পরিবর্দ্ধিত হইয়া থাকে। ওয়ধীঃ প্রতিমেদধবং। শস্য বপন এবং সেইদন কালে এই

মন্ত্র পাঠ করিলে অধিক লাভ হইয়া থাকে। অখ-বতী। এই মন্ত্রে পায়দ দারা হোম করিলে শান্তি লাভ হয়। তত্মা। এই মন্ত্র দ্বারা হোম করিলে বন্ধনন্থ ব্যক্তি মুক্তিলাভ করিতে পারে। স্বাসা। এই মন্ত্র জ্বপ করিলে উত্তম বস্ত্র লাভ হয়। মুঞ্জুমাশপথানি। এই মন্ত্র পাঠ করিলে দৰ্ককিল্বিষ নাশ হয়। মা মাহিংদীঃ। এই মজে তিল ও আজ্য ধারা হোম করিলে রিপুনাশ হয়। নমোস্ত দর্বদর্শেভ্যঃ এবং কুণুধ্বংরাজ, এই মজে য়ত ও পায়দ ছারা হোম করিলে অভিচার নিবা-রণ হয়। দূর্বাগুচ্ছ বারা হোম করিলে, আংমে অথবানগরে মরক ভয় থাকে না। মধুমালো-বনস্পতিঃ। এই মন্ত্রে ওড়্ম্বরীয় সমিধ দারা হোম করিলে, রোগী রোগমুক্ত হয়। ছঃখিত ব্যক্তি তুঃখ হইতে মুক্তি লাভ করে, নির্দ্ধন ব্যক্তি ধন প্রাপ্ত হয়, ছুর্ভাগ্য ব্যক্তি সৌভাগ্য লাভ করে এবং ব্যবহারে জয় লাভ হয়।

অপাং গর্ভং এবং অপঃপিব। এই মন্ত্রে কবি,

য়ত ও মধু দারা হোম করিলে, মেদ, বারিবর্বণ
করিয়া থাকেন। নমতে রুদ্রং, এই মন্ত্রে হোম
করিলে দকল উপদ্রেব বিনই হয়। অধ্যবেচিৎ,
এই মন্ত্রে হোম করিলে শর্বাতঃ শান্তি হয়, মহাপাতক বিনই হয় ব্যাধিত ব্যক্তির ব্যাধি নিবারণ হয়, যশ লাভ হয়, চিরায়ুঃ হুয়, এবং পুষ্টি
বর্ধন হয়। অগোবস্তাত্র, এই মন্ত্র পাঠ করিয়া,
নিত্য অতন্তিত হইয়া দায়ং ও প্রাতঃকালে দিবাকরের উপাদনা করিলে অক্য় কম্ম এবং দীর্ঘ আয়ু
লাভ হয়। প্রমূক্ষধন্, ইত্যাদি হয় মন্ত্র দায়া
আয়ুধাভিমন্ত্রণ করিলে, মুদ্ধে রিপুগণ, অতিশয় ভয়
প্রাপ্ত হয়, সন্দেহ নাই। মনোমহান্ত। এই মন্ত্র
বালকদিগের অতিশয় শান্তিকারক। নমোহিরণাঃ

বাহবে। ইত্যাদি অনুবাক্দপ্তক পাঠ করিয়া হোম করিলে শক্তে নাশ হয়। নমোবং কিরিকে-ভাশ্চঃ; এই মন্ত্রে লক্ষ পদ্ম দ্বারা হোম করিলে রাজ্যলক্ষী লাভ হয় এবং বিহুদ্বারা হোম করিলে হুবর্ণ লাভ হয়। ইমারুজায়, এই মন্ত্রে তিল দ্বারা হোম করিলে, প্রভুক্ত ধন লাভ হয় এবং দূর্ববা দ্বারা হোম করিলে সর্বব্যাধি নিবারণ হয়।

আয়ুধ রকণ কালে, আঙঃ নিশান, এই যন্ত্র পাঠ করিলে সংগ্রামে সর্বশক্ত বিনাশ প্রাপ্ত হয়। রাজসাম, এই মন্ত্রে পঞ্চ সহত্র মৃত্তাক্তি প্রদান করিলে চক্ষুরোগ হইতে মৃত্তি লাভ করিতে পারে। শংলাবনস্পতে। এই মন্ত্র লারা গৃহে হোন করিলে বাস্তদোষ নিবারণ হয়। আয় আয়ুংসি, এই মন্ত্র লারা মৃতাক্তি প্রদান করিলে কাহারও সহিত শক্ততা হয় না। অপাং কেন। এই মন্ত্র লারা লাজাক্তি প্রদান করিলে, মুদ্ধে জয় লাভ হয়। ইন্দ্রিয়স্পান হইতে পারে। অগ্রিশ্চ পৃথিবীচ। এই তুইটা উত্তম বশীকরণ মন্ত্র। অধ্বন। এই মন্ত্র জপ করিলে, ব্যবহারে জয় লাভ হইয়া থাকে।

কশারক্ষে অক্ষরাজন্যং। এই মন্ত্র জপ করিলে, কর্ম স্থান্দলার হয়। সংবৎদরোদি, এই মন্ত্রে হ্যত ন্থারা লক হোম করিলে অরোগী হইতে পারে। কেতুং কৃণুদ্দিনি, এই মন্ত্র পাঠ করিলে সংগ্রামে জয় লাভ হয়, এবং ইল্রোগির্ম্ম। এই মন্ত্র পাঠ করিলে রণে ধর্মবর্জন হয়। ধনুগ্রহণে, ধন্থানাগ। এই মন্ত্র এবং অভিমন্ত্রণে, নজীতিঃ। এই মন্ত্র পাঠ করা কর্ত্রনা শ্রাভিমন্ত্রণে আহিরপে, এবং তুশাভিমন্ত্রণে, বহুনিশাণপিতরি, এই মন্ত্র হয়, অভি-হিত হইরাছে। অধ্যোজনে মুজ্জি এবং ধার্ত্রা- রস্তে আগুনিশান; এই মন্ত্রের নির্দিষ্ট আছে।
রথারোহনকালে বিষ্ণোক্তম; এই মন্ত্র, এবং অধ্বতাড়নকালে আজজেতি, মন্ত্র পাঠ করিতে হয়।
যুদ্ধকালে, পরসৈন্যমুখে, যা দেনা অভিজ্রী। এই
মন্ত্র জপ করিরা ছুন্সুভাঃ; এই মন্ত্র পাঠপুর্বক
ছুন্সুভি তাড়ন করিবে। এই রূপে যুদ্ধে প্রস্তু
হুইলে জয় লাভ বিষয়ে আর সন্দেহমাত্র থাকিবে
না।

শিবসংকল্ল জপ ছারা মনঃ সমাধি করিয়া পঞ্চলক হোম করিলে লক্ষী লাভ হইয়া থাকে। রাজিকালে ইনং জীবেভাঃ; এই মন্ত্র পাঠ করিয়া গৃহের চতুর্দিকে শিলা এবং লোষ্ট্র নিক্ষেপ করিলে চোরের ভয় থাকে না। পরিমেগামনেন; এই উৎকৃষ্ট বশীকরণ মন্ত্র পাঠ করিলে, ববার্ধ আগত ব্যক্তিও বশীভূত হইয়া থাকে। ভক্ষ, তালুল এবং প্রপাদি উক্ত মন্ত্রে মন্ত্রিত করিয়া যাহাকে প্রদান করা যায়, সেই শীন্ত্র বশীভূত হইয়া থাকে। সকল থাকে। এই মন্ত্র পাঠ করিয়া চতুর্পথে গণপতির আরাধনা করিলে সকল সময়ে সকল ছানেই শান্তি লাভ হইয়া থাকে। সকল প্রকার ধান্ত দারা হোম করিলে, সকল জগৎ বশীভূত হইতে পারে। অভিষেক বিষয়ে হিরণ্যবর্গা শুচ্চয়ঃ; এই মন্ত্র পাঠ করা কর্ত্ব্য।

শরোদেবী রভিন্টয়ে; এই মন্ত্র শান্তিকার্ব্যে
প্রযুক্ত হইয়া থাকে। এক চক্রা; এই মন্ত্র পাঠ
করিয়া আজ্য দারা হোষ করিলে গ্রহণণ প্রসম
হইয়া সর্ববশান্তি বিধান করিয়া থাকেন। গাবঃ,
ভগঃ; এই মন্ত্রদ্র পাঠ করিয়া আজ্যাক্তি প্রদান
করিলে বহু গো লাভ হইয়া থাকে। গৃহযজ্ঞে
প্রবদাংশঃ দোপৎ, এবং ফ্রন্ম যজ্ঞে দেবেভাঃ
করম্পতে; এই মন্ত্র দারা হোম করা কর্ব্য।

গায়ত্রীই দেই বিষ্ণুর পরমপদ অভএব গায়ত্রী কুপ দ্বারা সর্ববিপাপ প্রশমন এবং সর্ব্বাভীষ্ট দিছি হইয়া থাকে।

हेक्ताटश्चरम् काशिमहाणुवाद्य प्रकृत्तिशाममामक यङ्धिम्-विचळकम काशाम गमास ।

সপ্তাধিক দ্বিশততম অধ্যার।

সাম বিখানং।

পুষ্ণর কহিলেন, যজুর্বিধান বলিলাম, এখন সামবিধান বলিব। বৈষ্ণবীসংহিন্তা জ্বপ, এবং ভতুক্ত হোম করিলে, সকল কামনা পূর্বয়। যিনি ছান্দসীস হিতা অনুসারে শহরের উপাসনা করেন, তিনি তৎপ্রসমতা লাভে কুতকার্য্য হইয়া থাকেন। যত ইন্দ্র ভলামহে। এই মস্ত্রজপ করিলে হিংসা দোষ বিন্ঠ হয়। অগ্রিস্তিগা। এই মন্ত্র জপ করিয়া অবকিণী, ত্রভোল্লন্ডনেজনিত পাপ হইতে বিমৃক্ত হয়েন। পরিতোয়ং তাই। এই মন্ত্রজপ করিলে সক্ষপাপ করে হয়। নিষিদ্ধ বিক্রেয় দ্রব্য বিক্রয়, করিয়া, তক্ষোষ শান্তির নিমিন্ত, মৃতবতী : এই মন্ত্র জ্বপ করিবে। অয়ানো দেব দবিতঃ। ভুংস্থে নিবারণের নিমিত্ত এই মন্ত্র হৃপ করা কর্ত্তব্য। যে দকল খ্রীর গর্ভপাত হয়, ভাহারা যদি অবোধ্যায়ি। এই মন্ত্র ছারা যুত অভ্যুকণ করিয়া, যুতশেষ দারা মেথলা বন্ধন करत, जारा इटेरल निःमस्मर गर्छतका इटेरव। বালক জন্মিলে কণ্ঠে, দোমং রাজানং : এই সন্ত্র ঘারা মণি বন্ধন করিয়া দিলে, দে সকল প্রকার ব্যাধি হইতে মুক্ত হইতে পারে।

रोगाछ। अहे मञ्ज मात्रा महत्व द्वान करतन. তাঁহার দর্পভয় থাকে না। শভার্ত্তি মণি খারণ कदिरल, भारतकार निवादन एतः। सीर्यकारमाकः এই মন্ত্ৰারা হোম করিলে বহু আল লাভ হইয়া शांक। श्रम्भाष्ट्री। वह मञ्जू कन कृतिहा. পিপাদাকুল হইয়া প্রাণত্যাগ করে না। স্কৃতিয়া अवधीरि। এই मञ्ज ज्ञंभ कतिहा दकान बर्शिक्स না। পথিদেব ভ্ৰতং। এই মন্ত্ৰ স্কুপ কৰিলে, সক্ষুপ প্রকার ভয় হইতে মুক্ত হইয়া থাকে। मूनरप्रष्ट् । अरे मख बाजा दशम कृतिता, ट्र्नांकाशः বৃদ্ধি হয়। ভগোনচিত্র। এই মস্ত্র জপ করিলে দর্শনশক্তি ও সোভাগ্য রূদ্ধি হইয়া খাকে। ইন্দ্রবর্গ জপ করিলেও সোভাগ্যশালী হয়।

কোন জাকে, পরিপ্রিয়া হিবঃ কারিঃ। এই মত্র শুনাইলে দে নিঃদল্পেছ বণীভূতা হুইরা वाञ्चलव मच्छीम मामगान क्लिल. বেদাধ্যয়নজনিত তেজ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। যে বালক নিত্য মৃতপ্লত বচাচুৰ্ ভক্ষণ এবং ইজ-মিদ্রাথিন: এই মন্ত্র জপ করে, সে শ্রুভিগর হয়। রথস্তর মন্ত্র জপ এবং হোম করিয়া নিঃস্কেছ পুজবান হইয়া থাকে। এ विवर्धन मग्नि : अह মত্র অপ করা সকলেরই কর্ত্তর। যে ব্যক্তি অতক্রিত হইয়া, প্রাতঃকালে ও সায়ংকালে গব্যের্ণ; এই মন্ত্র ছারা গোগণের উপাদনা করে. তাহার বহু গো লাভ হইয়া থাকেঁ৷ যে দ্রোন পরিমিত যব, মতাক করিয়া, বাত আবাতু ভেহণং; এই মত্র বারা বিধিবৎ হোন করে, সে সর্বাপ্রকার মায়াপাশ চ্ছেদন করিতে সমর্থ হয়। প্রদেবো দাদেন; এবং বষট্কার সমন্বিত, অভিতা পূর্বপীতয়ে: এই মন্ত্র দারা তিল হোম করিলে, অভিশয় কর্ম-বে বিপ্রা সর্পদান প্রয়োগ করেন এবং মান্ডছা । দক্ষ হইয়া থাকে। পিষ্টময় হস্তী, আৰ এবং

পুরুষ নির্মাণ করিয়া, বাসকেয় ; এই মন্ত্র ধারা সহস্র হোম করিলে, যুদ্ধে জয় লাভ হয়। শত্রু-পক্ষীয় প্রধান পুরুষের উদ্দেশে পিউক নির্মাণ করিয়া ক্লুর জারা ঋণ্ড খণ্ড রূপে ছেলন করিবে। অনস্তর সেই সকল খণ্ড সর্মপ তৈলাক্ত করিয়া অভিছা শ্রণোক্ষ্মো; এই মন্ত্র জারা ক্রোধপুর্বক হোম করিবে। এইরূপ অফুঠান করিলে, সংগ্রামে আনায়াসে জয় লাভ হইয়া খাকে। গারুড়, বাম-দেব্য এবং সাম্মন্ত্রসকল সর্বপাপয়,ইহাতে কিছু-মাত্র সংশয় নাই।

> ইত্যাণ্ডেরে আলিমভাপুরাবে সামবিধান নামক স্থাবিত্তিশতভ্য আধ্যার সমাধ্য।

অফীধিক দ্বিশততম অধ্যায়।

অথব্য বিধান।

পুকার কহিলেন, সামবিধান বলিলাম। অধুনা অগর্ব বিধান বলিব।

মানবগণ শান্তাতীয়গণের হোম করিলে, শান্তি লাভ করিতে পারে। ভৈষজ্ঞাগণের হোম করিলে, সকল রোগ ছইতে মুক্তি লাভ করিয়া থাকে। ত্রিসপ্তীয়গণের হোম করিলে, সকল পাপ বিমষ্ট ছয়। অভয়গণের হোম করিলে কথন ভয় প্রাপ্ত হয় না। আয়ুষ্যগণের হোম করিলে, অপমৃত্যু নিবারণ ছয়। স্বস্তুয়মনগণের হোম করিলে, অপমৃত্যু নিবারণ ছয়। স্বস্তুয়মনগণের হোম করিলে, জ্যোলাভ হয়। বাক্তোপতাগণের হোম করিলে বাস্তদোষ নিবারণ হয়। রোদ্রগণের হোম করিলে নকল দোষ দূর হয়। অভাদশ শান্তিতে এই সকলের দশগুণ ছোম করা করিয়া। গণহোম করিয়া করিই পরাভব প্রাপ্ত হয় না।

বৈষ্ণবী, ঐন্দ্রী, আক্ষী, রোদ্রী, বারব্যা, বারুণী, কোবেরী, ভার্গবী, প্রাঙ্গাপত্যা, ছার্ট্রী কোমারী, বহ্নিদেবতা, মারুদ্রাণা, গান্ধারী, নৈর্খ-তকী, আঙ্গীরদী, যাম্যা এবং পার্থিবী, এই অফা-দশ শাস্তি, সর্ব্যমদা বলিয়া পরিকীর্তিত হই-য়াছে।

যন্তাং মৃত্যু। এই মন্ত্রজপ করিলে, অম-রত্ব লাভ করিতে পারে। হুপর্ণস্তা এই মন্ত্র দারা হোম করিলে, ভুজগ কর্তৃক বাধা প্রাপ্ত হয় না। ইক্রেণদতং। এই মন্ত্র দারা হোম ক্রিলে, সর্ক্বাধা বিনাশন ও সর্ক্রকামনা পুরণ হয়। ইমাদেবী। এই মন্ত্র জপ করিলে সকল অনিক শান্তি হয়। দেবামকত। এই মন্ত্রজপ कतित्त, मर्निष्डीके मिश्वि रुग्र। यमश्रालाकार, **बहे मालु दृः यक्ष अनमन हरा : है स्टाय अक्**रिविज, এই মন্ত্র জপ করিলে, পণ্যদ্রব্যে যথেষ্ট লাভ হর। কামোমে বাজী; এই মন্ত্র দারা হোম করিলে স্ত্রীদিগের সৌভাগ্য বর্দ্ধন হয়। তুভ্য-দের জবীমন্; এই মজে অযুত হোম করিয়া অয়ে গোভির: এই মন্ত্র জপ করিলে অতিশয় মেধার্দ্ধি হয়। প্রতংগুবেণ এই মজা ভারা হোস: করিলে, স্থান লাভ হয়। অলক্তজীব; এই মন্ত্র জপ করিলে কৃষিকার্য্যে মঙ্গল হয় ; অহস্তে ভগ্ন। এই মন্ত্র জপ করিলে সোভাগ্যবান হয়: যে সে পাশান্তথাপি; এই মন্ত্র জপ করিলে বন্ধন হইতে মৃক্তি লাভ করিতে পারে : শপত্যহন্। এই মন্ত্র জ্বপ ও হোম দ্বারা রিপু বিমাশ হয়।

ত্ম্তমম্; এই মন্ত্রপ করিলে, যণ এবং বৃদ্ধি বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়; জীগণ, যথা মৃগমতীত্য; এই মন্ত্রজপ করিলে, সৌভাগ্যশালিনী হয়েন; যেন চেহৎ; এই মন্ত্রজপ করিলে, বদ্যাদোষ

च्रा ७ इंदेश १ क्षा क्षा । व्या द्धा व्यानिः ; এই মন্ত্র জপ করিলে, পুত্র লাভ হয় ৷ শিবঃ শিবাভি: : এই মন্ত্র জপ করিলে, প্রভুত সৌভাগ্য লাভ করিতে পারে। বহুস্পতির্নঃ পরিপাতু এই মন্ত্র জপ করিলে পথে মঙ্গল লাভ হয়। মুঞ্চামিছাং; এই মন্ত্র পাঠ করিলে, অপমৃত্যু নিবারণ হয়; অথৰ্কমন্ত্ৰোক্ত কৰ্ম্মের বিষয় প্ৰাধান্তক্ৰমে কিঞ্ছিৎ বলিলাম এই সকল মন্ত্র জপ হোম ছারা সকল পাপ হইতে মৃক্তি লাভ হয়। যজীর বুকের স্মিধ, হবিঃ, ত্রীহি, গৌরস্বপ, অক্ত, তিল, मिंद, कीत, मर्छ, मुर्खा, विद्य धवः कमन, धरे नकन দ্রব্য পরম শান্তি ও পুষ্টিকর বলিয়া কীর্ত্তিত হই-য়াছে। বিনিয়োগজ্ঞ ব্যক্তি তৈলঙ্কণ, রাজিকা, রুধির, বিষ এবং কণ্টকযুক্ত সনিধ, আর্য ও দৈব-চ্ছন্দ, অভিচার বিষয়ে প্রয়োগ করিবে।

हे छ। एवर बाहि महाश्वारण व्यवस्थित नामक केटे। दिक বিশততম অধান্য সমাপ্ত।

নবাধিক দ্বিশতত্ম অধ্যায়।

উৎপাত শান্তিঃ।

मकन ८वरम्हे,नक्योत्र श्रीजित्र निभिन्न, श्रीमृक ज्ञ ७ ट्रांम कतिवात विशान चार्छ। हित्रगु-ৰণা হরিণী, প্রাভৃতি পঞ্চদশ মন্ত্র, ঋক্ বেদোক্ত জীসৃক্ত। রথেষকেষু বাক, প্রভৃতি চারিটা মন্ত্র ষভুর্বেদোক এস্ক। আবন্তীয়ং এবং দাম: **এই महाबग्न गामरवरमाञ्च अभुकः। ध्वरः खित्रः** वार्ज्यति (पहि, अहे अक्यां वयः, वर्ण्य (राताकः শ্ৰীসুক্ত বলিয়া অভিহিত হইয়াছে।

যে ৰাক্তি ভক্তিপূৰ্বক শ্ৰীসূক্ত কপ মথবা

একমাত্র পৌরুষসৃক্ত পাঠ করিয়া, পদ্ম, বিষ, অথবা ভিল দারা লক্ষ্মীর উদ্দেশে হোম করিলে সর্বার্থ সিদ্ধি হয়। নিতা আনাত্তে নিস্পাপ হইয়া. পুরুষস্কু পাঠ পূর্বক, বিফ্র উদ্দেশে এক এক अञ्जाम जन अरः अरु अरुगि भूष्ट्रा, श्रामान कडिएम, সকল পাপ বিনষ্ট হয়। এক একটা ফল প্রদান করিলে, সকল কামনা পূর্ণ হয়, এবং এক একবার জপ করিলে, মহাপাতক ও উপপাতকাদি নাশ-প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

শান্তি অফাদশ প্রকারণ তমধ্যে অমৃতা, অভয়া এবং সোম্যা এই তিনটীই সর্কোৎপাত-বিমৰ্দিনী প্ৰধানা শান্তি বলিয়া অভিহিত হইয়াছে। অমৃতা এবং দৌম্যাকে সক্ষদৈৰত এবং অভয়াকে আহ্মদৈৰত শান্তি কছে। দিব্য, অন্তরীক্ষ এবং ভৌম এই ত্রিবিধ উৎপাত স্থলে, ত্রিবিধ অন্তত শান্তির কথা বলিতেছি প্রবণ কর। এছ ও নক্ষ-ত্রাদি জনিত উৎপাতকে দিবা, উল্লাপাত, দিগ-দাহ, ও চন্দ্রগ্রমণ্ডলম্ব উৎপাতকে অন্তরীক্ ভূকম্প প্রভৃতি ভূমিজ উৎপাতকে ভৌম কছে।

म्याकिना मगरत, यशि (स्वयृधि मृष्ठ) करत् কম্পিত হয়, প্রস্থালিত হয়, কথা কছে, রোদন করে, থেদযুক্ত হয়, অথবা হাস্ত করে তাহা হইলে, এই অর্চা বিকার উপশ্যের নিমিত,প্রজা পতির হোম করা কর্ত্তব্য।

যে রাষ্ট্রে, আলি ব্যতীত দীপ্তি হয়, দ্বৰ্দ্ধা অতিশয় শব্দ হয়, ইন্ধন প্রাণান করিলেও স্থানীর দীপ্তি না হয়, দেই রাষ্ট্রে অচিরে রাজপীড়া উপ-হিত হইয়া থাকে। এই অমি বৈকৃত্য শমনের নিমিত্ত অগ্নি মন্ত্র খারা হোম কয়া কর্তব্য।

यपि चकारण द्रक मक्न कनिक हग्र. धवः छाहा হোম করে, সে অচলা জ্ঞালাভ করিয়া থাকে। ইইতে রক্তবর্ণ ক্ষীর নির্গত হয়, তাহা হইলে এই

ব্লোৎপাত শান্তির নিমিত, শিবপূজা করা কর্তব্য।

যদি ছুর্ভিকজনক, অভিবৃষ্টি, এবং অনাবৃষ্টি হয়, অকালে ত্রিদিনব্যাপিণী বৃষ্টিধারা পতিত হয়, তাহা হইলে, অতিশয় ভয়ের বিষয় জানিবে। এই বৃষ্টি বৈক্ষত্য নাশের নিমিত্ত পর্ফ্রন্য,ইন্দু ও অর্কের পূজা করা বিধেয়।

যে নগর হইছে নদী, ব্রদ ও প্রস্রবণ সকল অপস্ত হয়, অথবা শুক্তা প্রাপ্ত হয়, তথায় খোরত্তর অমঙ্গল ঘটিবার সন্তাবনা। এই সলিলা-শয় বৈকৃত্য শান্তির নিমিত বারুণমন্ত্র জপ করা কর্ত্তব্য।

যদি নারীগণ অকালে প্রস্ব করে, অথবা প্রস্তানা হয়, কিম্বা বিকৃত ও মুগ্ম প্রস্ব করে, তাহা হইলে, স্ত্রীদিগের প্রস্ব বৈকৃত্য শান্তির নিমিত্ত, স্ত্রী ও বিপ্রাদির পূজা করা কর্ত্ব্য।

যদি বড়বা, হস্তিনী, অথবা গোগণ, যুগা, বিজ্ঞান্তা এবং বিকৃত প্রদাব করে, কিন্তা ছয়নাদের মধ্যে প্রাণত্যাগ করে, তাহা হইলে, পরচক্রভয় উপস্থিত হইয়া থাকে। এই প্রসৃতি বৈকৃত্য-শান্তির নিমিত, জপ, হোম ও বিপ্রদিগের পূজা করা কর্ত্বসঃ।

যথন আকাশে আক্ষিক ত্থানাদ হয়,আরণ্য
মূগ পক্ষী সকল প্রামে প্রবেশ করে, এবং প্রাম্য
প্রাণীগণ অরণ্যে গমন করে, স্থলচরেরা জলমধ্যে,
এবং জলচরেরা স্থলে গমন করে; শিবাসকল
রাজভারে প্রবেশ করে। গৃহমধ্যে প্রদোষ সময়ে
ক্কুট এবং সূর্য্যোদয়কালে, শিবা ও কপোতসকল
প্রবেশ করে, মাংদাশী পক্ষীগণ মস্তক স্পর্শ করে, মক্ষিকাগণ গৃহমধ্যে মধুচক্র নির্দ্ধাণ করে,
কাকের মৈথুনভাব দৃষ্টিগোচর হয়, অকারণে প্রাসাদ, তোরণ, উদ্যান্দার, প্রাকার এবং গৃহাদি
পতিত হইয়া, রাজার মৃত্যু হয়। ধূলি অথবা ধূম
দারা দিকসকল সমাকুল হর, কেতু উদিত হয়,
এহণকালে, চল্লে কিমা সুর্ব্যের মধ্যে ছিল্লে দৃষ্টি
হয়, এবং গ্রহনক্ষজাদির দিকৃতি উপস্থিত হয়।
তথম মহৎ ভয় উপস্থিত হইয়া থাকে। যেখানে
ক্ষয়ি প্রদীপ্তা না হয়, এবং উদককুল্ক হইতে বারি
নিঃস্ত হয়, সেন্থানেও ভয়ের বিষয় সন্দেহ নাই।
এই সকল ছ্নিমিভ উপস্থিত হইলে সরক এবং
ছ্রিকাদি ঘটিয়া থাকে। ইহার শান্তির নিমিত্ত
দিজ ও দেবগণের পূজা এবং হোম করা কর্তব্য।

ইত্যায়েরে আদি মহাপুরাণে উৎপাতশান্তি নামক নহাধিকছিলততম অধান সমাধা

দশাধিক দ্বিশততম অধ্যায়।

দেবপূজা বৈশ্বদেব বলিঃ!

পুক্ষর কহিলেন, উৎপাতমৰ্দ্ধন দেবপূজাদি কর্মাবলিব।

সানান্তে আপোহিন্ঠা, এই মন্ত্র তিন বার
পাঠ করিয়া বিফ্লে অর্ঘ প্রদান করিবে, হিরণ্য:
বর্গা, এই মন্ত্র তিনবার পাঠ করিয়া পাদ্য
দান করিবে। শদ্ম আপ; এই মন্ত্র দারা আচমনার্থ জল প্রদান করিবে। রথে, অক্ষে, এই
মন্ত্র তিনবার পাঠ করিয়া গদ্ধ এবং বস্ত্র দান
করিবে। পূজাবতী; এই মন্ত্র দারা পূজা, ধূপোদি
এই মন্ত্র দারা ধূপ, তেজোদি শুক্রং; এই মন্ত্রে
দীপ,এবং দ্বীতি,এই মন্ত্রেমধুপর্ক প্রদান করিবে।
অন্ধ এবং পানীর নিবেদনে, হিরণ্যগর্ভ প্রভৃতি
অন্ট, ঋক্ পাঠ করা কর্ত্ব্য। চামর ব্যক্তন
এবং উপানহ, ছত্র, বান, আসনাদি যে কোন বস্তু

দেবেদিশে প্রদত্ত হয়, ভাহা সাবিত্রী মন্ত্র ছারা নিবেদন করা বিধেয়। পূজা সমাপন করিয়া পুরুষ সক্ত জপ এবং হোম করিবে।

বেদিতে, জলে, পূর্ণখটে, নদীতীরে, অথবা কমলে বিষ্ণুর পূজা করিলে, শান্তিলাভ হয়।

পরিমাজ্জিত নির্দিষ্ট স্থানে, বিস্তুত কুশো-পরি দীপ্যমান বিভাবস্থতে হোম করা কর্ত্তব্য। অনন্তর বাস্থদেবায় নমঃ, দেবায় নমঃ, প্রভবে নমঃ, অব্যায় নমঃ, অগ্নয়ে নমঃ, সোমায় নমঃ, मिळा हा नमः, वस्त्रभाष नमः, हेस्ता हा नमः, हेस्ता हि ভ্যাং নমঃ। বিশ্বদেবে ভ্যো নমঃ : প্রজাপতয়ে নমঃ ; অসুমূতৈর নমঃ ; ধরস্তর্যে নমঃ ; বাস্তো-স্পাট্ড্য নমঃ : দেবে নমঃ : স্থিষ্টিকতে অগ্নহয় নমঃ। এই বাক্যে প্রত্যেকে মৃত্যুক্ত অক্ত দারা বলিপ্রদান করিবে।

অন্তুর সম্মুখে তেক, উপভক্ষ, পূর্বাদিকে আখা, উর্ণা, নিরুদ্ধী, ধুত্রিনীকা, অশ্বপত্নী, মেঘপত্নী প্রভৃতি শক্তিগণের উদ্দেশে বলি প্রদান করিতে হইবে। পরে নন্দিনী, স্থভাগ্যা, স্থ**ঙ্গলা**, ভদ্র-कानी, औ, हित्रगुरकभी এवः धनम्भि जिरक विनान করিবে ।

পরে ছারদেশে ধর্মাধর্মকে, গৃহ্মধ্যে ভৃগুকে, বহিদারে মৃত্যুকে, উদকাশয়ে, বরুণকে, বহি-র্ভাগে ভূতগণকে এবং গৃহাভান্তরে ধনদকে বলি क्षमान कतिरव ।

भानवर्गन, हेन्स अवः हेन्स् शूक्षिन रक विन-প্রদান করিবে। যম এবং যমপুরুষদিগের উদ্দেশে দক্ষিণদিকে বলিপ্রদান করিবে। বরুণ এবং বরুণপুরুষগণের উদ্দেশে পশ্চিমদিকে বলিপ্রদান করিবে। অনন্তর সোম এবং দোমপুরুষদিগের

ছণ্ডিলে এবং ক্ষিভিডে, দিবসে দিবাচরদিগের উদ্দেশে এবং রাত্রিতে রাত্রিচরদিগের উদ্দেশে প্রতিদিন বলি প্রদান করিবে।

নিত্য আছে, প্রাতঃকালে এবং সায়ংকালে পিণ্ড নির্কাপন করিবে না। প্রথমে পিতার উদ্দেশে তৎপরে পিতামছের উদ্দেশে তদনম্ভর প্রপিতামহের উদ্দেশে তাহার পর মাতা এবং পিতামহীর ও প্রপিতামহীর উদ্দেশে পিওদান করিবে। দক্ষিণাগ্র কুশের উপর এই দকল পিগু প্রদান করা কর্ত্তব্য ।

অনস্তর হে কাকসকল। মদত এই পিও গ্রহণ কর। এই বলিয়া কাকদিগকে পিওদান করিয়া, কুরুরের উদ্দেশে পিগুদান করিবে। বিবশ্বতকুলে শ্যাব ও শবল নামে ভুইটি কুকুর জিমিমাছিলেন, আমি তাঁহাদিগের উদ্দেশে এই পিও দান করিতেছি, তাঁহারা আমাকে সর্বাদা রক্ষা ক্রক্রন।

হে দর্বহিতকারিণী দৌরভেয়ি ! তুমি পরম পবিত্রা এবং পাপনাশিনী। ত্রৈলোক্য মাতঃ মদত এই আদ গ্রহণ কর। এই বলিয়া গো-আদ প্রদান করিবে। গৃহস্থ ব্যক্তি, অতিথি এবং দীনব্যক্তিদিগকৈ ভোজন করাইয়া স্বয়ং ভোজন করিবেন।

অনন্তর ওঁং ভুঃ স্বাহা; ওঁং ভুবঃ স্বাহা, ওঁং 'ষ সাহা; 'ওঁ' ভুভুবিষ স্বাহা। 'ওঁ' দেবকুত স্তেনসোহৰ যজনমদি স্বাহা। ওঁং পিতৃকৃতস্থেন দোহৰ যজনমদি স্বাহা। ওঁং আত্মকৃতকৈন দোহৰ যজনমদি স্বাহা। ভং মনুসাকৃত সৈনে-সোহৰ যজনমদি স্বাহা। তং এনসঃ এনসোহৰ यक्रममि शाहा। यक्राहरमत्ना विचाः महकाद উদ্দেশে জল দান করিবে। আকাশে, উর্চ্চে, যিচচাবিদ্বাংস্তদ্য দর্ববৈদ্যনদোহৰ যজনমণি স্বাহা।

শারে স্বিষ্টিকতে সাহা। ওঁং প্রজাপতার সাহা। এই সকল মন্ত্রে আছতি প্রদান করিবে। বিষ্ণুপ্জা এবং বৈশ্বদেব বলির বিষয় এই কীর্ত্তন করিলান।

ইত্যায়েরে আহ্মিছাপ্রাণে দেবপুলা বিশ্বদেব বলিনাহ দশ্ধিকবিশতক্য অধারি সমাধ্য ।

একাদশাধি হদিশততম ভংগার।

বিনায়ক স্থান।

পুকর ক**হিলেন, সর্ক্মঙ্গলকর** বিনায়ক স্থান বলিব।

পিতামহ, বিশ্বু এবং মহেশর, বিনায়ককে কর্ম্ম বিশ্ব বারণের নিমিত্ত গণাধিপত্যে নিযুক্ত করিয়া-ছেন। অতএব দকল কর্ম্মের আদিতে গণপতির অর্চনা আবশ্যক। না করিলে, নামাবিদ্ধ উপন্থিত হইয়া থাকে। সকল উদ্যম বিদ্ধল হয়, অকা-রণে শারীরীক ও মানদিক ক্লেশ উপস্থিত হয়, কত্যা বর লাভ করিতে পারে না; বরাঙ্গনাগণ অপত্যলাভে বঞ্চিত হয়েন; শ্রোজিয়, আচার্যান্থ লাভ করিতে পারেন না; শিষ্য অধ্যয়ন করিতে পান না; ধনী ব্যক্তি রাজ্য লাভ করিতে পারেন না। এই হেতু আদেশ গণপতির স্নান ও পূজা করা কর্ত্ব্য।

আখিনমাদে বুধবারে ঘাদশী তিথিতে হন্তঃ
এবং পুধানক্ষত্রে শুভ স্থানে, গণমূর্ত্তি স্থাপন
করিয়া আজ্যমিশ্রিত গৌরদর্ঘপ কল্ক দারা গাত্র
মার্জন করিয়া দিয়া মন্তকে সর্কৌষ্ধি এবং সর্কা
গন্ধ লেপন পূর্বক চারি কলস জল প্রদান
করিবে; অনন্তর অখন্থান মৃত্তিকা, গজন্থান
মৃত্তিকা, বল্মীক মৃত্তিকা হ্রদ, মৃত্তিকা, গোরোচন,

কুত্বন শুণ্ডলাদি প্রদান করিয়া, বলিবে;—জুমি ইন্দ্রাদি দেবগণকে এবং ঋষিগণকে পবিত্র করি-রাছ; আমি তোমাকে স্নান করাইতেছি, আমা-কেও সেইরূপ পবিত্র কর। তোমার প্রসাদে বরুণ, সূর্য্য, রহস্পতি ইন্দ্র, বায়ু এবং সপ্তর্ষিগণ আমাকে ধন্দৈখর্য্য প্রদান করুন। আমার মস্তকে, কেশে, সীমন্তে, ললাটে, কর্ণে এবং অক্ষিতে যে ভূর্জাগ্য সঞ্চিত হইয়াছে, এইজল ভাহা বিনষ্ট করুন।

অনন্তর বামহান্তে দর্ভপাত্র গ্রহণ করিয়া কুশাগ্র ধারণ পূর্ববিক উভূম্বরীয় শ্রুব দারা হোম করিবে। নমস্কারমুক্ত নাম, বলি,মন্ত্র এবং দ্রব্যাদি দারা স্বাহা উচ্চারণ পূর্ববিক মর্চনা করিবে।

চতুষ্পথে শৃপের উপর কুশ বিস্তার করিয়া ধান্য;ততুল,পলল পকও অপক ওদন,মৎস্য,পূষ্পা, ত্রিবিধ হ্বরা, পুরি, পিউক, দধি, অন্ন, পারস, মোদক এবং গুড় অর্পণ পূর্বিক বিনায়ক জননী অস্বিকার উপাসনা করিবে।

অনস্তর দুর্কা এবং সর্বপ পুল্প দারা অর্ঘ্য প্রদান প্রক প্রার্থনা করিবে, হুভগে! আমাকে রূপ, যশ, সোভাগ্য, পুত্র, ধন এবং সর্কাভীষ্ট প্রদান কর। এইরূপে বিনায়কের আরাধনা করিয়া আক্ষণদিগকে উৎকৃষ্ট ভোজন এবং বস্ত্র যুগ্য দারা সস্তুষ্ট করিলে সকল কর্মাফল লাভ হইয়া থাকে।

ইডাাগ্রের আদিমহাপুরাণে বিনায়কসনে নামক একাদ্শাধিক:গুশতভম অধ্যায় সম্পুর

দাদশাধিকদিশতত্ম অধ্যায়।

দিক্পালাদি স্নান।

অগ্নি কহিলেন, সর্ব্বার্থসাধন শান্তিকর স্নানের বিষয় বলিব।

বিচক্ষণ ব্যক্তিগণ, দরিতীরে গ্রহণণকে এবং
বিফুকে স্নান করাইবে। গ্রহণীড়িত হইলে,
অথবা জ্রাদি রোগে পতিত হইলে, দেবালয়ে,
বিদ্যাকামনা করিয়া হ্রদে, জয়কামনা করিয়া
তীর্থে এবং যে সকল স্ত্রীদিগের গর্ভস্রাব হয়,
তাঁহারা গর্ভরক্ষাব নিমিত্ত পদ্মবিশিক্ট জলাশয়ে
গ্রহণণ ও বিফুকে স্নান করাইলে মঙ্গল লাভ করিতে
পারেন।

বাঁহার পুত্র জন্মিয়া বিনাশপ্রাপ্ত হর, তিনি তরু সমিধানে সান করাইবেন। পুষ্পার্থী ব্যক্তি পুষ্পাত্যস্থানে এবং পুজার্থী ব্যক্তি সাগরে, অমুনরাধা, রেরভী এবং পুষ্যানক্ষত্রযোগে যথাবিধি গ্রহগণের স্থানকার্য্য সম্পাদন করিলে সিদ্ধন্যনার্থ হইয়া থাকেন।

যিনি সর্বার্থমঙ্গলের নিমিত্ত গ্রহ্মান করাইতে অভিলাব করেন, তাঁহার সপ্তাহ পূর্বে যতব্রত হইয়া পুনর্ণবা, রোচনা, শতাঙ্গ, মধুক তগর,
রজনী, নাগকেশর, অম্বরী, মঞ্জিষ্ঠা মাংসী, প্রিয়ঙ্গ,
সর্বপ, ক্র্ম এবং শক্তবুমিতা পকগব্য ভারা স্নান
করান কর্তব্য। পত্রে সায়ুধ স্বাহন ইন্দ্রাদি
দেবগণের মূর্ত্তি লিখিয়া প্রদক্ষিণ প্রণামাদিপূর্ব্যক
স্মানার্থ জল দান, পূজা এবং হোম করা কর্তব্য।
অনস্তর বিষ্ণু, ব্রহ্মা, ঈশ, শক্ত এবং তাঁহাদিগের
ক্সেসকলের পূজা ও তত্তদেশে হোম করিবে।

প্রত্যেক দেবতার উদ্দেশে অফ্টশত হৃত্যুক্ত সমিধ এবং ভিল দান করিবে। ভদ্র, হৃভদ্র, দিছার্থ, চিত্রভামু, পর্জ্জয়্য, হলর্শন, রুজে, মরুদ্রাণ, বিশ্বেদেবগণ, দৈত্যগণ, বহুগণ, ঔষধীনিক্ষেপ এবং জয়ন্তী, বিজয়া, জয়া, শতাবরী, শতপুপা অপরাজিতা, চেয়াতিঅতী, অতিবলা, চন্দন, উশীরকেশর, কন্তুরিকা, কপূর, বালক, পত্রক, জাতীকল, লবঙ্গ, মৃত্তিকা ও পঞ্চাব্য প্রদানপূর্বক ভদ্রপীঠন্থিত উল্লিখিত দেবগণকে স্থান করাইবে। অনন্তর রাজাভিষেক মজ্যোক্ত দেবগণের পৃথক্ পৃথক্ পৃজা এবং হোম করিয়া পূর্ণাছতি প্রদান পূর্বক গুরুকে দক্ষিণা দান করিবে। পূর্বকালে ইন্দ্র গুরুকে অভিষিক্ত ইয়া দিক্পাল স্থান এবং সংগ্রাম জয়াদির বিষয় বলিয়াছিলেন। ইত্যায়েরে আদিমহাপ্রাণে দিক্পালার লাম নামক বালণাধিক

ত্ৰয়োদশাধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

ছিশততম অধায়ে নমধা ।

পুক্ষর কহিলেন, পূর্বের ভগবান্ উপনা দান-বেন্দ্র বলিকে রাজাদিগের জয়বর্দ্ধন মহেশ্বর স্নানের বিষয় যেরূপ বলিয়াছিলেন, এখন ভাহা বলিব।

প্রাতে ভাকর উদিত না হইতে, পীঠোপরি উঁং নমো ভগবতে রুদ্ধায় বলায়চ। এই মন্ত্রে জলপূর্ণ ঘটদারা মহেশরকে স্নান করাইব। পরে হে ভস্মাসুলি প্রগাত্র ভগবান্ রুদ্র! আমাদিগের জয় বিধান করুন, শক্রেসকলকে বিনাশ করুন এবং কলহ, বিগ্রহ, ও বিবাদ ভগুন করুন। এই রূপ প্রার্থনা করিয়া, ওঁং মথ মথ হে দম্বর্তকায়ি তুল্য ত্রিপুরান্তকর শিব! তুমি প্রলয়কালে সহস্রোংশুমান্ শুরুবর্ণ রৌদ্রমূর্ত্তি ধারণ করিয়া জগৎ দশ্ধ ক্রিয়া ধাক। তুমি আমাদিগকে রক্ষা

কর। লিখি লিখি থিলি স্বাহা। এই মন্ত্রারা পুনঃস্লান করাইয়া তিল তণ্ডুলদ্বারা হোম করিবে। অনন্তর পঞ্চায়ত দ্বারা স্লান করাইয়া শূল-পাণির পূজা করিবে। বিজয় লাভার্থে অন্তান্ত দ্রব্য দ্বারা স্থান করাইবার যে বিধান আছে তাহা বলিতেছি।

ত্মত ভারা সান করাইলে আয়ুর দ্ধি হয়,গোময় **ঘারা সান করাইলে, লক্ষ্মী লাভ হয়; গোমূত্র** মারা স্নান করাইলে, পাপ বিনষ্ট হয়। ষারা সান করাইলে বল এবং বৃদ্ধি লাভ হয়। দধি ছারা স্নান করাইলে লক্ষী বিবৰ্দ্ধিতা কুশোদক দ্বারা স্নান করাইলে কিছুমাত্র পাপ থাকে না। পঞ্গব্য করাইলে দর্বার্থ দিদ্ধি হয়। শত মূল ছারা স্নান করাইলে, যাহা অভিলাষ করে, তাহাই লাভ করিতে পারে। গোশুঙ্গ দারা স্নান করাইলে, রাজ্য জয় করিতে পারে। পলাশ, বিহু কমল, এবং কুশ মারা স্নান করাইলে, কোন অভাব থাকে না। বচা, হরিদ্রা এবং মৃস্তা দ্বারা স্নান করাইলে, রক্ষ ভয় মিবারণ হয় এবং আয়ু, যশ্ ধর্ম ও মেধা বিবর্দ্ধিত হয়। হেম রোপ্য ও তাডোদক দারা স্থান করাইলে পরম মঙ্গল লাভ হয়। রজ্বোদক দারা স্থান করাইলে বিজয় লাভ হয়। সর্বপ্রকার গন্ধদ্রণ্য দ্বারা স্থান করাইলে শেভাগ্য লাভ হয়। আমলকী ফলের জল দ্বারা স্থান করাইলে উৎকৃষ্ট গতি লাভ হয়। তিল এবং দিদ্ধার্থকজলের স্বারা স্নান করাইলে,সোভাগ্য লক্ষা লাভ হয়। উৎপল এবং কদম্বোদক দ্বারা স্থান করাইলে বল বৃদ্ধি হয়। বিষ্ণু পাদোদক দ্বারা দ্বান, দকল প্রকার দ্বান অপেকা উৎকৃষ্ট।

ষিনি একাকী একচিত হইয়া, করে মণি বন্ধন

পূর্বিক "অক্রন্দয়তি" এই দৃক্ত দ্বারা বিধিবৎ অর্কের উপাদমা করেন এবং বচা, শুঠী, শন্ধা, লোহ ও মণি প্রভৃতি দ্বারা তাঁহার পূজা করেন, ভগবান্ অর্ক তাঁহার সকল মনোরথ সকল করিয়া থাকেন। দূর্ব্যের পূজা এবং দান দ্বারা সকল কামনাই পূর্ণ হয়। ভক্তিপূর্বেক স্থত এবং ক্ষীর দ্বারা দান করাইয়া এবং পিত্তহা পঞ্চমূদ্য বলি দ্বারা পূজা করিয়া মানবগণ অতিদার হইতে মুক্তিলাভ করিয়া থাকেন। পঞ্চাব্য দ্বারা দ্বান করাইলে বাত ব্যাধি এবং দিক্রেছ দ্বায় দ্বান করাইলে কো ব্যাধি এবং দিক্রেছ দ্বায় দ্বান করাইলে, শ্লেমারোগ বিন্ট হইয়া থাকে।

স্ত, তৈল এবং মধু এই ত্রিস হারা সান অতি প্রশস্ত। স্ত এবং অনু, অথবা স্ত ও তৈল কিলা মধু ইক্রুস ও কীর এই ত্রিবিধ মধুর দ্রেয় হারা সান করাইলে স্থ্যদেব অভিশয় প্রশন্ন হইয়া ধাকেন।

কপূর, উশীর এবং চন্দন এই ত্রিবিধ শুরুদ্রব্য অথবা চন্দন, অগুরু, কপূর, মৃগদর্প এবং কুরুম এই পঞ্চবিধ দ্রব্য হারা বিষ্ণুর অন্যুলেপন করিলে, দর্বাভীষ্ট দফল হয়। কপূর, চন্দন, কুরুম, এই তিন প্রকার হুগন্ধ দ্রব্য হারা অন্যুলেপন করি-লেও অভাষ্ট লাভ হইয়া থাকে। কপূর্ব এবং চন্দনমিশ্রিত জাতীকল এবং শুরু, পীত, রুষ্ণ, রক্ত, নাল এই পঞ্চ বর্ণের রত্ম, রক্তোৎপল কুরুম ও ধূপাদি হারা বিষ্ণুর অর্চ্চনা করিলে, সমুয্য-দিগের দকল শান্তি হইয়া থাকে। চারি হস্ত পরিমিত, চতুরস্র কুণ্ডে, গ্রহগণের অর্চ্চনা করিয়া গায়ত্রী মন্ত্রে তিল, আজ্য, যব এবং ধানা হারা আট জন ব্রাহ্মণে লক্ষ এবং বোল জন ব্রাহ্মণে কোটি কোটি হোম করিলে দকল আপ্রহ্ শান্তি হয়।

চতুৰ্দশাধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

নীরাজনা বিধি।

পুদ্ধর কহিলেন, প্রতিমাদে, জন্মনক্ষত্তে চন্দ্রসূর্য্যের সংক্রমণকালে রাজাদিগের, তত্তৎ দেবতাগণের পূজা করা কর্ত্তব্য । রাজা, অগস্ত্যোদয়ে,
অগস্ত্যের এবং চাতুন্মাস্যত্রতে হরির পূজা করিবেন। হরিশয়নে এবং উত্থাপনে শুক্রপক্ষের প্রতিপৎ আদি পাঁচদিন মহোৎসব কাষ্য করিবেন।
শিবিরের পূর্ব্বদিগ্ভাগে শক্রার্থ গৃহ স্থাপন করিয়া
তাহাতে ধ্বজারোপণপূর্ব্বক শচী এবং শক্রের
পূজা করিবেন। অন্তমীতে বাদাঘোষণা দ্বারা
সেই ধ্বজা প্রবেশ করাইয়া একাদশীতে উপোযিত থাকিয়া দ্বাদশীতে, কেতু উত্থিত করিবে।

অনন্তর বস্ত্রাদি দারা আয়ত করিয়া ঘটস্থ শচী এবং ইন্দ্রের পূজা করিয়া কহিবে।

হে জিতামিতা! হে ইন্দ্রা হে বৃত্তহন্! হে
পাকশাদন! তুমি বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হও। হে দেবদেব
মহাভাগ! তুমি ভূমওলে অবতীর্ণ ইইয়াছ। তুমি
প্রভু, তুমি নিত্য, তুমি দর্বাভূতের হিতবিষয়ে,
রত। তুমি অনস্ততেলা এবং দীপ্তিমান্। তুমি
মনুষ্যদিগের যশ এবং জয়বর্দ্ধন করিয়া থাক।
হে শক্তঃ! দেবগণ ভোমার তেজবৃদ্ধি করুন, তুমি
স্বৃষ্ঠিকৃৎ হও।

হে শটাপভে! ব্রহ্মা, বিফু, মহেশ্বর, কার্তি কেয়, বিনায়ক, আদিত্যগণ, বহুগণ, রুদ্রগণ, সাধ্যগণ, ভৃগুগণ, দিক্পালগণ, সরুৎগণ, লোক-পালগণ, গ্রহণণ, যক্ষগণ, অদ্রিগণ, নদীগণ, সমুদ্র-গণ এবং জ্ঞা, মহী, গৌরী, চন্তিকা ও সরস্বতী ভোষাকে তেজ প্রদান কর্মন। ভূমি জয়যুক্ত रव। टामात अय श्रेटल हे आमानिरगत मधन स्टेटन।

তুমি রাজা প্রজা এবং বিপ্রগণের প্রতি প্রসম

হও। তোমার প্রসাদে পৃথিবী নিত্য শস্যেতী

হউক, সকলে নির্কিছে মঙ্গল লাভ করুক এবং

অতিরৃষ্টি অনারৃষ্টি প্রভৃতি ঈতি সকল সম্পূর্ণরূপে
বিন্তু হউক। রাজগণ, এই মন্ত্র ছারা ইন্দ্রের
আরাধনা করিলে, পৃথিবী জয় করিয়া স্বর্গে গমন
করিতে পারেন।

় জয়ার্থী হইযা, আখিনমাদের শুক্লাকীমীতে পটে ডদ্রকালীর মূর্তি লিখিয়া এবং আয়ুধ কার্মানুকাদি শস্ত্রদকল ও ধ্রজাছত্রচামরাদি রাজচিহ্নদকল ভাপন করিয়া যথাবিধি পূজা করিবে। রাত্রিভে জাগরিত থাকিয়া বলিপ্রদান পূর্বক পর দিবস পুনর্বার পূর্ববং পূজা করিয়া প্রার্থনা করিবে। হে ভদ্রকালি! হে মহাকলি! হে হুর্গে! হে ছুর্গতিহারিণি! হে জ্রেলোক্যবিজয়ে! হে চণ্ডি!মাতঃ! প্রদাম হইয়া আমার শান্তি এবং যশ বিধান করুন।

এক্ষণে নীরাজনা বিধি বলিব। ঈশানদিকে তোরণত্রিতয়বিশিক্ত এক মন্দির নির্মাণ করাইয়া যে দিন সূর্য্য চিত্রানক্ষত্র পরিত্যাগ করিয়া স্বাতীতে গমন করিবেন, দেই দিন হইতে যে কয় দিন স্বাতীতে অবস্থিতি করিবেন, দে কয় দিন উক্ত মন্দিরে ত্রেলা, বিক্লু, শস্তু, শক্তা, অনিল বিনায়ক, কুনার, বরুণ, ধনদ, যম, বিশ্লেদেবগণ, বৈশ্লাবগণ এবং কৃষদ, ঐরাবণ, পদ্ম, পুত্র্পদস্ত, বামন, স্প্রতীক, অপ্রন, নীল, এই অন্টগজের পূজা করিবে। পুরোহিত সমিৎ, সিদ্ধার্থক, এবং তিল মিশ্রিত আজ্য ভারা উক্ত দেবগণের উদ্দেশে হোম করিবেন। অনন্তর অক্টকুল্কের অর্চনাপুর্ব্যক কুক্তক্ত

জল ধারা অধ ও গজদিগকে স্থান করাইয়া তাহা-দিগকে আস প্রদান করিবেন। গৃহমধ্যে রাজ-চিহ্লাদির পূজা করিয়া বিজয়ার্থ নির্গত হওয়া কর্ত্তব্য।

রাজী শতন্দিষা নক্ষত্রযুক্তা কৃষ্ণাত্রয়োদশীতে বল্লগের অর্চনা করিয়া রাজিতে ভৃতবলি প্রদান করিবেন। বিশাধানক্ষত্রে সূর্য্য গমন করিলে, রাজা গৃহে বাস করিবেন এবং তদ্দিনে বাহন-দিগকে বিশেষরূপে অলক্ষত করিবেন। হস্তি, অশ্ব, ছত্র, খড়গা, চাপা, ছুন্দুভি, ধ্বজা, পতাকা প্রভৃতি রাজচিক্ষ সকল অভিমন্ত্রিত করিয়া বিজয় যাত্রা করিবেন। যাত্রাকালে অক্রাদি যুদ্ধোপকরণ সকল, হস্তির পৃষ্ঠে স্থাপন পূর্বক, শ্বয়ং হস্তীপৃষ্ঠে আরোহণ করিয়া, চত্রক্ষ বলের সহিত পুরন্ধার দিয়া, নির্গত হইবেন। অনস্তর স্থসমাহিত হইয়া ভিনবার মন্দির প্রদক্ষিণ পূর্বক গৃহে প্রতিগমন করিবেন। ইহাকেই মঙ্গলদায়িনী রিপুমর্দনী নীরাজনাখ্য শান্তি কহে।

हेड्यारधरव व्यक्तिमहाभूवारण नीवास्त्रनादि ध नामक हर्जुक्षम् विकष्णण्डका व्यवधार नमास्त्र।

পঞ্চশাধিকদ্বিশতত্ব অধ্যায়।

ছত্রাদি মন্ত্রাদয়।

পুন্ধর কহিলেন, ছত্রাদির মন্ত্র সকল বলিব। এই মন্ত্রে পূজা করিলে পৃথিবীপালগণ জয়াদি লাভে কৃতকার্য্য হইতে পারেন।

হে চছত্র ! তুমি তুষার, কুন্দ এবং ইন্দুর ন্যায় শুক্রবর্ণ। হে মহামতে । অস্থুদ ধেমন মঙ্গ-দের নিমিত্ত এই বস্থারাকে আচ্ছাদন ছারা রক্ষা করেব। তুমি দেইরপে বিজয় ও আরোগ্য বর্জ- নের নিমিত্ত রাজাদিগকে আচ্ছাদন প্রদান কর। তুমি ভগবান্ সূর্য্যের প্রভাবে পরিবর্দ্ধিত হও।

হে তুরঙ্গম ! তুমি গন্ধর্বকুলে জন্মগ্রহণ করিরাছ, দেখিও, যেন, কুলদ্বক হইও না । অক্ষার
দত্যবাকো, সোম, বরুণ এবং ছতাশনের প্রভাবে,
দুর্য্যের তেজে, মুনিগণের তপস্যায়, রুদ্রের অক্ষচর্যায় এবং পবনের বলে, তুমি রন্ধিপ্রাপ্ত হও ।
অক্ষহা, পিতৃহস্তা, মাতৃহস্তা, ভূমিলাভের নিমিত
মিথ্যাবাদী এবং পরাজ্ম ধ ক্ষজিয়দিগের যে পাপ
এবং যে গতি হইয়া থাকে, তুমি সে পাপ এবং
দে গতি প্রাপ্ত হইও না । স্কার্য প্রিগমনকালে,
বিকৃতি প্রাপ্ত হইও না । সমরে শক্রনাশ করিয়া
ভর্তায় সহিত স্থাপ অবস্থিতি কর ।

হে শক্তকেতো! তুমি নারায়ণধ্বজ, তুমি
বিকুর বাহন, পতত্রিবাট্ বৈনতের! তুমি কাশ্যপেয়, নাগারি এবং অমৃতের আহর্তা। তুমি অপ্রমেয়, তুরাধর্ষ এবং দেবারিনিসূদন। তুমি মহাবল,
মহাবেগ, মহাকায় এবং অমৃতাশন। তুমি গরুআন্ এবং মারুতগতি। শক্রের নিমিত্ত দেবদেব
ভগবান্ বিষ্ণু তোমাকে স্থাপন করিয়াছেন। তুমি
সদয় হইয়া আমার জর বিধান কর, বলবৃদ্ধি কক,
অস্থা, আয়ুধ ও যোধদিগকে রক্ষা কর এবং
আমার রিপুদিগকে দক্ষ কর।

কুমুদ, ঐরাবণ, পদ্ম, পুল্পদণ্ড, বাদন, হুপ্রতীক, অঞ্জন এবং নীল, এই অফদেবগজ এবং
ইহাদিগের পুত্র পৌজাদি, ভদ্র, মন্দ, মৃগ এবং
সংকীর্ণ প্রস্থৃতি বনপ্রসূত্র মহাগজদিগকে, বহুগণ,
রুদ্রগণ, আদিভ্যুগণ এবং মরুদ্রগণ রক্ষা করুন।
হে নাগেন্দ্র ! তুমি তোমার ভর্তাকে রক্ষা কর এবং সময় পালন কর। ঐরাবভাধিরত, বন্তব্যন্ত দেবরাজ শতক্রতু, তোমার পৃষ্ঠগত হুইয়া, সর্ব্বদা

তেখাবাকে রক্ষা কর্মন। ভূমি যুদ্ধে জয় লাভ করিয়া হুস্থচিত্তে গমন কর। তুমি সোম হইতে ঞী, বিষ্ণু হইতে বল, সৃধ্য হইতে ভেল, অ্মি হইতে গতি, গিরি হইতে কৈথা, রুদ্র হইতে জয় এবং দেব**রাজ পুরন্দর হইতে যশ লাভ** কর। দেবতাদিগের সহিত দিঙনাগগণ তোমাকে রক্ষা গন্ধর্বগণের সহিত অখিনীকুমারছয় তোমাকে রক্ষা করুন। আদিতোর সহিত মনু, বহু, রুদ্র, সোম, বায়ু, মহর্ষি, নাগ, কিমন, ভুত-গণ, গ্রহণণ এবং প্রমথগণ ও মাতৃগণের সহিত ভূতনাথ তোমার মঙ্গল করণন। শক্ত, সেনাপতি কার্ত্তিকেয় এবং বক্ষণদেব, ভোমাতে আপ্রায় क्रविशा तिश्रागटक मध्य करूम। ट्लामात भावनानं, ভোমার প্রতি যে দকল অন্ত্র প্রয়োগ করেন, তাহা তোমার তেজে আহত হইয়া, তাহাদিগের সহিত পতিত হউক। কালনেমী, বধকালে, ত্রিপুর হাতন সময়ে, হিরণ্যকশিপুর যুদ্ধে এবং অহুর নাশকালে, ভূমি যেরূপ শোভা প্রাপ্ত হইয়া-ছিলে, অদ্য সেইরূপ সুশোভিত হও।

হে পতাকে! আমরা তোমার উপাদনা করিতেছি, ভূমি বিবিধ অস্ত্র এবং ঘোরতর ব্যাধি ছারা রাজাদিগের অরিগণকে বিনাশ কর। ভূমি প্তনা, রেবতী, লেখা এবং কালরাত্রি নামে অভিহিত হইয়াছ। সর্বমেষ মহাযত্তে দেব-দেব ত্রিশ্লীকর্তৃক জগতের সকল সারভূত দ্রুব্যের ছারা ভূমি নির্মিত হইয়াছ। এক্ষণে আমাদিগের মকল বিধান কর।

হে থড়গ। তুমি নীলোৎপলদলের ন্যায় প্রাম্ এবং কৃষ্ণবর্ণ। তুমি ছ: বপ্প সকল বিন্দ্র করিয়া থাক। পূর্বেকালে স্বয়স্কু এক্ষা, ভোষার স্থান, বিশসন, খড়গ, তীক্ষধার ছ্যায়দ, শ্রীগর্জ, বিজয় এবং ধর্মপাল, এই অফ নাম নির্দেশ করি-য়াছেন। হে নিজিংশ। কৃত্তিকা ভোষার নক্ষত্র, মহেশর ভোষার শুরু, হিরণ্য ভোষার দেহ এবং জনার্দন ভোষার দেবতা। ভূমি রাজাদিগকে বলের সহিত রক্ষা কর।

হে বর্মন্! তুমি সমরে মঙ্গল বিধান করিরা থাক। তোমার প্রদাদেই সৈন্যগণ ঘল লাভ করে। হে অনঘ! আমি তোমার রক্ষীয়, জত-এব আমাকে সকল প্রকার আপৎ হইতে রক্ষা কর। তোমাকে নমস্কার।

হে হৃদ্ভে ! তুমি নির্ঘেষ বারা শক্তেদিগের হলয় প্রকম্পিত করিয়া থাক । রাজার সৈন্যগণের যাহাতে জয় লাভ হয়, তুমি রূপা করিয়া তাহা কর। মেহ গর্জন করিলে প্রধান হতিগণ যেমন আনন্দিত হয়, তোমার শক্তে আমাদিগের সেইরূপ হর্ষ বর্জন হউক। জীয়ুত-ধ্বনি প্রবণ করিয়া, স্ত্রীগণ যেমন ত্রাসমূক্ত হয়, তোমার শক্তে আমাদিগের শক্তেগণ ষেইরূপ সন্ত্রাসিত হউক।

দৈবজ্ঞ পুরোহিত জয়াদি কার্য্যে এই সকল
মন্ত্র্যোগে রাজাদিগের অভিষেক করিবেন।
ইঙ্যাথেরে আদিনহাপ্রাণে প্রাদিমর নামক পঞাধিক
বিশততম অধ্যার সমাধ্য।

ষোড়শাধিকদ্বিশততম অধ্যার।

গোরীপ্রতিষ্ঠা কথন।

ঈশর কহিলেন, হে গুছ! এক্ষণে গোরী-প্রতিষ্ঠা এবং তৎপূজার বিষয় বলিব প্রবণ কর। পুরোভাগে বেদিকা নির্দ্ধণ করাইয়া, তাহাতে শয্যাবিভাসপূর্বক ভাহার উপর হরগোরী মূর্ডি সংস্থাপন করিবে। অনন্তর শক্তিমন্ত্র দ্বারা জিয়াশক্তি স্বরূপিনী দেবীর ধ্যান, হোম এবং জপাদি
করিয়া, বেদিকার উপর রক্তাদি সংস্থাপনপূর্বক দদেশব্যাপিকা, শিব নাদ্ধী অন্ধিকার আবাহন করিয়া, পূজা করিবে।

ভং আধারশক্তয়ে নমঃ; ভং কৃশ্মীয় নমঃ; ওঁংকদশার নমঃ; ওঁং ব্রীং নারাগ্রণায় নমঃ: ভঁং ঐশ্বর্যায় নমঃ; ভঁং আং অধচ্ছদায় নমঃ; ওঁং পলাদনায় নমঃ; ওঁং উর্জিছদায় নমঃ: এই রূপ পূজা করিয়া ওঁং কেশবায় নমঃ; ওঁং হ্রীং কৰিকায় নমঃ; ওঁং কং পুকরেভ্যো নমঃ; ওঁং दाः शूरेका नगः : द्वीः ठ क्वानारेश नगः : इः ক্রিয়াটয় নমঃ; ওঁং নালায় সমঃ; বাং ধর্মায় নমঃ; বাং জ্ঞানায় বৈ নমঃ: ৩ং বৈরাগ্যায় নমঃ; 'জং বৈ অধ্যায়ি নমঃ; রাং জ্ঞানায় বৈ নমঃ; বাচে নমঃ ভং চ রাগিলৈ নমঃ; चरेनभर्याय नगः; रेजः जानिरेना ভং হোং শুমারৈ নমঃ: হুং नगः ; जुँ रङ्कार एकार रङ्कार नवभारतेका नगः : গো গোব্যাদনার নমঃ : গোং গোরীমূর্ত্তয়ে নমঃ : অনন্তর গোরীর মূলমন্ত্র উচ্চারণ করিবে। ভং होः मः: बहारशीती ऋजनशिए साहा। रशीर्या ममः : गाः र: हीः निटवे छः निचरित्र कवनात्र নমঃ ; গোং নেত্রায় নমঃ ; গেং অন্তায় নমঃ : ওঁলোং বিজ্ঞানশক্তয়ে নমঃ; ওঁং ৩ং ক্রিয়া-भक्टरय नमः। शृद्धिमित्क हैन्द्रामि (मवर्गामद छेटमार्भ উংসংহভগায়ে নসং। কামশালিনী মন্ত্র দারা গোরী প্রতিষ্ঠা করিয়া পূজা এবং জপ করিলে, মৰ্ক্ত মৌভাগ্য লাভ হইয়া থাকে।

> ইত্যাগ্রেছ আদম্বলপুরালে গৌরীপ্রতিষ্ঠা নামক ্যাচশাধিক্ষিণ্ডতম অধ্যায় সম্প্র

সপ্তদশাধিকদ্বিশততম ৬,ধ্যায়।

সূর্য্যপ্রতিষ্ঠা কথন।

ঈশ্ব কহিলেন, সূর্যপ্রতিষ্ঠার বিষয় বলিব।
পূর্ববিৎ মণ্ডপাদি নির্দ্ধাণ করাইয়া পূর্ববিধানামুদারে স্নান এবং পূজা করিবে। অনন্তর শ্যাা
এবং আদনোপরি ভাস্করমূর্ত্তি সংস্থাপন করিয়া
তাহাতে ত্রিতত্ব এবং স্বাদি পঞ্চক বিন্যাদ
করিবে। পূর্ববিৎ আদনাদি শুদ্ধি ও ভাস্করমূর্ত্তির শোধন করিয়া, সদেশপদ পর্যন্ত পঞ্চত্ববিন্যাদপূর্ববিক শক্তি অমুদারে অয়ি সংস্থাপন
করিবে।

অনস্তর গুরু আবরণ দেবগণ এবং শক্তিগণের সহিত বিধিবৎ সূর্য্যমূর্তি প্রতিষ্ঠা করিয়া আদিত্য-মন্ত্র দ্বারা পূজাদি কার্য্য সমাধা করিবে।

> ইত্যাগ্রেষে আলিমহাপুরাণে স্থ্যপ্রতিষ্ঠা নামক প্রদশাধিকজিশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

অফদশাধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

প্রতিষ্ঠা দামগ্রী বিধান।

ঈশ্বর কহিলেন, প্রাসাদ মধ্যে লিক্স প্রতিষ্ঠার বিষয় বর্ণন করিব। দেবদিন উপস্থিত হইলে মানবগণ মুক্তি ও ভুক্তি কামনা করিয়া, এই অনুষ্ঠান করিয়া থাকেন।

চৈত্রমাস পরিত্যাগ করিয়া, মাখাদি মাসপঞ্চকে গুরু এবং শুক্রের উদয়কালে, বব, বালব
এবং কৌলবকরণে শুক্রপক্ষে প্রতিষ্ঠা কার্য্যের
অনুষ্ঠান করা কর্ত্ব্যা। কৃষ্ণপক্ষে চতুর্থী, নবনী,
ঘষ্ঠী এবং চতুর্দশী ও ফ্রেবার বর্জন করিয়া অবশিক্ট তিথি ও বারে করিতে পারে।

কৃষ্ণ পক্ষের পঞ্চম দিবস পর্যান্ত প্রতিষ্ঠা করা ঘাইতে পারে।

শতভিষা, ধনিষ্ঠা, আর্দ্রা, অসুরাধা, উত্তরফল্পনী, উত্তরাষাঢ়া, উত্তরভাত্রেপদ, রোহিণী ও আবণা নক্ষত্র প্রতিষ্ঠা কার্য্যে প্রশন্ত । কুন্তু, দিংহ, বুল্চিক, তুলা, কন্তা, রুষ ও ধকুর্লগ্রের যদি নবম ও দপ্তম ন্থানে বৃহস্পতি, চতুর্থ ষষ্ঠ দপ্তম অফীম ও দশম স্থানে বুধ, প্রথম তৃতীয় ষষ্ঠ সপ্তম ও দশম স্থানে চক্র, ভৃতীয় ষষ্ঠ ও দশম স্থানে রবি, তৃতীয় ষষ্ঠ ও দশমস্থলে রাছ, তৃতীয় ও ষষ্ঠগত শনি মঙ্গল সূর্য্য ও কেতু হইলে, প্রশস্ত হয়। একাদশস্থিত জ্বেত্রহ ও পাপগ্রহ সকলেই শুভ-দায়ক হন। আর ঐ সকল গ্রহের দপ্তম স্থানে পূর্বদৃষ্টি, পঞ্চ ও নব্য স্থানে অর্দ্ধন্তি, তৃতীয় ও দশম স্থানে পাদদৃষ্টি এবং চতুর্থ ও অফম স্থানে ত্রিপাদ দৃষ্টি। মীন ও মেনের ভোগ্যমান চারি দও, পাদহান চতুর্নাড়ী বৃষ ও কুন্তের ভোগ্য-কাল, মকর ও মিথুনের পঞ্, ধরু রুশ্চিক সিংছ কর্কট রাশীরমান পাদন্যন ষ্ডুদণ্ড, তুলা কথা রাশীর অর্দ্ধাধিক পঞ্চনাড়ী পরিমাণ জানিবে। বুষ দিংহ 'ও কুন্ত স্থিরলগ্ন, ধনু তুলা মেস চরলগ এবং ভৃতীয় দ্যাত্মক লগ্ন দকল দিদ্ধিশায়ক। 😎 গ্ৰহ্ কৰ্ত্তক দৃষ্ট ও শুভগ্ৰহযুক্ত লগ্ন প্ৰশস্ত। গুরুত্তক ও ব্ধযুক্ত লগ্ন রাজ্য শৌর্যপুত্র ধর্মাদি দায়ক এবং প্রথম চতুর্থ সপ্তম ও দশম श्वान कि कि करहा थे कि स्व श्वान यनि श्वरू चक्क अवः नुष थारकन, जाहा इहेरल मर्स्वि श्वि श्वमान করেন। লগ্ন হইতে তৃতীয় চতুর্থ ও একাদশ স্থানন্ত পাপগ্ৰন্থ সকলে শুভদায়ক হয়েন। অত-এব পণ্ডিতগণ শুভকার্য্য সম্পাদমার্থ ডিথ্যাদি পর্য্যালোচনা করিয়া থাকেন।

দাদশ দোপান শিবধামের পুরোজাগে ধামের পঞ্জণ বা ধাম পরিমিত ভূমিত্যাগ করিয়া চত্ত্রেণা চত্ত্রারবিশিষ্ট দাদশ অথবা দশহন্ত পরি-মিত মণ্ডপ করিবে। তাহার পূর্বে দক্ষিণ অথবা পশ্চিমদিকে ঐ মণ্ডপের অর্দ্ধ পরিমাণে একাশ্ম বা চত্ত্রাক্ষ মণ্ডপ স্থানের নিমিত্ত প্রস্তুত্ত করিবে। উত্রোত্তর হিহন্ত পরিমাণে বর্দ্ধিত করিয়া অপার আটটী মণ্ডপ নির্মাণ করিবে। ঐ সকল মণ্ডপ মধ্যে চত্ত্রি পরিমিত কোণন্তম্ভযুক্ত বেদী হইবে। বেদী পাদান্তর ভূমি ত্যাগ করিয়া নব বা পঞ্চকুণ্ড প্রস্তুত করিবে। অথবা ঈশান কোণে বা প্রাচীদিকে একমাত্র কুণ্ড করিবে।

পঞ্চাদত হোমে কুগু পরিমাণ মৃষ্টিমাত্র হইবে। শত সংখ্যক হোমে অর্জু পরিমাণ দহস্র হোমে হস্ত পরিমিত, নিযুত হোমে দ্বিহস্ত, লক হোমে চতুর্হস্ত, কোটি হোমে অফ হস্ত পরি-মিত কুও হইবে। অগ্নি কোণে যোন্যাকার, দক্ষিণ দিকে অর্দ্ধ চন্দ্রাকার, নৈখতে ত্রিকোণ, বায়ুকোণে ষট্কোণ, উত্তর দিকে পদাসদৃশ,ঈশানে অউকোন কুণ্ড করিবে। কুণ্ডর তির্য্যকৃপাত রূপে খাত ও উপরিভাগ মেথলাযুক্ত হইবে,তক্মে-খলার বহির্ভাগে চতুরসূল তিন অসুল ও চুই অসুল পরিমাণে অপর তিন্টী মেথলা হইবে, অথবা ছয় অঙ্গুল পরিমিত একটা মেখলা করিবে এবং य कुछित (य (मथना (म (मथना (महे कूछा-কারা হইবে। ঐ সমস্ত মেথলার উপর মধ্যভাগে এক অঙ্গুল উর্দ্ধ ও অন্টাঙ্গুল বিস্তার কুণ্ডার্দ্ধ পরি-মিত দীর্ঘ প্রথদলাকার কুত্তকর্থসম অধর যোনি থাকিবে। পূর্ব্ব, অগ্নিও দক্ষিণদিকস্থিত কুণ্ডের যোনি উত্তরাননা হইবে। অপরণিকস্থিত কুও मकरणत रयानि शूर्व्यानमा इहेरव ध्वरः त्रेगान

কোণের কৃণ্ডন্থ খোনি উত্তরাননা বা প্র্কাননা উভয় প্রকারই হইতে পারে। এম্থলে অসুল শব্দে কৃণ্ডের চতুর্বিংশ ভাগ জানিবে।

মণ্ডপের চতুর্দিকে পৃকাদিক্রমে পাকৃড়, উড়্ছর, অথথ ও ৰটকাঠ নির্মিত পঞ্চ ষষ্ঠ বা সপ্ত
হস্ত দীর্ঘ এক হস্ত থাতত্ত্ব উপরিন্দিত দীর্ঘের অর্দ্ধ
প্রশান্ত আত্রদলাদিযুক্ত শান্তি, ভৃতি, বল ও
আরোগ্য নামক তোরণ চতুক্টায় করিবে।রামধমুবর্ণা,রক্তবর্ণা,কৃষণা,ধ্রা,শশিপ্রভা, শুক্রবর্ণা, ত্রকবর্ণা,
কৃষণা,ধ্রা,শশিপ্রভা, শুক্রবর্ণা, ত্রকবর্ণা
কিপ্রভা ধর্জা পূর্বাদিক্রমে এবং ঈশান কোণ
ও পূর্বাদিকেরে মধ্যে ব্রহ্মদৈরত রক্তবর্ণা আর
নৈখত পশ্চিমের মধ্যে ব্রহ্মদৈরত নীলবর্ণা
পতাকা দিবে। ঐ সকল ধ্রকা পঞ্চন্ত লক্ষমান
ও তদর্দ্ধ বিস্তীর্ণা ইইবে; ধর্জা সকলের দণ্ড পঞ্চ
হস্ত পরিমিত করিবে।

বল্মীক, হতিদন্ত, ব্যশুস, পর্মাকর, বরাহ, গোষ্ঠ চতুপ্থাদি হইতে বিফুবিষয়ে ছাদশ মৃতিকা ও শিববিষয়ে অফীবিধ মৃত্তিকা, বট, উজ্মর, অশ্বপ, আত্র ও জমু স্বচসম্ভূত পঞ্কধায় ও ততং ঋতুজাত ঋষ্টবিধ ফল, হুগদ্ধি তীর্থজন, সর্কো-ষধি জল প্রশান্ত পুষ্পা ফল জল রত্নবারি ও গো-শুঙ্গল, পঞ্চাব্য, পঞ্চামৃত ও সহস্রছিদ্রযুক্ত কুম্ভ স্থান নিমিত্ত আহরণ করিবে; দীসক নির্মিত বজ্রাদি দ্বৈর নির্মাথন নিমিত আহরণ করিবে। রোচনা ভারা মণ্ডল করিয়া শতমূলী,বিজয়া,লক্ষণা, বলা,গুড় চী, অতিবলা, পাঠা, সহদেবা, শভাবরী, দিদ্ধি, হৃবর্চ্চদা ও বৃদ্ধি ছারা পৃথক পৃথক স্থান করা-ইবে।তিল দর্ভ দারা সংরক্ষণ ও কেবল ভশ্ম দারা স্থান করাইবে। যৰ, গোধুম ও বিল্বচুর্ণ কপুর মিশ্রিত করিয়া স্নান করাইবে। বিভবামুসারে বস্তাদিযুক্ত শয়া সহিত খটুা শরনার্থ প্রস্তুত

করিবে। ছত ও মধুপাত্ত, স্বর্ণলাকা ও সম্মা-ৰ্জনী আহরণ করিবে। শিব কুন্ত ও লোকপাল ঘট স্থাপন করিবে। আর নিজ্রার্থ একটা কুল্প ও कुछ मःथ्राकुमारत भाष्टिकुछ, बांत्रभानापि बर्गानि প্রশান্তাদি বাস্ত লক্ষ্মী ও গণেশ ঘট আবশ্যক। ঐ সমস্ত ঘট ধান্যপুঞ্জোপরি বন্ত্রমাল্যগন্ধহিরণ্যাদি-যুক্ত, পানীয়পূর্ণ ফলসহিত পূর্ণপাত্র ও হুলক্ষ্ণ পলবাদি যুক্ত ও বন্ত্র দারা আচহাদিত হইবে। বিকিরার্থ খেতসর্বপ্ লাজ ও করিবে ৷ ভাত্রনির্দ্ধিভ দাচছাদন চরুন্থালী ও দক্ষী পাদাভ্যঙ্গ জন্য স্থত ও মধুপরিপূর্ণ পাতে, ত্রিশত দর্ভদল নিশ্মিত বাহুপ্রমাণ, চতুর্দিকে পত্ত বেষ্টনযুক্ত আসন সকল প্রস্তুত করিবে। অফীবিংশতি পল পরিমিত পবিত্র তিল পাতা, হবিঃপাতা ও অর্ঘ্য পাতা ধুপপ্রদানার্থ ঘণ্টা, আচক, আচক, কুলা, ধুচনী, পীঠ, ব্যজন, শুক্ক-কাৰ্ছ, পুষ্প, পত্ৰ, গুগ্ডল, যুতপ্ৰদীপ, খুপ, অক্ষত, যজেবাপবীত, গব্য য়ত, যব্তিল্ কুশা ও শান্তি নিমিত ত্রিমধুর (দধি,ছ্কায়্ত) দশ পর্কা প্রিমিত দ্মিধ বাজ্পরিমাণ প্রুব ও হাতা এবং व्यानिकानि नवदार भाखित जना यथोक्तरम व्यर्क. পলাস, থদির, অপামার্গ, পিপুল, উড়ন্বর শনী, দূর্ব্বা ও কুশানির্শিত সমিধ প্রত্যেকে অক্টোতর শত সংখ্যক হইবে। অভাবে যব্তিল দ্বারা হোম করিবে। গৃহদাম গ্রীস্থালী দক্ষী ঢাকনী প্রভৃতি দেবা-দির উদ্দেশে যুগা বস্ত্র এবং হীরক সূর্য্যকান্ত, নীল-কান্ত, অতিনীলকান্ত, মুক্তাফল, পুষ্পরাগ,পদ্মরাগ এবং বৈদুর্য্য এই অফবিধ রত্ব : উষার বিষ্ণুক্রাস্তা. রক্তচন্দন, অগুরু,শেতচন্দন,সারিক,কুড়, শজ্জিনী এই অফ গন্ধ ; হুবর্তাত্র, পোহ, রঙ্গ, রজভ, कारका भीतक धारे करप्रकृषी लाह, इतिछाल,

মনঃশিলা, গৈরিক, হেমমাক্ষিক, পারদ, বহিন-গৈরিক, গন্ধক, অত্রক এই অন্ত বিধ ধাতু এবং ত্রীছি, গোধুম, ভিল, মাষকলাই, মুগ, ষব, নীবার শ্যামাক এই অন্তপ্রকার ত্রীছি আহরণ করিবে। আর বিভবাতুসারে মুদ্রা, মুকুট বন্ত হার কুগুল কন্ধণ প্রভৃতি দ্রব্যজাভ দারা আচার্য্যের অর্চনা করিবে। বিভ্লাচ্য কলাচ করিবে না। আচার্য্যের চতুর্থাংশ চতুর্থাংশ ন্যুনক্রমেতে মৃর্টিভৃৎ ও অন্ত্র-জাপিদিগের পূজাসাম্প্রী হইবে এবং বিপ্রদৈব্জ্ঞ ও শিল্পিদিগের ও পূজাজাপকদিগের ভূলাই কর্ত্ব্য।

ইত্যায়েরে আদি মহাপুরাণে প্রতিষ্ঠ সামগ্রী বিধাননামক অইাদশাধিকবিশততম অধ্যায় সমাপ্ত ।

ঊনবিংশত্যধিকদ্বিশত্তম অধ্যায়।

অধিবাসন বিধি।

ঈশর বলিলেন, গুরু সান ও নিত্যক্রিয়া সম্পাদন করিয়া অর্ঘ্য হন্তে পুরোহিত ও বিপ্র-গণের সহিত যাগস্থলে উপস্থিত হইয়া পুর্বের আয় শাস্ত্যাদি তোরণে ক্রমে পূজা করিবে এবং প্রদক্ষিণ ক্রমে উহার শাখায় দার দেবতাগণের পূজা করিবে; অর্থাৎ পূর্বেদিকে নন্দী ও মহাকাল, দক্ষিণে ভূঙ্গি ও বিনায়ক, পশ্চিমে র্ম ও ফার্ডি-কেয়, উত্তরে দেবী এবং চণ্ডর অর্চনা করিবে। সেই সেই শাখার মূলদেশত্থ ঘটদয়ে যথাক্রমে প্রশাস্ত ও শিশির পর্য্ত্রত্থ এবং অশোক সঞ্জীবন ও অমৃত ধনদ ও প্রিপ্রদ, এই তুই তুই দেবতার পূজা করিবে। বিহিত দেরগণের প্রণবাদি চতুর্থিত নাম দারা পূজা কর্ত্রা। লোকপাল প্রহু বস্থ

चात (मर्ग्छ। প্রস্তৃতি দেবগণের ছুই ছুই चाम्भा-দিত্যর তিন তিন বেম্বর লক্ষ্মী গুণপতি এই সমস্ত দেবতা যাগ মগুপের প্রান্তি ভোরণে সমি-হিত থাকেন। পূৰ্বাদি প্ৰানার উপরে বিশ্ব সমূহ বিনাশ বাস্নায় যতে রক্ষার্থ বক্তু শক্তি যাও থড়গ, পাশ, ধ্বজ, গদা, ত্রিখূল, চক্ত, প্রয় ওঁহুং ফট্নম: ওঁহুং ফট্যাহে শক্ষে হুং ফট্ নম: ইত্যাদি মন্ত্র ছারা পূজা করিবে। পূর্বাদি-क्राम अधेशकारक क्रमून क्रमूनाक পুलतीक वामन শঙ্কর্ণ সর্বনেত্র স্ত্র্রান্তন্তিত স্থাপ এই অউদেবতা মন্ত্র বারা পূজা করিবে। ঐরপু পূর্ব্বাদিক্রমে হেতৃক ত্রিপুরম শক্ত্যাখ্য,যমজিকাক,কাল করালী একাজ্যি ভীন নামক এই অফ কেত্ৰপালগণকে शुका ও विन बाता मछाछे क्तिरव। नगानिरवृत আস্পদ শহরধাম স্বরূপ মগুণের তুণ বংশ ও স্তম্ভেতে সন্যোক্ষাভাদি মন্ত্ৰ, ৰাৱা কিত্যাদি *পঞ* তত্বের অর্চনা করিবে এবং তত্বদৃষ্টি হারা ঐ পতাকাশক্তি সংযুক্ত শাহ্বরধাম অবলোকন ক্ষুত দিব্যান্তরীক ভূমিষ্ঠ বিদ্ধ অপসারণপূর্বক পশ্চিম তোরণ হারা প্রবেশ করিয়া অবশিষ্ট স্থার সকল অবলোকন করত, প্রদক্ষিণ ক্রেমে বেদি দক্ষিণে গমন করিয়া উত্তরাভিমুখে উপবিষ্ট হইয়া পূর্কের ফায় সুতশুদ্ধি অন্তর্যাগ বিশেষার্ঘ্য মন্ত্র দারা ক্রব্যাদি শোধন করিয়া আত্ম পূজা করিবে। অনপ্তর পূর্বের ন্যায় পঞ্গব্যাদি ও সাধার কল্ম তথায় সংস্থাপন করিয়া ভন্ত ভাস করিবে। ধর্ণা বিশেষ রূপে শিবতত্ত্ব সম্পাদনার্থ ললাট ক্ষমপাদান্ত শরীরে ক্রমশ পরম শিববিদ্যাত্মক রুদ্রে নারায়ণ ভ্ৰম্ম দৈৰত মূৰ্তি ওঁই হাঁ এই মন্ত্ৰারা বিভাগ করিবে। ওজাপ ব্যাপক ভাষ, লিবাল শিৰ-

করাস ন্যাস করিবে: পরে মন্তকে একারন্ধু-প্রবিষ্ট তেজ দারা বাহ্যাভ্যন্তর্গত তমঃপটল নিরা-করণ করত দেদীপ্যমান আত্মাকে মূর্ট্টিপদিগের শহিত বক্ত্রদালা কৃত্রমাদি দারা ভূষিত করিয়া শিবোহস্মি এইরপ চিন্তা করিয়া জ্ঞানখড়গ উত্থাপন করিবে। পুনর্কার চড়ুস্পাদান্ত সংকার মন্ত্র দারা যাগ মগুপ সংস্কার করিয়া, বিকিরাদি বিক্ষেপ কুশম্টি আহরণ, আসনএহণ পূর্বক পূর্বের নাায় ঘটে বাস্তাদি দেবতার অর্জনা করিয়া ছিরাদনে থাকিয়া শিবঘট ও অস্ত্রঘট পূজা করিবে। অনস্তর স্ব স্থ निकन्द कलाम यथाकाच्य मवाद्य माधूभ हेस्सानि লোকপালগণের যথাবিধি অর্চ্চনা করিবে। এরা-বতগলারত স্বৰ্ণবৰ্ণ কিরীটভূষিত সহত্রনয়ন বজ্ঞ-হস্ত ইন্দ্র ধ্যান করিবে। স্বাগ্রির ধ্যান। শিখ অক্ষমালা ও কমগুলুধারী জ্বালামালাকুল রক্ত বৰ্ণ শক্তিহত ছাগ্ৰাহন। মহিষারত দণ্ডহত কালানল স্বরূপ যমকে চিন্তা করিবে। রক্তনেত্র গৰ্দভ বাহন খড়গপাণি নৈখাতের ধ্যান করিবে। মকরত্ব নাগপাশধারী খেতবর্ণ বরুণকে চিন্তা क्रित्त । इतिगात्र मीलवर्ग वाश्रुत शाम। मत-বাহন কুবের। তিশ্লধারী রুমার । উক্তর্ভ কুর্মাধিষ্ঠিত অনস্ত। হংলবাহন চতুরানন একার চিন্তা করিবে। শুস্তমূলক কৃত্তে ও বেদিতে ধর্মাদি পূজা ও পূর্ধবদিকস্থ কৃষ্টে কেছ কেছ অনস্তাদির পূজাও করিয়া থাকেন। শিবাজ্ঞা আবগ করাইয়া আত্মপৃষ্ঠ দিক দিয়া কলসভ্ৰষণ করাইয়া পূর্বের नाश जाएरी कृष्ट भरत घर्षे दाभन कतिरय। স্থিবাসন শিবপূজা কুন্তে ও প্রবাসন শস্ত্র ঘটে পুজা করিয়া উদ্ভাব মুদ্রা দ্বারা স্পর্শপূর্বক ছে জগদীখন! ভক্তজনে অনুকম্পা প্রকাশ করত দংরকণ করুন, এইরূপ প্রার্থনা

করিয়ারকার নিমিত্ত কুস্ত সধ্যে পড়গ[্]নিকেপ कतिरव। मीका ७ ध्विष्ठिष्ठी कार्र्या कृर्छ ऋखिल ७ मधरन व्यथेवा (कवनगांक मधरन (मवरम्रवण মহাদেবের পুজা করিয়া কৃগুসলিধানে গমন করিবেন। মূর্ত্তিধারীগণ কৃগুনাভি পুরোবন্তী ক-রিয়া গুরুর আদেশক্রযে নিজ নিজ কুগু সংস্কার করিবেন। জাপকগণ যথাদংখ্যক মন্ত্র জপ এবং বেদপারগ অপরাপর ভাহ্মণগণ সংহিতা পাঠ করিবেন। তশ্বধ্যে ঋগ্বেদী ত্রাহ্মণ স্থশাখেতি শান্তিমন্ত, শ্রীসূক্ত, পাবমানি সূক্ত মৈত্রক র্যা-কপিসুক্ত পূর্ব্বদিগভাগে পাঠ করিবেন। সামবেদী দক্ষিণদিকে দেবব্রত, ভারুও, জ্যেষ্ঠসাম রথস্তর ও পুরুষাথ্য সামগান করিবেন। পশ্চিমদিকে যজু-র্বেদী রুড়াধ্যায়, পুরুষসূক্ত, শ্লোকাধ্যায় ব্রাহ্মণ (অর্ধাৎ মন্ত্রভাগ) পাঠ করিবেন। উত্তর্নিগ্-ভাগে অথর্কবেদী আক্ষণ নীলরুন্ত, সৃক্ষাসূক্ষ এবং অথব্রশীর্ষ তৎপর ছইয়া সমুচ্চারণ করিবেন।

আচার্য্য বহিছাপন করিয়া অগ্রির পূর্ব্বাদি
দিক হইতে অগ্নি গ্রহণ করিয়া ধূপ, দীপ ও চরু
ও হবনাদি কার্য্য সম্পাদনার্থ পূর্ব্বাদিস্থ প্রত্যেক
কৃত্তে প্রদান করিয়া পুর্ব্বের ন্যায় শিবার্চ্চনা
করিয়া শিবাগ্নিতে মন্ত্র দারা তর্পণ করত দেশকালাদি সম্পত্তি নিমিত ও চুর্নিমিত্ত শান্তির জন্ম
মন্ত্রজ্ঞ বিপ্র হোম করিয়া শুভাবহ পূর্ণাছতি
প্রদান পূর্ব্বক পূর্ব্বের ন্যায় প্রতি কৃত্তে চরু
প্রদান করিবেন।

যজমানগণ অলংকৃত হইয়া স্নানমগুণে গমন করিয়া সর্বতোভদ্র মগুলোপরি শিবসংস্থাপন করিয়া তাড়ন, অবগুঠন ও পূজা করিয়া মৃত্তিক!, কাষায় বারি গোমুত্র, গোময় ও মধ্যে মধ্যে জল ছারা ও ভদ্ম গন্ধতোয় ছারা স্থান করাইবে। পরে যলমান মূর্ত্তিপ ঋত্বিকগণের দহিত ফড়ন্ত অস্ত্র মন্ত্র উচ্চারণ করত জল দ্বারা আকার শোধন করিয়া ধর্মজপ্ত পীত বস্ত্র দারা আচ্ছাদন পূর্বক শুকুবর্ণ পুষ্প হারা পূজা করিয়া উত্তরবেদিকায় লইয়া যাইবে। তথায় প্রদত্ত আসন শ্যায় সংস্থা-পন করিয়া গুরু কুরুমলিপ্ত সূত্র ছারা বিভাগ করত ত্বর্ণ শলাকা ছারা শাস্ত্রাসুসারে চক্ষুষয় অ্ক্লিত করিয়া যথাবিধি, অল্পিড করিবে। কার্য্য-দক্ষ শিল্পী শস্ত্র দারা মৃত্তিকারণ প্রস্তরাদি ত্রিভাগ করিয়া একাংশের অদ্ধাংশে মূর্ত্তি শোভা করিবে। দ্বিতীয়াংশের একপাদে ও তৃতীয়াংশের পাদার্চ্কে মূর্ত্তি শোভা করিবে৷ এইরূপে চিহু দকল অব-তারিত হইলে, সাধকের সর্বকাম সিদ্ধি ও মঙ্গল হয়। ত্রিধাবিভক্ত ভাগ বর্ণনা থাকায় লিঙ্গ দীর্ঘ विकाताः । विखात कतित्व धवः एम् छिइ-স্কল লিঙ্গের স্বতিত দিবে। নববিভক্ত যবের অইভাগ বিস্তীর্ণ গড়ীরেরখা হস্তপ্রমাণ লিঙ্গে হইবে, এইরূপে সার্দ্ধহন্ত পরিমিতাদি লিঙ্গে অষ্টাংশ বৃদ্ধি ক্রমে সম্পাদন করিবে এবং হস্তপরি-মিত লিঙ্গের গম্ভীরা কিতিমূর্তি অষ্ট্যবা হইবে ও সার্দ্ধতাদি পরিমিত লিঙ্গে অন্টাংশ বৃদ্ধিক্রমে পরিমিত সম্পাদন করিবে। ঐরূপ নবহস্ত লিঙ্গের গম্ভীরা ক্ষিতিমূর্তি অইযবা হইবে। এব-স্প্রকারে সর্বত্ত শিবলিঙ্গের পাদর্ভি স্থলে মূর্ত্তি চিছের বিস্তার ধব বৃদ্ধি হইবে এবং রেখার গান্তীর্য্য ও স্থলত্বও ত্রিভাগ বৃদ্ধিক্রমে সম্পাদন কর্তব্য। এক হস্তাদি পরিমিত সমস্ত লিঙ্গেরিই মন্তক সূক্ষা অফ্রধা বিভক্ত 'দেশে অর্থাৎ অফ্র-रुरेदा । মূৰ্ত্তি চিহ্নিতক্ষেত্ৰে মস্তকশ্ব শুভদায়ক ভাগৰয় অপর অধোভাগদয় ত্যাগ করিয়া বড়ভাগ পরি-বর্তরেখাত্রয় ভারা পৃষ্ঠদেশে সম্বদ্ধ হইবে।

রত্বনির্দ্মিত ও হেমসম্ভব লিঙ্গে যবছর পরিমানে চিল্পোদ্ধার হইবে, রত্বাদি নির্দ্মিত লিঙ্গের এই-রূপই স্থরূপ লক্ষণ, যেহেতৃক রত্বাদি নির্দ্মিত লিজের নির্দ্মলপ্রভা হয়। সর্বপ্রেকার লিঙ্গেরই বক্তে নয়নোশ্মীলন আবশ্যক, যেহেতৃক ঐ নেত্র-চিহ্ন দেবতার সামিধ্যর কারণ।

পরে চিক্টোদ্ধার ও রেথা কারণ শিরিদোষ
পরিহারার্থ মৃত্যুঞ্জয় মন্ত্রোচ্চারণপূর্বক দ্বত ও মধু
দারা অর্চনা করিবে। পরে লিঙ্গ পূজা করিয়া
মূলদি দারা স্নান করাইয়া শিরিভোষণপূর্বক
শুলুকে গোপ্রদান করিবে। পুনরায় ধূপ দীপাদি
দারা লিঙ্গ পূজা করিলে, ভর্তৃগামিনী স্ত্রীগণ মঙ্গল
ধ্বনি (উলুধ্বনি) সূচক গান করিবে। অনস্তর
স্ব্যাপসব্যক্রমে অর্থাৎ বামদিক হইতে দক্ষিণাবর্ত্তে সূত্র বা কুশা দারা বেইনপূর্বক গোরোচনা
দান করিয়া নির্মাঞ্জন (আর্ভি) করিবে। পরে ঐ
সকল ভর্তৃগামিনী স্ত্রীদিগকে শুড় লবণ ধান্যাক
প্রভৃতি প্রদান করিয়া বিদায় করিবে।

পদ্বা প্রক্র মৃত্তিধরপুরোহিতের সহিত নমঃ
পদ্বা প্রাণ্ড উচ্চারণ করতঃ মৃত্তিকা পোময় ভশ্ম
পঞ্চার পঞ্চায়ত পঞ্চকষায় সর্ক্রেমিধিজল ভ্রম
পুপোদক, ফলোদক,স্বর্ণোদক,রত্বজল, শ্রেমিদক,
য়বোদক, সহস্রধারা জল, দিবোরাধি জল, তীর্ধবারি, গঙ্গাজল, চন্দন জল, সমুদ্র জলপূর্ণ কৃষ্ণ ও
লিবক্স্ত জল ঘারা স্নান করাইবে। পরে স্থপত্তি
চন্দনাদি লেপন করিয়া, ব্রহ্মমস্ত্রোচ্চারণ করত
পুপ্প রক্তবন্ত্র ও বর্দ্ম ঘারা পূজা করিবে। অনন্তর
বহুরূপে নীরাজনা (আরতি) করিয়া মৃত্ত জল হ্রম
ও কুশাদি দ্রব্য ঘারা অর্হ্যপ্রদানপূর্বক স্ততিপাঠ
ঘারা স্তত্ত দেবতাকে পুরুষ সৃক্ত ঘারা পুল্পায়্মলি
প্রদানপূর্বক আচমন করিয়া নমঃ শঙ্ক উচ্চারধ-

পূর্বক হে শ্রভা! গাতোখান করুন, এইরূপ প্রার্থনা করিয়া ত্রাহ্মণবাহিত রথ দ্বারা দেবতা ও দ্রব্য স্কল বছন করিয়াপশ্চিম ছার দিয়া আসিনে নেবতাকে সন্ধিবিষ্ট করিয়া শক্তাদি মূর্ত্তি পর্য্যন্ত ভ্রতাসনে পশ্চিমভাগে পিত্তিকা সংস্থাপনপূর্বক ব্রহ্মশিলা সংরক্ষণ করিবে। পরে ফটমন্ত্র শত-সংখ্যক জপ করত নিদ্রাকুত্ব ও জবাসন ঈশান टकारिन कक्षमा कतिया मम मखे भीता अर्घा अमान পূর্ব্বক মস্তক দারা উত্থাপন করিয়া প্রণতিপূর্ব্বক উক্ত প্রবাসনে লিঙ্গরূপী মহাদেব আরোপণ কঁরিয়া তহুপদ্মি ভূতশুদ্ধি ও ধঁশ্মীদিভাস করিবে। অমন্তর বর্ধাণক্তি গদ্ধপুষ্পা ধূপ যন্ত্র বর্ণ্ম গৃহোপকরণ বৈবেদ্যাদি প্রদান করিয়া দেশিক (গুরু) তথায় উপস্থিত থাকিয়া মত ও মধুপূর্ণ পাত্ত ভাঙাকর নিমিউ চরণ দর্মিধানে সংস্থাপন করিয়া মূলপ্রকৃতি প্রভৃতি পুথিবান্ত চভূবিংশতি তত্ত্ব এবং ঐ তদ্বের বিদ্যা ও অবিদ্যাভেদে চৈতভের জীব ও পর্মরূপ দ্বৈবিধ্যবশত তত্ত্বয় নিবন্ধন ষড়বিংশতি তত্ত্ব খাদ করিয়া পূক্ষমালা হারা নিক্সতি তিখা বিভক্ত করত উহার এক এক ভাগে ক্রেমে ব্রহ্ম বিষ্ণু ও শিবদৈৰত আত্মতন্তু বিদ্যাতন্ত্ৰ ও শিব-উত্তি স্থা অমুদারে আদ করিয়া পূর্বাদিক্রমে মুর্ত্তি ও মুঁহীশ অর্থাৎ সক্ষরিদ্বত ক্ষিতিমূর্ত্তি, পশু-পতি দৈবত বহুমূর্তি * উগ্রদৈবত যজমান মৃত্তি কৈদ্রদৈবত সূর্য্যমূর্তি, ভবদৈবত জলমূর্তি, যজেশ্বর দৈৰত বায়ুমূৰ্ত্তি, মহাদেৰদৈৰত দোমমূৰ্ত্তি, ভীম-দৈবত আকাশ মূর্ত্তি ন্যাস করিবেন। ঐ সকল

•এগ ছলে অন,।না শাস্ত্রোক্ত প্রচলিত সৃঠিও মৃতীশ যেরূপ আহিছ, ভাছার কি'জিং হৈবলকণা দৃট ফইডেছে। যথা আচলিত পিউপতি দৈব'ভ যজনান মৃতি ইভাাদি

দেবভাবাচক মন্ত্র যথাক্রমে ল ব শ ষ চ য ল ও ত্তিমাত্তিক হকার, অথবা প্রণব ও হামন্ত্র, কোন কোন হ'লে মূল মন্ত্ৰও হইয়া থাকে। অথবা পঞ কুণ্ডাত্মকযাগে পঞ্চমূর্ত্তি ন্যাস করিবে, অর্থাৎ ত্রহ্ম দৈবত পৃথিবীমূর্ত্তি, ধরণীধরদৈবত জলমূর্ত্তি, রুজ-रितथे अभिनृष्ठि, नेगरिनये वाशु मृष्ठि, नेनाथारेनये छ আকাশমূর্ত্তি, স্থষ্টি ন্যায় ক্রমে ন্যাস করিবে। অথবা মুমুক্ষুব্যক্তিগণ অজাতাদি দৈবত নিবুত্যাদি ত্তিত্তু ন্যাস করিবে অর্থাৎ সভ্রজস্তমোগুণ্ময় বিষ্ণু ব্ৰহ্মশিব দৈবত নিবৃত্তাদি ত্ৰিতত্ত্বে জগদ্যা খ্ৰি হেডুক আজ্মকারণ হইয়াছে, অভএব সর্বতা এই ত্রিভিত্ব নাাস কর্ত্তির। কারণ শুদ্ধান্থাতে সম্বর্জ শুমোঞ্চণদ্ধপ ত্রিভত্বাত্মিকা ঈশা প্রকৃতি বিদ্যারূপা হইয়া অভ্যাত্মাতে লোকনায়ক অৰ্থাৎ ইন্তাদি লোকপালয়প অবিদ্যা হইয়াছেন. মৃষ্টিপুগণ ভোগীদিগের সম্বন্ধে মন্ত্রনায়ক বিবেচনা পূর্ববক ভির করিবেন। এই পঞ্চবিংশতি তত্ত্ব অফতত্ব পঞ্চত্ব ও ব্ৰিতন্ত্ৰ ঐ ঈশা শক্তি হইতে হইয়া পরে ইন্দ্রাদি লোকপালের অধিকৃত হই-য়াছে। ঐ সকল মন্ত্রপ্রোগ এইরূপে হইবে। যথা, ওঁ হাং শক্তিভায় নমঃ ইত্যাদি, ওঁ হাং শক্তি-তত্বাধিপায় নম: ইত্যাদি, ওঁ হাঁ ক্যা মূর্ত্তরে নম: ইড্যাদি, ওঁ হাংক্ষামূৰ্ত্ত্যধীশায় শিবায়নমঃ ইভ্যাদি, 🗄 उँ द्वाः পृथिवी मूर्छरा नगः, उँ दाः पृथिवीमूर्छाध-পায় ভ্ৰন্তো নমঃ ভ হাং শিবভদ্বায় নমঃ, ভ হাং শিবতত্বাধিপায় রুদ্রায় নমঃ ইত্যাদি। এই সকল মন্ত্র নাভিকশ্ব হইতে উচ্চারণ করিয়া ব্রহ্মাদি-কারণ মূলপ্রকৃতি ভ্যাগ করিয়া দীর্ঘ ঘটা নিনাদ-'হান বিদল 'চক্রে পর্যান্ত শকার করত হাদশারে সংস্থাপনপৃথ্বক মনের সহিত অভিন্ন অর্থাৎ মনো-বর হইলে প্রাথাননরসোপম অর্থাৎ ব্রহ্মজ্ঞান

সদৃশ হইবে। পরে ঐ সকল মন্ত্র দ্বাদশার ছইতে
সমানয়নপূর্বক নিজলস্ববিদ্যাপক ও অউত্রিংশত
কলাযুক্ত সর্বেশক্তিময় সাঙ্গ শিহরূপ ধ্যান করিয়া
লিঙ্গে নিবেশ করিবেক। এইরূপ লিজে জীব
ন্যাস করিলে, সর্বার্থ দিক্তি ছয়।

অনন্তর পিতিকা শিলাকে আন করাইয়া গন্ধাদি লেপন উৎকৃষ্ট বস্ত্রদ্বারা আচ্ছাদন করিয়া ভগ-লক্ষণ রয়ে পঞ্চরত্বযুক্ত করিয়া লিক্ষের উত্তরভাগ-রূপে অর্থাৎ মূলপ্রদেশস্ভাবে লিক্ষের ন্যায় বিন্যাদ করিয়া বিধিবৎ পূকা করিবে এবং স্লানাদি সংক্ষারে সংক্ষত শক্তি প্রস্তৃতি বুঘত পর্যান্ত বিন্যাস করিবে। প্ৰণবপূৰ্বক হুঁ যুঁ হ্ৰীঁ এই মন্ত্ৰ পিণ্ডিকাদি রয়ভ পর্যান্ত সংস্থাপনে উক্ত হইয়াছে। किशानंकियुका ७ निमा चारावस्तिभी। এব ওঁ ছুঁ হ্রং ক্রিয়াশক্রে নমঃ, ওঁ ছুঁ হ্রাং হঃ মহাগোরী ক্ষত্রদয়িতে স্বাহা। এই মন্ত্রদয় দারা शिक्षिकात शृक्षा कवित्व । · अँ हाँ: आधात्रणक्तरत নমঃ। এই মন্ত্র ছারা শিলার ও হাং বৃষভার নমঃ, এই মন্ত্র স্বারা রুষভে পূজা করিবে। রক্ষার্থ ভত্মদর্ভ ৪ ডিলের দ্বারা প্রাকার ত্রিভয় নির্দ্মাণ ও দায়্ধ লোকপালগণের অর্চনা করিবে। অনন্তর ধারিকা, দীত্তিমতী, উগ্রা, জ্যোৎসা, চৈতা, बाला करें। थाजी, विशाली अहे श्राके नाशिका, অথবা বামা, জোষ্ঠা, ক্রিয়া, জ্ঞানা, কেধা এই পঞ নায়িকা, কিলা ক্রিয়া, জ্ঞানা, ইচ্ছা এই ভিন নায়িকা পূর্বের ন্যায় শান্তিমূর্ভিতে বিন্যাস কলিবে। অথবা তমী, মোহা, কমী, নিষ্ঠা, মৃত্যু এই পঞ্বা মায়া, ভবজ্বা, মহা, মোহা, ছোৱা, এই পঞ্চ অথবা জিয়া, জ্ঞানা, বাধা এই ত্রিভয় অধিনায়িকা ভীত্রমূর্ত্তি আত্মাদি জিভত্তে বিন্যাস করিবে এবং পিতিকা ও ত্রন্ধলিলান্নিতে দৌর্ঘ্যাদি

মাতৃকার সম্যক বরণপূর্ব্যক প্রধাবৎ পূজা করিবে।
এইরপ ন্যাস সমস্ত সম্পাদন করিরা কুণ্ড সনীপে
গমনপূর্ব্যক কুণ্ডমধ্যে মহেশান, মেখলোপরি মহেশ্যর যোনিসকলে ও নাদমধ্যে ক্রিয়াশক্তি বিন্যাস্থ করিয়া,মেথলাস্থিধানে ছভিলবহ্নির ঈশানকোণে নাড়ীসন্ধানক ঘট সংস্থাপন করিবে।

মনন্তর মুর্তিপাগণ পরস্পার পদ্মতন্ত্রদম সুক্ষা বায়ু দারা উত্তোলিভা শক্তি ইড়ামার্গ দর্থাৎ ঝম নাসিকা দ্বারা প্রবিষ্ঠা ও নিংস্কা এবং পুনর্বার নিজ শক্তি ইড়ামার্গ দ্বারা প্রবিষ্টা চিন্তা করিবেন। এইরূপে মূর্ত্তিপাণ সর্বত্ত পরক্ষার সন্ধান করিয়া কুত্রে খারিকাশক্তি তত্ত্ব তত্তেখন মূর্ত্তি ও মূর্ত্তীপ্র-গ্রালের পূজা ভর্পণ ও যথোক্ত সংহিত্তামন্ত্র পাঠ-পূৰ্ব্যক য়তানি যারা অর্জনভ শত বা সহজ্ঞদংখ্যক হোন করিয়া পূর্ণাছভি প্রদান করিবে। নিক্ট-বর্ত্তী মৃর্ক্তিপগণও ঐরূপে মৃর্ক্তিমৃতীশ ভঙ্ক তঙ্কেশ্বর ও করেণুগণের সম্ভর্পণ করিয়া হোম করিবে। পরে ব্ৰহ্মমন্ত্ৰ অৰ্থাৎ প্ৰাণবাত অঙ্গমন্ত্ৰ অৰ্থাৎ দ্ৰব্য দেবজা ত্যাগাদি প্রকাশক মন্ত্র ছারা ত্রব্য কালাকুসালে শক্তি পূজা করিয়া কুডান্তঃ প্রোক্ষিত কুশমূল দারা লিঙ্গমূল স্পার্শ কর্ত হোমসংখ্যক জ্বপ করিবে। হুৰুত্ত্ৰ (নমঃ) ছালা সন্ধিধাপন বৰ্ণামন্ত্ৰ (হুঁ) বারা অবত্তঠন করিয়া প্রকাদি নারায়ণাল্ল প্রভৃতি লোধনার্থ পূর্বের স্থায় হোমদংখ্যক বিধান করিয়া কুলমধ্যাতাভাগ যোগে লিক মধ্যা-গ্রভাগ স্পর্শ করত যে যে রূপে সন্ধান করিছে इट्टेंद जरममुनाय बना याहरलहा

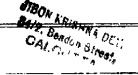
ওঁ ইাছ ওঁ ওঁ ওঁ ওঁ ওঁ ভূঁ ভূঁ কৰা মৃত্যে নম:। ওঁ হাঁং বাঁং আঁং ওঁ আঁ। ষাঁওঁ ভূ ভূঁবাঁ বহিন্ত্যে নম:। এই রূপে যজমানাদি মৃতির অভিসন্ধান করিবে এবং পঞ্সূতি হলেও এইরপে হৃদয়াদির সহিত সন্ধান করিবে। ভত্ন ত্রয়াত্মক বিষয়ে মূলমন্ত্র দ্বারা অথবা স্বীয় বীজ দারা সম্পাদন করিবে এবং শিলা পিণ্ডিকা বুষভ-তেও ঐরপে সন্ধান করিয়া ভাগাভাগ বিশুদ্ধির নিমিত্ত শতাদিতংখ্যক হোম কর্ত্তব্য। ন্যুনাদি দোষ পরিহারার্থ শিবমন্ত ছারা অক্টোত্তরশত হোম করিয়া নিষ্পাদিত কর্ম সমস্ত শিবসলিধানে নিবেদন করিবে। হে প্রভো! এই সমস্ত কর্ম ভোমার শক্তিতে সমর্পণ করিলাম। ওঁনমো ভগবতে রুদ্রায় রুদ্র নমেক্তিতে। হে জগদী-শ্ব ! মংসম্পাদিত কার্য্য বিধিবং পূর্ণ কউক বা অপূর্ণ হউক, নিজ শক্তি দারা সম্পূর্ণ করিয়া গ্রহণ করন। ওঁট্রীশাক্ষরি পুরয় আহা। এই মত্র পিতিকায় প্রয়োগপূর্বক জ্ঞানীদাধক লিকে পীঠ-বিএতে ক্রিয়াখ্য স্থাস করিয়া ব্রহ্মশিলার আধার শজিক হাস করিবে।

সপ্তরাত্ত, পঞ্চরাত্ত, তিরাত্ত, একরাত্ত ব্যাপিয়া অথবা সন্যই অধিবাদ কার্য্য অবশ্যই করিবে। অধিবাদ ব্যতিরেকে যাগ করিলে, সমস্ত নিফল হয়। প্রত্যহ নিজ নিজ মন্ত্র দারা শত শত সংখ্যক আত্তি প্রদান, শিবকুল্প পূজন ও দিক্পালদিগের উদ্দেশে বলি প্রদান করিবে এবং নিয়মপূর্ব্যক রাত্রিকালে গুরু প্রভৃতি বিপ্রগণের সহিত বাদ করিবে। অধিবাদ শব্দ অধিপূর্ব্যক বদ ধাতু ভাব বাচ্যে ঘঞা প্রত্যয় দ্বারা নিজ্পান্ন হইয়াছে।

ইতাাগ্রেয়ে আদি মহাপ্রাণে অধিবাসনবিধি নামক উনবিংশতাধিক বিশত্তম অধ্যায় সমাপ্ত।

বিংশত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

ঈশ্বর বলিলেন, প্রতিষ্ঠাকর্তা প্রাতঃকালে সম্পাদনপূৰ্ব্যক নিত্যক্রিয়া দারদেবতা গণের অর্চনা করিয়া পূর্ব্ববিধানানুসারে যাগ মগুপে প্রবেশ করিয়া ভূতশুদ্ধ্যাদি কার্য্য সম্পাদন করিয়া দিকপাল শিবকুম্ভ ও অফান্স ঘটে পূজা করিয়া অফুমুর্ত্তির দহিত শিবলিক্ষের অর্চনা করিয়া হোম করিবেক। অনন্তর শিবাজ্ঞাগ্রহণপূর্বক অন্ত মন্ত্র (ফট) উচ্চারণ করত প্রাসাদ মধ্যে প্রবেশ করিয়াফট হুঁফট্মন্ত্রছারা ডত্রভ্য বিশ্ব অংপ-मात्रण क्रिया ८वस्टनांच चानकांय यवार्क वा यव-পরিমাণে মধ্যস্থল পরিভ্যাগ করিয়া কিঞ্চিৎ ঈশান কোণ অবলম্বন করিয়া মূলমন্ত্র অথবা ওঁ নমো ব্যাপিনি ভগবতি স্থিরে অচলে জ্রাবে ব্রুঁ লং দ্রী সাহা, এই মন্ত্রন্ধারা সেই অনন্তাখ্যা সর্বা-ধার স্বরূপীণী সর্ববিগতা অচলা শিবের আধার-স্বরূপা শিলা স্প্রী যোগানুসারে বিকাস করিবে। হে শক্তে! শিবাজ্ঞানুসারে এম্বলে আপনি সতত অবস্থান করুন। এইরূপ আবেদন পূর্ব্বক অর্চনা করিয়া রৌদ্র মুদ্রা দারা নিরোধ করিবে। প্রভা-রাগছ দেহত্ব ও বীর্য্যশক্তিময় করকণার্থ পুর্ব্বোক্ত হীরকাদি রত্ন উষীরাদি ওষধী হেমাদি কাংস্থান্ত লোহ হরিতালাদি ধাতু ওধাতা প্রভৃতি শস্য সমস্ত লোক পাল ঈশ ও সম্বরের সহিত ঐক্য চিস্তা করিয়া প্ৰবাদি দিকস্থ গৰ্ত্তে ক্ৰমে এক একটী কয়িয়া বিভাগ করিবে! হেমজ বা রোপ্য নির্মিত কুর্মা বা বুষভ দারাভিমুথ করিয়া নদীতট মুভিকা বা পর্বতাগ্র মৃত্তিকার সহিত মধ্যগর্তাদিতে নিক্ষেপ कतिरवः अथवा मधुक अक्का ७ अक्षनपूंक तक्क वा क्षर्विनिक्छ श्रवनी वा क्षर्वक्षरमञ्ज नर्वारीम



স্বরূপ স্বর্ণ খণ্ডদয়ের সহিত নিক্ষেপ করিবে। অনস্তর স্বর্ণজ রজতনির্মিত বা অইটংগভূষয় পদ্ম-নাল হুবর্ণ ও কুশরার সহিত ডম্মধ্যে নিক্ষেপ করি-व्यनस्तर (एवएएटवर भक्तां पि मूर्ति পर्यास । আসন কল্পনা করিয়া পায়স বা গুগ্ঞল ছারা লেপন করিয়া ততুতা বস্তু বারা অস্ত্র মন্ত্র সংরক্ষিত গর্তু আচ্ছাদন করিবেক। অনন্তর গুরু আচ্মন कत्रिया निकशानित्शत छेत्यत्म वनि धनानशूर्वक শক্তের সহিত শিব শিলারন্ধ সঙ্গদোষ শান্তির নিমিত্ত শতসংখ্যক হোম করিয়া পূর্ণাছতি প্রদান করিবে এবং বাস্তাদেবভাগণের এক এক আছতি প্রদান করিয়া মার্গলিক ধ্বনি ও হামন্ত্র উচ্চারণ করত আসনে দেবতা উস্তোলন করিয়া দেবসমূথে সমাদীন হইয়া মূর্তিপ চতুষ্টায়ের দহিত যাগ মণ্ড-পের পৃষ্ঠদেশ দিয়া প্রামাদ প্রদক্ষিণ করিয়া লিক ভদ্রাখ্য মারাভিমুখ সংস্থাপনপূর্বক অর্ব্যপ্রদান कतिया धामातः मित्रम कतितः निथान्छ অর্থাৎ স্থার কার্চ চড়েন্টয়ের উপরিস্থ কার্চশৃত্য দ্বারের এক কপাটবদ্ধ ও অপর কপাট মুক্তপ্রদেশ দিয়া অর্থাৎ অর্দ্ধ ভারভাগ দিয়া ছার সংস্পাশ শুভ-ভাবে লোকপালের সহিত মহেশরকে প্রবেশ করাইবে। দেবগৃহ সর্বতেই এইরূপে নির্মাণ করিবে। বিহিত ভার রহিত মন্দিরে প্রবেশ অনন্তর পীঠোপরি করাইলে গোত্র কয় হয়। ছারাভিনুথ লিঙ্গ সংস্থাপনপূর্বক তুর্য্য মঙ্গলধ্বনি করত দুর্বাক্ত প্রদান করিয়া গাত্রোত্থান করুন এইরূপ বলিয়া হ্মান্ত্র ও মহাপাশুপত অর্থাৎ অন্বেকং যজামহে ইত্যাদি মস্ত্র পাঠ করিবে। অনন্তর গুরু মূর্তিপগণের সহিত তথা হইতে ঘট অপনীত করিয়া মন্ত্র সন্ধারণ করত কুমকুমাদি-লিখ করিয়া শক্তি ও শক্তিমানের ঐক্য চিন্তা

করিয়া লয়ান্তমূল মস্ত্র অর্থাৎ হোং ছং দঃ এই মন্ত্র উচ্চারণ করত স্পার্শপূর্বকে সমস্ত বৃক্ষভাগের অই-गाः म वरो भारत्मका व्यवता व्यक्ताः म टार्टिक करा-ইবে। পরে অসমাহিত হইয়া বালুকা ছারা রন্ধুরণ করিয়া দীদক ছারা দীর্ঘনাভি আচ্ছা-দন পূৰ্বকে "ছিত্ৰীভব" এই কথা বলিয়া লিঙ্গ স্থিরীকরণ করিবেক। অনস্তর মূল মন্ত্র উচ্চামণ পূর্বক শক্তান্ত নিষ্কল বন্ধবন্ধপ লিঙ্গের স্ষ্টিক্রেমে কলা যুক্ত চিন্তা করিয়া ভাগ করিবে। স্থাপ্য-মান ঐ লিঙ্গ দক্ষিণ দিক আভায়রূপে রাথিয়া তত্তৎ দিকপালগণের হোম পূর্ণান্ততি প্রদান ও দক্ষিণান্ত কাৰ্য্য সমাধা করিয়া বামভাগন্থ বক্ত ভাবগত চলিত ফুটিত বা অন্য যে কোন দোষ ঘটিৰে. তৎশান্তির নিমিত বহুরূপ মন্ত্র বা মূলমন্ত্র ছারা শতসংখ্যক হোম করিয়া শিব শান্তি করিবেক। অধঃপ্রদেশে চিত্তের চিহ্নাংশরূপ পীঠবন্ধ করিয়া ভাসাদিযুক্ত করিলে, কোন দোষ থাকে না। গোরীমত্রনহ লয়মন্ত্র অর্থাৎ ব্রাঁইনঃ এই মন্ত্র বারা হুরুরাবর্জু হুইতে মহত্ত্বাদি **স্প্রিক্র**েম পিণ্ডীভাস করিয়া, বালুকা বজ্ঞ লেপ **দারা পার্য** দিন্ধি সম্পূর্ণ করিবেক।

অনন্তর গুরু মৃত্তিপগণের সহিত অন্য শান্তিকলস সকল সংস্থাপন করিয়া ঘটের উদ্ধাদেশে
পঞ্চার্যাদি লেপনপূর্বক গদ্ধাদি ঘারা জগদীখরের
অর্চনা করিয়া উমা মহেশ মন্ত্র অর্থাৎ হ্রাঁহোঁ
মন্ত্র উচ্চারণ করত লিঙ্গ মুদ্রা ঘারা তত্ত্বর অর্থাৎ
পিত্তীকা ও লিঙ্গ স্পাশ করিবে। অনন্তর মড়স্থাদি স্থাস করিয়া ত্রিতত্ব স্থাস অর্থাৎ রজোগুণময় আত্মতত্ব সত্ত্বগময় বিদ্যাতত্ব ও ত্যোগুণময়
শিবতত্ব এই গুণত্রয়াত্মিকা মূলপ্রকৃতি বিস্থাস
করিয়া জ্ঞানীপুরুষ মূর্ত্তি মূর্তীশ ব্রাশিলা ও তদক্ষ

শৈৰিকার ক্রিয়াপীঠে অর্থাৎ পিত্তিকায় ও লিকে বিজ্ঞান পূৰ্বক স্থান ক'ৱাইয়া গন্ধ লেপন ও ধূপ প্রদান করিয়া ব্যাপক অ'দ শিবলিঙ্গে করিবে। অনন্তর মাল্য ধুপদীপ নৈবেদ্য ফল মূলাদি যথা শক্তি নমঃ মন্ত্র দারা নিবেদন করিয়া আচমন পৃৰ্বিক শিব মন্ত্ৰ জ্ঞপ করিয়া বরদ শিব করে জপ সমর্পণপূর্ব্বক বিশেষার্ঘ্য স্বারা আত্ম সমর্পণ করিবে। "হে নাথ!চক্র সৃষ্য ও তারকাগণ গগমগওলে যাবত ধাকিবেক,শিবমূর্টিপগণের দহিত আপনি স্বেচ্ছামু-শারে এই মন্দিরে তাবৎকাল বিরাজ করুন," এই-ক্ষপ প্রার্থনা করত নমস্কার করিয়া বহির্গমন করিবে: অনন্তর নমঃ মান্ত্র বা প্রণব উচ্চারণপূর্বক বুষভ সংস্থাপন করিয়া পুর্কের স্থায় বলি প্রদান করিবে। পরে ম্যুনাদি দোষ পরিহারার্থ মৃত্যুঞ্চ মৃত্রুকরণক শতশংখ্যক হোম ও শান্তির নিমিত্ত পায়স দারা হোম করিবে। পশ্চাৎ "হে বিভো! জ্ঞানাজ্ঞান-কুত এই সমন্ত কাহ্য সম্পূর্ণ করুন" এইরূপ প্রার্থমা করত কবানীপতির উদ্দেশে হিরণ্য পশু ভূম্যাদি যথাশক্তি উৎস্গ করিয়া দিন চতুষ্ট্য ব্যাপিয়া দান গীত্রাদ্যাদিও মহোৎদ্র করিবে, তন্ম: ব তিন দিবদ মন্ত্ৰী (আচাৰ্য্য) মূৰ্ত্তিপ ঋত্বিক্ গণের দহিত ত্রিসন্ধ্যা হোম করিয়া চভুর্থ দিনে সমস্ত কুৰে বহুরূপ চরুদ্বাবা হবন কার্য্য সম্পাদন করিয়া পূর্ণাক্তি প্রদান করিবেন এবং তদ্পরিস্থ নিমাল্য অপন্যন্পূৰ্বক স্নান করাইহা পূজা করিবেন। সাধারণ লিঙ্গে সাধাবণ মন্ত্র দ্বারা পূজা কৰিয়া লিঙ্গ চৈত্ত ৰাতীত অৰ্থাৎ চৈত্তভ্যম লিঙ্গ ভিন্ন স্থাপুকে বিসভ্জন কবিবে। অস্থারণ লিঞ্চে "ক্ষমন্ব" বলিধা বিদক্ষন করিবে। বেছেতুক মাবাহন, অভিবাক্তি অর্থাৎ চিহ্নাদি দারা মূর্ত্তি-প্রকাশ, এবং বিদর্জন; এতজ্ঞিতয় শক্তিরূপত্তে

নির্দিষ্ট আছে। কোন কোন ছলে প্রতিষ্ঠান্তে ষিরাদি আহতি সপ্তক প্রদান উক্ত আছে, স্থিরাদি যথা স্থির, অপ্রয়ের, অনাদি বোধ, নিত্য, সর্ববিগ্ অবিনাশী ও তৃপ্ত এই সকল গুণ মহেশ্বের সলি ধানের কারণ, অভএব "ওঁনমঃ শিবায় স্থিরোভব" ইত্যাদি রূপে আহুতি প্রদান করিবে। এবস্প্রকার সমস্ত কার্য্য সম্পাদন করিয়া শিব কুস্তের ভায় অপর কুন্তম্বয় সংস্থাপন করিয়া এক কুন্তের ভল দারা মহেশরের স্নান সম্পাদন করিয় কর্ত্তার স্নামের নিমিন্ত বাথিবে। অন্ভার বলি প্রদানপূর্বক আচমন করিয়া শিবের আজা গ্রহণ করত বহির্গমন করিবে। পরে মন্দিরের বহির্ভাগে ঈশান কোণে ধামগর্ভ প্রমাণ স্থন্দর পীঠে আসন কল্পনা করিয়া পূর্বের ন্যায় ন্যাপ্রোমাদি বিধান করত পূর্বোক্ত পরমেশবের মঙ্গদেবতা ভ্রহ্মাণীর সহিত চণ্ডমূর্ত্তি সংস্থাপনপূর্ববিক ধ্যান করত যথা বিধি সদ্যোজাতায় ভঁহঁফট নমঃ। ভাঁবিঁ বামদেবায় হুঁফট নমঃ। ওঁ বুঁ অংখারায় হুঁফট নমঃ। ওঁ তৎপুরুষায় বৌমীশানায় হূঁ কট। এই সকল মন্ত্র ছারা যথাবিধি অর্চনা করিয়া জপ সম পণ ও প্রণতিপুর্বক "হে চণ্ডেশ! যাবৎকাল মহাদেব এই মন্দিরে সমিহিত থাকিবেন, ভাবৎ আপনি এই স্থলে অবস্থান করুন এবং অজ্ঞানবশুভ আমাকর্ত্র যে কোন কার্য্য নানাধিকরূপে সম্পন্ন হইযাছে, তৎসমুদায় আপনার প্রদাদে পূর্ণ হউক" এইকপ প্রার্থনা করিবেক।

বান লিঙ্গে চল লিঙ্গে লোহ নিশ্মিত লিঙ্গে সিদ্ধা লিঙ্গে স্বযজু লিঙ্গে এবং আর আর সমস্ত প্রতিমাতে চত্তর অধিকার নাই। স্থাপক অর্থাৎ গুরু স্বয়ং অবৈতভাবনাযুক্ত স্থিল সমিধানে চত্তর অর্জনা করিয়া পূর্বাহাপিত কৃক্ত ধারা পূক্ত ও

ভার্যার শহিত যজমানকে স্নান করাইবেন। ক্বত-লান যজমানও মহেখরের ন্যায় গুরুর আর্চনা করিয়া বিভ্রশাঠ্য পরিহারপুর্বাক জুমি হরণ্যাদি দক্ষিণা দান করিবে। অনন্তর মূর্তিপ জ্ঞাপক ত্রাক্ষণ দৈবজ্ঞ ও শিল্পিদিগকে যথোচিত অর্চিত করিয়া দীন ও অনাথাদিগকে ভোজন করাইবে।পরে "ছে ভগবন ! হে করুণানিধে ! হে নাথ ! এই উপস্থিত কার্য্যে আপনাকে আমি যে কট দিলাম, তাহা মহাশ্য নিজ্ঞাণে ক্ষমা করুন।" যজমান এইরূপ বিজ্ঞাপন করিলে, দদ্গুরু স্বহন্তে স্ফুরভারক সদৃশ প্রতিষ্ঠাপুণ্য কুশপুষ্পাক্ষতে নিহিত চিন্তা করিয়া য়ল্পমান করে সমর্পণ করিবেন। অনন্তর পাশু পত মন্ত্র জ্বপ করিয়া প্রণাম করিবে। পরে বলি-দারা ভূতগণকে সন্নিহিত করিয়া "যাবৎকাল মহা-দেব এম্বলে দল্লিহিত থাকিবেন,তাবৎ আপনারা এই প্রদেশে অবস্থান করুন,"এইরূপ বিজ্ঞাপন করিবেন। পরে গুরু বস্ত্রাদিদংযুক্ত যাগমগুপ ও শিল্পকর সমস্ত উপকরণ এবং আনমগুপ গ্রাহণ করিবেন। অনন্তর আগমোক্ত মন্ত্র দ্বাবা অথবা প্রেণবাদি नामा छ इड्बंख देश देश दिन जात नाम चाता निक-কেশ্বর প্রভৃতি দেবগণ নিজ নিজ অধিকারে ব্যাপ্ত চিন্তা সহকারে স্থাপনপূর্বক অর্চনা করিবেন। ঐ ব্ধপে পুথিবী ভত্বাশ্রিত সাধ্য প্রভৃতি দেবগণ, স্বিৎ, ওয়ধি, ক্ষেত্রপাল এবং কিম্বাদি স্থাপন করিবেন। কোন কোন স্থলে সংস্থাতী ও পদ্মা মনীর জলে স্থান উক্ত ভাছে।

ভুবনাধিপতিদিপের যে যে স্থান নির্দ্ধিনী আছে, তাহা বলা হইতেছে, মণ্ডবৃদ্ধি প্রধানান্ত অর্থান ব্রহ্মাণ্ডারন্তক পঞ্চুত ও একাদশ ইন্দ্রিয় এই বাড়শকগণ বিকাররূপ এচতত্ব, মহৎ অহংকার ও পঞ্চনাত্র এই সপ্তকগণ প্রকৃতি ও বিকৃতি

উভয়াত্মক তত্ব, এবং মূলপ্রকৃতিরূপ তৃত্ব এই ত্রিতব এক্ষার আস্পাদ জানিবে। তত্মান্ত্রাদি প্রধা
নার অর্থৎ পঞ্চন্দাত্র রূপতত্ব, মহৎ ও অহংকার
রূপতত্ব এবং প্রকৃতি এই ত্রিভত্ব ভগবান্ হরির
আস্পাদ। ভৃতভাবন ভগবান্ মহেশ্বের প্রমণগণের মাতৃকাগণের যক্ষেশ অর্থাৎ ক্রেরের প্রমণগার্তিকেয়র অন্তচ হইতে শুরুবিদ্যান্ত সমস্ত
আস্পাদ। গণপতির আম্পাদ মায়াংশ প্রদেশ
হইতে শক্তি পর্যান্ত। শিবাশিব সম্ভূত কেজঃপুঞ্জের আস্পাদ ব্যক্তপ্রতিমা হইতে ঈশ্বর পর্যান্ত
জানিবে।

কুর্মানি পঞ্চক ও রক্লানি পঞ্চক যাহা পুর্বের
কথিত হইয়াছে, তৎসমুদায় ব্রহ্মণিলা ব্যক্তিরেকে
পীঠগর্ত্তে প্রক্ষেপপূর্বক গর্ভ ছয়ভাগে বিভক্ত
করিয়া পৃষ্ঠদেশের এক ভাগ পরিত্যাগ করত
অপর পঞ্চ ভাগে প্রতিমা ছাপন করিবে। অথবা
অইতাগে বিভক্ত গর্তের ঐরপ পৃষ্ঠদেশের এক
ভাগ পরিত্যাগপূর্বক অপর সপ্ত ভাগে সংস্থাপন
করিবে। লেপ ও চিত্র ছাপন বিষয়ে ধারণা
ঘারা বিশুদ্ধি হয় এবং শিলারত্বাদি প্রক্ষেপ ও
রানাদি মান্দে সম্পাদন করিবে, নেক্রোদ্বাটন
এবং মাসনাদি প্রদান মন্ত্র ছারা কর্ত্তব্য চিত্রপূজা
বিষয়ে জল রহিত কেবল পুষ্প ছারা করিবে
কোন দোষ হয় না

সম্প্রতি চল লিঙ্গ মধাং যে লিঙ্গ প্রতিষ্ঠান্তে স্বেচহান্ত্রগারে স্থানান্তরিত করা যাইতে পারে, তাহার স্থাপনবিধি বলা যাইতেছে। পঞ্চ বা ব্রিধা বিভক্ত পূথক পাঁঠে ভাগত্রয বা ভাগদ্বয অবলম্বন করিয়া নিজ নিজ পীঠে এবং স্ফটিকাদি নির্দ্মিত লিঙ্গে তম্ব ভেদানুসারে স্পৃষ্টি মন্ত্র দারা যথাবিধি সংক্ষার করিবে। স্থার রম্পন্ত ত্রম্মন শিশার অধিবেশন ও পিশুকার সহিত বোজন বন দারা সম্পাদন করিবে এবং স্বয়স্ত্র লিপ্প ও বান লিকাদি বিষয়ে সংক্ষারের নিয়ম নাই। সংহিতা মন্ত্র দারা স্থান পূজা ও হোমাদি করাইবে। নদী এবং সমুদ্রজলিক্ষ ছাপন পূর্বের স্থায় করিবে। মৃথ্য় বা পিইকাদি নির্মিত লিক্স ঐহিক কল দিন্ধি বাসনায় যাগাদি বিধানামুসারে ভ্রম্মণে পূজা করিয়া মন্ত্রগ্রহণপূর্বেক আত্ম সন্ধিন করত তজ্জলে বিস্ক্রন করিলে, সংবৎসর মধ্যে কার্য্য সিদ্ধি হয়। ঐরপ বিষ্ণু প্রভৃতি দেব-মৃত্রি স্থাপন পৃথক্ মন্ত্র দারা করিবে।

ইক্যায়েয়ে আদি মহাপুরাণে শিব প্রতিষ্ঠাবিধি নামক বিংশত্য'ধক ধিশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

একবিংশদ্ধি দৃদ্ধিশতত্ম অধ্যায়। শারপ্রতিষ্ঠা কথন।

ঈশ্বর বলিলেন, অনস্তর স্বারপ্রতিষ্ঠা সম্বন্ধীয় বিধি বলিব। দ্বারাঙ্গদকল ক্ষায়াদি দ্বার! রঞ্জিত করিয়া শয্যার উপর বিস্থাস করত মূল মধ্য ও অপ্রভাগে আতাবিদ্যা ও শিবরূপ ত্রিতত্ব ন্যাস-পূর্বক সাধ্যানুসারে হোম জপ করিয়া ছারের পর-ভাগে অমস্ত মন্ত্ৰ ছাৱা বাস্ত পূজা পূৰ্বকে রত্নাদি-পঞ্চক বিকাস করত শান্তি হোম করিয়া যব সিদ্ধার্থ বিষ্ণুক্রান্তা ঋদ্ধি নামক ওষধি বিশেষ বৃদ্ধি নামক মাঙ্গল্য বিশেষ মহাতিল গোষ্ঠ মৃতিকা সর্যপ প্রভৃতি এবং গোরোচনা এবং দূর্বনা এই সমস্ত দ্রব্য একত্রিত করিয়া একটি পোটলী বন্ধ করিয়া প্রাসাদের অধ্যেভাগে রক্ষার নিমিত উড়ম্বর কাষ্ঠে প্রণব উচ্চারণ করত ঝুলাইয়া দিবে। পরে কিঞ্চিৎ উত্তর দিক অবলম্বন করত
হার সমিবেশ করিয়া নিমানেশে আছাড়ম্ব পার্ম হি
কার্চম্বরে বিদ্যাত্ত এবং আঁকাশহ অর্থাৎ উপরিহিত কার্চে শিবতত্ব স্থাস-ও মূল মন্ত্র ছারা মহেশ
নাথ সর্বত্র ব্যাপক স্থাস করিবে। অনন্তর ছারাশ্রেড নন্দী প্রভৃতি প্রমণগণের স্ব স্থ নাম ছারা
শত অর্দ্ধশত বা যথাশক্তি হোম করিবে। পরে
ন্যাদিদোষ পরিহারার্থ শতসংখ্যক হোম করিয়া
পুর্বের স্থায় দিকপালগণের উদ্দেশে বলি প্রদান
পুর্বিক দক্ষিণাদি প্রদান করিবে।

ই ত্যাংগ্ৰেম আদি মহাপ্রাণে বারপ্রতিষ্ঠানামক একবিংশদধিক বিশ্ততম অধ্যায় সমাপ্ত।

দ্বাবিংশত্যধিক দ্বিশতত্ব অধ্যায়।

ঈশ্বর বলিলেন, অধুনা প্রাসাদ ছাপন ও আ্যা-যোগে তাহার চৈত্য বিধান ব্যক্ত করিব। পূর্ব্ব-বেদীর মধ্যভাগে অফটদল পদার আধারশক্তিরূপ কর্ণিকোপরি মুর্ণাদি নির্দ্মিত পঞ্চগব্য ও মধুক্ষীর-যুক্ত কুন্ত পঞ্চরত্ব গদ্ধমাল্য হুরভি পুষ্প আত্রাদি পল্লব ও বস্ত্রাদি দ্বারা ভূষিত করত স্থাপন করিয়া গুৰু সকলীকৃত বিগ্ৰহ হইয়া দেদীপ্যমান বহ্নিকণা দদুশ দৰ্কাত্ম ভিশ্ব আত্মাকে নিজ মন্ত্ৰ ভারা পূরক যোগে হানয়ৰ স্থানশনল অনাহত পৰা হইতে গ্ৰহণ করত স্বান্ত মারুত হইয়া ভগবান্ সস্তুকে বিজ্ঞা-পন করত আজ্ঞা গ্রহণপূর্বক রেচকযোগে কুন্তগর্ভে নিক্ষেপ করিবে। পরে ন্যন্তভন্ত আভিবাহিক শরীর, তাহার গুণবোধক কলাদি, ক্ষান্ত বাগীশ্বর ও ত্রাত তম্মধ্যে ইড়াদি দশ নাড়ী প্রাণাদি দশ বায়ু,জয়ো-দশ ইন্দ্রিয় ও ইন্দ্রিয়াধিপতি প্রথবাদি নিক নিক নাম বারা ব ব কার্য্য কারণভাবে বোজনা করিয়া

গুস্ততন্ত্র আতিবাহিক শরীর, তাহার গুণবোধক কলাদি, ক্ষান্ত বাগীখর ও ভ্রাত তশ্মধ্যে নিবেশ করত ইড়াদি দশ নাড়ী প্রাণাদি দশ বায় জয়ো-मर्भ हेस्तिय ७ हेस्तियाधिशक्ति धार्गामि निक निक নাম ছারা স্ব স্কার্য্য কারণভাবে যোজনা করিয়া, मायाकां मित्रामक वृक्तिवृक्ति तथातक विद्यस्, नर्व-ব্যাপি শস্তু এবং অঙ্গসকল নিকেপ করিয়া রোধ মুদ্রা দারা রুদ্ধ করিবেক। অথবা শয্যার উপর কৃত্ত স্থাপনপূর্বেক হুবর্ণাদি দারা পুরু ও পুরুষা-কুচর নির্মাণ করিয়া পঞ্চাব্য ও পঞ্চ ক্যায়াদি দারা পুর্বের ক্যায় সংস্কার করত ত্রিভাগ বিভক্ত দেই পুরুষে উমাপতি ভগবান্ রুদ্রের করিয়া, শিবমন্ত্র ছারা ব্যাপক ভাদ করত সমি-ধানের নিনিত হোম প্রোক্ষণ স্পর্শন জপ সালি-ধ্যাত্মবোধন এই সমস্ত কার্য্যকলাপ সম্পাদন করিয়া প্রকৃতির সহিত কুস্তে সন্নিবেশ করাইবে।

ইত্যাধেয়ে আদি মহাপ্রাণে প্রাসাদক্ত্যপ্রতিষ্ঠ। নামক ভাবিংশতাধিকছিশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

ত্ৰয়োবিংশত্যধিক দ্বিশতত্ম অধ্যায়।

ঋজারোপণ।

ঈশ্বর বলিলেন, হে কার্কিকেয়। দেবমন্দিরের চূড়া ধ্বজনত ও ধ্বজা প্রতিষ্ঠায় হেরপ
বিধান আছে তাহা বলিতেছি। বৈফাবাদি
নন্দিরের মূর্ত্তিপ্রমাণ চূড়া কুস্কচক্র দ্বারা শোভিত
ক্রিবে এবং শৈবাদি মন্দিরের অগ্রচূড়া ক্রিশুলযুক্ত হইবে। উপরিস্ভাগে লিঙ্গযুক্ত বা বীজপূরকান্বিত ঈশ শূল নামে বিধ্যাত শিবশাস্ত্রে
বিহিত আছে। চিত্রধ্বক জ্ঞাপরিমিত ক্রমার্দ্ধ
পরিমিত দগুপ্রমাণ বা শ্বেছামুদারে করিবে।

(य ध्वका चात्रा शैक्ष्टवस्त्रेम कत्रा सहिद्यक शास्त्र ७ याहात वर्ष छेख्य मध्यम भाषमञ्जद्भः हर्जुर्मण व्य নবহন্ত বা বড়হন্ত পরিমিত ব্যবস্থিত আছে, পণ্ডিতগণ তাহাকে মহাধ্যজ বলিয়া কামেন-ঃ বংশনিশ্মিত বা শালকাঠজাত ঘেলদণ্ড সংৰ্বকাৰ थान जात जारतां भागां न के नक यनि देवबाद अध হয়, তাহা হইলে যজমান ও রাজার বিশেষরূপ অম্পল হয়, অতএব পূর্কের ন্যায়, বছরূপ মৃদ্র ছারা শৃত্তি করিবে। ছারপালাদি অনস্তর পূজা মন্ত্ৰ ৰাৱা তপণ অনুষ্ঠান করিয়া অস্ত্ৰমন্ত অর্থাৎ কট্ এই মন্ত্র দ্বারা চূড়াধ্বজা স্থান করা-ইয়া গুরু ঐ মন্ত্র দ্বারাই ধ্বজায় সংপ্রোক্ষণ করত মৃতিকা ও ক্যায়াদি দ্বারা স্নাত ও অলহ্বত ক্রিয়া বিলেপনানন্তর রস্ঞহণ অর্থাৎ ক্ষক করিয়া পূর্বের ন্যায় শয্যায় সংস্থাপন করত চুড়োপরি লিঙ্গের ন্যায় বিন্যাস করিবে এবং উহাতে জ্ঞান क्रिय़ा विरमधार्यक हजूबी अरमांग वा कुछ कन्नमांत्र আবশাক করে না এবং দত্তে আত্মতন্ত্র বিদ্যাতত ও সদ্যোজাতাদি মন্ত্ৰাত্মক শিবতত্ ন্যাস করিয়া পুনরায় ধ্বজার নিফল শিবতত ন্যাস ও অঙ্গ ন্যাস করিয়া পূজা করিবে। অনন্তর মন্ত্রীসংহিতা মন্ত্র ভারা সামিধ্য সম্পাদন করিয়া হোম করিবে এবং ধ্বজার প্রত্যেক অংশে ফড়স্ত দৈ দৈ মন্ত্র খারা বা অন্যত্ত অন্য যে কোন রূপে কথিছ আছে, তদন্দারে ধ্বজদংস্কার করিবে। যাগ বিধান ও এইরূপ তৎসমস্তও প্রদর্শিত হই-য়াছে। বস্ত্র মাল্যাদি দ্বারা দক্ষিত প্রদাদ-উৰ্দ্ধভাগে জজাবেদীতে ত্ৰিত স্থাদি অর্থাৎ আত্মবিদ্যা ও শিবতত্ত্ব ন্যাস করিয়া পুর্বের ন্যায় শিবপূজা ও হ্বনাদি ক্রিয়া সম্পা-দনপুর্বেক শিব দর্বেত্ত্ময় চ্নিতা করিয়া, ব্যাপক

बहुर्न कतित्व । अनस्तत जगवकत्र नामिविष्म कान ক্লুদ্র চিন্তা করিরা পীঠোপরি কমাও শিবান্চর স্বর্গ, পাতাল, নরকাদির সহিত ত্রিভূবন লোকপালগণ ও শত শত ফ্রেদি পরিরত এই ব্ৰহ্মাণ্ড চিন্তা করিয়া জ্ঞাতে ক্ষিত্যপ্ তেজ মরু-ছোম এই পঞ্ছতের সহিত সর্বাবরণ নামক বুদ্ধযোনির অন্তক্ষুক্ত অন্তাঙ্গ যোগদহ সৃষ্টি স্থিতি প্রকাররূপ গুণতায়, পটম্থ পুরুষ, দিংহ এবং রাগ চিন্তা করিবেক। মঞ্জরী বেদিকাতে বিদ্যাদি চত্তীয়, কঠে মহামায়ার সহিত ভগবান রুদ্রদেব, অমলসারকে বিদ্যা, কলদে জটাজ্টশোভিত अक्षिष्ट ७ मृत्रधाती नेत्रत विन्तू ७ विराधितयुक्त अवर के ऋल्डे मक्तिका हिन्छ। कतिया, मस्स নাদরূপ ধ্বজায় কুলকুগুলিনী শক্তি এইরূপে ধামের সর্বতি চিন্তা করিবে। অথবা জগতে পিঞ্জিকার সহিত লিঙ্গ সন্ধান করত নিজ মন্ত্র দারা উত্থাপন করিয়া নিজ আধারস্বরূপ শক্তি-পক্ষজে রজাহি নিক্ষেপ করত তথ্যধ্যে লিঙ্গ নিবেশ করিবে। অনন্তর যজমান পুত্র মিত্রাদির সহিত দেব্যন্দির প্রদক্ষিণ করিলে অভিল্যিত ফল লাভ করেন। পরে গুরু মস্ত্রাধিপের সহিত পাশুপত মন্ত্র ধ্যান করত শস্ত্রধান্ত্রী অধিপতিগণ রক্ষার্থ निरंदमन कतिरव। अमछत मानानि रमाय शति-হারার্থ হবনাদি জিয়া সম্পাদন ও দিকপালদিগের উদ্দেশে বলি প্রদান করিলে যজমান গুরুকে দক্ষিণাপ্রদান করিবেন। এইরূপ কার্য্য সম্পা-দ্র করিলে ভোগাভিলাষী কর্তার প্রতিমা লিঙ্গ ও বেদীতে ঘাবৎ পরিমাণে পরমাণু তাবদ্যুগ দহত্র স্বর্গাদি ভোগরূপ ফললাভ করেন। धेडारिया व नि मधाशुर्रात्य ध्वजात्मारु ।। नि विधि नामक অংশাদশংবিক নিশতভদ অধ্যায় স্মৃপ্তি।

চতুৰিংশত্যধিক দ্বিশততম অধ্যায়।

জীর্পোদ্ধার।

केश्वत विलिटन, अधूना कीर्गानि निवनित्त्रत যথাবিধি পুনরুদ্ধারের বিষয় বলিব। লুগুচিফ্ ভগ্ন ক্ষীত বক্তহত ক্ষুটিত ইত্যাদিরূপ দোষযুক্ত লিঙ্গের পিণ্ডিকা ও বুয়ত পর্যান্ত ত্যাগ করিবে এবং অন্য কর্ত্তক চালিত বা ষয়ং স্বস্থান হইতে চলিত অত্যন্ত নিম বিষমস্থ বা দিয়াত অৰ্থাৎ বিপরীত দিকগত অন্য কর্ত্ত পাতিত মধ্যন্থ বা স্বয়ং পতিত লিঙ্গ যদি নিত্রণি অর্থাৎ ভগ্নাদি দোষ-শৃত হয়, তাহা হইলে ঐ লিক্স পুনরায় যথাবিধি সংস্থাপন করিবে। আর যদি নদ্যাদি প্রবাহ দারা লিঙ্গন্থান ভ্রষ্ট হয়, তাহা হইলে বিধিপূর্বক অহাতা স্থাপন করিবে। স্থন্দর রূপেই থাকুন বা মন্দভাবেই থাকুন, শিবলিঙ্গ কদাচ চালিত করিবে না। শত দেধি স্থাপন ও সহত্র দেধি চালন করিবে। পূজাদিযুক্ত জীর্ণাদি শিবলিক ও হৃদ্ভিত অর্থাৎ স্থন্দররূপে অবস্থিত বলা যায় আর পূজাদি রহিত স্থানর লিঙ্গ ও তুঃস্থিত বলিয়া গণ্য হয়. জ†नित्र ।

দক্ষিণদিকে বা ঈশান কোণে প্রত্যেক দার

এক তোরণযুক্ত মগুশ প্রপ্তত করিয়া গুরু দার

পূজাদি করিয়া, মন্ত্র দ্বারা দেবদেব ভগবান্ মহে
শ্বের পূজা স্থানিলে হবনাদি ক্রিয়া ওতর্পণ সম্পা

দন পূর্বক বাস্তদেবতার অর্চনা করিয়া বহিঃ
প্রাদ্ধণ দিক্পালদিগের উদ্দেশে বলি প্রদান
ও ব্রাহ্মণ ভোজন সম্পাদন করিয়া ক্তাচমন গুরু

স্থাং ভূতভাবন ভগবান্ ভবানীপতির সন্ধিনানে

বক্ষ্যমাণরূপে বিজ্ঞাপন করিবেন। "হে শিব!

আপনার এই লিঙ্গ দূষিত হইয়াছে, অত্ঞব ইহার

উত্তরণের নিমিত যথাবিধি শান্তিকার্য্যে যদি আপ-নার অভিকৃতি হয়, তাহা হইলে আমাতে অধি-ষ্ঠান করুন।" এইরাপে মছেশ্বর সমীপে নিষে-দন করিয়া মধু আজ্ঞা কীর দূর্ববা ছারা মুলমন্ত্র উচ্চারণ করত অফ্টোতর শত আছতি প্রদানরূপ শান্তিহোম করিবে। অনন্তর লিঙ্গ সংস্থাপন-পূর্বক হতিলে ক্ষ্যুষাণ প্রকারে পূজা করিবে। ওঁ ব্যাপকেশবায় এই মন্ত্র বারা ব্যাপক ভাস, ওঁ ব্যাপকেশ্বরায় হৃদ্যায় নমঃ: ওঁ ব্যাপকে-খুরায় শিব মে স্থাহা, ইত্যাদি মন্ত্র দ্বারা অঙ্গর্যাদ করিবে। পরে ফট মন্ত্র ঐ লিঙ্গাঞ্জিত সম্বগণকে শ্রেৰণ করাইয়া "এই ছলে লিঙ্গ আশ্রেয় করিয়া যে কোন সত্র আছেন, তাঁহারা মহাদেবের আজ্ঞা-মুসারে লিঙ্গ পরিত্যাগ করিয়া স্বাভীট স্থানে প্রস্থান করণন। বিদ্যা বিদ্যেশরের সহিত সেই ভগবান ভবানীপতি ইহাতে অধিষ্ঠান করিবেন।" এইরূপে তত্ত্ব সহগণ অপদারণ পূর্বক পূজা হোম ও শান্তিজল দারা প্রোক্ষণ করিয়া প্রতি-ভাগে কুশা ছারা স্পর্শ করত সহস্র সংখ্যক পাশুপত মন্ত্র জপ করিয়া বিলোম মাতৃকা দারা অৰ্ঘ প্ৰদানপূৰ্বক তত্ব ও তত্বাধিপ অফ মূভীশ্বর লিঙ্গে ও পিণ্ডিকায় অর্চ্চনাপূর্ব্বক বিসর্জ্জন করিয়া বুষক্ষক্ষিত স্বৰ্পাশ দারা বন্ধন করিয়া জনসমূহ কর্ত্তক শিবমন্ত্র উচ্চারণ করত জনস্মীপে নীত হইলে গুরু তঙ্গলে নিকেপ করিয়া নিমিত্ত শতসংখ্য হোম দিক্পালদিগের পরিতো-ষার্থ এবং বাস্তশুদ্ধির নিমিত্ত শত শত হোম করিয়া মহাপাশুপত মন্ত্র দারা দেই শিবধামে রকা বিধান করত গুরু অন্য শিবলিঙ্গ যথাবিধি সেই ছলে ছাপন করিবেন। অহার মূনি এবং গোত্ৰতত্ববিৎ জনকৰ্ত্তক প্ৰতিষ্ঠিত লিক্স জীৰ্ণ বা

ভয় হইলেও চালিত করিবে না। জীর্ণধান প্রক্ষার বিষয়ে এইরপেই বিরি আছে। খড়েগ
যত্ত্রসমূহ বিভাগ করিয়া, মন্দিরান্তর নির্মাণ করীইবে। প্র্বাপেকা নজোচ করিলে কর্তার মৃত্যু
হয় এবং বিস্তার করিলে ধনক্ষয় হয়। তত্ত্বপ
দ্রব্য বা তদপেকা শ্রেষ্ঠ দ্রব্য হারা তৎপ্রমাণক
তৎসমান কর্য্য করিলে।

ইত্যাথেমে আদি মহাপুরাণে জীর্ণোদ্ধার,নামক চতুর্দ্ধিং-শতাধিক বিশতভম অধ্যায় সমাধ্য।

পঞ্চবিংশত্যধিক দ্বিশত্তম অধ্যায়।

প্রাসাদ লক্ষণ।

ঈশ্বর বলিলেন, হে কার্তিকেয়! প্রাদাদ-দামানোর লক্ষণ সম্প্রতি তোমার নিকট কীর্ত্তন করিব। চতুর্ভাগে বিভক্ত ক্ষেত্রের এক একভাগ বিন্তীর্ণ ভিত্তি ইইবে, অপর ভাগদ্বয় অর্থাৎ ঐ সম্-দায় কেত্রের অভিভাগ মন্দিরগর্ভ হইকে এবং ঐ মন্দিরগর্ভ প্রদেশ চতুর্বা পঞ্চাগে বিভক্ত করিয়া মধ্যভাগে পিগুকা প্রস্তুত হইবে। মধ্য-ভাগর্য মন্দিরগর্ভ ও পার্যন্ত ভাগরয়ে গর্ভ খনন করিয়া ভদাধ্য হইভে বিস্তাররূপে ভিত্তি উত্থিত হইবে। কোন কোন ছলে তিভাগ গর্ভ অব-শিষ্ট ভাগ ভিত্তি কোথাও বা ছয়ভাগৈ বিভক্ত ক্ষেত্রে একভাগ বিস্তীর্ণ ভিত্তি ভাগদয় ব্যাপিনী পিলিকা এবং অবশিকভাগ বিস্তীৰ্ণগৰ্ভ উক্ত হই-য়াছে। বিস্তার অপেকা দিওণ সপাদ দিওণ অদ্ধিক দ্বিগুণ বা ত্রিগুণ উন্নত করিবে। কোন কোন প্রদেশে ভূমির বিস্তারের অর্দ্ধপরিমাণে কোথাও বা ত্রিভাগ পরিমাণে উন্নত ছইবে। প্রাসাদের চতুদ্দিকে পাদোনভাগ বিস্তীর্ণ নেমি

অর্থাৎ প্রাকার প্রস্তুত করিবে। ত্রিধা বিভক্ত পরিধি মণ্য প্রদেশে মূর্ত্তিদকল প্রস্তুত করাইয়া উহাতে চামুগু ভৈরব ও নাট্ট্রেশ দলিবেশ করা-ইবে। প্রাদাদের অর্দ্ধপরিমাণ প্রদেশে বহির্ভাগে প্রদক্ষিণ ক্রমে পূর্ব্যদিকে আদিত্যগণ অগ্নিকোণে কার্ত্তিকেয়ও তাহার বামে অগ্নি এইরূপে নিজ নিজ দিকে যমাদি স্থাপন করিবে।

দেবপ্রাদাদ নানাবিধ বিহিত আছে. তম্মধ্যে প্রথমতঃ চতুকোণ দ্বিতীয় চতুকোণায়ত, তৃতীয় বৃত্ত অর্থাৎ গোলাকার চতুর্থ বৃত্তীয়ত এবং পঞ্চম অফটকোণ ইহারা প্রত্যেকে নয়প্রকার ভিনাকারে নির্মিত হইতে পারে, তাহাতে সমুদায়ে পঞ্চমা-রিংশত প্রকার হইবে। উক্ত মর্বপ্রকার প্রাসা দের যথাক্রমে নাম ও বংশ কীর্ত্তন করিতেছি. প্রথম প্রকার প্রাদাদের নাম মেরু দ্বিতীয় মন্দর এইরপে ক্রমে তৃতীয়াদির নাম বিমান, ভদ্র. সর্বতোভদ্র, চরুক, নন্দিক, নন্দি, বর্জমান, ভীবৎস এই কয়প্রকার বৈরাজজয়তিতে সমুৎপন্ন। বলভা গৃহরাজ শালাগৃহ মন্দির বিশাল অক্ষমন্দির, ভূবন শিবিকা বেশা এই নয়টা পুষ্পাক সম্ভূত। বলয় হুন্দুভি পত্ন মহাপত্মক বৰ্দ্ধনী উফীষ সঞ্জ কলদ ধর্ক্ষ এই কয় প্রকার রুত্ত কৈলাদ সম্ভব। গজ বৃষভ হংস গরুড়খক্ষনায়ক ভূষণ ভূধর 🗐 জয় পৃথিবীধর এই কয়েকটা মণিক নামক বৃভায়ত সম্ভ । বজ্ঞ চক্র শ্বন্তিক বজ্রস্থতিক চিত্রস্থতিক খড়গ গদা 🗐কণ্ঠ বিজয় নামক এই কয়েকটা ত্রিবিউপ জাত। নগরাদির এবং নাট্যমন্দির প্রভৃতিরও এইরপে নাম জানিবে। চূড়া গ্রীবার্দ্ধ পরিমাণে উন্নত ও বিভাগানুসারে স্থূল হইবে। ঐ সকল মন্দিরের দশটী বেদিকা হুইবে, তন্মধ্যে পাঁচটীর দ্বারা ক্ষম বিস্তার তিন্টী দ্বারা কণ্ঠ

উহার মধ্যে তুই ও অপর তুই এই চারিটা ভারা দণ্ড করা হইবে। প্রাচ্যাদি দিকে ভার কর্তব্য বিদিকে অর্থাৎ কোণে কদাচ ভার করিবে না।

পিণ্ডিকা কোণ হইতে মধ্যদেশ প্রযুক্ত विखीनी इहेरवर्री। दकान ऋत्म शक्षमणांत्र वा गर्ज-পাদ পরিমাণে হইবে উহাদিগের উচ্ছায় দিওণ হইবে আর ষ্ট্রাধিক শত অঙ্গুল পরিমাণে আরম্ভ করিয়া ক্রমে দশ দশ অঙ্গুল ন্যুনরূপে উৎকৃষ্ট চারিটী দ্বার উত্তম মন্দিরের ইইবে। ধামের দ্বার তিনটী হইবে। ন্যুনকল্পে দ্বার অভ্য রূপে করিতে পারে। দারের উচ্ছায়ের অর্ধ-পরিমাণে বিস্তার হইবে: বা বিস্তার অপেকা তিন গুণ উচ্ছায় করিবে। অথবা তদপেকা চারি অন্ত বা দশাঙ্গুল বর্দ্ধিতভাবে উচ্ছায় করিবে কিম্বা উচ্ছায় প্রমাণের চতুর্থাংশ পরিমিত বিস্তীর্ণ হইবে। উড়ুন্বর কাষ্ঠনির্ণিত সেই সমস্ত ছারের অর্দ্ধ পরিমাণে বাহুল্যরূপে অর্গল করিবে। ছুই পাঁচ দাত বা নব শাথা ছারা ছার নির্মাণ কর্ত্তব্য। নিম্নন্থ কার্চের চতুর্থাংশে প্রতী-হারীদয় দশ্লিবেশকরিবে। অবশিক শাখাসমস্ত স্ত্রী পুরুষ ও লতাদি অহিতে করিয়া শোভিত করিবে।

ন্তন্তবেধ ঘটিলে কর্তার দাসত্বয়। বৃক্ষ বিদ্ধ হইলে ঐশ্বর্যা নাশ, কুপবিদ্ধ হইলে, নানাপ্রকার ভয় উপস্থিত হয়। দার এবং ক্ষেত্রে বেধ ঘটিলে ধন হানি হয় এবং প্রাসাদ গৃহ শালাদি ও মার্গবেধে হইলে বন্ধন সভায় বিদ্ধে দারিদ্রা বর্ণবেধে নিরাক্তি উল্থল বিদ্ধে দারিদ্রা শিলা বিদ্ধ হইলে শক্রতা এবং ছায়া বিদ্ধ হইলে দারিদ্রা হয়। ছেদ, উৎপাটন এবং প্রাকাররূপ দীমা হইতে দ্বিগুণ স্থান পরিত্যাগ করিলে বেধ দোর শান্তি হয়।

বড় বিংশত্যধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

গৃহাদিবাস্ত কথনং।

ঈশর বলিলেন, নগর আমে জুর্গাদিতে সৃহ প্রাদাদদি বৃদ্ধির নিমিত একাশীতি-পদপীঠে বাস্ত-দেবের অর্চনা করিলে নিশ্চয় সিদ্ধিলাভ হয়। প্রথমে শাস্ত্রা যশোষতী কান্তা বিশালা প্রাণবাহিণী সভী বহুমতীনন্দা হুভদ্রা ও মনোরমা নান্ত্রী দশ প্রকার নাড়িকাদূত্র পূর্ব্বাদ্যভাবে দম্পাত করিয়া পরে হরিণীদ্বয় স্থপ্রভা লক্ষ্মী বিভূতি বিমলা थिया क्या काम ७ विट्यांका नाची क्या मन নাড়িকা উত্তরাস্যভাবে সম্পাত করত একাশীতি পদ প্রস্তুত করিবে। ইছার পূর্ববিদিকে ঈশ ধনঞ্জর ইন্দ্র সূর্য্য সভ্য ভূপ ও ব্যোমাক্ষদেবের দক্ষিণে কৃতান্ত গন্ধর্ক ভূঙ্গ মুগ ও পিতৃদেবের পশ্চিমে দার-পাল স্ত্রীব পুষ্পদন্তক বরুণ দৈত্য ও শেষ দেবের উত্তরে যক্ষ রোগ মোক্ষ অহিমোক্ষ ভল্লান সোভাগ্য অদিতি ও দিতির অর্জ না করিবে। পরে মধ্যন্থিত নবপদগত ষড়ঙ্গক ব্ৰহ্মার পূজা কর্ত্ব্য এবং ত্রন্ধার ও ঈশানের মধ্যকোষ্ঠস্থ পদন্বয়ে মায়া (मरीत, উश्वत जारशासिएम (कख्द भशास वर्षे शरन অপবৎসাধ্যদেবের পূজা করিবে। মরীচি ও অগ্রির মধ্যক্ত পদন্বরে সবিতা উহার অধোভাগে অংশবয়ে সাবিত্রী, উহার অধোদেশক ষট্পদে বিবস্থান্ এবং পিতৃদেব ও ব্রহ্মার মধ্যে বিষ্ণু চন্দ্রমা ও ইন্দ্রের পূজা করিয়া উহার অধোভাগে জয় নামক দেবের এবং বরুণ ও ত্রহ্মার মধ্যে ষট্পদে মিত্রাধ্যদেবের যজন করিবে ৷ রোগ মোক্ষ ও প্রক্ষার বধ্যন্থিত क्लिकंबरम ऋसनाम, छहात व्यापारमण अनवश्यक यक्यत धनः উত্তরদিকন্ম ষট্পদে यशक्तिय ধরাধর চরকীক্ষরবিকট্বিদারী ও পৃতনার অর্চনা করিবে।

পরে ঈশানাদিকোণ বৃহির্জাগে জন্ত পাপ ও পিনিপিছরে পূলা করিবে। এই রূপে একাশীন্তি পদযুক্ত গৃহ প্রস্তুত করিয়া শতপদ মণ্ডপ নির্মাণ
করিবে। উহাতেও পূর্বের ন্যায় দেবগণের পূজা
কর্তব্য, কেবল এইমাত্র বিশেষ ব্রহ্মা এবং মরীচি
বিবস্থান মিত্র ও পৃথীধর ধোড়শাংশে পৃজনীয়
হন এবং অপরাপর দেবগণ দশদিক্ষিত দশকোষ্ঠ
বা ঈশাদিকোণপদে পৃজিত হইবেন এবং দৈতামাতা ঈশ ভাগ্রি মৃগ নামক পিতৃষয় পাপ যক্ষ্ম
ও অনিল এই সমস্ত দেবগণ সার্জাংশকৈ অবস্থিত
থাকেন।

হে কার্ত্তিকেয় ! একণে যাগাদির এওপ সং-কেপে জ্রমশ বলিব। তিংশৎ হস্ত দৈর্ঘ্য, ও অন্টা-বিংশতি হস্ত পরিমিত বিস্তীর্ণ সাধারণ যাপমগুপ হইবে। শিবাখ্য শিবাশ্রমের উভয় দিকে একাদশ একাদশ হস্তবিহীন অর্থাৎ ঊনবিংশতি হস্ত দীর্ঘ ও সপ্তদশ হস্ত প্রস্থার করিবে। সবিভার আলয় व्यक्तीम् इस मीर्च ७ भक्षम् इस विस्तीर्ग इहेटव । অন্যান্য দেবগণের আলয়ের ত্রিংশাংশ পরিমিত ভিত্তি পৃথকরূপ সংস্থাপিত করিবে। পৃথুজক্ষর উপরিভাগ তদপেকা ছইবে। কুডার সমস্ত্র পৃথ্য করিবে এবং দেবা-লয় বীৰি ভেদে নানা প্ৰকার হয়। তুল্য বীথি ভক্তাক আলয়ের হারবীথি অগ্রভাগশয় हरेटा अक्षय नामक चालरात शृष्ठरमन वीबि বিহীন ও উহারও পার্শব্য বীথি বিহীন হইলে ভদ্রনামে থ্যাত হয়। গর্ভবিস্তারসমা বীথি বা কোন কোন স্থানে উহার অর্কার্ক পরিমাণে বীথি হয়, কোথাও বা বীথির অর্দ্ধ পরিমাণে এক দ্বি বা ত্রি পুরাম্বিত উপবীধ্যাদি হয় ইত্যাদিরূপে দেবা-লয় নানা প্রকারে উক্ত হয়। অনন্তর সর্বকাষ-

প্রদ সর্ব্রদেব সাধারণ এক তুই তিন চারিও অফীশালা গৃহর বিষয় যথাক্রমে বর্ণন করিব। একশালা গৃহ দক্ষিণ দিকে উত্তরাস্য নির্ম্মাণ করিবে। ছিশাল গৃহ হইলে সন্মুখ ওপশ্চাতে উত্তরাস্ভাবে প্রস্তুত করা কর্ত্তব্য। চতুঃশাল গৃহ উক্ত গৃহদ্বয়ের সম্মুখে পূর্ব্বদিক মুক্ত রাখিয়া পশ্চিমাদ্য ও পূর্ববাদ্য ভাবে নির্মাণ করিবে। পূর্ব্ব ও উত্তর দিক স্থিতগৃহর নাম দণ্ড পূর্বেও দক্ষিণ গত গৃহর নাম বাভ পশ্চিম ও উত্তর দিক স্থিত গৃহ গৃহবল্যাথ্য জানিবে এই সমস্ত গৃহ ত্রিশূল ব্যতিরেকে সমৃদ্ধি-দায়ক হয়। পূর্ব্বশালা বিহীন শোভন ক্ষেত্র রুদ্ধি 🚁 নিবে। দক্ষিণশালাহীনশূলবিশিক **जिभाल गृह दृष्टि कनक। जलहीन (**पराराम यस्त्रच হুত নাশক এবং শক্র বর্দ্ধন হুতএব দেবালয় कमाठ जलाभाग्र भग्न कतित्व ना ।

অধুনা পূৰ্ববাদি ক্ৰেমে ধ্বজাদিও অফীশালা গৃহর বিষয় বলিতেছি। একালাতু শ্ৰগাবাদ নাৰক অফশালা গৃহর অগ্নিকোলে পাকশালা, निकिन निरक दमक्तिया ७ भया। गृह, रेनशार**७** ४नू ও শস্ত্রাগার, পশ্চিম দিকে ধনভোগ গৃহ, বায়-কোণে শন্য মঞ্ উত্তর দিকে ধন্ ও পশুশালা, ঈশানকোণে দীক্ষা গৃহ করিবে। গৃহর দৈর্ঘ্য বিস্তার ও পিণ্ডিকা পরিমাণ স্থামি হস্ত দ্বারা যাহা হইবে তাহা তিন দিয়া গুণ করিয়া অফীমাংশ দারা হরণ করিবে ভাহার শেষ যাহা থাকিবে। ভৎপরিমাণে বায়দান্ত থকোদি করিবে ৷ দি ত্রি চতুর ষট্ সপ্ত ও অফীমাংশে মধ্যে এবং অস্তে স্থিত গৃহ দর্বনাশকর হয়। অতএব নবমভাগে নিলয় প্রস্তুত তাহার মধ্যে মণ্ডপ দম বা দিগুণভাবে নিৰ্মাণ করা অতি প্ৰাশস্ত। পূৰ্ব

রাধিবে। পূর্বাদি প্রত্যেক দিকস্থিত গৃহই ঈশাদি পূৰ্ববান্ত অকটিনগাশ্ৰৈত ছান্ন যুক্ত বিধায় **অষ্ট বিধ হইতে পারে অতএব ঐ প্রত্যেক দিক**ন্থ ঈশাদিপূর্বান্ত দারযুক্ত অফ প্রকার গৃহর যথা-জ্ঞামে ফল কীর্ত্তন করিতেছি। ভয় জ্লীবিয়োগ জয় রুদ্ধি প্রতাপ ধর্মা কলহ দারিদ্র্য এই অফটবিধ कल शूर्व्यक्तिकञ्च व्यक्ते विश्व शृह्त यथाक्तरत्र जानित्व। দাহ অতথ হুজ্যাল ধননাশ মরণ ধনলাভ শিল্পিছ ও সম্ভান লাভ এই অফ প্রকার দক্ষিণ দিকস্থিত মফবিধ গৃহর ফল নিণীত আছে। আয়ুঃ প্রব্ৰজ্ঞা শ্ব্যুদ্ধি ধনলাভ শান্তি অর্থক্ষয় শোষ ও ভোগ এবং সন্তান লাভ এই অফবিধ পশ্চিমদিকস্থিত অফটপ্রকার গৃহর ফল লাভ হয়। রোগ মততা পীড়া অর্থ লাভ, আয়ুবৃদ্ধি কুশতা জ্ঞান ও মান এই অফ প্রকার ফল উত্তর দিকস্থ ঈশানাদি পূর্ব্বান্তদিকস্থিত দ্বার যুক্ত গৃহর ফল জানিবে।

> ইতাাগ্রেয়ে আদি মহাপুণাণে গৃহাদি বাস্থ নামক পঞ্জিংশভাষিক ধিশ এতম অধ্যার সমাপু :

যড়বিংশত্যধিক দ্বিশত্তম অধ্যার।

ঈশ্বর বলিলেন, নগরাদি বাস্তর বিষয় রাজ্যাদি বৃদ্ধির নিমিত বলিব। যোজন যোজনার্দ্ধ বা তদর্দ্ধ পরিমিত স্থান আশ্রয় করিয়া নগরাধিষ্ঠিত বাস্তদেবের অর্চ্চনা পূর্বক প্রাকারাদি দ্বারা আবৃত করিবে। ঈশান কোণাদি ত্রিংশত স্থানের মধ্যে পূর্ববিষার সূর্য্যযুক্ত দক্ষিণ দিকে কুবেরাজ্রিতবার পশ্চিমে বরুণাধিষ্ঠিত দার উত্তর দিকে কুবেরা-প্রিত দার এবং বহুতর হট্টাদি নির্মাণ করিবে। হস্তী প্রভৃতি অনায়াদে গমন করিতে পারে এইরূপ দক্ষিণ পশ্চিম ও উত্তর দিকে হট্টার্থ গৃহ নির্মিত 📗 ভাবে ছয়হন্ত পরিমাণে ছার সকল নির্মাণ করিবে।

ছিলকৰ্ণ ভগ্নকায় বা অন্ধিচন্দ্ৰাকার নগর মিশ্মাণ করিবে না ও বজ্র দূটা মুখ পুর শুভদায়ক হয় না এক ছুই বা তিন দার বিশিষ্ট, চাপ সদৃশ বক্সনাসাভ নগর নির্মাণ করিবে। বলবান্রাজা শান্তি জনক বিষ্ণু মহেশ্বর ও সুধ্যাদি দেবগণকে প্রণতি ও স্তুতি দ্বারা প্রদন্ন করিয়া বলি প্রদানপূর্বকে পুরারম্ভ করিবেন। নগরের ভাগ্নিকোণে স্বর্ণকারাদি সন্নিবেশ দক্ষিণ দিকে নৃত্যগীতাদি ব্যবসায়ীও বার নারী-গণের আবাদ দংস্থাপন নৈখতে নট বাহ্লিকাদি ও কৈবত্তাদিরবাসস্থান পশ্চিমে রথ আয়ুধ থড়গাদি ব্যবসায়ীর বাদ বায়ুকোণে শেভিক কর্মাধিকত ভৃত্যাদি পরিকর্মীর অর্থাৎ বেশ ভূষাদি সম্পাদনকারীর বসতি উক্তর দিকে যতি দিদ্ধ প্রভৃতি পুণ্যবান ব্যক্তিগণের বাসভূমি क्रेमान (कार्ण कलानि विक्रय व्यवमायी विविक्रशास বাস ও পূর্ব্যদিকে বলাধ্যক্ষগণের বাসভূমি হইবে। चाधिरकार्ग विविध रेमनिक श्रुक्ष । मिक्न पिरक ক্ষীলোকদিগের নিদেশকর্তা। নৈখতে অধ্যজনগণ পশ্চিমে অমাত্যবৰ্গ কোষাধ্যক ও শিল্পিণ বাদ করিবে। উত্তর দিক দণ্ডনাথ অর্থাৎ বিচার কর্ত্তা নায়ক ও দ্বিজ্ঞান সন্ধুল হইবে। পূর্ব্ব দিকে ক্ষত্রিয়, দক্ষিণে বশ্য, পশ্চিমে শুদ্র ও বৈদ্য এবং था प्रमा प्रकृतिक मः स्थापन कतिता। দিকে চরলিঙ্গী অর্থাৎ ছুন্মবেশী রাজপুরুষপ্রভৃতি, দক্ষিণ দিকে শাশান ভূমি, পশ্চিমে গোধনাদি, উত্তরে কৃষিকার্য্যব্দায়িদিপের বাদ নির্দেশ করিবে। কোণ সকল স্থিত গ্রামাদিতে ट्याष्ट्रशास्त्र वाम कताहित পृद्धित मण्याहित অধিদৈবত কুবেরের মালয় পশ্চিমাদ্য করিবে। পশ্চিমদিকে অন্যান্য দেবভাদিগের পূৰ্কাদ্য ষানয় সংখাপিত হইবে। দক্ষিণ দিকে উত্তর মুখ

गृष्ट निर्माण कतिरव। नगत त्रकार्थ हेट्ट विकृ প্রভৃতির ধাম প্রস্তুত কর্ত্তব্য বেছেভুক দেবালয় শূন্যনগর আম ছুর্ণ ও গৃহাদি পিশাচাদি কর্তুক ভুক্ত ও রোগাদি দারা অভিতৃত হয়। নগরাদি এইরূপে নির্মাণ করিলে জয় ভোগ ও মোকপ্রদ थामारनंत्र भूर्विनिटक धनाशांत अधिरकारन পাকশালা দক্ষিণে শয়নাগার নৈখত কোণে আয়্-ধাগার পশ্চিমে ভোজন গৃহ বায়ুকোণে ধান্যা-গার উভরে গৃহদাম গ্রীরক্ষার্থ গৃহ ঈশান কোনে দেবালয় প্রস্তুত করিবে। নগরাদিতে চতুঃশাল ত্রিশাল দ্বিশাল বা এক শাল গৃহ নির্মাণ করিবে। চতুঃশাল গৃহর শালা ও অলিন্দ (বারাগুা) ভেদে তুই শত বা শঞাশৎ প্রকার হইতে পারে ও তমধ্যে পঞ্চিধ প্রধান গৃহ ছইতে পারে। ত্রিশাল গৃহ চারি প্রকার দ্বিশাল গৃহ পঞ্বিধ একশাল গৃহ এক অলিন্দ যুক্ত চারিপ্রকার হইতে পারে। পঞ্পঞাশং অকীবিংশতি ষড্বিংশতি অফ নপ্তবাচতুর লিন্দ যুক্ত গৃহ হইবে এইরেপে অউ প্রকারে গৃহ বিভক্ত নগরাদিতে করিবে।

> ইতগ্রেয়ে খালি মহপুরাণে নগবাদি বাস্কু নানক বড়বিংশভাধিক বিশতভ্য অধ্যায় সৃষ্পুঃ

সপ্তবিংশত্যধিক দ্বিশত্ত্য অধ্যায় ।

পবিত্রারোহণ কথন।

ঈশ্বর বলিলেন পূজাদি বিষয়ে ক্রিয়া পূরণ-কারি নিত্য ও নৈমিত্তিক পবিত্রাব্যেহণ বিধি দম্পু তি বলিব। আবাঢ়াদি কার্ত্তিক পর্যান্ত প্রতিমাদের চত্ত্-দ্দশী ভিথিতে বাঞ্জাবণ ভাত্রমাদে উভয় পক্ষীয় চত্ত্-দ্দশী অন্তমী ভিথিতে অথবা প্রতিপদাদি কার্ত্তিকী

পৌর্নাদী পর্যান্ত তিথি সকলে উক্ত কার্য্যের অমৃ-ষ্ঠান করিবে। আগ্ন ত্রক্ষা অমিকা গণেশ নাগ কার্ত্তি-(क्य मूर्वा मुल्लामि छूर्गा यम है छ त्राविक কদ্দর্প শস্ত্র প্রধাভূজ ইত্যাদি দেবগণের পবিত্র সভাযুগে স্থবৰ্ণ নিশ্মিত ত্ৰেভাযুগে রক্ষতময় দ্বাপরে ভামজ এবং কলিতে কার্পাদ পট্ট বা পরাদি সুৱে নির্ণিত হইবে। উহার নব তন্ততে প্রণব চন্দ্ৰমা বহ্নি ত্ৰন্মানাগ কাৰ্ডিকেয়ছৱি সৰ্ব্বেশ এবং দৰ্ব্ব দেব এই নব দেবতা যথাক্ৰমে বিশ্বস্ত হইবে। অফোতর শত তদৰ্ম বা পাদ পরিমিত সূত্রে উত্তমাদি পবিত্রারোহণ হয়। অথবা একাশীভিপঞ্চা-শং বা অউত্তিংশং সূত্রে তুল্য গ্রন্থি ও অন্তরালক ভাবে ঘাদশাঙ্গুল বা অফাঙ্গুল ব্যাস পরিমাণে লিঙ্গ বিস্তার পরিমাণে পিণ্ডিকাম্পর্ণমাণে বা চতুর্ব সর্ববিদ্যত চতুরঙ্গুল প্রমাণে করিবে। হুজাত ইত্যাদি মন্ত্রহারা গঞ্চাজল করণক শুন্দররূপে ধৌত ক্রিয়া বাম ইত্যাদি মন্ত্রছারা গ্রন্থি দিয়া অঘোর ইত্যাদি মন্ত্রদারা শোধন করত রক্তচন্দন কুকুম কন্ত্রী গোরোচনা কপুর হরিন্তা এবং গৈরিকাদি দ্রব্য হারা পুরুষ সৃক্ত মস্ত্রোচ্চারণ করত রঞ্জিত করিবে। দশ্বা তস্তু সংখ্যা পরিমাণে এক দ্বি বা চতুরঙ্গুল অন্তরাল ভাবে যথাযোগ্য গোভযান-রূপেপ্রকৃতি পৌরুষী বীরা অপরান্ধিতা জয়া বিজয়া অজিতা স্বাশিষা মনোম্মনী ও স্কার্থী নামক শুভ এন্থি দিবে। অথবা সোম সূর্য্যাগ্লি দৈবত শিব দদৃশ পবিত্র হৃদয়ে বিন্যাস কর্তব্য। কিংবা নিজ মূর্ত্তি বা গুরুগণে এক একটা বিন্যাস করিবে। ঐরপে স্বারস্থিত দিকপাল কল্সাদিতে এক একটা প্রদান করিবে। লিঙ্গর পবিত্র পরিমাণ এক হস্ত ছইতে নব হস্ত পর্যান্ত হইবে। অফীবিংশতি হইতে ক্ৰমে দশ দশটী বৃদ্ধি হইয়া ছাঙ্গুল পরিমাণে

একাসুল অন্তর ঐ সকল পবিত্রর গ্রন্থি হইবে এবং ঐ সকলের পরিমাণ লিঙ্গ বিস্তার সন্মিত হইবে। সপ্তমী বা ত্রেয়োদশী ভিথিতে কৃত নিড্য ক্রিয় ও পবিত্র হইয়া সায়ংকালে যাগমগুপ পুষ্প ও বন্ত্রাদি ছারা ভূষিত করিরা নৈমিত্তিক সন্ধ্যা ও তর্পণ সম্পাদন করিয়া পবিত্র ভূমিভাগ পরিতাহণ **श्**र्विक ভগবান সৃষ্যিদেবের অঞ্জনা করিবে। অনস্তর কতাচমন গুরু সকলীকরণ করিয়া প্রণব উচ্চারণ করত অর্ঘহন্ত হইয়া অন্ত্র মন্ত্র (ফট) দারা দার সকল প্রোক্ষণ করিয়া পূর্ব্বাদি ক্রেমে বক্ষ্য মাণ রূপে অর্চনা করিবে হাংশান্তি কলা দ্বারায় বিদ্যা কলাত্মনে এবং নিবৃত্তি কলা ছারায় প্রতিষ্ঠাখ্য এইরূপে কলাত্মনে প্রতিহারে ছুই ছই শাখাৰয়ে ছারাধিপর অর্চনা করিবে। নন্দিনে মহাকালায়। গণায়! বুষভায় ক্ষন্দায়। দেবৈত্য চণ্ডায়। এই-রূপে জেমে ছারপালগণের পূজা করিয়া যাগমগুপে প্রবেশ পূর্বক বাস্ত্রযাগ ভূতগুদ্ধি বিশেষার্ঘ শংস্থাপন ও প্রোক্ষণাদি সম্পাদন করিয়া গৃহীত যজ্ঞ সম্ভার পুরুষ দর্ভ দূর্ব্বা পুষ্পাদি করণক হন্মন্ত্রা-দিঘারা শিব হস্ত সম্পাদন করত স্বীয় মস্তকে অধিরোপণ করিবে। অনস্তর জ্ঞান খডগহন্ত সর্ববজ্ঞ গুরু "শিবোহং আমার যজের প্রাধান্য" ইত্যাদি চিন্তা করত গাঢ় রূপে দেব চিন্তা পরে গুরু নৈখত দিক আশ্রেয় করিয়া করিবে। হইয়া অর্থ্য উত্তরাদ্য জল পঞ্চগব্য যগুপে প্রকেপ করত চতুষ্পথান্ত সংস্কারে ও বীক্ষণাদি ছারা সংস্কৃত বিকির সমস্ত তথায় বিক্ষেপ করিয়া,কুশ মৃষ্টি গ্রহণ পূর্বেক ঈশান কোণহিত ঘটের স্থাসন কল্লনা করিবে । স্থনস্তর নৈখন্ত কোণে বাস্ত দেবসকল ও ছারদেশে লক্ষ্মীর পূজা করিবে।

পশ্চিমাভিমুখ ধান্যোপরিশ্বিত কুত্তে 🗥 লাক वृषात्रण अनवान निरवत । चर्छ निः ह्वाहिनोत এবং মন্ত্র দক্ষের প্রাণবিদারা স্বান্তরিবে। পরে পূর্বাদি দিকে ইন্দ্রাদি দিক্পাল বিষ্ণু একা ७ भिरानि दनवर्गामंत्रं भूको भूर्यक मजी वर्षाद গুরু সমাক রূপে ঘট গ্রহণ করত ঘটপৃষ্ঠানুগামিনী শিবাজ্ঞা প্রবণ করাইয়া মূল মন্ত্র উচ্চারণ পূর্ব্বক পূৰ্ব্যদি ঈশান কোন পৰ্য্যন্ত অবিচ্ছিন্ন জল ধারা দারা বেইটন করত শস্ত্র রূপিনী ঐ বর্দ্ধনী (ঘট) वक्षार्थ इंजुर्कित्क खम् वताहित । भूर्विन्दिकं कर्मम দংস্থাপনপূৰ্বক তাহার বামে রক্ষার্থ বর্দ্ধনী (ঘট) मः खालन कतिया मुमल तनवर्गानद व्याधात वक्त কুম্বে হিরাসনে দেবতার অর্চনা করত প্রণব হিত বৰ্দ্ধনীতে আয়ুধর পূজা সম্পাদন করিয়া লিঙ্গ-ম্দ্রাহারা ভগ লিঙ্গ সমাযোগ স্মাধা করিয়া কুজে জান খড়া নিবেদন করত মূলমন্ত্র জাপ ক্রিয়া তাহার দশাংশ রূপে বর্দ্ধনীতে রক্ষা মন্ত্র জপ করিবে। পরে বায়ুকোণে গনেশ পূজা পঞ্ামূতাদিহারা মহাদেবের স্নান ও প্রকৃষ্ট রূপে পূজন পুর্বক কুণ্ডে শিব বহিং সংস্থা-পন করিয়া সম্পাতাহৃতি শোধিত যথাবিধি সম্পা-দিত চকু দেব অগ্নিও আজা ভেদে দববী ৰারা ত্তিধা বিভক্ত করিয়া শিব ও অমির উদ্দেশে ভাগ ষয় প্রদান পূর্বকে আত্মার্থ এক ভাগ রক্ষা করিবে। পূৰ্ববিদিকে হুঁমন্ত্ৰ উচ্চারণ করত শর্মারা দম্ভ ধাবন কাষ্ঠ প্রদান করিবে তথা হইতে বা ঘোর भिश्वाच्य हरेए जनकरण ७ शिक्टम मुख्का मिरव। অন্তর সদ্যোজাত ইত্যাদি মন্ত্র ও হামন্ত্র মারা উত্তর দিকে বামনীকৃত ফল ও বামাবর্তে দিশান क्यारिन मेखक बाता शक्ष्युक कंग अनर हक्किंक शक शरा ६ शमान शकानि निर्मिष्ठ शांक धाराम

कतिरव अवर नेनान टकारन कृष्ट्यान्यग्रिरकारन र्पारबाह्या रेनश्रक रकारंत चलक बोह्रेसकारन চতুংস্য নাৰ্যক উষৰি বিশেষ হোজ এবা ক্ৰয় নবীনকুশাৰও জপমালা কৌপীন र्थानान कतिरम ध्वमः छेठत नित्क क्ष्मन कृष्ट्रेव তৈল কেশ শোধিনী শলাকা ভাষুল দপ্ৰ এখং ८भारताच्या निरव। जेगांन कार्य छभरान् जेगा-নের ভূত্তির নিমিত ঈশ মন্ত্র ছারা: আসন পাতৃষা পাত্র যোগপট্ট ও ছত্র প্রদান করিবে। দিকে সাজ্যচর এবং মৃতন পাত্তে গন্ধাদি দান করিবে। অনন্তর অর্ঘবারি বারা প্রোক্ষিত ও সংহিতা মন্ত্ৰ পুত পবিত্ৰ অগ্নিসন্নিধানে আনহন করত কৃষ্ণদার মৃগদর্মাদি দারা আচ্ছাদন করিয়া কাল্যরূপ সর্বকার্য্য সাক্ষীরকা অব্যয় শিব শ্বরণ করত এক বিংশ জি বার স্বেতি হেতি প্রয়োগ মন্ত্র সংহিতা দারা পুনরায় পবিত্র দকল শোধন করিয়া সূত্র ছারা शृहोनि (वर्छेन कद्रेज शक्कांनि स्तवा नकल खगदान् রবির উদ্দেশে প্রদান করিবে। পূজনার্থ আচমন করিয়া ন্যাস ও অর্য্যাদি সম্পাদন পূর্ব্বক নদ্যাদির উদ্দেশে গন্ধাদি দান ও বাস্ত পূজা করিয়া প্রবেশ করত শিব কুন্তে শস্ত্র ও লোকপাল গণের স্ব স্থ नांग बाता वर्कमा कतिया वर्षमीर विश्वसाय अक ७ चाषात्र छत्मरम भवा कतिरव । चनखत्र गर्स्की-ষধি লিপ্ত ধূপিত পুষ্প ও তুৰ্ববাযুক্ত পবিত্ৰ আন-স্ত্রণ করত অঞ্জাল মধ্যগত করিয়া হে জগস্থুৎপত্তি-কারণ ! দমস্ত বিধিছিদ্র পুরণার্থ ভোমার আমন্ত্রন করি হে চৈতন্যাচৈতন্য পতে ৷ তোমার ইচ্ছা লাভ জনিকা অভএব যজন কর্তার সিদ্ধিলাভ অনু-মোদন কলন হে শক্তো সভত স্বৰ্ডেভাডাৰে ভোগাকে नशकात जूमि धानस एक ८६ (सरदर्भ ! ८५वी गरन-

খুরু মন্ত্রেশ লোকপাল ও পরিবারগণের সহিত আপনি আমন্ত্রিত হুইয়াছেন হে পর্যেশ ভোষার আজ্ঞাক্ৰমে প্ৰভাৱে পৰিত্ৰক ও নিয়ম গ্ৰহণ করিব। অতএব আপনাদিগকে নিমন্ত্রণ করিতেছি" এই-য়াম রেচক ছারা অমৃতীকরণ করত শিবান্ত মূল-মন্ত্র হ্রপ ও হ্রপদমর্পণ স্থোত্র প্রণাম করিয়া 'ক্রমন্ত্র' এই বলিয়া বিসর্জন করিবে। পরে চক্লর ভৃতীয়াংশ ঘারা শিবাঘিতে হোম করিয়া দিগ্বাসীগণ দিক পাল ভূতগণ মাতৃগণ একাদশ রুদ্র ক্ষেত্রপাল ও দিঙ্নাগ দকলের উদ্দেশে পূর্বাদিক্রমে নমঃ স্বাহা উচ্চারণ করত হোমরূপ বলিপ্রদান করিয়া আচ মন পূৰ্বক বিধি ছিদ্ৰপুরক হোম মহাধ্যাভৃতি হোম ও পূর্ণাহুতি প্রদান করিয়া পাবক রোধ করিবে। অনন্তর ওঁ অগ্নয়ে স্বাহা স্বাহা সোমায় ওঁ অ্যা সোমাভ্যাং স্বাহা অগ্নরে স্বিষ্টকুতে এই মন্ত্র দ্বারা আহতি চতুষ্টয় প্রদান করিয়া বহ্নিকুণ্ডে পূজিত দেবকে মণ্ডলে অর্চিত শিবে নাডীসন্ধান-রূপ বিধি অনুসারে যোজিত করত বংশাদি পাত্রে পবিত্র দকল বিভাদ করিয়া অস্ত্র (ফট) মন্ত্র ও হুদ্ম (নমঃ) মন্ত্র উচ্চারণ করত কলা দমস্ত দারা মন্ত্রিত করিবে পরে ষড়ঙ্গ মন্ত্র মূলমন্ত্র হান্মন্ত্র কবচ (ছঁ)মজ্ঞ অসতে মজ্রর দহিত যোজিত করিয়া সূত্ৰ ধারা বৈষ্টিত করত শিবপৃক্তনপূর্ব্বক ভক্তি নত্র ভাবে রক্ষার্থ উক্ত পবিত্র জগদীশ্বরে সমর্পণ করিবে। পরে পুষ্প ধূপাদি দারা পজিত হইলে সিদ্ধান্ত পুস্তক ছয় প্রদান করিয়া গুরুর চরণ স্মীপে গ্রুন করত ভক্তিপূর্ব্বক পূর্ব্বোক্ত পবিত্র প্রদান করিবে। মনস্তর তথা হইতে নিৰ্গত হইয়া বহিঃ প্ৰদেশে আচমন করিয়া গোময় লিপ্তমগুলত্ত্বে পঞ্গব্য চরু ও দম্ভধাবন যজন জমশ সম্পাদন করিয়া কুতাচমন

যজ্মান মন্ত্র সক্ষম ছইয়া সঙ্গীতানি দ্বারা জাগরণ করিয়া অবশেষে ভোগাভিলাদী যজ্মান মনে মনে ভগবান মহেশ্বরের স্মরণ করত দর্ভ শব্যার শ্রন করিবে। মুদুক্ষ্ ব্যক্তিরও এইরূপ বিধান কেবল উহারা সমাহিত চিত্তে উপবাস করত ভস্ম শহ্যায় শ্রন করিবেন, এইমাত্র বিশেষ।

ইত্যাগ্ৰেয়ে আদিমহাপ্রাণে পৰিত্রাধিবাসন বিধি নামক স্থাবিংশত ধিক হিশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

অফবিংশত্যধিক দিশতত্ম অধ্যায়।

পবিত্রারোহণ বিধি।

ঈশ্বর বলিলেন, অনন্তর প্রভাতে গাত্রোখান করিয়া সমাহিতচিতে স্থান সন্ধ্যার্কনাদি সম্পাদন-প্রবিক যাগমগুপে প্রবেশ করত পবিত্র দকল গ্রহণ করিয়া ঈশান কোণে মণ্ডলোপরি প্র-স্থাপিত দেবসমীপে শুদ্ধপাত্তে স্থাপন করিবে। অনন্তর দেবদেবেশ ভগবান্ মহেশ্বের বিদর্জন করিয়া নির্মাল্য অপনয়ন করত পর্কেরে ভাগে ঋজ ভূতলে আহ্লিক্ষয় অনুষ্ঠান করিয়া আদিত্য দ্বার-পাল দিক্পাল ক্ষন্দ ও ঈশানের নৈমিতিক অর্চ্চনা শিবামিতে বিস্তাররূপে করিবে। পরে মন্ত্রতর্পণ শ্রমন্ত্র হারা অক্টোত্র শত প্রায়শ্চিত হোম ও পূৰ্ণান্থতি প্ৰদান পূৰ্ব্যক সূৰ্ব্যকে পবিত্ৰ প্ৰদান 💩 আচমন করত ছারপাল ও দিক্পালাদি কুত ও বর্জনিকাদিতে এক একটা পবিত্র দিবে। অনস্তর শস্তু র সমিধানে নিজ আসনে উপবিষ্ট চুইয়া আত্মা প্রমণপুণ গুরু ও বহ্নির উদ্দেশে পবিত্র প্রদান করিবে। "হে দেব! কালক্ষণী তোমা কর্ত্তক মনীয় বিধি সম্বন্ধে याजाश कामिक इहेमारह, उनार्या रा त्य कार्या ক্লিউ দম্ৎস্ট ও তপ্তরূপে সম্পাদিত হইয়াছে দেই

সমস্ত ক্লিউ অফিউ হউক ৷ হে পঞ্জো ! তোমার ইচ্ছায় এই পৰিত্ৰ সৰ্ববাঙ্গ সম্পন্ন হউক।" এই প্রার্থনাসক্র এবং ওঁ পুরম্ব স্বত্তত নিয়মেশরায় স্বাহা ' এই মন্ত্ৰ এবং ত্ৰহ্মপালিভ প্ৰকৃত্যস্ত স্বাস্থা-ততে লয়াম্ব মূলমন্ত্র উচ্চারণ করত পবিত্র ছারা পিবপূজা বিষ্ণু কারণ পালিত বিদ্যান্ত বিদ্যাতত্ত্ ঈশ্বরাস্ত মন্ত্র উচ্চারণ করত পবিত্র অধিরোপণ ও রুদ্রকারণ পালিত শিবাস্ত শিবতত্বে শিবাস্ত মন্ত্র উচ্চারণ করত তাঁহাকে পবিত্র প্রদান করিবে। मर्क्यकात्रन भारत भिवभन छेड्डावन भूक्वक नग्नास मून-মন্ত্র উচ্চারণ করত গঙ্গাবতারককে ঐরপ পবিত্র প্রদান করিবে। আজ্চভু বিদ্যাতত্ব ও শিব তত্বৰারা মুমুক্ষুদিগের পবিত্র উক্ত হইয়াছে। ভোগাভিলাষী-দিগের শিবতত্ত্ব বিদ্যাতত্ত্ব ও আত্মতত্ত্ব ক্রমে পবিত্র নির্দিষ্ট হইয়াছে। এবং সাহান্ত বা নমোন্তমন্ত্র উহাদিগের সম্বন্ধে উচ্চারণ ব্যবস্থিত হইয়াছে, অর্থাৎ ও হাং আত্মতত্ত্বাধিপতয়ে শিবায় স্বাহা। ও হাং বিদ্যা তত্ত্বাধিপত্তমে শিবায় স্বাহা ওঁ হোঁ শিব তত্ত্বাধিপতয়ে শিবায় স্বাহা। ওঁ হোঁ সর্বাতত্ত্বাধি-পত্রে শিবায় স্বাহা। এবপ্রকার মন্ত্র দকল জ্ঞাত হইবে। অনন্তর গলাবভারক কে প্রণাম করত কৃতাঞ্জলিপুটে তংসমীপে বক্ষামানরূপে প্রার্থনা করিবে। "হে পরেমখর। ভূমিই দর্ক প্রাণীর গতি তুমিই চরাচর জগতের স্থিতিহেতৃ হে প্রভো! তুমিই কীবগণের অক্তণ্ডররূপে অবন্থিত হইয়া দ্ৰফী হইয়াছ কাৰ্য্যে মনে ও বাক্যে প্রকাশ করিতেছি যে তুমি ভিন্ন অন্য আমার গতি নাই। হে মহেখর। মন্ত্রহীন ক্রিয়াহীন ক্রেরহীন জপছোম ও অর্চনা বিহীন ভবদীয় যে সমস্ত কার্য্য আমি সম্পন্ন করিয়াছি ও যে সমস্ত কার্য্য করা হয় নাই এবং মন্ত্রবিহীন ঘাহা যাহা করা চইয়াছে

७२ ममुबग्र পूर्व करूम । (इ श्राद्यमानः) जूमिहे হপুত পৰিত্ৰ ও পাপনাশন ভূমিই চর্চিষ্ঠ সমুদ্য জগৎ পৰিত্ৰ করিতেছ। হে দেব। আমা াক্ষ্মক বৈকল্লোগে এই ত্রত যে খণ্ডিত চ্ইয়াছে ভোমার আজ্ঞারূপ সূত্রবারা এথিত হইয়া তৎসমুদয় একত্রিত হউক।" পরে জপ সমর্পণ ও ভক্তি পুর্বাক ন্তৰ ও নমস্কার করিয়া গুরু কর্তৃক আদিউ হইয়া মসুধ্যগণ মাদচভুকীয় মাদত্রিভয় ত্রাছ্বা একাছ শাধ্য নিয়ম গ্রহণ করিবে। মনস্তর ব্রতী দেবদেবেশর প্রণতি পূর্বকে বিসর্জ্বন করিয়া কুগু সমীপে গমন করত বহ্নি দিত শিবেও এইরূপে পৰিত্র চতুষ্টয় সমারোপ করিয়া পুল্প ধুপাদি ছারা অর্চনা পূর্ব্বক অন্তর্বলি ও পবিত্র রুদ্রাদির উদ্দেশে নিবেদন ও অন্তঃ প্রবেশ পূর্বক শিবের স্তব ও প্রশাম করিয়া ক্ষমা প্রার্থনা করিবে। অনন্তর পায়ন দারা প্রায়ণ্টিত হোম ও পূর্ণাছতি প্রদান পুর্বক বহ্নিছ শিব বিদর্জন করিবে। পরে মহাব্যাহতি হোম করিয়া অমিরোধ পূর্বক অগ্যাদির উদেশে আন্ততি চতুষ্টয় প্রদান করিয়া দিক পালের উদ্দেশে পবিত্রর সহিত বহির্বলি এবং প্রমাণ ও পবিত্রয় সহিত দিকান্ত পুস্তক ছয় প্রদান করিবে ! ওঁ হাঁ ভুঃ সাহা ওঁ হাঁ ভুবঃ স্বাহা, ওঁ হাঁ সঃ বাহা ওঁহাঁ ভূভুবিঃ বঃ বাহা। এইরূপে মহা-बाहि इहाम क्रिया वें हाँ स्थार बाहा। वें হাঁ দেমার স্বাহা ওঁ হাঁ পরিদোমাভ্যাং স্বাহা उँ हैं। मधरमिकि कृटल खाहा এই मकन मख बाहा আছতি চতুষ্টয় প্রদান করিবে।

অনন্তর বস্ত্রভূষণাদিদ্বারা বিপ্তার রূপে শিবের ন্যায় গুরুর অর্চনা করিবে। যেছেতুক পরমে-শ্বর বলিয়াছেন যে যাহার প্রতি গুরু সম্যক রূপে সম্ভূষ্ট থাকেন ভাহার সহৎসরকৃত সমস্ত किशा काश नकल इस्र। अहेन्नराथ श्रुकत श्रुपमा-শবিত ভাবে পত্রিক সমারোপ করিয়া ভ্রাহ্মণাদি তাঁহাদিগকে ব্ভাদি দান কয়িয়া "হে শিব! এই দানে আপনি আমার প্রতি मर्खना धामम बाकुन" धहेजाल धार्यना कतिता প্রাতঃকালে ভক্তিপূর্ব্বক স্থানাদি নিভ্য ক্রিয়া সম্পা-দন করিয়া অউসংখ্যক পবিত্রক ভগবান্ শস্ত্র নিমিত্ত আহরণ এবং পুষ্পাদি ছারা তাঁহার পুঞ্জ সম্পাদন করিয়া বিসজ্জন করিবে। নিত্য ও নৈমি-ত্তিক ক্রিয়া দম্পাদনপুর্বেক পূর্বের ন্যায় বিস্তার-রূপে পবিত্র সমারোপ ও প্রণাম করিয়া অগ্নিকৃতে শিব্যক্ত সম্পাদন করিবে। অন্তর অস্ত্র মন্ত্র যারা প্রায়শ্চিত হোম করিয়া পূর্ণাহৃতি প্রদান করিবে। পরে ভোগাভিলাধী মহেখরের কর্ম সমর্পণ করত "হে নাথ তোমার প্রসাদে এই সম্পাদিত কার্য্য আমার সম্বন্ধে ফল সাধক হউক" মোক্ষাভিলাষী "হে জগদীখন! এই নিস্পাদিতকৰ্ম আমার সম্বন্ধে বেন বন্ধন হেডুনা হয়" এইরূপ প্রার্থনা করিয়া বহিন্দ্র শিব হৃদয়ন্ত্র শিবে নাডী যোগে সংস্থাপন করত অমিবিদক্তনি করিবে। পরে আচমন করিয়া কুন্তবিত অলমধ্যে হস্ত প্রবেশ প্ৰক্ৰি শিবে সংযোজন করত আক্ষেপের সৃহিত ক্ষমন্থ ৰলিয়া বিদৰ্জন করিবে। পরে লোকপালারি বিনৰ্জন করিয়া শিব দ্মীপ ছইতে পৰিত্ৰ গ্ৰহণ করত যদি চণ্ডেখর পাকেন ভাহা হইলে ভাঁহার পূজা পূৰ্ব্বক পবিত্ৰ দান করিয়া পবিত্ৰের সহিত ८मह निर्मानगति তাঁহাতে সমর্পণ व्यथनां व्यक्तित्व सर्थाविधि हश्चत व्यक्ति का कित्रा ''হে চগুনাধ! বৰ্ষনিস্পদ্ধ বে কোন কাৰ্য্য আমা-কর্তৃক ন্যাধিক রূপে কৃত হইরা থাকে তৎসমুদ্য তোমার আজা ক্রমে পরিপূর্ণ ক্টক" এইক্সপে

त्तर्यम इरक्षेत्रहरूक विकासन क्षेत्रहरू स्थान छ च्यानि काता मस्त्रक कतिया विभक्त करिए । महित्र उत्तर निर्माणा ७ एक स्टेशा सरस्यरस्य साम भण्या-सन कतिया शक्तवाक्षेत्र मश्य स्टेशा ७ छक्तमि-शास्त्र श्रीक संक्रम कतिया।

> ইভাবেরে আদি মহাপুরাণে পবিআবেরাংশ নামক অস্টাবিংশুভাবিক বিশততম অধ্যায় সমাকু।

উনত্রিংশদধিক দিশততম অধ্যায়। দমনকারোহণ বিধি।

ঈশ্বর বলিলেন দমনকারোহণ বিধি পূর্বের ন্যায় যে প্রকার আচরণ করিবে তাহা বলিব। পুরাকালে হরকোপ সমৃত্ত ভৈরব দেবগণের দমন করিলে ভগবান ত্রিপুরারি "ছুমি বৃক্ত হও" এই বলিয়া অভিশাপ প্রদান করিলে তৎকর্ত্ব প্রসাদিত মহেশ্বর বলিলেন যে মফুষ্য তোমার পূজা করিবে তাহাদিগের সম্পূর্ণ ফল লাভ হইবে কথনই ইহার অন্যথা হইবেক মা। **সপ্তমী** বা ত্ৰয়ো-দশী তিথিতে সংযতাত্ম হইয়া দমনকের প্রা করিয়া মন্ত্রবিৎ যজমান ভব বাক্য ছারা বুক্তের বোধন করিবে। হর প্রশাদ সম্ভূত আপনি अहे व्हाल महिशान कक्षन निवकार्यात्र जेल्याम् निवासा चेनूमारत चालनारक महेशा शहेने ध्वेत्राल বোধন করিয়া গৃহে আমন্ত্রন ও সারাজে অধিবাসন করত সূর্য্য শঙ্কর ও পাবকের বর্ণাবিধি অর্চনা कतिशा रनवकात शक्तिमनिरक औ शुरकत मूल ষ্তিকাযুক্ত করিয়া সংস্থাপন স্করিবে। বামলিকে বা মন্তক সমীপে নাল উত্তরদিকে ধালী দক্ষিণে ভয়পত্র পূর্বেদিকে পুষ্প এবং একাফল সহিত कत भूलोनि तका केतिरव । अवस्तत केनामहकारन नियग्डा प्रति में हकत नकार संबंद देशे हान

পত্ৰ পুষ্প ধকল ৰঞ্জি সংস্থ করিয়া আমন্ত্রন করত শিবমন্তকে বিন্যাস করিবে। 'ছে দেবেশ। প্রাতঃ-কালে আমাকর্ত্তক আপনি আমন্ত্রিত হইয়াছেন হে প্রভো! ভোমার খাজাক্রমে যেন খামি তপদ্যার ফল সম্পূর্ণ লাভ করিতে পারি" এইরূপ প্রার্থনা করিয়া মূলমন্ত ছারা পাত্রস্থ শেষ পবিত্র সমস্ত আচ্ছাদন করত পরদিন প্রাতঃকালে স্নানাদি সম্পাদন পূর্বক গন্ধ পুষ্পাদি দারা জগদীখারের অর্চনা ও নিতা নৈমিতিক কার্য্য সমস্ত সম্পন্ন করিয়া দমনক দারা পূজা করিবে। পরে অঞ্জলি গৃহীত অবশিষ্ট দমনক ছারামূলাদি চতুর্থ্যন্তঈশ্বান্ত আত্ম विमा ७ भिव ज्रास्त चंक्र ने अवर हैं दही मरश्चतांत्र यथः পুরয় পুরয় শূলপাণয়ে নমঃ। এই বলিয়া চতুর্থ দমনকাঞ্জলি প্রদান করিবে। অনন্তর শিব্বহ্নি ও গুরুর বিশেষরূপে অর্চনা করিয়া 'হে ভগবন্! মংকর্ত্ ক যে সমস্ত কার্য্য হীন বা অতিরিক্ত রূপে কৃত হইয়াছে তৎসমস্ত দামনক কার্য্য সম্পূর্ণ হউক" এইরূপ প্রার্থনা করিবে। এবপ্রকারে কার্য্য সম্পাদন করিলে সমস্ত চৈত্রমাসোথ ফল লাভ করিয়া স্বর্গে গ্রম করে।

ইত্যায়ের আদিমহাপুরাণে দমনকারোহণ বিবি নামক উনতিংশদ্ধিক,ছিশততম অধ্যায় সম্প্র

ত্রিংশদধিক দ্বিশতত্ম অধায়।

সময় দীকা বিধান।

ঈশ্বর বলিলেন, ভোগও মোক্ষপ্রদ সর্ববিপাপ প্রণাশন দীক্ষা কার্য্য বলিব যাহাতে মসুব্যগণ চিত্তের মল ও মায়াদি পাশ হইতে বিশ্লেষী কৃত হয়। যাহা ভারা শিষ্যের জ্ঞান জন্মায় ভাহাই ভোগ ও মোক্ষপ্রদাং দীক্ষা জানিবে। শাস্ত্রে অসুগ্রাহ্য

অৰ্থাৎ শিষ্য ত্ৰিবিধ নিৰ্দ্দিক হইয়াছে প্ৰথম বিজ্ঞাত কল নামক দিতীয় প্রলয়াকল তৃতীয় সকলমামক জানিবে তম্মধ্যে প্রথম মল মাত্রমূক্ত বিভীয় মল-কর্ম হইতে মুক্ত অপর দকল নামক সাধক কলাদি ভূমি পর্যান্ত সর্ববৈ ন্তবাদি যুক্ত হন। দীক্ষা ও দ্বিবিধা নিরাধারা ও সাধারা তমধ্যে নিরাধারা বিজ্ঞাতকল ও প্রলয়াকল উভয়েরই হয় এবং সাধারা কেবল নকুলেরই হইতে পারে। আধার নিরপেক শস্তু পরিচর্য্যা ও তীব্রশক্তি নিপাতন ছারা যে দীকা'হয় তাহাকে নিরাধারা বলে। মূর্ত্তি অবলয়ন করিয়া মায়া তাত্রাদি ভেদে শক্তি-ঘারা যে দীক্ষা মহেশ্বর নির্দেশ করিয়াছেন ভাহাকে সাধিকরণা বলে। এই দীক্ষা পুনরায় দ্বীজা ও নিবীজা সাধিকারা ও অন্ধিকারা রূপে বিভক্ত হইয়া চতুর্বিধা হইয়াছে। সময় ও স্থাচার যুক্তাদবীজা দীক্ষা মনুষ্যগণের হয়। অসমর্থ ব্যক্তির সময় ও আচার রহিতা যে দীকা তাহাকে নিবীলা বলে। সাধক এবং আচার্য্য উভয়েরই নিজা নৈমিত্তিক ও কাম্যকর্মে যে দীক্ষা দ্বারা অধিকার জ্যায় তাহার নাম সাধিকারাদীক্ষা নির্যীক্ষণীক্ষিত ব্যক্তির আমার এবং মংপুত্রন্বয়ের নিত্য কার্য্য-মাত্রে অধিকারিত্ব হেতৃক নির্ধিকারিকা নামক দীকাহয়া এই দ্বিধাদীকা প্রত্যেকে দ্বিরূপা হয় তমধ্যে একা ক্রিয়াবতী কুগু মণ্ডল পূর্ব্বিকা অপরা মনোব্যাপার মাত্রসাধ্যা জ্ঞানবতী নামে প্রসিদ্ধা। লক্ষাধিকার আচার্য্য কর্তৃক এইরূপে मीका कार्या मुक्ताब हा। ८६ कार्किका ! अस যেরপে দীকিত করিবেন তাহা বলা হইতেছে। কৃত নিত্য ক্রিয় প্রণবার্ঘকর গুরু দারদেবতা-গণের অর্চনা বিশ্বাপনারণ ও দ্রারাত্রভূমি অন্ত মন্ত বারা প্রোক্ষণ করিয়া নিজ আগনে উপবিষ্ট

অগ্নিপুরাণ।

ৰ্ইয়া ভুত শুদ্ধাদি মন্ত্ৰ যোগ বথাবিধি সম্পাদন ক্রিয়া তিল তওুল সিদ্ধার্থ কুশ দূর্বা অক্ষত উদক ও কীরাদি মারা বিশেষার্ঘা হাপন এবং ভক্ষল ধারা দ্রব্য আসন ও আত্মগুদ্ধি ভিলক সম্পাদন পূজা মন্ত্রশুদ্ধি ও পূর্বের ন্যায় পঞ্চাব্য শোধনকরিয়ালাজচন্দন সিদ্ধার্থ ভন্ম চুর্ববা অকত ও কুশরপবিকির এবং সধুপ শুদ্ধ লাজ মন্ত্রমন্ত্রাভিম-ন্ত্ৰিত ও অন্ত্ৰমন্ত্ৰ দারা প্রোক্ষিত কবচ (হুঁ) মন্ত্ৰ দারা অবগুঠিত নানা প্রহরণাকার বিল্ল সমূহ বিনিবারক এই সমত দ্রব্য সমস্তাৎ বিক্লিপ্ত করিবে। তাল পরি-মিত অর্থাৎ অঙ্গুর্ত ও মধ্যমার বিস্তার দেশ পরি-মিত ষট্তিংশত দৰ্ভদল নিশ্মিত শিবাস্ত্মস্ত্ ৰারা দপ্ত জপ্ত বেণী জ্ঞান খড়গ ও শিবরূপ, আলা-তে বিন্যাদ করিয়া আধার পল্মে স্মষ্টি ক্রমে মভী-প্রিত নিজল শিব বিন্যাস করিয়া শিবোহতং এই রূপ চিন্তা করিবে । পরে মন্তকে উষ্ণীয় (পাগড়ী) বন্ধ করিয়া নিজ দেহ গন্ধ ও অলক্ষারাদি ছারা ভূষিত করিয়া যথাবিধি শিবপূজা করিবে ঐ রূপ ভাষর শিব মস্তক শিবমন্ত্র স্থারা নিজ মস্তকে বিন্যাদ করিয়া শিব হইতে অভিন্ন মাত্রা ও কর্ত্তা চিন্তা করিয়া মওলে কর্ম দ।ক্ষী,কলদে যজ্ঞ রক্ষক, বহ্নিতে হোমাধিকরণ, শিষ্যে পাশ বিমোচক, স্থায় আজাতে অফুগ্রহকর্তা এইরূপ ষড়াধার ঈশ্বর আমি এবস্প্রকার স্থিরতরভাবে চিন্তা করিয়া জ্ঞান্থভূগ হ'ন্তে নৈধাতাভিমুখ হইয়া অর্ঘ্য জল ও পঞ্চ গ্রা দ্বারা যাগ্যগুপ প্রোক্ষণ ও চতু প্রপান্ত সংস্কারক ঈক্ষণাদি দ্বারা সংস্কার করিয়া তথায় বিকির দকল বিক্ষেপ করত কুশ মুষ্টি গ্রহণ করিয়া উহা ঈশান কোণে বর্দ্ধনীর আসন কল্পনার্থ বিন্যাস করিবে। অনন্তর নৈখতে বাস্তদেবের দারে লক্ষীদেবীর পূজা করিবে পশ্চিম দিকে!

রত্ন পূরিকা মণ্ডপর পিণী সজলবন্ত্র ও সরত্ব ধান্যো-পরি পশ্চিমাদ্য স্থিতা দেবীর পুজা ঈশান কোনছ কুম্ভে শস্তুর ও কুম্ভের দক্ষিণে শক্তির পশ্চিমে সিংহস্তা খড়গরপেণী বর্দ্ধনীর এবং পূর্ব্বাদি नित्क श्रावन्द विकृष्ठ हेट्यानि निक्शास्त्र वाहन ७ আয়ুধর সহিত প্রণবাদি নখোন্ত স্ব স্থ নাম দারা পূজা করিয়া কুস্তের অগ্রভাগে অবিচিছ্ন জল-ধারা দ্বারা প্রদক্ষিণ ক্রমে বেইটন করিয়া মূল মন্ত্র উচ্চারণ করত লোকপালগণকে শিবাজ্ঞা প্রবণ कदाहरित "यथारयाशा कृञ्ज तक्ता करान" कृञ्ज ख ্ বর্দ্ধনী ধারণ করিয়া এইরূপ বলিবে। অনন্তর স্থিরাসন কুন্তে অঙ্গদেবতার সহিত শঙ্করের পূজা করিয়া পথসংশোধন পূর্বক বন্ধনীতে অস্ত্র পূজা করিবে। ওঁহঃ অস্তাদনায় হুঁ ফট। ওঁ ওঁ অন্ত্র মুর্ক্রে নমঃ। ওঁ হুঁ ফট পাশুপতাস্ত্রায় নমঃ। ভঁওঁছে গয়ায় ছাঁফট নমঃ। শিরদে ভূঁফট নমঃ। ওঁয় শিখায়ৈ হুঁফট নমঃ। ওঁ গঁকবচায় হুঁফট নমঃ। ওঁ ফট অস্ত্রায় ভূঁফট নমঃ। সদংষ্ট্র চতুর্বক্তু "ক্তি ম্লার ত্রিশূল ও অসির সহিত কোটি সূর্য্যসম প্রভাষরে চিন্তা করিয়া লিঙ্গমূদ্রা স্বারা ভগলিঙ্গ সমাযোগ বিধান করিবে।

পরে অঙ্গুষ্ঠ দারা কৃষ্ণ এবং হৃদ্যস্ত্র উচ্চারণ করত
মৃষ্টি দারা অস্ত্রবর্দ্ধনী স্পর্শ করিবে। ভোগ ও
মোক্ষার্থ প্রথমে মৃষ্টি দারা বর্দ্ধনী স্পর্শ অবশ্য
কর্ত্রবা। কৃষ্ণের মুখ রক্ষার নিমিত্ত জ্ঞান খড়গ
সমর্পণ ও শতসংখ্যক মূলমন্ত্র জপ করিবে। পরে
তদ্দশাংশ বর্দ্ধনীতে জপ করিয়া রক্ষা মন্ত্র দারা
বিজ্ঞাপন করিবে। "হে ভগবন্! হে জগমাথ!
হে সর্ক্রযজ্ঞেশর! আপেনি যত্রপূর্বক এই যজ্ঞানির রক্ষা কর্মন।" অন্তরে বায়ুকোণে প্রণ-

वय हरूर्वास् व्ययपगण्य व्यक्तना कतित्व । चिलित्न শিবপূজা করিয়া অর্থের সহিত কুত্তে গমন করিয়া ভাহাতে নিৰিষ্ট হইয়া মন্ত্ৰভৃত্তির নিমিত অর্থাগন্ধ ও মৃতাদি বিভাস ও বামে এবং দক্ষিণে সমিধ দর্ভ ও তিলাদি রকা করিবে। কুণ্ডবহ্নিতে শ্রুগা-জ্যাদি পূর্বের শ্রায় সংস্কার করিয়া উদ্ধৃবিক্তের মুখ্যতা চিন্তা করিবে। পরে বহিন্দারে শিব-যত্ত করিয়া নিজমূর্ত্তি শিবকুম্ভ শুণ্ডিল অগ্নি এবং শিষতে সৃষ্টি ভাগ দারা বিভাসকরত যথাবিমি শোধনচিন্তা করিবে। দেবমুধ হরপ কুও চিন্তা করত হ্মস্ত্র দারা যথাশক্তি আন্তৃতি প্রদান করিবে। অগ্রির দপ্ত জিহ্বার বীজ দকল হোমার্থ উক্ত হইয়াছে। বিরেফ অস্তিম বর্ণদয় রেফ ও ষষ্ঠ স্বরান্নিত চন্দ্রবিন্দুযুক্ত হিরাগ্রাদি সপ্তজিহ্বার यशांक्राम वीक कानित्व। हित्रगा, कर्गका, तक्रा, কুষণা, হুপ্রভা, অতিরিক্তা ও বহুরূপা এই অগ্নির সপ্তজিহ্বা ঈশান কোণ পূর্ব্বদিক অগ্নিকোণ ও পশ্চিমবক্তা নির্দিন্টা আছে। শান্তিক ও পোষ্টিক কার্য্যে ক্ষীরাদি মধুর দ্রব্য হারা হোম কর্ত্তব্য। অভিচার কার্য্যে পিণ্যাক ফল সক্ত কঞুক অর্থাৎ ক্ষারিশ বৃক্ষ, কাঞ্জিক (লতা বিশেষ) লবণ রাজিকা অর্থাৎ কৃষ্ণ সরিষা তক্রে (ঘোল) कर्टेडल ७ कन्छे कद्राकास्त्र वक्त मधिष होत्रा ८क्तांध-ভাষণ মস্ত্রোচ্চারণ করত হবন কার্য্য সম্পাদন করিবে। कमच कलिकामि चात्रा ८ हाम कतिल नश्रन मिक्षि-লাভ হয়। বশীকরণ ও আক্র্রণ কার্য্যে বন্ধুক ও কিংশুকাদি হারা হোম কর্ত্তর। রাজ্যকামী বাক্তি বিলুসমিধে হোম করিবে। লক্ষী অভি-লাধী জনগণ পাটল ও চম্পক সমিধ দারা হোম কার্য্য করিবে। চক্রবর্ত্তিত্ব কামনায় পদ্মকার্ছ সমিধ হারা আহুতি প্রদান করিবে। সম্পত্তি-

কামী ব্যক্তি ভোক্ষা ভোক্ষা জব্য ছারা হবন ক্রিয়া করিবে। ব্যাধিবিনাশ বাসনায় দুর্কা मिंगिर होग कर्डवा। मर्ख श्रीमी वर्णाकद्रगार्थ প্রিয়ঙ্গু ও পাটলী পুঞ্পদারা হোম করিবে। আত্র পতা হোমে জাবনাশ হয় ৷ মৃত্যুঞ্য হোমে মৃত্যু জয় হয়। ভিল হোম করিলে বৃদ্ধি হয় সর্ব শান্তির নিমিত রুদ্র শান্তি কর্তব্য। অনন্তর প্রস্তুত বিষয় বলা হইতেছে অভৌতর আহতি দারা মূল দেবতার হবন কার্য্য সম্পাদন ও অসদেবতার হোমে তাহার দশাংশ আত্তি প্রদান করিবে। অনন্তর বক্ষামান মন্ত্র मल्लन ७ পूर्वित नाम পूर्वाङ्कि ध्वनान धवः শিষ্যের প্রবেশার্থ প্রতি শিষ্যে শত সংখ্যক স্পপ ছুর্নিমিত্ত নিবারণ ও অনিমিত্ত বিধানার্থ পূর্বের ন্যায় মূলমন্ত্ৰদারা শতধ্য হোম মূলাদি স্বাহান্ত অই অস্ত্র মন্ত্র দারা এক বার তপণি শিখাসম্পুটিত हँगल एक उरीक काता मीशन कतिरव। भारती শিবায় স্বাহা ইত্যাদি তপণ মস্ত্ৰ। ওঁহুঁছে। ন্ত্রী শিবায় হ ফট্ইত্যাদি দীপন মন্ত্র। অনন্তর শিবচরণামৃত প্রকালিত বর্ষা (ছ") মন্ত্র দ্বারা অব-ভণ্ডিত স্থানা অর্থাৎ চরুপাকপাত্ত চন্দ্রনাদি লিপ্ত করিয়া চরু পাক্সিদ্ধির নিমিত্ত ই ফট মস্ত্রে অভি-মন্ত্রিত কুশপত্রদ্ব কটকের (পদকের) ন্যায় গলায় বন্ধন করত অর্দ্ধচন্দ্রাকার মণ্ডলোপরি দন্তাসনে উক্ত মন্ত্রারাবিন্যস্ত ও মূর্নীভূত চিন্তাকরত মানস পুষ্পা দ্বারা বা বস্ত্র বদ্ধমুখ স্থালীতে বাহ্য পুষ্পা দ্বারা শিবার্চনা করিয়া কুণ্ড দক্ষিণে ন্যস্তা পশ্চিমাস্যা ন্যস্তাহকার বীজা বীক্ণাদিদারা শুদ্ধা ধর্মাধর্ম শরীরা মাতুষাত্মক মন্ত্রাভিষত্রিতা চুল্লীতে গোময় ও জনধারা মাজ্রিত স্থালী মন্ত্রমন্ত্র জপ করত আরোপ করিয়া অন্ত্র মন্ত্র দারা পবিত্রীকৃত প্রাদাদ (হেঁী)

মন্ত্র শতাভিমন্ত্রিত গব্য হ্রপ্প ও এক শিষ্য বিধা-নার্থ উহার পঞ্চ প্রস্তি (হস্তকোষ) পরিমিত এবং তদধিক শিষ্যবিধানে শিষ্য সংখ্যাসুসারে এক এক প্রসৃতি বর্দ্ধিতভাবে শ্যামাকাদিতগুল তমধ্যে নিকেপ করিয়া অগ্নিমন্ত্র (রং) ও কবচ (হুঁ) মন্ত্র ভারা আছোদন করত পূর্কাস্য হইয়া মূলমন্ত্র উচ্চারণ করত শিবাগ্নিতে চরু পাক করিবে পরে চরু স্থাসিদ্ধ হুইলে শ্রেষ্ যুতপূর্ণ করিয়া বাহান্ত সংহিতা মন্ত্র উচ্চারণ করত ঐ চুল্লীতে তপ্ত হাত প্রদান করিয়া মণ্ডলে পবিত্র দর্ভোপরি অস্ত্র মন্ত্র ছারা স্থালী সংস্থাপন করিয়া প্রণব ছারা উহা আচ্ছুদিত করিয়া হৃদান্ত্র (নমঃ) করণক जिप्दिश्लापन क्रित्र। এইরপে শীতলয়ত সংযোগে হুশীতল হইলে প্রতি শিষ্যে এক এক বার সংহিতা মন্ত্র লারা কুণ্ড মণ্ডল পশ্চিমে ধর্মাদি আদনে হোম করিবে। অক্ষারা সম্পাত হোম ও সংহিতা মন্ত্র ছারা শুদ্ধি বিধান করত বষড়ন্ত উক্ত মন্ত্র ছারা একবার চরুম্পার্শ ও ধেনু ম দ্রারা, মন্তীভূত করিয়া স্ভিলম্টেশ সমাপে অখনয়ন করিবে। অন্তর নিজ শিষ্য দিগের প্রত্যেকের চরু ভাগ দেবতা বহ্হি ও শোক-পালাদির নিমিত্ত দাজ্য মধ্যুক্ত করত ত্রিভাগে বিভক্ত করিয়া নমোন্ত হুন্মন্ত্র উচ্চারণ করত আচমনীয় প্রদান পূর্বক মন্ত্রোচ্চারণ করত সাজ্য চকুর দ্বারা অফ্টোত্তর শত হবন কার্য্য সম্পাদন ও যথাবিধি পূর্ণাহৃতি প্রদান করিবে। কুণ্ডের পূর্বের অথবা শস্তু ও কুন্তের মধ্যদেশে রুদ্র ও মাতৃগণাদির মণ্ডল প্রস্তুত করিয়া ততুপরি জনাত্র উচ্চারণ করত অন্তর্বলি প্রদান পূর্বক দেবতার সহিত আত্মার একত্ব চিন্তা করত আমি দর্কব্যাপি ও দর্কজ্ঞতাদি গুণদম্পন্ন

আমিই যজের অধিষ্ঠাতা এইরূপ চিন্তা করিয়া শিবেছিং এবং প্রকারে অহংকারী যাগমগুপ হইতে বহির্গত হইবে। শস্ত্র মন্ত্র সম্পা-দিত মগুলোপরি পূর্ববাগ্র দর্ভে প্রণবাসনে কুত স্নান শুক্লবন্ত্র পরিধায়ি মোক্ষকামী উদ্ধার্থ ও **ट्यांगा** जिया श्रदीमा उपविधे हहेता গুরু মোকার্থী শিধ্যর চরণাদি শিখা পর্যান্ত ও ভোগাভিলাষির বিলোম ক্রমে অর্থাৎ শিখাদি-চরনান্ত প্রদাদ দৃষ্টি দারা অবলোকন করত শিষ্য শরীরে শৈবধাম বিস্তার পূর্বক মন্ত্র স্লান সম্পাদন নিমিত অস্ত্র মন্ত্রোচ্চারণ করত পয়ঃ প্রোক্ষণ এবং পাপক্ষয় ও বিদ্ব বিনাশ বাসনায় ভস্ম স্নান বিধানার্থ অস্ত্র মন্ত্রোচ্চারণ করত সৃষ্টি দংহার যোগাতুদারে ভন্ম দারা তাড়ন পুনরায় অন্ত্র মন্ত্র দারা সকলী করণার্থ জলপ্রোক্ষণ অন্ত্র মন্ত্রোচ্চারণ করত কুশাগ্র দারা নাভির উর্দ্ধমার্জ্জন এবং অঘমর্যণার্থ কুশ মূল দ্বারা নাভির অধোদেশ বারত্রয় স্পর্ণ ও পাশের দৈবিধা বশতঃ অস্ত্র মন্ত্রে স্পর্শ করিয়া তাঁহার শরীরে আদনের সহিত দাঙ্গ শিব বিন্যাদ পূৰ্বক পুষ্পাদিশ্বারা পূজা করিবে। অনন্তর দশাযুক্ত আমন্ত্রিত শ্বেত বস্ত্র দারা নেত্র (বৌষট্) মন্ত্র বা হৃমন্ত্র উচ্চারণ করত শিষ্য নেত্ৰ বন্ধন পূৰ্বক প্ৰদক্ষিণ ক্ৰমে উহাকে শিবদক্ষিণে প্রবেশ করাইয়া দবস্ত্র আদন ও छ्वर्ग निर्वाहन कदा हैया ज्ञान्या मरहां मुखा-দারা আত্মাতে শিব মুর্ত্তি নিরোধ পূর্ব্বক শোধিত শিষ্য भेतीरत न्यामानि विधान कतिया अर्छना করিবে ! অনন্তর গুরুপুর্বাদ্য শিষ্যর মন্তকে মূল মন্ত্র উচ্চারণ করত শিব পদ দায়ক কল্যাণ জনক হস্ত প্রদান পূর্বেক উহাকে শিব দেবা গ্রহণোপায়স্বরূপ পুষ্পাঞ্জলি গ্রহণ করাইয়া লিব-

OAL CUTTA

यत्त निर्व धाक्रिश कत्रहित्। शहत निर्वात निर्व वक्षन घलनद्दन कतिहा खाका। पिन वर्त्त स्थाद्धारम শিব দেবগণাসুগত সেই সেই পাত্রস্থান এবং মন্ত্রাঢ্য নাম অথবা স্বেচ্ছাতুদারে নাম করণ সম্পাদন করিয়া কুন্তু ও বর্দ্ধনীতে প্রণাম করাইয়া অনল-স্মীপে দক্ষিণভাগে আস্নোপরি উত্তরাস্থ উপ-(वन्न कद्रोहेरवन। शरत छक भिद्यारम्ह विनि-জ্রান্তা হুবুলা নাড়া নিজ শরীরলীনা চিন্তা করত দৰ্ভ মূলদারা অভিমন্ত্রিত দর্ভাগ্র তাহার দক্ষিণ করে বিফাদ করিয়া তনাল আত্মজজ্বায় ও তদর্ঞ ভাগ অগ্নিতে নিক্ষেপপূর্বক শিবমন্ত্র উচ্চারণ করত রেচকদছকারে শিষ্যগুদ্ধে গমন করিয়া পুৰক্ষোগে স্বকীয় হৃদয়ে আগমন ও পুনরায় শিব বহ্নিতে গমন এইরূপে নাড়ীসন্ধান করিবেন। অন-ন্তর শিবস্মিধানার্থ হ্যান্ত দারা আন্ততিত্তয় প্রদানা-নন্তর শিবহন্ত হিরত্ব সম্পাদনার্থ মূলমন্ত্রকরণক শত সংখ্যক আছতি প্রদান করিবে। এইরূপ নিয়মে দীক্ষিত হইলে শিবার্চনের যোগ্য হয়।

ইত্যাপ্রেয়ে আঃদিনগাপুরাণে সময়দী**কা কথন নামক** ক্রি°শদ্ধিক দ্বিত্তম অধ্যায় স্মাপ্ত।

একত্রিংশদধিক দ্বিশতত্য অধ্যায়।

সংস্কারদীকা কথন।

ঈশ্বর বলিলেন, হে ষড়ানন! অধুনা সংস্থার দীকা বিধান বলিব। বহুন্ত শিব নিজহুদয়ে আবাহন করত হৃদয় সংশ্লিষ্ট আত্মা ও শিব উভয়ের জর্জনা করিয়া হৃদাস্ত বারা ভর্পণ করিবে। এবং উহাদিশের সমিধানার্থ ঐ মন্ত বারা আহতি পঞ্চক প্রদান পূর্বক হৃদ্মন্ত বারা অফাভিমন্ত্রিত কুত্রম করণক শিশুরূপী আত্মার তাড়ন ক্রিয়া দেদীপামান তারকাকার চৈতত্ত তথায় চিন্তা করত রেচক যোগে ইকার রব সহকারে মৃক্ত চৈতত্ত সংহার মুদ্রা হারা আকর্ষণ পূর্বেক প্রকসহকারে হুৎপথ্মে বিতাস করিয়া উদ্ভব মুদ্রা হারা হ্মান্ত সম্পুটিত মূলমন্ত্র উচ্চারণ করত রেচক সহকারে বাসীম্বরী যোনিতে উহা নিক্ষেপ করিবে। ও হাঁ হাঁ হাঁ আছানে নমঃ। এই মূলমন্ত্র এহলে নির্দিষ্ট আছে।

काकनात्राम अनी अ निध्न शांवटक हवन कार्या मण्यत्र हरेल हेस्टिनिकि हरा। अथवृक् मधुम विकास रहाम कतिरल कार्यामिक कमां हुए मा। স্লিম প্রদক্ষিণাবর্ত্ত হুগদ্ধি অনল হোমকার্য্যে 😊 ভ সূচক এবং বিপরীত শাূলিঙ্গবিশিষ্ট ও ভূমিস্পৃষ্ট শিধ অর্থাৎ অবনত শিথবহ্ন প্রশস্ত ফলসাধক। এবমাদি চিহ্নিত বহ্লিতে হোম করিলে শিষ্যের পাপক্ষয় অথবা বিপরীত লকণাক্রাস্ত चाङ्ठि श्रमान किंद्रल निया क्या इया। मन्नात्रनार्थ ऋक्ताः भ जावनार्थ व्यक्तिवीक्षमः छिष বিধানার্থ ও গ্রভাধান, দীমন্তোম্য়ন, জাতকর্ম, নামকরণ প্রভৃতি কার্য্য সম্পাদনার্থ মূলমন্ত্র দারা পঞ্চাত হোম করিবে। এন্থলে শিধিলীভূত বন্ধ আত্মার ক্লদ্রপুত্রত্ব সম্পাদনার্থ শক্তিতে যে উৎকৰণ বিধান তাহার নাম গর্ভাধান, নিজ অস্তঃ-করণে আত্মগুণত্রয়ের যে প্রকাশতাহার্টিক পুংস্বন বলে। মারা ও আত্মার বিবেক জ্ঞানের নাম সীমন্ত বৰ্দ্ধন। শিবাদি তত্বশুদ্ধির স্বীকার ভাহাকে জনন বলে। শিবজের যোগ্য আত্মায় যে শিব বোধ-রূপ নামকরণ করিবে।

অনন্তর সংহার মুদ্রা বারা ক্ষুরদ্ বহ্লি কণো-পম আত্মাকে গ্রহণ কবিয়া নিজ হৃৎপদ্মে সংস্থা-পন করিয়া কুক্তকযোগে মূলমন্ত্র উচ্চারণ করত হাদয়ে আত্ম ও শিবের সমবশীভাব করিবে। পরে উদ্ভব মুদ্রা ঘারা আয়োকে গ্রহণ করিয়া রেচক সহকারে ব্রহ্মানি কারণ ড্যাগক্রমে শিবান্তে লইয়া যাইবে। অনস্তর বিধানজ্ঞ গুরু হানান্ত্র সম্পুটিত মূল মন্ত্রোচ্চারণ করত রেচক সহকারে শিধ্যের স্থান্তোজ কর্ণিকায় নিকেপ করিবে। তৎ-কালে গুরু শিব ও বহ্নির যথোচিত পূজা করিয়া শিশ্য কর্তৃক স্বয়ং প্রণাম প্রাপ্ত হইয়া নিয়ম স্কল শিষ্যকে প্রবণ করাইবে। দেব ও শাস্ত্রনিন্দা কদাচ করিও না, নির্মাল্যাদি লঞ্জন অত্যন্ত নিষিষ্ঠ, শিব অগ্নি ও গুরু পূজা যাৰজ্জীবন করিবে। বালক, মূর্থ, বৃদ্ধ, স্ত্রৌ,ভোগী, ব্যাধিগ্রস্ত প্রভৃতি ব্যক্তিগণকে যথাশক্তি ধন ও জন্নাদি প্রদান করিবে। ইত্যাদি নিয়ম গুরু বক্ত হইতে শিষ্য প্রবণ করিয়া সতর্কভাবে প্রতিপালন করিবে। এবং সমর্থ হইলে ভূ হাক্ব জটাভত্মদণ্ড কোপান ও দংখন অর্থাৎ রজ্জু श्रमानः कतिरव। অন্তর ঈশানাদি হোঁ এই বীজাদি বা হৃদাদি মূল মন্ত্ৰ যথাক্ৰমে জপ করিয়া পূর্কের স্থায় স্বাহান্ত সংহিতামন্ত্র পাঠ করত হোম করিয়া পাত্রে ভারোপ করত স্থভিলে শ্বরকে দর্শন করাইয়া রক্ষার্থ ঘটের নিয়দেশে ক্ষণকাল স্থাপন করিয়া গুরু শিব সন্নিধানে আজ্ঞা ্রাহণ করিয়া ব্রতীকে মন্ত্র প্রদান করিবেন। এইরপে সময় দাক্ষায় দীকিত মানগণ বহিন্দোম ও আগম জ্ঞানাধিকারি হয়েন।

ইত্যাপ্তেরে আদি মহাপুরাণে সংকারদীক্ষা কথন নামক এক্তিংশদ্ধিক ছিশতত্ম অধ্যায় সময়ে।

দাত্রিংশদধিক দিশতত্ব অধ্যায়।

নিৰ্ববাণদীক্ষা কথন।

ঈশ্বর বলিলেন নির্বাণ দীক্ষায় পাশবন্ধন শক্তি রক্ষার্থ বা তাড়নাদি নিমিত, মূল মন্ত্রাদি ছারা দীপন করিবে। প্রত্যেক কার্য্যে মন্ত্র দ্বারা এক এক বা তিন তিন আহুতি প্রদান করিবে। প্রণবাদি বীজগৰ্ভ শিখাৰ্দ্ধ হুঁ ফড়স্ত মন্ত্ৰ অৰ্ধাৎ ওঁহু হেঁ। হেঁ হঁ ফট এই মূল মন্ত্ৰারা দীপন, সমস্ত ক্রের ক্রাধ্যে জনয়মূথ ও শিরোদেশে প্রত্যেকে ভঁহু হোঁহোঁছু ফট এই মন্ত্ৰারা দীপণ শান্তিক এবং পৌষ্টিক কার্য্যে ঐ মস্ত্রের আদ্যন্তে বষ্ট যুক্ত করিরা দীপন কর্ত্তব্য। দর্ববপ্রকার কাম্যকর্মে ও আপ্যায়নাদিদমন্ত কার্য্যে বষ্ট ও বেষ্টি মন্ত্র দখর দ্বারা হবন কার্য্য করিবে। অনন্তর নিজ বাম ভাগস্থ মণ্ডলে উপবিষ্ট পবিত্র শরীর শিষ্যকে পূজা করিয়া শ্বষ মানাড়ী রূপ চিভিত দূত্র মূলমন্ত্রবারা তাহার শিখা হইতে পাদাস্থ পর্যান্ত বিতার করত সংহার মুদ্রাদ্বারা মূমুক্ষুপুরুষশিষ্যর শরার দক্ষিণ ভাগে ও জ্রী শিষ্যত শরীর বামভাগে বন্ধন করিবে। অনন্তর শিষ্য মন্তকে শক্তি মন্ত্র ছারা শক্তি পুজা করিয়া দ'হার মূদা দারা গ্রহণ করিয়া তাঁহার সহিত সংযোজিত করিয়া মূলমন্ত্র ছারা নাড়ী গ্রহণ করত সূত্রে বিন্যাস পূর্বেক হুন্মত্রে দ্বারা অর্চন ও রুজে (হোঁ) মন্ত্র দারা অবগুঠন করিয়া সমিধানার্থ হৃদ্দত্ত হারা আহতিত্তর প্রদান করিবে। শক্তি বিষয়েও এইরূপ জানিবে। ওঁহা বর্ণাধ্বনে নমোহাঁভবনাধ্বনে নমঃ। ওঁহা কলাধ্বনে নমঃ এই মন্ত্রে পথশোধন করিয়া সত্রোপরি উপবিষ্ট শিষাকে অস্ত্রমন্ত্র উচ্চারণকরত জলপ্রোক্ষিত করিবে।

অনন্তর গুরু পুষ্পবারা শিষ্যছনয় ভাড়ন করিয়া তদেহে প্রবেশ পূর্বক হংসবীজন্ম চৈতন্য ওঁ হেঁী हूँ क्रे अरे मस्त्र (तहक त्यार्थ विक्रिक्ट कतिया "হঁহেঁ যাহা" এই মত্তে শক্তিসূত্ৰ মারা আনচেছৰ করত নাড়ীভূত সুত্তে সংহার মুদ্রা দারা নিযোঞ্জিত করিবে। পরে ওঁহাঁই হাঁ অস্থনে নম এই মন্ত্র শিধ্যশবীরে ব্যাপক ন্যাস ও কবচ (ছুঁ) মন্ত্র দ্বারা অব**গু**ঠন করিবে। পরে সমি^{ধি} হেতৃক হান্সভারা আহুতিত্রেয় প্রদান করিয়া বিদ্যাদেহ বিশ্ব্যাদ করত শাস্তাভীত।বলোকন করিবে। অনন্তর তৎশরীরে ইতর তত্ত্বাদিমন্ত্র ভূত চিন্তা করিয়া শান্তাতীত কলাপাশায় নমং এই মন্ত্ৰ অবলোকন কর্ত্তন। দিতা শান্তাতীতা হইলে তুই তত্ব মন্ত্ৰপদ এক ধোড়শ বৰ্ণ অই ভুবন বীজনাড়ী দ্বয় বিষয় এবং গুণ এক স্দাশিব রূপ কারণ অন্তর্ভাবনা করিয়া প্রপীড়ন করিবে। ওঁ হোঁ শান্তাতীত কলাপাশায় হুঁ ফট্ এই মন্ত্র উচ্চারণ করত দংহারমুদ্রাম্বারা সূত্র গ্রহণ পূর্বেক মন্তকে বিধান ও পুজা করিয়া সন্নিধানের নিমিত আহ্তিত্রয় প্রদান কয়িবে। কৃষ্ণা শান্তাতীতা হইলে তুই তম্ম করেবয় বীজন।ড়ীম্বয় গুণবয় মন্ত্রদ্য ও অজ্ঞ ত এক ঈশ্বর বিষ্ণু কারণ দাদশ পদ দপ্তৰশ ভুবন এক বিষয় চিন্তা করিয়া প্রপীড়ন করত গ্রহণ করিয়া মুখ সূত্রে নিয়োজিত করিবে। পরে সানিধা হেতুক নিজ বীজ দারা আছতিতায় প্রদান করিবে। বিদ্যা শান্ত্যতীতা হইলে দপ্ত ভন্ত এক-বিংশতি পদ ধড় বর্ণ এক সঞ্চর নাড়িকা পঞ্চবিংশতি ভূবন গুণত্তন্ত্র এক বিষয় রুদ্ররূপ কারণ অন্তর্ভা নো করিবে। এতদতিরিক্তা শান্ত্যতীত। হইলে বীজ নাড়াদ্য় দাবিংশতিপদ ষষ্টিদংখ্যক ভুবন ও কলা গুণচতুন্টয় মন্ত্রত্রয় এক বিষয় করেণ হরি

অন্তর্ভাবনা করিয়া শুক্লা প্রতিষ্ঠা বিহিত্ত ভাড়নাদি সন্নিধানার্থ আন্ততিত্তের প্রদান করিবে। নিবৃত্তি পীত বৰ্গা হইলে হঁ বীজাত্মক শত मःथाक पृत्र व्यक्तीतिः गडिलम बीजनाड़ीमुग्न ইন্দ্রিমর বর্গ তম্ব ও বিষয় এক এক পঞ্চপ মন্ত্রন্থ কোরণ ও শবর চতুষ্ট্য অস্তর্ভাবনা করিয়া তাড়ন করিবে। প্রথমে তত্বভাগান্ত সত্তে দেবতা বিশ্লাদ করিয়া পূজা ও সমিধানার্থ পাবকে আছভিত্রর প্রদান করিবে। অনন্তর গুরু শিষ্য শরীর হইতে এইক্সপে কলা সূত্রগ্রহণ পূর্বক দ্বীজা দীকা বিষয়ে শ্ময়াচার যাপাসুদারে যোজিত করিবে। দেহারম্ভক বীঞ্চ রক্ষার্থ, মন্ত্র সিদ্ধি ফল হেতৃক,ইফাপৃর্তাদিধর্মার্থ ব্যতিরিক্ত মর্থাৎ প্রক্লক্ট বন্ধন স্বরূপ প্রপঞ্চীত চৈতন্যবোধক দক্ষা পরমাত্মাকে কলাস্তরে চিন্তা করিয়া এইরূপে তর্পণ ওদীপন করত অ অমন্তে তিন্তিন আহতি প্রদান করিবে। ওঁ হোঁ শান্ত্যতীত কলাপা-শায় স্বাহা ইত্যাদি তপ্ণ মন্ত্র। **७ हाँ हें हो** শান্তাতীত কলাপাশায় হুঁ ফট ইত্যাদি দীপন মন্ত্ৰ ব্যাপ্তি বোধের নিমিত ঐ সূত্র কুছুম ও আজ্য लिश्व कतिया शक्षकता सारम विमान शूर्वक छन्न-পরি সাঙ্গ শিব পূজা করিবে। অমন্তর হুঁ ফড়ন্ত কলা মন্ত্র ছার। পাশ সকল ষথাক্রমে ভেদ করিয়া নমোক্ত তদাক্ত ছারা অক্ত প্রবেশ করিয়া ওঁ हुँ हूँ। हुँ। हुँ कहे नासाठी ठ कलार गृङ्शि এই মন্ত্ৰারাঞাহণ ওঁজুঁহাঁহোঁহাঁ লুফট শান্তাতীত কলাং ব্যামি এই মন্ত্র দারা বন্ধন করিবে। অনন্তব পুনায পাশাদির স্বীকার আহণ ও বন্ধন কবিবে। পরে পুরুষের এতি 🖟 অশেষ ব্যাপার সিন্ধির নিমিত্ত উপবেষণ পুনবক ঐ সূত্র শিষ্যক্ষরে নিবেশিত করিয়া বিস্তৃত পাপ

ক্ষয়ার্থ মূলমন্ত্র হারা শত সংখ্যক হোম করিবে। পুরুষের সরাবে ও স্ত্রীলোকের প্রণীতা (যজ্ঞপাত্র বিশেষ) মধ্যে হৃদান্ত্র ও অন্তর মন্ত্র সম্পুটিত হৃদ্মন্ত্রে অভ্যর্কিত দাঙ্গ শিব দহিত দূত্র কলদের অধো-रमर्थ निधानानस्तत्र त्रकार्थ विद्धालन कतिरव। শিষ্য হল্তে পুষ্প প্রদান করিয়া কলসাদিতে পূজা কর ত প্রণাম করা ইয়া যাগমন্দির **इडेटड वहिर्ग**ठ इडेटव। অনন্তর গুরু মগুল ত্রিতয় নির্মাণ করিয়া তথার মুমুকু শিষ্তে উদ-আুখ ও ভোগাভিলাষি শিষ্যকে পূর্কাদ্য নিবিষ্ট করাইয়া প্রথমে কুশযুক্ত হস্তবারা অর্চিতানন্তরিত রূপে চুল্লকত্তম পঞ্চাব্য প্রাশন করাইবে। পরে তৃতীয় মণ্ডপে গ্রাস ত্রিতয় বা অই গ্রাস পরিমিত দশন স্পর্ণ বজ্জি তভাবে মোকার্থী প্লাশপুটকে এবং ভোগী পিপ্পল পত্রে হন্মন্ত্র উচ্চারণ করত সম্যুক ভোজন করাইয়া পবিত্র জলদারা আচমন ও হামজ্র ছারা দন্তকার্চ ক্রিয়া সম্পাদন করিয়া প্রকেপ করিবে। শোভন প্রদেশে নুনোদি দোধ পরিহারার্থ মূল মন্ত্র অফৌতর শত জপ করিয়া ছণ্ডিলেখরে দর্বে কর্মা সমর্পণ পূর্ব্বক তাঁহার পূজা ও বিদর্জন করিবে। পরে চণ্ডে-শর পূজা করিয়া নির্মাল্য অপনয়ন পূর্বক চরুশেষ হারা অগ্নিতে আহুতি প্রদান করিবে অনন্তর কল-দের ও লোকপালের পূজা করিয়া প্রম্থগণ ও অগ্নির সহিত কলস ও লোক পালের বিসর্জন করিবে। যদি বাহ্য প্রদেশ লোকপাল হইলে বহিঃপ্রদেশে তাহা লোকপালের **উদেশে गःक्तिल विकास मा** করিবে। অনস্তর ভস্মহারা বা পবিত্র জলম্বারা স্নান করিয়া যাগ মগুণে প্রবেশ পুর্বকি গৃহস্থ শিষ্যকে দর্ভশ্য্যায় পূর্বেশীর্ষ ও হুরক্ষিত ভাবে

এবং যতি শিষ্যকৈ সম্ভস্ম শ্যাগ্ন দক্ষিণ মন্তক বদ্ধ
শিখ অস্ত্র ও সপ্তমানবকের সহিত স্থাপন করত
স্মান করাইয়া পুনর্ববার বহির্গমন করিবে। ওঁ
হিলি হিলি ত্রিশ্ল পাণয়ে স্থাহা এই মন্ত্র দারা
পঞ্চগব্য ও চরু ভক্ষণ করিয়া দন্ত ধাবন করত
আচমন করিয়া শিব চিন্তা করত পবিত্র
শ্যাগ গ্রহণপূর্ববিক গুরু দীক্ষা গত ক্রিয়া কাও
স্মরণ করত সমাবেশ করিবেন। এই সংক্ষেপে
দীক্ষা ও অধিবাস বিধি কীর্ত্তিত হুইল।

ই ভাাগেরে মহপুরাণে নির্কাণদীক্ষা প্রকরণে অধিবাসন নামক দ্বাজিংশ্দধিক দ্বিত্তম অধ্যার স্মাপ্ত।

ত্ৰ মন্ত্ৰিংশদধিক দ্বিশতত্ম অধ্যায়।

निर्द्धान मौका विधान !

नेचत्र विलातन, यक्षि मधि चार्क मारम ও मन्तर्गान পান ভোজন গজাখারোহণ ও শুক্লাংশুকাদি ধারণ শুভকল দায়ক এবং তৈলাভ্যসাদি হীন কাৰ্য্য ও ছোরদর্শন প্রভৃতি স্বপ্নে অশুভ ফলজনক জানিবে। অনস্তর গুরু প্রভাতে গাত্রোত্থান করিয়া স্নানাদি নিত্য কার্য্য সম্পাদন পূর্ব্বক যাগমণ্ডপে প্রবেশ করত আচমন ও নিডা নৈমিন্তিক কার্যা সম্পাদন করিয়া আত্মশোধন ও শিবহ**ত্ত আত্মাতে** বিন্যাস করিয়া কৃত্তক্ষ দেবগণের ইন্দাদি লোক পালগর্ণের যথাক্রমে অর্চনা করিয়া মগুলে বা স্থগুলে শিব পূজা ও তপ্ণ বহ্নির অর্চন মন্ত্র তর্পণ ও পূর্ণাছতি প্রদান কনিবে। অনন্তর তুঃস্বপ্ন দোষ পরিহারার্থ শস্ত্রমন্ত্র স্বারা অস্টোতর শত হোম করিয়া হুঁ সম্পূ-টিত মন্ত্র দারা মন্ত্র দীপন করত স্থতিল ও কুষ্টের मर्पा अञ्चर्तन विधान शुर्खक निया श्रादन दिनिमन्ड লকামুক্ত হ্ইয়া বহিপ্যন করিবে।

তথায় নিরমাতুদারে মগুলাদি প্রস্তুত করিয়া পূৰ্ব্ববৎ নাড়ীরূপ দর্ভহন্তে সম্পাত হোম সম্পাদন করত তাঁহার সলিধানের নিমিত মূল মজ্র দারা মাহুতিত্রয় প্রদানপূর্বক কুম্বন্ধশিবের মর্চনা করিয়া পাশ সত্র সমাহরণ করত নিজ দক্ষিণস্থ উর্দ্ধকায় অর্থাৎ দণ্ডায়মান অভ্যক্তিত শিষ্যর শিখায় পাদাঙ্গুতাবল দ্বিতভাবে বন্ধন করিবে। পরে নির্ভ্যাত্মক জগদী-খবের জগদাপ্তিভাচিতে চিন্তা করত তাঁহাতে অকা-ধিক শতভূবন বক্ষ্যমাণরূপে চিন্তা করিবে। কপাল অজ বুদ্ধ বক্সদেহ প্ৰমৰ্দন বিভৃতি অব্যয় শাস্তা পিনাকী এবং ত্রিদশাধিপ এই দশটা পুর্বেদিকে। অগ্নিরুদ্র হতাশী পিঙ্গল থাদক হর জ্লন দহন বল্রু ভক্ষা-স্তক ও ক্ষপাস্তক এই দশটী অগ্নি কোণে। মৃত্যুহর ধাতা বিধাতা কার্যারঞ্জক কাল ধর্ম অধর্ম সং-ट्यांका ও निर्धाकक अहे मर्गंगे मिक्निमिटक। यात-ণহন্তা ক্রে দৃষ্টি ভয়ানক উর্দ্ধাংশক বিরূপাক ধুত্র লোহিত ও দংষ্ট্রবান্ এই দশটী নৈথতে। বল অতিবল পাশহস্ত মহাবল খেত জয়ভদ্ৰ দীৰ্ঘ-ৰাহু জনান্ত ক বড়বাস্য এবং ভীম এই দশটী বারুণে। শীঘ্র লঘু বায়ুবেগ সূক্ষা তীক্ষ ক্ষপাস্তক পঞা-স্তুক পঞ্চশিখ কপদী ও মেঘবাহন এইদশ্টী বায়ু क्रोम्क्रेशाती नाना त्रव्रशत নিধীশ (कारन। রূপবান খন্য সৌম্যাদেহ প্রদাদকৃৎ প্রকাশ লক্ষীবান্ ও কামরূপ এই দশটী বিদ্যাধর জ্ঞানধর সর্বজ্ঞ বেদপারগ মাতৃরভ পিঙ্গাক ভূতপাল বলিপ্রিয় সর্ববিদ্যা ও বিধাতা হুখ ठुःश्रहत्र# अहे मणी क्रेगाता। व्यवस्थ भागक शैव পাতালাধিপতি বৃষ বৃষধর বীর্যাপ্রদন সর্বজোমুখ লোহিত এই দশ রুদ্র ফণিছিত অর্থাৎ অধো-দিকে। শস্তুবিভূ গণাধ্যক ত্যক তিদশৰন্দিত

সংহার বিহার লাভ লিপ্সু বিচক্ষণ **অভা কু**হক কালাগ্রিরুক্ত হাটক কুখাও সভ্য ব্রহ্মা এবং সপ্তম বিষ্ণু এই অকীদশ রুদ্র কটাহাভ্যস্তরে স্থিত এই রুদ্রগণের নামই অফৌতরশত ভুবনের নাম জানিবে। পরে ভবোদ্ভব সর্বভূত সর্ব্বভূত্তর্থপ্রদ নর্কনামিধ্যকৃৎ ত্রন্ম বিষ্ণু রুদ্রে শরার্চিত সংস্তৃত পূৰ্ববিত ওঁ সাকিন্! ওঁ ক্লোন্তক ! ওঁ প্তঙ্গ ! ভঁশক ৷ ভঁসূক্ষ ৷ ভঁশিব সৰ্ববিদ ৷ সৰ্বে-সামিধ্যকর ! ত্রহ্ম বিষ্ণু রুদ্র কর ! ওঁ নমঃ শিবায় ইত্যাদি রূপে স্তবাদি করিবে। ওঁ নমোনমঃ। হে কার্ত্তিকেয় ! অফীবিংশতি পাদ ব্যোষব্যাপি मञ्जू मना क्रम् काञ्च दनक क्यां ६ दही नमः कहें दर्श বট্ এই মন্ত্ৰাৰ ও মকাল বীলা ইড়া ও পিললানাড়ী প্রাণাপান উভয় বাযু। জ্ঞাণ ও উপস্থ ইন্দ্রিয়। গন্ধাদি গুণ পঞ্চকর মধ্যে গন্ধ বিষয়। পীতবর্ণ বজ্ঞাক্ষ চতুরতা পার্থিব মণ্ডল ইহার বিস্তার কোটা যোজন। ইহার**ই অন্ত**র্গভা **हकूर्म**न्यानि जानित्व जमात्था अथवा मर्स्तरमव গণের দিতীয়া মবাদি দেবযোনির ভৃতীয়ামুগ পক্ষী পশুর, সরীস্থপ গণের চতুর্থঘোনি স্থাবর প্রভৃতি সমস্ত জীবগণের পঞ্চমধোনি, ষ্ঠী জনাতু-वीरणानि, रिन्नाकी ब्राक्तमी यक वश्रकीया ७ भाषास्वी সপ্তমযোনি ঐদ্র সৌম্য প্রাণেশ্বর ও ভাক্ষা অইন যোনি। এই অফ যোনির অধিকার প্রকৃতিতেলয় বৃদ্ধিতে ক্ষোপ ध्वरः खक्षांकात्रंग क्रांनिद्यः। অনন্তর জাতাদবস্থ সমস্ত ভুবনাদি পর্ভিডা নিবৃত্তি চিন্তা चगरक्ष निर्पाक्षिता कतिरव। নিবৃত্তিকলাপাশায় হুঁ কট্। অনস্তর ওঁ হাঁ। হাঁ নিবৃত্তি কলাপাশায় স্থাহা এই মত্তে প্রক সহ-कारत बद्दगमूखा दाता बाकर्दग कत्रक चँट्ँ ट्र्ँ।

 ⁽ क्थ क्: थ क्यामवनामि मः भाष यक्षन नामक व्यर्थायमध्यम)

ছুঁনিবৃত্তি কলপোপায় হুঁফট্ এই মস্ত উচ্চারণ করত সংহার মুদ্রা ছারা কুম্ককযোগে অধঃস্থান হইতে আছেণ করিয়াওঁওঁ হুঁহঁ৷ নিবৃত্তি কলা-পাশায় নমঃ এই মন্ত্রে উদ্ভব মুদ্রা দ্বারা রেচক সহকারে কুস্তে সংস্থাপন করিয়া ওঁ হাঁ। নিবৃত্তি কলাপাশায় নমঃ এই মন্ত্ৰ দারা অর্থ প্রদান পূর্ব্বক পূজা করত সমিধানের নিমিত্ত স্বাহাস্ত উক্ত মন্ত্ৰ দাৱা বিষ্থভাবে আহু তিত্ৰয় প্ৰদান ও সম্তর্পণাছতিত্তয় প্রদান পূর্বক ওঁ হাঁ৷ ত্রন্ধণে নমঃ এই মন্ত্র দারা দ্রক্ষার আবাহন পূজা ও স্বাহান্ত উক্ত মন্ত্র দারা দম্বর্ণ করিয়া হে ব্রহ্মণ ! তোমার এই অধিকারে মুমুকু এই ভিষ্যকে দীক্ষিত করিব এই বিষয়ে আপনি অমুকূল হউন। এইরূপে ভগবান বিধি সন্নিধানে বিজ্ঞাপন করিবে। অনন্তর হৃদ্যন্ত্র হারা দেবী রক্ষা বাগী-স্থরী ইচ্ছাজ্ঞানা ক্রিয়ারপা ষ্ড্বিধা এক কারণান্ত্রিকা দেবীর আবাহন পূর্বক অর্চনা করিয়া অশেষ যোনি বিকোভ কারণীভূতা বাগীস্বরী দেবীর ঐরপে পূজা ও তর্পণ করিবে।পরে হুনান্ত্র সম্পূটীত অথ বীজাদি হুঁফড়ন্ত আনত্র মন্ত্র হারা শিষ্য হৃদ্যে তাড়ন করিয়া বিধানক্ত গুরু তাহার হাদয়ে প্রবেশ করত তত্ত্ত্ব হিকণে।পম চৈতন্য নিবৃত্তিক চৈতন্যের সহিত যুক্ত করিয়া পাশ-দারা জ্যেতের সহিত বক্ষ্যমানরূপে বিভিন্ন করিবে। ওঁ হাঁহুঁহঃহুঁ কট্। হাঁ স্বাহা এই মন্ত্র উচ্চারণ করত অস্কুশ মুদ্রা ঘারা পুরক সহকারে উহা আকর্ষণ করিয়া নিজ মন্ত্র স্বারা গ্রহণ করত আত্মাতে যোজিত করিবে। ওঁহাঁহঁ। আহিনে নমঃ। এই মন্ত ভারা পিতা মাতার সংযোগ চিন্তা করিয়া রেচক যোগে ঐ চৈতন্য ভ্রহ্মাদিকারণ ভ্যাগ ক্রমে শিবাম্পদে

আনয়ন করিয়া গর্ভাধানার্থ উহা এক কালীন দর্বা-যোনিহইতে গ্রহণ করত বামহত্তকৃত উদ্ভব মুদ্রাদারা বাগীশ্বরী যোনিতে নিক্ষেপ করিবে। ভঁ হাঁহাঁহাঁ আংজানে নমঃ। এই সভাভারা পুত্রন 🛩 পঞ্চধা তর্পন করিয়া অন্য সমস্ত যোনিতে হন্মন্ত্র দ্বারা দেহ শুদ্ধি করিবে! ইহাতে স্ত্রী শরীরাদির ও সম্ভব হেতুক পুংসবন ক্রিয়া করিতে হয় না। দীমন্তোময়ন ও করিতে হয়না যে হেতুক দৈব অঙ্গে দেহোৎপত্তি হয়। সর্ব্বপ্রাণির ঘূৰিত অপর অঙ্গ পরিত্যাগ পূর্ববিক মন্তক ছইতে চিন্তা করিবে। এবম্প্রকারে শিবমন্ত্রে উহাদিগের অধিকার চিন্তা করিয়া মোহরূপ বিষয়াত্মক শস্ত্র মন্ত্রের সহিত কবচ মস্ত্রের অভেদ চিন্তা করত লয় ভাবনা করিয়া শিবমন্ত্র উচ্চারণ করত ইন্দ্রিয় শুদ্ধি ওছ্নান্ত স্থারাতস্থ করিবে। অনন্তর গর্ভাধানাদি কার্য্যে ক্রমে পাঁচ পাঁচটি আহুতি প্রদান করিয়া মায়ামন্ত্র (স্ত্রাঁ) ছারা মলত্যাগাদি এবংপাশ বন্ধ নিবৃত্তির নিমিত নিফ্তিরূপ হুনাত্র উচ্চারণ করত শত সংখ্যক আহতি প্রদান করিয়া মল শক্তি নিরোধ ক্রমে পাশ বিযুক্ত করত স্বাহাস্ত অন্ত্র মন্ত্র দ্বারা পাঁচ পাঁচটি আছডি প্রদান করিবে। অনন্তর অন্ত মন্ত্রে সপ্তাভি মন্ত্রিত কর্ত্তরীয়ারা আদ্যন্তে মায়াযুক্ত পাশ বক্ষামাণরপে চ্ছেদন করিবে। ওঁ হুঁনিবৃত্তি কলাপাশায় হুঁফট্ এই মন্ত্উচ্চারণ করত হস্তঘ্য দ্বারা বন্ধকত্ব নির্ববাহ্ করিয়া অন্ত মত্তে বর্তুলীকরণকরতবিসর্জনকরিয়ায়ত পূর্ণজ্ঞব ধারণ করিবে। অন্তর কলাক্রমারা দহন করত কেবল অস্ত্র মন্ত্র দারা ভত্মসাৎ করিয়া পাশাঙ্কশ নির্ভির নিমিত ওঁহং অবোর হুঁফট্। এই মত দারা পঞ্চাত্তি প্রদান্ পূর্ব্বক অফটসংখ্যক অন্ত্র মন্ত্র

বারা আছতি প্রদান রূপ প্রায়শ্চিত হোম করিবে।

অনস্তর বিধাতার অবাহন করিয়া পূজা ও তপণি করত ও হাঁ শব্দ ম্পার্শ শুদ্ধ জন্ধ অক্ষন্! গৃহাণ সাহা এই মন্ত্র দারা আহুতিত্রেয় প্রদান পূর্ব্বক উহাঁর অধিকার উহাঁতে সমর্পণ করিবে। পরে হে বেদান! আপনি দগ্ধাশেষপাপ এই পশুর পুনরায় বন্ধনের কারণ হইবেননা.এই শিবাজ্ঞা শুবণ করাইয়া বিধাতার বিগর্জন করত পিঙ্গলানাড়ীযোগে পুরক্ষহকারে শনৈঃ দংহার মুদ্রাদ্বারা উহাঁর আজ্ঞানিজাত্মাতে যুক্ত করিয়া কুন্তক্ষেণাপে রাহ্যুক্ত চন্দ্রমাদদৃশ ঐ আজ্বাদ্বারা গ্রহণ করত উদ্ভব মুদ্রাগ্রহণ করত উদ্ভব মুদ্রাগ্রহণ করত বৈচক যোগে সূত্রে যোজিত করিয়া পূজন পূর্ব্বক স্থাসদৃশ অর্থানিলের বিন্যাস করত পিত্যুগল বিদর্জন করিয়া বৌষড়ন্ত শিব মন্ত্র দ্বারা সর্ব্বক করিয়া বৌষড়ন্ত শিব মন্ত্র দ্বারা সর্ব্বক করিয়া বৌষড়ন্ত শিব মন্ত্র দ্বারা সর্ব্বক করিয়া বিশ্বতি প্রণার্থ পূর্ণাহতি প্রদান করিবে।

ইত্যাগ্রেরে আদিমহাপুরাণে নির্বাণনীক্ষা প্রকরণে নির্বাত ক্লালোধন নামক বাত্রি-শ্লধিক বিশত্তম অধ্যার সমাপ্ত।

ত্ৰয়স্ত্ৰিংশদধিক দ্বিশতত্ম অধ্যায়।

প্রতিষ্ঠা কলাশোধনোকি।

ঈশর কহিলেন, অনস্তর নাদ নাদান্ত সঙ্গি ওঁ হঁ। হুঁহঁ। এই মজের গুস্থ দীর্ঘ প্রয়োগ ভার। শুদ্ধ ও বিশুদ্ধরূপ ভত্তবার দক্ষান করিবে। কিওি জল তেজ বায়ু আকাশ পঞ্চনাত্র একাদশ ইন্দ্রিয় বৃদ্ধি গুণত্রেয় অর্থাৎ প্রকৃতি ও অহংকার এই চতুন বিংশতি ভত্ত এবং পুরুষ প্রতিষ্ঠা কার্য্যে নিবিন্ট চিন্তা করিয়া থকারাদি যকারান্ত পঞ্চ বিংশতি অক্ষর এবং পঞ্চাধিক ষ্ঠি সংখ্যক ভুবন ভৎসংখ্যক

ও তৎসংজ্ঞক রুদ্রও তৎকার্য্যে নিবিষ্ট জানিবে। ঐ সকল ভুবন ও রুদ্রের নাম অমরেশ গ্রেছাব নৈমিষ পুষ্কর অপাদি দণ্ডি ভাবভৃতি মকুলীল, হরি-শ্চন্দ্ৰ শ্ৰীশৈল অস্থীশ অস্ৰাতিকেশ মহাকাল কেনার ভৈরব গয়া কুরুকেত্র থল অনাদিক নাৰিক বিমল অটুহাস মহেন্দ্র ভীম বম্বাপদ রুদ্রকোটি অবিযুক্ত মহাবল গোকৰ ভদ্ৰকৰ্ স্বৰ্ণাক্ষ স্থাৰু অজেশ সর্বজ্ঞ ভাষর দূদনান্তর হৃবাত্ মন্তরূপী বিশাল জটিল রৌদ্র পিঙ্গলাক্ষ কালদংখ্রী বিচুর ঘোর প্রাজাপত্য হুতাশন কামরূপী কাল কর্ণ জয়ানক মতঙ্গ পিঙ্গল হর ধাতা শঙ্কুকর্ণ বিধান শ্রীকণ্ঠ চন্দ্র-শেখর এই সকল রুদ্রের নামে উহাদিগের আস্পদ স্বের্প ভূবন স্কল কথিত হয়। ব্যাপিন্। ওঁ অরূপ ভ প্রমথ ও তৈজঃ ভ জ্যোতিঃ ও পুরুষ ! ও অয়ে! ওঁ অধুম ! ওঁ অভিয়া! ওঁ অনাদি ওঁনানা **७ँ धृ धृ ७ँ कृ: ७ँ कृ १० ७ँ यः व्यतिधन निधरनास्त्र !** শিব ! শর্ব ! প্রমাত্মন ! মহেশ্ব ! মহাদেব ! সম্ভা-বেশ্বর! মহাতেজঃ! যোগাধিপতে! মুক্ত প্রথম দৰ্বন দৰ্বে দৰ্বে এই ছাত্ৰিংশত পদ, বীজ ভাবে মন্ত্রয় বামদেব শিবরূপ শিথা গান্ধারী ও স্বয়ুমাখ্য নাড়ী ছয় সমান ও উদান নামক মারুভদয়. রদনাও পায়ুই ক্রিয়, রদ বিষয়, রূপ শব্দ স্পর্শ রসগুণ, পুগুরীকাজ্মিত সিত বর্তুল মণ্ডল, স্থাবস্থ প্রতিষ্ঠায় গরুড় ধ্বজ কারণ জানিবে। ঠান্তে কৃত সমত ভুবনাদি চিন্তা করিয়া সমস্ত্র স্বারা দেহে সূত্র প্রবেশ করাইয়া উহা বিযুক্ত করিয়া ভঁহাঁ বাঁহা প্ৰতিষ্ঠাকলাপাশায় ভঁফট স্বাহা এই মন্ত্র উচ্চারণ করত পূরক সহকারে অঙ্কুশ মুদ্রা হারা সমাকর্ষণ করিয়াওঁ হাঁহাঁহাঁহাঁ প্রতিষ্ঠাকলাপাশায় হঁুফট্ এই মন্ত্রীটচারণ পূর্বক সংহার মুক্রা ছারা কুন্তকযোগে হৃদয়ের

অধোদেশস্থ নাড়ী সূত্র হইতে উহা এহণ করিয়া ওঁ
হঁ৷ হুঁ হুঁ৷ হঁ৷ প্রতিষ্ঠাকলাপাশায় নমঃ এই
মন্ত্র উচ্চারণ করত উদ্ভব মুদ্রা ধারা রেচক যোগে
কুন্তে সমারোপ পূর্বক ওঁ হাঁ হুঁ৷ প্রতিষ্ঠাকলাপাশায় নমঃ এই মন্ত্র ধারা অর্চনা করিয়া স্বাহান্ত
উক্তমন্ত্রধারা সমিধানার্থ আহুতিত্রয় প্রদান করিবেঃ

অমস্তর ওঁহা বিফাবে নমঃ এই মন্ত্র ছারা ভগবান বিষ্ণুর আবাহন অর্চন ও তর্পণ করিয়া হে বিফো! তোমার এই অধিকারে মুমুকু শিষ্যকে আমি দীকিত করিব আপনি এবিষয়ে অমুকৃল হউন এইরূপে বিজ্ঞাপন করিবে। পরে वाशीश्वतोरमवी ७ वाशीश्वरतत शृटर्वत न्याय चावा-হন অন্তর্ন ও দন্তর্পণ করিয়া শিষ্য বক্ষঃস্থলে তাড়ন করিবে। ওঁ হাঁ হাঁ ই ফট্ এই মন্ত্র দারা প্রবেশ করিয়া জ্যেষ্ঠাঙ্কুশ মুদ্রা দারা শস্ত মন্ত্র উচ্চারণ করত পাশ সংযুত চৈতন্য বিভাগ করত ওঁ হাঁ হঁ হোঁ হুঁফট স্বাহা এই মস্ত্র দ্বারা আকর্ষণ করিষা হৃন্মন্ত্র পুটিত উক্ত মন্ত্র দারা গ্রহণ পূর্বক নামোন্ত **ঐ** মন্ত দারা নিজা-আায় নিয়োজিত করিবে। ওঁহাঁ হঁ হোঁ আজানে নমঃ এই মন্ত্র দারা পুর্বের ন্যায় পিতৃ-সংযোগ চিন্তা করিয়া উক্ত মন্ত্র উচ্চারণ করত বামহস্তক্ত উদ্ভব মুদ্রা দ্বারা দেবীগর্ভে নিক্ষেপ ওঁ হাঁ ই হাঁ আজনে দেহোৎপত্তি মত্ৰ দ্বারা B হইতে জন্ম অথবা ভোগাধিকারের নিমিত্ত কবচ মন্ত্র (ছুঁ) উচ্চারণ করত শিখা হইতে জন্ম চিন্তা করিবে। অন্তার হানা তম শুদ্ধি এবং পুর্বের ন্যায় গর্ভাধানাদি কার্য্য সম্পাদন করিয়া পাশ শৈথিল্যার্থ এইরূপে শতদংখ্যক নিজ্তি মস্ত্রজপ করিবে। পাশ

বিয়োগেও এইরূপ কর্তব্য। অনম্ভর শস্ত্রমন্ত্রা-ভিমন্ত্রিত কলাবীজ বিষিষ্ট কর্ত্তরীদারা ওঁ হীঁ প্রতিষ্ঠা কলাপাশায় হ: ফটএই মস্ত্রে করিবে। পরে বিসর্জ্জন করিয়া পাশমন্ত্র ছারা বর্ত্তুলাকার করত স্বত পূর্ণ আচৰ দারা কলাস্ত্র ক্রিবে। হোম অনন্তর নিবৃত্তির নিমিত্ত অন্ত্র মন্ত্র দারা পঞ্চাহ্নতি প্রদান প্রায়শ্চিভার্থ ওঁ হঃ ফট্ এই মন্ত্র দারা অন্টাহুতি প্রদান করিবে। পরে হৃদ্মন্ত্র উচ্চারণ কয়ত হৃষীকেশের আবাহন পূজন ও তর্পণ করিয়া পূর্ব্বোক্ত বিধানে ওঁ হাঁ রস শুল্কং গৃহাণ স্বাহা এই মন্ত্র দ্বারা অধিকার সমর্পণ পূর্বক হে হরে! নিঃশেষ রুপে দয়পাশ এই পশুর বন্ধকত্বরূপে আপনি থাকিবেন না এই শিবাজ্ঞা শ্রবণ করাইয়া গোবিন্দ বিদ-পূৰ্বক বিদ্যাত্মাতে নিযুক্ত রাত্ মুক্তারিদৃশ্য চন্দ্র বিদ্ব দদৃশ আত্মার সংহার মুদ্রা দারা স্বস্থ বিধান করত উত্তব মুদ্রা দারা সূত্রে সংযোজন করিয়া পূর্কের ন্যায় তোয় বিন্দু বিন্যাস পুৰ্ববৈ কুন্তমাদি দ্বারা পৃজিত পিতৃযুগল বিসৰ্জ্জন করত যথাবিধি বহ্নি হোম ও পূর্ণাহুতি প্রদান

ইত্যাধ্যেয়ে আদি মহাপুরাণে নির্মাণদীক্ষা প্রকরণে প্রতিষ্ঠাকলা-শ্বোধন নামক অয়ন্তিংশদধিক বিশততম অণ্যায় সমাধ্য।

চতুক্সিংশদধিক দ্বিশততম অধ্যায়।

विष्ठा विस्नाधन विश्वान ।

ইশ্বর বলিলেন, অনস্তর প্রাচীন কলার সহিত পূর্বের ন্যায় বিদ্যার সন্ধান করিয়া বক্ষ্যমান প্রকারে তত্ব বর্ণন করিবে। ওঁহোঁ ক্ষাঁ এই

মন্ত্র স্বারা সন্ধান করত রাগ শুদ্ধবিদ্যা নিয়তি কলা কাল মায়া ও অবিদ্যা এই তত্ত্বপপ্তক রম্বৰ শ্বদ এই ষড়বর্ণ এবং ভূঁনম: শিবায় সর্বপ্রভবে হং শিবায় ঈশানমূর্বায় তৎপুরুষ**বক্ত**ায় ष्य पात्र क्रमग्राग्र বামদেবগুহাায় সদোজাত মুর্ত্তয়ে ওঁ নমো নমো গুহাাতিগুহ্যায় গোপ্তে অনিধনায় সর্কাধিপায় ক্রোভীরপায় পরমেশরায়ভাবেন ওঁ ব্যোম। প্রণ-বাদি এই একবিংশতি পদ বিদ্যাবিষয়ে কীর্ত্তিত হইয়াছে। অনন্তর রুদ্র এবং ভূবনের স্বরূপ বলা হইতেছে। বামদেব সর্বভবোদ্তব বজ্রদেহ প্রভ ধাতা ক্রম বিক্রম স্বপ্রভ বটু প্রশাস্ত নামা পরমা-কর শিব সশিব বক্ত অক্ষয় শস্তু অদৃষ্ট রূপ অদৃষ্ট নাম রূপবদ্ধন মনোশ্মন মহাবীষ্য চিত্তাঙ্গ ও কল্যাণ এই পঞ্চিশন্তি সংখ্যক রুদ্র এবং ভূবন জানিবে। ঘোৰ ও অমর মতা দূর্যা ও হতিজিহব নাড়ী হয় ব্যান ও নাগ বালু একমত্তে রূপ বিষ্ঠ চরণ ও চফু ইন্দ্রিঘদ্য শব্দ ও স্পর্শরূপ এই তিনটী গুণ স্বযুপ্তি আকাষা কদ্রদেব কারণ এবং বিদ্যা মধ্যগত সমস্ত ভবনাদি ভাবনা করিবে। উক্ত বিষয়ে বিদ্যা দারা হৃৎপ্রদেশে ভাড়ন ভেদন প্রবেশ যোজন ও আক-অরোপ পূর্নক গ্রহণ করত কুতে নিবেশ করিয়া কারণরুদ্রে আবাহন ও শিশুবিষয়ক বিজ্ঞাপন করত পিতৃযুগলের আবাহন করিয়া শিশুহাদয়ে তাড়নপূৰ্বক পূৰ্বনন্ত্ৰ দারা তাহার প্রবেশ করাইয়া মুক্ত করত আকর্ষণ পূব্রক গ্ৰহণ করিয়া পুর্নেবাক্ত বিধানক্রমে আছাতে যোজিত করত যাদশদল হুৎপদ্ম মধ্য হইতে গ্রহণ করিয়া বাম নাদিকা ছারা রেচকযোগে যোনিতে যোজনা করিয়া দেহসম্পত্তি জন্মাধ কার ভোগ লয় ইন্দ্রিয়গুদ্ধি ও তত্বশুদ্ধি করিবে।

অশেষ মল্কর্মাদি ও পাশবন্ধ নিবৃত্তির পরে নিমিত্ত নিষ্কৃতি বিধানান সারে শতসংখ্যক আহতি প্রদান করিবে। অনন্তর অস্ত্র মন্ত্র দারা পাশ শৈথিল্য মলশক্তি তিরোহিত এবং উহাদের ছেদন মৰ্দন বৰ্ত্ত্ৰীকরণ দাহ তদকরা ভাব প্রায়-শ্চিত্ত রুদ্রোবাহন ও পূজা করিয়াওঁ ভ্রী ক্লপগদ্ধৌ শুল্কং রুদ্রগৃহাণ স্থাহা। এই মন্ত্র উচ্চারণ করত রূপ ও গদ্ধ সমর্পণপূর্বক শিবাজ্ঞা প্রেবণ করাইখা কারণ রুদ্র বিসর্জন করত আত্মাতে চৈতত বিধান করিয়া পাশসূত্রে নবেশ ও মস্তকে বিন্দু বিভাস করিয়া পিতৃযুগল বিদর্জন করিবে। পরে সমস্ত বিধি পূরণার্থ ঘথাবিধি পূর্ণাত্তি প্রদান করিয়া शृटर्काक विधानकाम विमा विषय विटाधकाल স্ববীজের তাড়নাদি করিবে।

ইত্যালেরে আদি মহাপুৰাণে নির্দ্ধাণদীক্ষা প্রকরণে বিদ্যাশোধন নামক চকুল্লিংশদধিক বিশতভম অধ্যায় সমাপাঃ

পঞ্জিংশদ্ধিক দ্বিশতত্ম অধ্যায়।

শাস্তিশোধন কথন।

ঈশ্বর বলিলেন, অধ্যা শান্তির সহিত যথাবিধি বিদ্যাসন্ধান 'যেরূপে করিবে ভাছা বলিতেছি। শান্তিতে লীন তত্ত্বর ভাবেশ্বর ও সদাশিবদেব হকার এবং ক্ষকাররূপ বঁপরির ও
ভূবনৈক নামকরুদ্রগণ বক্ষ্যমাণরূপে জানিরে।
প্রভব সময় ক্ষুদ্রবিমল শিব নিরঞ্জনাকার স্থাশিষ
দীপ্রিকারণ ধননামক রুদ্রের তিদশেশ্বর নামা
তিদশ কালসংজ্ঞক সৃক্ষ্য অমুজেশ্বর এতলামক
ভূবন ও রুদ্রগণ শান্তিতে প্রতিষ্ঠিত। ব্যোমব্যাপিনে ব্যোমব্যাপ্যরূপায় সর্বব্যাপিনে শিবার
অনন্তার অনাথায় অনাপ্রিতার প্রবার শাশ্বতার

যোগপীঠ সংস্থিতায় নিত্যযোগিনে ধ্যানাহারায় এই বাদশপদ পুরুষ ও কবচরূপ মন্ত্রবয় বিন্দু ও উপকারকাথ্য বীজন্ম অলম্য ও আয়স নাড়ীদ্বয় কুকর ওকুর্ম বায়ুদ্বয় স্থক্ ও কর ইন্দ্রিয়ন্থর স্পর্শ বিষয় শব্দ ও স্পর্শ গুণদ্বয় তুরীয়াবস্থ এক ঈশ্বর কারণ এই সমস্ত শাস্তিতে ভাবনা করিয়া উহার বদনসূত্রে ভাড়ন ভেদ প্রবেশ বিয়োগ আকর্ষণ পূর্বক গ্রহণ করত আত্মাতে আরোপ ও তাহা হইতে গ্রহণ করিয়া কুণ্ডে কলা নিবেশ পূর্ব্বক হে জগদীখর! তোমার এই অধিকারে মুমুকু শিষ্যকে দীক্ষিত করিব এ বিষয়ে আপনি অনু-কুল হউন এইরূপ বিজ্ঞাপন করিবে। পরে পিতৃ-যুগলের আবাহনাদি করিয়া শিঘ্যর নাদি বিধান করত আত্মাতে যথাবিধি চৈত্য যোজিত করিয়া পূর্বের ক্যায় পিড়সংযোগ চিন্তা করিয়া হৃত্মন্ত্র সম্পুটিত আত্মমন্ত্র উচ্চারণ করত উদ্ভব মূদ্রা দারা দেবীগর্ভে নিয়োজিত করিবে। অনন্তর দেহোৎপত্তি এবং পঞ্চাংখ্যক হৃত্যান্ত উচ্চারণ করত শিরঃ বা শিথা হইতে ভোগাধিকা রার্থ কবচ মন্ত্র (ছুঁ) বা মোকার্থ শস্ত্রমন্ত্র (ফট্) উচ্চাবণ করত জন্ম চিক্তা করিয়াশিব মস্ত্র ছারা ইক্সিয়ন্ডদ্ধি হৃত্মন্ত্র দ্বারা তত্বশুদ্ধি করিবে। এই-রূপে পুর্বের ভায় গভাধানাদি কার্য্য সম্পাদন করিয়া কবঁচ বস্তু ছারা পাশ শৈথিলা ও নিক্ষতির নিমিত ঐ মন্ত্র শতদংখ্যক জপ করত মলশক্তি তিরোধানার্থ শস্ত্রমন্ত্র দারা আত্তি পঞ্চ প্রদান করিবাপাশবিয়োগেও ঐরপ করিবে। সংসেপ্থকে অস্ত্র মন্ত্রাভিমন্ত্রিত কর্ত্তরী দ্বারা বীজ বিশিক অন্তমন্ত্ৰ অৰ্থাৎ ওঁ হৌ শান্তি কলাপাশায় হঃ হু ফট এই মন্ত্র উচ্চারণ করত পাশসকল চ্চেদ্ন করিবে। পরে বিদর্জন করিয়া পুর্বের।

ভার অনুমন্ত্র দারা পাশ বর্ত্তাকরণ করত মৃতপূর্ণ শ্রেষবদায় দারা কলাস্ত্র মন্ত্রউচ্চারণপূর্বক হোম করিয়া পাশাকুশ নির্তির নিমিত অস্ত্র মন্ত্র দারা পঞ্চাত্তি প্রদান করত ওঁছ: অস্তায় হুঁ ফট এই মন্ত্রনারা প্রায়শ্চিতার্থ অফ্টাছতি প্রদানপূর্বাক হুমান্ত্র হারা ঈশবের আবাহন করিয়া পূজন ও তর্পণ সম্পাদন করত ওঁহাঁ ঈশ্বর বৃদ্ধাহংকারে। 😎 🚓 গুহাণ স্বাহা এই মন্ত্র দার। যথাবিধি ঈশ্বরে শুল্ক সমর্পণ করিয়া হে জগদীশ্বর ! নিঃশেষরূপে দগ্মপাপ এই পশুর বন্ধকত্বকপে আপনি থাকি-বেন না এই শিবাজ্ঞা প্রবণ করাইয়া ঈশ্বর বিদ-ৰ্জন করিবে। অনস্তর শশিকলা সদৃশ রুদ্রাত্মা আত্মতে নিয়োজিত করিয়া শুদ্ধ উদ্ভব মুদ্রা দারা উহাঁকে সূত্রে দংযোজিত করত মূলমন্ত্র ঘারা শিষ্য শিরে অমৃত বিন্দু বিকেপ পূর্বক কুন্তমাদি দ্বারা পুজিত পিতৃযুগল বিসৰ্জ্বন করিয়া বিধানজ্ঞ গুরু অশেষবিধি পূরণার্থ বহ্নিতে পূর্ণাহুদি প্রদান করিবে এই বিষয়েও পূর্কের স্যায় তাড়নাদি বিধান করিয়া বিশেষরূপে নিজবীজ অপীড়িতা হইলে শাস্তি শুদ্ধি হয়।

ই ত্যাব্যেয়ে আদি মহাপুশবে নির্বাণদীক্ষা প্রকরণে শান্তি-শোধন নামক পঞ্জিংশদধিক বিশততম অধ্যায় সমাধ্য।

যট্ ত্রিংশদধিক দ্বিশতভ্য অধ্যায়।

নিৰ্কাণদীক্ষা কথন।

ঈশর বলিলেন, বিশুদ্ধা শান্তির সহিত পূর্বের আঘ শাস্ত্যতীতার সদ্ধান ও বক্ষামাণরূপে তাহাতে তত্ব বর্ণাদি চিন্তা করিবে। ও হোঁ কোঁ হোঁ হাঁ এই সন্ধান মন্ত্র শক্তি ও শিব উভয়তত্ব সিদ্ধিক দীপক রোচিক মোচক উদ্ধিগামি ব্যোসরূপ অনাথ অগ্নিপুরাণ।

এবং অনাশ্রিত এই অফসংখ্যক ভূবন ওঙ্কার পদ ঈশানমন্ত্র অকারাদি বিদর্গান্ত যোড়শ বর্ণ বীজের সহিত দেহকারক্ষয় কুছু ও শব্দিনী নাড়ীষয় দেব-দত্ত ও ধনপ্তর মারুভদ্বর স্পর্শএবং শ্রোত্ত ইন্দ্রিয়-ষয় আকোশ বিষয় শব্দগুণ ভূরীয়াভীতা পঞ্মী অবস্থা সদাশিব দেব কারণ এইরূপে তত্মাদিসঞ্য চিন্তা করক শাস্ত্যতীতাথ্য তাড়নাদি বিধান করিয়া কলাপাশ তাড়ন ও ফড়স্ত মন্ত্রে ভেদ করিয়া নমোত্তমত্র ছারা প্রবেশপূর্বক ফড়ন্ত মন্ত্র ছারা বিয়োজিত করিবে। পরে শিথাও হুনান্ত্র দম্পু-টিত স্বাহান্ত মন্ত্র উচ্চারণ করত স্থলি মুদ্রা হারা পুরকসহকারে পাশ- আকর্যণ করিয়া মস্তকসূত্র হইতে কুম্বকাষাণে উহা গ্রহণ করত উদ্ভব মুদ্রা দারা কেচকসহকারে হামন্ত্র সম্পৃতিত নমোন্ত মন্ত্র উচ্চারণ করত বহ্নিকুণ্ডে নিবেশ করাইবে। অনস্তর ইছার পূজাদি সমস্ত নিবৃত্তির আয়ে সম্পাদন করিয়া স্দাশিবের আবাহনপূর্বক অর্চন ও তর্পণ সম্পাদন করিয়া হে সদাশিব! আপনার এই অধিকারে মুমুক্ষু শিষ্যকে দীক্ষিত করিব এ বিষয়ে আপনি অমুকূল হউন। ভক্তিপূর্বক এইরূপ বিজ্ঞাপন করিবে। পরে পিতৃষুগলের আবাহন অর্চন তর্পণ ও সন্নিধাপন করিয়া হুনান্ত্র সম্প্রিত আ আমিত্র ছারা শিষ্যবক্ষে ভাড়নপূর্বক ওঁইা হুঁ হঁ ফট্ এই মন্ত্র দ্বারা প্রবেশ করত ভ্রোতালুশ মুদ্রা দ্বারা শক্ষ্রমন্ত্র উচ্চারণ করত পাশ সংযুক্ত চৈতকাবিভাগ করিয়া ওঁ হাঁহ: হুঁফট্ সাহায়ঃ এই মন্ত্র দ্বারা উহা আকর্ষণ করত উহ্ দ্বারা স্প্ টিত উক্তমন্ত্রে গ্রহণ করিয়া নমোন্ত উক্ত মন্ত্র উচ্চারণ করত নিজাত্মাতে নিয়েজিত করিবে। ওঁহাঁহঁ হাঁ আত্মনে নমঃ এই মন্ত্ৰ উচ্চারণ করত পূর্বের ভায় পিতৃসংযোগ চিন্তা করিয়া উদ্ভব মুদ্রা

ভারা বাম নাসিকায় বেচকসহকারে দেবীগর্ভে নিয়োজিত করিবে। পরে গর্ভাধানাদি সমস্ত कार्धा शृद्यां छ विधानकार मण्यामन कतिया गृत-মন্ত্র দ্বারা পাশ শৈথিক্য করত নিক্ষতির নিমিত উক্ত মন্ত্র শতসংখ্যক জপ করিবে। মদ শক্তি তিরোধানার্থ এবং পাশ সকল বিয়োগের নিমিপ্ত পূর্বের হার অস্ত্র মন্ত্র উচ্চারণ করত পাঁচ পাঁচটি আহতি প্ৰদান পূৰ্বক কলাবীক বিশিক্ত অনুমন্ত্ৰ অর্ণাৎ ওঁ হা শান্তাতীত কলাপোশায় হঃ হুঁ ফট্ এই মন্ত্র উচ্চারণ করত সপ্তসংখ্যক অস্ত্রমন্ত্রাভি-ম্রিত কর্ত্তরী ছারা পাশ **সকল ছেনন করিয়া** পূর্বের ক্রায় পাশ নকল বিদর্জ্জন ও অস্ত্রমন্ত্র ছারা বর্তুলীকরণ করত মৃতপূর্ণ প্রেম্বরয় দারা কলাক্স মস্ত্র উচ্চারণ করত হোম 😝 পাশাকুশ নিবৃত্তির নিমিত অস্ত্র মন্ত্র হারা পঞ্চসংখ্যক আত্তি প্রদান পূৰ্বক প্ৰায়শ্চিতাৰ্থ অউদংখ্যক আহুতি প্ৰদান क्रिया । পরে জ্মান্ত দ্বারা স্লাশিবের আবাহন ও পূর্ব্বোক্ত বিধানক্রমে পুজন ও তর্পণ করিয়া **७ हाः मनाभित्वा मत्नाविन्तूः ७० छः गृहान चाहा** এই মন্ত্র ভারা অধিকার সমর্পণপূর্বক হে সদাশিৰ ! অশেষ রূপে দগ্ধ পাপ এই পশুর সম্বন্ধে আপনি वक्षक इत्राप्त थाकि त्वम मा अहे निवास्त्र। धावन করাইবে। অনন্তর মূল মন্ত্র হারা পূর্ণান্ত্তি প্রদান क्षिया नर्गान्द्य विमर्कन क्षित्। भूत । श्रुक সংহার মুদ্রা স্বারা উদিত শরচ্চক্র সদৃশ বিশুদ্ধ আত্মা রোদ্রীর সহিত নিজাত্মাতে নিয়োলিত করিয়া উদ্ভব মুদ্রা ছারা উহাউদ্ধার করত শিষ্য-দেহত্ত করিয়া আপ্যায়নার্থ শিধ্যমন্তকে অর্থান্ত-বিন্দু প্রক্ষেপপূর্বক ভক্তিশহকারে হে পিতৃযুগল! শিষ্যদীক্ষাৰ্থ আমি আপনাকে যে কন্ট দিয়াছি. অন্তৰম্পা প্রকাশ করত তৎসমস্ত ক্ষমা করিয়া

এইরপ কৰা আর্থনা স্কানে প্রস্থান করান। করত পিতৃযুগল বিদর্জন করিবে। ন্তর শিখামন্ত্রে (বষট্) অভিমন্ত্রিত কর্ত্তরী দারা জ্ঞানশক্তিস্বরূপিনী শিষ্য শিখা শিবান্ত্রমন্ত্রে (হৌং-ফট) চতুরস্থল প্রমাণ ছেল করিয়া ওঁ ক্লীং শিখায় ছুং ফট ওং হঃ অস্ত্রায় ছুং ফট এই মন্ত্র দ্বারা ঘুত-ক্ষরিতা শিখা গোময় পিওমধ্যগতা করিয়া ছুঁফ-ড়ন্ত অন্ত্র মন্ত্র হারা হোম করিবে। ওঁ হোং হঃ অস্ত্রায় হুং ফট এই মন্ত্র দ্বারা ভ্রুক ভ্রুব প্রকা-লন করিয়া শিয়াকে স্থান করাইয়া স্বয়ং আচমন করত শিষ্যহাদয়স্ম স্থাদশদল কমলন্থ আত্মাকে শস্ত্র মস্ত্র দারা তাড়ন,বিয়োগ,আকর্ষণ ও পুর্ফোর ন্যায় গ্রহণ করিয়া স্বকীয় হৃদয়াস্ট্রোজ কর্ণিকায় নিবে-শিত করিবে। পরে অন্তঃপর ভাবযুক্ত গুরু অধো-মুখ বিহিত ক্রকদারা আজ্যপুরিত ক্রব নিত্যোক্ত বিধানামুদারে এহণ করিয়া প্রদারিত শিরোগ্রীব হুইয়া শিবের প্রতি সমদৃষ্টিপাত করত শখ মুদ্রা স্বারা নালোচ্চারাকুদারে কুন্তমণ্ডল বহু শিষ্য এবং নিজাত্ম হইতে ষড়বিধ পথবিশিষ্ট প্রাণনাড়ি গ্রহণ পূর্বক ভাগাত্রে চিন্তা ও বিন্দু দদৃশ ক্রমণ বক্ষ্য-মাণ প্রকারে সপ্তধা ধ্যান করিবে। প্রথমপ্রাণ-সংযোগ স্বরূপ অপর হৃদয়াদি উচ্চারণক্রমে বিস্তৃত রূপ মন্ত্র তৃতীয় পুরক ও কুম্ভক করিয়া কিঞ্ছিৎ মুখ ব্যাদান করত স্বয়ুমাশুগত নাদসরূপ চিন্তা পরে স্থম কারণে ত্যাগনিমিত্তক প্রশান্ত ও বিস্থর লয়, নালের সহিত শক্তির উদ্ধানিকার হয় ঐ শক্তির নাম বিশ্বর, নিথিল প্রাণের শক্তি প্রমেয় ৰক্ষিত তৎকালে বিশ্বর ষষ্ঠ শক্তাতীত সপ্তম এই সমস্ত যোজনাম্থান তত্ত্বসংজ্ঞক বিস্থর পুরক ও কুম্বক করিয়া কিঞ্চিৎ বদন ব্যাদান করত শনৈ: মূলমন্ত্র উচ্চারণ পূর্ব্যক শিষ্যাত্মা

লয় করিয়া ষড়ধ্ব প্রাণরূপি তড়িদাকার হকারে নাভির উপরিভাগে বিতন্তি মাত্রপ্রদেশে ব্যাপ্ত উকার পরে হৃদয় হইতে চতুরসুল বিস্তৃত মকার ভদুর্দ্ধে কণ্ঠদেশে অফীঙ্গুল বিস্তৃত বিষ্ণুবাচক ওঁকার পরে তালুন্থ চতুরস্থল বিস্তৃত রুদ্রবাচক মকার ঐরপ ললাট মধ্যন্থ ঈশ্বর বাচক বিন্দু অন-ন্তর ব্রহারন্ধাবদানক স্বাশিব বাচক নাদ পরে ব্ৰহ্মরন্ধ হ শক্তি এই সমস্ত পূর্ব্ব পূর্ব্ব ত্যাগে যণামু-ক্রমে চিন্তা করিয়া তথায় দিব্য পিপীলিকা স্পর্শ অমুভব করত পরমাদন লক্ষণ ভাবশুরা মনোভীত নিত্যগুণোৰ্য ছাদ্শ্দল্কমল মধ্যস্থ <u>শিবে মন বিলীন করিষা তথায় শিয্যালা চিন্তা</u> করিবে। অনস্তর যোজনিকা হিরহ দনার্থ বৌষড়ন্ত শিবমন্ত্র (হেঁা) দারা জ্বালা মধ্য-গত পরশিবেয় তধারা মোচন করত পূর্ণান্থতি প্রদান করিয়া বক্ষ্যমার্ণ প্রকারে গুণা-পাদন করিবে। ও ইা আলানে সর্কভোভব স্থাহা, ও হাঁ আত্মনে পরিতৃপ্রোভব স্বাহা ওঁ हुँ আত্মনে অনাদিবোধোভব স্বাহা, ওঁ হোঁ আত্মনে স্বতন্ত্ৰোভৰ স্বাহা, ৬ হোঁ আত্মন্ অলুপ্ত শাক্তৰ্ব ষাহা ওঁ হ: আত্মনে অনন্ত শক্তিৰ্ভব শ্বাহা, চিন্তা-যুক্ত গুরু পরমাক্ষর হইতে এইরূপে ষড়গুণ আত্মা গ্রহণ করিয়া যথাবিধি শিষ্য শরীরে নিয়োজিত করিবেন। পরে তীব্র মন্ত্র শক্তি সম্পাত জনিত অমশান্তির নিমিত্ত শিষ্যশীর্ষে অর্থপাত হইতে অমৃত বিন্দু বৰ্ষণ করিয়া শিষ্যকে ঈশ কুস্তাদিতে প্রণাম করাইয়া বিবের দক্ষিণ মন্তলে নিজ দক্ষিণে শিষ্যকে উভরাস্থে ব্যবস্থিত করিয়া হৈ দেবেশ। তোমার অনুগৃহীত এই শিষ্য মদীয়া মূর্ত্তি আভায় করিয়াছে অতএব দেব বহ্নি ও গুরুর প্রতি ইহার ভক্তি বৰ্দ্ধন করুন এইরূপ বিজ্ঞাপন করিয়া গুরু

শ্বরং প্রণাম করিবেন পরে শিষ্য গুরুকে ভক্তিপূর্বক প্রণাম করিলে তোমার মঙ্গল হউক এই
বলিষা আদর সহকারে শিষ্যে আশীর্বিচন
প্রয়োগ করিবেন। অনন্তর পরম ভক্তিযোগে
দেবোদ্দেশে দক্ষিণা প্রদান করিয়া শিবকৃস্তজ্গলে
স্থান করাইয়া যুক্ত সমাপন করিবে।

হত্যাপ্রের আদিমহাপুরে অভিষেক্ষেক্ষন নামক ইট্নিংশদ্ধিক গ্লিত্তম অধ্যাহ সমাপ্ত।

সপ্তত্রিশদধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়। একভয়দাক্ষাক্থন।

ঈশর কহিলেন, অনন্তর সংক্ষেপ হেডুক একতাত্তিকী দীক্ষার উপদেশ করিতেছি; গুরু নিজাস্থার সহিত যথাযোগ্য সূত্রবন্ধাদি করিয়া কালা
মিতে শিবান্ত পর্যান্ত সমস্ত তত্ত্ব আবাহন করত
পূর্বের ন্যায় গর্ভাধানাদি কার্য্য সম্পাদন করিয়া
মূল মন্ত্র হারা সমস্ত শুক্ষ সমর্পণ করত তত্ত্বসমূহ
মণ্যবন্ধহ্নিতে পূর্ণান্থতি প্রদান করিবে, এক পূর্ণা
যোজনা হারা শিষ্য নির্বাণপদ লাভ করিবে
এবং স্থিরসাপাদনার্থ শিবে অপরা পূর্ণা প্রদান
করত শিবকুন্তাভিষেচণ করিবে।

ইত্যায়েয়ে আদি মহাপ্ৰাণে একতত্বদীকা কথন নামক সপ্তত্তিংশদ্ধিকস্বিশতভ্ৰম অধ্যায় সমাপ্ত।

অ্কতিংশদ্ধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়। অভিষেকাদি কথন।

স্বীশ্বর বলিলেন,গুরু শিবার্চনা করিয়া শিষ্যাদি অভিষেক করিবেন। ঈশাদি দিকে নবসদংখ্যক কুন্ত ক্রমশঃ বিন্যাস করিয়া ঐ সকল কুন্তে লবণসমূদ্র ক্ষারোদ দধিনমূত্র মৃত্যাগর ইকুনমুদ্র ম্বরী সাগর স্বাতু সমুদ্র মধুদ এই অফ সমুদ্র থপা-সংখ্যাত্মসারে নিবেশিত করিয়া শিখণ্ডীরুদ্র 🕮 কণ্ঠ ত্রিমূর্ত এক রুদ্রাখ্য একনেত্র শিবোভ্য সুক্ষা क्रम व्यास्त क्रम अहे व्यक्त विरम्भाव क्रम ७ मरश्र শিব সমৃদ্র ও শিবমন্ত্র বিস্থান করিবে। পরে পূর্ব-রচিত সান মগুপে দিকৃপালগণের যাগালয় এবং করম্বর পরিমিত অফাঙ্গুলোচিছত বেদী এস্তত করিয়া তথায় পদ্মাদন নির্ম্মাণ করত ততুপরি অন-স্তাসন বিশ্বাসপূৰ্বক শিষ্যকে পূৰ্ববাস্যভাবে নিবিউ করিয়া স্কলীকরণ করত পূজা করা হইলে কাঞ্জিক ওদন মৃত্তিকা ভশ্ম দুৰ্ব্বা গোময়পিও দিল্লার্থ দধি এবং তোয় দারা নির্মঞ্জন করিবে। অনস্তর হৃত্যন্ত্র উচ্চা-রণ করত লবণদাগরাতুক্রমে বিদ্যেশকলদাদলিলে অধারণাবিশিকী অর্থাৎ মায়ামন্তে দভাভিনিবেশ শিষ্যকে স্থান ও শুভ্ৰ বস্ত্ৰ পরিধান করাইয়া শিব-দক্ষিণে পূর্ব্বোক্তাদনে সন্নিবেশিত শিষ্যকে পূর্ব্বের ন্যায় পুনর্কার অর্চনা করিয়া উফীষ যোগপট্ট মুকুট কর্ত্তরী কমগুলু অক্ষমালা পুস্তকাদি ও শিবি-কাদি প্রদানপূর্বাক অদ্যপ্রভৃতি ভূমি দীকা মন্ত্রা-ব্যাখ্যা ও প্রতিষ্ঠাদি বিজ্ঞাত হইয়া হলররপে পরীকা করিয়া অনুষ্ঠান করিবে। এইরূপ শিবাক্তা শ্রবণ चित्राम्य ७ शतरमध्य थानाम कत्राहेश्च (र भित्र ! ভোমা কর্তৃক অভিষেকার্থ আমি হইয়া সংহিতাপারগ এই শিষ্যকে অভিষিক্ত ক্ষি-লাম। গুরু বিশ্বজ্বালাপনোদনার্থ এইরূপ বিজ্ঞাপন করিয়া মন্ত্রচক্রের ভৃত্তির নিমিত্ত পাঁচ পাঁচটী আছতি প্রদান করত পূর্ণাক্তি প্রদান, করিবেন। অনন্তর শিশ্যকে নিজ দক্ষিণে স্থাপন করত শিষ্য निक्रण পार्षिक अनुष्ठीमि अनुनि ज्ञात्य मध मधीय তোয় দারা চিহ্নিত করিয়া শিষ্য করে কুত্ম

প্রদান করত কুন্তে অনলে শিবে ও আপনাতে প্রণাম করাইয়া আং প্রাং প্রেং পশুং হুং ফট এই মন্ত্র উচ্চারণ করত তৎতৎকার্য্যে আবেশ করিবে। অনন্তর হে জগদীখর! শান্তে অপরীক্ষিত শিষ্য-সকল আপনার অন্ত্রহের পাত্র; অতএব অভি-বেক হেতুক শাস্ত্রজ্ঞমানবগণের অভীক্তিদিদ্ধি হউক, এইরূপ প্রার্থনা করিবেন।

ইত্যাগ্নের আদিমহাপুরাণে অভিষেকাদিকথন নামক অইতিংশদ্ধিক্দিশততম অধ্যায় সমাপ্ত।

উনচত্বারিৎশদ্ধিকদ্বিশততম অধ্যায় ।

ৰিবিধ মন্ত্ৰাদিকথন।

সিশার বলিলেন, যে মানবগণ অভিষিক্ত হইরা শিব বিষ্ণু ও ভাস্করাদির পূজা করিয়া শব্দ ভেরী প্রভৃতি ধানি করত পঞ্চাব্য স্থানা করান, ভাহারা নিক্ষকুল উদ্ধার করত দেবলোকে বাস করেন। যে ব্যক্তি দেবমূর্ত্তি স্থতাভাঙ্গ করান, ভাহার কোটিসহত্রবর্ষসমূহপদ্ম পাপ পাবকে ভন্মী-ভূত হয়। যে ব্যক্তি স্থতাদিপ্রিত আচক অর্থাৎ চতুঃপ্রস্থ পরিমিত পাত্র ছারা দেবগণের স্নান করান, তিনি হারদেহ প্রাপ্ত হন। যে পুরুষ দেব-মূর্ত্তি চন্দনাদি লিপ্ত করিয়া গন্ধাদি ছারা পূজা করত স্তবাদি ছারা সন্তুফী করেন, দেবগণ ভাহার সম্বন্ধে অভীতানাগত জ্ঞানপ্রদ মন্ত্র ধীশক্তি ভোগ ভূমোক প্রদান করেন।

প্রশ্ন সূক্ষাবর্ণ গ্রহণ করিয়া ছিদংখ্যা দারা হরণ করিলে শুভাগুড জ্ঞান হয়। ত্রিসংখ্যা দারা জীব মূলধাঙু, চারি দারা আক্ষাণাদি জ্ঞান, পঞ্চাদিতে ভূততথাদিবিষয়ক জ্ঞান এরূপে পরিশেষে জপাদি বোধ জম্মে। দিপম কান্ত এক ত্রিক অভিত্রিকান্ত পদে অশুভ, মধ্যে ইন্দ্র মধ্যম, তিনে নৃপ শুভ ফল জানিবে। সন্থাারুশে জীবিতাক জানিবেও ঘমনিক্র দশবর্ষাপহারী। সূর্য্য গণেশ শিব হুর্গা লক্ষ্মী ও বিষ্ণুমন্ত্রাভিমন্ত্রিত লেখনী দ্বারা গোমূত্রাকৃতি রেখায়, এক হইতে আরম্ভ করিয়া ত্রিচতুক্ষাবসানক মরুদ্ব্যোম মরুদ্ধীজ দ্বারা চতুষ্ঠি পদ লিখিয়া ভাহাতে অক্ষপতন ও স্পর্শন হেতুক বিষমাদিতে শুভাদি ফল জানিবে এবং এক-ত্রিকাদি আরম্ভ করিয়া অইত্রিকান্ত ধ্বজাদির সমহীন অর্থাৎ অশুভ কলদায়ক এবং বিষম শোভনাদি ফলদায়ক।

অকারাদি স্বর্বর্ণযুক্ত ককারাদি বর্ণের সহিত বিপুরানামাত্মক মন্ত্র ত্রিপুরাদেবীর জানিবে ব্রী বীঞ্চ ও যে মন্ত্র পূঞা বিষয়ে প্রণবাদিনমোন্ত বিহিত হইয়াছে,ভাহার যক্ত্যিকিকবিংশতিশতসহত্র জপরূপ পুরশ্চরণ জানিবে। চণ্ডিকা সরস্বতী গোরী এবং ফুগার আং ব্রীং এই মন্ত্র। লক্ষ্মী দেবীর আং প্রী এই মন্ত্র। সূর্য্যদেবের মন্ত্র ক্ষমী ক্রেমী। হির মন্ত্র আঁ এইং স্বরসহিত ককারাদি একপঞ্চাশত বর্ণ এবং স্বরসহিত ককারাদি একপঞ্চাশত বর্ণ এবং স্বর ককারাদি ও ককারান্ত বর্ণে অভিল মন্ত্র নির্দিন্ত আছে। সূর্য্যা শিব ভগবতী বিষ্ণু প্রভৃতি দেবগণের আকাশ সমুদ্র দেব ইন্দ্রাদি বিদ্যমান থাকার প্রত্যেকের ষ্ট্যাধিক শতত্রয় মণ্ডল হইবে। গুরু অভিবিক্ত হইরা জ্বপ ধ্যান ও শিব্যাদি দীক্ষিত করিবেন।

ইত্যাহের আদিমহাপুরাণে নানামপ্রাদিকপদনামক উনচম্বারিংশহধিকধিশস্তক্ষ অধ্যায় সমঃপ্ত।

চত্বারিংশদধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

প্ৰতিষ্ঠাবিধি কথন ৷

ঈশ্বর বলিলেন, হে কার্দ্তিকেয়! সম্প্রতি ক্রমশঃ সংক্রেপে প্রতিষ্ঠাকার্য্য বলিব। পীঠ শক্তি শিব লিক্ন ও শিবমন্ত্রের সহিত ভাহার সং-যোগ প্রতিষ্ঠাকার্য্যের এই পঞ্চপ্রকার ভেদ ঐ সকলের স্বরূপ ভোমাকে বলিভেছি, বিশেষ যে স্থলে ব্ৰহ্মশিলা যোগ হয়, দেই প্ৰতিষ্ঠা। প্ৰতিষ্ঠা ভিন্ন পীঠের ঘথাযোগ্য স্থাপন ও পীঠে দলি-বেশনের নাম ভিতে ভাপন লিজোদ্ধারপুরঃসরা প্রতিষ্ঠাকে উত্থাপন বলে, যে প্রতিষ্ঠাতে সিঙ্গ খারোপপূর্বক সংস্কার করা হয়, তাহাকে আস্থা-পন বলে। বিফুপ্রভৃতি দেবগণের উহা ছুই প্রকার হয়। এই সমস্ত প্রতিষ্ঠাতে পর শিব রূপ নিয়েজি**ভ** করিবেক। ठिक्रमा ভেদে প্রাসাদের পঞ্চপ্রকার ভেদ হয়; মত-এব প্রাদাদকরণেচছুক ব্যক্তি প্রথমে ভূভাগ পরীকা করিবে। শুক্লবর্ণা আজ্যগন্ধা ভূমি, রক্ত-গন্ধা রক্তবর্ণা ভূমি, গুগন্ধা পীতবর্ণা পৃথিবী এবং হুরাগন্ধা কৃষ্ণবর্ণা মহী এই চারিপ্রকার ভূমি ব্রাক্ষণাদি বর্ণচতৃষ্টায়ে ঘথাক্রমে বিহিত। পূর্ব্ব-ভাগ ও উত্তরভাগত প্রামাদ মর্কতা প্রশস্ত। অকৃত্রিম জলাশয়তীরে অধিকতর মূহিকাপূর্ণ ডু-ভাগ বা শামানা জনপ্রোক্ষিত প্রদেশ প্রশস্ত জানিবে। গুরু অন্থি অঙ্গারাদি দুউ। ভূমি সমাক-রূপে শোধিত করিবেন। নগর গ্রাম তুর্গ গৃহ ও প্রাদাদাদি.করণার্থ খনন গোপাণের আবাদ এবং মৃত্যুট্ কর্ষণ ছারা ভূমি শোধন করিয়া মগুপে দার পূজাদি মন্ত্র তৃত্তিপহান্ত কার্য্য সম্পাদনপূর্বক অঘোরান্ত মন্ত্র যথাবিধি সহস্রসংখ্যক হল করিয়া

ভূমি স্মীকরণ ও উপলেপন করন্ত বেক্যমান প্রকারে চতুর্দ্দিক সংশোধন করিবে। স্বর্ণ দধ্যক্ষত দারা প্রদক্ষিণ ক্রেমে রেখা সম্পাত করিয়া মধ্য-ভাগে ঈশান কোষ্ঠস্থ পূর্ণকুন্তে শিবার্চন ও বাস্ত পূজা সম্পাদনপুর্বাক ভভোয় ছারা কুদ্দালকাদির ((कांनान) चिंकिक्षन कतिया विशः श्राप्ता बक्क গণের অর্জনাপুর্বক দিকপালদিগের উদ্দেশে যথা-বিধি বলি প্রদান করিবে। পরে স্থামি সেচন ও মা-ৰ্জন করিয়া কুদালাদির পূজা করিবে। অনন্তর বস্ত্রমুগাচ্ছন্ন অপর এক কুম্ভ ত্রাক্ষণক্ষন্ধে আরোপ করিয়া ব্রহ্মখোষণা করত গীতবাদ্যাদিসহকারে কৃত্তে পূজাগ্ৰহণপূৰ্বক শুভ লগ্নে মধ্বক্ত অভি-ঘিক্ত কুদালক দারা অগ্নিকোন্ঠকে থানিত করিয়া নৈখত কোণে মৃৎস্থা অর্থাৎ হুগন্ধি মৃদ্ধিকা ক্ষেপণ করত খাতমাধ্য কুম্বজন প্রক্ষেপ পূর্বক নগরের পুর্বিদীমাপর্যান্ত অভিলাষাত্রসারে লইয়া যাইবে। তথায় ক্ষণকাল অবস্থিতি করিয়া নগরের मर्दाख क्रेमान (कान भर्गास मोशास्त्रिक मिक्रन করত ভ্রমণ করাইবে। ডৎপ্রদেশে কুক্ত পরিভ্রমণ-হেতৃক ইহাকে অর্থ্যদান বলে। এইরূপে ভূত্রি-পরিগ্রহ করিয়। শল্যদোষ নিবারণার্থ কুমারী খারা কর্করান্ত বা জলান্ত ভূমি খনন করাইয়া যথাবিধি শল্যোদ্ধার করাইবে। মানবশল্য হইলে আ ক **ह है छ श य म ह এই नवहिं अभाकत रय ; ध्यामि** সম্পতি বণত শল্য স্থান প্রকাশ হয়। কর্ত্তার অঙ্গবিকার পশ্বাদির প্রবেশ কীর্ত্তন ও দিকবিনিকে विकष्ठे तब द्वादा मना निर्मत कतिरव । व्यथका पृ-ফলকে অইবর্গাচা মাতৃকাচক্র লিখন করিয়া প্রাদি ঈশান কোনপর্যাপ্ত জ্বালাং বর্গব শভ শল্য নির্ণয় করিবে। পুর্বেদিকে অবর্গে লোহশল্য অগ্নিকোণে কবর্গে অঙ্গার দকিণনিকে

ছইলে ভন্ম নৈখতে টবর্গে অব্দ্রি পশ্চিমদিকে ভ वर्श देखेका वाशुरकारन भवर्श कलाल, छेखरत य वर्षा भव कार्छ। मि, जेमानरकारन भवर्ष त्नीहमला হবর্গে রক্ত ঐরূপ অবর্গে অনর্থকর শল্য নির্ণয় **७ ऋषा हो ऋ**त मृत्य हा कविद्य । করাপুরকল প্রোক্ষণ করিয়া পাদোন থাত পুরণ করত দজল মুদ্গৰা ঘাত ছারা ভূমিসময়ৰা ও লিপ্তা করাইয়া দামাম্মার্য হন্তে বক্ষ্যমাণপ্রকারে মগুপে প্রবেশ করিবেন। প্রতি তোরণ দ্বার অর্চনা প্ৰাক পূৰ্ববার দিয়া প্ৰবেশ করত আত্মগুদ্যাদি সম্পাদন করিয়া কুণ্ড ও মণ্ডপ সংস্কারপূর্বক লোকপাল ও শিবপূজার্থ কলদ ও ঘট স্থাপন করত বহুস্থাপনাদি সমস্ত কার্য্য পূর্বের স্থায় সম্পাদন করিবে। অনন্তর গুরু যজমানের সহিত শিলানির্ণিত স্নান্য ওপে প্রবেশ করিবেন। প্রাদাদ ও লিঙ্গের পাদধর্মাদি নামক অন্টাঙ্গুল উচ্চিত্ত এক হস্ত পরিমিত চতুরত্র পাষাণ শিলা কর্ত্তব্য এবং ইন্টকশিলা উহাব অর্দ্ধপরিমাণে করিবে। প্রস্তরনিশািত প্রাদাদে পাষাণ শিলা ও ইফক-বচিত প্রাদানে ইউকশিলা কর্ত্তব্য ; তাহাতে নব-রুদ্রাদি ও পঙ্কজ অঙ্কিত করিয়া নন্দা ভদ্রা জয়া हिसा ७ भूनीया भक्ष्यो भिना अवः ইहानित्त्रत অংশভালে পদামহাপদা শভা মকব ও সমুদ্রাথ্যা পঞ্চনিধি যথাক্রমে অক্কিড করিবে এবং নন্দা ভদ্রা জয়াপূৰ্ণা আজিতা অপবাজিতা বিজয়ামসলা ও ধরণীনামা নবসংখ্যক শিলা ও স্লভদ্র বিভদ্র স্থনন্দ পুষ্পনন্দক জয় বিজয় কুন্তু পূর্ণ ও উত্তৰ নামক ঐ শিলাস চলের যথাক্রমে এই নষ্টি নিধিকুল্প থাকিবে। প্রথমে আসন প্রদান করিয়া অস্ত্র মন্ত্র স্বারা তাড়ন ও উল্লেখন করত সকলের অবিশেষে কবচ মন্ত্ৰ ৰারা অবগুঠন মৃত্তিকা গোময় গোমূত্র

পঞ্চধান্ন ও গন্ধ বারি বারা ভূমাড়ন্ত অস্ত্র মত্ত্রে মলমান সম্পাদন পূর্বাক গন্ধভায়ান্তরিত পঞ্চাব্য ও পঞ্চায়ত ছারা নিজনামান্ধিত মত্ত্রে যথাবিধি স্নান করাইয়া ফল রত্ন স্থবর্ণ এবং পোশৃঙ্গ দলিল ও চন্দন লিপ্ত করত শিলা বস্ত্র ছারা আছোদন করিবে। পরে স্বর্ণনির্দ্মিত আসনপ্রদানপূর্ব্বক প্রদ-কিণ ক্রমে উক্ত শিলা যাগমগুপে শ্যা বা কুশ-তল্লে হৃদ্যন্ত্র উচ্চারণ করত নিবেশিত করিয়া সগ্যকরূপে অর্চনা করিবে। পরে বুদ্ধাদি পৃথিবী-তত্ত্ব পর্যান্ত কাস করিয়া ত্রিথতব্যাপক তত্ত্ত্ত্ত্রয় ঘথামুক্রমে বক্ষ্যাণরূপে ন্যাস করিবে এবং বুদ্ধ্যাদি চিত্তপর্যান্ত চিন্তাদিতনাত্রপর্যান্ত ও তমা ত্রাদিধরান্ততত্ত্বে শিবতত্ত্ব বিদ্যাতত্ত্ব ও আত্মতত্ত্বের অবস্থিতিহেতুক তথত্তয়েব ও তত্ত্বশত্তয়ের নিজ মন্ত্র দ্বারা কার্থাৎ ওঁ হুঁশিবত হায় নমঃ ওঁ হুঁ শিবতত্বাধিপত্যে রুদ্রায় নমঃ। ওঁ হাঁ বিদ্যা তত্বায় নমঃ: ৬ ইা বিদ্যাতস্বাধিপায় বিশ্ববে নমঃ। ওঁই। আলত সাম নমঃ। ওঁ হাঁ আলত সা-ধিপত্যে ব্ৰহ্মণে নম:। এই মন্ত্ৰ দ্বারা পূজা করিয়া প্রতি শিলায় প্রতিত্তে কিতি ভাগ্নি যক্ত-মান সুধ্য জল বায়ু সোম আকাশ এই অফমুর্ট্টি ও সর্ব্বপশুপতি উগ্র রুদ্র ভব যুজমান মহাদেব ও ভীম এই অফ মূর্তীশর বথাক্রমে ওঁ ধরামূর্ত্তয়ে নমঃ ও ধরাধিপতায়ে নমঃ ইত্যাদি মরা ছারা यान कदिरव। भरत (लाकभानशरगत यथामः धः নিজ মন্ত্রবিভাগ করিয়া উক্ত মন্ত্রে কুল্ভে পূজা করিবে। ইন্দ্রাদি লোকপালগণের বীজমন্ত্র বক্ষ্য-মাণক্রমে জানিবে। লুঁর শুঁপূ বৃঁষু মুঁছু কুঁ এই নয়টি ইন্তাদি লোকপালের বীজ শিলা-পক্ষে উক্ত হ্ইয়াছে, এরপ পঞ্পদাশিলায় প্রতি তত্বে ধরাদি পঞ্চমূর্ত্তি স্ষ্টিক্রমে ন্যাস করিয়া

ভথার বৈক্ষা বিষ্ণু রুদ্রে ঈশ্বর ও সদাশিব এই পঞ্চ मुडीमात शृत्कात नाग्र वर्षा ७ वृत्राम्हत्य नमः, ওঁ পুণীমুর্তাধিপভারে অক্ষাণে নম: ইড্যালি মন্ত্র ৰারা যঞ্জন করিবে। অনন্তর বথাক্রেমে স্থ नांभ बाता शककलाम श्रुका कतिया यथाविधि नि-রোধ পুর্বক প্রাকার মন্ত্র উচ্চারণ করত ভুতি দর্ভ ও তিল ছারা মধ্যশিলাক্রমে বিন্যাস করিয়া কুও সকলে ধারিকাশক্তি বিন্যাসপূর্বক অর্চন ও তর্পণ করত মুঠাদি দারা ভত্মতত্বাধিপ মৃর্তি ও মূতীশগণের অর্চনা করিবে। অনস্তর ভ্রহ্মাংশ শো-ধনার্থ ব্রহ্মমন্ত্র দারা ক্রমশঃ মূলদেবভার অঙ্গদকল পূर्व कतिया गांखिकन बाता गिला ट्यांकन भूर्वक বথাক্রমে প্রতি তত্তে কুশ ছারা স্পর্শ করত বক্ষ্য-মাণরূপে পূজা এবং সামিধ্য সম্পাদন ও সন্ধান করিয়া পুনর্বার মন্ত্র ফাদ করিবে। পরে ভাগত্রয়ে ক্রেফেমে গমন করত ওঁ আ ঈ আত্মতত্ব বিদ্যা তথাভ্যাং নমঃ এই মন্ত্র উচ্চারণ করত দর্ভমূলাদি দারা যথাক্রমে ভ্রন্ধাঙ্গাদিত্র স্পর্ণ করিয়া ভ্রন্থদীর্ঘ প্রয়োগামুদারে ওঁ হাঁ উঁবিদ্যাতত্ব শিবতত্বাভ্যাং নমঃ এই মন্ত্রভায়া তত্ত্বাসুসন্ধান করিবে।

অনন্তর হত মধ্পূর্ণ,পঞ্চাব্য ও অর্থসংযুক্ত,রজ্বসমস্থিত, তাত্রক্ও সকলে, স্বীয়মন্ত্রে লোকপালগণের পূলা করিয়া, তৎসন্থিধানে হোম সমাধান
পূর্বেক শিলা সকলের বিদ্যারূপ ক্তস্থান হেমবর্ণ
অধিদেবতাগণের স্মরণ করিবে। তদনন্তর ন্যুনাদি
দেয়ে কালনার্থ এবং বাস্তভূমি বিশুদ্ধির নিমিত,
মূর্দ্ধান্ত হইতে অন্তর্মন্ত্র বারা শত শত আহতি
প্রদান করিবে।

ইত।ব্রের অদি মহাপ্রাণে শিলাক্সালকথন নংমক ভ্যাবিংলদ'ধক বিশততম অধ্যায়।

একচত্বারিংশদধিক দ্বিশতত্তম অধ্যার।

वोज्ञशृकापि विश्वाम ।

ঈখর বলিলেন, মনন্তর প্রাদাদ গ্রন্থন করিয়া, দমচভুদ্ধোণ ক্ষেত্ৰে চতুষ্টি কোঠ যুক্ত বা্দ্ মণ্ডপ নির্মাণপূর্বক কোণ সকলে বংগ বিশ্বাস করত বিকোণগামী অফীসংখ্যক রচ্ছু রক্ষা করিয়া, ভথায় দ্বিপদ ও ষট্পদ বাস্ত দেবভার বক্ষামাণ-রূপে অর্চনা করিরে। ভিত্তি প্রভৃতি স্থিবেশ বিষয়ে আকৃঞ্চিত্তকেশ অহুরাকৃতি উত্তরানন উত্তানভাবে শগ্নিত ৰাজ্বপুলা কালে চিন্তা করিবে। পূৰ্ব্বদিকে জালুৰন্ন বায় ও অগ্নিকোণে কুৰ্পরময় ও শক্षि क्किट्न भाषवग्र, जेमानरकार्य मखक, स्वर्य অঞ্জলিবদ্ধ কর্ময় এবং উহার শরীরে স্মার্ক্ সমস্ত পূজ্য দেবগণ এবং অফকোণাধিপ অফ-কোণার্দ্ধে এবং পূর্ব্বাদিক্রমে মরীচি প্রভৃতি ষ্টপদ দেব্যিগণ মধ্যে চতুপ্পদ ব্ৰহ্মা একপদ শেষ এই স্বস্ত দেবগণ এই অবস্থিত জানিবে। সমস্ত নাড়ী সংযোগে মহা-মর্মভেদী ফলক, ত্রিশূল স্বস্তিক বজু, মহা-শ্বন্তিক সম্পুট (cপটরা) ত্রিকটু, মণিবন্ধ এবং হুবিশুদ্ধপদ এই কএকটি বস্তু বাস্তুর ভিত্তাদিতে দিবে। ঈশানের উদ্দেশে সাজ্য অকত পর্যয়ের উদ্দেশে পদ্ম ও উদক কয়ন্তকে কুকুমোৰ্কা পতাকা, মহেন্দ্ৰকে রত্নবারি, শ্রাকে ধূআবর্ণ, চন্দ্রাত্প, সত্যকে স্বত গোধুম ও ভূশর উদ্দেশে আজ্যভক্ত অন্তরীকর উদ্দেশে পূর্ববিদকে শক্তু প্রদান করিয়া, মধু ক্ষার ও আজ্যপূর্ণ শ্রুচাছতি বহিতে এবং লাজপুর্ণ ক্ষবর্ণোদক বিতথর উদ্দেশে बिद्यम्ब क्रिद्ध । भट्ड गृह क्रज्ड छएमए मध्,

यभवारकत केरफरण कल ७ ७एन गंधर्यनाधरक गंध, ভুদ্ধ উদ্দেশে পক্ষিদকল, মুগর উদ্দেশে পদ্মপত্র, পিতৃদেবের উদ্দেশে ডিলোদক, ক্ষীর ও দন্ত কার্চ এই কএকটি দ্রব্য দক্ষিণ দ্বার দেবতাকে, প্রদান করিরা, ছগ্রীবের পুপ, পুষ্পদক্ষের দর্ভ, প্রচেতার রক্তপন্ম, অহ্মরের হারাদব,শেষের স্বত ও গুড়োদন त्रारभद्र माम अहे करवकि स्व अ शिन्त्रमायां कि দেবগণের উদ্দেশে ধেকুমুদ্রাম্বারা প্রদান করিবে। মারুতের পীতথ্ব জানোগের নাগকেশর,মুখাভল্লাটের হুদংস্কৃত মুদ্যা, সূপ, সোমের সাজ্য পায়স, উবির শালুক, খদিভির লোপা, দিভির পুরী, এই উত্তর দার দেবতা কএকটির উদ্দেশে পূর্বের ভায় উক্ত কএকটি দ্রব্য প্রদান করিবে। প্রাচীদিকে ব্রহ্মাকে **७ वर्षे अन मती किएक स्थानक, विद्वित व्यर्धारिक ए** কোন কোষ্ঠকে সূর্যাকে রক্তপুষ্প প্রদানপূর্বক, উহার অধঃকোষ্ঠকে সাবিত্রীকে কুশোদক, দকিণ क्रिक रहेभक दिवसानाक ब्रक्क हम्मन, खेहात **च**शः-কোণত্ব কোষ্ঠকে ইন্দ্ৰকে হ্রিড়া ওদন এবং ইচ্ছের অধন্তাৎ, ইক্সন্ধেয়াকে মিশ্রান্ন (বিচড়ী) নিবেদন করিয়া, পশ্চিমে বট্পদ আসীন মিত্রকে সগুড় ওদন, বায়ুকোনাধার পদে রুদ্রদেবকে স্তুসিদ্ধাম উহার অধেদেশে রুদ্রদাদকে মুগমাংস প্রদান করিবে। অনন্তর উত্তরে ষট্পদস্থনাধরকে মাস নৈবেদ্য প্রদান করিয়া, শিবকোণের অধোদেশে আপ ও ভাহার বৎসকে ক্রমে দবি ও ক্রীর প্রদান পূর্বক যথাবিধি পূজা ক'রবে। পরে মধ্যদেশে চতুম্পদ নিবিষ্ট ব্ৰহ্মাকে সাজ্য পঞ্চাব্য ও অক্ষত্ত-যুক্ত চরু নিবেদন করিয়া, ঈশানাদি বায়ু পর্য্যস্ত (काण्ड क्रिया चाल वाटका वशाक्तरम हतका क्रिक्ट উয়ের বন্ধ।মাণরূপে পূর্জা করিবে। চবকীকে সন্ত্ৰত মাংস বিদায়ীকে দধি ও পঞ্চল পুতনাকে

ফল পিত্ত ও ক্লখির পাপ রাক্ষদাকে অন্থি, রক্ত, পিত ও ফল প্রদানপূর্বক উহাদিশের অর্চনা করিবে। অনন্তর প্রাচীদিকে কার্ত্তিকেয়কে মাব ও ওদন, দক্ষিণদিকে অর্য্যমাকে কুসর (ভিলের থিচড়ী) ও পিষ্টক, পশ্চিমাশায় জন্তককে রুধির যুক্ত আমিষ উত্তরদিকে পিলিপিঞ্জকে রক্তান ও কুত্র প্রদান করিবে। অথবা সমস্ত বাস্তর অর্চনা কুশ দ্ধি অক্ত ও জল স্বারা করিবে এবং গৃহ ও নগরাদিতে একাশীতি পদছার। যজন করিবে। রজ্ সকল ত্রিপদ বিকোণে ষট্পদ ঈশাদি তথায় ৰিকোষ্ঠগ একপদ নাগাদি ষট্পদ্ভ মরীচি প্রভৃতি এবং নবপদ ব্রহ্মা জানিবে ! অথবা নগর গ্রাম থেট (নগর বিশেষ) প্রভৃতিতে বাস্তু শত পদ হইবে। কোণ গত হুৰ্জন্ন ও হুৰ্ধর নামক বংশ-ছয় দেবালয়ে ও শতপদে স্থাস করিয়া,তথায় গ্রহ-গণ ও ক্ষন্দাদি ষট্পদ দেবগণ চতুর্দশ পদ চর-काानि धवः शृटर्वात नागा तक्कू वश्मानि विनाम করিবে। এইরূপে দেশ সংস্থাপনে বাস্ত চড়ু-ক্রিংশত শত হইবে। চতুষষ্টিপদ ভ্রহ্মা, চতুপঞা-শত পদিকা মরীচ্যাদি দেবতা আপাদি অফবস্থ ষট জিংশভ পদ, ঈশানাদি নবপদ এবং কম্দাদি শক্তি জানিবে। চরক্যাণি ঐরপে এবং রজ্জু বংশাদিও পুর্বের ন্যায় ছইবে। বংশ সহজ্ঞ পদ মগুলগ বাস্ত্র, দেশবাস্তর ন্যায় তথায় নবগুণ বিন্যাস কর্ত্তব্য এবং পঞ্চবিংশতি পদ, বৈতালাখ্য বাস্তুচিভিতে (দেয়াল কালীভে) উক্ত আছে। অন্য নবপদ বাস্তু অপর ধে ডুশাজিয় বাস্তু ষ্ট -কোন ও ত্রিকে। পর্বাদির মধ্যে চতুরত্র হইবে। অথবা পু্রুরণ্যাদি থাতে বাস্তুর সমপৃতে ত্রন্ধ-भिला न्यारम भावांक निरवण धवः मूर्ति मःचा-পনে পার্দের ছাবা সকলের নৈবেল্য

করিবে। উক্ত বা অনুক্ত বিষয়ে বাস্ত পঞ্চ হস্ত প্রমাণ বা গৃহ প্রাদাদাদি পরিমাণ সাবদ। প্রাশস্ত জানিবে।

> ইত্যায়ের আলি মহাপুরাণে বাত্তপূজা কথন নামক একচ্যারিংশদ্ধিত বিশ্তম অধ্যায়।

দ্বিচত্ব:রিংশদ্ধিক দ্বিশতত্ব অধ্যায়।

শিলাবিভাস বিধান।

जेयत विलालन, विश्वधानाम जेमानमि दर्गाय **ठ** छुकेरा शृदर्वत श्राय हतका मि शृक्षा करिया। প্রত্যেক দেবভার যথাক্রমে আহতিত্তিতয় প্রদান পুর্বাক ভূতগণের উদ্দেশে বলিপ্রদান করত শিলা ভাষাসুক্রমে ত্লয়ে মধ্সুত্রে শক্তি ও অনস্ত নামক উত্তম কুন্তুদ্য বিস্থাস করিবে। পরে নকা-রার্ট মূল মন্ত্র বারা ঐ কৃত্তে শিলা ধারণ করত পূर्वापि पिरक अञ्चर्भाक गर्छ यथाकारम *लाक* পাল মন্ত্র দারা হভদাদি নামক অফকুক্ত বিভাগ করিয়া উহাতে নন্দাদি শিলা যথাক্রমে নিবেশিত कतिरत । जनस्त किविधश क्षापन बहेरल मुखीन-দিগের জল ঘারা বিভাগ ক্রমে কোণ হইতে কোণ পর্যান্ত ধর্মাদি অউ এবং অগ্নাদি কোণ চতুষ্টয়ে ম্বভদ্রাদি কুম্বে নন্দাদি শিলা চতুইয় ও পূর্ব্বাদি দিকে জয়াদি কুন্তে অভিতাদি শিলা বিভাগ ক্রিনে। অনস্তর উপরিদেশে একা ও মহেখর-দৈবত ব্যাপক ভাদ করিয়া সমস্ত বিষয়ে আকাশ ७ প্রাসাদের মধ্যস্থলে অগ্যাধান চিস্তা করত বলি প্রদানপর্বক বিস্থানায় নিবারণার্থ অন্ত্রমন্ত্র জপ করিবে ৷ পরে শিলা পঞ্জ পক্তেও বলা হইতেছে। মধ্য কলসে পূর্ণশিলা বিভাগ

হভত্তকুত্তে অর্দ্ধ পরিমাণে অগ্ন্যাদি ক্ষেত্রিক পদ্মাদি कलान जन्म नन्मानि निला विकास कविएर । यश ভাবে নন্দাদি চারিটি মাতৃকারই মাভৃবস্তাব সম্মত कतिया वक्तरमानकाल बार्यना कतित्व । ८० शूर्त ! হে মহাবিদ্যে! হে সর্বসমূহ স্বরূপে! হে আঙ্গী-রদ সূতে! এম্বলে আপনি সর্বকার্য্য সম্পূর্ণ করুন। হেন্দে । আপনি সর্বজনের আনন্দ-বর্দ্ধিনী আপনাকে এই স্থলে স্থাপিতা করি। চক্র সুৰ্য্য ও তারকাগণ গগণে যাধ্ছলাল থাকিবে আপনি পরিতৃপ্তা হইয়া এই প্রাসাদে অবস্থিতি করুন, হে বশিষ্ঠপুত্তি নন্দে! আপনি দেহিদিগের শম্বন্ধে ভাষ:কাম ও শ্ৰী প্ৰদান কৰুন এবং এই প্রাদাদ যত্নপূর্বকে রক্ষা করুন। হে ভল্লে! ক্রভাপ সূত্তে! আপনি লোক সকলের মঙ্গল করুন। হে দেবি! আপনি সর্বালা নিখিল জন-গণের चांगुः कांम ७ व्यीक्षित रूछेन। ८६ कर्माः ভৃগুড়ময়ে! দেৱি! আপনি এই ছলে আমা কর্ত্তক স্থাপিতা হইয়া দৰ্বজনসম্বন্ধে দৰ্বদ! জী ও সায়: প্ৰদাহটয়া সতত জন্ম ও ঐশব্য প্ৰদানের প্ৰাঞ্জ হউন। হে ৩৬**ছে। হে অভিরিক্ত দোষ**ছে দিকে! হে দৰ্কব্যাপিনি! হে বিশ্বন্ধপিনি! এই ছলে আপনি অবস্থিতি করিয়া সর্বান্ধনার বিদ্ধিও মৃক্তিপ্রদা হউন ৷ অনস্তর গ্গনায়ত্তর চিন্তা করিয়া তথায় তত্বত্তেয় বিন্যাসপূর্বক প্রায়-শ্চিত্ত হোম করিয়া যথাবিধি যজা সমাপ্র कदिर्द ।

ইত্যায়েরে আ দ মহাপ্রাণে শিলাঞ্স নামক ছিচ্ছা-বিংশদ্ধিক বিশত্তম অধ্যায়।

> JIBON KRISHNA DEV. 81/2 Inviden Street, GALOUT ITS

ত্রিচত্বারিংশদধিকদ্বিশততম অধার।

क निर्मानम् ।

শ্মি বলিলেন, কালজানাৰ্থ কালসনাগণ গণিত বলিব। কালস্যাগণ সৌরবৎসর চৈত্রাদি মাস্যুক্ত बिद्र । विशे इहेश हजू: शक यहे वासेशुक्त श्वन हहेरव। किर्ध मध्य हहेरल अञ्चेश्वन हहेशा श्वनकात्र চতুত্ব হইবে এবং কুহোদেশে অফ নব ও ত্রি-मःशाबाता होन हहेगा এक वर्ष असे मधा हीनकार यक्षिमः था। इक इंदेल त्य चक्र वक दग्न. छारा উপরিহিত অঙ্কের সহিত যুক্ত হইয়া সপ্তকৃত ন্যনে যে অক হইবে, তাহাতে বার জানিবে। ভলিলে তিথি নাড়ী সকল ছইবে, সম ও বিগুণ উদ্ধ ডিন ঘারা হীন হইয়া পুনর্বার গুণিত হইবে, পরে নিম্নে শৃশ্ব ও তিন মুক্ত এবং ষড় দাদশ অই ও চতু: দংখ্যাযুক্ত হইয়া অন্টাবিংশতি শেষপিও ভিথি নাড়ীর নিম্নান্থত রাশি তিন ঘারা গুণিত হইয়া উহার অর্দ্ধ সংখ্যা ভারা হীন হইবে, পুন-ব্রার বিগুণিত হট্য়া মধ্যে চতুর্দশ গুণ এবং অধোদেশে এক নয় ও তিন হীন লকান্ত মধ্য ছইবে। উহা হইতে দাবিংশতি বৰ্জ্জিত হট্যা वर्ष्टि (भव इंहेरम अग कानिरव ও উर्ज लक्ष विरक्तभ ক্রিয়া,যে সপ্তবিংশতি শেষ তাহা নক্ষত্র এবং যোগ শশ্বন্ধে ধ্রুব জানিবে। দাত্তিংশং ঘটিকা স্থিতিতে অতিযাদে বার কেপ হইবে পিওছয় নক্ষত্র-षग्न अवर अकानन नाड़ी अन विवद्य हहेरव । शहन বার স্থানে ডিখি দিয়া সপ্ত মারা ভাগছার করিবে ভাহাতে যে লেষ ছইবে, ভদ্বটিকায় সূর্য্যাদি বার পাত করিবে এবং পিগুকে ভিথি দিয়া চভূদিশ

हत्रण कतिया गहेरच । छाषा सन धन धन सन यथा-क्राय प्रकृषिण भर्गास अविकारण कानिस्य, क्षथम ब्रह्मानरम १० विजीय बानरम १म जुडीय बका पर्या शक्षमा प्रजूषी मगरा आक्षामितिःगानि इते हत्। পঞ্চ नरम पारिः শতি**ইर्य अफेटर अथन।** इकु-ৰ্বিংশতি পিভিকা হইতে খণ্ড খণ্ড হইয়া প্ৰথম পক্ষবিংশতি হটবে এবং কর্কটাদিতে ছয় চারি ও ভিন ঘারা ক্রমশ হরণ করিরা ভূলাদিতে প্রতি-লোম ক্রমে ক্রমণ ভিন চারি এবং চয় হইবে। মকরাদিতে ক্রমশ ছয় চারি ও তিন দিবে ৷ মেষা-দিতে প্রতিলোম ফ্রেমে তিন চারি চয় দিবে। मुन्न शक्ष मृन्यब्र ७ मश्रम्म दिकल! त्रामि (२२१-मिटि धन हरा। कर्करक श्रीकिरमांग ज्ञाम अन्र जुलानिए छेहा श्रेग इहेर्य। अन्हर्ल नर्द्धना বিকলা চতুগুৰ্ণা ডিখি জানিবে। লিগু আগত ও আগামী পিও সংখ্যা ফনান্তর ছারা ছবুণ করিয়া श्राचित्र क्षा क्षा कि स्टब महिलक स्व मिट्ट अवः দ্বিতীয়োচ্চারিত বর্গে বৈপরীত্যে স্থিতি ও ষড়-ভাগ পরিবর্দ্ধিতা তিথি ষিগুণিতা করিয়া রবি-কার্য্যের বিপরীতে তিথি নাড়ীযুক্ত হইয়া ঋণগুদ্ধ इटेटल भाष्टी मकल इटेटन अवर यक्ति अब अब भा হয়, তাহা হইলে উহা ষষ্টির সহিত যোগ করিবে ষ্ট্রাধিক্য হইলে উহা ত্যাপ করিবে। নক্ষত তিথি মিশ্র এবং তিথি চারি ছারা লগিত ও ঐ তিথির ত্রিভাগ সংযুক্ত ঋণ সহিত তিথি এখলে **किंडा (काली) कतिरव अवः छहात्र कादि हरेएड** যোগ শোধন হইবে। ত্ববি ও চল্লদম হইলে নিশ্চল যোগ হয় একোণা ভিথি ছিন্দ্ৰণা ও সংয जिमा स्टेरल चिरियांगिंड एम अरकाना विश्वना किथि यह मध्याकुछ इहेटन ब्रावियात क्रम इब्र কৃষ্ণ চতুর্দশীর অক্তে শকুনিকরণ ঐ পর্বেব ভিণি

প্রথমার্কে চতুম্পন করণ এবং প্রভিপৎ প্রথমে কিন্তুম করণ হয়।

ইত্যায়িরে আদি মভাপ্রাংশ কালগণন নামক ত্রি-চমারিঃশদ্ধিক বিশস্তম করায়।

চতুশ্চক্তারিংশদ্ধিক্দিশততম অধ্যার |

युक्त अवशर्भवें वीय नाना ट्यांश ।

चार्री विशासन, कर्-एएकि मार्खार्थ युद्ध करा-ৰ্ববিষয়ে, সারবস্তু বলিব। আইউএওএই পঞ্জর, যথাক্রমে নন্দা, ভদ্রা, জয়া, রিজ্ঞা ও পূর্ণা তিথি ছইবে এবং ককারাদি হকারাস্ত ব্যঞ্জন বর্ণ সকল মঙ্গল ও রবি বুধ সোম হুরাচর্য্য ও শুক্রাচর্য্য এবং দক্ষিণ নাড়ীতে শনি ও অপরে মঙ্গল সূর্য্য ও শনি শৃত্য সপ্ত শৃত্য ও ছয় ছারা গুণ করিয়া, একাদশ ছারা ভাগ করিবে, পরে উহা ছয় বারা আহত করিয়া, পূর্বব ভাগ দারা ভাগ করিবে,পুনরায় তিন দারা আহত করিয়া ভাহাতে রূপ নিক্ষেপ করিবে, নাড়ীর পনরূপ স্পানন পুন-র্বার প্রাণের সহিত পুনর্বার স্পান্দন হইবে, এই রূপ মানে দিন দিন উদয় হয়। তিন কারণে अक छेम्हान, जिन छेम्हारन अक भल, नाहें पेरल এক লিপ্তা, দাইট লিপ্তায় এক অংহারাত্র হয় এবং পঞ্মার্দ্ধ উদযে বালকুমার যুব রন্ধ ও মৃত্য যাহাতে উদয় তাহার একাদশাংশকে অন্ত এবং কুনগিমে ভঙ্গ হয় ভাহাকে সুভুঃ বা পঞ্চম বলে ৷

অরোপর চক্র।

শনিচক্তে পঞ্চল ভাগে বথাক্রমে প্রহণণের অর্থমাস উদয় হয়, উহার মধ্যে শনি ভাগ মৃত্যু প্রদা

শনি চক্তা-

দশকোটি সহত্র অর্থাদ অর্থাদ আনহাদ ক্রেছিল চক্রের ত্রেরাদশ ছাদে ছিড, যে লক্ষ লক্ষ্য লাশিং তাহা মঘাদি বিষয়ে কৃতিকাদির মধ্যে শনি ছিডিক প্রমাণ হয়।

কুৰ্ম চক্ৰ।

লিখিবে এবং বায়ু অগ্নি ও নৈৰ্মত কোণের মধ্যে আমের ভাগে পূর্ণিমাও বায়ু কোনে অমাবক্তা রাভ্গ্রহ তিথি রূপ হয়েন। দক্ষভাগের রকার বায় কোণে হকার লিখিয়া, প্রাজিপদানি, জিখিতে ককরাদি ও পুনর্কার নৈশ্বতে সকার লিখিবে এবং রাত্র মুখে ভজ হয়, এইরূপ স্বাত্ উত্ত হইল ! অগ্নিকোণে পৌৰ্থমানীতে বিষ্টি পূৰ্ব্বদিকে ভূজী-য়াতে কর: দক্ষিণদিকে সপ্তামীতে ঘোরা, উত্তর-দিকে দশমীতে রৌক্ত এবং বায়কোণে চতুর্দশী তিথিতে, পশ্চিমে চড়ুর্থীতে, দক্ষিণে শুক্লাইমী ও একাদশীতে ভূশত্যাগ করিবে। রৌক্র, শেত, মৈত্র, দারভট, দাবিত্র, বিরোচন, জয়দেব, অভি-बिंद, तादन, विखय, नन्ती, वद्मन, यम, द्रामा 'छ ভবনামক পঞ্চদশ মুহূর্ত হয়, তম্মধ্যে রেচিদ মুহূর্তে রোদ্রকার্য্য করিবে, খেত মুস্থর্যত স্নানজিয়া मञ्जानन कतिरव, शिख बुद्धार्छ कमा विवाहानि সারভটে গুড় কার্য্য সমস্ত করিবে, সাবি**ত্রতে** चां भनानि विद्यांहरन बाक्य कार्या, क्यारन्द क्या कार्या, त्रावरन जनकर्म विकास कृषि ७ दानिक्रा निमार्क भवेतम वक्रारा क्यांगानि याम नामकर्या (मीरमा, (मोमाकार्या अवः **च्व मृहूर्स्क, छेर** शाह-নাদি ক্রিয়া সম্পাদন করিবেণ এইরূপে দিবা রাত্রিতে লগ্ন হয়। যোগ সকুর মাম দারা বিরুদ্ধ ও শোভন জানা যায়, হিঃপ্র হইতে রাহ, বায়ু

হইতে সমীরণ, ষম হইতে দক্ষ, লিব ছইতে লিব, কল হইতে আপ্যা, অমি হইতে অমি এবং উহা হইতে সোম্যত্রের, তাহা হইতে চারি ঘটিকা অমণ করত সংক্রম নই করে।

छ्छी, हेल्लाची, वात्राही, भूननी, शितिकर्निका, वला, অভিবলা, कोन्नी, यक्षिका, जांजि, युधिका, खण्डी, वाकती, आहे ममख निया अधिक मध्य যথালৰ একটা ওষধি ধারণ করিলে জয় লাভ रत्र। धॅन(मारेज्यतात्र थड़नभद्रश्रहस्तात्र धॅ हैं ওঁ হুঁ ফটু এই মন্ত্রারা জর হিছবিনাশার লাভার্য লিখাবন্ধনাদি করিবে। অনন্তর তিলক অঞ্জন ধুপ লেপন স্নান পান তৈল ধুলিযোগ ভাবণ শুভগা মন:শিলা, হরিতাল, লাকারস, उम्मी की व भाषा करिया नगरि जिनक कतिरा বশীকরণ হয়। বিষ্ণু জ্রান্তা সর্পাকী সহদেব গোনোচনা ছাগীত্বা বারা পেষণ করিয়া তিলক क्रिटन, यभीकरा इस। প্রিয়স্থ, করুম, কুড়, মোহনীতগর ও ঘৃত সম্পাদিত তিলক বশ্যকারক खानित्व अवर **डेश** (शास्त्राहना, त्रख्यहन्तन, निमा, মনঃশিলা, হরিডাল, প্রিয়সু, সর্হপা, ঘোহিনী, হরিডাক্রান্তা, সহদেবী ও শিখা এই কএকটী দ্রব্য মাতৃলক রদ বারা পিষ্ট করিয়া ললাটে তিলক করিলে সমস্ত দেবগণের সহিত প্রররাজ ইন্দ্র ও বশীভূত হয়েন, দামান্য মনুষ্টের কথা কি বলিব। मञ्जिष्ठी तक्कारमान कर्डेकमा ও विलामिनी शूनव्हात युक्त कतिहा रम्भम कतिरम, वनीकद्रश विवरह দীপ্তি পায়। চন্দম নাগপুষ্প মঞ্জিতাতগন্ন বচ লোধ প্রিয়ঙ্গু ও রজনীমা সীতৈল দক্ষিত্র বশ-কারক জানিবে।

> ইত্যাবেরে আদি মহাপুরাবে নানা ধোণ নামক চতুপ্টভারিশদ্ধিকণতত্ত অব্যার চ

পঞ্চত্বারিংশদধিকদ্বিশততম অধ্যার।

যুদ্ধজয়ার্শবীয় জ্যোতিঃশান্ত সার।

অগ্নি বলিলেন, যুদ্ধসমার্থব বিষয়ে স্ক্রোভি:-শাল্লাদির সার বলিব। মন্ত্র ও ঔষধাদি ব্যতি-রেকে ভগবান মহেশ্বর জগদীশ্বরী উমাকে যেরূপ বলিয়াছিলেন, তাহা শ্রবণ কর। দেবী বলিলেন, **८ ए त्यामा । ए वर्गन एय छे भार्य मानविम्मारक** জয় করিয়াছিলেন, শুভাশুভ বিবেকাদি আনস্করপ युद्ध कर्रार्थि वजून। जिथेत विलिय्स, मृलामायित ইচ্ছায় পঞ্চদশাক্ষরা শক্তি উৎপন্না হইয়াছেন. ভাহা হইতে চরাচর সমস্ত বিশ্ব জন্মিয়াছে, যাহার আরাধনা করিলে, অখিল অর্থজ্ঞান হয়, পঞ্চনত্ত সমৃদ্ভৰ মন্ত্ৰপীঠ বলিব, যে সকল মন্ত্ৰ সমস্ত মন্ত্ৰের জীবিত ও মরণাবস্থার পাকে, ঐ স্কল মন্ত্র যথা-क्राम सक्, रक्ट, माम ७ व्यर्काचा त्वमहरूकेरत् উক্ত হইরাছে। সদ্যোজাতাদি মন্ত্রে ব্রহ্মা বিষ্ণু क्रम जेन मश्रमिथ अवर हैस्तानि (पवडा अवः च ই উ এ ও এই পঞ্সর ও কলা মূল ব্রহ্মকীর্তিক इहेग्नाइह। दामन कार्छ मर्था बङ्कि व्यश्च व्यव-স্থার দৃষ্ট হয় না সেইরূপ শিব শক্তিদেহে বিদ্যু-যান থাকিলেও দেখা যায় না। প্রথমে সমূৎপন্না শক্তি ভঁকার স্বরভূষিতা হইয়াপরে বিন্দু ও একা-রের সহিত ব্যবস্থিত হইলে নাদ উকার জ্বায়া হাদয়ে অৰম্ভিতি করত নাদধ্বনি করে এবং অর্থ্ব-চন্দ্র ইকার মোক্ষমার্গের বোধক অকার ব্যক্ত হইতে উৎপন্ন হট্য়া ভোগ ও নোক্ষপ্রদ হয় ৷ অকার ঐশরভূমি মির্দ্ধি কলা জানিবে। প্রাণাখ্য প্রোন বীজ স্থিরা ইড়াশক্তি উক্ত হইয়াছে ইকার প্রতিষ্ঠান্য রসপালক পিল্লা শক্তি। ইকার বীজ ক্রাশক্তি হরবীক শমিরপ বিশিষ্ট হয়। গান্ধারী

विना नमाना ও कहनी मक्ति कानिएत। প্রশান্তি বায় স্পানী বে উদানের অর্চনা জিলা ওঁকার শান্তাভীভাখ্য। আকাশ শব্দ যুধপাণি হইতে পঞ্বর্গ ও স্বর্গ জিমিয়াছে এবং মঙ্গল বুধ বুহস্পতি শুক্ত শনি এবং অধোনেশন্থিত যথাক্রমে অকারাদি ও ককারাদি বর্ণ অভঃপর সমস্ত চরাচর জগৎ এতমালক জানিবে। বিদ্যা-পীঠ শিবোক্ত প্রণব বলিব। বাঁহার শক্তি উমা, সোম, বামা, জ্যেষ্ঠা, রোদ্রা, ত্রহ্মা, বিষ্ণু এবং ক্লুল ও যথাক্রেমে স্বর্গাদি তিন গুণ ও রত্ন নাড়ী-ত্রের স্থল সূক্ষা পর ও অপর খেতবর্ণ পরায়ত করত আত্মাকে প্লাবিত করিতেছেন। হে দেবি ! এইরূপ দিবানিশি চিন্তা করিলে মানবগণ অঞ্চরা-यत भिवङ् लांख करत । अनुकामित्छ ও দেহমধ্য অক্সাদ করিয়া মৃত্যুঞ্জয়ের অর্চনা করিলে, রণা-**मिट्ड विकशी इश्। याद्याकारल भृ**श्च नितालश ও ভির্য্যগ্রোনি স্পূর্ণ করিবে না রূপের উর্দ্ধ-পতি জলের অধোগতি দর্ককান বিনির্মুক্ত গদ্ধের মূল মধ্যদেশ এবং নাভিমূলে স্থিত শিবরূপ কন্দ-শক্তি সমূহ মণ্ডিত এবং তথায় চন্দ্র সূর্য্য ও ডগ বান্হরি অবস্থান করিতেছেন ও দশবায় পঞ-তশাত্র এবং চরাচর জীবলোকের কালানল সমা-कांग्र (मनीभागान की व चाह्न । (म मल्लभीर्घ नके হইলে অনিলাম্মক প্রাণনাশ হয় মার মৃত বোধ করা যায়।

ইন্ত্যাব্যেৰে আদিমৰাপুৰাণে যুদ্ধ ক্ষমণ্ড জ্যোতি নামক প্ৰচন্ত্যারিংশগ্ধিক দিশততম অধ্যায়।

ষট্চত্বারিংশদ্ধিকদ্বিশতভ্রম ভাষ্যায়।

यूक करार्विक नानाठक ।

ঈশর বলিলেন, ওঁ ছীঁ কর্ণ মোটনি বছরেশে বছনংট্রে হুঁ ফট্ ফট্ ওঁ হঃ এস এস ক্ত কৃত্ত ছক ছক হুঁ ফট্ নমঃ। মানবগণ ক্তেও আরক্ত-লোচন হইয়া এই মন্ত্র পাঠ করত মারণ, পাতন, মোহন বা উচ্চাটন কার্য সম্পাদন করিতে পারি-বেন। এই কর্ণমোটা নামক মহাবিদ্যা সর্ক্রেশের রক্তিন।

नाना विस्ता।

चर्ना यहतानवनमाध्येष्ठ भरकानव बनिय। नांकि अवर खनरात यथारतरण यात्र मध्यत्र करत । ক্ৰদ্ৰসাধক জপহোম পৰায়ণ ইইয়া রণাদি উপন্থিত हरेल भक्क वर्गिक एक वा केकांक्रेन क्रिएव। হাদয় হইতে কওদেশে পায়ু নামক বায়ুকে সঞা-বিভ করিলে শত্রুপণের জ্বর দাছ এবং মার্থ কার্য্য শম্পাদন হয়। কঠোন্তব রসনামক বাম ভারা সান্তিক পৌষ্টি ও দিব্য রসকার্য্য সম্পাদন করিবে, জ্ৰ হইতে নাগান্তিক পৰ্য্যন্ত গন্ধ নামক বাহু ছাহা স্তম্ভন ও আকর্ষণ হয়। মন গলোলীন হইলে নিশ্চর স্তম্ভন হয়, তাহাতে কোন সংশয় নাই। সাধক এইস্কাপে স্তম্ভন ও কীলনাদি ,নিশ্চয়ই সম্পন্ন করিবেন। চিত্তঘণ্টা করালী সুমুখী সুমুখী রেবতী ও ছোর। বায় চক্রে তেজোমধ্যে সংস্থিত। e्राथमा अहे (नवीशान्त्र छेळाछेन माधनार्थ कर्फना ক্রিবে। সৌম্যা ভীষণী জয়াবিজয়া অঞ্জিত। অপরাজিতা মহাকোটী রোন্তা শুক্কারা প্রাণ্ इत এই मन्छ रम्बी जनहरू व्यक्ति हानित। दिक्रशाकी भन्न सिवान अवर व्याकार्य माजुननमरहाती জাতহারী দংগ্রালা শুক্ষ রেহতী পিপীলিকা পুষ্টি-

হ্রামহাপৃষ্টি প্রবৰ্দ্ধনা ভদ্রকালী স্বভদ্রা ভদ্রভীমা इडिका दिता निर्धुता निरा निकम्ला शनिनी এই দ্বাত্তিংশনাতৃগণ চক্রমধ্যে যথাক্রমে আট আটটী করিয়া অবস্থিতি করেন। যেমন সূর্য্য এক এবং এক শক্তি বিশিষ্ট ও চন্দ্ৰ এক এক শক্তি সম্পন্ন এবং মহীতলে একমাত্র জল ভূতভেদে নানারূপে প্রতিপন্ন হইতেছে, অর্থাৎ এক জন নানা বস্তু গত হইয়া নানা রসরূপে প্রতিভাত হই-তেছে, তজ্রপ এক প্রাণবায়ু ভূতপঞ্জরে অর্থাৎ দেহে পঞ্মগুলে বাম দক্ষিণ ভেদে দশপ্রকার প্রতিপন্ন হয়। তত্ববস্ত্র বেষ্টিত বিন্দুরূপ প্রমামৃত ব্রহ্মাণ্ডস্বরূপ কপাল ছারা পান করিলে পঞ্চবর্গ বলবশতঃ যুদ্ধে যেরূপে জয় লাভ হয়, তাহা শুবণ কর। অংখাক চটত প্যশ্তাদিম বর্গ উক্ত चारह; हे के थ ह र्घ थ क तथ मि्छी । करण निर्मिष्ठे; 🕏 🕏 शक्ष छ न व ल न ज्ञीय वर्ग; এ ঐ দ বা চ ধ ভ ব হ চতুর্থ বর্গ ও ও ও অং অঃ ঙ ঞাণ ন ম এই পঞ্চ বর্গ জানিবে। মানবগণের অভাদেয় কাষ্যে উক্ত পঞ্চহারিংশং বর্ণ বাল কুমার যুবা বৃদ্ধ ও মৃত্যু নামে নির্দিউ আছে; উহা আলুগীড়াশোষক, উদাদীন ও কালম্বরূপ জানিবে। কুত্তিক প্রতিপৎ ও মঙ্গলবারযোগ আপ-নার লাভজনক। মঙ্গলবার ষষ্ঠী তিথিতে মধা নক্ষত্র যোগ পীড়ানায়ক, মন্ত্রণারে একাদশা তিথিতে আর্দ্র। নক্ষত্রোগ মৃত্যুজনক, বুণবারে দ্বিতীয়া তিথিতে মঘানক্ষত্রে লাভ, বুধবার সপ্রমী তিমিতে আদ্রানক্ষতে হানি, বুধবারে ভরণী ও শ্রবণা নক্ষত্রে কাল ঐরপ জানিবে । বুহস্পতি-বারে তৃতীয়া তিথিতে পুর্বকন্ত্রণী দক্ষত্রে লাভ হয় ; বুহস্পতিবারে অউমী তিথিতে ধনিষ্ঠা ও আদ্রা নক্ষত্রে এবং উক্ত বারে অল্লেষা ও ত্রয়ো

দশী তিথিতে মৃত্যু হয়; শুক্রবারে চতুর্থী তিথিতে পূর্ণভাত্রপদ নক্ষত্র যোগ হইলে শ্রীসম্পাদন করে, শুক্রবারে নবমী তিথিতে পূর্ববাঘাটা নক্ষত্র হইলে যমদণ্ড ও হানিজনক হয়। শনিবারে দশমী তিথিতে অল্লেষানক্ষত্রযোগ পীড়াকর হয়; শনি-বারে পূর্ণমাতিথিতে মহানক্ষত্র যুক্ত হইলে মৃত্যু-কর হয়।

ভিথিযোগ।

পূর্ব্ব উত্তর দিক অগ্নি নৈঋত কোণ দক্ষিণ দিক ও বায়ুকোণে প্রতিপদ ও নবমী প্রভৃতি তিথিতে চন্দ্রজ্ঞাদি দৃষ্ট হয়; যথোকরাশির সহিত গ্রহাদি দৃষ্ট হইলে দিদ্দিলাভ হয়। মেধাদি রাশিচতুষ্টয় ও কুম্বরাশিতে পূর্ণাতিথি হইলে জয় হয় এবং অন্যরূপ যোগ হইলে মৃত্যু হয়। সূর্য্যানি গ্ৰহ রিজা এবং পূর্ণতিথি যথাক্রমে ব্যবস্থিত করিবে। রণবিষয়ে সূর্য্যগ্রহে নিস্ফল হয়, সোমে ভঙ্গ এবং প্রশমন হয়; কুজে কলহফল জানিবে; বুধে কাম, বৃহস্পতি জয়কারণ, শুক্রগ্রহ মণি-भाषिकाापि लाज्यस्कृत धवर गरेनम्परत द्रश्ज्य হয়। পিঙ্গলাচক্রে সূর্য্য নক্ষত্রসকল ক্রমে মুখে त्मरक ननारिक गारतारमरमे शरक **छे करमर**म अवश চরণে দিবে। পাদস্থ ত্রি শ্বন্ধি মৃত্যু পক্ষে ত্রি নক্ষত্রে অর্থনাশ, মুখন্থ নক্ষত্রে পীড়া,শিরন্থে কার্য্য নাশ, কুঞ্চিস্থিত নক্ষত্রে এ সকল হয়।

সম্প্রতি রাহ্চক্র কীর্ত্তন করিতেছি, প্রবণ কর। পূর্বিদিক হইতে নৈথাতি কোণে যাইবে, নৈথাত হইতে উত্তরে, উত্তর হইতে আমি কোণে, আমি কোণ হইতে পশ্চিমে, পশ্চিম হইতে ঈশান কোণে, ঈশান হইতে দক্ষিণ, দক্ষিণ হইতে বায়ু, বায়ু হইতে পুনর্বার উত্তরে হইবে। রাহ্পুষ্ঠে চারিদণ্ড ভোগ করে উহাতে রণে জয় হয়, সম্মুধে

মুড়া হয়, ছে প্রিরতমে ! রাহ্ড ডিথি ভোমাকে বলিভেছি, শ্রবণ কর ৷ প্রথমে অগ্নি কোণ হইভে नेनान भर्गास भृतिमा, भृतिमाद कृष्णाचेभी दहेरक রাহুর দৃষ্টি ভরাবহ, ঈশান, অমি, নৈশ্ভিও বাযু কোণে ফণিরান্তক, পূর্ব্বাদি দিকে মেঘাদি রাশি যেছলে সন্মুখে সূর্য মৃত্যুক্ত জনক, কৃষ্ণপক্ষের তৃতীয়া, সপ্তমা, দশমী ও চতুর্দশী এবং শুক্ল পক্ষীয় চতুৰ্থী, একাদশী ও পূৰ্ণিমা ডিখি বিষ্টিভদ্ৰা, অগ্নি ও বায় কোনে পূর্ণিমা। অক চটত প যুশ বর্গ সূর্যাদি গ্রহ রূপ, গুঞ্জ উলুক শোন পিন্দল কৌশিক সারস ময়ুব ও গোরক্ষু এই কয়েক পক্তি-গণ যথাক্রমে উহাতে নির্দিষ্ট আছে। প্রথমে উচ্চাটন কার্য্যে ভ্তাশন মন্ত্র দারা বলবহোম কর্ত্তবা ও বশীকরণজ্ব ও আকর্ষণ বিষয়ে প্রয়োগ অমুষ্ঠান করিলে দিছি হয়, শান্তি ও প্রীতি বিষয়ে পুষ্টি ও বশাদি িষয়ে বৌষট্ মন্ত্ৰ বিহিত মারণ কাৰ্যে, হুমন্ত উক্ত প্ৰীতি সমাক্ নাশ বিদেষ ও উচ্চাটন কাৰ্য্যে কট্মন্ত বিহিত লাভ ও দীপ্ত্যাদি কার্য্যে বহট এই ছয় প্রকার মন্ত্র জ্বাতি জানিবে।

সম্প্রতি মহারকা বিধারিনা ওম্বরী স্থাপনা বিলাব। মহাকালা চণ্ডী বারাহী ঈশ্বরী স্থাপনা ও ইন্তাণী এই সকল ওম্বি যাহার শরীরে সম্বন্ধ থাকে, তাহাকে রক্ষা করে। বলা অতিবলা ভীরু মুনলী সহদেবী জাঙী মল্লিকা যুখী গারুড়ী ও ভূঙ্গবাজ এই কয়েকটা চক্ররপা মহোষধী ইহা ধারন করিলে বিজয়াদি লাভ হয়। হে মহাদেবি! এই সমস্ত মহোমবি গ্রহণে উদ্ভা হইলে ভভ্নায়িকা হয়। মৃতিকা খারা স্থলিকণ লক্ষিত ক্ষার প্রস্তুত করিয়া তাহার পাদতলে ফ্রীর ভক্ত ক্ষার প্রস্তুত করিয়া তাহার পাদতলে ফ্রীর ভক্ত বিশ্বাহত প্রদেশে ব্লাকার্তিক। ভাহরণ

করিয়া মাতৃমুগল ওঁনমো ম্ছালৈরকার বিকৃত দংস্টোগ্রহ্ণায় পিললাকার কিশ্রাপ্রথমার বৌষট্। এই মন্ত্রারা মাতৃমুগল বোজিত করিত কর্মপ্রজা করিয়া শাস্ত্র সমূহ ভাতিত করিবে।

ट्रिनि ! अधुन। त्रशंकि विषदः विक्रश्रधकः অগ্রিকার্য্য কীর্ত্তন করিব। শ্রশানে নিশাকালে কাঠাগ্নিতে নগ্নর মুক্তশিথ ও দক্ষিণাত হইয়া নরমাংল রুপের বিষ্ঠাতৃষ ও অক্থিও মিঞিড করিয়া তথারায় শক্রনাম উল্লেখে ওনমো ভগৰভি टकीमाति नन नन नानम् नानम् प्रोदनिक व्यक्तः মারয় মারয় সহসা নমোস্ততে ভগবত্তি বিদ্যেশাহা এই মন্ত্র উচ্চারণ করত অফৌত্রর শতুসংখ্যক ट्टाम कतित्व करकान मत्या भव्यवस्य स्टेश यात । ওঁবজ্ঞকার বজ্ঞভুঞ্জ কপিল পিঙ্গল করাল বদন উৰ্দ্ধকেশ মহাবল ব্ৰহ্ণমুখ তড়িভিছৰ মহায়ৌন্ত দংষ্ট্রোৎকট কহ করালিন্ মহাদৃড় প্রহার বিকেশ্বর मिडवक देनम् अवाह भगनहत अरहाहि छन्वन महा-বল পরাক্রম ভৈরবে। জ্ঞাপয়তি এত্যেছি মহারৌজ দীর্ঘলাকুলেন অমুকং বেষ্টয় বেষ্টয় জম্ভন্ন ক্লয় धन धन रिवटबङ्किए। धारे मञ्ज व्यक्तिस्मि मञ জপ করিলে পটেদর্ব কর্মাকারি **হনুমান্দর্দর্শন হ**য় এবং তাহাতে শক্ত দৈয় ভক্ক হয়।

ইত্যালেকে আলিমহাপ্রাণে যুক্তরাণ্যে নানাচক্রনামক ইট্ডেকারিংশন্থিক্তিক্য অধ্যায় !

সপ্তচন্বারিংশদধিকদিশততম অধ্যায়।

নক্তন নিৰ্ণয়।

ঈবর বলিলেন, শুভাশুভ জ্যানের নিমিত শ্বহাত্মক পিও বলিব। বে সূর্ব্য মানিবেন, তথাবি শ্বহু তার মন্তবে মূর্বে এক নেত্রে ধর হক্ত ও পাবে চতুউন্নগ্রে পক এবং জাসুতে পঞ্চ আরু বৃদ্ধিকর किसी कतिरंग। मेखरके बीकेंगिक भंगीत्रम् बस्ता-ट्यार्ट ए विद्विपर्दा के छ । अधिकार्ट वार्ट ए মেব্যসংগ্ৰেই ইটো বঁধ বঁজাৰ ওঁ ভাষায়ত্বী পাদে ভাষাৰ কার্নিব। কুস্তাব্দিক মকতাগণ অভিত করিয়া मुद्दा कुछ बिक्रेक नीयक क्लब्स्मनातक भुद्धानि সংস্থিত ভাতত্বিজনক জানিবে। জয়াজয় বিবেক বোধৰ্ক ফণিয়াছ একৰে বলিব। অন্তাহিংশভি विष्णू निधिश किन किनेत्री केंद्रिशा विकाश कतिएव. আদপ্তর চারিটি থক এবং উধার রেখাপাত করিবে. পরে থে ক্লাফে ব্যক্তিবেনি, ঐ ব্যক্ষণনিম্ভাকে বিজ্ঞাস ক্রিয়া ভালাদি সপ্তবিংশতি ঋক বথাক্রামে অন্নিষ্ঠ কৈরিবে। বিক্ত ও উন্নীদি গগু স্থানে গড बाक एरेटेन यूटी पूर्व एका एत, केटब स मधारेनटम मल नेकरखें चंत्र रेप्न, नक्य छेरप्रच रहेरेंस शृंखा ख कारलां कारेनित्र, शक कंटिरेंग्लय रहेटल ट्यांश পুরুষ দক্ষের করে, পুরুষ্টে ঋদ হইলে কীর্তি नारु देव अर्थ बोध कर्फ़्क में के मक्त ज मुट्टा दव कोंबिए ।

পুনর্বাল স্থান বাবিলেন, জাঁগ প্রকার রবি
রাত্ থল ববিধ প্রবণ কর। রবি শুক্র বুধ সোম
শনি র্হস্পতি মঙ্গল ও রাত্ এই কয়েকটি প্রত্
যানার্জ্যানী হরেন। শনি রবি ও রাত্ প্রতদেশে করিরা যুক্ত দ্যুতক্রীড়া বা পথ গমন করিলে
জয়লাভ করে। রোহিশী উত্তর জার অধাৎ উত্তর
কল্পনী উত্তরাঘাঢ়া ও উত্তর জারপদ এবং মৃগশিরা এই পঞ্চ নক্ষত্র স্থির অধিনী রেবতী স্বাতি
ধনিষ্ঠা শভভিষা এই পঞ্চমক কিপ্র, যাতার্থী
বাজি উক্ত নক্ষত্রহোজিত করিবে, মসুরাধা হত্তাদ্বা মৃগশিয়া পুণ্যা পুনর্বান্থ এই সমস্ত নক্ষত্র
সর্বাব্যার্থ প্রশাস, জ্যেষ্ঠা চিত্রা বিশাখা পূর্বা-

खग्न चर्वार भृक्षकज्ञनी भृक्षावाङ्ग भृक्षणाज्ञनम কৃতিকা ভরণী মধা আছো অপ্লেধা এই কয়েক नक्छ शक्ति कन्नात्रक। चारत विशेष चित्र शक् । गोदाविषात्र किय मकद धनछ, स्मीका-গ্যাৰ্থ মৃত সক্ষত্ৰ উত্তাকাৰ্য্যে উত্তানক্ষত্ৰ এবং দাৰুণ কার্য্যে দারুণ নক্ষা গ্রহণ করিবে। जारबाबुबानि विनादिक्षः। कुलिका सप्तेश कारक्षश বিশাখা হবা মূলা পূৰ্বাত্তয় অৰ্থাৎ পূৰ্বফল্পনী পূৰ্ব্বাষাঢ়া পূৰ্বভাত্ৰপদ এই কয়েক নকত্ৰ অধো-বক্ত ইহাতে অধোমুখে কার্য করিবে; অর্থাৎ কুপ ভড়াগাদি খনন বিদ্যাকার্য্য ভিষকজিয়া ছাপম বৌকা ও দ্যুতাদির অমুঠান করিবে। রেবড়ী অখিনী চিত্রা হস্তা স্বাতী পুনর্বাস্থ অসু রাধী মুগশিরা জ্যেষ্ঠা এই নয়টি নক্তে পার্থ মুখ ইহাতে রাজ্যাভিষেক গজ ও অধের খারীম গৃহ প্রাদাদ প্রাকার কেত্র তোরণধ্যক চিহ্ন ও পতাকা এই সকল কার্যা সম্পাদন করিবে। রবিবারে দাদশী তিথি দগ্ধা সোমবারে একাদশী মঞ্লবাবে দশ্মী বুধবারে তৃতীয়া বুহস্পতিবারে বটী শুক্রবারে দ্বিতীয়া এবং শনিবারে সপ্তমী তিথি **इट्टा नक्षा एक्ष । अनलत कि**्रुकत कीर्श्वन कित्र ভেছি। দিতীয়া দাদশী সপ্তমী রবি মঙ্গল ও শনিবারে এই ছয়টি ত্রিপুক্ষর এবং বিশাখা কুত্তিকা উত্তর কল্পনী উত্তরাধায়। পুনর্বহন্ত পূর্বভাত্তপদ এই ছয় নকত তিপুকর। লাভ হানি কর ছদ্ধি भूख समा नके खरे विनके अहे महन्त क्रिश्चन स्हेश। নক্তে গত ফল জানিবে, অবিনী ভর্ণী আগ্লেহা পুরা স্বাতি বিশাখা ও প্রবণা এই সপ্তদৃঢ় চকু शक मणिक मर्चन करत् धारे नमल नकरता वाता করিলে দুর্গত ব্যক্তিরও পুণ্য ভূমিতে আগমন रत्र, चाराण्यत्र वर्षायः शृक्षाराणः ८ উखनाराणः

রেবতী চিত্রা ও পুনর্বায় এই পঞ্চ ঋকে নির্গত इहेरम कागमन इत, कृष्ठिका ताहिनी मृशिनहा भूक्षकहानी **উ**ढंद कहानी मधा मुना (कार्डा ज्यूताश ধনিষ্ঠা শতভিষা ও পূৰ্বভাদ্ৰপদ এই সমস্ত সকলে গ্রনকারি ব্যক্তির পুনরাগ্যন হয়, হস্তা উত্তর ভাদ্রপদ আনু পূর্ববাধানা ও উত্তরাধানা এই কয় নক্ষত্তে নতার্থ ও দৃষ্টিগোচর হয় এবং সংখাম चर्टेना इस ना। शून स्वीत नक्त व सर्था रवज्ररभ গ্রু খাকে ভাহা বলিতেছি, প্রবণ কর। বেব-তীর শেষ চারি দ্রু ও অধিনীর প্রথম চারি দণ্ড এই উভয় মিলিয়া প্রহরমাত্র কাল যদ্পূর্ব্য কর্মজন कतित्व बाह्मयात बल्ख चिकाठपूक्षेत्र ७ यथात আদি ঘটিকাচতৃষ্টর এই উভয়াতন যাম মাত্র কাল, দিতীয় গণ্ড, হে ভৈরবি ! অনন্ধর তৃতীয় গও প্রবণ কর ৷ জ্যেষ্ঠার অস্ত নাড়াচতুটয় ও মুলার আদি লাজচতুষ্টর এই বাম মাত্র কালে डे श्रुत्र श्र कामित्व यनि वाशनात कीवन हेव्हा करत. ভাহা হইলে উহাতে শুভকার্বোর অসুষ্ঠান করিবে না এবং উক্তকালে শিশু জন্মিলে উহার পিতা ও মাতার মৃত্যু হয় ।

> ইতাাথেয়ে আদি মহাপ্রাণে নক্তমির্ণ লামক স্থান্ত্রিংশদ্ধিক্বিশ্ভতম অধ্যায়।

অফটভদ্বারিংশদধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

माना रहा।

ক্ষমন বলিলেন, বিদ্ধুত্তে তিন ঘটিকা শূলে পক্ষ ঘটিকা পশু ও অতিগণ্ডে ছয় ছয় দশু ব্যাঘাত ও বক্স বোদে নয় দশু পরিখ ব্যতিপাত ও বৈধৃতি বোগের সমস্ত পরিত্যাগ করিবে, ইহাতে কদাচ বাত্রাযুদ্ধদি করিবে না। হে দেবি! মেষাদি

রাশিযোগে এহগণ হারা গুড়াওড় ক্লান বুলিডেছি व्यदन करा। इस्त ७ श्रुक संसाध ना इत्राम श्रुक भारक रायन, यक्त मृश्य भनि **७ हासू विकी**ह रहेरल एकानाम क्लाफक हरेरल सक क्लानाज रायन, यथन मुर्वा भनि सम्रत श्राप्त नुस हस्त ध्वर রাত্থত তৃতীয়ক হন তথন উৎকৃষ্ট কল প্রদাস करतन, दूध ७ ७ क रुडूर्थ इरेटन ७ व कन बाब করেন। অবশিষ্ট অন্য সমস্ত গ্রন্থ চতুর্থ চ্টুলে ভয়াবৰ হয়েন, বৃহস্পতি শুক্র বৃধ ও চন্দ্র ব্ধন পঞ্মস্থানে থাকেন, অভিলয়িত সিদ্ধি হয়, মৰি চক্ত শনি মঙ্গল ও বুধ এছ যদি মনাশির ব্রু शांत थारकन, ७७कल मोधक रामन, वर्कक ब्रह-স্পতি ও শুক্র ত্যাগ করিবে, সপ্তম স্থানে স্থিত সুৰ্য্য শনি মঞ্চল ও রাভ্ গ্রহ হানিজনক ক্লানিতে, বৃহস্পতি শুক্র ও বুধ সপ্তমন্থ হুইলে অখের ভারৰ हरतन, तूथ धावः एक कार्येय कारन श्रीकरन एक कल मान करत्रन अवर अविभिन्ने अन्य ममस्य ग्रह অফীন স্থানে হানিজনক হয়েন, বুধ ও শুক্র নবম স্থানে স্থিত হইটা শুভ ফল প্রদান করেন, অপর গ্রহ সকল নক্ষত্বনে থাকিলে হানিজনক হয়েন দশমস্থ ভ্ঞ ও ভাকর লাভন্সনক জানিতে, শ্নি यकत बाक् हत्य ७ वृथ मनम स्थापन शाकिरक का वह हरात्रन, मणगण्ड छन्न शतिकाश कित्रत्व, अका-দশ স্থানে সমস্ত এইই শুভাদায়ক হয়েন, বুধ ও শুক্র বাদশন্থ প্রশস্ত এবং বাদশন্থ অবশিষ্ট সমস্ত গ্রহ পরিত্যাগ করিবে। দিবা ও রাত্রিতে যালে क्रांनि (वक्रार्थ इरः, वनिदछहि । शीन (सर्व विक्र ও বুব রাশির মান চভূলাড়ী কর্কট সিংহ কল্ঞা s জুলা রাশির পরিমাণ ছয় দণ্ড করিয়া নির্দিষ্ট আছে এবং বৃশ্চিক ধনু মকর ও কুন্ত রাশির মান शक्ष्यिक कानित्न, त्य त्राभित्छ সृश्य छेनिछ **ह**हे-

ভ্ৰমন, তদাদি করিয়া উক্ত প্রকার রাশি পরিমাণে
দিখারাত্রি হবৈ পাবং দৌষাদি রাশা বথাক্রমে
চরিছিত ও ব্যাল্পকরিপে ব্যবহিত আছে, অর্ধাৎ
কর্মটি নকর ভূশা ও নেব চররাশি চরলয়ে জয় ও
শুভাশুভ কান্য কার্যার অনুষ্ঠান করিবে। ব্য
দিংহ কৃষ্ণ ও বৃশ্চিকহির রাশি হইতে বাত্রা
করিলে শীক্রা শুমাগম হয় না রোগার্ত হইলে কদাচ
মুক্ত হর না। মিখুন কতাা মীন ও ধলু রাশি
খাল্লিক এই সকল বিস্বভাব লগ্ন সর্বে কার্য্যে সভত
শুভ জনক, ইহাতে যাত্রা বাণিজ্য সংগ্রাম বিবাহ
রাজ দর্শনাদি কার্যোর অনুষ্ঠান করিলে বৃদ্ধি জয়লাভাদি সিদ্ধি হয়। অখিনী ও পূর্ববাধাতা নক্ষত্রে
বিদি বৃষ্টি হয় একরাত্রকাল মাত্র বর্ষণ করে। ভরণী
নক্ষত্রে বৃষ্টি আরম্ভ হইলে এক পক্ষ কাল যাবৎ
বর্ষণ হয়।

ইতাপ্রেমে আদিমহাপ্রাণে যুদ্ধস্থার্থবে নানাবলনামক ক্ষয়চন্ত্রাবিংশদ্ধিকন্তিশততম অধ্যায়।

ঊনপঞ্চাশদধিকদ্বিশততম অধ্যার।

(कार्ड ठका

ঈশর বলিলেন, অধুনা কোটচক্র কীর্ত্তন করিব তেছি, প্রবণ কর। প্রথমে চতুরত্র পুর অঙ্কিত করিয়া তথ্যগো পুনর্বার চতুরত্র পুর লিথিয়া তাহাতে পূর্বাস্য মেধাদি অঙ্কিত করত পূর্বভাগে কৃত্তিকা, অগ্রিকোণে অক্লেষা, দক্ষিণে ভবণী, নৈখতে বিশাখা, পশ্চিমে অমুবাধা, বায়ুকোণে শ্রবণা, উত্তরে ধনিষ্ঠা এবং ঈশানকোণে বেবতী নক্ষত্র বিন্যাস করিয়া বাহ্য নাড়ীতে বোহিণী, পুষ্যা, কল্পণী, স্বাতি, জ্যেষ্ঠা, অভিজ্ঞিৎ, শতভিষা ও ক্ষেম্বনা এই কট ক্ষক্ষ বিন্যাস করিবে; ক্ষন-

स्त्र ८काछेमधान्य माङ्गीत चक्रास्टरत मूर्वागिटक स्था-শিরা, ভাহার অগ্নিকোণে পুনর্বাস্থ, মকিণে উত্তর-क्क्यी, देवसरक किछा, शक्तिस्य मुला, यागुरकारन **উत्तर्त्राधाला, ं উत्तर्द्र श्रृद्धालाल अन्। ज्ञानादकादि** ব্যেবভীনক্ত বিন্যাস করিয়া কোটাভাত্তর্গত অই ঋক্ষসমন্বিত উক্ত মাড়ীর কোটের, কোটরমধ্যে প্তত্ত্ত্তীয় অক্সিড করত আন্ত্রণ হস্তা, পূর্ববাধাঢ়া ও উত্তরাধাঢ়া এই নক্ষত্তচভূক এবং ইওরাতিক বিনাস্ত করিবে। এইরূপে ছুর্গ বিন্যাস করিয়া विङ्क्ष्यामार्ग निक्लानारुमात काम निर्दान করিবে। আগস্তৃক যোদ্ধা অকবান্ হইলে ফল भानी हात्रन ; दिकांचे मरश एउडा वर्षत अक्कयुक्त হয়েন, তাহা হইলে জয় লাভ হয় এবং মধ্যন্তি আগস্তুক ব্যক্তিদিগের ভঙ্গ হয জানিবে। প্রবেশ নক্ষত্ৰ ছারা প্রবিষ্ট এবং নির্গম নক্ষত্ৰুছারা নির্গত হইবে ৷ শুক্র বুধ ও মঙ্গল যথন সকল ঋকান্তে থাকিবেন, তথন স্বপক ভঙ্ক ও আগস্তাকের জয় হ্য। যথন প্রবেশনক্ত্রচভূকে সংগ্রাম আরম্ভ क्तिरव, उथन निक्तंत्र क्र्यमिक इहर्रव, अविषय কলাচ বিশ্বিত ছইবে না।

> ইত্যাথেরে আধিমহাপ্রাণে যুক্তরার্ণতে কোটচক নামক ঊনপঞ্চাদ্ধিকবিশতভম অধ্যার।

পঞ্চাশদধিকদ্বিশতত্ব অধ্যায়

অৰ্ঘ্য কাও।

ঈশ্বর বলিলেন, সম্প্রতি অর্থ্যমান বলিব।
বে সময় উদ্ধাপাত ভূমিকম্প বজ্ঞাবাত বা দিকদাহাদি অমঙ্গল ঘটিবে, ভাহার মাদের প্রতি লক্ষ্য
করিবে। ষদি ঐ সকল ঘটনা চৈত্রে মাদে হয়,
অলক্ষারাদি সংগ্রহ করিয়া অর্থ্যকাও সম্পাদন

করিবে। যদি উহা ছয় মালে করে, ভাছা হইলে চতুর্প্রণ করিতে হইবে এবং বৈশাখা মালে ঘটিলে ঐরপ কর্ত্তব্য; কিন্তু অউম মালে করিলে সমস্ত সংগ্রাহ বড় গুণ করিতে হইবে। ক্রৈয়েও আবাচ় মালে ঘটিলে বব পোগুম ও ধান্য ছারা অর্য্যকাও করিবে। প্রায়ণ ও ভাত্তমালে উক্ত ঘটনা হইলে হতে ও তৈলাদি ছারা, আমিন মাল হইলে বক্ত ও ধান্য ছারা, কার্তিকে ঘটিলে ধান্য ছারা, অগ্রাহাণ মালে ক্রীত ধান্য ছারা, পৌষমালে ক্রুম ও গন্ধাদি ছারা, মাঘ মালে ধান্য ছারা, ফান্তুণ মালে ক্রিবে।

ইত্যাগ্ৰেয়ে আদিমহাপুৰাণে অখ্যকাও নামক পঞাদদাধকবিশততম অধ্যায় ৷

একপঞ্চাশদধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

মগুল।

ঈশ্বর বলিলেন, বিজয়ার্থ চারিপ্রকার মণ্ডল বলিব। হে ভদ্রে! কৃত্তিকা মথা পুষ্যা পূর্বকল্পণী বিশাথা ভরণী ও পূর্বভাদ্রপদ নক্ষত্র, আয়েঃমণ্ডল তাহার লক্ষণ বলিব। যদি ইহাতে চন্দ্রসূর্যোর বেইন বা বায়ু প্রচণ্ডরূপে প্রবাহিত হয়, ভূমিকম্প বজাঘাত চন্দ্রসূর্য গ্রহণ ধুমজ্বালা দিগুদাহ কম্প বজাঘাত চন্দ্রসূর্য গ্রহণ ধুমজ্বালা দিগুদাহ কম্পেবজাঘাত চন্দ্রসূর্য গ্রহণ ধুমজ্বালা দিগুদাহ ক্রেপ্রস্থান রক্ষর্তি উপতাপ পাষাণপত্তন হয়, তাহা হইলে মানব নেত্ররোগগ্রস্ত ও অভিনারাদি রোগগ্রস্ত হয় এবং অগ্রিপ্রবল গোদকল অল্পক্ষীরা বক্ষ সকল ব্যর পুল্পফল শস্যহানি ও ব্যরস্তি হয়; প্রজাগণ প্রপীড়িত ও ক্ষুধা হয় এবং দিল্পুদেশীয় ব্যুনাতীরস্থ দেশ গুর্জক দেশ ভোজ বাহ্লিক কালক্ষর কাশ্মীর ও সপ্তম উত্তরাপথ এই সমস্ত

ट्राटम छेद्रभाक मर्गम हरेटम निमके क्या। रंखा চিত্রা মধা স্বাভি মুগশিরা পুনর্বার উত্তর্মস্ক্রণী ও व्यक्षिती मक्षरता यनि किंदू छेर शांख 'पर्वेमा एम. ভাগা বায়ব্য বলিয়া নির্দিউ জানিবে; ভাগতেজ প্রজাদকল নতথর্ম হাহাভূত বিচেতন হয় এবং **ডাহল কামরূপ কলিক কোশল অধোধ্য ও व्यवस्थी** काक्ष ७ अझ करमम नके हरा। अहमरा मुना পূৰ্ববাধাঢ়া বেবতী শতভিষা ও উত্তরভাক্রণদ নক্ষত্রে যদি কোনরূপ উৎপাত ঘটে ভাছা ধারুণ্ नारम छेक हहेरव अवर शामकन वहकी ब्रम्भी व्रम्भी ब्रम्भी ब्रम्भी ब्रम्भी ब्रम्भी ब्रम्भी ब्रम्भी ब्रम्भी व्रम्भी व्यम्भी বৃক্ষমন্ত বহুপুষ্ণাললা, মেদিনী বহুশালা, ধান্য উচিত মূল্য, হুভিক্ষ ও আরোগ্য হয়: কিন্তু নরেন্দ্রগণের পরস্পর দারুণ সংগ্রাম উপস্থিত হয়। टकार्छा, ८वाहिनी, चलुताश, व्यवना, श्रीकी, উटরাঘাঢ়া ও অভিজিৎ নক্ষত্রে यनि किছু चर्টना হয় তাহা মাহেন্দ্ৰ নামে নিৰ্দিষ্ট। তাহাতে প্রজাগণের উন্নতি, সর্ববোগরহিত, রাজগণের পরস্পর সন্ধি, স্থাভিক্ষ পৃথিবীসম্বন্ধীয় সমুদায় 🤝 হয়। গ্রাম চুইপ্রকার মুধ ও পুছত্কর চল্র রাভ্ ও আদিত্য যদি এক রাশিতে অববিতি করেন, তাহা হইলে তাহা মুধগ্রাম লানিবে এবং বাসিত্তে थाकिटन भूळ दना यात्र। मृत्यात्र भक्षम्म शक्य যথন চন্দ্রমার স্কার হয়, তথন তিথিচ্ছেদ প্রাপ্ত হইলে তাহা সোমগ্রাম নামে নির্দিউ হয়।

ইত্যাধেরে আদি মহাপুরাণে মুক্করাণ্যে মণ্ডলনামক একগঞাশদ্ধিক বিশত্তম অধ্যায়।

দ্বিপঞ্চাশদ্ধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

ঘাত চক্রাদি।

त्रेषद्र बाजित्नन, शृद्धीमि-मिरक व्याकाद्रीमि सन

আন্ধন্ধিশ ক্রমে লিখিয়া চৈত্রাদিচক্র অমণ নিমিত ক্রতিপং পূর্নিয়া ত্রেয়াদশী চতুর্দ্দশী অইমী ও সপ্তমী তিথি এবং পুমরায় প্রতিপদাদিরপে বাদশ তিথি হইবে। চৈত্রচক্র সংস্পর্শ হইলে জয় লাভাদি হয়, বিষমে শুভ ও সমে অশুভ জানিবে। যুদ্ধকাল উপছিত হইলে যাহার নাম গুরু মাত্রারড় এবং আদিত্য শব্দসূক্ত হয়, ভীষণ সংগ্রামে সদাকাল তাহারই জয়লাভ হয় এবং যে যোদ্ধার নাম ব্রস্থ হয়, সে অনিবারিত হইয়া কালকবলে পতিত হয়। প্রথম আদিছ দীর্ষ বিতীয় মধ্যে দীর্ঘ অস্তক একলে নিশ্চয় মধ্যভারা প্রথমান্ত ছই হয়। পুন্র্বার যেন্দ্রলে অন্তে ও আদিতে স্বরারড় দৃষ্ট হয়, সে স্বলে ব্রস্তের ময়ণ দীর্ঘের জয় হয় জানিবে।

অধ্না থক পিণ্ডাত্মক নরচক্র বলিব, প্রাবণ কর। প্রথমে প্রতিমা চিত্রিত করিয়া পশ্চাৎ থক নেত্রন্থয়ে স্থই হস্তদয়ে থক চতুইটয় কর্ণে স্থই হৃদয়ে পঞ্চনংখ্যক পাদদ্বয়ে ছয় লক্ষ বিভাগ করিবে। নাম ও থক ফুট করিয়া চক্র মধ্যে বিনাস কর্ত্তব্য, নেত্রে শিরে দক্ষ কর্ণে দক্ষিণ হস্তে পাদ্বধে হৃদয়ে প্রাবায় বাম হস্তে পুনর্বার গুহে ও পাদ্বয়ে যে থক্কে সূর্য্য শনি মঙ্কল রাহু থাকেন, সেই থক্ষ যদি থাকে তাহা হইলে নিশ্চয় ঘাত হইবে।

জয়চক্র বলিভেছি। অকারাদি হকারান্ত বর্ণ সমস্ত লিথিয়া ত্রোদেশ রেথাপাত করিয়া তির্য্যস্ ভাবে ছয় রেথা অঙ্কিত করিবে। পরে দেশ নয় সপ্ত বাদশ ছয় একাদশ পঞ্চদশ একবিংশতি চারি ও সপ্তবিংশতি এবং অধোদেশে অ ক ভ থ যথা ক্রেমে বিন্যাস করিয়া, আদিত্যাদিগ্রহ নামান্তে সপ্ত ঘারা হত হইলে গ্রহবল জানা জাল্প আদিত্য

শনি ও মকল অয় কারণ হন এবং দোম্য গ্রহ
সন্ধির নিমিত হন। ছয়টি দক্ষিণ ও ছয়ট উত্তর
এই বাদশ রেখা উদ্ধান করিয়া, চতুর্দদশ সপ্তবিংশতি তুই বাদশ পঞ্চদশ ছয় চারি তিন সপ্তদশ
অই নয় এবং অধোভাগে অকটপ এক একটি স্থাস
করিয়া শেষ সমস্ত ঐ রূপে যথাক্রমে বিন্যাস
পূর্বক নামাক্রর কৃতপিও অইবারা ভাগ করিবে।
বায়স হইতে কুরুর অভিশয় উগ্র, কুরুর অপেকা
রাসভ শ্রেষ্ঠ, রাসভ হইতে ব্যভ উৎকৃট, র্যভ
অপেকা কুঞ্জর শ্রেষ্ঠ, কুঞ্জর হইতে সিংহ শ্রেষ্ঠ,
সিংহ অপেকা ঘোটক উৎকৃষ্ট এবং ঘোটক হইতে
উত্ত্র প্রবল ইত্যাদিরূপে বলাবল ক্রানিবে।

ই চ্যাগ্রেরে আদিমহাপুরাণে যুদ্ধজন্বার্ণরে ঘাতচক্র।দি নামক দিপক্ষ'শদ্ধিক দিশতভ্য ফধ্যায় ।

ত্রিপঞ্চাশদধিক দ্বিশততম অধ্যায়।

সেবাচকা।

ঈশর বলিলেন, লাভালাত পরিজ্ঞানার্থ দেবাচক্র বলিব। বিশেষত পিতা, মাতা, ভ্রাতা ও
দম্পতী অর্থাৎ স্ত্রীপুরুষের মধ্যে যে যাহার নিকট
হইতে ফল লাভ করিবে, তাহা এই চক্রে কানা
যাইবে। তির্যুগ্যত আট রেথা ঘারা ভিন্ন উর্দ্ধ
বড়রেখা পাতপূর্বক পঞ্চত্রিংশং কোন্ঠ অল্পত
করত তাহাতে বক্ষ্যমাণরূপে বর্ণবিন্যাস করিবে।
প্রথমে স্বর সমস্ত উদ্ধার করিয়া স্পর্শ বর্ণ অল্পত
করত কর্ণারাদি হকারাস্ত বর্ণ লিখিবে; তন্মধ্যে
হীনাক বর্ণত্রের বর্জন করিবে। পরে সিদ্ধ সাধ্য
স্থানিদ্ধ অরি ও মৃত্যু নামক যথাক্রমে কোন্ট সকলকে গণনা করিবে। তাহাতে অরি এবং
মৃত্যু এই ছুইটি সর্বকার্য্যে পরিত্যাগ কর্ত্ব্যঃ

ঐ সমস্ত কোন্টের মধ্যে মতুপূর্বক নাম **লক্য** कतिरव। यथन चाजाशक मद ममस थाकिरव; তখন তাহারা সকলেই শুভদায়ক হয়। দ্বিতীয় পোষক তৃতীয়ত্ব অর্থনায়ক চতুর্থ আজুনাশকর भक्ष्यक हरेला मुङ्गानायक हता अहेकाल विख. ভূত্য ও বান্ধবাদি স্থানবিশেষে অর্থলাভের কারণ হয় ৷ যেরূপ অকারান্ত উক্ত হইয়াছে, তদ্রূপে অ ই উ এ ও জানিবে। পুনবায ৰগাউক ছদং-স্কৃত অংশক বলিব। অকারবর্গে দেবগণ, ক্বর্গা প্রিত দৈত্যদকল, নাগপণ চবর্গগত, গন্ধবিদকল টবর্গন্থ খিলেণ ভবর্গমধ্যে, রাক্ষ্যসমন্ত প্রর্পে, যবগে পিশাচসমূহ, শরুরে মানুষদকল জানিবে। দেব হইতে দৈত্য অধিক বলশালী, দৈত্য অংশেকা পন্নগ, পন্নগ হইতে গন্ধৰ্ক, গন্ধৰ্ক অপেকা ঋষি. ঋষি হইতে বাক্ষম, রাক্ষম অপেক্ষা পিশাচ পিশাচ হইতে মানুষ প্রবল জানিবে। বলী ব্যক্তি আপন অপেকা চুকলজন ক বর্জন করিবে। পুনর্কার মিত্রবিভাগজ্ঞানার্থ ক্রমশঃ ভাষাচক্র বলিব, প্রাবণ পুর্বাদিক্রমে নামাদ্যকরণত ঋকস্ফুট করিয়া ঋক্ষণ স্থিত সপ্তবিংশতি তারা যথাক্রমে জানিবে অর্থাৎ নামাদ্যকরগত থক হইতে জন্ম-সম্পৎ বিপৎ ক্ষেম প্রভারাধনদা নৈধনা মৈত্রা ও পরমমৈত্রা এই নব তারা চিন বাবে সপ্ত-বিংশতি তারা গণনা করিয়া যাইবে; তথ্যধো জন্মতারা অশুভ, সম্পতারা উৎকৃষ্টা, বিপতারা নিক্ষলা, ক্ষেমভারা সর্বকার্য্যে কুশল, প্রভারা অর্থনাশিনী, ধনদা তারা রাজ্যলাভাদিকারিকা নৈধনা কাৰ্য্যনাশিনী, মৈত্ৰ ভাষা মিত্ৰ নিমিত এবং পরমিত্রা হিতজনক জানিবে। অক্সরূপ ভারাচক্র বক্ষ্যমাণ প্রকারে জানিবে। যাত্রা নাম মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া বিংশক্তি ছারা

ঐ ভাগ হরণ করিবে। **তাহাতে বাহা** শেষ रहेरव, छार। बादा कन कामिरवं; वर्षां अकरमन नाम गर्था धन ७ वन लका कतिरव : हीनमाद्धा व्यक् ও অধিক্যাত্রা ধন জানিবে। ধন নারকের সহিত মিত্রতা ও ঋণ নামকের সহিত উলাসীনতঃ করিবে। মেষ এবং মিথুনের পরস্পার প্রীতি হয়, মিথুন ও সিংহের মিত্রভা, তুলা ও সিংহের महारिमञ, ध्यू व कुरञ्जत क्षेत्रभ मिखरमय। कतिरव না। মীন ও র্ষ পরস্পর মিত্র জ্বানিবে, র্য ও কর্কটের মিত্রতা, কর্কট ও কুল্পের ঐরপ। কন্যা ও র্শ্চিকের পরস্পর তদ্রপ এবং র্শ্চিকেরও মিত্রতা, মীন ও মকরের মৈত্রা, দিংছ এবং কুছের মিত্রতা, ভূলা ও মেধে মহামৈত্রা লানিবে এবং র্ষ ও রুশ্চিক পরস্পর বিশ্বিষ্ট, মিপুন ও ধকুর প্রীতি, মকর ও ককটের ঐরপ, মৃগ ও কুল্লের প্রতি এবং কন্তা ও মীনের পরস্পর ঐরূপ কানিবে। লাভালাভাদিদর্শক দেবাচক্র এই উক্ত হইল।

ইত্যাথেয়ে আদিমহাপুরাণে যুদ্ধলয়াণিরে দেবচেক্রনামক ত্রিপঞ্চাশদ্ধিক বিশ্ভত্ম অধ্যয়ে।

চতুঃশঞ্চাশদধিক দ্বিশতত্ম অধ্যায়।

নানাবল ৷

ঈশর বলিলেন, সম্প্রতি গর্ভনাত বালকের ক্ষেত্রাধিপস্তরপ বলিব। সূর্য্যের গৃহে শিশু নাতিদীর্ঘ অনতিকৃশ অনতিকৃল সমান্ত গৌর পীত বর্ণ আরক্তলোচন গুণবান ও শ্ব হয়। চন্দ্র গৃহোদরে জাত বালক সৌভাগশোলী ও মৃত্নার হয়। মন্দ্র গৃহে জাত সন্তানের বাতাধিক্য ও অতি লুকাদি দোষ জন্ম। বুধগৃহোদ্যে জাত শালক বৃদ্ধিমান্ অভগমানী হয়, বৃহস্পতি সৃহভাত শিশু হভাগ ও অতিশম কোধযুক্ত হয়। শুক্র গৃহোদয়ে জাভ বালক দাভাডোগী ও সোভাগ্যালী হয়, শনৈশ্চর সৃহে কাভবাক্তি বৃদ্ধিমান অভগমানী হয়। সৌম্য লয়ে সৌম্যজন্মায় ক্রুর লয়ে ক্রুর জন্মায়। হে গৌরি! নামরাশিশ্ব দশার ফল বলিভেছি শ্রেবণ কর। সূর্য্যের দশায় হস্তি অথ ধন ধান্য রাজ্য বিপুলা শ্রী ও পুনঃ পুনঃ ধনাগম হয়, চক্রদশায় দিবা শ্রী লাভ কুজদশায় ভূমি লাভ ও হথ বুধদশায় ভূমি ধান্য ও ধন লাভ বৃহস্পতি দশায় গজাখাদি ধন শুক্রের দশায় ধাদ্য পের ধন লাভ, শনির দশায় ব্যাধি প্রভৃতি যুক্ত এবং রাভ্র দশায় স্থান সেবাদি হারা পথ ভ্রমণ ও বাণিজ্য হয়।

বাম নাড়ী প্রবাহে যদি বিষমাকর নাম উল্লেখ হয় তাহা হইলে সংগ্ৰামে জয় হয় ৷ দক্ষ নাড়ী প্রশাহে বাণিজ্য কার্য্যে নিক্ষণা হয়। সম নামক পুরুষ সংগ্রামে নিশ্চয় জয়লাভ করে। শ্চারে জয় এবং বায়ুর ঊর্দ্ধারে রণে মৃত্যুজয় জানিবে। আপনাকে চছুভূজি দশভুজ বা বিংশতি হস্ত শূল খটাক্ষ খড়গ ও কট্টারিকা ধারি আত্ম-দৈন্য কর্তৃক পরাধা_য়খ পরদৈন্য ভক্ষক ভিরবরূপ চিন্তা করিয়া ওঁ হুঁ ওঁ হুঁ ওঁ কেঁ অন্তং মোটয় ভঁচুর্ণায় চুর্ণায় ও শুক্রেশক্রেং মর্দায় ও ভুঁ ওঁ হঃ কট এই মত্তে সপ্তবার ন্যাস করিয়া শক্রেদৈন্যের সম্মুখে অফৌত্তর শত জপ করিবে। ঐ মন্ত্র জপ ও ডমরু শব্দ করিলে শক্রেদৈন্য শব্রত্যাগ ক'রয়া পলায়ন করে। শত্রুদৈন্য ভঙ্গ করিবারঅপর প্রয়োগ পুনরায় বলিতেছি ভাবন কর। উল্ক ও কাক বিষ্ঠার সহিত শাশানান্ধার দ্বারা কর্পটে (কাপড়ে) শত্রুপ্রতিমা অঙ্কিত

করিয়া সাধ্য নামাকর বথাক্রমে মন্তকে বক্তে ननारि कार्य शब्द भागचाम भूष्टि ७ वाल् मरश् এই নব স্থানে লিখিয়া মস্ত্রোচ্চারণ করত যুদ্ধকালে ঘর্ষণ করিলে পরদৈনা ভক্ত হয়। তিমুখাকর ভার্ম্যচক্র বিজয়ার্থ বলিতেছি, আবণ কর। কিপ ওঁ স্বাহা এই মন্ত্রাত্মক তার্ক্যাত্মা, শত্রু রোগ ও বিষাদ অপনোদনকারি,ছুফ ভৃতগ্রহার্ড ও ব্যাধিত ব্যক্তি গরুড় মন্ত্র প্রয়োগাসুষ্ঠান করিলে তাহা দিগের কার্য্যদিদ্ধি হয় এবং সাধকের দৃষ্টিমাত্তে স্থাবর জঙ্গম লৃতা (মাকড়সা) ও কৃত্রিম বিষ নাশ হয়। মাকুমাকৃতি দিপক দিভুল বক্রচঞ্ গজ কচ্ছপধারী পাদস্থ অসংখ্য উরগ প্রভু মহাতার্ক্য আকাশমওল হইতে আগমন করত যুদ্ধে শত্রু-সকল গ্রাম ভক্ষণ ও পীড়ন করিতেছেন এবং কেহ কেহ চঞ্চু ধারা আহত কেহ বা পাদাঘাতে চুর্ণিত কোন কোন বীর পক্ষপাতে বিদারিত ও অপরাপর শত্রু বীর দশদিকে পলায়িত এইরূপ গঞ্জ ধ্যানাহিত ব্যক্তি ত্রৈলোক্যে অত্নেয় হয়। পি।চ্ছকা নামক মন্ত্রদাধন ক্রিয়া বলিতেছি। ওঁহুঁপকিন্কিপ। ওঁহুঁস: মহাবল পরা জেম স্ক্রিয়াং ভক্ষা ভক্ষা ওঁ মর্দ্যা ক্র চুৰ্য চুৰ্য় ওঁবিদ্ৰাবয় বিদ্ৰাবয় ওঁছুঁ খঃ ওঁ ভৈরণো জ্ঞাপয়তি স্বাহা। এই পিচ্ছিকামন্ত্র চক্র গ্রহণে জপ করিয়া শৈলসকল উক্ত মন্ত্রান্তি-মন্ত্ৰিত করত অনায়াদে গজ সিংছ সন্মৰে ভ্ৰমণ করাইবে এবং ধানি করত রব করিলে দিৎছ বেরপ মেষ মৃগাদির প্রতি করে ওজেপ শক্রীসন্য মর্দ্দন করে। মস্ত্রোচ্চারণপূর্বক রোধ করত দূর হইতে শব্দ করিলে শত্রুগৈয় ভঙ্গ যেরূপে হয়, ভাহা বলিতেছি প্রাবণ কর। কাল রাত্রিতে মাতৃকাগণের উদ্দেশে চরু হোষ করিয়া শাশান



ভশ্মশংমুক্ত মালতী চামরী ও কার্পাসমূল মারা বক্ষ্মাণ মজ্বোচ্চারণ করত দূর হইতে বোধ করা-ইবে ৷ ওঁ অহে ছে মহেন্দ্রি অহে মহেন্দ্রি ভঞ্জহি ওঁ জহি মদানংহি খাহি খাহি কিলি কিলি ওঁ ই কট্৷ এই মন্তোচ্যারণ করত দূর হইতে শব্দ বা অপরাজিতা ও ধুস্ত রের তিলক করিলে শক্তনৈয় ভন্ন হয়। ওঁ কিলিকিলি বিকিলি ইচছাকিলি ভূতহনি শৃষ্থিনি উমে দওততে কৌলি মহেশুরি উল্কামুথি স্থালামুথি শঙ্কুকর্ণে শুক্লজন্তে অলম্ব যে इत ७ मर्त्वकृषीन् थन ५ रमाझितीकरशत्मिविजाः স্তান মোহয় ওঁ রুদ্রস্য হৃদয়ে স্থিতা রৌদ্রি সৌম্যেন ভাবেন আত্মরকান্ততঃ কুরু নাগপাত্তে বহিঃ দকলাকৃতি বেষ্টিত মাতৃকাগণ অঙ্কিত করিয়া মধ্যে দক্ষকামার্থদাধনী উক্ত বিদ্যা लिथिया श्रुताकाटल माइन्द्रामि (मवश्रव इन्हामि होता ধারণ করিয়া রক্ষিত হইয়াছিলেন। কর্ণিকা ও সমস্ত দল মধ্যে পূজাক্রমে অঙ্গবিন্যাসরূপ বীজ সম্পূটিতনামক রক্ষামন্ত্র উক্ত আছে। তথাধ্যে একণে মৃত্যুঞ্জয় চক্র বলিতেছি। নামসংক্ষারের মধ্যগ কলাদকলম্বারা বেষ্টিত 'পশ্চাম্ভাগে দকার নিবোধিত ওঁকার সহিত সবিন্দু জকার' অর্থাৎ 'ওঁজ্সঃ' এই মন্ত্রাধকারাদির মধ্যক্রকার निर्वाधिक हेन्समुल्ल देशशृष्ट् मर्क्स कुक्के विश्लेक के क्ल यस अथरा कर्निकास मार्य ७ कात्र भूक्तिनता उ কার ও নিঞ্চক্ষিণে ও উত্তরে হুকার আমেয়াদি-দলে ষোড়শ স্বৰ এবং চভুক্তিংশদলে কাদি বৰ্ণ এবং বহি:প্রদেশে মৃত্যুঞ্জরমন্ত্র ভূজ পত্তে গোরো-চনা, কুরুম, কপুরি ও চন্দন হারা লিখিয়া বেত সূত্র বেফন করিয়া গিক্থ (মোম) খারা পরিচহন করত কলদোপরি পূজা করিয়া উ*ক্ত* যন্ত্র ধারণ করিলে রোগসমস্ত প্রশমিত হয় ও রিপুগণ মৃত্যু

আদে পতিত হয়। সম্প্রতি রিপুরোয় । ও মৃত্যুহারিণী ভৈলখী নামক বিদ্যা বলিতেছি, প্রবণ
কর। আঁ তলে বিতলে বিড়ালম্থ ইস্তপুত্রি
উদ্তবো বায় দেবে ন ধীলি আজীহালাময়ি বাছ
ইহাদি হুঃথ নিত্য কঠোচ্চেম্হুর্ত্যেয়া অহমাৎ
যন্মহং উপাড়ি ভৈলখি ওঁ স্বাহা। এই মন্ত্রনারা দ্যাভিমন্ত্রিত খড়গ গ্রহণ করিয়া যুদ্ধ করিলে ঐ যুদ্ধে
অক্রেয় হয়।

ইত্যালেয়ে আদিনহাপুৰাণে বুদ্ধল্বাৰ্ণৰে নানাবল নামক চতুঃপঞ্চাল্যধিকবিশতত্ম অধ্যায় ।

পঞ্চপঞ্চাশদ্ধিকদ্বিশতভ্য অধ্যায়।

ষট্কৰ্ম ৷

ঈশ্র বলিলেন, একণে ষট্কর্ম বলিভেছি, প্রথমে সাধ্য, অস্তে মন্ত্র লিখিবে। মহোচ্চাটনকর আদিতে মন্ত্র, ভাহার পর সাধ্য, মধ্যে সাধ্য লিখিয়া পুনর্কার মন্ত্র লিখিবে। ইহা যোগনামক সম্প্রদায় অঙ্গুলি ছেদন বিষয়ে ইহার অনুষ্ঠান করিবে। আদিতে মওপ মধ্যে সাধ্য, পুনর্কার অস্তে মন্ত্র, তৎপরে নাধ্য, তাহার পর পুনরায় মন্ত্র লিখিবে। এই রোধাখ্য সম্প্রদায় ভম্ভনাদি কার্য্যে যোজিত করিবে। जशः शामा केर् দক্ষিণে বামেও সাধ্য যোজিত করিবে। সম্পট নামক সম্প্রদায় বশীকরণ ও আকর্ষণ কার্য্যে অফু-ষ্ঠান করিবে। মন্ত্রাক্ষরে ও সাধ্যনাম অক্ষরাক্ষরে এথিত করিবে; ইহাকে প্রথম সম্প্রদায় বলে। ইহা আকর্ষণ ও বশীকরণকারক। মন্ত্রাকর্ময় লিখিয়া এক সাধ্যাক্ষর লিখিবে। এইরূপ লিখন বিদর্ভ নামে উক্ত হয়; ইহা বশীকরণ ও আকর্ষণ

कार्र्या त्यांकिङ कतित्व। व्याकर्यनानि त्य त्यान কার্য্য বসস্ত ঋতুতে করিবে। ডাপস্থরে, গলীকরণে ও আফর্যনে স্বাহা পদ উল্লেখ করিবে। শাস্তিক বৃদ্ধিকার্যো নমস্কার পদপ্রয়োগ কর্তুব্য। পৌষ্টিক आकर्षन ও वनीकत्रदन वसहेकात आग्रांश कतिरव। विरम्बर फेक्किकेन मात्रन कार्रा, थश्चीकत्रनविषयः ফট মন্ত্র শুভজনক। নাভাও মন্ত্রদীকাদিবিষয়ে বষটকার সিদ্ধিলায়ক। শুরুপদ্মে যুমরাজের পূজা ও হোম করিয়া 'হে ধর্মরাজ ! আপনি যম যম-ताम ও कालताल निर्मिष्ठ देश्याह्म : यम् छ এই শক্ত অচিরে নিপাত করুন' এই রূপ প্রার্থনা করিয়া মর্কনসাধক হাউাস্তঃকরণে বলিবে হে সাধক ! আমি যত্নপূৰ্বক নিপাত করিতেছি, ভুমি কান্ত হও। এইরূপ কার্য্যামূর্তান করিলে, অচি-রাৎ সিদ্ধি লাভ হয়। আপনাকে ভৈরব ও মধ্যে কুলেশ্বরী চিন্তা করত রাত্রিকালে আপনার ও পরপক্ষের সমস্ত বার্তা জানিতে পারে। 'ছুর্গে ভূগে রক্ষণি এই মন্ত্র দারা ভগবভী ভূগাদেবীর অর্চনা করিলে, শত্রু-সংহারে সমর্থ হয় এবং হ স ক্ষ ল ব র যু এই ভৈরবী মন্ত্র জপ করিলে শক্ত নাশ ক্রিভে পারে।

> ইক্যালেরে আদিমহাপুরাণে যুদ্ধস্বয়ার্ণবে যটুকর্ম মানক পঞ্চপকালদ্ধিকবিশতক্ষ অধ্যায়।

ষট্পঞাশদ্ধিকদ্বিশত হয় অধ্যায়।

वच्छानि (योश।

ঈশ্ব বলিলেন, এই বক্ষ্যোণ ধোড়শপদ বস্তুতে বশ্যাদিযোগ বলিব। ভৃত্নরাজ দহদেবী ময়ুরশিণা জীবপুত্রক অধঃপূজ্পারুদস্তিকা হ্রচ-কুমারী রুদ্রদটা বিষ্ফুক্রান্তা শেতার্ক লজ্জালুকা (यार्लंड) कृष्ध्युषु र (शादक कर्वति (यसण्डी अ जुरो अरे कारकों अवशेष धानिकाकारम त्यासन তিন অই ছুই সপ্ত চতুৰ্দ্দশ একাদশ আই দশ ছুর চারি নর ছয় দাদল এক ও পঞ্চলভাগ প্রহণ করিবে; অর্থাৎ ভূসরাজ বোল ভাগ সহদেবী তিম ভাগ ইত্যাদি রূপে গ্রহণ করিবে। প্রথম বস্তু চতু-ফয় দারা ধুপও উদর্ভন করিবে : তৃতীয় বস্তু দারা অঞ্জন চতুক বস্তু দারা স্থান করিবে। ভূকরাঞ্চ অফুলোমে চারি প্রকার লেপন হয় ; দক্ষিণ পার্মে সপ্ত বস্তু উত্তরে ছিতীয় দ্রব্য চরণ সমীপে অক. মন্তক্ৰেশে একাদশ মধ্যে দ্বাদশ ও প্ৰথম বস্তু দারা ধুপ দর্বকার্য্যে করিবে। এই দমস্ত বস্তু দারা বিলিপ্তদেহ ব্যক্তি দেবগণ কর্ত্তপ্ত পূজিত হয়। বোড়শাঙ্গ ধূপ গৃহাদির উবর্তনে দিবে। অঞ্জনকার্ব্যে দিভীয়াদি বস্তু দারা স্নান কার্য্যে পঞ্চমাদি দ্ৰেব্যে ভক্ষণে একাদশাদি পান বিষয়ে পঞ্চদশাদি দ্রব্য দ্বার। ধুপ প্রদান করিবে। শোড়য চতুর্থ বর্ষ্ঠ ও দ্বিতীয় বস্তু স্থারা তিলক করিলে मर्क्टलाक स्मार्ग रहा। चामन जिल्लामन अक्षमम সপ্তম বস্তু ৰারা লেপ করিয়া জ্রীলোক বশীভূত হয়। প্রথম চতুর্দশ অক্টম একাদশ বস্তু দারা (यानि तम्भ कहित्म जीकनवनी कद्रन करद्रन भक्-লশ দশম বিভীয় ও পঞ্চম হেল্য বারা শুটিকা করিয়া ভক্ষা ভোজা ও পানীয় বস্তুতে দিলে বশীকরণ হয়। ষোড়শ নবম দিতীয় ও সপ্তম বস্তুর গুটিকা মূখে ধারণ করিলে শস্ত্র স্তম্ভন হয়। সপ্তম চতুর্দশ চতুর্থ ও নবম বস্তু **অলে লেশ**ন कतिया कनगरभा जनाशास्त्र वान कतिराख भारत । পঞ্ম দিতীর চতুর্দশ একাদশ দ্রেব্য দারা শুটিকা নির্মাণ পূর্বক ধারণ করিলে ক্ষুধা ভূষণ থাকে না। তৃতীয় ষোড়শ দশম ওশ্পঞ্চম বস্তু লেপ করিলে

ফুর্জগা জী ছড়গা হয়। ত্রেরেদশ দিতীয় এখং দশম দেব্য নেত্রে দেপন করিলে পরগের সহিত্ত জীড়া করিতে পারে। ত্রেরেদশ দিতীয় একাদশ ও অন্টম বস্তু দেপন করিলে ত্রীলোক হথে প্রস্ব হইতে পারে। সপ্তম দশম তৃতীয় ও নবম দ্রব্য বস্ত্রে লেপন করিলে, দ্যুতক্রীড়ায় জয় হয়। ত্রেয়োদশ দিতীয় সপ্তম ও তৃতীয় বস্তু ধ্বজে লেপ দিয়া স্ত্রীসক্ষ করিলে পুত্রোৎপত্তি হয়। নবম সপ্তম অন্টম ও ক্রেরোদশ দ্রব্য দ্বারা গুটিকা করিলে উহা বশকারিশী হয়। এই সোড়শ পদ উষ্ধির প্রভাব কীর্ত্রন করিলাম।

ইত্যাগ্রেয়ে আদিমহাপুরাণে যুদ্ধস্যাণ্বে হোড্শ-প্রিকানামক বট্পকাশ্রধিক্ষিপ্তম অধ্যায়।

সপ্তপঞ্চাশদধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

ষট্ তিংশৎপদক জ্ঞান।

ঈশ্ব বলিলেন, ষট্ ত্রিং শংশদসংন্তিত ওয়ধির ফল বলিতেছি, যাহা দ্বারা মনুষ্যাগণ অমর হইতে পারে। হরীতকী জক্ষা থাত্রী মন্ত্রীচ পিপ্পলি শিকাবহ্নি তেওঁী গুড় চি বচ নিম্বক বাসক শতম্পী দেক্ষবারক কন্টকারী গোক্ষ্রক বিল্ন পুনর্বা এরগুমুণী সেচকী ভূক কার পর্পট ধন্যাক জীরক শতপ্রশা জবালিকা বিড়ঙ্গ থদির ক্তরাল হরিদ্রা বচা দিক্ষার্থ এই ঘট্তিংশং পদ্য সর্বেরোগাশহারক মৃত্যমাতক কেশরী বলী পতিত ভৈদক সর্বাক্তিয়াত মহৌষধি যথাক্রমে একাদি সংজ্ঞায় উক্ত হইবে। ঐ সমস্ত বস্তুর চূর্ণ রস দ্বারা পরিভাবিত বিটকা জবলেহ ক্যায় সেদক গুড় থওক স্তুত এবং তৈল সর্বপ্রেকারে উপযুক্ত ও মৃত্যমন্ত্রীবন হয়। কর্ষাল এক কর্ষ পলার্জ বা একপল মাত্র

७विध मित्र कतिल यरश्रकाठात्रनित्रक अर्जाक ७ বৰ্ষশতন্ত্ৰয় জীবিত খাকে। মুক্তদ**গ্ৰীবনলালে ইহা**র भव द्यांग चात्र नारे । टाथम नवकदमारा नर्कदमात्र বিমুক্ত হয়। বিতীয় তৃতীয় চতুর্থ প্রয়োগেও আবোগালাভ হয় এবং প্রথম হইতে ষট্ক মিডীয় कृठीय प्रकृष भक्ष्य ७ वर्ष रहेए वर्ष अवस अवस **इहेरल एक्क अविधिशारण (तांग ममछ इहेरल** মুক্ত হয়। এক ছুই ভিন্চারি পঞা ষট্ গণ্ড । ও অফীম ওষধিপ্রয়োগে বাগুরোগ ছইতে, তৃতীয় चामभ मञ्जिरम ७ मश्रविरम প্রয়োগে পিতরোগ हरेट इ. नक्ष्म वर्ष मक्षम बक्षम ७ नक्षम ७ वर्ष-প্রয়োগে কফরোপ হইতে মুক্ত হয়। চতুক্তিংশ পঞ্জিংশ ও ষট্তিৎশ মহোষধি ছারা মৃত করিলে বশীকরণে প্রযুক্ত হয় ৷ নবম হইতে একাদশ अविधि बाता नर्यातांग इहेट्ड गुक्त इस : এक वि ত্রি যট সপ্ত অফট নব ও একাদশ ওষধি ছারা যথাক্রমে প্রয়োগনিতি হয় এবং ছাত্রিংশৎ পঞ্চদশ ও দাদশ ওষ্ধির দার। সর্ববিকার্য্য সিদ্ধি হয়। এ विषद्य कांत्र दकान म'नम् नाहै। अहे वहे खिर्नर পদক জ্ঞান যাকে ভাকে কদাচ দিবে না।

ইত্যায়ের আদিমহাপুরাণে বৃ**ছজগার্থরে বটজিঃশ্থ-**পাদক্তান নামক স্থাপকাপদ্ধিক্ষিপ্তত্মক অধ্যায়।

অষ্টপঞ্চাশদ্ধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

মক্রোবধানি।

ঈশর বলিলেন, সর্বপ্রদ মন্ত্র ও ঔষণচক্র ।

ক্রেনে বলিতেছি, শ্রেবণ কর। চৌর নিষ্ধে যে

যে বস্তুর নাম উল্লেখ ছইবে, ভাহার বর্ণসংখ্যা ছুই

হীন করিবে। পরে উহার মাতা চতুপ্রণ সংখ্যা
নামরাশি ছারা হরণ করিয়া যাহা শেষ থাকিবে,

তাহাই চৌর হইবে। অনস্তর ক্রাতকপ্রকরণ বলি-তেছি। প্রশ্নে যে কএকটা বর্ণ থাকিবে, তাহা যদি বিষম হয়, ভাহা হইলে গর্ভে পুত্রসন্তান জানিবে; যে বস্তুর নাম উল্লেখ করিবে, ভাছা यि छ। न। स इश्र छाउ नसवर्ग इहेरल वास इक् কাণা হয়। আর যদি পুং নাম হয়, তাহা হইলে বিষমাক্ষর হইলে দক্ষিণনেত্র কাণ হয়। (য বস্তুর নামু উল্লেখ হইবে, তাহার মাত্রোরাশি দারা বর্ণ সংখ্যা গুণ করত চারি দার। হরণ করিয়া যে শেয থাকিবে, তাহা যদি সমরাশি হয়, তাহা হটলে গटर्ड करा। ও বিষম রাশি ছইলে পুত্র এবং শূন্য হইলে গর্ভপাত হয়। ঐরূপ দম্পতীর মধ্যে প্রথ-মেই রূপ শুন্য হইলে পুরুষের প্রথমে মৃত্যু হয় এবং নচেং প্রথমে স্ত্রীর মৃত্যু হয়। সমস্ত ভাগ বিষয়ে সুক্ষাক্ষর দ্রব্য দ্বারা প্রশ্ন কর্ত্তব্য।

শনিচক্র বলিব। শনির দৃষ্টিস্থান সর্বতোভাবে পরিত্যাগ করিবে; যে রাশিতে শনি থাকেন তাহার সপ্তম রাশিতে পূর্ণ দৃষ্টি চতুর্থ ও দশম স্থানে স্থানে অর্দ্ধ দৃষ্টি সপ্তম দ্বিতীয় অস্টম ও দৃষ্ণ রাশিতে পাদ দৃষ্টি; অতএব ঐ সকল স্থান পরিত্যাগ করিবেক। যে দিনের যে গ্রহ, অধিপতি হইবেন, দেই দিনের প্রথম যাম তাহারই হইবে; অবশিক্ত গ্রহণন যথাক্রমে যামার্দ্ধভাগী হইবেন, তমধ্যে শনিভাগ সুদ্ধকার্য্যে পরিত্যাগ করিবে। এক: প দিনরান্থ বলিতেছি,; রবিবারে পূর্বের, মঙ্গলবারে বায়ু ও অগ্লিকোনে, রহস্পতিবারে দক্ষিণে, শুক্রবারে অগ্লিকোনে ও বুধবারে অগ্লিকোণে, বুহস্পতিবারে দক্ষিণে, শুক্রবারে অগ্লিকোণে ও বুধবারে অগ্লিকোণে রহস্পতিবারে দক্ষিণে, শুক্রবারে অগ্লিকোণে ও বুধবারে অগ্লিকোণে রহস্পতিবারে ঘর্ষাক্রমে এক প্রহ্ অগ্লি নিশ্লত ও বায়ুকোণে যথাক্রমে এক এক প্রহ্য় অবস্থান করত ঈশ

সম্মুখন শক্ত বেউন করিয়া নিহত করে। তিথি রাহ্ বলিভেছি, প্রবণ কর। পূর্ণিমায় অগ্নিকোণে অমাবদ্যার বায় কোণে অবস্থিত করেন, সন্মুধে রান্থ শক্তে নাশ করেন। মূলভেদ রূপে পুর্বাদ্য ভিনটি এবং **উভয়াস্য তিনটি রেখ। পাত** করিবে তাহাতে যথাক্রমে সূর্য্যরাশ্যাদি লিখিয়া সম্মুখে ककातानि ककातास वर्ग लिथित ; ककातानि मका-बाख वर्ष पिकर्ण विन्याम कवित्व : धकाबापि मका-রাস্ত বর্ণ পূর্ব্বদিকে; যকারাদি হকারাস্ত বর্ণ উত্তরে হইবে। শুক্লপক্ষে কুছগুণ ব্যাগ করিবে এবং তিখিদৃষ্টি বৰ্জন করিবে। এইরূপে দৃষ্টি থাকিলে হানি হয়, না থাকিলে জয় লাভ হয়। বিষ্টি রান্ত্ বলিতেছি; ঈশান কোণ হইতে দক্ষিণ দিক পৰ্য্যন্ত, দক্ষিণ দিক হইতে বায়ুকোণ পৰ্যন্তে, বায়ু কোণ হইতে পূৰ্ব্বদিক পৰ্যন্ত,তথা হইতে পশ্চিম দিক্ পর্যায়, নৈঋত কোণ হইতে উত্তর দিক্ পৰ্য্যন্ত তথা হইতে অগ্নিকোণ পৰ্যান্ত তথা হইতে পশ্চিম দিক্ পর্যান্ত পশ্চিমাশা হইতে ঈশান কোণ পর্যান্ত অন্ত রেখা পাত করিবে ভাহাতে র্ষ্টির সহিত মহাবল রাজ্ সঞ্চরণ করেন। য়াদি তিথিতে ঈশান কোণে, দপ্তম্যাদি তিথিতে দক্ষিণ দিকে এইরূপে কৃষ্ণ ও শুক্লপক্ষে বায়়-সহকারে রাহ্ অরি সংহার করেন। ইন্দ্রাদি ভৈর-वानि, बन्नानप्रानि ଓ धहानि शृद्धानि नित्क यथा-क्रस्य बाठे बाठेंछै कतिया ও यागामित्ठ वाज-যোগিনী বিন্যাদ করিবে। যে দিক্ ছইতে বায়ু বহন করে, রাজ্ তত্তেম্থ হইয়া শত্রু সংহার कर्त्रन ।

কণ্ঠ ও হস্তাদিতে যাহা ধারণ করিলে দৃঢ়ীকরণ হয়, তাহিষয় বলিতেছি। পুধ্যানক্ষত্তে কাণ্ডলক্ষ্য উত্তোলন করিয়া ধারণ করিলে, শরপুথ নিবারিত

হয় এবং ঐক্সপে উভোলিত অপরাজিতা ও পাঠা মূল স্বানা থড়গ নিবারিত হয়। ওঁনমে। ভগবতি বক্তপুথালে হন হন ভক্ষ ভক্ষ ওঁ খাদ ওঁ অরে-রক্তং পিব কপালেন রক্তাকি রক্তপটে ভস্মাকি বক্তপ্রাকারনিচিতে ভশ্লপ্রশবীরে বজ্ঞায়ধে প্ৰবাংদিশং বন্ধ বন্ধ ওঁ দক্ষিণাং দিশং বন্ধ বন্ধ **अँ शन्तिभाः निमर तक्ष तक्ष उन्तरीः निमः तक्ष तक्ष** নাগান বন্ধ বন্ধ নাগপন্তীৰ্বন্ধ বন্ধ ও অন্তরান বন্ধ বন্ধ ওঁ যক্ষ রাক্ষ পিশাচান বন্ধ বন্ধ ওঁ প্রেত-ভুতগন্ধবাদয়ো যেকেচিত্বপদ্রবা স্তেভ্যোরক রক ওঁউরি॰ রক্ষ অধোরক্ষ রক্ষ ওঁ কুধিক বন্ধ বন্ধ ওঁজ্ল মহাবলে ঘটি ঘটি ও মোটি মোটি সটা-विन वज्जाधि वज्जशाकारत क् फरे द्वीर क् जीर ফট্ ব্লীং হঃ ফৃং ফেং ফঃ সর্বাগ্রেছভাঃ সর্বা-ব্যাধিভ্যঃ সর্বহুটোপদ্রবেভ্যঃ হ্রীং অশেষভ্যো বক্ষ বক্ষা এই মন্ত্র श्रद्धांम, इत्रामिद्रांग, ভূতাদ্যাবেশ প্রভৃতি সমস্ত কার্য্যে নিয়োঞ্চিত করিলে দর্বশান্তি হয়।

ই গ্রায়ের আদিনহাপুবাণে যুদ্ধধ্যণিবে নডৌষবাদি নামক অউপফাশ্দধিকদিশতক্ষ অধ্যায়।

ঊনষফ্যাধিকদ্বিশতত্ব অধ্যায়।

কুব্জিকাপুদা।

ঈশর বলিলেন, অধুনা সর্বার্থসাধক ক্জিকাপ্লাক্রম বলিব, যাহা দারা দেবগণ কর্ত্বক শস্ত্রাদি
ও রাজ্যের সহিত অহারগণ পরাজিত হইয়াছেন।
শুহাদি মায়াবীজ, অস্ত্র মন্ত্র বষটুকার, হৃদরে
কালী কালী, শিরে ছুই চাণ্ডালিকা, শিথায় হৌং
কোং হ স খ ক ছ ভ ও কারো ভৈরব, কবচে
ভৈলথী দৃতী, নক্তচিণ্ডকা নেত্রে ও গুরুক্জিকাস্ত্র
নাস করিয়া মণ্ডল স্থানে অর্চনা করিবে। অগ্রি-

কোণে কুর্চ্চ (ছুং) বীজ, ঈশানে শিল্লেম্ব্র (স্বাহা) নৈখতে শিখামজ্ৰ (বৌষট্) বায়ুকোণে কৰচ মজ্ৰ (হুং) মধ্যম্বানে নেত্ৰ মন্ত্ৰ (বৌৰট্) সৰ্বাদিকে জন্ত মন্ত্র (ফট্) মণ্ডলে দ্যুতিংশদক্ষর মত্ত্রে কর্ণিকায় Cखाः रुगक्यन न न न व य ए न मख बाता श्रका করিবে এবং উহার বীক আত্মসন্ত জানিবে ৷ बकानी, मारम्थती, दर्गमात्री, देवस्वी, बातारी, মাহেন্দ্রী, চামুগু ও চণ্ডিকাদেবীর অর্চনা পূর্বাদি দিকে যথাক্রমে করিয়া ঈশানাদি পশ্চিমাশা পর্যান্ত যথাক্রমের ব ল ক দ ও হকার রূপ বীজ কুত্মমালা অদ্রিপঞ্চক জালন্ধর পূর্ণগিরি ও কাম-রূপে যথাক্রমে যঙ্গন করিবে। বায়ু ঈশান অগ্রি নৈখতকোণ ও মধ্যে বজ্ঞকুব্দিকা ও অনাদি বিমল সর্ববিজ্ঞ বিমল প্রসিদ্ধবিমল সংযোগবিমল ও সময় বিষল এই বিষলপঞ্কের পূজা করিয়া বায় ঈশান নৈশ্বত অগ্নিকোণ ও উত্তরশৃঙ্গে ক্জার্থ বিভিনী ষষ্ঠা সোম্পন্না হুন্তিরা রত্বস্থারী ঈশান শৃঙ্গে অউ অ।দিনাথ পূজাপূর্ব্বক অগ্নিকোণ পশ্চিম দিক্ ও বায়ুকোণে মিজ ওডীশ ষ্ঠী ও বর্ষার অর্চ্চনা পশ্চিমে গগনরত্ব বায়ু ঈশান ও অগ্নিকোণে ক্রু মর্ত্ত্য ও পঞ্চনামাখ্যার পূজা দক্ষিণ ও অগ্নিকোণে পঞ্চরত্ব জ্যেষ্ঠা রোক্তী অন্তিকা এবং ঐ তিনটির মহার্ক্ষা ও পঞ্জাণতে সমস্ত সপ্ত বিংশতি ও অউবিংশতি ভেদে ছুই প্রকার পূজা हरेता ७ व के के कर वीक का बाजा यथाक स्म চতুরতামগুলের দকিণে গণেশ, বামে বটুক ও বোড়শনাথ গুরুর অর্চনা করিয়া বায়ব্যাদি প্রতি यहे रकारन अकोनम ও ममलाव जन्नाना के अ मरश নবাত্মক গুরুর অর্চনা কর্তব্য। এইরূপে কুজিকা কুলটাক্রম পূজা সক্রদা করিবে।

ইভ্যাবেশে আদিমহাপুৰাণে বৃদ্ধজন্তাৰ্থকৈ কুজিকাক্তম পুজনামক উনষ্টাধিক্দিশতভন্ন অধ্যায়।

ষষ্ট্যধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

কুজিকাপুজা।

ঈশ্বর বলিলেন, ধর্মার্থবিজয়াদিপ্রদা জীমতী ক্জিকাদেখীর পরিবারের সহিত বক্ষ্যমাণ মূল মন্ত্র দারা পূজা করিবে। তং এ ক্রেং জীৎ বং ছেং হণ কমেলচৰ যন্তাৰতি অবিকে द्वार द्वीर कीर कार कर कीर कृष्टिक द्वार खँ छ क गन तम अरवातमुत्री जाः छाः छीः किनि किनि कि: विटक (क्योर श्रेश टक्नार अर द्वीर धर वख-কুজিনি ত্রীং তৈলোক্যকর্ষিণি হ্রীং কামাপ্সদ্রাবিণি द्वीर छोर महारकाञ्कातिनि धर द्वीर रक्तार धर द्वीर শ্রীৎ ফেং কোৎ নমে ভগবতি ক্ষোং কুজিকে द्वीर द्वीर रेक्ट ७ व न त्म व्याचाममूची हु। ९ ছাঁং বিচে ওং কিলি কিলি। করান্সন্যাস করিয়া বামা ভোষ্ঠা ও রোদ্রীনালী সন্ধ্যাত্তয় যথাক্রমে করিবে। গায়তি। কুলবাগীশি বিদ্যাহে মহাকালি ধীমহী ভন্ন: কোলি প্রচোদয়াৎ। অন্যপ্রকার মন্ত্র প্রণবাদি ষড়বাজ মধ্যে চতুর্থান্ত নাম অন্তে পাতুকাং পূরুয়ানি এই অফাদশাক্ষর মন্ত্র। অথবা ষষ্ঠান্ত নামযুক্ত নমোন্ত মন্ত্ৰ সমস্ত বলিতেছি। কোলীশ নাথ মুকলা জমতংকুজিকা জীকণ্ঠনাথ কোলেশ গগনানন্দনাথ চটুলা দেবী মৈত্ৰীশী कराली वृर्गनाथ अञ्चलाति श्री ठिला प्रश्रास धरे কএক নামযুক্ত পূর্ব্বোক্ত রূপে মন্ত্র হইবে। অন ন্তব ভগাত্মপুঙ্গদেব মোহিনাপাতুকা, ভুৱনানন্তরত্বাচ্যা পাতুকা যজন করিবে। ব্ৰহ্মপ্ৰানা কমলা প্ৰমা বিশ্বা বিদ্যাদেবী গুৰুগুছি ও ত্রিশুদ্ধি তোমাকে বলিব। গগণচটুলী আত্মা পদ্মানন্দ মণি কলা কমল মাণিক্য কণ্ঠ গগণ কমূদ 🔊 পিয়া ভৈরবানন্দ কমলদেব শিবভব কৃষ্ণনবসিদ্ধ 🖯

এই বেড়েশ এবং চস্দ্রপুর গুলা শুভকাম শক্তি-मुक्कक कर्श्वीद व्यरशांत्रक्**मन स्वरक्षांत्र विश्व**स्व থড়গদেব রুদ্র ধাত। অনি মুদ্রাক্ষোট বংশপুর ও ভোজ নামক যোড়শ সিদ্ধকের নির্মিত ও যোড়া-খাদ বারা যন্ত্রিত দেহ হইয়া মণ্ডলে পুষ্প প্রক্ষেপ পূর্বক পূজা করিবে। পরে অনন্ত মহান্ত শিব-পাতুকা মহাব্যাপ্তি শৃত্য পঞ্তন্ত্ৰাত্মক গ্রীকণ্ঠনাথ পাতুকা শঙ্কর অনন্তকের যজন করিয়া সদাশিব পিকল ভৃত আনন্দ নামক লাকলানন্দ দংবর্ত্তের মণ্ডলম্থানে অর্চনা করিবে। নৈখাতে জীমহাকাল পিনাকী মহেন্দ্রক খড়গা ভুজঙ্গ বাণ অঘাদি শব্দক বশ আজ্ঞারূপ নন্দরূপের বলি-প্রদান করিয়া ক্রমশ অর্চনা করিবে। ভ্রী খঁখঁ হুঁ সোঁ বটুকায় শক্ত অক্ত অর্থং পুষ্পং দীপং গন্ধং বলিং পূজাং গৃহু গৃহু নমন্তভাং। ওঁ হ্ৰাং <u>হীঁ হুঁকে কেতেপালায় অবতর অবতর মহা</u> কপিল জটাভার ভাষর ত্রিনেত্র জ্বালামুখ এহেছি গন্ধ পুষ্পা বলিপুদাং গৃহু গৃহু ৰঃ খঃ ওঁ কঃ ওঁ লঃ ওঁ মহা দাম অংশিপত য়ে আহা এই মন্ত্র দারা বলি প্রদানপূর্বক যজন করিবে। হং হং হাং জ্রীং বৈত্রিকৃটকং এই মন্ত্র দ্বার। বামে নিশানাথ পাছুকা দক্ষিণে ভয়ো রনাথের ও অগ্রে কালানলের পাতুকা অচচনা করিয়া উড়ডীয়ান জালন্ধর পূর্ণ-ক।মরূপ গগনানন্দদেব স্বর্গনিন্দদেব পর্যানন্দদেব ও সত্যানন্দদেবের পাছুকা পূজা করিবে। অন-ন্তর নাগানন্দ ও পূর্বেশকে বর্গাখ্য রত্বপঞ্চকের পূজা করিয়া উত্তরে ও ঈশানে হুরনাথ জীমৎসময় কোটীশবিদ্যা কোটীশ্বর কোটীশ বিন্দুকোটীশ ও দিদ্ধকোটীশ্বরের পাছকা পূজা করিবে। অগ্নিকোণে চক্রীশনাথ কুরঙ্গেশ রুত্তিকা ও চক্র-নাথ এই অমরীশের দিদ্ধচতুষ্টায়ের গন্ধাদিদারা

कर्मना कतिया पक्तिनित्क जनापितियत मर्द्रकः বিমল যোগীলবিমল সিদ্ধবিমল ও সময়াধাবিমল এই বিমলপঞ্কের ও মৈখতে কম্মপ্রাধ পূর্কা শক্তি ও সর্বা এই দেবভাচভুষ্টয়ের ও কুজিকার পাছকা পূজা করিবে। পরে নবাত্মক মন্ত্র বা প্রণব পঞ্জের দ্বারা সহস্রাক্ষ অনবদ্ম বিষ্ণু ও শিবের অৰ্চনা কৰিয়া পূৰ্ববিদিক হটতে ঈশান কোণ পর্যান্ত ত্রক্ষাদি ও ত্রক্ষাণী মাহেশরী কোমারী বৈক্ষবী বারাহী ইন্দ্রাণী চামুণ্ডা ও মহালক্ষীর অর্চনা করিবে। অনন্তব বায় হইতে উগ্র ষডদিকে ডাকিনী রাকিনী, লাকিনী কাকিনী শাকিনী কামিনী যাকিনী নাম্বী ষ্ট শক্তির পূজা করিয়া নীলোৎপলদলশ্যামা ষট্প্রকার বড়বক্তা অফা-দশাধ্য চিচ্ছক্তি দ্বাদশ বাত্যুক্তা শ্বেতপ্রোপরি-স্থিতা দিংহাদনস্থাদ'না কুলকোটিসহস্ৰাচ্যা মেখলাস্থিতকৰ্টা উপবিভাগে હ যাহার ভক্ষক ও গলদেশে বাস্থকী হাবরূপে লম্বমান কর্ণ ঘযে কুণিক কুৰ্ম্ম কৰ্ণকুণ্ডল ভ্ৰেছয়ে পদ্ম ও মহাপদ্ম রহিয়াছে এবং বামে হস্তষ্টক দ্বারা নাগকপাল অক্ষৃত্ৰ থট্টাঙ্ক শঙা ও পুস্তক, দক্ষিণ হন্ত্ৰট ক ঘারা ত্রিশূল দর্পণ থড়গা রত্নমালা অঙ্কুশ এবং ধনু র্ধারণ করিতেছেন এবং দেবীর উর্দ্রুথ খেত অপর ব**ক্তের উর্ক্ শ্বেত পূর্ববাদ্য পাণ্ডর ও** ফোধ যুক্ত দক্ষিণ মুথ কৃষ্ণবৰ্ণ অপর বক্তু হিমকুলেন্দু সদৃশ ও অন্য এক বক্তু অতি পৌন্য এবং বাঁচার পদতলে ভ্ৰহ্ম। জঘনে বিষ্ণু হৃদয়ে ফুদ্রেদেব কঠে ঈশ্বর ললাটে সদাশিব ও তাহার উদ্ধে শিব অব স্থান করিতেছেন ; অঘূর্ণিতা স্বাজিংশৎ বর্ণাক্সিতা कृष्णिकारमयीत अहेक्षण धान कविशा अभवभक्षक বা হীঁ বীজ দ্বারা পূজাদি কার্য্য সম্পাদন করিবে।

> ই গ্রাগের আদিমহাপ্রাণে গদ্ধদার্গবে কুজিকা পুজানামক বটাধিকদিশততম অধ্যায়।

একষ্ট্যধিকদ্বিশতত্ব ইংগ্রার।

মালিনী নানাম্ভ ।

ঈশ্বর বলিলেন, ষোঢ়া ন্যাদ পুরঃদর নানামস্ত্র বলিব। যোঢ়া ন্যাস তিন প্রকার। শাক্ত শাস্তব যামল: ভনাধ্যে শাস্তবে ষট্ষোড়শ এশিরপ বিশিষ্ট শব্দরাশি বিদ্যাত্তয় ও ত্রিতথাভিধানক তদগ্রহন াস চতুর্ব শ্লোক ভাদশরপ্রিনিষ্ট বন-মালয় নাস পঞ্ম রম্ভ পঞ্চমাত্মক ষঠবোতাক ন্যাস উক্ত হইয়াছে: শাক্ত পক্ষে মালিনীর দিতীয় ত্রিবিদ্যাত্মক অন্য অঘোরি অউকরপে চতুৰ্থ দাদশাক পঞ্ম ষড়ক অন্য অন্তে চল্ডিকা চণ্ডিকা শক্তি ক্ৰী হী কী আঁ ফট এই মালি-নীর তুর্যাখ্যসাধক মন্ত্রেয় নকারাদি ফান্ত নাদিনী नासी निथाय ७ व्याननीनासीनित हरेता नित्ता-মালানিবৃতিনামক শটশক্তি শির ত্তিনেত্রগা চামুগু নামক ঢ প্রিয়দৃষ্টি নামক দিনে। এনাদাগাভ্ত-मिकिनी न नावायनी विवर्ण मक्क वर्ण जरमहिनी নামক জপ্ৰজ্ঞা বক্তে বামকৰ্ণছা বজ্ঞিনী নাদ্মী ক कावानी नकनः है। य यागाः मक शानिनी न के ने দং ষ্টাশিবা ঘ বামদং ষ্টায়ভোৱা উদন্তবিন্যাসা শিখা নামক মাথা জিহ্বায় আনাগেশ্বরী বাক্যের কঠে শিখিবাহিনী ভ দক্ষদে ভীষনী ম বামক্ষদে বায়-বেগা ও দক্ষবাহুতে ঢ বামবাহুতে বিনায়কা প দিহতে পূর্ণিমা ও করাদিদকালুলীয়কে অং বামা-कृति मकरन पर्यनी नाची याः करत मञ्जीवनी हे क्शारल क्शालिमी छ भूतमा पिनमी क खिण्रल জয়তী যুর্দ্ধিদাধনী শ জীবে পর্মধ্যা হ প্রাণে অস্থিক। চুদক্তনে শ্রীরাখ্যা ন বামস্তনে পুতন। অন্তন ক্ষাবে আধায়তে থ উদরে লফোদরী ক না-

ভিতে দ হারিকা ম মহাকালী নিতবে দ কুসম মালা গুফে ব শুক্রদেবিকা শুক্রে ত তারা **উরুৎ**য়ে দ জ্ঞানা দক্ষজামুতে ঔ বামজামুতে ক্রিয়াশক্তি ও দক্ষ জভ্যায় গায়তী ও বামজাভ্যায় সাবিত্তী দ দক্ষিণপদে দোহনী ফ বামপদে ফেংকারী নৰাজ্বক মালিনীমন্ত্ৰ অ শিখায় শ্ৰীকণ্ঠ আ বক্তেনু অ মন্তক হ দক্ষনেত্রে সুক্ষা ঈ বামনেত্রে ত্রিমূর্ত্তি উ দক্ষ কর্ণে অমরীশ উ বাম কর্ণে অর্ঘাংশক ঋ দক্ষনাদাত্রে ভাবভূতি ঋূবাম নাদাগ্রে তিথীশ ৯ দক্ষণণ্ডে স্থাণুং বামগণ্ডে হরনামক জানিবে এ দন্তপংক্তিতে কটিশনামক ঐ উ ঈ দন্তপংক্তিতে ভূতীশথ্যে ও সধরে সদ্যোজাত ও উর্জ ওঠে অনুগ্রহীশ নামক অং এীবাৰ ক্ৰুবাৰেও অঃ জিহ্বাৰ মহাদেন ক দক ক্ষমে ক্রোধীশ থ বাহুসকলে চণ্ডীশনামে প্রসিদ্ধ গ কুপৰে পঞ্চান্তক নামক ঘ দক্ষকক্ষণে শিখী নাম ও অঙ্গুলী সকলে একপাদাঘ্য চ বামস্বংস্ক কৃশাক ছ বাহুতে এক নেত্রাখ্য জ কুপবে চত্তবক্ত নামক খা কক্ষণে রাজদাখ্য ঞ গঙ্গুলীতে সর্কামদ নামক ট নিতম্বে সোনেশ ঠ দক উকতে লাজলি নামক দ দক্ষ জাতুতে দারুকাখ্য চ জন্তায় অর্থ জলেশন নামক ৭ অঙ্গুলী পংক্তিতে উমাকান্ত ত নিত্তে আগাটা নামক থ বামউকতে দ্ভীনামে দ বাম জ্ঞানুতে অভি নামক ধ বাম জ্ঞবায় মানাখ্য ন চরণাঙ্গুলি ভোণিতে মেধনামক প দক্ষ ব জিতে লোহিতাথা ফ বাম কুক্ষিতে নামক ব পৃষ্ঠেবংশে গল গোখ্য ভ নাভিতে দ্বিত্ত নামক ম হৃদ্ধে মহাকালখ্য য সার্বিশরীর বিস্তৃত ন নাশ নামক ব বক্তে ভ্জাঞ্পাখ্য মাণ্দে পিনাবা নামক ব আছাতে খড়গীশালা শ অভিতে বক নামক ধনজ্জাতে শ্বেতাখা ৮ জ ল ধাতুতে इय ह व्याप नक्ली गांधा करकार्य मचर्छ नाम

প্রসিদ্ধ এই সমস্ত রুদ্র শক্তি হুীৎ বীজ্বারা পূজাকরিলে সর্কাসিদ্ধি হয়।

> ই ক্যান্তেকে আদি মহাপ্তরাণে মালিনী মন্ত্রাদি স্থাস নাৰক এক্ষয়াধিক বিশত্তম অধ্যায়।

দ্বিষষ্ট্যধিকদিশততম অধ্যায়।

অন্টান্টক দেবী।

ঈশর বলিলেন, জ্রন্ধবিফুমহেশ্বরকপা তিথেওী বলিতেছি, প্রবণ কব। ওঁ নমো ভগবতে রুদ্রাষ্থ নমন্টাকাশ মাতৃণাং দর্বনি কাশার্থদাধনীনামজরামরীণাংদ্বিত্রোপ্রতিহতগতীনাং স্বক্সকপপরিবর্তিনীনাং দ্বিদ্রব্দীকরণোৎসাদনো মূল নদমস্তকর্মপ্রহানাংদ্বিমাতৃগুহু স্থান্থস্বনাধ্বিকরক্ষাতৃণাং বচনংগুভং। ব্রহ্মথণ্ডপদে একবিংশাধ্কশত রুদ্র বিশিষ্ট মন্ত্র বলা হইতেছে।

ওঁ নমশ্চামুণ্ডে ত্রহ্মাণি অংঘারে অংমাঘ
ববদে নিচ্চে স্বাহা। ওঁ নমশ্চামুণ্ডে মাহেশ্বরি
অংঘারে অংমাঘে বরদে বিচ্চে স্বাহা। ওঁ নমশ্চা
মুণ্ডে বৈশুবি অংঘারে অংমাঘে বরদে বিচ্চে স্বাহা
ওঁ নমশ্চামুণ্ডে বরাহি অংঘারে অংমাঘে ববদে
বিচ্চে স্বাহা, ওঁ নমশ্চামুণ্ডে ইন্দ্রাণি অংঘারে
অংমাঘে ববদে বিচ্চে স্বাহা, ওঁ নমশ্চামুণ্ডে চণ্ডি
অংঘারে অংমাঘে বরদে বিচ্চে স্বাহা, ওঁ নমশ্চা
মুণ্ডে ঈশানি অংঘারে অংমাঘে বরদে বিচ্চে
স্বাহা। যথোলিখিত স্বিতীয় বিষ্ণুথপ্তপদ মন্ত্র
বলা ইইতেছে।

ওঁ নমণ্চামুণ্ডে উর্দ্ধকেশি জ্বলিত শিথবে বিস্তৃয় জ্বিছেব তারকাকি পিঙ্গলভ্রুবে বিকৃতদংষ্ট্রে ক্রুন্ধে ওঁ মাংস শোণিতস্থরাসবপ্রিয়ে হস হস ওঁ সৃত্য নৃত্য ওঁ বিজ্ঞয় বিজ্ঞয় ওঁ মাধাত্রৈলোক্য রূপদহস্রপরিবর্তিনীনাং ওঁ বন্ধ বন্ধ ওঁ কুট কুটু চিবি চিরি হিবি হিরি ভিবি ভিবি আসনি আসনি ভাষণি ভাষণি ওঁ জাবণি জাবণি ক্ষোভাণ ক্ষোভণি মারণি মারণি সঞ্জীবনি হেবি ধেবি গেরি গেবি ঘেরি ঘেরি ওঁ মুরি মুরি ওঁ নমে, মাতৃগণায় নমো নমো বিচ্চে।

এক্ষণে শস্তুর একত্রিংশংপদ একসপ্রভ্যধিক শত মন্ত্র বলিভেছি। হে ঘৌ এই পঞ্জন বাদ্যান্তা ত্রিখণ্ডী জপ ও অর্চনা করিবে, হে ছেট্ এই বীজঘ্য শ্ৰীকুজিকাছনয় ও পদস্থিতে ষে জিত করিবে। অকুলাদিব ত্রিমধ্যস্থ কুল্ দির তিম্বাণ মধামাদির তিম্বাস্থ পিওপাদে তিমধাণ অদ্ধাতা সংগ্রহপুণনাল্ডেয় ও শিখা শিশ তিখণ্ডী মুর্থাই উ কে শিখাতে বৰ্ষ ন্মঃ এই মন্পুজাকবিবে। স্থাঁখোঁসেই মৰীজ ত।ক্ষা খুঁহুীং হেুঁনিবাঁজ আকর। কাদিক-কাবতে দ্বাতি স্থা অকুলা। ঐ বর্ণ যথাক্রমে কুলা হয়। শশিনা ভানুনী পাণনা শিব ও গান্ধাৰী গকাৰ। সিভাক্ষী চপলা গছজিহিবকা মকার। মুষা ভ্যনারা মধ্যম। ফকাব অজ্বান কবণ হয়। কুমরী ও কালরাত্রীনকার দিকাব সঙ্কটা বিকার কালিকা ফিকাব শিবা। ভবঘোৰা। টকার বীলংদা। তকার বিছ্যুতা। ঠকার বিশ্বস্করা ও শংশিনী। ঢ জ্বালা মালা করালী ছর্জন্ব। রঙ্গী বামা জ্যেষ্ঠা ও রোদ্রী। थकाली अञ्चलारम ककांत कूलालधी इस धवर म পিछिनी कानित्व। आ (विकिनी, हे क्रेंगी भारित মূর্ত্তিও কলা কুলা জানিবে। ঝ থভিগনী। উ বলিভা। ৯ কুলা। ঐ রূপ যদি র হয়, তাহা হইলে জ্ভগ। বেদনাদিনী ও করালী বলা হয়।

অং মধ্যমা। অঃ অপেতরয়া এই সমস্ত শভির যথাক্রমে পীঠে পূজা করিবে। অনস্তর স্থাঁ স্থা স্থেটি মহাভৈরবায় নগঃ এই মস্ত্র দ্বারা অকোদ্যা ঋক্ষৰৰ্ণী রাক্ষ্যী ক্ষপণক্ষয়া পিকাকী কেনা ও একাণী অফক নংভিতা এই অফশ কের পজাও ইলা লীলাবতী লালা লকা লক্ষেখনী लालमा विमला माला ७ मारहचती अश्रत असे एक হিতা এই কএক শক্তির এবং ভ্তাশনা বিশাল।ক্ষী হুঁকাৰী বড়ৰামুখী হাহারবা জ্বা জোধাবলা থ্যাননা এই সকল শক্তি কোমারীর দেহ সভ্তা हेडी पिराव शृङा कविरल, नर्सार्थ निक्कि इसे। স্ক্,জ্ঞা তরলা তারা ঋপ্রেদা হ্বাননা সারা সার-সমংগ্ৰাহা ও শংখতী এই সকল শক্তি বৈঞ্জী কুলোৎপনা। তালুজিহা রক্তাকী বিহ্যুজ্জিহা কর্মিণী মেঘনাদা প্রচণ্ডা উগ্রা কালকণী ও কলি **প্রিয়া ববাহীকুলসম্ভূতা এই সমস্ভ শক্তি জয়াভি** लांबिवाक्ति शका कविद्यता हल्ला हल्लावडी প্রচম্পা জলিতাননা পিশাচী পিচুবক্তা লোলুপ। শক্তি এন্দ্রীসন্তবা। পাবনী বাচনী বাহনী দমনী বিন্দুবেলা রহংকুকি বিছুতো বিশ্বরাপিনী ইহারা চামুগুকুলসস্ভা, ইহাঁবা মণ্ডলে পুঞ্জিতা रहेल जय श्रमा रायन। यम किल्ला अप्रजी पूर्वया যমান্তিকা বিড়ালী রেবতী ছয়া বিভয়া এট অউশক্তি মংালক্ষীকুলে ভাৰা। বিজয়ারী ব্যক্তি কর্ত্তক পূর্বেবাক্ত অন্টাফ্টক শক্তি দকল পুজনীয়।

> ইত্যাহেরে আদি মহাপুনা লজ্ঞ বিচাদি নাম্ক দ্বিত ধিব দিশ ৪০ম গে।

ত্রিস্ট্যধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

কুণ্ডনির্মাণাদিবিধি।

নারদ বলিলেন, অগ্নিকার্য্য বলিব। যাগ ছাবা স্পিকামনা সিদ্ধি হয়। চতুর্বিংশতি অঙ্গুল পরি মিত চতুরত্র ক্ষেত্র সূত্র দারা বেপ্তিত কবিয়া স্ম ভাবে খনন করিবে। খাতের উপরি প্রদেশে চতুর্দিকে অস্থলিদ্বয় পরিত্যাগ করিয়া মেখলা করিবে। সহাদিসংজ্ঞক ঐ মেথলা পূর্কা দ্বাদশা পুল উৰ্দ্ধ তথহি অধীকুল উৰ্দ্ধ তথহি দ্বাস্থল উৰ্দ্ধ ও চতুবলঙ্গুল বিস্তৃত হইবে। পশ্চিমন্থ মেখলার উপরিভাগে দশাঙ্গুলপরিমিতা চতুরস্থ বিস্তৃতা ষ্ট্রভুগ বিজ্ঞাত্ত্রাপ্রগা ক্রমশনিদ্রা অব্রথপত্রসদৃশী কুণ্ডে কিঞ্চিৎ নিবেশিতা অতি রমণীয়া যোনি নির্মাণ করিবে। ঐ যোনির উপরি প্রবিষ্ট মড সুল অগ্রভাগ ও তিন মসুল মূলপ্রাদেশ পঞ্চনশা-স্কুল পরিমিত নাল নির্মিত করিবে। এক হস্ত পরিমিত কুণ্ডেব এই লক্ষণ বলা হইল। দিহগুদি পরিমিত কুণ্ড বিষয়ে দিগুণাদির রুদ্ধি হটবে। এक ও किरमथन वर्ल्जामि वनिव। वृक्षम्ब श्रीत মিত প্রদেশস্থিত সূত্র সন্মুখক কোণে সংলগ্ন ক্ষিতে যে প্রিমাণ হইবে সেই কুগুর্দ্ধপ্রদেশত সূত্র ভাষিত করিলে বর্ত্তুল কুণ্ড হইবে। কুণ্ডার্ছ প্রদেশ হইতে কোণার্দ্ধ পরিমিত সূত্র পূর্বপশ্চিম দিকের মধ্যস্থলে স্থাপিত করিয়া উত্তর দিক বৃহিঃ প্রদেশ দিয়া অর্দ্ধচন্দ্রাকারে রেখা পাত করিলে অর্ভিদ্র কুও হইবে। প্রাকার বর্ত্দমেখলায পদাদল নিঝাণ বরিবে; বাইদগুণারিমিত সপ্ত বা পঞ্চাঙ্গল হোমার্থ চতুরত্র ক্রচেত করিবে। ত্রিভাগ পরিমণে নির্দ্মিত গর্ভম:ধ্য ফ্রশোভন রুত হইবে। পাৰ্ম উৰ্দ্ধ সমতল ও কুণ্ডাৰ্দ্ধ পরিমাণে খাতের

বহিঃপ্রদেশ শোধিত করিয়া থাতের অন্তর্দেশ হইতে অঙ্গুঠের চতুর্থাংশ অর্থাৎ অঙ্গুষ্ঠ শেমার্ক প্ৰিমিত ভূমি ত্যাগ করিয়া প্রম রম্ণীয়া মেখলা কারবে। অঙ্গুষ্ঠ ত্রিভাগ পবিমাণে বিভীর্ণ অঙ্গুষ্ঠ সাদ্ধান্ত তিত্ব কণ্ঠ ও তদতো চতুরঙ্গুল বা পঞা-স্বুল বিস্তার মুখতি চয় নির্মাণ করিয়া ঘা**দ্**ল প্রিমাণে উহার মধ্যদেশ ফুশোভিত করিবে এবং ঐ সকলের জায়াম মধ্যদেশ স্থলর ও নিম হটবে এবং উহার কণ্ঠদেশে কনিষ্ঠাঙ্গলি প্রবেশযোগ্য कि मु थाकित। अनि के कुछमनल यथांकि b-ত্রিত করিবে। হস্তপরিমিত দশুযুক্ত তফ্রর ও 🐃 🛪 পক্ষে মগ্র গোম্পদতুলা চক্রাভ হন্দর দ্বাস্থল বৃত্ত করিবে। অনন্তর উপলেপন করিমা অঙ্গল পরি-মিত। বক্তুনাসিকাকাবে বেথাপাতপূর্বক তচ্নপরি উত্তরাগ্র প্রথমা রেখা ও পূর্ববাদ্য বেখাছয় হটবে এবং ঐ রেথাময়ের মধ্যে দক্ষিণাদিক্রমে রেপা ত্রয় সম্পতি করিয়া মন্ত্রজ যাজিক প্রথম ছারা অভ্ৰূপণ কৰত তথায় বিধীর কল্পনাপুৰ্বাক তত্ত্ পরি মৃটিমতী বৈষ্ণীশক্তি স্বাপত ক্রত স্লক্ষ্তা ক্রিয়া হরিসাবণ পূর্ম্পক বহু এক্ষেপ করিবে। অনম্বর প্রাদেশপ্রমাণ সমিধ প্রক্ষেপপূর্বিক অগ্নো-পরি সমূহন করিয়া দর্ভ দ্বারা পূর্বাধিক্রমে অহি ব্রিধা বিস্তীর্ণ করত বহিন্দিশ্ধ অফক ও অদৰ ভূমিতে বাথিয়া আদ্ৰ্যস্থালী চরুস্থালী ও কুশাজ্য প্রথীতা দারা প্রোক্ষণ করিয়া প্রোক্ষণীপাত্র করত ঐ জল পবিত[্]তভাদিতততে ক্ষবিত করিয়া প্রথমে প্রোফ্নপাক্ত বহ্নির অর্টো নিধান ও ঐ জল দারা তিন বাব প্রোক্ষণ কবিবে। পরে স্মাথে কার্চ বিনাদে করিয়া সণ্স্পা প্রণীভাতে িফু ধ্যান করত আজ্যন্থালী আজ্ঞাপূর্ণ করিয়া মত্রে নিধ,নপুর্বকে সপ্লবন ও উৎপ্লবন দারা আজ্য

সংস্কার কবিবে। পবে অথভিতাগ্র নির্গর্ভ প্রাদেশ প্রমাণ কুশদর দাবা উত্তানপানীয় অঙ্গুষ্ঠ ও লনা মিকা কৰণক আজা গ্ৰহণ কৰিয়া ছুটবার বহিং সমীপে লইয়া তিন বার নিম্নে প্রক্ষেপ করিলে। ঐরপ স্রুক্ত ক্রুব গ্রন্থপূর্বক ঐ কুশপত্রদ্বয় দ্বাবা ভল্পক্ষেপ অগ্নিতপ্ত দর্ভ ছারা মার্চ্ছন ও পুন-ব্রাব প্রকালন করিয়া দাধক প্রণব ছারা পুনঃ প্রতপ্ত কবন্ত স্থাপন কবিবে। অনস্তর যাজিক প্রণাধনমোদ্র মন্ত্র উচ্চারণ করত হবন কার্বা সম্পাদন কবিবেন। পরে যাবদংশ ব্যবস্থান্তুলারে গর্ভাগানা'দ কার্য্য নামকরণান্ত ব্রভবন্ধান্ত সমা-বৰ্ত্তাৰদ'নক অথবা অধিকারাবদানক কার্য্য অঙ্গানু-দাবে ক বলে। দাণক দর্বত্ত প্রণব দাবা উপচার কল্লনা কবিবেন এবং বিভাতুদারে অঙ্গমন্ত্র ছারা হোম কর্ট্রা। এ'থমে গভাগান পরে পুণ্যবন সীমল্যোরয়ন জাতকমা নামকবণ অর্প্রাশন চূড়া-করণ ব্রতংশ্ধ (উপনথন) পশেষরূপে দেবব্রত সমাবর্ত্তন পত্নীর সহিত সংযোগ ও আশ্রমাণি-কাৰ লদাদি ক্ৰমে এক কৰ্ম চিন্তা করত পূজা করিয়া প্রতি কর্মে অফ অফ আহতি প্রদান পূর্বক মূলমন্ত্র উচ্চ।রণ করত ত্রুচ দারা পূর্ণ।ত্তি প্রদান করিবে। পরে প্রত্ত্তরে বৌষড়ত্ত বিষ্ণু মন্ত্র উচ্চারণ করত বহিঃদংস্কার পূর্ণিক বৈষ্ণব চক্ল শ্রেপণ করিয়া স্থতিলে স্থরোভ্যদেশের ধ্যান করত মন্ত্রোকারণ পূর্বক আচমনাদি উপচার দারা িফুর স্মারখেনা করিয়া গন্ধপুষ্পা দারা উঠার অঞ্ও আণরণ দেবতার সাহনা করিবে। অন্তব কাঠ আধান করিণা মুগ্রিও ঈশানকোণ্ডিভ আছাভাগ ও বায়ু ও নৈঋভকোণ শিত আজ্যন্তাগ গ্রহণ করিয়া যথাক্রমে অগ্রির দক্ষিণ ও বাম চক্ষুতে আত্তি প্রদান করিয়া

মধ্যে স্মস্ত অর্চিত দেবগণের যথাক্রমে আল্য ছাবা হোম করিবে। পরে তদ্দশংশ সংখ্যক অ**ন্ধ দেবভার হোম** কর্ত্রা। **দভিল আজ্যাদি** বা সমিধ দারা শত সকলে সংখ্যক হোমান্ত অৰ্চনা কার্য্য সম্পাদন করিয়া উপোধিত শুচি শিষাকে আহ্বান পূৰ্ববিক সম্মুধে নিবেশিত কয়ত অন্তৰ্যায়া পশুগণ প্রোক্ষণ করিয়া শিষ্যকে আত্মাতে সংযো-জিত করত অবিদ্যাক্স বন্ধন দার।লিঙ্গপাশবদ্ধ লিকশরীরাবচ্ছিম হৈত্য ধ্যান মার্গে সংপ্রোক্ষণ করিয়া বায্বীজঘাবা শোধন করিবে ; পরে দহন বীজ দারা সকলা ত্রক্ষাগুস্টি নি.শেষ রূপে দগ্ধ ও ভস্মকৃটনিভন্মিতা চিন্তা করিয়া বাবিদারা ভত্মপ্লাবিত করিয়া দংদার অক্ষ স্মরণ করত ভাহাকে পার্থিবী বীজ শক্তি কাদ করিয়। দমস্ত প্রভেমাত্রসংরত ভচ্ছৰ শুভ পার্থিৰ অও ধান করত তদাধার তদাত্মক প্রণবাত্মিকাচিগ্রয়ণে কিনী মূর্ত্তি তথ্যধ্যে চিন্তা করিয়া পূর্ববিশংকার বশত আলাতে লিঙ্গক্ষণ ইন্তিয় সংস্থানে বিভক্ত ও বদ্ধিত চিন্তাকরিয়। দমৎদৰ পর্যাস্ত ঐ অপ্তদম-ভাবে থাকিয়া দিগভীকত হটলে ঐ খণ্ডমামারা পুৰিবী ও মধ্যে জাতপ্ৰজাপতি চিন্তা করিয়া পুন-ৰ্ব্বার প্রোক্ষণ'করত প্রণবাত্মিত মন্ত্রাত্মক তত্ত্ব পূর্বোক্তক্রমে ভাগ করত বিষ্ণু স্বরূপ গুরু মস্তকে হস্তপ্রদান পূর্বকে ধ্যান করত ধ্যান যোগে এক ধা বছ বৈশ্বৰ উৎপাদন করিয়া মূল মন্ত্ৰাৰা কৰদয় গ্রাহণ ধরত বস্তা ঘারা নেত্রমন্ত্র বৌষ্ট উচ্চারণ कत्र निरमाय नय्नयूशन वसन क्रिया (प्रवर्गाय তত্ত্বজ্ঞ কুত শিদকের্ক সম্যকরূপ কুতপুরু হট্যা পুষ্পাঞ্জলিশারিপ্রদানপূর্ব্বক শিষাগণকে পূর্ণা মুখে উপবিষ্ট করাইবে। অমস্তর গুরুকর্তৃক প্রসূত ঐ শিষাগণও ভাগতে পুল্পাঞ্জলি পূৰ্বক অমন্তৰ

পুশাদি ছ'র। ভগবান হ'রর অর্চনা করিয়া গুরুর পাদপদ্যাদ্যন পুরঃসর সর্বস্থ বা তদর্দ্ধ দক্ষিণা স্বরূপ প্রদান করিবে। পরে গুরু নিষাদিগকে নাম সকল হারা হরির পূজার উপদেশ দিবেন। ঈশান কোণে শহাচক্র ও গদাধারি বশ্বক্সেনের অর্চন করিয়া তর্জনীছার। মণ্ডলস্থ বিষ্ণুর বিসভ্জনির সমস্ত বিষ্ণুনির্মাল্য বিশ্বক্সেনে অর্পণ করিবে। পরে প্রণীতা ছাবা আপনার অভিযেক করিয়া ক্রুস্থ বহ্দি আলাতে নিযোজিত করত বিশ্বক্ সেনের বিসজ্জনি করিবে। এইরূপে ভগবান বিষ্ণুর আরাধনা করিবে। এইরূপে ভগবান বিষ্ণুর আরাধনা করিলে ভোগাভিলাধি মানব গণ সলস্ত অভীক্ত লাভকরে এবং মুমুক্স্ভক্ত হরিপাদপদ্যে লানহয়।

ইত। দি মহাপুৰাণে আগ্নেয়ে অগ্নিকা। যে দ কণন নামক তিষ্টানিক স্পত্তম অধ্যায়।

চতুঃবক্ট্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যার।

বাহ্নদেবাদি -িরূপণ।

নাবদ বলিলেন পূজনীয় বাজদেবাদি মন্ত্রের
লক্ষণ বলিব। বাজদেবের অঙ্গদেব স্কর্ষণ
প্রভাৱে ও অনিক্র প্রভৃতি জানিবে। প্রথমে
নমো ভগবতে পরে অ কা অং আং ও স্থাজি অন
ভার নমো নারায়ণ পদ ওঁকারাদি নমোন্ত এইমন্ত্র
এবং ওঁতৎসং প্রক্ষাণে। ওঁ নমো বিষ্ণুবে নমং।
ওঁক্ষোং ওঁনমো ভগবতে নরসিংহায় নমং। ওঁ ভূনমো ভগবতে বরাহায়। হে নরাধিপগণ! জবাকুত্রম সদৃশ অরুণ হরিদ্রোভ লীল শ্রানল লোহিত
মেঘ অয়ি ভ্রাও পিজ্লবর্ণ নব বল্লভ নায়ক অঞ্জদেবতা। স্বনামান্ত স্বর বীজ যথাকেমে বিভক্তক্রপে ক্রম্যাদিতে বিশ্বাস করিবে। ব্যক্তনাদি

বাজের অন্যপ্রকার লক্ষণ দীঘ্ররযুক্ত নমোন্তবিত অসমন্ত্ৰ ও হুস্বযুক্ত উপাক্ষ মন্ত্ৰ বৰ্ণিত হইতেছে, বিভক্তনাম বৰ্ণান্ত শ্বিত থীজ হইবে। দীৰ্ঘ এবং হৃষ স্বর্যুক্ত স্বাক্ষোপাস মন্ত্র এইরপে জানিবে হৃদয়াদি বিভাসার্থ ব্যঞ্জন বর্ণের এই জেম স্বনা-মান্ত অঙ্গনামে বিভক্ত স্ববীজ হৃদয়াদি দাদশাঙ্গে বিস্থাদ পূর্ব্ধক সিদ্ধির ভমুরূপে জপকরিবে। অর্ধাৎ হৃদয় শিরচূড়া কবচনেত্র অস্থ্র এই বীক্স সন্তার সভ্জা হালয় শির শিধা কল্চ অস্ত্রনেত্র উদৰ পৃষ্ঠ বাহু উরু জানু জ্ঞা ও পাদ মূলমন্ত্রের দ্বাসে গথাকানে কং টং পং শং বৈন্তেয় বং ঠং ফ ফং গদামক্র গং ড বং দ প্রতিমন্ত্র ঘং ভং হং জিটো নমঃ বং শংমা কাং পাঞ্জক্ত ছৎ তৎ পৎ কোস্তভায় জং ঋং বং হুদর্শনায় সং বং দ॰ চং নং শ্রীবৎসায় ওঁধং বং বনমালারৈ মহানস্তায় ন্মঃ এইরূপে বিতাস করিবে। নিবীজ পদ মন্ত্রের জান্ত পদ হারা নামসংযুক্তিহেতৃক সদয়াদি প্রুণা অঙ্গ কল্পিত্য এই হেওক জন্ধাদিতে পঞ্জকার প্রণবাদিউক হইফাছে মধাৎ প্রথমে হৃদয়ে প্রণব শিরঃ ও শিখায় পরায় এইপদ নামাত্মক করত নামান্তক অস্ত্র হইবে। প্রণবাদি নমোন্ত চতুর্থান্ত পরাস্ত্রাদি স্থনামান্ত্রক একব্যহাদি ষড়বিংশ বৃত্তপর্যান্ত দেই আত্মার মন্ত্র হইবে দেহের কনি-ষ্ঠাদি করাগ্রে প্রকৃতির অর্চনা করিবে : এই পদ পুরুষাত্মক এবং প্রকৃত্যাল্মক পদ ছুই প্রকার ক্ষাং ওঁ প্রায়াক্র্যাক্তনে এবং বারু ও অর্ণরেপ ফুটপ্রকারও অগ্নি ত্রিমূর্ভিডে বিকাস করিয়া করে ও দেহে ব্যাপকভাদ করত সবা ও অপ্যব্যারূপ ক্রম্বয়ে বায়ু এবং অর্ক বিভাস করিবে। হৃদর তমুও তুর্যারূপে **धरेक्षण नाम इटेर्टा इस्ट**ालक श्रारक्नाम

व्यक्ति नकरत यज्ञुरवं न जनवर्य वर्धक (कन्नाम শিরহৃদয়চরণাস্তকদেহে আকাশ রূপ ব্যাপকন্যাদ করত পূর্কের ন্যায় করে বিন্যাদ করিবে। পরে অঙ্গুলি সকলে বায় প্রভৃতি এবং শিবহুদয় গুছ ও পাদে যথাক্রমে বাগুজ্যোতি জল পৃথীরূপে পঞ্বুছে উক্ত হইয়াছে এবং মন-শ্লোত বাক্ চকু জিহলা ও আণরূপ মড়ব্যুহ কথিত মানসিক ক্যাপক ন্যাস করিয়া অঙ্গুষ্টাদি हरेएक क्रांग यसक, यूथ, क्रम्म, खक्र ७ भाग সৰুত্তে কৰুণাত্মক জীবসংজ্ঞক আদি মূৰ্ত্তি ব্যাপক हरेरव। जू जू विश्वर्षाहर्जनस्र १७ मे का अहे मेख লোক অঙ্গুটাদি ক্রমে করেও দেহন্যাস করিযা তলসংস্থ সপ্তম লোকেশ শনীবে বিভাস করত দেহে শির ললাট আজ হৃদয় গুহু ওচবণ সংস্থিত স্মিকৌম উক্থ ধোড়শী বাজপেয় অভিরাত্র আপ্ত ও যাম এই সপ্তয়জাত্মক স্থাস কবিয়া বুদ্ধি অহংকার মন শব্দ স্পর্শরূপ রদগন্ধা ও বুদ্ধিতর ক্রমশ ব্যাপকরপ কবে ও দেহেকাস করিবে। পরে তলদ্বয়ে গন্ধ ও বুদ্ধিতত্ত্বভাস করিয়া মন্তকে ললাটে মুখে হৃদয়ে নাভিতে গুছেও পদে অফব্যহ প্ৰুষ্ণ জীৰ বুদ্ধি অহন্তাৰ মন শব্দ গুণ বায ক্ষপত রস এই নবাত্মক জীব অঙ্গৃষ্ঠ রয়ে ভচ্ছত। দি বাম ক্রিষ্ঠান্ধুলি প্যান্ত ক্রমণ অবশিষ্ট ভত্তসকল দর্বশরীর শির লগটে আত্ত হৃদয় নাভিত্ত জাতু अन्यास प्रश्ने हेट्टिस, अञ्चलक्ष्या विश्व उद्यास त्रास्त्र । ভর্জন্মাদি অপর অঙ্গলিতে শির ললাট বক্ত হৃদয় নাভিগুছ ভাতু ও পদদ্বয়ে একাদশাত্মক মন গোত্র স্বক্ চক্ষু জিহবা আণ বাক্ পাণিপাদ পায়ু উপস্থ মানদব্যাপক আদ ও অসুষ্ঠছয়ে ত্যোত্র, তৰ্জন্যাদিক্ৰমে অবশিষ্ট অষ্টতত্ব তলম্বয়ে মন্তক ললাট আক্ত হৃদয়ে নাভিগুছ উরুদ্ধয় জ্ঞা গুল্ফ

ও পদে ক্রমণ বিষ্ণু মধুহর ত্রিবিক্রম বামন জীধর হয়ীকে**ল পদ্মলাভ দামোদর কেশব নারায়ণ ম**ধিব গোবিন্দ রূপ বিষ্ণুব্যাপক স্থাস করিবে। অঙ্গুষ্ঠানি অঙ্গলিতে - জলম্বয়ে পদে জাতুতে কটিদেশে শিরে শিখবে জামুও পাদাদিতে বুদ্ধি অহকার মন চিত্ত শব্দম্পর্ণ রদরূপ গন্ধ গ্রোত্ত ছক্ চল্ফ্ জিহ্বা নাদিকা বাক্ পাণিপাদ পাঁয়ু উপস্থ ভূমি জল তেজ বায়ু আকাশ ও পুরুষ এই সমন্ত তত্বাতাক পুরুষ হয় ইহার মধে ভাদশত্মক পঞ্বিংশ ও ষড়বিংশ বৃাহ পুরুষ বাংপক আচাস করিয়া আকু-ষ্ঠাদিতে দশ ও অবশিষ্ট হস্ততলে ছাদ করত মন্তকে ললাটে মুখে হৃদয়ে নাভিতে গুছে উক্লতে জানুতে চরণে ইক্রিয় সকলে ও পুনরায় উর্কৃতি ক্রমে পদে জানুদ্বয়ে উপত্তে হৃদয়ে ও মস্তকে ক্রমশ পর দেবতা ও পুরুষাত্মাদি ষড়বিংশতি তত্তে পূর্বের হ্রায় পরতত্ব চিন্তা করিবে । পরে মওলৈক দেশে পণ্ডিত দাধক প্রকৃতির পূজা কণিয়া পূৰ্ব্ব দক্ষিণ পশ্চিম ও উত্তর দিকে হৃদ-য়াদি পুজা অগ্নাদি কোণে অস্ত্ৰুও বৈনতেয়াদি পুদা পুর্বের ক্যায় করিবে! পরে দিকপালগণ অপর বিধি ও ত্রিবাহে অগ্নির পূজা করিয়া পূর্কাদি দিগবলাবাসরাজ্যাদিভূষিত সাধক মধ্যে কলি-কাতে নাভদ ও মানদ কলিকান্থিত বিশ্ব রূপের পূজা সর্বসিদ্ধি ও রাজ্য জ্যার্থ করিখে। অনস্তর नर्य वृद्ध ७ अकात्रयुक्त शक्ष्मानि ७ हेस्तानित দহিত বিশ্বক্দেনের পূজা ব্যোমদংস্থিত বৌবীজ ও নামধারা করিবে।

> ই ভাগেরের আদি মহপুরাণে মন্ত আদশন নামক চতুঃষ্ঠাণিকবিশ ৬৩ম আধ্যায়।

পঞ্চাফ্টাধিকদ্বিশততম ভাষ্যায়।

মুদ্রলিকণ কখন।

নারদ বলিলেন দেব সালিধ্যকারক মুদ্রাসক-লের লক্ষণ বলিব। প্রথম মুদ্রা অঞ্জলি উহা क्रमहासूत्री इहेटल बन्मनी मूखा इयः मृष्टिनक वाम হান্তের অঙ্গুষ্ঠ উদ্ভাবে থাকিবে, আর দক্ষিণাঙ্গুষ্ঠ নেই সব্যাস্থার বন্ধন সরূপ হইবে বা যাহার উদ্ধেদিকিণাস্থ থাকে বৃহে বিষয়ে এই তিন প্রকার মাধারণ মুদ্রা অনভার অসাধারণা এই সকল যুদ্রা বলিতেছি কনিষ্ঠাদি অঙ্গুলি বিযুক্ত ক্লপে অউমুদ্রা যথাক্রমে পূর্ব্ব বীজাফীকের সন্বন্ধে নিৰ্দিষ্ট আছে। অঙ্গুৰ্তবারা কনিষ্ঠান্ত অঙ্গলিত্রয় নামিত করিয়া সম্মুথে উদ্ধৃ করিলে নবম বীজের নিখিত হয়। বামহস্ত উত্তান করিয়া শনৈঃ শনৈঃ অর্জনামিত করিলে বরাহ মুদ্রা হইবে! অঙ্গদেবতার মুদ্রা যথাক্রমে এই সকল বলিতেছি। বামহত্তে মুষ্টিবদ্ধ করিয়া এক এক অঙ্গুলি মোচন করত পূর্বব মুদ্রা মাকুঞ্চিত করিবে দক্ষিণ হস্তেও এইরূপ হইবে এবং উর্দাংস্থ বামমৃটি হইলে যুদ্রা দিদ্ধি হইবে।

ইত্যালেবে অংকি মহাপুরাণে মুক্তো পদশন নামক প্রুষ্টাধিকবিশতাত্ম অধ্যায়।

ষট্ৰফ্যাধিকদিশত ১ন অধার।

সর্বতোভদ্র মণ্ডল কথন।

নারদ বলিলেন সাধাত্যণ দেবালয়াদিতে পবিত্র ভূমিতে বা গুড়ে মণ্ডল নির্দ্ধান পূর্বক ততুপরি জগদীশর স্বার অন্ট্রা করিষা মন্ত্র সাধন কবিবে চতুকোণ ক্ষেত্রে মণ্ডলাদি লিখিত হয় তথাধ্যে স্কাভোভদ্মগুল দ্বিশ্ত ষ্ট্পঞাশং কোতে অঞ্চিত করিবে। বট্তিৎশৎ কোষ্ঠদারা পদ্ম পংক্তিক্ৰমে বহিৰ্ভাগে পীঠ এবং ডাহা হইতে छूह त्कार्छ वीशिका हर्जुम्ब्रिक त्कार्छवरम्न बात , চতুষ্টয় ভদ্বহিঃ বর্ত্তুলরেখা বেষ্টিভ পুর্বোক্ত পদ্মক্ষেত্র অঙ্কিত করিবে অনস্তুর 🔻 পদার্দ্ধে বর্ত্ল ভ্রমণ করাইয়। বহিভাগে প্রদেশে দাদশভাগে বিভক্ত করিয়া শেষ ক্ষেত্র চতুষ্টয় বর্তুলারেখা কেষ্টিত করত প্রথম কৰিকাঞ্চেত্ৰ দিতীয় কেশরক্ষেত্র দলদন্ধির ও চতুর্থ ক্ষেত্র দলাগ্রের হইবে। অনস্তর কোণসূত্র প্রদারণ করত কোণদিক্ও মধ্যদিয়া কেশরাল্পে নিধান করিয়া দলদন্ধি লাস্থিত করিবে পরে সূত্রেপতি করিয়া তাহাতে পত্রাফক লিখিবে। অনন্তর দলদন্ধির অভরাল মান মধ্যে নিধান করত তৎপরিমানে দলাগ্রখেষ্টিত করিয়া তদনওর পূর্বক তৎপার্খে তদভরাল করিয়া বাহাক্রমে কেশরে ও দলমধ্যে পুনরায় ছুই ছুই রেখা ৯ঞ্জিত করিবে। এই সাধারণ পদালক্ষণ। একংগ্রাদশ দল পদালকণ বলৈতেছি। পূৰ্ণাহিত পদােৱ ক্রিকার্ক্ক প্রিমাণে ক্রমশ বেষ্টন করিয়া ভৎ- 🛚 পারে ভ্রমণ যোগে ঘট সংখ্যা কণ্ডলা করিবে ট এইরপে দাদশ মৎস্ত করিলে তাহার দাদশদল পদ্ম হইবে এবং পঞ্পত্র সিদ্ধার্থ ঐ রূপে মহস্থা যুক্ত পদ্ম করিয়া ন্যোম রেগাপাত করত দহিংগীঠ করিয়া ভাষাতে কে'ছ সকল মাজিত কিবে। এবং পাদরক্ষার্থ কোণ সকলে ভিমটি ও অপর ছুই ছুইটি কোঠ অভিত করত চতুদিকে বিলিপ্ত 🖟 পাত্র সমস্ত করিবে। পরে বাঁপির মিমিত চতুর্দিক্ ষিতপংক্তিবয় বিল্পু করিয়া চতুর্দিকে চতুদার করিবে: িচক্ষণ সাধক স্বারপার্যে অফিশোভা

করিয়া তৎপাধে তাবং প্রিমাণে উপশোভা কবিবে এবং উপশোভার সমীপে কোণ সকল হইবে। অনন্তব চতুর্দিকে মধ্যে কোঠর সহিত তুই সুই কোষ্ঠ চিস্তা করিয়া বহিঃপ্রদেশে চারিটি 🖟 এবং পাশ্বরে এক একটি কোষ্ঠ মার্ভিত করিয়া শোভাৰ্থ পাৰ্শ্বিয়ে তিন্টি ও দল্ভিত তিন্ট ্ৰাষ্ঠ লুপ্ত করিবে। তংপৰে বিপধ্যয়ে উপশোচা কবিষা কোণেৰ মধ্যে ও বহিঃ প্রদেশে বিভিন্নৰূপে নে। তত্রব চিন্তা করিবে। এইরপে শোডশলোষ্ঠ চটবে এবং এইকপে অকাৰা মণল চটবে কাৰ্থাং হাদশ ভাগে ষ্টত্রিংশৎপদপদ্ম একা বীথিকা ও পংক্তি করিয়। অপব পংক্তিবয় দ্বাবা পূর্বেবন্যায় বাবশোভাদি ক্যিবে। এক হস্ত মুগলে দ্বাদশা-দল প্রিমাণে প্র ও দ্বিত্ত মণ্ডলে হস্ত প্রিমিত পদাহটবে অথবা দাববৃদ্ধি ক্রেমে আচবণ কবিবে পীঠিদহিত মণ্ডৰ চহুকোৰ হয়। চক্ত ও পক্জ হওদৰ পৰিমিত নৰাস্থলি পদাৰ্দ্ধ অঞ্চলি ত্ৰিষয় পৰিমিত প্ৰানতি অফীক্ল হাব অকুলিব চতু ফুর প্রিম্বত নেমি ক্রিবে। তিলা বিভক্ত ক্ষেত্রের নথে৷ ভাগদ্বয়ে অঙ্কিত কবিয়া পঞ্চান্ত প্ৰ সিদ্ধিৰ নিমিত্ত ইচ্ছাতুসাৱে ইন্দীৰ্য দলকাৰ বা মাতুলাক্ষ দল্যদৃশ অথবা প্রাপ্তনিত তার দকল অঞ্চিত কবিষা অরুসন্ধির মধ্যম্ভিত অরের নিষিত্ত বহিং এনেশে ভ্রমণ ক্রাইয়া সঞ্জিমধ্যে ব্যাফিত অবমূল ও অরমধ্যে অবণি সম্ভাবে ভ্ৰমণ ক্ৰাইবে এইকপে সম্ক সিদ্ধান্তর মাতুলাঙ্গ নিভ সম্মার স্কল হইবে।

চণ্ডদণ হস্ত পার্থিত ক্ষেত্র সমভাবে সপ্ত ভাগে বিভক্ত করিম। ছিপাকত শক্ষেত্রে যথাত্য-ধিকশতসংখ্যক কোঠ হইবে। উচাব মধ্যকোষ্ঠ চহুক্তিয়ে সর্বতোভদ্র মন্ত্র মন্ত্রত করিবে। চতুদ্দিকে বিথাব নিমিত্ত খেত্র পরিক্যাগ পুর্বক পদ্দমন্ত অক্ষিত কবত ঐ ক্ষেত্র বীণির নিমিত্ত মার্জিত করিণা চত্তিকে গ্রীবার নিমিন্ত তুই চুই মধ্যকোষ্ঠ লুপ্ত করিবে। পরে চতৃদ্দিকে বহিঃপ্রদেশে। তিনটি তিনটি কবিষা লুপ্ত কবিবে। গ্রীবাপাশ্বে বহিঃপ্রদেশে এক শোভা মাজনা কবিয়া বাহ্য^{়া} কোষ্ঠ সকলে সপ্তাংধাত্রয মাজ্জিত করিলে নব[া] ভাগ মণ্ডল রূপ নব বাহ হইবে উহাতে ভগবান হবিব অর্চনা করি ব। পঞ্চবিংশতি বৃহে বিশ্রুপ । গমওল ও য়াতি শং হস্ত ব কেন্দ্ৰ দাতি শং সমভাগে বিভক্ত কবিবে; এইরূপ করি**লে চ**তু-বিংশত্যধিক সহস্র কোষ্ঠ হইবে। উহার মধ্য-স্থিত ষোড়শ কোষ্ঠে স্বতোভদ্র মণ্ডল লিখিয়া ভৎপাৰ্শে প-ক্তি মাৰ্জিত কবৰ চতুদ্দিকে যেডশ কোষ্ঠে পুনরায ভদাষ্টক লিখিবে। পরে পুন-ৰ্বাৰ তদ্বহিঃপ্ৰদেশে পণ্ডিক মাৰ্জিত ক'ত এরপ বোডশভদ্রক লিখিয়া চতুর্দিকে প ক্লি মাজ্জিত ক্ৰিয়া পূৰ্বাদিদিকে যথাক্ৰমে ভিন্টি ভিন্ট কবিষা হাদশ দাব কয়িত কবত মধ্যস্তি ষ্ট্- কেণ্ঠ লুপ্ত কৰত মধ্যে চতু উয়, পার্শ মধ্যে চতু উষ্ মধ্যে ও বহিঃপ্রদেশে বিতয় শোভা সম্পাদন করিবে এবং উপদাব সম্পাদনার্থ মধ্যে তিন ও বাহো পঞ্সংখ্যক মাডিজত কবিষা পুলেনৰ্ ন্যায শোভা কল্পনা করিবে, পবে বহি প্রদেশে বোণ সকলে সপ্ত ও মধ্যে ত্রিসংখ্যক কোষ্ঠ বাজিতি কবিবে।

উক্ত প্রধাণশতিক ব হাওনে প্রবাহ্মার ।
ভার্চনা করিবে এবং মাধা এক। দিক্রমে প্রধান লো
যথাক্রমে বাজনেশনির প্রথা বড়িব্য । পুদর্পর
বর্ষি দেবের প্রশা বিজ্ঞা হল হল মার্নি শ্রাহ্র প্রথা বর্ত এক প্রথা মার্নিভা

অখিলব্যুহে ক্রমশ প্রচেতাদৈবত অধ্বর যত্নপূর্বাক যজন করিবে। মূর্তিভেদে অচুতে সপ্ত**প্রকা**রে বিভক্ত হন ; চত্বাবিংশৎ হস্তপরিমিত উত্তম কে ত্রের এক এক কোষ্ঠ জ্রমশ সপ্তথা বিভক্ত করত পুনরায় ঐ এক এক খণ্ড দিগা করিলে চতুঃষট্য-বিক্দপ্তশতোভর এক সহস্র কোষ্ঠ হয়, উহার মধ্যন্থিত ষোড়শ কোঠে দৰ্কতো ভদ্ৰমণ্ডল হইবে এবং উহার পাশ্বে বিথী তৎপরে অইভদ্র তাহার পরে পুনরায় বিথীকা তৎপরে যোড়শ পদ্ম, পরে ভুয়োবীথি তাহার পর চতুর্বিংশতি পদ্ম, পরে পুনর্কার বীথি ও দাত্রিংশং পদ্ম, তদহিঃপংক্তি বীথি ও তত্বারিংশং পঙ্কজ। অন-ন্তর পুনরায় বীথি করিয়া শেষপংক্তিত্তয়ে ছার শোভা ও চতুর্দিকে উপশোভা করিবে, মধ্যে কোষ্ঠ বিলুপ্ত ক্ষরিয়া ভূই চারি বা ষড় দারসম্পা-দন করিবে। চতুদিকে পঞ্চ ত্রি বা এক এক কোষ্ঠ বিলোপ করত শোভা ও উপদার সম্পাদন করিবে। **স্বার সকলের পাশ্বিরের মন্ত**ু বং চড়ঃস-খ্যক ও মধ্যপ্রদেশে তুই তুই ক্রোষ্ঠ বিলোপ করিষা ষট্সংখ্যক এইরূপে উপশোভা করিবে। এক এক দিকে চতুঃসংখ্যক শোভা তিন তিন দ্বার ছইবে এবং কোণ সকলে ক্রমে ক্রমে পঞ্চ পঞ্চ কোষ্ঠ প্রত্যেক পংক্তিতে মাজ্জিত করিবে। এই রূপে মানবগণের ইউজনক শুভজনক শুভ মুওল इहेर्द ।

> ই ব্যাহেটে অটাদ্ৰতাপুৰ্তি ম**ওলাদ্ৰিল্** ক্ষিক বট্ৰজাধি চাধ্য তত্ম **অ**ধ্যয়ে /

সপ্তথ্যস্ত্রাধিকদ্বিশততম অধ্যায়।

শিলাবিভাগ বিধান।

ভগবান বলিলেন, শিলাবিন্যাস লক্ষণ পাদ প্রতিষ্ঠা বলিব। অগ্রেমগুপ করিয়া কুগুচভুক্টয় নিৰ্মাণ পূৰ্বক কুম্ভ ইউকা ও উন্নত দাৱস্তম্ভ বিন্যাস করিবে। পরে পাদোন খাত পূরণ করিয়া দেই সমদেশে বাস্তপূজা করত অপকু দাদশাপুল বিস্তীৰ্ণ বিস্তারে ত্রিভাগ স্থুল ও হস্তপরিমিত দীঘ উৎकृके भिना भिनाभग्रतिभ विनाम কর্ত্তব্য। তাত্রময় কুন্তরূপ নবসংখ্যক ইফক। ঘট পঞ্চকষায় জল দৰ্বেবীৰ্ধি জল ও গন্ধতোয়ান্বিত শুদ্ধ জলপূর্ণ হিরণ্য ও ত্রীহিযুক্ত গন্ধচন্দমচর্চ্চিত করিয়া স্থাপন করত আপোহিষ্ঠা ইত্যাদি মন্ত্রেয় শ্ৰো দেবীত্যাদি ভরতসম্বন্দীত্যাদি পাক্ষানী ভ্যাদি উত্তমং বক্লগমিত্যাদি কয়ানেচত্যাদি বরুণসভাাদি হংসং শুচিদদিভ্যাদি মন্ত্র ও শ্রীসূক্ত দারা শিলাদংস্থাপন পূর্বক মণ্ডলের পূর্বেদিকে মণ্ডলোপরি শ্যাায় ভদ্বান্হরির অচেনা ক্রিয়া বহিস্থাপন পূৰ্বক দাদশ সমিগ্ৰারা ছোম করত প্রণব দারা মৃত আজ্য ভাগদ্বয়ে বিভক্ত করিয়া আজ্যপূর্ণ ক্রববারা অকীত্তি প্রদানরূপ ব্যাহ্নতি-। হোমকরত লোকপালগণের এবং অগ্নিসোমগ্রহ ও প্রুষোভ্যের উদ্দেশে আত্তি প্রদান পূর্কাক পুনরায় ব্যাহ্নতিহে৷ম ও প্রায়শ্চিত হোম করিয়া পূর্ণাহৃতি প্রদান করিবে। অনন্তর প্রাধার্থ ওক বেদাখ্য ও ঘাদশক্ষর মন্ত্রদারা কুতৃসকলে স্তুত ও তিল পুথক্ পুথক্ প্রক্ষেপ করিয়া অফদিক বিলিপ্ত করত তথায় অফশিলা ও কুক্ত এবং মধ্যে একশিলা ও কৃষ্ট বিন্যাদ পূৰ্বকৈ তাহাতে যথা-ক্রমে পদ্ম মহাপদ্ম মকর কছেপ কমুদনন্দ পদ্মশৃত্যা

ও পদ্মিনী নামক দেবগণ বিন্যাস করিবে। পরে কুম্ভচালন নাকবিয়া ভাছাতে যথাক্রমে বক্ষামাণ রূপে ইউকাউক বিন্যাস করিবে। পূর্বাদি ঈশানান্ত দিকে প্রথমে ইউকা ন্যাসকরিয়া বিমলা-শক্তি প্রভৃতি ইফকা দেবতা যগাযোগা তাহাতে বিনাাস পূর্বাক মধ্যে অফুগ্রহাদেবী বিন্যাস করিয়া হে অব্যাসে। অক্ষান। পর্ণে। অক্সিরাস মুনিহুতে ইফকে। তোশৰ প্রতিষ্ঠা করিন্তেছি ভূমি আমার অভাষ্ট পূর্ণকব এন মল্বারা দেশিকোত্তম গুরু ইফকা নিন্যাস কৰিয়া ম্ম।হিত চিত্তে মধ্যভানের কুম্ভোপনি শেৰেশ প'ল্মনী দেবতান্যাস করত মৃতিক। পূলা ধতু রত্বও লৌছ গভে আধান কৰিয়। দিক 🗇 ে শস্ত্র সমস্ত গর্ভভাজনে অর্চন করিবে। ছাদ্টো চিক্রান চক্রপুল উন্নত ভাম্-ম্য পদা'কাৰ ভাজনে পৃথিবীৰ পূজা করিবে। পরে কে এক কে। স্বভিতেশে। প্রবিভাগন ভূষিত । সমুদ্র শবিবাবে দেবি ! আপনি গর্ভগ্রহণ ককন চে নন্দে। ১০ বাসিঠে প্রজাও ধনের সহিত আমাদিগকে গ'নন্দিত করুন। (হ জ্বে। হে ভার্গব দায়াদে। আপনি প্রজাদিগের সম্বন্ধে বিজয় প্রদাহউন। হেপর্বে। হে শান্তিরস দায়াদে। আমার ্বিমনস্বামনা পূর্ণ করুন। হে ভদ্রে। হে কাশ্যপ দাখাদে। আম য় স্তমতি প্রদান করুন। হে সর্ব্ব-। বীজময়ে। হে শর্কারপ্রযুক্তে। হে ওষধিরতে। জয়ে। হে স্থক্ষচিরে বাদিখে নন্দে এট স্থানে আপনারা বিহার করুন। হে প্রদাপভিস্ততে। চতুরস্র! মহীয়সি। হুভগে। হুপ্রভে। কাশ্যপ হচেদেবি ্ এট গুছে বিহাৰ করুন। হে নিখিল পুজিতে! পুরুষাশ্চর্য্যা গন্ধখাল্যবিভূষিতে ভব-ভৃতিকরি। ভার্গবি দেবি। এইগৃছে বিহার করুন 🎚 এবং দেশস্বামি পুরস্বামি ও গৃহস্বামির অধিকারে । তেছি এবেণকর পণ্ডিত ব্যক্তি চতুরস্রীকৃত ক্ষেত্র

মনুষ্যাদির ভুষ্টির নিমিত্ত আপনি পশুর্দ্ধিকরী হউন। এইরূপ প্রার্থনা করিয়া গোমুজ্জারা থাতদেচন করত গর্ভে নিধান করিলে নিশাযোগে গর্ভাধান হয়। অনন্তর গুরুকে গো বস্ত্রাদি প্রদান পূর্ব্যক অপরাপর ব্যক্তিকে ভোচ্চন গর্ভগাদ পূর্বক ইফকানাদ কর্ড করিবে। অনন্তর প্রাসাদ পরিমাণামুসারে পীঠ বন্ধ কর্ত্ব্য উত্তম পীঠ প্রাসাদ বিস্তারে অর্দ্ধপরি-মাণে উন্নত হইবে মধ্যম পীঠ ও উত্তম পীঠপেকা পাদহীম ও কনিষ্ঠ পীঠ উত্তম পীঠের অদ্ধপরিমাণে হইবে। পীঠ বন্ধোপরি পুনবায় বাস্ত্রযাগ করিবে। পাদ প্রতিষ্ঠাকারী মানব নিষ্পাপ হইয়া স্বর্গে আনন্দভোগ করে। যে ব্যক্তি দেবাগার করিব. মান্দ করে তাহার শরীরের সমস্ত পাপ তৎক্ষণাৎ প্রণক হয়, আর বিধিপূর্বক দেবপ্রদাদ নির্মাণ কবিলে যে কি হয় ভাহা আর কি বলিব যেব্যক্তি অফটইফটকাযুক্ত দেবালয় প্রস্তুত করে, তাহার ফল সম্পত্তি কেহই বলিভে পারেনা বিস্তার পূর্ববিক দেবপ্রাসাদ নির্মাণ করিলে যে ফল হয়,তাহা ইহা ছারাই অনুমানকর গ্রামের মধ্যে এবং পূর্বে পশ্চিম্বার দেবালয় করিবে গ্রামের কোণ मकरल পশ্চিম মুখে এবং দক্ষিণে পশ্চিমে প্রামুখ দেবালয় করিবে।

> ইভাার্যে অধিমভাপুরাণে পাতনযোগনামক সপ্তरहे। भिक्तिन उठम व्यथाति।

অফ্টষ্ট্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

প্রাদাদলক্ষণ কথন |

হয়প্রীব বলিলেন সর্বসাধারণ প্রাসাদ বলি-

ষোড়শভাগে বিভক্ত করিয়া মধ্যন্থিত চতুর্ভাগ আয়তবুক্ত করত অপর দ্বাদশভাগ ভিত্তির নিমিত্ত কল্লিড করিবে। জঙ্ঘা চতুর্ন্তাগ পরিমিত উচ্ছি ত জ্জার দ্বিগুণ উন্নত মঞ্জরী, মঞ্জরীর চতুর্পভাগে প্রদক্ষিণ পরিমাণ হইবে উভয় পার্মে সমভাবে ঐ পরিমাণে নির্গমদার হইবে শিথর সম বা দ্বিগুণ শোভা সম্পাদনাশুরূপ অগ্রভূমির বিস্তার হইবে মণ্ডপের মত্রে গর্ভসূত্রহয় পরিমাণে বিস্তীর্ণ এবং পাদাধিক পরিমাণে দীর্ঘ বা প্রাসাদগর্ভ পরিমাণে মধ্যে স্তম্ভ সকলে ভূষিত মুখ মণ্ডপ করিবে। একাশীভিপদযুক্ত বাস্ত করিয়া আরম্ভ করিবে। প্রাগ্রার বিন্যাস পাদাস্তঃস্থ শুক্দেবগণের অর্চনা করিবে এবং প্রকার বিন্যাস দ্বাত্তিংশদন্তর্গত দেবগণের প্রজাকর্ত্তব্য সর্বসাধারণ প্রাসাদ লক্ষণ এই কীর্ত্তন করিলাম প্রতিমার অপর প্রাসাদ পরিমাণ বলিতেছি প্রবণ কর। প্রতিমা প্রমাণ শুভা পিণ্ডিকা করিয়া পিণ্ডিকার্দ্ধ পরিমাণে গর্ভনিমাণ করত গর্ভপরিমাণে ভিত্তি দকল প্রস্তুত করণান্তর ভিত্তির আয়াম পরিমাণে উৎদেধ ভিত্তির উচ্ছায়ের দ্বিগুণ পরিমিত শিখর শিখরের চতুওণি জ্রমণভূমি শিখরের চতুথাংশ পরিমাণে দম্মথে মুখমগুপ গর্ভের অফ্টমাংশ পরি. মাণে রথনিগম ছাব পরিধির ষষ্ঠাংশ পরিমিত র্থদকল উহার তৃতীয়াংশ পরিমাণে র্থনির্গমন্ত্র করিবে। বথ ন্যে খোটক এয় সর্বদ। যোজি ভ বাথিবে শিথরার্থ চতুঃসংখ্যক সূত্রপাক্ত করিয়া শুকনাশের উদ্ধে তিয়গুভাবে সূত্রপাত করত শিথবেৰ অন্ধৃতাগ সিংহ কল্পিত করিয়া শুকনা শের স্থিরীকবণ করিয়া সন্ধিমধ্যে স্থলে নিধান করিবে ঐরূপ পার্শধয়ে সূত্রনিধান করত তাহার উর্দ্ধে সক্তঠাবেদী করিবে সংগ্রভগ্ন বা বিকরাল

কদাচ করিবেনা। বেদিকা মানের উদ্দিকলশ ।
কলিত করিয়া বিস্তার দিগুণ দৈর্ঘ্য হুশোভন
উড়ুম্বর নির্দ্মিত দার সংস্থাপন পূর্বক তদুর্দ্ধে
মঙ্গলাদিযুক্ত শাখা বিন্যাস করত দারের চতুর্থাণণে |
চপ্ত প্রস্তুত্ত এবং বিশ্বক্সেন ও বংসদন্ত এবং
উদ্ধৃস্থিত উড়ুস্বরে দিগুগ্জকর্ত্বক ঘটদারা স্নাপ্যমানা ক্যলবিশিকী হুরূপা লক্ষ্মীদেবী স্থাপিতা
করিবে।

প্রাসাদের চতুর্থাংশ পরিমাণে প্রাকারের উচ্চতা প্রাসাদ পরিমাণের পাদোন পরিমিত গোপুরের উচ্ছ র হইবে। পঞ্চতত্ত দেবতার এক-হস্তা পীঠিকা করিবে। পরে সম্মুখে একগারুড় মগুপ ও ভৌমাদি ধামপ্রস্তুত করিয়া উপরিভাগে পূর্বাদি দিগন্টকে বরাহজামদায় নৃসিংহ শ্রীরাম চল্ল শ্রীধর বামন হয়্মাব ও বাহ্মদেবের প্রতিমা যথাক্রমে নির্মাণ করিবে। দ্বারের অন্টমাণ্শ ত্যাগ করিয়া বস্তু ও অর্কাদিবেধ হইলে কোন দোষ হয়না।

ইত্যাথেকে আদিনতাপুৰাণে প্ৰাদাদলকণ নাম্ক অইবই'ধিকদিশততম অধ্যায়।

ঊনসপ্তত্যধিকদ্বিশত হম অধ্যায়।

বাহুদেবাদি প্রতিমা লক্ষণ বিধি।

ভগবান বলিলেন বাহ্যদেবাদি প্রতিমা লক্ষণ তোমাকে বলিতেছি প্রাণ কর। প্রাদাদের উত্তরে পূর্বমুখী বা উত্রাননা প্রতিমা সংস্থাপন পূর্বাক পূজাও বলিপ্রদান করিবে। পরে শিল্পী মধ্য-দূজে শিলা নবধা বিভক্ত করিষা শিলার নবমাংশে । হাঙ্গ্ল পরিমিত কাল নেত্রনামক করিবে পরে । অপর একভাগ তিভাগে বিভক্ত করিয়া পাঞ্চি

সু ও গ্রীবাংশ কল্পিত করিবে। মুকুট মুখ কণ্ঠ য়ে এবং নাভি ও মেচের অন্তরাল ভাগ এক ক তাল মাত্র করিয়া তালদ্বয় পরিমিত ঊরুদুয । জজাদুয় করিবে। সম্প্রতি সূত্রের সকলের বিষয় বলিভেছি শ্রবণ কর চবণে জড়্যামধ্যে জামুতে ও উরুমধ্যে ছুই ছুই সূত্র সম্পাত করিয়া ঐরপ মেটে ও কটিদেশে মপর এক এক সূত্র সংস্থাপন পূৰ্ববিক মেধলা বন্ধ সম্পাদনাৰ্থ নাজি দেশে অপব একসূত্র এবং হৃদ্ধে এক সূত্র কণ্ঠে मजन्य । ननारहे भक्षत्क । भूक्रहे अक अक সত্র, বিচক্ষণব্যক্তি করিবে। ছে কমল্যোনি। শাস্ব উর্দ্ধে পপ্ত ও কক্ষত্রিকান্তরে ষটসংখ্যক গ্ৰত প্ৰদান করিয়া **মধ্যসূত্ৰ প**রিভ্যাগ পূর্ব্বক সূত্র সমস্ত নিবেদন করিবে। ললাট নাসিকা বক্তু গ্রীবা ও কর্ণপ্রত্যেকে চতুরস্কুল পরিমিত হইবে। হয়ু ও চিবুক ছাই ঋশুল বিস্তার ললাট অন্টাঙ্গুল বিস্তার করিয়া অপর চুই অঙ্গুলি পরিমিত অলকান্বিত শঙ্কান্বয় করিবে কর্ণ ও নেত্রের অন্তবাল দেশ চতুরস্থল, কর্ণছয় হুই অসুলি স্থুল জ্রদম দূত্র পরিমিভ বিস্তৃত হইবে বিজ্কর্ণ ষড়স্থুল আযতগদ্ধপাত্র ও আবর্ত্তযুক্ত কর্ণরন্ধ্র কল্পনা করিবে। তুই অঙ্গুলি পরিমাণে অধব উহাব অৰ্দ্ধপবিমাণে ওঠ অৰ্দ্ধাঙ্গুল পরিমিত নেত্র চত্বস্ল বিস্ত ও দার্দ্ধাসুল বৈপ্ল্য অব্যাত্ত বকু এব ব্যাৰ্রগত বকুতিন অঙ্গুল পরিমিত হইবে নাদা মূলে উচ্চায় একস্ল অগ্রভাগে তিন অঙ্গুল করবীব কুস্থমদৃশ হইবে, চক্ষু যেব ছাত্ত চতুৰঙ্গল কৰ্ত্তৰ্য অক্ষিকোণ ছুই অঙ্গল এবং অকি ও কোণেৰ মন্তৰও চুট অঙ্গুল, নেত্ৰেৰ ত্রিভাগ পরিমাণে তাবা ও দৃক্তাবা পঞ্মাণশ পরিমিতা নেতের বিস্তার তিন অঙ্গুল অর্জাঙ্গুল

দেগী এবং ঐ প্রমাণে জালেখা জান্ত চতুরস্ক । দীর্ঘ উহার মধ্যেদেশ দিতীয়াঙ্গুল শেষে হইবে। মন্তকের **বেইটন ষট্ত্রিংশদস্গুল পরিমিত** এবং কেশবাদি মূর্ত্তির বেক্টন দারা ত্রিংশদঙ্গুল পরিমিত हहेरत। चरधाञीना विकात (तस्केन পঞ্চবিংশ অকুল পরিমিত তিন অসুলউর্ক ও অইবাসুল বিস্তার কর্ত্তব্য গ্রীনা ও বক্ষদেশের অন্তবালভাগ ত্রীবা ত্রিগুণ পরিমাণ করিবে স্কন্দদ্বয় অক্টাঙ্গুল উহার তিনঅংশ অংশদ্বয় সপ্তবিংশত্যুঙ্গুল পরিমিত বাহুদ্ব ষোড়শাঙ্কুল প্ৰবাহুদ্বয় অথবা বাহুবিস্থান ত্রিকল তৎসম প্রবান্ত হইবে বাহৃদণ্ডের উদ্ধ ভাগের বিস্তাব নবকলা মধ্যে সপ্তদাশাঙ্গুল কুপরের কমুর উদ্ধভাগ যোড়শাঙ্গুল ও কৃপরের বিস্তার ত্রিগুণ হইবে। ছে কমলোদ্ভব। প্রবাস্থ মধ্যের বিস্তার যোড়শাঙ্গুল অগ্রহন্তের বিস্তার ঘদিশাঙ্গুল করতলের বিস্তার ষ্ডুঙ্গুল দৈঘা সপ্ত সুল মধ্যমা পঞাসুল তৰ্জনীও অনামিকা উহাব অর্কজুল ন্যুনপরিমিতা এবং কনিষ্ঠা ও অঙ্গৃষ্ঠ চতুবঙ্গুল সম্মিত হইবে। অঙ্গুষ্ঠ ছুইপাশ্ব অবশিস্ট অঙ্গুলি সকলেব তিন্তিন্পৰ্কে এবং অঙ্গুলি সমস্তের পর্বাদ্ধি পরিমাণে নথ হইবে। বক্ষয়লের পরিমাণাসুদারে জঠর নাভিবেধ প্রমাণ একাঙ্গুল অন্তবালদেশ তালপ্রামাণ নাভিদেশের বিস্তার দিচতারিংশদঙ্গুল স্তন দ্বেব অভ্রাল তালমাত্র চচুকদ্বয় যবপরিমিভ দিপদমণ্ডল বক্ষঃ স্থলের বেষ্টন চতুঃষষ্টি অঙ্গল, উঙাব মধোরেন্টন চতুর্থ ইইবে। কোটিদেশেব বিস্থান চারুঃপঞা শদস্ল উক্মূলেব বিস্থা হাদশাস্ল মধ্যে ভদ্ধিক এব॰ তথাহ*ইতে ক্রম*শ নিম্নতর হইবে। অফাঙ্গুল বিস্তৃত জাতু জ্জামধ্যে বিস্তার উহার পরিধি তিগুণ পঞ্চাঙ্গুল জ্ঞা-

গ্রবিস্তার উহার পরিধি ত্রিগুণ পাদময় ভালপ্রমাণ দীঘভাবে উথিত গুৱের পূর্বভাগ চতুরস্থূল প্রমাণ পাদহয় ত্রিকল বিস্তৃত অঙ্গুলি ত্রিতয় পরিমিত বিস্তীর্ণ পঞাঙ্গুল দীর্ঘ অঙ্গুষ্ঠ ঐরপ भीर्चा **अरम्भिनी अवभिष्ठे अकृति मक्ल अखेगाः** म জমে ব্যুন হইবে,সপাদ অসুল পরিমাণে অসুষ্টের উৎসেধ যবোন অকলপরিমিত অঙ্গতের নধ এবং অপর অঙ্গুলি সকলের ক্রমশঃ অর্দ্ধাঙ্গুল ন্যুনপরি-মাণে ৰথ সমস্ত করিবে। অঙ্গুলি ত্রিতয় পরিমিত বুষণ চতুরঙ্গল মেচ্ কোষা প্রবিস্তার চতুরঙ্গল ষড়ঙ্গুল বিতীৰ্ বুষণ দুয় হইবে। এই রূপে প্রতিমা করিয়া নানাপ্রকার ভূষণে ভূষিত করিবে। দক্ষিণের ঊর্দ্ধ করে চক্রঅধঃস্থিত করে পদ্মবামের উৰ্জকরে শন্থ অধঃস্থ করে গদা ভগবানু বাহুদেবের এই লক্ষণ উরুমাত্রাচ্ছিত পদ্ম ও বীণাপাণি জীএবং পৃষ্টিদেবী ও প্রভামগুল সংস্থিত প্রভা-হস্ত্যাদি ভূষণ মালা ও বিঘাধর নামক অদেবদয় এবং পদ্ম মদুশ পাদপীঠ করিবে। এইরূপে বাস্থদেব প্রতিমা করিবে।

> ইত্যায়েরে আদিনহাপুরাণে প্রতিমা লক্ষ্ নামক উনস্পুতাধিক্ষিশত হম অধ্যায়।

সপ্তত্যধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

পিণ্ডিকালকণ কথন।

ভগবান্ বলিলেন, সম্প্রতি পিণ্ডিকালকণ বলিতেছি, শ্রেবণ কর। প্রতিমাসমদীর্ঘ প্রতিমার্ক পরিমিত উচ্ছায় চতুঃষ্ঠিপদা পিণ্ডিকা হইবে। উহার অধঃস্থিত পংক্রিদয় ত্যাগ করিষা তাহার উর্দ্ধে উভযপার্শের মধ্যম্ভিত কোঠদমন্ত মার্জিত করিবে এবং উর্দ্ধে পংক্রিদয় ত্যাগ করিয়া অধো- দেশে যে সমস্ত কোষ্ঠ আছে, তক্মধ্যে উভয়পার্য-বিত কোঠের মধাদেশ সমভাবে মাজিত ক-রিবে। অনস্তর ঐ উভয় কোর্ছের মধ্যগত চড়ফ ৰয় নাৰ্ডিছত করিয়া উৰ্দ্ধপ্তিৰয় চতুৰ্ডাগে বিভক্ত করত একভাগমাত্র মেধলা এবং উহার ক্ষ্মপরিমাণে খাত উভয় পার্মে সমভাবে এক এক ভাগ পরিভ্যাগ করিয়া করিবে। বহি: প্রদেশে এক পদ প্রদান করিয়া প্রমাণ করত ভাগের অঞ্জে ভাগতায় দারা ভোয়বিনির্গম মার্গ করিবে; এই শুভুজনিকা পিণ্ডিকা নানাপ্রকাব एक प्रकृतिश इया लक्ष्मीरमयी ७ अमाना मेकि মূর্ত্তি অইতালা করিবে এবং উহাঁদিগের জ্রেছব জবাধিকপরিমিত নাসিকা যুক্তীনা গোলকভাবে উর্জে অধিকতর বজভাব রহিত মুখমগুল ত্রিভা-গোন যবতার পরিমিতায়ত ও তদর্ভবিস্তীর্ণনয়ন বিপুল কর্ণপাশ সমসূত্রভাবে স্কণীদ্বয় নতা ও কলাবিহীন অংশবয় সান্ধলায়তা ও যথাগোগ্য শোভিতবিস্তার গ্রীবা উরুদয় জানুদয় পিভিকা চরণযুগল পৃষ্ঠদেশ নিতক্ষয় যথাযোগ্য বিস্তারা-য়ত করিবে। সপ্তাংশ মূান দীর্ঘ অঙ্গ লিসকল এবং জঙ্বা উক্ত ও কোটিদেশ দিহীনদীৰ্ঘ যথাক্ৰমে শোভিত মধা ও পাখে তালপরিমিত বৃত্ত ঘন ও পীন কুচম্বয় করিবে; অবশিষ্ট চিহ্নসমস্ত পূর্কের ন্যায় দক্ষিণ করে পদা ও বাম হস্তে বিল্ল প্রদান করিবে। পরে উভয় পাখে চামরহস্তা মায়িকাদ্বয় সংস্থাপন করিয়া দীর্ঘনশ গরুড় স্থাপিত করিবে।

> ইত্যায়েয়ে আদি মহাপুর।দে পিণ্ডিকালকণ ক্থন নামক সপ্তাধিকদ্বিভ্নত্তম অধ্যায়।

একসপ্তত্যধিকদিশতত্য অধ্যায়।

শালাগ্রামাদিমূর্ত্তিলক্ষণ কথন।

ভগবান্বলিলেন, অধুনা ভোগ ও মোক প্রদ শালা গ্রামাদি মূর্ত্তির বিষয় বলিব। অসিতবর্ণ এক ছিচক্রবিশিষ্ট শিল। বাংগদের নামে থাতি, রক্তবর্ণ লয়দিচক্র উভ্য শালগ্রাম চক্র সঙ্কর্ষণ নামক कानित्व। मुक्काठक वर्क्डम नीलवर्ग मौर्याकात প্রভ্যালন।মক চক্রে, পীতবর্ণ পর্যালিত ছুই বা তিন রেথাবিশিক্ট বর্তুলাকার অনিরুদ্ধাধ্য চঞা, কুফাবর্ণ উন্নতনাভি দীর্ঘছন্ত নার য়ণ অজ্ঞান্মিত চক্র পৃথুছিদ্র বিন্দুমান পরমেষ্ঠিনামক भागशाय ठळ का नित्द : कृष्कदर्ग कुलठक मर्सा গদাকৃতি রেথাবিশিষ্ট বিষ্ণু নামক চক্রে, কপিল-वर्ग यून रक शकाविसूयुक मृतिर्श्याहक, मिक्क চিহ্নিত বিষম বিস্তুত চক্রময়বিশিকী ইন্ত্রনিলনিভ সুলবেথাত্রাম্বিত শুভদায়ক বরাহাথ্য চক্র, পৃষ্ঠ দেশে উন্নত বর্ত্ত্বাবর্ত্তক মুক্ত ক্ষেবর্ণ কুর্মনামক চক্র, অঙ্কুশাকার রেখাঙ্কিত নীলবর্ণ দবিন্দুক হয়-থীবাথ্য চক্ৰ, অজ চিহ্নিত মণিপ্ৰভ এক চক্ৰ পুচ্ছ-(तथांश्व टेक्क्थेनामक ठक्क, मीर्चिक्क्बस्यूक्क কাচবর্ণ পূর্ণমৎস্যাখ্য চক্র, বনসালাক্ষিত পঞ্রেখা-বিশিষ্ট বর্ত্ত্লাকার জীধরখ্যে চক্র, অতিহ্রস্থ বর্জুল নী বর্ণ বিন্দুবিশিষ্ট বামন নামক চক্র, **म्यामवर्ग मक्तिरः (तथा यूक्त वास्म विन्तृविभिष्ठे** ত্রিবিক্রম নামক চক্র, নাগভোগাঙ্গ অনেকাভ অনেকমূর্তিমান্ অনস্তাথ্য চক্র, মধ্যপক্র সুক্ষমার যুক্ত বিন্দুবিশিষ্ট দামেবদর নামক চক্তা, একচক্ত िला छन्मी नामक, विठक रहेरल नक्योन।ताय নামক, ত্রিচক্র অচ্যুত বা ত্রিবিক্রম চতুল্চক্র জনা-ৰ্দনাখ্য, পঞ্চক্ৰ বাহুদেবাথ্য, ষট্চক্ৰ প্ৰস্থান,

সপ্তচক্র সক্ষর্যণ, অইচক্র পুরুষোত্তম, নবচক্রাপ্তত নববুংং, দশচক্রবিশিষ্ট দশাবতার, একাদশ চক্র-বিশিষ্ট অনিক্লন্ধ, দাদশ চক্রে ঘাদশালু নামক ও ইহার উর্দ্ধ অনস্ত নামে প্রসিদ্ধ জানিবে।

ইতামেরে আদিনহাপুরাণে শালগ্রামাদিম্টিলকণ কথন নামক একসপ্ততাধিকবিশক্তম অধ্যায়।

দিসপ্ততাধিকদিশতভ্য অধ্যায়।

লিঙ্গলক্ষণ |

ভগবান্ বলিলেন হে কমলোম্ভব ! লিঙ্গাদি লক্ষণ বলিতেছি,প্রবণ কর।দৈর্ঘ্যের অর্দ্ধমান অই-ভাগে বিভক্ত করিয়া ভাগত্রয় পরিভ্যাগ পুর্বক অবশিষ্ট পঞ্চভাগে চতুত্র বিষয়ত প্রস্তুত কর্ত উহার দৈর্ঘ ভাগত্রয়ে বিভক্ত করিয়া উহাতে ত্রন্মবিষ্ণু ও শিবাংশরূপ মৃতিত্রিয় যথাক্রমে বিন্যাস করিলে উহা বর্দ্ধনান নামে উক্ত২য়। ঐ চতুরত্র বৰ্দ্ধমানে বিষ্ণুকোণ সকলে বিষ্ণুত্ৰ অৰ্দ্ধরূপ লাঞ্ছিত করিলে অন্টাগ্র বৈঞ্চবভাগ নিশ্চয় সিদ্ধ হয়। অনন্তর যোড়শাস্ত্র স্বাতিংশাস্ত্র চভুঃষ্ঠি অঞ্চিত করিয়া বর্তুল সম্পাদন করত সাধকোত্তম লিঙ্গমস্তক কর্তুন করিংবে। অমস্তর লিঙ্গবিস্তার অফডাগে বিভক্ত করিয়া ছাগের পাদাংশ পরি-ত্যাগ পূর্বক ছত্রাকার শিরঃসম্পাদন করিবে। বে লিকের ভাগতায়ের দৈর্ঘ ও বিস্তার সমস্ভাবে হয় সেই বিভাগ সমলিক সর্কাম ফল প্রদ হইবে। দৈখের চতুর্থাংশ পরিমাণে দেব পূজানার্থ বিজয় ক্রিবে। সম্পতি লিক্সকলের লক্ষণ প্রেবগ কর। পণ্ডিতব্যক্তি ত্রদারক্ত সমীপে মধ্যসূত্র অবলম্বন করিয়া ষোড়শালুল লিক্টের ষড়ভাগে বক্ষামাণ প্রকারে মাজিতি করিবে ঐ বন্ধন সূত্রদ্বরের মধ্য

পরিমানে অন্তশব্দে উক্তহ্য উত্তরেভাগ যবাষ্টক পরিমাণে করিণা অবশিষ্টভাগ সমস্ত ভদপেকা স্বহীন করিবে পরে অধ্যেভাগ অংশত্রে বিভক্ত করিয়া এক মর্নভাগ পরিত্যাগ পুর্বকি অপরভাগ ষ্য অন্তথা বিভক্ত কৰত উৰ্দ্ধভাগত্ৰয় ত্যাগ করিবে। পথে উর্দ্ধপঞ্ম ভাগ হইতে ভ্রমণ করা ইয়া রেখা প্রাক্ষন কবত একভাগ পরিত্যাগ প্রবিক ঐ উভ্যেব দঙ্গম করাইবে। এই সাধাৰণ লিক্ষের লক্ষণ বলিলাম, এক এ সর্বিদাধারণ লিক্ষও পিণ্ডিকা বলিভে'ছ প্রেবণ কর, বিশ্বান্ বাক্তি <u>এ</u>ক্ষ-ভাগ প্রয়েশ ও লিঙ্গেব উচ্চ য জানিয়া কর্মাশিলো পৰি প্ৰক্ষণিলা সম্যক প্ৰকারে বিভাস করিয়া ঐরপে পিণ্ডিকার সমুদ্ধ য জানিয়। বিভাগ করিবে ভাগৰয় উচ্ছিত লিঙ্গ দ'দ্মত বিস্তার পীঠের মধ্য-দেশে ত্রিভাগ খাত করিয়া বিভাগ করত নিজ প্রিমাণের অন্ধতিভাগে বাহুল্য কল্লিত কবিষা ঐ বাহুলাব ত্রিভাগে মেথলা কল্পনপূর্বাক মেথলা ভুল্য বা মেখুশা ধোড়শাংশ প্ৰিমিত নিম্নগাত করিয়া ঐ পীঠেব বিকাবাঙ্গ উচ্ছায় কবিবে। পরে পিণ্ডিকার একভাগ ভূমি প্রবিষ্ট কবাইয়া ভাগত্র্যে কণ্ঠ একভাগে পট্টিশা সংশ্বয়ে উদ্ধিপট্ট ও একাংলে শেষপট্টিকা প্রস্তুত করিয়। কণ্ঠপর্যান্ত ভাগভাগে প্রবিষ্ট ক্বাইয়। অংশিষ্ট একভাগ শেষপট্টিকা পর্যান্ত নির্গম কর্ত্তন্য প্রণানের ভাগত্ত্ব পরিমত মুলদেশে অঙ্গ 🗗 বিস্তার ঈধনিল্ল নিগম করিবে উত্তরে খাত করিবে। পিভিকা দহিত দাধ রণ লিঙ্গ এইরূপ জানিবে।

> হত । খন্ধ আদি মহাপুরাণে নিজন্ধণ নামক বিস্পুডাধিকবিশ্চতম অধ্যব।

ত্রিসপ্রতাধিকদ্বিশতত্য অধ্যার।

িঙ্গমানাদি কথন।

ভগবান বলিলেন, নানাপ্রকাব কিল্পমানাদি বলিতেছি, প্রাণ কর। লবণজালিক বুদ্ধিবদ্ধিন, যুতজ লিঙ্ক ঐশ্বয়াপ্রদ. বস্ত্রনিশ্মিত লিঙ্গ এই সমস্ত তাংকালিক লিঙ্গ জানিবে। মুদ্ময লিঙ্গ পক্।পক্ ভেদে তুই প্রকার। তথাধ্যে মপ্ত হইতে প্রক্ষ লিঙ্গ শ্রেষ্ঠ ; তদপেক্ষা দাক্ষ্য, তাঃ ইইতে শৈলজ, ভদপেকা মুক্তানিৰ্মিত, লৌহজ, স্বৰ্ণ নিশ্যিত, রজতময়, তামেনিশ্যিত, পিতলময়, রঙ্জ 🖔 ও পারদ্নির্মিত লিঙ্ক ভোগ ও মোকপ্রদ জানিবে। পারদনির্শ্বিত লিঙ্গ পাবদ, লোহ ও রহাদিগর্ভ করিয়া বর্দ্ধিত করিবে। সিদ্ধাদি স্থাপিত ও স্বযন্ত লিঙ্গে মানাদি নির্দিক নাই। ঐ সমস্ত লিঙ্গের বামে স্বেচ্ছানুসারে পীঠ ও প্রাসাদ কল্পনা কবিবে। **দূর্যবিষয় দর্প**ণে প্রতিবিদিত প্রভৃতি সর্বাত্তে ভগবানু হবের পূজা কবিতে পারে, কিন্তু লিসে অর্চনা করিলে পূর্ণ ফল হয়। শৈল্জ লিঙ্গ (ও দারুজ লিঙ্গের পরিমাণ হস্তোত্র প্রকাবে হইবে। দ্বাবগর্ভ ও কবে স্থিত চল লিঙ্গ অঙ্গুল পরিমাণে হয়; গৃহলিঙ্গের পরি। লৈ এক অঙ্গুলি ইইতে পৃঞ্দশ অঙ্গলি হইবে। গর্ভপ্রিমাণে নয়প্রকাব লিঙ্গ প্রত্যেকে দারপরিমাণে ত্রিসংখ্যক ड गर्डध्यारि नवशा लिक मगुनार्य कहे बहे कि मंश প্রকাব উভ্ন পরিমিত লিঙ্গ ধৈৰণামে অর্চনা করিবে। ঐরপে মধ্পেরিমাণে ষট্ত্রিশৎ ও নু,ন-কল্পে ষট্তিংশং এই ধামে ফর্জন। করিবে এইরূপে मभूनात्य अरको उत्भार हल लिख्न ह्या । এकावभानि পঞ্চশাঙ্গুল পরিমিত উচ্ম চল লিচ মড়াদি দ্ণা-ঙ্গুল প্রয়ন্ত মধ্যম চল ি:৭ ও একাদি পঞ্চাঙ্গল !

পর্যান্ত সংক্ষিপ্ত চল লিঙ্গ জানিবে। মহারত্ন ছারা ষড়স্বুল অনারত্নারান শস্বুল চল লিঙ্গ করিবে, হেমভারোথ লিঙ্গ দারা দাদশাঙ্গুল অবশিষ্ট অন্যান্য দ্ৰবং নিশ্মিত চল লিঙ্গ পঞ্চশাঙ্গুল পরি-মাণে করিবে। বোড়শাংশে ও চতুরংশে ঊর্দ্ধদেশ হইতে ভাগৰ্য লিপ্ত করিয়া কোণ দ্বয়ে দ্বাতিংশং ও যোড়শাশ্শ পরিমিত উৎকৃট লিক্স এই উভযে রই মধ্যে সপ্তদম দূত্র সম্পাত করিকে: নবদূত্রও ঐরপ এবং পঞ্চদুত্তে মধাম হয়, বামান্তবে এক হটলে ব হস্তপ্যান্ত জ্মেশ বৃদ্ধিত হইয়া লিঙ্গের দীর্ঘতানয় প্রকার হইবে। হীন, মধঃ ও উভ্ম ত্রিবিধাতাক ত্রিবিধ লিঙ্গ ষড়ধিক শত লিঙ্গে এক এক লিঙ্গমধ্যে পাদাংশ পাদাংশে তিন তিন লিঙ্গ ঘটিত করিয়া স্থিবলিস্কের দার্ঘপরিমানে দাবগর্ভ-করাল্লক ভাগেশ অমীশ দেবেল্প ও তুলাদ জ্ঞিত চতুরিষধ লিক্ষরপ বিষয় দারা লক্ষিত করিবে। পরে দীর্ঘামান্তি লিঙ্গ ভত্তরয়গুণাত্মক চতুঃ অন্ট ও অন্টর্ভরূপ ত্রিরূপক করিয়া তদারা ইচ্ছামুরূপ অঙ্গুলি পরিমিত লিঙ্গের দৈর্ঘ্য করিবে, ঐ লিঙ্গের অঙ্গুলি দংখ্যা ধ্বজাদি (৪) শ্বর (৬) ভূত (e) ও শিথি তিন দাবা হরণ করিয়া যে শেষ থাকিনে, তদ্যার শুভাশুভ লক্ষিত হয়। ধ্রজাদির মধ্যে ধ্বজ সিংহ হন্তী ও বৃষ শ্রেষ্ঠ অবশিষ্ট অশুভ স্বরের মধো ষড়জ গান্ধার ও পঞ্চ শভদায়ক ভূতেশ মধ্যে পৃথিবী শুভজনক, অগ্নিমধ্যে আহব-নীয় শুভ এদ। উক্ত দীৰ্ঘের অর্জাংশ অফ ভাগে বিভক্ত করিয়া যথাক্রমে বাদে হইতে বিস্তারর্দ্ধি অনুসারে প্রথম পঞ্চম ষষ্ঠ তৃতীয়াংশ ও সপ্রমাংস মুব, ইজ্য অর্ক তুলা ও বর্দ্ধমানাথ চতুরক্ত আঢ়ো নাচ্যভেদে সুই প্রকার হয়। বিশ্বকর্মান্ত্রসারে বহুপ্রকার বলিব। আত্যাদির ত্তিবিধ ফৌল্য

হইতে যার্দ্ধিক্রমে অংকীজ্রেকার হয়। **তিবিধহন্তবশত জিনাথঃ সক্বিসমযুক্ত লিক্স হয়** এবং পঞ্বিংশতি লিক্লের প্রথম লিঙ্গদুয় দেবা-র্চিত হয় না। লিঙ্গের একত্ববশ্ত পঞ্জিংশ্র জিনাথ্য লিঙ্গ চতুৰ্দশ সহস্ৰ ও চতুৰ্দশ শত হুইবে এবং দশ হস্ত গর্ভে অফ্টাঙ্গুল বিস্তার করিয়া ঐ দকল কোণ ও অর্দ্ধাণ্ড সূত্রহার: কোণ দকল ছিন্দকরত মধ্যদেশে বিস্তার করিয়া তথায় লিক্ষত্রয় স্থাপন করিবে। ভাগদ্বয়ের উর্চ্চে অফাস্তাদয় শিরাংশ হইবে। ব্যক্ত ও অন্যক্ত পাদহইতে জানুপ্যান্ত ব্ৰহ্মা তথা হইতে নাভিপ্যান্ত বিফু এবং নাভিহইতে মৃদ্ধান্ত শিরাংশ জানিবে। পঞ্লিঙ্গ ব্যাহাতে মস্তকের বর্ত্রতা কুকুট সদৃশ অথবা বালেন্দুপ্রতিম হইবে। কাম্যভেদে এক এক লিঙ্গের চত্ঃপ্রকার ভেদবশত ফলভেদ হয়। লিজমন্তক বিস্তার অফীভাগে বিভক্ত করিয়া প্রথমভাগ বিস্তার ও উচ্চায়ে চতুর্ভাগে বিভক্ত করতঐ ভাগে ভাগে চতুঃ দংখ্যক দূত্র সম্পাত পূর্বাক একভাগ লোপে পুওরীক, ভাগদ্ব কোপে বিশালাখ্য ভাগত্রয় লোপে খ্রীবংস চতুর্জাগ লোপে শক্তকং লিঙ্গুত্য।

দ্বিদ্যাকৃতি হারহার লিঙ্গে কুকুটাভ মন্তক ই প্রশস্ত ও উত্তম হয়; চতুর্ভাগাত্মক লিঙ্গে ভিভাগ লোপে অপুর্যলঙ্গ হয়। অনাদ্যের মন্তক্ষপ্রল অর্কিন্দাকৃতি, তাঁহার বিশেষ আবন কর প্রান্তকাগে এক এক লংশ অন্তর মুগ্ম মুগ্ম অংশের এক অংশ হানি করিলে অমৃতাক্ষক, এবং তুই অংশলোপে পুন, জ্ঞিভাগলোপে বালেন্দু, চারিভাগ লোপে কুমুদ লিক হয়।

অতঃপর একবদন ত্রিবদন চতুবদন ন্থলিঞ্চের। বিষয় আংশকব। পূজাভাগ ভাগাক্তকে ও ভাগ ত্রিভায়ে কল্লিত করা কর্ত্তব্য। চতুমুখি লিঙ্গ পূর্ব্ব-বং দ্বাদশাংশ ত্যাগ করিয়া চয় স্থানবিবর্ত্তিত করিবে। অন্তর যুগা যুগা ভাগদ্বরা অক্ষির সহিত উন্নতশির: ললাট, নাসিকা বদন চিবুক গ্রীবা নির্শ্বিত করিয়া প্রতিমার প্রমাণাত্মদারে ভুজ ও মূকুলিত করযুগদ নির্মাণ করিবে ৷ বিস্তার ছইতে অফমাংশে আরম্ভ করিয়া মুখ নির্মাণ কর্ত্তব্য। চতুর্থের বিষয় কীর্ত্তন করিলাম, এক্ষণে ত্রিমুখের বিষয় আবন কৰ। তাহাতে কৰ্পাদ, ও ললাট বিস্তুত করিয়া এবং পশ্চান্তাগে উন্নত করিয়া ভাগ চতুকীর দারা ভুজ নির্মাণ করিবে, আর বিস্তার হইতে অফমাংশে মুখদকল নিগতভাবে थांकिरत। चांत्र, अक्षुश्रीमस्त्र शृद्धजारंग स्थाजन লোচন একঘুখ নির্মাণ করিবে। ভাহার ললাট নাসিকা,ব 😎 গ্রীবাভাগ বিবর্ত্তিত করিতে হয়। আর ভুজ হইতে, পঞ্মাংশে দ্ভাগ দারাহীন করিয়া বিবর্ত্তিত করিবে। বিস্তারের ছয়ভাগে মুখের নিগমন হিতকর হইয়া থাকে অথবা দক্বিধ মুখলিকের ত্রপুষ ও কুকুট মন্তক শোভাকর এবং হিতকর হয়।

> ই গ্রেহের জ্ঞানিম্লুরাবে লিক্সানাদিক্থনন।মুক্ থিবপ্র গ্রিক্সিত্তম অধ্যায়।

চতুঃসপ্তত্যধিকদিশততম অধ্যায়।

লিঙ্গণিওকা লক্ষণ কথন।

ভগবান কহিলেন, অতঃপর আমি পিণ্ডিকা লক্ষণ পরিকীর্ত্তন করিব। পিণ্ডিকা, দৈর্ঘ্যে প্রতিমা হুলা ও বিস্তারে প্রতিমার্কভাগ অথবা উন্নত্য ও বিস্তারের স্ফভাগ, স্থবিভারের অর্কভাগ কিম্বা ত্রিভাগ হইবে। তাহার ত্রিভাগে মেথলা নির্মাণ পূর্বক উত্তরভাগে কিঞ্চিৎ নত করিয়া তৎপ্রমাণ খাত প্রস্তুত করিবে। বিস্তারের চতুর্থ ভাগে। প্রণালীর নির্গমন্থান হইবে। সময়ল প্রণালের বিস্তার তাহার অর্দ্ধভাগ: বিস্তারের তৃতীয়া[,]শে 🥛 জলনির্গমনমার্গ প্রস্তুত করিবে। অথবা ঈশ্বরের দৈর্ঘ পিগুকার্দ্ধের তুল্য, কিন্তা তুল্যদীর্ঘ ঈশ্বর নির্মাণ করিয়া সূত্র সম্পাত করিবে, এবং ষোড়শ সংখ্যক ভাগদারা পূর্ববিৎ উচ্ছায় করিবে। অধঃ-ষ্টক দিভাগে এবং কণ্ঠস্থল ত্রিভাগে নির্মাণ করিয়া অবশিষ্ট প্রতিষ্ঠানির্গমন্থল সকল এক একভাগে নির্মাণ করিবে। এইরূপ পট্টিকা বা পিভিকা, দামান্য প্রতিমা দমূহে ব্যক্ষত হয়। প্রাসাদ ঘায়ের পরিমাণে প্রতিমাদার নির্মিত হইবে। প্রতিমায় গজতুল্য ও ব্যালতুল্য প্রভা নিরতই বিরাজিত থাকিবে। মার হরির পিতিকা যেরপে নির্মাণ করিলে স্তশোভনহয় সেই রূপেই নিশ্মাণ করিবে। সমস্ত দেবতা গণের বিষ্ণুউজ্জ প্রতিমা পরিমাণ এবং সমস্তদেবী গণের লক্ষাউক্ত প্রতিমা পরিমাণই প্রশস্ত।

> ইতঃ(থেয়ে আদিমহপুণাণে পিণ্ডিকা লক্ষণ ন্যক্ চতুঃসপ্তত্য'ধকবিশ্ভতন অধ্যায়।

পঞ্চসপ্রত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

गर। भश्रुकाविधि।

ঈশর কহিলেন, একণে, আমি বিশ্ব বিনাশিনী সর্বার্থদায়িনী গণেশপূজাপদ্ধতি পরিকীর্ত্তন করিব। গণায় সাহা হুদয়মন্ত্র, একদংক্টায় স্বাহা শিরোমন্ত্র, গজকর্ণিনে শিথামন্ত্র, গজবক্তায় বর্মান্ত্র, মহোদরায় ক্ষিমন্ত্র, স্বদন্ত হন্তায় ক্ষেমন্ত্র। গণোগুরু: পাছকামন্ত্র, শক্তানন্ত্রী ধর্মমন্ত্র।

এই দকল মন্ত্ৰারা মুখাছিমওল ও উইচছেদন অর্চনা করিবে। পরে নন্দামন্ত্র দ্বারা পদ্মকর্ণিক ৰীজগণের ও জালিনী শক্তির অর্চন। করিবে। मृट्यामा, कामज्ञा छम्या, कामवर्डिनी, मछ्या, বিল্লাশা ও গদ্ধমূতিকা এই সকল শক্তিগণ ও তাহাদের আদন পূজা করিবে। য এই বীজমন্ত্র শোষণ, রং অমি, লং প্রব বং অমৃত। এই সকল মন্ত্রে এইরূপে পূজা করিয়া, লখোদরায় বিদ্মহে মংহাদরায় ধীমহি, তক্ষো দন্তী প্রচোদয়াৎ এই মন্ত্রার্থ ধ্যান করিবে। গণপতি, গণাধিপ, গণেশ গণনায়ক গণজীড়, বক্রছণ্ড একদংষ্ট্র, মহাদেব গজবক্ত লম্বকৃষ্ণি, বিকট, বিশ্বনাশন, ধুমুবর্ণ, গণপতি, মহেজ্রাদির পূজনীয়। এইরূপে পূজা করিবে।

> हेलात्यस्य व्यक्तिमहाशृत्रात विनासक्षुकारस्य নামক পক্ষপপ্ত।ধিকি স্পিত্তম অধ্যায়।

ষট্সপ্তাধিকদিশততন অধ্যায়।

স্থান বিশেষাদি কথন।

ঈশ্বর কহিলেন, হে ক্ষন্দ। নিত্য এবং আদ্যস্তান ও পূজা প্রতিষ্ঠার সহিত বর্ণন করিব্তাবণ কর। অউাস্ল মৃতিকা, অসিদার৷ খননকরিয়া ভুলিবে পুনর্বার ভাষা ঘারা ঐস্থান পূরণ করিয়া ভাষা জলের নিক্টদভীরে রাখিয়া শিরোমন্ত্রে অপ্তদাবা শোধন করিবে। অনন্তর শিখামন্ত্রে তৃণদ্কল তুলিয়া দিয়া বৰ্ণ্মগন্তহাৰা ঐ মৃতিকা তিনভাগে বিভক্ত করিবে। একভাগ মৃত্তিকাদার। নাভি হইতে পদতলান্ত পথ্যন্ত একালন করিয়া শস্তবারা লক্ত অন্তভাগ দানা দীপ্রমন্ত্রে সমস্তগাত্র প্রকালিত করিবে। পাণিযুগলছারা নাশিকা অবণ নয়নাদি। মস্কর বিধিস্নান দম্পাদন করিবে। পরে ঈশতৎ-

ইজিয়গণকে নিরোধ করত প্রাণসংঘ্যান পুরংদর কালনেলপ্রভ অন্ত হৃদয়ে স্মরণ করিয়া বা্রিমধ্যে নিষয় হইয়া থাকিবে।

এইরূপে মলস্নান সমাপন পূর্বেক জলমধ্য হইতে উঠিয়া অস্ত্ৰসন্ধ্যা উপাসনান্তুর বিধিস্নান করিবে। পরে অক্সশমুক্রাধারা দারস্বতাদি ভীর্থ-গণের মধ্যে এককে হৃদয়ে আকর্ষণ করিয়া সংস্থার মুদ্রাদ্বারা স্নানাত্তে অবশিষ্ট মৃতিকাভাগ গ্রহণ করিয়া নাভি পরিমিত বারিমধ্যে প্রবেশ পূর্বাক উত্তর মুখ হইয়া বামপাণিতকে উহা তিনভাগ করিবে। অ**জ্মন্ত্র**সকল ছারা **প্রথমভাগে এ**কবার অস্ত্রমন্ত্রবারা পূর্বের সপ্তবার এবং শিবমন্ত্র দৌন্য ছারা দশবার এইরূপে ক্রমাসুসারে ভাগতয়ে জপ করিবে। প্রথমে ছং কটু এই অস্ত্রমন্ত্রারা সকল দিকেই নিকেপ করিবে। **অনন্তর** ভুজক্রে শিবও দৌম্যমন্ত্রে শিবতীর্থ স্পাদন করিবে। অনন্তর মন্তক হইতে চরণ পর্য্যন্ত স্কাঙ্গই, অঙ্গজপদারা বিশোধিত করিয়া, দক্ষিণভাগে অঙ্গ-মন্ত্র চতুটয় পাঠকরিবে। তৎপরে সম্মুখী করণ মন্ত্রদারা, অঙ্গাবচিছম আকাশ দকল আহুত করিয়া শিব হরি অথবা গঙ্গা শ্ররণাস্তর নিময় হইবে।

বৌষট্ এই ষড়ঙ্গবেদ মন্ত্রে জলে অভিষেক করিবে ক্সত্পাতে ভারা রক্ষাকরিবার নিমিত, প্ৰাদি দিগ্ভাগে জলনিকেপ করিবে। सन्छत, স্থান্ধ আমলকাদির রাজোপচারে ষট্টে উপ্থিত হইয়া সংহারিণী মুদ্রাবারা উপদংহার কৰ্ত্তব্য 📗

অমন্তর বিধিশুদ্ধ সংহিতামন্ত্রে নির্ত্যাদি ও বিশুদ্ধ ভন্ন দারা স্নান করিয়া ছুং ফট এই মত্ত্রে শিরোদেশ হইতে পাদান্ত পর্যান্ত মলস্থানা-

পুরুষ, অবোরতহাক ও অজাতসকর মন্ত্র ছারা ক্রমাতুসারে মূর্বা, মূধ, হাদয় ও গুছ এই অজ সকল উদ্ধান অর্থাং উৎকম্পন করিবে।

ত্তিসদ্ধায় এবং নিশীগকালে, বর্ষার পূর্বের ও

অবদানে নিদ্রান্ডলনা, ভোজন ও পয়ংপান করিয়া
আবশ্যকীয় কর্মানমুলায় দনাপনের পর যদি ত্রী,
পুরুষ, নপুংসক, শুদ্র, বিড়াল, শশক, মৃষিক এবং
আয়েয় স্থানদ্র্র্যাদি স্পর্শ করে, তবে শুদ্ধির
নিমিত চুলুক ভারা অর্থাং মাষমজ্জা জলগণ্ডু
এহণে আচমন করিবে। (১) গোসমুহের মধ্যগত

হইয়া পুরোঘিত রেগুপ্লবাহে নবমস্তে বা কর্মানস্তে
মান করিলে পাবন আন হয়। দল্যোজাতাদি
মন্ত্র ভারা জলে নিমজ্জিত হইয়া স্থান করিলে
বারুণ স্থান, আন্ময় স্থান ও মন্ত্র স্থান করিলে
মান করিলে মানদ স্থান হয়; এই স্থান স্থানতাই
বিহিত হইয়া থাকে। বৈজ্ঞবাদিক কার্যো সেই
মন্ত্র ভারা স্থানাদি করাইবে।

হে গুছ! একণে আমি তোমার নিকট ভিন্ন ভিন্ন মন্ত্রের সহিত সন্ধ্যাবিধি কার্ত্তন করিব।

পুংরতার্থে জলগ্রহণানন্তর সন্দর্শন করিয়া করিয়া আত্মভানি অধান্ত শক্ষর মন্ত্র ভারা তিন বার অন্যুপ্যন পূর্বক জনয় ও ইন্দ্রিয়াকাশসকল স্পর্শ করিবে। অনন্তর প্রাণায়ামে অবস্থিত হট্য়া বিভাগ করত মনে মনে শিবসংহিতা মন্ত্র তিন বার স্মাবর্তন করিবে। পরে আচমন ও নাাস করিয়া প্রাতঃকালে হংসপ্রাদন, রক্তবর্ণা, চহু-মুনা, চহুজ্জা, দক্ষিণ করে প্রক্ষমালাধারিণী এবং বামে দওকমগুলুধরা আক্ষীশক্তিকে স্মরণ

করিবে। মধ্যাহুকালে গরুড়পদ্মাসনা শুল্লবর্ণা বাম করে শত্মচক্রেধরা ও দক্ষিণ্করযুগলে গদা-ধারিণী ও অভয়দাহিনী বৈষ্ণনী শক্তিকে ধান করিবে। সায়ৎকালে রুষপদ্মন্থিতা, ত্রিনেত্রা, শশিভূষিতা, দক্ষিণে ত্রিশৃলধরা, বামে অভয়-দায়িনী ও শক্তিধারিণী রৌদ্রীশক্তিকে ধ্যান করিবে। এই ত্রিবিধ সন্ধ্যাই কর্মানাক্ষিণী ও আত্র প্রভাসময়িতা। নিশীথাদিকালে জ্ঞানিগণের সন্ধার[া] সময় : উহাকে চতুর্থীদন্ধ্যা কহে। হারিন্দু ও ত্রন্ধা রক্ষে অরপা সন্ধা বিদ্যোনা আছেন, তাঁহার পরে শিববোধাত্মিকা যে সন্ধ্যা অবস্থিতা আছেন, তিনিই প্রমাস্ক্রা। প্রদেশিনীর মুলদেশে পিতৃ-তীৰ্থ, কনিষ্ঠার মূলে প্রজাপতি তীর্থ, অঙ্গুঠমূলে অক্সতীর্থ, করাগ্রে দৈবতীর্থ, স্ব্যুপাণিতলে বহিং তীর্বাম গাগে দোমতীর্দমন্ত অঙ্লির পার্ক দ্দ্দিছলে ঋ্যিগণেব তীর্থ।

তদনস্তর শিবারক মন্ত্র দকল দ্বারা শিবার্থক তীর্থ করিয়া সংহিতামক্ত্রে তোয় দ্বারা মার্জন আচরণ করিবে। বামপাণি হইতে পতনশীল দলিলে দক্ষিণ পাণি যোজনা করিয়া মন্ত্র দ্বারা ক্রমে উত্তমাঙ্গে ক্ষেপণের নাম মার্জন। দক্ষিণ-পাণিপুটস্থ দেই জল নাদার অগ্র সমীপে লইয়া গিয়া বোধরপ শুভ্র জল, বামতাণে আকর্ষণ করিয়া স্তম্ভন করিবে। কজ্জলাভা দেই পাণজল পিঙ্গমৃষ্টি দ্বারা প.তিত করিয়া বজ্জশিলায় নিক্ষেণ করিলে তাহাকে অ্যুম্বণ বলে। অন্তর শিংকে স্বাহান্ত শিবমন্ত্রে, কৃশ পুস্পা অক্ষতমুক্ত অর্থাঞ্জিল প্রদান পূর্বকি যথাশক্তি গায়ত্রী জপ করিবে।

অনন্তর মন্ত্র হইতে আরম্ভ করিয়া দেব টার্থ ছারা তর্পনবিধি কীর্ত্তন করিব। ওঁ শিবায় ফাহা এই মত্ত্রে শিবতর্পণ ও ওঁ ইন্দোয় স্বাহা ইত্যাদি

⁽০) চুলুকং-মাৰ্থজাল্লমাচামং ভজুলুক্মিতি মহোপনিষ্ধ ।

ক্সপে অন্যান্য দাহাযুক্ত দেবগর্ণের তপ্র করিবে।। द्वार कनबाब नयः, ट्राप्ट भित्रतम्, ड्रूर्ट भिथारेय, ट्रिर ক্রচায়, অস্ত্রায় হ্নাদিত্যায় এই মন্ত্রে অ্টাদেব-গণের তর্পণ করিবে। অনস্তব কণ্ঠোপবীত হইয়া হাং বস্থভাঃ হাং রুদ্রেভাঃ হাং বিশ্বেভাঃ হাং মরুদ্রাং হাং ভ্রভ: হাং অসিরভঃ এই এই মন্ত্র ছারা ঐ ঐ শ্ববিগণের তর্পণ করিবে। অনস্তর অত্তয়ে নমঃ, বশিষ্ঠায় নমঃ, পুলস্তায় নমঃ, ক্রতবে নমঃ, ভারৰাজায় নমঃ, বিশ্বামিত্রায় নমঃ প্রচেতদে নমঃ এই মন্ত্র দারা ঐ ঐ মনুষ্যগণের তপণ কবিবে। সনকাষ ব্যট্, হাং সনন্দায় ৰ্ষট্ পনাতনায় বষট্কাপিলায বষট্পঞশেখায় বষট্ ভ্যুভ্রে ব্যট, এই সকল মন্ত্রে সংলগ্ন করমূল দারা তপণাগুলি প্রদান করিবে। দর্বেভ্যো ভূতেভ্যো বৌষট্ এই মন্তে ভূতগণকে তৃপ্ত করিবে। অন ন্তর দক্ষিণকক্ষে ঘজোপনীত দংখাপনপুরঃদর কুশমূলাগ্রন্থিত তিল দারা পিতৃগণের তর্পণ कतिरव । कगुनानाननाग्न अथा, त्मायाग्न अथा, यमाग्र ऋथा, कार्गास्त्र स्था, व्यक्षित्मामाय ऋथा, বহিষ্ট্যঃ স্বধা এই এই মন্ত্র দারা স্বধায়ত দেব-পিতৃগণের তর্পণ করিবে; আজ্যপায় স্বধা, সো মায স্বদা এই মন্ত্র দ্বারা বিশেষদেবভাবান পিতৃ-গণকে তৃপ্ত করিয়া ওঁ হাং ঈশানায় ণিত্রে স্বধা, এই মন্ত্র দারা পিতার, ওঁ হাং ঈশানায় পিতা-মহায স্থা এই মন্ত্র দারা পিতামহের, বৃদ্ধ প্রপিত,মহেভ্যঃ সধা মাতৃভ্যঃ স্বধা, হাং মাতা মহেভ্যঃ স্বধা (দর্বেভ্যঃ পিতৃভাঃ স্বধা, দর্বেভ্যো জ্ঞাতিভোগ স্বধা, সর্বচোর্যোভ্যঃ স্বধা, এই এই মন্ত্র ছারা ঐ দকল পিতৃগণেব, জ্ঞাতিগণের ৫ আচার্য্যাণের তর্পণ করিবে। এইরূপে দিকের দিক্পতিগণের, দিল্পণের, মাতৃগণের ও গ্রহণণের

ও রাক্ষসগণের তপণি করিবে। তে গুই! এই
আমি তোমার নিকট স্নানবিধি কীর্তন করিলাম।
ইত্যাগ্রে আদি মংশ্রাণে স্নানাদি বিধনামক
বউ স্থতাধিকবিশত তম অধ্যার।

সন্তুসপ্তত্যধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

সূর্য্যপ্জাবিধি।

त्रेश्वत कहिरलन, ८इ सम्म ! अकान पात्रि তোমার নিকট করাঙ্গভাগ পূর্ববিক দুর্ঘ। র্চন বধি কীর্ত্তন করিব। আমি তে**জোম**র সূ**র্য্য এই**র প্রধ**া**ন করিণা অর্থ।পুজা করিবে। তাহার বিধি যথা ললাটাকৃষ্ট রক্তবর্ণ বিন্দুছাবা অর্থাপুরণ পুরঃস্ব তাহার পূজান্তে দুয়োর অসমন্ত্রারা রক্ষাবগুঠন অর্পণ করিবে। অনন্তর তাহার জলঘারা অর্যাদ্রব্য অভিষিক্ত কৰিয়া পূৰ্ববসুখে উপবেশন পূৰ্বক ভামুর অর্চনা করিবে। ওঁ অং এইরূপ হৃদবীজাদি মন্ত্রে দর্বত্র দণ্ডা ও পিঙ্গলের, এবং হারে দকিণে वामशास्त्रं, जेनानःकारन अर्पनाम अदेमखुदावा সুর্য্যের গণসমূহের পূজাকরিয়া অগ্লিতে পুরুর, ও পীঠমধ্যে প্রভূত আদনের পূজাপুর্বক, অগ্লি আদিতে বিমল, পরমারাধ্য স'র, আনন্দ স্বরূপ পর্মেশ্বের পূজানান্তে, সিংহ্সন্নিভ, শ্বেড, রক্ত্ পীত ও নীলবর্ণের পূজাকরিবে। অনন্তর,রাংবীকা দীপ্তা, রীংবীজ দৃক্ষা, রংবীজা জয়া, রংবীজা ভদা, রে বীজা বিভূতি, অমোঘা সহিত হৈ বীজা বিমলা, বিভাগ সহিত বোণবাৰ পূৰ্বাদ্যাশক্তি বিত্যুৎসহিত রো বীজা সর্বতোমুখাশক্তি এইশক্তি সকলেরই পূজা করিবে। পদামধ্যভাগে রং বীজবিশিষ্ট অক্।সন বিদ্যুমান তাহাতে ষড়কর সূর্যাত্রতি প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে। ওঁ হং ধং

খোক্ষায় এই মশ্রন্থারা ভাক্ষর দেবকে আহ্বান किवया, नजाएँ।कृष्टे अञ्चलिए शामानखन तङ्गर्न त्रवित्रकाम क्र**िट्र। हाः हीः मः म्**र्याय समः এই মল্রে মুদ্রাহারা আবাহনাদি সম্পাদন করিয়া প্রতির নিষিত্ত বিষয়ুদ্রা প্রদর্শন ও গন্ধানি প্রদান করিয়া, অনলে পদামূদা ও বিশমূদা পূर्वक छ आ: क्रमहाय नमः भिद्रम अर्काय नमः ভূভু ব্যেষ্ট ছারেশায় শিখারৈ নমঃ, এই হৃদ্য়াক মলুৱারা নৈ গতিকোণে হুণ কবচায় এইমল্লে বায়ু কোণে, হাং নেত্রায় এই মন্ত্রনারা মধ্যে বঃ অন্ত্রায এইমন্ত্রে পূর্ব্যদি দিকে যাগকরিয়া মুদ্রা প্রদর্শন क्रिट्र । इनिन्ति (ध्यूयुक्त क्रिय्युक्त क्रिट्र युग्ट्र त्रावि ষাণা অস্ত্রের ত্রাসনী মুদ্রা ও গ্রহগণের নমজিয়া জানিবে। দোং সোমায় নমঃ এইমজে সোমের, বুং বুলান নমঃ এইমজ্রে বুনের, বুংরহস্পতাম মমঃ এইমন্ত্রে রহস্পতির, ভং ভাগবায় নগঃ এইমত্রে শুজের অং ভৌমায় নমং এই মন্তে মঙ্গলেব, শং শনেশ্চরায় নমঃ এইমজ্রে শনির রং বাহবে নমঃ এইমস্থে রাজ্ধ,কেং কেতবে নমঃ এইমস্থে কেতৃর অনলে পুৰবাদিদিকে গদ্ধপুষ্পাদি হাবা হ হ উক্তার দাহিত পুজা করিবে। অনস্তব মূলমন্ত্র জপ-নান্তর, স্র্বাকে অর্পোত্রাণ প্রদান পুর সর স্তুতিপাঠ করিবে। অনন্তর পরাম্বর ल्याम कतिसा कमा विलाद । পরে অন্তায करे এইমন্ত্রে অণুদকল নির্বাণ করিয়া ি প্রান্ত নমঃ এই দংহারিণী মন্ত্রারা উপদংহার ববিষা চণ্ডে ববির তেজঃ গোলনা কবিষা র বর िमार केर्यन कतिरव। धरेक्राप केश्वीहना সমাধনানন্তর জপ ধ্যান ও হোমাদি ছালা সুর্বোর मक्ताक्रीन प्रका ६६८च । अरे मृशापूकाविष कीर्किछ इहेल ।

অফ্টসপ্রত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যার।

শিবপূজা কথন।

ঈশ্বর কহিলেন, এক্ষণে শিব পূজা কীর্ত্তন করিব। আচর্ষ্য আচমনানশুর প্রণব উচ্চারণ করিয়া প্রস্তুত করিবেন এবং অসুমন্তে জলছারা दार्तामक कतिरा ८शमानि दावलान गरनत धवः উদ্ধিস্থ উদুষ্ধে গণপতি সরস্বতী ও লক্ষীর পূজা করিবে। অনন্তর দক্ষিণ শাথাস্থিত নন্দি ও বাম শাখান্তিত গঞ্জা পুঞা করিয়া মহাকাল ও 🏅 যমুনার প্রতি দিব্য দৃষ্টি নিপাতিত কবিয়া, পুষ্পা ক্ষেপদারা অন্তরীক্ষণত দিব্যবিদ্বগণের উৎসারণ পূৰ্বক দক্ষিণপাখেরি তিন আঘাত দারা ভূ'ম স্থিতবিশ্ব বিদ্রিত করিয়া, দেহণী বা দারাগ্র-লজ্মনান্তর বামশাখা আশ্রয় করিয়া যাগ্মন্দিরে প্রবেশ করিবে। দক্ষিণপাদ দারা প্রবেশ পূর্বক উড়ুম্বরে অস্ত্রবিষ্ঠাস করিয়া ওঁ হাং এই মন্ত্রে মধ্যভাগে বাস্ত অধিপতি ত্রমাব পূর্ করিবে। অনরব শিবের অনুদ্রা গ্রহণানস্তর মৌনী হইয়া নিরীক্ষণদি অস্ত্রসহিতপরিশুদ্ধ গড্ডুক পূর্বক (১) গঙ্গাদিজলে শমন করিবে। মন্ত্রপুত বারিঘারা প্রকৃষ্টরূপ জপান্তে পবিত্রাঙ্গ হুইয়া शीय़ जो वा कनयमञ्ज नाता कना नात्य (गई (गई পাত্রাদি পরিপুরণ করিবে।

গন্ধক, অক্ষত প্রস্তৃতি সর্বদ্রে বাসমূচ্চর সন্ধিত্তি করিয়া পূজার নিমিত্ত স্কৃত জ্বাদি সমাধান করিয়ে। তদনতার শেকিনাদ্য হইষা দেবতার দক্ষিণদিকে স্বশরীরে ন্যাদ করিয়া সংগ্রেম্দ্রা দ্বি মৃত্তিমন্ত্রে মন্তকে ধারণানতার ভোগ্যকশ্মের উপভোগার্থ কচ্ছাপিকাখ্য পাণি দ্বারা হৃদয়াসুক্তে

⁽১) গড়ুৰ --- গাড়ুইডিভ হা।

অথণা দাদশান্তদলপায়ে আপনার আজাকে ধারণ করিবে। অনন্তর ততুমধ্যস্থিত শুন্যময় বিবর চিন্তা পঞ্জুত শোধন পূর্বক তকুবিবরের অন্তরে ও বাহিরে চরণাঙ্গুরুষ্ণল সকল চিন্তা कतिरव। भण्डां अध्याभिनी मक्टिक इक्रमश्र স্থিত পাবক প্রভ হু কারে প্রাণরোধপুরঃ দর চিন্তা করিয়া ফড়ন্ত মন্ত্রে রেচক করিয়া ফড়ন্ত মন্ত্রেই নিবেশিত করিবে। অনস্তর হৃদয়, কণ্ঠ, তালু, জ্র-মধ্য ও ব্ৰহ্মকন্ধু নিৰ্ভেদনপূৰ্বক গ্ৰন্থিসকল নিৰ্ভেদ করিয়া হুংকাররূপ জীবাত্মার শিরঃস্থিত সহস্রু দল বিন্যাস করতঃ হৃদয়সম্পুট ছারা পুরকে চৈতন্যবিন্যাদপূর্বক ছুংকারকে শিখোপরি বিন্যাদ পুরঃদর শুদ্ধবিন্দুরূপ আত্মার স্মরণ করিবে। অন-ন্তঃ কুন্তক করিয়া একোদ্ঘাতদারা (১) শন্ততে যোজনান্তর রেচক ছারা শিবে সংলীন হ্ইয়া শোধন করিবে। অনন্তর নিজদেহে বিন্দু হইতে বিন্দন্দন্তর পর্য্যন্ত প্রতিলোম (২) করিয়া পৃথিবী, বায়, জল, বহ্নি ইহাদের ছুই ছুইটা শোধন कतिया भारत व्यविद्वार्थ व्यक्तिम माध्य कतिरव। ত্রিবরণ এবেণ কর। পার্থিবমণ্ডল পীতবর্ণ ও কঠিন এবং বজ্রচিহ্নিত; হৌং এই আত্মণীজ বিশিক্ট এবং নির্ত্তকলাময় : পদ হুইতে আরম্ভ করিয়া মৃদ্ধাপর্যান্ত ঐ চতুকোণমগুল চিন্তা করত উন্যাতপঞ্চক দারা অর্থাৎ পঞ্চবার রেচক ও পুরক ক্রিয়া বাগুভূত চিন্তা করিবে। বাযুমগুল অর্জ চন্দ্রাকৃতি, দ্রব শুল্ল হুশোভন ও সরোজলাঞ্ডি হীং এই বীজ মন্ত্র দারা প্রতিষ্ঠিত। অনস্কর রাম-

ON KAIBHNA DEY: বি | বি তিন্তু প্রতিশাসন চল্লু । ৪৩৭
মন্ত্র সংযুক্ত অকারণ পরীমপুরুষ পৃদ্ধাহ বহিত্তকে চারি উদবাত স্বারা শোধন করিবে। স্বায়েমগুল ত্রিকোণর জ্ববর্ণ ও স্বস্তিকলাঞ্চিত। ভং এই বীজ মন্ত্র ছারা বিদ্যারূপ ভাবনা করিবে। ছোর অপু-অয় ঘারা ফলভূতকে বিশোধিত করিতে হয়। জলীয়মগুল কৃষ্ণ ও ষট্বেশণবিশিষ্ট এবং ছব্ন বায় বিন্দু দারা চিহ্নিত। হেং এই বীজ হইতে জাত ও শান্তিকলাময়। উদ্ঘাত্যুগান্বারা চিন্তা করিয়া জলস্থুত বিশোধন করিবে। নভোমগুল, বিন্দুময়, বৃত্তাকার, বিন্দুশক্তিবিভূষিত, ব্যোমাকৃতি, হুবুত্ত ও বিশুদ্দ ক্টিকের ন্যায় নির্মাল; হৌং ফট্ এই বীজৰয় ও শান্তির অতীত কলাবিশিষ্ট একে উদ্-ঘাতযোগে নভোভূত বিশোধিত করিবে। তদন-ন্তর ময়তপ্রাধী মূলামুক্তমারা দর্কভূতকে আপ্যা-য়িত করিয়া আধারপঙ্কজ অনস্ত ও ধর্মজ্ঞানাদি পঙ্কজ এই হৃদাদন, এইরূপে পঞ্জ সকলের মূর্ত্তি থ্যানানন্তর ঐ মূর্তিতে দাদশাক্ষর মন্ত্রে সৃষ্টিমূদ্রা খারা শিবময় আত্মাকে আবাহন করিবে। অনস্তর বৌষড়ম্ভ শক্তিমন্ত্ৰ দ্বারা ঐ মূর্ত্তিকে দিব্য অমতে সংগ্লাবিত করিয়া সকলীকরণ করিবে। হৃদয়াদি হইতে করান্ত পর্যান্ত এবং কনিষ্ঠানি অকুলিসকলে হুদাদি মন্ত্র বিন্যাদের নাম সকলীকরণ। অনন্তর অস্ত্র মন্ত্রে প্রাকার ও তমন্ত্র দারা তদহির্ভাগ রক্ষা করিয়া শক্তিজাল অধ: উর্দ্ধে মহামুদ্রা প্রদর্শন পূৰ্বক আপানমন্তক, মন:সম্ভুত পুষ্পপুঞ্ ছারা হুৎপথে পুরকারুষ্ট অমৃত ও সদ্মৃত হারা শিব পূজা করিবে। অনস্তর শিবমন্ত্র দারা নাভিকুণ্ডে শিবাগ্নির সতর্পণ করিয়া ললাটে শেভনমূর্ত্তি বিন্দু রূপ চিন্তা করিদে। অর্ণাদি পাত্রসমূহের মধ্যে জলবিশোধিত এক পাতে, বিন্দু এসূত অমৃতরূপ বারি-অক্তাদি ভারা মাপুরিত করিয়া ষড়লপুজা

^{(&}gt;) উদ্যাত—প্রাণায়ায়ভাদেযোগের নিয়িও কৃষ্
ক। রেচক পুৰক। (১) প্রতিলোম—বিপরীতক্রম। এক দিক্ চুইতে জেম্প গ্রনের নাম অত্লোম, পুনব্রের তাহার বিপরীত দিক্ হইতে ক্ৰমণ গ্ৰনাদির নাম প্রতিলোম।

সমাপনপ্ৰক অভিমন্ত্ৰিত এবং হাৎ এই কবচ भएख नःत्रका कतियां नगावृष्ठ कतिरन। चनस्त অফাল অব্যারচননিস্তর ধেতুর্জা বারা সেচন পূৰ্বক সেই তোয় বিন্দু দারা মন্তকে শাস্তার অভিষেক করিবে। তত্ত্বিত যাগদ্রব্যসন্তার অস্ত্র বারিছারা সেচনপূর্বক ছন্মন্ত্রে ও পিণ্ডমন্ত্রদকলে অভিমন্ত্রিত করিয়া তপুত্রাণে অর্থাৎ কবচমন্ত্রে পরিবেষ্টিত করিবে। অনস্তর অয়তামুদ্র। প্রদর্শন-পূर्वक निकामत्त भूष्म श्रामनभूतः महरक তিলকজিয়া সম্পাদন করিয়া মূলমন্ত্রে সংযোজনা করিবে। হুধীগণ স্নান, দেবার্চন, হোম, ভোজন, যাগ ও যোগ এবং আবশ্যকজ্প এস্কল বিষয়ে নিয়তই মৌনাবলম্বন করিবেন। নাদাস্ত উচ্চারণ-নিমিত স্থদংস্কৃত মন্ত্র উত্তমরূপে শোৰন করিয়া পূজাবিধানে গায়তী দারা অর্চনানক্তর সামান্য অর্ঘ্য উপহার দিবে। অনস্তর ব্রহ্মপঞ্চক আবর্ত্তিত করিয়া লিঙ্গ হইতে মাল্য গ্রহণ পূর্বক হুণান্তভার। চণ্ডকে নিবেদন করিবে। অক্সমক্তে ভোয় দারা পিতিকালিক প্রকালন পূর্বক হুদ্রমন্ত্রে অর্ঘ্য-পাত্তের জল ঘারা ধেতিকরণের নাম লিকবিশো-ধন। আত্মদ্রবা, মন্ত্র ও লিক্তদ্ধির নিমিত্ত সমস্ত স্বরগণের পূজা করিতে হব। হাং গণপ্রয়ে এই মন্ত্রে বায়ুমণ্ডলম্ব গণপতির ও হাং গুরুভাঃ এই মন্ত্র বাবা শিবলিকে গুরুপ্জা করিবে। অনন্তর কর্মশিলান্থিতা অকুরনিভা আধারশক্তি ও একা-শিলার্ড শিবের অনন্ত আদন ও সভাত্রেভানি-রূপে প্রস্পার পৃষ্ঠদর্শি শিবের আ্লান পাছুকা পূজা করিবে। অগ্লিকোণাভিমুখে অবস্থিত কপুর প্রভ ধর্ম, কুরুমাভ জ্ঞান স্বর্গ প্রভ বৈরাগ্য ও কঞ্জ-লাভ ঐবধা এই দকলের ক্রমে ক্রমে পূজা ক तिरव। अनस्वत পचकर्गिकामस्या भृक्वांनि निरक

ও মধ্যভাগে বরদা ও অভয়হস্তা, বামা, জ্যেষ্ঠা, ट्रोक्ती, काली, कलिकातिशी, यगविकातिशी, यन-প্রমণনা ও হাংবীজা সর্বভূতদমনী ও কেশরাগ্র-ছিত মনোমনী এই নবশক্তির পূজা করিবে। কিতি আদি শুদ্ধ বিদ্যা ও তত্ত্ব্যাপক স্থাসম বিস্তার করিয়া সি হাসনে শুভাবর্ণ, বিভূ, পঞ্মুথ, मनवाष्ट्रं मंक्रिन कत्रमकरल हट्यक्नाधाती ध्वरः বামকরসমূহে শক্তি, ঋষ্টি শূল থগুধারী ও বরদ বীঙ্গপূর্ণ ডমক্লধর ইন্দীবরস্থগোভিত সূত্রকোংপল মালী শহরকে সন্ধিবেশিত করিয়া মধ্যভাগে সামৃদ্রিক শাস্ত্রোক্ত ছাত্রিংশল্লকণসম্পন্না অর্থাৎ হুচারু সর্বাদ্য শৈথীমূর্ত্তি বিন্যাদানন্তর হাং হং শিবমূর্ত্তয়ে নমঃ এই মন্ত্রে স্বপ্রকাশ শিবকে স্মরণ করিয়া ত্রন্ধাদি কারণভ্যাগে শিবস্থানে মন্ত্রকে লইয়া গিয়া লল্টেমধ্যস্থিত প্ৰদীপ্ত প্তপ্ৰভ ষড়ঙ্গ বেদময় বিন্দুরূপ পরাৎপর শিবকে পুষ্পা-ঞ্লির মধ্যগত ভাবিয়া লক্ষীমূর্তিতে নিবেশিত করিবে। ওঁ হাং হোং শিবায় নমঃ। এই ছক্মত্রে আবাহনী মুদ্রা ছারা আহ্বানপূর্ব্বক স্থাপনীমুদ্রা ঘারা শিবকৈ সমিধানে সংস্থাপিত কবিয়া ফড়স্ত মস্ত্রে কালকান্তি নিষ্ঠুরা মুদ্রায় নিরোধ করিবে। অনস্তর ছটিকা স্বারা বিষয়গণের দূরীকরণপুরঃসর লিক্যুদ্র। ও নমস্কৃতি করিয়া হ্বাস্ত্রে অবগুঠন করত আবাহন ও সমুখন্থ করিবে। ভো শিব, আমি আপনার দলিবেশিত, স্থাপিত ও দলিহিত হইতেছি, কর্মকাওপর্যন্ত অক্ষয়রূপে আপনার সন্ধিহিত থাকিলাম, আপনি আমাকে আশ্রয় দান করুন। স্বভক্তির যে প্রকাশ তাহাকে অবগুঠন करहा अनस्त नकलीकद्राभूतः मत्र मस्यो कदारा একতা সাধন করিয়া অঙ্গির সহিত অঙ্গকলের অমৃতীকরণ করিবে। অনন্তর শস্তুর চিচ্ছক্তি

विभिक्ते छलया भिरव चाकेविथ (১) औषर्या, भिश्री-বশিত্ব, ঐশ্বরীয় তেজ ও কবচ, তুঃসৰপ্রতাপ ও সংহারক অন্ত মধ্যে নমঃ স্বধা, স্বাহা ও বৌষট মন্তে যথাক্রমে ছদাদি মন্ত্র উচ্চারণপূর্বক পাদ্যা-भ्रमानि निर्दत्तन कतिरत। शानाच् अयूगरन शाना ও মুখপক্ষে আচমনীয়, শিরোদেশে অর্থ্য ও मुक्षाक जानि धानान कति । अहै तरा मन्यि সংস্কারে পর্মেশ্বর দেবদেব মহাদেবকৈ সংস্কৃত করিয়া বিধিপূর্বক কুত্মাদি দারা পঞ্চোপচারে পূজা করিয়া রাজিকালবর্ণাদি (২) দারা অভ্যক্ষণ, উদ্র্তন ও নির্ভন্তন (৩) করিয়া গড্ডুক সলিলে भरिनः गरेनः स्नान कत्राहेरव । शरत हुस पवि श्रुष्ठ মধু শর্করাদি অফুক্রমে অভিমন্ত্রিত দ্রেগুয়ারা অর্চনা করিয়া ঐ দ্রুব্য সকল পুনর্কার বিপর্যায় क्रा थनान् कत्रज्, ट्राय्युशानि मर्विदिध জব্যহারা মূলমজ্রে স্নান করাইয়া যবচুর্ণ দহিত শীতল্জলে এবং স্বশক্তি যথেক্ট হুগদ্ধজলে স্থান করাইয়া পরিশুদ্ধ বাস্থারা গাত্রপ্রোঞ্চন পুরঃসর অর্থদান করিবে উপরিভাগে করভ্রমণ করাইবে না। লিক্সম্ভক শূন্ত রাখিবে না, স্থান কালের পরক্ষণেই চন্দনাদি লিপ্ত পুস্পা-দিবারা শিবাজ্কমন্তে পূজাকরিয়া ধূপপাত্র প্রোক্ষণ (৪) পূর্বক শিবাত্মকমন্ত্রে মর্চনা করিয়া অন্ত্রমন্ত্রে পূজিত ঘণ্টা গ্রহণপূর্বক গুণগুল প্রদানাত্তে সর্কান্ত হৃদয়মন্ত্রে আচমন প্রদান পুরদর রাত্রিপর্যান্ত উত্তারণ পূর্বাক পুনরাচমন

প্রদান করত প্রণামানন্তর দেবজা গ্রহণ পূর্বক ভোগাদ প্রকা প্রদান করিয়া অর্চনা করিবে। অনস্তর হৃদয়ামুকের অগ্নিকোণে দলম্ভিড শিব, ঈশানে দলক্তি ভ্ৰৰ্থপ্ৰভ শিব, নৈশ্ভি কোণে प्रतन्त्र। **त्रीक्ष**ण्यर्ग निथी, बाह्यरकारण श्रामन**ण्ड कृत्**क-বৰ্ণ বৰ্মা, এইসকল চভুমুখ চভুৰ্বান্ত দেবভার পূজাকরিয়া পূর্বাদিদিকে করালদংষ্ট্র বক্তসন্মিত অন্ত্র পূক্ষা করিবে। অনস্তর মূলাব্দুজ হোং শিবার নমঃ ওঁ হাং হুং হীং হোং শিরশ্চ হংশিথায়ে হৈ বর্মা হ দ্যান্তং পরিবারযুভার শিবায়নমঃ এই-মন্ত্রে পাদ্য অর্থ্য, আচমনীয়, গন্ধপূষ্প, ধৃপ, দীপ, নৈবেদ্য ও আচমনীয়, করোদ্বর্তন, তামুল, মুখবাস, দর্পণাদি প্রদান পূর্বক দেবতার মস্তকে তুর্বা, অক্ষত ও পবিত্র আরোপিত করিয়া হৃদয-মন্ত্রে অভিমন্ত্রিত করিয়া অন্টশতবাব মূল মন্ত্র জ্বপানস্তর চর্ম্মবেষ্টিত রক্ষিত খড়গপূজা করিবে। পশ্চাৎ উদ্ভব মূদ্রাযুক্ত শিবকে কুপপুষ্প ও অকত-দারা পুদা পুর্বাক স্তুতি করিয়া কহিবে ছে হর ! গুহাদপি গুহতর ও গুপ্তার্থ মংকৃত এইজপ গ্রহণ করুন এবং ইহা আপনাতে অবশ্বিতি করুক, যদারা আপনি প্রদল হইয়া আমাকে সিদ্ধিদান করিবেন (১) অনস্তর প্রসম্মনে শস্তুর সস্তোবের নিমিত আদ্যালোক পাঠকরিয়া দক্ষিণ इञ्चाता मृत्रमस्य व्यर्गारात्र इत्रहस्य निर्वेषन করিবে। হে শতকর আমিশিবাশ্রয়েন্থিত, যে কিছু স্কৃত বা হুদ্ত কবিতেছি, তৎসমূদায়ই আপনি বিনাশ করুন। এই বলিয়া ভ্ংক্ষঃ এইমন্ত উচ্চ,রণ করিবে। অনস্তর, শিবদাতা, শিবভোকা

⁽১) অণিমালবিমাদি।

⁽२) রাজিকা—খেতদর্ধণ, রাই দবিদা বা রক্ষদর্বণ।

⁽৩) অভ্যক্ষৰ—সেচন। উবর্জন—বিবেপন, ধর্বণ। নিভ জন – প্রাকিম্পন।

^{(8) (}धाकर-कूमानि नशकनिम् वात्रा नेवर निकी कतन।

⁽১) গুলাতি গুল গুপ্তার্থং গুলাগাৎ কুড জ্বণ: । দিছি ভবতিমে দেন ছৎ প্রদাদাৎ ছার্যন্তিতে ।। এই লোক পাঠ কবিবে।

এই সমস্ত জগতই শিবময়, শিবসর্বত্রই সর্বোৎ
কর্ষে অবস্থান করেন, যিনিশিব তিনিই আমি,
এইরূপে শ্লোকরয় (১) পাঠ করিয়া মহাদেবে জপ
সমর্পণ করিবে। শিবাঙ্গের দশাংশ অর্চ্যদান
পূর্বেক স্তব পাঠানস্তর প্রদক্ষিণ করিয়া অন্টমূর্ত্তি
শিবকে অন্টাঙ্গ প্রণাম করিবে। অনন্তর ধানাদি
দ্বারা প্রণাম করিয়া মানসে বা অনলাদিতে যাগ
করিবে।

ইত্যাগ্ৰিষে অদিমহাপুৱাণে শিবপুঞা নামক অষ্টসপ্ৰতাধিকৰিশতভম অধ্যায়।

ঊনাশীত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

অগ্রিস্তাপনাদি বিধি।

ঈশর কহিলেন, আচার্য্য হৃদংরত হইয়া
করে অর্ঘণাত্র ধারণ পূর্ব্যক অগিগৃহেগমন করিয়া
যাগোপকরণ দ্রব্য সকল দিব্যচক্ষে অবলোকনা
নন্তর উত্তরম্থ হইয়া কুণ্ডদর্শন পূর্ব্যক কুশ্দারা
অস্ত্রমন্ত্রে প্রকোণ ও তাড়ন এবং বর্ম্মন্ত্রে অভ্যুক্ষণ
থড়ামন্ত্রে থাত উদ্ধার, পূরণ ও সমতা, এবং বর্মমত্রে সেক শরমন্ত্রে কুদুন করিবে। সম্মার্ভন,
সমালেপ কলারূপ প্রকল্পন তিসূত্রী পরিধান,
ও অভ্যর্ত্রন নিয়ভই বর্মমন্ত্রে নির্বাহিত হয়।
ত্রুন্তর কুশমন্ত্রে শিবমন্ত্রে বা অস্ত্রমন্ত্রে উত্তরাভি
মুথে কুশ্দিব ও অস্ত্রমন্ত্রে তিনরেথা ও অধাভাগে
প্রব্যাভিমুখী একরেথা অন্ধিত করিবে, অথবা
বন্ধাকরণ মন্ত্রদারা ঐ সকলের বিশ্ব্যায়ে রেখাপাত করিবে। অনস্তর হৃদয়মন্ত্রে কুশ্দারা চতুপ্রথ

ক্র্বচমন্ত্রে অক্ষপাত্র ও স্থান মন্ত্রে আসন বিশ্রাদ করিবে। ঐ আসনে হৃদয়মন্ত্র দারা সরস্বতী ও ঈশ্বরকে আহ্বান করিয়া পূক্ষাকরিবে। সৎপাত্তে বহ্নিশানয়ন ও সংপাত্তে স্থাপন করিয়া ক্রব্যাদংশ পরিত্যাগ পূর্বেক বীক্ষণাদি ছারা বিশোধিত করিয়া, উদহ্য ঐন্দব ও ভৌত এই অনলত্রয়কে একত্রিত করত ওঁ হুং বহু চৈতভাম এই বহু বাজমন্ত্র ছারা বহ্নিবিভাগ করিবে। সংহিতামন্ত্রে অভিমন্ত্রিত বহ্নিকে ধেকুমুদ্রাদ্বারা অয়তীকৃত, শরমন্ত্রে রক্ষিত কব্চমন্ত্রে অবগুঠিত করিয়া পূজানন্তর কুণ্ডের উদ্ধৃভাগে পরিভ্রমণ করাইয়া. বাগীমরীর গর্ভগোচরে শিববীজ ধ্যান করত্ত বাগীশ্বরদেবকর্ত্তক এ অগ্রিক্ষিপ্যমনে হইতেছে, ভাবনা করিবে। অনস্তর মন্ত্রদারা জামুপাতন পুরঃদর **क्तशभ**रञ्ज নিকেপ করিয়া নাজিদেশে অন্তস্থিত বীজের সমুখার পূর্বক ক্রমায়ে পরিধান ধারণ শোচ, আচমন ও গর্ভাগির পূজাকরিয়া শরণত্ত্বে তাহার রক্ষার্থ দেবীর পারিপল্লবে গর্ভজকল্পণ করিবে। গর্ভাধানের নিমিত্ত দল্যোজাত পাৰকের পূজাকরিয়া হৃদয়মন্ত্রে অগ্নিতায়ে আত্তি প্রদান করিবে। পুংসবনের নিমিত্ত তৃতীয়মাদে বামমস্ত্র দারা পূজানন্তর, অমুকণামিত আহুতিতায় প্রদান করিবে। শীমভোময়নের নিমিত ষ্ঠমানে রূপি-মস্ত্রে পৃজাকরিয়া শিথামন্ত্র ছারা তিনবার হোম এবং মুখাঙ্গ কল্লনা, মুখোদ্যাতন ও মুখনিষ্কৃতি করিবে। দশমমানে জাতকর্ম ও নৃকর্শের নিমিত্ত পূর্ববং দর্ভাদিবারা অগ্নি সন্ধ্রুণ পূর্ববিদ, গর্ভমল নাশক স্নান, দেবীর স্থব বন্ধনানন্তর হৃদয়মন্ত্রে অর্চনা করিবে। সদ্যঃ সূতকাশৌচ বিনাশের অস্ত্রমন্ত্রে বারিছারা প্রোক্ষণ

⁽১) শিবদাশ। শিবভোক্তা শিবঃ দর্কমিদং স্থগৎ । শিবোক্তয়তি দর্কাত্র মংশিবঃ দোহত্তমেবচ।।

অস্ত্রমন্ত্রে বহির্ভাগে কুগু চাড়ন ও বর্মমন্ত্রে প্রোক্ষণ অর্থাৎ কুশবারি সেচন করিবে। খনশুর মেথলা সকলে অন্তমন্ত্ৰার৷ পূর্বদিগ্ভাগাগ্রকুশ নিচয় দংস্থাপিত করিয়া ভাহাতে হৃদয়মল্রে বিস্তার স্থাপন করিবে। অন্স্তর নালাপনোদন নিমিত অসমতে প্রাপ্ত মুলভাগের পঞ্চমিধ (১) আহুতি প্রদান করি*ৰে*। অন্তর জদয়মন্তে তুর্বাক্ষত ছারা পরিধিভান পর্যন্তি ভ্রামা। শতকর ও বিষ্ণু অমুক্রামে ও অনস্ভের পূজাকরিবে। আপনারদিকে इ. व ग् কুশাসনস্থিত ইন্দ্রাদি করিয়া ঈশান পর্যান্ত অগ্নির [া] অভিমুখা ভূতদেবতা গ**োর অর্চনা করিবে।** অনন্তর বিদ্যসমূহ নিবারণ করিয়া বালককে প্রতি-পালনকর তাহাদিগকে এই শিবাজা শ্রাব্ করা-ইবে | অনন্তর, ত্রুক্ ও ত্রুব (>) গ্রহণ পূর্ববিক, উদ্মুখ ও অধোমুখ দৰ্ভদকলের মূলমধ্য অঞ্জাগ সকল ক্রমে অগ্নিতে তিনবার তাপাইয়া (৩) স্শ্করিয়া পরে কুশাস্পৃষ্ট প্রদেশ আত্মাত্মক বিদ্যাত্মক ও শিবাল্লক তত্ত্ত্ত্য ক্ৰমশঃ বিভাগ করিয়া হাং হীং হুং সং ক্রমে এই রবসমূহে, ছ্দ্যমন্ত্র স্বারা, ক্রাকেশক্তিকে ও ক্রাবে শিবকে বিশ্বস্ত ও উভয়ের ত্রীবাদেশ ত্রিসূত্রী বেষ্টিত কবিয়া কুণ্ডমাদি দ্বারা পূজাপুরবক আপন দক্ষিণে কুশেপ'র স্থাপন পুরঃমর গব্য ও ছত এইণ করত বীক্ষাদি ছারা বিশোধন পূর্বক স্বকীয়া ব্ৰহ্মময়ী মূৰ্তি চিন্তাকরিয়া সেইমুক গ্রহণকরত জদর মন্ত্রছারা কুণ্ডের ঊর্ষভাগে আবর্তন ও অগ্নিসন্মিধানে ভ্ৰমণ করাইয়া পুনর্বার বিস্থুময়ী

মৃতিধ্যান করিয়া কুশাগ্রে মৃত ধারণ পূর্বক नेगानमनियारन थांत्रगारस স্বাহান্ড শিরোমন্ত্র দারা বিষ্ণুহোম করিবে। অনস্তর,**আপন আজাকে** রুদ্রপ বিশ্বভাবনা করিয়া নাভিছলে অপ্লাবিউ করিবে। অসুষ্ঠ অনামিকাগ্রপরিমিত প্রাদেশমাত্ত দর্ভযুগল বহ্নির সম্মুখে ধারণ পূর্ব্বক তদ্ধারা ষদ্রমন্ত্রে আপ্লাবন অর্থাৎ স্নান করাইবে। তদ-নন্তর হৃদয়মন্ত্রে দেইরূপ স্থান করাইবে। অনন্তর **पश्चर्य, रुपग्नराख अर्प क**तिया **पाखर**क्यां नस्त्र পবিত্রীকৃত করিবে। প্রদীপ্ত অপর দর্ভদারা হুনান্তেই দীপ্ত করিয়া অস্ত্রমন্ত্রে দগ্ধ ঐ কুশ পুনর্বার অগ্নিতে নিক্ষেপ করিবে। অনম্ভর, প্রাদেশ প্রমাণ কুশে গ্রন্থিদান পূর্বকে য়তে ক্ষেপণ করিয়া ইড়াদির পক্ষর ও পক্ষত্রয় মূতে ভাবনা করিয়া ক্রমে ভাগত্র হইতে স্রুবদারা আজ্যগ্রহণ পূর্বক হোম করিবে। পরে অয়ো স্থা, মতে হা এইমস্ত্রে শেষভাগ আজা ক্রমে অগ্নিতে নিকেপ করিবে। ওঁ হাৎ অগ্নেষাহা ওঁহাং দোমায় স্বাহা, ওঁ হাৎ यग्नीरामा जार याहा। এইমন্তে নেত্ৰ উদবা-টন নিমিত্ত অগ্নির নেত্রতায়ে ও মুখে স্বৃত্ত পূর্ণস্কের দারা আহতি প্রদান করিবে। ওঁহাং অগ্নয়ে. ষিউকুতে সাহ। এই ষড়ঙ্গ মন্ত্রদারা **অভি**মন্ত্রিত করিয়া ধেতুমুদ্রা স্বারা বোধন করিবে। কবচমন্ত্রে অবগুণ্ঠন পূর্বকি শর্মান্ত্র আজ্যরকা করিবে। অনন্তর হাদয়মন্ত্রে আজ্য বিন্দুনিকেপ অভ্যুক্ষণান্তর শোধন এবং বক্তাভি ধারণ,সন্ধান ও বক্তের একীকরণ করিবে। ওঁ হাং সদ্যোজাতায় ষাধা, ওঁ হাং বামদেবায় স্বাহা, ওঁ হাং অখোরায় ষাহা, ও তৎপুরুষয় যাহা ওঁ হাং ঈশানায় স্বাহা এই এইমত্ত্ৰে এক এক মৃতান্ততি দারা বক্তাভি-ধারক করিবে। ওঁ হাং সদ্যেজাভবামদেবা

⁽১) भवान, बहित्र, भिभेगत, উष्ट्रहत, क्स।

⁽১) अन्हिं वामानार्थ भाववर ।

⁽২) ভাডাইয়া ইভিভাষা ৷

জ্ঞাং স্বাহা, ওঁ হাং বামদেবাঘোরাভাং স্বাহা ওঁ হাং অধারবং পুরুষাভাগং স্বাহা, ওঁ হাং তংপুরুষেশানাভ্যং স্বাহা। এইরূপে এই সকল মন্ত্রারা ক্রনে বজুামুদকান করিবে। অনস্তর, নির্মাতাদি শিবাস্ত মন্ত্রে বহুগত ও বহিংগত স্বত-ধারা ক্রনে ধারণ করিগে তক্ষা ক্রনশ বজু সকলের একীকরণ করিবে।

ওঁ হাং স্লোজাতবাম্বেবাধারতংপুরুধে শানে∓ए याहा। এইমস্ত ইঊन्ट्ल ट्राইরেপে বক্তাবের সম্ভূতার করিবে। ঈশমল্রে অগ্নির অন্তর্কা করিয়া সম্ভ্রমন্ত্রে আছুতিত্ত্রের প্রদানপূর্বকে, কাথমনবাক্যে অগ্নির স্তুতি ক্রিয়া কহিবে হে ছতাশন। ভূমি শিবাগ্রি ভূমি আমাদিগকে রক্ষা-কর। পবে হৃদ্যমন্ত্র দার। বিস্ফীগ্রি পিতৃষ্যকে বিধিপুরনী প্রদান পুবঃস্ব বৌষড়ন্ত মূলমন্ত্র ছারা वथाविधि भूगीङ्ङि अमान कविरव। उपनस्तर হৃদয়ামুজ অঙ্গ সহিত সেনাসহিত ভাষাব পর্ম দেবতা শিবের আদেশ প্রার্থনা পূর্বক তাঁহার তর্পণপুর্বক পূজাকরিবে। পরে আল্লমন্ত্রে যাগাগ্লি ও শিবের নাড়ীসন্ধান করিয়া যথশক্তি মূলমন্ত্রে, অক্সফ্রন দশাংশ পর্যান্ত হোম করিবে। হোম-ক্রিয়া মুত দবি ও মধুকর্ষণ করিয়া থাকে; দধি ভ পায়স শুক্তি মাত্রায় মাহতি প্রদান করিবে। मृत्यदिम् ७८ऋत्व श्रविभारगत रच विवि ভাবণ কর। লাজ (১) মৃষ্টি প্রমাণ মূলের খণ্ডভয়, সপ্রাণাতুরপ অয়ের, গ্রামার্ক, সূক্ষা প্রাণে প্রধ্যাণে হোম কবিবে। ইকুর পরি মাণ পদ্মপ্যান্ত, গতাৰ চুই অসুলি, পুজ্প ও পত্র সংস্থা প্রশাসকপ, সমিৎ বা य ५५

কাৰ্ছ দশ অঙ্গুল । কপুর চন্দন, কান্মীর কল্রী, যক্ষ কর্দম ইহাদের পরিমাণ কলায়াত্তরপ, গুগ্-গুলু বদরফলের অন্তি প্রমাণ। কলের অইমভাগ এই সকল পরিমাণে বিধিপূর্বক হোম করিবে। অনন্তর এটরতে ত্রকাবী গালার মত্ত্রে হোম নিব-র্ত্তিত করিয়া দ্বতপূর্ণ স্রুক্পাত্তে, অন্য স্রুক্ কধো-মুথে স্থাপন পূর্বক তফকের অগ্রভাগে বামপাণি भारा भूष्म विन्तान करिया भूनकीत भन्नासाल স্ব্যুকর প্রদান পূঠকে ধাবণ ক্রিয়া প্রাকৃতি মুদ্রা দ্বারা অর্ককায় উলোলন ও কামপদ উধা-পিত করিয়া নাভিদ্বলে ফ্রেক্পাত্তের মূল স্থাৎন করতঃ অক্যতো দৃষ্টিবিন্যাদপুরংসর জাক্ষাদি কাবণ ত্যাগান্তে হুযুদ্ধান্তী দ্বরো বিনিঃস্ত কবত বাম-গুনান্তে সাবধানে ঐ ফ্রাকপাত্রছযের মূল আন্যন-পূর্বক অবিস্পান্টরূপে বৌষড়স্ত মূলম্ম্র উচ্চারণ পূর্ববক সেই অগ্নিতে যবপরিমিত ধারাঘ সেই আজ্য আছতি প্রদান কবিবে। অনস্তব আচমন, চন্দন, ডাখুল এভ্তি প্রদান করিয়া দেং ভন্ম বন্দনাংস্ত ভ'ক্তপুর্বকে প্রণাম কবিবে। তদনন্তর ষ্মািব অর্চন। ক'রখা ফড়ন্ত ষ্মন্ত্রে সম্বর্ পুর্ববিক দংছাব মৃদ্রায় হবণ করিয়া ক্ষমতা এই ষাক্য উচ্চাষণ পূৰ্ব্বক দাপ্তিশীল দেই পরিধি-দকলকে হৃদ্যমন্ত্ৰে পূরকদ্বাবা আদ্ধাপূৰ্বক পর-মাজাদখলীয় ভ্ৰণাৰ্চে দংখাপিত **ক**রিবে। अबस्त मकल शाकाश शहर शूर्वक पूर्वी मधन করিয়া অন্তর্কলি ও বহির্কলি প্রদান করিবে। তদ্বিধি ।ই প্রাচার যথ। কুণ্ডের সালধানে অগ্রি (कार्ष अ श॰ ऋ(प्रचाः याश, शृत्की अ मिक्ष মাতৃভঃ স্বাহা, পশ্চিমে হাং প্ৰেভাঃ স্বাহা। এই এই মাল্ল ঐ ঐ দেবগণকে ধলি প্রদান করিবে। | উত্তরে হাং যকেভঞ্জ, ঈশানে হং এত্ত্তঃ, উ

অগ্নিতে হাং অন্তরে ভাঃ, নৈখাতে রক্ষোভাং বায়ব্যে হাং নাগেভাঃ, মধাভাগে হাং নক্ষত্রেভাঃ, অগ্নিতে হাং বাশেভাঃ বারুণী অর্থাৎ পশ্চিমদিকে কেত্রপালায় স্বাহা। এইরপে উক্ত দেবভাগণকে অন্তর্শনি প্রদান করিবে। বাহ্যে তিথি মণ্ডলে, ইন্ডায়, অগ্নিমান, নৈখা—তায়, কলেশায়, বায়বে, ধনরক্ষিণে, ঈশানায় নগঃ এই সকল মত্রে পূর্বাদিদিকে বলি প্রদান করিবে। ঈশানে প্রস্থান নমঃ এই মত্রে প্রস্থান প্রদান করিবে। করিবা বায়েগাদিগণকে বহি দিলি প্রদান করিবে। বিদ্বেগত সম্ভ্রমকল সংহাবমুদ্রাহারা আত্মায় সংব্রমিত করিবে।

ইত।(থেরে জালিষতাপুর'রে অগ্নিকার্য।নানক উনাশীতাধিক্ষিশতভ্য অধ্যায় ।

অশীত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

িফুপঞ্জর।

পুদ্ধর কহিলেন, হে বিপ্রবর ! প্রক্রাপতি ত্রন্ধা বিষ্ণুগঞ্জর ত্রিপুরারি ত্রিলোচনের রক্ষণীয় বলিয়া নিরূপণ করিয়াছেন। দেবরাজ ইন্দ্র বৃহস্পতির সাইত বল নামক অভ্রের ফিনাশার্থ গমন করি- (বেন, তাঁহার দেই জয়দম্ভিশালিনী স্বরূপবার্তা। বর্ণন করিতেছি, প্রায়ণ কর 1

আমার পূর্বন দিকে চক্রধারী বিষ্ণু, দক্ষিণে গদাধারী হার, পশ্চিমে শাঙ্গধির বিষ্ণু, উত্তরাদকে বড়গধারী ভিষ্ণু, বিকোণভাগে হুবীকেশ, ঐ কো-শের ছিদ্রভাগে জনার্জন ও মদীয় স্থানভাগে জোড় রূপী হার এবং অন্ধরভাগে নরসিংহ অবস্থিত রহিয়াছেন। ক্ষুরধার হুনির্মাল এই সদর্শন চক্র

প্রেত্তবর্গ ও নিশাচরনিকরের নিধনার্থ নিয়ভই পবিভ্রমণ করিতোছ। উহার অংশুমালা অভান্ত তুর্নিরীক্য। এই গদা সহস্রাংশু সমান দীপ্তিশালী ও প্রজ্বলিত অনলতুল্য ঔজ্বলংধারিণী; রাক্ষম ভূত পিশাচ ও ডাকিনীগণের নিনাশসাধন করে। বাজদেবের এই শাস্থ্যুর আম্ফালন তিহাক মনুযা, কুলাও (১) প্রেতাদি মদীধ রিপু-গণকে নিঃশেষে নিংত করিয়া থাকে। গরুড় যেমন প্রসাগণকে নিহত করে, সেইরূপ সমুজ্জ্ব জ্যোৎসাজাল নির্ভিধার এই থড়া আমার অমিতা-গণকৈ সদাই বিনাশ করুক ৷ কুস্মাপ্তগণ, যুক্ষগণ, দৈত্যগণ, নিশাচরগণ, প্রেভগণ, বিনাধকগণ (১) ক্রে মনুষ্পেণ, জন্তকগণ (:) থগসণ, দিংহাদি পণ, যেকেহ জগুরতর রহিয়াছে, জীক্তকের শশ্বারৰে প্রকম্পিত হইয়া, সকলেই সৌমভোব [া] ধারণ করুক। যেকেহ আমার চিত্রতিহারক বা স্মৃতিহারক বা তজোবলবীর্যহোরক বা ছায়া-বিমাশক অথবা উপভোগহারক ও লক্ষণনাশক কুলাওগণ লাচে, তাধারা সকলেই বিষ্ণুচক্রেরবে আহত হইয়া বিনাশপ্রাপ্ত হউক। দেবদেব বাত-(मरनत छन्श्रिदीर्छरन जामात दुक्तित श्राका, মনের স্বাস্থ্য সম্পাদন হউক।

আমার পৃষ্ঠে ও পুরোভাগে, দক্ষিণে উত্তর, ও কোণবিভাগে জনার্দন হরি অন্তিতি করুন। সেই প্রমারাধ্য, অচ্যুত, ঈশান, জনার্দনকে প্রণিপাত করিয়া কেহই অন্যাদ প্রাপ্ত হন না। ব্রেক্ষপদার্থ যেক্স প্রমোহসুফ, হরিও দেইরুপ

১৯) কুষাও ,ঞ্জলিব্য — শিবেরণণ ,দর্ভা ব্রণের আগ ভুক্ত বিহেশ্য।

⁽⁻⁾शास्त्रम् ६ देवसन्त्र नामक विनासक श्रान्तिकत्रः

[্]লা স্বাস্থ্যপূৰ্ণ-প্ৰাক্ষণ বিলেশ ।

পরমপ্রার্থ ; সেই কেশব জগতের স্বরূপ। সেই সভ্যহেতুই অচ্যুতনামকীর্তনে আমার ত্রিবিধ তাপ (১) বিনাশিত হউক।

> ইত্যাথেয়ে আদিমহাপুরাণে বিফুপঞ্জর নামক অশীতাধিক্ত্মিত্তম অধার।

একাশীত্যধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

বেদশাথাদি কীর্তন।

পুদ্ধর কহিলেন, মন্ত্র সকল সকলেনই অমুপ্রাহক ও চতুবর্গ প্রদায়ক (২) ঋক্, ভাথর্ব্ব, সাম,
বজুং চারিবেদ, ইহার। লক্ষ্ণংখ্যায় বিভক্ত। ভেদ
এই যে প্রথম সাজ্যায়ন, দ্বিতীয় আশ্বলায়ন, মন্ত্র
সহস্ত্র প্রাক্ষণ বিসহস্র বৈপায়নাদি মহর্ষিগণ, সপ্রমাণ করিয়াছেন যে, ঋক্বেদের মন্ত্র একোন
বিসহস্ত্র হজুবেদের প্রাক্ষণ দশশত,শাখা ষড়শীতি।
কাণু মাধ্যন্দিনী, কঠা, মাধ্যকঠী, মৈপ্রায়নী, শজ্যা
তৈতিরীয়া, বৈশম্পার্যনিকা, ইত্যাদি শাখাসমূহ
বজুবেদের অন্তবভী। সামবেদ, কৌথুমী, আ্থর্কান
নায়ণী গানসমূহ ও আরণ্যক ভেদে চারি প্রকার।
উক্থা ও উহচতুর্থ নামে সামবেদের প্রক্ষাণ ঘটক
সন্ত্র নয়হাজার চারিশত, সামবেদের মান পঞ্চ
বিংশতি প্রকার।

অথব্ববৈদে, স্থমস্ক, আজলি, শোকাযনি,
নীনক, পিপ্লাদ মঞ্জুকেশাদি শাখা ও ঘট্
সহস্ৰাধিক অযুত মন্ত্ৰ।উপনিষৎ একশত। ব্যাস
কৰি কৰি কৰি কৰি ভিন্ন আই ভিন্ন শাখাসকল ইতিহাস

ও পুরাণ বিষ্ণুষরূপ। সূত লোমহর্ষণ ব্যাদদেব হইতে পুরাণাদি প্রাপ্ত হইমা অমতি অগ্নিবর্কাঃ মিত্রয়ঃ শিংশপায়ন কুতত্রত দাবর্ণি এই ছয়শিষ্যকে বিতরণ করেন। শিংশপায়ন।দি মুনিগণ পুরাণ সমূহের সংহিতাও হরিবিদ্যারূপি ভ্রক্ষাদি অফী-দশ পুরাণ প্রথম করিয়াছেন। আংগ্রেয় সহা-পুরাণে সপ্রপঞ্জ নিষ্পাপঞ্জ (১) মূর্ত্তরূপী ও অমূর্ত্ত রপধারী বিদ্যারপ স্বযংহরি সংস্থিত আছেন, তাঁহাকে অবগতি ক'রয়া অচ্চনা ও স্তুতি কবিলে ভোগমোক দকলই প্রাপ্ত হওল যায়। 'বঞ্জিবুং ও প্রভবিষ্ণু (১) অগ্নি সূর্য্যাদিকপধ্নী প্রথম-গতি বিষ্ণু দেবাদিগণের ম্থক্রপ অধিলে অধস্থিত আছেন। বেদ ও প্ৰাণে মজ্জ-মূর্ত্তিরূপে বর্ণিত আছেন। আগ্রেয়াখ্য মহাপুরাণ, বিষ্ণর মহন্তর স্বরূপ। আংগ্রেয় মহাপুরাণের কর্তা। ও শ্রোতা জনার্দন সেইছেতু এইপুরাণ মহৎ ও সর্বদেবম্য ইহা পাঠকগণের ও শ্রোভনর্গের পুণ্যপ্রদ সর্ববিদ্যাম্য ও সর্বজ্ঞান্ময় সর্বাস্থ হরি-यक्तभ । আয়ের পুরাণ বিদ্যার্থিগণের বিদ্যাপ্রদ আর্থ গণের জীদও ধনদ, রাজ্যার্থিগণের রাজ্যপ্রদ, থার্মার্থি গণের ধার্মদ, স্বর্গার্থি দিগের পুক্রার্থি দিগের পুক্রদ গোকামিগণের গোদ. গ্রামকামিগণের গ্রামদ, কামাকাভিক কাম্দ ও স্প্রপ্রকার সৌভাগ্যপ্রদ, জয়ভিলাষি দিগের বিজয়প্রদ, গুণকীর্ত্তিকামিসমূহের গুণপ্রদ ও কীর্তিদ, সর্ব্বাভিলাষি গণের সর্বন্দ ও মুক্তি কামিদিশের মৃক্তিপ্রদ পাপকারিগণের বিনাশী সন্দেহ নাই :

[্]স আধ্যায়ক, আধিদৈৰিক ও আধি ভৌতিক।

⁽२) ধক্ষ, অর্থ, কাম, মোক্ষ---চত্বর্গ। ধক্ষ, অর্থ, কাম ত্রিবর্গ।

⁽১) সহাপঞ্--সভাগর্ভ্জ নিভাপঞ্, নিভাপ্রসং।

⁽২) বিষ্ণু--সকলে প্রবেশনশীল, জিম্--সকলে জয়শীল, অভনিফুসন্তুর প্রভাবশালী।

দ্যশীভাধিকদিশতত্য অধ্যায়।

श्वागंतिमान गाराशा।

পুक्त कहित्नम, भ्वानात्व छशरान बका. বে পঞ্জিংশতি মহত্র সংখ্যক শোক মহামুনি ম্বাচিকে কহিয়াছিলেন স্বগারী মানব দেই ভ্ৰান্ধ পৰাণ লিখিয়া বৈশাৰ্থা পৰ্ণিমাতে জলদেও খোগে মস্পূদান কৰিবে। রাদণ সহত্র প্লোকস্মিত প্রপুরণ জৈয় ছিমানে দেলুযোগে দ'নব বিলে सर्गला इस । जनवान् अदासव भामि दराह कहा-রুনান্ত অধিকার কবি। ত্রায়াবিংশতি সহস্র क्षातक रा तेवाच श्वांच वर्गन कवियाहिन. खार, आगण्याण ८००**५५ (गर्ग मण्यासी** কবিলো শিশ্ব প্রাধিংল। চত্তদ্রশ সমস্র পোকা-ি মিতি সম ৰ বিধানিত্য অভিশয় প্ৰিমপদাৰ্থ, টহাতে ভাষা বাম ধেততপ গ্ৰহামে বিবিধ ধক্ম কাতন কৰি।ছেন, উহ বিধিষা প্ৰাৰণমাদে ওড়ংশে ে ৭৭ একিএকে প্রদানকরিবে। যাহাতে গাযভালে খনিব।ব কৰিয়া বিস্তৰ ধন্ম কাৰ্ডিচ এবং নাব্যত বল্ল ও রঞাপ্রব বধরভাত বণিত इरेशा ७, रमरे अभेामन मध्य त्याक विनिष्ठे ভাগবত মহাপ্ৰাণ ভাদুমানে স্বৰ্ণ নিৰ্মিত সিংহ সহযোগে সম্পূলান কবিলে বিশ্বলোক লাভহয। মহর্ষি নাবদ যাহাতে বুহুংবপ্লাশ্রত বিবিধ্ধশ্ম মংকার্ত্রন কান্যাভ্য, পঞ্চিন শতি সংশ্র গ্লোকা জুক সেই নার্ণীয় পুঝা অধিন্যাসে ধেকুব স্হিত প্রদান করিলে, আত্যন্তিকী সিদ্ধিলাভ হয়। ছে মাক্তিয়াগ্য পুরাণে শক্তগণের ধর্মাধর্ম ় বিষয়ের বিচাবণা বিরুত হইযাছে, দেই নবসহস্র ল্লোক বিশিষ্ট মহাপুৰাণ কাৰ্ত্তিক পূৰ্ণিমায় প্ৰদান । কবিলে স্বৰ্গলাভ হইযা থাকে। অগ্লিদেব ষা**হা**,

বশিষ্ঠ সন্নিবানে কীৰ্ত্তন করেন. বোধপ্রদ, দ্বাদশ সহস্র শ্লোক বিশিষ্ট দেই হাটোড নহাপুৰাৰ লিখিব। যাগণীৰ্য**াদে প্ৰদান** কবিলে সক্ষেত্ৰ লভিহ্য সন্দেহ নাই। মহাদেব, মতুব নি চ বাহা কীর্ত্তন করিয়াছেন, সেই সুর্যা-সঞ্জাত ভবিষ্য পুৰাণ পৌৰমানে গুড়াদির সহিত जान्नागरक धानांन कविरव। महिमानव मोवर्नि, महर्षि नावरमव निक्षे याहा कीर्डन कवियार छन्। অফাদশ সহস্র লোকবিশিষ্ট বথভাবের রুভাত্ত ম্মারিত ভ্রহ্মবৈবর্ত পুরাণ মাঘাপুর্ণিমায প্রদান ক বিলে প্রকালোক লাভহয়। ভগবান ভবানীপ্তি ব্ৰন্দাকে সনিকাষৰ মৰ্বন্থ হইষা, আগ্ৰেষ কলে বরাহচবিত ও বিবিধ ধন্ম পরিকীর্ত্তন কবি যাছেন, একাদশ সহস্ৰ শ্লোক বিশিষ্ট সেই তিল্প-পুৰাণ ফান্তনী পূৰ্ণিমায তিলংখেত্ব যোগে বিপ্ৰদাৎ কবিনে শিবলোক প্রাপ্ত হয় মন্দেহ নাই। বিক্ কর্তৃক উদীরিত ভূমিতলে মানৰ প্রবৃত্তির একুদর্বে ব্বাহ্চিতি বিশিষ্ট চতুদ্দশ সহস্ৰ প্লোক সুমন্ত্ৰিত ববাহপুরাণ, চৈত্রী প্রণিমাস স্বর্ণনিক্ষিত গুরুত সংহত প্রদান কবিলে বিষ্ণুপদ প্রাপ্তহয়। তৎ-পুরুষ বল্ল অধিকাব করিয়া যাহাতে বিবিধ ধর্ম কীৰ্ত্তিত হইয়া ছা ভগবান্ স্বন্দক্থিত চতুবশীতি সহস্র শ্লোক সেই ক্ষন্মামক মহাপরাণ বিশিষ্ট বিপ্রদাৎ কবিলে দিদ্ধি তাহাব অদূরণর্ত্তিনী হয়। সাহাতে ধর্ম অর্থাদিব বিবরণ এবং ধৌ**না**-ক্লাশ্রযে হরিকণা পরিকার্তিত হুইরাছে, দশ-দহস্ৰ শ্লোক সমন্বিত দেই বামনপুরাণ শরৎ বা বিহুৰকালে সম্পূলান কবিবে। রসাতলে, ইন্দ্রন্তর প্রাস্থ্য কুর্মোক্ত অউসহস্র শ্লোকবিশিষ্ট কুর্মা পুরাণ, হেমনির্মিত কৃর্ম সহিত্ত প্রদান করিলে हतिलाक लांडकतिया थारक। कल्लानिकारन

মৎশ্ররণী ভগবান মহাব নিকট যাহা কীর্ত্তন করিয়াছেন, ত্রয়োদশ সহত্র শ্লোকবিশিউ মৎস্য-পুবাণ বিবুবকালে হেমমংস্যা সহিত সম্পদান করিবে। তাক কল্পে ভগবান বিফু মাহাতে একাত হইতে গরুড়ের উৎপত্তি বিবরণ কীর্ত্তন করি য়াছেন, অউণহস্ৰ শ্লোকাত্মক সেই গরুড় পুরাণ, হেমহ স সংগ্রু করিয়া সম্প্রদান করিলে সদগতি লাভ হয়। ভগণান্ ব্ল্লা, যাহাতে ব্ল্লাণ্ড মওলের মহাজ্য বর্ণন করিয়াছেন, ছাদশদহত্র লোকবিশিক সেই ব্রহাও পুরাণ, দিজগণকে অর্পণ করিবে। ভারতের পর্বসমাপ্তি হইলে. বস্ত্রগঞাদিদাবা প্রথমে বাচকেব পূজাকরিয়া পায়স ন্ন প্রদান পূর্বক দ্বিজগণের ভোজন সম্পাদন करिरत । भटका, भटका (भा, जुमि, अभ, छन्। मि প্রদান ববিং হো। ভারত সমাপ্ত হইলে, বিপ্র গণকে, এব সোমাধন প্ৰিয়ত সংহতা পুস্তক সকলকে শুদ্ধ ও শোভনপ্রদেশে সংখ্যাপিত করিষ। পুজাকবিবে। কুসমাদি দ্বাবা নবনাবাসণের ও অতাতা পুস্তক দকলেব স্থাবিধি অন্তনা করিয়া, , দিলগণৰে গো, অন, ভূমিদান প্ৰথক তাজগ ভোজন সম্পাদন পুৰুক ক্ষমা প্ৰাৰ্থনা কৰিয়া ভারত সমাপনে, মহাদান ও বহুবিধ রহুদান কর্ত্তব্য। ভূইমান তিনমান এবং মানে মানে দান করিবে। অযনের আদিতে আবকেব প্রথমদান ্ষর্ভুল্য, সকল শ্রোভুগণ, স্থাবকের প্রচা করিবেন, ইতিহাস প্রাণাণি পুক্চ সকল প্রদান করিয়া া এব পাঠক আৰক ভিজগণেৰ পূজা কবিশা মানৰ-াণ আচ্হ, আ রাগ্য,স্থগ ও মোক্ষলাভে সমর্থ হন, गान्नहे नहि।

> ইত্যমেরে মহাপ্রাণে পুণাণাদি দানমহ আয়ে বীর্ত্তন নামৰ মানী ভাবিক্ষিণত হম অধ্যাম।

ত্রশীত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

সূর্যাবংশ কার্ত্ন।

অগ্লিবলিনেন, আমি তোমার নিকট সুর্য্য-वश्म, हट्यवःम ও রাজগণের বংশ বর্ণন করিব। ব্ৰহ্মা হরির নাভিজাত প্রজ্ঞ হটতে জন্মগ্রহণ করেন। ত্রহ্মার পূত্র মরীচি, মরীচির পুত্র কশ্যপ, কণ্যপ হহতে বিবস্থান্ (১) জন্মগ্রহণ করেন। মংজ্ঞা, রাজ্ঞীও প্রভাএই তিন জন বিবসানের পত্নী: তক্ষধ্যে বাজী রৈবতের তন্য়া; তিনি রেবস্থ নামে পুত্র এবং প্রভা প্রভাত নামে পুত্র প্রাস্ব ক্রেন। বিশ্বক্লার তদ্যা সংজ্ঞানত নামে পুত্র এবং ব্যাও ব্যুকা কাফে ব্যুল সভাক প্রাপ্র কবেন। (২ ছায়া সাম্পিলুনানক পুত্র এবং সংজ্ঞা বৈশস্তমকুন'মক পুত্র প্রায় ক ব্যক্তির : স জ্ঞাপতে শণি, ছপতি, দিটি ও ভশিন্দমার-ङ्याभवन करान्। (य अहमकृत वेश हु, माध्यम्, রট, শল্পতি, মধ্যত ও আগতে নামে প্রধান প্রধান পুরাণ দ্যান্ত্র বাবেন। নাভাগ ছইতে , ইটেত্য ও সভ্য ব্রাধ পুষ্ঠ আদি মহ্বেল সভান গণ জন্ম এহণ করিবা অযোধ্যায় রাজাদ করিয়া ছিলেন। মনুর ইলানামে কলা ছিলেন। তিনি রু ধণ উর্দে পুরুরুবা পুত্র প্রদব করিলেন। সেই ইলা পুরুরবাকে প্রদাব করিবা গুল্লুয়ে রা**ভায়** मञ्ज इरेश्नन । छश्रास्त्रत छेत्रम छेष्यन, भ्रय छ বিনভাগ নামে তিন পুত্র **নুপতি হ**ইয়।ছিলেন। উৎকল উৎকলে, বিমতাশ্ব দমস্ত পশ্চিমদিক এবং রাজবর্ষ্য গ্য গ্যাপুর্ণতে রাজহ করিয়া-हिरलग ।

⁽১) বিৰম্বান্—হুৰ্যা।

⁽२) यम- (अञ्चलक , समूना, १ द्व सनीक शिनी इस ।

পুরাকালে

হুছান্ন বাশর্ডের খাদেশে প্রতিষ্ঠাননামক (১) পুরী প্রাপ্ত হন। গুরুল দেই রাজ্য প্রাপ্ত হইয়া তাহা পুঙ্গরবাকে প্রদান করিলেন। নরিষ্যন্তের পুত্র শকগণ। নাখাগের পুত্র বৈষ্ণব। ধুট হইতে অম্বরীয় ; তিনি উচ্স প্রজাপালন করিয়াছিলেন। ঐ ধুফীকেতু হইতে ধার্ক কিকুল উৎপন্ন হয়। শর্মা-তির পুত্র হুকল্ল ও আনর্ভ, মানর্ভ হইতে বৈরোহী নামে নুপতি জন্মগ্রহণ করেন। তিনি আনর্ত্তদেশে রাজত্ব করেন; কুশস্থলী ভাঁহার রাজধানী ছিল 🕈 রেশের পুত্র রৈবত; পুত্রশতের মধ্যে ধার্মিক ও জ্যেষ্ঠ এবং কক্ষানামে বিখ্যাত। তিনি কুশস্থলী রাজ্য প্রাপ্ত হইষা বোতীনামিকা কন্যার সহিত ব্ৰহ্মার নিক্ট গান্ধকবিধি প্রাবগান্তর দেবতা-দিগেৰ মহাউধরপে, মঠালোকে শত যুগ অভি-বাহিত কবিয়া যাদবগণে পৰিবৃতা স্থকীয়া বছ-ছাব। মনে চেবা ছাববতী পুর্বাতে মছর আগমন কবিলেন। ঐ পুনা বাস্তদেশদি ভোজ বুফি সন্ধ্ৰণণে দেশকত ছিল। বেৰতীকে অনিদিতা জানিয়া বলদেশকে মুম্পুদান করিলেন। স্নত্র স্থ্যেক্ত শিখরে তপশ্চরণ করিয়া বিফ্লোক প্রাপ্ত হইলেন। নাভাগের ছুই পুতা, বৈশ্য হইয়াও ভাষাণয় লাভ করিয়াছিলেন। করাষের কার্য্রমণণ ক্ষতিয় ও রণহুর্মদ ছিলেন।

মকুর পৃত্রগণের মধ্যে ইক্ষাক্র পৃত্র বিকৃক্ষি দোরাজয় প্রাপ্ত হপ্ত হন। বিকৃক্ষির পুত্র ককু ৎস্থ, তৎপুত্র হ্যোধন তাঁহারপুত্র পৃথু, পৃথুব, বিশ্বগশ্বনামে পুত্র উৎপদহয়। বিশ্বগণের পুত্র আরুঃ; তৎপুত্র ম্বনাধ, তাহার পুত্র আবিত্ত, আবিত্তিকা নালীনগরী তাহাব রাজধানী ছিল।

ধুদ্মুমার নৃপতি তিনজন, দৃঢ়াখ, দণ্ড ও কপিল। দৃঢ়াখ হইতে হ্যাখ ও প্রমোদক। হ্যাখ হইতে নিক্স হইতে সংহতাধ। অকুশাধ ও রণাধ, সংহতাখের পুত্রেষয়। রণাখের পুত্র যুবনা**খ হইতে** মালাতাও মুকুল পুত্রযুগল জম এছণ করেন। পুরুকুৎমের উরদে নর্মদা গর্ভে হৃদত্তা ও সম্ভূত নাসে তনয়দ্বয় উৎপন্ন হয়। সম্ভূতের পুত্র হংসা, তংপুত্র ত্রিধয়া, ত্রিধয়ার পুত্র তরুণ, তরুণের পুত্র সত্যন্ত, ভাঁহারপুত্র সভ্যরণ, সত্যরথের পুত্র হরিশ্চন্দ, হরিশ্চন্দ্র ইইতে রোহিতাম 💆 🦫 পিন হন। ভাহার পুত্র স্বক, সুক হইতে গাভ্,বাভ্র পুত্র সণর। দগর প্রিয়া প্রভা, দষ্টিদহন্র হুতের জননী ৷ উর্ব্যেয়নি সন্তুক্ত হইয়া বরপ্রদান করিলে ভাক্তমতী সগরের উর্যে স্থেমগো নামে পুত্র এমব করেন। বহুতর সগরপুত্র পুথিনীখনন চরিতে করিতে বিফুরপৌ মুনিকর্তৃক ৮५ ইইয়াছিলেন। অসমপ্রার পত্র ঋতমান খংভমানের পুত্র দিলাপ, দিলাপের পূত্র ভগীরথ, তিনিই মহীতলে গল। আনায়ন কৰেন। ভাগীরথের পুত্র নাভাগ নাভাগ হটতে অস্ত্রীষ উৎপন্ন হয়, অম্বরীষের পুত্র সিদ্দ্বীপ,সিন্দুবীপের পুত্র শ্রুতায়্, শ্রুতায**়র** পুত্র ঋতুপর্ণ, হাঁহার পুত্র কল্মামপাদ, কল্মামপাদের পুত্র দকাকিমা, ভাগার পুত্র অনরণা, অনরণাের পুজ নিল, নিল হইতে অন্যিত্র, ভাগার পু**জ** রঘু ; রঘুরপ্ত দিলীপ,দিলাপের পুত্র এঞ্চ, অজ হইতে িঘবাত্ কাল, তংগ্র অজপাল, **অজপা**লের পুত্র দশরথ, দশরে থের নারায়ণাত্মক চারিপত্র উৎপন্ন হয়; রাম ভাঁহাদিগের অগ্রজ তিনি রাজ-শাধিপতি রাব থের প্রাণ্দংখার করিয়া অ্যোধায়

আবডের পুত্র হৃহদখ, তৎপুত্র কুবলাখ তিনি

धूरकतनारम धूक्यातक व्याखरन।

⁽১) প্রতিষ্ঠানপুরী-একণে বিঠোর নামে বিখ্যাত।

রাজত্ব করেন। বাল্টাকি নারদের নিদেশক্রমে তাঁহারই চরিত অবলম্বন করিয়া পুলাময়ী রামায়ণ কথা প্রলয়ণ করিয়াছেন। সাঁতারগর্ভের ভ্রমান্তর কুশলব নামক কুলার্গন তন্যযুগল উৎপদ্ধ হয়। কুশেরপুত্র অতিথি, নিমধ অতিথির পুত্র, নিধধের পুত্র নল, নল হইতে নভ, নভের পুত্র পুত্ররীক, স্বধ্যা পুত্রীকের পুত্র, সংখ্যার পুত্র দেবানীক, তৎপুত্র হহীনার, সহপ্রায় তাহার তন্য, তাহা হইতে চল্রালোক জন্মগ্রহণ করেন। চল্রালোকের পুত্র তারাপীড় তারাপীড় হইতে চল্রপর্বত জন্মগ্রহণ করেন, তাঁহার পুত্র ভার্বথ, তাহার পুত্র প্রতান, তাহার পুত্র প্রবাণ ইক্লাক্র বাশোৎপন্ন। তাহারাই মূর্য্যের বাংশর হইয়া ত্রেলোকের বিখ্যাত হইয়াছেন।

হত। গেল্ড। দিনতাপুণাৰ অধ্যবংশকী জননামক এশতে বিক্তিশ্রহণন অধ্যায়।

চতুরশীত্যধিকদিশতত্য অধ্যায়।

(मार्व म की ईस।

অগ্নি কহিলেন, পঠিত হইলে যাহা পাপ-বিনাশ করে; সেই সোনবংশের বিবরণ বর্ণন করিব।

বিফুর নাভিপদ্ম হইতে অজ্যোনি ও,কা জন্মগ্রহণ করেন। ক্রকারপুত্র, অতি, সোম, হতি হইতে জন্ম গ্রহণ করিষা, রাজসূয় মজ্জ সংশ্যান্তে ত্রৈলোক্যমণ্ডল দক্ষিণারূপে প্রদান কিষ্যাভিলেন। অবভূগ অর্থাৎ যজ্জান সমাপ্ত ইত্যে বহুতর নরদেবী কামশায়কে অভিতপ্তাঙ্গী ও ভাষার রূপদর্শনা কাজ্ফিনী হইয়া সোমর দেশা করিয়াভিলেন। লক্ষ্মী, নারায়ণে, সিমী-

বালী কৰ্দমে, ছ্যুতি বিভাৰস্থকে, পুষ্টি, অব্যয় বিধাতায়, প্রভা, প্রভাকরে, কুহু, হ্বিগানে, কীৰ্ত্তি, ভৰ্তাঙ্গয়ন্তে, বজ, মানীচ কণ্যপে, ধুতি নিজপতি ৰন্দীকে পরিহার করিয়া তংকালে শোমকেই ভলনা করিয়াছিলেন। দোমও অকীয়া কামিনীর ভায়ে ভাঁহাদের দহিত রমণ করিতে লাগিলেন। সেই কামিনী নিকরের ভর্তগণ, এইরপে অপচার প্রাপ্ত ছইয়া ও শাপ শস্ত্রদি 'দারা দোমের কোনও অপকার কবিতে পারি লেন না। সোম, তপোবলে সপ্তলোৱের জ্বি-নাথর প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। তাঁহার মতি দুর্গয়ে আহত হইয়া বিনয় হইতে পরিভ্রফী হুইল। সোম রহস্পতির অবমাননা করিয়া, তাহার আক্র নালী যশস্থিনী ভাষ্যাকে বলপুক্ষে হুরণ করি লেন। তদনভর, তলপ্রক্ষে তার্ধাস্থ্নামে বিখাটি দেবদানৰ দিগের লোকখণ্টর মহা যুদ্ধ সমুপুদ্ধিত হইল। ভ্ৰহ্মা উ×নালে নিবারণ । করিয়া রহস্পতিকে তারা সম্পণ করিলেন। সরওক, ভারাকে গর্ভাতী দেখিয়া কহিলেন, শীঘ্ট গর্ভগ্রাগ কর। গর্ভগুক্ত হুট্রামাজ কহিল, আমি সোম সম্ভব অধাং দোম হইতে উৎপন্ন হইবাছি। এইরূপে দোম হইতে তারা-গর্ভে ব্রধের উৎপত্তি হয়। বু ধর পুত্র পুরুরখাঃ ; অপ্ররা উর্বাণী অর্গভূমি পরিহার করিয়া পুর-রণাকে বরণ করিলেন। নৃপতি পুরুরবা ভাঁছার সহিত বিহার ও বিবিধ হুখস:স্তাপে উন্মৃষ্টি বং দর অতিবাহিত করিলেন। প্রথমে তাঁহার গর্ভে এক অগ্নি উৎপন্ন হইলেন, তিনিই ত্রেতারুগের প্রবর্ত্তক। পুরুরনা যোগাভ্যাদে নিয়ত নিরত थाकिया शक्षक्तां व्याख रहेतन। उन्निनी. মায়ুঃ, দুঢ়ায়ুঃ, অখায়ুঃ, ধনায়ুঃ দুভিমান্, বস্তু-

দিবিজাত, শতাযুঃ এই সকল পুত্রগণকে প্রসব করিলেন। আয়ুব পুত্র নহুষ, বৃদ্ধশর্মা, রিজা, দর্ভ, বিপাপ্যা। রজির শত পুত্র উৎপন্ন হইল ; তন্মধ্যে পাঁচটা পুত্রই প্রধান। রজির বংশধরগণ রাজেঘনামে বিখ্যাত। রজি স্থরগণকর্তৃক ষাচিত হইয়া দেবা স্তবসংগ্রামে দৈত্যগণকে নিহত করিয়া বিষ্ণুর নিকট বব প্রাপ্ত হন। ইন্দ্র, রজির নিকট আগমন করিলে, তিনি তাহাকে পুত্রহ ও স্থতরাং রাজহ প্রদানপ্রকিক স্বর্গামী হইলেন। রজির পুত্রগণ ইন্দ্রেব সেই বাজ্য বল পূর্বাক হরণ করিল। তদর্শনে স্থরগ্রহ তুশ্বনায্মান হইলেন। তিনি গৃহশান্তিপ্রভৃতি বিধি দ্বারা রজিতন্যগণে মোহিত করিয়া সেই বাজ্য ইন্দকে পুন্প্রদান কবিলেন। বিজিব পুত্র গণ, তদবধি নিজধন্মে। অনুগমন করিল।

নহাযেব যতি, যথাতি, উত্তম, উদ্বৰ্গ পঞ্চন, শর্মাতি ও মেঘপালক এই দপ্ত পুত্র উৎপন্ন হয়।
যতি, কুমারকালেই বিক্তুকে ধ্যান করিয়া হবিলাভ করিলেন। দেই কালে শুক্রকন্যা দেবমানী ও র্ষপর্বজা শর্মিষ্ঠা যয়তির পত্নী হইয়াছিলেন। দেবমানী, যত্ন ও তুর্বাহ্ম এই তুই পুত্র এবং বার্ষণার্বিশী শর্মিষ্ঠা ভাহ্ম, অনু ও পুক এই তিন পুত্র প্রদাব কবিয়াছিলেন। য্যাতির এই পঞ্জপুত্র-মধ্যে যত্ন ও পুক বংশবর্দ্ধন করেন।

ইত্যানমে আদিমহাপুৰালে সোমৰ শকীন্তননামক চতুৰশী ভাৰিক হিশত তম অধ্যায়।

পঞ্চাশীত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

যদ্রবংশ কীর্ত্তন।

অধি কহিলেন, যতুর পঞ্চ পুত্র; দহস্রজিৎ তাহাদের জ্যেষ্ঠ। তাঁহাদের নাম নীকাঞ্জিক, রযু,

ক্ৰোষ্টু, শতজিৎ ও দহস্ৰজিৎ। শভজিৎ হইতে হৈহয, রেণুহয় ও হয় নামে তিন পুত্র উৎপন্ধ হয়। হৈহযেৰ পুত্ৰ ধৰ্মনেত্ৰ, ধৰ্মনেত্ৰের সংহন, সংহনের মহিমা, মহিগার ভদ্রদেন পুত্র উৎপন্ন হয় : ভদ্র-रमन इरेट छर्भम, छर्भम इरेट कनक, कनक হইতে কৃতণীৰ্য্য, কুভাগি, করবার ও কুভোজা এই চারিজন উৎপন্ন হয়। কুত্রবীর্য্য হইতে ছপ্ত-দিদ্ধ কার্ভবীর্যার্জ্জন জন্ম লাভ করেন। অর্জ্জ্বন মহতা তপদ্যাবলে দপ্তথীপের মহীশ্বর, দহস্রবাহ্ ও অরিকর্ত্তক রণে অজেয় হইয়াছিলেন। অধর্ম পণে পদার্পণ করিলে বিষ্ণুহক্তে তাঁহার মৃত্যু নিশ্চিত ছিল। সেইরপেই তাঁহার মৃত্যু সংখ টিত হয়। সেই নৃপতিশ্রেষ্ঠ অর্জুন দশ সহত্র যজের অমুষ্ঠান করিয়াছিলেন। রাজ্যে কোনও দ্রব্য হারাইলে অর্জুনের নামসারণে তাহা প্রাপ্ত হওষা যায়; স্থ্যা প্রতিদিন তাহাকে স্মরণ কবিলে রাজ্যন্থ কোনও দ্রুত হারায় না। মণ্ডলে কোনও ভূপাল, কি যজ্ঞ, কি দান, কি তপ্দ্যা, কি বিক্রম, কি বিদ্যা, কি বেদ কোন বিষয়ে অর্জ্জনের তুল্য হইতে পাবিবেন না। কার্ত্ত-বীৰ্গ্যেৰ পুত্ৰ এক শত, তন্মধ্যে পঞ্চন উৎকৃষ্ট ও প্রধান; সূরসেন, সূর, প্রটোক্ত কৃষ্ণ ও জয়বজ। জয়ধ্বজ অবস্তীনগরের মহামহাপতি ছিলেন। জয়-ধ্বৰ্জ হইতে তালজ্অ, তালজ্অ হইতে হুতগ্ৰ জন্মগ্রহণ করেন। হৈহ্যদিগের কুল পাঁচটী—যথা ভোজকুল, অবস্তীকুল, বীতিধোত্রকুল, স্বয়ংজাত-কুল ও শেভিকেয়কুল। বীতিহোত হইতে ঘনন্ত, অনন্ত হইতে ছুৰ্জন্ন উৎপন্ন হইয়া রাজ্য मांड करत्रम ।

যে ক্রোফ বংশে স্বয়ং হরি জন্মগ্রহণ করেন, দেই বংশের বিবরণ কীর্ত্তন করিতেছি,প্রবণ কর। ক্রেন্ট্ হইতে বুজিনীবান্ জন্লাভ করেন; র্জিনীবানের পূত্র স্বাহা; স্বাহাপুত্র রুষদেরু; চিত্ররথ তাহার তনয়। চিএরখের পুত্র শশবিন্দু; তিনি নারায়ণে নিরত থাকিয়া রাজচক্রণর্তিত্ব লাভ করিয়াছিলেন। শশবিন্দুর প্রভূতধন, ভূরিতেজাঃ, ধীথান্, রূপবান্ অধুত পুত্র উৎপন্ন হয় ; তন্মধ্যে পৃথুতাবাই প্রধান। পৃথুতাবার পুত্র হুযজ্ঞ, হুযজ্ঞের পুত্র উশনা, তিতিকু উমননের প্ত্র, তিতিকুতনয় মরুত, মরুতের পুত্র কম্বলবর্হিঃ; ভাঁহা হইতে পঞাশৎ রুক্সকবচ,তাহা হইতেই রুক্সেয়,পুথুরুক্স হবির্জ্যান্য, পাপত্ম, জ্যাম্য ; জ্যাম্য অত্যন্ত স্ত্রেণ হইলেন। জ্যামঘ হইতে দেবাগর্ভে বিদর্জ, বিদ-ভের পুত্র কৌশিক, লোমপাদ, ক্রথ; তমধ্যে লোমপাদ ভেষ্ঠিই লাভ করেন। লোমপাদের পুত্র ক্বতি , কৌশিকের পুত্র চিদি, তাঁহা হইতে চৈদ্য নৃপতিগণ উৎপন্ন হন। ক্রথ হইতে বিদর্ভনামক পুত্রগণ ও কৃত্তিনামে পুত্র উৎপন্ন হয়। কৃত্তি হই∢ত ধৃফ, ধৃফের পুত্র নিধৃতি, নিধৃতির পুত্র উদক ও বিদূর্থ। দশার্হের পুত্র ব্যোম, ব্যোম হৈতে ভীমৃত। বিকল জীমৃতের পুত্র, তৎপুত্র ভামরথ, ভীমরথ হইতে নবরথ; নবরথ হইতে দৃঢ়রথ, তংপুত্র শকুন্তি, শকুন্তির পুত্র করম্ভ, করম্ভ হইতে দেবলাত, তাঁহার পুত্র দেব-জামান্থ করেন। দেবরসের পুত্র পুরহ্ত, তাঁথার পুত্ৰ জন্তু; এই জন্ত গুণবান্ ও যাদবগণের রাজা; ভল্র পুত্রামত, নামত হইতে ভজমান, বুঞ্ অন্ধক ও দেধার্ধ এই চারিজন উৎপন্ন হন: এই চারিজনের বংশ অতন্ত বিজ্ঞ ও বিখ্যাত। ভজমানের পুত্র বাহা, রুফি, কুমি ও নিমি। **ए**शेर ७ জন্ম গ্রহণ করেন।

তাঁহার বিষয়ে মহীতলে শ্লোক সংগীত হয়। যথা---

"দূর হৈতে গুণ যথা করিকু আবণ।
নিকটে দেখিকু তাহা যথার্থ বচন॥
মানবগণের শ্রেষ্ঠ বক্র মহাশয়।
দেবার্ধ দেবসম নাহিক সংশয়॥"

কুহুর, ভদমান,শিনি,কম্বলবহিষ,এই চারি জন বক্লর পুত্র ; তাঁহার্য নিয়তই বাহুদেবের অনুগতা কুহুবের পুত্র ধূফু, ধূফুর তনয় ধূতি, ধূতির পুত্র কপোতরোমা, ভাঁহার পুত্র তিভিরি: তিভিরি পুত্র নর, ভাঁধার পুত্র চন্দমভুন্দুভি, তৎপুত্র পুন-কাহা, তাঁহার পুত্র আহ্কীস্থত আহক, স্থাহ্কের পুত্র দেবক; উগ্রসেন, দেববান, উপদেব এই তিনজন দেবকের পুত্র। উত্রসেনাদির ভগিনী সপ্তজন : এই দপ্তরম্বীই ব্লাদেবের প্রীহ্হগা, দেবকী, অফতদেবী, মিত্রদেবা, 🖺 দেবী, সতদেবা, স্কাপীনামে বিস্যাত হুগ্যা-উগ্লেমের পুত্র নয়জন, কংস,ভৎসালে-রই পুক্জে, ভামধ, জনামা, কাঃ, শহা, জডাসু, রাষ্ট্রপাল, যুদ্ধমৃষ্টি ও স্বমৃষ্টি; ইহারা মহাপাল-ছিলেন। ভজ্মানের পুজ, রথমুখ্য ও বিদুর্থ। রাজাধিদেব ও শূর বিদূরথের হৃতদ্য়। রাজা-ধিদেবের ছুইপুত্র শোণাধ ও খেতবাংন। শোণা খের, শনীও শত্রজিতাদি পঞ্পুজ; শনীরপুজ, প্রতিক্ষেত্র, পুত্র ভোজ, ভোজের পুত্র হৃদিক, হৃদিকের কৃতবৰ্মা, শতধন্ষা দেবাই ও ভীষণা'দ দশপুত্র উৎপন্নহয় ৷ দেবার্হ ইইতে কলবর্হি, ভাঁহারপুত্র অসমৌজাঃ, অসংমাজার স্থদং ট্র. স্থাস ও ধৃষ্ট এই তিন পুত্র উৎপন্ন হয়। ধুফের গান্ধারী ও মাদ্রীনামে চুই পত্নী : গান্ধারী-গর্ভে অমিত্র, ও মাদ্রীগর্ভে যুধান্তিৎ জন্মগ্রহণ

করেন। ধ্যেটর অনমিত্র শিনি,ও দেবমাচুষ নামে আর তিনপুত্র উৎপন্নহয়। খনমিত্রের পুত্র নিল্প, নিছের পুত্র প্রদেন ও সত্তাজিৎ। প্রদেন, সূর্ব্যের আবাধনা করিয়া স্মন্তকনামে মণিপ্রাপ্তহন। ঐ মণিদহ অরণো ভ্রমণ করিতে করিতে দিংহ-কর্ত্তক নিহতহন। সিংহ ঐ মণি গ্রহণকরে। জাম্বান সিংহকে নিহত কবিয়া ঐ মণিগ্ৰহণ করিল। হরি, জাম্বান্কে পরাজিত করিলেন খনতর ঐ মণি ও জাম্বতীকে পত্নীরূপে প্রাপ্ত হইয়া দাবকাপুৰী প্ৰত্যাগননানওর সত্ৰাজিতকে ঐ স্থিতান করিলেন। শত্ধনা, সভাজিতকে বিনাশ কবিষা মণিগ্ৰহণপূৰ্বক, কীৰ্ত্তিমানকৃষ্ণ, শতগ্ৰানে হনন কবিয়া ম'ণগ্ৰহণ পূৰ্বক, বলদে-वांपि यापव मुधाशत्वत मित्रधात्म व्यक्तात्र मिन সমর্পণ করিলেন। এইরূপে কুষ্ণের মিথ্যাকলঙ্ক अम्माद ह इहेल। (य गामत, कृर्यक्त **अहे ग**ि মাহৰণ বৃত্তি অবহিত হইয়া পাঠ ও শ্ৰেণ কাবন, তিনি শ্র্মগামীহন,সন্দেহ নাই। সত্রাজিত হলত ভঙ্গকাৰ নামেপুত্ৰ ও সভাভামানাত্ৰী ক্সা উৎপন হয়। সত্যভাষা শ্রীকৃষ্ণের প্রিয়মহিষী হদেন। অনমিত্রের পুত্রশিনি, শিনিরপুত্র সভ্যক, মত্যক হইতে সাত্যকি, সাত্যকির অপর নাম যুযুধান; যুযুধান হউতে ধুনি; ধুনিরপুতা যুগদার, সাহৰ ও স্থানিত যুধাজিত; ঋষভ ও ক্ষেমক যুধা-জিতের হুই পুত্র। ঋষভের পুত্র স্বফল্ক, স্বফল্কের পুত্র অক্র, অক্রের পুত্র স্থয়া। শূরহইতে বস্তদে-বাদি পুত্র উৎপন্ন হয়। কুন্তী বা পৃধা শূরদেনের-কলা, তিনি পাওুর প্রিয়া হইযাছিলেন। কুভীর গর্ভে যথাক্রমে ধর্ম হইতে যুধিষ্ঠির, বায়ু হইতে বুকোদর ইন্দ্র হটতে ধনপ্রয় জম্মগ্রহণ করেন। পাওর মাদ্রীনান্ধী পত্নীর গর্ভে অখিনী-

কুমার যুগলের ঔরসে নকুল সহদেব উৎপন্ন হয়।

এই পঞ্জনই ক্ষেত্রজন্ম হৈছু পাণ্ডুরাজের পুতা।

বহুদেব হইতে রোহিণীর গর্ভে বলরাম, সারণ

ও দুর্গম এইতিন পুত্র উংপন্ন হয়। ঐ বহুদেবের

উরসে দেবকীরগর্ভে প্রথমে হুদেন কীর্তিমান,
ভদ্রদেন,জারুখ্য বিফুলাদ,ভদ্রদেহ এই ছ্যজন জন্ম

গ্রহণ করিলে,কংস এই ষড়গর্ভ হনন করিল। তৎপরে বলরাম, কৃষ্ণ ও ভদ্রভাষিনী হুভদ্রা জন্মগ্রহণ করিলেন। জান্মবতীর জঠরে শ্রীক্ষের

ঔরসে চারুদেক্ষ ও শাষাদি পুত্রগণ জন্মগ্রহণ
করেন।

ইত্যাধ্রের আদিমহাপুরাণে বছবংশ কীর্ত্তন নামক পঞ্চাপীতাধিকবিশততম অধ্যায়।

বড়শীতাধিকশততম অধ্যায়।

দ্বাদশসং গ্রাম।

অগ্নিকহিলেন, কশ্যপথায়ি বহুদেব হইয়া, এবং যোষদ্ববা অদিতি দেবকী হইয়া জন্মগ্রহণ করেন। বহুদেবের উরদে দেবকী গর্ভে, ধর্মের সংরক্ষণ, অধর্মের নিরাকরণ, দেবতাদির পালন ও দৈত্যাদির নির্মাণন করিবার নিমিত, তপশ্চরণ সম্পন্ন জ্রাকৃষ্ণ জন্মগ্রহণ করিলেন। ক্রাক্রাণী, মত্যভামা, সভ্যা, নগ্নজ্ঞিতী ইহারা জ্রাহরির প্রেয়মী ছিলেন। সভ্যভামা জ্রাহরির প্রেয়মী ছিলেন। সভ্যভামা জ্রাহরির স্বেয়মী ছিলেন। সভ্যভামা জ্রাহরির স্বেয়মী জ্যাবারী, লক্ষণ মিত্রবিন্দা,কালিন্দী, দেবী জাম্ববতী, হুশীলা, মাদ্রী, কেশিল্যা, বিজয়া জয়া ইত্যাদি যোড়শসহত্র দেবী জ্রীকৃষ্ণের রমণী ছিলেন। প্রভাগ সভ্যভামার জঠরে, শাষাদি ভ্রমণণ জাম্বভীর উদরে উৎপন্ন হয়। অশাভি

শহস্র যাদবগণ কৃষ্ণ - কর্তৃক পরিরক্ষিতছিল। প্রভাগের বৈদ্ধীনাম্মী পরীগর্ভে সমরপ্রিয় অনিক্রদ্ধ উৎপন্ন হয়। বজ্রাদিমহাবলগণ বহুযাদব গণ অনিক্রদ্ধের পুত্র। তিন কোটি যাদবের ষষ্টিলক্ষ্ যাদবসেনা ছিল। মসুষ্যলোকে বে যে ব্যক্তিবাধক হইত, সেইহরি, তাহাদের বিনাশের নিমিত্ত ছিলেন। ভগবান্ নারায়ণ, কর্মের হুব্যবস্থা সাধ্বনের নিমিত্ত, মনুষ্য হইয়া অবনিতে অবতীর্ণ হইন্যাছিলেন।

ধনের নিষিত, দেবতা ও অফুরগণের মধ্যে দাদশ সংগ্রাম সংঘটিত হর। প্রথম নার্সিঃহরণ, বিতীয় বামনরণ, তৃতীয় বারাহ্**দংগ্রা**ফ, চতুর্থ অমৃত্যস্থন, পঞ্ম তারকাময় সংগ্রাম, ষষ্ঠ আজী-বক রণ সপ্তম ত্রিপুরঘাতনরণ, অফাম অহ্মকবধ, নবম বৃত্ৰদংছার, দশম ভিত, একাদশ হালাহাল, ৰাদশ ঘোর কোলাহলর।। পুরাকালে দেবপালক নারসিংহ হিরণ্যকশিপুর উরংছল খর নখর ছারা विनात् कतिया थाञ्चानत्क त्राङ्गा कतिया ছिल्लन, ইহাই নারসিংহরণ নামে কথিত হয়। কশ্যপ তন্য অদিতির গর্ভদম্ভ ত বামন, দেবাস্থ্যমন্দে অভ্যুত্থিত বলিরাজকে ছলন। করিয়া দেবরাজকে তৈলোক্যরাজ্য প্রদান ক্রিয়াছিলেন ইছাই বামন-রণনামক শ্বিতীয় সংগ্রাম। বারাহ্মূর্ট্টি ভগবান্ हित्रगा**क्राक रुगग क**तिया (प्रवास्तवर्गणकर्ज्क अणिः ফাত হইয়া পাতালভলনিম্মা ধ্রীতির উদ্ধার ক্রিয়া দেবতাগণকে পালন ক্রিয়াছিলেন, তা-হাই বারাহনামক তৃতীয় দংগ্রাম। মন্দরপর্বভিকে মহনদও ও বাস্থদেবকে নেত্রজ্জু (১) করিয়া স্থরা-তর ঘারা সমুদ্র সম্মন্থ্রঃগর দেবতাগণকে

অমূত প্রদান করিয়াছিলেন, তাহাই অমৃতমন্থন-নামক চতুর্থ দংগ্রাম। পুরাকালে ভগবান হিরণ্য-গর্ভ তারকময়সংগ্রামে ইন্দ্র-রহম্পতি দেব দানবকে নিৰারিত করিয়াছিলেন, ভাহাই ভারকাময় নামে পক্ষসংগ্রাসম্প্রাসন্ধ্র হইয়াছে; বিশ্বামিতা, বশিষ্ঠ, অত্রিও শুক্রাচার্য্য রণম্বলে রাগদ্বেষাদি দানক গণকে নিবারিত করিয়া স্তরগণকে পালন করিয়া ছিলেন, তাহাই আজীবক নামক ষ্ঠসংগ্ৰাম 🖒 পৃথীস্থরূপ রথে ব্রহ্মা সার্থি হইলে মহাদেবের আশ্রম্ভত হরি ত্রিপুর দশ্ধ করিয়া দৈত্য বিনাশ-পূৰ্বক দেবতাদিগকে রক্ষা করিয়াছিলেন; তাখাই ত্রিপুর্ঘাতন্নামক সপ্তম সংগ্রাম। অন্ধকাস্থর রুদ্র দেবকে নিপীডিত করিয়া গৌরীদেবীকে হরণ করি-বার ইচ্ছা করিলে, রেবতীর প্রতি অসুরাগবান্ ভগবান হরি অন্ধকাম্ররকে বধ করিয়াছিলেন; তাহাই অন্টম অন্ধকবধ। র্ত্রাহর দেবতাদিণের সহিত নৈরিতায় প্রবৃত্ত হইলে দেই দেবাজ্বরণে দলিলের ফেণময় হইয়া দেবঘাতক বুত্রেব প্রাণ বিনাশ করিয়া ভগবান বিষ্ণু,দেব ও ধর্মকে প্রতি-পালন করিয়াছিলেন, তাহাই বৃত্রণ হারনামক নবম সংগ্রাম। হরি শাল্পদি দানবগণকে ও পরশু-রাম তুন্ট ক্তিয়গণকে নিহত করিয়াছিলেন,ভাহাই দশ্ম সংগ্রাম। দেবদেব মধুসূদন হালাহালনামক বিষর্কণী দৈত্যকে মহেশার শরীর হুইতে নিরা-কুত করিয়া দেবগণ, রাজগণ, রাজপুজ্ঞগণ, মুনি-গণকে পালন করিয়াছিলেন, তাহাই কোলাহল নামক দাদশ দংগ্রাম। যাহা উক্ত হইল ও যাহা উক্ত না হইল, ভাহার সহিত ভগবান দেবদেব হরির এই অবভার।

> ইত্যাগ্রেরে আদিমহাপুরাণে বাদশসংগ্রাম নামক ষড়শীতাধিকবিশতম অধ্যায়।

⁽১) (नकरकः --- व्यक्तिर्गतकः ।

CALOUTTA

সপ্তাশীত্যধিকদিশততম অধ্যায়।

ৱাজবংশবর্ণন 🕽

অগ্নি কহিলেন, ভূবিহুর পুত্র বর্গ, তৎপুত্র গোভাকু; ভাঁহার পুত্র ত্রৈশানি, ত্রৈশানির পুত্র করক্ষম করক্ষম হুইতৈ মরুভ, মরুভের পুত্র তুখ্যস্ত, তংপুত্র বরুষ,বরুষের পুত্র গাভীর,গাভীর-তন্যু গান্ধার, গান্ধার ছইতে গান্ধার,কেরল,চোল, পা গ্রা, কোল, এই পঞ্জানপদ হয়; এই পঞ্-কুলজাত জনগণ মহাবল সম্পান। দ্ৰুহ ইইতে বক্রদেত্ব বক্রদেতু হইতে পুরোবল, ভাঁহা হইতে পান্ধাবগণ, গান্ধারগণকত্তক ধর্ম উৎপন্ন হয়। ধর্ম হুইতে ধুতু,ধুত হুইতে বিহুম,বিহুষ হুইতে প্রচেতাঃ জনাগ্রহণ করেন। প্রচেতার শত পুত্র; তথাংগ্য আন্দ্, সভানর, চাক্ষুষ ও পর্থেশুক ইহারাই প্রধান। সভানরের পত্র কালানল, সঞ্জয় কালা-নলের তন্য় ৷ পুরঞ্জয় সঞ্জাের আত্মজ ; পুরঞ্জয় পুত্র জনমেচয়; তৎপুত্র মহাণাল, তাঁহার পুত্র মহামনা, তাঁহার পুত্র ওশীনর, উশীনরের ঔরদে মূগার গর্ভে নৃগ উৎপত্তি লাভ করেন। নৃগ হইতে নারাগর্ভে নর ও কৃমি; কুমির দশাগর্ভে হুত্রত ও দৃশন্বতীর উদরে শিবি এই পুত্রের উৎপন্ন ২য়। পৃথুদৰ্ভ, বীরক, কৈন্তেয় ও ভদ্রক শিবির এই চারি পুত্র; তাঁহাদের নামে দারি কল্যাণকর স্থশোভন চারি জনপদ হইয়াছে। তিতিকু উশীনরের পুত্র তিতিকুর পুত্র রুষদ্রথ, রুষদ্রথের পুত্র পৈল, পৈল পুত্র হৃতপাঃ, হৃতপার পুত্র মহাযোগী বলি, বলি হইতে অঙ্গ, বল, মুখ্যক, পুণ্ডু, কলিঞ্চ, এই দকল পুত্র উৎপন্ন হয়। বলি যোগী ও বলাম্বিত ছিলেন অঙ্গ হুইতে দধিবাহন, তাঁহার পুত্র দিবিরথ, দিবি-রথের পুত্র ধর্ম্মরথ, ভাঁছার পুত্র চিত্ররথ, তৎপুত্র

সত্যরথ, লোমপাদ তাঁহার তনয়; লোমপাদ
হইতে চত্রদ্,তংপুত্র পৃথুলাক্ষ,তংপুত্র চন্দা,চন্দাপুত্র হর্যাদ্ধ, তাঁহা হইতে ভদরথ, তংপুত্র বৃহৎকর্মা, তাঁহার পুত্র বহন্তান্ম, বহলাত্মবান্ তাঁহার
তনয়; তাঁহার পুত্র জয়দ্রথ, জয়দ্রথ হত বৃহদ্রথ, বৃহদ্রথ হইতে বিশ্বজিৎ, কর্ন, বিশ্বজিতের
অঙ্গজ; কর্নের পুত্র ব্যসেন, ব্রস্সেনের পুত্র পৃথুসেন। এই সকল নৃপতিগণ অঙ্গবংশসন্ত্ত।
এক্ষণে প্রর বংশ ভাবণ কর্মন।

> ইত্যাংগ্রে আদিমহাপুরাণে বাজবংশ-বর্ণনামক স্থাণীতাধিক দ্বিত্তম অধ্যায়।

অষ্টাণীভ্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

পুরুবংশবর্ণন।

অমি কহিলেন,প্রূর পুত্র জনমেজয়,প্রাচীন্নন্ত জনমেজয়ের তনয়। পাচীন্নন্তের পুত্র মনস্ক,তাঁহার পুতা বীতময়, বীতময়ের পুতা শুরু, শুরুরপুতা বহুবিধ, বহুবিধের পুত্র সংযাতি, অহোবাদী সংযাতির অঞ্জ। অহোবাদির পুত্র ভদ্রাখ, ভদ্রাখের পুত্র দশজন যথা ঋচেয়ু ক্ষেয়ু,সন্তেয়ু য়তেগু, স্ভিলেয়ু, ধর্মেয়ু, সমতেযু ওক্চেয়ুও মতিনার। মতিশারের পুত্র তংহ্যরোধ, প্রতির**থ ও** পুরস্ত। প্রতিরথের পুত্র কণ্, কণুপুত্র মেধাতিথি তংস্করোধের, তুমন্ত, প্রবীর স্থমন্ত ও অনয় এই চারিপুত্র উৎপন্নহয়। দুমান্তর শক্তলাগর্ভে, ভরতনামা পুত্রজন্মে, তাঁহারই নামে তৈলোক্য-মওলে ভারতকুল প্রথিত হইয়াছে। ভরতের হুতগণ, মাতৃকোপ হেতু নই হইল। তদনতর মরুদ্রাণ, বুহস্পতিপুত্র ভর্মাজকে আনয়ন করিয়া যজ্ঞবারা তাঁহাকে দংক্রোমিত করিলে ঐ ভরঘাল,

বিতথনাসে দেইকুলে উৎপন্ন ছইলেন। দেই
বিতথ, হাহোত্ৰ, হাহোতা, গয়, গর্ভ, ও কপিল
এই পঞ্চপুত্র এবং মহাল্লা ও হাকেতুনামে অপর
ছইপুত্র এবং কোশিক গৃৎসপতি নামে আরও
ছইপুত্র উৎপাদন করেন। ত্রাক্ষণগণ ক্ষত্রিয়গণ,
বৈশ্যগণ এবং কাশদীর্ঘতনা ইইবা গৃৎসপতির তন্যাগণ। দীর্ঘতনা হইতে ধরন্তরি, ঠাহার পুত্র কেতুমান্,
কেতুমানের পুত্র হেমরথ, দিবোদাস এই নামে
বিথ্যাত; দি.বাদাসের পুত্র প্রক্রিন; প্রত্দিন
ছইতে ভর্গবৎস, ভর্গবৎস হইকে অনক্রিনকর্
হইতে ক্ষেমক, ক্ষেমকহইতে বর্যকেতুর
পুত্র বিভূ, বিভূরপুত্র আনর্ত্র ও অকুমার, ভর্ক্মারের
পুত্র সহ্যকেতু ও বৎস, বংসহইতে ভূমি উৎপন্ন
হয়।

হুহোতের পুত্র রু: ৫, রুহতের অভ্যাঁচ দ্বিট্ ও পুরুষণ্ট এই তিনপুর উৎপন্ন হয়,কেশিনীর গর্ভে অজমীঢ়ের জহুন মে প্রতাপবান্ পুত্র জন্মগ্রহণ করেন। জহ্বপুত্র অজবাধ,বলাকাশ অজকাধের পুত্র বলাকাখের পুত্র কুশিক, কুশিক হইতে গাখি ও ইন্দ্র উৎপন্ন হয,গাধির কন্যা সত্যবতী এবং পুত্র বর বিশামিতা, দেবরাত ও কতিমুখাদি বিখামিতের পুরোগ। অজনীত হইতে শুন, দেফ ও অফীকনামে অন্য তিনপুত্র জন্মগ্রণ করে। নালিনীর গর্ভে শান্তিনামে এজনী দূর অপরএক পুত্র উৎপন্ন হয়, শান্তির পুত্র পুরজাতি, পুরুজাতির পুত্র কাহনাম বাহাস হইতে মুকুল,সঞ্জয, রহদিয়ু ও ক্রমিলনামে পঞ্পুত্র জন্মগ্রহণ করেন, ইহারা দকলেই রাজা এবং পৃথিবীতলে পাঞ্চলনামে প্রথিত ইইয়া-ছিলেন। মুকুলের মৌকুল্যাণ নামক কতকগুলি ক্ষেত্রজ বিজপুত্র উৎপন্ধর। মুকুল হইতে চঞ্চ তাঁহা হইতে দিবোদাস ও অহল্যা এই মনুষ্য

মিপুন জমাগ্রহণ করেন। আছল্যার গর্ভে শরহভের শতানন্দ, শতানন্দ হইতে গভায়তি : সভায়তি হইতে কুপ ও কুপী এই মানব্যিথুন উৎপন্ন হয়। দিণোদাদের পুত্র মৈত্রেয়, মৈত্রেয় পুত্র দোমক, দোমক ছইতে জন্তু, জন্তুপুত্ৰ পৃষত; পৃষত হইতে জ্ঞাপদ, জ্ঞাপদ হইতে ধৃষ্টগুল্লও ধৃষ্টকেতু। অজমীঢ় হইতে ধুমিনীগর্ভে ৠক্ষ, খাক্ষপুত্র দম্রণ, দম্বণের পুত্র কুরু, এইকুরু প্রয়াগ হইতে কিরিয়া আগিয়া কুরুক্ষেত্র তীর্গ প্রতিষ্ঠিত করিয়া ছিলেন। কুরুরপুত্র স্বধ্যা, হুধায়ার পুত্র সংগ্র চ্যবন স্থহোত্তেৰ তনয়; গিরিকা নান্দীরাজ্ঞী বণিষ্ঠের ছুইবার পনিচর্যা করিয়া রহদ্রথ, কুশ, বীর, যতু, প্রত্যগ্রহ, বল ও মৎস্কালী নামে এই সপ্তপুত্র প্রাপ্তহন। রহদ্রথ নুপতির কুশাগ্র নামে পুত্ৰ জমো; কুণাগ্ৰ হইতে বৃষভ, হুষভেব পুর দত্যহিত, দত্যহিতের পুত্র হুধয়া তংপুত্র উর্জা, উর্জের পুত্র দন্তব, দন্তবের পুত্র জরাদক; জরামক্ষ হইতে সহদেব, সহদেব হইতে উদাপি, উদাপি হইতে শ্রুতকমা। পরিক্ষিতের দারাদ জনমেজয় ধর্মনিরতছিলেন। জনমেজয়ের পুত্র অসদস্য। জয়ুর পুত্র হারথ ভাতে।সন, উগ্রেশন ও ভীমদেন। জনমেজয়ের ছুই পুত্র হুর্থ ও মহিমান্। হারথ হইতে বিদূর্থ ও গ্রহ্ম জনা এহ। করেন। এই দিতীয় ঋকের ভীমদেন নামে পুত্র, তাঁহার পুত্র শ্রীভপ,প্রতীপ হইতে শাস্তমু, শাস্তমু হইতে দেবাপি, বাহ্লিক ও সোমদত জন্মগ্রহণ করেন। বাহ্লিকের পুত্র সোমদত, ভূরি,ভূরিশ্রবা ও শল। গঙ্গাগর্ভে শান্তমুর ভীম্মনামক পুত্র ও কালীর গর্ভে বিচিত্রবীর্য্য উৎপদ্ম হয়। কৃষ্ণ বৈপায়ন এই বিচিত্রবীর্য্যের ক্ষেত্রে, প্রভরাষ্ট্র পাও ও বিছুর এই তিন পুত্র উৎপাদন করেন।

পাণ্ডুনুপতির কুন্তীরগর্ভে দেবত্রয়ের উর্দে মুধি-ষ্ঠির,ভীম ও অর্জ্ন,এই তিনপুত্র এবং মাদ্রীনাল্লী পত্নীরগর্ভে আশ্বিন যুগলের ঔর্নে নকুল ও সহদেব এই পুত্রহর উৎপর হয়। অজুনের হভ্তা-গর্ভে অভিমন্ত্র, অভিমন্ত্রা হইতে পরীকিং জন্মগ্রহণ করেন। দ্রোপদী পঞ্চপাণ্ডবের প্রেয়গী-ছিলেন,ঠাহারগর্ভে যুখিষ্ঠির হইতে প্রতিবিদ্ধ্য,ভীম দেন হইতে জতদোম ও ধনজয় হইতে আত্তকী ডিঁ. সহদেব হইতে শ্রুতকর্মা ও নকুল হইতে শতানীক এই দকলপুত্র উৎপন্নহ্য। ভীনদেনের ওরদে হিড়িসাগর্ভে ঘটোৎকচ নামে অন্তপুত্র জন্মগ্রহণ করে। এই দকল মতীত ওভবিষ্যরাজগণের সংখ্যা নাই। কালবংশ ঐ দকল নুপতিগণ গত-হইয়াছেন।ছে দিজ। কাল হরির স্বরূপ, চাল দক লই প্রদান করিয়া গাবেন, মত এব কালের উদ্দেশে অনলে হোম করিয়া পুজা কবিবে।

> ই ভাগেরে আলিমহাপুৰালে পুৰবংশকীভননামক ভাষাশ্ভাগিব বিশ্ভতম অধ্যায়।

ঊননবত্যধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

मिटक्रीयथ ।

অগ্নি কহিলেন, দেবধরন্তরি শুশ্রুতকে যাহা কহিয়াছিলেন, দেই আয়ুর্বেদ দাবভূত মৃত্যুঞ্জী-বনীকর বর্ণন করিব।

শুশ্রুত কহিলেন,নব শশ গজগণের রোগবিম-দিন, আয়ুবেদ, সিদ্ধােগ সকল ও সিদ্ধমন্ত্র সকল এবং মুত্তসঞ্জাবনীকর এই সমস্তই বর্ণন করেন।

ধয়ন্তরি কহিলেন, নিপুণ্তম ভিদক্গণ, জ্ব রোপ প্রস্তব্যক্তির বলরক্ষা করিয়া উপোষিত রাথিয়া শুগীর সহিত লাজমণ্ড ভোজন করাইবেন,ছয় দিন

গত हहेत्स मूछलर्भ हे, डिमीत, हम्मन ७ डिमीहानाश রের দহিত, তৃষ্টা জ্বাস্তকর তি**ক্তকস্তজ্ঞ**ল পান করাইবেন। তপ্তদোষ ক্লিম্ব করিয়া ভদনন্তর তাহার বিরেচন করাইবেন। পুরাতন ষ্টিক, নীবার, রক্তশালি, প্রমোদক ও তরিধনুব্য সকল জরেই উপ taa। আর মবের বিকার, মুদগ, मगृत, চণक, क्लथ, क्छंक, चाउकी, नातकानि खना, करकांचेह, कटोबिक, मक्त भारतील, নিম্ন পর্ণট, দাড়িম ইহারা জ্বে উপকারক। রক্পির অধোগামী হইলে ব্যন, উর্দ্ধণ হইলে বিরেচন এবং শুঠিবজ্জিত ষ্টুঙ্গপান প্রশস্ত হয়। অতীদাররোগে শকু, গোধ্ম, লাজ, ঘব, শালি, মদূৰক, স্কুষ্ঠ চৰক, মুলা এইদকল ভক্ষনীয় ৷ য়ত ও ছগ্ন বারা হপক গেধেুম হিতকর কেনদ্র১ বুদরদ (২) ও মধু এই রোগে প্রশস্ত এবং পুরাতন শালি ভকণ হিতকর হয়। লোণ্বকল শংযুক্ত অন্তিশক অলমাক্ত ভয়বোগে প্ৰিবৰ্জন করিবে। এইরোগে দর্বদা বছবান থাকিবে। উদরীরোগে হুশ্ধ সহিত বাট্য ও য়তপক বাস্ত্ক-শাক ভোজন করাইবে; গোধ্য,শালী ও তিক্তরের্য উদরিদিগের হিতকর **হ**য়। গোধুম, শালিমাত্র, মূলা, তলাক্ষ খদির, অভয়া, পঞ্কোল, ভাঙ্গন নিষ ও ধাতী ও পটোল, মাতুলঙ্গ, রুষা, জাতি শুকিমূলক, দৈন্ধৰ এই সকল কুষ্ঠায়াধিগ্ৰন্তগণের হিতকর, খদিবোদকপানেও বিশেষ উপকারপ্রাপ্তি হয়। মেহরোগিগণ মসুব ও মুগদ পেয়ার্থে ব্যবহান করিবে: পুরাতন শাল্যমভোজন মেহির হিত

⁽১) কুদু মজিকা বিশেষ ক্লভ পিজলবৰ্গ মধু। মালিক।
কপিলা স্পা কুদাৰাভিৎ কৃতং মধু। ম্নিভিঃ ক্ষেত্র মি
ভাকা ভদ্বৰ্গাৎ কপিলা ভবেৎ। ইতি ভাব প্রকাশঃ।
(২) গোবোচনা।

কর হয়। নিম্ব ও পর্পটশাক সহিত জাঙ্গলের রস্ বিভল, মরিচ, মুন্ত, কুন্ঠ, লোধ, স্বর্চিকা মনঃ-শিলা, বালেয় মৃত্রপেষিত, ও কুন্ঠহা, অপূপ, কৃষ্ঠ, কুমাষ ও যবাদি মেহরোগে বিনাশকর হয়। রাজ্যক্ষারোগ গ্রন্তগণের ভোজন বিষ্যে যবার বিকার, মূদ্গ, কুলখ, পুরাতনশালি, তিক্তরুক্ষ শাকতিক্তংরিত, তৈল, শিগ্রুক, বিভীক, ইম্পুদ, গবগোধ্ম মিশ্রিত মুদা, একবর্ষস্থিতধান্স, জাঙ্গন-রণকোল্থরদ ও মোলাকরদ এই দকল দ্রব্য প্রশস্ত হয়। স্বাসকাশবিশিষ্ট রোগিগণ শুক্ষমূলক জাঙ্গল পুপ বিস্কির, দধি দাড়িমাদি সহিত পরি-পক দিদ্ধ: মাতুলস্বদ কোদ্র জাকা তিকুট প্রভৃতিদারা সংস্কৃত ঘবগোধুম ও শালিমার, এই দকল দ্রবা ভোজনে বিশেষ উপকার হয়। খাসকাশ রোগে দশমূলা, রাস্নাও কুল্থ সহিত পরিপত্র পূপর্য ও কাথ পেযরূপে ব্যবহাব दर्खवा। (माथदाशी क्षमकमृतक, दर्शनथ मृत्वत-রস ও জাঞ্চারসের সহিত যব গোধম ও উশীর সহিত পুরাতন শালিঅয়, গুড়সহিত পথ্যা অথবা গুডনাগর ভক্ষণ করিবে। তক্র ও চিত্রক এই উভয়ই গ্রহণীরোগ বিনাশ করিয়া থাকে। পুরাতন যব্ গোধুম শালি জাঙ্গলরস, মুদা, আমলক, খড়জ র, মৃদ্বীক বদর, মধু, সর্পিঃ, তুর্ম, শত্রু, নিম্ব, পপটক, বুদ, ভক্রারিফ সকল, এই সমস্তই বাত রে গিগণের পক্ষে নিয়তইহিতকর হয়। কদ্রোগি ণণের বিবেচন ও হিকরোগিগণের পিপ্পলী হিত্ররী হ্ব। শী**তল বারিদ**্যুক্ত তক্র অবলাল, मिकु ७ अवर मुक्ट ७ मिरिकेना नियना, मनरतार ग প্রদান কবিলে এইরোগ প্রশমিত হয়। ক্রতরোগে ক্ষেত্রিও জুগ্ধ সহিত্ত লাক্ষারদ পানকরিবে। মাংস্রদ আহাব করিয়া জগ্রিদংরক্ষণ পূর্ব্বক

ক্যবোগ জয়করিবে। অশ্রোপে রক্তশালী অম ও নীবারধান্তাদির অহভোজন কর্ত্তন্য। এই রোগে যবান বিক্লভি, মাংদ, শাক, দৌবচ্চলি শঠী, এই দকলদ্রব্য, ও বারিমিশ্রিত তক্র ও মণ্ডোমন হিতকর। মৃত্রকৃচ্ছরোগে চিত্রক ও হরিদ্রার সহিত মুস্তার বারম্বর লেপদিতেহয়। এই রোগে যবালবিকৃতি, শালি, প্রবচ্চলি সহিত বাস্তৃক্ ত্রপুশ (১) শদা ইতিভাষা ইকারে (২)গোধুম, কীর, ইক্ষু এই সকল দ্রব্যভোজনে, ও পানেমণ্ড স্বাদি প্রশস্ত হয়। লাজা, শক্ত, ক্ষেত্রি, শূন্য, মাণ্স, পরুষ (৩) বার্তাকু, লাব ও শিখী ও পানক (৪) ইহারা ছর্দি নাশ করে। শালিঅম. কেবল উষ্ণ অথবা স্রুতজল সহিত তুগ্মপান করিলে অথবা মুধমধ্যে গুটিকা রাখিলে তৃষ্ণ মিবারণ হয়। বিকৃতি, শুক্ষুলক জাত পূপ, শাক পটোল, বেত্রাগ্র এই সকল দ্রব্যে উরুত্তম্ভ রোগ বিনাশ করে। বিদর্পবোগী মুদ্র, অতৃক মন্ত্র এই সকলের রদের সহিত এবং সতিল জান্দলরদের সহিত ও সৈন্ধবযুক্ত স্বতদাক্ষা শুগী, আমলক ও কোল হইতে জাত যুধের সহিত পুৰাণ গোধুম যব ও শালিমন বারফার ভোজন এবং শর্করাণহিত কোন্র মূম্বীক দাড়িম জলপান করিবে। বাতরক্ত বিনাশের নিমিত রক্তয়ষ্টিক

⁽১) বৰ্কীৰণ কাণুড ইভি ভাষা।

⁽⁾ এছলে মশে বাক এইরূপ পাঠ দৃষ্ট ১য় । বাক্**বিজয়** কুঞ্জব ইতি হারাবলী। এভলে বিজযক্ঞাব এই অর্থ অসম্ভব বোধে অপুষেব কি গোগুন'ঃ এই পাঠের অঞ্বাদ'আন্ত হুইল।

⁽৩) পক্ষকল ইভি বঙ্গবাধা,ফরুসা ফলুছে ইভি ছিলিভাষা।

⁽৪) পানি এবা বিশেষ, যথোক পৰি মিত শক্ৰানিমূর সম্জ অথবা অভ অভঃসমূক পৰ্বস পানকনামে প্ৰথিত হয় ইতি পাৰৱাকেমং শোকাঞ্বাদ।

ट्रांच्य, यद, म्लाति लघ्वछ, कांकमाती, टबखांध निखन - अरक ना अहै मकन खवा कन, मर्कन्ना छ मधु पारशंत कतिरा । नामारतार शृङ (यार्श পকদুর্বা। হিতকরীহয়। মুর্দ্ধজন্তর উদ্ভবে অর্থাৎ উৎকুণাদি উৎপন্ন হইলে অথবা মন্তকজাত नर्यरतार्ग इक्ताकर्रम या शंकीत तरम मिक তৈল নশ্যরূপে ব্যবহার করিলে আরোগ্য হয়। শীতল অহ ও পান এবং বিশেষ ক্লপে তিল ভক্ষণ দত্তের দৃঢ়তা সম্পাদন ও তৃষ্টিদম্পাদন করে। তিল তৈলের গণ্ডুষ গ্রহণ করিলে দন্ত অতিশয় দৃঢ়হয়। কৃষিনাশের নিমিত বিজ্লচুণ ও গোমুত্র সর্বতাই প্রশস্ত। ধাত্রীকল ও মৃত দারা উত্তম শিরো-লেপন হয়। শিরোরোগ বিনাশের নিমিত স্থিয় ও উষ্ণ দ্ৰব্য ভোজন করিবে। তৈল বা বন্ত্ৰ সূত্ৰদ্বারা উত্তম কর্ণপূরণ হয়। কর্ণশূল বিনাপের নিমিত দর্বশুক্ত ব্যবহার কর্ত্ব্য। গিরিমুভিকা চন্দ্র লাকা নালতী কলিকার সংযোগে বর্তিকা প্রস্তুত করিরা ব্যবহার করিলে কভগুক্র রোগ বিন্ঠ ह्य। विकलात महिल विकृत, जून्हक, अन अ রসাঞ্জন সর্ববিধ চক্ষুরোগ বিনাশ করিয়া থাকে। ঘুতভৰ্জিত ও শিলাপিই, লোধকাঞ্চিক দৈল্পৰ সহিত, জলক্ষরণাদি বিনাশের নিমিত দ্বনেত্রেরেণে হিতকর হয়। বৃহির্নেতে গিরি-मृहिका ७ ज्ल्बरान्यन क्षेत्र हरा। বিনাশের নিমিত্ত নিয়ত ত্রিফলা যোগ করিবে। জিজীবিষু ব্যক্তি (১) রাত্রিকালে মধু ও সর্পিভক্ষণ ভার। দীর্ঘায়ু হইতেপারে। শতাবরীর রসে সিদ্ধ করিয়া ক্ষীর ও হত ভোজন করিলে র্ষা অর্থাৎ শুক্রেব্রন্ধিকর হয়। কলস্বী, মাষ, ক্ষীর ও

इक अहे . मकना वा अ दुवा । भूर्ति अन् अपूक्राशास ভক্ষণ করিলে ত্রিকলা আয়ুষ্য অর্থাৎ আহি হুছি-করী হয়। মধুকাদি রসের সহিত ব্যবহার করিলে ঐ ত্রিফলা বলীপলিভবিনাশিনী হয় (১) হৈ বিঞাঃ বচার সহিত সিশ্বয়ত ভূতদোষ বিনাশ এবং কণ্ঠখন ও বৃদ্ধিবৃত্তির বৃদ্ধিকর এবং সর্ববৃত্তির সাধক হয়। বলার কল্পকষার সিদ্ধ ঐ বচা সিম্মন্ত অভ্যক্তনে (গাত্রে বিষর্জন বিষয়ে) হিতকর হয় 🖁 বাতবিকারি গণেরপক্ষে রাজানি সহিত নিমতেল হিত্যাধন করে। অনতিপ্র অন্তর্গরোগে প্রশস্ত-হয়। পাচনপক্ষে শক্ত পিণ্ডী অন্না প্রাশস্ত জানিবে। পৰুত্ৰণ স্ফোটকাদির বিদারণে ও পঞ্ ক্ফোটাদির অঙ্কোদ্গমন পূর্বক পূরণবিষয়ে নিম্নচূর্ণ বিশেষ উপকারক হয়। শৃচী স্থারা বেধাদিকর্মৌ বিশে-ষতঃ বলি কর্মে সৃতিকা ও মক্ষা প্রাণিদিগের হিতকারিণী হয় ৷ নিম্বপত্ত ভোজন, সর্পদক্ষ ব্যক্তি-গণের ঔষ্ধাৰ ভালদল ও নিম্নদল, যবয়ত ও পুরাতন তৈল কেশবৃদ্ধি ও তর্ধবৃদ্ধি দাধনকরিয়া थारक। दुम्हिकमधे वास्तित भरक धूभ ७ मिथि। পত্র ও স্নতসহিত বা অর্কক্ষীর সহিত সংপিষ্ট লোপাবীজ ও পলাশ বীজ হিতকর হয়। অর্ক-ক্ষীর (২) তিলজাতৈল প্লব (৩) ও গুড় সমানভাগে পানকরিলে তুর্কার কুরুরবিষ শীঘ্রই জয়করা যায়। ততুলীয়ের মূল ও ত্রির্ৎমূল (৪) তুলাভাবে গ্রহণ করিয়া পান করিলে অতি প্রবদতর দর্পকীটাদির বিষ জন্ম করিতে পারা যায় । চন্দন, পদ্মক, কুষ্ঠ, লতামু, উশীর, পাটল, নিগুণ্ডী,

 ⁽১) বশী—য়বালনিত ছচ্ত্রক – বোঁকভাচর্মা। পলিত জবা
 জনিতকেশ গুরুতা। (২) আকল—আটা। (৩) পোয়াল।

⁽s) ত্রিবুং—তেউডী ইতিভাষা।

শারিনা ও দেলু এই সকল ওষধ লৃতার বিষ হরণ করে। হে বিজ ! সেহপানে শিরোবিরেচন গুড়নাগরক প্রশস্ত ৷ বক্তিকর্মে (১) তৈল ও ঘৃত উৎকৃষ্ট বহ্লি উৎকৃষ্টভর ষেদনীয় বস্তা, বহ্লিভাগ বারাই সেদনির্গত করিবে। শীতলবারি শুদ্ধন কার্য্যে প্রশস্ত ৷ রেচন বিষয়ে জির্থ ও বমন বিষের মদন প্রেষ্ঠতর হয় ৷ বস্তিক্মা,বিত্রেক বমন, তৈল, সপিং ও মধু এইদ্রব্য বাতপিত বলাশ অমাদি প্রমোষ্থ ৷

> ইত্যাগ্রের আদিমহাপুরাণে সিছে।বধনামক উন্ন্তঃধিকহিশ্ভতম অধ্যায়।

নবত্যধিকদ্বিশতত্য অধ্যায়।

সর্ববোগহর ঔষধ।

ধন্বন্তরি কহিলেন, ব্যাধি শারীরিক, মানসিক, আগস্তুক ও নহজভেদে চারিপ্রকার। জরকুষ্ঠাদি শারীরিক, ক্রোধাদি মানসিক, বিঘাতাদি দারা উদ্ভুক্ত আগস্তুক, কুষা ও বার্ন্ধব্যাদি সহজব্যাধি।

শারীরব্যাধি ও খাগন্তক ব্যাধি বিনাশের নিমিত রবিগারে মত, ওড়ে ল ণ, ফর্ণ ও অপুপ বিপ্রকে সমর্পণ করিছে। মোমবারে অভ্যঙ্গ অর্থাৎ তৈল মতাদি বিপ্রদাৎ করিলে, সর্ক্রিধ রোগ ইইতে বিমৃক্ত হয়। শনিবারে বিজবরকে তৈল দান ও আধিনমাসে গোরস্মিপ্রিত অম্বদান করিবে। মৃত ও হুল্ল ছারা লিক্সান করাইয়া রোগীগণ রোগ ইইতে মুক্ত হয়। দুর্ক্রাদল জিমধ্বায় (ছুল্ল, মৃত মধু) আপ্লুত করিয়া গায়্রজী মস্ত্র হারা অনলে হোম করাইবে। যে নক্ষত্রে

ব্যাধি উৎপন্ন হয়, সেই নক্ষত্তে স্থান ও পূজা প্রদান শুভকর। মানসিক রোগাদির বিষ্ণুস্তোত্তই পরম ঔষধ; তদ্ধারাই মানসিক সমস্ত রোপই প্রশমিত হয়। বাতপিত কফদোষ সকল ও থাতু সকল প্রেবণ কর । (ই শুর্জেন্ড ! ভুক্ত আর পকা শায় হইতে দিবিধ হইয়া গমন করে। তমধো এক প্রকার কিট্ট ও অপর**গ্রকার রস। কিট্ট**ভাগ মল, সেই মলভাগ হইতে বিষ্ঠা, মৃত্ৰ, স্বেদাদি দূষকপদার্থ, নাদামল, কর্ণনল ও দেহমলাদি উৎ-পন্ন হয় ৷ রসভাগ হইতে রস, ঐ রস পরে শো ণিত হয়; এই শোণিত হইতে মাংস ও রক্ত. হইতে মেদঃ,মেদ হইতে অস্থি সকল, অস্থি হইতে মজ্জা, মজ্জা হইতে শুক্র, শুকু হইতে রাগ, রাগ ওজ তেজঃ উপৎন হয়। দেশ ব্যাধি. বল, শক্তি, কাল ও স্বভাব ও উষধবল অবগত হ'ইয়া চিকিৎসকগণ চিকিৎসা করিবেন। রিক্তা তিথি, মঙ্গলবার ও নিদারুণ উগ্র মন্দ নক্ত পরিত্যাগ করিয়া, হরি, গো, দ্বিজ, চন্দ্র, অর্কাদি দেবতাগণের পূজা পূর্ববিক এই মন্ত্র উচ্চারণ পূর্ববিক ঔষধ প্রদান আরম্ভ করিবে। মন্ত্র যথা---

ব্রহ্মদক্ষাধি করেন্দ্রস্কার্কানিলানলাঃ।
থাব্যক্টোব্ধিপ্রামা ভূতসংঘাদ্য পাস্ততে ॥১॥
রসায়ন মিবর্ষীণাং দেবতানামরতো যথা।
অধেবোত্তমনাগানাং ভৈষজ্যমিদমস্ততে ॥৩॥
মল্রার্থ যথা—ব্রহ্মা, দক্ষ, অধিনীকুমার, করে,
ইন্দ্র, ভূ, চন্দ্র, অর্ক, অনিল ও অনল, ঋষিগণ,
উষ্ধি গ্রাম ও ভূত স্কল তোমাকে রক্ষা
কর্মন।১।

ঋষিগণের রদায়ন সমান, দেবগংশর অমৃতো প্ম ও উত্তম নাগগণের হুধার ন্যায় এই ঔষধ তোমার রোগ হরণ করিয়া কল্যাণ্ডর ইউক।

⁽১) **বস্তিকশ্য—**পীচকারিদেওমা।

যে দেশে বছতর রুক বিদ্যমান আছে সেই দেশ বাত শ্লেমায়ক: যাহাতে বহুতর উদক, সেই দেশকে অনুপ্ৰী জল বৰ্জিত দেশকে कांत्रम करह। किथि १ दूक ७ उनकविभिक्ते (पर्म সাধারণদেশ নামে কথিত হয়। জাঙ্গল দেশ পিত বহুল, সাধারণ দেশ মধ্যম। রুক্ত শীভল, চঞ্চল বায়ু ও উফপের এই তিনের মাম ত্রিকটু। ছিরান সিথা ও মধুর, এই সকল গুন বিশিষ্ট Cम वनाम मां म कथिछ इया धारे मकरनत স্মাংশট বুদ্ধি ও ইছাদের বিপরীত বিপর্যয় বলিয়া কথিত হয়। স্বাতু অন্ন ও লবণগুন বিশিষ্ট শ্রেষ্ম রুদ্ধিকর ও বায়ু নাশক হয। কটু তিক্ত ক্ষায়রদ বায়ু রদ্ধিকর ও শ্লেমনাশক হয়। কট অমুও লবণরস্পিত বর্জক ও তিক্তব্যুত ক্যায় রস্পিত নাশক হ্য : রুমেব এই সকল জুন नांहे, विभारकत এই मगन्द्र छल विकासान चार्छ। উষ্ণ বীৰ্ষ্য দ্ৰাস্কল ক্ষৰায় বিনাশক ও শীত পিত বিনাশক ২ব ৷ (হ শুঞাৰ ৷ সেই সকল দেব্য স্বীয় প্রভাবালুসাবে সার কবিষা থাকে। শিশির বদন্ত ও নিদাঘকালে ক্রমান্ত ল কফের সঞ্ধ প্রকোপ ও উপশ্ম হয় : ্রীস, বর্ষার রাত্তি ও শরৎকালে বায়ুর সঞ্চ প্রকোপ ও উপ্শম হয়। মেঘকালে শরং ও হেমন্তে মণাক্রমে পিতের সক্ষ প্রকোপ ও উপশ্ম হইয়া থাকে। বর্ষা শরৎ হেমন্ত এই তিন ঋতুর নাম বিদর্গ, শিশির বসন্ত ও গ্রীম এই তিন ঋতুর নাম আদান। বিদর্গ কাল শীতল এবং আদান কাল আয়েয়! সোম বর্ষাদি তিন ঋতুতে পর্যাযক্রমে বিচরণ করিয়া वशाक्राम जम्न, नवन ७ मध्त अहे हिन तम छेरूना দন করেন। সূর্ব্য শিশিরাদি তিন ঋতুতে পর্যায় ক্রমে বিচরন করিয়া, যথাক্রমে ডিক্তা, কটু ও

ক্ষাররস বর্দ্ধিত করিয়া থাকেন। বামিনী, যাবৎ পরিমাণে বর্জিত হয় মানবগণের বল ও তাবৎ পরিয়াবে বর্দ্ধিত এবং যে পরিমাণে ক্ষীণ হয় মতুষ্য গণের বলও ভাবেৎ পরিমাণে হীন হইয়া থাকে। त्रांकित, निरनत, (ভाक्यनकारलत ও रशम कारलत, আদি, মধ্য ও অবদান সময়ে লথাক্রমে কফ, পিত ও সমীরণ প্রকৃপ্ত হয়, কোপের আদি কালের নাম চয় বা সঞ্য। প্রকোপের পর ভারাদের শাস্তি হয়, তাহার নাম শম। হে বিপ্রা অভি ভোজনে ও অভোজনে মলমূতাদির বেগ উত্তো-লনে ও ধারণে সকল রোগ উৎপন্ন হয়। কুকির চুই অংশ অন মারা এক অংশ, পান ছারা পূর্ণ করিয়া এক অংশ প্রনাদির গ্রমাগ্রম ও অব-স্থানের নিমিত অবশিষ্ট রাথিয়া দিবে। ব্যাধির বিপরীত ঔষধ নিদান নিৰ্ণয় ও ব্যাধির প্রদান কর্ত্তব্য, এই বাক্য তোমার নিকট সার রূপে উত্তি করিলাম। দেহ্মধ্যে নাভির উর্দ্ধ ও অধোভাগ এবং গুদ (১) ও জোণীদেশ (২) বলাশ ও বাতের স্থান বলিয়া কথিত হয়। তথাপি ইহারা বিশেষতঃ বাঘু দেহের সর্ব্রগামী হয়। দেহের মধ্যভাগে হৃদয়, তাহাই মনের স্থান বলিয়া কথিত হয়। বাতপ্রকৃতিক নর, কুশ, অল্লকেশ, চপল, বহুবাক, বিষমাগ্রিক ও স্বথ্লে ব্যোমগামী হয়। পিত্রপ্রকৃতিক মানব, মকালপলিত অর্থাৎ অকালে পৰকেশ, কোধী, প্ৰস্বেদী, মধুরপ্রিয় ও স্বপ্নে রীপ্তিমদ্বস্ত দর্শন করে। কফ প্রকৃতিক মৃতুষ্য হুর্তাঙ্গ, হিরচিত, হুগ্রভ ও রিগ্নযুর্জ ও স্বপ্নে শুদ্ধ জলদণী হয়। হে মুনিপ্রবর বাভপিত-কফাজাক মনুষ্যগণ যথাক্রমে তামদ, দ্বাজ্ঞ ও

थन-भाष्,(भाष। (२) (आगी.मन-निक्य।

माञ्चिक इरेशा थारक। ८६ विश्ववर्धाः व्यक्तिक ব্যবায় অযথার্থ মৈথুন করিলে এবং গুরুতর কর্মে প্রবর্তিত হইলে রক্তপিত্ত রোগ উৎপন্ন হয়। কদমভোজন এবং শোক হেতু বায়ু কুপিত হয়। বিদাহ ঔষ্ঠা, উফান্ভোলন ও অধ্য দেবা ও ভয় এই দকল কারণে দেহমধ্যে পিত্ত প্রকুপিত হইয়া থাকে। অধিক জলপান, গুরু অনভোজন, ভোজনান্তর শয়ন ও আলম্য এই সকল কারণে শ্রেষা প্রকোপ হয়। লক্ষণধারা বাতাদিজাত রোগ অবগত হইয়া তৎপরে শাম্য করিতে প্রবৃত্ত হইবে। অস্থিভঙ্গ (১) মুখে কথায়ত্ব ও মুখগুকত। জৃষ্ডণ, লোমহর্ষণ এই সকল বাতজনিত ব্যাধিব লকণ। নথনেত্র ও শিরাসকল পীতবর্ণ ও মুথে কট্তা জিমালে এবং তৃষ্ণাদাহ ও উফালা উৎপন্ন इইলে দেই ব্যাধি পিত্তজনিত বলিয়া অবধারণ করিবে। মালদ্য প্রদেক, গুরুতা ও মধুরাদ্যতা ও উক্ষতায় অভিলাষ এই সকল কফ্ল্যাধির লক্ষ্ণ। ক্মিগ ও উষ্ণামভোজন, অভ্যঙ্গ (২) ও তৈলপানাদি বায় নাশক হয়। মৃত, তুয়, শর্করাণি ও চন্দ্রেণি-কিরণাদি পিন্তনাশক এবং ক্ষোদ্র সহিত ত্রিফলা তৈল ও ব্যায়মানি কফল্ল হইয়া থাকে। দর্কপ্রকার রে†গ শ∤স্তির নিমিত্ত বিষ্ণুর ধাান ও পূজা कतिरव ।

> ই চ্যালে**য়ে আদি মহা**পুৰাংশ স্থারোগ্য নামক নৰ্ভাধিক ছিপ্তত্ম অধ্যায়।

(১) অস্থিভদ — হাডম গানি। (২) সভাস — তৈলদৰ্দন।

একনবত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

রসাদি লক্ষণ।

ধ্যন্তরি কহিলেন,এক্ষণে রদাদি লক্ষণ ভেষজ-সকলের গুণ আবণ কর। রসজ্ঞ ও বীর্যাঞ্চ ও বিপা-কজ্ঞ ব্যক্তি নরপতি প্রভৃতি মানবগণকে রক্ষা করিতে সমর্থ হয়। আমুও লবণ রুদ দোম ছইতে জাত; কটু, তিক্ত ও কষায় রস অগ্নিসম্ভত। দ্রব্যের বিপাক কটু অম ও লবণভেদে তিনপ্রকার। বীৰ্যা হিবিধ; শীত ও উফ। হে হিজোকম! ঔষধের রদ মধুর, কষায়, তিক্ত ; ইহাদের প্রভাব অনির্দেশ্য। কতক দ্রব্য শীত্রীষ্ঠ্য ও অবশিষ্ঠ উষ্ণবীৰ্য্য,তাহাতে গুড়চা তিক্তরদা হইলেও অভ্যুৎ-কট বীর্যাপ্রভাবে উষ্ণা, ক্যায়া ও প্রথাকারী হয়। মাংস মধুর হইলেও যিন্ট। লবণ মধুব ও পরি পাককারী হুইয়াও মধুর এবং অন্নোষ্ট। অবশিষ্ঠ সকলই কটুবিপাকী। বীর্য্যপাকের বিপর্যায় ঘটিলে, তথার এভাব দারা ঐ রূপ ঘটিয়াছে নি-চয়করিবো মধুর প্র **হইলে কটু হয়। যাহা** ক্ষ্যেন কার্ত্তিত হয়, তাহা যোড়শগুণ কাথিত করিবে এবং দ্রব্য হইতে চতুগুণ পান করিবে। रिक्टल क्यारित दर्कान विधिष्टे छेख्क इस नाहे, তথায় ক্ষায়ের এইরূপ কল্লনা। সেই পাকে চতু-গুণ ক্ষায় জল হয়। তুল্য দ্রেণ্য উদ্ধার ক্রিয়া দ্রব্য ও স্নেহ নিক্ষেপ করিবে। দ্রব্যের পরিমাণ যত, স্নেহ তাহার পাদাংশ (সিকিভাগ) নিক্ষেপ कतित्व। जनविद्धिक रंग प्रया, जाहार द्वराहका জানিবে। স্নেছের পাকে ঔযধ সম্বর্তিত করিবে। লেহ্য বস্তুর অংশও পাক সেই প্রকার। উষধ ও কাথ সমান ; কষায় ও ঐ রূপ ; চূর্ণের প্রমাণ অক পরিমাণ চভুষ্পাল, এই মাতামিধ্যমা,

মাতার বিশেষ কল্পনা বা বিধি নাই। শীতল রস প্রায়ই ধাতু শ্র্র হয়। ধাতু সকলের দোষের দ্রুগ্র স্থুহের যে স্মগুণ, তাহাই রুদ্ধি নিমিত্ত জানিবে, বিপরীতে শান্ত হয়৷ হে মানবশ্রেষ্ঠ! এই দেহে ভিন প্রকার উপস্তম্ভ আছে। যথা —আহার, নিদ্রো 🌺 নৈথুন। এই সকলের প্রতি সর্কাণা যত্ন হয়। অত্যন্ত অদেশনে ও মত্যন্ত দেবনে বিনাশ প্রাপ্ত हरा। की गरम रहत भूष्टि उ एको ना माधन अतः बूल দেহের কর্মণ এব॰ মধ্যবিধ ক য়ের রক্ষণ কর্ত্তবা। ন্দেহ,ভেদে ভাষা তিন প্রকার। তর্পণ ও অতর্পণ ভেদে উপক্রম চুইপ্রকার। মশন ত্রিবিধ্ হিভাশী, মি ছাশী ও জাঁণাণী। হে মতুলোভম। ঔষধি পঞ্জার : যথা রদ, কল্পত, শীত ও বাওঁ। পাড়ন করিলে যাহা নিগত হয়, ভাগাই রস: খালোড়ন বা বড়ীন হইতে বক্ক; কাণিত অর্থাৎ ক্ষাথ বাহির করণ হইতে হত ও রাত্তিতে যাহা পর্বিষিত হয়, শীত এবং যাহা সদ্যই হত ও পুত হয়, ভাহাই বাণ্ট বলিয়া কথিত হয় ৷ একশভ ষাটি প্রকার চিকিৎদার উপায় যিনি অবগত আচেন, দেই ভীষক অজেয় এবং তিনি বাহুবলেই সমস্ত জয় করিতে পারেন। আহারগুদ্ধি, অগ্নির নিমিত্ত ও অগ্নির মূল এবং বলের কারণ হয়। ণিকু 🕏 ত্রিফলার সহিত হুরা, সিন্ধুযুক্ত জাঞ্চলরদ, দধি ও পয়:কণা বলর্দ্ধির নিমিত পান করিবে। বাডাধিক নর, কখনও অধিক কখনও বা সমান রস পান করিবে। নিদাঘকালে মর্দ্দন, শিশিরে সম, বসন্তে মধ্যে ও নিদাঘে অধিকত্র মর্দন করিবে ! প্রথমে ছচ মর্দন, তৎপরে অঙ্গমর্দন করিবে। 'আয়ুও রুধিরপূর্ণ দেহে মাসযুক্ত অস্থিগণই প্রতি-ভাত হইতেছে। বৃদ্ধিনান্ ব্যক্তিগণ ক্ষমভায়, বাহু-যুগল ও জাতুদহিত জঞ্জাবয়, জ্ঞা ও বক্ষঃস্থল

এবং সমস্ত অঙ্গদন্ধি বছবার নিপীড়িত করিয়া
অবিরাম মর্দন করিবে। অঙ্গদন্ধিসকল প্রশারণ
করিবে, কিন্তু অক্রম পূর্বক হঠাৎ নিক্ষেপ করিবে
না। জীর্ণনা হইলে পরিশ্রম ও ভোজন করিয়াই
পান কর্ত্বিয় নয়। দিবদের চারিভাগে প্রহরার্থের
উদ্দ কাল ব্যায়াম কর্ত্বিয় নয়। শীতলজলে এক
বার স্নান কর্ত্বিয় । উষ্ণবারি শ্রমবিনাশ করে।
হৃদয় শ্বাস ধারণ অকর্ত্বিয় ব্যায়ামে কক্নাশ ও
সন্দনে বাত বিনাশ হয়। স্নান পিভাধিক্য বিনাশ
করে। স্নানান্তে আতপ প্রেয়তর হয়। ব্যায়ামশীল
নরগণ স্বাত্বপ ক্রেশ শহ্য করিতে সক্ষম হয়।

ইভারের আদিনহাপুরাণে রসাদিলকণ নাম্ক একনবভাধিক্ষিশভাচন অধ্যায়।

দ্বিনবভাষিকদিশতভ্য অধ্যায়।

द्रकाशू दर्वन ।

ধয়ভুরি ক**হিলেন, র্ক্ষায়ুক্তিদ বর্ণন করিব,** ভোবণ কর।

ভবনের উত্তর দিকে প্রক্ষা, পূর্ববিদিকে বট, দিকিনে আত্র, পশ্চিমে আত্রথ বৃক্ষ রোপণ করিলে কল্যাণকর হয়। গৃহের নিকটে দক্ষিণদিকে উৎপন্ন কণ্টকদ্রুন সকলও মঙ্গলদারক। গৃহাবাসে উদ্যান প্রস্তুত করাইবে, অথবা পুষ্পিত তিল কাও সকল বিরাজিত থাকিবে। হিজ্ঞগণের ও চন্দ্রের পূজাকরিয়া বৃক্ষ গ্রহণ বা রোপণ করাইবে। বায়বা, হস্ত, প্রাজেশ, বৈষ্ণব ও মূল এই প্রক্ষ নক্ষত্র বৃক্ষারোপণে প্রশস্ত । নদীর প্রবাহ সকল উদ্যানে বা ক্ষেত্রে প্রবেশ করাইবে; নদ্যাদির অবর্ত্তমানতার পুক্ষরিণীর প্রবাহ যাহাতে প্রবেশ করিতে পারে, এরপে উপায় করাইবে। জলাশ্যের আরম্ভ

विचरत्र इन्डां, यथा, चामा, शूषा, नवानव, वांत्रन ও উত্তরাজয় এই দকল নক্ষত্র শুভকর হয়। বিষ্ণু ও মেখের পূজা করিয়া জলাশয় আরম্ভ क्तिरव। अतिकोटनांक, नुभाग, नितीय, व्याप्त, ত্রপোক, কদনী, জম্বু, বকুল, দাড়িম, এই বৃক্ দকল রোপণ করিয়া গ্রামে দায়ৎ ও প্রাতঃকালে. শীত ঋতুতে দিনান্তরে এবং বর্ষাকালে ভূমি শুষ ছইলে সেচন করিবে। এক স্থানে রুক্ষ রোপণ করিয়া ভাহার বিংশতি হস্ত অন্তরে খন্য বৃক্ রোপণ করিলে উত্তম, ষোড়শ হস্ত অস্তরে মধ্যম, দ্বাদশ হস্ত অন্তরে অধম রোপণ হয়। অনদমিবিউ वृक्त मकल कलहोन इय् । कल नाम इहेरल श्रयरम অস্ত্র দ্বারা কর্ত্তন করিয়া পরে বিড়ঙ্গ ঘত ও পঙ্ক মাথাইয়া শীতবারি ছারা দেচন করিবে এবং কুলখ, মাস, মূলা, ধব ও তিলের সহিত ঘত ও শীতল মলিল সেক করিলে সর্বদা ফল পুষ্প উৎ-প্র হয়। মেষ ও ছাগের কিছাচুর্যবৃদ্ধি ও তিল গোমাংদ ও জল মপ্তরাত্রি প্রোথিত রাথিয়া বৃক্ষ তলে দেক করিলে দকল রক্ষেরই ফল পূষ্পা বৃদ্ধি পায়, আহিষ জলদেক করিলে শাখিগণ সম্বর্দ্ধিত হয়। বিড়ক ও তওুলযুক্ত মংদ্য ও সাংস রক্ষণণের বুদ্ধি এবং সমস্ত রক্ষণণের নির্বিশেষে রোগমর্দ্ধন করিয়া থাকে।

> ইত)থেয়ে আদ্দম্পূৰ্ণে বৃদ্যুপ্দিন্দক বিন্তুদ্ধিকহিণ্ড নে অধ্যে।

ত্রিনবত্যধিকদিশতত্ম অধ্যার।

নানারোগ হাবক উনধ সকল।
ধন্মন্তরি কহিলেন, সি॰হী, শঠি, নিশাযুগ্ম,
বৎসক্ত কাথ এই সকল ঔষধ শিশুর স্তন্যদোষজ

অভিদারে প্রশস্ত হয়। কুঞা ও অভিবিশার সহিত চুর্ণিতা শৃদী লেহন করিবে। এক মতি-বিশাই শিশুর,কাশ সৃদ্দি স্বর হরণ করে। বালক-গণ, যুতের দহিত কিমা হুয়ের দহিত অথবা তৈলের সহিত বচ সেবন করিবে আর যঞ্জিকা অথবা শঘ্শঙ্গী তুমের সহিত পান করিলে বালক গণের, বাক্য, রূপসম্পত্তি আয়ু:মেধা ও শ্রীবর্দ্ধিত হয়৷ প্রাতঃকালে বচ, অগ্নিশিশা বাসা, শুঠী, कुक्छा निभागम, यष्टि रेमक्षत महरवारंग शान कविरम বালকগণের মেধা রুদ্ধি হয়। দেবদারে, মহাশিগ্র, ত্রিফলা, প্রোমৃচ (মেয় উদ্ভিক্ত বিশেষ) এই সকলের ৰাথ এবং কৃষ্ণার সহিত মুদ্বীকা ও কল্প সর্বপ্রকার ক্রিমিনাশ করে। ত্রিফলা, ভূক ও বিশ্ব এই সকলের রসে এবং মৃত ও মধুতে ও মেঘাত্বয়ে ও গে.মুত্রে সিক্ত শিশুভোজ্য দ্রব্য শিশুগণের রোগে হিতকর। ছুৰ্ববারদের নশ্য. নাদ'রক্ত রোগ বিনাশ করে। লগুন, আর্ক্রক ও শিগ্রের রম কর্ণে পুরিত করিলে কর্ণরোগ বিনাশ করিয়া থাকে। তৈল, আর্দ্রকজাতা ও শূলহা ওঠরোগ হরণ করে। জাতি পত্র, ফল, ব্যোষ (ত্রিকটু) কবল, মৃত্রক ও নিশা এবং দুগাকাথে ও অভয়াককে সিদ্ধতিল **দন্তরো**গের খন্তবর হয়। জিহ্বারোগের শান্তির নিমিত ধান্যান্ত্র, নারিকেল, ক্রমুক (স্থপারি) ও বিশ্বযুক্, গে।মুত্র ও কার্থিত [।] কবল ন্যবহার করিবে। নিগুণ্ডিকা রদেশ সহিত, লাঙ্গনীকল্কে দিন্ধতিলের নশ্য গ্রহণ করিলে গণ্ড-মালা ও গলগও রোগ বিনষ্ট হয়। অর্ক, পৃতীক, মুহী, ৰুগদাত জাতিক পল্লব, গে মূত্ৰের উদ্বৰ্তন (बर्फन) कतिरल मम छ जर्बारतांग ए जर्बारतांय विनचे হয়। তিলের দহিত বাক্টী দম্বৎসর ভক্ষণ করিকে কুষ্ঠনাশ হয়। পথ বুভলাতকী, তৈল গুড় পি 😉 🖰

ঠিজয় করে। ত্রিফলা ত্রিকটু চূর্ণযুক্ত, যুতীক গ্রিরজনী, তক্রে (খোন) গদাকুরে পান করিবে ্রবং গুড়সহিত অভয়া ভক্ষণ করিবে। রোগী, ফলেরদাব্বীর ও বিষাণের কাথ কিংবা ধাত্রীরদ পান এবং ক্ষেদ্রিসহিত রজনী কল্প ভক্ষণ কৈওঁব্য। বাতশোণিত রোগে বাদাপর্ভ এবং এরও তৈলযুক্ত ব্যাধিঘাতের কাথ, পান করিবে। পিপপলি, প্লীহা নাশ করে। উদরী ব্যক্তি, ফুকীরে বহুদিন স্থিত কৃষ্ণা সেবন করিবে অথবা হু বিচ্যু দন্ত্য-অগ্নি-ণিড়ঙ্গ ত্রিকটুর কক্ষ যোগে ভ্রমণান করিবে। এস্থিক, উগ্রা অভয়া ও মৃতস্থিতা বিভ্সমিশ্রিতা কৃষ্ণা, মাংসুও তক্ত, গ্রহণী, অর্শঃ, পাওু, গুলা ও ক্মিনাশ করে। ব্রিফলা, অমুভা, 🖟 বাদা, ভিক্তভ্নিম্ফ কাথ,মধুযোগে দেবন করিলে কামশার দহিত পাণ্ডুরোগ বিন্ট হয় ৷ রক্তপিত ব্রোগ শর্করা যুক্ত মধ ও বাসারস পান করিবে, **ম**থবা বরী, দ্রাহ্মা, বলা, ও শুষ্ঠিসিত্ত জল, পৃথক্ রূপে পান করিবে বরী, বিদার, পণ্যা, বাসক্ষহিত বলাত্রেয়, খদণ্ট্রা মধু ও স্থাতের যোগে লেছন করিলে ক্ষধরোগ বিন্ট হয়। মধু দৈদ্ধব মৃত্রেদহিত পথ্যা, শিগ্রকরঞ্জ, অর্ক ও ত্বক্সার, বিদ্রাধ্রোগ বিনাশ কবে। পরিপাকের নিনিত তন্ত্র।জৎ 🕍 শস্ত। তির্তা, জীবতী, দতী,মঞ্জিতা, নিশাৰ্য, ছার্কজ, নিম্বপত্র ইহাদের লেপ, ভগন্দররোগে প্রশাস হয়। রুণ্ঘাত, রজনী লাকাচুণ, অজ ও কোদ্রসংযুক্ত বস্তবর্তি, ত্রণরোগে প্রয়োগ করিবে, হুবারা ব্রণের গভিরোধ ও শোধন হুইবে! মুরীচ-হিত শ্যামা, যষ্টি, নিশা, লোগ্র, পদ্মক, উৎপল চন্দন এবং ক্ষীরহোগে স্ততিতলে এই দকল ত্রণনাশক হয়। শ্রীকার্পাদ দলের দহিত, ভক্ম ফল ও কিঞিৎ লবণযুক্তা নিশা এবং ভাত্রপাত্তে

তাহার পিণ্ডাম্বেদে তৈলিঘাগ করিলে ক্ষতরোগের ঔষধ প্রস্তুত হয়। অগ্রিদার কুঞ্জীসারে **ভূম্বো**গ করিয়া ত্রণোপরি লেপণ করিবে। স্তযুক্ত নারি-टकल ७७कारयांश कतिरल द्वन विम्खें इस । विश्व অঙ্গমোদ, সিদ্ধর্থচিঞাছকের সমান অভয়া, তক্র ও উষ্ণাস্থু যোগে পান করিলে অভিসার রোগ বিনাশ করে। সমন্থিত পুরাতন অভিদার ও রক্তশূলরোগে, বৎদক, অভিবিধা, বিশ্ব, বিশ্ব মুস্ত সহিত হৃতজল পান করাইবে। শ্লরোগী ব্যক্তি, অসারদগ্ধ হুগত ও সিন্ধু উষ্ণজনের সহিত পানকরিবে, সিন্ধুহিঙ্গুকণা অভয়া সেবন করিবে। মধ্পুত বস্ত্রছিদ্রগত, কটু রোহৎকণা তক্ষচুর্ণ ও লাজচুর্, মুখমধ্যে রাখিয়া দিলে ভূকা নিবারণ হয়। জাকার মূল ও তাহার ফলতারের সহিত অগ্নিদিদ্ধ পাঠাদাববী ও জাতিফলের কাথ মধুযোগে কবল গ্রহণ করিলে মুখদোষ বিনাশ করে। ्বা, অতিবিষা, তিক্ত ইন্দ্রদারু, পাঠা পরোমুচ এই সকলের কাথ ও মৃত্রে স্থত কোনে, সর্বপ্রকার কণ্ঠরোগ বিনাশ করে। পথ্যা, গোক্ষুর, ফুস্পার্ণ রাজরুক্ষ ও শিলাভিদ এই সকলের ক্ষায় মধুব সহিত পান করিলে মু**একুচ্ছু রোগ বিনাশ** পায়। বংশস্বকের ও বরুণের কৃথি ও শক্রা অর্শ বিনাশ করে। শ্লীপদীনর শাথোটের কৃথি ও ক্লোদ্রসহ ক্ষীর ভোজন করিবে। মাদ, অর্কছক, হুম 💩 তৈল, মধুসিক্ত দৈন্ধব, জাল কুকুটজ স্বত ইংগরা পাদবোগ হরণ করে। অগ্রিমান্দ্যরোগে শুগী, সৌবর্জনা, হিঙ্গুচূর্ণ শুগী রদের সহিত ল্লত বা कांग एकन कतिरवे। मीला, त्मीवर्कना,व्यां, दिन्न, এই সকলের রসযুক্ত বিড়দীপ্যক্ষুক্ত জ্ঞ (ছোল) পান করিলে গুলা রোগ বিনষ্ট হয়। বছমুত্রী, শুঠী, দারুণ বা ক্ষীর, এই সকলের কাথ পান

ক্রিবে। ত্রিক্টু, সংয়ারজঃ, কার ফলকাথ, শোধ রোগ বিনাশ করে। শুড়শিতা ও ত্রির্থ সহিত এবং দৈয়বগুভিকা যুক্ত ত্রিবৃতার ও ফলকের কাথ গুডুযোগে বিরেচক হয়। বচ ও ফলের ক্ষায়োথিত জল ব্যন্কারক। শতদলপরিমিত ত্রিফলা এবং পৃথক রূপে দশ ভাগ অগুরুচ্ণ, দশভাগ বিভঙ্গ ও লোহচুর্ এবং শতাবরী, গুড়চী ও জেগুকিলোরে বিংশতি অধিকি শত ভাগা, মধু, সুত ভ তিল তৈলের সহিত লেহন করিলে জরাজনিত বলি অর্থাৎ অচ্তরঙ্গ ও পলিত অর্থাৎ জরাজনি চ কেশশুক্লতা জন্মিতে পায় না এবং ভাষারা সর্বা-রোগ বিবৰ্জিত হইয়া শতবর্ষ জীবিত থাকিতে পারে। মধুশক্করি স্থিত ত্রিফলা স্বব্রোগবিনাশিনী হয়। কুঞ্চার সহিত ত্রিফলা ও পথ্যা-চিত্রক শুঠী ও গুড়চীর এবং মুদলীর গুণ্ডিকা (গুড়ে) পর্করা মধুও হাতের সহিত গুড়:যাগে ভক্ষণ করিলে সর্ব্যরোগ বিন্ট হয় এবং তিন শত বংসর পর্য্যন্ত পরমায়ু লাভ করিতে পারে।

জবাপুষ্প কিঞ্ছিং চূর্ণ করিয়া পিণ্ডাকার করিবে, তদমন্তর উহা জনে নিক্ষেপ করিলে মতা-কার তৈল হইবে। কিঞ্চিৎ জবাচুর্নে জনযোগ করিয়া র্ষ ও দংশের জরাগুসহিত ধুপার্থ বর্ধাৎ তাহাতে অগ্নি প্রদান করিলে আক্রয়ান্দর্শন হইবে। উহাতে পুনর্কার মাক্ষিকমধুযোগ করিয়া ধূপিত করিলে সেইরপই চিত্রদর্শন হইবে। কপুর ও জলোকার ও ভেকের তেল পাটলি গুলের সহিত পেষণ করিয়া উভয় পদে প্রশেপ প্রদান করিলে মানবর্গণ স্থাপন্ত অন্ধারের উপরিভাগ দিয়া বিচরণ করিতে পারেন এবং তন্থারা ত্লোখানাদি এক-জিত করিয়া কেছিক প্রদর্শন করিতেও পারা যায়। ইহা বায়া বিষ, গ্রহরোগ ধ্বংস হয় এবং

ইচ্ছাতুসারে কুদ্রনর্ম অর্থাৎ কুদ্র কুদ্র ক্রীড়াও করা ঘাইতে পালে।

এই আমি তোমার নিকট ধট কর্ম ও সিদ্ধির বর্ণন করিলাম। মন্ত্র, ধ্যান, ঔষধিকথা, মৃদ্রা, যজা ও মৃষ্ঠি চতুর্বর্গদকল যাধাতে উক্ত হইয়াছে, যে ব্যক্তি তাহা প ঠ করেন, তিনি স্বর্গামী হয়েন।

ইত্যাগেলে আদিনহাপুরাতে নানাবোগহর ঔষধ নামক তিনবভাধিকদিশতভ্য অব্যায়।

চতু^{ৰ্}বভ্য**ধিকদ্বিশত**ত্য অধায়।

মন্ত্ররপৌষধ কণন।

ধন্বস্তরি কহিলেন, ওঁকারাদি মন্ত্র, আয়ুক্ষর, আরোগ্যকর ও স্বর্গপ্রদ। ওঁকার পর্মমন্ত্র ওঁকার মন্ত্র জপ করিয়া মর্ত্ত্যপণ অমর হইতে পারেন। গায়ত্রী প্রথমন্ত্র, ভাহা জপ ক্রিয়া মান্বগণ ভোগনোক্ষ প্রাপ্ত হর। "ওঁ নমো নারায়ণায়" এই মন্ত্র দ্বার্থের দাধক। "ভং নমো ভগবতে বাজ্যের এই মন্ত্র সকাপুরুষার্থ প্রদান করেন। "ওঁ হুং নমে। বিষ্ণবে" এই মন্ত্র পরমেষিধ, এই মস্ত্র বার বার বার প্রায় করিতে ও নীরোগ হইতে পারেন, সন্দেহ নাই। জীবগণের উপকার ও ধর্মাই মহৌষধ,উপকারপরায়ণ ও ধর্ম-রত হইলে রে:গদকল দুরেই অবস্থান করে। ধর্ম, সদ্ধারুৎ, ধর্মী এই সকল ধর্মে নির্মান, জীন, জীন, জীনিবাস, জীধর, জীনিকেতন, জীপতি, জীপরম, হরির এই সকল নাম ছারা নরগণ জীলাভ করিতে পারে। কামী, কামপ্রদ, কাম, কামপাল, হরি, আনন্দ, মাধব, এই সকল নামে শর্ককাম লাভ করিতে পারা যায়। রাম, পরভরাম, নৃসিংহ, বিষুং, তিবিক্রম, এই সকল

बाब क्षण कतिहा नर्साख विकास नांच इस । विकास क्षान भीन अद्भग भूकरशंख्य नाम क्रम कविरव। नुकशाक नाम अटल जक्रियोग विमान नीय। উষ্ধকর্মে ছ্যীকেশ নাম জপ করিলে কোন্ত ভয় থাকে না। অচ্যুত ও অমৃত মন্ত্ৰ জপ করিলে न औरम भ्राक्षय धांछ इस मा। कंत्रभारत मोत-गि**९** इ. स. स. स. के विद्या মঙ্গলাকাজনী মানব পुर्वापि पिक हजूकेरत हजी, गणी, गांशी उ अड़शी যথাক্রেয়ের করিলে কল্যাণ প্রাপ্ত হয়। সর্বা-,কালে নারায়ণ শ্বরণ, সব্বকল্যাণের হেতুভুত হয়। দুদিংহনামে সর্কবিধ ভয় দূবীভূত হয়। গরুড়ধ্বজ নাম সারণে বিধনাশ হয়। বাস্তদেব নাম নিরম্বর জপুরা। ধান্যাদি স্থানে ও স্থা ব্দনস্ত ও গঢ়াত নাম উচ্চারণ করিবে। ভুংস্বপ্নে नाताग्नन, नाशामिट्ड जनभाशी अ विन्यार्थी इयजीन, স্তপ্রার্থী জগৎসূতি, শৌবকার্য্যে বলভদ্র নাম উচ্চারণ করিবে। এই দকল নামের মধ্যে যে কোন নাম অর্থাধক হয়।

> ইত।াথেয়ে আদিমহাপ্রাণে মধৌষধকথন নামক চতুনবতাধিববিশততম অধ্যায়।

পঞ্চনসভ্যধিকদ্বিশতভ্য অধ্যায়।

মৃত্যঞ্জীবনীকর সিদ্ধযোগ।

ধশন্তরি কহিলেন, সর্কবিধ ব্যাধিনাশন আত্রেয় কণিত দিব্য মৃতসঞ্জীবনীকর সিদ্ধযোগ সকল পুন-র্কার বলিব, প্রবণ কর।

আত্রেয় কহিলেন, বাতিকক্ষরে বিহাদি পঞ্ মূলের কাথ প্রশন্ত জানিবে। পাবন, পিপ্পলীমূল গুড়চী ক্থবা বিধরত আমলকী, অভয়া, কৃষণ ও

বহিং সর্ববন্ধর বিনাশক হয়। বিশ্ব, অগ্নিমন্থ, टिगानक, कांभाती, (क्ट्रेंग) शांत्रमा, विशे, क्रिके, পুমিপর্ণী, বৃহতী, কণ্টকারিকা ইহারা ছারের অপরিপাকাবস্থার উপকারক হয় এবং পা্র্য-বেদনাদি ও কাশ বিনাশ করে। কুশমূল, গুড় চি. পর্ণটী, যুত্ত, কিরাত ইহারা বিশ্বরোপের ঔষ্ধ। এই ঔষধপঞ্চের নাম পঞ্চন্দ্র; বাতপিও স্কুরে ইহা বিধেয়। ত্রিবৃং, বিশাল, কটুকা, ত্রিকলা, আরগৃধ, এই সকল বস্তু অগ্নিযোগে দংস্কার করিলে ভেদক কৃথি হয়, তাহা সর্বজ্যবিনাশক। দেবদারে, বলা, বাদা, ত্রিফলা, ত্রিকটু পদাক ও বিড়ক্স ও শর্করা ও শর্করাতুল্য বিড়ক্ষচুর্ণ পঞ্চকাশ বিনাশ করে। দশমূনী, শঠী, রাম্লা পিপুপলী, বিল ও পৌষরশৃঙ্গীত, আমলকী, ভাগী, গুড়ুচী ক্ষায় পান করিলে, কাশ, গ্রহণী, পার্ষরোগ, হিকা, খাদ, এই সমস্ত রোগই প্রাণমিত হয়। মধুনুক্ত মধুক, শর্করান্বিতা পিপ্পলী, গুড়দংপুক্ত নাগব, ও লবণতায় হিকারোগ বিনাপ করে। कातना, जाजी, मतिह, लाकी, तकाम भाष्ट्रिय, দৌবৰ্চল, গুড়, কোঁদ্ৰ, দৰ্ববিধ **অক্লচি নাশক** হয়। মধুবদহিত শৃঙ্গৱেররদ (আত্রেক রস্) পান कतारेटन भक्ति, धान, काम ७ धार्डिमात्रकण রোগ হরণ করে। বট, শৃঙ্গী, শিলা, লোএ, দাড়িম, মধুক ও মধু, ততুল জলের সহিত পান করিলে দর্দ্দি ভৃষ্ণা নিবারিত হয়। গুড়ুচী, বাসক' পিপুপলী কোত্রসংযুক্ত লোধু কফাখ্রিতরক্ত রোগ এবং ভৃষ্ণা ও কাশজুর বিনাশক হয়। বাদকেররুস ও মধুযুক্ত ভাত্রজাতরদ মেইরার কাশাদি নাণ করে। শিরীষ-পুষ্প হারসংযুক্ত মরিচও হিতকর হয়। মদুর, দর্কারোগহর, ভুওলদার।দি পিত-বিনাশক। নিগুপ্তী, শারিবা, শেলু রঙ্গোল বিব

बालका पुर्वादवादश क मूर्गदवादशः मारक्षिक মুক্তা, প্রান্থ হাইতে উদ্ভুত পুক্তর (পর্যা) এই-সকলের কণাযুক্ত কাম গান করিবে। ছই ছই পল পরিমিত, হিন্মু সোর্মেল ও ত্রিকটুর সাহত আঢ়ক পরিষিক ছক চতুগুণ গোনুরে সিদ क्तिमा प्रकार क्तिल ख्रेमान्द्रांश विन्धे हम। শমপুষ্পা, বঢ়া ও কুঠের সহিত সৈম্বৰলবণ প্রাক্ষ-রণরংযুক্ত করিয়া ভক্তণ করাইলে পুরাতন অপ স্মান্ত উন্মাদবোগ বিনাশিত করে; এই ঔষধ প্রম প্রিত্রতা সম্পাদন করে। অভয়াযুক্ত পঞ্ গ্রাও মুক্ত কুর্তনাশ করিয়া দেইরূপ পবিত্রতা সম্পাদন করে। পটোল, ত্রিফলা, নিম্ন, গুড়্চী ধাবনী, বুম ও করঞ্জের সহিত পরু ঘৃত কুষ্ঠ বিনা শক, ত্ৰেই স্থাত বক্সক নামে অভিহিত হয় ৷ নিম্ব পটোৰ বাজী, গুড়ুচী ও বাসক, এইসকল দ্ৰব্য পৃথক্ পৃথক্ উত্তমরূপে কুটিত করিয়া এক এক দ্রব্যের দশপল পরিমাণে ভাগ গ্রহণ পূর্বক জল-দ্রোণে পাক করিয়া একপান (সিকি) অবশিউ থাকিতে নামাইয়া তিফলা ও শর্করাসংযুক্ত এক প্রস্থ মূত, সেই দ্রব্যে প্রদানপূর্ব্যক পাক করিবে, ইছাই পঞ্জিঞ্জ খুত নামেখ্য,ত, ইহা কুছ বিনা-শিত হয়। ইহার অপরনাম যে গবাল, ভাস্কর যেমন ভিমির বিনাশ করে সেইরূপ ইহা অশীতি প্রকার বার্ডছরোগ, চছারিংশৎপ্রকাব পৈত্তিক-রোগ, বিংশক্তি প্রকার শ্লৈন্মিকরোগ, কাশ, পীনস, অর্শ ভব্রেণারি অক্স নান্যবিধরোগ, সংহার করিয়া উপদংশ প্রশামনের নিমিত্ তিফ্পার করাঘ ওভুকরাজের রস্থারা ত্রণপ্রকালন করিবে : অথবা, পটোলপত্র চূর্ণের সহিত দাড়িম হকের গুণ্ডিকা, ত্রিফলাচুর্ণ ও গজের সহিত পুনর্কার অঁভাইয়া উপদংশকতে প্রদান কবিবে। ত্রিফলার

किया, रक्षि, मार्कर, केंद्रश्रेक, व्यक्तिक के देवसामा সহিত তৈল লাক কৰিয়া কৰ্মৰ ক্ষিণে ইকিলাল हरक्त महिक वाकेंग हन, 'श्रीकृतिकिस अहम कि উৎপলের সন্মিত কুড়ৰপরিক্রিড ভৈন্ধ পাস্ক ক্ষরিয়া নস্য গ্রহণ করিলে পলিড় (১) দ্বাপ্ত হয় ; নিছ, পটোল, তিফলা, গুড় চি, খদির ও বুর এই স্কর্ বস্তুর সন্মিলন, এই যোগৰয় (২) অর্থাৎ এই ঔষধ দ্বয় জ্বর কুষ্ঠ বিশেষ্টে কালি বিনাশ করে। পটোল, অমৃত, ভূনিম্ব, বাসা অরিষ্ট ও পর্ণটের যারা কাথ প্রস্তুত করিয়া তাছাতে খনির নিকেপপুর্বক পান করাইলে,বিস্ফোটছর প্রশমিত হর। দশমূলী, ছিলক হা, পথ্যা, দাক, পুনৰ্বা, শিগ্ৰু ও বিশ্ব-জিতা, ছর বিজ্ঞধি ও শোপরোশে (১) হিতক্ষর হয়। মধুক ও নিম্নপত্তের লেপ ছারা তান শোধন হয়। ত্রিফলা, থদির, দাববী, ষট, অভিবলা ও কুশ এবং নিম্নপত্রের ও মূলকপত্রের ক্যায় ত্রণশোধনে হিতকর হয়। করঞ্জ অ'রফ ও নিতা ভির রদ ব্রণ-क्यि मक्न विनान करता शास्त्रकी, हमन, वना, সমঙ্গা, মধুক, উৎপল, দাব্বী ও মেদেব লেপ মুত সংযুক্ত করিয়া প্রদান করিলে ত্রণরোগ বিন্ত হয়। গুগুগুলু, ত্রিফ্লা ও ত্রিকটুর সমভাগে স্থত যোগ করিয়া প্রদান করিলে নাড়ীত্রণ ও তুই ত্রণ শূলবোগে হিতদাধন করে এবং ভগন্দর ও মুখারোগ বিনাশ করে। হরীতকী গোমুত্রে সিদ্ধ করিয়া তৈল ও লবণসহ প্রতি প্রাভঃকালে ভক্ষণ করিলে ক্ষ বাত বিনষ্ট হয়। কফবাতাত্মক রোগে ত্রিকটুন ও

⁽১) জরাক্ষতি কেশ**ুক্তা--প**লিত।

⁽২) বেংগা— ঔষধ ভেষজা। যোগা:— বিজ্ঞালি ভেষ্জং। ই ভ্যাদি মেদিনীকঃ:।

⁽০) অন্তর্গ, তাহা গুংহা, বজিমুখে, নাভিতে, বুংক, সীহা দিকে অণ জন্মাইল উৎপন্ন হয়।

जिल्लान कामानिकारण महत्यात्म गाम समिर्देश के दलांको विद्यारम संसाहित्स संस्कृति विस्ति एत । পিশ্পলী ৪ শিপ্শানীল, বচা, চিমাক ও নাগর क्षेत्र मकरमात्र साथ क्षत्रक कतिया भाग कतिया ক্ষানবাড় বিনষ্ট হয়। আমবাত সর্বাঙ্গে ব্যাপ্ত इरेगा निक-अर्चि-मञ्जागंड इरेग ताला, ७५ ही, अत्र ७, रनवनाक के मत्क्षीयथ (चर्छी) अहे नकन বিদ্ধ করিয়া পাম করিবে: অথবা নাগরজলের #ভিত দশমূলের কষায় পান করিবে। শুঠী-গাক্ষু,রর-কাথ প্রতি প্রাতঃকালে পান করিলে আখবাত দহিত কটিশূল পরিপাক করিয়া রোগ বিনাশ করে। প্রসারিণীর মূল পত্র-শাখার তৈল, গুড়ুচীর রদ, কক অথবা চূর্ণ বা কাথ বহুকাল সে**নন করিয়। বাতশোণিজ রোগ হইতে মুক্তিলাভ** करता भिश्ननी वर्धवा वर्षमाम स्मवन कतिरवः কিমা গুড়ের সহিত পথ্যা সেবনীযা। পটোল, ত্রিফলা, তীত্রকটুক, অমৃত এই সকল একত্রযোগে পাক করিয়া তজ্জল পান কবিলে শীঘ্রই সলাহ-বাত-শোণিত বিনষ্ট হয়। গুগগুল, ক্রোটা, (ইঙ্গুদীফল শীত (বেতস) এবং ত্রিফলা জলের সহিত গুড়াটা এই সকলের জল বলা, পুনর্বা, এরও, রহতীশ্বর ও গে৷কুরের সহিত হিঙ্গু ও লবণ যোগে পান করিলে সদ্যুষ্ট বাতরোগ বিনাশিত हरा। कार्विका, भिभ्मनी मृत, भश्चनवर भिभ्मनी, চিত্রক, শুগাঁ, জিফলা, জিব্লডা, বচা, কারদ্বয়, भावता, परडी, चर्गकीती, विधानिका, मोवीवक-যুতা, কোল প্রমাণ গুটিকা পান করিবে অর্থাৎ निक कतिशा देशायत काथ भान कतिरत; छाहा েশাপরোগে হিতকর। শোপ পরু হইয়া উদর স্ফীত করিয়া দিলে তির্তা হিতকরী হয়। ক্ষীর, দারু এবং নাগর দহিত বর্ষান্তু এই সকল

जिते! तथील केंद्रवं केंद्रवं । **अस्ति अस्तिकारण** वर्षाकृत क मिरमक कारचन रमक दे लिकिक में करेंक हैं किया পত্ৰ তাহার ভিন্তণ ভশ্মকলে বিক্টুৰ্ক হ'ড নি করিয়া পান করিলে কর্পনিপাঞ্চাইর সাক্ষেই সাক্ষি विधक्रमन, भव, मिथ की, लवशब्क क्रिक्स क्रिक्स অনল সিজুপ, রাস্ত্রাগ্র, কারদারতর সহিত্ত সিজান কটুদ্ৰব্য বিশিষ্ট চভুগুণ ভৈল সিদ্ধ করিয়া ঔৰ্থ প্রস্তুত করিয়া তদ্দার। গওবালা রোগ জয় করিছেই ঐ তৈল গাত্তে অকণ করিলে গলগও অপনেপদৰ করে। শতী, কুনাগ ও বলর এই সকলের কাব ও कोवतगबुक वयमा।, निन्नती, वाना, कव्ह निह করিয়া পান করিলে ক্ষয়রোগে হিভাকর হয়। বচা, বিট, অভয়া, শুণ্ঠী, হিন্দু কুঠ ও অগ্নিদীপক এই সকলকে ক্ৰমে ছুই, তিন, ছয়, চারি, এক, দণ্ড ও পঞ্চাংশে বিভাগ করিয়া চূর্ণ করিয়া ভক্ক করিলে বা ইহাদের কাথ পান করিলে, গুলাও উদররোগ, শূল ও কাসরোগ বিৰাশ করে। পাঠা নিকুত, ত্রিকটু, ত্রিফলা, অগ্নিতে পাক করিয়া চ্ৰিটিকা প্ৰস্তুত করিয়া গোমূত্রের সহিত ভক্ষ कतित्व ख्या ७ शीशानित्तां मर्मन करता বাদা, নিম, পটোল ও তিফলা, বাডপিত বিনাণ করে। ক্ষোদ্রের সহিত বিভৃত্ম চূর্ণ লেহন করিলে-ক্রিমি বিন্ট হয়। বিভূ**ল** দৈয়াৰ কার যুৱা **দহিত** हती उकी, अदर भंझकी, रमती, असू, शिंगान, भाख-ও অর্জ্নত্ত, এই সকলে মধ্যকণ করিরা হ্যান যোগে পান করিলে, পৃথক্ পৃথক্ শেলিভ রোগ নি গাবণ করে। বিল্প, আত্র, ধাতকী, পাঠা, 🛡 ঠী ও মোচা, এই দকলের রস, দমাংশে আৰুশ করিয়া গুড় ও তক্রের সহিত পান করি**লে হুর্জন্ন অ**তীসার cain चिवांत्रण करत्र। कारकती, Coim, मधित জল নাগর ও কাব সংযুক্ত করিয়া কাথ বহিকরণ

পुर्वक वृक्त त्यारंग भाग कतिरल अम बर्म () রোগ নিবারিত হয়। বিভঙ্গ অভি বিষা, মুক্ত, नातः, भाष्ठा, कलिक्क, मङ्गीहरवारण चन्नन कतिरल, লোথাতিদার বিনাশ প্রাপ্ত হয়। শর্করা, দিন্ধু, ও শুগীর সহিত অথবা কৃষ্ণা, মধুও গুড়ের সহিত চুই ছুই হুরীতকী জক্ষণ করিলে, স্থী থাকিয়া শতবর্ষ জীবন লাভ করিতে সমর্থ হয়। ম্ধু ঘু ত যুক্তা ও পিপপনী যুক্তা ত্রিফনা ও চুর্ণ আমলকে স্থারস (বোল বা তুলসী) সংযুক্তা কবিয়া মধ যুত শর্করা সংযোজন পূর্বক লেহন কবিষা দ্রীব নিকট শয়নাত্তে তৃগপান করিবে। মাস, পিপ্পলী শালী ? তত্ল যব ও গোধুম এই সকল চুৰ্ণ কৰিয়া সমভাগ গ্রহণ পূর্বকে পিপ্পলা ও বংশবোচনাব সহিত পাক করিখা ভক্ষণান্তে শর্কবা যুক্ত। ত্রঞ্ পান করিয়া স্ত্রীর নিকট গমন কবিলে তরুণগণ চটকের ম্যায় দশবার হস্তন করিতে পাবে। সমঙ্গা ধাতকী পূজা, লোধ, নীলোৎপল, এই দকল তুম সহিত ভক্ষণ করিলে জ্রীগণের প্রদর রোগ বিনাশ করে: এবং কুরণ্টকেব বজ মধুক ও (चंड हन्मन ७ हिडकं इहर। প्राचा ६ भरता ६ भरता । ষ্ধৃক্ শর্করা, তিল এই সকল দ্রব্য গভ্সাব রোগে প্রযোগ করিলে গর্ভ স্থায়ী হয়। দেবদারু, । नजः, कुर्छ, नल ७ विश्वास्त्रक अर्थाद स्थी अह দকল দ্ৰব্যে কাঞ্জিক যোগে লেপ প্ৰস্থুত কবিয়া তৈল যোগে প্রদান করিলে শিরোরোগ বিনষ্ট ঈষতুষ্ণ দৈশ্বৰ লবণ, বস্ত্ৰপুত করিয়া কর্ণ বিৰবে নিক্ষেপ করিলে কর্ণশূল রোগ বিনাশিত হয। লভন, আদেকি ও শিগু এই সকলের রদ অথণা কেবল কদলীর রদ, বলা শতাব্দী, রালা

ও অয়তা এই সকল সৈরীয়ক ধোগে পান করিলে এবং ত্রিফলার সহিত য়ত ভোজন করিলে তিমির রোগ (১) বিন্দট হয়। ত্রিফলা, ত্রিকটু ও দৈন্ধণের সহিত দিঝ সুত্রপান করিলে, চকুর স্বাস্থ্য ও ঐজ্জন্য হয়, এই ঔষণ ভেদকারক মনোহর. অগ্রন্দীপক এবং কফ বিনাশক। 🕽 নীলোৎপলের কিঞ্জল্প ও গোময়ের রদের সহিত গুচিকাঞ্চন প্রস্তুত করিয়া প্রদান করিলে দিশার ও রাজ্ঞান্ধ রোগ নিবারিত হয়। ষ্টিমধুবচাও কৃষ্ণাবীজ কুজটের ও নিষের ফলের সৃহিত আলোডিত করিয়া যে ক্যায় হয় তাহাতে বমন করান যায়। সিন্ধ ও স্বিল্ল যাব জলখোগে ভক্ষণ কৰাইলে বিৱে-চন হয়। অভ্যপ্রকাবে গোজিত করিলে মন্দাগ্লি ও গুরুতর অরুচি বিনক্ট হয়। পথ্যা দৈয়াৰ কুফার চুর্ণ, উষ্ণ জানের দ'ছত পান করিলে বিরেচন হয়, ইহাব নাম নাবাচ ওষধ, এই ঔমধ উৎকৃষ্ট, ইহা স্বিরোগ বিনাশ কবিষ্য থাকে। আত্রেয় ঋষি, যে সকল সিদ্ধযোগ মুনিগণকে প্রদর্শন করেন দেই দৰিবোগহৰ উত্তন যোগ দকল শু**্ৰ**চত প্রাপ্ত হইলেন

ইঙ্গামি যুগ্ধনহাপুৰতি মুশ্স স্বনাকংশিদ্ধযোগ নামক শেকনঃভাধিকভিশতভ্য অংখায়ে।

যগ্রতাধিকদিশততম অধায়।

কল্প সাগর।

ধয়ন্তরি কহিলেন, আয়ু: প্রদ, রোগবিমর্দ্ধক ও মৃত্যুঞ্জয়কল দকল বর্ণন করিব, অবহিত হইয়া প্রবণ কর। মধু, ভার্য্য, জিফলা ও অমৃতা সেবন করিলে রোগ সমুদায় বিনাশিত হয় এবং তিনশত

⁽১) শুদ দেখ , প্রজন্প বোগ।

⁽১) অক্ষিব চভূর্থ পটলগভ বোগ বিলেব।

বংদর পর্যান্ত আয়ু লাভ করিতে পারে। পল, প্রার্দ্ধ বা কর্ম পরিমাণে (১) ত্রিফলা সেবন ক্রিলে ও তিন শত বৎদর পর্যান্ত প্রমায়ু প্রাপ্ত হয়। মাদ পরিমাণে (একমাষা) বিল্ল তৈল নাশিকা দারা গ্রহণ করিলে পঞ্চাত বংসর আয়ুলাভ এবং কৰিত্ব শক্তি হয়। ভল্লাভক ও তিল এই চুইটি দ্রব্যের উপযোগে রোগ অপমৃত্যু ও বৃচ তর্ক নিবারণ করে। ছয় মাদা পঞ্চিক বা কুচাঁচুণ, খদিরোদক ও কাথের সহিতে নীল কুরুণ্টক চুর্ণ দেবন করিলে কুণ্ঠজয় কবিতে পারা জীৰ বামধুর <mark>সহিত থও হৃদ ভোজন</mark> করিয়ে শতায়ু হুইতে পারে। **প্রতি** দিন প্রাতঃকালে পল পরিমাণে মধু, আজা, ভণ্ডী, দেবন করিলে মৃত্যুকে জগ্ন কৰিতে গারা হায়। মাওকা চুৰ দহিত দুগ্ন পানী, বাজি বলি পলিত ভয় কৰিয়। দীৰ্ঘ জীবন প্ৰাপ্ত হয়। উচ্চটা ও মধুর সৃহিত্ কর্ম পরিমাণে প্রঃপান করিলে নর গণ মূড়া জয় করিকে পারে। সিনিমধু, য়ত ও তুথা স্হিত্নিগুণ্ডী সেপন করেন তিনি রোগ ও মৃত্যুকেও বিজয় করেন। কর্ম পরিমিত পলাশ তৈল ছয় মাদা মধুর স্হিত পান ও গুণ্ধ ভোজন করিলে মানবগণ পঞ্শতী (২) বা সহস্রায় হয় জ্যোতিমতী পত্তের রম ও ছুংগর সহিত তিফল। ও মধ্র দহিত ঘূত একপল শতাবরী মধূবা ছাঞ্রে সহিত্বা মতের সহিত নিগুণ্ডী দেবা করিলে রোগ ও মৃত্যুকে জয় করিতে পারা নিজ চুর্ণের পঞ্চাঙ্গে; থদির কাপ দংযুক্ত করিয়া কর্ম পরিমাণে ভূঙ্গরাজ রদের সৃহিত দেবন করিলে A Lenner Sireet

রোগ জিত ও অমর হয়। রুদন্তিকা আজ্য মধুভোজাও হুয় ভোজী মৃত্যু জয় করে। কর্য পরিমিত হরীতকী চুর্ণ ভূঙ্গরাজ রদের সহিত সংযুক্ত করিয়া স্বত ও মধু সহিত দেবন করিলে রে!গ বিজয় পুরঃদর নরগণ ত্রিশত বর্ষ আয়ে লাভ করে। বারাহিকা, ভৃঙ্গরস, লোহচূর্ন, শতাবরী এই দকল ঘূত যুক্ত করিয়া কর্ম পরিমাণে, পান করিলে পঞ্পতী বর্ষ পরামাগু হয়। কার্ত্ত চূর্ণ শতাবরী, এবং ভৃত্রাজ সহিত মধুয়ত দেবন করিলে ত্রিশতী বর্ষ পর**মারু হয়। তান্ত্র, মৃত** ও মৃত তুলা গদ্ধক ও কুমারিকা, রদ হারা মার্চ্চিত করিয়া দ্বত দহিত দুই গুঞ্জ। পরিমাণে দেবন করিলে শঞ্শতাব্দ আয়ুলাভ করে। অখগন্ধা পল পরিমিত তৈল ও সন্মত খণ্ড সেবনে শতায় পলপরিমিত পুনন বাচ্ৰ, মধু-আজ্ঞ্য-তুগ সহিত পান করিলে এবং পল্মাত্রায় অশোক-চ্ব ও ছুগ্ন মধু সহিত পান করিলে রোগ বিনষ্ট হয়। মধুর সহিত তিল তৈলের নসা আহণ করিলে কেশে শ্যামত। ও শতবর্ষ আয়ু লাভ ক**রে। ম**ধু, য়ত হুদ্দ দহিত কর্ষপরিমিত অক্ষপানে (১) মনুষ্ শতায় হয়। য়ত ও মধুরাদির সহিত গুড়ুসংহিত অভয় (হরিতকী) ভক্ষণ করিয়া হুগ্ধান্ন ভোজন করিলে রুফকেশ, অরোগী ও পঞ্চাক্দলীবী হয়। পলপরিমিত কুমাণ্ডিকাচূর্ণ মইুআজা-ছুগ্ধ সহিত পান এবং মাষ্প্রিমিত হুয়াল ভোজন ক্রিলে রোগর হিত হইয়া সহস্রায় হইতে পারে। শালুকচুণ্ও আজামিশ্রিত ভূক মধু ও আজা সহিত সেবনে শতালু হয়। কর্ষপরিমিত কটু তুষী ফলের তৈলের নস্ট দিশত বৎসর জীবিত

^{ি (}১) পল বৈদ্যক মতে জাই ভোলক। কই, বৈদ্যক মতে ্ জুই ভোলক।

⁽२) भक्षभाठी-भक्षभाठनगंभीती। मध्याद्ः मध्य वर्षकीती। । हेर्ड (मानिनी करः।

⁽১) चक्---(मोब्छन, कृष्ण्यरगः खक्कः (मोब्फलः जूपः। िंड (समिनीकदः।

রাথিতে পারে তিফলা, পিপ্ললা ও শুণী দেবনে তিশত বর্ষ পরমায়, হয়। পূর্ব্বাক্ষের সহিত শতাবরীর সংযোগে দেবন করিলে সহস্রবর্ষ জীবন ধারণ করিতে পারে এবং বিশেষ বলশালী হয়। ত্রেফলা, পিপ্পলা ও শুণীর সহিত চিত্রকের যোগ এবং শুণী বিভূপদংযোগ এবং লোহ শুস্করাঙ্ক, বলা,নিম্বপক্ষক, ধদির, নিপ্তানী, কণ্টকারী, ইহাদের সংযোগে প্রস্তুত বটিকা এবং বাসক,বর্ষাভূবা বর্ষাভূর রস হারা প্রস্তুত বটিকা এবং বাসক,বর্ষাভূবা বর্ষাভূর রস হারা প্রস্তুত বটিকা, অথবা স্তুত কিছা মধুর বা কিছা জলের সহিত্ত ঐ সকল দ্বেরের চুর্ণকে হুং স এই মন্ত্র দারা অভিমন্ত্রিত করিলে উহার নাম যোগরাজ হয়। ঐ যোগরাজই মৃতস্ঞীংনী ভূল্য হইয়া রোগ ও মৃত্যু জয় করে। এই সমস্ত কল্পাগর স্থরাস্র ও ম্নিগণ দেবন করেন।

ইতার্য়ে আন্দিনহাপুরাণে কর্পণাগাংনামক ষ্যানব্ভাধিক্তিশতভ্য অধ্যায় :

সপ্তনবত্যধিকদ্বিশতত্ম অধ্যায়।

গছ চিকিৎদা।

পালকাপ্য কহিলেন, হে লোমপাদ! আমি তোমাকে গঙ্গগণের লক্ষণ ও চিকিৎসা কহিব, প্রবণ কর। দীর্ঘহন্ত ও মহানিঃখাসবন্ত গজগণ প্রশান্ত ও সহিষ্ণু হয়। বিংশতি নথ হয়, এবং যাহা-দের দক্ষিণ ভাগে স্থিত ও উন্নত দন্ত এবং বৃংহিত ফর্গাৎ শক্ষলদত্ল্য, কর্ণযুগল বিপুল এবং যাহা-দের স্থানি সূক্ষা সূক্ষা বিন্দুজালক (১) বিদ্যানা আছে সেই দকল হন্তীই ধরিবার যোগ্য। যে হন্তীগণ, বামন ও সংঘুশ (১) এবং যে হন্তিনা পার্বগভিণী এবং যে মতক্ষপণ মৃচ্,তাহারা ধার্য नरह। वर्ग, मख, वल, ऋभ, कांखि, मःइनन वर्श् সুল কঠিনদেহ, বেগ, এই সপ্তগুণবিশিষ্ট গজগণ্ই, শংগ্রামে অরিনিকরকে জয় করিতে পারে। কুঞ্জর-গণ, মহীপালগণের বল ও শিবিরের পরম শোভা मण्यामन करत । भृषिवीयानगरमत्र विकार, कूछता-সকল পালকগণের কর্ত্তব্য যে, হস্তিগণের নিয়তই অমুবাদন (২) করেন। পরিপক দ্বত বাতবিবৰ্জিত উৎকৃষ্ট স্থান প্ৰদান তেলাদি রাজগণ, হতির নিমিত পালক রক্ষা করিবেন। ক্ষত্রের কর্ত্তব্য সমুদায় সম্পাদন করাই-পাওুমোগে গোম্ত ও রজণীৰয়ের সহিত ন্বত প্রদান করিবেন। আনাহরোগে (৩) তৈলযুক্ত রতদেক প্রশস্ত। মৃচ্ছারোগে, পানের নিমিত পঞ্চলবর্ণমিজা বারুণী, বিভঙ্গ, ত্রিফলা, ত্রিকটু ও দৈষ্কবসহিত আদ প্রস্তুত করিয়া কুঞ্জরগণকে ভোজন এবং কৌদ্র ও তোয়পান করাইবে। শিরঃশূলরোগে অভ্যঙ্গ ও নস্ত প্রশস্ত হয় | পাদরোগে নাগগণকে স্নেহপূর্বক প্রদান করিতে আরম্ভ করিয়া পশ্চাৎ কল্প ও ক্যায়ন্তারা শোধন করিবে। যে নাগের কম্প হয়, ভাহাকে, শিখি, তিতিরি, লাব এই সকলের রুদে পিপপলি ও মরিচ সংযুক্ত করিয়া ভোজন করাইবে। কুঞ্জর-গণ, অভীদার বিনাশের মিমিক্ত, শর্করা সহিত, বালবিল্ল, লোধ ও বাতকীর পিণ্ডী ভেলেন করিবে। কর গ্রহরোগে লবণযুক্ত স্থাতের নক্ত উৎকর্ণকরোগে মাগধী, নাগর অজাজী

⁽১) যৌংনে হক্তিদেহত্তে ঐক্তবণ বিশু উৎপন্ন হয়; তাহাকে বিশ্বজালক বা পলাক বলে। পলাকং বিশ্বজালকং।

⁽১) সংখুণ---সনাচীৎকার দারী।

⁽२) ष्यस्वामन - द्वहन, विश्वस्वाधारमण ;

⁽৩) আনাংয়েগে— বিঠাম্নোৎপ্রহিত বোগ ।

ষ্বাগু মুস্তেরসহিত দিছ্ক করিয়া প্রদান করিবে এবং বারাহরদ ও প্রদান করিবে। গলগ্রহরোগে, দশমূল, কুলথ, অয়, কাকমারী, এই দকল একত্রযোগে পাক করিয়া তৈল ও মুষণ সংযোগে প্রদান করিবে। <u> গুত্রভঙ্গরোগে</u> অন্টবর্ণের সহিত পেয়ণ করিয়। প্রদন্ধ ও গুত এবং ত্রপুষের (শশার) কাথ ও বীজ প্রদান করিবে। ত্বগলেধে নিম্ব বা ব্রুয়ের কাথ পান করি.ব। গোষ্ঠ কুমিরোগে গোমৃত্র ও বিভ্ঙ্গ প্রশন্ত হয়। আর্ককণা, ভাক্ষারদ, শর্করা, এই দকল দ্রাের স্তজ্ঞ পান, বা মাংদরস্গজগণের ক্ষতরোগ বিনাশ কবে। অক্চিরোপে ত্রিকটুযুক্ত মুদ্যাম প্রশন্ত ঔষধ। গুলারোগে তিরুৎ তিকট অমি দত্তী অৰ্ক, শ্ৰামা ক্ষাব ও গছপিপ পলী, এই সকলের যোগে ত্রেছ প্রস্তুত করিয়া প্রদান করিবে এবং अग्राना छेष्ठ अविद्या । ८ छन्न. क्यांवन. অভাঙ্গ, স্লেহ, পান ও অনুবাসন এই সকল কাৰ্য্যন্তারা সর্ববিধ বিদ্রুব ৪ দোষ সকল বিন্ত হম, এইরোগে শারদ মুদগর সূপ মহিত যষ্টিক কটুরোগে বালবিংলর প্রলেপ পান ও প্রশস্ত। দাতব্য। বিভুগ্ন ইন্দ্রযব, হিন্ধু, সরল ও রজনীছয় এই সকলের পিও প্রস্তুত করিয়া পূর্ববাহেক ভোগন করাইলে দর্ব্যপ্রকার শূলরোগ বিনন্ট হয়। যষ্টিক ত্রীহিও শালী গ্রগণের প্রধান ভোজন দেবা, যব ও গোধুম মধ্যম ও অন্বশিষ্ট দকল অধম ভোজন জানিবে। धर ७ हेक्कू नांशशालद बलवर्कन করে। শুক্ষ যব দ্বিপীগণের ধাতুপ্রকোপ জন্মা हेशा (मश्र। मनाएउ कीनमस्टित हुध लान उ मील-নীয় দ্রোর সহিত ক্তনাংস মঙ্গলদায়ক হয়। বায়দ কুরুর এই উভয় ও কাকোলৃককুল ও হরি এই সকলের মাংসে কোন্দ্র সংযুক্ত করিয়া পিও

व्यमान कतिरल क्ञन्नभग महाचग्रक ग्राह्म इस् লাভে সমর্থ হয়। কটু মৎস্য বিভূ**ল কার, কো**ষা-তকী, হুগ্ধ ও হরিদ্রা এই দকল মিপ্রিত করিয়া धूल श्रमान कतिरल अग्रभील हग्न। लिल्लमी তওল তৈল মাধ্বীক ও মাক্ষিক এই সকল দ্ৰেৰা ও দীপনীয় দ্রব্য নেত্ররোগে সেকার্থ প্রশস্ত হয়। জলাদির দারা আবিলচক্ষু প্রসন্ন করিবার নিমিন্ত চটক ও পারাবতের পুরীষ, ক্ষীরবৃক্ষ ও করীষের কঞ্জন স্প্রশন্ত জানিবে। ইহা দারা সঞ্জন প্রদান করিলে যদি রণক্ষেত্রে অন্থির হুইয়া দৌরাত্মা করে, তাহা হইলে নীলোৎপল মুস্তুগর ভঙ্ল জলের দহিত পেষণ করিয়া প্রদান করিলে, নেত্র জালা নিবারিত হইয়া স্লন্থ ইটবে। নথ বাডিলে তাহার ছেদ এবং মাস তৈল দেক বিধেয়। গ্ৰুগণের শ্যাহান, ক্রীষ (ঘুঁটে) ও পাংশু স্ম্-বিত হইবে। শরৎ ও গ্রীম্মকালে মতুসেক একান্ত विरुप्य ।

> ইক্যাবোয়ে আলিনহাপু⊲াবে গঞ্চিকিৎসালামক স্পূন্বভঃধিব্দিত্তম অধ্যায়:

অফনবভ্যধিকদিশতত্ম অধ্যায়।

হশবাহন সার।

ধন্তরি কহিলেন, জন্তবাহনদার ও আন্তর্নিক করিব। ধর্মকামার্থ দিন্ধির নিমিত্ত বাজিগণের সংগ্রহ কর্ত্রবা। অন্তিনী, প্রবেশা, হস্তা, উত্তরাত্রি হয় অর্থাৎ উত্তরভাদ্রেপদ, উরফস্ক্তনী ও উত্তরাবাঢ়া এই সকল নক্ষত্র হয়গণের প্রথম বাহনে প্রশাস্ত হয়। হেমন্ত, শিশির ও বসন্তকালে আন্তারোহণ প্রশাস্ত । গ্রীম শরৎ ও বর্ষাকালে আন্তারোহন নিধিন। তীব্র ও অধিকভর দণ্ড দার।

অস্থানে আহত করিবে না। কীল-অস্থিব্যাপ্ত, কণ্টকাথিত উচ্চনীচ বালুকাপন্ধ দমাচ্ছন গভাগৰ্ত দ্যিত স্থানে অচিত্তজ্ঞ যে ব্যক্তি উপায় ব্যতিরেকে অখকে বাহন করে, কটিবর্ম্ম বিনা পৃষ্ঠস্থ থাকিয়াও সে অখনর্তুকই বাহিত হয়; অর্থাং তাহাকে অখের ইচ্ছার বশবর্তী হইয়া আপদে পতিত হইতে হয়। কোনও ধীমান স্তকৃতী ব্যক্তি নিজ বাহনে আরোহণ করিয়া অভ্যাসকশে ও কৌশলে ইঙ্গিত বিজ্ঞাপন করেন। অন্যান্য সাধারণ ব্যক্তি-নিয়োক রূপে বাহনদিয়া হইবেন। স্নানান্তর পুর্বন মুখে প্রাণাদি নমঃ খন্ত নিজ বীজমন্ত্রে ষ্থাক্রমে দেৰগণকে নিজ দেহে যোগ করিবে। উপো-বিত থাকিয়া চিন্তা করিবেন যে গণ্ডেব চিন্তে ব্ৰহ্মা, বলে বিষ্ণু, প্রাক্রমে বিন্তানক্র গ্রুড়, शांशंकरण कार्मश्रा, वृक्तित्व शक्त, मार्च विश्वतन्त्र-গণ, চক্ষুর আবের্ডে ও নেরে চন্দ্র সুধ্য কর্ণ-यूर्गरल अधिनीकुमात्रमर, अठात अधि, (सरम ব্যা: জহলায় সরস্থা: বেগে ভ্রিন, পুঠে স্থা পুঠ, ফুরাল্যে প্রাকৃতি স্কল রোম কুপে ভালগেও, कृत्यः हम्प्रभी केना, इटला गाँव, इटापिटाहे রুভি, ললাটে জগৎপতি, হেনিতে এইগ , উরঃ স্থলে ৰাজ্ঞি অংশিত ঃ বহিংশাছন। অনন্তর সংখা– রোহী অত্থের অর্জনা ধ দক্ষ শ্রুতনয় জপ করি-বেন । ভদনভার অখাকে ∖সংসংধন কহিয়া কহিবেন কে হয়! ভূমি গন্ধবিরাজ, আমার বচন এবন ৰ ল । ভুমি গন্ধৰিকুল হণত ভুমি আমাৰ কুল দূষক হইও না। দ্বিজগণের∖ সত্য বাক্যে, সোম, গরুড়, রুদু, বরুণ ও প্রনের বলে, ছতাশনের দীপ্তিতে অপিনার জন্ম স্মরণ ক্র। হে রাজেন্দ্র-পুত্র ! ভূমি সত্যবাক্য স্মারণ করে। বারণী কন্তা স্থারণ কর, স্থার ভূমি কৌস্তভমণি

স্মরণ কর, হুরাহ্র কর্তৃক যথন ক্ষীরোদ শাগ্র মথ্যমান হয়, তথায় ভূমি দেইকালে দেবকুলে জন্মগ্রহণ করিয়াছ, এক্ষণে নিজ্বাক্য পরিপালন কর। ভুনি অধাকুলে জন্মগ্রহণ করিয়াছ ভুনি, আমার নিত্যমিত হও। হে মিত্র! ভূমি ইহা ত্রেবণ কর জুমি সামার দিয়ন বাংন হও। আমার বিজয় ও আখাকে মমরে রক্ষা করিয়া স্তর্গণ অহর বিনাশ করিয়াছেন, এক্ষণে আমি ভব পৃঠে আবোহণ করিয়া যেন শক্ত বাহিনী জয় করিতে পারি। **অন্তর কর্ণজাপ** করিয়া এবং বিপুগণকে মোহন মক্ত্রে মোহিত করিয়া অশ্ব পরিচালন করি: বেন তাহা হইলে যুদ্ধে জয়লাভ হইতে পারে। অখের দোষ দকল প্রায়ই ভাছার শরীরের মাহত উৎপাল হয়, সাদি প্রাবর বহুত্র যত্ন করিয়া এই टमःसः, मकतः विवास कद्यवा । सःकिळावतः (১) অধ্যে যে সাবল গুণ, উৎপাদিত করেন তাহা সাভা বিক গুণ সমূহ ও বিনাশ কার্য়া ছিলেন্। স্তান্তর সালী গুণজ ও অপৰ দোষজ্ঞ হুইয়া প্ৰেন ; 'য়নি হুখ লক্ষণাদি হুবগৰ ১ই.জে পারেন, দেই ধামান वाक्टिक वन : मन्दर्भ वाक्टि, अध्यत (माम ७ %) উভ্যই হাণিতে পাৰে না। যে অশ্বারোগী,কণ্মজ ও উপায়জ্ঞ নহে, অভিজোধী, নিয়তই বেগে গমন অভিলাষ করে; দোষ পাইলে অধিক দওদান কবে, যে যদি কুশল হয় তথাপি প্রশস্ত সাদী হয় না ! যিনি উপায়জয়, চিত্, নিৰ্মাল দোষ বিনা-শক, নিতা গুণোপাজ্ঞান নিরত তিনি স্ফাক্রে কুশল হয়েন। প্রগ্রহ (১) দ্বারা গ্রহণ করিয়া অশ্রপ ভুতলে প্রবিষ্ট হইয়াই যেন আপনি তাহাতে আরোহণ করিয়া অশ্বচালনা করিবে।

⁽১) সাদা – অখংরোহী, অখ-শি্ফক।

⁽২) অংশের মুথরজজু।

উত্তম তুরঙ্গ আরোহণ করিয়া দহদা তাড়ন করিবে না, ঐরপে তাড়ন করিলে ভয় প্রাপ্ত হয়, ভয় হইতে মোহ জন্মে জানিবে। সাদিপ্রবর প্রতি:-কালে বলগা উদ্ধৃত করিয়া প্রতগতি হারা চালন क्तिर्दे । भिन्तिराधि बल्गा धात्र कतिशा सन्म सन्म हालन कतिरत् अधिक छत्रकरण होलाहरवना। উন্তমরূপে অধ্যের আশ্বদন করিলে, অশ্বগণ, কথন দাদির মতে সমত হইয়া গমন করে, কখন ভিন মত হইয়াও গমন করিয়া থাকে। ক্ষাদি ভাড়ন, মুখ আবর্ত্তন (মুখ ফিরান) ভুরঙ্গণের সভাব : ভ্রমগণের ইহা পাদগ্রহণের হেতু নয়। অথকে বিশ্বস্ত রূপে অবলোকন করিয়া গালরূপে আসন নিপীড়ন পুনঃদৰ অভিমুখে পদ প্ৰদারণ পূৰ্বক আহারপে অবলোকন হিতকর ৷ রাগযুগলে গাঢ়-তা আপীড়ন করিয়া বল্লা আকর্ষণ পুস্তিক গ্রহণ করিবে। ভলক্ষের হেতুভূত সূথাপাদকে বক্ষ ক্রে। বরা ছারা পাল্ডয় সংযোজিত করিয়া বলা আলোড়ন প্ৰাক অভিল্যিত রূপে বাহ্য ও করিলে ভাগাকে ভাড়ন পাকিনেশে প্রযোগ বাছে। অধ ব্যন প্ৰায় উপস্থিত ক্রিবে, অর্থাৎ উভ্ভাল হইবে, বা বিপ্লব উপস্থিত কৰিবে, ভুগন বৃদ্ধিমান্ব্যক্তি ক্ৰমে ক্ৰমে চতুৰ্থ মোটন ছাৱা **এই विधित निधान कतिरव। एव अध अर्धारमण्य** ও লগুমণ্ডলে পাদ ধারণ করে না, ভাছাকে মোটন ও বৰুন দ্বারা পাদ গ্রহণ কর্।ইবে ৷ স্বাসনে গাট বেফীন করিয়া মৃন্দগতি অবলম্বন পূর্ববিদ গমন করিলে সংগ্রহ হেতুক যাহাতে উহা গৃহীত হয়. তাহাকে সংগ্ৰহণ কহে। স্থানস্থিত হইয়া ব্যাথ-মানদ বাহনকে প্রহার দ্বারা পার্বে আঘাত করিয়া পদ ঘারা বল্লা আকর্ষণ করিলে তাহাকে গ্রাহ্য-কণ্টকপারন বলে। যে ভুরঙ্গম এই পাদ ছারা

পাফি পাদ হইতে উত্থিত হয়, উহাকে ধলীকরণ পূর্ব্বক গ্রহণ করিলে ভারাকে খলীকার বলে। দওদান ও কালদহিফুতা, ইছাদের পূর্বে পূর্বে অবলম্বন করিবে; উভরোভর অব**লম্বন করিবে** না; অর্থাৎ অত্যে কালস্হিষ্ণুড়া অবল্যন করিয়া भटत मछनामानि विद्यम् । इय्यवाहत्म किस्बाज्यन বিনাযোগ বিধান করিবে। চর্মাদি গুণযুক্ত বলা স্ক্ণীদেশে প্রবেশিত করিয়া দিবে। ঐ বন্ধা জ্যে জ্যুমে শিথিল করিয়া বল্লাধারণজনিত ক্লেশ বিস্থারিত করিয়া দিবে। (ভুলাইনে) অথের জিহ্বাঙ্গ হীন হইলে জিহ্বাগ্রন্থির বিমোচন কর্ত্তব্যু যে প্রভান্ত মংক্ষোভ নিবারণ না হয়, ভাব্থ বল্লার গাঢ়তা মোচন করিবে না। উচ্ছিত শিরস্তাণ প্রদান করিলে বাহন ভেড়কবৎ ভয়বিহরপত্ব পরি-হার করে। যে সভাবতই উদ্ধানন, তাহার শির-অল্লথ রূপে বন্ধন করিয়া দাদিদত্তম দর্বতে দৃষ্টি-সঞ্জালন পুরংমর অবলীলায় অখ্চালনা করিবে। যে দাদী স্বায় পশ্চিম পাদ বাহনের স্ব্যভাগের পূৰ্বভাগে দব্য বল্লা ছারা সংযুক্ত করে, সে দক্ষিণ ্রহণ করিয়াছে বলা যায়। অ্যভাগে চরণ্ডয় বিস্তুক্ত করিরা দিলে স্থানুত্ আদন হয় ৷ পাদ্ধয় ভদুশ্য করে, মোটন করিলে ভাছাকে নাটকায়ন কংছ। হননে ও তাণনে সব্যহীন ক্রিলে খলী। কার হয়। যে খদ্ধ গতিত্রয়ের মধ্যে বাস্থিত গ্রুসুঘারে গমন না করে, ভাহাকে দও ছারা আহত কৰিয়া ঐ গতি গ্ৰহণ করানকৈ গহন কহে। চতুক দানা থলীকরণ পুরঃসর অভ্য বল্গা দারা উচ্ছাদন পূর্বক অন্ম বিষয় গ্রহণ করানকে উচ্ছা-সন কহে। সভাবত ব**হিনিকেপন**পূৰ্বক সেইদিকে পদ চালনা করিলে, বাধ্য করিয়া ভাষাকে অভি-ল্যিত গতিগ্ৰহণ কেরানকে মুথ ব্যাবর্তন কছে।

যথাক্রমে তিবিধ গডিতে করাইয়া পাদগ্ৰহণ ক্রমশঃ মণ্ডলাদি পঞ্চ বিধা গতি সাধনা করা-हैरन। अधीनन छेरकुछ ७ छेक्षानन जुनस्मारक শিথিলরপে চালানা করিবে। যে পর্যান্ত তাহার অঙ্গের লাঘ্য থাকিবে, তৎক্ষণ পর্যন্তই তাহার চালনা কর্ত্তর। ক্ষক্ষে মৃত্ মুখেলঘু সর্কাসন্ধি স্থলে শিথিক এরপ অশ্ব যতক্ষণ পর্য্যন্ত সাদির বশীভুত থাকিবে ভাবৎ উহাকে গ্রহণ করিবে। যথন দাধু হইবে তথন পশ্চিম পাদ পরিতাগে করিবে না। তথন বল্গাযোগে ছুই হঙেই আকর্ষণ কর্ত্রা। যাহাতে উদ্গ্রীব অধ সমানন ও পৃষ্ঠ শংশদণ্ড সমভাবে রক্ষা করে, তাহা কর্ত্ব্য। ধরায় যথন পশ্চিম পাদরয় অন্তরীকে উত্তোল করে তথ্য মৃষ্টি ছারা দুচ্রতেপ গাঠবাহ ধারণ করা কর্ত্রণ। এরপে সহদা সনাকৃষ্ট হইয়া যে ভুরঙ্গ স্থিব না হইয়া শরার বিক্লেপ করে, তাহাকে মণ্ডল জম ছারা বশ করিয়। লগবে। যে অশ্ব ক্ষম বিকেশ করে ভাহাকে বলগা দার। ছিব করিবে। গোম্য, লবণ, মূত্র একতা যোগে কাপ্ করিয়া মূত্তিকার সহিত অঙ্গে প্রলেশ দিলে,মঞ্চক। দংশও জ্ঞাবিনাশ হয়। ভদ্রাদি জাতির মধ্যে মণ্ড দান কর্ত্তব্য । হয়গণ ক্ষুধ, দ্বারা নিরুৎসাহ ভীত ও ককশ দর্শন হয়। সেরূপে বশ্য হয়, সেইরূপ শিক্ষ। প্রদান করিবে। অত্যন্ত বহন করিলে অশ্বগণ বিনষ্ট হয়,অবাহিত অশ্বণ, দির হয় না অর্থাৎ অসোচিত खन मन्त्रीय इस ना । अधानतक छे ऋगुन कता देशा বাহিত করিবে। দালী স্থিননৃষ্টি হইয়া ও জানুষুণলে ভুরস্মকে সুস্পীড়িত করিয়া পেনে ত্রাকুটিলা, বেণী পদামগুলমালিকা, পঞ্চোলধলিকা দতি করাইলে। **দংক্ষিপ্ত বিফিপ্ত, কুঞ্চিত, আচিত বালীত আনল** গিত ও সোঢ়া এই সকল গতি খখকে শিক্ষা করা-

ইবে। অশীতি, নণতি বা শতধমু বীথী হয়।
ভদ্ৰ অশ্ব স্পাধা, মন্দ অখ, একমাত্র দণ্ডদানেই
নান্দ করে। মৃগজন্তা, মৃগ নামক বাজিগণ
পূর্বোক্তগণের ভিন্ন ভিন্ন যোগে সংকীর্ণ জাতি।
শক্রা মধু-লাজ ভক্ষক শুচি ও সুগন্ধ অশ্বগণ দ্বিজ
জাতি। ক্ষত্রিয় অশ্বগণ, তেজন্বী বিনীত ও বুরি
মান শ্দ্রজাতীয় অশ্ব, অশুচি, চক্ষল, মন্দ বিরূপ,
বিমতি ও খল। যে অশ্ব বল্লগা কর্ত্বক ধার্যামান
হইয়া লালক প্রদর্শন করে, প্রত্যাহ গ্রহণ না করি
য়াই তাহাকে ধরাগতিতে নিয়োজিত করা যাইতে
পারে। শালিহোত্র যাহা বলিয়াছেন, সেই অশ্ব

ই হাত্রেরে অংশিমহাপ্রতে অক্ষরহেনসার নামক ভাষ্টনৰ হাবিকহিশত্তম অধ্যায়।

নবন্ৰত্যধিক্ষিশত্ত্য অধ্যায় ৷

অশ চিকিৎদা।

শালিখেতি কহিলেন, হে স্কৃতি । আমি
অধ্বাণের লক্ষণ ও চিকিৎসা বর্ণন করিব। হান
দন্ত, বিদন্ত, করাল, ক্ষাতালুক, ক্ষাজিজ্বযমন্ত,
অজানস্ক, দিশ্ফ শৃন্ধী, ত্রিবর্ণ, ব্যাত্রবর্ণ, থারবর্ণ,
ভাগাবর্ণ, জাতিবর্ণ, কাকুনী, শ্বিত্রী, কাকসালী,
থারসার, বানরাক্ষ, ক্ষাশ্ঠ, ক্ষাগুল্ল, ক্ষাণাণ,
শ্ক ও তিতিরি সন্ধিত, বিষম, শোত-পাদ, জনাবর্তি
বিজ্ঞিত (১) অভ্ভাবর্ত সংযুক্ত এই দকল প্রকার
ভুরঙ্গন্ত বর্জনীয়। রক্ষে ছুই, উপরক্ষে ছুই,
মন্তকে ছুই, বক্ষাগুলে ছুই, প্রয়াবে (২) এক ও
ললাটে এক এই দশ কঠাবর্ত শুভ্জনক য়ে।

⁽১) যে স্থলে স্বাভাবিক আবর্ত্ত গাংক ভংগলে জাবর্ত বজিজ্ঞা

⁽२) शृहं मधा चाटन ।

স্কণী ও ললাটে, কর্ণমূলে, নিগালে, বাছ্মুলে ও গলে আবর্ত শুভদায়ী হয়; অন্যান্ত আবর্ত দকল অশুভ জানিবে। শুক-ইন্দ্রগোপ চন্দ্র প্রভ ও বায়সমিভ, স্বর্ণ বর্ণ ও প্রিঞ্ধ অশ্বগণ সত্তই প্রশংসনীয় ও কল্যানজনক। যে সকল অশ্বের গ্রীবাদেশ ও অক্ষিকৃট দীর্ঘ এবং দর্শন অশোভন, রাজগণ এরপে ভুরঙ্গন লইয়া রণেগমন করিলে বিজয়লাভ হয় না। হয় ও হন্তা প্রতিপালিত হয়। কল্যাণপ্রদ, মন্ত্রপাজতি, ইহারা মন্ত্রগণের উত্ন রত্ন স্বরূপ। অশ্বেশ যুক্তে প্রিত্ত হেতুক অশ্বণ ত্ত হত্যা থাকে।

র্য, নিম, রুহতা, সাক্ষিক সহিত গুড়চী, শিংহা, গন্ধকরী, পিড়ী, মঙুকের স্বেদ, হিন্ধু, পুন্ধর মূল,অল্পেডম, নাগর, এই সকল দ্রাপ্রপূলী ও দৈর্ভাক বিয়া উদল্যারি যোগে অশ্-গণকে ভক্ষণ করাইলে শূল বিনষ্ট হয়। নাগয় অ'ত দি মৃতা, অনন্তা বিল্পল্লিকা এই স্কল দ্রাবরে কাথ পান করাইলে অর্থণের অভীসার রোগ িনাশ হয়। প্রিমঞ্ভ সারিবার সহিত সংস্কু আজা ও স্ভ জল প্যাপ্তি শক্রা যে:গে পান করাইলো অশগণ ভাগ হইতে বিনৃক্ত হয়। কোণিকার রক্ষা করিয়া বাজিগণে কৈলব্তি প্রদান করা কর্ত্তব্য। কোষ্ঠজ শিরা বেধন করিলে হয়গণ তাহাতে হুগ:বাধ করে। দাভিন, তিফলা, ত্রিকটুও গুড় এই সকল একত্র যোগে পিও করিয়া ভক্ষণ করাইলে হয়গণের কাস নাশ হয়। প্রিয়জুলোও ও মধুর সহিত রুব্র্স পান করাইলে বা ক্ষার ও পঞ্কোলাদি প্রদান করিলে কাশন হইতে বিমৃক্ত হর। স্বিপ্রকার প্রদ্রুদ রোগ (বিরেচনে) প্রথমে বিশোধন কর্ত্তবা তারনম্ভর

অভ্যঙ্গ উদ্বৰ্তন (স্নান) স্নেছ প্ৰদান 🗝 নস্থাবৰ্তি ক্রমশঃ এই সকলাপ্রয়োগ করিবে। ছর রোগ এন্ত ভুরন্ধগণের হুগ্ধ ছারা প্রতিকার সাধন করিবে। লোগ্র কমরের মূল, মাতুলক, 8 নাগর, কুন্ঠ, হিন্ধু, বচা, রাম্লা এই সকলের প্রলেপ দিলে অশ্বগণের শোথনাশ মঞ্জিঠা, মধুক, ডাক্ষা, বুহতী, রক্তচন্দন, ত্রপুষীর (১) মূল ও বীজ শুঙ্গাটক, কশেরুক, অজা, শর্করান্বিত স্থশীতলজল পান করাইয়া উপোষিত রাখিলে রক্তমেহরোগ হইতে মুক্তিলাভ করে। মন্যা হতু-গালস্থিত শিরা শোথে ও গল গ্রহে তথায় কটুতৈলের অভ্যঙ্গ প্রশস্ত হয়। গল-এহ ও শোখরোগ প্রায়ই গলদেশেই হয়। প্রত্যক পুষ্পী (২) বহি, দৈন্ধব, স্থরদ রদ, (বোল-হস) কুঞা, হিস্কু, এই সকল একত্রিত করিয়া নদ্য দিলে ওক্তবোগ প্রশমিত হয়। জিহ্বান্তমধােগে, নিশাদ , ্জাভিলতী, (১) পাঠা, কুঞ, কুষ্ঠ, বচা, মধু 🕟 সকলের সহিত গুড়াও মূত্রদংযোগ করিয়া লেপ প্রদান করিলে হিত্<mark>দাধন করে।</mark> তিল, যঞ্জি রছনী, নিসপত্র ও ক্ষেদ্রি এই স্কল ছারা প্রও প্রস্তুত করিয়া সূত্রগংযোগে প্রদান করিলে রণ বিনষ্ট হয়। যে অখ, আঘাত প্রাপ্ত হইঃ৷ তীব্ৰ বেদনা অনুভব পূৰ্বক খঞ্জবং গমন করে, দেই অশ্বের মাঘাতস্থানে আশু তৈল পরি-যেক করিলে রোগ বিনাশ পায় ৷ দেবের প্রকোপ ও অভিযাত ঘার। পরু ও বিদারিত ত্রণে, অশ্বথ, উড়ুম্বর, প্লক, মধুক ও বট এই সক লের কল্পনারা এবং প্রভূতস্থিলমুক্ত স্থােষ্ণ কাপ প্রদান করিলে তাহার শোধন হয় ও <mark>তাহা</mark>তেই

⁽১) জপুর্বা--শশা, ক্ষীরা। (২) আপাঙ।

⁽৩) হারস্রাও দাক্হরিজা।

আংরোগ্য লাভ করে। সর্ব্যথকার লিক্রোগের প্রখনন নিমিত শতাহ্বা, নাগর, রাস্না, মঞ্জিষ্ঠা, कुछ, रेनक्षव, रमवनांत्र वह , सूथा, तक्रसी तक्रहरून এই সকল একরেযোগে তৈলসিদ্ধ ক্ষায় প্রস্তুত কয়িয়া, গুড়ুচীর জনেরসহিত অকণ, বহিকের্ম ও নদ্য প্রদান করিলে রোগের প্রশমন হয়। নেত্র-রোগি ভুরক্ষের নেত্রপ্রান্তে জলোকা বদাইয়া রক্তথাৰ করিলে ভারোগা লাভ করে। খদির, উড়ুম্বর ও অখ্য এই সকলের ক্যায় প্রদান করিলে নেত্র শোধন হয়। যুক্তাবলম্বির শোধন নিমিত, ধাতী, তুরালভা, ডিভা, প্রিয়সু ও কুরুম এই দকলের সমাংশ গ্রহণ করিয়া গুডুচীর সহিত কক্ষ ব্যবহার কর্ত্র্য। উৎপাতশীল প্রাব্য ও শুহ্ধশেষ এই সকল রোগেও উক্ত ঔষধ ব্যবহার क अहिरत। कि श्रकाति इ (मार्य ममुहे विकत क्षमान कर्खना। लागा, मञ्ज्ञकी, कुर्छ, तक्षी, ভিল, সর্বপ, গোমুতে বাঁটিয়া মর্দ্দন করিলে কণ্ড নাশ হয়। মধু ওশক্রার সহিত শীতল কাথ নসিকায় প্রদান করিলে ও অশ্বকর্ণের স্থিত পান করাইলে রক্তপিত বিন্ত হয়। প্রতিমপ্তম দিনে অশ্বগণকে লগণ প্রদান কর্ত্রা। তাহারা ভোজন করিলে পর অতি পানার্থ বারুণী প্রদান করিবে। শরৎকালে অশ্বগণকে মুদ্রাক শর্করাযুক্ত মধ্, পিপ্পলী, প্রাস্থিত জাব্মীয় যোগে এবং হিমাগমে, বিড়ম্ব, পিপুপলা, ধান্য, শতাহ্বা, লোগ্র, দৈশ্বর ও চিত্রকযোগে প্রতিপান প্রদান কর্ত্ত । বসন্তকালে, লোধ, প্রিয়ঙ্গু, মৃন্তা পিণ্গলা, ভগী ও কোদ্ৰবোগে প্ৰতিশন প্ৰদান করিলে কফ বিনষ্ট হয়। নিদাপকালে, প্রিয়ঙ্গু, পিপ্পলা, লোধ, যক্তি, অক্ষ, লশুন বা গতিবিদা । সহিত এবং সগুড়মদিরা প্রতিপান প্রদান করিবে।

বৰ্ষাকালে দলবণ লোগ্ৰকাৰ্ক, পিপ্পলী, শুগী ও **ভৈলযোগে প্রতিপান প্রদান কর্ত্তর।** গ্রীষ্মকাল[া] ন্মুখিত পিন্ত ৰারাপীভিত এবং শরৎকালে ধন-শোণিতে পীড়াগ্রন্ত, বর্ষাকালে মলভঙ্গরোগে বাজিগণ স্বতপান করিবে। যে বাজিগণের কফ বা বায়ু এবং যাহাদের বদা অধিক হ্য ভাহা দিগকে রুক্ষভাগান্তিত করা কর্তব্য। তিন দিবদ তক্রদ যুক্ত যবাগু ভক্ষণ করাইলে রুক্ষভাব প্রাপ্ত হয়। অবগণের বক্তিকর্মে (পিচ্কারীতে) গ্রীম ও শরৎকালে য়ভ, শীত ও বসস্তকালে ভৈল, বর্ষা ও শিশিরকালে যমক (যমানী) প্রদান করিবে। তৎকালে অতিসিদ্ধ ভক্ত (ভাত) ব্যায়াম, স্থান, আতপ ও বায়ুবর্জন করিয়া স্নেহ পান করাইবে। ষ্ঠাকালে বিষ্ঠাদূষিত অশ্বগণের স্নান ও পান এক-বার ; অত্যন্ত ভূদ্দিন সময়ে একবার পান প্রশস্ত। শীতাতপ বিশিষ্ট কালে ছুইবার পান ও একবার স্থান করাইবে। গ্রীম্মকালে ভিনবার পান ও একবার স্নান করাইবে। গ্রীম্মকালে তিন্ধার পান ও তিনবার স্নান ও দীঘকাল অবগাহন প্রশস্ত হয়। অখগণকে চহুরাঢ়কী (৩২ সের) নিস্তৃষ যব ও চণক, ধান্য, ৰুদ্ধা বা কলায় ভক্ষণার্থ প্রদান করিবে। দিবারাত্তে দশ তুলা আর্দ্রাস, শুষ্ ঘাদের অকডুলা, বা বুষের (কুঁড়ো আগড়া) চারি তুলা (ধাড়া) প্রদান করিবে। দূর্ববা পিতু, যব কাদ, বুদ প্লেম্মসক্ষ, অৰ্জুন অণুগণের শাদ নাশ ও মান বলক্ষ্ম করে। ব্যতিক, পৈত্তিক ও শ্লেস্স দামিপাতিক রোগ দকল, চুর্বাহারী তুরসমকে পীড়া দিতে পারে না। ত্বন্ত অশ্বসণকে অগ্রপশ্চাৎ উভয় পদেই রজ্জ্বদ্ধন অর্পণ করিবে ৷ পশ্চাতে দূরে কীলকবদ্ধ করিয়া রজ্জুদারা বন্ধন করিবে। অশ্বগণকে বিস্তুত স্থানে বাদ করাইবে, তাহাদের

বাদ ভূমিতে প্রতিদিন ধূপ প্রদীপ প্রদান পূর্বক স্থাকিত করিবে এবং ঐ স্থানে ভক্ষাতৃণ ঘাদাদি যত্ন পূর্বক রাখিয়া দিবে। হয় গৃহে ময়ুর, অজ ও কপিগণকে বাদ করাইলে উহারা কল্যণদায়ক হয়।

ই ভ্যাবেরে আদিমহাপুরাণে অখায় র্কেদ নামক ন্বন্ধভাধিকভিশভ্য অধ্যায়।

ত্রিশতত্ম অধ্যায়।

অখশান্তি।

শালিহোত্র কহিলেন, বাজিরোগবিমর্দ্দনী অশ্ব শান্তি কীর্ত্তন করিব, তাহা প্রাবণ করে। শ্ৰুছত । নিতা। নে মৃতিকা ও কাম্যা এই তিবিধা ত্রশাস্থি এবেণ কর। শুভদিশে এীধন, লক্ষী ও হযুরাজ উলৈচঃপ্রাবার অর্চনা করিখা সাবিত্রীমস্তে সূতান্ত্তি প্রদান পূর্বকে দিজগণকে দক্ষিণা প্রদান করিবে। ইছা ভারা অল বৃদ্ধি হয়। আলিন মানের পুর্মা তিথিতে বহিদেশে বিশেষরূপে স্থশান্তির অনুষ্ঠান করিয়া অশ্বিনীকুমারহয়ের, বরুণদেবের দেবীকে উল্লিখিত তদনভুর পুলা ক্রিবে। (অঙ্কিত) করিয়া শাখাদারা পরিবেষ্টিত করিয়া मृत्य घर गर्सदरम् श्रीत्रभूनं करिया मुर्खिनिएक दक्का করিবে। অনন্তর যব ও রুঙাত্তি প্রদান পূর্বক অর্চনা করিয়া অখিনীকুমারন্বয়ের সহিত অখগণের পুদ্ধা পূৰ্বক বিপ্ৰগণকে দক্ষিণা প্ৰদান করিবে। ইহাট নিত্য শান্তি। তদনন্তর নৈমিত্তিক শান্তি প্রবণ কর। সূর্য্য, মকরাদি রাশিস্থ হইলে অশ্ব শান্তির নিমিত্ত পদ্ম দারা লক্ষ্মী, নারায়ণ, ব্রহ্মা, অিলোচন, চন্দ্রন্ত্রিকান, অশিনীকুমার, এরা-वज, উक्तिः ख्वा निक्षानगं अहे मकत्नत्र थर्डा

কেরই পূর্ণকৃত্ত ছারা বেদীয়ধ্যে তিল, হুদংস্কৃত আতপ তভুল ও রত ছারা অর্চনা করিয়া শত শত দিদ্ধার্থ ও দেবতাগণের পূজা করিবে। কর্মাকর্তা উপবাদী থাকিয়া অশ্রোগনশেক এই সকল কর্মা করিবেন।

> ইত্যামেরে আলিসহাপুনাশে অবশাধি নাম্ক জিশতত্য অধ্যায়।

একাধিকতিশততম অধ্যায়।

গজশান্তি।

শালিহোত্র কহিলেন, গজরোগ বিমন্দিনী গজ-শান্তি কীর্ত্তন করিব, অবহিত ছইঃ। এবেশ কর। পঞ্মী তিথিতে বিষ্ণু, লক্ষ্মী ও গজরাজ ঐরারত, ব্ৰহ্মা, শঙ্কর, বিষ্ণু, ইন্দ্রে, কুবের, যম, চন্দ্র, সূর্য্যু, বরুণ, বায়ু, অমি, পৃথিনী, আকোশ, শেষনাগ, শৈলগণ, দেবযোনি অউকুঞ্জরগণ, বিরূপাক, মহা-পদা,ভদ্র ও সমনাঃ এই সকলেরই অর্চনা করিবে। অনভর কুমুদ, ঐরবেত, পদা, পুষ্পদস্ত, বামন, ম্প্রতাক,অপ্তন ও সার্কভৌম এই অন্ট দিঙ্গাগের অ্টবিধ হোম করিয়া দক্ষিণা প্রদান করিবে। গ্ৰুগণ শান্তিজনে অভিষিক্ত হইয়া যে বৃদ্ধিপ্ৰাপ্ত হয়, ভাহার কারণনৈনিত্তিক শান্তি প্রেবণ কর। মকরাদি রাশিতে নগরেব বহিভাগে স্পাশতকালে হুণ্ডিলে কমলমধ্যে লক্ষ্মী ও নারায়ণের পুভা করিবে। তৎপরে ব্রহ্মা, সূর্য্য,পৃ'থবী,স্কন্দ, (কার্ত্তি-(क्य) अनलुएनव, व्याकांभ, भिव, त्यांम, हेट्यांनि দেবগণের মর্চনা করিয়া অফীদলে অফীবিধ ছাস্তের পূজা করিবে। যথা ;--বজু, শক্তি, দণ্ড, তোমর, পাশক, গদা, শূল এই সকল দেবাজ্রের এবং চল্লের দক্ষিণে সূর্ব্য ও অশিনীকুমারহয়,অফবস্থ ও

সাধা ইহাদের এবং নৈখভদলে দেবগণ আঙ্গিপ্স, আশ্ন ও ভৃত হহাদেন, বায়ুকোণে মরুলাণের, দক্ষিণে বিশ্বদেবগণের ও রুদ্রমণ্ডলে রুদ্রগণের পূজা করিয়া রুভ রেখা ছারা বাহ্যে দেবগণের অর্চনা করিবে। সূত্রকার, ঋষিগণ, বাণী, ভব্নস্থী ও গিরিগণকে পূর্ব্যাদিদিকে এবং ঈশানাদিকোশে মহাস্থৃতগণের পূজা করিবে। শ্বয়াদি কোণে পদা, চক্র, গদা, শৃষা, চতুকোন, চতুদাব্যওল, ভৎপরে কুম্ব ও পতাকাদিদকল স্থাপন করিবে; চারি ट्यांतरनत घारत खेतांत्रजानि शक्त्रनन, शृद्धानि निरक ভ্রম্মিকল ও দেবগণের পৃথক্ পৃথক্ পাত্র বিমান্ত থাকিবে। আজ্য দারা পৃথক পৃথক শতান্ততি প্রদান পূর্ব্বক গজগণের অর্চনা করিয়া বহিন্ দেবাদিগণে ও গ্রগণে প্রদক্ষিণ করিয়া নিজস্থানে গমন করিবে। ছিলগাণ ও ইয়পজবৈদ,গণে मिक्कणा थ्रमान कर्लगा। कालक नत्र, कतिगीटिं মারোহণ করিয়া কর্ণে মন্ত্র জ্বপ করিবে। নাগরাজের শাস্তি কবিয়া এই মন্ত্র জপ করিবে। হে গজরাজ ! রাজা তোনাকে জ্রীগজ করিয়াছেন. তুমি উহার গজাগ্রনা। তব প্রভু পৃথিনীপতি রাজা তোমাকে পূজা করিং গছেন ও পরিবেন; ভাঁহার আজ্ঞায় অন্যান্য লোক স 🕆 ্রানার পূকা করিবে; যুদ্ধে, পথে ও গৃহে 🤭 🗀 মার রক্ষ-**ণীয় ; ভূমি পশুভাব পরিহার** কবিষা ,তামার দিব্য ভাব সারণ কর। পুরাকালে দেবাপ্র যুদ্ধে দেব-গণ জীগদ করিয়াছেন, জীগদ, ঐরাণতের পুত্র শ্রীমান তাঁহার নাম অরিষ্ট। সকল শ্রীগজেরই महे मर्काउकः विमामान आह्न। (ह नाइकः ! ভোমার সেই দিব্যভাব সম্বিত তেজ বিদ্যোন আছে। তোমার কল্যাণ হউক, ভুমি সংগ্রামে রাজাকে রক্ষকির। এইরূপে গলরাজ্কে অভি

ষিক্ত করিয়া শুভক্ষণে ভাহাতে আরোহণ করিব।
নয়টী উত্তম গজ ঐ গজরাজের অনুগমন করিবে।
রাজা গজ শালায় বেদামধ্যে পদ্মমগুলে বাহভাগে
দিক্পাল ও দেবাদিগণে, এবং কেশরে বল নাগ,
ভূমি ও সরস্বতীর পূজা করিয়া মধ্যে গছমাল্যাণু
লেপন দারা ভিগুমের মর্চনা পূর্বক হোম করিয়া
রসপূর্ণ কলস সকল বিপ্রসাৎ করিবে, অনন্তর গজা
ধ্যক্ষ হত্তিপালক ও গণিভজ্জকে পূজা করিবে। ঐ
ভিগুম গজাধ্যক্ষকে প্রদান করিলে সে গজ
জঘনে আরোহণ পূর্বক ভ্র্রাব্য গজীর রবে
ভিগুম বাদন করিবে।

ইত্যাথেরে অ-দিমহাপুথাণে প্রশান্তিনামক একাধিকত্রিশক্তম অধ্যায়।

দাধিকত্রিশততম অধ্যায়।

শান্ত্যায়ুর্কেদ।

ধন্ধন্তির কহিলেন, গোবিপ্র প্রতিপালন, রাজার একান্ত কর্ত্ব্য। একণে গোণান্তি কীর্ত্তন করিব শ্রেণ কর। গোসকল পবিত্র ও মঙ্গল দায়ক; লোক সকল গোগণেই প্রতিষ্ঠিত আছে। গোগণের শিন্তা মৃত্র উৎকৃষ্ট বস্তু,উহা দ্বারা কলক্ষ্মী বিনক্ট হয়। গোগণের শৃঙ্গের কণ্ডুয়ন বারি পাপো্য বিসদ্ধন করে। গোম্ত্র গোময়, ক্ষীর, দির্ঘা, দ্বতা, রোচনা এই ষড়ঙ্গ, পান বিষয়ে উৎকৃষ্ট তদ্বারা ভ্রম্বাদি দোষ নিবারিত হয়। রোচনা রাক্ষপত্রা ও বিষ্কিনাশিনী জানিশে। গোগণের গ্রাদপ্রদ মানব স্বর্গগামী হয়। যাহার গৃহে পোন্যকল ভ্রম্বাশিন্ম, সে খোর নরকে গমন করে। যেনর, অন্তের গোগণকে প্রাস্থাদান করে সে নিত্য স্বর্গ, ভোগ করে, যে গোগণের নিত্য হিত্তে

বর্ত্তবান, সে স্বর্গভাক সন্দেহ নাই। খোদান করিয়া, গোমাহান্ত্র্য কার্ত্তন করিয়া ও রক্ষা করিয়া মানবগণ কুল উদ্ধার করিতে সমর্থ হয়। গোগণের খাংস ভূমি পবিত্র হয়, স্পর্ণে পংপক্ষয় হয়। এক-রাত্র উপোষ করিয়া গোমৃত্র, গোমধ, ক্ষার, দধি, ঘুত ও কুশোদক, ভোজন করিলে কুকুরে পাকের শোধন হয়। পুরাকালে ঈশ্বরগণ সর্ববিধ মণ্ডভ বিনাশের নিমিত গোমৃত্যাদি ব্যবহারেয় অমুষ্ঠান করিয়া ছিলেন। গোষ্ডাদির মধ্যে কোন ও একটীমাত্র তিনরাত্রি দেবন করিলে মহাশাস্তি িধান হয়: ইহা সর্বাক্ষামপ্রদ ও স্ববিপ্রকার च % च विनास करता अकविः मंखि निवम नुसंघात পান করিয়া থাকিলে কুজাতিকুছ ব্রত সম্পাদিত হয় এবং ভদারা নরোভ্রণণ নির্দাণ ও সাক্রাম সম্প্রাপ্ত হট্য়া স্বৰ্গগামী হয়। তিনদিবস, উষ্ণ মূত্র, তিনদিবস উষ্ণয়ত, তিনদিবস উষ্ণপুদাও তিন'দবদ বায়ুভক্ষণ করিয়া তপ্ত কুচ্ছ ব্রভাচরণ করিলে সর্বপাপ বিন্ত হয়ে ব্রহ্মলেকে প্রাপ্ত হঃয়া থাকে। অন্ধা কহিলাছেন, স্থীতল ঐ সকল দ্রব্য দেবন করিলে শীতকুচ্ছ ব্রুদ সম্পাদিত **হর, তদ্বরে। ত্রহ্মলোক লভি** ছবৰ থাকে। গোমূত্র ছারা স্নান, গোরসমাত্রে জী কা নালাচ, গোগণের দহিত গমন, গোগণের 🗝 🕬 ভোগন করিলে গোত্রত সম্পাদিও ১য়। একমাস পূৰ্বাক নিজ্পাপ গোত্রতের **আচরণ** হ ইয়া গোলোকে স্বর্গে গমন করিয়া খাকে। গোমতী-বিদ্যা জপ করিয়া প্রমলোক গোলোকে গমন করে, তথায় বিমানে খারোহণ করিয়া অপ্সরা-গণের দহিত নৃত্য গীতামোদে কালছরণ করিতে ধাকে। বেগাসবলই নিতঃশ্বনভি (হুগত্র) বেগাসক-লই গুণুগুলগন্ধ, গোগণই ভূতগণের প্রতিষ্ঠা

অর্থাৎ ভূতগণ গোগণের উপর নির্ভর করিয়া জগতীতলে জীবিকা নিৰ্বাহ করিতেছে; গোগ-ণ্ট পরম অভায়ন। পোগণ্ট পরম আর পোগ-ণই দেবগণের উৎকৃত হবিঃ, গোগণ্ই দর্শ্বভূত-গণের পবিত্র সম্পাদকবস্তু ক্ষরণ করিয়া থাকে वृक्षण । भूगिणन, हेर्डा अवित्र हरे **अविम्नार**न কহিয়া থাকেন। নত্ত্ৰপুত ছবিছবিরা অর্গে অমর-গণকে সন্তর্পিত করে, ঋষিগণের অগ্নিছোত্তে ও হোমে গোগণ যোজিত হয় ফলত: গোগণ দৰ্বন বিধ ভূতগণের **উত্তম আশ্রয় স্বরূপ।** গোগণ অর্গের সোপান, গোগণ স্নাভন ও ধন্য। "ন্যো গোভাঃ শ্রীমতীভাঃ দৌরভেয়াভ্য এবচ। ব্রহারতাভ্যশ্চ পবিত্রাভ্যো নমোনমঃ"। रगांगगतक अ अति वरणका (धकुगगतक धाराम, ব্ৰহ্মস্থা ও পৰিত্ৰা ধেনুগণকে শত শতৰার নম-স্বার করি। এককুশ ছুইভাগে বিভক্ত হুইয়া একভাগে ত্রাহ্মণ ও অন্যভাগে গোগণ জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন, একস্থলে পবিত্র মন্ত্রগণ ও অন্যত্ত পবিত্রহ বঃ প্রভিষ্ঠিত রহিয়াছে। দেব, ব্রহ্মেণ, গো, সাধু ও সাধ্বীগণ, এই অধিল জগৎ ধারণ করিয়া আছেন, তত্ত্রব এই সকলেই পূজাতম; ইহা সকলেই কৃষ্য়া থাকেন। গোগণ যে যে च्रत कन्यान करतन; त्रहे मकन चानहे जीर्ष, গঙ্গাদিলোক পাৰণাগণ গোৰারপ।

গোগণের মাহাত্ম কীর্ত্তিত হটল, একংণ ভাহাদের চিকিৎসা প্রধণ কর। ধেনুগণের শৃঙ্গ-রোগে শৃঙ্গবের বলা ও মাংসকজ্ঞে সিদ্ধ সমাক্ষিও তৈল সৈন্ধবযোগে প্রদান করিবে। সর্বপ্রকার কর্ণশ্লরোগে, মঞ্জিড়া হিঙ্গু ও সৈত্রব সহিত সিদ্ধ ৈতল রগোন (রহন) যোগে প্রদান করিবে। বিল্লমূল, অপামার্গ, পাট্লা, ধাতকী ও কুটজ এই

मकल ज्या वैं। विशा परुगुरल श्रामा कतिरल परु শূল বিনাশিত হয়। দত্ত শূল হারক দ্রব্য দকল মুত্যোগে পাক করিলে তাহাই মুখরোগ হারক উদ্ধ হয়। জিহ্বারোগে দৈশ্বব লবণ প্রশস্ত। গলগ্রহরোগে শৃঙ্গবের উভয় প্রকার হরিদ্রা ও ত্রিফলা, হিতসাধক হয়। হৃৎশূল, বস্তিশূল, বাত ও ক্ষয়রোগে, গোগণকে মৃত্যিশ্র ত্রিফলা প্রদান প্রশস্ত হয়। অতীমারে উভয় প্রকার इतिछ। ७ शार्घा श्रमान कताहेत्व। मर्ग्वविध কোষ্ঠরোগে এবং খাসাও কাসরোগে, শুঙ্গবের (খাদা) ভাগী প্রদান করিলে রোগ বিন্ট হয়। ভগ্নসামলনের নিমিত্ত লবংযুক্ত প্রিয়ঙ্গু প্রদান কর্ত্তর। তৈল, বাভরোগে একত্র যে গে পক মধুও দৃষ্টি, কলরোগে মধুগহিত ত্রিকটু, ও রক্তজাতরোগে, পুষ্টক সাহতরজঃ প্রদান কর্ত্য। ভয়ক্ষতরোপে, তৈল য়ত ও হরিতাল এদান ক্রিবে। মাস, তিল, গোধুম পশুক্ষীর, স্বৃত धरे मकरलंद शिखी कित्रमा लग्नारमार्ग श्रमान করিলে তাহা বৎসগণের পুষ্টিকারক হয়। বিধারা (মেষশৃষ্ণী) বল্খদা ধূপক আহ্ বিনাশের নিমিত প্রশাস্ত। দেবলারু, বচা, মাংগী, গুণ্ঞল, হিন্দু, সর্প, এই সকলের ধুপ গ্রহাদি দোমনাশক ও গোগণের হিতকর। এই ধুপ বারা এধুপিত করিয়া ঘণ্ট। প্রদান করিলে গোগণের কল্যাণ সাধিকা হয়। অশ্বসন্ধা তিলের সহিত শুকু অর্থাৎ নবনীত প্রদান করিলে গাভীগণ ফীরবতী হয়। নিরন্তর গুহে বাঁধিয়া রাখিলে যে রুষ মন্ত হয়, পি ঢাক (হিন্নু) তাহার পরম রদায়ন। পঞ্মী তিথিতে, শান্তির নিমিত্ত গোময়ে নিয়মিতরূপে লক্ষ্মীপূজা কর্ত্তব্য। গন্ধাদি দ্বারা বাস্ত্দেবের পূচা করিলেও অপরবিধ শান্তি হয়। অশ্বিনী

নক্ষত্রযুক্ত শুরুপকের পঞ্চশীতে হরিপূলা বিধেয়া জমরহিত হরিও রুজে, সূর্যা, লম্মী তেমহিকে পূজা করিবে। দধিভোজন পূর্বক গোপ্জা সম্পাদন করিয়া বহ্নি প্রদক্ষিণ কর্ত্তব্য। বহির্ভাগে গীত ও বাদ্যরবে রুষগণের যুদ্ধ যোজনা করিবে ৷ গোগণকে লবণ ও ব্রাক্ষণগণকে দক্ষিণা প্রদান কর্ত্তব্য। মাকরাদি নৈমিত্তিক স্থিলে (যজ্ঞানার্থ পরিষক্ষত ভূতলে) মধ্যস্থিত **মজেও দিক্সকলে লক্ষীর সহিত বিফুর ও** কেশরগত ভরগণের যথাক্রমে পূজা করিবে। বহির্দেশে হুভদ্রাজ, ইবি, বহুরূপ, বলি, আকাশ বিশ্বরূপাসিত্রি ঝদি, শান্তি, রোহিণী, প্রকাদি দিয়েণু, চন্ত্র, ঈর্ষর ও পদ্মপত্রে দিকৃপাল্যণকে কুশর অর্থাথ তিলাদি মিল্লিড অন্ন দ্বারা অর্চনা করিয়া অনলে ছোম করিবে। ঐ হোমে ক্ষীর বুদের সমিধ (যজ্ঞ কাউ) ও দর্যপ অকত ও তওল প্রদান করিবে। শান্তির নিমিত্ত স্তবর্ণ কা: স্থাদি ও সবৎসা ধেনু সকল দ্বিভগ্নকে দান করিবে।

শগ্র কহিলেন, শালিহোত্র, শুক্রাতকে হয়াযুর্নেদ কহিণাছিলেন। পালকাপ্য, অঙ্গরাজের
নিকট গজায়ুর্বেদ বর্ণন করেন।

ইতগ্রহারে আদিমহাপুরারে শাস্ত্রগায় ক্রান্ত্র দ্বাধিকতিশ্বতম আধ্যার।

তাধিকত্রিশতত্ম অধ্যার।

মন্ত্র পরিভাষা।

আগ্নি কহিলেন, ভোগ মোকপ্রদ মন্ত্র বিদ্যারপ বিষ্ণুর বিষয় কীর্ত্তন করিব, আবণ কর। হে দ্বিদ্ধ বিংশতি বর্ণাধিক মন্ত্রগণ মালা মন্ত্র নামে কথিত

र्य। मनाक ताधिक मञ्ज नकन खादात वर्जनील নামে প্রথিত। এই দৃশাক্ষরাধিক মন্ত্র সকল विश्वति अवश्वाना भागामस मकन योगनकारन নিদ্ধিপ্রাপ হয়। পঞ্চাক্ষ রাধিকা মন্ত্রসকল ও অপর মন্ত্ৰপকল স্বিণাই দিবিপ্ৰদ। মন্ত্ৰভাতি সকল ন্ত্রীলিল, পু-লিল ও ক্লীবলিল ভেদে ভিন প্রকার। স্ত্ৰীমন্ত্ৰ দৰল বহিজায়ান্ত অৰ্থাৎ স্বাহান্ত এবং নপুংস্ক্মন্ত্র নমোহন্ত : শেষমন্ত্র স্কল পুংলিক তাঞা বশ্য উচ্চাটন ও বিষ বিষয়ে প্রশস্ত। কুদ্র ক্রিয়াময় ধ্বংসকার্যো জীমস্তা; অনাতা নপুংসক गख धारताका। भारत्यशां ७ त्रीमाां गाउँ महास्त्र তারাদাস্ত করিয়া জপনীয়। আহোগ মন্ত্র অগ্না-কাশ প্রায় ও ভারান্ত। সৌমামক্র শিষ্ট। ক্রত কংশ্ম আগ্রেয়মন্ত্র ও দৌম্যকর্ম্মে দৌম্যমন্ত্র প্রশস্ত হয়। অত্তে নমোযুক্ত হইয়া আগ্রেয় মল্ল প্রায়ই দৌম মন্ত্ৰ এবং অন্তৰ ফট্কাৰ সংযুক্ত হইযা দোন্যমন্ত্র আগ্রেষ হয়। কেবল হুপ্ত বা কেবল ভাগবিত মৃত্যু, দিন্ধি প্রদান করে না। শায়নকাল गहाताहक ७२ का शत्राकाल मिक्नावह हर। গাগ্রের ও গৌমা এই উভয় মন্ত্রের পরস্পার. নিপর্যায়ে গুপ্ত প্রবোধকাল জানিবে। চুফ্ট নকজ তুটরাশি ও বিদেষি বর্ণাদি বিশিষ্ট মন্ত্র সকলকে বর্জন করিবে। রাজ্যলাভ ও অপকারের নিমিত্ত কার্যারম্ভ করিয়া স্থর (১) সকলের ক্রিয়ামুষ্ঠান পূর্বক পরিপুর্ণ জাদিদ্ধ হুইবার নিমিত, একদেশে মন্ত্রজপ করিবে।

এবং গাখা, অনর্থ উৎপাদন করে। যে নর, জপ ट्रामार्फ्रनामि चात्रा अक्रियाक मरस्त्रत नारना करत, বহুতুর জিয়াদি ঘারা তাহার দেই মন্ত্র স্বল্প শাধ-নেই দিছ হয়। সম্পূর্ণ রূপে দিছ একটি মাত্র মল্রের, এই সংখারে কিছুই অসাধ্য নাই। মসুদিদ্ধ পুরুষের পক্ষে আরে কি বক্তব্য আছে. সে শিব ভুল্য। এক বর্ণ মন্ত্র, দশলক বার জপ করিলে সিদ্ধ হয়। বর্ণের বৃদ্ধি অনুসারে জপের হ্রান চ্ইবে: তদমুসারে অত্যাত্ত সর্বপ্রকার भरञ्जब करशत मःथा। वृत्यिया महरव। यानायञ्ज বীজের তুই তিন গুণ মন্ত্রবারা জপজিয়া হইবে ! সংখ্যা উক্ত না থাকিলে অফৌতরশত বা সহস্র ধার জপ করা বিধেয়। মর্ববতাই জপ সংখ্যা হুইতে দুশাংশ সাভিষেক হোম দংখ্যা কানিবে। ব্যক্তির অনুক্ত দ্রব্য হোমে জেপৈ অশক্ত দক্রেই য়ুত খারা লোম কর্ত্যা। মূলমন্ত্রের দশাংশ, অহাদির জপ বিধেয়। শক্তির সহিত মন্ত্রের জপ ছাবা মন্ত্র দেবতা অভি বাঞ্চিত প্রদান করিয়া থাকেন। ধ্যান ছোম ও অর্চনাদি ছারা মস্ত্র দেবতা দাধকের প্রতি প্রদর্ম ও সদ্ধৃষ্ঠা হন। উচ্চস্বরে কপ অংপেকা, দশ ন্তুণ উপাংশু জপ (১) বিশিষ্ট হয়। জিল্লা জপে শতগুণ ও মানদ জপে সহজ্ঞণ বিশিক জানিবে। পূর্বে মুখ বা উত্তর মুখ মন্ত্র কণ্ম আরেজ করিবে। সকল মস্ত্রের গোপাল কুটারে প্রয়ান করিবে। বক্ষ্য'ণ প্ৰকাৰে লিপি কণিত হইয়াছে ; লিপিতে বেৰতীযুক্ত, শ্বরাস্তব্য, নক্ষত্তে ক্রেমে খোজনা

পূব্বক পারপুণ ভাগদ্ধ হ্হবার নামক, এক দেশে
আবস্থিত হইযা সহস্রবার মন্ত্রজপ করিবে।
যদৃচহালক, ছললক ও বললক ও পত্রস্থিত মন্ত্র

(১) খর—গ্রহন চক্র ইংাতে কর্ত্রা। "অব্যর মের
সিংহালি রিঃ ক্রাযুগ্রকর্তীঃ। উপরে চ ধর্মীনো এখনে
চতুলা র'বা। ও খনে মুগ ক্ভোচ ইত্যাদি গ্রহণ্ড চক্রং।
মারণং মোহনং অক্তং বিধেশ্য ভাটনে বশং। বিবাদং বিশ্লহং
বারং কুর্যাদ্ গ্রহণ্ডরাদ্রে ইতি এক ব্যেশং।

⁽১) উপাংক-জপভেদ "লিছেবাটো চালয়েৎ কিঞ্জিনেব তাগত মানসং। নিজ্ঞাবন বোগাঃলা জুপাংলঃ সভ্পাং সূতঃ" ইতাগিমঃ । দেবতাগত মানস চইয়া জিহনা ও ওট কিঞিৎ সঞ্চালন পুক্তক নিজ্ঞাবন বেংগা সালে উচ্চাবন করিলে উপাংক্ত লগত হয়।

कदित्व। बनस्व, त्ना, खक, यव मकला (भाग, কণাছাৰা এইকপ ভিন্ন ভিন্ন প্ৰকার হয়। বশীতে লিপির বর্ণ সকল জানিতে: যঠ ঈশাদি ও ভাহাতে যোগ করিনে। লিপিবে চতুপ্রথম্ব আ্যাম খাবের্দকল, পদাস্তবে বিন্যাস পুরঃদর প্রথমে দিল্পণ ও দিতীয়ে সাধাগণকে স্থাপিত कविया छ ९ भरत छ भिक्ष गण छ जन भन्न त देव विशेष एक সন্থাপিত কৰিবে। যিনি সিদ্ধ ও অভ্যন্ত গুণ বিশিষ্ট হইগাছেন, তিনিও এছকাপ সিদ্ধাদির कब्रमा कतिर्दमः जनाह्यु मिन्न गाउत जन হোমাদি ছার। সাধ্যও ধ্যান মাত্রে ছালা ভাসদ্ধ ছয়। যিনি সাধাক মাত্র হাইয়। আবে অগ্রসৰ হাইতে পাবে না, অরিগণ ভাহাকে বিনাশ করে ৷ যাহাতে पृष्ठे वर्ग मकल वर्षक हत्। (महे हत् भक प्रवेहे বিনিশিত। আভিষকের অংসানে, দাক বিংধ পূৰ্নবিক দীক্ষায় প্ৰাবেশ কবিয়া, গুলুলৰ নি ১ লাৰভেন্ত প্ৰেণাড়ে ঈ স্পাচ মন্ত্ৰ সাধ-ধীর দক্ষ, শুচি, ভক্ত, জপ ধন্নাদ •ংবে নাফা, তপষী, কুশল, ভন্ত্ৰজ, সভাভ ষা, নিএছ ল 🛷 ममर्ग नाकि है अब भारत नहीं। मार्मा অসুশীলিত ব্ৰহ্মচৰ্য্য, হবিষ্যাভানী, লাভাৰ্য ক্ৰা-ষাকাৰী, সিদ্ধি এষ্টে উৎদাহ্বনে স্কুন্ট সন্থে भिषा। ८गरे भिषा छ त्रस्त शाग व পুলভুলা। শিষা, বিনয়া ছ॰ ও ধন এল ছ০০। **७का नत्स्रात्स स्लामन** कतिता । अञ्च १००१मण्य আ দত্তে প্রণার প্রায়োগ একান্ত করেবা। বিভিন্ দ্ৰ ভোজন প্ৰকি বাগৰত, স্থান ও দে ৰা **চায। इला पृष्टि इहेशा মञ्ज**ञ्जल करिता। छ। कु**ँ**। বি জিল দেশে নিৰেখিত ছইবে; দোল্য নল रमामिङ क्रश खान एहेटल शात। यञ्ज मिक्कत নিমিত বৰাগু, অপূপ, ছগ্গ ও ল'ন্য গোদন

কর্ত্তব্য। তিথি ও বারবিশেষে মন্ত্র দেবকাগণের জপ করা বিশেষ। কৃষ্ণপক্ষের অইনী ও শতুর্দি শীতে ও গ্রহণ কালে দ ধন কর্ত্তব্য। আননীকুমার বম. আনল, ধাতা, শশী, রুজ, দিতি, দর্পগণ, পিতৃগণ, ভগ, অর্থামা উষ্ণত্যুতি, ছান্টা, মক-দর্গণ, ইন্তামিছার, মিত্রেন্দ্রেল, নিশ্বতি, ছাল, বিশ্বদেবগণ, হার্মের, মিত্রেন্দ্রেল, নিশ্বতি, ছাল, বিশ্বদেবগণ, হার্মের, বায়্গণ, বরুণ অলৈকপাদ, আহি, অর্থু, পূষা, আন্ম্যাদি দেবতাগণ ইহাদের জপ কর্ত্তব্য বলিয়া উপবে উক্ত হট্যাছে। অগ্রি, আন্ম্যান্তিন বিশ্ব, নাগ, চন্দ্র, দিবাকর, মাতৃগণ ছর্গা, দিরীশ্বরীগণ, কৃষ্ণ, শৈবশত, শিব, পঞ্চদশীর দেবতা, চন্দ্র ও পিতৃগণ ভিথিদেবতা। হব, ছুর্গা, গুরু, বিষ্ণু, বেক্ষা, লক্ষ্মী, ধনেশ্বর ইহারা ও সুর্যাদি দকল কামেশ্বর দেবতা।

এক্ষণে লিপিন্যাস কহিছেছি, প্রাংগ কব। কে- -শান্ত প্ৰয়ন্ত বুৰুষকলে,চক্ষুদ্ধ য়, খ্ৰবণসূগ ল নাসা, গণ্ড, ওষ্ঠ, দন্ত, মুখ ও মন্তকে ত গ দ গ ্লাভগানি ও চৰণ স্থানিকে ৰংগৰ প্ৰকৰণ প্ৰাৰ্থনে গঠে নালি खाल ६ सन्तर्भ क्र**म चर** रिन्तुम ३ दिए। सन्दर्भ ভেদ্দল ষ্চিন্ত্ৰি বিল, স্কৰি ব[্]ছাতেৰ **ংডু**, রক, শাণিত মাণ্য স্নায্ (মণ, মান ও ওক্ वडे मञ्ज **धकावरमा** ५८ ० খনগৰ এই সকল লিখিয়া খাকে আৰু ঠ ভনস্ত ও দক্ষা তিম্ঠি, পরমেশ্বর খগ্রী তিথীশ, স্থাপুক, হর, দণ্ডীশ, ভীতিক, সাদ।কোত, অকুয়তেশ্র, অক্রে, মগদেন 🕐 রা শার্থ দেলতা। অনুভার কোধাশ, চণ্ড, গণ্ড হ, শিৰো নম, কদ্ৰ, কৃষ্ম, ত্ৰিনেত্ৰ, চতুবানন, গজেশ, শৰ্ম-সেমেশ, লাঙ্গলিক, দারুক, ঋদনরোশ্ব, উমা, কান্ত, আকাচী, দণ্ডী, স্বাঞ্জি, সীন নেষ্, লেছিত, শিখী, ছগলও, দ্বিলঙ, ছুই, মহাকাল, বালী.

ভুজন্গ, পিনাকী, খড়গান, বক, খেত, ভৃগু,নগুড়ী-भाक मञ्ज्ञ अहमकल नारमास्त्रक चापिय सन्तिष्ट শক্তিকৈ লিপিতে বিমানে করিবে। মন্ত্রাক্লদকল তাহাতে বিন্যাস কর্ত্তবা ; স সমন্ত্রসকল সিদ্ধিপ্রদ হয়। হৃদয়ের চিহু বিশিষ্ট আকাশ পূর্ণ অভ্নতল বিন্যাপকরিবে। হৃদাদি অঙ্গ মন্ত্র পকল ক্রামান প্রকারে জপ করিবে;—হৃদয়ে নগং, মন্দ্রক স্বাহা, শিখায় বষট্, কবচে ছং, নেত্রে বৌষট, মন্তাব ফটু: পাণাঙ্গ মন্ত্র নেত্রবর্মিনত, নিরাঙ্গর আংকা ছারা অঙ্গন্যাস করিয়া এই স্কল মন্ত্র নিযুদ্ধার জ্ম মন্ত্র ছালা বাগীখরীদেনার জপ করিবে। যথোকরপে তিল ছোম করিবে। অক সূত্র কুম্ব পুস্তক পদাধারিণী লিপিদেনী, কনিছাদি প্রদান করেন। কার্য্যাদি সিদ্ধর নিমিত তিপিন্যাস বিধের ৷ মাতৃগণ কর্তৃক নিক্ষণ হ নিমাণ হংয়া मञ्ज भक्त भिक्ति श्रामा करत।

> ইড্যারেরে মহপুরাণে মন্ত্র পথিতাখা নাসক ত্রাধিকতিশাতকম অধ্যান্তঃ

চতুর ধকতিশততন অধায়।

নাগ লক্ষণ বা ভূমক লক্ষণ !

ভাগি কহিলেন, নাগ শরারাদি, ভাগিদি দেশ,
স্থান, সূতক ও দফটেটো এই সপ্তলকণ কথিত
হইতেছে। শেষ, বাহুকি, তক্ষক, কর্কট, অজ্ঞা,
মহাভুগ্গ,শহাপাল ও কুলিক এই নয়টি শ্রেষ্ঠনাগ।
ইহাদের প্রত্যেক ছুংটির ক্রানে সহস্র, অফ্টশ্রত
পঞ্চার ও জ্ঞানত মন্তক আছে। প্রহোক ছুংটি
ক্রোম, বিপ্রা, ক্রিষ্যা, বৈশা ও স্কুল জাতি। ভাহা
বংশ পঞ্চাত; ভাহাদের হইতে অসংখ্য ভুক্স
জন্মগ্রহণ ক্রিয়াছে। ক্যী, মণ্ডলী, রাজিল

ইহার। ক্রেমে বাত পিতকফাতাক। ইহাদের মধ্যে অফুক্ত কালজাত দেয়ে মিশ্র স্পগিণ, দ্ববীকর নানে প্রথিত। দর্শগণ, ছক্র লাঙ্গল-ছত্ত্র, স্বস্তিক অকুশচিছু বিশিষ্ট হয়। গোনস ভুজক্ষগণ; দীর্ঘা-করি, মন্দর্গামী ও নানাপ্রকার মণ্ডলাকারে ছাব-স্থিত থাকে। রাজিলগণ, স্লিশ্বশাদি চিহু ছারা উদ্ভাবে ও বক্তভাবে চিক্তিত। ব্যস্তরগণ (মতুক্ত কালজগণ) মিশ্রচিছু বিশিষ্ট ও ভূ বর্ষা-অগ্নি বায়ুভেদে চারিপ্রকার; তাহাদের মধ্যে যড়্বিংশ প্রকার অবাস্তর ভেদ আছে। গোনদগণ ্ষাড়শ প্রকার, রাজীলগণ ক্রয়োদশ প্রকার ও ব্যস্তবগণ একবিংশতি প্রকার। যে সূপ্রণ মনুক্ত-কালে জন্মগ্রহণ করে তাহা দিগকেই ব্যস্তরগণ কছে। আয়াঢ়াদি মাদত্রয়ে গর্ভ হয় অনন্তর চারি নাস গর্ভ ধারণ করিয়া ছুইশত চ'ল্লশটি ডিম্ব প্রস্ব করে। স্থিনীগণ, ক্রীব্যতিরেকে, পুংনপুংসক হত সমূহকে আদে করে। কুঞ্চ দর্পের, সপ্রদিনের পর চকুঃ প্রক্ষাটিত হয়, একমাদের পরই ভাছারা বাহিৰে দৃকী হয়৷ স্থাদশ দিনাতে বেলা জ**মে**, সুটা দর্শন করিলেই দন্ত হয়। ভাগতের মধ্যে কালারও ব্রিশাদনে কাছার বিংশতি দিনে চারিটী দংষ্ট্রা মর্থাথ রহদান্ত হয়। করালী, মকবা, কাল রত্রী প ধমপুভিক। ইহাদের দত্তে শিষ থাকে। ইহারা বামপার্ম ও দক্ষিণপার্ম ভারা গীমন ও ছয়-মানের পর অভ্তমোচন করিয়া থাকে। বিংশতি বংসর ইহাদের পরনায়ু;। দিবাও রাত্রিতে মপুনাগে দুর্বা। দিবারাধিপতি হয়। তাহাদের ছয়টি প্রতিবারেই ও কুলিক সকল সন্ধাতেই অধিপতি হইয়া থাকে। শব্ধ বা মহাজ্ঞের সহিত कृतिक नारशत छेम्स काता। अथवा औ छे छरवत्रहे নাড়িকা মাত্র মন্ত্র। কুলিকোদয় কাল, শর্নিজ

বিশেষতঃ সর্পদংশ বিষয়ে অভিশয় দুউন। কুভিকা ভরণী, স্বাভি, মূলা, পূর্বকে**র্ণী, পূর্বভাজে পদ** ও পূৰ্ববাধাতা, অখিণী, বিশাখা, আর্ছ, ম্বা, অংশ্রয়া, চিত্রা, প্রবণা, রোহিণী, হস্তা, শটনশ্চর ও মঙ্গল এই জুই বার; পঞ্চমী ও মাউমী ভিথি, যতী, রিক্তা, শিবা, নন্দা, পঞ্চমী ও চতুর্দশী, সন্ধ্যা চতুটার ও দক্ষবোগ ও রাশি সকল, তুই হয়। একখি ও বহু দংশন চিহ্নদৃষ্ট হয় ; দফবিদ্ধ খণ্ডিত ব্দাদ ও অবগুপ্ত ভেদে দংশন চারি একার। তিন চুই ও একক্ষত দংশে বেদন। ও ক্লধির নির্গত হয়। রাজিকালে এক পদ বা কুর্মাকুতি দংশন ৰ্ম সম্মত কানিবে। দীহী পিপীলিকাতুলা স্পর্শ (ডেয়ে পীপড়ের কাঁমড় ডুল্য কাঁমড়) কণ্ঠ শোৰ বিশিষ্ট সংখগে দংশন স্বিষ্, এমন কি স্প্ अक्र प्रश्नम कविशा खा: निर्दिष इत । (प्रवास्य, শুকা গৃহ, হলনীক, উদ্যান, (ক⊣টর, গথস‴ক, শাশান नमा, निक्रमक्त्र, बीभ, ठड्डभंग, ८र्शाम, शृह, अब्ह, পর্ব্ব ডাত্র, বিল ছারা, জীর্ণকূপ, জীর্ণগ্রহ, কুড্য (দেওয়াল) শিঞা (শোভাঞ্জন, শজিনা) শ্লেমাতক (বছবারক বভ্য়ার গাছ ইতি বঙ্গভাষা) ঋক (কেলির্ক) জন্বু, ডুম্বর, বট, জীর্ণপ্রাচীর এই সকল ছানে অপিনার মুখ, হুদয়, কক্ষ, জত্ত্ব ভালু, শন্ধ, গল, মন্তক চিবুক, নাভি, পাদ এই সকল অকে দংশন অভভ হয়। দংশন বিষয়ে পুষ্পাহন্ত, হুবাক্, হুধী, দক্টের সহিত লিঙ্গ ও বর্ণে স্থান, শুক্লবন্তা, শুচি, এইরূপ দূত শুভ্তর কানিবে। আর অপ্রশস্ত দারশ্বিত, শস্ত্রধারী, প্রমাদী, ভূতল নিক্ষিপ্ত চলু:। বিবর্ণ বসন, পাশাদি इस, भनभनवर्ग छायी मुक कार्कश्चरी, स्वन विभिन्ने তিলাক করবন্ত্র, আদ্রবিদা কুষ্ণরক্ত পুষ্প বিশিষ্ট (कण, कृठमधी, नशस्त्रको, श्रष्ट्रण्यभी, शामत्त्रथक

(পদভারা ভূমিখনক) ক্লেড্যাগা, ভূণজেনী, এরপ দৃত প্রত্যেক্ট হুফ ও **অভ**ভৱনক হয়। যদি দুতের আপনার ইড়া ধা মন্যা নাড়ী ছুই প্রকারে বহিতে থাকে, তবে এই উভয় খারা বিদ্যার স্ত্রী পুংন পুংদক মন্ত্রের পুষ্টি করিয়া লইবে। দুত যে গাত্র স্পর্শ করে তথায় দংশন জানিবে। দূতের পাদ চলন দোষযুক্ত ও নিশ্চলা উখিতি শুভ জনিকা হয়। দূত জীবের পার্ছে উপস্থিত ভত্তর মন্ত্র মাগত হইলে মুখ্ত জানিবে। জীব, গতায়াত করিলে ছুক্ট ও দূত নিবেদন বিষয়ে শুভ হয়। পূর্ববিষামার্কে দূভের বাক্য, নিন্দনীয় হয়। তাহার বাক্যান্তর্গ**ত** বিভক্তি দকল ৰারা বিষের নির্বিষ কালত। জানিবে। वामा बद्रवर्ग मकत्त ଓ कोमां वर्गवर्ग मधूमा द्व লিখিত হইয়া লিপি ছুই প্রকার হর। বহুমান্ বৰ্গ বিশি**ক ই**তি ক্ষেপাও মাতৃকা জানিবে। वांग् व्या हेल-कनाश्चक वर्गमाश जेहे हाति **ध**कात ভেদ হয়। শক্রম ও অস্মস্ত হয় সকল নপুং-দক্ত পঞ্ম। দুভের বাক্পাদ ও বাতাগ্লি দুফী: ইজ মধ্যম বারুণ বর্ণ দ্রুল প্রশন্ত ; নপুংদ্রু বর্ণ সকল অতিশয় ভূষ্ট। প্রস্থান কালে বাক্য, এবং মেঘ ও হস্তির গর্জন মঙ্গল জনক। এবং निकरण ७ वामनित्क कलभानि इत्क शिकामित्र खत्र জয়বাভার্থ হয়। গীতাদি শব্দ শুভন্নক। বক্ষ্যু-মাণ সমুণায় অসির নিমিত জানিবে-খন্থ বাক্য আক্রন (টেঁচানি) দক্ষিণে শব্দ ও হছি (ইাচি)। বেশ্যার হাঁচি, রাজা, কন্যা, বেগা, হন্তা, মুরজ, ধ্বজ, ক্ষীর, স্থত, দধি, শঝ, ছত্ত্রে, ডেরী, কল, হুরা, ততুল, হেম, রুপ্য এই দকল পদার্থ যদি দমুধে উপস্থিত হয়, তথে ভাছা দিদ্ধির নিমিত জানিবে। সকাঞ্চ বা বহিনর সহিত বর্ত্তমান কারু

মলিনাম্বর ভারধারী, গণস্থ টক্ষ ব্যক্তি (টক্ষ পাষাণ দার চ অন্ত্রু ভাহা যার গলদেশে রহিয়াছে) গোনায়ু, গৃধ, উল্ক, কপদ্দিক, (জটাদিধারী) তৈল, কপাল, কার্পাদ এই দ্রব্য নিষেধের নিমিত্ত ও ভত্ম নফের নিমিত্ত জানিবে। ধাতুও ধাছত্তর প্রাপ্তি হেতু বিষরোগ সপ্তপ্রকার। বিষ দংশ, ললাটে তৎপরে নেত্রে তদনন্তর মুখে গমন করিয়া থাকে। মুখ হইতে বচনী নাড়ীছয়, ক্রেমে বাতু সমস্ত প্রাপ্ত হয়।

ইজ্যায়েরে আদিমগ্রিণে নাগ্রক্ষরাদি নাম্ক চঙ্বদিক্তিশভ্তম অধ্যায়।

পঞ্জিকত্রিশততম অধ্যায়।

मके हिकिएमा।

মগ্রি কহিলেন, আমি তোমাকে মন্ত্র, ধ্যান ও উষধ ঘারা দটি চিকিৎসার বিষয় বলিব। "ওঁ নমো ভগবতে নীল কণ্ঠায়" এই মন্ত্র জ্বপ করিলে বিব হানি হয়। উষধ, জীবন রক্ষা করে। স্বভ্ত সহিত বদ একবাব পান কর্ত্তব্য বিষ তুই প্রকার, স্প মুঘাদির বিষ, ভঙ্গন; শৃঙ্গ্যাদি স্থাবর বিষ। শান্তদ্বর বিশিক্ত ব্রহ্মার স্বরূপ, লোহিত বর্ণ, নিস্তার কর্ত্তা, মঙ্গলময় বিয়তির এই শক্ষময় তাক্ষা মস্ত্রা উক্ত হইতেতে।

ভ জল মহামতে ! হৃদয়ায়, গরুড় বিরল শিরণে গ্রুড়শিখাথৈ, গরুড় বিষভ্ঞান প্রভেদন প্রভেদন বিত্রাস্থ বিত্রাস্থ বিমর্দ্ধ কবি চায় অপ্রতিহতশাসনং বং হুং ফট অস্ত্রায় উগ্রান্তর ধাবক, দর্বভয়য়য় ভীষ্য স্বাং দহ দহ ভশ্মী কুরু কুক সাহা নেত্রায় । দপ্তবর্গান্ত যুগা অইদিগ্দাবার কেশরাদিবর্শক্ষ আভ্রতকর্ণিক নাভ্রা

মুক বহিনকৈ হৃদিত ক্রিয়া বাম**হস্তত্তে** ভাষা স্মাবণ করিবে। অকুষ্ঠাদিতে বর্ণদক্ল এবং বিয় তির ভেদিকা কলা সকল বিন্যাস করিবে। পীড বৰ্শক্রেনত পার্থিব, বজ্রচতুকোৰ, স্থার্ছ ও শুক্লবর্ণ পদ্মার্থ: স্বান্তিকযুক্ত বহুদৈবত তৈজন, ত্রাস্র ও কুফুবর্ণ মালাধারী বায়ু দৈবত বিন্দু মুক্ত तृत्वकृष्ठीति चक्तियासा भर्याख्याण स्वर्ग नाभ-বাহন ছারা বেষ্টিত স্ব স্থ গৃহমধ্যে ক্রমে বিন্যাস করিবে ৷ বিযতির শুমগুল সমকান্তি চারিবর্ণ ও শিবদেবতা রূপধীন রবতমাতে কনিষ্ঠার মধাপর্বস্থ আকাশে ভাহার আদ্যক্ষর এবং নাগগণের অ-মণ্ডলগত আদিবর্ণদকল নামে করিবে। অমুষ্ঠা দির অন্তপর্যে সকলে ভূতাদিবর্ণসকল বিন্যাসনীয়। বুধগণ অঙ্গুলী সকলে তন্মাত্রাদি গুণাভিবর্ণসকল বিন্যাস করিয়া থাকেন। তাক্ষমন্ত্র দার। হস্তে স্পাৰ্শ কবিলে বিষন্ধয় বিন্তু হয়। কবিগণ, মণ্ড-লাদিতে ভিত বিয়তির সেই বর্ণসূদায় স্মুর্ণ করিবে। জ্ঞানী মানব দেছের নাভিস্থান সকলে ও পন্মদকলে শ্ৰেষ্ঠ তুই অঙ্গুলি দ্বাবা উপলক্ষিত জাকুপগ্যন্ত স্বৰ্নাভ, নাভপগ্যন্ত কণ্ঠপর্যান্ত কুঙ্কুমারুণপ্রভ,কেশান্তে কৃঞ্চনর্গ,ত্রহ্মান্ত-वाशी हत्साथा, नागकृष्य, नीनवार्गाधनाम, महा-পক্ষাত্মস্তরপ তাক্ষতি স্বরণ করিরে। এইরপে বিধবিষয়ে তাক্ষাত্মক বাক্য হইতে মন্ত্রজের মন্ত্র হয়। তাক্ষ করের অন্তটাহিতা মুষ্টি অঙ্গুষ্ঠের বিষ-বিনাশিনী জানিও। তাক্ষপ্রিত হস্ত উদ্যুত করিয়া ভৎপঞ্চাঙ্গুলি চালন করিয়া বিবের সংস্কনাদি कतिरुव । (महे मकल शर्मविष्य छे छक इटेब्राइड । এই পঞ্বৰ্ণাধপতি ভুবীজনন্ত্ৰ, আকাশ হইতে অতিবিধকে দংস্তম্ভিত করে। সাধুরূপে সাধিত, সংগ্লপ প্লাবক শব্দান্য যুষ্ত্র কা এই বীজমন্ত্র বিপ-

স্যান্ত ভূষা দারা বিষ সংহার করে। উত্থ রূপে জপ করিয়া অভিযেক করিলে, এই মন্ত্র দণ্ডোভলন করে। স্ঠুরপে জপ করিলে এই মন্ত্র শহা ভেরী আদির নিশ্বন প্রবণ, ভূমি ও তেজের বিপর্যায়ে অবস্থিত ও সংযুক্ত হইয়া অবশাই দাহন করিয়া ভূবায়ুর ব্যতিক্রম হেতু এই মন্ত্র বিষে সংক্রমণ করে। মধ্যন্তিত বা নিজ গৃহস্তি মন্ত্রান্মানব বীজ আগ্লিইন্দুও জলাজ্বারা গরুড়তুলা বিগ্রহ হইয়া এই কর্মা সমাধান করিবে। তাক্ষ ও বরু-ণের গৃহস্থিত হইয়া দেই মন্ত্র জপ করিলে বিষ বিনাশ হয়। কথিত হয় যে এই মন্ত্র জানদণ্ডিা করিলে সর্কবিষ বিনাশ করিয়া জ্বারোগ ও মৃত্যু

প্ৰিক প্ৰক্ৰি মহাপ্ৰিক মহাপ্ৰিক বিধি স্বাহা। প্রিক প্রক্রি মহাপ্রক্রি মহাপ্রক্রি ক্ষাহা। এই তুই প্রকার পাক্ষণার মলু, ইহা অভিমন্ত্রণ कतित्ल विश विभागी इस ।

স্বধা শ্রীবীজচিহ্নিত। অনন্তর

জয় করিয়া থাকে।

পক্ষিরাজায় বিয়াহে, পক্ষি দেবাম ধাণতি ভারোগকত প্রাচ্যাত্র

मकाल अलाझला, दकिन्छि, পा.सं ५१ व ভাগে বহিবিশিষ্ট, দত ভীবর ওদভা। এক হে.ব । ক্ঠে ও শিথায় শেতৰণ নাস কথাকি মন উক্ত • हेग्**रह** : ओ छे बगरक हम श्रुट क^{िन्}र। १९४३ বিন্যাস করিবে।

হর হর লদয়াংনমং কংদিনে চ । প্রমে নীল ক্ষাৰ বৈ শিথাত কালকুট বিষ ভক্ষণাৰ স্বাহা।

অগবর্গাচ করেও নেত্রং ক্লাক্রিনা স্থিনেত্রং 🎚 পূর্বে।দো রান নৈযুক্তণ খেডপীতারেণাসিতে:।

হাবৰ কৰিতেছেন, খাঁচাৰ চ্যুলারে গৌরিও

রুদ্র দেবতা আছেন ; তাঁহার পাদ, জাগু, গুহু, नोचि, इनश, कर्थ, जानन ७ महरक महादर्ग नकल विनाम कतिया कश्चमूरगत अनुष्ठानि अनुनि मनरन তर्कनार्गि चन्नुष्ठी छ काम निमकत्न छ जन्नुष्ठेवुशतन म्कल हे विनाम क तित्व। अहिताल शाम क विध् শীঘ্রই বন্ধশূল মুদ্রাহারা সংখার করিবে। কমিষ্ঠ অঙ্গুলি জ্যেষ্ঠা ছাৱা বদ্ধা, অন্ত তিন্টি, খাকু কিত রূপে শক্ষর ইইবে। বিদ নাশে বাগহস্ত ও অংভ অর্থাৎ শক্ত আদি নাশে দকিণ হস্ত প্রশন্ত। ষরের ও ছন্দঃ অমুকুপ্। অত্তোর ছনঃ তিকুপ্ ইচার ও পুরুষ দেবতা। আগু ইন্দ্র দাশের ছক্ত ত্রিক্স। খাদি প্রতিরগ, সপ্তদশার্চক হকে পুথক্ পুথক্ দেব চা, পুরু 1 ং অঞ্চলেবতা। গ্র শিষ্ট দেবতাগণের ছন্দঃ অনুষ্ঠ প্। ঐ হয় ইন্দ্র ও প্রালিকোক দেবতা, চল-পাক্তি মপলিদেকে (फ) को भया। मर्जाशकांत (वीकांशनाः। ७ ० नर्ना-ধান্দিকটো সাম (ক্ষিপান) সংগ্ৰেষ্ক্ৰ 👉 তা ভাষেক প্রেপাতি মান্দ্রিক একা উম্ ৮১ দক রুদ্রেতা। আদ্য অসুগারের দেওলা এ यामानि इन्मः शाय जो अक्बराव इन्म अकुने शा। ্ন্য ত্রিত্যের চলঃপণ্ড। খনওব ২ন ত বাহৰ ছন্দ্ৰ জগঠা ক্ৰম্প্ৰেৰ মশাভি। হিল 🗇 🤛 ভিন: ভোষাদিগকৈও নিবরকে প্রথান্ত প अरहत (मण्ड) रुप्तां। मास् तर्प अर् छ। ্বংশকে রুত্রগণ দেবতা ৷ সুত্তা এথমা, ছিত্যা জিলগতী হৃণীয়া জিস্ট্পু অনুক্তিপুত **য**জ় এই তিন আর্ব্যাদিছদোজ্ঞ স্থান করে। তৈতে ক্র মোচন মতেও নিষ আহি ও জার বিনাশ পাষ।

হঁ জাঁ ট্রাঁ হোঁ হ' ছৈলোকা মোহনাৰ মিনি, ভুজগণে অভন, বৰদ, চাপ ও ব তাচি বিনাৰে মনঃ। অকুট্পু ও পুসিংই মঞ্বী । স্পূৰ্ণ প্ৰতি হয় ৷

७ डा है छा छा छोतः महाविकः खनसर দৰ্বভোমুধং। দুসিংহং ভীষণং ভদ্রং মৃত্যু নৃত্যুৎ ন্মাম্যই 🖠

देशाई श्रकाल मक्ष देश मर्व्वार्थ माधन करत । দ্বাদশা কর ও অউপকর মন্ত্রদায় বিস্বাধি বিনাশ হয়। কুজিকা ত্রিপুরা গৌরী চন্দ্রিকা ইহারা হাবিণী জানিবে। প্রসাদ মস্তা বিষ হরণ এবং আসু ও আরোগ্য বর্দ্ধন করে। সৌর মন্ত্র বিনাষক মন্ত্র ক্রমন্ত্র এই সকলেই তদ্রাণ বিষহারক ও আ'রোগ্য বর্দ্ধক হয়।

> कैकारदारम च्या मनकाश्रवारण प्रकेतिन या नामक পঞ্ধিকতিশভ্তম অধ্যাধ্য

ষ্ডিধিকত্তিশতত্ত্ব অধ্যায়।

িষ্ঠারক মজৌষধ।

ছিন্দ ছৃদ্বিষ জ্লিত প্ৰপ্ৰাণ্যে চ। নংমা ভগতে পক্ষিক্তায় দটক উত্থাপন উত্থাপয় দলকৈ কম্পান কম্পান জল্পান জল্লা স্থা প্য লগে লগে বহা বন্ধ মেচিয় সোচ্য বর্জদে গড়ছ গছে বধ বধ ক্রাট ক্রাট বুক বুচ ভীমের ভীমন ফাষ্টীনা र इत लियर के के।

পিক্ষিক্স ও কুন্দে মন্ত্র উচ্চেবিণ কবিয়াবিদ, •াশ পাব ৷ ওঁ নমে ভগবতে রুদ্রে নাশ্য বিষ পোৰনজন্মণ কু এম'কু'ভ্ৰম বিষ্ মুপ্ৰিষ[্] নাশ্য নানা বিষ্টত কিবিং নাগ্য়ণম ধ্য দম্দ্ম ব্য বম মেঘারকার ধারা কর্ষ নিবিধীভব সাহর সংহর গচ্ছ গচ্ছ আবেশয় সাবেশয় বিযোগানৱাপং মত্রান্তাদ্বিয় ধারণে ওঁ কিপ ওঁ কিপ কংহা।

इ.ँ. ई.ँ की मः शिक्ती देप के ।

জপাদি দ্বারা সাধিত এই মন্ত্র, সর্পাণকে নিয়তই বিনাশ করে। এক ছুই তিনও চতুর্গীজ বিশিষ্ট কুষ্ণের চক্রাদি পঞ্চাঙ্গ যুক্ত "গোপীজন ^{ব্রভার স্থাহা"} এই মন্ত্র দ্বার্থের সাধক হইয়া পাকে।

ওঁ নমো ভগবতে কুদ্রায় প্রেতাধিপত্য়ে গুত গর্জ গর্জ ভাষর ভাষর মুঞ্চ মুঞ্চ মুঞ্চ মুঞ্চ কট কট আবিশ আবিশ হ্বর্ণ প্রক্ত ক্লন্ত্রে জ্ঞাপ্যতি । दे दे

এই মন্ত্র পাতাল কোভক, এই মন্ত্র উচ্চারণ করিলে দংশক ও অছিগণের বিষ বিনাশ হয। দংশন করিবামাত্র তংকণাৎ কাঠ শিলাদি ছারা ও জ্বালকোক নদাদি দারা দংশন স্থান দাহন কবিলে বিষের শান্তি হয়। শিরীদের বীজ ভ পূষ্প এবং আকন্দের ক্ষীর ও বীন্ধ এবং কটুত্রয় এই মকলের পান লেপন ও অঞ্জনাদি স্থার। বিষ ম'লে ক'ছলেন্ ও' ন্না ভগৰতে ক'লুয^{়া} বিনাশ কৰিবে। শিৱাস পুলেপৰ রুস যুক্ত মরিচ ও শক্ৰাৰু পান ও ন্যা এবং অল্লাদি ছাৱা বিষ স্কাৰ হয় সন্দেহ নাই। কোষাতকী, বচা, ভিল, শিরীষ, ভাক, ছুর্র এই সকল সংযুক্ত ও মেয বাবি বিশিষ্ট তিকেট্র ন্যাশাদি প্রদান করিলে বিষ হরণ ংবে। বামঠ ইক্ষাকুও দর্বাঙ্গ চর্ণের । नण आमान कविराम विष्य मध्ये इष । केळा, वना, অগ্রিক ড্রোণ, তুলগাঁ, দেবিব। ও সহা ইহাদের রম মুক্ত ত্রিকটু চুর্ন ভক্ষণ করিলে বিষ্ক উপশমিত। া। কৃষ্ণ পঞ্চীতে শিবীষের পঞ্চান্ত্রী প্রস্তুত किरिया अनाम किरिटन विय भक्ते दश ।

> ভাগেরে আছিলভাপুরাণে বিবংসবামান্ত্রীষ্থ নামক व्हर विल्क्डम भ्राह्म

সপ্তাধিকত্রিশতত্য অধ্যায়।

গোনদাদি চিকিৎদা।

অগ্নি কহিলেন, হে বশিষ্ঠ ! গোনসাদি চিকি ৎসা কহিতেছি শ্রাবণ কর।

হ্রী হাঁ অমল পকি স্বাহা।

তাম্বল চর্বাণ করিতে করিতে উক্ত মন্ত্র পাঠ করিলে মণ্ডলির (১) বিষ বিনষ্ট হয়। বিষমাত্রেই লশুন, রামঠফল, কুষ্ঠ, অগ্নি ও ত্রিকটু ভক্ষণ কর্ত্রা। দর্পবিষে স্থাকীর, গ্রান্থত ও পক পান করিবে। রাজিল দংশনে দৈশ্ববদহিত কুঞা পান করিলে বিধ নষ্ট হয়। য়ত ও ক্লোদের বিষ্ঠা (মোম) ও জলদ্বারা পুরীতরীর বিষ বিনাশ পায়; তাহাতে কৃষ্ণা, খণ্ড, চুগ্ধ ও গ্লত দহমাক্ষিক পান কর্ত্রা। ত্রিকটু পিছা, বিড়ালাছি, নকুলের লোম, এই দকল চুর্ণ করিয়া মেষ চুন্ধযোগে ধূপ প্রদান করিবে সর্বাপ্রকার বিষ বিনষ্ট হয়। রোম, নিপ্ত ডি. কাকোল, বর্ণের কাজিকপাচিত মুনিপত্র ঘারা স্বেদ প্রদান করিলে দফী ব্যক্তি নির্বিষ হয়। মুনিক ষোড়শ প্রকার উক্ত হইয়াছে: মূষিকবিষে কালাদেরবদ পান বিশেয়। মটেতল ফলিনী কুজম। মুখিক। বিষ্ণাধি বিনাশ কৰে। নাগরের সহিত গুড় ভক্ষণ করিলে, মৃষিক বিষজনিত অরুচি নইট ₹ग ।

ল্ভাভন্ত বিষেব চিকিৎসা বিংশতি প্রকার।
পদাক, পাটলী, কৃষ্ঠ, নত, উশীর, চন্দন, নিশুগুী,
শারিবা, শেলু এই সকলের জলে, লৃত বিষার্ভি
ব্যক্তিকে সেচন করিবে। শুগো নিশুগুঁা, কলোলপর্ন, শুগী, নিশাঘয়, করঞ্জান্থি এই সকল দ্ব্য পল্লাকৃতি করিয়া রশ্চিক বিষ বিন্তি হয়। মঞ্জিষ্ঠা

(১) মণ্ডলী--গোনস দর্গ।

চন্দন, ত্রিকটুরপুস্স, শিরীব, কোমুদ, এইচারিন্দ্রন্য একত্রিত করিয়া বেপাদি প্রদান করিলে বৃশ্চিক বিনাশ পায়।

ওঁ নমে। ভগবতে রুদ্রায় চিবি চিবি ছিন্দ ছিন্দ কিরি কিরি ভিন্দ ভিন্দ বড়েগন ছেদয় ছেদয় শ্লেন ভেদয় ভেদয় চক্রেণ দারয় দারয় ওঁ হুঁ ফটু।

জভিমন্ত্রিত এই মন্ত্র, প্রয়োগ করিলে গর্দভাদিকে বিনাশ করে। ত্রিফলা, উশীর, মৃস্তা, জল
মাৎসী পদ্মক চন্দন, এই সকল দ্রির জ্ঞাক্ষীরের
সহিত পান করিলে গর্দভাদির বিষ নাশ হয়।
শিরীষপঞ্চাঙ্গ ও ত্রিকটু শতাপদার (কেণ্ডায়ীর)
বিষ হরণ করে। সকল্পর শিরীষান্থি উন্পুর্জ বিষ
সংহার করিয়া থাকে। সম্বত্ত ত্রেকটু ও পিণ্ডীতমূল ও উহার বিষহারক হয়। ক্রার, ত্রিকটু, বচা,
হিঙ্গু, বিড্গু, সৈদ্ধান, অন্তর্চ, জাতিবলা ও কুঠ,
সর্ব্রেব্ব বিনাশ করে। যন্তি, ত্রিকটু, গুড় ও
ক্রীরের সংযোগ, কুলুবের বিষহারী হয়। ও স্ভদ্রায়ে নমঃ ও স্থাভাষে নমঃ।

মানবগণ, বিধান ব্যতিরেকে যে দকল ঔষধ গ্রহণ করে, "হে দেবি! তুমি দেই সকলেরই বাজ তুমি গ্রহণ করিবে" প্রক্ষা ভাঁহাকে এইরূপ করি রাছেন। সেই ঔষধ সকলকে প্রণাম করিয়া পশ্চাৎ মৃষ্টিঘারা যবসকল প্রক্ষেপ করিয়া দশ্বার এইমন্ত্র জপ করিয়া দেই ঔষধকে নমস্কার করিবে। ছামু ঘারা ম্যুর্জণেত্রী এবং এই মন্ত্র ঘারা ভক্ষণ করিবে। পুরুষ্পিংছকে নমস্কার করি, গোপালকে নমস্কার করি। রূপে কৃষ্ণের পরাজ্য আপনি জানিতিছেন, এই সত্য বাক্যঘারা আমার ঔষধ্যিত্ব বা স্কুল হউক।

नाम। रेवन्धामार्ड छन्न छन्न त्रक्याः नर्दि-

বিষেক্যো গোঁরি গাছারি। চাণ্ডালি। যাতদিনি বাহা।

স্থাবরবিষে ঔষধানিতে এই সন্ত্র প্রেরাগ করিবে। ভূজনাত্র জালস্থিত হইলে তৎপরেও যদি বিষ ধাকে ভবে শীওলাস্থ্ত পদ্ম ও সহত ক্ষেত্র পান করাইবে।

ইত্যায়েরে আদিমহাপুরাণে গোনসাণিচিকিৎসা নামৰ স্পাধিকজিশতভ্য অধ্যায়।

অফাধিকত্রিশততম অধার।

বালগ্রহ্রবালভন্ত।

অগ্নি কহিলেন, বালাদির গ্রহবিমর্দন বালভন্ত वर्गन कदिव। यनि कां छिप्तन शाशिमी शही वर-দকে গ্রহণ করে, অর্থাৎ শিশুকে আত্রয় করে, তবে তাহার গাতোছেগ,আহারহীনতা এবং নানা-প্রকারে গ্রীবাবিবর্ত্তন হয়। ভাহার কার্য্য এইরূপ নানাপ্রকার হইতে থাকে এবং মাতার বল হরণ करता सश्मा, सारम, इस्ता, अलका शक्त, सामा, ধূপ ও দীপ প্রদান করিয়া ধাতকী, লোধ, মঞ্চিঠা, তাল ও চন্দন ছারা উপলিম্পন করিবে এবং মহি যাক দানা ধূপ প্রদান কর্ত্তব্য। গ্রহী দিরাত্তে অত্যন্ত ভয়ঙ্করী হয়। তখন শিশুর কাস ও দীর্ঘ नियाम ७ मृह्यू छ गाळम ९ ८ काइन इटें एक । তাহাতে অজামূত্রলেপন এবং অপামার্গ ও চন্দন কৃষ্ণাদেবন করিবে। গোশৃঙ্গ, গোলস্ত ও কেশ ষারা ধুপ ও পূর্ববিৎ বলি প্রদান কর্তব্য। এই। ঘণ্টালী নামে প্রথিতা, তাহার কার্যা মৃত্যুহ জন্দন, জ্ন্তুন, শব্দ, জাস, গাজোছেগ ও অয়চ रत्र। जाराटि (कमंत्र, शक्षन, त्रापस । रहिसस, ব্দজ্যার সহিত লেশ্ন কর্তব্য। নথ, রাজী ও विव पर बाता थुल क्षमान लुक्क लुका क्षमान করিবে। চতুর্থ রাজে গৃহা কাকোলীনামে প্রথিতা, जाराह कार्य्य गाटकाट्यम, चक्रकि, क्रिटनामगाँह, একদুকে একদিকে নির'ক্ণ, আসব সৃহিত কুল্মায (याष्ट्र) बाता शृंका कतिरत । তाहारक शक्रमस्त, व्यहि নির্মোক, (সাপের খোলস) ও ছোটকমুত্র খারা প্রলেপ দিবে। রাজী ও নিম্ব পত্তের সহিত হোঁত কেশ ছারা ধূপ প্রদান করিবে। পঞ্চন রঙ্গনীতে গ্ৰহীর নাম হংদাধিকা, জৃন্তা, উৰ্দ্বাদ এবং মৃষ্টি-বন্ধন তাহার কার্য্য; তাহাতে মৎস্যাদি দারা বলি প্রদান করিবে। মেষশুন্ধ, বলা, লোও, শিলা ও তাল ছারা শিশুকে লেপ প্রদান করিবে। ষষ্ঠী গ্রহীর নাম ফট্কারী; ভাহাতে ভয়, মোহ, রোদন, নিরাহার ও অঙ্গবিকেপ ঘটিয়া থাকে, মংসাদারা উহার বলি প্রদান বিধেয়। রাজী, छन्छन्, क्रं, इखिनस्रामित धूप ७ त्मपन अमान কর্ত্তব্য। সপ্তমীর নাম মুক্তকেশী; পীড়া, পৃতিগন্ধ, বিজ্ঞণ, অবসমতা, উচ্চরোদন ও কাস তাহার চেষ্টা: তাহাতে ব্যাহ্র নধ ছারা ধুপ ও বচা গোময় ও গোমুক্তবারা উপলিম্পন করিবে। অউমী এহী জীদস্তী; দিঙ্নিরীকণ, ছিস্তাচালন, কাস ও **(दामन डांशांत कार्या। विल शृक्ववर, मरमामि** দারা ধূপ এবং বচা, সিদ্ধার্থ ও লভন সহিত হিসু-লের লেপ প্রদান কর্ত্তব্য। তদুর্কা নব্মী মহাগ্রহী; উবেগ, উপ্লিখাস, নিজমৃষ্টিবয় খাদন ভাহার (ठकी। तक कमन ७ क्षीमि चाता धून **७ ८नन** দাতব্য : কপিরোম ও নথ বারা ধূপ দান করিবে। দশমী এহী রোদনা : সতত রোদন, অগন্ধ, নীল-বৰ্ণতা ভাৰার কাষ্য। নিম্বারা ধূপ, ভূতোগ্রবাদী ও मर्ब्बतम दात्रा त्ना श्रमान कर्त्रा। नाज, कृत्यायक, राक्श्यम खहे मक्त वित विश्रिष्टार

क्षमान कब्रिटन। खरशांन्य मित्र शर्राख अहेकरश ধুপাদি ক্রিয়া সম্পাদন করিতে থাকিবে। শিশু যথন এক মাদের হয়, ভখন পূতনাসকুলী এহা বৎসকে আঞায় করে; কাকবৎ রোদন, খাস, মুত্র গন্ধ ও চকুর্ণিমীলন তাহার কার্য্য। গোমুত্রে স্নান করান ও গোদন্ত ছারা ধুপন কর্ত্ত্য। পীত্রস্ত্র, রক্তমাল্য, গদ্ধ ও তৈলপ্রদীপ, ত্রিবিধ পাযসরস, মন্য, চতুর্বিধ তিল্মাংস ও দক্ষিণদিকে করঞ্জাধ, এই সকল বলি সপ্তাহ প্রদান করিবে। ঘিমাষিকা এহী মুকুটা; শিশুর শ্রীর শীতল হয় ও শীত করে। ছদ্দি ও মুখশোষাদি তাহার কার্য্য। পুষ্পা গন্ধ, বন্তাদি, সপুপ ও মোনকবলি কুষ্ণের দীপ ও নারাদি ধুণ প্রদান করিবে। ভূগীয় মালে গোমুখা এছা নিদ্রা, বিষ্ঠামূত্র ভাগান, রোদন তাহাৰ কাষ্য। যব, প্রিবঙ্গু, পলন, কুল্মাণ, শাক त्यापन ७ की व श्रुटर्स अपान कतिया सक्षाम पितन স্থত স্বারা ধুশ প্রদান করিনে। চতুর্গনাদে পিঞ্লা নামিকা গ্রহী; ঐ নাদে পঞ্চঙ্গ দারা স্থান করিলে রোগাদি বিনাশ পাষ। ভাছাতে তফু শীৰলা হয় পুতগদ্ধ ও শোষ উপস্থিত কৰে; পরিশেষে শिশুর প্রাণ বিয়োগ হয। ললনা পঞ্চমা এইী; ভাগতে গাতের অবসন্তা, মুগুশোষ, অপানুগায় পবিত্যাগ, পীতবর্ণ এই সকল স্ঘটিত হয়; মং मार्गिष्ठाता मिक्का विविधानाम रखना। यशास्य পক্ষজাগ্ৰহী ; রোদন ও বিকৃতস্ব । ভাহাৰ কাৰ্য্য। নংদ্য, মাংদ, হুৱা, ভক্ত (ভাত) ও পুষ্পাক্ষাদি ষারা বলি প্রদান করিবে। সপ্তম মাদে । নরাছারী এহী; ভাহাতে পৃতিগন্ধাদি ও দন্তরোগ হয়। **পिके**मांक, छवा ७ मांक घाता वीन श्वनान कर्छवा। व्यक्टिम यम्मा भाषी शर्दा, विटका है ए लावनानि তাহার কাষ্য, ভাহার চিকিৎদা করাইবে নাঃ

नवरम कुछकर्गी धारी, कास्त्रधा, स्त्रत, स्राप्त নাদি তাহীর কার্যা: মাংস, যাবক ৩ মদ্যাদি ছারা दिवारमय बन्नि धामान कर्डवा । मणाम जानगी-নালীগ্রহী ; নিরাহার, চক্ষুনিমীকন ভাহার কার্য্য : ঘণ্টা, পতাকা, শিক্ট-মাংশাদি ও হুৱা মাংস বলি थानाम कतिरव । **अकानरम ब्राक्तभी मान्नी** शाही, তাহাতে নেত্রাদির পীড়। প্রকাশিত হয়, তাহার চিকিৎসা করাইবে ন।। খাদশে চঞ্চলা এই। খাস ও ত্রাসাদি তাহার চেন্টা পূর্বাচ্ছে বলিপুত্রা ও মধাতে যাবকাদি ও তিলাদি ছারা বলি এদান কর্ত্র্য। দ্বিতীয় কর্ষে যাতনা প্রহী, যাতনা ও বোদনালি ভাহার কার্যা, তিলমাৎস, মদ্যমাংস বারা বলি প্রদান ও স্নাদি পূর্বব**ে সম্পা**দন্ করিবে। ভূতীয় বর্ষে বোদনী গ্রাহী, কম্প, বোদন, রক্তমূত্রা, ভাহাব কাচা; প্রভু, অন্ন, তিলপিন্টক ও তিলপিন্টকের *প্রতিমা*দ্বারা ব**লি** প্ৰদান তিল্মান, বাছফল স্কুকের দহিত পঞ্পত चाता धुलन कर्डना। हर्ज्यन्टर्य हर्षे नारमाकी खरी, জ্ব, স্কাংক্তে অবসন্ধতা তাহাৰ কাষ্য**় ভাহাতে** ' মংস্থা মাংদ ও তিলাদিদ্বাবা বলি প্রদান স্থান ও ধুপান কর্তিয়। পা eমবংঘ চঞাবা, তা**হাতে জ্ব**়া ত্রোস ও অঙ্গসাদন তাহার চেন্টা, মাংস ও অম্বারা , বলি ও মেষশৃঙ্গবারা ধূপ দান পলাদ, উভূম্বর, অখ্য, বট, বিল্পাল ও জল লেপ ধারণ করিবে। ষ্ঠবর্ষে ধাবনী,শোষ, নৈবাশ্য, গাত্রাবদাদ ভাছার 🖟 কাৰ্য্য, সপ্তাহ বলি প্ৰদান, পূৰ্বেবাজ্ঞ দ্ৰব্য ছারা । ধুপ ও ভদকভার। আন কর্ত্তবা। সপ্তমে ধর্না, ছ'র্দি, বাকাহানতা হাস্ত ও রোদন ভাহার কার্যা, মাংস, পায়স, মদ্যাদিদ্বারা বলি প্রদান, স্থান ও ধূপন কর্ত্তিয়া। জাতীন বর্ষে জা**তবেদা, নিরাহার** ও বোদন তাহার কার্য্য ; কুশর(ভিল্মিঞ্জিত অন্স) 🖟

অপুপ ও দৰি আদিরভারা বলি প্রদান, স্নান ও धूनमान कदिए । नवसारक काला ; बाक्त चात्क है গর্জন ও ভয় ভাহার কার্যা; কুণর, অপুপ(পিঠা) শক্ত (ছাতু) যাবক ও পাবসহারা বলি প্রদান कर्त्तरा। समझवटर्स कलरूशो, नार, अन्नकुन्छा ও ছর তাহার কার্যা, পোলিক (ঈষদ্রশ্ব কলায় যবাদি) অপুপ, দধি ও অম্বাবা পঞ্চরাত্র ভাহাকে বলি প্রদান করিবে। তাহাতে নিম্বের ধূপ ও कृष्ठित दलभ निरश्य। धकानगवर्ष रमनमृजी ন ল্লী প্ৰহী, নিষ্ঠাণৰাকা ভাগার কার্যা, ভাগতে বল ও লেপাদি পুৰ্ববিৎ দাতব্য। স্বাদশে বলিকা খাদ তাহার কার্যা, বলি ও লেপাদি পুর্বাবৎ व्यमान कतिर्व। जिर्मातम वायती, मुर्चव छ বাহ্যাঙ্গেৰ অব্দন্ধতা কাৰ্শ্য,ৰক্ত ল,গল্প ৰ মাল্যাদি ছোরা বল প্রদান ও পংশাসে ছোবা সানে বতুৰ। চহুদৰে যকিবা গ্ৰহী, বাজী ও নিৰদলঘাৰা ধূপ দাত : ; শুৰ, জ্ব, দাহ তাহাব কাৰ্য্য ; মা স ভক্ষ্যাদিদ্ব বা বলিপ্রদান ও শান্তির নিমিত্ত পূর্ব্ববৎ সানদি বর্তা জানিব। পঞ্চশবর্ষে মুক্তিকা, বক্তভাব তাহার বার্যা, নিষ্তুট মার্ড চিকিৎস। কবিৰে। যোড়শী ধানবী, সূতলে পতন, নিষ্ত জব তাণাব চেকী; পায়সাদিয়াবা বলি প্রদান ভ স্নানাদি পূৰ্ববিং কর্ত্তব্য। সপ্তদশে গন্ধবতী, গাত্তাবেগ ও রোদন তাহার কার্য্যাবকাদিদ্বার। বলি প্রদান, স্নান ধূপ ও লেপাদি পূর্ববং কর্ত্বতা দিনেশ্বনী গ্রহীগণের নাম পুতনা ও বর্ষেশ্বী গ্রহী-গণের নাম ভকুমারিকা জানিবে।

ওঁ নমঃ সর্বমাত্ভাঃ বাল পীড়াসংযোগং ভুঞ্জ ভুঞ্জ, চুট চুট ক্ফেটেয় ক্ষোটিয় ক্ষুব ক্ষুর গৃহুহ গৃহু আকট্য আকট্য় এবং দিলকপো জ্ঞাপ-যতি। হব হর নির্দোষ্ণ কুরু কুরু বালিকাং বালং স্থ্রিরং পুরুষম্বা, দর্বব গ্র**হাণামু**পক্র-মাং।

চামুওে নমো দেবৈর ইঁ ই হাঁ অপদর অর্পছফ গ্রহান ইঁ তুদ্যথা পদহন্ত গুফ্কাঃ অন্যত্ত্ত পদ্যানং ক্রেনে জ্ঞাপগতি।

এইমন্ত্র সর্কবিধ বাল্গ্রহেই সর্বকাম প্রদান করিয়া ধাকে।

ওঁ নমো ভগবতি চামুণ্ডে মুঞ্চ মুঞ্চ বালং বালি-কামা। বলং গৃহু গৃহু জয় জয় বদ বদ। এইরক্ষা কর মন্ত্র দর্শপ্রকার বলি প্রদানে পাঠ করিবে।

ব্ৰহ্মা, বিষ্ণু, শিব, স্কন্দ, গোঁবী, লক্ষ্মী ও গণাদি দেবগণ, ভারদায় হইতে রক্ষা করুন এবং কুমারকে গ্রহপীড়াদি হইতে মুক্ত করুন।

ই স্যাপ্তেরে আদিমহাপুরাণে বালগ্রহুহববাল্ডস্থনামক অষ্ট বিক্তিশ্তত্য অধ্যায়।

নগধিকতিশতত্ম অধ্যায়।

अङ्क्रमञ्जानि ।

অগ্নি কহিলেন, গ্রহবিমর্দক গ্রহদুরীকরণ
মন্ত্রাদি কার্ডন করিব। হর্ষ, ইচ্ছা, ভয়, শোকাদি,
বিরুদ্ধ ও অশুচি শোভন, শুরুদেবাদির কোপ,
এই সকল কারণে পঞ্চপ্রকার উম্মাদ উৎপন্ন হয়।
ঐ উমাদ সকল ত্রিদোষজ হইলে সমিপাত ও
পৃথক প্রকার আগস্তুক বলিয়া কথিত হয়। রুজ্রক্রোধ হইতে অনেক প্রকার দেবাদি গ্রহণৰ জন্মগ্রহণ করিয়াছে। সরিৎ সবোবব, ভড়াগাদি,
শৈল, উপবন, সেতু, নদসঙ্গ শ্ন্যগৃহ, বিল্ছার,
এন রক্ষ, এই সকল স্থানে গ্রহণৰ, পুরুষ এবং
মুপ্তাগভিণী যাহার ঋতুস্রাব কাল আসমব্দী হইয়াছে, অথবা ন্যা বা ঋতুস্রানকারিণী এই সকল

श्वीगंगरक वार्ग करते। नत्रगरंगत अवमानमां, रेवत् বিল্প, ভাগ্যবিপর্যয়া দেবতা-গুরুধর্মানি সম্চারানি লজ্যন ও শৈলবৃক্ষাদি চ্টাডে প্তন, কেশবিধ্নন (চুল ঝাড়া) এইসকলই নরগণের গ্রহ প্রান্তির কারণ কানিবে। গ্রহামুগ্রবিউ নর ছং সন্তর্মণ, রক্তলোচন হইয়া রোদন করিতে করিতে নৃত্য করে। বলিগ্রহণেচভুক গ্রহবান্ মানব, উদিয়া, শূলদাহ পীড়িত, কুগাতৃষ্ণাতুর ও শিরঃশীড়া সম-শ্বিত হইয়া দেহি দেছি রবে যাচঞা করিতে থাকে। রতিকামী গ্রহবিশিষ্ট নর, স্ত্রীসমূহসভোগে ও স্নানে বাসনা করিয়া থাকে। এই গ্রহ, মহাপ্রাণ, মহাদর্শন, বেগমব্যাপী ও চিপিটনাদিক হয়। পাতাল ও নারসিংহ চণ্ডী-মন্ত্রদকল গ্রহ বিনাশন করে। গ্রহবিনাশার্থ, পৃশ্লী হিন্দু বচা, চক্র, শিরীষ এইদকল প্রিয়বস্তুদ্ধারা পরাৎপর পাশা-कुनश्त, जक्तमानी ७ क्लाना महाम्बदक अवर খট্টাঙ্গ অজ্ঞাদি শক্তিধর চতুরাননকে ও রবিষওলন্থ অন্তর্বাহাদি খট্টাঙ্গ পদাস্থ আদিতাাদিযুক্ত নারা ग्रनाक कर्कना कतिया। मृत्यानिय हरेला कर्या अनीन করিবে। ভৃগু, খাদ বিষণত্নি-বিপ্রকৃত বিশিষ্ট এবং ভাহার জনয়ে বছরেখা চিহ্ন বিদামান রহি-য়াছে, এইরূপ চিন্তা করিয়া তাঁহার ও অ্কায় कुर्जु व: यः अहमाद्ध कृत गुनगत क्रांनिनीत अर्फन। করিবে ৷ অরুণ, পদ্মাসন, রক্তবন্ত্র এবং চ্যুতি ও বিখকের সহিত বিদ্যমান, উদার, বাছৰয়ে পদ্ম-ধারা, সোমা ও সর্বাঙ্ক ভূষণে বিভূষিত। হালাদি মন্ত্রদকল রক্তবর্ দোগা, বরদ ও পদাধারী। यञ्ज বিচ্যুৎপুঞ্জ নিল, গৌমা খেডবর্ণ, কুজ অরুণ বর্ণ। ৰুণ ও অৰুণবৰ্ণ বৃহত্পতি পীতবৰ্ণ, শুক্ৰ ও শৰৈ-শ্চর শুরুবর্ণ, রাজ কৃষ্ণাঙ্গারপ্রভ, কেতৃ ধ্**ড**াবর্ণ। উহাঁদের বামউরু ও হস্ত মনোংব, দক্ষিণ হস্তে

অভয় প্রদান করেন। সেই সকল বীঞ্চান্ত্র স্থন'মে বাদি ও বস্তবারা কৃত হয়। चल्रमाल रखदत সংশোধন করিয়া অঙ্গৃষ্ঠাদির তলে, হুদাদি ও মন্ত্রধারা সাল-প্রাণধায়িক ন্যাস করিরা, পাত্রমন্ত্রে প্রকালন পূর্বক, মূলমন্তে বারিদ্বারা আপ্রণ করিয়া গদ্ধপুষ্পাক্ষত বিন্যাদ পূর্ববন্ধ ভুববি ও মর্ঘ্য মন্ত্রদারা প্রদান করিবে। মূলমন্ত্রে আত্ম প্রোকণ ও নিয়মিত পূজা দ্রবাদকল প্রদান পূর্বেক, আরাধন ও পরমত্ত্রথ স্বরূপ বিমল বিশ্বরূপ পরমাত্মার পূজা করিয়া হৃদয়মধ্যে ও বিদিকৃ সকলে এইপীঠ কল্পনা করিবে। দিক্ ও বিদিক্ পূজা করিবে। দকলে পীঠোপরি হৃদয়মন্ত্রে পীঠোপরি হুৎপদ্মদেশ ভাহার কেশর সকলে অফ শক্তি বিরাজিত। আছেন, বাংনীজা দীওা, वीश्वोका भृगा, बुःबीका कहा, बुःबीका छक्तिका (दःदीका विष्कृती, देवःवीका विभना, द्वाःवीका অদিঘাত বিচুতো, বেংবাজা দর্বতোমুখী এই অফ্রাক্তির ও বং বীজকপীঠ ও ব: বীজক রবির অর্চনা পূর্ববক আহ্বান করিয়া, হৃদয় ও বড়ঙ্গমন্ত্রে वान्तानि श्राम कतिरव। चकात्र मध्याति इत-चग्र ७ माःनचाता शीर्या मन्नमःयुजा मक्ता ; व्यता-বায়ু ও হৃদ্য মন্ত্রে, রবির এইসকলের পূজা कदिरल मर्व्यकाम नकल इय् । बह्रि-ज्ञेन, ब्रांक्स ও মরুদগণের দিক্দকলে কর্ণিকান্তখিত হুদানির, चमञ्ज्ञचात्रा ও পূরোভাগে দিক্সকলে সেইরূপে মন্ত্র পূজা করিবে। পূর্বাদিদিক্ সকলে, চক্তা, तूप, श्रुक्त ७ ভাগবের পূজা করিবে। এছদোষ বিনাশক অজামূত্র সহিত পাঠা পথ্যা বচা, শিগ্রু, সিষ্কু ও ব্যোষ (ত্রিকটু) এই সকল ছারা নগা ৪ কজ্প প্রস্তুত করিবে। এক আঢ়ক অজা সূর্যে

পক ছত সর্ববিছ বিনাশ করে। মপদ্মার রোগ বিনাশের নিমিত, বুশ্চিকালী, ফলী, কুঞ্চ, লবণ ও শাসক এই সকল জব্য ও তাহালের জল ভোজন করাইবে। বিলারী, কুশ, কাশ, ইক্ষু এই সকলের কাণ ও প্রক্রান এবং দ্রোণে সংস্কৃত স্বাষ্টি কুমাণ্ড প্রস্ন ও মৃত পঞ্চাল্য, মৃত তাহাদের সংযোগ, স্কুর নাশ করে; স্বরহর মন্ত্র শ্রেবণ কর।

ওঁ ভদান্তায় বিষাহে একদং ষ্ট্রাচ, বীমহি ভয়ো স্থ্য প্রচোদয়াৎ।

শাস বোগী, কৃষ্ণা, উষ্ণ, নিশা, রামা দ্রাক্ষা তৈল ও গুড় অথবা য়ত যোগে যপ্তিমধু ও ভার্গী অথবা পাঠা, ভিজ্ঞা, কণা ও ভার্গী মধুযোগে লেহন করিবে। ধাজী, বিশ্বসিতা, কৃষ্ণা, মুন্তা, থর্জ্জুর মাগধী পিষর এই সকল দ্রব্য হিকামাশ করে, ভাহাদের যে কোণ ভিন্টী মধু যোগে লেহন কর্ত্তগ্য। কামলী (কামলা রোগী) জীর মাওকী নিশা ধাজীরস পান করিবে। ত্রিকটু, পদ্মক, ত্রিফলা, বিড়ঙ্গ, দেবদারু ও বওভুল্য রাম্মা চুর্ণ ভোক্তন করিলে নিশ্চয়ই কাস নাশ হয়।

ইত্যাথেরে আলিমহাপুরাণে গ্রহনুমন্তাদিনামক লবাধিকজিশতভ্য অধ্যায় ।

দশাধিকত্রিশভতৰ অধ্যায়।

সূৰ্যাচ্চন।

व्या किरिनम, "भवा कू मिलमांकन भाषक फ क्वाननः" अहे बीक मळ मर्नाएवंत मांबक छ भिलाई किथि हरा। मीर्च ब्रानि खराः (अक्याज) मकन वीः कहे मर्नेख व्याने छ हरा। थांड, माधू, विव, मविन् छ मकन गर्वत अहे शक बीक मर्जात महिर कन श्वक शृथक मृत्वे हरा।

गंगर कतात्र नमः अकन्तः हेरतः, कठलकर्नितन भज्ञ यक्तात्र महत्त्रमः हत्त्रातः।

সর্বত্তে সমান ভাষাপন্ন এই পঞ্চান্ত মন্ত্র, লক্ষ-যার জপ করিলে সিদ্ধি হয়।

গণাধিপভারে গণেশবার গণনায়কার গণকীভার এই মন্ত্র ছারা দশদলে পূর্ববাৎ পঞ্চান্ধ মন্ত্র ও দূর্ত্তি সকলের পূজা করিবে।

বস্তুতায়, একদংখ্রীয়, মহাদেবায়, গজ-বজ্ঞায়, বিকটায়, বিশ্বরাজায়, ধূত্রবর্ণায়।

এই মত্ত্রে ও মূল্রাম্বারা দিগ্বিদিকে লোকাংশ-গণের পূজা করিবে; মধ্যমা ও তর্জনীর মধ্যগত সমৃষ্টি অস্তিঘয় ও মোদকবিশিষ্ট দণ্ডপাশাঙ্কুশবুক্ত চারিভুত্র বিরাজিত, দস্ত ভকাধর, রক্তবর্ণ সপক্ষ পাশাঙ্কুশ ছারা ছার্ভ ভাঁহাকে নিত্য নিত্য বিশে-ষত: চতুৰ্থী তিখিতে পূজা করিবে। খেতার্কমূল এবং তিল ও মতে মারা পূজা করিলে সর্বাভিনায পূর্ণ হয়। তণুল, দাধ, মধুও আজ্য বারা অর্চনা করিলে দৌভাগ্য ও বশ্যতা হয়। ঘোণা শোণিত-প্রাণ ধাতৃণীড়ক দওধারী মার্তিও ভিরব বিশ্বপুটে আবৃত হট্যা ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক প্রদান করে। পঞ্মৃতি হুম ; তাহার অল সকল দীর্ঘ। ঈশানকোণে সিন্দুর ভুলা অক্সণবর্ণ বামার্মধায়ত व्यवित्र शृक्षा कविद्य । आधार्ववानि टकानगरन कुछ, শনৈশ্চর, রাছ ও কেডুর পূজা কর্ত্তব্য। বিধি পূৰ্বকে স্থান করিয়া অর্থা প্রদান পুর:দর আদিতেয়র चात्राधना क्तिया जेगान व्याय निर्माता ७ मीलिख एक इं इंट्रेंक व्यक्ति कतिरव। द्वाहमा, कुडुग, वादि, तक्षाध्यान, शक, मक्षाह, मकूद, (वर् বীজ, যব, পালিধান্য, শ্যামাঞ্চ, তিল, রাজিকা ও জনাপুষ্প এই সকল জেব্য পাত্রে রাখিয়া ঐ পাত্র মস্তকে ধারণ পূর্বকে অবনীতলে জাসুযুগল পাতিত

क्तिया नृयादानवटक व्यर्था निर्यमन क्तिरव। মত্রে শভিমন্ত্রিত ন্যুক্ত হ রা ন্বগ্রের অর্কুনা-নম্ভর গ্রহাদি শান্তির নিমিত স্নান করিয়া সূর্বঃমন্ত্র क्रभ कतिता मर्द्धा जिलाय भदिशूर्ग रहा। अनस्तर দানল সংগ্রামবিজয় ও স্বিন্দু বীল্যোপ মন্তকাদি পাদ পর্যন্ত ন্যাস করিয়া মুদ্রা বারা মূল্যস্তের পূজা পূৰ্ব্বক স্বান্ধ ন্যান করিয়া আত্মাকে রবিরূপে মারণস্তম্ভে রবিকে পীতবর্ণ ও ভাৰনা করিবে। আপ্যায়নন্তত্তে শুভাবর্ণ ও রিপুদংছারবিধানে কৃষ্ণ বর্ণ ধ্য:ন করিবে। মোহিতকরণে ইন্দ্রধমু তুল্য ধান কর্তব্য। যে মানব নিয়ত লপ, ধানি, পূজা ट्रांमश्रायन इस, ट्रम टङ्गकी, अक्स, श्रीमान् হইয়া সমুদ্রাদিতে জয় লাভ করে। ভাষ্লাদিতে এই ন্যাস ও জপ করিয়া উদীর প্রবান করিবে। হন্তে বীল মান্ত করিয়া স্পর্শ করিলে সেই বীজ ভাহার বশে অবস্থান করিবে।

> ইত্যাথেয়ে অপিনহাপুৰালে স্থা।চিন নামক দশাধিকজিশততম অগায়ে।

একানশাধিকত্তিশতভন অধায়।

নানা মন্ত্ৰ

অয়ি কহিলেন, "বাক্ কর্ম পার্যক্ শুক্তনতোক ক্তে মতোপ্লবং" ত্তান্তা দশবর্গা এই
সরস্থী বিদ্যা প্রধান জানিবে। অকার ভোলা
মানব লক্ষবর্গ জার ইন্দ্রপতি হল্মাসক্ত হন।
বজ্রপদ্যধর পীতবর্গ শক্রকে আহ্বান পূর্বক পূজা
করিয়া আজ্য ও তিলভারা নিযুত হোমকরণান্তর
তদ্মানা অভিষেক করিবে। এইপ্রকার পূজা
হোমভারা নৃপাদি মানবগণ, ভ্রেট রাজ্যাদি ও

রাজ্যপুত্রাদি প্রাপ্ত হয়। শক্তিদেবাধ্যা দেবতা হলদ লেখন ও দোবালি, দণ্ডিরপ্রতি নওদান করেন। শিবের পূজা করিয়া অউমী আদি চতু-দিশী পর্যান্ত তিথিতে, চক্র পালাস্ক্রপারিশী বরা-ভয়দায়িনী শক্তির জপ এবং হোমাদির ক্রমুন্তান. করিলে সোভাগ্য ও কবিত্ব ও পুত্র লাভ হয়।

ওঁ হুঁী ওঁ নমঃ কামায় সর্বজন হিতার সর্ব-জন মোহনার, প্রস্কুলিতায় সর্বজন হৃদয়ং ম্যাত্ম-গতং কুরু কুরু ওঁ।

এই সংস্ত্রের জপাদিছারা সকল জগৎ বশীৰ্ভুত করিতে পারা যায়।

কি ও টুটি চামুঙে অমুকং দহ দহ পচ পচ মন বশমানয় আমানয় ঠ ঠ।

ইহাই চামুগুার বশীকরণ মস্ত্র জানিবে ৷

ত্রিফ্লার ক্ষায় স্থিত ব্রাঙ্গ কালন করিলে নরগণ বশীভূত হয়। অশ্বগন্ধা, যব, নিশা ও কপুরাদি, আটটা পিপ্পলা ও তপুল (চারি পিপ্লা ও চারি তপুল) কুড়া মরিচের সহিত সমিউ করিয়া রহতার লেপ দিলে স্ত্রীগণ যাব-জ্লীবন বশীভূত হয়। কটারমূল, ত্রিকটু (১) ও ক্ষো: দ্রের লেপ দিলেও স্ত্রীগণ তদ্ধেপ বশীভূত হয়। হিম, কপিথ, করন্ত (২) মাগণী, মধুক, মধু, এই সকলের লেপ গ্রহণ করিলে দম্পতীর স্ত্রীপুরুব্বর) মঙ্গল জনক হয়। কদম্বরণ ও মধু শর্করার সহিতে যোনিতে প্রলেপ দিলেও দম্পতীর হিত্রাধন করে। সহদেবী (২) মহালক্ষ্মী, পুজ্জীবী ও কুডাঞ্জলি এই সকল দ্বর চুর্ণ করিয়া মন্ত্রকে নিক্ষেপ করিলে লোকের উত্তম বশীকরণ হয়।

⁽১) তণ্ঠী, মবিচ ও পিপ্পনী এই তিন দ্ৰব্যের নিল্লণ।

⁽১) নঘ্রামক গ্রুড্বা। (৩) এই ব ড্রেইন্স্ব জাণ্ব নাম নহাবলা ইত্যাদি।

দ্বিশত বার পরিমিত ত্রিকলা ও চন্দনের কার্ব এবং শরাব পরিমিত, ভ্রম ও হেমরস, দোষা, তাবতী, চুঞ্ক ও মধু এবং ঘুতপ্রা নিশা এবং ছায়াওছ লোপ্যা ও রঞ্জনী এই সকল দ্রেরের সহিত বিদারী ও উচ্চটা সহিত মাষ চুর্ণ শর্করা যোগে মথিত করিয়া ছুম্ব সহিত পান করিলে নিতাই একণভ জীর নিকট গমন করিতে সামর্থ হয়। স্তার্থিনী রমণী, গুলা মাধ, ভিল, ত্রীহিচুর্, ক্ষীর ও শর্করা সংযুক্ত অব্থবংশ ও কুলের মূল এবং বৈফ্ডবী ও শ্রীর মূল দূর্ববা ও অখগদ্ধার যোগে তুম সহিত পান করিবে। কৌদ্ধী লক্ষীর শিক্ত ধাত্রী (মানলকী) বজা, লোধ, বটাকুর, মৃত ও চুগ্ধ এই দক্র ঋতুকালে পান করিলে নারীগগণ পুত্রলাভ করে। পুত্রার্থিনী বটাক্ষুর সহিত শ্রীমূব (লবঙ্গমূল) ও ক্ষীর পান করিবে। শ্রী, বটাক্লুর ও দেবীব (১) রস এবং জ্রী, পদামূল, অংখথের উত্তর (২) মূল উৎক্ষীর, জলযোগে তরল কার্পাদের ও পল্লব অপামার্গের নৃতন পুজ্পাগ্র মহিষী ছুগ্নের সহিত নদ্য ছারা পান করিলে পুত্র লাভ হয় ৷ অর্দ্ধট শাকের সহিত চারিটা যোগ কথিত আছে। গর্ভসাব হুইলে, শর্করা, উৎপল পুষ্পা, অক্ষলোধ্র, চন্দন ও সারিবা, তঙুল জলবোগে জ্রীর গর্ভো-পরি লেপ প্রদান অথবা লাজা, যন্তি, দিত শর্কবা, स्वाका, त्कीम ७ शुरु धरे मुकल (तर्न कतिर्व। প্রদাব কন্ট উপস্থিত হুইলে অটক্লয়ক, লাগুনী ও কাক্মাচীর শিক্ডু পৃথক্ রূপে নাভির আধোভাগে লেপন করিলে হুখে প্রদব করে। রক্ত বা শুকু প্রস্রাব হটলে রক্ত বা বেভ জবা পুল্প যথা ক্রেমে

জনযোগে পান করিবে। কেশর, রুহতী মূল, গোপী যৃষ্টি ত্লোৎপল, অজাদ্ব্য ও তৈলের সহিত ভক্ষণ করিলে রোমনকল উৎপন্ন হয়। মন্তকের কেশ সংল যথন উঠিয়া যায়, তথন ধার্ত্তী, ভূপরল ও প্রস্থপরিমিত তৈল ও আঢ়ক পরিমিত ক্ষীর একত্র যোপে ব্যবহার করিলে কেশ সকল খার উঠিয়া যায় না।

ওঁ নমো ভগবতে ত্রেম্বকায় উপশ্যয় উপশ্যয় চুলু চুলু মিলি মিলি ভিদ ভিদ গোনামানি চক্রিনি ইু ফট্।

শব্দিক থোমে গোকুলস হল কল কল গলিক প্রি নহালেনের বি । ।

ইর্ম কি কি কি কি কি কি কি সমাং পাছ জগৎ প্রি: ॥

উক্ত গোরক্ষক মন্ত্রের ও প্রোক্ষর পৃথক্
পৃথক বিন্যাস করিলে গোগণের রক্ষা হয় ।

ইত্যাগ্রের অ নিমহাপ্রাণে নানামন্ত্রনামক ।

এক দেশালিক বিশ্বত ব্য অধ্যায়।

দ্বাদশাধিকত্রিশতত্য অধ্যায়।

অঙ্গাকরার্চন।

চক্র যথন জন্মনক্ষত্তে এবং সূর্য্য যথন সপ্তম রাশিতে গমন করেন সেই পৌষ্ণ কাল, তখন গ্রাস্পরীক্ষা করিবেঃ

যাহার কঠ ও ওঠ স্থান এই হইয়া চলিত ও নাদিকা বল্ল এবং শ্বিহ্ া কৃঞ্বর্ণ হইতেছে, তাহার জীবন সপ্তাহ জানিবে।

ভারো মেষো বিষং দণ্ডী নয়ো দীর্দো ঘণা রস:। জেফোন্ম, মহোক্ষায় বীরোক্ষায়। ইহার নাম শিখা মন্ত্র।

হ্যোক্ষায় দহদোক্ষায়। ইহাই অফীক্ষর বৈষ্ণব মন্ত্র।

⁽১) দেবী — মুর্বলকা। মুরগা এই নামে খাড়ত, ধহুকেব শুণের উপযুক্তা লভা বিশেষ।

⁽२) छेड्रम्म--नदीन।

क्रिकामि अधीत्रुमीत अर्दमक्रम, (अर्हीश-ক্রমে মন্ত্রকভাগে অফাক্ষর বিভাস করিবে তর্জ্জ-নীতে তার মধ্যমালয় অলুচে তাহাই এবং তলা-ক্ষেতি ভত্তরে ভদনন্তর বীকোভরে মন্ত্র বিনাপ कतिता त्रक्त, (गीत, धूज, इति । वर्गवर्ग वर्ग-সকল এবং শুভ্ৰ ভিনটী বৰ্ণ, এবাম্বধ রূপবিশিষ্ট ভাবশুদ্ধ বৰ্ণ ফলকে যথা ক্ৰেমে হাদয়, আস্যু নেত্র, মস্তক, পদ, তালু গুছ্ ও করানিতে ন্যাস করিয়া, করে ও দেহে অঙ্গবীত সকল বিন্যাস পুরঃসর যেরূপ আপনাতে, করব্যভিরেকে দেব তাব অঙ্গেও সেইরূপে ন্যাস করিবে। পুষ্পাদিছারা হৃদযাদি ছান গতবর্ণ সকলের অর্চনা কর্ত্ত । অনন্তর, গাত্তে, পীঠে ও অন্বজে যথা क्राय धर्मानि, अग्रानि ও अधर्मानि नाम कतिर्व । यिद्दल दिनात ७ किङक्षत्राणि मुद्दा हस्त ७ বহিন্দ মণ্ডল ত্রিত্য আছে, তথার ভিন্ন ভিন্ন রূপে ক্রমে বর্ণ বিন্যাস করিবে। ভল্তসন্তাদি গুণসকল এবং কেশর ছিত শক্তি সকল এবং উৎকর্ষণী বিমল জানক্রিয়া যোগদকল ক্রমে অবস্থিত চুইবে। প্রস্তী, সভান, ঈশানা ও অনুগ্রহা মধাভাগে খব-স্থিত থাকিবে। অনন্তর যোগদীঠের অর্চনা করিয়া সমাবাহনপূর্বক হরিকে অর্চনা করিবে । পাদ্য, অর্ণ, আচমনীয়, পীতবসন ও ভূষণ এই প্রেণপ্রার মূলমন্ত্রহারা প্রদান করিবে। দিক্-नकरल वास्ट्रमानि हातिमूर्केत शृक्षा ७ विनिक्-সকলে সরস্বতী ও রতিশান্তির উদ্দেশে পূজা करिट १। मिश्विमिक् मकटल मध्य, ठक्क, श्रमा, পরা, মুষল, খড়গা, শাঙ্ক ও বনমালা এই সকলের क्रमाचार वर्कमा कृतिरा। (एरवन विक्रिंशि, गंसर्फ्ड, शूरबोडारंग विषक्रमानत, मर्था त्मारम-শের এবং আবরণের বহিভাগে ইতাদির, পরি

চার হারা করিয়া সর্বা**ভীক লাভ** ভরিতে সমর্থ হয়।

> ই চ্যাথেরে আদিমহংপুরাণে অক্ষাক্ষরার্ক্তম নামর ব্যাপাধিক ত্রিশতত ম অধ্যায়।

অয়োদশাধিকতিশততম অধ্যায়।

পঞ্চাকরাদি পূজামন্ত্র।

^{।।} অগ্লি কহিলেন, মেষ সজ্ঞা, সাজাণিষ ও দীর্ঘোদকরস এই পঞাক্ষর মন্ত্র শিবাত্মক ও মৃঙ্গল-প্রদ। তারকাদির মর্চনা করিয়া দেবত্বাদি প্রাপ্ত হয়। ভানাতাক পরতকো, পরম বুদ্ধি শ্বরূপ শিব, হাদযে অবস্থিত আছেন ; তাঁচার শক্তিস্বরূপ সর্ক্রে-খর, জক্ষা, বিষ্ণু, ও মহেখর এই তিন মৃর্ত্তিতে ভিন্ন ছেইয়াছেনে। পঞাক্রমন্ত্র, পঞ্জুত স্কুপ ও কুপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ ও শব্দ এই বিষয় স্বরূপ, প্রাণ অপান, সমান, উদান ও ব্যান এইপঞ্ বাযুম্বরূপ, পঞ্জানে দ্যুত্তরপ ও পঞ্কর্দির হরপ কানিবে। পঞ্চাকরমন্ত্র সর্ববস্থরপ ও একাস্বরূপ। অভীকরাস্তমন্ত্রও তজ্রপ। দীক্ষাস্থান, মদ্রো-। চ্চারণ পূর্ব্বক গধ্যদারা প্রোক্ষণ করিয়া, তন্ত্রসম্ভূত মন্ত্রাদিদ্বারা ভক্তিপূর্বক যথাবিধি শিবের অর্চনা করিয়া, মূল, মূর্ত্তি ও অঙ্গমন্ত্রহারা তঙুল নিকে-পাদি সমর্পন পৃর্ববিক, চরু ও ক্ষীর পুনর্ববার তিন-ভাগে বিভক্ত করিবে। একভাগ পরেশ্বরে নিবে-PA করিয়া হোম স্মাপনপূর্বক স্^{শ্}ষ্য গুরু, অ**ন্ত**-ভাগ গ্রহণ করিয়া আচমনাস্তে গুরু িভাগ করিয়া শিষ্যগণকে প্রদান করিবেন। ক্ষীর বৃক্ষাদি সঞ্জাত। পন্তকার্চ ক্রান্তা করিয়া দক্ত সংশোধন পূর্বক : সংক্ষেপ করিয়া প্রকাদন পূর্বক ভূতদে নিকেপ করিবে। পূর্কে দৌম ও বারীশগত শুভমতি

বিষয়ে শুভ অর্থাৎ শাস্ত আগত শিষ্যকে পুনর্কার শিখাবন্ধনাদি ছারা রক্ষিত করিয়া শিষ্যসহিত বেদিতে দর্ভান্তরণে শর্ম করিয়া গুরু নিদ্রিত হইবেন। শিষ্য, প্রভাতে গুরুকে সুবুও দেখিয়া, মনোহর দিদ্ধিপদ্বারা উহিচেক ভক্তি আগণ করা-ইবে। অনস্তর মন্তবারা মঞ্লার্চন কর্ত্তব্য। ভদ্রকাদ্যক মণ্ডালর পূজা করিলে সর্বসন্ধিলাভ স্নানান্তর, আচমন করিয়া, মন্ত্রোচ্চারণ পূর্বিক গাত্রে মৃত্তিকা লেপন পুর: দর, অঘমর্ঘণ মন্ত্রদাবা শিব তীর্থে স্থান করিবে। অনন্তর হত্ত প্ৰকালন পূৰ্বকৈ বুদ্ধিনান্ গুক পুজাদি করিবে। মল মন্ত্র দার! পদ্মাদন সম্পাদন করিষা, তদ্যাধাই পূরক ও কৃষ্ণক করিবে। আত্মাকে উর্দ্ধভাগে দাদশাঙ্গুলির অভিন ভাগে, যোজিত করিয়া সংশোষণ পুবঃসর, নিজতমু দগ্দ করতঃ অমৃত ছারা তাহা প্লাবিত করিবে। দি্ট্য তমু ধ্যানানন্তর তাহাতে পুনর্বাব আলাকে লইয়া যাইবে। এইরূপ করিলে আগ্ল ভদ্ধি হয়। অনস্তর নাাস করিয়া অর্চনা আরম্ভ কর্ত্তব্য। জ্ঞান, কৃষ্ণ, খেত, শ্যাম, রক্ত, ও পীতবর্ণ নগাদি মন্ত্র বর্ণ সকল ও দাওন অঙ্গমন্ত্র সকল বিনাপ করিয়া তাহাতে সর্বয়ের্ত্তি সমিবেশিত করিবে। অঙ্গুণ্ডাদি কনিষ্ঠান্ত পৰ্য্যন্ত সৰ্ববহানে অঙ্গ মন্ত্ৰ मकल विन्याम कतिया, शान, खरा, इनय, वक्क छ মন্তকে মন্ত্রাকর ন্যাস করিবে। মূর্দ্ধাদিভানে ব্যাপক ন্যাস করিয়া মূল মন্ত্র ও অঙ্গমন্ত্র সকল বিনাাদ করিবে। রক্ত, পীত, শ্যাম ও শুভাবর্ণ স্বকাল ভ পীঠপাদ স্বান্ধ অক্ষর সকল মন্ত্রদারা विनाम शृद्धक, पिक् मकरल अधर्मापि शाद्ध नर् সকল না'দ করিবে। তথায় দুর্যাদি মওলে পদ্ম ত্রিতথে গুল্বর্গ নকলকে ও পূর্বাদি পত্রে কর্ণি-

কোপরি বাম দি নয় শক্তিকে বিন্যাস করিবে---क्राय वामा, (कार्ष), (द्रोप्ती, काली, क्लविकादिनी, বলাবকারিণী, বল প্রাথনী সর্বাভূত দমনী ও मरमायमी नवभी कानित्व এই मक्तिश्व क्या त्या इ. রকা, দিতা, পাতা, শ্যাম, বহ্নিভাষিতা, কুঞা, অরুণা ও জালারপা এই শক্তিগণের ক্রুমে স্মুরণ কর্ত্র। অনন্তর হালয়াব্দ হইতে, ফটিবাভ, চতুর্বান্ত্, ফলশূলধর, বরাভয় প্রদ্পঞ্বদন জিলো-চন শিবকে অন্ত যোগণীঠে আহ্বান কবিয়া পত্ৰ সকলে তৎপুরুষাদি পঞ্চয়র্ত্তি স্থাপিত কবত: পূর্ব্ব-দিকে তৎপুরুষ খেতবর্ণ ও আঘোর অউভুজ অদিত বৰ্ণ ; পশ্চিমে দদ্যোজ্ঞাত চতুৰ্বাহু চতুমুখি পীতবর্ণ, বামদেব চতুন্মুথ চতুত্ব জ্রীবিলাসী অরুণ সর্গ চতুর্থ, এবং ঈশানে পঞ্চমুখ দিতবর্ণ দর্ব্ব-প্রদ ঈশান পঞ্ম। আনস্তর যথা বিধি ইন্টাঙ্গ সকলেব ও সূক্ষা অনন্তের অর্চনা করিবে ৷ পূর্বা-मिनिरक **একনেত্র সিদ্ধেশ**রের পূজা কর্ত্তবা। এক রুদ্র, ত্রিনেত্র, জীকণ্ঠ, শিখণ্ডী, এই দকল কমলা সন বিদ্যেশ্বর দেবতার ঐশানাদি বিদিকে পূজা করিবে। খেড, পীত, সিত, রক্ত, ধুঅ, রক্ত, অ্রুণ ও অসিতবর্ণ এবং শূল অশ্নি শর শ্রাসন वाङ् ७ हङ्कानन: উमा हृदुःन, नन्तीम, महाकाल গণেশ্বর, বুষ, ভূঙ্গবিট ও দ্বন্দ এই সকল দেবের छेदुरामिटक व्यर्कना कतिर्व। स्वर्कात व्यर्कना क्रिया श्रृक्तानिनिदक कृतिन, मक्ति, मख, थङ्ग, भाम, ধ্বজ্গলা, শূল, চক্র, পদ্ম এই সকলের পূজা কর্ত্তন্য।

তদনন্তর আধবাসিত শিষ্যকে পঞ্গব্য পান ও আচমন করাইয়া নেত্রান্ত দারা প্রোক্ষণ পূর্নিক নেত্র মজ্বে ভাহার নেত্রদয় বন্ধন করিবে। খনন্তর শুরু মণ্ডপের দক্ষিণে শিষ্যকে দারে প্রবেশিত

করিয়া তথায় খাদন সহিত কুশে খাদীন ভাহাকে সংশোধিত করিবে। অনন্তর গুরু আদিতত্ব সকল সমাহরণ পূর্ববক জেমে পরমার্থে লয় করিয়া সৃষ্টি মার্গদারা শিষ্যকে পুনর্কার উৎপাদিত করিবেন। তনদন্তর শিষ্যে ন্যাস কবিয়া প্রদক্ষিণে আন্যানা-নন্তর, পশ্চিমবারে আনিয়া কুন্তমাঞ্জলি নিক্ষেপ করিবে। যাহাতে পুষ্প সকল পড়িতেছে দেখিবে দেই নাম প্রথমে নির্দেশ কর্ত্তর। যাগভূমির পাৰ্ষে থাতে কুণ্ড সমাভিতে মেঘলয়ে শিবাগ্লি জন্মাইয়া পূজা পূৰ্বক পুনৰ্ববার শিষ্যুদ্হ অৰ্চনা করিবে। ধ্যান দ্বারা আত্মপ্রভ শিষ্যকে সংহরণ করিয়া ক্রমে প্রলয় করিবে, পুনর্কার উৎপাদন করিয়া তাহার পাণিযুগলে অভিমন্ত্রিত দর্ভপ্রদান করিবে। হৃদয়াদি মন্ত্র দ্বারা পৃথিশাদি তত্ত্ দকলের হোম কর্ত্ত্র। এক একের শত আহুতি প্রদান করিয়া শোম ও মূল মন্ত্র দাবা হোম করিবে। আছতি প্রদানানন্তর পূর্ণাহতি প্রদান পূর্বক অন্তমন্তে আহুতি হোম করিবে। দ্ধিব নিমিত প্রায়শ্চিত করিয়া অর্থাইট কায়্য দকল দমাপন করিবে। মজ্যেচারণ পূর্বিক কুন্ত অর্চনা করিয়া পী,ঠ শিশুকে অভি:মচন অন্তর শিষা প্রতিজ্ঞা করিয়া স্বর্ণাদ ছারা গুরুকে অর্চনা কবিবে। পঞ্চাক্ষর মন্ত্রের नीका छेळ इहेल। विकृ यानि म.जुन नीका उ এইরূপ।

হ তার্মেরে আন্দ্রন্পুরা ব প্রক্রের দি পুরামন্ত্রালক অব্যাদশানিক্তিশ্বত্য অধ্যায়।

চতুর্দশাধিকক্রিশততম অধ্যার।

পঞ্চ পঞ্চশবিষ্ণুনাম ৷

যে নর পঞ্চ পঞ্চাশং বিষ্ণুনাম জপ করে, সে মন্ত্র জপাদির ফল প্রাপ্ত হয়। ভীর্থস্থানে অর্চ নাদি করিলে তাহা অক্ষয়হয়। প্রহার ভীর্বে পুণ্ডরীকাক, স্থায় প্লাধর, চিত্তকুটে রাখব, প্রভাবে দৈত্যসূদন, জয়গীতে জয় তদ্রূপ হস্তিনা পুরে জয়ন্ত, বর্দ্ধমানে বারাহ, কাশ্মীরে চক্রপাণি, কুজাত্রে জনাদিন মথুশায় দেশৰ কুজাত্রকে হ্যবীকেশ, গঙ্গাছারে জটাধব, শালগ্রামে মহা-रयात्र, त्यावर्षनाहरल हति, शिवातरक हजूनीह. শক্ষোদ্ধারে শম্বী, কুরুকেতে বামন, যমুনায় ত্রিবিক্রম, (4164 বিশেষর, কপিল, গলাসাগৰ সলমে বনমালী মহাসমূদ্ৰে বিষ্ণু, কিহ্নিয়ায় রৈবত দেব, কাশীতটে মহাযোগ, বিরজায় রিপুঞ্জদ, বিশাখযুপে অজিত, নেপালে লোকভাবন, ছারকায় কুঞ্, মন্দরে लाकाकृत्म तिपृहत, भानशास्य इति, शूक्तमवरहे পুরুষ, বিমলে জগৎ প্রভু, দৈদ্ধবারণ্যে অনন্ত দওকে শার্ম্বারী, উৎপলাবর্তকে শৌরি, মর্মদায় জ্ঞীপতি, ধৈবতকে দামোদর, নন্দাধ জলশায়ী, নিস্কুদমুদ্রে গোপীশ্বর, মাধেক্তে অচ্যুত, সহাদিতে (मनरम: वर्ग, भागत्मत वर्ग रेनकुर्थ, विकासाहरू মনবপাপছর, উভূদেশে পুরুষোত্ম সাধক হৃদয়ে আত্মাপুকষ। বট রুক্ষে বৈতাবণ, চত্বরে শিব, পর্বতে রাম ও সর্বত্তে মধুস্দন, ভূমি ও ব্যোম-প্রদেশে নর ও বশিষ্ঠির হৃদয়ে গরুড়ধ্বজ এবং ষিনি মর্বত্র বান্ত্রেবরূপে বিদামান সেই বিষ্ণুর এই নাম দকল স্মরণ করিয়া মানবগণ ভোগমোক লাভ করিতে পারে এবং বিষ্ণুর এইসকল নাম

জপ করিলে সর্বাসিদ্ধি লাভ করিতে পারা যায়।
এইসকল তীর্থে, প্রাদ্ধ, দান, জ্প ও তর্পন করিলে,
সেইসকল কোটিগুল ফলদায়ক হয় এবং এইসকল
তীর্থে মৃত্যু হইলে মানবগণ, জেলাময় হইয়া পরম
পদ লাভ করে। যে নর এই আধানে পাঠ বা
শ্রেণ করে। সে সর্বপাপ হইতে বিমৃক্ত হইয়া
স্বৰ্গ প্রাপ্ত হয়।

ইতায়েখন অ।দিমহাপ্থাণ পঞ্চপকাশ ছিফুনাম ১৯% শ বিক্তিশত তম অধ্যাম।

পঞ্চনাধিকত্রিশতত্ম অধ্যায়।

নারসিংহ্যস্ত।

অগ্নি কহিলেন,স্তস্ত, বিদেষণ,উচ্চাটন,উৎসাদন, ভাষ, মাৰণ ও ব্যাধি এইদকল ক্ষুদ্ৰ বলিষা কথিত হয় তাহাৰ মোক্ষপ্ৰকাৰ বলিতেছি আৰু করে।

ভ নমে। ভগততে উন্মনক্রোধ ভ্রম ভ্রম ভ্রাময় ভ্রাময় অমুকং বিত্রাস্য উদ্ভাষ্য উদ্ভাষ্য রোজেণ কপেণ হু ফটু ঠ ঠ।

এটমল থাতিযোগে শাশানে তিনলক্ষণাৰ জ্প কৰিলা মধু দাৱা হোম কৰিলে, রিপুগণ, চিতা-লিতে ধূর্ত্বজ্ঞকাষ্ঠ কর্ত্ক সকত বিজ্ঞামিত হয়। হেমগৈরিকাদাবা কৃষ্ণা প্রতিমা নিশ্মানপ্রকিক, মন্ত্রজপ করিলা হেমসূচি দাবা কংগ্ঠ বা হৃদ্যে বিদ্ধ কবিলে রিপু মবিষা যাল। ধরবাল চিতা ভন্ম, অক্ষদণ্ডী ও মকটী এইসকল দ্বেরের চুর্প বা মন্ত্রপুত কবিয়া মন্ত্রকে বা গৃহে নিক্ষেপ কবিলে রিপুগণ বিনাশে প্রাপ্ত হয়।

ভূগ্ৰাকাশো সদীপ্তাগ্নি ভূ গুৰ্বছ্লিক বন্ম ফট্। এবং সহস্ৰাৱে ভূঁ ফট্ আচক্ৰায় স্বাহা হাদনে বিচ ক্ৰায় শিবঃ। শিখাচজের নিমিত্ত কবচ মারু, বিচজের নিমিত্ত নেতামস্ত্র, সঞ্চজেব নিমিত্ত **অস্ত্রমন্ত্র, স্থালা**-চজের নিমিত্ত পূর্ববিৎ মারু উক্ত হইয়া**েঞ্**

শাঙ্গ, হুদর্শন, ফুদ্রহ্হারক ও দ্বকিল্মের দাধক হয়। উহার মস্তক, চক্ষু, নুখ, হালয়, শুহু ও পদে অফার ন্যাস করিবে। অগ্ন্যাভ, দংষ্ট্রী, চতুতুজ, শহা চক্ৰ গদা পদা শলাকাঙ্গুণ পাৰি, চাপধারী, পি**ঙ্গকেশ, পিঙ্গাক্ষ, অর**ব্যাপ্ত শুরালয়, এবস্তুত চক্রাজাদনের নাভি বিদ্ধ করিলে দেই শামিক তুঁক সাক্ষবিধ ব্যাধি ও গ্রন্থ বিনাশিত হয়। চক্র পীতবর্ণ, গদা রক্তবর্ণা, আধর সকল রক্তবণ ও মধ্যে মধ্যে শাম চিছে চিছ্লিত, নেমি খেতবণ কিন্তু বহিৰ্ভাগে কুঞ্চবৰ্ পাৰ্থীবীরেখা বিদ্যমান আছে ৷ মধ্যহান ভিন্ন অন্য স্থানস্থিত অরেবণ সকল উক্তরূপে বিন্যাদ করিয়া ছুইটি চক্র অক্কিত করিবে। আদৌ কৃষ্ণভারা জল আনয়ন পূর্বক স্মিধানে সংস্থাপিত করিয়া, সেই স্থানে স্বদর্শন দিয়া দক্ষিণচক্রে ক্রেমে হোম করিবে। বিধান-বিদু ব্যক্তি, আজ্য, অপামার্গ, দমিং (যজ্ঞকাষ্ঠ) অক্ষত, তিল, সর্ধপ, পায়দ, গব্যয়ত, সহস্রাইক সংখ্যায় (হাজার আট) ত্তুশেষ প্রতিদ্রব্য কুচ্ছে নিক্ষেপ করিয়া প্রস্থান ছারা প্রস্তুত পিও দেই ' কুত্তে সালবেশিত করিবে। সেই দক্ষিণ চক্রে বিষ্ণুআদি সমস্তই বিনাম করিবে।

নমো বিষ্ণুজনেচ্যঃ সর্কাশান্তি করেভ্যঃ প্রতি-গুহুস্তু শান্ত্রে নয়।

এইযন্ত্ৰ ছাৰা হ'তশেষ বাবিদ্বাৰা বলি প্ৰদান কবিৰে।

কলিত গৰাপূৰ্ণ ফলক পাত্তে ক্ষীবর্ণক্ষব পত্ত নিৰ্বেশত করিষা দিজদারা সর্বাদকে কোন কবিয়া দক্ষিনা দান করিবে। সদক্ষিণ এই গোম- ষয়, ভূতাদি বিনাশ করিয়া থাকে। গব্যাক্ত পত্তে মত্রালখিয়া পর্ণহীন করিলে ক্ষুদ্রহের উদ্ধার হয়। আয়ু বৃদ্ধির নিমিত্ত ত্বা ঘারা, জীবৃদ্ধির নিমিত্ত পদ্ম ঘাবা পুত্রের নিমিত্ত উড়ুম্বর ঘারা, গোঠে গোর্দ্ধির নিমিত্ত মৃত্যু দ্বারা, মেধা বৃদ্ধির নিমিত্ত দর্যবিপ্রবার বৃক্ষ ঘাবা পূজা করিবে।

ওঁ কে নিশ্যা ভগৰতে নার সিংহায় জ্বান মালিনে নীপ্তদংষ্ট্রানাগ্নিত্রায় সর্বিরক্ষালায় সর্বি-ভূত বিনাশায় সহজ্ববিনাশায় দহ দহ পচ পচ রক্ষারক্ষ হোঁ ফট্।

নারসিংহের এই মন্ত্র সর্কবিধ পাপ বিনাশক হয়। এই মন্ত্র জপ কবিলে ক্ষুদ্রে গ্রহ ও মাবী-বিষজনিত রোগ সকল বিনাশ কবে। চুর্ণ মণ্ডুক বয়ো মন্ত্রে নিক্ষেপ করিলে জলস্তম্ভ ও অগ্রিস্তম্ভ হয়।

> ইতাংলোগে অফিনতাপুলতো নাব সংজ্ঞিন মধ নামক প্রচশ্বির হশতংম অব্যায়।

বোড়শাধিকত্রিশততম অধায়।

তৈলোক্য মোহন মন্ত্ৰ।

অগ্নিক হিলেন চভুকাগ সিদ্ধির নি মন্ত তৈলোকা মোহন মন্ত্র বলিব প্রাক্ষ কব।

ওঁ ত্রী, ব্রীং ছুং ওঁ নমঃ পুরুষোত্রমঃ পুরু বোর্ম প্রতিরূপ লক্ষ্য নিবাস সকল জগৎক্ষেভিণ সক্রথী ক্লয়দারণ ত্রিভ্নন মদেন্মাদকর হার মনুজ হুন্দরী ভ্নয়াংসি ভাপিষ তাপ্য দীপ্য দীপ্য শোধ্য শোধ্য মান্য নার্য ক্তন্ত্র্য দ্রাব্য দোব্য আকর্ষ্য প্রমন্ত্র্য সক্রেমিভাগ্য কর কামপ্রদ, জমুকং ২ন ২ন চক্রেণ গদ্যা থড়েগণ স্ক্রিবিংকিঃ ভিদ ভিদ পাশেন হট্ট হট্ট অনুশ্নেন তাড়য তাড়য় তুরু তুরু কিন্তিষ্ঠনি যাবস্তাবং স্থী থিতং মে দিদ্ধা ভবতি ই ফট্নমঃ।

ওঁ পুরুষোত্তম ত্রিভ্বন মদোত্মীদকর ছুঁ ফট্ ক্লয়াঘ নমঃ কর্ষ মহাবল ছুঁ ফট্ অন্তাব ত্রিভ্ব-নেশ্বর সর্বজন মনাংসি হন হন দার্য় দার্য় মম বশসান্য আন্য ছুঁ ফট্ নেত্রার ত্রেলোক্য মোহন ক্ষীকেশ প্রতিরূপ সর্বস্ত্রী ক্লয়াকর্ষণ আগচ্ছ আগচ্ছ নমঃ ॥

পূৰ্ববিৎসাৰ্গ অক্ষিও অন্ত মন্ত্ৰেব ন্যাস কৰিহা পূজা পূৰ্ব্যক পঞ্চাশ্ৰ সহস্ৰবাৰ ক্ৰপত অভিষেক কবিষা বহ্নিতে চরু প্রস্তুত করিষা দেব বহিতে শ্<mark>তসংখ্যক আ</mark>হতি প্ৰদান কৰিবে। পুগক্ৰপে দধি, মৃত, কীব, সন্নত চরু, সতজল এই সকল দ্ৰব্যেৰ মূলমন্ত্ৰ দ্বাৰা দ্বাদশাহুতি প্ৰদান পূৰ্ব্বক. অক্ষত ও তিলদারা সহস্র আছ্তি প্রদান পুর:সব, যব, মধুত্রয় পূজ্প ফল ও দধির পূর্ণাহুতি অপন কবিষা ভ্ৰাবশিষ্ট সন্মত চক ভোজন ক্ৰাইবে। আচার্য্য ও বিপ্রগণকে ভোজনাদি দ্বারা সন্তোষিত করিলে মন্ত্র সিদ্ধ হয়। স্থানানন্তর মথাবিধি আচ মন করিখা বাকা সংখ্মন পূর্বক যাগমন্দিরে গমন পুর: দব বদ্ধ পদ্মাদন অবলম্বন পূর্ববিক মস্ত্রা नत्त यथाविध भंदीव (शांष्य कविद्य। मर्कापरक राक्षमभाशी ও रिच्नकारी अपर्यन्तक महाम কবিবে। নাভিমধান্তি ধুমবর্ণ চণ্ডানিলাতাক পঞ্চৰীজ শত্ৰুস্থৰণ কৰিয়া দেহ হটতে অশেষ কল্মবরাশি বিশ্লেষিত করিবে। সদয়াজ্রস্থিক রংবীজ স্মাৰণ কবিষা জ্বালাসকল দ্বাবা পাপ দাহন কর্ত্তব্য। ধান্দাৰা হাযুদ্ধা মাণ্ডামী অমূদ্রস মস্তকে আন যন কৰিয়া উদ্ধি লখঃ ও বক্তভাবে ভদ্যালা শরীৰ স্প্রাধিত করিবে। এইরূপে শুদ্ধশরীর হইয়া ত্রিবিধ মত্ত্রে প্রাণবায়ু সংযমিত কবিয়া হস্তনান্ত

অন্তঃশক্তিকে মন্তকে, মুখে গুছে গলে সর্কারিকে হাদরে কৃষ্ণিতে ও দেহের সর্কাহলে বিন্যাস করিবে। সূর্যায়ওল হইতে হংপাদে আহ্বান করিয়া, এক্ষান্ত্রে ঘারা তারমন্ত্রে পরমাদ্ধা সর্বন লক্ষণ সম্পন্ন সেই বিষ্ণুকে স্মারণ করিবে।

কৈলোক্য মোহনায় বিদ্মাহে স্মনায় ধীমহি তদোশিস্থঃ প্রচোদয়াৎ।

আত্মার্চ্চনের পর যজীয় দ্রব্যে মন্ত্রবারি প্রদান পূর্ববিক প্রোক্ষণ ও পাত্র শুদ্ধ করিয়া বিধি পূৰ্বক স্থিলে আত্মপূজা সমাপন পূৰ্বক তাঁহাকে অর্চনা করিবে। কর্মাদি দারা কল্লিত পীঠে গরুডোপরি পদান্তি দর্মাঙ্গ স্থলর, সম্প্রাপ্তবয়ে! লাবণ্য যৌগন মদমারা আঘূর্ণিত তাত্রলোচন, উদার, সারবিহ্বল দিব্যমাল্যাম্বর গন্ধলেপ বিভূ-ষিত্সন্মিতানন, নানাবিধ পরিবার বেষ্টিত বিবি-ধবিমোহন পরিচছদ ধারী লোকাসুগ্রহকর, সৌম্য, সহস্ৰ সূৰ্য্যতৃন্য প্ৰদীপ্ত তেজাঃ পঞ্চবাণধ্য, প্ৰাপ্ত কাম, ঈশ্ অফভুজ দেবস্ত্রী পরিবৃত দেবীমুখাস क्लानि विकृति क्रथ अदः चावाइनामि विमर्कन পর্যান্ত শক্ষা, চক্রে, ধ্যু:, ধড়গা, গদা, ম্যল, অঙ্গুল, পাশধারী বিষ্ণুর অর্চনা করিবে। পাণিযুগল দারা বল্লভালেন কারিণ পরুজ চামরধারিণী জীবৎ সকৌপ্তভ শালিনী বাম উক্ত ভজান্থিত লক্ষীর এবং পীত্রসন ও চক্রাদি পরিশোভিত মালাবান বিষ্ণুর পূজা করিবে।

ভূঁ সদর্শন মহাচক্ররাজ তুউভয়ন্ধর ছিদ ছিদ বিদার তিয়ারি হয়। তোয়ারি ছিল ছিল বিদারয় বিদারয় পরমমন্তান গ্রাম গ্রাম গ্রাম তুউ হইয় সর্বাভীই ভক্ষ ভক্ষ ভূতানি চাশপ অশপ হুঁ ফট্ ভূঁ ওং নমো ভগ জলচরায় বাহা। থড়গতীক্ষ ছিল ছিল বড়গায় পতয়ে ভূপতিরং মেনাঃ সারস্যে সশরায় হুঁ ফট্। ভূতগ্রামায় বিদ্যাহ প্রতিদিন অযুত চুর্বিধ্র ধীমহি ভ্রো ব্রহ্ম প্রচোদয়াহ। সম্বর্জক ও রাজ্য প্রাপ্ত হয়।

শাসর পোথর পোথর হাঁ ফট্ স্বাহা। পাশবন্ধ বন্ধ আকর্ষ্য আকর্ষ হাঁ ফট্।অঙ্পেন কট্ট হাঁ ফট্।

এই সকল স্বমন্ত্র ছার। ভূজসকলে ক্রমে ক্সন্ত্র-গণের পূজা করিবে।

ওঁপকি রাজায় হুঁফট্।

এই মন্ত্রনা কর্ণিকায় তীর্থের ও দেবগণের যথাবিদি পূজা করিবে। ইন্দ্রাদি যন্ত্রসকলে শক্তি আছেন; চামরধারিণী তার্ক্যাদ্যা শক্তিগণকে অন্তে প্রযুক্ত করিয়া আদিতে দণ্ডিমন্ত্রে সরেশাদি শক্তিগণের স্থাপন ও পূজা করিবে। লক্ষ্মী ও সরস্বতী উভয়েই পীতবর্ণা, রতি, প্রীতি ও জয়া দিতবর্ণা, কীর্ত্তি ও কান্তি উভয়েই শুরুবর্ণা, স্মরসঞ্জাতা ভূষ্টি ও পুষ্টি শ্যামবর্ণা। ইক্তার্থ দিছির নিমন্ত নিফুদেবের পূজানন্তর লোকপালগণের পূজা কর্ত্রব্য। এইমন্ত্র জপ করিয়া ধ্যান, হোম ও অভিষেক করণীয় জানিবে।

ওং শ্রীং জাঁ ব্রীঁছং ত্রৈলোক্য মোহনায় বিষ্ণবে নমঃ।

এই মন্ত্রদারা পূর্ববিৎ পূজানি করিলে সকল কামনাই পরিপূর্ণ হয়।

সম্মোহনী পুশ্প ও তোয়বার। নিতাই সেই
মন্তে তর্পণ করিবে। ত্রহ্মা সশক্র শ্রীনতী ও বীজ
কৈলোক্য মোহন হয়; ত্রিলক্ষবার জপ এবং
সন্তত বিশ্বপত্র বারা লক্ষ হোম সমাপনপূর্বক
তত্ন ওফল গন্ধ হর্বানিবারা পূজা করিলে আয়ুবৃদ্ধি হয়। তোয়াভিষেক ও হোমানি ক্রিয়াবারা
তৃষ্ট হট্যা সর্বাভীষ্ট প্রদান করেন।

ওং নমো ভগবতে বরাহার ভূভূবিঃ স্বঃ পত্তে ভূপতিত্বং মে দেহি হাদয়ায় স্বাহা।

প্রতিদিন অযুত পঞ্চাঙ্গ জপ করিয়াও আয়ু ও রাজ্য প্রাপ্ত হয়।

সপ্তদশাধিকতিশততম অধায়।

তৈলোক্যমোহনী লক্ষ্যাদি পূজা।
আমি কহিলেন—
বক্ষঃ সৰহ্নিবাক্ষো দণ্ডী শ্রীঃ সর্ববিদ্ধিদা।
মহাজ্যমে মহাসিদ্ধে মহাবিহ্যুৎ প্রভে নমঃ।
গ্রিয়ে দেবি বিজয়ে নমঃ। গৌরি মহাবলে
বন্ধ বন্ধ নমঃ। ভূঁমহাকায়ে পদ্মহন্তে ভূঁফট্
প্রিয়ে নমঃ। গ্রিয়েফট্ শ্রিয়েনমঃ। শ্রিয়েফট্

এইমন্ত্রের নয় অঙ্গ উক্ত হইয়াছে, তাহাদের মধ্যে একের মাশ্র্য করিবে। ত্রিলক্ষ বা একলক্ষ জপ করিয়া মক্ষত ও পঞ্চদারা পূজা করি ল সম্পং লাভ হয়। লক্ষীগৃছে বা বিফুগৃহে লক্ষীর পূজা করিলে ধনলাভ হয়। স্বতাক ভণুলছারা থদির কাষ্ঠানলে লক্ষাত্তি প্রদান করিলে বাজা বশ্য হয় এবং উত্তরেতের শ্রীরদ্ধি হইতে থাকে। সম্বপ জলের অভিষেক দার। সকলগ্রহ বিনকী হয়। বিঅধারা লক্ষ্মীর লক হোম ধনবৃদ্ধি হয়। অনন্তব হৃণয়াম্বলে চতুর্দার শক্তগ্রহ চিতা করিবে। পূর্ব-দারে বলাকা, বামনা, শ্যাম্ এইদকল খেত পকজ ধারিণা হট্য়া উদ্ধণাত্রয়ে ক্রীড়া কবিতে ছেন; এইরূপ ধ্যান করিবে দক্ষিণ্যাবে বন মালিনী, রক্ত পক্ষজধারিণী খেতাফীরে পন্তিম ছারে হরিদ্রণা করদ্ধে খেতামুক ধারিণী বিভী-ষিকা ভীৰুতীকে ও উত্তরদ্বাবে শঙ্করীকে চিন্তা করিবে। उपार्था असेनन পঙ্কজ, ত.হার পতাসকলে ভঞ্জনবৰ্ বাচ্ছেব্ ক্ষাভা সন্ধ্ৰ, ক শীরাভ প্রদায় ও ধেমনিভ অনিরুদ্ধ ইহার স্বাসা হইয়া শঘ চক্র পদা ধ'রণপূর্বকি অবস্থিত রহিয়াছেন, এইরূপ চিন্তা করিবে। আংগ্রেয়াদি

পতাসমূহে রেজতপ্রভাও হেমক্সাধর, তাগ্ঞালু কুরা-টেক, দমক, দলিল, নামক হবিগণ অবস্থিত আছে স্মরণ করিবে। কর্নিমধ্যে লক্ষ্মীর স্মরণ করিবে। লক্ষ্মীদেবী চতুভুঙ্গি অবণভা,উদ্ধী क्ठ कत्रवास शक्षकधातिनी मिकन्दास अञ्चयका, বামহত্তে বরদাধিনী, স্থেতা গ্রুডা গ্রন্থার ম্য মালিনা ও অভ্রধারিণী হট্যা পরিবারে অবস্থান করিতেছেন এইরূপ ধান করিয়া অর্চনা করিলে मर्काजीके गिष्क इश मान्यह नाहे। त्रांगशृष्ण. পক্ষজ ও জ্রীরক্ষপত্র (বিল্ব) মন্তকে ধারণ কবিবে এইপূজায় লবণ।মলক প্রদান করিবে না। পায়দভোজী হইয়া নাগাদিতা তিখিতে ক্ৰমে সৃক্তমন্ত্র জপ ও এই মন্ত্রদার।ই লক্ষ্মীর অভিষেক করিবে। আবাইনাদি বিস্ঞান পর্যান্ত মন্ত:ক धान कतिया लक्ष्मीएमीत बक्त ना कतिरत । विद्यु মৃত, পদা, পায়স এইদকল পুথক্রপে জ্রীদেবীকে অপণ কর্ত্রা। বিদ, মহিদ, কাল, আয়ি, রু. দু. জ্যোতি ও বক্ষর দাবা লক্ষ্মী পুলনীয়া।

ভ জী॰ মহামহিণ মদিনী ঠঠ মূলমন্ত্রং মহিধ হিংদকে নমঃ। মহিধশক্তং আগয় আমেষ ভ্ ফট্ঠঠ মহম হেধয় হেধয় মহিদ হন হন দেবি ভূমহিদ নিসূদনি ফঠ্।

এই সঙ্গে ছুগাজেদয় মন্ত্র সর্বার্থের সাধক।, সেই ক্ষমা দেবাকে যথোক্ত রূপে পুজা করিয়। অঙ্গ মধ্যগত পীঠ পূজা করিবে।

ওঁ দ্রী ছের্গে ছুর্গের কিনি স্বাহা চেতি ছুর্গারৈ নমঃ। বর্বলৈটি নমঃ। আর্ঘ্যাইয় কনক প্রভারে কুতিকায়ৈ সক্রপায়ে।

আদাস্থা দারা ক্রাম ক্রাম এই সকল মূর্তিব পূচা কবিৰে।

চক্রায় শন্ধায় গণারে বড়গা প্রুষে বাণায়।

এই মন্ত্রে ষাউমী আদিতিথিতে এই চুর্গার পূকা সমাপন পূর্বেক লোকপালগণের অচনা করিবে। চুর্গাযোগ সম্যক আয়ুঃ স্থানির প্রতি অমুরাগ ও জয়াদি সাধন করিয়া থাকে। সাধ্য সহিত ঈশান মন্ত্র ভারা ভিল হোম করিবে ভাষা বশীকরণ হয়। পাল ভারা পূজা করিলে জয়লাভ, তুর্বা ভারা শান্তি, পলাশ পূজা ভারা কাম ও কাকপক ভারা পৃষ্টিলাভ চইরা থাকে। মরণ, ভেষ, ক্ষুদ্র গ্রহ নয় ও বিপত্তি, মন্ত্রভারা বিন্তী হয়।

ওঁ ভূগে ছুগে রক্ষণি সাহা।

জনতুর্গান্ধ সংযুক্ত এই মন্ত্র রক্ষাকরী নামে উক্ত হ্রগাছে। যুদ্ধাদিস্থলে জয়ের নিমিত্ত শহাচক্র পদ্ম শৃলাদি ত্রিশ্ল ধারিণী রৌদ্রুরাপণী ত্রিলোচনা শ্রামাদেবীকে ও চতুর্জুজ আ্লাকে ধ্যান করিয়া পড়গাদি মন্ত্রে এই দেবীর পূজা করিবে।

ইতাংগ্ৰেষে আদিনহাপুশাংশ তৈলেশাক্ষম্যাহলী লক্ষ্যালি পূতা অংশক স্থান্ধাধিক তিল্ভত্য অধ্যায় ৷

অস্টাদশাধি ক্তিশতক্রম অধ্যায়।

স্থরিতা পুজা।

ভাগ্নি কহিলেন, ভোগমোক প্রদাণক জুবি হাঙ্গ সকল সমঃক্রপে কীর্ত্তন করিব।

ওঁ আধার শক্তয়ে নমঃ। ওঁ প্রাং পুরু পুরু
মহাসিংহায় নমঃ। ওঁ প্রায় নমঃ। ওঁ ব্রুঁ ব্রুঁ
থেচচেছকঃ। ত্রী ওঁ ইুঁ,কেং হুঁ ফট ছরিতায়ৈ
নমঃ। থে চ হাদগায় নমঃ। চ চ্ছে শিবসে নমঃ।
চছ কঃ। শিথায়ৈ নমঃ। ক্রী কবচায় নমঃ।
তাঁ হুঁ নেতায় নমঃ। হুঁথে অস্থায় ফট নমঃ।
তাঁ ছরিতাবিদ্যাং বিদ্যুহে তুর্বিদ্যুগুণীয়হি তরো

দেবী প্রচোদয় হ। শ্রী প্রণিতারৈ নমঃ। ইকা বায়ে নমঃ। ওঁপেচর জদবায় নমঃ। থেচবিল ননঃ। ওঁচণ্ডায়ৈ নমঃ। ছেদনৈ নমঃ, কেপণৈ ক্রিযে ফুঁকার্মে নমঃ। কেমক্রি জয়ায়ৈ কিক-রায় রক্ষ। ওঁজরি হাজ্রা স্বিশ্ব ব্যট।

তোহলা ছরিতা ও তুর্ণা এইরূপ এই বিদ্যা ক্থিত হ্ইয়াছে। শিরঃ জা, মন্তক, কণ্ঠ, হৃদ্য নাভি গুহু উরুদ্ধ জাতুদ্ধ ও জন্মান্য ও চরণহয়ে ক্রেমে ক্রমে অঙ্গমন্ত্র ন্যাস করিয়া সমস্ত ব্যাপক মনু বিভন্ত করিবে। পার্বভৌ, শবরী, ঈশা বরুক হঙী ও অভয় হ্রাজেকা, ময়ুর বলয়া, পিচ্চ মোলি, কি দলয়াংশুকা, সিৎহাদনস্থা মায়ুব বহ ছত্রসম শ্বিতা, জিনেজা, শ্যামলা, দেবী, বন্মালা, বিভূষণা, বিপ্রভূক্ত কর্ণাভরণা, কত্র সর্প কেয়ুর ভূষণ বৈশ্যভুত্তক কটিবন্ধা, শূদ্রদর্পকভন্পুরা এই দকল রূপ আগ্নাতে ভাবনা করিয়া তৎস্বরূপ হইলাম এইরূপ চিতা করিয়া নিযুত্বাব সেই মন্ত্র জপ করিবে। পুরাকালে ঈশ্বর কিরাতরূপ এবং পোরীও কিরাতরপিনী হইযাছিলেন; স্ক্বিষ মনোরণ দিদ্ধিব নিমিত, সেই গৌরীর জপ ধান ৪ পূজা কবিবে: ভাগতে বিষাদির ও বিনাশ इय । शुक्तीं फिनल क्रियां सुनारत असे निःशाना দেবীর অগ্রে ভূঁকারাদাা, প্রণীতা, অঙ্গাযত্রী ও ফট্কারী এই দকলের শ্রীণীক স্বারী অর্চনা कतिरव। औ मकल भक्ति हेस्स्थलूत नाहि वर्ग শোভিনী ফটকারী ধরুদ্ধারিণী, ভবর্ণ যষ্টিধারিণী এই সকল শক্তি এবং দ্বারম্ব। জয়াও বিজয়া পুঞ-ণীয়। জানিবে। জ্ঞাবিজ্ঞার বহিভাগে বর্ঝরী কিন্ধর।ও মুঙী লগুড়ী অবস্থিত স্মাছে। সকলের পূজা করিষা যে ন্যাকৃতি কুণ্ডে যাগদ্রব্যে হোম করিলে দিন্দিলাভ হয়। আর্ছন দারা হোস কারলে জবর্ণলাভ, ধান্যমারা পুষ্টি গোধুম স্বারা সম্পং, যব ছারা ধান ও তিল ছারা সর্বাসন্ধি ও ঈভি (১) বিনাশ হয়। অক ছারা শত্রুর উন্মাদ, শালী ভারা শত্রুর মারণ, জত্তারা ধন ধান্যাদি थां थ, नीतार भनमन बादा पृष्टि, दाखार भन দারা মহাপুষ্টি, কুন্দপুষ্প দ'রা মহোনতি, মলিকা দারা পুরক্ষেতি, কুমুদ দারা জনপ্রিয়তা, অংশাক দ্বারা পুত্রলাভ পাটলি দ্বারা ভ্রাঙ্গনালাভ, মাত্র ঘারা আয়ুঃ,তিল ঘারা লক্ষী,বিহু ঘারা শ্রী চম্পক দারা ধন, মধুকপুষ্প দার। হৃষ্টলাভ ও বিহা দারা স্ক্জিতালাভ হয়। ত্রিকক্ষ জপ হোম, ধ্যান ও যাগ দারা দর্বকাম নিদ্ধিঃয়। গায়তীয়ারা মন্তলে অজ নান্তর প্রবিংশতি আত্তি ও মূলমন্ত্র ঘারা তিনশত আত্তি প্রদান পূর্বেক পল্লব দারা দীক্ষিত হইয়া পঞ্চাব্য পানানন্তর চরুভোগ্রন করাইবে। ইহাই নিড্যবিধি।

> ইত্যাংগ্রে আদিমহাপুরাণে ছরিতা পূলা নামক অষ্টাণশ্ধিকতিস্তত্ম অধ্যায়।

ঊনবিংশত্যধিকত্রিশততম অধ্যায়।

ত্বরিতা মন্ত্রাদি।

অগ্নি কহিলেন, ভোগমোক্ষপ্রদা অপরা স্বরিতা বিদ্যা বর্ণন করিব।

র্জোভারা লিখিত বজ্ঞব্যাপ্ত পুরে দেবীর অচ্চিনা করিবে। নরগণ পদ্মগর্ভে দিগ্ বিদিকে অফ্টবজ্ঞ গুভাবশোভোপশোভাযুক্ত বীথিক। লিখিয়া শীত্রই অইড্রা দেনীকৈ শারণ করিবে। সিংহোপরি তাঁহার বামজন্মা প্রতিতিত্ত দ্বিগুণা (মোটিডা)
দক্ষিণ জন্মা পাদপীঠে অর্পন করিয়া অবহিত
আছেন, বক্তকুণ্ডে বক্তভ্বণবতী হুইরা রাজ্যা, চক্রা,
গদা শূল শার শক্তি হ রণ পূর্বক ক্ষিণ কর সকলে
বর দান ও বাম কর সকলে হসুংপাশ, শার, ঘণ্টা,
ডজ্জনী শান্ধা বক্ত ও অঙ্কুশ আয়ুং হারণ পুরংসর
অভয় প্রদান করিতেচেন। তাঁহার পূজা করিলে
শক্রে নাশ ও অবলীলায় রাজ্য জয়, দীর্ঘায়ুলাভি
রাজ্য সম্পৎ ও দিব্যাবিদ্যাদির সিদ্ধিলাভ হয়।
তাহাতে সম্পেহ নাই।

ভলাভলাদি সপ্তপাভাল কালাগ্নিও ভুবনাস্তক গণকে স্মরণ করিয়া ওঁকারাদি স্থর হইতে আরম্ভ করিয়। ভ্রহ্মাগুণাচক যাবৎ তাবৎ ওংকার ছারা জলকে ভ্রমণ করাইবে; তদনন্তর ভোলতা ত্রিতা অবস্থিতা একণে প্রস্তাব কহিতেছি শ্রেবণ কর। ভূমিতলে স্বরবর্ণ লিখিবে। তালুবর্গ (১) ও কবৰ্গ প্ৰথম ও দিতীয়; ক্ৰিহ্বা ভালুক তৃতীয়; তালু জিহ্বাগ্র চতুর্থ জিহ্বাদন্ত পঞ্চম, ওঠ পুট সম্পন্ন ষষ্ঠ মিশ্রবর্গ সপ্তম শবর্গ উত্ম, এই সকল লিখিয়া মন্ত্রোচ্চারণ কবিবে। যঠ স্বর সংযুক্ত সবিন্দু উত্মবৰ্ একাদশ স্থৱ রুসোলিত ভালুবর্গ দিতীয় ও জিহ্বাতালু সংযোজিত করিয়া কেবল প্রথম স্থলে দ্মিবেশিত করিয়া তাহাই দ্বিতীয়, অধোভাগে বিনিযোজিত করিয়া, ভালুবর্গের প্রথম একাদশ স্বর যুক্ত করিয়া ও উল্লেগর দিতীয় অংশভাগে দেখিয়া যোজনা করিবে। ষেড়েশ সর সমুক্ত উত্মবর্গের শ্বিতীয় জিহ্বা দস্তাবগ যোগে প্রথমে অধোভ:গে যোজনা করিয়া পুনর্কার

⁽১) ঈভি—ক্ষতির্টিবনার্টি: শলভামৃষিকা: থগা:। আং শাদরাশ্চ থাকন: ষণ্টেডে ঈকর স্থা:। অভিনৃটি অনার্টি শলভ, মৃষিক, অগ ও প্রভ্যাসর বাছগান এই ছুগ ঈভি নামে কথিত হর।

⁽১) कानूनर्ग— ह, छ, छ, अ, अ, क हेडाानि।

মিশ্রবর্গ ইইতে বিতীয় অংশভাগে যোগ করিবে।
তালুবর্গাদি সংযুক্ত চতুর্থ অর সন্তিম উলার বিতীয়
অধস্তাৎ যোগ কর্ত্তবা। তদমস্তর, স্বরের একাদশ সংযুক্ত সবিন্দু উন্মান্ত; পঞ্চ পঞ্চর সম্বলিত
ওঠ্ঠ পুটে বিতীয় জিহ্লার ও তালু মুক্ত অক্টাকর
প্রথম পঞ্চমে যোগ করিবে। ইহারা স্বরার্দ্ধ দারা
উদ্ধৃত। অগ্নি কার্যের মিমিত ওংকারাণ্যা নমোহন্তা স্বাহা মন্ত্র জপ করিবে।

ওং হুং হুং হ্রঃ হৃদরং হাং হশ্চেতি শিরঃ। ইঁ হৃদ হৃদ শিখাস্থাৎ কবচং হুমুদ্বরং। হুীং জ্ঞীৎ কুমেত্র জ্যায় বিদ্যানেত্রং প্রকীর্তিতং ক্লোং হঃ থোং হুং কড়স্থায়। এই শুহাঙ্গ সকল পূর্বেই বিশ্বস্থা করিবে।

ছ্বিতার ও বিদ্যার অঙ্গসকল বর্ণন করিব ভাবণ কর প্রথম ও দিতীয় হাদয়, ডৃতীয় ও চতুর্থ শিবঃ, পঞ্ম ও ষষ্ঠ শিখা, সপ্তম ও অফম কবচ। ভারক ও নেতা নব ও অধাক্ষর বিশিষ্ট ; ইহা তোতলা নামে বিখ্যাত, তদনম্বর, বন্ত্রতুগু ইন্দ্র-দৃতিকা বস্তুতার থ থ হুঁ এই মন্ত্র ও দশবীকা। (शहती क्वालिनीक्वाल श्रंश कहे क्वालिनी मन। বচ্চে শরবিভীষণি খ খ এই শবরী দূতিকাচেছ ছেদিনি করালিণ খ খ এই করালী দৃতিকা। স্ত্রীবালকারে ধুননি শান্ত্রী বসন বেগিকা জানিও। क्ष्म किला हम इम बहे किला मृडिका। ইুতেজোবতি মাজদরোদ্রি রোত্রা দৃতিকা। পুটে भूरे ब व थरङ्ग कहे बन्ना मृक्तिका। मनदर्गा বৈতালিনী অন্য দৃতিকাগণকে অহিও পলালবং ভ্যাগ করিবে। হাদাদি ন্যাদাদিতে, শ্বধীগণ मर्पा ७ त्नर्ज नाम क्त्ररा शाम इहेर्ड শারম্ভ করিয়া মস্তক পর্যান্ত, মস্তক হইতে আরম্ভ করিয়া পাদ পর্যান্ত মধ্য পদ, জামু, উরু ও নাভি

क्षम ७ कर्भ १ म ८ न , फेर्ट्स व क्रम छल धावः वादश व উর্দ্ধে আদিবীজ বিন্যাদ করিয়া তদনস্তর, সাধক, অক্ষরফে প্রবেশনশীল, অমৃতধারাবর্ধি সোমরূপ ও গোরুণ চিন্ত। করিবে। মূর্কা, আস্য, কণ্ঠ, হৃদর ও নাভিতে এবং শুহু, উরু, জাকু ও পদে আদিবীজ বিন্যাস করিয়া, মন্ত্রোচ্চারণ পূর্বক পুন: পুন: তর্জনী আদিতে বিন্যাস করিবে। ধে ব্যক্তি উৰ্চ্চে, দোমকে ও অধোভাগে পদা ও বীল বিগ্রহশরীর অবগত হয়, তাহার ব্যাধি, জরা ও মৃত্যুজ্বে সমর্থ হয়। বিন্যাস করিয়া সেই দেবীর একশতঅ্টবার পূজা, জপ ও ধ্যান করিবে। একণে মুদ্রা বলিতেছি মুদ্রা প্রণীতাদি পঞ্চপ্রকার করহয় অথিত করিয়া মধ্যভাগে অঙ্গুৰ্য নিপা-তিত করিয়া মন্তকভাগে দংলগ্না দেই তর্জ্বনীকে শিরোপরি বিন্যাস করিলে প্রস্তিতানামে প্রথিতা মুদ্রা হয়। ভাহাকে কদেশে আনয়ন ক্রিয়া ক্রিকাছয় সধ্যভাগে উন্নত করিলে তাহাকে সজীবা কছে। ভর্জনী মধ্যে পরস্পার অনেক मः नश अकृति नियां किछ कतिया (कार्क क्रिने व অপ্রভাগমধ্যে মিকেপ করিলে ভেদিনী মুদ্র। হয়। ভাহাকে নাভিদেশে বদ্ধ করিয়া, তদমস্তর অঙ্গুষ্ঠ-षय छेरकिछ कतिल कवानी नात्य महामूखा हत, এই মন্ত্র মন্ত্রীয় হৃদয়দেশে সংযোজ্যা জানিও। পুনৰ্বার পূৰ্ববং বদ্ধ ও লগ্না জ্যেষ্ঠাকে উৎক্ষিপ্ত করিলে বজ্রত্থানামে মুক্রা হয়, তাহাকে বজ্লদেশে বন্ধন কর্ত্তবা। উভয় হস্তদারা মণিবন্ধ বন্ধন পুরংসর তিন তিন অঙ্গুলি প্রসারিত করিলে বজ্ঞ-মুদ্রা হয় । দও খড়গ চক্র-গদা মুদ্রা আকারাসু-শারে অবপতি করিবে। অঙ্গুষ্ঠ ছারা তিন অঙ্গুলি উর্দ্ধভাগে আক্রমণ করিলে ত্রিশূল মুদ্রা, তন্মধ্যে একটা মধ্যভাগে উর্বগত করিলে শক্তি মুদ্রা হয়।

শর, বরদ, চাপ, পাশ, ভার, ঘণ্টা, শরু, শরুশ, অভর ও পদ্ম এই সকলের যোগে মুদ্রা অই-বিংশতি। মোহনী, মোক্ষণী, স্থানিনী, অমৃতা অভয়া, প্রশীতা এই পঞ্চন্দ্র। জপ ও হোমকার্ব্যে প্রয়োগ করিবে।

> ইত্যাধেমে আঁলিনহাপ্রাণে ছবিতা মন্ত্রাদি নামক উম্বিংশতাধিক্তিশভ্তম অধ্যায় :

বিংশত্যধিকত্রিশততম অধ্যায়।

ছরিত। মূলমন্ত্রাদি।

অগ্রি কহিলেন, সিংছ বজ্ঞাকুল পদ্মদ্বয় বিন্যাস করিয়া দীক্ষাদি বলিব।

হে হে হৃতি বজ্রদন্ত পুরু পুরু লুলু লুলু গর্চ্চ গর্চন ইহ সি হাসনায় নমঃ।

বজ্ৰ ও উদ্ধাৰতা রেখা চারিটি এবং নবভাগ বিভাগদ্বারা চারিটি কোষ্ঠ কবিবে। দিক সংগত কোষ্ঠ ইথাছ, বিদিগ্গত কোষ্ঠ, বিনাশ দাধন কৰে। কোষ্ঠ:কাণ সকলেৰ বাহিরে আটটি বাছ-রেখা থাকিবে, বাছকোঠেব বাহিরে ও মধ্যে সমস্ত সমান। বাছারেখার ছুইভাগের মধ্যস্থলে বজের মধ্যশৃঙ্গ থাকিবে। বাহুরেখা চুইন্থলে ভগ্র ইইবে। মধাকোষ্ঠ পদা ইইবে, তাহার কর্ণিকা পীতবর্ণ ও উজ্জল কৃষ্ণ রছো দাবা উর্দ্ধে ুনলশ ও অসিলিখিয়া বাছে বজুসুট লাঞ্চিত চারিটা কোণ করিবে। দারে মন্ত্রদারা চারিটা বজ্রসম্পুট প্রদান করিবে। পদ্মনামে বাম বাধী (পুংক্তি বা বস্থা) সমান হইবে। ঐ পদ্মের গর্ড লাগ ও কেশর সকল রক্তবর্ণ, মণ্ডলে স্ত্রীসকল দীক্ষিত আছে। উহাতে পূজা করিলে পরুরাষ্ট্র জয় করা যায় এবং শীঘট্ রাজ্যবুদ্ধি হয়।

দন্দীপ্ত। মৃত্তিকে ছংকার মক্সবারা হে ছিজ মরুদগণাধিষ্ঠিত ব্যোমগামিনা মূল বিদ্যা উচ্চারণ পূর্বক প্রমণ সহিত পুনর্বার কর্ণিকায় ঐ মূর্তির পূজা করিবে। এইক্সপে আদি হইতে মারম্ভ করিয়া প্রদক্ষিণ পুর:সর এক এক বীজ পূজা করিয়া দলমধ্যে দল্লিকোণে বিদ্যাঙ্গ ও নৈপ্পতকোণে পঞ্চনিশ্বতির পূলা করিবে। মধ্যে নেত্ৰ ও দিশান্ত্ৰ পূজা ও গুহাঙ্গে রকা বিধান কর্ত্তি। স্তিস্কল, বাম ও দক্ষিণ পার্যক্রমে কেশরন্থিত হইবে, নিজ নিজ মূলমন্ত্রদারা পঞ্ পঞ্চ ক্রমে পুলানন্তর বাহিরে গর্ভমণ্ডলে অফলোক-পালগণের ন্যাস করিবে। ষষ্ঠস্বৰ বিভেদিত অগ্রিতে আরুত বর্ণান্তে স্ব স্থ নাম যোগ করিবে। সিংহকে শীতা কৰিকায় লইয়া গিয়া গদ্ধাদিদারা তাহার ও ল্ক্মীর পূজা কর্ত্তব্য। অ্টশত মস্তাভি মন্ত্ৰিত অফ কুম্ভৰায়া বেক্টনপূৰ্বক অফসহত্ৰ মন্ত্ৰ ও অঙ্গমত্রি সকল অফাশতবার জপ করিবা অগ্নি-কুতে হোমকরশান তব বহ্নিমন্তে চালনা ও হৃদয-মন্ত্রে বহিক্তেপণ এবং মধ্যে অগ্নিন্থিত শক্তিকে স্মাৰণ ক'রবে। 'গর্ভাধান, পুণ্দ'ন ও জাভকর্মের হৃদয়মন্ত্রে একশত হোম কর্ত্তব্য। গুহাঙ্গে শিথি উৎপাদন করিলে বিদ্যার পূর্ণান্থতিদারা শিবাগ্লি জুলিত হইবে। মূলমন্ত্রদারা শত হোম ও দশাংশ অঙ্গ ছোম করণীয়। তদনভার দেবীকে নিবেদন-পূর্বক শিষ্যকে প্রবেশ করাইবে। ভদনন্তর অন্তৰ্ম দ্বে তাডন করিয়া গুহাসসকল বিদাক্ষেত্রাই সম্বন্ধ করিয়া শিষ্যকে বিদ্যাঙ্গদকলে নিয়েছিত করা কর্ত্তব্য। শিষ্যকে পুষ্প প্রেক্ষপ করাইয়া ভাহাকে কুগু সমিধানে আন্যুন করিয়া, ধব ধানা, তিল, আজাহারা মূল-মদ্রে শত হোম কর্ত্তর। প্রথমে স্থাবরত্ব হোম

৪ তৎপরে সরীস্থা হোন, ভদনন্তর পক্ষিমুগ পশু মাতৃষ ওব্ৰহ্ম বিষ্ণু ও রুদ্র এইসকলেব ক্রমা-স্বযে হোম করিয়া অস্তে পূর্ণান্থতি প্রদান করিবে। অনন্তর এক আছভিৰারা শিষ্য দীক্ষিত হইবে এইরপে অধিকার জনাইবে। অতঃপর মোক শ্বণ কর। 'মলুবান্ যথন অমেরুছ হইয়া দলা শিবপদে অব্যক্তি হইবে,তখন স্থত মান্দে অক্র ও কর্মাণ্ডের দশ হোম কবিয়া পূর্ণাহৃতি প্রদান করিলে সেই যোগী ধর্মধর্মে লিপ্ত হয় না; ভাচাদে প্রম্পদ মোক প্রাপ্ত হয়, যেখানে গ্র্মন ক্কক আৰু জন্মগ্ৰহণ কৰিতে হয় না ৷ বেমন জলে জলক্ষিপ্ত হটলে তাহার আব ভিন্নত্ব অন্তুভূত হয়না, তদ্ৰূপ দেহী (জীবাছা) সদাশিবে কিপ্ত-হট্যা প্রভেদ ভল্লা কবে না। কুন্তলাবা অভি-দেক কবিয়া **জয় ও রা**জ্যাদি, সকলই লাভ করিতে পাবা যায়। অন্তর ত্রাক্ষণের কুমারী পূজা কবিয়া গুক্তকে দক্ষিণা প্রদান কবিবে। প্রতিনিন পুজা করিয়া এক সহত্র নার জপ কবিবে। **जिल 9 আজ্যাদিছাবা হোম কবিলে জীদেবী** স্ক্রিকাম প্রদায়িণী হন এবং অন্য যাহা কিছু প্রার্থনা কবা য্যু সেই বিপুর ভোগ সম্দায় প্রদান করেন। লক্ষাক্র ছাপ করিণা শৃত্যপদ্মাদি নিধিগণেৰ অধিপতি হইতে পাৰা যায়। দিলুণ হে : ৷ বাক্স লাভ, ত্রিগুণঘাবা যক্ষয় লাভ ুসাৰ লোভ, পঞ্জণহারা বিফুফলাভ নত ওপছ'৷ মহাসিদ্ধি লাভ কবিতে পাৰা যায় ज्यक्षित्रां मर्विकत्यार निर्दि कि इहेश शांत । দশবার জপ করিলে দেহগুদ্ধি এবং শ্রুছপে তার্থসানের ফলপ্রাপ্ত হওগা যগে। পটে বা প্রতিমায়, ছতিলে(যজপুজার্ব পরিষ্কৃত ভূমি)শীস্ত্রা (मरीत (पति डा (मरोद) श्रुजा कतिरव। जश छ

হোমে শত, সহত্র বা অযুত রূপ বিধেয়। এইরূপ বিধানে রূপ করিয়া একলক হোন করিবে। মহিব ছাগ মেষমাণ্দ, অথবা নরচর্ম্ম ভারা ও ভিল, যত, লাজ, জীহি, গোধ্য, আত্রক, জীফল এই-সকলে মৃতসংযুক্ত করিয়া তদ্ধারা হোম সাধন-পূর্বক, ব্রভামুষ্ঠনে করিবে। অর্জরাত্রে গাত্রে করচ পরিধান এবং ঋতৃগ, চাপ ও শরধারণ করিয়া একন্সন পরিধানপূর্বক, বিচিত্র, রক্ত, পীত, কৃষ্ণ বা নীলবন্ধ ও ভিল যবাদিবারা দেবীর অর্চনা এবং দক্ষিণ দিগ্ভাগে গমন করিয়া ছারদেশে বলি প্রদান বুধগণের কর্ত্বা। অনন্তর দৃতী মন্ত্র ভাবা ছারাদিতে, একরক্ষ ও শাশানে এইরূপে বলি (পূজোপহাব) প্রদান করিতে সমর্থ হয়। ছিইয়া অধিগ অবনি সম্ভোগ করিতে সমর্থ হয়।

ই চ্যায়েৰে আদিমহাপুরাণে ছবিত। মূলমন্ত্ৰ নামক বিংশত্যধিক ত্ৰিশতভ্য অধ্যায়।

একবিংশত্যধিকত্রিশতত্ম ভাষ্যায় ৷

ত্বতি। বিদ্যা ।

অমি কহিনেন, ধর্মকামানি দিদ্ধিপ্রদ, বিন্যা প্রস্তাব আখান কবিব। নবকোষ্ঠ বিভাগ দ্বারা বিদ্যা ভেদেব অবগতি হয়। অমুলোম ও বিলোম ক্রমে সমস্ত ও ব্যক্তযোগে, এবং কর্ণ ও বিকর্ণ যোগ এবং ইহার উর্দ্ধে বিভাগ ক্রমে দেবীর নব যোগ দ্বারা নিজবিত্রাহ বর্দ্মিত করিয়া প্রস্তাব নির্গত বহুতর সিদ্ধপ্রদ মন্ত্র জানিতে পারা যায়। পাজে মন্ত্র সকল উক্ত হায়াছে, কিন্তু প্রযোগ পহা দুর্লত। শুরু এখাব বর্ণ ইহাপুরের বনিত হয় নাই। সেই প্রস্তাবে একবর্ণ, দ্বিবণ জিবণ ও চুত্রবর্ণাদি হয়। বক্র ও উর্দ্ধণত রেখা সকল

চারি চারিবর্ণ ভজনা করে। এইরূপে নয়টী কোষ্ঠ হয়। আর এইবর্গকল প্রদাকণ পূর্বক মধ্য দেশে সংস্থাপন পূর্বক তদনন্তর প্রস্তাব ভেদ কর্ত্তব্য প্রস্তাবের ক্রম্যোগ ছারা যে মান্য প্রভাব অবগত হয়, সিদ্ধি সেই সাধকবরের কর-মৃষ্টিতে অবস্থিত রহিয়াছে ফানিও; পাদমূলে ত্রৈলোক্য অবস্থিত। নবখণা ভূমির কপাল দেখে চারিদিকে বা (১) শ্মশান কর্ণটে শিবতত্ব আলে-খিত করিয়া মস্ত্রজ্ঞগণ বাহিরে নির্গত হইয়া ভাহার মধ্যে কর্ণিকার উপরিভাগে অবস্থিত নাম লিথিবে। পাদযুগলে ভুত্রপত্র আক্রমণ পূর্বক খদির কার্চের জ্জার ছারা দন্তাপিত করিয়া দপ্তাহ মধ্যে দচরা-চর ত্রৈলোক্য মণ্ডল আনমন পূর্বক ছাদশাব विभिन्ने विक्रमञ्जूषे शर्क भ्रदाकांत्र शर्कतं असानिव নাম বিভাজিত করিয়া লিখিবে। ভাছাতে মুখস্তস্ত্ৰ, গভিত্তস্ত্ৰ ও সৈৱস্তম্ভ হয়। বুৰগণ শাশানে বিষ মিশ্রিত রক্ত ছারা কর্পরে (কপালে শরাবে) চতুৰ্দিকে শক্তি যোজিত আক্ৰান্ত ষ্ট কোণ দণ্ড লিখিয়া অচিরাৎ শক্তে মারণ করিবে ৷ যদি রাষ্ট্র চেছদ করে তবে শক্রেকে চক্র মধ্যে ন্যন্ত করা কর্ত্তব্য। রিপুর নাম যোগে চক্রধারাগত শক্তির আরাধনা করিয়া শত্রু বিনাশ করিবে। মধ্যে শক্রকে আলেখিত করিয়া তাক্ষমন্ত ছারা বৈরি বিনাশ হয়। শাশানালার লেখিত বিদর্ভ तिश्वनाम मुखार माधा एमम अग्न करता ध्वरः উহাকে প্রেতভন্ম দারা তাড়ন করিলে ভেদ্ন ছেদন ও মারণ বিষয়ে মঙ্গল হয়। শাস্তি ও পুষ্টি বিষয়ে তাহার ও নেত্র মন্ত্র উদ্দেশ করিয়া নিয়োগ कतित. छेशहे मश्नामि প্রযোগ বলিয়া কথিত

हत्र औ धारतारम भाकिनीरक बाकर्रन कतिरा। বজ্ঞ প্রমন্তিত নর আদি ও মধ্যভাগে বারুণী ষোগ করিলে কুষ্ঠাদি ব্যাধিগণ শত্তেগণুকে বিনাশ করে সন্দেহ নাই। মধ্যাদি ছইতে উত্তর পর্যান্ত कर्ताली रक्कमास्त्र स्त्रभ कदिरव। यथम निव. প্রতিবাদী **হ**ইবেন, **তথ**ন আছাবিদ্য প্রয়োগ করিয়া রক। করিব। কারুণ্যাদি ন্যাস করিলে জ্বরকাশ বিনাশ পাধ। বটে, भाषामि मधाभाख निथित अक्रव, প्रवानि मधा-মান্ত লিখিলে তৎকণাৎ লঘুত্ব জন্মে। ভূৰ্জ্জপত্তে রোচনা ছারা এই বজু ব্যাপ্তপুর লিখিয়া ক্রমন্থিত মস্ত্রবীজ ছারা দেহে রক্ষা বিধান কর্ত্ব্য। হৈম-তার মারা উক্তরূপে রক্ষা বিধান করিলে মৃত্যু হইতে রক্ষাপায়। উহা ধারণ করিলে বিল্ল পাপ বিনাশ ও অরি দমন করিয়া সৌভাগ্য ও আয়: প্রদান করে। এবং উহু দূত্তে ও রণকার্য্যে জয়প্রদাহয়, তাহাতে সংশয় নাই: এই রকা বিধানই, বন্ধ্যাকে পুত্র প্রদান এবং ইছাই পররাষ্ট্র রাজ্য ও পৃথিবী জয় করে, অভত্রব উহা অপর চিন্তামণি জানিবে।

ফট স্ত্ৰীং কেঁছ

এই মন্ত্রলক্ষবার জপ করিলে অকাদি (১) বশবন্তী হইয়া থাকে।

> ই ভারেরে অর্থিনকাপুরাণে ছরিত বিদ্যা নামক এক বংশভাধিকতিশতভয় আগায়।

⁽১) ঋশনে পতিত কাপড়ে।

⁽১) অগ--শাষ্ট পাশান্থি আদি।

OAL OUT TA

ষাবিংশত্যধিকত্রিশত্তম অধাায়।

নানামন্ত্র।

অগ্নি কহিলেন, (১) গুং বিনায়কার্চন বলিব। প্রবনে আধারশক্তি ধর্ম আদি অফকন্দ, পদা, নাল ও কর্ণিকা পূজা করিয়া ত্রিগুণ কেশর পদা তার ও জ্বানীর অর্চনা কর্ত্তিয়। নন্দা, ইয়াশা, উগ্রা, তেজােবতী, বিদ্ধাবাদিনা, গণমূর্ত্তি গণপতি হৃদ্য় ইইলিক গণ, ইহাদের পূজনে জয়লাভ হয়।

अकररखादकरे भिवः भिवासिक किर्नित । **है** हो है কবচ এবং হুং ফড়ন্ত অফীক জানিবে। মহো-দর পদাহস্ত এই রূপ ধ্যান করিয়া পূর্ব্যদিদিকে ও মধ্যভাগে পূজা করিয়া জয় গণাধিপ্রজনায়ক, গণেশর বক্রতুগু একদন্ত, উৎকট লাখোদর গঞ বক্তু বিকটানন, ছং পূৰ্বৰ, বিশ্ব বিনাশন, ধুতাবৰ্ भटहरूतिमा, अहेल्राट्स शादन वाक्रात्म विद्याचारतत অর্চনাকরিবে। একণে ত্রিপুরা পূজা বলিব। অসিতাঙ্গ, রুরু, চণ্ড, ক্রোধ উনাত, কপালী, ভীষণ সংহার, ভৈরব এইসকলে পূজা করিবে। ভৈরবগণ ব্ৰাক্ষীমুখ্য ও হ্ৰস্থ। ব্টুকগণ অগ্নাদিতে ক্ৰমে ব্ৰহ্মণীষদ্মথ ও দীর্ঘ। সময়পুত্র ণ্টুক, যোগিনী পুত্র বটুক, সিদ্ধপুত্র বটুক ও কুলপুত্র বটুক চভুর্থ। হেতুক ক্ষেত্রপাল প্রথম, ত্রিপরাম্ভ দ্বিতীয় অগ্নি বেতাল খায় জিহ্বা, করালী, কাললোচন,একপাদ ভীমাক্ষ ইহারা প্রেত। এং কেং ইহাদের বীক মস্ত্র। ঐংহীং ছই আসন। প্রাসন সমাসীনা ত্রিপুরা দক্ষিণে অভয় ও পুস্তক ও বামে বরদ-মালিকা ধারণ করিয়া বিরাজিত হন। মূল মন্ত্র স্বারা হৃদয়াদি ও কামক (রেঙঃ) জালপুর্ণ অফট কালিকা বা কুদ্র কুমাদির ক্ষার জাল)

হইবে; চকুমধ্যে ও মধ্যভাগে অফপতে নাম্ (উচ্চট্যি ব্যক্তির আথ্যা) শ্মশানাদি পটে, শ্মশান অসার ধারা লিথিয়া তাহার চিভাঙ্গার পিউক যুক্ত মৃতিধ্যান করত উদরে নিক্ষেপ করিয়া নীল সূত্রদারা বেউন করিলে উচ্চাটন হয়।

ওং নমো ভপৰতি ছালামালিনি গ্ৰগণ পরি-বৃতে স্বাহা।

এই মস্ত্র জপ করিয়া নরগণ যুদ্ধে গমন করিলে শাক্ষাৎ জয়শালী হয়।

७: खी: ही: क्री: खिरेश नमः।

উত্তরাদিদিকে এই মন্ত্র দারা চতুর্দলে ম্ণিনী দ্র্যা আদিত্যা প্রভাবতী ও হেমাদ্রিমধ্বা শ্রীদ-কলের পূজা করিবে।

७९ होैश शिक्षि नमः।

এই গোরী মন্ত্র ধ্যান জপ ও অর্চনা করিলে गर्स्तकाम क्षान करतम। (शोती त्रक्कवर्गा ह्यूक्का দক্ষিণ করে পাশধারিণী ও বরদা কফুল ও অভয় যুক্তা হাঁহাকে প্রার্থনা করিয়া নরগণ আত্মনিদ্ধি লাভ করিণা শতায়ু ও ধীমান হয় এবং তাহার চোরাদির ভগ দুবীভূত হয়। এই মন্ত্র সভিমন্ত্রিত জল পান করিলে ক্রন্ধ ব্যক্তি প্রসন্ম হয়, এবং বশ্য বিষয়ে এই মন্ত্রে অভি মন্ত্রিত অঞ্জন তিলক षात्रा किस्तार्थ कविन्छ। विमामान शास्का মস্তে মৈথুন ও তদ্বারা যোনি বীকাণে বশীস্থতা হয়। এই মন্ত্রদারা তিলহোম করিলে দর্বাভীউ নিদ্ধ হয়। যে মানব এই মল্রে সপ্তবার অভি মন্ত্রিত অন্ন ভোছন করে সে নিগতই শ্রীলাভ করিতে থাকে। এই মন্ত্র জপ করিলে **লক্ষ্মী** আদি ও বৈষ্ণবাদি অৰ্দ্ধনাৱীশ্বর, অনঙ্গরূপা দিতীয়া শক্তি মদনাতুরা, প্রন বেগা ও ভূবন পালিকা ইহারা স্ক্রিদিদ্ধি প্রদান করেন। শ্রীর্দ্ধিক নিমিত অনক

⁽३) ३१--- ध्रागट्य मञ्जल वाहर ।

मुम्भावक (मथनवातिभी छाहारक छप कतिरः। পদা মধ্যদলে ট্রীং স্ক্রসমূদায় কাদি ব্যঞ্জন বর্ণ ষট্ । ত্রেরোবিং শত্যাধিকত্রিশতত্ম অধ্যায় । (कारन वा घटि खीत महिल मिथिया शृका कतिरन বশীকরণ হয় !

ওঁ হ্রাঁ ছুঁ নি চ্যাক্লিমে মদদেবে ওং ওং। এই ষড়স ুমূলমন্ত্র রক্তবর্ণ তিকোলে লিখিয়া, खावगी, क्लामकातिगी, (का कि ते खुल गिक्कि व खहे সকল শক্তিকে ঈশানাদিকোশে মধ্যভাগে নিত্যা পাশাকুশধরা, তাঁহাকে এবং কপাল কৈলভক ও वीन। तळवनी तळा निड्यां सहला, नववीता তুৰ্ভগা মনোমানী ও দ্ৰোবা, পূৰ্ব্বাদিদিকে অৰ্থিছতা

শক্তিগণকে পূজা করিবে।

ও হীং অনকার নমঃ ওং ব্রীং হীংস্মরায় নমঃ। মন্মথায় মারায় কামায়। এইরূপ পঞ্চ বিধ কাম ৷ ইইারা পাশ অঙ্কণ চাপ ও শর ধারণ করিয়া আছেন, এইরূপ ধনান করিবে। বির্ক্তি, প্রীক্তি, বিপ্রাতি, মতি, ধ্বতি, বিধ্বতি, পৃষ্টি এই সকলের সহিত ক্রমে, কামাদি যুগা শক্তি গণেৰ পূজা কৰ্ত্তব্য।

ওং ছং নিত্যারিলে মদ দ্রেবে ওং ওং। আহ্বা ইঈউউধাধানএঐ৪ঔঅং সঃ। ঘঙ্চছু জ ঝ ঞা চঠিড চণ তথ্দধন প ফ বভন ধরল ব শ্যম হ জা। ৩ং ছং নিত্য ক্লিমে মদদেবে স্থাহা।

হৃদয়াদিতে ও সিংহে আধার শক্তি পদ্ম ও দেবাকৈ অর্জনা করিয়া বক্ষামাণ সন্ত্র উচ্চারণ করিবে।

ওংহী গৌরিকজ দায়তে গোগেখনি ভং ফট্স্থালা।

> हेकार्यस व्यानियहाश्वारण मानाभञ्ज सम्बद রাবিংশভাধিব জিশততম অংখারে।

ছরিতা জাম ঃ

चित्र कहिरतन, ७: ही: हर ८४ छ क छी: ত্রুঁকে ত্রীং কট্ ছরিভারে নমঃ।

এই মন্ত্র ন্যাস করিয়া ছিভূজা, ঋষ্ট বাছকা সিংহাধিষ্ঠিত ছরিতা দেবী, আধারশ**ক্তি** পদ্ম ও ' क्नोमित शृक्षां कतिरव। श्रनीमिमितक महत्न প্রণীতামুদ্রা দারা গায়ত্রী পূজা করিয়া ভ্রুরা থেচতী, চণ্ডা, ছেদনী, ক্ষেপনী এই স্ত্রীগণের অর্চনা কর্ত্তব্য। ভ্ংকারা, ক্ষেমকারী, ফট কারী, ইই।-দের পূজা মধ্যভাগে জয়া ও বিজয়ার পূজা ভারে, 🖟 কিন্তরগণের তাহার অগ্রভাগে সম্পাদনপুর্বক নাম ও ব্যাহতিগণ দারা তিল হোম করিলে সর্বকাম শিক্ষ হয়।

অন্তায় নম: ভাহা, কুলিকায় নম: ভ্রধা। বান্তকি বাজায় স্বাহা শহাপালায় বৌ ঘট্। তককাৰ ব্ৰট্নিভ্যুৎ মহাপ্লায় নৈ নমঃ। স্বাহ। কর্কেটি নাগায় ফট পদায়ে বৈ নুমঃ॥ এই মন্ত্ৰাৱা নাগগণেৰ পূজাদি কৰ্ত্ব্য।

মানবগণ একাশীতি গদখার৷ বস্ত্রে পটে তরুতে ' ভূর্টের শিলায় ও ষ্টিতে আনিথিত করিয়া মধ্যে (कार्ष्ठ श्रृद्धामिनित्क शृष्टिका मगुरह माधानाम লৈখিবে।

४९ हो। कः इस इस।

এই মল্লে চতুঃকণ্টক ও কালরাত্রি ও ঈশা-नामि मिटक व्यञ्चलामधरात छ वाश्टित एमबारकत পূজা করিবে।

কলী নারবমালী কালীনামাক মালিনী। মামোদেতত লোমানা, রক্ষত স্ব ভক্ষবা। যখপাট টয়ামর মটমো টট মোটমা।
বামোভূরি বিভূমেয়া ট ট খরী খরী ট ট॥
এই মন্ত্র যমরাজার বাজপ্রদেশে লিখিয়া বং
তং মান্ত্রে তোয় নিকেপ করিলে শক্র প্রভৃতির
খারণ দাধন হয়।

কজ্জন ও নিষ্কের নির্য্যাস ও মজ্জা এবং বিষ-মিশ্রিত শোণিত, কাক পক্ষের লেখনী সহিত্ত শাশাণে বা চভূম্পথে কুন্তের অধোভাগে নিধাপিত বা বল্মীকস্তৃপে নিক্ষেপ করিবে। বিভিত্তক তরু-শাখার অধোভাগে সর্কারি বিমর্দ্ধনযন্ত্র এবং শুরু পক্ষে ভূর্ত্ত্বপত্রে অনুগ্রহচক্র লিখিবে। ভূতলে ভিত্তিতে, পূর্ববদলে এবং মধ্যমকোষ্ঠকে ও খণ্ডে বারিমধ্যক্তিত ও হংসঃ বা পটিশ্যস্ত্র লিখিয়া, শিবা-দিকোষ্ঠে বাক্ষসাদিক্রমে লক্ষ্মীশ্লোক লিখিবে।

লক্ষীশ্লোক গণা---

শ্রীঃ সামা মোমা সাশ্রীঃ, সানৌ যাতের জেরা নৌসা। মাঘালীলা লালীয়ামা যাতের তেরথা নৌসা মাঘা (১)।

ইহার অর্থ এই যে-

সা জ্রী: অর্থাৎ সেই লক্ষ্মী মা, গোরী উমা মা দমা,পর্বতেতট ভাপ দেবা যজ্ঞভূমিতে মৌকা রূপে প্রসিদ্ধা হন। যে মাতা মায়াপ্রতৃতিব লীলাবিলাস স্বরূপিনী, অর্থাৎ প্রকৃতিস্বরূপা এবং নিয়মালি তপঃস্বরূপিনী হইয়া যজ্ঞবিষয়ে নৌকা-স্বরূপা আছেন।

দেই লক্ষ্মীদেবীর বহির্ভাগে শীন্তাদেবী(ছরিতা) অবস্থিতা এবং তাঁহার বহির্দিক্সকলে কলস. ও

পদান্তিত পথচক্ত, এইসকলের পূজা করিলে মৃত্যু-জয় এবং স্বৰ্গলাভ করিতে পারা যায়। ধৈর্য্য ভাছাই শান্তিদকলের ও প্রমাশান্তি ও र्मानागानि धनायक। ऋज्ञात ऋज्ञान কোষ্ঠদকল আলেখিত করিয়া ওং আদি ফট অন্তপর্যান্ত আদিবর্ণসকল অনুক্রমে লিখিয়া অধাে-ভাগে বিদ্যাবৰ্ণক্রেমে ব্যক্ত স্থিকা দংজ্ঞা লিখিবে : ইহাই সর্বকামার্থ সাধিনী প্রত্যাক্ত। পদে नर्वत्मवीदक चानिवर्गक्राम चानि इहेटक অন্তপৰ্য্যন্ত ব্যক্তন্তপৰ্য্যন্ত অৰ্থছিতা বিদ্যা অন্ত প্রত্যঙ্গিরা, ইনি সর্বকার্য্যার্থ সাধন করেন: চড়ংষ্টি ভানে নিপ্রহাকুগ্রহ চক্র অক্সিত করিবে অনস্তর মধ্ভাগে ক্রীং সং হু নাল্লী অমুজীবিদ্যা বিদ্যমানা আছেন। পত্রগত ফট্কারাদ্যা দেবী গণকে তিন হুংকারদারা বেষ্টন করিবে। কুম্ভ-যুক্তহা'র অবস্থিতা হইয়া তাঁহারা নর্বকাম প্রদান করিয়া থাকেন এবং দম্ভক অক্ষরস্কল কর্ণেজপ করিলে বিষ বিনাশ করেন।

> ইতাংগোম সংবিদ্যাপুৰাণে স্বিতাঞ্জান নামক অংথাবিংশভাধিব ত্রিশভতন অধ্যাস।

চতুৰিংশত্যধিকতিশতত্ম অধ্যায়।

তম্বাদমন্ত্র।

শার কহিলেন, স্তম্ভন, মোহন, বশীকরণ, বিদেশ ও উল্লাচন, বিদ্ব ব্যাধি আরোগ্য, মারণ ও শান্তি বর্ণন করিব। ভূর্জনত্তে তাড়নীদারা বড়সূল কৃষ্ম লিখিয়া তাহার মুখে ও চারিপদে মন্ত্র ন্যান করিবে। পাদচভূক্তয়ে ক্রীংকার, স্থমধ্যে প্রীংকার, গর্ভেবিন্যা ও পুর্ফে সাধককে লিখ্যা মালামদ্রে বেফ্নপ্রিক ইউকোপরি বিন্তে

⁽১) ইচাকে প্রতিপদ্ধিলোমক শ্লোক বলে। ইচাব প্রতি চবাণৰ প্রথম হটাতে যেরূপ ক্রমে বর্ণদকল বিনাত্ত শেষ হইতে পটোইয়া পতিলেও সেইক্রেমে বিনাত্ত উচ্চ বিত হইবে, ইহাই প্রতিপদ বিলোমক খোকে।

করিবে। করাল কুর্ম পৃষ্ঠ বারা দমারত করিয়া মন্ত্রপাঠপূর্বক মহাকৃর্মের পূজানস্তর পাদ প্রকা লণার্থ বারি বিক্ষেপপূর্বক শক্তকে স্মরণ করিয়া বামপাদছার। দপ্তবার ভাড়ন করিবে। ভাছাতেই শক্তর স্তন্তন হয়, ঐ স্তন্তন মুখরাগ দ্বারা জানিতে পার। যায়। ভৈরবরূপ করিয়া মালামন্ত্র লিখিবে। তদ্ যথা—

তং শত্রুমুখ স্তন্তনী কামরূপ। আলীচকরী, ব্রীং ফেঁ ফেৎকারিণী মম শত্রুদাং দেবদন্তানাং মুখং গুল্ভা ক্তন্তম মম সর্ববিধে বিণাৎ মুখস্তম্ভনং কুরু কুক ও ভং ফেঁ ফেৎকারিণী দাহা।

ফট্ এই হেতু মন্ত্রলিপিয়া তজ্জপনান্তৰ, মহা বল নগে বামকরে ও দক্ষিণকরে শূল লিথিয়া অঘার মন্ত্র লিখিত করিলে সংগ্রামে অরিগণকে ভান্তিত করিতে পারে।

তং নমো ভগবলৈ ভগমালিনি বিস্কৃর বিস্কৃর স্পান্দ স্পান্দ,নিত্যালৈ দেব দ্ব হু সং ক্রী কারা ক্রে স্বাহা।

এইমন্ত্রে রোচনাদিদারা তিলক করিলে জগং মোহিত করিতে পারা যায়।

ভং ফেঁছং ফট্ ফেৎকারিনি ব্রীং জ্বল জ্ব ত্রৈলক্যং মোহয় মোহয় গুছকালিকে স্বাহা।

এই ম্সুদারা তিলক করিলে রাজাদি বশীভূত হয়। গদিভের রজঃ ও প্রদাবের পুপা (সন্তান প্রদাবের পর যে ফুল পতিত হয় তাহা) জীরজাই (শাভুপ্রাব শোণিত) এইদকল দেশ্য রজনী ঘোগে শ্যাহিলে নিক্ষেপ করিলে পরস্পার দ্বেষ্যভাব জনাটিয়া দিতে পারা যায়। গোরুর ক্ষুর ও শুল ও অংশারক্ষুর এবং দর্শের মস্তক, গৃহমধ্যে নিক্ষেপ করিলে উচ্চাটন হয়। পীত্বর্ণ করবীর শিকড়, মারণ বিষয়ে সিদ্ধিপ্রদ। ব্যাল ছুছুন্দরীর হক্ত ও

করবী, মারণকার্যা সম্পাদন করে। সরট, ষট্পদ, কর্কট ও বুশ্চিক এইসকল চূর্ণ করিয়া তৈলে নি:ক্ষপ করিয়া অক্ষণ করাইলে শক্তে প্রভৃতির কৃষ্ঠ রোগ জন্মে!

ভং নব গ্রহায় সর্বশক্তন্ মন সাধর সাধর মারয় মারয় ওং সোং মং রং চুং ওং শং রাং কেং ভং স্বাহা।

এই মদ্রে শত অর্কপুষ্পদ্ধারা অর্চনা করিয়া তাহা শাশানে নি ক্ষপ করাটবে। রিপুমারণার্থ ভূজ্জপিত্রে আক্ষত গ্রহ সকলের বা প্রতিমায় তাঁহা দের পূজা করিবে।

তং কুঞ্জরী অক্ষাণী। তং মঞ্জরী মাহেশরী।
তং বেতালী কৌমাগী। ত কালী বৈক্ষব।
তং অংখারো বারাহী। তং বেতালী ইস্তাণী
উক্ষী।

ঙং জয়ানী যকিনী। নামাতরো**হে মম** শক্রং গৃহুত গৃহুত।

ভূচ্জপত্রে রিপুর নাম লিথিয়া, উক্ত মন্ত্র দারা শাশানে পুজা করিলে শক্ত মরিয়া যায়।

> ইন্ডাল্লেরে আদিম্ভাপুরানে বস্তনাদি মধুন্যক চতুরিবংশভাবিক্তিশ্ভতম অধ্যায়।

পঞ্চবিংশতাধিকতিশততম অধ্যায়।

নান।মন্ত্র।

ভাগ্নি কহিলেন, প্রথমে ভংকার সংযুক্ত বেচচের পদ ভূবিতা বর্গাতীত বিদর্গ সহিত প্রথং হুঁক ফট্ অভিকা সক্ষার্থ সাধিনা বিদ্যা বিষ সমূহাদি বিনাশ করে।

তংক্ষেত্তে এই জোণার সর্পট ব্যবি ভীবনার্থ প্রয়োগ করিবে। 4

তং হং কেকঃ এই মস্ত্র প্রয়োগ ছারা পাপ-রোগাদি জয় করিবে। থেচছ, এই মস্ত্র প্রয়োগে বিস্ন চুফীদি নিবারিভ হয়।

ट्रू श्वी अः धारे माखा त्यां विना नित वनी कतन इस ।

খে স্ত্রীং খে চ.এই প্রয়োগ বিকার ও বশ্যতা নিমিত জানিবে।

ইং হীং ক্ষেং কেঁ কোং ভগবতি অধিকে কুজাকে ক্ষেং ওং ভং তং বখনমে। অঘোরায় মুখে ত্রাং কিলি কিলি বিচ্চা ক্ষেত্রিং হে কু ত্রীং হাং গ্রীং, এই কুজিকা মন্ত্র স্কার্থ সাধন করে।

মহাদেব, ক্ষলদেবকে অন্যান্য যে সকল মন্ত্র কৃষ্যাছিলেন ভাহাও বলিভেছি।

> ইত্যাবেয়ে, আধিমহাপ্রাণে নানামত্ত নামক পঞ্চবিশ্লতাধিকবিশতত্ব অধ্যাস ৷

বড্বিং**শত্যধিকত্রিশতত্ম অ**ধ্যার।

मकलानि मद्याकात।

ঈশ্ব কহিলেন, ছে গুছ। পরাখ্য প্রাদাদের
দকল নিজন, শৃত্তা, কলাচ্য, স্বলস্কৃত্তা, অন্তর্থকর
রূপ কপন কঠোষ্ঠ ও শিব এই অন্ত প্রকার পরা
উক্ত হইরাছে। সদাশিব শব্দের রূপ সর্বাভিলাষ দিল্লির নিমিত্ত জানিবে। অমৃত, অংশুভান্
ইন্দু, ঈশ্ব, উগ্র, উহক, একপদ সহিত্ত জ্ঞাথা
উষধ, অংশুমান, বশী, অকারাদি হুইতে ক্ষকার
এবং ককারাদি ক্রেনে এই দকল রূপ, এবং কাম
দেব, শিংগুটা, গণেশ, কাল শক্ষর, একনেক্র ছিনেভা
ক্রিশ্ব, দীর্গবাহ্তক, একপাৎ অন্ধচন্দ্র কলপ,।
যোগিনী শ্রিয়, শক্তবিশ্ব, মহাগ্রন্থি, তর্পক, স্থানু,

দস্তর, নিধীশ, পদ্ম তথান্য শাকিনী প্রিয়, মুখবিষ ভীষণ, কৃতান্ত, প্রাণসংস্কর (ড**জম্বী, শ**ক্র, উদ্ধি, শ্রীকণ্ঠ, দিংহ, শশাস্ক, বিশ্বরূপ ক্ষণ্ড নরসিংহ मुर्घामाळा मः युक्क कविषा विश्वक्रभ कहा है दिव। অভ্যান-দংযুক্ত শুশিবীজ প্ৰি যুক্ত করিয়া তেজ সংমাক্রান্ত ঈশান বীজমন্ত্র প্রথমে উদ্ধার কবিবে। পুৰুষ তৃতীয় দক্ষিণ পঞ্চম বামদেব **পপ্তম তদনত্তর সদ্যোজাত রসমূক্ত নবম এই পাঁচ**-টিই ব্ৰহ্মপঞ্চ নামে অভিহিত হয়। সৰুল মন্ত্ৰই ওঁকারাদি ও চতুর্থান্ত ও নমোহস্তাজানিও। मर्ति।रात्र मकन विजीय श्रन्य अक्र-युक्त । শিবঃ ও নামে ঈশ্বর জানিবে। উহককে বিশ্বরূপ সমন্বিতা শিখা বলিয়া অবগত করিবে। সেই মন্ত্র অন্তম বলিয়া কথিত হয়, নেত্রমন্ত্র দশম; শুক্ত মত্ত্ব শশিনামে ও শিক্ষিধ্বক্স শির নামে বিখ্যাত হয়।

নমঃ সাহা ও বেষিট্ ই চ ফট ক্রমে হলাদির
জাতি ষট্ক প্রসাদ মন্ত্র জানিবে। ঈশান হইতে
ক্রমে নামে বিখ্যাত অংশুরঞ্জিত ঔষধাক্রান্ত শির
সমূহেব উপরিস্থিত মন্ত্রের উদ্ধার কর্ত্রিয়। অর্কচন্দ্র
ও উর্দ্ধনাদ বিন্দুর্যের মধ্যগত। তদন্তে বিশ্ব
ক্রপ; কুটিল মন্ত্র তিন প্রকার। এক প্রকার
প্রসাদ মন্ত্র সর্বপ্রকার সিদ্ধিদায়ক হয়। শিথাবীজ্ঞ
উদ্ধার করিয়া ফট কারান্ত ফট মন্ত্রের উদ্ধার
করিবে। অর্কচন্দ্রাকৃতি আসনে অব্স্থিত কামদেব মন্ত্র সর্পের সহিত বিদাসান আছে। মহাত্রপতান্ত্রমন্ত্র স্বলাব প্রশান করিয়া থাকে।
সকল অর্থাৎ কলাব সহিত প্রাসাদ মন্ত্র উক্ত হইল,
এক্ষণে নিক্ষল, চন্দ্রান্ত নাদ সংযোগ বিসংজ্ঞা তদনত্তর কুটিল। নিক্রণ মন্ত্র ভুক্তি মুক্তি প্রদাহহা।
পঞ্চাক্র সদাশিব মন্ত্র। অংশুমান্ বিশ্বরূপ, শুক্ত-

রঞ্জিত আরত, একাক রহিত শূন্য মন্ত্র ভাগার মুর্তিরদ ও তরু বালক বা মৃত্যণ ছারা পুঞ্জিত হইয়াও বিল্ল বিনাশ করে। অণ্ডমান, বিশ্বনপাথ্য সমূহকেব উপরিভাগে অবস্থিত। সকল মন্ত্রের সক্ষ পুজাঙ্গাদিই কলাচ্য নামে অভিহিত হয়। কিপ মন্ত্র উদ্ধার করিয়া তাহার অংশভাগে নব নর্দিংহ, কুডান্তক্ষ, তেজ্বিপ্রাণ উর্জ্ অণ্ডমান্ উহকাত্রনাম্ভ অধ্যেদ্ধি এই সকল সমলম্ভত জানিবে। চক্ৰাৰ্দ্ধনাদ নাদান্ত ত্ৰক্ষা বিফু বিভূষিত, উদ্ধি ও নরসিংহ সুর্য্য ছাবা বিভেদিত হয়। যথন কৃত হুইবে, তখন ভাষায় মন্ত্ৰাঙ্গ সকল পূৰ্ব্ববং সম্পা দন করিবে। অংশুমদ্যুক্ত ওজাথ্য প্রথম বর্ণ উদ্ধার কবিবে। অংশুদ্ধারা আক্রান্ত, অংশুসং বৰ্ণনাথক হিতীয়। তথ্ব অণ্ডমং মুক্তিলায়ক ঈশ্ব তৃতীয়। অংগ্ৰাবা **আকান্ত, উহ**ক মন্ত্ৰ চহুৰ্থ বক্ষণ প্ৰাণ তৈজনমন্ত্ৰ পঞ্চং কুতান্ত ষ্ঠ : चः एक्सान् छेनक श्रांग मध्य वन छन्न छ कविटन। ইন্দু সমাক্রান্ত পদ্ম ও একপাদ ধাবী নন্দীশ মন্ত্র জানিবে। অস্তে প্রথম যোগ করিলে ইহাব ঋদ্ধ ড় ভীষ্পঞ্ম ও সপ্তম দশনীজ ক্ষপণ মন্ত্ৰ ও নবন সন্ধোজাত এবং দিতীয় হইতে হৃদ্যাদি মস্ত্রোদ্ধার করবে। ফডন্ড দশবর্ণ প্রণব মন্ত্র উদ্ধার করা কর্তিয়। একাদ্সকল নমস্কার যুক্ত, অন্য প্রকার দ্বিতীয় হইতে অফীম পর্য্যন্ত বিদেশের সকলের উদ্ধাৰ করিবে। অস্তেশ প্রথম, সূক্ষা দিতীয়, শিবোরম তৃতীয়, একমূর্ত্তি, একরূপ তিম্বর্তি, জীকণ্ঠ ও শিখনী এই অফ শিবেশ্বৰ প্ৰথিত আছে। শিখণ্ডগণ ও অনস্তান্ত ও মন্ত্ৰান্ত মূৰ্ত্তি কথিত इहेग्राट्ड ।

के ल्यारिया का विश्वश्यार मनलानि माहिका बनायक ষড়বিংশভঃবিকলিশভভৰ কাষাৰে।

সপ্তবিংশতাধিকতিশততন অধায়। গণপূজা !

ঈশ্বর কহিলেন, তেজের উপরিদংশ্বিত বিশ্ব সিংহ ও ভদধোভাগে কৃতান্ত মন্ত্র ন্যাস্যান্তর, তদখোভাগে, প্রণণ, তলিমে উহক, অংশুমান ও বিখম্তিছ কণ্ঠোষ্ঠ প্রাণবাদি বিন্যস্ত করিবে। নমোস্ত চতুৰৰ সুধামাতাহত বিশ্বরূপ কারণ : ' এছনে মন্ত্রাঙ্গদকল প্রবিদ্ধণ জানিব। প্রণবোদ্ধ র করিয়া পরে প্রশ্য রহয় উচ্চারণ পুর্ব্ধক পশ্চাৎ ঘোর ঘোৰভররূপ কবিয়া চটশন্দ ছিধা করিয়া ভদনস্তর প্রবর উচ্চাবণ কর্ত্রা। দহু । বম ঘাত্য, ইহাদের প্রত্যেক কে দিবা কার্য ভ ও ফট্ এই মন্ত্ৰয় অত্যে সমাবেশন পুরংসৰ উচ্চা বণ কবিবো আংঘারাস্ত্র সকল নেত্রস্থরপ, একংশ গায়ত্রী উক্ত হইতেছে।

তন্মহেশাষ বিদাহে মহাদেবায় ধীমহি ভলঃ শিবঃ প্রচোদযাৎ।

এই গাযতী মন্ত্ৰ সৰ্বাৰ্থ দাদিনা। যাতা ও বিজয়াদিতে ছীলাভ করিবাব নিমিত পূর্বগণেকে क्रश कविद्य। शुर्वरा छूर्थी भारक क्रि. क्रांति निर्क অৰ্ক ঘারা বিভাজিত হইলে তাহাতে চতুৰ্দল ও ত্রিকোণে ত্রিদল কমল লিখিয়া তাহার প্রতভাগে পদিকাবিধী ও অশ্বযুক্ত বিভাজিত ত্রিদল লিখিবে। ত্রিদলাস্থলযুক্ত বহুদেব স্তত্পণ ছারা পাদ পটীকা ও তদুৰ্দ্ধে ভাগমাত্ৰ প্ৰমাণে বেদিকা প্ৰদান করিবে। দ্বার পদ্মপ্রমিত উপদার কোষ্ঠ হইতে বিশেষরূপ বর্ণ বিশিষ্ট করিবে: ছার ও উপছার বির্চিত মগুল বিল্ল বিনাশ করে। মধ্যে আরক কমল ভছহিন্তাগে বাহা পদ্ম সকল বিথীকা সকল

শেতবর্প ওল্পার সকল যথেচছ বর্ণ বিশিক্ট এবং কেশর ও কর্ণিঃ।সকল পীতবর্ণ করিবে। ইছাই বিল্ল মৰ্কনাধ্য মওল, ইহার মধ্যভাগে নামাদ তৎপুরুষ কর্ত্তক শিরোহত, শিবহাক্র সহিত গণ-পতির পূজা করিবে। পূর্দাপংক্তিতে গলানীর্ গণনাযক, ত্রিরাবর্ত, গগনজ, গোপতি এই সকলেব এবং দশপংক্তিতে বিচিত্তাংশ মহাকায়, লম্বোষ্ঠ, লম্বন্দ্ৰ নিম্বাদ্ৰ, মহাভাগ বিকৃত, পাৰ্ক্তী প্ৰিয ভ্যাবাহ, ভদ্ৰভগৰ ভয়সুদন এই দ্বাদশের ও পশ্চিমে দেবভাগের এবং সহানাদ ভাদ্মর বিভ বাছ গণাধিপ উত্ত, নভশ্চও মহাশুৰ, ভীমক, रनाभ सपूर्यमा, जन्मत ভारशुक्ते 🥷 (मीरमा खाःसाधत ত্রাক্ষ, মনোত্রি, দংলয়, লঘ, দৃত্যপ্রিম, লৌল্য-निकर्ग, तरमन, कृजास ७ कृछ: अहे मकालत्र हे পুক্রেং পূজা করিবে। অনন্তব অযুভ্রার মন্ত্র জপ ও তাহার দশংশ অর্থাৎ সহজ্র হোম সমাপন পুৰুৱক অবশিষ্ট গণের দশ আহুতি দ্বাৰা হোম ও জপান্তে পূর্ণান্ততি প্রদানপূর্বক অভিষেক করিলে সাৰ্বিকাম সিদ্ধাহ্য । ভদনস্তর ভূ, গো¦, অ্ষা, গজা ও ব্রত্তাদি ছারা ঋরু পজা কবিবে।

> ইতাংগ্রের অংশিমগাপুরাণে গণপুথা আশ্মক সপ্রবিণ্যভাগিকতিশভ্রম অধ্যাব।

অফবিংশতাধিকত্রিশততম অধ্যায়।

বাগীখরী পূজা।

ঈশর কহিলেন, সমগুল বাগীখরী পুজ বর্ণন করিব। কাল সংযুক্ত ও বর্গ সংযুক্ত মন্ত্র উত্ক করিয়া মন্ত্র ছারা নিধাদে চন্দ্র সূর্য বিশিষ্ট ঈশর লিখিত করিবে, তাহাতে অক্ষর প্রদান কর্তব্য নয়। নান্তর কুন্দেশ্রিতা পঞ্চাশ্রণ মালিকা মন্তামান্ত্য

দাম বিভুষত অভয় বরদাক সূত্র হস্তা পুস্তকাচ্যা ত্রিলোচন বাগীখরী ধ্যান করিবে। কান্ত পর্যান্ত লক্ষ্কপ করিয়া মন্ত্র সম্বন্ধীয়া অকারা নিক্ষকারন্তা বর্ণমালা স্কন্ধান্ত পর্যান্ত স্মারণ করিবে। গুরু মন্ত্র গ্রহণে দীক্ষার্থ মণ্ডল করিবেন। ঐ মণ্ডলে প্রথমে দুর্যা ও তৎপরে চন্দ্র এই চুইভাগে বিভক্ত করিয়া পদা প্রস্তুত করিবে। বীণিকা, পদিক। ও চতুষ্পদে অফ পদ্ম থাকিবে। বাহ্যদেশে ঐ নীথিকা ও পদিকা এবং দ্বিপদ দ্বার ও উপদ্বাব ও দ্বিপট্টীকা বিশিষ্ট কোন কর্ত্বা। ন্যপত্র শুভ ভাষার কর্ণিকা কনক প্রভা কেশর সকল বিচি এবং কোন সকল রক্তবর্ণে পরিপুরিত হইবে। শূন্যরেথান্তর ভাগ কুঞ্চবর্ণ। দ্বাব সকল এরাবত পরিমাণে করিয়া মধ্যপত্মে সরস্বভীর পূজাপুর্বাক ধ্যানানস্তর পূর্ববপদ্মে, হল্লেখা, চিত্রবাগীলী, বিখ-রপাও গায়তী, শাক্রী, মতিও ধ্রতি এবং হীং ও স্ববীজা পূর্ববাদ্যা শক্তিগণের ধ্যান ও সরস্বতীর তুল্য ইহাঁদের কপিলাগোল্পতে হোম কর্ত্তব্য। এই-রূপে বাগীশ্বরীর পূজা করিলে মানবগণ সংস্কৃত কবিও প্রাকৃত কবি এবং কাব্যাদি শাস্ত্রভ্ত হয়।

> ইতাগোৰে আদিনচপুৰাণে বাগীখনীপুৰা নামক অষ্টবিংশচাধিকতিশত্তম অধ্যায় :

ঊনত্তিংশত্যধিকত্তিশত্তম অধ্যায়।

মধল i

ঈশ্বর কহিলেন, হে গুহ। একণে সর্বতোভদুক অফানগুল সকল বলিব। স্থারগণ, বিষুবকালে ইকা প্রাচীশক্তির সাধন করিবে। চিত্রা ও
ভাতির অন্তরে অথবা দৃইস্ত্রহারা পূর্ব্বপশ্চিনায়ত্ত্ব
সূত্র আফালনপূর্বক মধ্যভাগে মগুল অভিত
করিয়া তাহার মধ্যহইতে দক্ষিণোত্রে কোটিম্বয়

(কোণছয়) আঞ্চিত করিবে। মধ্যে দক্ষিণোভরে ফাল দিয়া (ফা'ড়না) কোণৰয় কঠবা। শতক্ষেত্ৰাদ্ধ মান মানহারা কোণ সম্পাত নিরুপিত হয়। এই রূপে সূত্রচতুফের কালনে চতুফোণ হইবে তথায় শুভপ্রদ ভল্ল স্বেদকর কর্ত্তক্য। অফবৈভাক্তিত এক ও চুইস্থানে শীৰ্মী ও ভাগিকা এবং দিপদিক ঘার এবং প্রপ্রিমাণ হইতে চুট্পদ (স্থান) কণোল দঙ্ভি কোণবন্ধ বিচিত্র হইবে। শুক্লবর্ণ, ত হার কর্লিকা পীভবর্ণা, কেশর। বিচিত্ত ৰীথী রক্তবর্ণা করিবে। ছার, লোকেশ প্রতিরূপ (নীলবর্ণ) কোণরক্তবর্ণ করিবে। নিত্যবিধিতে এইরূপ পদ্ম বিধেয়: নৈমিতিক বিধিতে পদ্ম-প্রকার প্রাংশ কর। অসংস্কুত ও সংস্কুত চুইপ্রকার পদ্ম ভোগমোক প্রদান করে। অস'সক্তপদ্ম মুকুগণের সংস্তরুগনা, বাল, যুবা, ও রুদ্ধভেদে । তিন প্রকার নামানুসাবে ইহার ফল গিছি প্রদ হয়। পদ্মকেত্রে সূত্রসকলকে দিগ্রিদিকে বিকেপ করিয়া পদাক্ষেত্র সমান পঞ্জরত ক'রবে। প্রথমে কণিকা তাহা নঘটি পদাযুক্তা, দিতীযে চতুর্বিঃশতি কেশর তৃতীয়ে দলদান্ধি, চতুর্থে গ্রুকুন্ত দলাঞা, পঞ্চে শুন্রপ হটলে ভাহাকে সংগ্রু কমল বলে। অসংসক্ত কমলে দলাগ্রভাগ অইভাগে বিস্তারপুর্ব্বক বিভাগ করিয়া ভাগ দ্বয় পরিত্যাগ পুরুক অন্টাংশে এক একদল করত দক্ষিবস্তার সূত্রদার। মূল হইতে সেই দলরঞ্জিত করিবে। ইহা স্ব্যু ও অপ্স্ব্যু (বাম দক্ষিণ) ক্রেমে বর্দ্ধিত, অথবা । সন্ধ্রিমণ্য হইতে অদ্ধচন্দ্রবং ভাষিত করিবে। সান্ধ্রয়াগ্র সূত্র বা বাল-পদ্ম তজ্ঞপ হইবে। সন্ধি-সুত্রের অদ্ধণরিমাণ স্বারা পুর্তৃভাগে পরিবর্তিভ , করিয়া ভীক্ষাগ্র করিলে সেই কমল ভোগখোক প্রদায়ক হয়। মোচন সমৃদ্ধি ও বশ্যাদিতে প্রমাণ

বিশিষ্ট বালপদা শুভকর এই পদা, মন্ত্রাহাক বিভাগদারা নবনাভিবিশিট ও নবহস্ত প্রমাণ হইবে৷ মধাভাগে পট্টিকাও বীজসময়িত পদা প্রতিষ্টিত থাকিবে: উহাত্তে পল্পরিমানামুদারে মার এবং কণ্ঠ ও উপক্তমুক্ত দলস্কল এবং ভাহার বাহ্যদেশে, পঞ্ভাগান্বিতা ও চারিনিকে দশভাগযুক্তা वोधीका थाकित्व। দিগবিদিক্সকলে অউপন্ম ও বীথিকাস্ছিত ছারপন্ম ভাহার বাহা প্রদেশে পঞ্জদিনা ও বিস্কৃষিতা থাকিবে। দ্বার কণ্ঠ, পদ্মবিশিষ্ট, ওষ্ঠ কণ্ঠক পদিক, কপোল পদিক ও দিশুত্রয়ে দারত্রয় কর্ত্তব্য। ত্রিপট্ট কোণ বন্ধ, ও ছিপট্ট বজ্রবৎ হইবে। মধ্যকমল, শুক্ল, পীত, রক্তা, নীল, পীত শুক্ল, ধুন্তা, রক্তা ও পীতবর্ণ इटेटल मुक्तिश्रम इया। श्रनीमिमिटक अधिकम्ब, ভাহাতে শিব বিফুপ্রভৃতির পূজা বর্ত্তা। মধ্য-ভাগে প্রাসাদের অর্চনা করিয়া পদাদিতে ইন্দ্র† দির ও বাহ্যবীধীতে অনুপূজা ও বিষ্ণুপ্রভৃতিব শর্চনা করিলে অখনেধের ফল ভাগী হয়। পবিত্রাবোহণাদিতে মহামঙল আলেখিত করিয়া প্রথমে অউহত্ত ক্ষেত্রকে ছয় ও চুইভাগে বিবৃত্তিত করত মধ্যে দিপাদ কমল বীথিকা ও ভদন্তুর वीथिकाकत्रशास्त्र निभविनिक् मकाल स्राह्मे नेन-কমল বিবর্ত্তিত করিবে। মধ্যপদ্মের প্রমাণানু मारत खिश्मे श्रेषा निश्या पनमित्र विशेष मील ইন্দাবর সকল অকিত করিয়া তাহাদের পুর্ভভাগে পদিকা ও বাঁথি ও তদূৰ্দ্ধভাগে স্বন্থিক দকল এবং কৃতি ≄র্তৃক কুভভাগ অফ দ্বিপদ্দকল লিখিয়া স্বস্তিকসকল বিবর্ত্তিত করত বহিতাগে পূর্বেবৎ বীথিকা এবং কমলে হেরূপ ছার থাকে ভদ্রেপ উপকণ্ঠযুক্ত ছারসকল লিখিবে। মন্তলে কোণ-तक्कर्स, बीथी शीखर्ग ७ भग्न मीनदर्ग श्रष्टिकामि

CALCUTTA

িচিত্রিত করিলে সর্ব্বাভিলাব পরিপূর্ণ হয়। পঞ্পদ্ম, চারিদিকে দশভাগে বিভক্ত পঞ্ছস্ত अवः घिना कमल. वीथो, न्यामिका ७ निक्नकरल भक्क , इंक. श्रुष्ठे डार्श वीषी, श्रीमका ७ विशास-দকল কণ্ঠোপকণ্ঠযুক্ত ভারদকল ও মধ্যভাগে भक्क इरेरवा · এই भक्षांख्य मछत्य भूर्यवर (चंड ও পীত্ৰৰ থাকিবে: দক্ষিণপদ্ম বৈদুৰ্য্য প্ৰভ ও বারুণ পদাকুনাভ, উত্তরাজ শহাভ ও অন্যাকল বিচিত্র বর্ণ ছইবে। দশহত্ত পরিমিত দ্ববিকাম-প্রদমন্তল বলিব : চতুফোন বিকৃতরূপ বিভক্ত ও ! দ্বার দ্বিপণ, মধ্যভাগে পূর্ববাবৎ পদ্ম হইবে। শুত: পর বিশ্ববাদে মণ্ডল বলিডেছি চতুহস্তপ্রমাণ পুর कविया हु हेर छ दल ९ रख श्रमान वीथीका वल স্বান্তিকদারা আর্ডা; হস্তপ্রমাণ দার্যকল ও দিক্দকলে দৃপস্কজ বৃত্ত করিবে। পঞ্পদা শুকু वर्, जाहारक निक्रमञ्जूषाय धनः शुक्वामि मिरक सम য়াদি ও বিদিক্সকলে অন্ত মন্ত্রসকলের ও পুর্ববিৎ পঞ্জক্ষের পূজা করিবে। অতঃপর বুদ্ধাধর মগুল বর্ণন করিব তাহে শতভাগে ও তিথিভাগে এক-দিকে পদা, লিকাফক, মেখলাসংযুক্ত কণ্ঠ ও দ্বিপ দিক থাকিবে। আচার্য্য নিজবুদ্ধির আশ্রয়ে লতা-দির কল্পনা করিবেন। চারি, ছয়, পঞ্জ অফীদি ও শিখাদ্যাদি মঙল হইবে; উক্ত মঙল সকল माकि केन्द्र अमुश्राभाषि इहेटव ; हेन्द्रवर्गन ८ इक् माकि इरेट्ड बानिता हित, मञ्जू, दावी ७ সুর্যোর চতুর্দশশত চম্বারিংশৎ (১৪৪০) মণ্ডল আছে। সপ্ততিভাগে বিভক্ত হইলে, লভালিঙ্গো-ন্তব মঞ্জ হয়, তাহা প্রবণ কর। দিক্সকলে পঞ্জার, এক, জার ও পঞ্ফ ইরূপে বিশোন (১)

(১) বিলোগ—ক্রমান্ত্রপাবে পাণ্টাল।

করিবে। উদ্ধিষ্ঠিত ছিপদে পার্শকোর্ড বয়ে লিক্সমন্দির মধ্যে ছিপদপত্ম ও অন্য এক শহুজ
লিখিয়া লিঙ্গের পার্বছয়ে ভদ্র ও পদ্মছার রাধিয়া
নিয়া তংপার্ব শোভনী, হরির অবশিষ্ট ছয়লতা ও
উদ্ধিদদিক লেপ করিলে হরির ভদ্রাষ্টক নাবে
প্রথিত মগুল হয়। রশ্মিমানসংযুক্ত চারিপদ লোপ করিলে শোভিক মগুল তদনন্তর পঞ্চবিংশতিকপত্ম, তংপরে পীঠ ও অপীঠ, ছই ছইটি ও
অ্টউপশোভা রাধিয়া দিয়া, দেব্যাদি খ্যাপক
বৃহ্হভদ্র ও পরে লঘ্ভদ্র এবং মধ্যে নবপদ পত্ম
ও কোণ্ডেক্ত চতুক্টয়, অবশেষ ত্রয়োদশপদ
লিধিলে বৃদ্ধাধার মগুল হইবে। হরাদির পূজার
নিমিত্র ঘন্টা ধক শতপত্র বৃদ্ধাধার মগুল প্রশন্ত
হয়।

> ই ক্রাপ্থেরে আদিখহাপুরাণে মণ্ডণ নানক উন্তিংশদ'ধক্তিশততম অধাায়।

ত্রিংশদ্ধিক্তিশতভান অধ্যায়।

অংখারাস্ত্রাদি শাস্তিকল্প।

ঈশ্বর কহিলেন, প্রথমে অন্ত্র্যাগ করিলে দকল কর্মেই দিছিলাভ হয়। মধ্যে শিবাদির অন্ত ও পুর্বেন বক্তাদিক্রমে পঞ্চক্র দশকর পূজা করিলে রণাদিতে কয়লাভ হয়। গ্রহপূজায় মধ্যভাগে রবি পূর্ব্বাদিদিকে দোমাদি, এইরূপে গ্রহ পূজা করিলে দকল গ্রহই একাদশহ হইয়া শুভফল প্রদান করে। এক্ষণে দর্ব্বাৎপাত বিনাশিনী গ্রহরোগাদি প্রশমনা মারীভয় শক্রভয়নিবারিশী অন্ত্রশান্তি কহিতেছি, শ্রবণ কর। বিল্ল, কোপ্রদাপ বিনাশক অ্যারান্ত্র ন্ত্রহুপ করিবে। লক্ষ্ণে গ্রহাদি, ভিলহোমে উৎপাত বিনাশ হয়।

লক্ষতোমে দিবা উৎপাত ও তদৰ্দ্ধান আকা শজ উৎপাত বিষয়ট হয়। গ্রুদ্রা লক্ষংহাম করিলে ভূমিজাত উৎপাত এবং য়ত ও গুগগুলু লোমে দৰ্বেৰিংপাত বিন্তুইয়া যায়। জুৰ্বা অকত সুত্হোমদারা ব্যঃধিও সহত সুতহোমে ছঃৰপ্ৰদোষ, জবা ও ঘুচমিশ্ৰিত অযুতহো≒দা্গা বিশ্বব্যাধির ও মযুত গুণ্গুলু হোমে ভূত েভালা-দির শা'ত হয়। মহারুক ভগ হটলেও বালে লা কঙ্ক (কাঁক্ —লোগপুষ্ঠ) বা আরণাজস্তু গৃহপ্রবেশ ক'রলে, ছারা ম্বলাবা ও উ ল্কাপাত বা ভূমিকম্প হটলে তিল য়তনারা হোম করিলে কল্যাণ লাভ হয। অকালে পুল্পফলশালি বুক্ষগণের বক্তত্রাব হটলে অযুত গুণ্গুলুহোম বিধেয়। রাজ্যভঙ্গ, মাৰণ ও নানারী উপস্থিত হইলে, তিল গুতদারা পঞাশ সহস্র হোম কবিলে নিশারিত হয়। হস্তি মাবী শান্তির নিমিত্ত কবিণীৰ দন্ত বৰ্জন বিষয়ে এবং মদদারা করিণীর দৃষ্টিবোধে অযুত শান্তি বিধেষ। অকালে গর্ভপাত এবং জন্মিয়াই বিনষ্ট অগবা বিক্ত সন্তান সঞ্জাত হইলে বা যাত্রাকালে ভন্দ (হাম কর্তব্য। তিলা য়ু।তর লক্ষ্যেম क वित्न উভ=मिक्ति, लकार्करशास्त्र मधागानिकि, এবং লক্ষপাদ (পঞ্চবিংশতি সহস্ৰা) হোম করিলে অধ্নাসিদ্ধি সাধন হয়। ধাৰৎপ্ৰমাণ জপ, তং-প্ৰমাণ হোম করিলে স্ব আমে বিজয় লাভ হয় সংক্র নাট। উর্জিন সিংচমন্ত্রার ও ন্যাস কবিয়া অন্মেরাক্ত মন্ত্র জপ করিবে।

ে এ ং ব্যাহানি মহাপুৰাৰে আন থারাড়ানি শান্তি বল্ল নামক এি শুদ্ধিক আশিভ তম অধ্যায়।

এক, ভিংশত্যধিক তিশত তম অধায়।

পাশুপত শান্তি।

ঈপার কথিলেনে, পাশুপাতাত্ত মাজু দারা পূর্কা হইতে শান্তি জপাদি বলবি। পাদমাত্ত মেজু পূর্কা নাশ হয়: ফড়ও মাজু আপদাদি বিনাশ কাৰে।

ভ^ল নমোভগৰতে মহাপাশুপতায় হতুল বলবীর্যপেরাক্রমায ত্রিপঞ্নখনায নানাকপায়. नाना अञ्जलामगाय । नर्नाञ्चल लाग ভিষাঞ্জনচয প্রেক্ষার শাশ্ন বেতাল প্রিয়ায সর্কবিদ্বনিকৃত্তর তায় স্বাসিদ্ধি প্রদায় ভক্তাসুকম্পিনে অন্ৎব্য বক্ত ভুজপাদায় তান্মিন সিদ্ধায় বেতাল বিভাসিনে শাকিনীকোভ জনকার বার্ধিনিগ্রহকারিণে পাপ ভঞ্জনায় সুখ্য সামাগ্নি নেত্রায় বিষ্ণুক্বচায় খড়গ বজু ছাত্তায় মন্দ্রবাকণ পশাষ কেন্দ্রশান্য জুলজিজ সর্বরোগবিদ্রোবণায গ্রহনিগ্রহকারিণে ष्ट्रस्टेनांशकाकातितः ७ क्षा शिक्षतां य यहे । हाँ कांबाद्धांग करें। रङ्गहकांब करें। मक्टरव करें। म भौग करें । यस यि करें । अष्टभाग करें । बद्धानाय কট। পাশাব কট্। ধ্বজায় কট্। আহুশাব কট্। গদাবৈ ফট্। কুবেবায় ফট্। ত্রিশুলাঘ ফট। मुन्नत्राय करें। ठळा य करें। १ प्राप्त करें ব্রায় ফট। ঈশানায ফট। থেটকান্তায় মুহাস্ত্রায় ফট। কল্পানাস্ত্রায়। পিচিন্দ বাস্থায় ম্ত্রা কুরিকান্ত্রার ফট। ব্রক্ষান্ত্রার ফট। "ক্তান্ত্রার ফট। গণান্তান কট। পি'লিপিচ্ছান্তায় **কট। গন্ধ**ৰ্কীন্তায करें। मृर्ताञ्चार करें। न क्रमाञ्चाय करें। वाबाञ्चाय ফট। পশ্চিমাস্থায় ফট। ন্ত্রাস্থায় ফট। শাকিল স্তায় কট। যোগি জন্তায় কট। দণ্ডাত্রায় কট। মহাদণ্ডাব্রায ফট। নানাস্ত্রায় ফট। শিবাস্ত্র য करे। जेनान खान करे। शुक्रवाद्यान करे। चरवा

রাস্ত্রায় ফট। সাদ্যাজাতান্ত্রায় ফট। হৃদয়াস্ত্রায় ফট। মহাজ্রাণ ফট। গরুড়ার ফট। রাক্ষণাস্ত্রায कछे। नानवाञ्चाय कछे। ८ कीः नात्रनिः श्य कछें। ছুট্ট্রোয় ফট। স্ববাস্ত্রায় ফট। নঃ ফট। বঃ ফট। शः करे। कः करे। मः करे। व्योकरे। तकः करे। कुः करे। कृतः करे। यः करे। यशः करे। जनः क्रहे। छ्ल: क्रहे। मंत्र्दरमांक क्रहे। मर्क्तभाजाम কট। দৰ্মতত্ব কটা দৰ্মপ্ৰাণ কটা দৰ্মনাড়ী कहे। मर्त्त कांत्र करें। मर्तिएमर करें। श्रेश करें। अां° करें । ए॰ करें । उक करें । श्वार करें । लार कृष्ठे । देनद्र नाम्य कृष्ठे । योगाञ्जाश कृष्ठे । कामाञ्जाश কট। ক্ষেত্রপালাস্ত্রায় ফট্। ভং কারাস্ত্রায় ফট্। ভাকরান্ত্যায় ফট্। চন্দ্রান্তায় ফট্। বিশ্বেশ্বান্তায कहै। त्थार तथीर कहै। तहीर तहार कहे। जामम ভाময करे। करें। छानश छानगकरें। डिमानग खेना, त्या कहे। द्धांनय द्धांनय यहें रंगक्की रय नक्षी रय ফট। বিদ্রাবয় বিদ্রাবয় ফট। সর্বহেরিতং নাশয় নাশয় ফটা

এই মন্তু একবার আবর্ত্তন করিলে সর্প্রবিধ বিদ্ব বিনাশ শতবার আবর্ত্তন কবিলে উৎপাত - শেও রণাদিতে বিজয় লাভ হয়। এই মস্ত্রে সূত ও গুগ গুলুর হোম করিলে অসাধ্যের সাধনা হয়। ্যন্ত্রপাশুপত মন্ত্র পাঠ করিলে সত্তই শাস্তি বিৰাজ করে।

> তভ্যাধেৰে আদিমহাপ্রাণে পাশুপভগাজি নমেক धकिरिनरिकजिन्ड केम व्यथानि ।

দাবিংশত্যধিকতিশততম অধ্যায়।

ষড়ঙ্গ অথোরান্তা।

नियंत किंदिनम, ७९ द्वः १९ मः अरे मञ्ज हाजा। বোগাদি বিনাশ প্রাপ্ত হয়। এই মল্লে দূর্বাছারা। শত নির্ছাতালি। ভৌম ভুক-প্রাদ।

লক্ষাহ্তি প্রদান করিলে শাস্তি ও পুষ্টি দাধন করে। হে বড়ানন! প্রশ্ব মন্ত্র ও মায়া মন্ত্র ভারা দিন্য (১) অন্তরীক ও ভৌম উৎপাত শান্তি ছইয়া থাকে।

ওঁ নমো ভগণতি গঙ্গে কালি কালি মহাকালি মাণ্স শোণিত ভৌজনে রক্ত কৃষ্ণ মুখি বশ্মান্য মাকুষান্ স্বাহা।

এট মায়া মস্ত্রে দকলই বশ্য হয়।

ওঁ এই প্রণণ মন্ত্র লক্ষণার জপ ও সমুত হোম क्रिट्रल मर्वकार्या मिश्व इयु । এই ऋপ ও হোম वेस्तामित्क ६ वर्ष चानस्र कत्व, मसुमामिशाक যে বশীস্থত করিবে, তদিষায়ে আর বক্তব্য কি আছে। অন্তর্দ্ধানকরী, মোহনী ও জৃন্তনী, বিদ্যা শত্রুগণকে বশে আনয়ন ও তাহাদের বৃদ্ধি বিমো-হিত কৰে। কামণেপুরূপা এই বিদ্যা সপ্তপ্রক¹ব একণে শক্তে চৌরাদি বিমোহক মন্ত্র রাজ ক'ণ-ৰেছি। সক্ৰিধ মহাভাগে হর পুজনানস্তর লক জপ ও তিল খারা হোম কবিলে ঐ মন্ত্র সিদ্ধ হয়। উদ্ধার মন্ত্র প্রবণ কর।

ভূঁ হলে পুলে এছি ভ্ৰহ্মসাভ্যম বিষ্ণুসভ্যেম ক্রদেস্ট্রেন বক্ষ ম'ং বাচেধরায় সাহা।

फुर्ज खुर्थाए अक्षेत्रे कहेर छ भगिखान करतन বলিয়া তুর্গা শিবা (মঙ্গশ্রুপিনী) এই নাম কথিত इहेश शिक।

उँ ठ उका निनी परान् कि है कि कि कि कि श्वरक्ष करे हीर।

এই মন্ত্র রাজ হারা তওুল দবল কলেমানন্তব ত্রিংশং বার জপ করিয়া তাহ। চৌয়াপরি নিংক্ষণ

 ⁾ দিব্য- অকালে 6 के एका পাদ'सि। আছবীকা উৎ-

করিবে এবং দন্ত দারা চূর্ণ করিয়া ঐ শুক্ষ ভগুল পাতিত করিলে সিন্ধিলাভ হয়।

ওঁ জ্ললোচন কপিল কটাভাষর বিদ্রাবণ বৈলোক্য ডামর ডামর দর দর ভ্রম ভ্রম আকট্ট আকট্ট তোটঃ তোটয় মোটর মোটয় দহ দহ পচ পচ এবং দিদ্ধিক্রজোজ্ঞাপয়তি যদি এহোপগতঃ ফর্গলোকং দেবলাকংবা আরামবিহারাচলং তথাপি তুমাবর্ত্ত যিয়া মি বলিং গৃহ্লে গৃহ্লে দদামিতে স্বাহা।

এই মন্ত্রদার কেত্রপাল বলি প্রদান পূর্ণবক গ্রহন্যাসানন্তর হৃদগমন করিলে বৈরি বিনাশ ও সমরে শত্রুক নির্মাল হয়। হংস্বীজ বিনাস क्तित् खिविश्वविश्व हवन करत्। अक्षतः, हन्नन, कुर्छ कुकूम नागरकणत्र, नथ, रनवनारू अहे मकरन সমাংশহার। মাক্ষীকযুক্ত প্রস্তুত করিয়া ধুপপ্রদানে দেহবস্ত্রাদি ধূপিত করিলে, বিবাদ জ্রীগণেরমোহন ভত্ন ও কলহ বিষয়ে শুভদায়ক এবং মায়ামস্ত্রে অভিমন্ত্রিত করিলে ঐধুপ, কন্যার বরণ ও ভাগ্য বিষয়ে মঙ্গল দায়ক হয়। ভ্ৰীং মন্ত্ৰারা ললাট-**८**म्टल (ब्राह्मा, नांशशूच्या, कृक्य मनःशिला এहे-দ্রব্যের তিলক করিয়া যাংকে দর্শন করাযায় সেই ব্যক্তিই বশীভূত হয়। শতাবরী চুর্ণ ছুম্বের দহিত পান করিলে, অথবা নাগকেশরচূর্ণ, স্তপক করিয়া ভক্ষণ করিলে বা পলাশবীজ (বাঁটিয়া জল-যোগে) পান করিলে পুত্রলাভ হয়।

ওঁ উত্তিষ্ঠ চামুণ্ডে জন্তব জন্তব সোহর অমুকং বশমানর কানিয় স্বাহা।

ইহার নাম ষড় বিংশ সিদ্ধবিদ্যা। নদীভীরের মৃতিকাদারা স্ত্রীনির্মাণ পুরংদর ধুস্তররুসে অর্কপত্তে (আকন্দ পাতায) ঐ স্ত্রীর নাম লিথিয়া, মৃত্রপরি-ত্যাগপুর্বক উক্ত মন্ত্র দ্বপ করিয়া ঐ স্ত্রীকেবশে ভার্মন কবিবে। ও কুং সঃ বষট্।

এই মহামৃত্যুঞ্জয় মন্ত্রজপ করিলে ও ইহা ছার। হোম করিলে পুষ্টিগর্জন হয়।

र्षे रः मः हूँ ह्रँ म द्वः त्रीः।

এই অফবৈশস্ত্র জপদার। সমরে বিজয়লাভ ;

হয়। ঈশান প্রধান মন্ত্রসমুদার, ধর্মকামাদি, প্রদান ।

করে। ঈশান সকলবিদ্যার ও সর্বভূতের ঈশ্বব,

ব্রহ্মার অধিপতি ব্রহ্মস্বরূপ সেই শিব আফাব
সতভ্ট সকল দাবক হউন।

ওঁ তৎপুরুষায় বিদাহে মহাদেবায় ধীমহি তল্পোরুদ্র: প্রচোদয়াৎ।

ভূ অংথারেভ্যোহথ ষোরেভ্যো খোরহরে ভ্যস্ত সর্বত:। সর্বেভ্যোনমন্তে ক্রন্ত ক্রপেভাঃ। ভূ বামদেবায় নমোজেকায় নমো ক্রনার নহঃ। কালায নমঃ কলবিকরণায় নমো বলবিকরণায় নমো বলপ্রমধনায় নমঃ। স্বব্ভূত দ্মনার নমো মনোম্মনায় নমঃ।

সদ্যোজাত মন্ত্র বলিব।

ওঁ সদ্যোজাতায় বৈনমঃ। ভবে ভবে২হনাদি-ভবে ভজৰ মাংভবোদ্ধব।

ভোগ মোক্ষ প্রদায়ক পঞ্চ ভ্রহ্মাক্ষের অঙ্গষ্টক বলিব।

ওঁ নমঃ প্রমাশ্বনে প্রায় কামদায় প্রমে মরায় যোগায় যোগসম্ভবায় দর্ককরায় কুরু কুরু সত্য সত্য ভব ভব ভবোদ্ভব বামদেব দর্ককার্য কর পাপ প্রশমন স্নাশিব প্রসন্ম নমোহস্ততে স্বাহা॥

সপ্ততি অক্ষবযুক্ত হৃদ্য মন্ত্ৰ সৰ্ববাৰ্থ নিদ্ধিপ্ৰদ। ওঁ শিবঃ শিবায় নমঃ শিবঃ। ওঁ হৃদয়ে স্থালিনি আহা শিথা। ওঁ বিশ্বাস্থ্য মহাতেক্তঃ সৰ্বজ্ঞ। প্ৰভূৱাবৰ্ত্তিয় মহাখোৱ কৰচ পিঞ্চল নমঃ। মহা কবচ শিবাজ্ঞয়া হৃদয়ং বন্ধ বন্ধ ঘূর্ণর ঘূর্ণর চূর্ণর চূর্ণর সূক্ষ্ম বজ্ঞধর বর্জপাশ ধ্যুর্বজ্ঞাশন্ম বজ্ঞপরীর মস শরীর সমূপ্রবিশ্য সর্ববৃষ্টান্ স্তম্ভর স্তম্ভর হুং।

ক্ষর মন্ত্রের কবচ পঞ্চাকরারিকশত জানিবে। ওঁ ওছদে নেত্রং ওঁ প্রক্ষর প্রক্ষর তফুরূপ তফু-দ্ধপ চট চট প্রচট প্রচট কট কট বম বম ঘাতর ঘাতর হং ফট্ অঘোরান্তম।

> ইত্যাধেরে আধিমহাপুরাদে বড়র অংখরাপ্ত নাসক ব্যক্তিংশর্মধিকবিশুভক্তর অধ্যার।

অয়স্তিংশদধিকত্বিশতভ্যন অধ্যায়।

রুদ্রশান্তি।

ঈশ্র কহিলেন, কল্লাঘোরাদি শিবশান্তি আবন কর। মন্তকোটির অধীখর অঘোরমন্ত্র ত্রহ্মছত্যাদি পাপ বিনাশক এবং উত্তমাধ্য সিদ্ধি সকলের আলয় ও অথিল রোগাপহারী, দিব্য আন্তরাক্ষ ও ভৌন উৎপাত সকলের প্রশমন বিষ্মাহ পিশাচা-দির অপ্নোদক ও সর্বকাষ প্রদায়ক জানিবে। পাপদমূহের পীড়ায় প্রায়শ্চিত স্বরূপ ও ছুর্ভাগ্য ও পীড়া বিনাশক একবীৰ ক্লম্ত্র বিন্যাস করিয়া পঞ্চ-মুখ শিবের ধ্যান করিবে। শান্তিকে ও পৌষ্টিকে(১) শুক্ল ও রক্তবর্ণ, বশ্যে পীত স্বস্তুনে ধূত্র বর্ণ, डेक्टांडेन भाषात कुछ वर्ग चांकर्यांग कांशल वर्ग, त्याहरन पाकिः भवनं व्यक्तना कवित्व। किः मध्यक মন্ত্ৰজ্ঞপ এবং শুগগুলু ও অমুভ্যোগে ভিন লক্ষ ছোম করিলে অসিত্র বিষয়েরও সাধন ও সর্বা-। কার্ব্য সিদ্ধ হয়। অধ্যের মন্ত্র অপেকা ভৃক্তি মুক্তি প্রদ অপর মন্ত্র আর নাই। ইহা ঘারা অব্র-শ্বচারী অস্নাত ব্যক্তি ও স্নাতক হয়।

ও অংখার, এই ছুই মন্ত্রাজ; এই উভয়ের জণ হোমার্চন দারা সমরে শক্ত দৈশু বিমর্দ্ধিত হয়।

একণে সর্বার্থ সংসাধনী কল্যাণ্লায়নী রুদ্রশান্তি জ্বন কর। পুত্রার্থ, গ্রহ্নাশার্থ, বিষব্যাধি
বিনাশার্থ, ভূতিক্নারী প্রশমনার্থ, ভূ:ক্রাহ্রণার্থ,
দৈন্যাদি রাজ্যপ্রাপ্তির ও রিপু বিনাশের নিমিত,
নর্কগ্রহ বিমর্দনার্থ ও জ্বালফলিত বৃক্ষদোর
বিনাশার্থ, পূজায় "নমঃ" ও হোমে "ক্রাহা"
আপ্যারনে (সভোষণে) ব্যট্কার ও পৃষ্টি বিয়য়ে
বৌষট্ নিষোজিত করিবে। চকারছয়ের ক্রানে
অতিযোগ করাইবে।

ওঁ রুদ্রায় চ তে ওঁ ব্যক্তায় নমং অবিম্কায়, অসম্ভবায় পুরুষায় চ পূজ্যায় ঈশানায় পোরুষায় পঞ্চোত্তরে বিশ্বরূপায় করালায় বিকৃতরূপার অবিকৃতরূপায়।

নিকারে, অপরকালে, জলে ও নিশ্লতি মায়া-তত্ত জানিবে।

একপিসলায় খেতপিদলায় নমঃ। মধুপিসলায় নমঃ মধুপিকলায় নিয়তে অনন্তায় আর্দ্রার
ভক্ষার পয়োগণার। কালতত্বে করালায় বিকরালায়। ছো মায়াতত্বে। সহত্র শীর্ষায় সহত্রবজ্জার
সহত্র করচরণায় সহত্র লিক্লায়। বিদ্যাতত্বে।
সহত্রাক্ষ হইতে দক্ষিণদলে বিন্যাস ক্রিবে।

একজটার বিজটার স্বাহা ত্রিজটার স্বাহা। কারার স্বধাকারার ব্যটকারার বড় ক্রন্তার।

হে গুহ! এইমস্ত ঈশতত্ত্ব বহিংপত্তে অব-⊶বিত।

ভূতপত্নে পশুপত্য়ে উমাপত্ত্যে কালাধি-পত্যে।

এইমন্ত্রে সদাশিবাধাক্ষতত্ত্বে পূর্ববদলন্ধিত ষট্-শক্তির পূজা কর্তব্য।

⁽э) ८मोहिटम---१नक्मामित दुवि । सम्बा

উমাথৈ ক্রপধারিন্ট, ওঁ ক্র ক্র রংহিণি রুহিণি ইংদ্রোসি দেবানাং দেব দেব বিশাথ হন হন দহ দহ পচ পচ মথ মথ তুরু তুরু অরু অরু অরু জরু রুদ্রশান্তি মনুসার ক্ঞাপিকল অকাল পিশা-চাধিপতি বিশেষরায় নমঃ। শিবতত্বে কর্ণিকায় উল্লাসহেশ্বের পূজা কর্তবা।

ওঁ ব্যোমব্যাপিনে ব্যোমরপায় সর্বব্যাপিনে
শিবার অনস্তায় অনাধায় অনাশ্রেতায় শিবায়।
শিবতত্ত্ব নবপাদানি ব্যোম ব্যাপ্যভিধাস্যহি।
খাখতায় যোগগাঁচসংস্থিতায় নিত্যংযোগিনেধ্যানা
হারায় নমঃ। ওঁ নমঃ শিবায় স্ব্প্রভবে শিবায়
ঈশান্মুর্নায় ত্রপুরুষাদি পঞ্চবক্তায়।

হে গুছ! সদাধ্যপূর্ববিদলে নবপদ পূজা করিবে।

কাঘোর হৃদয়ায় বানদেবগুস্থায় সদ্যোজাত

মৃর্তবে। ৩ং নমো নম:। গুলাতি গুলায় গোপ্তে

কানধনাল, সর্বধোগাধিকৃত য় জোতীরপাম।

আলি পত্রে অহীশতত্ত্বিদ্যাত্ত্রে সুই দক্ষিণ দলে
পূজা কর্তব্য!

প্ৰথমখনাৰ চেত্ৰাচেত্ৰ ব্যোমন আপিন অথম তেজভেজঃ। মাৰাতত্ত্ব নৈয়ত, কালভত্ত্ব পশ্চমে পূজনীয়।

ি তং ধু ধু না না বাং বাং অনিধাননিধ নাদুব শিব স্কিপ্ৰ্নাত্মন্মহাদেব স্দুটিশ্বর মহাত্তিজ যোগা্ধিপতে । মুক্ত মুক্ত প্রম্থ প্রম্থ ওং স্ক্রি । স্কি ওং ভব ভব ওং ভবোদ্ধান।

দক্ষভৃত সুধ্প্রদ বাংনেত্রে নিয়তি ও পুরুষে বিউভ্রদ্যে পূজা কর্ত্তির।

সন্ব স নিধ্যকর জ্রন্ধ নিফুক্তপের এনচিত অস্তু অস্ত চ সাক্ষিন সাক্ষিন ভূকে ভূকে পত্তৰ পিক বিক জ্ঞান জ্ঞান শব্দ শব্দ সূক্ষা শিব শিব স্বৈপ্রদ স্বিপ্রদ ওং নমঃ শিবায় ওং নমো ন্মঃ শিবায় ওং ননো নমঃ ঈশানে প্রাকৃততত্ত্বে পূজা হোম ও জপ করিবে।

ইহা দারা প্রহ রোগাদি মারা **আর্ডি** বিনাশ পার।

এই মন্ত্র স্থারা সর্বার্থ সিদ্ধ হয়।

ইত্যাপ্রের অয়দিনগাপুবাণে কল্পাতি নামক

কর অংশদ ধক্তিশ ১ চম অধ্যায়।

চতুব্রিংশত্যধিকবিশতত্তন অধ্যার।

অংশকাদি।

ঈশর কহিলেন, ভর্ততুরপে শ্রেণিবন্ধ বিষমা-কৃতি অনুড় দ্রাক্ষ বল্য ধান্থীর। এক বদন, ত্রিবদন, বা পঞ্বদন, ইছার মধ্যে যেরূপ পাওয়া ষাম ধারণ কবিবে। ভিমুখ, চতুশ্মুখ, ষশ্মুখ রুদ্রাক্ষ যদি তীত্র কণ্টক ও ত্রংহান হয় ভাহাও প্রশস্ত জা'নৱে৷ চচানন ক্ৰেক্ দ'ক্ষণ বাছতে বা শিশা দিত ধারণ করিয়ে। কড়াক ধারণ করিলে অভ্রাচানী বিদার। ও গরাভাক সাত্র হয়। অথবা শিক্ষক্তে অচ্চনা কবিষা হৈমী মুদ্র। (কোনিত অস্থায়কাদি) ধারণ কর্তবা। শিব্ শিখা ভেলুদিঃ ও স্থাত হয় ই**ইারা পো**রে। গোচর অথে কুল জানি । ফিত শক্তি ভদ্মারা লক্ষ্য হয়। প্রাহাপ*রা, ২৬, 'ল,* কপোত গ্রন্থিক ইহাবা শিবগোচর; কুটিলগণ, বেভালগণ, পদ্ম रु मगन, नियातु लागिहत; धृत्राष्ट्रेशन, वक्तर्ग, কাকগণ, গোপালগণ, জ্যোতিগোচৰ অপর কৃটি-কগণ সাঠরগণ, গুটিকগণ সাণিত্রগোচর ইহাদের এক একটি চারি প্রকাব।

মন্ত্রগণ যন্তারা জাসন্ধি প্রাণান করে সেই সিদ্ধাংশকানি আখ্যান কহিব। কুটর্যভাববর্তিকত

মাতৃ লাগণকে ভূতলে ভালেথিত করিয়া মন্ত্রাকর দকল বিশ্লেষণ পুৰঃদর অতুসার পুথক করত সাধকের নাম বিশ্লেষিত করিবে। অনন্তর মন্তের আদি ও অন্তে সাধক বর্ণসকল সংযোজিত করিয়া দিল, সাধা, হুদিল আ অবি এইসকলকে যথাক্রমে গণনা করিলে, মাস্ত্রর আদিতে ও অস্তে অংশাকু সারে সিদ্ধিপ্রদ ও আদিসিদ্ধি ও অস্তাসিদ্ধি তৎ-ক্ষণাৎ দির ছইবে। স্তমিদ্ধাদি ও স্থানিদান্ত দিদ্ধ বং কল্লা কর্তির। অবিকে আদি ও অস্তে দুরে পবিবছরনীয়। সিদ্ধা শুসিদ্ধা, আরি ও সাধ্য এই-দকল একার্থেই অবস্থিত হয়। মন্ত্রের আদিতে দিদ্ধ ওবং অফেও দেইকপ্ মধ্যে রিপুসহত্র দোষের নিমিত হয় না। পাত্ৰসন্ধে মাঘা প্রসাদ ও প্রাবহার। অংশক হয়। তথা মন্ত্রই ব্রহ্মাংশক : বিষ্ণুর হন্নই বৈষ্ণেশ্ভ হ, বীর, কন্দ্রাভক, ঈশ্ব-প্রিয় ইন্দুণেশ: নাগধরাক নাগাংশ, ভবণপ্রিয যক্ষাংশ, অভিশীতাদি গশাবাংশ, ভাষাংস বাক সাংশক, যুদ্ধ চাৰ্য্য দৈতাংশ, মানী বিদ্যাধবাংশ মলাক্রান্ত পিশাচাংশ। নিং ক্লণ কবিয়া মত প্রদান করিয়। একছটাত ফডঙ্গমন্ত্র ওপগ শং পর্যান্ত বিদ্যা, বালা বিংযাক্ষরান্তা এবং রুদ্রা ও আয়েধা দাবি॰শ গামিনী হৰ, ভাহাব উট্লে যে সকল মন্ত্ৰ সে দকল, দিনশত পৰিমাণে বৃদ্ধি পাইয়া থাকে। আকারাদি হকবান্ত পর্যান্ত অক্ষব স্কল ক্রেম শুক্ল কুঞ্চ এই তুই পকা; অসুবার ও বিদর্গ ব্যতিরেকে দশ স্থবরণ ভ্রম্ব ও শুকু, দীর্ঘ-স্থ্যসকল প্রতিপদাদি তিথি ও কৃষ্ণ পক্ষ ৷ ইহারা উদিত হইলে শান্তিকাদি, ভ্ৰমিত হটলে, বশাদি লামিত হইলে সন্ধি, দ্বেষ, উচ্চাটন ও স্তস্ত্রনে অন্ত হয়। ইহাতে আবাহ বাযুদ্ধলে শান্তিকাদি লিঙ্গলে (দুর্য্যের পারিপার্খিক বিশেষ) কর্ষণাদি,

বিষুধ সংক্রমণস্থানে মারণ ও উচ্চাটনাদি পকপ্রকারে পৃথক্ হয়। নিম্নের গৃহে পৃথিবী, উর্দ্ধে
তেজঃ, মধ্যলাগে দ্রব্য রন্ধ্রপার্থে বাছবায়ু; মহেখর এই সকলে ব্যাপিয়া আছেন। পার্থিবে
স্তন্তন, জলে শান্তি, তেজে বল্যাদি বায়ুতে ভ্রমণ,
শৃন্যে পুণ্যকাল অভ্যাস করিবে।

ইত।যেরে আদিমহাপুখাণে অংশকানি নামক চতুল্লিশ্বধিকজিশততম অখারে।

পঞ্চত্রিংশদ্ধিকত্রিশতত্ম অধ্যায়।

रशीर्यापि शृक्षा ।

ঈশর কহিলেন, আমি সোভাগ্যাদির নিমিত্ত ভোগমোক্ষপ্রদ উমা পূজা বলিব। মস্ত্র, ধ্যান, মন্তল, মৃদ্রা ও হোমাদি সাধন, অয়ি, শিব ও মহা-শক্তি সময়ত কাল ইড়াদি দেব ও বিকারসহিত প্রথমে উদ্ধার কবিবা পেবির মৃন মন্ত্রবাচক চতুর্থ-ভার কর্ত্তি।

खँ ही। मः त्यी त्यारेश नमः।

ইহাট গোষীৰ মৃন্মন্ত্র। সেই চতুর্থস্থানে বর্ণত্রিত্বসহিত লাভিযুক্ত বড়স্ল লাসন, সপ্রণবন্ধর্তি, ক্ষনয় মান্ত্রসহিত, উনক ও কাল, শিবনীজ উদ্ধার করিবে। প্রাণ, দীলসনালাক, বড়স ও জাতিযুক্ত করিষা, ইহাতে প্রণালারা আসন, ও ক্ষরমন্ত্রীয়ান করিবে। হে বৎস বামল কহিলাম, একণে একথীর বলিব। বহ্নি, মায়া, ও কুশান্সহিত স্টিশংযুক্ত বাপেকমন্ত্র ও হৃদয়াদি বর্জিত শিবশক্তি মণ্ডীজ উদ্ধার কবিয়া, হেম ক্রপাম্মী বা কাঠজ। অগ্যা প্রস্তর্জা, পঞ্জপিও সমস্থিতা ও অব্যক্তা এই পঞ্চমৃত্তি গৌরীরমধ্যে ও কোণে পূলা করিয়া অগ্রিকোণ হইতে ক্রেমে

ললিত হভগা গৌরী ক্ষোভণীর এবং প্রাদিবৃত্ত হইতে বামা জেষ্ঠা, ক্রিয়া ও জ্ঞানার পূজা করিবে। পীঠযুক্ত বামভাগে শিবের অব্যক্তরূপ পূজনীয়। বাজেন, ছিনেতা, তাকেরা বা শক্রান সমস্বিতা শুদ্ধা তৎপরে পীঠণক্মদয়। তদনস্তর তারা, বিভুজা, চতুভুলি সিংহস্থা বা র্কস্থা অউ বা অস্টাদশকরা, মাল্যক্ষসূত্র কালিকা ধারিণী ও গলে উৎপলপিও শোভনী হযেন, দক্ষিণে শরা-সনধরা বা শরধরা, বামে পুস্তক, তামূল, দণ্ড, অভয় কমণ্ডলু ধারণ করিতেছেন। গণেশ দর্পণ-সকলে ইহাদের প্রত্যেকের পূজা করিবে। তদ-নম্ভর গ্নতাদনে ব্যক্তাবক্ত বা পদামুদ্রা কর্ত্বা। শিবের তিঙ্গমুদ্রা, উভয়ের আনাহনীমুদ্রা, যোনি मुक्ताहे मां कमुक्ता। मक्षत हजूरकांव मधारकार्क চতুষীয়ে চতুক্ষোণ ত্রিপত্রপদ্ম, ত্রিকোণের উর্দ্ধে विश्वन विश्रक्तरम अर्बह्य, विश्वन्डेश्वर्क इन्टेड দারকণ্ঠ দ্বিত্র ও দিক্সকলের প্রত্যেকে তিন जिनवात हहेरव। अहे मधरल अथवा उक्तमधरल পুজ। কর্ত্তব্য। অথবা শ্বন্ডিলে (পূজার্থপরিক্ষ্ত ভূমি) সংস্থাপনপূর্ত্তক পঞ্চগব্যাদি ও রক্তপুষ্প-দার) উত্রাদ্য হইয়া পুদ্রানস্তর অমৃত ও সুতে শতহোম করিয়া পূর্ণাহুতি প্রদান করিলে সর্ব সিদিলাত হয়। অনস্তর বলি প্রদানপূর্বকৈ অন্ট বা তিন্টী কুমারীকে ভোচন করাইবে। শিব ভক্তগণকে নৈবেদ্য প্রদান করিবে, স্বংং গ্রহণ कृतिरव ना। अड्झरभ श्रीती शृका कतिरन কন্যার্থীর কন্যালাভ, অপুজের পুজলাভ, ছর্ভগার মৌভাগ্যলাভ, রাজার রাজ্যলাভ ও রণে জয়লাভ হয় ৷ অফলক জপ বাধা বাক্সিদ্ধি ও দেবাদিগৰ বশ্য হ্য। সমস্ত ডিপিডে বিশেষত: অইমী চকু-র্দ্দশী ও ভতীয়ায় নিবেদন না করিয়া ভোজন ও

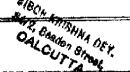
বামহন্তে আর্চন অকর্ত্ত্ত্তা। মৃত্যুক্তরার্চন বলিব,
কলসোদরে তাঁহার পূজা কর্ত্ত্ত্ত্তা। প্রশ্বহার।
হোম ওজঃমৃত্তিদ্যান ও মূল মন্ত্র জলনানন্তর বোষড্তু মন্ত্রে কুন্তুমুদ্রা প্রদর্শন করিবে। ক্লার, ছুর্বা,
ছুত্ত, অমৃত্তা, পুনর্গবাহারা হোম করিয়া পায়েদ ।
হারা পুরোডাণ প্রদানপূর্বক অমুত্তবার মন্ত্রজণ
করিবে। চতুমুথি, চতুর্বাহ্ত, ছুইহন্তে ছুইকলদ
ধারী ও হস্তহ্তের বরাভ্রপ্রদ মৃত্যুক্ত্যকে সান্ন
করাইবে। মৃত্যুক্তরের পূজা করিলে আরোগা
ঐহর্ত্ত দীর্ঘান্ত করিলে শুভকর হয়। অমুত্রপ্রপ
মৃত্যুক্তরের ধ্যান ও পূজা করিলে কথনই অপমৃত্য
হ্য না।

ইত্যাগ্রের আদিনচপুরতে প্রের্থ্যদিপুরানারক প্রফ্রিংশদ্ধিক্তিশতভ্য অধ্যার।

ষ্ট,ত্রিংশদ্ধিকত্রিশতত্য/অধ্যায়।

দেবালয় মাহাস্থ্য !

ঈশ্বর কহিলেন, ত্রতেশ্বর ও সত্যাদি দেবগপের পূজা করিয়া ত্রত সমর্পণ করিলে অরিষ্ট প্রশমনে প্রশস্ত হয়। অরিষ্ট অর্থং সূত্রনায়ক; তাহা হেমরজময় হইলে সম্পত্তির নিমিত্ত হয়। মারণ বিষয়ে মহাশভা, আপ্যায়নে শৃভ্যমূত্র, পূত্র বর্ত্তনে মৌজিক প্রশস্ত। স্কাটিক ও কোশেয় সম্পত্তিপ্রদ রুদ্র নেত্রজ মুক্তিপ্রদ। ধার্ত্রীকল পরিমিত রুদ্রাক্ষ তাহা হইতে উৎস্কট। সমেরু বা মেরুহীন হইলেও মানসমূত্র জপ্তব্য ক্লানিবে। অনামিকা ও অসুষ্ঠিযোগে শক্ষাচ্চারণ পূর্বক জপ কর্ত্তবা। তর্ম্কণী ও অসুষ্ঠ জপে মেরুলক্ষন করিবেনা। প্রমাদবশতঃ সূত্র পতিত হইলে



छुड़े भक्त बाद क्रश विश्वत । घण्डा मुक्तवानामग्री, ভাহার বাদনে অধীগম হয়। গোময় গৌৰুত বল্মীক মুদ্রিকা (উহচিল) দ্রন্ম ও বারি প্রভৃতি গুৰু দেৰাত্ৰতনাদির বিশোধন কর্ত্তগ্য। "ফ্রন্দোনম: শিবায়" এই মন্ত্র সর্বার্থের সাধক। বেদে পঞ্চাক্ষরে ও লোকে ষড়ক্ষরে তাহা গীত হয় ৷ ওং ইহার অত্তে শস্তু মুদ্রার্থ বট বীজাবৎ অবস্থিত আছেন। ক্রেমে "নমঃ শিবায়" ইহাকে ঈশানাদি মন্ত্র বলিয়া জানিবে। যড়কর সূত্রের ভাষ্য কদম্ব "ওং নমঃ শিবায়" এই মন্ত্রই পার্ম এই মন্ত্র ছারা লিঙ্গ পূঞা করিবে, যেহেতু দকল লোকের প্রতি অমুগ্রছের নিমিত ধর্ম-কা-মার্থ মোক্ষ প্রদান শিব, লিক্ষে অধিষ্ঠিত আছেন। বে লিক পূজা না করে দে ধর্মাদির উপযুক্ত পাত্র নয়। বিভার্জনে ভৃত্তি ও মৃক্তিলাভ হয় এই **८र्षु** यावच्छीयम लिक्रार्क्रम कर्खवा। वतः लाग পরিত্যাগ উত্তম তথাপি শিব পূজা না করিয়া ভোজন কর্ত্তব্য নয়। মানবপ্রণ, রুজে পুজা করিলে क्रफ़, विकृ शृष्ठा कतिला विकृ मुर्ग, शृक्षाय मुर्ग, अ শক্তি পূজায় শক্তির স্বরূপ হয়। সর্ক্রিধ যজ্ঞ, তপস্থা, দান, তীর্থ ও বেদাধ্যয়নে সে ফললাভ হয়, মানবগৰ একমাত্র শিবলিক স্থাপন করিয়া তাহার কোটিগুণ ফললাভ করিতে পারে। যে नद्र जिनकारित भार्थित भिवितिक चर्छना कर्द्र, रम একাদশকুল উদ্ধার করিয়া স্বয়ং স্বর্গ ভোগী হয়। क्कि शृक्षक अवश्वासमाजुनात्त्र आनान विद्यान कर्चगा धर्माएए स अ महिद्यान कृति ७ महद्रक ভুল্য কল জানিও। ধন চারিভাগে বিভক্ত করিয়া ছুইভাগ ধর্মার্থ এক ভাগ জীবনার্থ সঞ্চয় ও আন্য-ভাগ অলার্থ নিয়েজিত কর্ত্তব্য, বেছেতু কীবন অনিত্য দেবাগার নিশ্রাণ কারী একবিংশতি কুল । অঊবর্ণা, ষভুর্বেটে ষড়্বর্ণা সাম্বেদে।

উদ্ধার করিয়া বয়ং অর্থলান্ত করে। স্বৃত্তিকা, কার্চ, ইউক 🕾 প্রস্তর দারা দেবালয় নির্মাণ করিয়া ক্রমানুসারে কোটি কোটি গুণ অধিকতর স্বলগাভ করে। আটগানি ইউক দারা দেবালর নির্মাণ ক্রিয়া ও স্বর্গামী হয়। এমনকি, ধুলি ছারা ক্ৰীড়া করিতে করিতে দেবাগার নির্মাণ করিলে অর্থলাভ করে।

हेळाटबदा कानिमहाभूदारन त्मदानव माहाचापिनावक ষট্জিংশদ্ধিকজিশভত্স অধ্যায়।

সপ্তত্তিংশদধিকত্তিশতভ্য অধ্যায়।

ছক্ষঃসার।

অগ্নি কছিলেন, মূলজ দেই প্ৰসিদ্ধ মূল অৰ্থাৎ গণ ঘারা পিঞ্বলোক্ত ছন্দ: শাস্ত্র যথাক্রমে বলিব। তিন তিন দগণ দৰ্জনত্ব দগণ আদি লঘু ষগণ মধ্য लघुत्रान असलघुडरान अक्।कर्त्रान वश् अक्छक्र সাগণ এক লভুলগণ।

পদান্তেন্থিত হ্রন্থ বা বিকল্পে এবং সংযোগের পূর্ববর্ণ, বিদর্গযুক্ত ও অকুষার যুক্তবর্ণ ব্যঞ্জন যুক্ত, किञ्चाम्नीयस्क । উপাধानीय स्कार्य । नीर्यद श्वकः रव। वद्य व्यक्ते, हातित्वम ७ चानिका क्षात्रात्र इनः कार्या मन्त्रीमिक इस ।

> ইভাবেটার অভিময়প্রাণে চলঃস্বিনামক मश्रीकाश्रमधिकविन्द्रकृष व्यथाता

অফীবিংশদ্ধিকত্রিশততম অধ্যায়।

ছল:গর।

चौंद्र कहित्सम, ছत्न्सार्थिकादत्र भात्रजी त्तरी একাকরীহ ভিনি পঞ্জ দশাকরী, প্রাচাপত্য রূপে

ভাগশাক্ষরা, খাছেদে অন্টাদশবর্ণা ও সামবেদে ভাগশাক্ষরা হন। ঋক্বেদে চারিবৃদ্ধি প্রাজাপতেঃ চারি, অবশিষ্টে এক এক করিয়া বৃদ্ধি পাইবে; কুর্যাদি হইতে ক্রেমে পরিত্যাগ করিবে। উন্ধিক্, অনুষ্টুপ, বৃহতী, পংক্তি, ক্রিষ্টুভ্ জগভী, ইহারা ক্রমশঃ গায়ন্ত্রী সম্প্রীয় ও ব্রহ্ম স্বরূপ ফানিবে। তিন তিনটি সামাল্য ও এক একটি আর্যাঃ থক্ ও মজুর্বেদরে সংজ্ঞা চতুষ্টি পদে লিখিবে।

> ইত। গোৱে আদিমহাপুৰাণে ছলংগার নামক ভ টুবিংশদ্ধিক্ষিশতভ্য স্থায়।

ঊনচত্ব রিংশদ্ধিকত্রিশতত্ম অধ্যায়।

इन्दिमात् ।

অগ্নি কতিলেন, পাদেও আপাদ পূৰণে গায় ী অষ্ট প্রকার। জগরীর আদিত্য পাদ, বিরাটেব দশ, বিষ্ণুব রুদ্রপাদ, ছন্দ্র একাদিপাদক জানিবে। চাবি कक्करव बाह्य ह्यूक्शाह, त्नाथां मधीकरत जिलान इस । (सरे भारखी अकलान नीतृ एड व्यक्ति भरत महेशान अ जिशान ह्य। इस कारी कारी लाग्न विकासना अवः इत्र वद्य जुधव पाता ত্রিপাদ হয়। ত্রিপদা গাঁহতী নীরুৎ এবং নংনব ও ধাতু ছারা,নাগী এবং বদ দিবদ পাদে বাবাহী হয়। শুনন্তর তৃতীয় ছ**ন্দঃ। দ্বা**ণশ ব**স্ত দার**। দিপাদ, এবং ত্রিষ্ট ভসম্বন্ধীয় পাদ ছালা ত্রিপাদ কথিত হ্ন। বেদে অই ও বস্থাদ উক্তিক হুল: কীটিত হ⁷ গা থাকে। ককুৰু ফিক্ **অফ দুৰ্ঘ্য বস্ত**-বর্ণ বিশিক্ত হুইয়া ত্রিপাদ : পুনরুফ্টিক স্থাবস্থ-বর্ণ স্থান আহার পর পরোক্ষিক্ চতুম্পাদ ও জিপাদ হয়। অমুক্ত প কোখাও জিপাদ হয়। বৃহতী, কগতীও অষ্টি এই তিন্দী যদি গংয়জীর

পুর্বের সধ্যে ও অত্তে হয় ওচের ভাষারা ক্রমে অভ অর্ক ও সূর্য্যবর্ণ হইয়া থাকে। তৃতীয় প্রা অন্যবিভীয়া কুদারিণী নামে বিখ্যাত। ক্লোক্ট্রে কলবল ও জীবা যদে বা বৃহতী। উপরিভাগে রহতী পুরোভাগে রহতী। কোথাও নববর্ণা কোথাও চভুবর্ণা, দিগ্বিদিকে অফীবর্ণা। জাগত (জগতীদম্বন্ধীয়) বর্ণদারা মহারহতী, তিন্টা ও শতযুক্তা হইয়া বৃহতী হয় ৷ সূৰ্য্য অৰ্কন্মউ নম্ট বর্ণদারা ভণ্ডিল পংক্তিছন্দ হয়। পুর্ববিষয় বিপ बीटकारम (बमयूक ७ मट्यूक इहेमा शर्फिः। পূর্বে প্রস্তার পংক্তি এবং প্রযুক্ত হইয়া মন্তাব পংক্তি এবং অকরপংক্তি পঞ্চারি ও আলে অল্লে দিত্য পঞ্চাবি ত্য় ৪ ছামক্ষেব পদ্পংকি হয়। গায়লী সম্বনীয় ছয় ও পঞ্চাকর ও ছয়বর্ণছারা জগতী হয়। একদারা ত্রিফুভ জ্যোতিখভী ও জগভী কথিত হইয়া থাকে। পুরোভাগে, প্রথমে ৭ মধ্যে জ্যোতিঃ, মধা হ'চতে উপরিভাগে জোডি: অভাহটতে এচে ও প্রধান শরুমতী ছলঃ ও ধট্কে ককুলা গ্ৰীছলঃ হয়। ত্ৰিপাদ শিশু-মধ্যা তাহাট পিপীলিক স্থামা ্যংমধ্যা বিপরীতা একদাৰা বৰ্দ্ধিতা তিহিৎ হয়৷ অধিক এক দাবা হীনা ও বিহানা ভূমিজা এবং মুই মারা অধিকা इहेशा खनाउँ अ देननकानि इहेटल मन्पिक हर। আদিপ দ হইতে দেবতাক্রমে ছল্দের নিশ্চয় হয়। व्यक्ति, मुर्वर, भागी, बूहक्लांड, वक्तन, इस्त निश्चरनव-श्रम इत्मत (प्रवर्धा। यक्ष, त्र, शाकात मधाम, পঞ্চম ধৈণত ও নিধাদ এই সপ্তপ্ৰকার ছল্মের স্বর গাঁষত্রী আদি ছম্দোগণের বর্ণ, খেত, সারস্ (কুবরির) পিদল, কুঞা, নাল, লোছিত ও গৌর। কুতি ক্লোগণ গোরোচনামা,বেলাতি শহলঃ খামল বর্ণ। অগ্নি, বৈশ্য, কাশ্যপ, গৌতম, আলিয়স,

ভার্শব, কৌশি চ, বাশিষ্ঠ, ক্রমামুসারে এই সকল ছন্দোগণের গোত্র জানিবে-।

> ইভাগ্নের আদিম্থাপুনারে জলংশার নানক উন্নত্ত বিংশদ্ধিক্ষিপ্তত্ম অধ্যায়।

চত্বারিংশদ্ধিকত্রিশতত্য অধ্যায়

চন্দোজাতি নিরূপণ।

ত্রা কহিনেন উৎকৃতিঃ চতুঃশত, উৎকৃতি ছলত চাৰি পৰিভাগে ব বিলে অভিদংব্যা প্ৰতি-ফুতি হয়, সেই ছন্দ্যেকল পুথক্। কৃতি, ঋতি-ধুতি ইছাকা অতাষ্টি, অষ্টি, অতিশৰ্কণী, শক্রী, অতিজগতী, জণতী ইহারা রতি এবং দৌকিক। ত্রিট্ভ হইতে খাবভ করিয়া ত্রিট্ভ পংকি রহনী, অফুন্ট্প উঞ্জিক্ ইছারা আর্ঘাছন্দঃ। গ্যত্রী, ভাগতিতা, প্রতিষ্ঠা, মধা, অত্যক্তা, অহ্যক্ত আদি ইহাল পুৰ্বৰ পূৰ্বৰ হটতে এক এক অক্ষর বহিন্ত। চারিভাগে একপাদ বাচবণ হয়, এক্ষরে গণ্ডদাঃ প্রদর্শিত হইতেছে। এই চারি-প্রকার মাত্রাগ্রাদকল আদিওক মধ্যগুরু ও মন্ত-खक ७ मर्न्स छ कर इंटरम हा ति श्रकात, अडे भग भें। ही হয় যথা একটা ত্রুহক্ষরে ভূটমাতা একটা লঘু-**এইগণ আর্য্যাছিলে** অকাৰে একমাতা হয়। बावका इया अकर्ग वार्गानका करिए कि; আধ্যার প্রথমার্দ্ধের প্রথমচবলে ভিনগণ অর্থাৎ দাদশমাত্রা এবং দ্বিতীয়চ>ণে অন্তীদশমাত্রা অর্ণাং म अर्थन । ६ अरु श्रे स्मान्य भाकित्व, देशंत विषम् গণ্দকলে অর্থাৎ প্রথমে তৃতীয়ে পঞ্চমে ও দপ্তমে क शन वर्षीर मधाक्षकशंग थाकिटा न। ষষ্ঠগৰ জ্বপৰ জ্বিভীয়াদি পদে নগৰ ও একলছু অক্সাং, পাকিষে ৷ স্থাম অতে প্রথমা, বিতীয়ে

'ड गक्ष्य नगर 'ड अकनच् कर्ष क्षयानि शन उ यर्ष अकलपु रहेरत। जिनगरण अकलाम । एणय-भारत शक शकतम माजा हरूर हेबाहे विश्वता। যথায় আহ্যার উভয়ার্জের দিতীয় ও চতুর্থগণ নধ্য-গুরু শর্বাৎ ছুই জগশ্যুক্ত হয়, ডাহাই চপলা আর্যা। যে আর্যার পৃকার্দ্ধে ছিতীয় ও চতুর্থগণ চপলাবৎ अधीर जनगद्दा रुव भाषा द्वा भाषा द्वा কথিত অ্য্যারন্যায় ভাদশ ও পঞ্দশ মাতা হয়। তাহাকে মুখ চপলা কছে। যে আর্য্যা প্রথমার্দ্ধ পূর্ব্বক কথিত আর্য্যার ন্যায় এবং দিতীয়ার্দ্ধ চপলা তুল্য হয় তাহাকে জঘন্য চপলা কছে। অর্থাৎ পশ্চার্দ্ধে চপলা এই হেতু উহার নাম জঘন চপলা। যে আর্যার উভয়ার্ছই চপলালকণ ভলনা করে তাহার অর্জভাগ গীত ও অর্জ্জাগ বাল্যেবনায় প্রতীষ্মানা হয় উহার নাম মহা-চপলা। আর্যার উভ্যার্কভুল্য, অর্থাৎ উভ্যার্কে ত্রিংশং মাত্র। হইলেই তাহাকে গীতিছন্দঃ কহে। বৈতালীয় ছলের অযুক্ মর্থাৎ প্রথম ও তৃতীয়-भारि यहेकला ও সমে দ্বিতীয **ও চতু**र्यभारि अर्थे-মাত্রা হয়, দেই মাত্রাদকল ছিডীয় ও চতুর্থপানে বিশদ্শ হয় ৷ ঐ ছ্যমাত্রার পর রগণ ও এক লঘূ ও এক জুক হইলে উপজ্জা সক্তৃদ্ধ হয়। যাহার প্রতিচন্দে যোড়ধ্যাতা ও নক্ষমাতা ওর হয়, একচবণের শেষাক্ষরের সহিত্ত অপরচরণের মিল থাকে, তাহাতে একটা ও মধ্যগুরু অর্থাৎ জগণ থাকে না। অযুক্ত অফক মাত্রা সমান। বম ও ল্ঘু বা খাদশ হইলে নবাসিকা হয় ৷ পঞ্ম e अके विट्यांक, हिखा नवमक हत ;'भरयूक হইলে উপচিত্রা পাদাকুলক হয়। গীভার্য্যার লোপে সোমা, পুর্বে লঘু হইলে স্পেতি: কথি 5 হয়। অৰ্ভাগ বিপৰ্যন্তে হইলে শিখা বা তুলিকা। इस् । ७ कान जिःभः बाजात शत श्रस चक्रत इस्त जनम्मावना इत् । मःशावर्ग श्रमनिर्वात टर्जू छज्दै अक श्रम हैंग्रै।

ইভাবেরে কাৰিবহাপুরাণে ছলেভাতি নিজপণ নামক চ্ডারিংশক্ষিকতিশক্তম ক্ষায়ার।

একচত্বারিংশদ্ধিকত্রিশতত্য অধ্যায়।

বিষম কথন ৷

अधि कहिरलन, बृङ, नम, अर्क्षनम ও विवय এই ভিন প্রকার। যাহার চারি পদেই তুল্য তুল্য অক্র থাকে ভাহার নাম সম : যাছার প্রথম ও তৃতীয় পালে এবং ভিতীয় ও চতুর্থপাদে সমান সমান অক্র থাকে ভাহার নাম অর্জসম। চরণের প্রত্যেকেই যাহার অসদৃশ অঞ্চর থাকে ভাহাকে বিষমর্ভ কছে। অভিরন্ত স্কল সম ও অসম হয়। লওগ ইহার চারিটী লইলে প্রমাণিকা इन्तः थे क्रुवेंगित चनाया ब्रहेल विकानक इता। যদি দ্বিতীয় ও চতুর্থদলে মগপণ ও চতুর্থ আকর इरेट यि सभाष थाटक छटन व्यक्त नामक विषम्बृत হয়। বক্তের বিতীয় ও চতুর্থপাদের চতুর্থ অক-(बब পর জগণ(মধ্যগুরু) থাকিলে পথ্যাবস্তুম হয়। পথার মুখ পাদের বিপরীত নাদ ছইলে চপলা. मिहे भिरे भेरित मक्लहे ७ युधाभामत मुखासत অন্তথা হইলে বিপুলাগণ দল্ম নগণ ও নগণ প্রভেদে ষ্ঠাকে প্রকার বিপুলা হয়। **अम मकत्न हात्र-**পদের পর চারি বৃদ্ধি করিলে ভাষাকে বজুজাভি কংছ। অন্তে গুৰুষয় থাকিলে অংগীত গল আছিতে থাকিলে প্রভ্যাপীড় হয়। প্রথমের বিপর্যায়ে ক্রমে মঞ্জরী লবণী ও অমৃত ধারা হয়: একণে উলসতা বলিতেছি। यां हात्र क्षाच्य भारत म. क. म. ल

গণ; বিভীয়পাদে ন, দ, জ ও গ, গণ; ছতীয়
দলে ভন ভগ গণ; চতুর্বদলে স, জ, স, জ, গ
গণ থাকে তাহাকে উলগতা কছে। উলগতার
চতুর্থ চরণে রন ভগপণ থাকিলে সৌরভক হয়।
যাহার তৃতীর চরণে তৃই নগণ ও ছই দ গণ
থাকে ও অপর চরণ সকল উলগতার সমান,
তাহাকে ললিত কছে। প্রথমচরণের আদিতে ন,
ম গণ থাকিলে উপস্থিত এবং জনগণ থাকিলে
প্রচুপিত কছে। গ গ য মল জ র গ দ ম ন গ র
জ ব চররিপদে এম সকল গণ থাকিলে অর্থমান,
এবং ন, দ, দ, র, ন, দ, ভ জ র এই সকল গণ
থাকিলে ভদ্ধ বিরাট্ আর্যাধ্য ছন্দঃ হয়। তৎপরে অর্থ সমর্ভ কথিত হইতেছে।

ইত্যায়েরে আদিমহাপুনাণে নিব্ম কথন নামক একচডারিংশদধিক্তিশত্তম অধ্যায় ৷

দ্বিচত্বারিংশদধিকত্রিশতত্য অধ্যায়।

অর্জমমর্ভ কথন।

শায়ি কহিলেন, যদি প্রথম ও তৃতীয়চরণে

ম স ল গ গ ব এবং দিতীয় ও চতুর্থদলে ভ ভ
ভ গ গ গ ব থাকে। তাহা হইলে উপচিত্র নামক
শার্ক সময়ত্ত হয়। যদি প্রথমে ও তৃতীয়ে ত ত
ভ গ গ গ ব থাকে এবং দিতীয় ও চতুর্থেন ন জ
য় গ ব থাকে তবে ফেতমধা। ছাল হয়। য়দি
প্রথমে ও তৃতীয়ে স স স গ গ এবং দিতীয়ে ও
চতুর্থে ভ ভ গ গ গ ব থাকে তাহা হইলে বেগবতী ছালঃ হয়। যদি প্রথম ও তৃতীয়ে ত স ভ
গ গ ব এবং দিতীয় চতুর্থদলে স ম ল গ গ গ
থাকে তবে রাজবিস্তার নামক ছাল হয়। অয়ৢয়াপদে র ল স গ গ ও য়ৢয়পাদের ন ন গ গ গ ব
ধাকে তবে তাহাকে কেছুমতী বলে। অয়ুয়া ত

ভ জ পগ ও যুগে জ ভ জ গ গ গ ণ থাকিলে আখ্যানিকীছল হয়। অযুগে ত ভ জ য গ এবং যুগে ত ভ জ য গ এবং যুগে ত ভ জ গ গ গ ণ পাদিলে বিপরীতা-থ্যানিকী হয়। অমুগে স স স ল গ এবং যুগে ন ভ ভ র গ ণ থাকিলে ছরিণ ফরভাছল হয়। অমুগে অর্থাৎ প্রথম ও তৃতীয়পদে ন ন র ল গ, মুগে অর্থাৎ দিতীয় ও চতুর্থচরণে ন জ জ র গ ণ থাকিলে অপর বক্তুছলঃ হয়। বদি অযুগ্যদলে ন ন র য গ ণ এবং যুগদলে ন জ জ র গ গ ণ থাকে তবে পুল্পাতা নামক অর্জসমরত হয়। পুল্পাতাগ্রার আদিতে র জ য থাকিলে পণমতী ও জ র জ র গ থাকিলে শিথা হয়। অমুগ্রদলে অক্টাবিংশতি ন গ ভ গ ণ এবং যুগ্যদলে তিংশৎ ন গ গ ণ থাকিলে গলার প্র প্র বিপরীত থলা হয়। একণে সমরত্ব প্রদর্শিত হইতেছে।

ইভাবের অ দিমহাপুরাণে অন্ধ্যমর্ত্ত নামক নিচ্ছাবিংশদ্ধিক তিশ্ভতম অধ্যায়।

ত্রিচত্বারিংশদ্ধিকত্রিশত্তম অধ্যায়।

সমর্ভ নিরূপণ।

অগ্নি কহিলেন, বিচ্ছেদ অর্থাৎ জিহ্বার অভিনয়ত বিশ্রাম স্থানকে যতি কহে। যদি চারিপদের প্রত্যেকেই জ দ গগ গ খাকে, তাহা হইলে কুমার ললিতা, ত ত গগ গ ণ থাকিলে চিত্রপদাছলঃ হয়। ম ম গ গ গণে বিছুল্মালা, ভ ত ল গ স্তা, প্রতিপদে দ ম জ গ গ ণ থাকিলে শুদ্ধবিরাট্ছলঃ হয়। ম ল ব ম গণে পণব, জ জ গ গ গণে ময়্র সারিণী; ম ভ দ গ গণে ময়া, ন, জ, ম গ গণে ছারতগতি, ভ ম দ গ গণে কর্মবতী ছলঃ হয়। ত ত জ গ গ গণে

ইন্দ্রবজ্ঞা। যাহার প্রথম ও ড়ডীয়দরণ ইন্দ্রব<u>জ্</u>যর তুলা, বিতীয় ও চডুর্চরণ আদিল্যু এমন ইফ্র-বজা হয় অথবা মিশ্রিভভাবে থাকে ভাহাকে উপযাতি কছে। ভ ভ ভ গ গ খণে । सारक. म ভ ড গ গ গৰে শালিনী; চতুর্গ ও সপ্তম অক্ষরে শালিনী যতিবতী হয়। ম ভ ত গুগ গণে বাভোম্মী, মতন লগ গণে অমরী বিল্পিডা: র ন র ন গ গ ণ ঘটিত ছম্পের নাম রুখোদ্ধতা, উহার চতুর্থ ও সপ্তম অক্ষরে ষতি থাকে। র ন ভ গ গ গণে স্বাগতা, র জ র ল গ গণে ভোণী, ন জ গ গণে রমাছল: হয়। জগভীরতি বংশ-স্থবিল ছন্দ জ ত জ র গণে গঠিত। গণে ইক্রবংশা ও স স স স অর্থাৎ চারি স গণে তোটক, নভভরগণে জ্তেবিলম্ভি: নল্স য গণে অফান চতুর্থেরতি বিশিষ্ট হইয়া জীপুট. ज म क म गर्ग कनगं ि इन्तर इर । य य त त त गर्ग भक्तां किनी, न य नव गरंग कुञ्च विष्ठिता, न न त य চলাম্বিকা, চারিষকারে ভুত্তর প্রয়াত, চারিরকারে স্থানী: সজ্সস্গণে প্রামিতাকরা,মতস্ম গণে কান্ডোৎ পীড়া ম ম ষ য গণে গঠিত হইলে रिक्यापयी, नक कर भाग माल की इन्सः इर। প্রতিচরণে ন জ ভ য গণ থাকে তবে লগতী ছ ন্দঃ इया मन अ द न नर्ग निक इंडरल अहिमी, हैरांद्र ত্তীর ওদশম স্থলে বতি থাকে। জ ভ দ জ গ গণে গ্রথিতাও চতুর্থ ও নবমে যতিবতী হইয়া রুচিরা ছুন্দঃ হর। চতুর্থ ও নবমে যতি বিশিক্ত এবং ম ত য স্পু গণে গ্রন্থিত হইয়া মন্তময়ুর নামক ছন্দ: হয়। ननम्भ गाप (भीती: मडन म्यंत्र गाप অস্থাধা; নুনুর সুলুগুগুলে অপরাজিতা ইহার স্প্রস্থ্র অক্ষরে যভিবতী হইরা হরণ কলিকা; এবং তভ জ জ গ গ গণে এখিত অই ও ছয়

জক্ষে যতি বিশিষ্ট হইয়া বদস্ত তিলক বৃত্ত হয়; কেহ কেহ ইছাকে সিংহোদ্ধতা কহেন। ত ত গ গণে গ্রাধিত এবং সপ্ত ও ষড়ক্রে যতি বিশিষ্ট হইয়া চল্রিকা নাম্মী বৃত্তি হয়। অই ও স্প্তাক্ষরে যতি বিশিষ্ট এবং ন ন ন ন স গণে গঠিত হইয়া মণিগণ নিকর ছন্দ হয়। অফ সপ্ত ষতি বিশিষ্টা ৪ ন ন ম য য যুগ্ মালিনী, এবং ভার নান না গণে গঠিত এবং সপ্ত ও নৰ আৰুরে যতি যুক্ত হইয়াঝ্ৰড গছবিল দিত ছন্দ হয়। যঠও একাদশে যতি শালিনী, এশং যম ন দ ভ ল গ গণে এথিত হইয়া শিধরিণী নাম্মী বুক্তি হয়। অফটম নৰমে যতিবতী এবং জ স জ স য ল গ গণে গুক্ষিত হইযা পুধবী নালী বৃতি হয়। ইহা পুরাকালে পিঙ্গল নাগ কহিয়াছেন। দশন ও সপ্তমে যতি বিশিষ্ট এবং ভ ব ন ভ ন ল গ গণে গঠিত ছন্দের নাম বংশ পত্র পতিত। হয়, চাবি ও সপ্তাক্ষরে যতি বিশিষ্ট এবং ন্সুম্ব সূল গ গণ ছারা গঠিত হইলে হবিণী চন্দ এবং চারি, ছয ও স্থাক্রে ষ্ঠি বিশিষ্ট এবং মভ নৃত্ত গ গ গণে গঠিত হইলে মন্দাক্রান্তা চন্দঃ হয়। একান দশ স্থানে যতি কুলুমিত লতা বেল্লিডা ছম্দ হয়। দ্বাদশ ঊনবিংশতি যতি ও সাসজ সাত তাগ গণে গঠিত হইলে শাদিল বিক্ৰী ভূত চল হট্যা থাকে। কৃতি বুত্তি-স্থবদনা নাম্নী ছন্দঃ, সপ্তমে চতুদিশেও বিংশতিতে যতি বিশিষ্ট এবং মার ভানায়ভাল গ গণে গঠিত হয়। প্রতি সপ্তাক্ষর যতি এবং ম ব ভ ন্য য য গণে গুণফ চ হইলে অংশরা ছল হয়৷ দশমে ও লাবিংশ অকাৰ যতি যুকে এবং ভয়জান বন ন গ গণে গঠিত হইলে সমুদ্রক ছন্দ হয়৷ সাংখাললিতে ছদদ নেজ ভ জ ভ জ ভ ল গ বিরচিত অউমে ভ্রয়োদশে ও ভ্রযোবিংশতি অক্সরে

ষ্ঠি এবং মমত নন ন ল গ গুৰে তাৰিত हरेता महाक्रीए इन्तः ; अवः शक्य द्वानम ও हरू বিংশতি আকরে যতি,ওভ সনভ ভ নয় গৰে অথিত হইলে ভয়া নামক বুত হয়। পঞ্মদশ অফীদশ ও পঞ্চিংশতি অক্ষরে যন্তি বিশিষ্ট হট্যা ভ্ষতভেনননগগণে গ্ৰিভি ইইলে ক্ৰেঞ পদাছল: হইয়াথাকে। ভুঙ্গ বিজ্ঞিত মুম ত ন ন ন র শ ল গ পণে এবং অইম উনবিংশতি ও ষড়বিংশতি অক্ষরে যতি স্থাপনে বির্চিত। এই ছন্দের একাদশ ও সপ্তম স্থলে যতি পতিত रहेरल छेपरावाचा छन्दः दय । न छकाचा छ । ब्रह्मि প্ৰাতি ছাদ, নেনার র র র ব র র গণ ছারা। বিব্রিক্ত। অর্থবাধ্য রুতিন ঘ্য ও ন্যুব গণ ঘাবা এবং ব্যাল ন দ্বয় ও দশরগণ দারা এবং শীমৃত । ছন্দঃ ন ছয় ও একাদশবগুণ ছারা গ্রাথিত হট্যা থাকে। অবশিষ্ট রতি সমুপ্রচিত নামে ধ্যাত। অনন্তৰ গাখা প্ৰস্তাৰ কথিত হইদেছে।

> ই লাগেলেৰ আৰু দ্ৰহাপ গোলাৰ্থ নিৰূপৰ নাম্ব হিচায় বিশ্লবিদ্ৰিশ্লন হাৰ্যে।

চতুশ্চস্থারিংশদ্ধিকত্তিগতত্য অধ্যায়।

প্রস্থার নিরূপণ।

অগ্নি কহিলেন, ইহাতে চলংগদান হইযাছে।
চলের পাদদর্বগুরু হইলে গাথা হয়, প্রস্তারে
আদ্যোগাথন পরেরতুলা ও পূর্বগামী হয়। নাউরমধ্যে দম মজেন সমেঅর্দ্ধ ও বিঘমে গুরু হইবে।
আদ্য প্রতিলোমে গুণিত হ্য না। ছই উদ্দিউগ
ও একের উপনোদন কাবী হয়। সংখ্যা ছই এর
অর্দ্ধরেপে, শূন্য ও শূন্যে ছই কথিত হয়। তাবং
পরিসাণের অর্দ্ধাণে তেতবার গুণিতক, ও তাহার

শবে তুই ছুই ন্নে, মেরুপ্রস্তারে পরে পূর্ণ, পরে
্র্বিংব। নগ সংখ্যা ও রুত্রসংখ্যা অংরাজুলের
াধো অর্ক্রাণ ছুইতে এক ন্যুন বিশুণ সংখ্যা
ইবে। এই আমি ভোষাকে ছুন্দঃসার কহিলাম।

ইতাংগ্রেছে আনাধ্যকপৌ্বাবে প্রভাব নির্পণ নাসক চতুশুভাবিংশদ্ধিকজিশতভ্য অধ্যায়।

শঞ্চত্বারিংশদ্ধিকত্রিশতত্ম অধ্যায়।

শিক্ষানিরপণ।

অ'গ্র কহিলেন, শিক্ষাবর্ণন করিব। বর্ণ ত্রমন্তি বা চতুঃষ্টি। স্থববর্ণ একবিংশতি, স্পর্শ-ার্পঞ্বিংশতি। যাদিবর্থটা, সম চারি, অমু-বার ও বিদপেথি। ও পরান্মিত। প্রত ১কার চত্প্ট জানিবে। বর্গমুখে অর বলিয়া কথিত ও ্কার পঞ্মযুক্ত হয়। ঔরসা, অন্তান্ত্গণের-বহিত সংযুত হইযা কণ্ঠ হয়। আত্মবুদ্ধিরারা বলিতে ইচছা কবিলে তদর্থে মনঃসংযুক্ত হইলে, ানঃকায়ান্তিত অগ্নিকে আঘাত করে। সেই অগ্নি, গায়ুকে প্রেরণ করে। ঐ খারুত উরংস্থলে সঞ্চ-ণে করিয়া মন্ত্র ও স্বর উৎপাদন করে। প্রাতঃ-দ্বণ্যোগ গায়ত্রীছন্দঃ আশ্রেড কর্ণে মাধ্যন্দিন ্রুক, মধ্যমন্ত্রে ভাতুগামী হয় ৷ চতীয়দবন তার, শীর্ষণ্য জগভীর অমুগামী। তাহা উদীরিত ও দুর্দায় অভিহিত হটয়া বক্রতা প্রাপ্ত হটয়া মাতক বর্ণ সমুদায়কে উৎপাদিত করে। ভারাদের বিভাগ স্বর, কাল, স্থান, প্রয়ত্ত্ত অর্থপ্রদানাকু দারে পাঁচ প্রকার। উরঃ, কণ্ঠ্য, শিরঃ, জিহ্বা-मृत, ब्रस्ट, नामिका, ७कं, छालू धरे कार्येक्षकात বর্ণের উচ্চারণ স্থান। স্বভাব, বিবৃত্তি, শ, ধ, স, র, জিহ্বামূল ও উপ্ধা এই অফ্টপ্রকার উল্পার

গতি। পদ্য, ভাব সন্ধান, উকারাদি পর পদ্ এইরপ স্বরাম্ভ কানিবে। খ্বাল্ড উন্নার খন্য যাহা কিছু কুন্থান ছইতে উৎপন্ন হয়। তাহা দক্ষ হয়, নিশিত বা অশুদ্ধবৰ্ণ ভক্ষিত হয়। উক্ত-প্রকার উচ্চারণ তুই হুছান হইতে উৎপন্ন সরেদ ও সপদার্থ, স্থাক্ত ও অমুথে যাহা ত্রাহ্মণে ও রাজার প্রতিউচ্চারিত হইতে পারে, ভাহাই শুভকর উচ্চারণ। মানবগণ, করালমূর্ত্তি বা লম্বোষ্ঠ, অব্যক্ত, অমুনাদিক গদাদ ও বছজিহব ছইয়া বর্ণোচ্চারণ করিবে না। এরূপে বর্ণ প্রয়োগ করিবে, যাহাতে তাহা অব্যক্ত বা পীডিত মাহয়। যে নর, সমাক্রাপে বর্ণপ্রয়োগ করেন তিনি এক্ষলোকে পূজিত হন। উদাত, অসুদাত ও ধরিতভেদে ধর তিন প্রকার। হুসা, দীর্ঘ ও প্রত, এইদকল কালনিয়মাকুদারে হয়। হ কঠা, ই ঈ চবর্গ যাশ তালব্য, উ উ প্রর্গ ওঠিক, ঝ ৠ টণ্গ রম মুদ্ধনা। ৯ তবৰ্গল স मस्रापर्व ; कपर्य किस्तामृत, जासः इ व मरक्षेत्रं, এ ঐ কন্ঠ্য ভালবা, ও ও কন্ঠোন্ঠ্য বর্ণ অবস্তি করিবে। একার ও ঐ কার কণ্ঠের অভ্যাতা। অবোগবাহ অর্থাৎ : অনুসার ও বিদর্গ ইহার আশ্রেয় স্থান ভাগী। অচ্বর্ণ হলের অপুষ্ঠ অর্থাৎ হলের সাহায্য ব্যক্তিরেকেই উচ্চারিত হয়। প ণ ন ও ম ইহারা স্বরের সহিত ঈষ্ণ সংস্পৃষ্ট হয়, কিন্তু তাহারা ও হলবর্ণ অন্তংল সমস্তই স্পৃষ্ট। অর্থাং স্বরের সাহাগ্য লইখা প্রধানতঃ উচ্চারিত হয়। এথম্ অসুনাসিক। ক,র,হ সূহ নাদ বিশিষ্ট। পণ্য শ ইচারা ঈষরাদ। থকাদিরা খানী। স্বর ঈষৎখানী, ইহারা দীর্ঘ বলিয়া কথিত इय।

ইত্যারেষে আদিমহাপুরালে শিক্ষানিরূপণ নামক পঞ্চত্যবিংশ্বধিক্তিশতভ্তম অধ্যায় !

ষট্চত্বারিংশদধিকত্রিশতত্য অধ্যার।

কাব্যাদি লক্ষণ |

অগ্নি কহিলেন, অতঃপর আমি ডেমাকে कारा ७ नार्रेकामिश चलकात मनन रनिन । ध्रान, বর্পদ্বাক্ত এটসকলের নাম কার্য় ৷ শাস্ত্র ইতিহাস ও যাকা এই তিনটি ঐ বাধায়ে সমাপিত হয়। শাল্পে শব্দের প্রধানত্ব, ইতিহাসে নিষ্ঠতা বিদ্যমান আছে: অভিধাব প্রধানত্ব হেতু কাব্য ততুভয়ৰাবা ছুইপ্ৰকাৰে বিভিন্ন হয়। ইহলোকে নরত্লাভ তুর্লভ, নরত্লাভে ও বিদ্যালাভ তুর্লভ, বিদ্যালাভে ও কবিত্বলাভ চুর্লভ, কবিত্বলাভে ও কবিত্ব শক্তিলাভ চুলভ, শক্তিলাভে ও বূৎপত্তি-লাভ তুর্লভ, ব্যুৎপতিলাভে ও বিবেকলাভ স্তত্ন্ত্ র্নভ। অবিহান্ব্যক্তি সর্বশাস্ত্র অস্বেষণ করিলেও তাহা সিদ্ধ হয় না। বর্গমধ্যে আদা, দিতীয় ও চতুর্বর্ণ মহাপ্রাণ। বর্ণরুক্ট পদ, স্থবন্ত ও তিঃন্তভেদে তাহা চুইপ্রকার। সংক্ষেপহেতু ইফীর্থব্যবচ্ছিলা পদাবলীই বাকা, অর্থাৎ অভি-লয়িত সংক্ষিপ্তার্থ ধারিণী পদাবলিই বাক্য। অল-স্বারযুক্ত গুণবিশিষ্ট ও দোষবর্দ্দিত বাক্য সমূহই कांगा। (तम ७ लाककार्यात स्यानि धरः छेहा সিদ্ধিবি শিষ্ট নাদ যোনিজ জানিবে। দেবাদি-গণের সংস্কৃত এবং নরগণের ত্রিবিধ প্রাকৃত ভাষা স্ত্রপদ্ধ আছে। গদ্য প্র সিল্লভেদে কার্যাদি তিনপ্রকার। পদহীন অর্থাৎ পদ্যাদির নায চরণ্ঠীন পদসন্তান (পদবিস্তার) গ্রা शास्त्र विवत्त वर्गन कतिराजीह । हुर्गक, छर-কলিকা ও রুত্গন্ধিভেদে গদ্য ভিনপ্রকার। অল্লাল্ল সমাস্বিশিক্ট অকঠোরাক্র সম্পর্ভই চুর্ণক নামে প্রশিদ্ধ। দীর্ঘদমাদাতা দৃঢ়াকর গদাই উৎকলিকা

অনতি কুৎদিৎ বিগ্রহ্বিশিকী বুভচ্ছায়া সুম্যিত উৎকট গদ্য ই বৃত্তগদ্ধি। স্পাধ্যাধিকা, কথা, খণ্ড कथा, পরিকথা ও কথানিকাভেদে গদ্যকাব্য পাঁচ প্রকার। যাহাতে গদ্যছন্দে কর্ত্তবংশের প্রশংস এবং যাহাতে কম্মাহরণ সংগ্রামে বিপ্রকল্প বিপরি প্রভৃতি বিস্তুতরূপে বর্ণিত আছে, যাহাতে রীতি वृक्ति ও ध्ववर्डि मभूनांत धनीश्वकरण विनामान ষাহাতে উচ্ছাদদ।রা পরিচ্ছেদ এবং যাহাতে চূর্ণব বক্তা ও অপরবস্তা প্রভৃতি ছন্দঃস্কল বিদ্যুষা আছে তাহাকে সাখায়িকা কহে। গাহাকে কি লোকঘারা সংক্ষেপে নিজবংশ বর্ণনা করেন যাহাতে মুখ্যার্থের অবভারণার্থ কথান্তর বর্ণিত হয যাহাতে পরিচেছদ নাই অথকা কোথাও বস্তুকদাব পরিচেছদ হয়, ভাহার নাম কথা। সেই কথার গর্ভে চতুষ্পদী বিরচিত হইলে খণ্ডকথ। হয়। খণ্ড কথা ও পরিকথা এ উভবের মধ্যে অমাত্য, সাথ অথবা দ্বিজ নায়ক জানিবে, ভাহাতে ককণ : চারিপ্রকার বিপ্রলম্ভ বিদামান ও তাছাদেং সমাপ্তি না হইষা কথার অনুধাবন কবিবে এই রূপে কথা ও আখ্যায়িকাব যে মিশ্রভাব ভাহাই পরিকথা। ভয়ন্তর প্রাহারগর্ভে ককণ রসনিহিত এবং অস্তভাগে স্বিন্যস্ত অন্তত রসেব অবতারণ আছে এবং যাহা উদাতা নয়, তাহাব নাম কথানিকা। চতুষ্পদীর নাম পদ্য, রুত ও জাতিভেদে তাহ। সুইপ্রকার। অকর দংখ্যায যাহা নিবদ্ধ তাহাকে রুত করে। উহা উক্থ এবং কৃতিশেষজ কাশ্যপ মুনি কহেন যে, যাহা মাত্রা গণনায় নিবন্ধ ভাছাই জাতি। শিঙ্গণমতে সম্ শর্জসম ও বিষমভেদে বৃত্ত তিন প্রকার। গভীব **কাব্যসাগর পরিভিতী মনুষ্গণের পক্ষে সেই** বিদ্যাই (ছন্দ:অকার) মেকিশ্বরপ।

কলপে, পর্যাবন্ধ, বিশেষক, কুলক, মৃক্তক ও Cकार, धरे गकन भग्नमस्य यद स्य । महाकारा नर्भवादा वस्, मःक्रुड काशाय छेशांत कात्रस इत । উহা তৎস্ক্রপত্ব পরিভ্যাপ করে না। শতিদূষণ বৰ্জিভ। ইতি হাসোথিত অথবা অন্য সংকশার অবলম্বনে সহাকাব্য বির্চিত হয়। মহা-কাব্যের রচনা শক্কী অভিজগতা, অভিশুক্কী, ত্রিষ্ট ভূ এবং পুষ্পিতাগ্রাদি অর্জনম রুভ্রারা এবং वक्तांनि बाता ও बाताहत नानाविश नमत्र बाता অথিত হইবে। মুক্তা বিভিন্ন বৃত্তান্ত জানিবে। সহাকাব্যের দর্গ অভ্যন্ত দংক্ষিপ্ত হইবে না। অভি শৰু বিকা ও অষ্টি ৰাবা এক সংকীৰ্ণক প্ৰথম মাত্ৰা ছারা ও অপর দর্গ ও প্রাশস্তা বিষয়ে প্রিচম দর্গ বিরচিত হইবে। কল্প (বিকল্প) ভাষাতে অভি-নিন্দিত, উহাতে সজ্জনগণের বিশেষ আদর নাই। নগর, অর্ণন, শৈল, ঋতু, চক্র, অর্ক, আঞ্চম, পাদপ উল্যান স্থিত ফ্রিড়া, মধুপান,রভোৎস্ব, দুভীবচন বিন্যাস, ঋণার অভুত চরিত, ঋশ্বকার স্মারণ, রতি সম্পুক্ত অন্যান্য নানাবিধ বিভাব, এই সকল বিষয় মহাকব্য মধ্যে নিহিত থাকিবে। উহা সর্ব্ব-প্রকার ব্রভাবাদি ও সর্ববিধ রীতি রুদে পরি-भूके **७ म**र्सिविध छन विष्ट्रवरन विष्ट्रविष्ठ इट्टेरिय। পূর্ব্বোক্ত বিষয় সকল বিদ্যমান থাকিলেই মহা-কাব্য হয়। মহাকাব্য কঠে। মহাক্ৰি হ্ন। ইহাতে वां हेन शूरगुत्र क्षांथाना थाकिरमं द्रम की विक খাকিবে। পৃথক্ প্রয়ত্নিক্পাদিক বা ব্রিক্নায় त्रगांवलक्षतः कांगारम्ह निर्मिष्ठ हरिय। नाहिका वाता मन्नपूर्वताटल याचाउ इहेटल हेश बाता प्रकृत বর্গ কলপ্রাপ্তি হয়। সমানর্ভি সম্বন্ধ, কেশিকী হতি কোমল (মাদিরস সময় বৃতি হেভুক কোমল) कनांश (पृथ्नामि) ध्वाम, शृक्वतांशामि त्रमंख धारिः।

পুরাণ। ০ব ত্রু জিলা তেত্ত ক্রিক কর বিষয় সংস্কৃত ও প্রাকৃত ভাষা: বিশেষরূপে বর্ণিভ থাকিবে। অনেক ল্লোক হার। কুলক হয়, এবং তাহাই দন্দামিতক জানিবে। সক্ষনগণের চমৎকারকারক এক এক প্রোক্তের নাম মুক্তক। কবিদিংহগণের হুন্দরী শোভনোক্তি সম্মিত অপরিচ্ছ কোষ, বিদয় জনের ক্লচিক্র। শাভাগ ও উপনাশক্তি বিদ্যমান থাকিবে। ভিন ভিন বৃত্তি থাকিলে নিজা নামে খ্যাত হয়; ইহাই প্রকীর্ণ। প্রকীর্ণ তুই প্রকার; প্রাব্য ও অভিনেয়। সকলোক্তি ছারা প্রকীর্ণ হয়।

TRAISHINA OFF

रेक्सरपटा चानिमहासूताल चनकाल कावानिनक्षण नामक यप्टेश्वादिश्वनिक्षिण्डाक्ष्य व्यथात् ।

সপ্তচন্ধারিংশদধিকত্রিশততম অধ্যায়।

নাটক নিরূপণ।

শাম কহিলেন, নাটক, প্রকরণ, ডিম, ঈহামুগ, ममदकांत्र, व्यष्टमन, वारियान, जान, वीशी, ज्यक, ত্রোটক এবং নাটিয়া, সট্টক, শিল্পক, বিশাসিকা, হুৰ্মল্লিকা প্ৰস্থান, ভাণিকা, ভাণী, গোষ্ঠী, হল্লীশক, কাব্য, জীনিগদিত, নাট্যরাসক, রাসক, উল্লাপ্যক, প্রেক্ষণ, এই সপ্তবিংশতি প্রকার ভভিনেয়ের রূপক। সামান ও বিশেষ ক্রুবের এই ছুইপ্রকার গতি। দামান্ত স্ক্ৰিবিহয়ে বৰ্ডমান, বিশেষ কোথাও প্রবর্তিত হয়। পূর্ববঙ্গ নিবৃত इरेल, प्रम ७ काम अरे डेड्स, तम,काव, विकाय, অমুভাষ, অভিনয়, সহছিতি, এই সকল সর্বা-ত্ৰই উপদৰ্শন করে বলিয়া ইহার। সামাজ। অবসর অমুসায়ে বিশেষ এবং পূর্বেই সামাক যজব্য। প্ৰিভগণ কছেন, নাট্য, সকল ত্রিবর্গের সাধন। পূর্ববরসাদি তাহার

ইভিকর্তব্যতা যথাবিধি সম্পাদ্য, পূর্বব্যঞ্জ नाम्मीमूथांकि वाजिः भंद वजा। '(प्रवेश ७ छत्र-গণের নমস্কার ও স্তুতি এবং গো প্রাহ্মণ দূপা-দির আশীর্কাদাদি সংগীত হয়। নান্দ্যতে সূত্রধর রূপক করিরা, গুরু পূর্বক্রে বংশপ্রশংগাও কবির পৌরুষ কীর্ত্তন করে। 'কাব্যের সম্বন্ধ ও অর্থ এই পঞ্চপ্রকার নির্দেশ করিবে। যাহাতে নটা বা বিদূষক, অথবা পারিপার্শিক, ইহারা মিলিভ ভাবে স্বকার্য্যোথিভ, প্রস্তার্থের দুরী-কারক মানাহরবাক্য সমূহছারা সূত্রখারের সহিত দংলাপ করে, বুধগণ ভাতাকৈ আমুধ বা প্রস্তাবনা কছেন। অ'মুখের, প্রবৃত্তক, ক্রপোদ্যতে, ও প্রযোগাতিশয় এই তিনপ্রকার ভেদ, বীজাংশ-সকল হইতে উৎপন্ন হয়। বাহাতে সূত্রধার উপস্থিত কালাবলম্বনে বর্ণনা করে, পাত্রের সেই আজায় ও প্রবেশকে ধারুত্ত কলে। যাহাতে সূত্রধারের বাক্য বা বাক্যার্থ গ্রহণ করিয়া পাত্র প্রবেশ করে, ভাহার নাম কথোদবাত। যাহাতে সূত্রধার প্রবোগদমূহে প্রয়োগ বর্ণনা করে এবং তদমুদারে পাত্র প্রবিষ্ট হ্য ডাহাকে প্রয়োগাতি শয় কহে। ইতিবৃত্তই নাটকাদির শরীর বলিয়া অভিহিত হয়। দিদ্ধ ও উৎপ্রেক্ষিত এই চুই-প্রকার ইতিহাসের প্রভেদ ; তন্মধ্যে আগমদৃষ্টই সিদ্ধ এবং যাহা কবিকর্তৃক স্থট ভাষাই উৎ-প্রেক্তি। বাজ, বিন্দু, পত্কো প্রকরী ও কার্যা এই পঞ্ একুভি (প্রয়োজন সিদ্ধি হেতু) যথাবিধি যোজনা করিবে। ঐ পঞ্চ প্রকৃতিকে পঞ্চ চেক্টাও কহে। প্রারম্ভ, প্রয়ন্ত, প্রাপ্তি, সন্তার ও নিয়মিতা ফলপ্রাপ্তি এই পাঁচপ্রবার ফলযোগ। মুখ, প্রতি-মুখ, গর্ভ, বিমর্ঘ, নির্বহণ এই পঞ্চলকার দক্ষি। অল্লমাত্র উদ্দিট হইয়া যাহা বত্রণে প্রস্পু ও

যাহা কলে অবসান পায় তাহাকে বীজ কছে।
যেথানে নানাপ্রকার অর্থ ও রগ ছইতে বীজের
উৎপত্তি হয় এবং তাহা কাব্যে শনীরামুগতরূপে
বিদানান থাকে তাহাই মুখ বলিয়া কীর্তিত হয়।
ইফ্টার্থের রচনা, রফারজের অনুপক্ষর, প্ররোগের
রাগ প্রাপ্তি ওফোর সোপান, আকর্ষ্য আখ্যান,
প্রকাশের প্রকাশ, যাধাতে এই সকল বিদ্যানান,
অস্তান নরেরজায় ভাষা প্রেষ্ঠ কাব্য হয় না।
নেশ কাল ব্যতিরেকে কোনও ইতির্ভ সংঘটিত
হয় না, অতএব সেই উভয়ের উপাদান নিয়মে
পদ (বস্তা) উক্ত হয়। দেশ দমূহের মধ্যে ভারত
বর্য, কালমধ্যে সত্যমুগত্রেয়। নাট্যে দেশকালভেদে
প্রাণধারিগণের কোপাও কোথাও তথ তুঃথেব
উদয় হয়। স্বর্গে স্বর্গাদিবার্তা বন্ধন করিলে
তাহাতে প্রবণের সন্থাবনা নাই।

ই ভাংগেগের আদিমহাপুরাংগ নাটক নিরূপণ নামক সংচহা<িদ্ধিকভিশ্তভ্য অধ্যায় ।

অফ্টচম্বারিংশদ্ধিকত্রিশত্তম অধ্যায়।

শৃঙ্গারাদি রস্মিরূপণ।

গ অগ্নি কহিলেন, যিনি সনাতন, অভ, বিভু,
অক্ষর, পরমত্রকা, বেদান্তে বাঁহাকে ভ্যোতিঃস্বরূপ
অদিতীয় ঈশ্বর কহেন, তাঁহার সহজ আনন্দ কথনও
পরিবাক্ত হয়। তৈতক্রের চমংকার রস্নামে সেই
আনন্দ প্রকাশ পায়। তাহার আদ্যুবিকাব অহ
কার শব্দে অভিহিত হয়। তাহা হইতে অভিমান,
তাহাতেই এই ত্রিভুবন সমাপ্ত হইরাছে। ঐ
অভিমান হইতে রতির উৎপত্তি, ঐ রতি পরি
পোষৰ প্রাপ্ত হইয়া ব্যভিচারাদি সামান্তে শ্রাব

অক্তান্ত অনেকপ্রকার ভাষার প্রভেদ। ুসেই প্রভেদ সকল পরমান্ত্রার সন্তামিগুণসগ হইছে উৎ-পদ্ম হইয়া আ আ নিষ্ঠ বিশেষোধিত পরিপোরণন হারা ভিদ্ম ভিদ্ম আ অকশাক্রান্ত হয়।

রতি হইজে শুকার, তৈক্ষ হইতে রেজি, লর-केंग्र इरेट्ड बीह, मह्हाठ हरेटड बीजरम, ध्वर শৃঙ্গার হইতে হাস্থারি হইতে করুণরস্থীর হইতে অভূত এবং শীভংগ হইতে ভয়ানক রসের উৎপত্তি হইয়া থাকে: শুক্লার, হাস্থা, করুণ, রেদ্রি, বীর, ভয়ানক, বীভংগ, অন্ত ও শাস্ত এই নয়প্রকাররস ভূমধ্যে শৃঙ্কার, রৌজ, বীর ও বীভ-ৎস এই চারিরস স্বভাব হইতে উৎপন্ন। দান ব্যভিরেকে লক্ষ্মী যেমন শোভা প্রাপ্ত হন না, সেইরূপ রস্বাতিরেকে বাশ্ব ও বিরাজ্যান। হয়েন না। অপার কাব্যসংসারে কবিই প্রজাপতিস্বরূপ, বিধের অভিয়েচি অমুদাবে ইহার পরিবর্তন ও ঘটিয়া থাকে। কবি যদি কাব্যে শুঙ্গাবী হন, তাহা হইলে এই জলৎ রদময় ছইযা উঠে। কবি যদি বীভৱাগ হন, ভাগা হইলে এই জগৎ নীবদরূপে প্রকাশিত হইতে থাকে। রস, ভাব-शीन ख छात. तमहोन कथनहे हम्र ना ; तम मक्लारक ভাবিত কবে বলিখঃ ভাব, রসের সহিত এবং রস কর্ত্ব উৎপাদিত হয় বলিয়া রদ ভাবের দহিত নিত্য দলদ্ধ রহিয়াছে। রতি আদি অফ প্রকার স্থায়িভাব; ক্তম্ভ মাদি ব্যভিচারি ভাব। মনের অনুকৃলে হথের অনুভবই রতি। হর্ষাদি স্বারা মানদের বিকাশের নাম হাস। বিচিত্রাদি দর্শন িছেত্র চিত্রের যে বৈক্লণ্য তাহা ভয় **কচে**। নৌর্ভাগা বাহিপদাথের নিন্দাই জুগুপা অভিশ যার্থ দর্শন হেডু চিতের যে বিস্তৃতি ভাষারই নাম বিশায়। সত্ত্রত্ত ও ত্র হটতে স্তম্ভাদি অ্যা-

বিধ সাত্মিক ভাব উৎপদ হয়। Aভররাগাদি দারা প্ৰতিংত হটুয়া চেফার যে প্ৰতীবাত, ভাৰার নাম স্তম্ভ। প্রান্যাগাদি দারা অন্ত:কোড উপস্থিত **হইলে দেহে যে জল উদগত হয়, তাহার নাম टबन । इवीनि बाजा ८**नटरत छेळ्याटनत साथ भूल-Cकानन्य। इसीनि कना वा ग्रम ও क्यापि घाडा यस ८७म रुष । देखेकशानि घाता मरनुत रेवक्रवाटक শোক কহে। প্রতিকৃলাচারির প্রতি বে তৈক্ষ প্রবোৰ ভাহার নাম ক্রোধ। পুরুষার্থ সমাপ্তির নিমিত মান্দিক উল্যোগই উৎসাহ। সংক্ষোভ হেতুক যে উভত্ত তাহাকে বেপথু কছে। বিধাদাদিজাত যে কান্তি বিপর্যয় ভাছার নাম বৈৰণ্য। ছঃখাননাদি জাত যে নেত্ৰজল ভাষার নাম অশ্রু। লজ্ফানিদারা ইন্দ্রিয়গধের অস্তমিত ভাব ভাহার নাম প্রলয। বৈরাগ্যাদিরারা যে यनश्रयम छाराज नाय निर्द्यम । यनः नीषा मिकाक যে অবসাদ তাহার নাম শরীরজা গ্রানি। শকা ও অনিষ্টাগ্যের উৎপ্রেক্ষা হেতৃক অসুয়ার নাম মৎসর । মদিরাদির উপভোগজন্ম যে মনঃসন্মোহন তাহাকে মদ কছে। ক্রিয়ার আতিশয়্য জন্ম অন্তঃ-শবীরোথ যে ক্রম তাহার নাম প্রম। শুঙ্গাবাদি ক্রিয়ারপ্রতি চিত্রের যে খেষ তাহাকে আলফা কহে। সত্ত হইতে অপভ্ৰংশ ও চিন্তাৰ্থের পরিভাৰ নইদৈগ্য। ইতি কর্ত্তবাতাব উপায়াদর্শনকে মোহ কৰে। অমুভূত বস্তুর প্রতিবিশ্বনের নাম শ্বভি। তত্ত্বানোপনাত অর্থপবিচেছদকে মতি কহে। জীড়াতুরাগাদি জাত চিত্রের যে কুপিডভাব ভাহার নাম সংকোচ। চপলতার নাম অবৈথ্য এবং চিত্ত প্রসন্নতাব নাম হর্ব। প্রতীকাবই আবেশ ও আত্মার বিধুবতাই শয়। কর্ত্তবো যে প্রতিভা ख:म **खारा**कि कस्का करहा वेकेथांथ (रक्

সম্বর্ধিত সম্পাদের অন্থান ই ধৃতি। অপরে অবজ্ঞা প্রংসর আত্মার উৎকর্ষ ভাবনাকে গর্কি কৰে। অভীক বস্তুতে দৈনাদির বিবাহের ন'ম বিবাদ। ঈশ্বিতার্থ প্রাপ্তের বাসনায় ভরলা ছিভির নাম উৎক্ষা। চিত ও ইন্দ্রিয়গণের তৈমিজ্য হেতৃক অচলা অবন্ধিতিকে অপস্থার করে। বৃদ্ধি বাধাদি নিমতিক ভরের নাম জাস। এবং চিত চমংকৃতিই বীশা। জোধের অপ্রশমনই অমর্থ এবং চৈতন্যোলয়ই প্রবোধ। ইন্ধিতাক্যানাদির শুপ্তিকে অবহিলা এবং রোধবলে শুক্তবাস্থাদির শুপ্তিকে অবহিলা এবং রোধবলে শুক্তবাস্থাদির শুপ্তিক এবং মনাই বিতর্ক এবং মনো দেহের অবগ্রহই ব্যাধি। মদনাদি ঘার। অনিবন্ধ প্রলাপাদিই উন্মাদ। ভক্তানাদি ঘার। অনিবন্ধ প্রলাপাদিই উন্মাদ। ভক্তানাদি ঘার। চিত্রের ক্ষার ভাবকে পর্য শ্ম কহে।

কাব্যাদিতে ভাব ও রস যোজনা করা কবিদিগের কর্ত্ব্য। যাছাতে রত্যাদি বিভাবিত হয়
এবং যংকর্ত্ত্র বিভাবিত হয় তাহার নান বিভাব;
বিভাব আশ্বন ও উদ্দীপন ভেদে হইপ্রকার।
শাহাকে অবলম্বন করিয়া নত্যাদি হয় তাহাকে
ভালম্বন বিভাব উহানায় কাদি হইতে উৎপর্ম
হয়। এবং যংকর্ত্ক রত্যাদির উদ্দীপন হয়
তাহাকে উদ্দীপন বিভাব বলে।

ধীরোণাত ধীরোছত, ধারললিত, ধারপ্রশাস্ত এই চতুর্বিধ কাব্যের নায়ক। অনুকূল, দক্ষিণ, শঠ ও ধৃষ্ট এই চারি প্রকার নায়ক ও প্রবর্তিত হয়। পীঠমর্দ্দ, বিট ও বিদ্যুক ইছারা শৃকারে নর্ম্মন চব এবং নায়কের অনুনায়ক। পীঠমর্দ্দ, নায়কের দম্মল অর্থাৎ কুলিত স্ত্রীপ্রসাদক। তম্বশাস শ্রীমান্ বিট কামুকনায়কের অনুচর। বৈহৃদিক্রে বিদ্যুক কহে। নায়ক নায়িকা অন্টপ্রকার; মুকীয়া, পরকীয়া, পুন্তু, কোশিকা, সামান্য পুন্

नर्ज् हेन्डामि (केटन माधिका बङ्ग्यकात । अर्गनथन বিভাবে বাহারা ভাষ সকলের উদ্দীপন করে **ভাষারাই উদ্দীপন বিভাব, ইহারা বিবিধ সংক্ষায়ে** খনস্থিত হয়। চভূঃষ্টি কলা কৰ্মাদ এবং পীভাবি मात्रा प्रदेशकातः। देशामतः चुक्तिः कृद्य धावर হালোপহারকই থেবে আক্ষন বিশ্বাবের সমৃত্তি শংক্ষত ভাব **দারা মনোবাক্ বৃদ্ধি ও**ঁবপুর স্মৃতি ইচ্ছা দেব ও প্ৰয়ত্ব দারা বিদান্গণের যে স্নায়ন্ত তাহাকে অমুভাব কহে। কাব্যানিতে অমুভূত হয় ইহা অমুভূত হয়। সম যখন ব্যাপার ভূরিত হর, তখন ভাহাকে মনের আরম্ভ কছে। ঈদৃশ ও জৈণ পৌরুষ ছইপ্রকার প্রদিশ্ব শাছে। শোভা, বিলাস, মাধুর্য্য, শৈহ্র্যা, গান্ধীর্য্য, ললিত, ঔদার্য্য ও তেজঃ এই অউপ্রকার পৌরুষ প্রধিত শাছে। নীচের নিন্দা ও উত্তমের স্পর্কার নাম শোর্যা ইহা দাক্ষিণ্যাদির কারণ। বেমন ভবন শোভা পার সেইরূপ ধর্মদারা মনের শোভা হয়। হাব, ভাব, হেলা, শোভা, কান্তি, দীপ্তি, মাধ্র্য্য, শৌর্য্য, প্রগন্ধারতা, দৈর্য্য ও গান্তীর্যা এই দাদশ প্রকার জ্রীদিগের বিভাব। ভাব, বিলাস ও হাব এতংত্রয়ে কিঞ্চিৎ হর্ষদ্র ভাব আছে। বাক্যের ষুক্তিই বাগারস্ক, তাহা দাদশ প্রকার। আভাষণ্ট আলাপ, বহুতর বচন্ট প্রলাপ, ভুঃখ বচন বিলাপ, বারস্থার বচনোজিই অনুলাপ, উক্ত बाङ्गास मःगान, चग्रथा वाक् चन्नान, वास्त्रत व्यक्तान हे मत्मन, व्यक्तिभागन है निर्द्यन । क्यानेन, অভিদেশ ও অপদেশ জনাধা বর্ণন। শিক্ষাবাক্ উপদেশ, ব্যাজেভিট ব্যপদেশ। হৃত্তি ছারা বোধের নিমিম এই খ্যাপার আরম্ভ বলিয়া উক্ত হর। তাহা,রীতির্ত্তি ও প্রবৃত্তিভেগে তিনপ্রকার।

উনপঞ্চাশদ্ধিকত্তিশততম অধ্যায়। শীতি নিরূপণ।

व्यक्ति कहित्तन, योग्रिया मध्ये कि स्वास्म পাঞ্চালী, গোড়ী বৈদভী ও লাটা এই চারি প্রকার রীতি স্থালিত আছে। উপদার বুক্ত মৃত্যু ও হয় বিগ্রহা রীতিই পাঞ্চালী। যাহাতে সন্দর্ভ স্কল অনবস্থিত ও দীর্ঘ বিতাহ বিশিষ্ট পদ সকল বিদ্য মান থাকে ভাহাকে গৌড়ীয়া রীতি কহে। যাহাতে বছল উপদায় নাই অথবা যাহা উপচার যাহাতে অতি কোমল দল্ভ নাই। যাহা মুক্ত বিগ্রহা এরূপ খ্রীভিকে বৈদর্ভীগ্রীতি কছে। প্রক্ষাট সন্দর্ভ অনতি বিক্ষুরিত বিগ্রহা এবং যাহা উপচার বৰ্জিত হইলে ও উপচার দ্বারা উদাহত হয় ভাষতে লাটীরীতি কছে। যাহা ক্রিয়া সমূহে যাহা ক্ষবিষ্ণৰূপে বিদ্যমান থাকে তাহাকে রীতি বুত্তি কহে। ভারতী আরভটী, কৌশিকী ও শাস্তী ভেলে এই গালৈ বৃত্তি চারি প্রকার। বাক্ প্রধানা নরপ্রায়, জ্রায়ুক্তা ও প্রাকৃতোক্তি বিশিষ্টা রীতিই ভারতী। ভরত মুনি ইহার প্রণেডা বলিয়া ভারতী এই নাম প্রাপ্ত হইয়াছে। বাঁথি, প্রহণন প্রস্তাব নাদি ভারতীর চারি অঙ্গ। নটেকাদির বীথান্দ সকল ত্রেরোদশ প্রকার যথা উদযাতক, লপিত, অসৎপ্রলাপ, বাক্স্ণৌ, নালিকা, বিপণ, ব্যাহার তিমত, ছল অবস্থানিত, গণ্ড, মৃত্ত আচিত। তাপসাধির পরিহাস পরবাক্টে প্রহসন। মায়া ইন্দ্রজাল, যুদ্ধাদি বহুলা রীতিই আরভটী। সংক্ষিপ্তকার ও পাত এবং বস্তুত্থাপন ইহাতে বিদ্যমান থাকে।

ইত।ব্যেরে অ্রিমহাপুরাণে অলক্ষরে রীতিনিরুপণ নামক উন্প্রশাংদ্ধিক্তিশত্তন ক্ষ্যায়।

পঞ্চাশদ্ধিক ত্রিশন্ততম্ব সধ্যার।

মৃত্যাদিতে অককপ্রিরূপণ।

यशि करि:लम, यत्र প্রভ্যাকে এই উভয়ের চেকী। বিশেষই অঙ্গকর্ম। পূর্ব্যতনগণ প্রায়ই অব্লাশ্বিত শরীনারস্ক (নৃত্যাদি কর্ম) ইচ্ছা করেন। लीना, विनाम, विष्टिति, विखय, किनकि**कि**छ. মোটায়িত, কুটুমিত, বিকোক, ললিত, বিকৃত জ্রাড়িত ও কেলি এই দ্বাদশ প্রকার অঙ্গ কর্মা ল জ্জাক্ষ হইলে ইফজনের চেন্টার অনুকরণের नाम लीला। किकिश विरम्ध अमर्गन कतिरल তাহাই বিলাম। হাস্য ও রোদনের সন্মিলককে কিল্কি 🕸 ত करर। ८कानछ রূপ বিকারট বিকোক। সৌকুমারোখ ভাবই ললিত। শির: পাণি, উর:ছল, পার্হটি ও অভিন ইত্যাদিই অঙ্গ এবং জ্রনতাদিই প্রান্তর । অঙ্গ প্রত্যাঙ্গের প্রযন্ত্রমনিত ব্যতিরিক্ত কর্ম্মের প্রয়োগ হয় না। ভাছা কোথা মুখ্যরূপে, কোথাও বা বক্র রূপে সাধিত হয়। আকম্পিত, কম্পিত, যুত, বিধৃত, পরিবাহিত, আধৃত, অবধৃত, আচিত, নিকুঞিত, পরার্ড, উৎক্ষিপ্ত, অধোগত ও ললিত এই ত্রযোদশ প্রকার শিরঃ জানিবে। পাতন ও জন-क्षि मुशानि जाकर्ष मश्र क्षकात। त्रनदाशिमी, मक्शति । अधिवस्त्रीराज्य पृष्टि जिविधा। तम-म्हांशिनी ७ नकांतिनी यहे जिल्ला ध्यकात । तम्बा অউবিধ। বোঢ়া নাসিকা জানিবে: নিখাস নয় क्षकात । अर्थ कर्ष इत्र, हिदूककिया मश्रविधा । কলুষাদিমুখ বোঢ়া। ত্রীবা নববিধা। অসংযুত ও স্ব্ত রূপে হস্ত বহুপ্রকারে প্রযুক্ত হয়। পতাক, ত্রিপভাক কর্ত্রীমুখ, অর্কচন্দ্রোৎকরাল, ভক-তৃত, মৃষ্টি, শিখর, কপিখা, খেটকামুধ, সূচ্যাস্য,

পদ্মকোষ, শিরা, মুগশীর্ষক, কংমূল, কালপদ্ম, চতুর, অমর, হংদাস্যা, হংশপক্ষ, দদ্দংশ, মুকুল, উর্ণনাভ, তাত্রচ্ড় এই চতুর্বিংশতি প্রকার অসংযুক্তকর। সংযুক্তকর ত্রযোদণ প্রকার; যথা।—
অঞ্চলি, কপোত, কর্কট, স্বন্ধিক, কটক, বর্জমান,
অসঙ্গ, নিষধ, দোল, পুস্পপুট, মকর, গজদন্ত,
বহিত্তা। অপর করপ্রকার দকল বর্জমান।
আছুম ও নর্ত্তকাদি ভেদে উরং পাঁচপ্রকার। ত্রভিক্ষাম, ধণ্ড ও পূর্ণভেদে তিন প্রকার। পার্মছয়ের কার্য পঞ্চপ্রকার; জঙ্বার কর্মাও পঞ্চবিধ।
নাটকে নৃত্যাদিতে অনেক প্রকার পাদকর্ম কথিত
হইথাছে।

ইড)।ধেনে আদিমহাপুৰাৰে নৃত্যাদিতে অলকজনিরপণনামক প্রাকৃষিক্তিশতভ্য অধ্যায়।

একপঞ্চাশদ্ধিকত্তিশতত্ম অধ্যায়।

অভিনয়াদি নিরূপণ।

অগ্নি কহিলেন, বুধগণ কহিরা থাকেন বে, অভিনুথে পদার্থ আনয়নই অভিনয়। দেই অভিনয় সত্ত্ব, বাকা, অঙ্গ ও আহরণাশ্রেয়ে চাবি প্রাকারই সম্ভব। স্তম্ভাদিকে সাজ্ত্বিক, বাগারস্তকে বাচিক, শরীরাজ্তকে আঙ্গিক ও ও বুদ্ধিব আরম্ভ ও প্রস্থানির ভিকে আহার্য্য করে। অভিযান হইতে রসাদির নিযোগ কবিত হইতেছে। তালা ব্যতিরেকে সকলেবই স্বতম্ভতা অপাস্ত হয়। সম্ভোগ ও বিপ্রলম্ভতেদে শৃকার ভিবিধ। প্রচ্ছন ও প্রকাশ-ভেদে ঐ উভয়ই সুই প্রকার। বিপ্রলম্ভাগ্য শৃকার প্রবান্তরাগ, মান, প্রবাদ ও করুণভেদে চত্বিধ; ইহাদের হইতে অন্যতক জায়নান স স্ভাগ লকণ চতুর্ধা বিবর্তিত হয়। পুর্বেষ্য অতিন

वर्छन करत ना। जीश्करमत मनाष्मिततत निवर्छन কারিণীই রক্তি। ভাহাতে বৈবর্ণ্য ও প্রলয় (মৃদ্র্য) ব্যতিরেকে সমস্ত সাত্তিক ভাবই বিদ্যমান। ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক বারাভ উপচীয়মান হয়। আলখন বিশেষের ও তৰিষ-য়ের ছারা নিরস্তর অর্থাৎ অভিন্ন হর। বাক্যা স্থক ও নেপথ্যাত্মকভেদে শৃঙ্গার দিবিধ। হাস চারি প্রকার। অলকাদস্ত হাস্যকৈ স্মিত কৰে। কিঞ্চিলিত দতাগ্র ফুল্লেলাচন হাস্যের নাম হসিত। স্থন হাস্যকে বিহসিত; তাহা অকিক অর্থাং সরল হইলে উপহদিত কছে। পাপহদিত ও ভাহা অশক হইলে অতিহদিত কছে। করুণা নামক রস ত্রিবিধ; যথা ধর্মাপেত জনিত ও চিভবিলাম্জনিত ও শোক। কল্পারদে শোক স্থায়ীভাব; পূৰ্বজ অভিনত হয় । আৰু त्मिथा e वोकारण्या द्वीखतम किविथ। (कांध, (चन, द्रामाक ७ (वशक् (कम्ल) हें हांव निवर्त्तक। দানবীর, ধর্মবীর, যুদ্ধবীর, এই ত্রিবিধ বীব ভাহাব নিষ্পতিহেছু উৎসাহ কথিত হয়; উহাতে ঢেফা-সমূহে বীররসই অকুবর্তন করে। ভয়ানক নামক রসের নিবর্ত্তক (স্থায়ীভাব) ভয়। উ:ছন্দন ও কো-ভন ভেদে বীভংগ বস হুই প্রকার। শ্তাদিদারা উद्धिक्रम, ऋषितानि ছोता (कास्ट्रम हता कुल्ला ইহার ঝারম্ভিকা (স্থায়ীভাব) ইহাতে সান্ত্রিকাংশ নির্ত হ্য। অলকারকে কাব্যের करह। जनकात मकन अनकत्रभीतः; अव्यानकात পর্যালকার ও উভয়ালকার ভেদে ভাষা তিন কাব্যের যে ধর্ম, ব্যুৎপত্তি-আদিদায়া শব্দকে অনৃষ্কৃত করিতে সক্ষম হয়; কাৰ্যমীমাৎ ্সক কোবিদৰ্শণ, ভাষাকে শ্রুণলক্ষার কচেন। ছाशं, बूजा, डेक्टि, बूक्टि, खन्मना, वाक्, बाका

অকুপ্রাস ও ছকর চিত্র, শব্দের এই নয় প্রকার অসক্ষর অলকার। ভাগতে অন্যোক্তির অনুকৃতির नाम हारा, वह हारा, लाक, हिक, वर्जलांक ও একোজির অনুকার ভেদে চারিপ্রকার। শাহাণকোক্তিও লোকোফি সর্ব সামান্যে বিদ্য মান। ধাহা লোকোজির অসুধাবন করে, বুধ-श्र डाहाटक होयां कहिया थाउनका। टहकाविषका ও বৈদয়া, কলাসকলে হুশোভন হয়। ভাহার উল্লেখ কারিণী ছেকোজি ছায়া বলিয়া অভিহিত হর। অধিন অব্যুৎপলোক্তি, অর্ডকোক্তি দারা উপলক্ষিত ও ভনাতোঞ্জির অনুকরণ করিয়া অর্ড-কোজি ছায়া হয়। মতের বিভ্রমীকর অল্লীল বাক্য ও ছায়া হয়। সেই মতেখক্তি ছায়া ছারা উক্ত হইলে মত্যন্ত শোভাধারণ করে। অভিপ্রায বিশেষ ছারা কবি শক্তি প্রকাশিন আনন্দ দায়িনীই মুদ্রাই আমাদের মতে শয্যা। উপপত্তিমান এর্থ, যাহাতে বিদ্যোন ভাহা,লোক্যাত্রা বিধিৰারা मञ्जनगर त रुपध्यक्षम करत । বিধিও নিষেধ, নিয়ম দকল যমন্বয় বিকল্প ও পরিসন্থ্যা এই ছয প্রকার ভাহাব উব্জি মণী বিগণ কহিয়া থাকেন অযুক্ত পরস্পার বাচ্য বাচকছয়ের যোডনার নিমিত কল্পনাই যুক্তি। পদ, পদার্থ, বাক্য, বাক্যার্থ, বিষয় ও পাকরণ এই ছন প্রকার তাহার প্রশক। শব্দার্থক্রম সমন্থিত রচনাচর্য্যাই ওক্ষনা, শব্দানু কার হেতু খর্ব, ঋষর্থ ও পূর্বার্থ ভেদে তাহ তিন প্রকার। উক্তি প্রভ্যুক্তিখন্বারে নাম বাকো বাকা ঋড় ও বক্রোক্তি ভেকে ভাগে দুই প্রকার। সহজ্ঞবাক্যকে ঋজু ও কহে, তাহা আবার পূর্বা প্রশ্নিকা ও প্রশ্নপূর্বিকা ভেদে দিবিধ। ভঙ্গি ৰারা বক্ষেত্রি হয়। তাহা বারা কাকু ছুইপ্রকার্য।

দ্বিপ্ৰাশদ্ধিকবিশতভ্য অধ্যায়।

मकानि निक्रभग-- मकानकात्र। অগ্নি কৰিলেন, বৰ্ণসমূহের এবং পদও বাক্যের আর্ত্তিকে অনুপ্রাস কহে। একবর্ণ ও অনেক ৰণাব্ৰভির বৰ্ণগুৰ ছুইপ্ৰাকার। একবৰ্ণ গভ আৰু-ভির বৃত্তি, মধ্রা, কলিত প্রোঢ়া, ভলা ও পরুষা। মধুরায় বর্গান্তের অধংস্ত বর্গ্রেশ ও র, ণ, স, ন এবং হ্রম্বর সংযুক্ত ঐ সকল বর্ণ ও নকার্ছায়ে পরস্পার যুক্তবর্ণ। পাঁচটির অধিক বর্গ্যবর্ণের আর্ত্তি কর্ত্তন্য নয়। মহাপ্রাণ বর্ণ, উত্মবর্ণ ও সংযোগরহিত লমুম্বর বিশিষ্ট্র ও ল বছলাই लिला। भ ७ प वर्गकावर्ग विभिक्ता इहेरल धनः উৰ্জভাগে রেফ যুক্ত ন ও ট বৰ্গ ও পঞ্চম বৰ্ণ হীন হটলে তাহাকে প্রোঢ়া কহে। পরিশিষ্টাই ভদ্রা। উল্লেখ সম্ভ ও দেই সেই অক্ষর সংমূক্ত বর্ণ ও অকার বর্জিত স্বরসমূহের ভূগদী আরুতি এবং অনুস্বার বিদর্গ থাকিলে পরুষা রুত্তি হয়। রেফ সংযুক্ত শ্ব, দ্ আকাৰ ও অন্তঃস্থৰণ ভিন্ন, আকার সমুক্তবর্ণ ও হকার পারুষ্যের নিমিত্ত প্রযুক্ত হয় : শান্তপ্রকার গুরুবর্ণ ও বিপরীত দংযুক্ত হৰ্ণ পঞ্চম বৰ্ণ ভিম অন্য দংযুক্ত বৰ্ণ পাক্ত যে প্রযুক্ত হইয়া থাকে। আকেপ ও অনুকারেও পরুষার্তি এমুক্ত হয়। পঞ্চার্, অন্তঃস্থবর্ণ ও উত্থাৰ্থ দার৷ জ্ঞামে কর্ণাটী, কৌন্তলী, কৌন্তী (कोळनी, बाम नामिका, ज्ञाबनी ও माधनी वृत्ति ह्य ।

ভিন্নার্থ প্রতিপাদিক। যে অনেক বর্ণার্তি ভাহার নাম যমক, ভাহা সাব্যপেত ও ব্যপেত-ভেদে বিবিধ। আনস্তর্ধ্য হেছু আব্যপেত ও ব্যব ধান হেছু বাপেত ষমক হয়। বৈবিধ্য হেছুক

এই উভয়ের স্থান ও পাদভেদে চারিপ্রকার; আদিপাদ, আদি, অস্ত ও মধ্য যমক। এই সকল ষমক এক চুই ও তিন এইরূপ নিয়োগে সম্পন পূर्व भुकारक्रू ७ छे । द्वा हत रक्ष् यमक সপ্ত প্রকার। এক, ছুই, তিন পদারম্ভ সমান; তখন অপর ছয়প্রকার হয়। তৃতীয় তিবিধ; পাদের আদি মধ্য ও অন্ত গোচর এবং পাদান্ত যমক কাঞ্চীযমক, সংসর্গযমক, বিক্রান্ত্রযমক, পানা-দিযমক, আত্রেড়িত, চতুব্যবসিত মালাযমক দশ-প্রকার যমক্ট শ্রেষ্ঠ; তাহাদের অনেক প্রকার ভেদ আছে। স্বতন্ত্র ও অন্য 🤊 ছের পদের আব-র্তুনা তুইপ্রকার। ভিন্ন প্রয়োজন পদের আর্তি, মানবগণ বুঝিষা লইবেন। ছুই আব্ত পদের সমাস হেতুক সমস্ত এবং তাহাদের অসমাস হেতু এবং পাদে একত্র বিগ্রহ হেতুক ব্যস্ত হয়। বাক্যের আবৃত্তি এইরূপ যথা সম্ভব হইয়া থাকে। অনুপ্রাস অলক্ষার লঘু হইলে এবং মধ্যে ব্যবস্থিত হইলে যে কোন বুভিদাগ ও নমান অনুভূত হয়। দেইরূপ আদি পদাস্তি সাতুপ্রাস রৃত্তি ও রগা-বং। হট্য়া-থাকে। গোষ্ঠামধ্যে **অর্থাৎ গেষ্টিত** বর্ণাবলিমধে কুতুহলদায়ী বাক্যবন্ধকে চিত্রালকার কহে। প্ৰশ্ন, প্ৰহেলিকা, চ্যুত ও দৰভেদে ছই-প্রকার এবং ঐ উভয়ই গুপ্ত হয়। নানাবিধ অর্থের অনুষোগনৰে সমস্তা সপ্তবিধ। তুল্যবর্ণ বিফাদে উত্তর প্রদক্ত হয়, তাহাই প্রশা। উভরতেদে তাহা একপৃষ্ঠ ও দ্বিপৃষ্ঠ এই ছুইপ্রকার সমত্ত ও ব্যক্তভেণে একপৃষ্ঠ ছিবিধ। উভয়ের অথ্র্যের গোপন হৃহলে প্রহেলিকা হয়। শার্থী ও শান্দীভেগে ভুইপ্রকাব, অর্থবোধাসুসারে ' जाशी अ मकताराधूमारत माकी अहेक्स टार-লিকা ছয় প্রকার। যাহাতে বাব্যাস ভও ইই-

লেও ভাবার্থ, অপারমার্থিক হ্ইয়া সেই বাক্যাঙ্গ পুরণের আকাজকায় অবস্থান করে, ভাহাকে গুপ্ত। कटर, देहां शृष्ट । वाकाक्तित हावनानि(कात्रवानि) **দারা বাহাতে অর্থান্তর ভাসিয়া থাকে এবং তদ**ঙ্গ প্রণের আকাজ্লার অবস্থান করে তাথাকে চ্যুত কহে শ্বর, ব্যঞ্জন, বিন্দু ও বিসর্গের বিচ্যুতিছারা তাহা চারিপ্রকার। যাহাতে, বাক্যাক প্রদত্ত হইলেও দিতীয় অর্থ প্রতীত হয়, তাহাকে দত্ত কহে, স্বর ব্যঞ্জন বিন্দু ও বিদর্গ প্রদানদারা তাহা পূর্ববিৎ চারি প্রকার হয়। অপনীত ককরের-স্থানে বণীন্তর বিন্যন্ত করিলে যেখানে অর্থান্তরের উপলব্ধি হয় তাথাকে, চ্যুত দত কছে। নানা লোকাংশ নিশ্মিত পদ্য যদি এক হলেষ বিশিষ্ট পদ্যে নিৰ্মিত হয়, পরের এবং আত্মপ্রের কুতি-সঙ্কর হেতু তাহাকে সমস্থা কছে। তাহাতে কই ষারা কৃত হইলেও করিব অভিশয় স্।মগ্যসূচনা করে। ছকর নীরস হইলে ও ভাহাব বিদয়গণের মহোৎসব সদৃশ নিয়ম বিদৰ্ভ ও বন্ধ চেতু তাহা তিবিধ। কবির নিশাণ রম্যের প্রতিফ্রার নাম নিয়ম,স্থান, স্বর ও ব্যঞ্জনদারা তাহা তিনপ্রকার। প্রাতিলোম্য ও আনুলোম্যদারা বিকল্প ক্ষিত হয়। প্রতিলোম্য ও আমুলোম্য শব্দ ও অর্থছারা অভিজাত। অনেক প্রকার রুত্তবর্ণ বিভাসমার। ভত্তৎ প্রসিদ্ধ বস্তুর শিল্প কল্পনার নাম বন্ধ। গোম্তিকা, অৱিভ্ৰমণ স্বাতাভ্দ্ৰ অম্বুজ, চক্ৰ, চক্ৰাব্যক, দণ্ড, মুরজ এই আটপ্রকার বন্ধ প্রধানত উক্ত হয়। একান্তরার নাম প্রত্যর্থ ও সমাক্ষরার নাম প্রতিপাদ। পূর্বা ও অখপদাভেদে কেহ কেহ ছুইপ্রকার কংহন। অন্তা গোমুত্রিকার (रमू ७ कालवक्ष अहे छूहेदाकात (छन करहन। শ্র্মন্ত্র ও অর্থাদ্বারা এই উভয়ের বিভাগ

স্কাৰণ বিধেয়। ক্রম ভাগি অধোভাগে বিশুপ্ত বর্ণসমূহের অধোধভাগেন্তিত বর্ণ সমূহকে চতুর্থ পদে লইয়া যাইবে; চতুর্থপদ হইতে উদ্ধে লইয়া গিয়া পাদার্ক্ষ সকল প্রাতিলোম্যে বিনাস করিলে তাহাই স্কাতোভদ্র বন্ধ নামে কথিত হয়।

দৰ্বতোভদ্ৰ বন্ধ যথা।

স	দ†	3 5	म	a	35	म ी	ŋ
म्।	P	ম†	গো	গো	মা	4	मा
3	মা	বে	ভ	<i>9</i> 5	বে	মা	ত
ন	গো	3	डा	ভা	ভ	গে	ন

ইহার অর্থ- গো মানদা মা তুর্গা সদাতন অর্থাৎ নিত্যদাস সদানত রহিয়াছে, তুমি, গো অর্থাৎ জ্ঞান দান কর। আমি তম দারা অবেত যুক্ত হইরাছি, তবে অত এব মা তুর্গা আত আইস, আসিয়া তম নাশ কর এই ভাব। মা আমার ত তা বিস্তৃত গো বাক্য স্থাতি বাক্য নাই। এবং তত বিস্তৃত গো বৃদ্ধি ও নাই, মা তুমি নিজ্ঞান কর এই ভাব। উক্ত মগুলের এক এক পাদের একদিক ইইতে পড়িলে যাহা উচ্চা-রিত ইইবে, অন্য দিক্ হইতে উচ্চারিত হইলেও ভাহাই এবং পাদার্ম ও সেইরাপ। এইরাপে প্রতিচরণ শ্লোক মধ্যে আট আটবার উচ্চারিত হইবে।

পদ্ম বন্ধ তিন প্রকার চতুষ্পত্ত বিদ্ন ও চতুষ্পত্ত ছয়। প্রথম পাদের মন্তকে ত্রিপদাক্ষর, সকল পাদের অন্তে সেইক্লপ হয়। প্রথম পাদের শেষ

পদ পরপদের আদিতে প্রতিলোম ভাবে রচনা।
করিবে। অন্ত্য পাদে শেষ, আদ্য পাদাদির
অক্ষর ছয়ের সমান হইবে, চতুষ্পত্তে এইরূপ, অন্ত্
চ্ছদে তিন অক্ষর সমান হইবে। ঝোড়শচ্ছদে
এক অক্ষর অন্তর। কর্নিকা উর্দ্ধে উন্তোলন কর্তব্য
এবং অক্ষর। বলি পত্তাকার হইবে। চতুষ্পত্ত পদ্মে
অক্ষর সকল কর্নিকামধ্যে প্রবেশ করাইবে।
ক্রিকামধ্যে এক এবং দিগ্ বিদিকে চুই চুই ক্ষম্মর
লিখিবে। অন্তদনামুদ্রে দিক্ সকলে প্রবেশ ও
নির্গম করিতে হয়। ধোড়শচ্ছদ পদ্মে পত্তাবলি
ভজ্মান সমস্ত বিষম বর্ণের মধ্যে সমাক্ষর বিস্থাস
কর্তব্য।

অফীদল পদ্মবন্ধ যথা।

মারমা জ্যমা চারু রুচামার বধূত্যা। মাত ধূর্তত্যা বাদা দা বা মা মেস্ত মারমা।

চত্রর ও ষড়রভেদে চক্রবন্ধ ছইপ্রকার। চত্ররচক্রে পূর্বার্চ্চে পাদের প্রথম ও পঞ্চ বর্ণদকল
সদৃশ হইবে। তাহার উপপাদ পূর্ব্ব ও পশ্চাৎ
অযুজ, অশ্বযুজ অরে চতুর্থব্য ও অফীমন্বয় যথাক্রেমে সমান কর্ত্তবা। পাদার্ক্ষ চতুইয় তুলা;
চক্রের নাভিতে আদ্যাক্ষর বিন্যাস কর্ত্তবা।
পশ্চিমার অবধি নেমিতে যে যে পদন্বর লইয়া
যাইবে। চতুর্থ পাদান্তে তৃতীয় প্রথমন্বয় তুলা
হইবে। পাদক্রয়ের ও বর্ণব্য এবং দশম যদি
সমান হয়, প্রথম ও চরমে ভাহার ছয় বর্ণ, সমান
হয় এবং পশ্চিমে যদি ব্যন্তর সম হয় তাহা হইলে
তাহাকে বৃহচ্চক্র কহে। সন্ম্বারন্তরে এক এক
পাদ ক্রমশ: লিখিবে এবং নাভিত্তে দশমবর্ণ,
নেমিতে চতুর্থপদ লইয়া ষাইবে। স্লোকের আদি
অন্ত ও দশম সমান এবং যুগ্মপাদের আদি ও

अश्विमवर्ग कृता हहेरव ; क्षथरमञ्जवर्ग अवः कामा ও চতুর্থের চতুর্থ ও পঞ্চমবর্ণ তুল্য। দিতীয়ের প্রাতিলোম্যদারা যদি তৃতীয় জন্মায, তবে কৃতির পজেরন্থান বিধান করিবে। পূর্বদলে বিভীয়; সপ্তম ও অপর তুল্য। উঙর দলবয় বিতীয়বয়-দারা অর্দ্ধদরে সৃদৃশ হইবে। আদা ও অন্তপাদের বিতীয় ও ষ্ঠ এবং চতুর্থ ও পঞ্মতুল্য এবং পরা-র্কের লপ্তম, তুল্য হইবে। চতুর্থ ও পঞ্চম তুল্য করিয়া ক্রেমশঃ বিনিধোক্ষিত করিবে। জনামু-माति भागवायत हरूर्यवय ७ ममाख्यर्ग मकालद বিনাাস কর্ত্তর। মুরজবন্ধে অন্ধের অন্তিম ও আদা দদৃশ এবং প্রাতিলোম্য ও আমুলোম্যামু-সারে পাদার্দ্ধ পতিভবর্ণ অস্তিমকে বন্ধন করিবে। ইছাতে চতুর্থপর্য্যস্ত আদি সমান কর্ত্তব্য। চতুর্থ পাদ হইতে আদ্য যেরপে, নবস ও ষোড়শান্তর হইতে পুটকমধ্যে ও মধ্যে অক্ষর চহুফীযের বিকাস করিলে মুরজের আকাব প্রাপ্ত হয়। ৰিতীয় চক্র শার্দিল বিক্রীভিত্তকের সম্পদ। গোমুত্তিকা দর্বাপ্রকার রুভছেন্দে বন্ধন করা যায়, অন্য হ্ব দকল অমুক্তুপ ছন্দ-ছারা নিপ্সন্ন হয়।

এইসকল বন্ধবারা যদি ক'ব এবং কাব্যের নাম নাইয় তথাপি মিত্রগণ সন্থ ইন এবং অমি-ত্রগণও ভাদৃশ থেদ প্রাপ্ত ইয় না। বান, বাণা-সন, ব্যোত্তে, বড়সা, মুদ্দার, শক্তি, ছিচ হুর্থ তিন্দুলাট সকল, দল্পে লি, মুষ্ল, অসুশ রপ্তদ, নাগ, পুক বিণী, অসিপুল্রিকা এই বন্ধসকল, বুদ্গণ স্বয়ণ জানিয়া লইবেন।

হতঃ(ব্যয়ে অংখিনহাপুরাণে অলকারে শকলেকারনিরপণ নামক বে ফাশদধিকঅিশ্ভতম অবায়ে∤

ত্রিপঞ্চাশদ্ধিকশিতত্য অধ্যায়।

অর্থালঙ্কার।

যাহাদারা অর্থের অলক্ষরণ হয়, ভাহাকে অল-ক্ষার কছে। তদ্যভিবেকে শব্দ সৌন্দর্য্য ও মনো-হব হয়না৷ অধালক্ষার বিরহিতা হইলে সর-সতী বিধবার নাায় প্রতীয়মানা হন। স্বরূপ, সাদৃশ্য, উৎপ্রেক্ষা অভিশয়, বিভাবনা, বিরোধ, হেতৃ ও সমভেদে অলঙ্কার অফীবিধ। ভাবসমূহের সভাবই স্বরূপ, ভাহা নিজ্ঞ ও আগস্তুকভেদে চুই-প্রকার। তথ্যসংগ্রিছক নিজ ও নৈমিভিকই। মাগন্তক। উভবের ধর্ম সামাজ, হইলে সাদৃশ্যা-। লকার হয় উপমা, রূপক, সহোক্তি ও অর্থান্তর ন্যাসভেদে ভাহা চারি প্রকার। যাহাতে অস্তর সামান্য যোগিত্ব ছইংলও উপমান উপমেয়ের স্তা বিবক্ষিত হয় ভাষাকৈ উপমা কৰে। সাক্রপা গ্রহণ পূর্বক বেখানে ভাগ প্রবর্ত্তি হয়, প্রতিযোগির সমান ও অসমাসভেদে সেই উপমা অভিধানের বিগ্রহ হেতৃক সমমাদা फुटें 2 कि ते । ভ উত্তৰা: উপমাদ্যোতক পদ ও উপমেয়ও ' উক্ত উভয উপমাদারা তাহা তিন এক।র । উপ মাব বিশেষ (প্রভেদ) অউদশ প্রকার। যেখানে স্ধাৰণ ধৰ্ম কৰিত বা গমা হয়, তথায় ধৰ্ম বা বস্তু প্রাধান্য হেডুক ধর্মোপমা ও বস্তুপমা নামে কণিত হইয়া থাকে। যেখানে ধর্মিদয়ের অন্যান্য হাবা ভুলারূপে উপমিত হয ভাষাকে। প্রস্পাবাপমা কছে। ধ্ব্মিন্বযেব প্রসিদ্ধেব অন্তথা হটলে বিপরীতে!পমা,ব্যার্ণি, হটলে নিত্যমোপমা অন্ত্র অনুবৃত্তি হইলে অ'ন্যমোপমা ইহার অন্ত-রূপ ধর্মবাহুল্য কীর্ত্তন কবিলে সমুচ্চয়োপমা, বছ ধ্রের সমতা থাকিলেও গেখানে বৈলক্ষণ্য বিব-

ক্ষিত হয়, এবং যদি অভিৱিক্ত উক্ত হয় তাহা হটলে ব্যতিরেকোপমা হয়। বহু সদৃস ভারা ষেধানে উপমা প্রদত্ত হয়, তাহাকে বহুপমা করে। ইহাতে ধর্ম সমূহ ও প্রভাপমান থাকে তাহা इहेटल बना वृक्ष्मं छैहाटक है शिटलांभमा करहन। উপমানের বিকার দারা যে উপমা ভাহাকে বিক্র-যোপমা। কবিগণ যদি প্রতিযোগিতে ত্রৈলো-কোর অসম্ভব কোনও আরোপ করেন, তাহা হইলে তাহার নাম অন্তুভোপমা। প্রতিযোগিকে তাহার অভেনে আরোপ করিয়া বেখানে উপমে-যেব কীর্ত্তন হয়, সেই ভ্রান্তি বিশিষ্ট বাক্যের নাম মোহোপমা। উভয় ধর্মির তথ্যের অনি-শ্চয় ছইলে সংশ্রোপমা ইয়। উপমেয়ের সংশ্র করিয়া পবে নিশ্চয হইলে নিশ্চয়োপমা কহে। বাক্যাৰ্থ দ্বাবা উপমান হইলে বাক্যাৰ্থোপমা কছে। আসাহারা উপমা হটলে সাধারণী ও অতি শায়িণী উপমা হয়। যাহা অন্যের উপমেয় তাহাই অন্যোপমা। উত্রোত্তর গমন কবে বলিয়া ইহাব নাম গমনোপমা। প্রশংসা, নিন্দা ও কর্মা সদৃশী ও কিঞ্ছিৎ দদৃশী এই পঞ্জেদে উপমা স্বাবার পাঁচ প্রকার হয়। উপমেয়ের যে তত্ত্ব উপমান দারা রূপিত হয়, গুণের সমতা দেখিয়া বুধগণ তাহাকেই রূপক কছেন। অথনা উপমারই ভিরোভাব ভেদকে রূপক কছে। ভুল্যধর্মিগণের সহভাবে কথনের বৃত্তি অন্য স্থানে উপস্থিত হইলে তাহার নাম অর্থান্তর ন্যাস। যেখানে অন্যথা প্রকার মনে করিয়া ভর্ক কথা যায় ভাহাকে উৎ-প্রেক্ষাকছে। লোক সীমা নির্ভ বস্তু ধর্মের কার্ত্তন কবিলে অভিশ্যোক্তি হয়, তাহা সম্ভব ୧ অসম্ভব ভেদে ভুইপ্রকার। বিশেষ দর্শনের নিমিত্ত গুণ জ্বাতি জিরাদির যে বৈফলা দর্শন

তাহার নাম বিশেষোক্তি। প্রসিদ্ধ হেতুর বারিত দারা কোন ও কারণান্তর বা স্বাভাবিকত বিভাবননীয় হয়, তাহাকে বিভাবনা অলকার কহে। আপাততঃ বিরোধবং প্রতীয়মান পদার্থ মরের মৃতি দারা নদতি হইলে তাহাকে বিরোধালকার হয়। যাহার সাধনার ইচ্ছা হইয়াছে সেই পদার্থ রের হেতুই সাধকালকার হয়। কারক ও জ্ঞাপক ভেদে তাহা ছই প্রকার। কার্য্য জন্মের পূর্বেও পশ্চাতে কারকাথ্য অলকার প্রবৃত্ত হয়। দেই উভয়ের বিশেষ বর, পূর্বেশেষ বলিয়া থ্যাত। নদী পূরাদি দর্শন হেতু, কার্য্য কারণ ভাব, স্বভাব, নিয়ামকত এই সকল কারণে জ্ঞাপকের আছে। অবিনাভাব দর্শন হেতু অবিনাভাব দর্শন হয়। ইঙ্যান্মেরে আদিমহাপ্রাণে আলহারে অলহার নির্পণ নামক জিপ্লাশদ্দিকন্দ্রতম্ম অ্যার।

চতুঃপঞ্চাশদ্ধিকত্তিশতত্ম অধ্যায়। শক্ষাধানকার।

অগ্নি কহিলেন, শব্দ ও অর্থ এই উভ্যেরই
অলম্বার একসঙ্গেই অলম্বত করে। একস্থানে
নিহিতহার যেমন গ্রীবা ও স্তন এই উভ্নকেই
অলম্বত করে ইহাও ভদ্রেপ। প্রশন্তি, কাস্তি,
উছিতা, সংক্ষেপ, যাবদর্থতা ও অভিবাজি শব্দাথালক্ষারের এই ছ্যভেদ স্পান্তরূপে জাগরুক
আছে। পাববৎ মর্মাদ্রবীকরণ কর্মোব বাকোর
যুক্তির নাম প্রশন্তি। প্রেমোজি ও স্ততিভেদে
প্রশন্তি ভূইপ্রকার। প্রিয়কীর্তন হটলে প্রেমোজি
ও গুণকীর্ত্তন হটলে স্ততি হয়। সকলের মানা
রোচক বাচাবাচকের সঙ্গতিব নাম কান্তি।
যেথানে বস্তু সেই খানেই রীতি, যেথানে ব্রিত

দেই স্থানে রস বিদ্যাধান আছে। উর্জনিষ ও মতুদন্দর্ভাদিতে ওচিত্য হয়। শ্বপ্লবাক্যবারা বহু অর্থের সংগ্রহ হউলে জাহাত্তে সংক্ষেপ করে। শব্দ ও বস্তুর অন্যুনত। ও অনাধিক্য **হইলে যাব**-দৰ্বতা হয়। প্ৰকটত্বই অভিব্যক্তি, শ্ৰুতি এবং আক্ষেপ অভিব্যক্তির প্রকার ভেদ। স্বার্থশব্দকে শ্রুতি কহে। নৈমিতিকী ও পারি-ভাষিকীভেদে শ্রুতি চুইপ্রকার। সঙ্কেতই পরি-ভাষা, তদ্ধেতুই পারিভাষিকী হয় মুখ্যোপচারিকী এইরপে, তাহারা তুই চুই প্রকার। যাহা কর্তৃক কোনও নিমিত্তশে অভিধেয় হইতে স্থালিতর্ভি इवेशा भक भूथारिर्धत वाहक इश छाहा छेनहातिकी এই উপচারিকী, লক্ষণা ও গুণযোগে লাক্ষণিকী ও গোণী এই তুইপ্রকারে বিভিন্ন হয়। ব্যতিরেকে যে খন্যার্থ প্রতীতি তাহাকে লক্ষণা ক্রে। অভিধেয়ের সহিত সম্বন্ধহৈত্ব, সামীপ্য-**হেতৃক, সমবায় হেতু বৈপরীত্য হেতৃক ও ক্রিয়া**-যোগ হেতুক লক্ষণা পঞ্চ প্রকার। তাণ সকলের অনস্তত্ত্ব হৈতু গৌণী, অনস্তত্ত্বের বিবক্ষা করিলে অনতা লক্ষণা হয়। তাহা হইতে অন্যত, লোক-সীমানুবোধিভাব কর্ত্তক, অন্যথন্ম যথায়, সম্যক্-রূপে আহিত হয়, তাহাকে সমাধি কহে। যাহা হইতে প্রুতির অর্থ লভ্যমান না হইয়া সচেতন-রূপে প্রতিভাত হয়, অর্থ স্বয়ং শব্দ ও অর্থনারা উপাৰ্চ্ছন করিলে ও ধ্বনিদ্বারা ব্যক্ত হয় বলিয়া ভাহাকে আক্ষেপ ধ্বনি কহে। ইফের প্রতি द्यत्यद्रनाम अध्यक्षाता कथरनष्ट्राम त्य विरम्य, जाहारक चात्क्रभ करह। अञ्चल अहेरखाजरकहे ্স্তুত কছে, অধ্বা অধিকার বহির্গত খন্য যে স্তুতি ভাহাই স্তত। গাহাতে প্রস্তুত ও অপ্রস্তুতের স্মান বিশেষণভারা অর্থ গম্যমান হয়, সংক্ষেপার্থ

হেতুক ভাহাকে স্থাসোজি অল্ফার কছে।
কাহারও অপহর করিয়া কোনও অন্যার্থের সূচনার নাম অপহনুতি অল্কার। অন্যবিধ প্রকারদারা যে কথন ভাহাকে পর্যায়োজ কহে। ইহাদের মধ্যে একভমের স্মান নাম ধ্বনি।

ইত্যামেরে আদিনহাপুরাণে অলফারে শস্বার্থাল্যাবনামক চতুঃপঞ্চালদ্ধিক্তিশভ্তম অধ্যার।

পঞ্চপঞাশদ্ধিকতিশততম অধ্যায়।

কাৰ্যগুণ বিবেক।

অগ্নি কহিলেন, গুণহীন কাব্য অলহত হই-লেও প্রীতিদায়ক হয় না। রমণীগণের তত্ম ঘদি অমনোজ্ঞ হয়, তহা হইলে হাবভাবমাতে । বাচ্য গুণও দোষ ভাব হয় না। শ্লেষদিই গুণও গুঢ়ার্থাদিই দোষ, পুথক্ কৃত হইয়াছে। যে মহতী ছায়া গ্রহণ করে তাহাকে গুণ কছে। গুণ, সামান্য ও বিশেষ সম্ভাবিত হয়৷ যাহা সর্ব সাধারণ হরপ তাহাই সামান্য; শব্দ, অর্থ ও শব্দার্থ ইহানের যোগে সামান্ত তিনপ্রকার। কাব্য শরীর ভূত শব্দকে যে যাশ্রের করে তাহাকে গুণ কহে। শ্লেষ, লালিত্য, গান্তীয়্য, সৌকুমাগ্য উদারতা, সতী 🕏 যোগিকী, এই সপ্তপ্রকার শব্দের গুণ। শব্দ সমূহের, হুলিট সলিবেশকে লোষ কছে। গুণ ও আদেশাদি দ্বারা অক্সর नकल इन्छे ऋरू शहराबद्ध हहेरा याशास्त्र मिलन করিতে হয় না তাহাকে লালিত্য কহে। বিশিষ্ট লকণানুসারে লেখ্য উচ্চভাব ব্যঞ্জক আড়ম্বর বিশিষ্ট শব্দসকলকে আর্হাণৰ পাঞ্জীর্য্য কছিয়া থাকেন। অনাত্র ভাহাকে শব্দ ধর্ম কছে; প্রায়ই অনিষ্ঠ্রাকর শব্দ থাকিলে তাহাকে স্কুমারতা-

গুণ কৰে৷ আড়ম্বর বিশিক্ত পদৰারা উদার্যযুক্ত শ্লাঘ্য বিশেষণদারা যে সমাসাধিক্য ভাষাকে ওজ-कुन करह, देहा अमानिएड असूक हर। ५क्क अन-দ্বাবা গাল্রহ্মন্তম্ভ পর্নান্ত সকলেরই পৌরুষ হটয়া थारक। या दकान । अक्षात्र के कार्याकार वस्त्र উংকর্ষধারী ঋর্থই শুণ বলিয়া অভিহিত হয়। মাধুরা, সন্থিধান, কোমলত, উদ্বেভা, প্রোচি ও সাম্যাক্ত এই চ্নপ্রকার গুণের প্রভেদ। কোধ ঈর্বা, আকার ও গাড়ীয়া হেতুক যে ধৈর্যাধাবিছ, । গতি করিবে। তাহার নাম মাধ্যা। অপেক্ষিত দিদিব নিমিত যে পরিক্র (সহকাবী) ভাহাকে স্থিধান কছে ! याश काठिनग्रापि छण विशेन, उत्र विभिक्षेत्राप স্ম্বিন্ট, যাতা মৃত্তাকে অপ্রবাটনী করিয়া প্রকাশ পায় তাহাকে কোমলতাগণ কচে। বেখানে ভুলবকা প্রেমির লক্ষণ ল নত হয়. ভাহাট গুণেব উদারহ; ইচা আশ্বের অভিশয় সৌফীৰ ্ৰাপাদন করে। যেখানে অভিপ্ৰায়ের প্রতি নি দাতের উপপানিকা হেতু গর্ভিণী যুক্তি বিদ্যমান আছে, তাখাই প্রোঢ়া বা প্রোচ় বলিযা অভিহিত হয়। স্বতন্ত্র অন তাল্রেব বাফ ও মধ্যের সমধোণে অর্থের যে বুংৎপত্তি ভাহাকে সাম্যিকতা কছে। শব্দের ও অর্থের উপকার कितिया, উভयन्तर अहे नाम প্রাপ্ত হয়। প্রসাদ, দৌভাগ্য, বথাস'খ্য, প্রশস্ত লা, পাক ও বাগ এই ছ্যপ্রকার তাহার প্রভেদ। স্থাসিদ্ধার্থ বিশিষ্ট-शम विभाग इहेटल छोहांक श्रमाम्खन करहा যে উক্তিতে কোনও উৎকর্ষ বিশিষ্ট গুণ প্রতীত হয়, সেই উদারত্বকেই মনীযিগণ সৌভাগ্য কহিয়া থাকেন। অফুদেশহারা দামানের অন্ত আরো পণের নাম ঘথাদংখা। সময়ে বর্ণনীয় নিদারুণ ৰস্তার ও অনিদায়েণে শক্ষারা উপবৰ্ণন হইলে

তাহাকে প্রশন্ত কহে। কোনও প্রকার উচ্চ পরিণতির নাম পাক। মুরীকা নারিকেলালু প্রভৃতি ভেদে পাক চারি প্রকার। আদি ও অন্তে সবদ থাকিলে মুরীকা পাক কহে। কাব্যেচহায়ারা যে বিশেষ তাহাকে রাগ কহে। অভ্যানজাত রাগ, সহক কান্তিতেও অবস্থিত হগ। হারিদ্র, কৌহস্ত ও নীলীভেদে বাগ তিনপ্রকার। যাহা নিজলক্ষণ সংযুক্ত তাহাকে বৈশেষিক বলিয়া অব্ধৃতি করিবে।

ইত চ্ছেত্রে অ দিস্চাপুরাংশ কারাপ্তশ বিশ্বর নাম ‡ প্তপ্রধানদ্ধিক অিশ্রতম অধ্যয়।

ষট্ প্ঞাশদধিকতিশতভন অধ্যায়।

कानारनाय निरवक।

অনি কহিলেন, সভাগণেৰ উদ্বেগ জনক দোষ সাত্রপ্রকার। বক্তার বাচকছারা বাচ্যসমূহের এক ছুট ভিন আদিনিয়োগ অমুদারে ঐরপ ভেদ হ্য জানিবে। তথায় বক্তার নাম কবি : সন্দিহান অবিনাত, অজ্ঞ ও জ্ঞাতাভেদে কবি চারিপ্রকার। নিমিত্র ও পরিভাষাদারা অর্থকে স্পর্শ করিলে তাহাকে বাচক কটেছ। পদ ও বাক্যভেদে বাচক । তুইপ্রকার ভতুউভ্যের লক্ষণ কথিত হইয়াছে। অসাধ্য ও অপ্রয়ক্ত এই চুইটা পদ নিগ্রহকর " (मास। नक्नारञ्जत विक्रक्षकृते कामाश्वक, तुर्दशक्र ষাগ্ৰাসিকাই অপ্ৰযুক্তর অভিহিত হয়। ছন্দ-সত্ত, অবিষ্ণাইত, কন্টত্ব, অগাময়িকত্ব ও আমাত্ত ভেদে তাহা পাঁচপ্রকার। মহা ভাষামুবর্তি নয, ভাহাই ছান্দদ; অবোধ হইতে অবিস্পান্ত দোষ , উৎপন্ন হয়। মৃচার্থতা, বিপ্রয়াস্তার্থতা দংশয়ি-ভার্থতা, অবিস্পান্তার্থতা, এই দকল ভাহার

था जिली। (राष्ट्रांत वर्ष कुःथन (स्वा) इत्र, खाहारक গুঢ়ার্থতা করে। বিবক্ষিতের অন্য শব্দার্থ প্রযুক্ত হইলে অর্থের যে মালিন্য তাহাকে বিশর্য্যন্তা-র্থতা বলে। পদের দন্দিহাথান বাচ্যত্ব হেতৃক অন্যবিধ অর্থকরণে অসমর্থ ইইয়া গুঢ়ার্থতা ও বিশয্যস্থার্থ তাকে গমন করে তাহাকে শংশায়-তার্থতা কছে। সজ্জনগণের উদ্বেদন ব্যতি বেকে ও দোষ উৎপন্ন হয় ৷ অন্তথে উচ্চাৰ্য্যাণ হইলে, অসাময়িকতা দোষ হয়। জ্বন্যার্থ প্রযুক্ত হইলে আম্যতা দোষ ঘটিয়া থাকে। বক্তব্য গ্রামবোচেরে কথন বা স্মরণ হইলে খলীকৃতা কহে। তাথার বাচকপদের সৃহিত সাম্তেতৃ তাহা ভিনপ্রকার। সাধারণ ও প্রাতিস্থিক (অসা-ধারণ) ভেদে অর্থের দোষ স্থইপ্রকার। বহুণ্যাণি উপালন্ত (তিরস্কারাদি দোষ) তাহাকে সাধারণ কছে। ক্রিয়ার ও কারকের জ্রণ, বিসন্ধি, পুন রুক্তরা, ব্যন্তসম্মত। এই পাঁচপ্রকার সাধারণ। ক্রিয়া শূন্যতা হইলে ক্রিয়া জংশ এবং কর্তা খাদি কারকের অভাব হইলে ভাউকারতা দে। বহয়। দ্দ্ধি দেনে ঘটিলে বিস্থা; সম্বার অকরণ কা বিরুদ্ধদ্দ্ধি করণ ভেদে বিশক্ষি দ্বিধ ৷ ক্ষপাদ হইতে যে অর্থান্তবাগন, তাহাই সন্ধির বিরুদ্ধতা। পুনঃ পুন: কথিত হললে পুনক্তেত্ব দোধ ১য়, অর্থার্থ্ডি ও পদার্ভিডেদে ভাষা ছুইপ্রকার। পদার্তিতে প্রযুক্তশব্দ ও শব্দান্তরছারা আবর্তিত হব না বাচ্যপদই অবেটিত (পুনরুক্ত) হয়। স্বন্ধ ব্যান্থানে ব্যক্তগ্ৰন্ধতা হয় ৷ সম্বন্ধা-ন্তুর বথন ও সম্বর্ধান্তর জনন এ তত্ত্ব যুর অভাব হুইলেও অন্তর্গাবধান হেতুক তাহা তিনপ্রকার। তনাধ্যে পদ ও বাকাদারা প্রতিজেদ আবার চুই-প্রকার। পদ ও বাকোর বাচ্য থাকাজফণীয় হয়

বলিয়া তাহা বিবিধা। পূৰ্ববাক্য ব্যুৎপাদিত ভ বুংৎপাদ্য এইরূপে ভেদ প্রতীয়মান হয়। হেতৃব ইফীঝাঘাত কারিত্বই অসমর্থতা কাব্যে অনিদ্ধত্ব, বিরুদ্ধহ, অনৈকান্তিকতা, সৎপ্রতিপক্ষত্র (বিরুদ্ধ কাথালিকত্ব বা প্রতিযোগিত্ব) কালাতীতত্বের সকর (মিশ্রণ) পাকে বা সমান পাকে মভাববত্ বিপক্ষে অভিত্র এইসকল দেখি সভ্যানণের মর্ম্ম ভেদী হয় না ; একাদশ প্রকার নির্থত্ব দুক্রা দ'ত দূষণীয় হয় না। দোষজ্ঞগণ, চুক্রলোকে গুঢ়া র্থ দোষ দর্শন করিষা, তুঃথিত হন না। প্র'সদ লোকশাস্ত্রে গ্রামাতা উদ্বেগকরী হয় না। ক্রিয়ার অধ্যাহার হোগে ক্রিয়াভ্রংশ লক্ষ্যনহে। আক্ষেপ বলে অধ্যাহ্যতকারকৈ ভ্রম্টকারকত। দোষ ধর্ভন্য নব। বিগ্রহম্বলে বিগত সন্ধিতা দোষের নিমিত হয় না। ক্ষুপাঠে ও ছুকাকাদিতে স্দ্ধ হাঁনতা দোষকরা নহে। অনুপ্রাদে পদারুতি এবং অর্থসংগ্রহে ব্যস্ত সম্বন্ধতা দোষ বলিশা গণ্য হয় না। প্রভ্যুক্ত শোভকরী ইয় এবং অর্থসংগ্রহে ব্যুৎক্রম (ক্রমবিপধ্যয়) লোষের নিমিত হয় না। বেখানে ধীমানগণের, বিভাক্তা, সংজ্ঞা ও লিঙ্গা জ'নত উৰেগ জন্মে না, দেগানে উপমান উপ মেটোর সংখ্যার ভিন্নত্ব দোষাবছ নছে। অনেকের একদারা এবং বহুর বহুদার।ই শোভাজনক হয়। কবিগণের সদাচার, সময় বলিয়া অভিহিত তাহা ধশ্মেরন্যায়, সংমান্য ও বিশিষ্ট ভেদে জুইপ্রকার। দিদ্ধ ও সিদ্ধান্ত সম্বন্ধীয় কবিগণের যাহা প্রসিত্ হয ভাষাই দামান্য সময। ধে হেতু দকা দিয়া ন্তক, অবিন্ট্রূপে স্ঞ্রণ করে, অথবা কিয়ৎ পরিমাণ দঞ্জন করে দেই হেছু দামান্য ছুই-প্রকার। কাছাদেরও ভ্রান্তিবশে যেরূপ, দেইরূপ ছেদ দিদ্ধান্ত হইতে অন্যথকার হয়।

মুনির তুর্কজান, কাহাবও ক্ষণভক্ষিকা মতি, কাহা-বও ভূতচৈতন্যতা, (ক্ষণে হয় ক্ষণে যায়) কাহারও বা জ্ঞানেব স্থাকাশতা আছে। কাহারও স্থান-রূপে পদার্থজ্ঞান হইয়াছে, কাহারও বা অনেক শব্দের সংগ্রহ মাত্র হইয়াছে, আর অর্হতমতা-নলন্বির এবং শৈব, বৈক্ষব, শাক্ত, দৌব দিকান্ত-গণের মতি নানাপ্রকার। জগতের কারণ ব্রহ্ম, সাংখ্যগণের প্রধান সহিত পুরুষ। এইরপ সর-স্বতানোকে (শান্ত্র্যধেন) প্রস্পার ব্যবহার করি-

তেছে। তাহারা যে ভিন্ন ভিন্নভাবে দর্শন করিতেছে তাহাকেই বিশিষ্ট কহে। অসংগণের
পরিপ্রহ হেছু এরং সজ্জনগণের অপরিপ্রহ হেছুক
ইহাব প্রভেদ তুইপ্রকাব। প্রত্যক্ষাদি প্রমাণঘারা যাহা বাধিত হয হাহাকে অসহ কহে।
যাহা কবিগ গব প্রাঞ্জ, যাহা জ্ঞানের দ্যোতনযরূপ, যাহা অর্থজিয়াকাবি, তাহাই যথার্থতঃ
সং কানিবে। যাহা জ্ঞান ও সজ্ঞানে এক সেই
যথার্থতঃ সং; বিষ্ণু অনাদিব হেতু, তিনিই শব্দালক্ষণের কাপান্ জানিবে। প্রা ও অপরা দ্বিধা

াদ্যা এই বিদ্যাকে ভান্যা মান্বগণ, ভ্রবদ্ধন
ইইতে বিষ্ণুক্ত হয়।

হ ৬্যাপ্লেকে আদিমধাপুরাণে ভাৰজানে কবি দোষ বিবেক নামক

ষ্ড **জোশদ্ধিক ভিল**তত্ম অধারে⊹

সপ্তপ্ৰাশদ্ধিক্তিশ্ভত্য অধ্যায়।

একাকর ভিধান।

অ'য় কহিলে, এশক্ষণাভ্যান মাতৃকাস্ত প্রান্ত বলিব। অশক্ষোবস্থ ও প্রতিষেধ বুঝায় আইহার অর্থ পিতামহে ও গাকো প্রান্তিত হয়। ষ্ব্যৰ আ দীমা ক্ৰোধ ও পীড়া। ই, কাম, ঈ, রতি ও লক্ষ্মী, উ, শিব। উ, রক্ষকাদি। ঋ, শব্দ, য়া, অদিভি। ৯, ২, এই উভয় **শব্দেই** দিভি ও গুছ (কার্ত্তিকেয়) বুঝারা। এ, দেবী। ঐ, যোগিন। ও, ওকা। ও, মহেশর। অং, কাম। অঃ প্রশস্ত। ক-ব্ৰহ্মাদি। কু, কুং দিত। খ, শূন্য ও ইন্দ্রিয়। গ, গন্ধ কৰিও গণেশ। গংগীত। গায়ন। ঘু ঘণ্টা কিক্ষিণীমুখ, ও তাড়ন। ১৯, বিষয়, স্পৃহা ও ভৈরব।চ,ছৰ্জনও নিৰ্মাণ।ছ,ছেদ।জি, জয়েবুঝায়।জ, গীত।ঝ, প্রশস্ত ও চুর্কল। ঞ, গায়ন। ট, গায়ন। ঠ, চন্দ্রমণ্ডল শুন্য, শিব, উৰজন। ড, রুদ্রে ধ্বনি, তোস। চ, চকাও ধ্বনি। ণ, নিক্ষর্ব, নিশ্চর। ত, চৌর, ক্রোড়, পূচহ। থ, ভক্ষণ। দ, ছেদন, ধারণ, শোভন। ধ, খাতা, ধুজুর।ন,রুল, ছগত।প, উপ্রন। ক্ঝঞা বায়ু। ফু, ফুৎকার, নিক্ষণ। বি, পক্ষ। ভ তারা।। মালক্ষী, মান, মাভা, ভাগে। য যভো (যা দেব রাদির জী)ও বীরণ। র বহিনাল, ইন্দ্র ও বিধাতা। ব-বরুণ,বিল্লেষণ। শ শ্যন। শং শুখ। स ⊂ाळे। म প বোক। म¦ लकारी। म (क्रीविलक হটলে) কেশ। হ ধারণ, রুদ্র। ক্ষ ক্র, অফব, নৃসিংহ, হরি, কেত্র, পালক।

একাক্ষর মন্ত্র দেবতা্ররূপ ও ভোগ মোকু | প্রদাযক।

হৈ হয় শির সে নমঃ এই মন্ত্র সর্প্রবিদ্যা । প্রদান করে। আকারাদি মন্ত্র সকল ও মাতৃকা মন্ত্র সকল উভ্যা। এক পদ্মে ঐ সকল মন্ত্র দাবা । নব ভূগার পূজা করিবে। ভগবতী, কাত্যায়নী, কৌশিকী, চণ্ডিকা, প্রচণ্ডা, হর নায়িকা, উগ্রা। পাববতী ও ভূগা। এই সকল শক্তিকে নব ভূগা। কহে।

ভ চণ্ডিকাটুর বিদ্মাহে ভগবতৈর ধীমহি, তল্প। ভুগা প্রচোদয়াৎ।

এই মাসু এবং ক্রমাদি ষড় সমস্ত্রে গণ গুরু ও গুরুক্রেমে এজিতা, অপরাজিতা, জয়া, বিজয়া, কাত্যায়নী ভদ্রকালী, মঙ্গলা, সিদ্ধিরেবতী, সিদ্ধাদি বচুকগণ, হেতুক, কপালিক, একপাদ, ভীমরূপ এই নব দেবতার ও দিক্পালগণের পূজা করিবে।

হীং সূর্গে ভূর্গে রক্ষণি স্বাহা, এই মন্ত্র, মন্ত্রার্থ সিদ্ধির নিমিত্ত হব। এই মন্ত্র হাবা গোরী, ধর্মাদি শক্তি ও স্কন্দানা শক্তির এবং প্রজ্ঞা, জানা, থ ক্রিয়া, বাক্, বাগীনী, জালিনী, কামিনা, কামমালা। ও ইন্দ্রাদি শক্তিব প্রকা কবিবে।

ওঁ গণ স্বাহা এই সূল্যন্ত্র বা গং গণপত্রে
নম:, এই ষ্ট্রুস মন্ত্র রক্ত খেত বস্তু এবং দক্ত, অক্ষ ও পরশুষারা উৎকট। গন্ধাদি গদ্ধে ক্ষায় এই মন্ত্র দারা ক্রেমে স.মাদক, গজ, মহাগণ পতি, মহোক্ত এই স্কল (দ্বগণেব অর্চনা ক্রিবে।

কৃষ্ণ ওকাষ একদন্ত ত্রিপুরান্তকায় শ্রান্দন্ত বিকট হর হাসায়। লখন, গাননায়, পদ্মদ প্রায়, মেবোল্কায় ধূমোল্কায়। বক্তু কুণ্ডার, বিদ্বেশরায় বিকটোৎ কট্যে গজেন্ত গমনান। ভূজগেন্দ্রহায় শশাক্ষধরায় গণ্ধিপ্তিমে স্বাহা।

এই স্কল স্থাহান্ত মন্ত্ৰে, হিল হোমাদিছার।
পূকা কবিলে স্ববার্থ সিদ্ধি হয়। অথবা বীজ
সংযুক্ত ও নণোহত্তক সেই স্কল কাদি আদা মন্ত্ৰ মন্ত্ৰাৱা বিবেফ, ছিমুখ, ছিন্যন্মন্ত্ৰ স্থক্ হয়।

স্থান বাহ। কাত্যাগনকে কহিয়াছিলেন, **একণে** আমি সেই ব্যাকরণ শাস্ত্র বর্ণন কবিব।

জ্জালেবে আদিনহাপুৰাণে একাক্ষৰা ভিধান নাম্ক স্থাণগাশদ ধক্তিশত্তম অধ্যয়।

অফপঞাশদধিকত্রিশততম অধ্যায়।

বাকরণ।

স্কুন্দ কহিলেন, কাত্যায়নের এবং বালকগণের । বোধের নিমিত্ত সিস্কুশব্দরূপ সার ব্যাক্রণ বলিব। প্রভাগোরাদি সংজ্ঞা সকল শাস্ত্রে সমাকরূপে।

ব্ৰহ্ত হয় ৷ ভদ্যথা—

অ ঈ উ পিগা৯ ক এ & ঐ ওঁচ চ গ ন র ট ণান এ মে ঙ গানমা কা ভ এং ঘোষ ঘ ঘ ঘ গ ভ দ শেখাযা ছ ঠথা চটি ত কে পোযা শা যা দা হা এই পাতিয়াহার।

উপদেশ বিষয়ে ইৎহলন্ত মচ্ ও অফুসাসিক। হয়।

আদি বর্ণ গ্রহণ করিয়া অস্তানার্লর যোগে, দেই চুই বর্ণের মধ্যগত সমস্ত বর্ণ ই বুঝাইবে। তাহাতে স্বর্ণের গ্রহণ বুঝাইবে।

তদ্যথা---

অণ্(১) এঙ অট্যঙ ছর্ ঝম্ ভম্ অক্ ইক্ অণ্টণ্যণ পরণকার ছারা বোদ্ধা । অমৃ যম্ ডম্অচ্ইচ্ ঐচ্ অয্মষ্ ঝষ্ থষ্ জব্ ঝব্ থব্চব্শব্ অস্হস্বস্ ভস্ অল্ হল্বল্ রল্ ঝল্ সল্ এই সকল প্রত্যাহার।

ই গ্রাথেয়ে আগদমগ্রাণে বাকেশের প্রকাশন নামক অইপঞ্লেদ্ধিক ক্রিলভ্রম আগায়।

⁽১) অণ্ ৰলিলে অইউ ণ বুঝাইবে, কিন্তু কাৰ্য্যে ণ এৰ গ্ৰহণ হটবে না, ভাহাতে গ কারের ইং হটবে। এইক্প অই বলিলে আ অৰ্ধি ট প্রগৃত্ব সম্ভ বুণ গুলিই বুঝাইবে।

ঊনষ্ট্যধিক্ত্রিশতভ্য অধ্যায়।

সন্ধি সিশ্বরূপ।

কল কহিলেন, স্বরসন্ধি আদি ক্রমে সন্ধি সিধা ক্রপ বলিব। (১) দগুগু, সাগভা, নদীহতে, মধুনক পিতৃষভ, ৯ কার, তবেদং, সকলোদক, অর্কটোহয়ং, তবলুকার, সৈষা, সৈন্দ্রা, ত্রেবাদন, থটোঘ, ইত্যেবং, ব্যস্থা, বস্থলংকৃত, পিত্রেথাপন দাত্রী, নায়ক, লাবক, নয়, ত ইছ,তয়িছ ইত্যাদি। তেহত্ত যোহত্ত ভলেহ কল প্রকৃতিনো, অহো এহি, ল অবেহি, ই ইন্দ্রক, উ উতির্চ ববী এতো বাযু এতো বনে ইনে, লমী এতে, যজভূতে এহি দেন ইমন্ত্র।

ব্যঞ্জন দল্লি বলিব। বাগ্যত, অজেক মাতৃক যড়েতে, তদিমে, বাঙনীতি ও ধন্মুখাদি, বাঙমনদ, বাগ্তবাদি বাক্লাক্ষা। তচ্ছরীর তল্পনীতি, তচ্চ রেচ্চ, তচ্চরণ, ক্রঙগ্রেষ্টে, ভুগলিছ, ভবাংশ্চরন, ভবাংশ্চলে, ভবাংশ্চীকা, ভবাংগ্ঠক, ভবাংশ্টীপ্ ভবাংশ্বেমাৎ ভবাংলোখা, ভবাঞ্জয় ভবচ্ছেতে ভবা অংশতে ভবাতাশোতে ভবাতীন স্বন্ধ্রতাক্ষরিন্যাদি। তদনতার বিদর্গদিল্লি জানিবে। কশ্ছিলাৎ কশ্চকট কন্ঠ কন্থও হয় কশ্চলেৎ ক খনেৎ ক করোতি আ ক পঠেৎ ক ফলেড (২) কশ্বশুরং কং শশুরং ক্স্নাবরঃ কঃ সাবরঃ। কঃ ফলেড

কঃ শয়িতা কোহত যোহধা ক উত্তমঃ। দেবা এতে ভো ইছ সোদরা যান্তি ভগোত্রের । স্বদূরতি রক্ত বাস্ত্রতি পুনর্নহি পুনরেভি স যাতীহ এয যাতি ক ঈশরঃ জ্যোতারূপ তবছতে মেজধী শিছত মহিদ্দং।

ইতাংগ্রে আদিমহাপ্রাণে বাাকরণে সন্ধি সিভরূপ নাগ্ৰু উনষ্টাধিকজিশতত্য অধান।

ষ্টাধিকত্রিশতভ্য অধ্যায়।

হুবিবছক্তি সিদ্ধরূপ।

স্বন্দ কহিলেন, ছে কাত্যায়ন ! আমি তোমাকে বিভক্তি সিদ্ধরূপ বলিব। বিভক্তি চুইপ্রকার হুপ ও তিঙ। স্থাপের সাত বিভক্তি যথা হ ঔ জন প্ৰথম্৷ অমু উট শদ হিতীয়া টা ভ্যাম্ ভিস্তৃতীয়া। ঙে ভাাম্ভাস্চতুথী ভণি ভাাম্ ভাস পঞ্ম ওস তথ্য মধ্চী। তিওস ত্রপ মপ্রমী। এইদাত বিভ'ক্ত (১) প্রাতিপদিকের উত্তর প্রযুক্ত হয়। প্রাতিপাদিক চুইপ্রকার অজস্ত ও হলন্ত। ভাষাদের প্রত্যেক আবার পুর্ণলঙ্গ, স্ত্রীলিঙ্গ ও ক্লীবলিঙ্গ। তাহাদের মধ্যে যাহার। নায়ক (প্রধান) অর্থাৎ ব্যাকরণে যাহাদের লক্ষণ করিয়া রূপ প্রদর্শিত হইয়াছে; অন্যদকলকে ভাছাদেরই ভুলাদি কথিত হইয়াছে তাহাদের ! বিষয় উক্ত হইতেছে। অনুক্তসকল উক্ত সকলের । মভ, যেখানে প্রভেদ খাছে তথায় দেই প্রভেদ উक्त इहेश शास्त्र । नांत्र विकत्त यश द्वक, मर्ख, পূৰ্ব্ব, প্ৰথম, দ্বিতীয়, তৃতীয়, খণ্ডপা, বহুি, স্থা, পতি অহঃপতি. পটু, না, আমনী, ইন্দ্র, খলপু, মিত্রভূ, স্বভূ, স্বভী, স্বাধী, পিতা লাতা, না, কর্তা, া

⁽১) দত অগ্র দতাগ্র; শা আগতা — নাগতা, নদী ঈহতে, নদী হতে; মধু উদক্ — মধুদক: এইরপ বিগ্রহ বিশিষ্ট পদ, মূলে প্রদত্ত হয় নাই: সিদ্ধান্দ প্রদত্ত হইরাচে, অতএব অয় বাদে সিদ্ধান্দ প্রদত্ত হইল। আর 'সাগতা' ইভাদি পদেব অর্থ ক্রিয়া অন্তবাদে প্রদান ক্রিলে, পদ শেরণ খাকে না স্তবাং স্থিব উদাহ্বণে গ্রহণ করা ব'ইছে পারে না, অসভাা ঐ ভালে সংস্তুত পদ প্রদত্ত হটবে। যে ভলির স্ভব তাহাদি গকে বিভক্তি ব্জিছ ক্রিয়া প্রাদক্ত হটবে।

⁽२) বজা ও গজকুন্তাকৃতি বর্ণবর বেদ শালে ব্যবহৃত হয়, উহারা বিদর্গ দক্তিৰ মধ্যে সঙ্গিবিষ্ট ।

^{(&}gt;) व्याचिनामिक-वस्त्रवाहक वा दश्य विद्याप वाहक।

ক্রেন্টা, নপ্তা, হুরা, রা, গো, দ্যো, ওয়ো স্বরা-স্তের মধ্যে ইহারই নায়ক।

ञ्चाक्, इक, शृषः, मञाष्ट्रे बना बाक्, अरव्ह, अन, मक्रद, ভवन्, मीवान, ভवान्, मनवान्, शिवन छ्रा-বান, অঘবান, অববান, বহিমান, সর্ববিং, হপুং, इनीमा, कुछो, बाका, धा, धूना, भगवा, शृषा, হকৰ্মা, যন্ধা, হৰৰ্মা, হুধনা, অৰ্থানা, বুত্ৰহা, পছাঃ স্ককুদাদি পঞ্, প্রশান্, স্তান্ পঞাদ্য, হুগী, হুরা,হুপু চক্রমা, হুবচা, শ্রেয়ান, বিদ্বান, উশনাঃ, পেচিবান্, গৌরবা, অন্ডান, গোধুক, মিত্রপ্রক, খলিট্। জীলিকে, জায়া জরা, বালা, এড়কা, বুদ্ধ, ক্লেবা, বছরাদা, বহুদা, মা, वालिका, भाषा, दकीभूमभन्ना, मर्का, भृक्षा, अन्। বিতীয়া, তৃতীয়া, বুদি, জী, জী, নদী, স্ধী, ভবঙী দীণান্তী, ভাতী, ভান্তী, যান্তী, শুরতী, তুদতী, কৰ্ত্ৰী তুদন্তী, কুৰ্ববৃত্তী মহী, রুদ্ধতী ক্ৰ্ৰাড়তা লাস্ত্ৰী পালয়ন্তী হ্ৰাণী গোঁৱা, পুত্ৰৰতীনী বধু দেবতা, । ভু, ত্রি, দ্বি, কতি বর্ষাভূ স্বদা মালা ববা গে। নৌ, বাক্ ত্বক প্রাচী অবাচী ভিরশ্চী, উদীচী, শরৎ, বিত্যাৎ দারিং যোষিৎ, আলিবিং সম্পাৎ দুশাৎ, যা, এষ। সা বেদবিৎ দংবিৎ বহুবী রাজ্ঞী যুক্মৎ (ডুমি) অস্থাদ (মামি) দীমা পশ্চাদি রাজী ধুঃ (ধুব্) পঃ (পুর) দিশা গিরা চতুর্ বিছুষা কা ইয়ং দিক্ দৃক্ তাদুশী, অদদ (এ) এইদকল শব্দ জ্রীলিঙ্গের नायक। क्रीविलिक्षत नाग्नक गणी, कुछ, मन्द, নোমপ দধি, বারি, থনপু মধু ত্রপু কর্ত্ত, ভর্ত্ত, অতিবক্ল পরঃ, পুরঃ প্রাক, প্রত্যক তির্যাক, উদক জগৎ জাগ্রথ সকৃৎ স্তদম্পথ হৃদ'ত অহঃ কিৎ ইদং ষ্টু দার্প শ্রেয়: চতুর অবস অন্য ও অপর সকল এইপ্রকার। এইসকলের উত্তব এবং অন্যান্য ॥ প্রাতিপাদিকের উত্তম প্রথমানি বিভক্তি দকল

প্রযুক্ত হয়। বাহা ধাডুপ্রত্যয় হীন ভাষাই প্রাতিপদিক, প্রাতিপদিকের উক্তর স্থলিঙ্গার্থ বচনে প্রথমা বিভক্তি হয়। সংঘাধনে উক্তকর্মে ও কর্ত্তায় প্রথমা বিভক্তি ছইযা থাকে: বাহা কৃত হয়, তাহাই কৰ্ম, কৰ্মে দিতীয়া বিভক্তি হয়, যাহারদ্বারা কৃত হয় তাহাকে করণ, যে করে তাহাকে কর্তা করে। অনুক্ত করণে, তিওকুং ও তদ্বিতের যোগে তৃতীয়া বিভক্তি হয়। কর্ত্তু-কারকেও (কর্মাণিণাচ্যে) তৃতীয়া হয়। সম্প্রদানে ছতুর্বী হয় যাহাকে দানেজ্যা করা যায় তাহাকে সম্প্রদান বলে যাহা হইতে অপগমন গ্রহণ ও ভয হ্য তাহাই অপাদান, অপাদানে পঞ্মা বিভক্তি হয়। স্ব স্থামি আদিতে (সম্বন্ধাদিতে) ষ্ঠা বিভক্তি হ্য যে আধাৰ সেই অধিকরণ তাহাভে সপ্রমী বিভক্তি হয়। এক অর্থে অর্থাৎ একবস্তু বুঝাইলে একবচন দুই অর্থে দিবচন, বহু অর্থে বহুবচন চ্য। অনন্তর শিদ্ধারপ বলিব; রুক্ত সৃষ্ট অখুবাহ: অৰ্কঃ হে রবে (সম্বোধন) হে দিজাত্যঃ (বহুবচনে সমোধন) বিশ্লো (খিবচন) গজান (খিতীয়ার বহু বচন) মহেক্রেণ যমাভ্যাৎ কেভাঃ ধর্মাৎ হবো রতিঃ। শরাভ্যাং পুস্তকেভাঃ অর্থস্থ ঈশ্বযোঃ গতিঃ। বাশানাংসজ্জনে প্রতিঃ (বালকগণের সক্ষনে প্রীত হয)। হংগ্যোঃ কমলেয়ু (কমল দকলে খ্রীতি হয়)। এইরূপ কাম মহেশাদি শব্দ मकल तृष्क भारकत जूला। मार्ख्य विरूप मकारेप দর্ববিশ্বাং কতরঃ দর্বেষাং স্বং বিশ্বস্থিন; অবশিষ্ট রূপ সমুদয় বৃক্ষ শব্দের ভূল্য। উভয় কতর, কতম, অন্তরাদি শব্দ সকল এইরূপ। পুর্ব: পুর্বাত্ম পুর্বাত্মাত্ম মাগত: (পুর্বা হটতে আগত) পূর্বে বুদ্ধিঃ পূর্ববিদ্যান স্ববশিষ্টরূপ সমুন্য मर्वि भटमत जूला। श्रेत भवतानि भम मक्स अवः

দক্ষিণ উত্তর অন্তবাদিশব্দ সমুদ্য এহরপ। অপর অধরঃ নেমাঃ প্রথমাঃ প্রথমে অগশিন্ত সমুদ্যরূপ অর্কশিব্দের তুলা। চরমাদি অল্লাদি ও নেম আদি শব্দ দকল এইরূপ। দ্বিতীয়ালৈ দ্বিতীয়ার দ্বিতীয়াল দ্বিতীয়ার দ্বিতীয়াল দ্বিতিয়াল দ্বিত

কাণঃ, অগ্নিঃ অরয়ঃ হেকবে, কবিৎ অগ্নী, ভান্ হরীন্ দাত্যকিনা হৃতং (দাত্যকি কর্তৃক হৃত্ত) विकार विकि:, (महि वहूर्य (श्रीवादक मां e) यः সমাগতঃ (যে আগত হইয়াছে) অলেঃ, অলেঃ, ব अधीनाः, करवी, करवाः, कवियु। अर्थाः, বভাৰি, তৃণীৰ্তি সমুতি শব্দ এইরূপ। স্থা, স্থালো, স্থান্ স্থান স্থা, স্থাঃ স্থাঃ, স্থাঃ অব্শিক্টরূপ সমুদয় ক্রিশক্রের ভুল্য। পত্যা, পরে, পড়াঃ পত্যোঃ, অবশিষ্ট অগ্নিশব্দের अना। (वी (वी वां आप वां जा: वर्षाः वर्षाः, এर भक्त विवहरन अयुक्त हरा। जयः जीन् जिण्डिः, ভিভঃ অয়াণ∜ং ভিষু। ক'ত কভি শব্দ কভিবৎ (अन नगुनाय तार वह्वहनान्छ। नीः निर्दा नियः; (इ नीः निष्यः निष्यो निष्यः : नीडाः नीडि ; निष्य নীভাঃ নিয়াং নিয়ি নিয়োঃ। সুজ্রীঃ স্থাঃ প্রভৃত্যঃ আমনীঃ পূজয়েদ্ধরিং (গ্রামনায়ক হরিপূজা করিবে) আম্বাঃ আম্বাঃ আম্বাং আম্বা আম্বীভিঃ গ্রামণ্যঃ প্রামণ্যাং দে নানী আদি শব্দ এইরূপ। कपृः कपूरतो ; खन्नस्वतः वनस्वः यनस्वतः यनस्वता স্রস্ত্রি প্রতিভূ আদি শকের এইরূপ। খলপুঃ খলপেণা ভোষ্ঠো খলপবং খলপিষ্ঠব ; শরপূ-আদি

শব এইরপ। ক্রোফী, ক্রোফীরের, ক্রোফীরঃ
ক্রোফীন্কোজীনা, ক্রাফীর। ক্রোফীনাং ক্রোফীর।
পিতা, পিতরো পিতরঃ হে পিতঃ! পিতরো,
পিতৃন্, পিতৃঃ পিতৃঃ পিত্রোঃ পিতৃণাং পিতরি
ভ্রাতৃশন ও জামাতৃ আদি শালের এইরূপ। নৃণাং
ধূণাং কর্তা কর্ত্রাকের কর্ত্রণাণ কত্রি ইত্যাদি।
উদ্যাভা স্বদা, নপ্রা প্রভৃতিররূপ কর্ত্র্ তুল্য।
স্বরাঃ স্বরায়া স্বরায়ঃ স্বরায়াং স্বরায়। গোঃ,
গাবো গাং গাঃ গবা গোঃ গবোঃ নবাং গবি দ্যোঃ
গোং ইহাদেররূপ এইপ্রকার। ইহারা স্বরাস্ত্রপুংলিক্রের নায়ক।

স্থাক্ স্বাচে স্বাচা স্বাগ্ভ্যা স্বাজ। দিক্ আদিররূপ এইরূপ প্রাঙ্গ প্রাঞ্চ ভো অছ(ওচে পূর্বদিকে যাও) প্রাগ্ভ্যাং প্রাগ্ভিঃ প্রাচাং প্রাচি প্রান্তত্ত প্রাণ্ডকু। এইরূপ উদ্ভ উদীচী বা সমান্ত প্রতাক্ সমীচী তির্যাঙ তির চঃ সগ্রন্থ বিশ্ব করে পূর্ণ কুলা। অদুদান্ত অদুমুহ জমু মুন্ত অদক্রাঞ্চ: অমুদ্রীচঃ অদক্রাগ্ভ্যাং পূর্বাহুলা। তত্ত্ট ভত্ত ধেষা ভত্ত ছভ্যাৎ সমাগতঃ (ভত্তৃফা-তুব জনহয়েব সহিত সমাগত হইথাছে) ভত্ত্যি, তত্ত্ত্তি কাষ্ঠ হড়াদির এইরূপ। ভিষক, ভিন-গভাা ভিষজি জনাভাক আদির এইরপ। মকং মুরুদ্ধাং মুরুতি শুকুছিত।দির এইরপ ভ্রান ভবস্তো ভবতাং ভবন ভবতি মহানু মহাজে মহতাং ভগবদানির এই রূপ। মঘবান্ মঘবস্থে অগ্লিচিৎ **बाहे बाहेश्यकांत्र (तमरिष्ट छ छञ्जतिष (तमनिमा**ण অন্যান্যরূপ এই একার এইরূপ দর্ববিৎ রাজা রাজানে রাজঃ রাজি রাজনি রাজন যভা যভানঃ (महेक्कभ। कती, मधी मधिरमी श्रेष्टाः श्रष्टारमी পথঃ পথিভ্যাং পথি মন্থাঃ ঋভুক্ষাঃ পথাাদিসক-। লের এইরপ। পঞ্ পঞ্পঞ্জিঃ প্রতান্ প্রতানে

প্রতানভাঃ হে প্রতান ! হংশর্মণঃ আপঃ । অন্তিঃ প্রশান প্রশামি কঃ কেন কেমু অন্যান্যরূপ স্ক্ৰিৎ অধা উন্ম ইমান অনেন শাভাং এভিঃ, অবৈশ্বভাঃ অসা অন্যোঃ এষাম এষু চমারঃ চতুর চতুর্ণাং চতুর্ অগী: অগিরি অন্যো: অদিবে হুত্যভাং বিট বিশে বিটহ যাদৃপ: যাদৃগভাাং বিভ্জ্ঞাং ষট ষট ষ্পাং ষটায় প্রবচাঃ প্রবচস স্থৰ-চোভ্যা হে হৃষ্চঃ হে উশন্ব উশনাঃ উশনদি। পুরদংশা অনেহা হে বিছন্ বিছাৎস বিজ্যে নমঃ (বিদ্বানকে প্রণাম) বিষন্ত্রাম্ বিদ্বংস্থ বস্থবিবান এইরূপ পেচিবান ভোয়ান ভোষা গো ভোষা গঃ অদে অমু অমী অমুং অমূন অমূনা অমীভি অমুস্থৈ অমুস্মাৎ অমুস্ত অমুংয়া: অমীষাং অমুস্মিন এইরূপ গোধুক গোধুগ্ভি: গোধুক্ষু এইরূপ মিত্রছুহো গিতক্ষণ মিত্রপ্রসাং মিত্রগ্রগভিঃ চিত্তংগির খলিট খলিড্ভাং খলিছি অন্ডান এইরূপ | অন্তুৎকু অক্তন্ত ও হলন্ত সকলের রূপ প্রদর্শিত হইল্ এক্ষে স্তালিক্ষেররপ বলিব।

ইত্যাগ্রেষে আদিমহাপ্রণাণে ব্যাক্রণে পুর্ণাঞ্চণক সন্ধর্মণ ন্যেক যথ্টাধিক জিল হত্য অধ্যায়।

এক্ষক্ট্যধিক**ত্রিশত হন অধ্য র**।

ক্রীলিঙ্গ শব্দসিদ্ধরূপ।

ফল্দ কহিলেন, রমা শব্দেররূপ যথ।—বমা, রমে রমাঃ বমাঃ বমাঃ রময়ারমাভ্যাং রমাভি রমাটে রমাভাগং রমাছি রমাটে রমাভাগং রমাছাং রমাহা কলাদের এইরূপ। জরা জরগৌ জরে জরদঃ জরঃ জরাং জবদং জরাহ্ব নর্বা দর্বের, দর্বিয়া দর্বিসা দেছি (দকল দ্বীকে দাও) দর্বিসা। গ্রেষ্বা অবশিষ্ট সমস্তরূপ রমা প্রের ন্যায়।

(च द्य किन्टगर युक्तो युक्ता। युक्तस्य युक्तिः युक्त दर् মতে অবশিষ্টরূপ কবি বা মূনিশব্দের তুল্য। মদী मालगी नहीर ननी नश्य सहीं छ मटेला सला नहीं व कृमात्री जुड़नी जानित এই इत्ना। 🕮 खिर्द्या खिय প্রিয়া জিমে প্রিমে জীং দ্রিমং জীঃ দ্রিয়া দ্রিয়া खिटेश खिशा छोगां खिशार धानगाः त्यटेश त्यनत्त **ভবু অংখী জবু অধুনাং কলংপিব (জবুদকলে**ব ফলপান কর) বর্ষাভোগ পুনর্ভোগ মাড় গোনে বাগ্ বাচা বাগ্ভি বাক্ষু অ্রগভ্যাং অজি অলো বিষয় : বিষৎক ভবতী এবং ভাষীও হয় : দীবাতী ভাতী ভাতী তুদতী তুদতী কৃদতী কৃদতী तिरी गृह्ण Cहाइयसी मूसम मूससाः मूर्य न विट⁴न বিদুষী কৃতি সমিৎ সমিল্লাং সমিধি সীমা সাল मीयि मामनीच्याः कक्छाः का हैयः पाछाः আহে সীভ্যাং গিবা গীর্ স্কৃত্ত্পু পুরা পুরি দৌ ছভা: বিবি ছাৰু ভাদৃশ্যা ভাদৃশী দৃশ যাদৃশ্যাণ य पृत्री छ्वराज्ञार छ्वड्छ भरती अगुअग्रज्ञ अगृजि अगुरा अगुरगाः।

ই ত্যালেরে আদিনহংপ্রাণিব্যক্তিন্ত্রী পিল্পক্লিজ্জ নামক এব্যুক্ত বিশ্বিশ্বতম অধ্যায়।

দ্বিষ্ট্যধিকত্রিশতত্র অধ্যায়।

নপু॰মক মিদ্ধরূপ।

স্কন্দ কহিলেন, নপুংসকলিঙ্গে কিং কে কনি
কিং কে কানি জলং সৰ্বাং সৰ্ববে পূৰ্বাদির এইরূপ সোমপং সোমপাসি আমণি আমণি আমণি
আমণীনি বাবি বারিণী বারীণি বারিণাং বারিণি।
শুচ্বে শুচ্নে মূছনে মূদ্বৈ ত্রপুল ত্রপুণাং
খনপুনি খলপু কত্রা কর্তুণে কত্রে, অভিবি
অভিবিনাং অভিনী অভিনিনী স্বচাংসি স্বাংশ

হৎ যথ হয়ে তৎ কর্মাণি ইদং ইমে ইমাণি।
সদৃক মদ অমুনা অমুনি অমুনা অমীষু অহং আবাং
বয়ং মাং আবাম্ অস্থান্ ময়া আবাভাগং অস্থাভি
মহং অস্থাভাম্ মৎ আবাভাগং মৎ অস্থাৎ মম,
আবামো অস্থাকং অস্থান্ত তংলা যুবাং যুবাং যুবাং যুবাং যুবাং যুবাং যুবাং যুবাং তব,
যুবানে যুমাকং হয়ি যুমান্ত একলে ওসকল উপ
লক্ষ মাত্র উক্ত হইল। অকন্ত ও হলন্ত বহুতব
প্রশিদ্ধ আছে।

ইতানে র আ দ্নত পুরাণে ব ক্ষণে নপুংসঃদিক্ত্রপ নামক বিষয়াধিকতিশ্ব দ্ব তথ্যায়।

ত্রিষ্টাধিকত্রিশতত্ব অধ্যায়।

কারক।

দশদ কহিলেন, বিভক্তি ও অর্থদহিত কারক কহিব প্রাণণ কব। ছেম্লার্কি। এথানে প্রাম্ আছে (প্রাথাসহ) প্রীনস্থিত বিষ্ণুকে প্রাণাম করি, সত্ত্র কর্তা, বিদ্যান্ত কৃতিগণের উপাসনা করি তেছে। হেতুক্তা হিত পাওগাইতেছে; কর্ম কর্বাচো প্রাকৃত বুদ্ধি স্বয়ং ভেদ কনিতেছে, তৎক্তৃক ভিদামান তক স্বয়ণ ভেদ হংকেছে। অভিহিত কর্তা উন্ম অনুক্ত কর্তা স্বয়ম, গুকু কর্তা এইরূপে পাঁচপ্রকাব কর্ম্ম সপ্তবিধ তাহা প্রাণ কব, ঈপ্সত কর্ম্ম ঘণা মতি হবিকে প্রদ্ধাা করিতেছে। অনীপ্রিভ কর্ম্ম ঘণা অহিকে স্বেগে লক্ষ্মন করিতেছে, ঈপ্সিত ন্য অনীপ্রিত্ত ব্যুক্ত এরূপ কর্ম্ম ঘণা চুন্ধা রক্তঃ ভক্ষণ করিতেছে, অক

থিত কর্ম যথা গোপাল গো দোহন ও ছয় দেছেন কর্তৃকর্ম যথা গুরু শিষ্যকে আম পাঠাইতেছেন অভিহ্ত কর্ম যথা শ্রীর নিমিত ছরির পুলা করিতেছে। অনভিহিত কর্ম যথা হবির সর্ববিশ্বাস স্তব করিবে। করণ চুইপ্রকার বাহ্ন ও অভ্যন্তর, চক্ষুদারা রূপ গ্রহণ করিতেছে ইহাই অভ্যন্তর করণ এবং দাত্রমারা ধাম ছেদন করিতেছে ইছাই বাহ্যকরণ। সম্প্রদান তিন-প্রকার, মানব বিপ্রকে গোদান কবিতেছে ইছার প্রেরক, নুপতির নিমিত দাস ইহাই অনুমন্ত্রীক এবং সজ্জন প্রভুকে পুষ্পারাতী প্রদান করিতেছেন ইহাই অনিবা কর্ত্তক সম্প্রদান অপাদান গুই-প্রকার্চল ও অচল । ধারমান অখ হইতে পতিত হইজেছে, ইহাই চল: সেই বৈফব আম হইতে আগমন করিতেছে ইঃই অচল অংশনান। অধি-করণ চারিপ্রকার, দধিতে ঘূত আছে ও তিলে टेडन चाए इंश्वि गानक, गुरह धारक, किनवाक থাকে ইহা ঔপশ্লেষিক, ভালে মৎস্ত ও বনে দিংক থাকে ইছা বৈষ্যিক, গঞ্চায় ঘোষ বাদ কৰে ইছাই স্থিত, উপচারিক এই প্রকার। অত্যক্ত কর্তাস তৃণীয়া বা যন্তী বিভক্তি হয় (লোকে বিষ্ণুঃ সম্পূ-জ্যাত) লোকসমূহ কর্ত্তি বিষ্ণু সম্পূজিত হন ! (তেন) তৎকর্ত্তক বা (তন্ত্র) ভাছার গন্তব্য উক্ত কর্তৃকশ্রে প্রথমা বিভক্তি হয় যথা, মবগণ হবিকে প্রণাম ক'রবে। হেত্তে তৃণীয়া বিভক্তি হয়, (খামেন বদেৎ) অন্তেত্ বাস কৰিতেছে তাদৰ্থে লথাৎ নিমিভাথে চতুথী বিভক্তি হয় মথা (রক্ষায জলম্৷ রুক্ষের নিমিত জন পৰি উপ ও অ'ঙ় ইত্যাদির যোগে প্রশ্না বিভাক্ত হ্য (প্রি:'ান্দ রুষ্টো (দ্বোহ্য°) এইদেব, পুর্বের গ্রামের চত্ত | দ্বিকে প্রবল রৃষ্টি কবিষাছেন (আবনাদ রুকৌদেব) |

দেব বনব্যাপিয়া হৃষ্টি করিয়াছেন। এইরূপ উপ প্রামাৎ (বিষ্ণোখতে মুক্তির) বিষ্ণাভিরেকে মুক্তি নাই (হরেরিডর) হরির অনাতর। বিনাদির যোগে তৃতীয়া ও পঞ্মী বিভক্তি হয় (বিনা জী, ভিয়া ভিয়া) জীবিনা কর্মপ্রবচ্নীয়া-ব্যের (অনু অভিত) বোগে বিতীয়া বিভক্তি হয়। (সম্বৰ্ষণ বোদার) হোদ্গণ অৰ্জনের পশ্চাৎ (গ্রামম্ভিত ঈরিতং) গ্রামের অভিমুথে প্রেরিত। नवः चारा, श्रधा, श्रस्ति, वस्ते व्यक्ति द्यार्श চতুৰ্থী বিভক্তি হয়। দেবায় নমঃ, দেবতাকে প্রাম, তে স্থায় তোমার মঙ্গণ হউক। ভাব-বাচক ভুমর্থে চতুরী হয়, পাকায় বা পক্তয়ে যাতি পাকের নিমিত গমন করিতেছে। সহযোগে হেরথে কুংদিৎ অঙ্গে ও বিশেষণে তৃতীয়া বিভক্তি হয়। "পিতাহগাৎ সহ পুত্রেণ" পিতা পুছের স্হিত গমন করিয়াছেন অক্লাকাণঃ, এক চলুদারা ভার্গ্রেক शीन, शत्या हरि, शना विभिन्छे हति। ভূত্য বাদ করে কালেও ভাবে সপ্তমী হয়। বিষ্ণোনতে ভবেমুক্তিঃ, বিষ্ণুতে নত হইলে মুক্তি ट्या वनरस्र म भरुडा इतिम्, वमस्रकारण ८म হরি শকালে গমন করিয়াছে, সম্বন্ধে যতী এবং নির্দ্ধারণে ষষ্ঠা ও দপ্তমী বিভক্তি হয়, নৃণাং স্বামী নুষু স্বামী, নরগণের মধ্যে স।মা ; নৃগামীশঃ সতাং প্রিঃ, নুগণের ঈশ্ব ও সক্ষনগণের পতি। গোযু সুতো গ্রাং সূতঃ, গোগণের মধ্যে সূতঃ, রাজ্ঞাং দায়দঃ রাজগণের দায়দ। ভারদা ছেতোর্বদতি, অমের হেতৃ বাস করিতেছে। স্মরণারের ক.স্ম ষষ্ঠী হয় মাড়ঃ স্মরতি, মাতাকে বা মাতার স্মবণ করিতেছেন। গোপ্তারং স্মরতি বক্ষা কর্ত্তাকে শাবণ কৰিতেছে কৰ্ত্তা ও কৰ্মে নিভ্য হয় অপাং ভেত্তা, জলের ভেদ কর্ত্তা। তবকুতির্ণ তোমার

কৃতি নর, এইরূপে নিষ্ঠাদিতে কুক্তি প্রভৃতিতে বন্ধী হয়।

> ইত্যায়েরে আদিমহাপুরাণের।কিবলে কারকনামক থিষটাধিকজিশততম অধ্যয়ে।

চতুংৰ ট্যাধিকত্তিশতত্য অধ্যায়।

স্থাস |

কন্দ কহিলেন, ষট সমাস বলিব, ভাহা আবার ষ্টাবিংশতি প্রকার। নিত্য ও অনিত্যভেদে ध्वरः लुक ६ अनुकरङ्ग आवात पुरे पुरे धानाव হয়। কৃষ্ণকার হেমকারাদি নিত্য সমাস নিষ্পন্ন রাজার পুরুষ, রাজপুরুষ ইহাও নিত্য কঠান্রিত ইহা পুক্ সমাদ, কঠেকালাদি অলুক সমাদ। প্রথমাদ স্পবিভক্তির সহিত তৎপুক্ষ অই পুৰ্বাং কায়ন্ত এই বিগ্ৰহ্নাক্যে পূৰ্বা কাষঃ এইরূপ অপরকাষঃ, খ্রমরকাষ অর্দ্ধং কণ্যা ুত্র্যা ভিক্ষায়া, ভিক্ষাত্রম্যু আপুপর জীবিকঃ এই দকলই প্রথম। তৎপুরুষ সমাদ। ব্দরাশ্রেত বিতীয়া ভৎপুরাষ বর্ষয়োগ্য বর্ষভোগ্য ও ধাতার্থে তৃতীয়া বিষ্ণুলি চহুর্থী রুকভীতি পঞ্চমী রাজঃ পুমান্ রাজপুমান্ ও রুক্ষের ফল বুক্ষল অক্ষণেতি সম্প্রীতৎপুরুষ অহিত নঞ সমাস নীলোৎপলাদি কর্মধার্য স্মাস স্প্রপ্রকার বিশেষণ পূর্ববপদ, বিশেষণোত্তরপদ যথা বৈযা করণখদূচি, শীভোফ দিপদ উপমান পূর্বাপদ শভা পান্তর, উপমাণোভরপদ যথা পুরুষব্যান্ত। সন্তা-বনা পূৰ্বপদ যথা গুণরুদ্ধি গুণ ইহাতে রুদ্ধিবাচ্য স্বন্ধুক হুহাদ তুলা, ইহা অবধারণ পূর্ব্বপদ।

বহুরীহি সপ্তপ্রকার; দ্বিপদ বহুরীহি যথা হার্ডভবন নর। অঠিতাণেষ পূর্ব মানব, বছৰ জিবু উপদশ বিপ্ৰ, ইহা সংখ্যেরোতরপদ।
সংশ্যোভরপদ দিত্রা দৈয়ক তায় নর সম্লোদ্ভক
তরু, ইহা সহপূর্বপদ বহু বীহি কেশাকে শিও
নথানখি ইহা ব্যতীহার লক্ষণার্থ বহু বীহি দক্ষিণ
পূর্বাদিগলক্ষা বহু বীহি।

দিও সুইপ্রকার, একবন্তাবি যথা দিশৃঙ্গ, লক
ফুলী ইহা অনেকপ্রকার। কলস্মাদ সুইপ্রকার,
ইতরের প্রসাহার রুদ্র বিষ্ণু ইহা ইতরেভর,
ভেরীপঠহশয়ং (ভেরীপটহশয়) ইহা স্মাহার।
অব্যয়াভাব দিবিধ নাম পূর্বপদ, ফ্লা শাকদ্য
মাত্রা, শাক প্রতি, অব্যয় পূর্বপদ ফ্লা উপকৃষ্ণ:
কুছের স্মাণ উপর্থা: র্থার স্মীপ। প্রধানত:
চারিপ্রকার উত্তর পদার্থম্থা, দল, উভয়মুখ্য ও
পূর্বার্থেশ। অব্যন্ধিনার ও বত্রীহি এই সুই
স্মাদ্ বাহ্গামা।

ইত্যাল্যনে আদিনচাপুর্যে নাক্রনে স্মাস নামক চত্রেই পিক্ষিণ্ডম অধ্যয়।

পঞ্চ কিন্ত্ৰিশত ভ্ৰম **অধ্যা**য়। ভ্ৰিত।

ক্ষণ কহিলেন, তিনপ্ৰার ভদ্তি বলিব।

সামাত রতি এইপ্ৰকার লপ্ৰতায়ে বাংসল ও বংশলল পদ হয়। ইলিচ প্ৰতায়ে কেনিল শস

প্ৰতাবে লোমশঃ ন প্ৰতায়ে পামন। ইলচ

প্ৰতায়ে পিচিছল অন্প্ৰতায়ে পাজ, আৰ্চিক।

দন্ত শক্ষের উত্তর উর্চ প্রতায়ে দন্তর পদ হয়।
র প্রতায়দারা মধ্র, ক্ষার, কেশর এইরূপ পদ

হব যপ্রতায়ে হিরণা ব প্রতায়ে মালব বলচ প্রতায়ে
রজকাল ইনিপ্রতায়ে ক্রী ও হল্লা টিকন্ প্রতারে
ধনিক, বিন প্রতায়ে প্রকী ও মায়ানী পদ করে।

যুচ উণায়ু, মিন বাগ্মী আলচ বালচ আটচ বাচট ইন কলিন ও বৰ্হিণ, কন কোকও বৃন্দারক শীভ সহ করে না এই অর্থে আলুচ প্রত্যয়ে শীতালু। ঐ প্রত্যারে শরালু, খালুও হিমালু এই সকল পদ হয়। বাতন শব্দের উত্তর উল্চ প্রত্যের বাতুল। অপত্যার্থে প্রত্যয় করিয়া বাশিষ্ঠ, কৌরব বাস দোহস্যবাসক অর্থাৎ সে ইহার অধিবাসী এই অর্থে প্রত্যয়ে পাঞ্চাল। তত্তবাদ এই অর্থে মাথুর। জানে ও অধ্যয়ন করে এই অর্থে চান্দ্রক, বুংৎক্রম कारन (य त्म जन्मक। कूम्मभूत यहिर छह (य নে কৌশক। খঞ প্রত্যয়ে প্রিয়স্থ সমূহের উৎ-भानक (का व अहे चार्श रेक्षाक्रकी नक। अहे ज़ाभ মোল্টীন কৌদ্রবান। অপত্যার্থে অন প্রভায় করিয়া বৈদেহ। ইঞা প্রত্যায় দাক্ষি দাশরথি। কচ প্রত্যয়ে নারায়ণাদি শব্দ দিল্প হয়। আৰায়ন, যচ গাৰ্গ্য বাংদা ঢক বৈনতেয়াদি এরক্ আটকের টুক পোধেরক, আরক গোধার ঘক্ষতির, থকুলীন, না প্রতায়ে কৌরব্যাদি পদ यर প্রভাগের মুর্জনা ও মুখাদি শব্দ দিদ্ধ হয়। ইং প্রভারে স্থান্ধি ও তারকাদির সিদ্ধ হয়। উত্তর ইতচ প্রত্যাযে তার্কিতাদি এবং খনঙ প্রতারে কুভোদ্নী পুষ্পধন্বা ও হুধন্ব। পদ দিন্ধ হয়। বিভ উহার আছে এই অর্থে চ্পুপ প্রত্যায়ে বিভ চঞ্ এবং কেশ উহার আছে এই অর্থেচন প্রভাষে কেশ্চন, এবং রূপ প্রভাষে পটরূপ শব্দ দিদ্ধ হয়। ঈয়দ পটীয়দ ইহার প্রথমার একবচনের রূপ পটীয়ান। তরপ অক্তরাদি। উত্তরও তরণ তমণ হয় যথা—পচতিতরাং পচতি তমাং মৃদ্বীতমা। কর্ল যথা ইন্দুকর অর্ককর। তুল্যার্ম্থে দেশীয় ও দেশ্য প্রত্যয়ে রাজ দেশীয় ও রাজদেশ্য জাতীয় প্রত্যয়ে পটুলাতীয়, মাঅচ

প্রভাতুমাত্র শব্দ দিছা হয়৷ ছয়সচ উরুত্ব দন্মচ উরুদ্ধ। তয়ট পঞ্তয়। টক হোলরিক। সামানারতি উক্ত ইল। একবে অৰ য়াগ্য ভদ্ধিত কৰিত হুইতে**ছে। যাহা হুইতে** এট অর্থে তিদিল প্রভায়েয়তঃ, যেখানে সেধানে এই অর্থে তাল প্রভাবে যত্র ভার এইকালে অধুনা। দানীং ইদানী॰। কালাথে দাপ্ৰত্যয় হ**য় যথা** সর্বিদা যদা তদা। সেইকালে হিল প্রতায় হয় ষ্থা তহি। এইকালে হপ্রত্যে ইহ। কোন কালে ক'হ। থালপ্রতাষে যথা। থম্প্রতায়ে কণং পদনিজ্পন্ন হয়। পূৰ্বিদিকে সঞ্যু কৰিবে এই অংথ অস্তাৎ প্রত যে পূর্নাস্তাৎ। পুর্গ ভাষন *কের উত্তর তাৎ প্রতাম করিয়া পুরুস্থাৎ ও অধস্তাৎ এই তুই পদ সিদ্ধ হয়। স্মানে দি'ন সদ্যঃ। পুরাক্তে মর্থে উৎপ্রতেরে পরুং পূর্বিতবে প্রারি। এই স্থৎসরে এই মর্থে সম্প্রভারে ঐসম। পর দিবসার্থে জ্রদ্ধি প্রক্রায় প্রেদ্ধি। ्डे निर्म **এडे कर्स मा श्राहार्य क्या।** एकृत्म প্রেস্বত্যা,। দক্ষি-দিকে বাস কৰে এই অর্থে দ ক্ষিণাৎ দক্ষিণাৎ উত্তরদিকে।দকে বাস করে ত্রই অর্থে উত্তরাৎ এই ছই ছই পদ হয়। উপবিবাস কৰে এই অর্থেরিকাৎ প্রভ্যথে উপরি-स्टें ए देवकार, देन्द्रम जांठ श्राप्त मिकना, কাহি প্রত্যাম দক্ষিণাহি সুইপ্রকার হিধা। ধ্যমুঞ ঐক্দাং ধ্যঞ ছেণ। নিপাতন সিদ্ধ তদ্ধিত সকল টুফ চইল, কেলে ভাৰেষ্ঠক ত্ৰিষ্ঠিক ইই েন্ছে। ভাবে ও ও তল প্রতাষ হয়, পটুব ভাব পটুর, পটুশ। পৃথুশকোর উত্তর ইমন প্রথিমা। স্থাৰ উত্তর যাঞ সেখি। স্তেনের উত্তর যাৎ প্ৰত্যায়ে কেয়ে। সৰি শক্তের উত্তৰ **য** প্ৰ<mark>ত্যায়ে</mark> যকু প্রত্যায় কপির ভাষ কাপেয়। গথা পদ হ্য

দৈন্য পথা। অণ প্রতাযে আমা কোমারক ও ধৌবন। কন্প্রতায়ে আচাহ্যক। এইরূপ আন্যা প্রকার ভদ্ধিত ও আছে।

ইত্যামেরে আদিমহাপুরাণে ব্যাক্রণে তবিত সিহলাণ নামক প্রুষ্টাধিকতিশভতম অধ্যায় !

ষট্ৰফ্যাধিকজিশতত্ব তাধ্য য়।

উণাদি দিদ্ধরূপ।

কুমার কহিলেন, ধাতুর পাবে যে সকল উণাদি প্রভায় হয়, ভাহা কহিব। উণ প্রকারে পদ নিজ্পন্ন হয়, কাক অৰ্থে শিল্পী ব্যাঘা এই-রপে জায়ু উষ্ধ মায়ু পিতৃ, গোমায়ু শুগাল, বা দেবতা উপদি বছল হয়। আয়ুস্ত হেতু কালি উণ প্রতায় সিদ্ধ কিংশারু ধান্যপুক কুকবাকু কুরুট, শুরু ভর্তা বুঝায় মরু শম অজাগর ও চরামুধ স্বরুবজুরপুব**ল ফল্ল স**মাক্তম'ৰ জেন প্রত্যে গুধ্র। কিন্দু মন্দির, তিমিব তিমিবছংগে তম বুঝায় ইলচ সলিল বারি ভাওলকল্যাণঃ ক্স প্রভাষে বিশ্বান (বিশ্বস) শিবির গুপ্তসংস্থিতি (দৈলাদি রক্ষণার্থ রাজাদিগের হুর্কিত হান) তুন ওতু বিড়াল। অভিধানে উগাদি উক্ত হণ কৰ্ণ, কামী বাস্তু গৃহস্থা **জৈবাতৃক।** বংগাড়া উত্র বিন প্রত্যে করিয়া অনুডান (ষাঁড়) দিও হয জাতি জীবাৰ্ণৰ ঔষধ। নি বহুি ইনন হরিণ (মূগ। কামী, ভাজন, কম্বোজ এইসকল পদ উণাদি সিদ। ভাওভাজন, সরওচভুম্পদ এরও তরু নরড় সংঘাত সাম নির্ভর। ক্যার প্রভূত অন্ত প্রত্যয়ে চী^র বহ্মন কভির ভীরু উগ্র প্রচণ্ড, জবদ ভূগ জগং ভূলোক কুশাসু জ্যোতিঃ ও অর্ক। বর্বীর কৃটিল ও ধুর্ত্ত চত্বর চতুস্পাথ চীবর ভিক্ষুকের বস্ত্র সিত্ত

আদিতা স্বস্থাত্র তাত পিতা প্লাকু বাছে ও বুশ্চিক অণ্ট গর্ভ ভরত নট অন্থান্য অনেকপ্রকার উণাদিও আছে।

ইত্যায়েনে আদিনকাপুৰাৰে বাকেরণে উণ্টিনিজ্জল নামক দট্ধঔাধিকতিশভতম অধ্যয়।

সপ্তথ্য প্রিক্তিশত তম অধ্যায়।

ভিঙ্বিভক্তি দিদ্ধরপ।

কুমার কহিলেন, তিঙ্বিভক্তি ও থাদেশ এক-বারে ক'হব। ভাববাচা কর্মাবাচা ও কর্ত্বাচা এই ত্রিণাচ্যেই ডিঙ হ্য। অফরাক ও অকর্ম কের উত্তর কর্রেশচ্চের দ্বিধি পদ হয়। সকর্মাক ও অক্তাকে সেই সেই আদেশ হয় বর্ত্যানে লট, বিধি আদি অপেলিও বিধি আদিতে ও আশী-क्याप्त (लाहे, कुछ ९ श्रमहाख्या लंड, कुछकाल লুঙ পারো কে লিট খাদাতন ভবিষ্যতে লুট আশী कारम ७ (१मार्थ जि.इ. अविमादकारम मुछे, मिनि-মিতে ও জিয়া বিপ্রিতে ল্ড হয়। পুর্বের नश्की शत्रेखन ७ शरहत नश्की वाज्ञान शह। তিপ্তদ্ভতি এই তিনটী এখন পুরুষ, দিপ থস থ সধ্যম পুরুষ, মিপাবদ মদ উত্তম পুরুষ। ত ভাতাং হাত্ত ভালানে পদে প্রথম পুরুষ; ধাস আথাং ধবং মধাম, ই বহি মহি উত্তম পুরুষ। 💆 ষা, প্রভৃতি ধাতু প্রাসিদ্ধ মাতে ভূবি, এধি, পচি, নন্দি, ধ্বংদি আংলি পদি আদি শীঙ ক্রীড়া জুহোতি ত্থাতু জংগতি হা ধাতু দ্ধাতি ধা দিবাতি দিব স্পিতি স্থানহি স্নোতি স্বাদ ভুদি, মুণতি মুশ মুঞ্জি মুচ কুৰি, ভুজি, তালি তনি মনি করোভি কুনাতু ক্রীড়তি ক্রীড় বুঙ গ্রহি চোরি পানী অর্চি এইদকল ধাতুনায়ক। ভূধাতুর

উত্তর বিত্ত প্রত্যয় করিখা ভবতি পদ হয় দ ভবতি দে হইতেছে।, তদ ভণতঃ, তে ভণতঃ ভাছারা হুজন হইতেছে, অভি ভগভি তাহারা বহুজন হই তেছে। তংভবসি তুমি হইতেছ, যুবাৎভবথঃ ভোমরা তুজন হটতেছ, যুষ্থ ভব্থ ভোমরা বহু জন হইটেছ ৷ অহং ভবামি, আমি হইতেছি, আবাৎ ভবাৰঃ, আমরা তুজন হইতেছি, বয়ং ভবামঃ আমরা হইতেছি। কুলং এখতে কুল বৰ্দ্ধিত হইতেছে দ্বে কুলে এধেতে গুটকুল বাড়ি-তেছে, কুলানি এধন্তে, বছকুল বাজিতেছে। ত্বং মেধ্যা এধনে তুমি মেধাদারা বাড়িতেছ, শুর্গাৎ তোমার মেধা বাড়িতেছে। এধেথে এধন্তে এধে এধাবহে এধামহে বয়ং হরিভক্তা, আসরা ছরিভজিদারা বন্ধিত ছইতেভি। পচতি পচতঃ পচন্তি ইত্যাদি পূর্বাবৎ ভাববাচ্যে ও কর্মবাচ্যে ষক প্রত্যয় করিয়া তেন ভূগতে অনুভূগতে অগৌ সে হইতেছে, ঐব্যক্তি লোককর্ত্ক অনুভূত হই-তেছে। সন প্রত্যয়ে বুছুদতি ণিচ প্রত্যয় করিয়া ভাবয়তি ঈশ্ব ঈশ্বকে ভাবনা করিতেছে যঙ প্রতায়ে বোভুয়তে বাল্যং পুনঃ পুনঃ বাল্য হই-তেছে। যঙ লুগন্ত করিয়া বোভোতি পদ্দিদ্ধ হয়। পুত্রীয়তি পুত্রকামাতি পুত্রকামনা করি-তেছে এইরূপ পট পটায়তে পট পট শব্দ করি-তেছে। ঘটগতি ঘটাইতেছে দক্ততায়ে বুছ্-ষয়তি হইবার ইচ্ছা করিতেছে। লিও ইহার রূপ য্থা ভবেৎ **ভবেত**ং ভকেয়ু: ভৱে ভবেত**ম্ ভ**বেত ভবেয়ং ভবেব ভবেম এধেত, এধেয়াতং এধেরন মনসা প্রিয়া মন ও শ্রীছারা বাড়িবে। এখেয়ালাম এখেমুৎ এধেয় এধেবহি এধেমহি। লোট ভবতু ভবতাং ভবস্ত ভব ভবতাৎ ভবতম্ ভবত ভবাণি ভবাব ভবাম। এধতং এধেতাং

क्षस्छाः करेष, कषानरेश कथ्रारेश कालानन, অপচ চাং, অপচন অপচঃ। অভ্ৰহ অভ্ৰতাং, অপচাষ। ঐধত, অভ্ৰন্। অপচন অপচার ঐণতাং ঐধারং ঐধে ঐধামহি। লুঙ অভূৎ অভূতাং অভূবন অভূ; অভূবন এই সকল রূপ হয় 🛊 এধ ধা হুর লুঙে ঐধিক ঐধিদা গং ঐদিষ্ঠা **ঐধিমি।** ইত্যাদিরাপ হয়। ভূধাতুর লিটে বভূব বভূবতুঃ বভূরু: বভূবিণ বভূবথুঃ বঞুব বভূবিব, বভূবিম। প্রধাতুর লিটে রূপ যথা,এধাঞ্চর্যে এধাঞ্জাথে। ভূখাতুলুট ভবিতা, পেচি অব গেচে পেচিমহে। ভবিতাৰো ভবিতাৰঃ হ্যাদয়ঃ হ্য়াদি সকলে হই-বেন। ভবিতাসি, ভবিতাম্বং, ভবিতাম, ভবি-তাক্মঃ বয়ং আমরা হইবা পকা পকারৌ, পক্তারঃ পক্তাদে স্বং শুভৌদনং তুমি উওম অন পক্তাথের পক্তাহে অহং আমি পাক করিবে। পক্তাস্থাতে হবেশ্টরেং, পাক করিব। সামরা হবিরচর পাক করিব। আংশীলিঞ্বণ। -তথং ভুনাৎ, স্তথ হউক। ভুনাস্তর্যাণ, হরিশস্করে), হ'র ও শক্ষর ভোমার হউক। ভূথাম্বস্তে, তাহারা হউন। তৃ° ভয়া: তুমি হও; বুবাং ভূয়ান্তং ঈশ্রৌ ভোষার ছজন প্রসূত্র। ভূগান্ত যয়ং তোমরা বহুজন ২ও। অহ ভুয়াদং আমি হই। वयः गर्न्तना ज्वाम, व्यामता मनाना इहे। निष्ड यक के अधिया । छार यकीयन् । अधिनीय, यक्कीवरि, এপিন মতি, এই সকল লিডেবরূপ। লঙ্খ্যকাত ভান ক্রেটা তারকান্ত ভানকো, ভানকো, থাং যুবাং, टकांबत छक्षन यांत्र यांश कता व्यक्ताकः। औधि-ষ্যাবহি, ঐবিদ্যামহি অরেবলং অরি হইতে আমরা যদি বদ্ধিত হট। লুট যথ।—ভবিষ্যতি ভবিষতঃ ইত্যাদি প্রদার। এধিদ্যামতে এই এটকপ—বিভাবয়িষ,ভি, বোভবিষ,তি ইত্যাদি

প্রকার রূপ হয়। দেইরূপ ঘটয়েৎ, প্রথাং, পুর্লীয়তি, পুত্রকাম্যতি ইত্যাদি।* ইফ্যাথেয়ে আদিমনপুরাণে ব্যাকণের ডিঙ্বিস্কি শিক্তণ নামক স্থাইটাধিক্তিশ্ভর্ম অধ্যায়।

অষ্টৰ্ক্তবিক্তিশতত্তন অধ্যায়।

কুংগিদ্ধরূপ।

কুমার কহিলেন, ভাববাঢ়ো কর্মবাড়ো ৪ কর্ণাচ্যে এই তিন বাচ্যেই কুং এত য় সকল প্রযুক্ত হয় জানিবে; ভাববাচো অচ লাট কিন ঘঞাও অকারেয় উত্তর হুচ প্রত্যয়। বিনয় উৎ-কর প্রকর দেব ভদ্র শ্রীকর এইসকল শব্দ খ্য প্রতায়ছারা দিয়া। লুট প্রত্যায়ে শোভন পদ হয় জ্ঞিন বৃদ্ধি মতি স্তুতি ঘঞা ভাব সূচ কাৰণ ভাবনা ইত্যাদি। অকারে চিবিৎ্যা ভবা অনাধ কর্ত্রা কর্ণীয় যৎ প্রভাবে দেয় দেয় গাং প্রভা য कारी कृ•ाक कर्नुवाहा क्लामि श्राप्त इंग दिन न (कौन ऋरत कोनवारका कचाना का अ कारव धावुन গত, গ্ৰাম গত তেগোকভা গ্রামে গুরু আলিট হ্ট্যাছেন। শতৃ প্রাধে ভিন ভবন্তী শান্ত প্রত্তরে এধমান স্কল ধাতুর উভা, বুণ ও তৃচ প্রভায় হয় যথা ভাবক ভবিতা বিপ প্রভাৱে স্বস্থু আদি শবদ নিম্পন্ন হয় অভাত কালে লিট অর্থে ক্লন্ত ও কান্চ প্রভায় হয় যথা বভূবিবাৰ পেচিবাৰ পেচাৰ জন্ধান ৰণ প্ৰভাষ কুম্বকারাদি শব্দ দিদ্ধ হয় ভূতকালেও উনাদি প্রত্যয় হয় যথ৷ বায়ু পারু কারু ছুদে বছুল হ্য 🛚 বহুল গঙ্গাম্ৰোত প্ৰশৃষ্ক ভায়ে চলিয়া থাকে।

> হত্যাগ্রেয়ে আ দিমছপ্রেগ্রে ব্যাকরণে কুৎসিদ্ধরণ নামক অইবট নিক্তিশতক্রম অধ্যায়।

ঊনসপ্তত্যধিকত্রিশতত্ম অধ্যায়।

কোষ্।

স্বৰ্গপাতালাদি বৰ্গ।

অগ্নি কহিলেন, স্বর্গাদিনামলিক হরির স্বরূপ তাহা আমি তোমাকে বলিব। স্বৰ্গ প্ৰায় যথা ষঃ স্বৰ্গ নাক ত্ৰিদিব দ্যো, দিব ত্ৰিপিষ্টপ (১) (पन नन्पायक (नथ) कम्पापिमकल गण (पन्छ) বিদ্যুধর অপসরায়ক রক্ষ গন্ধকর কিল্লয় পিশাচ গুহাক সিদ্ধা ও ভূত এই দকলেই দেবযোনি। দেব্ধিট অসর দৈতা স্থগত আগত (বুদ্ধৰ নাম) রকা আগ্রাচ অবচেষ্ঠ বিষ্ণু নারায়ণ হরি রেবতীশ হলী বাস। কাস পেশের ফার লকী প্রাল্যা প্লাদ্র দলেশ্বর শিব্দিবের জটাজ্টের নাম কপদ শিবের ধনুর নমে অফগব। শিবের পারি মদেব নাম প্রমণ্যণ মুদানী চভিকা অস্থিকা। ন্যাতুর গাড়াজা স্মানী অগিডু গুহ অং',ওল, সন্দী। মৃত্যা দিবস্পতি পুলোমজাশচী ইব্ৰাণ্ডী দেব ভাচাব (ইন্দ্রেব) বল্লভা তাহার প্রাসাদের ন্ম নৈজন্ত, তাহার পুজেব নাম জয়ন্ত ও পাক শাস ন ৷ ঐবাবত অভানতিক ঐরাবণ অভাযুবলভ ভাদিনা বজ কীৰ ও পুণালস হয়) কুলিশ ভিতুর পবি ব্যোম্যান বিমান (ক্লীব ও পুংলিঞ্) পীয়ুষ, অষ্ত ভণা দেবসভাব নাম ভণ্মা সংগ্লাভর দীবিকা স্পারস্শব্দ জীলিকে ও বহুবচনে প্রাফ্ উ দশী আদির। স্বৰ্গবেশ্যা হাহা ভ্তৃ আদি গন্ধনিকল গণ্ডি ৰহিচ ধনপ্তয় জাতবেদা কৃষ্ণবন্ধু আতারাশ পাবক হিরণ্যরেতা সপ্তার্চি শুক্র আশু-

শুক্ষণি শুচি অপ্পিত। উৰ্বি বাড়ৰ বড়ানল জাল ৪ জালা কীল ওকালা এই তিনটি শব্দ স্ত্ৰাপু নিঙ্গে অগ্নির জ্বালার বাচক এবং অর্চিঃ হেভি ও শিখা (স্থী) অগ্নির শিখাবাচক শব্দ। শব্দ ত্রিলিঙ্গ হয় এবং অগ্নিকণাৰ বাচক। ধর্ম-রাজ, পরেতবাট কাল, অন্তক, দণ্ডধন, আন্ধেদেন। রাক্ষ্ম, কৌণপ, অপ্রপ, ক্রুনাদ, যাত্রান, নৈথাতি 🖠 প্রচেতা, বরুণ, পাশী খনন, স্পর্ণন, অনিল, দ্দা-গতি, মাত্রিখা, প্রাণ্মরুৎ সম্রেণ জব রংহ্ ছর:। লঘু কি এ, অব, দ্রুত সভর, চপল ভূর্ণ, অবিলম্বিত, আশু সত্ত, অনারত, অপ্রায়, সন্ত্র অবিরত অনিশ, নিত্য অনববত অজত্র। আত্রখ ভর অভিবেল ভূণ, অত্যর্থ অভিমাত্র উদ্গাঢ়, নির্ভর। তীত্র একান্ত, নিতান্ত গাঢ় রাচ দুঢ় ওহাকেশ যক্ষরাজ রাজরাজ ধনাধিপ কিন্নর কিম্পু-রুষ ভুরঙ্গবদন ময়ু নিধি (পুংলিজ) সেবধি বেটাম তাভ্র পুষ্ণর অস্থার দো।, দিব অন্ত্রীকা, থ। আশা ককুভ দিক অভ্যন্তর অন্তবাল চক্রবাল মওল তড়িয়ান বারিদ, মেঘ তন্বিভ্ বলাহক কাৰিস্মী মেঘমালা স্ত্ৰিত গভিত্ত শম্পা শতকণা স্ত্রাপতী ক্ষপপ্রভা তড়িৎ সৌলামনা, বিদ্যাৎ চঞ্চলা চপলা, ক্ষুদ্ধপু বন্ধনিয়োগ রাইনিত অব্হাহ ধাবাসম্পাত আসার। শীকর অযুক্। বর্ষোপল করকা মেঘাচছম্দিবসই তুদিন অন্তর্ধ। বাবধা অন্তর্দ্ধি (পু॰) অপবাবণ অপিধান তিবোধান পিধান ছদন অজ জৈবত্ক সোম গ্লেম্পাক কলানিধি। বিধু, কুমুদবন্ধ্ িল (র্ত্তীবপুশলিকে) মণ্ডল ত্রিলিঙ্গে বোড়শভাগ কলা, ভিত, শবল चक जिल्लका (कांगुनी (ज्ञारका ध्यमान ध्यमभ्रजा লক্ষণ লক্ষক চিহ্ন শোভা কাণ্ডি ছ চিছবি স্থম। প্রমাশোচা ভুষার ভুতিন হিল অবশ্যায়,

⁽২) এইরপ ক্ষনান্য শ্যার জানিবে। এক প্রাারে এক াদাথেব ভিরন্য উক হট্যাছে।

নীহার ভালের শিশির হিমা নকরে খক, ভ, তারা তারকা উড়ু (পুংস্ত্রী) শুরু জীব আঙ্গিরস। উশনাঃ ভার্গব, কবি বিধুমূদ, তম, রাছ রাগুদয় লগ্ন মনীচি আদি মপ্রিগণ ইহাণের একবারে সকলেরই নাম চিত্রশিখণ্ডিগণ। হরিদখ, তাধু, পুষা ছামণি নিহির, রবি।. উপসুর্যাক মগুলের পরিবেশের নাম পরিধি। কিবণ অতা ময়ুগ, অংশু, গভন্তি,রুণি ধ্বফি ভাতু কর মরীটি (স্ত্রীপুং-লিঙ্গ) দিনীতি জুলিঙ্গ প্রভারণক রচ রুচি বিট্ ত্বিভাভাস ছবি, ছাত দীপ্তি, রোচিও শোচি এই চুইটী ক্লাবলিক। প্রকাশ দ্যোত আতপ কোফা, কৰোফা মলোফা, কছফা, এই কায়েক্টি তিনলিক্ষে তদিশিকে বুঝার। তিথা তীক্ষ, খর দিন্ট অনেহা কালক ঘত্ৰ দিন অহ সায়ং সক্ষা পিতৃপ্রত প্রতার্য অহমুথ কলা উষ প্রতাষ প্রাক্ অপরাফ মধ্যাত্র এই তিনসন্ধ্যা। শর্কারী যামী ভ্যাত্যিক্রা জ্যোংশ্বী ক্রিকাবিতা সাগানী ৰ বর্তমানদিবসযুক্ত রাত্রিকে পাক্ষণী কহে অর্দ্ধরাত্র निभीय প্রদোন রজনী মুখ পঞ্চশীদ্বয়ের ভাতার যে প্রদাস ভারার নাম প্রতিপৎ পক্ষান্ত পঞ্চশী তুই তর্মধ্যে পূর্ণিমার নাম পৌর্ণমানী। নিশাকর কলাগীন হইলে সেই রাত্রিকে সামুমতি এবং নিশা কর পূর্বইলে ভাগতে রাকা কছে। অ্যাকাস্তা नर्भ न्यार्थ। चनु मक्षम, ভाহাতে ইन्सून्ये इहेतल विनी-বালী এবং ইন্দু কলান**ফ হইলে কুত্ কহে। সংবর্ত্** अल्या कहा क्या क्या कहान्छ। कल्म, बृकिन, এনঃ, হয়, আংহঃ, দূরিত, সুক্ষত। ধর্ম (পুংন পুংমক)। পুণা, শ্রেকঃ, স্তর্জ, রুষ। মুং, প্রীতি, প্রথম হর্ষ : প্রমোল আমেশি সন্মার। আনন্দর্ আনিকা। শাল, পাত, তার। খাঃ, ভোরাল, শিব, ভদ্র কল্যাণ মধল শুভ ভাবুক ভবিক ভব্য কুশল 🤅

टकम (१९४म भू:मक)। रेमन, मिस्रे, ভাগতেश, ভাগ্য নিয়তি (ত্রী); বিধি। কেন্ত্রজ্ঞ আত্মা, পুরুষ প্রধান (ক্লীব) প্রকৃতি (স্ত্রী)। চেতৃ (পুং), কারণ বীজ: নিদান আদি কারণ। চিত্ত চেতঃ হৃদ্র वास. रूर, गानम, यनः। दुक्ति, यनीया विषवा, यो প্রজ্ঞা শেমুষী মতি। প্রেক্ষা উপলব্ধি চিৎ স'বং প্রতিপৎ জ্বগ্রি চেতনা ৷ ধারণাবভী ধীকে মেধা করে। সংকল্প কর্মানস (কর্মের নিমিত মান্দ) गःशा विठाइमाः ठकी। বিচিকিৎসা অধ্যাহার তর্ক উহ। নিশ্য ও নিশ্চয় উল্যে সর্মান । 🖟 মিথাদৃষ্টিকে নান্তিকতা কহে। ভান্তি মিপামতি ভ্রম। অঙ্গীকার অভ্যুপগম প্রতিশ্রা স্মাধি। মোকে বুদ্ধির নাম ভান। শিল্ভ শাংক্ত বৃদ্ধির নাম বিজ্ঞান। মুক্তি কৈবল্য নির্বাণ শ্রেরঃ নিঃশ্রেষস অমৃত মোক্ষ অপরগাঁচ অজ্ঞান অবিদ্যা অহ্মতি (স্ত্রী)। বিমর্দ্রোথ জন মনোহর গন্ধের নাম পরিমল। অতিনাইরী আমে দ।, সরভিঃ জ্ঞাণ তপণ (ড্রাণের তৃত্তিকর)। শুক্ল শুত্র শুচি শ্বেত বিশ্ব শ্বেতপাওর অবলাত মিত গৌর বলক্ষাল অভিন্ন। হরিণ পাঙ্র পাঙ্। ঈষং পাও ই ধুসুর। কৃষ্ণ নীল অসিত শ্যাম কাল পীত গৌর হরিদ্রাভ। পালাশ শ্যামল সেচক ৷ হরিত হরিৎ। রোহিত লোহিত রক্ত : কোকনদ-ত্ত্বিই শোণ। যাহার রাগ অব্যক্ত ভাহা অরুণ বর্ণ। শ্বেতরক্তই পাটল বর্ণ। শ্যাব ক্পিশ। कुष्धतादि वर्ष हे भूज छ सूरल। कछात कर्मिल পিঙ্গ শিশ্য কঞা পিপুল। চিত্ত কিল্মীর কল্লাষ শ্বল ককৰুর। আহার উ**ক্তিল লপিত। ্অপ**ভংশ অপশন্দ ভিত্তা ও ওবস্তা সমূহই বাক্য। কারকের মৃহিত বাহার৷ খহান হয় ভাহাকে ক্রিয়া কহে। ইতিহাস পুরারত। পুরাণ পঞ্চলকণ উপল্ফার্গ

কণাই আখ্যায়িকা।(১) প্রবন্ধ কল্পনা কথা। সমা हात मः श्रद अवस्थिका अहिनका। म्यामार्थहे সনস্যা। শুতি ধর্মস্ংহিতা। আখ্যা আহ্বা অভি-ধান। বার্তা রতান্ত। ছতি আকারণা লাহ্বান। উপন্যাস বাজাখ। বিবাদ ব্যবহার। প্রতিবাকা উত্তর উপোদ্যাত উদাহার অভিপাশ অনিষ্টাভি-শংসন যশ কীর্ত্তি প্রশ্ন পুচ্ছা অনুযোগ দ্বিত্রবার উক্ট আমেড়িত কুংদা নিন্দা গৰ্হণ আভাষণ আলাপ। অনর্থকবাক্য প্রলাপ বিপ্রলাপ পরস্পর ভাষণ সংলাপ স্থবচন স্বহাপ। অপলাপ নিহুব (বাকে উড়াইয়া দেওয়া) অকল্যাণী বাক্ উষ্ঠা সঙ্ত হার্কম হাতাত্ত মধুর সাত্ত অবদ্ধ অনর্থক নিষ্ঠার অঞ্লীল পরুষ আমা সুনুত প্রিয় সতা তথ্য থত, সমাক ৷ নাদ নিসান নিস্তন আরব আরাণ সংবাব বিরাব। বস্ত্র ও পত্রাদির শব্দের নাম মর্মার। ভূষণ ধকলের শক্ষের নাম শিজিত। বাবার ধ্রনিও নাম নিকণ, কাণ্ড তিয়-গুজাতির শকের নাম গাগিত ও হৃত। কোলাহল, কলকল গীত, গান। প্রতি ক্রং (স্ত্রা) প্রতিধান। তন্ত্রা কণ্ঠ হ'তে উথিত স্থারে নাম নিংসাদক। কাকলা সুল্ম কলংকান। কল মধুরাকট শব্দ। মন্ত গট্রার শব্দ। তার উচ্চেঃ শব্দ। এই তিনটি তিলিকে প্রযুক্ত হয়। একভান, সম[্]ষ্টলয়। নীণা, বল্লকী বিপঞ্চী। এই বাঁণা দপ্ততনী সম স্থিত। হইলে ভাহাকে পরিবাদিন। কহে। বীণা দির বাদ্যের নাম তত মুরজাদিবাদ্যের নাম আনদ্ वःशामिवामात्र भाग श्वी, काश्मा, जानामि वामात এই চতুর্বিধ বাদ্যের নাম বাদিত বা

(১) সলশ্ভ শ্ৰিস্থশ্চ বংশোমন্ত্রংপি চ। বংশাঞ্চবিত্রকার পুরংশং লঞ্চলালগ্ধ। দলে, প্রভিস্প, বংশ মন্ত্রন ও বংশাক্ত্রিপ কৌ পঞ্চবিধ শীক্ষা নিশ্বলাই পুরাণ। আতে।। মৃদঙ্মুরজ: অকা আচিলাও অৰ্জিক এই তিন প্ৰকার ভেনে মুদক্ষ বা মুরজ ডিন প্রকার। যশঃপটহ ঢক।। ভেরী আনক সুন্দুভি খানক পটহ: ঝঝ'রী ডিভিমাদি তাহার প্রভেদ মাত্র। মর্দল ও পণব তুল্য। জিন্তার মানকে তাল কৰে। লয় দাম্য। ভাতব, নাট্য লাস্য নর্তন; তেষ্টিত্রক নুতাগীতবাদা এই তিন এবং নাট্য अहे हाति नितं नाम दर्शशिकि । नाष्ट्री दाका. ভট্টারক, দেব। অভিষেক সম্পন্ন দেবী। শুঙ্গার, বীর করণো অন্তত, হাসা, ভয়ান্ত, বীভৎস, রৌদ্রেই সকল রম। শুসার ভাচি, উদ্ভল; উৎসাহ বর্দ্ধন বীর। কারুণ্য করুণা ঘুণা; কুপা, দয়া, অনুকম্পা অনুজোশু। হুদ, হাস হাস্ত ৰীভংদ, বিকৃত এই ছুইটি তিন লিঙ্গেই প্ৰযুক্ত হয়। বিশার অভূত আশ্চর্যা চিত্র ; ভৈরব দারুণ ভীষণ ভাস যোর ভীম ভয়ানক, ভয়ঙ্কর প্রতিভয় ৷ রৌদ্র উত্তা দুইটা ত্রিলঙ্গ। চতুর্দশ দর আস ভাতি ভী সাধ্বস ভয়। মানসিক ভাবই বিকার। অনুভাব ভাববোধক। গর্ব অভিযান অহকারমান চিত্ত সমূত্রতি। অনাণর পরিভব পরিভাব, ভির স্ত্রিয়া: ভ্রাড়া, লজ্জা, ত্রপা, হ্রী। ধনেস্পূহার নাম অভীধান: কৌতৃহল, কৌতৃক, কুতৃক কুতৃ-ছল। বিলাদ, বিৰেবাক, বিভাম ললিভ, হেলা, লীলা, হাব এই সকল স্থাগণের শৃস্থার ভাবে জাত ক্রিয়া। দ্রব, কেলি পরীহাদ জীড়া লীলা कुर्पन। ছুরিতক হাস। সোৎপ্রাস, ঈষৎ হাস্য।

অধোড়বন, পাতাল। ছিত্র শ্বত্র বপা শুষি, গুরু অবট তমিত্র তিমির তম সর্প, পুদাকু, ভুজগ, দদদশুক বিলেশয়। বিষ ক্ষেড়, গরল নির্থ তুর্গতি (স্ত্রা) প্র কীলাল অমূত উদক ভূবন বন ভঙ্গ তবঙ্গ উন্মি কল্লোল উল্লোলক। পৃষ্ঠি বিশ্বু প্রত কুল, রোধ, তীর জলমধ্য হইতে উথিত ভূতাগই পুলিন। জম্বাল পক্ষ কর্দম জলোচ্ছাস পরীবাহ কৃপক বিদারক আতর তরপণ্য দ্রোণী, কাষ্ঠামুন্বাহিনী। কলুব, আবিল শ্বস্ক অপ্রথম। গভীর অগাধ; দাস কৈবর্ত। শ্বস্ক জলশু জ; সৌন্ধিক কহলার নীল, ইন্দাবর কল। উৎপল কুবলয়; শুল্ল উৎপলকে কুমুদ্দ ও কৈরব কহে। ইহাদের কন্দকে শালুক কহে; পদ্ম তামরস কজ। কুবলয় নীলোৎপল; কোকনদ রজোৎপল করহ ট শিক্ষা, কন্দ। কিঞ্জল্প কেশর (মন্ত্রী অর্থাৎ পুন্দমুশক লিঙ্গা) থনি (স্ত্রা), আকর প্রত্যান্ত পর্বতের নাম পাদ; পর্বতের আসমাভূমির নাম উপত্যকা। পর্বতের উর্ভূমির নাম অধিত্যকা স্থাপিতলোগ্যদি উক্ত হইল এক্ষণে নালার্থ বর্গ পাতলোগ্যদি উক্ত হইল এক্ষণে নালার্থ বর্গ পাতলোগ্যদি উক্ত হইল এক্ষণে নালার্থ বর্গ

হ ৬)(জেনে আংশিমহাপুর্তের পার্পঃ হালাদিবর্গ নমেক উনস্ভাহারি ক্রিশতভ্য সংগ্রা

সপ্তত্যধিকতিশততম অধ্যার। অব্যাবর্গ।

অগ্নিক চিলেন, ঈষদর্শে অভিগাপ্তি অর্থেও ধাতুযোগ দীমার্থে ভঙ্ প্রযুক্ত হয়। আ, গ্রহণ পূননক ফুডি, ও বাক্য বুঝাইয়া থাকে। আঃ কোপে ও পীড়ার্থ প্রকাশ করে। কু—পাপ, বুংসা, ঈষং। ধিক্—জুগুপা, নিন্দা। চ— অবাচয়, সমাহার, ইত্রেত্র, সমুচ্চয় (১)। সঃ আশীব্রাদ, কেম, পুলাদি। অতি প্রকর্ষ, লজ্মন স্বিৎ প্রশ্ন বিতর্ক তুডেদ অবধারণ দক্ৎ সহ একবার। আরাং দূর সমীপ পশ্চাৎ গ্রতীচী চরম উত অর্থ বিকল্প পশ্চাৎ পুনঃ সদা সাক্ষাৎ তুলা। বত থেদ অবুকম্পা দত্তায বিসায় আমস্ত্রণ হয় হর্ষ অনুকলণা বিষাদ প্রতি প্রতিনিধি অর্থে এবং প্রয়োগামুদারে বীম্পা ও লক্ষণাদিতে বুঝায়। ইতি হেতু ও প্রকরণ কর্ষে এবং প্রকাশাদি সমাপ্তি অর্থে প্রবৃক্ত পুরস্থাৎ ও অগ্রতঃ এই চুই অব্যয়শন প্রাচী ও প্রথম মর্থে এবং পুরার্ফে প্রয়োজিত হুল্যা খাকে যাবৎ ও তাবৎশক্ষ শাক্ল্য খন্ধি মান ও অবধারণ অর্থে বুঝাইয়া থাকে। অথে। ও অথ-শব্দে মাসলৈ অনন্তর অবিভ্র প্রাকৃতি র (স্মত্র) ুরুখা নির্থক অবাধ নানা অনেবাধ ও উভয়ার্থ বুঝায় তু পুচ্ছা বিকল্প এতু পশ্চাৎ দানুগ্য নতুশকে প্রাপ্ত অবধারণ অনুজ্ঞা ওলুনয় ও আম-দ্রণের্কার অপি গই। সমুভায়ে প্রশাস্থা ও সভা-বনা বুঝার বা উপুমার্থেও বিক্লার্থে প্রযুক্ত য়ে। সামি অন্ধেওজুগুপিতে বুঝার অমা সহাথেও **স্মীপার্থে।** কং বারিও মূদ্ধা এবং ইবাথে ও ইত্যসথে প্রযুক্ত হয় ন্যুনং তর্কে ও নিশ্চয়াথে বুঝায়। জোষং ভুফামধে ও হৃথে কিং পুদ্ছার্থে ও জুগুপ্সার্থে নাম প্রকাশ্য সন্তাবন। ক্রোধ উপ-গমন ও কুৎসার্থে প্রযুক্ত হয়। অলংশব্দ ভূদ। পর্যাপ্তি শক্তি ও বারণার্থ বাচক জং বিভকে পার-প্রাম্মে এবং সময়। অন্তিকে ও মধ্যে বুঝাব। পুনঃ অপ্রথমে ভেদে এবং নির্নিশ্চয় ও নিষেধে প্রযুক্ত পুরাপ্রবন্ধ চিরাতীত ও নিক্টাগানী মর্থে প্রস্তুত হইয়া থাকে উর্গী, উর্গী, উর্গী এই ডিন শক বিস্তার ও অদীকারার্থ প্রকাশ করে। সাঃ স্থ

⁽১) বেপরে একের প্রাধান্ত সংক্র অন্তের পৌরাখান ভালকে অন্তাচন করে। ওছে বটু জুম ভিক্ষাটন কর, গো আনরম ও করিবে। এখানে ভিক্ষাটনট প্রধান, ভবে যদি গো দেশিকে পাও আন্বন করিও নচেৎ ভিক্ষাটনট কথিবে। সমা-হর ভিব্যোগিভাব্যর ভেদ। ইত্যেত্ব উদ্ভিদ্যাব্যুর ভেদ। সম্ভেদ্ন স্থানকের এক্ত্রী কর্ম।

পরলোক কিলশব্দে বার্তা ও সম্ভাবনা বুঝায়। খলু নিষেধ বাক্যালস্কার জিজ্ঞাদা ও অনুনয়ে প্রযুক্ত হয়। অভিতঃ সমীপ, উভয়তঃ, শীস্ত্র, সাকল্য ও অভিমুখ্যার্থ প্রকাশ করিয়া থাকে। প্রাত্তঃ নামার্থেও প্রকাশার্থে প্রযুক্ত হয় মিথঃ, অকোন ও রহঃ অর্থ (নির্জানার্থ) বুঝার। তিরঃ অন্তর্গান ও তির্ব্যুগর্গে প্রযুক্ত হয়। হা-বিষাদ শোক ও পীড়ার্থে এবং অহ্হ অন্তর্ভার্থেও খেদে প্রায়ুক্ত হটয়া থাকে। হি চেছর্থে ও অবধারণার্থে চিরায়, চিরবাত্রায় চিরাস্তাদি শব্দদকল চিরার্থ প্রকশিক। মৃত্ঃ পুনঃ পুনঃ, শশ্ব অভীক্ষ ও অস-কুং ইহারা সগানার্থক আকৃ, বাটতি অঞ্জনা অহ্নায় সপ্দি দ্ৰাক্, মঞ্জ এইসকলই জাতাৰ্থে প্ৰযুক্ত হয় ৷ বলবং হঠু শেভিনাৰ্থক কিমুভ কিং, কিয়ত বিকল্পে ভু, 18, চ, শ্বা, হ, বৈ এইদকলশ্বৰ পাদপুরণে প্রায়কে হয়। অতি পূজনেও প্রবর্তিত इन्नेश थ। (क फिर्च फिन (क्षां 'अ ने खर ते किनी। মাচ ও তিরঃ তিয়াগথে পাট পাট্ অঙ্গ হে হৈ ভোঃ এই সকল শব্দ দক্ষোধনাৰ্থক সময়া নিক্ষা হিরুক্ এই শব্দত্তয় নিকটার্থ বোধক। অত্কিত পুরং পুরত অগ্রত স্থাহা, জ্রোসট্ পৌষট্ বষ্ট স্বধা এইসকলশক দেবাদির হবিদানে প্রযুক্ত হয়। কিঞ্চিৎ, ঈদং, মনাক্ অল্লার্থে প্রেন্ড্য ও অমৃত্রশক্ষ জনাতিরে অর্থ প্রকাশ করে। যথা ও তথা শব্দ সাম্যাৰ্থে অহো ও ছো শব্দ বিশ্বয়াৰ্থে প্রযুক্ত হয়। তৃষ্ণী ও ভুক্ষাক মৌনার্থ বোধক मनः ७ मन्ति ७९कः । त्वाश निन्धा ममून्यायः সানন্দার্থ প্রকটিত করে। অন্তরে অন্তরা অন্তরেণ নগ্যাৰ্থে প্ৰযুক্ত হয়। প্ৰদহ্য হঠাৰ্থক দাক্তাতং ও স্থানে এই শব্দবয় যুক্তাথে (যুক্তি যুক্তাৰ্থে) প্ৰযুক্ত रहेश। बार्क। अजीक अनंबद अनंबज धर्य:

নহি, নো, ন অভাবে, মাস্ম ও মাল বারণে বুঝার (हर ও यकि भक्तास्त्रतार्थ (वासक। अक्ता ও अक्षमा এই অবায়দ্বৰ তত্বাৰ্থ প্ৰকাশক প্ৰাদুঃ ও আৰিঃ-শব্দ প্রকাশ্যে মর্থ প্রকাশ করে। ওক্সী এবং পরমং এই তিন অব্যয় মতে (স্বীকারে) অর্থ বৃঝায়। সমস্ততঃ প্রিতঃ দর্কতিঃ ও বিশ্বক্ ইহারা একার্য প্রকাশক কাম্ম অকাম অনুমতি প্রকাশক । অন্ত অকাম উপগত (অনিচ্ছাপূর্ব্যক স্বীকার) নতু বিরো-ধেতিকর এবং কচিৎ কাম প্রবেদনের বোধক। निःसमः, कुःममः निन्नार्य यथायः ग्रथायर्थं भूया, মিথ্যা, বিতথা যথাৰ্থ যথাতথা এবং পুনঃ বৈ, বা এই কয়েকটা অব্যয়শব্দ অবধারণ বাচক। প্রাকৃ অতীত।ৰ্থক এবং নৃন**ন্ও অ**বশ্য ছুইটী নি≖চ-রার্গক। সংবৎ বর্ষ অব্বাক অবর। স্বধং আপনি নাচৈঃ অল। উচৈচঃ মহং। প্রায়ঃ বাহুলা। শনৈঃ অদ্ৰুত। সুনানিতা বহিঃ বাছ সা অতীত অস্ত অদর্শন। অন্তি স্বস্থেন উম্ রোগেজি। উ-প্রশ্ন ও অনুনয়ার্থে ও তোমাতে এই অংশ প্রযুক্ত হয়। হুং তর্কে উষা রাত্রিতে ও অবসানে অর্থ প্রকাশ করে। নথঃ নতি; অঙ্গ পুনরর্থে দুট নিন্দায় এবং স্থাট প্রশংসার প্রযুক্ত হয়। সাধং সায়ে, প্রগে প্রাঙঃ ও প্রভাতে। নিক্ষা অন্তিকে পরুৎপর বৎসর। সনঃ অবদ; যতি পুরর ও পূর্বতর। অদা এইদিনে; পূর্বদিনে ইত্যাদি অর্থে পূর্নবাৎ উত্তরাৎ পরাৎ অধ্রাৎ অন্যান্য ভবেতরাং এ পুর্কেন্ত্য আদি শব্দ প্রযুক্ত হয়। উভয়ত্যুঃ ও উভয়দিনে। পরেদ্যবি পর দিনে। ছো গতদিনে। খং পরদিনে; পরখঃ ক্ল্যাদিনের প্রদিনে। তদা, তদানীৎ তৎকালে যুগপ্ত একবারে; একদা এক সময়ে; স্পদ্ ও मना गर्का ममरतः; जुरुष्टि जुरू कात्ररः ; मर्ख्याज, ॥ ইদানীং অধুনা সাম্প্রতং এই কালার্থে প্রযুক্ত

ইজায়েছে জ দিন্দাপুরগণে অবাস্বর্গ নামক সপ্তভাধিকজিলভানন কাধ্যার।

নানাৰ্থ বৰ্গ।

একসপ্ততাধিকত্রিশতত্র অধ্যায়।

অগ্নি কহিলেন, নাক (২) আকাশ ও স্বৰ্গ লোক ভূ'ন জন। শ্লোক পদা, যশঃ ; সায়ক শর, খড়গ; আনক শটহ ভেরী; কলক্ক অক্ত. অপবাদ; ক (পুং) মারুত, ব্রহ্ম। সূর্য্য। ক (ক্লাব) শিরঃ জল; পুলাক তৃচ্ছণান্য সংক্ষেপ ভক্ত সিকথ (कोशिक महरू, अग्छनू, उन्क, यान आरी শলোর্ক কপি শা; মান পরিমাণ সাধন; সর্গ স্ভাব, নিমোক নিশ্চয় অধায় স্ষ্টি; যোগ-সন্ধন উপায় ধ্যান, সঙ্গতি যুক্তি; ভোগ স্থ ন্ত্রা অংশির সভোগ: অজ্ঞ শহ্ম নিশা কর: কবট কাক করেগত; শিপিবিউ তুশ্যমা (টাক পড়া) ম্ছেশ্র ; রিউ হেম অশুভ অভাব ; অরিউ শুভ অভ্ভ; ব্যুষ্টি কল সমূদ্ধি। দৃষ্টিজ্ঞান চক্ষুং, দশ্ন নিষ্ঠা নিষ্পত্তি নাশ অন্ত। কাষ্ঠা উৎকৰ্ষ স্থিতি দিক্; ইড়া ও ইলা শব্দে, ভূমি, গো এবং বাক্য বুলায়; প্রগাঢ় ভূশ কৃচ্ছু; বঢ় প্রতিজ্ঞা দৃষ্ট (ত্রিলিগ) শক্ত স্বুল ; বুয়চ় বিন্যস্ত, সংহত ; কৃষ্ণ ব্যাস্ অভ্রেন হরি ; পণ দূতে ক্রীড়া দিতে প্রেদত বস্তু ভৃতি মূল ধন। তুণ শোকৰী (ৰমুগুণ), জৰা। শ্রত পদার্থ (দ্রুব্রেক যে আগ্রয় করে), সত্ত শুরু সন্ধ্যাদি। গ্ৰামণী শ্ৰেষ্ঠ অধিপ ; সুণা জুগুপনা,

করুণ ; ডুক্তা স্পূচা পিপাদা ; বিপাণ আপন ব্রিক প্র। তাম্ম বিষ অভিময়ণ লোহ থর: প্রমাণ হেছু মর্বাদা শাস্ত্র ইয়তা প্রমাতা। কারণ ক্ষেত্র গাত্রাদি : ঈরিণ শূনা মুষর। যন্তা হতিপেক মৃত ; হৈছি বাণ বহিন্ধালা ; শ্ৰেড শাস্ত্ৰ অবপ্পত কৃত যুগ প্ৰয়াপ্ত।, প্ৰতীত খ্যাত দৃষ্ট অভিজাত কুলজা বধ বিবিক্ত পৃত বিজ্ঞা: মূচিছত মূঢ় উচ্ছায় বিশিষ্ট। অমৰ্ অভিধেয় রৈ (ধন) বস্তু প্রয়োজন নিরুতি : তীর্থ নিদান আগম খবি যুক্ত জল (ঋষি দৈণিত জল) গুরু ; কুকুৰ (পুণনপুণস্ক) প্রাধান্য রাজ চিহু, রুষাঙ্গ। স্বিং জ্ঞান সভাবণ ক্রিয়াকার যুদ্ধ নাম। উপনিবৎ ধর্ম রহঃ; শাংৎ বংসর ঋতু; পদ ব্যবসায় ত্রণে স্থান চিহু পান বস্তু। স্বাতু (তিলিঙ্গ) ইফট মধুর। মূতু অতাক্ষ কৌমল। হৎ সভ্য সাধু বিদ্য (পু:ত্রর জ্ঞা), স্ত্রী। স্থা লেপ অয়ত সুধী (দীজ্মন্দঃ)। প্রদা সন্তা-ভাষ স্থা অক্ষাবন্ধ হৈছেনা, গৰিবিড। অধ্যেদ্ধ (নিকা)। ভাতু বুশ্মি দিবাকর। প্রাবো শৈল পায়াণ। পৃথপ্তন মুর্থনীচ; শিখরী ভক শৈল; ভতুত্বক্দেহ; আত্মা বহু ধ্বতি বুলি সভাব ভ্রহ্মবন্ধ (ভ্রহ্মদেহ অর্থাৎ ভ্রহ্মস্করণ): উত্থান পৌরুষ তন্ত্র; বুত্থান প্রতিরোধন; নির্মাতন বৈরশুদ্ধি দান ন্যাসার্পণ। বাসন বিপদ ভ্রংশ, কামজ ও কোপজ দোষ ; মুগয়া, ঋক দিবা স্থপ্ৰবাদ স্ত্ৰী মদ ভৌষাত্ৰিক বুথাট্যা (বুথা ভ্ৰমণ) কংমজ এই দশগণ; পৈশুনা, সাহস ছোহ উষ্। এদুবা অধ্দূষণ, বাগ্দন্ত পারুষা ক্রোধছাত এই অফ্রণ: কৌনীন অকর্ম গোপন; মৈথুন রতি সংখ্যান ; প্রধান প্রমার্থ বুদ্ধি প্রজ্ঞান বুদ্ধি : চিক্ত; ক্রন্তন ব্রেরেন আহ্বনে; বল্ল দেহ প্রমণে; আরাধন সুধন প্রতি তোষণা রত্ন স্বজাতি প্রেষ্ঠ

⁽১) নাক এই একটি শ্ৰাৱে ''আকাশ ও সংগ'' এই ছুই জার্থ চিয় এইরোগ স্কারি ব্রাডিড হচবে।

TAISINA DE **দিসপ্তত্য**ধিকলিশতত্য **অ**ধ্যায়। कृति बत्नीयस्त्रां नि वर्ग।

अग्नि कहिरलन, कृति शूत अखि वानीयि निःशन्दिर्भ दिन्ति। **क्**, अम्सा, क्रमा, शाखी, ক্ষা, কু, ধরিতী মৃৎ মৃতিকা; প্রদন্তা মৃত্তিকার নাৰ মুংসা, মুৎস্না মৃতিকা। জগং তিপিউপ. লোক, ভূবন, জগতী অয়ন, বস্ত্রা, মার্গ, অধ্ব, পন্থা পদবী, স্থতি, সরণি, পদ্ধতি, পদ্যা বর্তনী এক-পদী। পৃ: (স্ত্রী) পুরী, নগরী, পত্তন, পুটভেদন, স্থানীয়, নিগম। মূলনগর হুইতে অন্যপুর নির্গত হইলে তাহাকে শাখানুগুর করে। ষেথানে বেশ্যা গণ বাদ করে ভাহার নাম বেশ। আপণ, নিষ্দ্রা বিপৰি পণ্যবীধিকা মখ্যা, প্রতোলী বিশিখা। চয়, বপ্র প্রাকার বরণ শাল প্রান্তভাগে বৃতিব নাগ প্রাচীর। ভিত্তি (ন্ত্ৰা) কুড়া অন্তৰ্গ্যন্ত কীক সেব (কীকস অস্থিৎ কাষ্ঠউপলক্ষিত হয়) নাম এড়ক। বাস কৃট (পুংক্লাব) শালা সভা সঞ্লবন ইহাই চতুঃশাল মুনিগণের পর্ণশালার নাম উটজ (পু॰রীব) চৈত্য ও আয়তন তুল্য। মন্দুরা অশ্ব-শালা ধনিগণেরআবাদের নাম হর্দ্মাদি। দেব ও রাজগণের আবাদের নাম প্রাদাদ। ঘাঃ (খার শব্দ স্ত্রীলিঙ্গ) ছার, প্রতীহার বিতর্দি বেদিকা বিটক্ষ (পুংনপুং) কপোডপালিকা। কবাট, অবর निः (अपि, अधिताहिनी निष्क् नमार्कनी, (माधनी। সঙ্কর, অবকর। অদ্রি, গোত্র, গিরি, গ্রাবা; গছন कानन, वन, ब्यादाम छेश्यवन वा कृतिमयन। धरे বন, অন্তঃপুরোচিত হইলেই প্রমোদ বন হয়। ीथि चालि, जावनी भरिक (खानि, त्नथा, वाकि কলপুষ্পা সময়িত হইলে বানস্পত্য, উহা পুষ্পাহীন ছইলেই বনস্পতি এই মাখ্যা প্রাপ্ত হয়। ফল

ও মণি মাণিক্যাদি; লক্ষ্ম চিক্ত প্রধান; কলাপ ভূষণ বৰ্ছ ভূগীর সংহত ; ভল্ল শ্যা আই দার , ডিন্ত শিশু বালিশ। তাত দুণা কড়ীভাব। সভা সভ্য সংস্থ : রশ্মি কিরণ প্রগ্রন্থ (লাগাম) ধর্ম भूगा, यमानि । निनाम भूक्ट भूख अर्थ कृषा शां**रा**क কেতু; প্রভায় মধীন শপথ জ্ঞান বিখাস ছেতু। সম্য শপ্ৰ আচাৰ, কাল নিদ্ধান্ত সংবিং। অভ্যয় অতিক্রম কুচ্ছ দত্য শপথ তথ্য ৷ বীর্ষ্য বল প্রভাব রূপ্য প্রশাস্ত ; তুরোদর (পুৎ) দৃতেকার। তুরো-দর (ক্লীন) পণ দ্যুত। কাস্তার (পুং মপুংসক) মহা-রণ্য তুর্গপথ । হরি যম অনিল, ইবদ চক্র, আর্ক विकृ निःहानि । प्रव (शूर्न शूर्मक) खर चड (इप्र) জঠন উদর কঠিন; উদার দাতা মহান্; ইভর व्यता मीह। त्योलि हुए। किही है तर्यक्रक्त । दनि कत छेशहातान । यस रेमना रेख्यानि । नीयो ্ গ্রীদিগের কটিবন্ধন বস্ত্র পবিপণ; বৃষ শুক্রল সুষিক শ্রেষ্ঠ হকত ব্যভ। আকর্ষ দৃত্তকে সারিফলক। অক (ক্লাবলিঙ্গ) ইন্দ্রেয়া অক (পুঃ) দৃত্যেক কর্ষ ব্যবহার কলিজ্ঞা। উষ্টীষ কিরীটানি। কর্ষ কুল্যাণ অভিধায়ী। অধাক্ষ প্রত্যক্ষ অধিকৃত। विভाव इ मूर्या अधि। तम मुक्तांतानि विष वीर्या, গুণ বাগ দ্রব। বর্চঃ ভেঙ্গঃ পুরীষ। আগঃ পাপ, অপরাধ। ছন্দঃ পদ্য অভিলাষ। সাধীয়ান্সাধু বাঢ় (স্বীকার) বুছে রুন্দ ও দৈনা রচনা; অহি রত্রাহ্র, অমি, খলু, অর্কাদি, তমোমুদ্গণকে বুঝায় ।

हेकार्यस्य जानियशास्त्रार्यं नामार्थवर्त्त नामक এক্দপ্রভাধিকত্রিশস্তত্ত্ব অধ্যায়।

পাকিলেই যহািবা বিন্ট হয়, ভাহারা ভ্রথ। পলাশী অফ, তেম, অগম স্থাণু (বিকল্লেপুং) ধ্রুব, শস্থা প্রফ্ল উৎফ্ল সংক্ট প্রাশ্ছণন, প্র ইথা এশঃ সমিৎ স্ত্রীলৈঙ্গ বোধিক্রম চল্পল অখ্য দধিথ গ্রাহী মন্মথ দভিফল পুজ্পদল দম্ভশঠ। উভূষর হেমছ্ম কোবিদার দ্বিপত্রক সপ্তপর্ণ, বিশালস্ক্ কৃত্যাল অবর্ণক। আরেণ্ড ব্যাধি-পাক ব্যাধ্যাত সক্ষাক ছতুরঙ্গল জন্মীর দত্তশঠ বরুণ ভিক্তশাবক পুলাগ পুরুষ তুঙ্গ কেশর দেব-বল্লভ পারিভদ্র নিম্বতরে মন্দার পারিকাতক বঞ্জুল চিত্রকৃৎ। পীংনক পীতন পুং আন্তাতক মধুক, তত্পুষ্প মধুক্রম পীলু গুড়ফল আংসী কোকগানি দেশজ বৃক্ষ বিশেষ নাদেয়ী অমুবেতন শোভাঞ্জন শিগ্র তীক্ষণন্ধ কাক্ষার মোচক রক্ত প্রভাঞ্জন, মধু শেগ্র। অরিকট কেনিল রিঠাকরঞ্জা গালব, শাবর, লোধ্র তিবীট তিল্প মাল্জন শেলু শ্লেমা হক শীত উদাল বহুবারক বৈকলত আগবারক এছিল, ব্যাত্রপা। ভিন্দুক ক্ষুয়াদ কাল ন দেয়া ভূমি-कचूक कार्काङम् शीमूक। शावेलि, शाक गूकक। ক্রন্ক পাট্ট দাথা। কুল্লী কৈটবা কট্ফল। বীরবৃক্ষ অরুকর অগ্নিস্থী ভলাতকী (বিশেষ)। সক্ষক, আসন জীব পীতদাল মালক সঙ্গল আৰক্ৰ। ইন্দ্রফে, ককুভ ভার্জ্ব। ইমুদীভাপদভরণ। মোচা শালালি। চিরবিত্ম নক্ত মাল করজ, করঞ্জক। প্রিকরজঃ মাক্টী অঙ্গার বল্লরী। রোহী বোহতক, প্লাহ শক্ত দাড়িম পুষ্পক। গায়কী বালতন্য গদির দম্ভণাবন। বিট্পদির আরিমেদ। কদর খেত খানর। পঞ্চাঙ্গুল বর্দ্ধমান চঞ্চান্ধর্ব হতক। পিণ্ডীতক মক্রবকে পীতদারে দাক দেব-দারুপুতিকাঠ। শ্যানা মহিলাহ্রয়া লতা গোব मनी अना शिव्रह्न कतिनी कती। यक्कपर्व

পত্রোর্গ নট কটু অক্টুন্ট,কা। শোধনাক, শুকনাস ঋক দীৰ্গস্থ কৃটলট। পীতক্ৰ সংল। নিচুল অযুত্র ইঙ্জল। কাকোড়্মরিকা ফল্প। অরিট পিচুমৰ্দ্দক স্বৰ্ণতো ভদ্ৰক নিম্ব ; শিৱাৰ কণীভন ; বকুল বঞ্জুল; পিচিছলা অগুরু শিংশপা; জয়া, জয়ন্তী তর্কারী; কণিকা গণিকারিকা, জ্রীপর্ণ, অগ্নিষভ ; তওুলীয় অল্নানিষ ; সিন্ধান নিও ভী আক্ষীতা বনোম্ভণা; গণিকা যুখিকা অন্বঠা সপ্তলা, নবমালিকা; অতিমৃক্ত, পুণ্ডুক; কুমারী, ভরুণীসহা; ভাহার|রক্তবর্ণ হইলে কুরুবক ও তাহা পীতবৰ্ণ হইলে কুৰুণ্টক কছে; নীলবিন্টী (ক্ত্রীপুং লিক্স) ঝিণ্টী; দৈরিয়ক; তাহা রক্ত হইলে কুরুবক পীত হইলে সংচরী (স্থাপুণ) करह; धुषुत, कि डव धुर्छ; ऋहक, गाङ्गक्रक; সমারণ প্রস্থা কণিজ্বক ; পর্ণাস কুঠেরক ; শাস্কীত বস্তকার্ক ; শিষ্মল্লী, পাশুপত, রুন্দা, বুকাদণী ; জীণভাকি), বৃক্ষক।, গুড্চাঁ, ভসুকি) য়ত, দোম বল্লা, মধুপর্ণী; মূর্ববা মোবটী মধ্লিকা मद्रायमी (योकर्गी भीजूपर्गी: भाष्ट्रा अवर्छ। विक-करी धाष्ट्रोमा, बनिडिक्टका; कर्ष्ट्रे कर्ष्ट्रे खता; ठकाकी, मक्नामनी चांबाळ छ। श्राव्यक्षी किनिकेट् মর্কটী; অপামার্গ, শৈখরিক প্রস্তাক্পণী মন্ত্রক; ফঞ্জিকা, ব্রাক্ষান, ভালী ; দ্রেগ্ডা শবরী, রুষা মণ্ডু क्रभा ; छ्छीती, भम्द्रा, कालरमायका ; द्वानमा কচ্ছুরা, অনতা, সমুদ্রান্তা, তুরালভা; পৃশ্লিপণী, পৃথক্পণী, কলসি, ধাবনি গুছা ; নিদিদ্ধিনা, স্পুণী ব্যাত্রী কুদ্রা হুস্পর্ণ। অবল্ওজ দোমরাজী, ञ्चलि (मामर्गलका, कालरमयी, कृष्णकला चाकूठी, পৃতিকলী। কণা, উষণ, উপফুল্যা শ্রেয়দী, গজ-পিপপলী। চন্য, চনিকা, কাক চণ্টী গুঞ্জা কুঞ্লা বিশা বিষা প্রতিবিষা; বনশৃকটি, গোকুর; নারা-

श्रुण শত**म्**ी ; काटलयक, हतिक्रुव ; नार्वी शहल्लाहा দারু; শুক্লা বচা হৈমণতী, বচা, উতা গদ্ধা ষ্ডু-এছা: গোলোমী শতপর্কিকা : আস্ফীতা. গিরিকণী; সিংখাদ্য বাসক, রুষ; মিশী মধুরিকা, ছত্রা; কোকিলাক ইকুর কুরা; বিভুক্ত কুমিল্ল বজ্ঞ অক্, মুছী, স্বধা ; মুৱীকা, গোন্তনী, দ্রাক্ষা ৰলা বাটা শলক ; কাল্য, মসূর বিদলা ; তিপুটা, ত্রিরতা ত্রিরং; মধুক ক্লীতক গ্রন্থী মধুকা, মধু যষ্টিকা; বিদারী, ক্লীর শুক্লা ইক্স্পক্ষা, coকাঞ্জী, দিতা; গোপী শ্যামা, শারিবা। অনন্তা উৎপন্ন भातिना: (शाहा, त्रञ्जा कमनी छन्होकी कुष्प्रधर्विनी ছিবা প্রানা দালপণী; শুক্রী, রুষভ রুষ; গাকে রুকী, নাগবং বি, যুসলা, তাল ফুলিকা , জ্যোৎস্নী পটে। निका, काली; चडमुक्री, विश्वविका, काक নাগবলী; হরেণু লিকী অগ্নিখা; ভাৰানী, রেণকা কৌন্তী হ্রাবেব, দিব্যনাগর। কালা অসু সারা অবৃদ্ধা, অশাপুল্প শীত শিব, শৈলেয়। তাল পণী দৈত্যা গন্ধকৃটী, মুরা; গ্রন্থিপর্ণ শুক বর্ছি; বলা ত্রিপুটা ক্রটি; শিষা, তামলকী; হমু হট্ট-निनामिना ; कूठ, नहें, ममशूब, वादनश श्रीतरशनव, ड्लाश्चनी, क्रोमार्मी; शुका, त्मवी, लघू; कर्फू-রক, দ্রারিড়ক; গন্ধমূলা, শঠী। ঋক্ষণদা, তুগ-লান্তা: বেগী বৃদ্ধদারক; তুতিকেরী, রক্তফলা, বিষিকা, পীলুগনী। চাঙ্গেরা, চুক্রিকা, অথঠা; স্বৰ্কারী হিমানতী; সহস্রবেধী, চুক্র, অমবেডস, শতবেধী; জীবন্তী, জীবন, জাবা, ভুমনিম্ব, কিবাতক। কুৰ্জনীৰ্ষ, মধুবক, চন্দ্ৰ, কপির্ক্ষক। দক্রুল, এড়জাত; বর্ষাভূ, শোথহারিণী। কনদর্শী, নিকুন্তন্তা, যমানী, বার্ষিকা ; লশুন, গৃঞ্জন, অবিঊ, মহাকন্দ, রুপোনক। বারাহী, বদবা, গৃষ্টি। কাক্মাচী, বাণ্দী। শতপুপ্পা, দিতচ্ছতা, অতি-

চহত্রা, মধুবা, মিনি:। অবাক্পুস্নী, কাবনা;
দরণা, প্রদারিণী; কটস্করা, ভদ্রফলা; কর্বর,
শটী; পটোলা কুলক, ভিক্ত; কাববেলা, কটিল্লক
কুমাণ্ডক, কর্কারু; ইর্বারু (স্ত্রী) কর্কটী (স্ত্রী)।
ইক্ষাক্, কট্তুষী; বিশালা, ইন্ত্রারুনী; অর্শন্ধ;
শ্রণ, কন্দ; মুক্তক, কুরুবিন্দক; বংশ, অক্সার,
কর্মার, শেণু, মস্কর, তেজন; ছত্র অভিছত্রা,
পালন্ধ, মালাত্ণক ভূস্ণ। ত্ণবাজাহ্বর, তাল,
ঘোণী, ক্রমুক, পুগক।

শাৰ্দি, দ্বীপী, ব্যায়। হ্যাক্ষ,কেশরী, হ্রি। কোল, পোত্রী, বরাহ। কোক, ঈহামুগ, রক। লুভা, ঊর্ণনাভ, তন্তুবায়, মকট। বৃশ্চিক,শূককটি। দারকী, স্তোকক; কুকণাকু, তামচূড়। পিক, (काकिन; काक, (काकिन, श्रविष्ठ); वक, कस्त्र; কোক, চক্র, চক্রবাক; কাদস্ব, কলহৎস; পত-ঙ্গিকা, পুভিকা; সর্বা; স্ব্যা, মধুমক্ষিকা; बिरतक, পুষ্পলিট, ভৃদ্ধ, ষট্পদ, ভ্ৰমর, খলি; (कको, निथो : উहात चारकात नाम (कका : শকুস্তি, শকুনি, হিজ ; পক্ষতি, (স্ত্র) পক্ষয়ুল ; চঞ্চু, (স্ত্রী) ত্রোটি; পশ্দিগণের গতির নাম উজ্ঞান সংজীন ; কুলায় (পু) নাড়, (পুং নপুং) পেনী ও কোষহীন হইলে অভ বলা যায়। পুথুক, শাবক, শিশু, পোভ, পাক, অর্ডক, ডিম্ব ; সন্দোহ, ব্যহ, গণ, স্থোম, ওম, নিকর, ত্রাত, নিকুরম, কদম্বর,। সংখাত, সঞ্জ, রুন্দ; পুঞ্জ, রাশি, কুটক।

> ই তাাথেয়ে আ দন্ধ।পুরাণে ভূনিবান বরা দ্বর্গ নামক বিম্পুতাধিক জিলা ন্যান্ধায়।

ত্রিসপ্ত ভাষিকত্রিশত তম অধ্যায়। নূরক্ষকত্রিট্ শ্রেবর্গ।*

ভায়ি কছিলেন এঞ্পে লু ভ্ৰহ্ম, ক্ৰু, বিট 💍 শ্क्रवर्शित नाम विलय। मत, शक्षत्रन, मर्खा ; (या-विष्, (याया, व्यवना, वशु; (य नाती कांस्वार्थनी **হ**ইয়া সংকেতভানে গমন করে তাহাকে অভিসা রিক। কছে। কুলটা পুংশ্চলী, অসতী ন্মিকা, কোটরী। যে নারী অন্ধবৃদ্ধা তাহাকে কাত্যায়নী এবং যে পরগৃহে বাদ করে তাহাকে দৈরিন্ধি करह। चनिको, चहुन।; मनिनी, इसचना; বারন্ত্রী, গণিকা, বেশ্যা; ভ্রাভূদায়াকে যাতা কহে। সামির ভগিনী, ননান্দা ; সুপিও, সমাভি ; म्भार्तामधा, (मामधा, मन्छ, महक। मरनाख, বান্ধব, জ্ঞাতি, বন্ধু, স্থ, স্থজন; সম্পতী, জম্পতী জায়াপতী ; গর্ভাশয়, হুরায়ু উল্ল কলল (খন্ত্রী) ; পৰ্ভ জ্ৰুণ; ক্লীৰ শণ্ড নপুংদক ; উত্তানশাযা (চিৎ হট্যা বে শয়ন করে) ডিস্ক বালক মাণ্বক। পিচি-ণ্ডিল ব্ৰহ্ৎ কুকি; অবজ্ঞট মত নাসিক; বিক-লাস পোগও; আরোগ্য অনামর। এড় বধির; কুজা গড়ুল; কৃণি কুক্র; ক্ষয় শোষ্থক্যা; প্রতিশ্যার পীনস; কুৎ (স্ত্রী) সুত কর; কাশ ক্ষবঘু (পু॰) ; শোধ খ্যপু শোফ ; পাদ ক্ষেটি বিপাজিবা কিলাস সিধাকচছু; পাম পামা বিচ-চিচিকা; কোঠ মণ্ডলক কুন্ঠ। খিতা ছম্চশ্ম कार्नः ; अनार विवक्ष धारुगे सन् क्षत्राहिका ; বীজ বীৰ্য ইন্দ্ৰিয় ওঁজে; পলল জেন্য আনিন; বুক অপ্রমাণ্স হৃদয় ছেং; বপা বসা মেদঃ; পশ্চাদসূীবাব শিরার নাম মন্যা; নাড়ী ধ্মনি শিরা: তিলক ফোম মন্তিক; দূষিকা নেত্রমল; অন্ত পুরী তাহার গুলোব নাম প্রীহা; বস্ত্রসা সায়

कालबंध रहूद कर्णत क्यांग (चल्ली) कीका कुरा অস্থি কলাল শরীরাখি; কলেরকা পৃঠাখি; করোটি (ক্রী) মন্তকান্থি। পশুকা পার্খানি; অঙ্গ প্রতীক অব্যব; শরীর বল্ল বিতাহ; কট (পুং) শ্রোণিফলক ; কটি জ্যোণি কক্ষতী ; জ্রিক টির পশ্চাস্তাগের নাম নিতম্ব এবং তাহার পুরো ভাগের নাম জঘন (নপুং); ককুন্দর নিত্ত্ত্ত্ কৃপকদয়। শিক্ষ্ (ন্ত্ৰী) কটিপ্ৰোথদয়; উপস্থ বোনি ও শিশ্ব; ভগ হোনি; শিশ্ব মেচ মোহন শেষদ্; পিচিঙ কৃষ্ণি; উদর পুনা; কৃচ জম; চুচুক কুচাতা; জোড় (ক্লীৰ জীলিক) ভূজান্তর; কক ভূজশির: অংশ (অন্ত্রী); ভাগার সন্ধিদ্ধযের নাম জক্ত : পুনৰ্ভৰ করক্তেই নথ (অন্ত্রা) নথর (অন্ত্রী) প্রাদেশ ভাল গোকর্ণ ক্রেমে ভঙ্গানী আদি বিশিষ্ট বিস্তারে বুঝায়; কমিষ্ঠ বিশিষ্ট অঙ্গুঞ্চেব নাম বিভব্তি তাহা দাদশ্মঙ্গুল; বিজ্তাঙ্গুল পাণিকে চপেট প্রতল ও প্রহন্ত কছে। বন্ধ মৃষ্টি করকে রত্বি এবং কনিষ্ঠায়ুক্ত তজ্ঞপ করকে অরত্নি কছে। অবটু ষাটা কুণাটিকা ভাহা ত্রিরেখা বিশিষ্ট হইলে কমুগ্রীবা কছে; ওচের অধ্যেভাগের নাম চিবুক; গওছল হণু; নেত্রছয়ের অন্তভাগের নাম অপুঞ্জ ; কটাক অপালবারা দর্শন ; চিকুর কুন্তল আল ; প্রতিকর্ম প্রসাধন ; আকল্প বেণ নেপশ্য; প্রাহ্যক খেল যোগজ; চুড়ামণি লিরো-রত্ন; তবল হার মধ্যগ। কর্ণিকা ভালপত্ত। नश्रम ननश्चिका। मञ्जीत मृशूत्र शरम। किकिनी कृष्ट पविका। देवर्षा जाश्राम जात्त्राह। পরিবাহ বিশালতা। পটক্ষর জীর্ণবৃদ্ধ সংখ্যাত উত্তরীয়ক রচনা পরিস্পান্দ। আভোগ প্রিপুর্ণভা। সমু দাক সম্পুটক। প্রতিগ্রাহ প্রদাহ !

চকুঃসংভাধিকত্তিশতভ্য অধ্যায়। বন্ধবৰ্গ।

অগ্নি কহিলেন, বংশ, অন্ববার, গোতা, কুল, अधिकन, अवस्। मखरांचााकृष, आडांधाः चा-দেটা অধ্বরে ব্রতী; যন্তা, যজমান; ভারারস্ক. উপজেম; বাহাদিপের শুরু এক, জাহাদের নাম সতীর্থ ; সভ্য, সামাজিক সভাসদ, সভাস্তার ; ঋত্বিক, যাজক ; ঋথবুৰ্যু, গাতা, হোতা, এই উভয় नाब उक्टम ययूटर्वरंप ७ नामरवरण छेळ दश। हवान, যুপকটক ; স্বন্ধিল, চত্ত্ব ; ক্লীর, দধিযোগে উষ্ণ কবিয়া মৃত করিলে ভাছাকে আমিকা (ছানা) কছে। দ্ধিযুক্ত যুতের নাম প্রদাজ্য। প্রমান, পান্দ ; যে পশু যজে অভিমন্ত্রিত হইনা হত হয়, তাহাকে উপাকৃত পশু কহে। পরস্পরাক, শমান, বধার্থপ্রেক্ষণ অর্থাৎ বধের নিমিত্ত অভিষেক। পূজা, নমদ্যা, অপচিতি, সপর্যা,অর্থা ; বরিবদ্যা, শুজ্রবা; পরিচর্ব্যা, উপাদনা; নিরম ব্রন্ত (মন্ত্রী) তাংগ উপবাদর্গদ পুরাকর; মুখ্য প্রথম কল্ল, তাহার অধম অমুকল; কল্প, বিধিক্রম; বিবেক, বিবেক, পৃথগাত্মভা; দংক্ষান্ত পূর্বক শ্রুভির গ্রহ-ণকে উপাৰরণ কছে: ভিকু, পরিব্রাট, কর্মদা, পারাণরী, মক্তরী; ঋষি, সত্যবাক; স্নাতক, আপ্লুতত্ততী; বাঁহালা ইন্দ্রিয়গ্রাম কর করিয়াছেন, তাহাদিগকে যতি ও যতী কছে। শরীরদাধনা-পেক যে নিভাকর্ম, তাছার নাম যম। খনিতা আগল্পদাধন যে কর্মা, ভাছাকে নির্ম কছে। অক্সত্য়, একাদ, একাদাযুদ্ধ্য ।

> ইত্যার্থেরে আদিমহাপুরাণে এক্সবর্গ নামক চহুঃসপ্ততাধিকত্তিশতক্তম অধ্যার।

পৃঞ্চস্থত্যধিকতিশতত্ব তাধ্যায়। ** *ত্তিবিট্শুদ্রবর্প ।

অমি কহিলেন, যুদ্ধাভিষিক্ত, রাজনা, বাইজ, ক্ষত্রিয়, বিরাট। বাঁহার বলবীর্ষ্যে অশেষ লামস্ত বশীসূত হয়, তাহাতে রাজা ও অধীশ্বর কহে। বিনি চক্রবর্তী ও দার্কভোম, তিনিই মণ্ডলেখর নৃপতি। মন্ত্রী, ধীসচীব, অমাত্য, মহামাত্র, প্রধা-নক। ব্যবহার সমূহের দর্শককে প্রাড়বিবাক ও অক্লদৰ্শক কৰে। কনকাধ্যক, ভৌরিক; অহ্যক্ষ, অধিকৃত; স্বস্তঃপুরে অধিকৃত ব্যক্তিকে অন্তর্বংশিক কহে। সৌবিদল্ল, কঞ্কী, স্থাপত্য, সৌন্দি। ষণ্ড, বৰ্ষৰর ; সেৰক, অফুজীবী ; দেশের প্রতি-কুল রাজা শত্রু; ভদ্তিম মিতা। উদাসীন, পরসর; পৃষ্ঠ ছায়ী, পাক্তি গ্ৰহ ; চর,স্পশ,প্ৰণিধি ; আয় ভ, উত্তরকাল; তৎকাল, তদাস্ব; উদক, উত্তরফল; অদৃষ্ট, বহিংতোয়াদি ; দৃষ্ট, স্বপরচক্রন্ধ। ভদ্রকৃষ্ট, পূর্ণকুষ্ক ; ভূজার, কনকালুকা ; গর্ভিত ও মত हरेतन क्षाचित्र करह। यमपुः कत्र-शिकतः, भृति (क्षो) অঙ্কুল (অন্ত্র); পরিস্তোম: কথ; (ন পুং) কণীরধ, खररन : ताना 'e क्ष्यानिका खोनिक; चार्यातन, হস্তিপক। নিষাধী,গন্ধারোহী। ভট,যোধ, যোদ্ধা। কঞ্ক, বারণ অস্ত্রী ; শর্ষণ্য, শিরন্ত । তত্ত্ত্ত, বর্মা, দংশন। আযুক্ত, প্রতিমুক্ত, পিনদ্ধ, অপিনদ্ধ, তুল্য। ব্যহ, বলবিনাস। চক্র, অনীক, অস্ত্রী; এক গজ, এক রণ, তিন অধ ও পঞ্চ পদাতিক এই সকলের নাম। পশ্তির অঙ্গ স্কলকে তিন গুণ করিয়া উত্তরোভর ক্রমে আখ্যা অর্থাৎ নাম হইবে। যথা, त्मनामूथ, छत्म, गग, वाहिनी, পृथना, हम्, क्नी-किसी; मन अभीकीभीटिंड अक अस्कोहिनी। अ नकल गङ्गानि नकल चक्रहे थाकित्व।

কোদও, ইম্বাস। ধুসুজোটীর নাম ভটনি ; নতক, थक्मधा ; (मोक्तों, का। ; निश्चिनी, छन ; श्रयःक, বাণ : বিশিথ, অজিকাগ, খগ, আশু : ভুৰী, নিষ্প: ইষুদি (ন্ত্রীভুং) ; অসি, ঋষ্টি, নিস্ত্রিশা, করবাল, কুপাণ ভুল্য ; ৎসক্ত, খড়গমৃষ্টি ; ঈলী, করপা লিকা : কুঠার, হুধিতি ; ছুরিকা, অদিপুজিকা ; প্রাস, কুন্ত ; সর্বালা, তোমর, অন্ত্রালিঙ্গ, ; বৈতা-लिक, (बाधकत ; बागध, वन्ती, खिछिशांठक ; প্রতিজ্ঞাহেতুক সংগ্রাম হইতে অনিরন্ত সৈনাই সাসপ্তক: পতাকা, বৈজয়ন্তী, কেতন, ধ্বজ (খন্ত্রা) আমি পুর্বেব, আমি পূর্বেব এইরূপ উক্তির নাম অহম্পৃর্কিকা; পরস্পর অহংকার করণই অহমহমিকা; শক্তি, পরাক্রম, প্রাণ, শৌর্ষ্য, স্থান-সহ্বল। মৃতহা, কশাল, মোহ অবমদি পীড়ন; অভ্যবস্থান অভ্যাসাদন ; বিজয়, জয় নির্বাদন, শংজ্ঞপন, সারণ প্রতিঘাতন; পঞ্চা কালধর্ম, দিন্তান্ত, প্রলয়, অত্যয়, বিট ভূমিম্পুক্ বৈশ্য; রভি, বর্তুদ, জীবন; কুষ্যাদিও রভি কুণীদ র্ছি জীবিকা উদ্ধার অর্থপ্রয়োগ, কণিশ, শদ্যমঞ্জরী; কিংশার, শস্যশৃক তথ্য তৃণাদির শুৎস; ধান্য, বীহি, তম্বকরি কড়ঙ্গর বুধ ভূষ মাধাদি শমীধান্য বৰাদি শুক্ধান্ত; নীবার তৃণধান্য শূর্প প্রস্ফোটন দ্যুত, প্রদেব কণ্ডোল পিট কট কিনিঞ্ক ; রস-বতী পাকস্থান মহানস; পৌরগব পৌরাধ্যক; সুপকার বল্লব আরালিক আন্ধাদিক, সূদ, উদনিক গুণ; অম্বরীষ নপুংসক ভ্রাফ পুং কর্করী, মালু, গলন্তিকা : আলিঞ্চর, মণিক : ত্রনী কুঞ্জীবক আরনাল কুলাষ বাহ্লীক, হিন্দুরামঠ বিশা, হরিদ্রা পীতা ত্রা থণ্ড, মৎসণ্ডি, ফাণিত; কুর্চিকা, ক্ষীরবিকৃতি মিগ্র, মহণ, চিক্কণ; পৃথুক, চিপিটক धामा खी, जरुयर (अमन, त्नल, चाहांत भारहती,

टमोत्रकी त्या, यूगानित वहनकात्री त्यानितक यूगा, প্রাসঙ্গ ও শাটক কছে; চিরসূতা গাভীর নাম বক্ষণী, নব প্রদূতিকার নাম ধেমু; ব্যভাক্রান্তা গাভীর নাম সন্ধিনী গভোপখাতিনী গাভীকে বেহৎ কছে; পণ্যাজীৰ আপণিক ন্যাস উপনিধি पूर विश्वन विक्रय : मरथा ७ मरथरय मनाविध जिलिकः; विश्मजािति मःशा ७ मःरशारात्र मक-লই নিয়তই একৰচনান্ত প্ৰযুক্ত হয় ; দিবস্থানান্ত প্রযুক্ত হইয়া থাকে; তমাধ্যে নবতি পর্যান্ত সমন্তই জ্রীলিঙ্গ; পংক্তির শতসহস্রাদি ক্রমে দশগুণ হইয়া থাকে; লাঙ্গলি প্রন্থারা মান হয়; পঞ্জায় আদ্যুদায়ক ষোড়শ, আদ্যু-মাষকে এক অক বা কর্ষ্ট; কর্মচতুষ্টয়ে একপল অকপরিমত হেমের নাম জবণ্বিস্ত, পল্মিতি হেমের নাম কুরুবিস্ত ; তুলা ন্ত্রী পলশত বিংশতি-তুলায় একভার: কার্যপেণ, কার্ষিক কার্ষিক, তাত্রিক পণ: দ্রুব্য, বিত্ত' স্থাপতেল, শিক্থ, ঝকণ, ধন, বস্তু; রীতি স্তা আবকূট তাত্রক পু:ক্লীব শুল্প, উত্তম্বর লৌহ, তীক্ষ্প, কালায়দ, অয়:, ক্ষার, কাচ, চপল: রস, সৃত, পারদ; গরল, মাহিষ শৃঙ্গ; ত্রপু দীদক, পিচট; হিগুীর, অব্বিকফ, ফেণ মধুচিছ্টট, দিক্থক; রঙ্গ, বঙ্গ, পিচুস্থল কুলটী, মনঃশীলা; যবক্ষার, পাক্য, ছক্-কীর, বংশলোচন; বুষল, জঘন্যজ, শূদ্র, চাতাল অন্ত্যজ, শঙ্কর, কারু, শিল্পী; স্কাভির সহিত সংহত হইলে ভাহাকে শ্রেণ (পুংস্ত্রী) বলাযায়। রঙ্গতীর চিত্রকর; ছক্তা তক্ষা, বন্ধকি। নাড়ি-ক্ষম, স্বৰ্ণির নাপিত অন্ত্যাবসায়ী, জাবাল, অজা-कीय। तनवाकीय तनवन। काबाकीय त्रिन्य। ভৃতক, ভৃতিভুক। বিবর্ণ পামর নীচ প্রাকৃত, পৃথগ্জন। বিহীন অপদদ জালা। ভূত্য, দাদের

চেটক। পটু, পেশল, দক্ষ। মৃগয়ৄ, লুকক।
চাণ্ডাল দিবাকীত্তি। পুস্ত, লেখ্যাদি কর্মা পঞ্চালিকা, পুক্রিকা। বর্কর, তরুণ পশু। মজ্মা,
পেটক, পেড়া। প্রতিমা, প্রতিকৃতি। এই
ব্রহ্মাদি বর্গ কথিত হইল।

ইত্যাধেরে আদিমহাপ্রাণ ক্ষাবিট্ শৃদ্বর্গ নামক পঞ্চপ্রত্যধিকত্তিশতভদ্ অধ্যায় !

ষট্ সপ্তত্যধিকত্তিশততম অধ্যায়।

সামান্য নামলিজ।

অগ্নি কহিলেন, সাম্ভি নাম লিঙ্গ সকল বলিব অনুবৰ কৰা স্তক্তী পুণ্বান্ধনা। মহেচছ মহাশ্যা প্রবাণ নিপুণ অভিজ্ঞ বিজ্ঞ কিঞাত শিক্ষিত। বদাতা স্ল লক। দানশোও বহু-প্রদ। কৃতীকৃতজ্ঞ কুশল। আংস্তেক ও উতু।-জ্ঞ ই উৎস্ক। ইভা আচা পরিবৃঢ় অধিভূ নাযক অধিপ। লক্ষীবান্লক্ষণ শ্ৰীল। স্তন্ত সৈবী, অপারত। খলপু বছকর। দীর্ঘদ্তে চিরক্রিয়। জাল্ম অসমীক্ষ্য কারী। ক্রিযায় যেমন্দ তাহাকে কুঠ কহে। কথা শূব কথাঠ। ভক্ষক ঘতার লোলুপ গর্ধল গৃধু। বিনীত প্রঞ্জিত, ধৃষ্ট, বিযাত নিভ্ত। প্ৰতিভাষিত প্ৰগল্ভ। ভীকক ভীক্ত। বন্দার, অভিবাদক। ভূফু এবিফু ভবিত। জ্ঞাত বিছুর বিন্দুক। মত শৌগু উৎকট শীর চণ্ড অত্যন্ত কোপন। দেবান অঞাত অথাৎ দেব তাদিগের নিকট যে গমন করিতেছে, দে দেবদ্রাঙ এইরূপ বিশ্বক অঞ্চতি বিশ্বদ্রাও। যে সহ গমন কবিতেছে দে সম্ভঃ। তিরোহঞ্চি, ইতি তির্যাঙ বাচোযুক্তি পটু ৰাগ্মী বাবদুক বক্তা। জল্লক, বাচাল। বাচাট, বহুগহাবাক্। অপধ্যন্ত ধিকৃত

वक्ष कोलिङ मश्यकः वद्गन अक्टना नान्नीवाही, নান্দীকর। ব্যস্নার্ভ উপরক্ত। বিহস্ত ব্যাকুল নৃশংস ক্রুরী খাতুক। পাপ ধূর্ত্ত বঞ্চক। মূখ্ বৈণেহ বালিশ কদষ্য রূপণ ক্ষুদ্র মার্গণ বাচক, অবী। অহংযু, অহস্কার বচন্। শুভ যু শুভাবিত কান্ত মনোরম রুচ্য হান্য অভীষ্ট অভীপিত। অসার ফল্ভ শৃতা। মুখা বয়া ববেণা। তেলান্ শ্ৰেষ্ঠ পুৰুল প্ৰাগ্য অগ্ৰ অগ্ৰীয় অগ্ৰিম। বডু উরু বিপুল ।পীন পিবনি ছুল পীবর। স্তোক ঋল কুলক। সূক্ষা প্ৰক্ষ দত্ৰ কুণ তকু। নাত্ৰ। কুটা লব কণা ভূষিষ্ঠ পুরুহ পুরু। অথও পূর্ণ সকল। উপকণ্ঠ অন্তিক অভিতঃ। সমীপ সন্নিধ সভ্যাস। तिमिष्ठ अन्मील प्रिक्ठ अन्त । तृह निख्न वर्त्त न উচ্চ প্রাংশু। উন্নত উদগ্র। এবে নিত্য সনাতন। আবিদ্ধ কুটিল ভুগ্ন বেল্লিত বক্তা। অঞ্চল তরল। কঠোর জরঠ দৃচ। প্রত্যপ্র অভিনব নব্য নবান নূতন নব। একতান অন্ত বৃত্তি। উচ্চও অবিল-থিত। উচ্চাব্চ নৈকভেদ (অনেক প্রকার) সম্বাধ কলিল। তিমিত স্তিমিও ক্লিম। অভিযোগ অভি-গ্ৰহ। স্ফাতি, রুদ্ধি। প্রথা খাতি। সমাহার সমূচ্চ্য। অপহার অপচয়, বিহার পরিক্রম, প্রত্যাহার উপাদান, নিহার অভ্যব কর্ষণ, বিঘ, মন্তবায় প্রভূতে। আস্যা, আসনা, স্থিতি সনিধি দ্রিকর্ব। সংক্রম, তুর্গ সঞ্চল, উপলপ্ত অভুভব। প্রত্যাদেশ, নিরাকৃতি। পরিষদ, সংশ্লেষ উপ-গূহন। পক্ষতেজ।দি ছারা পদার্থ বোধের নাম অনুমান,ডিম্ব ভ্রমর বিপ্লব। শব্দ হইতে যে অসরি ক্ষুকার্থ জ্ঞান তাহাকে শব্দ প্রমাণ কহে। তুল্য সাদৃশ্য দৰ্শন হেতুযে বুদ্ধি তাহার নাম উপযান কাৰ্য্য দৰ্শন ব্যতিরেকে প্রার্থধী অর্থাপত্তি হয় না, প্ৰতিযোগী গৃহীত না হইলে ভুতলে অভাব হয় না।

নরগণের বৃদ্ধির নিমিত নাম লিঙ্গরূপ হরি উক্ত হইয়াছে।

> ইত্যাধেরে আদিমহাপ্রাণে সংমাল নাম শিল্নামক ষট্দপঃ চাবিক্তিশতভ্য ক্ষয়ায়।

সপ্তদপ্তভাষিকত্রিশত হয় অধ্যায়।

নিভ্যনৈমিভিক প্রাকৃত প্রলয়।

श्री कहित्न, क्षलग्न ठ्युविध, क्षानिगत्नत যে লয়, তাহার নাম নিতা প্রলয়। জাত জীবাদি-গণের যে বিনাশ ভাহার নাম নৈমিভিক ত্রাকা প্রবয়। চতুর্গ সহস্রান্তে প্রকৃতি দম্বন্ধি প্রব-য়ের নাম প্রাকৃত। জ্ঞানহেতু পরমান্তাতে যে আত্মার লয় তাথাকে আত্যন্তিক প্রলয় কছে। নৈমিভিক কল্লান্তে প্রলখের খেপ্রকার, তাহা আমি ভোমাকে কহিব। চারি সহস্র যুগান্তে মহীতল কাণপ্রায় হইলে অত্যুতা শতলামিকী অনার্স্টি হয়। ভাহাতে সত্ত্র-ক্ষয় উপস্থিত হয়: তদনন্তর জগৎপতি বিষ্ণু অবস্থিত হইয়া ভাসুর দপুর্শাহারা জলপান করিয়া ভূপাতাল সমুদ্রাদির তোয় পান করেন। তদনন্তর তাহার প্রভাবে জল পানছারা দম্বন্ধিত হইয়া দেই দপ্তরশিন, সপ্তভাকররপে প্রকাশ মান হইয়া পাতালতল সহিত অশেষ তৈলোক্যমণ্ডল দহন করিতে থাকে। পরে অবনীমণ্ডল কৃর্ম্মপুর্ক সম হইলে, রুদ্ররূপী কালামি, শেষাহির নিঃখাস সম্পাতে অংগভাগে পাতাল মণ্ডল দহন করিতে থাকে। তখন অথিল ত্রৈলোক্যমণ্ডল অম্বরীষের (ভর্জন পাত্র) নায় প্রতিভাত হইতে থাকে। তদনস্তর, । ভূলোক অর্লোকবাসি জীবগণ তাপপরীতাঙ্গ रहेश गहालीत्क धवः भरालीक रहेट समालाटक

রুদ্রকী অনশ হরির নিশাসভারা গমন করে। জগদ্দহন করিলে তদনন্তর নানারূপীর স্বিচ্যুৎ জলধর মণ্ডল উত্থিত হট্যা শতবৎসর ব্যাপিয়া বর্ষণপূর্বক সমস্ত উত্থিত অগ্নি প্রশমিত করিয়া খাকে 🕨 বারিরাশি সপ্তর্থিমওল আক্রমণ করিয়া অবস্থান, বিষ্ণুর নিশাসজাত শতমরুৎ সেই ঘন গণকে বিনাশ করে। অবশেষে প্রভুহরি, বায়ু-পান করিয়া ভ্রন্মরূপ ধারুণপূর্বক জলগামে সিদ্ধ মুনিগণ কঠিক স্তত ছইয়া আত্মমানাময়ী দিবা যোগনিতা অবলম্বনপূর্বকি বাহুদেবাধ্য আত্মাকে চিন্তা করিয়া দেই মধুপূদন কল্লকাল শরনান্তে জাগরিত হইয়া, তিনিই প্রশারপে স্ফান করেন। হে ছিজ! তদনন্তর দ্বিপরার্দ্ধকাল ব্যক্ত, প্রকু-তিতে লীন হইয়া থাকে। একস্থান হইতে দশ-গুণ গুণিত হ্য়, তদনত্তর অফীদণ ভাগে উপ-নাত হইলে তাহাকে পরার্দ্ধ কছে। যাহা পরা-ৰ্কেন বিশুণ, তাহাই প্ৰাকৃত প্ৰলয় নামে উক্ত হয়। হে বিজ ! অনাবৃষ্টি ও আগ্রসম্পর্কভার। দংস্থান সঞ্জাত হইলে ভদ্মারা মহদাদি বিশেষান্ত বিকারের দংক্ষয়ান্তে কৃষ্ণেচ্ছাকারিত দেই প্রতি-দঞ্র (প্রলয়) উপস্থিত হুইলে প্রথমে জল, ভূমির গন্ধাদিওশ আদ করে। তদনন্তর ভূমি আতাগন্ধ হইতে প্রলংকের নিমিত কল্পিড হয়। রস্ত্তক-বারি অবস্থান করে ভাহার শুণ রস, ভাহা জ্যোতিদারা পীত হইয়া বিন্ঠ হইলে অগ্নি প্রদীপ্ত হয়। জ্যোতির গুণরূপ ভদাধার ভাক-রকে বায়ু প্রাস করে। জ্যোতিবিনফ হইলে বলবান মহান বায়ু পুনঃ পুনঃ বেগে কম্পিত হইতে থাকে। তদনন্তৰ বায়ৰ গুণস্পৰ্শ লাকাশ ভাহা গ্রাদ করিণা বিন্ট করিলে আকাশ নীরবে অব-স্থান করে। ভদনস্তর ভূতাদি, আকাশেরগুণ

শব্দ ও আকাণকে প্রাদ করে। তংপরে মহান্, অভিমানাত্মক আকাশ ও ভূতাদিকে প্রাদ করে। ভূমি, কলে লয়, জল, জ্যোতিতে লয়, জ্যোতি, বায়ুতে। বায়ু আকাশে, আকাশ অহস্কারে, অহস্কারমাহাজ্যে লয় হইলে,প্রকৃতি মহান্কে প্রাদ করে। বাজ্য ও অব্যক্তভেদে প্রকৃতি মহান্কে প্রাদ করে। বাজ্য ও অব্যক্তভেদে প্রকৃতি মূইপ্রকার বাজ্য, অব্যক্তি লয় হয়। একাকর শুদ্ধপুরুষ, তিনি পরমাত্মার অংশ। এই প্রকৃতিপুরুষ পরমাত্মায় লয় প্রাপ্ত হয়। সর্কেশ্বর, জ্ঞানরূপ, জ্যোস্তামার লয় প্রাপ্ত ধ্রমাত্মায় নাম জাত্যাদির কল্পনা বিদ্যমান নাই।

ইত্যায়েরে অ দ্মিহাপুরাণে নিভাবৈনিকিক প্রাক্তি লয় নামক স্থাপুগুড়াদিক্সিশ্তভ্য অধ্যায়।

অন্টেম্^{প্}ত্যবিক্তিশ্ভত্য অধায়।

আত্যন্তিক লয়গর্ভোৎপত্তিনিরূপর।

আধা কিছলেন, আনুত্তিক লয় বলিব।
আধা জ্বিলাদি সন্তাপ জানিয়া আপনার বিরাগ
ভাত জান হইছেই আনুত্তিক লয় হয়। হে
বিজ ! আধা জ্বিল সন্তাপ, শারীর ও মানসভেদে
তিন প্রকার। বহুবিধ ভেল দ্বারা শারীর সন্তাপ
গলাত হয়; তাহা ভূমি প্রকাণ কর। জীণ, ভোগ
দেহ ত্যাগ করিয়া কর্ম্মরারা গর্ভপ্রাপ্ত হয়। হে
বিজ ! মুহুকোল উপস্থিত হইলে কেবল মনুযা
গণেরই আভিবাহিক নামক দেহ হয়। হে দিজোতম মুনে! মুমুষাগণের সেই শরীর যানের প্রকান
গণ কর্ভক যম্মার্গে নীত হয়; জন্ম প্রাণীগণের
তাহা নীত হয় না। তদনন্তর সে স্কাবি নারকে
গমন করে। তহুপেরে চক্রেবৎ সংসারে পরিজ্ঞান
করিতে থাকে। হে জ্বান্। এই পৃথিনী কর্মা
করিতে থাকে। হে জ্বান্, এই পৃথিনী কর্মা
করিতে থাকে। হে জ্বান্, এই পৃথিনী কর্মা
করিতে থাকে। হে জ্বান্, এই পৃথিনী কর্মা
করিতে থাকে। হে জ্বান্ন, এই পৃথিনী কর্মা
করিতে থাকে। হে জ্বান্ন, এই পৃথিনী কর্মা
করিতে থাকে। হে জ্বান্, এই পৃথিনী কর্মা
করিতে থাকে। হে জ্বান্ন, এই প্রেমান্ত করি কর্মা
করিত হুইয়া কললে (জ্রায়ুজে) জ্বান্ন

ভূমি, ঐ কালোক ফলভূমি ভামিও। যমরাজ কর্মা ছারা যোনি ও নরক নিরূপণ করেন। সেই জীব ঐ সকল পুরণ করে, যম ভাহা দর্শন করিয়া থা কেন। সেই প্রাণীগণ বায়ুভূত হইয়া গর্ভপ্রপ্ত হয়। যমদুতগণকত্কি মনুষ্নীত হইয়া ভাঁহাকে দর্শন করে। ধর্মরাজ নিজগৃহে ধর্মিগণের পূজা ও পাপীষ্ঠগণের ভাড়না করেন। চিত্রগুপ্ত ভাছার নিরূপণ করিয়া হে ধর্মজ্ঞ ! বান্ধবগণের অশোচকালে অভিনাহিক দেহে অবস্থিত হইয়া প্রদত্ত পিও ভোজন করে। তদনস্তর সেই প্রেত দেহ পরিত্যাগ পূর্বক অন্য প্রেতলৌকিক দেহ প্রাপ্ত কুষা তৃষ্ণ বিশিষ্ট ইইয়া আম শ্রাভার ভোজন করে। প্রেতপিও ব্যতিরেকে আতিবাহিক দেহ হইতে মুক্তি লাভ ক্রিতে পারে না। প্রেত দেই স্থানেই পিও ভোজন করে। সাবৎসরের পর স্পিভীকরণ कुछ इहे न मत्रभग (अंछ (मह अतिहात शुर्मिक ভোগ দেহ প্রাপ্ত হয়। অগুভ ও শুভ নামে ভোগ দেহ তুই প্রকার। ভোগ দেহে লোগানন্তর কর্মা বন্ধন হইতে নিপাতিত হয়। তৎপরে তাহার সেই দেহ নিশাচরে ভক্ষণ করে। হে দিজ! यদি পাপে অব্স্থান করে, তবে তখন সে স্বর্গভোগ করে; তথন পাপীদিগের বিতীয় ভোগ দেহ গ্রহণ করে। যে মানব প্রথমে পাপ ভোগ করিয়া পশ্চাৎ স্বৰ্গভোগ কৰে,নে স্বৰ্গভ্ৰুত হইয়া শুচি ও শ্ৰীমান গণের গৃছে জন্ম গ্রহণ করে। যদি পুণ্যে অবস্থিত হয়, তথন সে পাপ ভেগে করে। সেই দেহ ভক্ষিত হইলে শুভদেহ ধারণ করে। কর্মা অল্লাব-শিউ হইলে নরক হইতে মুক্ত হয়৷ নরক হইতে মুক্ত হইয়া তিহাঁগ্ৰোনি প্ৰাপ্ত হয়, সন্দেহ নাই ৷

হিতি করে। বিতীর ম∤দে ঘনীভূত, স্তীয মাদে তাগার অব্যব দবল উৎপন্ন হয়। চতুর্থে অন্তি, ৰকু, মাংদ, পঞ্মে রোম, ষষ্ঠ মন হয়, সপ্তমে ত্বখে জানিতে পাবে। জীবদেহ জবায়ুবেষ্টিত এবং মন্তকে বন্ধাঞ্জলি হইয়া অবস্থিত হয়। ক্লীবের মধে, জ্রীব বামে, পুরুষের দক্ষিণে অবস্থিতি জানবে। উদবভাগে পৃষ্ঠা ভমুগ হট্যা অবস্থিত হয়। জীব যে যোনিতে অবস্থিতি করে, ভাহা দে জানিতে পাবে সংখ্য নাই। নবজন্ম হইতে আৰম্ভ কবিষা সকল বুভান্ত জানিতে পাবে। মানবগণ ণভাণাদে হয় শ্ব ও মহতী পীড়া জানিয়া থাকে। সপ্তন মাসে আহার পান ভোজন করে। অফন ও নংম মাসে অত্যন্ত উদ্ভিগ্ন হয়। সাতার পুক্ষ দঙ্গমে ও ব্যায়ামে পীড়া প্রাপ্ত হয়। মান্। পীডতা হইলে পীডিত হট্যা মুক্তিকাল শত্ৰ্য বোধ কৰি ৷ সন্তাপিত হা এবং কর্মা বারা মালা বথ বাবে যে, গৰ্ভ হটতে নিগত হুল্যা মোজজ্ঞান ক বব। কৰক্ষাৰ্শে জুঃ খিত ও মাগমাত্র পীড়। মান ্ট্যা∖ এস্টকালে অধোগত হুইয়া যোনিযক্ত হুইতে নি সভ হয়। তাগীৰ বেহে আকাশ, শক, ফুদ্ শৰ সকল কৰ্মাধিক। খুস উচ্চোস্বায়ুৰ গতি, স্পাশ্পদি উৎপন্ন হয়। অলিকপ দর্শন উল্লাপাক নিকক মেধা বৰ্ণ বল ছাষা তেজঃ শৌৰ্যাদি সকল এবং জল ইইটৈ স্বেদ বসনাদি ও রেশ বসাুরস রত শুক্র সূত্র ককাদি লেৱে উৎপন্ন হট্যা পাকে। ভূম হইতে আবি, বেশ, নখ, গৌরব ভিরত। ৪ / স্থিতি জন্মিন। থাকে। ত্বকু মাংশ সায় নাভি, মজ্জা শক্তং (বিঠা) মেদ ক্লেন ও আগাশ্য দি মুকুব**ন্তে**। শিবা হায়, শুকোদে পিতৃজাত বস্তু।_। কাম, কোণ, ভয, হন, ধর্ম ও অধর্ম, অভিনান, আকৈতি স্বৰ বৰ্ণ সেহ্নাদি যাহা কিছু আত্মজ বস্তু

অজ্ঞান প্রমাদ মালস্তা তৃষ্ণা, কুলা কোহ মাৎদ্যা বৈগুণ্য শোক আদাস, ভয় এই সকল তাম্ম পদার্থ এবং কাম জেন্ধু শোষ্য যজেন্দা বহুভাষিতা, অহ্বার পরাবজা, এই সকল রাজ্য পদার্থ এবং ধর্মেপা, মোক, কমিছ, কেশবে প্রমাভিক্তি দাকিণা, ব্যবসায়িত্ব এই সাভিক পদার্থ কার্ত্তিত হয়। হে মছামুন। বছবাত নব চপল জেলাধন, ভীরু কলহ প্রিয় ও সপ্লে গমনশালী এবং বছপিত মানব অকাল পলিত (অকাল পক্ৰেশ) ক্ৰোধী মহাপ্রজ বণ্প্রিয় ও স্বর্গে দীপ্তিমং প্রেকী এবং বহু শ্লেম্মানৰ স্থিৱ চিত্ত স্থিবোৎ সংহাভাৱাল দ্ৰবিণাম্বিত ও স্বপ্নেজল সিতা শোকী হয়। প্ৰাণি-দেহে রস বারি রুধির লেপন এই সংল মাণ্দ মেহ ও স্নেহ উৎপাদন করে। অস্তি ও মজ্জা দেহেব ধাবক বীষ্য গৰ্জন পুৰক ওজঃ শুক্র বীৰ্ষ্য-কৰ এ'ং জীব সাম্ভতি প্ৰাণকৰী ছানিৰে। শুক্ হইতে হান্যগত ঈৰৎ পীত প্ৰাব্তর ভক্ঃ ন্ডঞ্ শক্থি বাত্ মৃদ্ধি ও জঠব উৎপন্ন হয়। বাহাদে শ ছ্য প্ৰকাৰ স্বক্, অভা প্ৰকাৰ স্কৃক কৰিব ধাৰিণা অন্যবিধা বিলাস ধারিণী ও চতুরী কুও ধারিণী হয়। পঞ্মী স্কৃ বিজেপি হ্ন ষ্ঠী প্ৰাণ ধৰা বলিয়া উক্ত হুইথা থাকে। সপ্তমী কলা মাণ্স বরা দ্বত যে। 🕌 বক্ত ধারিণা। অন্যাবিধা যকুৎ প্রীছা এয়া অন্য এক প্রকার ছকু মেদ ও অস্থিধারণ করে। প্রা-শ্য স্থিতা অন্যবিধা মড্লা শ্লেষ্ম পুৰীষ ধাৰিণী শুক্রা≝যা মপরা ষষ্ঠী হক পি*e*ধনা ও **শু**ক্রণরা **E**& |

হ • । য়বে য় বিশ্ব প্র পে আ চ ঝিক লাব্গতে ৭০ কি
নির প নামক অইনপ্রচাধিক অশত ৯ ই অবায়।

ঊমানী তাধিকত্রিশতত্ব অধ্যায়।

শ্রীবাবয়ব (

অগ্নিকহিলেন, প্রোত্ত, ছক, চক্ষ্ম্ম, জিহ্বা, আণ, ব্ব্হ্নি, ভূতগৃত আকাশ শব্দ স্পর্ণ রপ, রম, গন্ধ, আকাশাদিতে তদন্তণ সকল পায়, উপস্থ, করন্ধ্য, পাদ্ধয় ও কর্মাকশেনাক্ উৎসর্গ আনন্দ, আদানগতি বাগাদি তৎক্র্মাকল পঞ্চকর্মেন্দ্রিয়, পঞ্চ ব্রিমার্থ পঞ্চমহাভূত মন আল্লা, অংগুক্ত ও প্রপুক্ষ এই চুর্বিংশতি তব্ব। যেমন মংশা ও বারি প্রস্পাব সংযুক্ত ও শিযুক্ত হয়, সেইরূপ এ সকল প্রস্পার সংযুক্ত ও শিযুক্ত হয়, সেইরূপ এ সকল প্রস্পার সংযুক্ত ও শিযুক্ত হয় থাকে। সত্ত্ব, রজঃ ও ত্মঃ এই তিন্তুণ অন্যক্তাশিত। থাব পুরুষ্ হত্ত সেই কারিনরে পর ব্রহ্ম। যে প্রমাণ্ড হয়।

দেহে সপ্তবিধ আশ্য উক্ত হয়, তন্মধ্যে ক্রথিব এক আশ্য; শেলা, আম, পিত এবং পকাশ্য প্রাশ্য সপ্তম। ক্রীগণেব গর্ভাশ্য অন্তম আমি ইইতে পিত, পিত ইইতে পকা
শ্য এবং গ্রির প্ততে যোনি বিক্সিতা হয়।
ভাশ্য পদ্মণ তাহাবে সরক্তক শুক্র ধ্বেণ করে,
দেই শুক্র ইইতে অন্ধ এবং কালক্রমে তাহাতে
কল উন্তুত হয়। কে মুনে। এই যোনিতে শুক্রা
বিলুত ইইলে তাহা গর্ভান্যে নীত হয়। ঝাহুতে
লি যোনি বাত্পিত ক্লার্তা ধ্বকে এবং তথন
লি যোনি বিশাশ হয়, তবে তথন তাহাতে প্রজা
শ্রে না। বৃক্ত ইত্তে ফপ্প্স প্রীহা বেগ্র্ড,
শঙ্ক হন্য ও এণ হয়; হে মহাতাগ। সন্ত আশ্রে
ভব্ব বিক্ত ও পিত) নি দ্ধ আছে। দেহিগ পর
ভিষান রসের সার ইতে প্রীহা ও যক্ত রক্ত ও

কেন হটতে ফুদ্ ফুদ্ উৎপন্ন হয়। রক্ত ও বিভ তওক নামে অভিহিত হয়; মেদ ও রজের এসাব হটতে বুকার উৎপত্তি হয়। রক্ত ও মাংনেব প্রসারে দেহিগণের অন্তর হয়। বেদবিদ্রাণ পুরুষ গণের তাহা সাড়েতিন ব্যাম ও স্ত্রীগণের তিনব্যাম প্রিমাণ কহেন। রক্ত ও বাষ্ব কামের উদ্ভব হয়। কফ প্রসার হেতু পদাস্মিভ হৃদ্ধের উৎপত্তি হ্য, তাহার বিবর অধোমুগ জীবালা ও চৈত্যানুগতভাব সকল তাহাতে কাক স্থিত রহিষাছে। তাহার বামে প্লীংগ দক্ষিণ যকুৎ ও কে'ম; পদ্ম এইরূপ কীর্ত্তি হয়। দেহে যে দকল কফ বক্তবহ স্লোত (শিরা) আছ তাহাদের ভূতাকুমান হইতে ইব্রিযের সম্ভব ১য। নেত্রের শুকু মঙল উৎপন্ন হয় তাহা মাতৃকা পিত হইতে পিতৃ মাতৃ সমুত্ত তঙ্গঞল জানিও জিহবা রক্তে মাংস কফজা; বুশণখ্য (গ্রুর্য) মেদ-রক্ত-কফ মাংসজ। মতক, হৃদ্ধ, নাভি, কণ্ঠ, জিহবা, শুল, শোলিত, ওদ, বস্তি ও ওল্ফ छ मन श्रीवष्टीन। के मन क्वर कत्रवस १ म्बर পুঠ গল এই যোড়ণ কণ্ড্ব নামে কথিত হয। , পাদাদি শার্ষ পায়ন্ত পেহে ষোড়শজাল বিদামান আছে। মণিক ও ওল্ফে মাংস স্নাযু শিবাও , অভি এই চাবিটী পৃথক্ পৃথক্ গুলফাব নিজা; [†] মনীমিগণ কতেন যে প'নিয়ণে ও কব'ৰ্ষে থী গ্ৰ ও মেন্তে ছয় কুৰ্চ্চ (কেশাদি মুষ্টিবং শদার্থ) বিদ্য-। মান রহিয়াছে, পৃষ্ঠ গংলে চাবি মাণ্স রজ্জু উপ-গত হইযাছে; নবরিসংখাক পেশী ঐ বজ্লে। दक्षन कदिशा वाश्वियाण्ड; म^{्न}ामी मध जनासा পাঁচটি মুদ্ধায় একটি মেটে ও একটি দ্ৰিলাণ গমন করিষা ছ। অস্থিতী দশ সৃহস্র ও সুল দশন । চতুঃষ্টি নথ বিংশতি। পাণি ও পান শ্লাকা

বিংশতি ভাহাদের স্থান চারি অঙ্গুলি সকলের শলাকা ষষ্টি (১) পাঞ্চিতে ছুই ও গুম্ফে চারি অস্থি শলাকা বিদ্যমান আছে। অর্ত্তি ও জঙ্গার অস্থি চারি চারি জানু কপাল উরু ফলু কাংশে তুই তুহ অস্থিতং অকি স্থান স্কল ও জোণি ফলকে ঐ রূপ ছুই ছুই অহি বিদ্যমান। ভাগে তিন অস্থি পুঠে ৪৫ পঞ্চন্থারিংশৎ গ্রীবায় জক্রকে ও হমুতে পাঁচ পাঁচ ছহি অগহিত। হমু মূলে তুই ললাট অকি গণ্ড নাদা অভিযুপাত কা তালু ও অর্কাৃদ এই সকলে ৭২ দিসপ্ততি অস্থি বিদ্যমান থাকে। শভো ছুই ও মস্তকে চারি কপাল। উর: হলে দপ্তদশ ও দেরিছেলে ছুইশত দশ অবি আছে। শাখা দকলে ৬৮ অইন্টিও উন্যৃষ্টি অন্তরে ৮০ তিরাণী ও ন্বশত স্বায়ু সম্বত আছে। অন্তরাদিতে ৩২ বত্তিশশত স্নায়ু বিদ মান সপ্ততি স্নায়ু উদ্গ শাখা ছুইশত ক্থিত হয়। পেশী পঞ্জত তন্মধে চছারিংশং উর্দ্গিনী। শাখায় চারি শত অন্তরাদিতে যপ্তি এবং স্ত্রীগণের এক অধিক চহুবিংশতি ব্যবস্থিত **আছে। স্তন-**ঘয়ে ও যোনিতে দশ আশিয়ে ত্রয়োদশ ও গর্ভে চারি বিদ্যমান রহিয়াছে। শরীবিগণের শিরা ত্রিংশৎ সহত্র অন্য -ির। নব। দেহে ষট্পঞাশৎ প্রকার রম কেদারে কুল্যার (কুল্রিমাসরিং) न्याय विश्वा थात्क यथा दक्षन त्नभानि। तर মহামুনে ৷ এই দেহে ৭২ বায়াতর কোটি প্রকার আকাশ আছে। মজ্জা মেদঃ বদা মূত্ৰ পিত (संधा विष्ठे। महम हक्त **अ**हे मक*रन*ह অঞ্জলি কথিত হল। সকলই পূর্বে পূর্বে অঞ্জলির

অর্দ্ধ অর্দ্ধ পরিমাণে অধিক হয়। দেহে শুক্তের আর্দ্ধাঞ্জলি ও তদর্জভাগ ওজঃ বিদ্যান আছে। বুধগগ কছেন জীগণের রস্চারি অপ্রলি। শরীরকে মলাদির পিশু জানিয়া পর্মাত্মার নিমিত উৎস্প্রিবে।

ইত্যাথেরে আদিমহাপুর:তে শরীয়াব্যুর নামক ভনাশীতাধিকতিশততম্ অধ্যায়।

অশীভ্যধিকত্রিশতত্ব অধ্যায়।

নরক নিরূপণ।

অগ্নি কহিলেন, ব্যুমার্গ উক্ত হই য়াছৈ ; একণে নরগণের মরণ বলিব ; শরীরে তীত্র বায়ু দারা থোরিত, অভএব প্রকুপিত উন্ন। শরার উপরোধ করিয়া সমন্ত উৎপাদন করিয়া প্রাণ্ডান ও মর্ম্ম হান ছিন করে; তদনন্তর বায়ু শৈত্য হইতে একুপিত হইয়াছিদ্র অবেষণ করে: নেত্রেণ, কর্ণ ঘয় ও নাসাপুট্যুগল ও বেকারশ্ব এই সাতটি উর্দ্ধ ছিল, বদন জফীন, শুভকর্মিগণের প্রাণবায়ু প্রায়ই এই সকল ছিদ্র স্বারা এবং অশুভকারীগণের প্রাণ পাগু, উপস্ত, এই অধশ্চিদ দিয়া বিগিত ২য়; জীগাত্মা যোগীগণের মস্তকভেদ করিয়া স্বেচ্ছায় গর্মন করিয়া থাকে : অস্তকাল উপস্থিত হটলে অপান বায়ু প্ৰাণ বায়ুতে উপনীত হইলে এবং তমো ছারা জ্ঞান ও মর্মান্থান আরত হইলে সেই জীবাজা বাধু ছারা চালিত ও বাধামান হইয়া অপান্ধ প্রাণরুতি বিদুরিত করে: দেহ হইতে প্রচ্যুত অথবা যোনি প্র<mark>বেশনশীল বাু জায়ম।ন ভী</mark>বা-ত্মাকে সিদ্ধগণ দিব্যচক্ষে দর্শন করিয়া থাকেন; জীবাত্মা বহির্গত হট্য়া তৎক্ষণাৎ ভোগের নিমিত্ত আতিবাহিক শরীর ধারণ করে: বিগ্রহ ইইডে

⁽১) প্রতি অস্ক্রিয় পাংশ পাংশ একশ্লাকা, অভএব প্রত্যেক অসুক্তি ভিন কুড়ি অসুক্তি কৃষ্টি শ্লাকা বিদ্যান্ন আছে ।

আকাশ, বায় ও তেজ উদ্ধানী হয়; জল ও প্ৰিবা পঞ্চ প্ৰাপ্ত হয়। পুৰুষ রূপে জন্ম গ্রহণ করে; যমদূ চগণ আতিবাহিক দেহ লইয়া গমন করে; বড়শীতি সহত্র যমনার্গ অতিশয় ঘোরতর; যমদূতগণ কর্ত্ব নীয়মান হইয়া জীব বান্ধবদত আনা'দ ভোজন করে; যমকে দর্শন করিয়া যম কর্ত্ব আজ্ঞপ্ত চিত্রগুপ্তের প্রেরিত ঘোর নরক প্রাপ্ত হয়; পুণ্যবান জন শুভপথে স্থর্গে নীত হয়; পাপিগণ যে সকল নরক ও যাতনা ভোগ করে, তাহা কহিতেছি প্রবণ কর।

ক্ষিতির অধোভাগে অটাবিংশতি নরককোটি স্প্রমতলাতে খোরতর তমস্তোমে সংস্থিত আছে ; প্রথমা কোটির নাম ঘোরা তাহার মধোভাগে স্বলেরে। অভিযোর মহাঘোর। ধোররূপ। তরুল-তানা ভবানকা ভয়োৎকটা কালৱাতী চণ্ডা মহা চণ্ডা কে৷লাহলা প্ৰচণ্ডা পদ্মা নৱ নাযিকা পদ্মৰতা ভীষণা ভাষা করালিকা বিকরালা মহাবজ্ঞা a दिना अञ्चलां कि कि की ची, दर्जना मथ ह्या, ক্রভূমিকা দীপ্তমায়া এই অফাবিংশতি নরক কে।টি পার্পাগণকে হুঃখ দান করে। অক্টাবিংতি কোটির প্রভাক কোটিতে পঞ্চ পঞ্চনরক নায়ক বলিয়া ্রোরবাদি নরক এক শত এক ও উক হয়৷ চয়ারিংশৎ চতুকীর অর্থাৎ এক শত ষাটি। তামিস্র মন্ধতা'মজ, মহারৌরব, রৌরব, অসিপত্র, বন, লোহভাব, কালসূত্র, মহানরক, সঞ্জাবন, মহাবীচি, তপন, সম্প্রতাপন, সজাত, সকাকোল, কুমাল, পুতিমূতিক, লোহশকু, ঋজীষ, প্রধান শালালী নদী, এই সকল কোটীখর ঘোরদর্শন নরকগণকৈ অব গতি কবিবে। পাপিগণ এক এক বা বহু নরকে নিপাতিত হইলে তাহাদের বদন মার্জার উল্ক, গোমার প্রাদির নামে হট্যা যায়। তৈলচোণিতে

মানবকে নিকেপ করিয়া হতাখন স্থালিয়া দেয়। কাহাকেও অন্যপাতে, অপরকে ভাত্রপাত্তে, অপ-রকে অয়ঃপাত্তে, কাছাকে বা বহুবচ্চিকণার সন্তা-পিত করে। কাহাকেও শূলাগ্রে আরোপিত করিয়া ছিন্ন করে। কাহাকেও কশাঘাতে তাডিত করে। কাহাকেও বা উত্তপ্ত লোহ গোলক এবং কাহা-কেওবা পা'শু, শিষ্ঠা, রক্তক্ কফাদি ভোজন করায়; যম দূতপণ নরগণকে তপ্ত মদ্যপান করায়। কাহাকেও চিরিতে থাকে, কাহাকেও যান্ত্র নিপী-ড়িত করে। কেহ কেহ বা বায়সাদি কর্ত্তক ভক্ষিত উফ তৈলে সিক্ত হয়। কাহারও বা একাঘাতে শিরশ্ভেদন করে। পাপিগণ মহাপাতকভাত ঘোরতর অতি গহিত নরক প্রাপ্ত হইয়া "হা তাত !"বলিয়া হাহাকারে ক্রন্দন করিতে করিতে আপন আপন কর্ম্মের নিন্দা করিতে থাকে। কর্মা ক্ষা হইলে মহাপাতকীগণ এই অবনিতলে জন্ম গ্রহণ করে। ত্রহ্মঘাতা, মুগ, কুরুর, শৃকর ও উষ্ট্রের হোনি প্রাপ্ত হয়। মদপোয়ী, থর পুৰুশ ম্লেছ্ যোনি এবং স্বৰ্ণহারী, কুমি-কীট পতঙ্গত্ব এবং গুরুপত্নাগামী তুণ গুলাত্ব প্রাপ্ত হয়। ঘাতী ক্ষয়রোগী, স্থবাপায়া শ্রাবদন্ত, স্বর্ণহারী কুনখা ও গুরুতল্লগামী ফুল্চশ্মা হয়। যে ঘছারা ইহাদিগকে স্পূর্শ করে দে তচ্চিহ্ন বিশিষ্ট হয়। अञ्चर्धती भाषाची अवः वाकाभिरातक मुक रहा। ধান্যহারী অধিকাঙ্গ এবং থল পুত্রগন্ধ নামিক হয তৈলহারী তৈলপায়ী এবং সূচক (কর্ণেজপ) পৃতি- ! বদ্ন (জুর্গন্ধবিশিষ্ট বদন) হইবা থাকে। যোগ্যৎ ও ত্রেকাস্ব হরণ করিয়া আরণ্যে নির্ভন প্রদেশে ব্রহার কেন ছইয়া জন্মগ্রহণ করিয়া থাকে। রত্বহারী হীনজাতি **শু**ভ গক্ষহারী ছুছু^{ক্র্বী} শাক হরণ করিয়া

[७৮১ व्यवादि ।

(ক্ট্রাক) হইয়া জন্মগ্রহণ করে। পশু হরিয়া অক্স হ্রাহরিয়া কাক যান হরিয়া উট্র ফল হরিয়া বানর, মধু হরিয়া দংশ, মাংস হরিয়া গৃধ এবং উপক্ষর (ন্যঞ্জনাদি সংক্ষারার্থধন্যাক সর্বপ পিন্টাদি) হরিয়া গৃহকাক হয়। বস্ত্র হরিয়া খিত্রী (শ্বত-ক্ষ্ঠ রোগগ্রন্থ) ও সারস, লবন হরিয়া ঝিল্লা হইয়া থাকে। ঐ সকল তাপকে আধার্গ্রিক, শস্ত্রাদি-হারা যে তাপ, তাহাকে আধিভৌতিক গ্রহ আগ্র দেব পীড়াদিছারা যে তাপ তাহাকে আধিলৈবিক কহে। সংসার এই ত্রিবিধ তাপময়, মানবগণ ক্ষভুত্রত দানাদি ও বিষ্ণুপূজাদিছারা জ্ঞানযোগে এভাপ বিনাশ করিতে সমর্থ হয়।

> ইত্যাগ্নেরে আদিমহাপুরাণে নরকনিরূপণ নামক আশীত্যধিকঞ্জিশততম অধ্যায়।

একাশীত্যধিকত্তিশততম অধ্যায়। ধ্যনিয়ম।

অগ্নি কহিলেন, সংসারের তাপ মোচনার্থ
অফীঙ্গ যোগ কহিতেছি প্রবণ কর। জ্ঞান ব্রহ্ম
প্রকাশক সেই ব্রহ্মে এক চিত্তা এবং জীবাত্মা
ও পরমাত্মায় চিত্ত রতির উত্তমরূপ যে নিরোধ
তাহার নাম যোগ, অহিংদা সত্য অস্তেয় ব্রহ্মচর্য্য
ও অপরি গ্রহ এই পঞ্চবিধ যম নিয়ম ব্যোগে ভোগ
মোক্ষ প্রদান করিয়া থাকে। শৌচ, সস্তোধ,
তপস্যা, স্বাধ্যায়, (অধ্যয়ন) ও ঈশ্বরপূজা এই পঞ্চ
প্রকার নিয়ম। ভূতগণের পীড়া নাশ করার নাম
অহিংদা পর্ম ধর্ম্ম। যেমন প্রণামিগণের
গজ পদে * গমন করিলে হিংদা হয় না; সেই

ু ্লু ছিন্তিগণ বেষন অত্যবর্ত্তি পদ নিক্ষেপ স্থলে পশ্চাৎপদ নিক্ষেপ করে, উজ্ঞা অহিংসাপরায়ণ নাধ্জনও অত্যবর্তী পদ নিক্ষেপ স্থলে পশ্চাৎ পদ নিক্ষেপ করিলে কোনরূপ হিংসার সম্ভব্ন থাকে না ৷ রূপে অহিংসা পরায়ণের সকল কার্যটে ধর্ম্মের নিমিক হয়। উদ্বেগ জনন্ সম্ভাপকরণ, পীড়াকরণ, শোণিত নিঃআণ, খলতা করণ, হিতের অতি-नित्यथ मटर्म्मान्चारेन अथाश्रहत्व मः द्वाद ७ वथ अहे দশ প্রকার হিংদা জানিবে। যে বচন ভূতের অভ্যন্ত হিতকর তাহাই সভ্যের লক্ষণ; সভ্য বলিবে, প্রিয় বলিবে, সত্য অথচ অপ্রিয় বলিবে না এবং প্রেয় অথত মিথাও বলিবে না ইহাই সনাতন ধর্ম। নৈথুন পরিত্যাগকে ব্রহ্মচর্য্য কহে তাহা অন্ট প্রকার মনীষিপণ স্মরণ কীর্ত্তন কেলি প্রেক্ষণ গুহুভাষণ সংকল্প অধ্যবসায় ও ক্ৰিয়া নিষ্পত্তি এই অফ বিধ মৈপুন কহিয়া থাকেন অক্সচর্যাই ক্রিয়ার মূল নচেৎ সমস্ত ক্রিয়াই বিফলা বিশিষ্ঠ চন্দ্ৰমাঃ শুক্র দেবাচাগ্য পিতামহ ইহার। তপাবৃদ্ধ হটলেও স্ত্রীগণ কর্ত্তক মোহিত হইয়াছিলেন। গোড়ী পৈঠী ও মাধ্বী এই তিন প্রকার হারা চতুথী হুরা, জী: যেছেতু স্ত্রীগণ জগৎ বিমোহিত করিতে পারে। প্রমাদর্শনে মত হয় এবং স্বাপানেও মত হট্যা থাকে। রমণীগণকে দর্শন করিলেই মততা উপস্থিত হয় অতএব তাহাদিগকে দর্শন না করাই উভম কর। নে যাহা হউক নরগণ বল পূর্বক পরদ্রের অপহ-রণ এবং আহত হবিঃ ভোচন করিরা তির্য্যাযোনি প্রাপ্ত হয়। কৌশীন মাচছাদন বাস শীত নিবা-রিণী কস্থা পাতুকা যুগল গ্রহণ করিয়া অন্য কোন ও দ্রব্য সংগ্রন্থ করিবে না। দেহ স্থিতির নিমিট্ট বস্ত্রাদির সংগ্রহ বিধেয়। ধর্মসংযুক্ত শরীর যত্ন-পূর্বক নিয়তই রক্ষা করিবে। বাহ্ন ও আভ্যন্তর-ভেদে শৌচ চুইপ্রকার। মুজ্জন দারা বাছগুদ্ধি ও ভাবত দিয়ার। অভান্তর গুদ্ধি হয়। এই উভয়-ঘারা যে শুচি, ভাহাকেই শুচি বলা যায় জুঁককে

বলা যায় না। যে কোনও রূপে প্রাপ্তিদারা সম্ভোষ জন্ম তাহার অপর নাম গুষ্টি। মন ও ইন্দ্রিগণের একাগ্রতাই তপ বলিয়া উক্ত হয়। সেই তপ সর্বাধর্ম হইতে শ্রেষ্ঠ বলিয়া অভিহিত হয়। মন্ত্রজপাদি বাচিক, রাগবর্ক্তন মানসিক, দেবপুজাদি শারীরিক এই ত্রিবিধ তপঃ দর্বপ্রদ। তদনন্তর প্রণবাদি, প্রণবে বেদসকল পর্যাবস্থিত র'হ্য়াছে প্রণব সর্ববাধায়, তদ্ধেতু প্রণৰ অভ্যাস করিবে। অকার, উকার ও অন্ধনাতা সহিত মকার ওঁকারে অবস্থিত। তিন মাত্রাক্রমে সাম, ৠকৃও যজুঃ এই তিনবেদ, ভূঃ ভূবঃ স্বঃ এই তিন লোক: দত্রজ তম এই তিন গুণু জাগ্রহ স্বর্ হ্বৰু'প্ত এই তিন অবস্থা; এক্ষা, বিষ্ণু, মহেশ্ব এবং প্রত্যুদ্ধ, ত্রী, বাস্তদেব ক্রমানুদারে এইদক-লই ওঁকার ৷ অমাত্র বা নউমাত্র হইলে ছৈতের অপগম হইয়া শিব ত্রকাস্তরপ হয়। যিনি ওঁকার অবগত হইয়াছেন, তিনিই মুনি, অন্যব্যক্তি মুনি নহেন। চহুৰী মাজার নাম গান্ধারী, তাহা প্রযুক্ত হহয়। মুর্দ্ধায় লক্ষিত হয়। তাহাই তুরীয় পর-ব্রন্ধ, ঘটে যেরূপ জ্যোতিদীপ প্রকাণ পায় সেই-রূপে তথায় তিনি প্রকাশ পাইয়া থাকেন। গণ দেইরূপে হৃৎপদ্ম নিলয়ে তাঁহাকে নিরন্তর ধ্যান করিবে। প্রণব ধকুঃস্বরূপ, জীবাত্মাশর-ষপ এবং দেই ত্রকালক। ঘরপ। অপ্রমত হইয়া ্বধন করিলে শরতুল্য তন্ময় হইয়া থাকে। ইহাই একাক্ষর ব্রহ্ম ইহাই একাক্ষর পরম পদার্থ, ইহার্ একমাত্র অকর ইহাঁকে জানিয়া যে যাহা ইচ্ছা করিবে, ভাছার ভাছাই সিদ্ধ হইবে দলেহ নাই। নেবাগায়জী উহার ছন্দ: অন্তর্যামী উহার ঝ'ব, প্রমাত্মা উহার দেবতা, উহার নিযোগ ভুক্তি ও মৃত্তির নিমিত্র জানিবে।

ভুর্মাজেনে হৃদয়, ভুবঃ, প্রাক্তাপত্যাজনে শিরঃ, মদ্র স্বঃ সূর্য্যাত্মনে চ শিথা কবচমন্ত্র ওঁ ভূভূবিস্বঃ কবচ মন্ত্র শভ্যাত্মনে অন্ত্রক মন্ত্র বিন্যাস করিয়া ভুক্তি মুক্তির নিমিত বিষ্ণুপূজা করিয়া জপ করিবে এবং তিলাজ্যাদিঘারা হোম করিবে। তাহা হইলে দৰ্কবিধ বাঞ্চফল লাভ হইতে পারে যে নর প্রতিদিন দশসহস্র জপ করে, অনিমাদির কোটিজপে এবং দারস্বতাদির লক্ষজপে দাদশ মাদে পরব্রদ্ধ তাহার প্রতি প্রকাশিত হন। বিষ্ণুর জপ, বৈদিক, তান্ত্রিক ও মিশ্র এই ভিন এই তিন প্রকারের মধ্যে যাহার যাহাতে অভিলাষ, দে তদ্বারাই হরির অর্চনা করিবে। যে নর ভূমিতলে দণ্ডবৎ নমস্কারদ্বারা হরির অর্চনা করে,তাহার যে ফললাভ হয়,শত শত যজ্ঞ করিয়াও তদ্রূপ ফল পাওয়া যায় না। যাহার দেব ও গুরু প্রতি জ্বকি দ্যান, উক্ত দ্মন্ত অর্থ ই সেই মহাস্থার অন্তরে প্রকাশিত হয়।

> ইত্যাধেয়ে আন্দমং।পুরাণে বমনিরম নামক একাশীতাধিকঞিশততম অধ্যায়।

দ্বাণীত্যধিকতিশততম অধ্যায়।

আসন প্রাণায়াম প্রত্যাহার।

অগ্নি কহিলেন, পদাদি আসন উক্ত হইরাছে, সেই আসন বন্ধন করিয়া পরমান্ধার ধ্যান কর্ত্ব্য। শুদ্ধদেশে আপনার স্থির আসন প্রতিষ্ঠা করিয়া চেল অজিন ও কৃশ আস্তরণ পূর্বেক চিত্ত ও ইন্দ্রিয় ক্রিয়া নিয়মন পুবঃসর একাগ্র মানস হইয়া সেই আসনে উপবেশন পূর্বেক আত্মশুদ্ধির নিমিভ যোগ প্রয়োগ করিবে। কায়শিরঃ ও গ্রীকা সম-ভাবে অবস্থাপিত করিয়া অচলভাবে ধারণ পূর্বিক

ছির থাকিয়া নিজ নাসিকাগ্র দর্শন পূর্বক দিগব-লোকন না করিয়া পদ পাফিয়ুগলে অওযুগল ও লিঙ্গ সংস্থাপন পুরঃসর সর, বাছ্যুগল ভিহাগ ভাবে উরুদ্ধয়োপরি যত্ন পূর্ববিক সংস্থাপন করিয়া বাম করত লোপরি দক্ষিণ কর পুষ্ঠ বিন্যাস করিবে। বক্ত ফ্রেমণঃ উন্নয়িত এবং মূথ অগ্র-দিকে বিষ্টান্তিত করিয়া স্বদেহজ প্রাণ বায়ুর আয়াম অর্থাৎ নিরোধন করাকে প্রাণায়,ম কহে। অঙ্গুলি দারা নাদিকা পুট নিপীড়িত করিয়া উদরস্থ বায়ুরেচন অর্থাৎ নির্গমিত করিবে। রেচন হেতুক ইহার নাম রেচক। দেহকে বাছ্বাগু দ্বারা দৃতি বৎ (চন্মপুটবৎ) পূরিত ক'র্যা, ভজ্রপে বায়ু পূর্ণ হুজ্যা অবস্থিতি করিবে। পুরণ হেতু ইহার নাম পুরক বলিয়া উক্ত হয়। অন্তঃস্থিত বায়ু মোচনও করে না এবং বহিঃ ভ্রেড বাগু গ্রহণত করে না সম্পূর্ণ কুন্তবং অচল হইয়া অবস্থান করিতে ২য়: অতএব ইহাকে কুঞ্ক কছে। দাদশ মাত্র একোদ্ঘাত কনিষ্ঠ। দ্বিরুদ্ঘাত চতুর্বিংশতিমাত্রিক মধ্যম; ত্রিরুদ্বাত ষট্তিংশং তালমাত্রিব প্রাণা-য়ান উত্তম। যদারা স্বেদ, কম্প ও অভিঘাত জন্মে তাহাই উত্তম। হিকা খাসাদি জয় না করিয়া এবং ভূমি (ধাবণাদির স্থান) জ্ব না করিয়া ভাহাতে আবোহণ (ধারণা) করিবে না। প্রাণ জয় করিলে দোষরূপ বিশ্বত বল্ল হয়। আরোগ্য, শীতা গামিত, উৎদাহ, স্বর সেষ্ঠিব, বল, বর্ণ, প্রসমতা ও সব্ব দোষ কয় প্রাণামের কল। জ্বপধান হীন যে গর্ভ তাহা রখা ধ্যান নমন্বিত গভই (ধ্যানাদির স্থান) উত্তম ইন্দ্রিগণের জ'য়র নিমিগু সেই উত্তম গর্ভে ধারণা করিবে। জ্ঞান ও বৈরাগ্য যোগে এবং প্রাণায়ান বংশ ইন্দ্রিয়গণের জয় ভরিলে সকলই জয় করা হয়। যত প্রকার স্বর্গ ও নরক

আছে ইন্দ্রির সকলকে ভংসর্ব বলিয়া জানিব।
ইন্দ্রিরণতে নিগীহত করিলেই স্বর্গ এবং ছাড়িয়া
দিলেই নরক লাভ হয়। শরীর রশ, ইন্দ্রিরণণ
উহার অশ্ব, মন সরেশি, প্রাণায়াম কশা, জ্ঞান ও
বৈরাগ্যরশাদ্বর হারা বিশ্বত মন, প্রাণায়াম দ্বারা
সংঘত হইয়া ক্রমশঃ নিশ্চলত্ব প্রাপ্ত হয়। যে নর,
মানে মানে সাগ্র শত সমহসর কুশাগ্র হারা জল
বিন্দু পান করে, ভাহার যে ফল, প্রাণায়ামেরও
ভহসমান ফল লাভ হয়। বিষয়সমূদ্রে প্রবেশ
করিষা প্রসক্তেইন্দ্রিরণ্ডিক আহরণ করিয়া নিগ্রছ
করাকে প্রতাহার কছে। জলে মত্তমানের
ন্যায় আগ্র হারা আহার উদ্ধার বর্ত্তর। ভোগ
নলাব অভিবেশে জ্ঞান রুক্রের হাল্রয় বর্ত্তর।

ই তারি হৈছে আন্দান পুল লে আন্দান আন্ধান্ত আন্দান কাম্ব হান্তাধিকজিশতভ্য অধ্যায় ।

ত্রাশীত্যবিক্তিশত্ত্ম অধ্যায়।

ध्यान ।

ভায়ি কহিলেন, ধাৈগাভুর অর্থ চিন্তা করা আনাক্ষিপ্ত নানদে মুছ্ মুছ্ বিফু চিনার নাম থান। বিমৃত্যা শেতাগােগিক, সমনক আত্মার বক্ষাচিন্তাসনা শক্তিকে ধ্যান কছে। ধ্যেয় বন্তর (ব্রেক্ষার) অবলবনে স্থিত, সদৃশ প্রত্যয়াম্বত যােগির প্রত্যয়ান্তর নিমুক্তি যে প্রত্যয় ভাছাকে ধ্যান কহে। যে কোনও প্রদেশে ধ্যাবস্থিত চিত্রের প্রত্যায়ের বে এক ভাবনা, ইছারই উদ্দেশে ধ্যানশ্ব উক্ত হুহয়া থাকে। এইরপ্রে ধ্যানা সক্ত হুইয়া যে মানব নিজ্প্রাণ পরিত্যাগ করে, দে কুল, স্থজন ও মিত্রাদিগের উদ্ধার করিয়া স্থাৎ হরির সহিত্য অভিন্ন হয়। যে নার, এই রূপে

মুহার্ড বা অর্থ মুহার্ডমাত্র আদ্বাপুর্বক হরির ধ্যান करत, रम रय भक्ति आश्व रम, मर्क्वविध महायक्त-ছারাও দেরপ গতি প্রাপ্ত হওয়া যায় না। ধ্যাতা धान, त्थाय क धान धायाजन धरे ठाविति करनक ছইয়া ভত্তবিদল্প ধোগ প্রয়োগ করিবেন। যোগা-ভ্যাস হেতু মুক্তি ও অফবিধ মহৎ ঐশব্য লাভ ভান বৈরাগ্যসম্পন্ন, আন্ধান্থিত, ক্ষমাযুক্ত गर्वमा छेरमार्गील मानव अहेजल सान कतिशहे বিফুভকত পুরুষ বলিয়া উক্ত হয়। ছরির ধ্যান ও চিন্তনই মূর্ত্তাপরত্রন্ম। হরি, সকল ও निकलरकार, भर्वछ ७ भत्र भनार्थ। विकृहे, चनियापि छरेगचर्या, मुक्ति ६ धानि धारमञ्जन धनर ফলছারা যাজক: অতএব প্রমেশ্ব হ্রিকে নিয়ত ধ্যান করিবে। চলিতে চলিতে, মবস্থিতি করিতে করিতে, নিদ্রা যাইতে যাইতে, চকুর উন্মেষ্ধ বা নিমেয়ণ করিতে করিতে, শুচি বা অপ্তচিই হউক নিয়তই ঈশ্বরকে ধানে করিবে। নিজ দেহায়তন মধ্যে, মানদে ছৎপদ্ম পীঠিকামধ্যে কেশবকে সংস্থাপিত করিয়া ধ্যান্যোগে পুলা করিবে; ্ধ্যান যজ্ঞ, সর্বদোষণাব্দত, শুদ্ধ ও পরম খ্যান দারা যাগ করিয়া মুক্তিলাভ হয়, কিন্তু বাহুশুদ্ধ যজ্জভারা ভাহা সম্পন্ন হয় না; অহিংদাদি দোষ রাহিত্যাহত চিত্তমাধন বিশুদ্ধ, সেই হেতু অপবর্গ-প্রদ ধ্যান যজ্ঞ সর্বোৎকৃষ্ট জানিবে: সেই ছেড় অভ্যন্ন ও অনিত্য বাহ্যসাধন পরিতাগি পূর্বক যজ্ঞাদিকর্ম পরিহার করিয়া যোগাভ্যাস কর্তব্য ; প্রথমে ভোগ্য ভোগদম হত, বিকারয়ক্ত অব্যক্ত গুণতার হৃদয়ে চিন্তা করিবে : রজোগুণ দ্বীরা তম ও সত্ত্বারা রজোঞ্গ আচ্চাদন করিয়া প্রথমে करम कृष्क, तक ७ ८४७ धहे मधलख्य धर्मन করিবে: ইহা অভন্ন, ইহার খ্যান করিয়া ত্যাগা-

ALCUT SIN নম্ভর শুদ্ধ চিন্তা কর্ত্র ; সর্বোপাধি গুণাতীত পঞ্চবিংশপুরুষ (চতুর্বিংশতি তত্ত্বের অতাত) শুদ্ পুরুষো পরিসংস্থিত দিব্য ঐখরীর পক্ষর দাদশা-ঙ্গুল বিস্তীৰ্ণ, শুদ্ধ, বিক্ষিত ও খেতবৰ্ণ: ভাছার নাল নাভিক্ষণ হইতে সমৃদ্ভ ও অফীকুল: অণিমাদি তুণময় অক্ট পত্ৰ ঐ পদ্মে বিদ্যমান শাছে: উত্তম জ্ঞান ও বৈরাগ্য তাছার ক্রিকা, কেশর ও নাল বিষ্ণুধর্ম তাহার কন্দ,এইরূপ চিন্তা कब्रिटन: (महे धर्माहे छ्लान ७ देवद्वाना ध्वरः শিবৈশ্ব্যময় ও উৎকৃষ্ট ; নরগণ, সেই পদ্যাসন জানিয়া সর্ববিধ ছঃরেখর অবসান প্রাপ্ত হয় ; দেই পদ্ম কর্ণিকারমধ্যে শুদ্ধদীপশিখাকার, অসুষ্ঠমাত্র অমল, ওঁকাররূপ, কদম গোলকাকার তাররূপ অর্থাৎ ক্ষুব্রিন্ত কিরণরূপে অবস্থিত ঈশরকে ধ্যান করিবে। অথবা রশ্মিজালে চারিকে দিপ্যমান প্রধান পুরুষাতীত, স্থিত পদাস্থ ওঁকার স্বরূপ, পর, অক্ষর ঈশ্বরকে নিয়তই ধ্যান ও জপ করিবে। কেহ কেছ মনের স্থান্থতির নিমিত অমুক্রমে चुल शातित हेल्हा करतन। किन्तु मृक्त मःचिड হইলেও নিশ্চলীস্থত সেই স্থতকে ও লাভ করিতে পারা যায়। নাজিকদে অবস্থিত সেই নাল, 🖟 দাদশাঙ্গুল বিস্তৃত জানিবে। নাল সহিত অফী দশ দল পদা স্বাদশাস্ক বিস্তৃত হয়৷ স্কণিক, কেশরাস্তরে সূর্য্য দোমাগ্রি মণ্ডল অবস্থিত। অগ্নি মণ্ডলের মংধ্যস্থলে শভাচক্র গণা প্রাধ্র চতুস্থ ক বিষ্ণু; ভৎপরে শাক্স-জ্ঞক বলয়ধারী পাশাকুশ-ধর পরম স্বর্ণ বর্ণ খেতবর্ণ শ্রীবৎস কৌস্তভধারী বনমালী স্বৰ্ণ ক্ম নোহারী প্রস্কুরিত মকর ক্ওল রভোচ্ছেল কিরীট, মহান্, পীতাম্বর ধর, সর্বাভরণ ভূষিত ছবি অবহিত মাছেন, তিনি বিতন্তি প্রমাণ শামি দেই জ্যোতিঃ ও আত্মা বাহ্নেব এক

KRIBHRA DEY.

এবং বিষ্কু ওঁ এইরূপ ধ্যান করিয়া আন্ত হইলে চিন্তা মন্ত্র জপ করিবে। জপ করিয়া আন্ত হইলে চিন্তা কর্ত্ব য়। জপ ধ্যানাদি মুক্ত হইলে বিষ্ণু শীঘ্রই প্রদন্ন হয়। যজ্ঞ, জপ যজ্ঞের যোড়শাংশ সমানও হইতে পারে না। আধি ব্যাধি গ্রহণণ জপ কারির নিকটে ও গমন করিতে পারে না। মানব-গণ জপ করিয়া ভুক্তি, মুক্তি মৃহ্যুক্তর এই দকল জপ ফল প্রাপ্ত হয়।

ইত্যায়েরে আদিনহাপুরাণে ধ্যান নামক আশীতাধিকহিশততম অধ্যায়।

চতুরশীত্যধিকত্রিশততম অধ্যায়।

श्राहना ।

অগ্লি কহিলেন, ধ্যেয় পদার্থে সানদের সংস্থি-তির নাম ধারধা তাহা ধাানের ন্যায় দুই প্রকার মূর্ত ও অমূর্ত ধারণা। এই ধারণা দার। হরিকে প্রাপ্ত হওয় বায়। বাহাৰস্ভ যে লক্ষ্ডাহা হইতে যাবৎ মন বিচলিত না হয়, তাবং কাল কোনও প্রদেশে মনের যে সংস্থিতি,ভাহাকে ধারণ পরিচিছ্ম কালাবিধি দেহে সংস্থাপিত মন লক্ষ্য হইতে প্রচ্যুত না হইলে তাহাই ধারণা বলিষা অভিহিত হয়। দাদশ আয়ামে ধারণা, घानन धातनार धरान अवः घानम धराटन भगाधि ধারণা ভ্যাদ যুক্ত ব্যক্তি যদি প্রাণ পরি-ভাগ করে, তবে সে একবিংশতি কুল উদ্ধার করিয়া স্বয়ং পরম পদ প্রাপ্ত হয়। যোগীদিগের ८य ८य म्या वाधित छेख्य रश, वृद्धि भाता (मह লেই অংক গমন করিয়া তৎ ছলে ধারণা করিবে। হে বিজোতন। বিফুৰ সাগ্নি ও ফড়স্ত শিখা মন্ত্ৰ সম্বলিত খামেগা বাকণা এশানীও অমৃতাজিকা

এই চতুবিধা ধারণ। কর্তব্য জানিবে। নাড়ীনিকর দারা বিকট দিবা ও শুভ শূলাগ্র বেধন করিবে। পাদাস্ত হইতে ভিযাক অধ: ও উৰ্দ্ধভাগে অভান্ত তেজে গমন করে। হে মহামুনে ধাবং দৰ্ক-ব্যাপী না হয়. ভাবৎ সাধকেন্দ সেই রশ্মি মণ্ডল চিন্তা করিবেন। ভদনন্তর নিজদেহ ভস্মীভূত হইলে তৎপরে ভাহার উপদংহার কর্ত্তব্য। তদ্বারা শীত শ্লেম্মাদি পাপ বিনষ্ট হট্যা যায়। বলিও কণ্ঠ অধোমুখে ধীরভাবে স্মরণ করিবে। অচিছেম চিত হইযা আত্মভূত ছারা পুনর্বার ধ্যান কর্ত্র। প্রক্রিড প্রভূত শীকর সংস্পর্শ ইইলে হিমগামি ধারাবলিছারা বলি ছারা বিশ্বমণ্ডল আপু-রিভ করিয়া পৃথিনীতে তাহা চিন্তা করিবে। সংকোভ হেতৃ ব্রহ্মরন্ত্রত আধার মণ্ডল। পর্যান্ত হযুদ্ধা নাড়ীর মন্তর্গত হইয়া পূর্ণেন্দু কৃত আলয় প্ৰান্ত অমৃত মৃতি হিন সংস্পূৰ্ণ তোঃ ছাবা धात्रेश धात्रेश क्तिर्व। ক্রিয়া বারুণী পিপাদা দভাপাদি ৰাৱা পাঁড়ত হইলে অত্তিতে 🔻 হইয়া তুষ্টির নিমন্ত উক্ত বারুণী প্রয়োগ করিবে। वांक्रगी धावना छक्क इहंल अकरन लेगानी धातना বেদাম্য পদ্মাকাশে প্রাণ্ড অপান বায়ু কর প্রাপ্ত হইলে যে পর্যন্ত চিন্তা কর পায়, তাবৎ বিষ্ণুর প্রদাদ চিন্ত। করিবে। ব্যাপক ঈশ্বর স্বরূপ হইয়া অর্দ্ধেন্দুরূপ প্রম শান্ত নিরাভাদ নিরঞ্জন মহাভাব সকল জপ করিবে / যে পর্যান্ত খারু বকু হইতে খাস্যালরেপ (জাবাদা নিম্ম্ক) রূপ ব্রহ্মের বোধ না হয় ভাবং অসত্য সত্যবৎ প্রতীর্মান এবং এই চর্চের সমৃষ্ঠিত অথিল, সভাবৎ প্রভীয়মান হইতে খাকে। সেই পর্য ভব্ন দৃষ্ট হইলে একা হইতে চরাচর প্রমাতৃ। মান ও মেয় ধ্যান হৃৎপদ্ম কল্পন হয়।

মাতৃ মোদক বং জপ হোমার্চনাদি সকল বিষ্ণু মন্ত্রে নির্মাচ করিবে। অতঃপর অযুতাধারণা কীর্ত্তন করিব। শিরা মৃষ্টির উপরিস্থিত পূর্ণেন্দু সমিত কমল ব্যান করিংল তদমন্তর আকাশে শিরঃ ছিত অযুত শশাস্কবং প্রদীপ্ত শিবকলোল পূর্বিত সম্পূর্ণ মগুল যত্ন পূর্বিক চিন্তা করিবে। স্থানকমলে ও সেইরূপ চিন্তা করিয়া তন্মধ্যে নিজ্জন্মর অরব করিবে। ধারণাদি ঘারা সাধকগণের রেশের দুরীকরণ হয়।

ইত্যায়ের আদিমহাপুরাধে ধারণা নাম্ক চাতুরশীতা ধ্কতিশততম অধ্যয়ে।

পঞ্চাশীত্যধিকতিশতত্ম অধ্যায়।

সমাধি।

অগ্নি কহিলেন, আল্লেম্রপ, দীপ্তি-ীতল, সমূদ্র বং পিত চৈতন্য রূপ বং (य शान, छाहाटक मर्याध करह। भरनानित्वन কবিষা ধ্যান করিতে করিতে যে যোগী নির্বাতা-নলাং অচল হইয়া অবস্থান করে, ভাহাকে সমা-ধিত বলা যায়। যিনি আনবণ করেন না, আছোণ करतम भी, मर्नम करतम मा, तमायामम करतम मा এবং স্পর্ণ ও জানেন না এবং বাঁহার মন সঞ্জ करत ना. कि हुई अভिश्नन करत ना, कार्क्रवर त्वाध करत ना, अहे क्राप्त यिनि श्रेचरत गःलीन इन, তিনিই সমাধিত বলিয়া অভিগীত হইয়া থাকেন। যেরপ নির্বাভন্থ দীপ, নিশ্চল ভাবে স্বন্থিত হয়, ইহাও তজাপ এবং ইহাই তাহার উপনা জানিবে; দ্যাধিতে আজা রূপ ধ্যানকারী যোগীর সিদ্ধি দূচক পাছিত, আৰণ, ধাতুদর্শন, স্বাঙ্গবেদনাদি দিব্য উপদৰ্গ দকল প্ৰাৰ্ত্তিত হয়; দেবগণ দিব্য

ভোগ সকল ছারা, নৃপগণ পৃথিবী দান বারা এবং স্থবর্ণাধ্পগণ ধন দ্বারা সেই যোগীকে প্রার্থনা করেন; বেদাদি শাস্ত্র সকল স্বযং তাহ্যর প্রতি প্রবৃত্ত হয়; অভীষ্ট ছন্দোবিষয়, কাব্য, निवा त्रमायन मकल ध्वर मिवा खब्धि मकल, ममञ्ज শিল্প এবং দকবিধ কলা জানিতে পারে; স্থরেন্দ্র কন্যা ইত্যাদি সকল এবং প্রতিভাবি গুণ সকল প্রবৃত্ত হইতে থাকে; কিন্তু দে সমন্তকে যিনি তৃণ-বং পরিভ্যাগ করিতে পারেন, বিষ্ণু তাঁহার প্রতি প্ৰদায় হন; অণিমাদি গুণৈখৰ্য্যান্ যোগী শিয়ে জ্ঞান প্রকাশ করিয়া মথেচছ ভোগ্য সভ্রোগপুদাক লয়াবলম্বনে ভতুত্যাগানন্তর ঈশ্বর বিজ্ঞানান্দস্বরূপ অক্ষাত্মায় অবস্থান করিবে; মলিন ব্যক্তি আদর্শ-বৎ আত্মজানে সমর্থানা, দেহী সর্কাশ্রয়ে হেতু নিজদৈছে বেদনা অমূভ্ব করে; যোগযুক্ত ব্যক্তি সর্বযোগতেতু বেদনা প্রাপ্ত হয় না; এক মহাকাশ থেমন ঘটাদিতে পূথক হয়,বহুজলাধারে যেমন এক সূর্য্যই প্রতিবিশ্বিত, দেই রূপ এক আত্মাই দর্ম্ব গত ; এই খায়াই ত্ৰন্ন, আকাশ, দলিল, ভেকঃ, জল, ক্ষিতিও ধাতু; দেট হেছু এই আহাই সচবাচর অথিল স্বরূপ: যেমন কুন্তকার, মৃত্তিকা ও চক্রবোগে ঘট প্রস্তুত করে, যেমন গৃহকার ভূণ, মৃত্তিকা ও কাঠ ছারা গৃহ নির্মাণ করে, সেইরূপ করণ সকল গ্রছণ করিয়া সেই সেই যোনিতে ইক্সিয়বোগে আত্মাই আত্মান সৃষ্টি করিয়া থাকে; त्म हे की व कर्मा उ त्मायत्मा ह बाता है ऋा भू अर्थक বছ হয়; জীব জ্ঞানহেতুক মুক্তি লাভ করে; ধর্মহেতুক যোগী রোগভোগী হয় না ; বার্ট, মাধাব ও ক্লেহযোগে যেমন দীপের সংশিতি এবং বিক্রি য়াও হ্য, দেই রূপ অকালেও প্রাণ্স কয় হইয়া হংরা থাকে; যিনি হৃদয়ে দীপবং অবস্থিত করি-

তেছেন তাঁহার সিত, অসিত, কজা,(পিঙ্গা নীল, কপিল, পীতলোহিত বর্ণ রশ্মিজাল বিদ্যমান, তাহাদের এক উদ্বগামী, তাহা সূর্যামগুল ভেদ করিয়া ব্রহ্মলোতে গমন করিয়াছে, তদ্বারা প্রম গতি প্রাপ্ত হট্যা থাকে; ষেচ্ছে উহাঁর অন্যান্য শত শত রশ্মি উদ্বভাগে ব্যবস্থিত আছে, সেই হেতুদেব সমূহ তেজ স্থারপ বলিয়া প্রতিপা হইতেছেন: বিবিধরূপ মৃত্যপ্রভাবশালী, যে সকল রশা অধোভাগে বিদ্যমান আছে, তৎ সকল খাবা স্ঞালিত জীব কর্মভোগের নিমিত্ত এই সংসারে স্ঞ্রণ করিয়া থাকে ; সমস্ত বুদ্ধীন্দ্রিয়, অহঙ্কার, বুদ্ধি ও পৃথিব্যাদি পঞ্জুত ও অবাক্ত ইহারা ঐ কেত্রের ক্ষেত্রজ্ঞ আত্মাবলিয়া উক্ত হয়; সর্বি-ভূতের ঈশ্বর তিনি সং অসং, নিত্য ও অনিতা; অন্যক্ত হইতে বুদ্ধির উৎপত্তি, তাহা হইতে অহ-স্কার উদ্ধৃত হয়, সেই হেতু আকাশাদি গুণ সকলে এক এক গুণ উত্তরোত্তর অধিক থাকে; শব্দ, স্পৃদি, রূপ, রুদ, গন্ধ ও তালা ্ণ দকল যে যাহাতে আফ্রিত, সে তাহাতেই বিলীন হয়; সেই ক্ষেত্রজ ঈশবেরই সত্তরজঃ ও তথোগুণ; জীব রজ ও তমোগুণে আবিষ্ট থাকিয়া চক্রবদ্ভামিত হইতে থাকে : যে অনাদি ও আদিমান দেই প্রম-পুরুষ; যে লিঙ্গ ও ইন্দ্রিয় দানা উপগ্রাহ্য,তাহাই বিকাব: যাঁহা হইতে বেদ ও পুরাণ দকল, বিল্যোগনিষ্ণ সকল, শ্লোক, সূত্ৰ, ভাষ্য ও অন্য যে কোনত বাধায় (শাস্ত্র) উৎপন্ন হইয়াছে, তিনিই ঈশ্বর: পিতৃষানের উপনীথী দকল এবং অগস্তের অন্তর পথ, বিভূত রহিনাছে; প্রজাকাম অগ্নি হোত্রিগণ, যাহারা দানপর ও অইতংগবিশিষ্ট, সেই প্রজাকাম গৃহমেধিগণ তদ্ধারা অর্থোদেশে গ্রন করিয়া থাকেন ; অফাশীতি সহত্র গৃহমেধি

মৃতিগণ পুনরাবর্ত্তনে বীজভুত ধর্মের প্রবর্তক : সপ্তমি মার্গবর্ত্ত সকল দেবলোক আশ্রেয় করিয়া। বিদ্যমান আছে ছৎসংখ্যক মুনিগণ সৰ্কারন্ত বিবৰ্শ্বিত হইয়া প্ৰকাচৰ্য্য ও বুদ্ধ পূৰ্ববক সঙ্গভাগি ও তপদ্যাবলম্বনে দেই দেই স্থানে প্রলয় প্রয়ন্ত অবস্থিত আছেন; বেদাপুৰ্চন, যজ্ঞা, প্ৰসাচ্চ্য, তপদ্যা, দম, শ্ৰন্ধা, উপবাদ, দত্য এই দকল আত্মার ভ্রানের কারণ জানিবেন: সেই ঈগ্র সৰ্ববিধ আশ্ৰমী ও ছিজগণ কৰ্তৃক নিদিধ্যা সিতব্য দ্রুত্বা ও শোহবা জানিবে: এই রূপে যে ছিজ অরণ্য আশ্রয় করিয়া ঈশ্বরকে অবগতি করে এবং পরম শ্রদ্ধাসহকাবে সত্যস্তরূপ ভাঁহরি উপাসনা করে, সে ক্রমে অর্চিঃ, অহঃ তদনস্তর শুক্ল উত্তরায়ন দেবলোক সবিতা ও বিচ্যুৎলোক ক্রমে প্রাপ্ত হয়। তদনস্তর সেই পুক্ষ ব্রহ্মলোক প্রতিষ্ঠা বাঁহারা ষ্টেডিপ ও দান দারা স্থ জয় করে, তাঁহারা পুনরা সৃত্তি করে প্রহ্মজ্ঞদিগের ভায় ভাছাদের দংসার বিনাশ হয় না। ভাঁছারা ধুম, নিশা কৃষ্ণ পক্ষ দক্ষিণায়ন পিতৃলোক চন্দ্ৰনা । নভঃ বাষ জল মহী ক্রমে প্রাপ্ত হয় এবং পুনগমন কবে। এইরূপে যে আত্মার তুই মার্গ না জানে সে রাক্ষদ, পত্র কীট বা কুমি হইয়া জন্ম এছে। करतः कीवशन श्रमरम मीशवम खरन्तत धान করিয়া অমর হয়। যিনি ন্যায় পূর্বক ধনো। পাৰ্জন কয়েন, যিনি ভত্তজান নিষ্ঠ অভিথি প্ৰিয ও সভ্যবাদী ও এছি করে সেই গৃহত্ব ভূজি লাভ করিতে পারে।

> ইড্যায়েরে আদিমহাপ্রাণে স্মাধি নাসক পঞ্জী ১)ধিক্তিশ হতস অধ্যায়ৰ

ষড়শীত্যধিকত্তিশতভম অধ্যায়।

ব্ৰমজান ৷

ষ্ঠা কহিলেন, সংগারের অজ্ঞান মোচনের নিমিত প্রক্ষান ·কীর্তন করিব। এই পর প্রক্ষ আত্মাই আমি এইয়পে জ্ঞান হইলেই মুক্তি হয়। घितियर मृणाख ८ र पुत्र व्याच्या नग्र। ८ न र, যদি অবিকারি আদির ভায় ব্যবহৃত হয়, ভবে জ্মুপ্তি ও মরণ হইলে আংক্সা দেহ হইতে ভিন্ন এইরপ নিশ্চিত জ্ঞান হয় কেন ? অত এব দেহ : আক্সান্য। চক্ষুরাদি ইন্দ্রিগণ আয়ানহে, ইহারা কর্ত্ত। মহে করণ। মন ও বৃদ্ধি আত্মা নহে, দীপবৎ করণ অর্থাৎ দীপ যোগে যেমন অন্ধকারে কোনও বস্তর দর্শন হয় সেইরূপ মনও বুদ্ধি যোগে আআ কোন বস্তব বোধ অনুভব করে | সুযুগ্তি কালে চৈতভের প্রভাব বিদ্যমান থাকে এবং জাগ্রহ ও यशानकाम मकीर्वेच एक्ट्र दिख्यान व वरताव क्य না। অযুপ্তি অবস্থার বিজ্ঞানবিরছিত প্রাণ অবগত হওয়া যায়, অভএব প্ৰাণ ও আত্মা হইতে পারেনা অতএব ইন্দ্রিয় আছা নয় ইন্দ্রিদি দকলই খালার দেহবং ব্যাভচার হেতু অহকার ও আত্রা নহে। উক্ত সকল হইতে বিভিন্ন সেই আত্ম সকলের জন্মে রজনীয়েতো দীপ্রং অবস্থিত থাকিয়া সকল্ই দর্শন ও ভোগ করিতেছেন। शानां । छ कारम यूनिशन बहैक्रल हिन्छ। क'त्ररवन । সেই জন্ম হহতে আকাশ আকাশ হইতে বায়ু, বায়ু হইতে খনল, খনল হইতে জল, জল হইতে পৃথিনী,পৃথিবী হুইতে সকাশরীর এবং ঐ অপক্ষীকৃত ভূত সকল হইতে পঞ্চীকৃত অন্য সকল উৎপন্ন হইয়াছে। স্থল শরীর ধ্যান করিয়া তাহা হইতে অক্ষে লয় চিন্তা করিবে। পঞ্চীকৃত ভূত সম্হের

কার্য্য বিরাট, ইহাই আক্সার জ্ঞান কলিত সূল শরীর। ধীরগণ ইন্দ্রিয় ভারা জাগরিত বিজ্ঞান বুৰিয়া বাকেন। বিশ্ব তদভিমান এই তিনটা অকারণ অর্থাৎ কাছার ও কারণ হয় না। অপঞ্চী কৃত স্থাতের কার্য্য লিঙ্গ তাহা সপ্রদশের (১) সহিত সংযুক্ত। ইইয়া হিরণ্য-গর্ভ নামে অভিহিত হয়। শাত্মার যে সৃক্ষ শরীর তাহাকে লিঙ্গ কংহ। কাগ্ৰৎ সংস্কার জাত স্বপ্ন বিষয়াত্মক প্রত্যয় আলা ততুপমানী। স্প্রেপঞ্চইতে তৈরুদ্ধর। তাহা স্থুল সূক্ষা শরীর ছয়ের এক কারণ আছা। ও সাভাস জ্ঞানকে অধণাহত কহে। দেই ব্রহ্ম সং ও নয় ও অস্থ ও ন্য, সাল্য়ৰ ও ন্য নির্ধ্ব ও ন্যু অভিন্তন্য, ভিন্তন্য। তিনি ভিন্তিন, অনি ৰ্বাচ্য, বন্ধ সংসার হারক। সেই একমাত্র জ্রন্ধা, বিজ্ঞানছারা লক্ষ হয়। কর্ম্মবারা তাঁহাকে প্রাপ্ত হওয়া যার না ৷ কারণাত্মক ইল্রিয় সকলের দর্বভোভাবে সংহার, এবং বুদ্ধির স্থান গুযুপ্ত এই ছয়ের অভিযানগান প্রাক্ত আত্মা এই তিনকে মকার ও প্রণব কহে। উহাই অকার এবং উকার এব এই ছুইটিই মকার স্বরূপ। চিমাত্র স্বামি জাগ্রৎ স্বপাদির দান্দী। অজ্ঞান ও সংসাবাদি বন্ধন ভাঁহার কার্যান্য। একানিত্য শুদ্ধ, বন্ধ মুক্ত, সত্য অহম আনন্দস্কপ। একাই কামি. আমিই পরজ্যোতিঃ বিমৃক্ত ব্রহ্ম ওঁ। আমি প্রব্রহ্ম, প্রমজ্ঞান, সমাধি ও বন্ধ ঘাতক : ব্রহ্ম, চিদানন্দত , জ্ঞান ও অনন্ত: এই পর্ঞ্জ আত্মা, তুমিও সেই ব্রহ্ম, এইরূপ গুরু কর্তৃক অব-বোধিত জীব, আমি ত্রকা হই এইরূপ জান করিবে। সেই ঐ আদিত্য পুরুষ, সেই ঐ আমি

^{(&}gt;) প্ৰশেষাণ, প্ৰশংক কেবিছার, প্ৰশংক জ্ঞানে জিয়, বুছি ও মন এই স্থাদশ।

এইরাপ জ্ঞানে সংসার হইতে মুক্ত ছয় জালাজ্ঞ সেই জালাই হয়।

> हे आ:श्रद्ध व्यक्तिमहाश्रद्धात्म उन्नकान नामक বড়প্রিচুধিকতিশত কম অধ্যায়।

সপ্তাশীত্যধিকত্রিশত্তম অধারে।

ব্ৰহ্মজান।

অগ্নি কহিলেন, আমি অফীদশাক্ষরা ত্রহ্মপর-জ্যোতি, মন্ব, অবনী বিবর্জ্জিত। আমি প্রসাপর-জ্যোতি: ন্মাব, মাকাশ বিব্লহিত; আমি একা-পরজ্যোতি, আদি কাষ্যকলাপ বিরহিত। আমি ব্রহ্মক্যোতি, বিরাট, আত্মায় বিরহিত। আমি ব্রহ্মপর্জ্যোতিঃ, জাগ্রতের স্থান বিবঞ্জিত। আমি ব্রহ্মপরজেঁগতিঃ, বিশ্বভাবে একান্ত রহিত। আমি ত্রহাপর জ্যাতিঃ,মাকার বিকার পরিভ্যক। অমি ব্রহ্মণরজ্যোতিঃ, বক্যে পাণিপাদ বিরহিত। আম ত্রন্মপরজ্যোতিঃ, পায়ু আর উপস্থ ধলিত। আমি ত্রহ্মপরজ্যোতি 🐾 চক্ষু, কর্ণ, ছক বিরহিত। , আমি অকাপরজ্যোতিঃ, রীশং, আর রস বিবর্জিত। শামি ত্রহ্মপরজ্যোতিঃ, দর্ববিধ গন্ধ বিরহিত। 'আমি অক্সপরভ্যোতিঃ,রদন্ম না্দীকা বিবজিছিত। জামি ব্রহাপরক্ষ্যোতিঃ, সদা শ্বদ স্পর্শ বিরহিত। আ ম ত্রহ্মপর জ্য়তি, বৃদ্ধি ও, মানস বিবজিজ ত। খানি অঙ্গপন্দ্যোতি: চিত্ত অহন্ধার বিরহিত। আমি একাপরজ্যোতিঃ অ্পান ও প্রাণ বিবজিত। । আমি ত্রহাণ্ডরোভি, বানি ও উদান বিরহিত। আমি বৃক্ষারভ্যোতিঃ দুমান সমীর বিবর্জিত। আমি ত্রহাণরভারু ক্রিক্স মুদ্ধনামরণ রহিত। আমি ব্ৰহ্মপরজ্যোতিঃ শোক মোহু মাৎস্**র্য**িবিবিজ্ঞ । আনি ত্রক্ষপরজ্যোতিঃ সদা কুধাতৃকা বিরহিত। ঘারা বৈরাজ পদ, কর্মণংত্যাগ ঘারা ত্রক্ষপদ,

শামি ব্রহ্মপরজে।তিঃ শব্দদি উন্তুত বিবজিত। মামি ত্রেমাপরজ্যোতি, হিরণ্যগর্ভাদি বিরহিত। আমি ব্রহ্মপর্জ্যেতিঃ সদা ধ্রপ্রবন্ধা বিবর্জিত। আমি ব্রহাপরক্যোতিঃ তৈজন প্রভৃতি বিরহিত। আমি ব্রহাপরজ্যোতিঃ মপকার খাদি বিবঙ্কিত। মামি ব্রহ্মপরজ্যোতি অজ্ঞান প্রভৃতি বির্হিত। আমি ভ্রহ্মপরজে, তি সদা অম্যাহার বিবর্তিজ্ঞত। আমি ব্রহ্মপরক্যোতি সম্ভুর্জ স্তুমা বির্হিত। ব্রহ্মপরক্ষ্যোতিঃ সদ সন্তাব বিরহিত। আমি ত্রক্ষপরজ্যোতিঃ, সর্বে থায়ব বিবর্জ্জিত। আমি ত্রমাপরজ্যোতিঃ সদাভেদাভেদ বিরহিত। আমি ব্রহ্মপরজ্যোতি: ত্রষপ্তির স্থান বিবঞ্জিত। আমি ত্রকাপরভেয়তিঃ, সদা প্রজা ভাব বিরহিত। আমি ব্রহ্মপরজ্যোতিঃ মধার প্রভৃতি বিব্ঞিত ত। আমি অকাপরভােতিঃ, নিত্য ম ন্যেয় বিরহিত। আমি অক্ষপরভ্যোতিঃ, পরিমিতি মাণক বজিত। আমি ব্রহাপরজ্যোতিঃ, সাক্ষিহাদিদকল বজিলত। আমি ব্রহ্মপরজ্যোতিঃ সদা কার্য্যকারণ বজ্জিত। দেহে ক্রিয় মনোবুদ্ধি আণ অহঙ্কার বিরহিত। জাগ্রৎ স্থা হৃষ্ণি মুক্ত ব্ৰহ্মভূষ্য নিতঃ শুদ্ধ বৃদ্ধ মৃত্যু আনন্দ অন্বয় আমি ত্রন্ধা, ত্রনা আ।ম,বিমুক্ত বিজ্ঞান আনন্দময়। আমি ব্রহ্মপরজ্যোতিঃ সমাধি মোক্ষদ পরাৎপর। ত্রক্ষতামি, আমিত্রকা, নিরঞ্জন, নিজল অকর।

के ठार्राटवर व्यापिमश्लूदारण गमाधि अञ्चळान मामक সপ্তাশীভাধিক জিপত ভ্ৰম আধাৰে।

অটাশীত্যধিকত্রিশত্তর অধ্যায় ৷ ব্ৰক্ষজান।

অগ্নিকহিলেন, যজ্জ ছারা দেবলোক, তপস্যা

বৈরাগ্যমার। প্রকৃতিতে লয় এবং জ্ঞানমারা কৈবল্য প্ৰাপ্ত হয়. জীবের এই পঞ্চিধ গতি উক্ত হই-য়াছে। প্রীতি, ভাপ ও বিষাদাদি ছইতে নির-তির নাম বৈরাগা। কৃতাকৃত কর্মানমূহের পরি-ত্যাগের নাম সন্থ্যাস। অব্যক্তানি বিশেষ পর্যান্তে নে বিকার নিবর্তন, তাহার নাম প্রকৃতিলয়। চেতন ও চেতনের অভিনয় জান হইলে, তাহাকে জ্ঞান কছে। বেদান্তে সর্বাধার পরমেখর পর-মাছা বলিবাও দেবমধোবিকু বলিয়া অভিহিত হন। ঐ বিষ্ণু বজেশ্বর ও যজ্ঞ বুরুষ বলিয়া প্রবৃত্তি-মার্গবেলফা মানবগণ কর্তৃক পুজিত হন। নির্ভি প্ৰাৰলভাগণ জ্ঞান যোগ ভাৱা জ্ঞান মূৰ্ত্তি প্ৰমা-জাকে অবলোকন করেন। হে মহামুনে! সেই পুক্ষোত্ম হ্রস্থ দার্ঘ প্রশুতাদি বাকা স্বরূপ। জ্ঞান ও কর্ম হাঁছার প্রাপ্তির হেছু। খাগমে উক্ত ছইয়াছে যে, বিবেকজ জ্ঞান সুই প্রকার, শব্দ ব্রহ্ম আগ্রন্ময় এক ও বিবেকজ পরব্রক্ষ মপর। সুইব্রক্ষ বেদিতব্যু, প্রক্ষাব্দ পর এক বেদাদিবিদ্যা, অক্ষর, সং পর্রকা অপর। সেই এই ভগব্ছাচা ত্রকা অর্ক্তনার নিমিত্ত উপচারদ্বারা অভ্যান্য প্রকার ক্ষিত হয়। ভগৰৎ প্ৰের ভকারার্থ সম্ভর্তা ও ভর্তা এই চুইপ্রকার। হে মহামুনে। ঐ গকার, নেতা গময়িতা e অফা জানিবেন। সমগ্র ঐশ্ব বীয়া, ঘশঃ, জ্রী, জ্ঞান ও বৈরগ্যে এই ছয়টির সম-ষ্টিকে ভগ কৰে বিষ্ণুতে ভূতগণ বাস করে, তিনি এইরূপে ছবিতেই ভগ-ধাতার তিবিধ মাতা। বান্শব্দ প্রযুক্ত হয়, অন্য উপচারদার। প্রযুক্ত হব ৷ যিনি, উৎপত্তি প্রলয়, ভূতগণের অগতি ও গতি, বিদ্যা ও অবিদ্যা অবগত আছেন, তিনিই ভগবান্ পদবাচ্য হয়েন। পরমৈখর্ষ্ট জ্ঞানশক্তি, হেয় গুণাদি ব্যতিরে:ক चर्णस (उज्ज हे वीर्या।

পুরাকালে, থাণ্ডিকা জনককে যোগ কছিয়াছিলেন অনাত্মায় যে আতা বুদ্ধি, স্বয়ং আত্মা আমি এই যে অবিদ্যাজাত মতি, এই চুইটিই বীজভূত হইয়া অবস্থান করে। কুম্তি দেহী মোহতম আগ্রয় করিয়া "আমি" এই প্রকারে দৃঢ়তর মতি করে। धरे व्यकारत जरमरहार भागि भूख (भोद्यां निष्ठ. কলেবরে, পঞ্জিতগণ দমতা নিরূপণ মানৰ দেহের উপকারের নিমিত স্থ প্রকার কর্ম করিয়া থাকে। পুক্তবের দেহ যখন " আত্মা নয়, তথন তাহার নিমিত যে কমা ত চা বন্ধনের বিষিত্তই হয়। আজা, নির্মাল, নির্বাণ্স্য । ও জ্ঞানসম। অংশম হংখম্য ও অ্জ্ঞান্ম্য; অংশা, প্রকৃতির, আত্মার নছে। অগ্নির সহিত জলের সঙ্গ হয় না, কিন্তু স্থালীযোগে তাহাও এক প্রকার প**ন্ধ হয়; হে মহ**'মুনে! কাদিশক সকল তেৎ-একৃতি কৃত। পুলোক্তরপে আত্মার দহিত অহ --মানাদিযোগে প্রকু'তর মিলন হয়। এবং তৎপরে । ঐ হাড়া প্রকৃতির ধর্ম দকল ভঙ্গনা করিয়া থাকে ট তাহাদের হইতে যে সহা তাহাই অব্যালা। মন ব্যানের নিমিত বিষয়াদক প্রাপ্ত হয়, এবং স্দ্রুদ্ধি প্রাপ্তির নি'ম এই নিবিব্ধর হট্যা থাকে। হেতু মানসংক বিষয় হটতে আকর্ষণ করিয়া ব্রহ্ম স্থাপ হ'রকে 'চন্তা করিবে। কে মুনে! মানদ, , সেই বুহ্মধ্যায়ি মানবকে, আত্মাক্তির বিচার দারা আকর্ষক প্রস্তর গৌধের খায় আল্লভাব পাওয়া-ইয়া থাকে। আত্মগ্রহ সাপেক্ষা যে বিশিকী মনোগতি বুজাপদার্থে তাছার যে সংযোগ তাহা কেই যোগ কছে। মানৰ, বিনিস্পাদ হইয়া সমা-ধিত ছইলে বুজা বস্তা প্রাপ্ত হয়। যম, নির্ম, আসন, প্ৰত্যাহার, মুকুদ্ বিজয় প্ৰন্ৰারা প্রাণা-

য়াম, ইত্রিয়গণের প্রভ্যাহার, এই সমন্ত বনীভূত কিঃ। নঙ্গলালয় জ্রমো মনীছর করিবে। মুর্তক ও অমূর্ত্তক ভেদে চিন্তের আশ্রয় দুইপ্রকার! ব্রহা ভাব ভাবনাযুক্তৰ, আংমনদ প্রভৃতির বিশিষ্ট এক প্রকার, কর্ম ভাবনাযুক্ত দেবাদি স্থারবান্ত পর্যান্ত অপর প্রকার আশ্রয় জানিবে। হিরণ্য গর্ভানিতে জ্ঞানাত্মিকা ও কর্মাজ্মিকাজেনে সুইপ্রকার এবং বিশ্বক্ষের ভাবনা, সমুদায়ে ভাবনা ত্রিবিধ উক্ত প্রব্যস্তমিত ভেদ, যাহা সভামাত্র ও इवेषा (छू। বাক্যের অংগাচক, আত্মসংবেদ্য, সেই জ্ঞানই ত্রমাজ্ঞান: তাহাই অরপ, অজ, অকর বিকুর পরমূরণ প্রথমে দেইরপ ধ্যান, শক্তির অণিষ্য, সেই হেতু মূর্ত্তাদি চিত্তা করিবে। তদনস্তর ঐ মানব প্রমাত্মার সহিত, তদ্যাবাভাব প্রাপ্ত হ্ইয়া অভেদ হয়; তাহার ভেদ অজ্ঞানকৃত জানিবে।

> ই তাাগ্ৰেৰে আ দৰহাপুৰাণে ব্ৰক্ষজ্ঞান নামক অই।শীত্যধিক ত্ৰিশতভাম অধ্যায়।

ঊননবভ্য**ধিক্তিশতভ্য অধ্যা**য়।

অবৈত ব্ৰহ্মজ্ঞান।

অগ্নিকছিলেন, ভরত যাত্বা প্রাপ্ত ই ইয়াছিল, দেই অবৈত ব্রহ্মবিজ্ঞান বলিব। ভরত বাস্থদেবের অর্চ্চনাদি করিয়া শালগ্রামে তপদ্যা করিয়া-ছিলেন।

ষ্ণসঙ্গ হৈ তিনি অস্তকালে মৃগ স্থান পূর্বক প্রাণ পরিহার করিয়া জাতিস্মর মৃগ ইইয়াছিলেন। তদনত্তর তদ্দেহ পরিত্যাগ করিয়া পূর্বিযোগবলে পুনব্ধার মানন্যোনি প্রাপ্ত হন এবং অহৈত প্রস্কান স্থান ইইয়া লোক মধ্যে জড়বৎ আচরণ পূর্বক অবস্থান করিতেছিলেন। একদা বীররাজের বিষ্টি ষোগে (নেগারে) ধৃত হইরা বাহক শক্তির বচনামু
শারে উহার শিবিকা বহন করিতে লাগিলেন।

ঐ জ্ঞানী বিষ্টি ঘারা গৃহীত হইরা ভাষাকে বহন
করিতে জড়গভিতে চলিতে লাগিল। জন্যান্য
বাহকেরা সম্বর গমন করিতে লাগিল। জন্য
বাহকগণ শীজ্ঞ,যাইতেছে এবং সে অশীজ্ঞ গমন
করিতেছে, দেখিয়া রাজা ভাষাকে কহিতে লাগিলা,
লেন, জুমি ত জ্বর পথই জামার শিবিকা বহন
করিয়াছ, ইহার মধ্যেই জুমি শ্রান্ত হইলে ? জুমি
কি কফসহ পুক্ষ মণ্ড; ভোমাকে বিলক্ষণ স্থল ত
নিরীক্ষণ করিতেছে।

ভাষাণ কহিলেন, আমি স্থল নহি; ভোমার শিবিকা আমার দারা বাহিত হইতেছে না; আমি আন্তও নহি, আধাস্বিশিক্টও নহি। (হ নহীপতে 🦵 ভূমি আমার আজার বোঢ়ব্য (বহনযোগা) নও : দেশ, ভূমিতলে পাদযুগল অবস্থিত পাদস্যু জন্তব্যু জ্ঞাৰয়ে উরুষ্য, তদাধারে উদর, ততুপরি বক্ষঃপুল, বাত্বর ও ক্ষর্ভয় অবস্থিত আছে; ঐ ক্ষরোপরি তোমার শিবিকা অবস্থিত, ইহাতে আনার, কোনও ভার বিদ্যোন নাই। এই অচুপলকিত দেহ অব্হিত রহিয়াছে। ভূমি দেখানে আমি এখানে এরূপ উল্ভিন্ত এমমাত্র। হে পার্থিব। তুমি ভাষি আমি এবং অকান্ত জীবগণ ভূতগণ কর্ত্তক বাহিত হইতেছে; গুণপ্ৰবাহ পতিত এই গুণুবৰ্গ গমন করিতেছে। ছে পৃথিবীপতে! এই সন্থাদি গুণগণ কৰ্ণোৱ বশ্য ; কৰ্মা, অবিদ্যা কর্তৃক দক্ষিত, ভাশেষ উন্তগণেই বিদ্যমান আছে। আত্মা. ওম. **৯কর, শান্ত, নিন্ত ৭ ও প্রকৃতির পদ্মপান্নে** ব্যব-াস্থত, উহার ক্ষয় ও বৃদ্ধি নাই: ভবে আপনি কোন যুক্তি অবলম্বন করিয়া কহিলেন বে. ভো-গাকে অতি সুল নিরীক্ষণ করিতেছি। ভূমিপার,

জন্তা, কটি, উরু জঠরাদিতে সংশ্বিত ক্ষমে যেখন
শিবিকা সংখিত আছে, সেইরপ আপনিও শিবিকার ন্যায় ভূত পদার্থ অবস্থিত রহিয়াছেন ভ্তরাং
শিবিকোথান কর্মের সহিত ও অন্ত জন্তগণের
দহিত আপনার সমভাব অবগত হইবেন। শৈলদ্রুই হউক বা গৃহস্থ অথবা পৃথিবী সন্তুত দ্রুই
হউক, সমস্ত প্রান্ধত পদার্থের সহিত পুরুষের
পৃথগ্ভাব। আমি দেই মহাভার কিরূপে সহিব;
এই শিবিকায় যে যে দ্রুর আপনার, আহা ভূতপ্নার্থ হইতে সংগৃহীত; আপনার, আমার, এই
অথিলের ও ভূতসমূহও সেইরূপে সংগৃহীত হইয়াছে।

রাজা উহোর দেই বচন এবণ করিয়া তাঁহার পাদদর ধারণ পূর্বেক ক্ষা প্রার্থনা করিলেন। হে বুক্মন্! অপিনি আমার প্রতি প্রদান হউন এবং এই শিবিকা সন্তর পরিত্যাগ করিয়া, ভাপনি কে ? কি নি:মতুই বা এখানে বিচরণ করিতেছি-লেন তাহা প্রকাশ করুন, আমি তাহা অবণ করিব।

বাহ্মণ কহিলেন, প্রবণ করুন; আমি কে ? এরূপ বলিতে পারা যায় না। উপভোগের নিমি-তই সর্বতে আগমনজিয়া হয়; স্থথ ছুঃখোপভোগ, দেহাদির উপপাদক। জন্তুগণ, ধর্মাধর্ম জাত স্থ্য ছুঃখ ভোগ করিবার নিমিত্ত দেহাদি প্রাপ্ত হইয়। ধাকে।

রাজা কহিলেন, হে প্রহ্মন্! যাহা আছে দেই আমি, কি হেছু এরূপ বলা যাইতে পারিবে না? হে ছিজ! আত্মাতে যে "আমি" শব্দ প্রযুক্ত হয় তাহা দোষের নিমিত্ত হয় না।

ব্ৰাহ্মণ কহিলেন, "আমি" শব্দ আত্মায় প্ৰযুক্ত ইংল দোষের নিমিত হয় না, তাহা ব্থার্থই

অনাস্থায় আত্মবিজ্ঞান বা আত্মশক্ সেইক্সপ। ভান্তির লক্ষণ জানিবে। সমস্ত দেহেই যখন এক পুরুষ ব্যবস্থিত, তখন আপনি কে ? আমি কে ? এবাক্য বিফল, হে নূপ! ভূমি রাজ, এই শিবিকা আমরা অগ্রগামী বাহক, এই আপনার লোক (জন্মজুমি) এই সমস্তই অসৎ বলিয়া উক্ত হই-য়াছে। বুক হইতে দারু দারু হইতে এই শিবিকা নির্মিত হটরাছে, তাহাতে আপনি আরোহণ করিয়া আছেন। উহার বৃক্ষ দৎজ্ঞা বা দারুদংজ্ঞা কিরূপে ইইবে ? আপুনি শিবিকার্রচ হইলে মানব-গণ অপিনাকে বৃক্ষারত বা কাষ্ঠারত বলেনা। হে নৃপ শ্রেষ্ঠ ! ইহার অর্থ অত্বেমণ করিলে শিবি-কার দারু দম্মিলনে যে রচনা দংখান, বিশেষ আপনি তাহাতে আর্ঢ এইরূপ কর্থ প্রাপ্ত হওয়া যায়। পুরুষ, স্ত্রী, এই গো, বাজা, কুঞ্জর, বিহুগ, তরু, এইরূপ সংজ্ঞা, দেহে কর্মাহেতু লোক কর্তৃক কল্লিত হইয়াছে জানিবেন। হেন্প! জিহ্বা দন্ত ওঠ ও তালু অহৎ (আমি) আদিশক উচ্চারণ করিতেছে, কিন্তু ইহারা "আমি" নহে, ইহারা मকলে বাক্য নিষ্পাদনের হেতু। এই বাক্ কি হেতু "আমি" এইশব্দ স্বয়ৎ উচ্চারণ করিতেছে, তাহাতে হেতু দৃষ্ট হয় না, তথাপি "আমি নই" বাক্য, এইরূপ উচ্চারণ করিলে তার্ছা মিথ্যা প্রযুক্ত হইতেছে না। হে রাজন্! শিরঃ পায়ু আদি দকল পুরুষের আত্মা হইতে পৃথক্ পিগু, তবে কোথা হইতে আমি, এই নাম উচ্চারণ করিতে পারি ? হে পার্থিবশ্রেষ্ঠ ! আমা হইতে ভিন্ন যদি অভা কেহ থাকেন, তবে "এই আনি" এই খন্য এরপ বলা যাইতে পারে। নগ, পভ ও পাদপে পরমার্থতঃ ভেদ নাই, এই শরীর প্রভেদ দেখিতেছ, তাহা কেবল কর্মহেতৃ পৃথক্ যোনি

মাত্র জানিবেন। লোকে যে রাজা ও রাজগুট আদি ও অন্য যাহা কিছু বিদ্যমান আছে তাহা অসৎ ও সম্যক্ বিশুদ্ধ নহে। একমাত্র ভূমি, সকল লোকের রাজা, তোমার পিডার পুজ, রিপুর রিপু, পত্নীর পতি, পুত্রের পিতা, হে ভূপ। তোমাকে এখানে কি বলা যাইতে পারে ? ভূমি শিরং, কি তোমার শির বা উদর, কিম্বা তোমার আপাদ মস্তক সমস্তই ভূমি ? হে মহীপতে। সমস্ত অবয়ব হইতে ভূমি পৃথপ্ভূত ব্যবহৃত আছে। হে পাথিব। আমি কে ? এ বিষয়ে নিপুণতম চিন্তা কর। সেই বাক্য প্রবণ করিয়া রাজা। সেই অবধ্রত ছিলক্ষপি হরিকে কহিতে লাগিলেন।

রাজা কহিলেন, যে বিজ ! আমি শ্রেষ্কর অর্থ সাধনার্থ, কপিল মহর্ষিকে জিজ্ঞাসা করিতে উদ্যত হইয়াছি। আপনি সেই কপিল ঋষির অংশ, আমার নিমিত জ্ঞানদ হইয়া অবনিতলে অবস্থিতি করিতেছেন। যাহ। শ্রেষ্কর, তাহা জ্ঞানতরঙ্গ সাগর হইতে আমার নিকট কার্তন করন।

ত্রাক্ষণ কহিলেন, পুনর্বার ক্রেয়া বিষয়ে জিজ্ঞানা করিতেছেন। কিন্তু পরমার্থ জিজ্ঞানা করিতেছেন না। হে ভূপ! শ্রেয়া বিষয়ে অশেয়াবিষ পরমার্থ বিদ্যান আছে। হে নূপ। যে মানব, দেবতারাধনা করিয়া ধনদম্পত্তি, পুত্র ও রাজ্য কামনা করে, তাহার ক্রেয়া কেছুই নাই। পরমালার সহিত যে সংযোগ তাহাই বিবেকি গণের ভ্রেয়াঃ জানিবেন। যজ্ঞাদি ক্রিয়া ও দ্রব্য দম্পৎ পরমার্থ নহে, জীব ও পরমালারযোগ তাহাই পরমার্থ বিলয়া উক্ত হয়। অভিতীয়, ব্যাপী, সম, শুদ্ধ, নিত্তিশ, প্রকৃতির পরন্ধ, জন্মবৃদ্ধাদি রহিত, অব্যয়, পরম, জ্ঞানময়, বিভূ, গুণ্

জাত্যাদির অসঙ্গী আত্মাই সর্বাগত জানিবেন। আমি, এ বিষয়ে ভোমার নিকট, নিদাঘ ঋতুসংবাদ কীর্ত্তন করিতেছি প্রবণ কর।

ঋতু, ত্রক্ষার পুত্র জ্ঞানী ছিলেন, পোলন্তা নিদ্যে তাঁহার শিষা তিনি তাঁহার নিকট বিদ্যা-লাভ করিয়া, পুরে ও নগরে অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। ঋতু তাহাকে দেবিকা তটে অব-হিত বলিয়া তর্ক করিতে লাগিলেন। দিব্য সহস্র বর্ষ পূর্ণ হইলে ঋতু তাহাকে দর্শন করিবার নিমিত্ত আগমন করিলেন। নিদাঘ, বৈশ্বদেব বলি প্রদানাত্তে গুরুকে অম প্রদানপূর্বক ভোজন করাইয়া জিজ্ঞানা করিলেন, আপনি ভোজন করিলেন ইহাতে ত আপনার তৃষ্টি হইল, ষেহেতু তৃষ্টি অক্ষা।

ঋতু কহিলেন, যহোর ক্ষুধা হয়, সে ভোজন করিলে তৃ'প্রনাভ করে। আমার ক্ষুণাতৃত্তি হয় নাই, ভুমি ইহা কেম জিজাদা করিলে ? তবে ভূষি জিজাসিলে বলিয়া কহিতেছি, শ্রবণ কর। আমার তৃপ্তি সকলেই বিদ্যমান আছে। এই পুরুষ আকাশ বদ্ন্যাপী ও স্বাগত এই হেছু আমি প্রভ্যগাত্মস্বরূপ, ভবে ভোমার এই বাক্য কিরূপে সঙ্গত হয় ৫ সেই আমি গন্তা বা অগন্তা একদেশে আমার বাস স্থান নহে। জুমি অভা নহ এবং তোমা হইতে আমিও অভা নহি, উভয়েই এক-আত্মা জানিও। মুখ্য গৃহ যেরূপ মূতিকাদারা লিপ্ত হইলে স্থির থাকে, সেইরূপ এই পার্থিবদেহ, পার্থিব পরমাণুদার। স্থির থাকে। হে দিজ! আমি, ভোমার আচার্য্য ঋতু, ভোমাকে জ্ঞান দান করিবার নিমিত্ত আগমন করিয়া ছিলাম। একণে আমি গমন করিব, তোমার পরমার্থ উদিভ হই-য়াছে। ভূমি এই একমাত্র স্থির জানিও যে

चिथल कगर्छ (उम नार्टे, मकल हे वाञ्चरप्रवाधा পরমাত্মারস্বরূপ। সহত্র বর্ষেরপর, ঋতু পুনর্বার 'দেই নগরে গমন করিয়া় নিদাঘকে নগরের क्षकारस व्यवस्थि एमिया कहिरलन ८२ निमाध। তুমি এখন নগরের প্রাস্তভাগে অবস্থিতি করিতেছ (कन १ निमाध कहिरलन, एका विश्रा **अहे अक** মহান্জনসংবাদ আছে যে, হে নরেশ্র ! রম্য-পুরী প্রেশ কর তাহাতেই আমি এখানে অব-হিতি করিতেছি। ঋতু কহিলেন, এছলে ইহা-দের মধ্যে নরাধিপ কে ? ইতর জনই বা কে ? হে দ্বিকোত্তম ! তুমি অভিজ্ঞ, এবিষয়ে আমার निकृष्ठे श्रकाम करा। निमाय कशिरलन, रा धरे অদ্রিশঙ্কের ক্যায় সমূহত, উমাত গজে আবোহণ ক্রিয়া আছে, দেই নরেন্দ্র, তাহার পরিবারগণই ইতর। হে ব্রহ্মণ! যে নিম্নে খবস্থান করিতেছে সেই গজ: যে উপরিভাগে রহিয়াছে দেই ভূপতি খাতু কচিলেন, এখানে গজ ও রাজা কে? নিদাঘ কহিলেন, ঋতু নিদাঘে আরু হইয়াছে, বাহনকে দ্টান্তস্বরূপ অবলোকন কর। উপরে আমি, তুমি নিমভাগে কুঞ্রের ন্যায় অবস্থান করিতেছ। ঋতু निमांगतक कशिलन, जाभि हेशामत माधा ति ? ভোমার সহিত এইরূপে কথা কহিভেছি, অর্থাৎ জীবভেদে কাছাকে তুমি ভিন্ন করিতে চাও।

নিদাঘ, এইরপে উক্ত হইয়া তাহাকে প্রণান করিয়া কহিলেন, আপনি নিশ্চিতই আমার গুরু, আপনি ব্যতিকেকে এরপ অবৈত সংস্কার সংস্কৃত মানস, অন্যের নহে। ঋতু কহিলেন, আমি তোমার ব্রক্ষ্ণানের নিমিত্ত আগগন করিয়াছি; সারস্কৃত অবৈত প্রমার্থ আমি ভোমাকে দর্শন করাইলাম।

ভ্রাহ্মণ কহিলেন, ভাহার উপদেশে নিদাঘ,

অবৈত পরয়েণ হইল। তদবধি সে সর্কবিধ ভূতবর্গকে অভেদে নিরীক্ষণ করিতে লাগিল। সে
জ্ঞানযোগে মুজিলাভ করিল, ভূমিও সেইরূপে
মুজিলাভ করিবে। বে হেড় বিষ্ণু সর্কবিগত, অতএব তুমি, আমিও সমস্তই এক; যেরূপ এক নভতল, নীল পীতাদিভেদে দৃষ্ট হয়, আস্তি দৃষ্টি
মানবগণ, সেই এক বিষ্ণুকে পৃথক্ পৃথক্ দর্শন
করে।

আগ্নি কহিলেন, ভূপতিভরত জ্ঞানদারদার।
মৃক্তিলাভ করিয়া ছিলেন, অতএব হে বিজঃ
শংদারের অজ্ঞানরূপ রুক্ষের অরি দেই একাকে
চিন্তা কর।

ইত্যাথেয়ে আদিমহাপুরাণে অবৈত ব্রহ্মবিজ্ঞান নামক উননবতাধিকজিশততম অধ্যায় :

নবত্যধিকত্রিশতত্ম অধ্যায়।

গীতাদার।

অগ্নি কহিলেন, পূর্বের শ্রীকৃষ্ণ যাহা অর্জ্নকে কিছিয়া ছিলেন, সেই ভোগমোক্ষ প্রদ, সর্ব্বসীতার উত্তম হইতেও উত্তম গীতাদার আমি তোগাকে বলিব।

শ্রীভগবান্ কহিলেন, গতান্থ বা অগতান্থই হউক, দেহবান অজ আত্মা শোচনীয় নহে। আত্মা অজর, অমর ও অভেদ্য অতএব তাহার নিমিন্ত শোকাদি পরিত্যাগ করিবে। ইন্দ্রিয় ভোগ্য বিষয় চিন্তা করিলে, পুরুষগণের বিষয়াদঙ্গ দপ্পাত হয় এবং তদনন্তর দঙ্গ হইতে কাম, কাম হইতে কোধ, জোধ হইতে দমোহ, দমোহ হইতে শ্রুতিবিজ্ঞংশ, শ্রুতিবিজ্ঞংশ হইতে বুদ্ধিনাশ এবং বুদ্ধিনাশ হইতে বিনাশ উপস্থিত হয়। দংসঙ্গ

হুইতে তুঃসঙ্গ হানি এবং মোক কাম হুইতে কামা-পনোদন, কামত্যাগ হইতে সাত্মনিষ্ঠা এবং ভাহা इहेट्ड शानवनन खित প्रस्त हरा। अना नर्सप्ड-গণের যাহা নিশা, দংযমিগণ ত'হাতে ভাগরিভ থাকেন। মহোতে ভূতগণ, জাগিয়া থাকে, ভত্ত-দর্শি মুনিগণের ভাছাই নিশা; যে মানব আজা-তেই সন্তুষ্ট তাহার অন্যকার্য্য কিছুই নাই এবং তাহার অর্থ ও অনর্থ ও কিছুই নাই। বে মহা-বাহো! তত্ত্বিদ্যাণ, গুণকর্মা বিভাগে, গুণদকল গুণেই বর্ত্তমান থাকে এই ভাবিয়া বিষয়ে আসক্ত হয়েন না; জ্ঞানরূপ প্লবদারা দক্তিধ পাপ হইতে নিতার প্রাপ্ত হন। হে অর্জুন! জ্ঞানাগ্রি, দর্ক-কর্ম্ম ভস্মদাৎ করিয়া থাকে, যে মানব দঙ্গপরিহার করিয়া পারত্রকো দর্কাকর্মা বিন্যাস করে, সে সলিল দারা পদ্ম পত্তেরকায় পাপে লিও হয় না। যোগে নিযুক্তাত্মা ব্যক্তি, সর্বভূতে আপনাকে এবং আপনাতে সৰ্বভূত দৰ্শন করিয়া সৰ্বত্ত সমদৰ্শন হন। যোগভাষ্ট ব্যক্তি, শুচিও শ্রীমান্গণের रिगर्ट जनालां करिया थारकन, ८१ वटम ! ८कान ९ কল্যাণকারি ব্যাক্ত, তুর্গতি প্রাপ্ত হয় না। ক্তণম্য়ী, তুর্মোচ্যা দেবী আমার মায়া, আমাকেই যে প্রাপ্ত হয়, দে মায়াকে অতিক্রম করিয়া থাকে। হে ভরতর্বভ! আর্ত্ত, জিজ্ঞাস্থ, অর্থার্গী ও জ্ঞানী এই চারিবিধ মানব মামাকে ভজন। করিয়া থাকে, ভদ্মধ্যে জ্ঞানীই একমাত্রে অবস্থিত ব্ৰহ্ম, অফর ও প্রমা সভাব অধ্যাত্ম বলিয়া উক্ত হয়, ভূতভাবের উদ্ভক্র কর্মা সংজ্ঞক যে বিদর্গ (স্প্রি) তাহাই অধিভূত, ক্ষরভাব যে পুরুষ তাহাই অধি দৈণত। হে দেহি প্রবর! আমিই এই দেহ অধিকার করিয়া জনাগ্রহণ করি; যে অন্তকালে আমাকে স্মরণ করে সে সন্তাভ প্রাপ্ত

হয়, তাহাতে সন্দেহ নাই। অন্তকালে যে যে ভাব আরণ করিয়া দেছ বিসর্জ্বন করে সে সেই দেই ভাব প্রাপ্ত হয়। অন্তকালে যে ভ্রমুগলের মধ্যে প্রাণ বিন্যাস করিয়া ওঁ এই একাক্ষর পর ব্ৰহ্ম বলিতে বলিতে দেহ বিদৰ্জ্জন করে সে আমার পরসভাব প্রাপ্ত হয় সন্দেহ নাই, ভ্রহ্মাদি-তম্ভ পর্যান্ত সমস্তই আমার বিভৃতি অর্ণাৎ ঐখর্য্য জানিবে। জগতীতলে যে যে প্রাণী শ্রীমান ও তেজন্দী তাহারা আমার অংশ জানিবে। একমাত্র আমিই বিশ্বরূপ ইহা জানিয়া জীবগণ মুক্তিলাভে সমর্থ হয়। যে শরীরকে ক্ষেত্র বলিয়া জানে, সে ক্ষেত্রভাবলিয়া উক্ত হয়, ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রভার বে জ্ঞান তাহা আমার অভিযত জানিও। মহাভুত मकन, व्यष्टकात, जुिक, व्याप्तक, धकामन हे लिए। क्रिश, तम, शक्ष, स्थार्ग ७ मच्म ७३ পঞ্ছेटिए इ ভোগ্য বিষয়, ইচছা, ছেষ, যত্ন, তথ্ডঃখ-সঙ্ঘাত (চত্ন), পুতি, এইসকল সংক্ষিপ্ত ও স্বিকার ক্ষেত্র ভাবগত হইবে। অম∤নিত, আদভিত, অহিংস্ কম, ঋত্তা, আচাৰ্য্যদেবা, শৌচ, স্থৈৰ্য্, আজু-নি গ্রহ, ইন্দ্রিয়ার্থি বৈরাগ্য, অনহস্কার, জন্মসূত্য জরাব্যাধি ছঃগলোম দর্শন, পুত্রদার গৃহাদিতে অনাগতিক ও অনভিত্তপ, ইফ ও অনিষ্টের উপ-স্থিতিতে নিয়তই সমচিভতা, অন্ত যোগদারা আসাতে অব্যভিচারিণী ভক্তি, নির্দ্ধন দেশদেবা, জনসমাজে অরতি, অধ্যাত্ম জ্ঞাননিষ্ঠত্ব, তত্ত্তাত্ম-দর্শন, এই সকলই জ্ঞান বলিয়া উক্ত হইয়াছে. ইহা হইতে যাহা ভিন্ন তাহাই অজ্ঞান। জানিয়া অমৃত (মৃক্তি) লাভ হয়, সেই জেরা পদার্থ বলিব, খনাদি প্রমত্রকা সত্বলিয়া উক্ত হয়। দর্শহলেই তাঁহার পাণিপাদ, দর্বছলেই তাহার অকি, শিরঃ ও আনন; স্কিছল হইতেই প্রবণ-

শীল, তিনি অনন্ত ব্ৰহ্মাণ্ড আব্ৰুণ করিয়া অবস্থান করিতেছেন। সকল ইন্দ্রিগগুণের আভাস যাহাতে বিদ্যমান এবং যিনি সর্কেন্ডিয়ে বিবর্জিত ্যিনি অসঙ্গী অপচ সকলি ধারণ করিভেছেন, যিনি নিগুণ অথচ গুণভোকো, যিনি বিজেয়, যিনি বিনাশ ও প্রসব করেন, যি'ন জ্যোতিরও জ্যোতি যিনি তমের পারে অবস্থিত, যিনি জ্ঞান, জ্ঞেয় ও ভানগম্যরূপে সকলের হৃদ্যে অবস্থিত আছেন. তিনিই জেয় পদার্থ। কেছ তাঁহাকে ধানদারা আত্মায়, কেহ বা আত্মান্ধারা অবলোকন করে। কেই বা সাংখ্যযোগে কেই বা কথাবোগে ভাঁহাকে লাভ করিঃ। থাকে। কেছ বা তাঁহাকে না জানিদা অন্সের নিকট হইতে প্রবণ করিষা উপা-সন। করে। সেই শ্রেতিপরায়ণ উপাদকগণ, শীপ্রট মৃত্যুদ্ধ করিতে সমর্থ হয়। সত্ত ইতৈ জ্ঞান, র:ঃ হইছে লোভ, তমো হইতে প্রমাদ, মোহ বা ৯৬ছান জন্মিয়া থাকে।

প্রাক্ত পরি পরি নি কাছে এই ভাবিরা যে
ব্যক্তি হির থাকে, বিচলিত না হয়, মান অপমান
শক্তি ও মিত্র যাহার ভূল্য এবং যে সঙ্গবর্জন করে
সেই নিও । উদ্ধিভাগে যাহার মূল এবং অধোভাগে যাহার শাথা অবস্থিত আছে, ছন্দসকল
যাহার পর্ব, সেই অব্যয় অশ্বথকে যে জানিতে
পারে সেই বেদ্বিধ। এই লোকে দৈব ও অহ্বর
ভেদে দ্বিধা ভূত স্প্তি বিদ্যান আছে। দৈবী
সম্পত্তি হইতে নরগণের ক্ষমা ও অহিংসাদি উৎপন্ন হয়। অশোচ ও অনাচার আহ্বরী সম্পত্তি
হইতে সপ্তাত হইয়া থাকে। জোধ, লোভ ও
হইতে সপ্তাত হইয়া থাকে। জোধ, লোভ ও
হইতে নরক হয়, অতএব এই তিনই বর্জনীয়।
সন্ধ হইতে যজ্ঞা, তপঃ ও দান উৎপন্ন হয়। সন্ধ্

নিমিত হয় ৷ বাজস অল ভীক্ষ রুক্ষ এবং চুংখ শোক্ষয়; নীরদ, অমেধা, উদ্ভিষ্ট ও পুতিগ'ন্ধ অহ তামদ। দাত্তিক ব্যক্তি নিকাম হইয়া বিধি-পূৰ্বক যাগ কৰিয়া থাকেন। দান্তিকগণ কলের নিমিত রাজস ও তামস যজ্ঞ সম্পাদন করিয়া থাকে। বিধি উক্ত আদ্ধমলাদি শারীরিক এবং দেবপুজা ও অহিংদাদি বাছায় তপঃ ধলিয়া উক্ত হয়। অমুদেগকর বাকাই সভা এবং সাধায়েই মানদ জপ। চিত্ত দ্বির নিমিত্র যে মৌন তাহাই আত্মবিনি গ্ৰহ। অকাম তপঃ সাদ্ভিক, ফল প্ৰয়ো জন তপঃ রাজদ, পরপীড়ার্থ যে তপঃ তাহটে তামস, দান, সাত্ত্বিকর্ম্ম, উপকারার্থ পাত্তে দানই রাজস, অপাত্রে অবজ্ঞাপুর্বক যে দান তাহাই তামস বলিয়া জানিবে। ওঁ তৎসৎ এই ত্রিবিধ নির্দেশ ত্রক্ষের অবগতি কর, যজ্ঞ দানাদি-কর্মা, নরগণের ভোগমোকপ্রদ হয়। অনিট, ইফট ও মিশ্র, কর্মের ফল এই তিন প্রকার। অভ্যাগিগণের প্রলোকে ঐ দক্ল ফল হয়, কিন্তু সন্নর্গাসগণের কোথাও হয় না। কর্মযোগে তামদ মোহ, কেশ ও ভয় হইতে রাজ্ম; অকাম হইতে সাত্ত্বি, এই পঞ্বিধ কর্ম্মেরহেতু। অধিষ্ঠান, কর্ত্তা ও করণ ইহারা পৃথগ্বিধ ; এই তিনপ্রকার এবং চেক্টা ও দৈব চেক্টা এই পাঁচপ্রকার। এক জ্ঞান দাছিক পৃথক্জান রাজদ এবং অতভ্যর্থিজান তামস। অকান কর্মসাত্তিক কাম্যকর্ম রাজস, মোহ হেতুক যে কৰ্ম ভাহাই ভাষদ বলিয়া উক্ত হয়। সি'দ্ধকর্তা দান্তিক, অদিদ্ধিকর্তা রাজ্স, শঠ ও অলদ তামদ, কর্ত্তন্যদিতে প্রযুক্ত বুদ্ধিই দান্ত্ৰিনী, কাৰ্য্যফলাথিণী বুদ্ধি রাজদী, ভাৰপরীতা বৃদ্ধি তামসী। মনোধৃতি সাত্তিকী, প্ৰীতিকামা রাজ্ঞসী প্রশোকাদিতে তামদী জানিবে।

উদ্ত হ্থই সাত্ত্বিক, অগ্রে যে হ্রথ তাহাই রাজদ অত্তে যে তুঃথ তাহাই তামদহ্র্থ। ইহাতেই ভূঃগণের প্রবৃত্তি হয়।

যাহা কর্ত্ক এই অধিল ব্যাপ্ত হইয়াছে সেই বিফুকে কর্মা, মন ও বাক্যছারা সর্বিদা সক্ষা-বস্থায় গর্জনা করিয়া দিদ্দি প্রাপ্ত হয়। যে মানব ব্রহ্মাদিস্তম্ভ পর্যান্ত জগৎকে বিফু বলিয়া অবগত হইতে পারে সেই ভগবস্তক্ত ভাগবত মানব নিশ্চয়ই সিদ্ধিলাভ করে সন্দেহ মাই।

> হত্যাগ্ৰের আদেনহাপুরাণে গীতাসাধনামক নবতালিকাতশততম অধ্যয়।

একনবত্যধিকতিশতত্য অধ্যায়।

যম্গীত।।

ত আগ্ল কহিলেন, যাহা নাচিকেতকে যম কহিযাছি লন, পাঠক ও শ্রেনকারিগণের ভোগ এবং
সাক্তন মোক।থিগণের মুক্তিপ্রদ সেই যমগাঁতা
কীতিন করিব।

যম কহিলেন, স্বয় অস্থির মানগগণ, অভিশয় মোহবণে গুলির আসন, শরন, যান, পরিধান ও গৃহাদি কামনা করে, ইহা অতি আশ্চর্যা। ভোগে অনাসন্তিন এবং সভতই আলোদর্শন, মনুষ্গোণের পরম কল্যাণকর, ইহা কপিল মহর্ষি বিশেষস্থপে কান্তন করিয়াছেন। সর্বত্ত সমদর্শিত্ব, নির্মান্তর, নিংসঙ্গতা এই সকল মানবগণের পরম মঙ্গলকর, পঞ্চশিথী ইহা ভূয়ো ভূয়ো গান করিয়াছেন। গর্ভ হইতে জন্ম বাল্যাদি বয়সের অবস্থাজান, মানবগণের পরম শেরম শেরম গ্রেমান্তর পরম স্থাগান করিয়াছেন। আধ্যাত্মিকারি হুঃ গঙ্গানি করিয়াছেন। আধ্যাত্মকারি হুঃগস্যুহের আদ্যন্ত প্রতিক্রিয়া মনুষ্গাণের পরম শেরম শেরম শেরম স্থাগানের পরম শেরমান্তর প্রায় করমান্তর স্থাতিন স্থাগানের পরম শেরমান্তর স্থানিক বিয়ানিক বিয়ানিক স্থাগানের পরম শেরমান্তর স্থানিক বিয়ানিক বিয়ানি

ইহা গান করিয়াছিলেন। উপাধিহারা ভিন্ন ভিন্ন পদার্থে, পরমাত্ম দম্বন্ধীয় যে অভেদ প্রত্যয় তাহাই শান্তি পরমশ্রেয়: ইহা স্বয়ং ব্রহ্মা কীর্ত্তন করি 🕛 য়াছেন। ঋক্ যজুঃ দামসংজ্ঞক যে যে ককা কর্তিব্য তাহা দঙ্গের নিমিতাই করে, জৈগীয়ণ্য ইহা গান করিয়াছেন। আপনার হুথ নিমিত্তক প্রতিবিধা-নেচছার হানি, মানবগণের পরম শে্রফারী হয়, দেবলখায় ইহা গান করিয়াছেন। কামতাগ (২তুক বিজ্ঞান, স্থথ এবং প্রমপদ এক্স প্রাপ্ত হয়, কামিগণের বিজ্ঞান লাভ হয় না ইহা সনকন হার্য গান করিয়াছেন। কল্মপর মানবেই প্রবৃতিজনক 🖲 নিব্রুজনক কাথ্য উক্ত হুইয়াছে, কিন্তু নৈকণ্ম, কল্যাণেরও কল্যাণ এবং ভাছাই হরিব্রহ্মস্ক্রপ। অধিগত জ্ঞান সভুষ মানব, বিকুল জেক, পংম ও অব্যয় ত্রের সহিত ভেদ প্রাপ্ত হয় না। জান, বিজ্ঞান, আন্তিক্যা, সৌভাগ্যা, উত্তনরূপ ইত্যাদি ষ্ঠা যাত্য মানসে বাসনা করা বায়, তৎসমূদায় তপ্যাহার। লাভ করিতে পার: মায়। বিফুর সমান ধ্যেয়পদার্থ নাই, অনশ্নের পর তপ নাই, আবোগ্যের স্থান পুণ্য নাই, গ্রন্থার স্মান স্রিৎ নাই। জগদ্ওক্স বিষ্ণুকে যে পরিত্যাগ করিয়াছে, এমন কোনও ব্যক্তি আমার বান্ধৰ নাই। অধো-ভাগে, উদ্বভাগে, অগ্ৰভাগে; দেই ইন্দ্রি, মন ও মুখে হরিকে স্মরণ করিয়া প্রাণ পরিত্যাগ করিলে দে ছরিস্কলপ হয়। যাঁহাতে সকলি বিদ্যমান আছে ও বাঁহাতে তাঁহারই সকলি সংস্থিত আছে, যিনি ু অগ্রাহ্, অনির্দেশ্য স্তপ্রতিষ্ঠ ও পরম তিনিই-ত্রন্ধ। বিফু পরাংপরস্বরূপে সকলের ছদয়ে অব-বিত আছেন। ঈশরকে কেং যজেশর, কেং যজ-পুরুন, কেহ যজ্ঞস্করপ, কেহ বিষ্ণু, কেছ হর, কেছ ত্ৰকা কহিয়া থাকেন। কেছবা বিফুকে ইন্দ্ৰাদি

কেছ সূৰ্য্য কেছ দোম, কেছ কাল, কেছ অক্ষাদি-ন্তন্ত পধ্যন্ত জগৎস্বরূপ কহিয়া থাকেন। ইছি। ছইতে আর পুনরাবর্ত্তন করিতে হয় না দেই বিষ্ণুই পর্মত্রহ্ম। ত্বর্ণাদি মহাদান পুণ্যকর্ম, ভীর্থাবগালন, ধ্যান, ব্রত, পূজ্ব, ধ্যাশ্বণ, ইত্যাদি কর্মদারা ভাঁহাকে লাভ করিতে পারা যায়, আত্মাকে রথী, শরীরকে রথ, বৃদ্ধিকে সার্থি এবং মনকে প্রাত্তর (লাগাম) ইন্দ্রিয়গণকে অশ্ববর্গ এবং বিষয়গণকে শরলক্ষ্য পলিয়া অবগতি কর। মনীধি-গণ, মনোযুক্ত আলা ও ইন্দ্রিয়কে লোক্তা কহিয়া থাকেন। ্য অবিজ্ঞানবান্ নিয়ত অযুক্ত (যোগ-বিরহিন্ত) মনে মণস্থান করে, সেম্পদ প্রাপ্ত হয় না, দংসার প্রাপ্ত হয়। যে বিজ্ঞানবান ব্যক্তি নিঘত যোগদুক্তমনে অবস্থান করে, সে তৎপদ ি প্রাপ্ত হয়, যাহা হটতে পুনববার আবে জলাগ্রহণ ক্রিজে হণ নং। খহেরে সার্থে বিজ্ঞান এবং মাহার মন প্রাছ (লগোম) দে পরম পছা আপ্র হয়, ভাহাই বিফুর পদ। ইন্দ্রিগণ হইতে অর্থ সকল ভোষ্ঠ, অথ হইতে মন ভোষ্ঠ, মন অংশেকা বুদ্ধি, বুদ্ধ হইতে জীবালা, আলা হইতে মহানু মাংহ হইতে অব্যক্ত, খব্যক্ত হইতে পুরাষ (শ্রষ্ঠ। পুরুষের পর আর কিছুই নাই; ডিনিই শেষ্নীমা তিনিই প্রমাগতি ৷ তিনি এইদকল প্রকার ভূতে গুঢ়াত্মারূপে অবস্থিত থাকিয়া প্রকাশিত হন না। দুক্ষদর্শিণ, দুক্ষাতা বুদ্ধিরা দেখিতে পান, প্রাজ্ঞর্যাক্ত বাক্য ও মন সংযমিত করিবেন এবং জীবাত্মাতে ফ্রান সংযমিত এবং জ্ঞান, মহৎ আত্মায়ও তৎপরে শান্ত আত্মায় নিযমিত করি বেন। ভাহা হইলে, মমাদিছার। একাও মাজাব-যোগ জানিয়া, সংত্রহ্মস্বরূপ হইবেন। অহিংসা শত্য, অন্তেয় ব্রহ্মচর্যা, অপরিপ্রাহ, যম, নিয়ম,

শোচ, সন্তোষ, তপ, স্বাধ্যায়, ঈশ্বরপূজা, পদাদিআগন, প্রাণায়াম অর্থাৎ বায়ুবিজয়, প্রত্যাহার
অর্থাৎ স্থনিগ্রহ। শুভকর এক বিষয়ে চিত্তধারণ,
নিশ্চলত্ত্তু ধীমান্গণ তাহাকে ধারণা কহেন।
সেই সেই বিষয়ে পুনঃ পূনঃ যে ধারণা তাহাকে
ধ্যান এবং আমি ব্রহ্ম এই জ্ঞানে প্রমান্থায় যে
সংস্থিতি তাহাকে সমাধি কহে। এই সকলদ্বারা
মুক্তিলাভ হয়, আকাশ যেমন নভোমগুলের সহিত
অভিন্ন সেইরূপে ব্রহ্ম ও আত্মায় সংঘটনকর।
মুক্ত জীব, ব্রহ্মের সহিত ব্রহ্ম হইয়া ব্রহ্মার প্রাপ্র
হয়। জীব জ্ঞানদ্বারা আত্মাকে ব্রহ্ম বলিয়া মনন
করে, সন্দেহ নাই। জীব, অজ্ঞান ও তৎকার্য্য
হইত্তে বিমৃক্তি হইয়া অজর ও অমর হইয়া
থাকে।

অগ্নি কহিলেন, পাঠকারী দিগের এই ভোগ-মোক্ষপ্রদ এই যদগীতা পুনের বশিষ্ঠদের কহিয়া-ছেন। বেদান্ডোক্ত প্রক্ষা বুদ্ধিময় মহর্ষিগণ কর্তৃক আত্যান্তিক লয় উক্ত হইয়াছে।

> ইতাংগ্রেম অংক্ষেধ্য প্রতেশ নমগীজা নামক অকনবভাষিকজিশতাখন অধ্যায়।

দ্বিৰত্যধিক্ৰিশতত্ৰ অধ্যায়।

অংগ্রেমপুরাণের মাহাক্স।

অগ্নি কহিলেন, ত্রহারপ আথের পুরাণ, আনি তোমাকে কহিলান। এই পুরাণ সপ্রপঞ্চ ও নিজ্পুপঞ্চ, বিদ্যাদ্য ময় ও মহৎ, ইহাতে থাক্ যজুঃ দাম অথববিখ্যা বিদ্যা, জগদ্যোনি বিষ্ণু, ছন্দঃ, শিক্ষা, ব্যাকরণ, নির্ঘণ্ট (নামসংগ্রহ) জ্যোতি, নিরুক্ত ধর্মণাস্ত্রাদি, মীমাংসা, ন্যায়, অর্থশাস্ত্রাধ্যা বিদ্যা, বেদান্ত, মহান্ হরি এই স্কল অপরাবিদ্যা

অক্ষর ও পরবিষয়ক যাহা,ভাহাই পরবিদ্যা বর্ণিভ আছে। যাহার অথিলভাব বিষ্ণু, পাপ তাহাকে পীড়া দিতে পারে না। মহাযক্ত দকল না করিয়া এবং পিতৃষ্ধা করিয়াও ভক্তিপূর্বক কুঞার্চনা করিলে দে পাপভাজন হয় না। সকলের অতান্ত কারণ বিষ্ণুকে ধ্যান করিলে, সে কথন পাপ-সংস্পার্শে বিনষ্ট হয় না। বিষয়ছার। আফুষ্ট মানস এবং অন্য নানাপ্রকার দোববুক্ত হইয়াও যদি গোবিন্দকে ধ্যান করে, তবে দে সর্বপাপ হইতে বিমুক্ত হয়। অন্য বহু বাক্যবায়ে প্রয়োজন নাই, যেখানে গোবিন্দ ভাহাই ধ্যান, বেখানে কেশ্ব তাহাই কথা, যেথানে কুক্ত সম্পর্ক তাহাই কর্ম ; আমি ধাহা ভোমাকে ক'হলাম, যে পিতা পুত্ৰকে বাবে ভারু শিষ্তকে ভাছা নাবলে সে পিতা বা গুরু পদবাচ্য হইতে পারে না। সংগারে ভ্রমণ-শীল মান্বকর্ত্তিক পুত্রদারধন, বস্তু স্থক্ত ও অন্যাত্তি বস্তুই লভা, হে দ্বিজ ৷ উপদেশরূপ অমূল্যবস্তু কি লাভযোগ্য নছে? পুজ, দার, মিত্র, কেত্র, ও বান্ধৰে প্ৰযোজন কি ? মৃক্তির উপযুক্ত এইরূপ উপদেশ**ই প্রম** বন্ধু। দৈব **ও আন্তর এই চু**ই-প্রকার, ভূতগণের পন্থা, বিষ্ণুভক্তি পরই দৈব ও তদ্বিপরীতই আস্তর ; যাহা আমি তোমার নিকট কীর্ত্তন করিলাম, দেই অগ্নিপুরাণ পণিত, আরোগ্য স্ত্রপ্রন্য ও তঃস্থ্যনাশন এবং নরগণের স্থেকর ও প্রীতিকর। নাহাদের গৃহে লিখিত আগ্রেয়-পুরাণ পুস্তক নিয়ত বিদ্যমান থাকে, তাহাদের गृह्ह छेशक्रव मक्त विनक्त हम। य भानवर्गन, দিন দিন আংগ্রেপুরাণ প্রবণ করে, তাহাদের তীর্থ, গোদান, যজ্ঞ ও উপোষে প্রয়োজন কি ? স্থাগ্নেয় পুরাণের একমাত্র শ্লোক শ্রেবণ করিলে, নরগণ তিলপ্রস্থ ও শ্বর্ণনাষক দা**নের ফল প্রাপ্ত** হয়।

উহার এক অধ্যায় পাঠ করিলে, গো প্রদান অপেকা অধিকতর ফল প্রাপ্ত হeয়া যায় ৷ অগ্নি-পুরাণ শ্রবণের ইচ্ছামাত্রেই অহোরাত্ত কুতপার্প বিনফ হইয়া যায়। জ্যেষ্ঠ পুকরে শত কপিলা গোলান করিয়া যে ফল, অগ্রিপুরাণ পাঠ করিয়া সেই ফলই প্রাপ্ত ছওয়া যায়। প্রবৃত্ত ও নির্ভ বিদ্যাদ্বাত্মক (১) ধর্ম আগ্রেয়পুরাণ শান্ত্রের সমান হয় না, হে বশিষ্ঠ ! ভক্তব্যক্তি নিভ্যই আগ্রেয় পুরাণ পাঠ বা শ্রেবণ করিয়া সর্ববিধ পাপ হইতে পরিমৃক্ত হয়, সন্দেহ নাই। যে গুছে ভাগ্নেয়-পুরাণের পুস্তক বিদ্যামান খাকে তথায় উপদর্গ, অন্থ, চৌরভয় ও অরিভয় হয়না। যেগুহে শ্মিপুরাণ পাকে, তথায় গর্ভাবনাশের ভাচিব। বালঅ**হের (বালকের ভূতা**দি এচের) ভয় বা পিশাচাদির ভয় থাকে না। অগ্রিপুরাণ ^{হার}ণ করিয়া বিপ্রগণ বেদবিৎ ক্ষত্রিয় পুথিনীপতি হয় এবং বৈশ্য সমৃদ্ধি গ্রাদ্র আরোগ্য প্রাপ্ত হয়। বিষ্ণু প্ৰাশক্ত মান্দ শম্পৃতি মান্ব, প্ৰতিদ্ন সং-ত্রক্ষরূপ ভারেয়পুরাণ পাঠ বা প্রাবণ করে, তাহার দিব্য আন্তরীক ও ভৌম এবং দুংস্বপ্নাদি অভিচারিক উপদ্রব সকল বিন্দী হয়; মাগ্রেয পুরাণ পাঠ বা শুবণ ও পূজা করিলে কেশ্ব, ভাষার অন্য যে কিছু ছুরিত, তৎসমুদায়ই বিনাণ করেন। যে নর, হেমন্তকালে ঐিকাগ্নেগ্রপুরাণ, গদ্ধ পুষ্পাদিঘারা পুজাপুর্ব্বক পাঠ করে, তাহার অগ্নিফৌম **বাবের ফললাভ হয়। শিশির ঋতুতে** পুগুরীক যজের, বসন্তে অশ্বমেধ যজের গ্রীমে বাজপেয়ের, ব<mark>র্ষায় রাজসূয়যজ্ঞের, শরৎকালে</mark> তাহা পাঠ করিয়া গো সহস্র দানের ফললাভ করে; যে ব্যক্তি ভক্তিপূর্বক কেশবের অগ্রে

^(:) পরা ও অপরা এই ছুইপ্রকার বিদ্যা।

আয়েয়পুরাণ পাঠ করে, সে জ্ঞান যজ্ঞলারা তাঁহার পূজা করিয়া থাকে। হে বশিষ্ঠ ! যাহার আয়েয়-পুরাণ পুস্তক, তাহারই ক্য জানিবে ; যাহার গৃহে লিখিত পুস্তক আছে, তাহার করেট ভোগ ও মোক্ষ অবস্থিত রহিয়াছে। পুরাকালে হরি, ভ্রক্ষবিদ্যাদ্যের আম্পেদ আয়েয়পুরাণ, কাল্য্রি-রূপে আসার নিক্ট গান করিয়াছিলেন।

বশিষ্ঠ কহিলেন, হে ব্যাস! বিদ্যান্ত্যাত্মক ষ্মান ক্ষিত আগ্নেয়পুরাণ ব্রহ্মা ও বিফুর্ম্বরূপ: অগ্নিদেব সর্বার্থ প্রদর্শক ত্রহ্ম নামক এই অগ্নি-পুরাণ, দেবতা ও মুনিগণের সলিধানে আমাকে कश्चितिहरू। ८६ व्याप्तः (य नत् कार्यश्चतान् প্ঠ বা শবণ করে, লিখে বা লেখায় শবণ বা পাঠ कताय, शृक्षा वा शांत्रग करत (म मर्खिणांश হুইচে নিমুঞ্স প্ৰিম প্ৰাপ্ত হুইয়া স্বৰ্গলোকে গমন করিয়া খাকে। যে এই পুরাণ লেখাইয়া বিপ্রবর্গকে দান করে, দে শতকুল উদ্ধার করিয়া যে ইহার একমাত্র শ্লোক ভ্ৰন্যাদ প্ৰাপ্ত হয় পাঠ করে দে পালপক্ষ হইতে মুক্ত হয়; হে ব্যাস! সেই হেতু সৰ্শাদৰ্শন শাস্ত্ৰসম্পন্ন এই পুৱাৰ শ্বণ শ্বণাভিলাষি শুক প্রভৃতি মুনিগণের সহিভ শিষ্যগণের শাবণ করা একান্ত কর্ত্তব্য। ভুক্তিমুক্তি-প্রদ মাগ্রেয়পুরাণ পঠিত বা ধ্যাত হইলে কল্যাণ প্রদান করে, যিনি এই পুরাণ গান করিয়াছেন, সেই অগ্নিদেবকে প্রণাম করি।

ব্যাস বলিলেন, গশিষ্ঠদেব ইহা পূর্বের গান কয়িয়াছিলেন, হে সূত! এক্ষণে ডুমি আমার নিকট পরা ও অপরা বিদ্যানামক পরন পদরূপ অগ্রিপুরাণ আমার নিকট শ্রেবণ করিলে, ভাগাবান্ ব্যক্তিগণ এই পুরাণ ধ্যান করিয়া ছুর্লভ আগ্রেররপ প্রাপ্ত হয়। আগ্রেমপুরাণ ব্রহ্ম ধ্যান করিলে, ইরিকে লাভ করিতে পারে। এই পুরাণসেবায় বিদ্যাধিগণ বিদ্যা, রাজ্যার্থিগণ রাজ্য, অপুক্রকগণ পুত্র, অমাপ্রাগণ আশ্রেষ, সৌভাগ্যার্থী সৌভাগ্য, মোক্ষার্থী মোক্ষ প্রাপ্ত হয়। বে মর, এই পুরাণ লিখে বা লিখায়, সে মিক্সাপ হইয়া লক্ষমীলাভ করিতে পারে। হে সূত। শুক ও পৈলমুখে আায়েয়পুরাণ শ্রেশ করিয়া তাঁহারস্করণ চিন্তা কর তাহা হইলে ভোগমোক্ষ লাভ করিতে পারিবে। তুমিও ভক্ত ও শিষ্যদিগকে এই পুরাণ শ্রেশ করাইবে।

मृज करितन, गामित धनाएम (भीनकामि মুনিগণ, আগ্নেয় পুরাণ আদরপূর্ববিক শ্রেবণ করি-লেন। ভাগ্নেয়পুরাণ ব্রহ্মস্বরূপ আপুনারা নৈমি-ষারণ্যে হরির আরাধনা করিতে করিতে শ্রদ্ধাযুক্ত ধাকিয়া অগ্নিকর্তৃক উক্ত বেদতুল্য ত্রন্ম বিদ্যাদ্বয় যুত ভুক্তিদ মুক্তিদ ও মহৎ আগ্নেয়পুরাণ ভাবণ করিলেন; ইহা হইতে উৎকৃষ্টতর সারবস্তু আর किছुই नारे हेरा रहेरा अञ्जूषात (करहे नाहे, ইহা অপেকা উৎকৃষ্টতর গাঢ় আর কিছুই নাই, ইহা হইতে পরতর জান আর কিছুই নাই, ইহা হহতে পরতরা স্মৃতি আর কিছুই নাই, ইহা অপেকা পরতর আগম আর কিছুই নাই, ইহা অপেক্ষা পরভরা বিদ্যা আর কিছুই নাই, ইহা হইতে উৎকৃষ্ট তর সিদ্ধান্ত আর কিছুই নাই, ইং। অপেকা পরতর মঙ্গল আরে কিছুই নাই, ইহা হইতে পরতর বেদান্ত মার কিছুই নাই। এই পুরাণ প্রমবস্তু, অবনিভলে ইহা অপেক্ষা উৎকৃষ্ট বড় হুল্ট। এই আংগ্রে পুরাণে সকল প্রদর্শিত ও মংস্যাদি অবতার পরস্পরা অবগীত এবং রামা য়ণ হরিবংশ, ভারত ও নবস্ঠি প্রদর্শিত এবং বৈষ্ণব আগম সংগীত হইয়াছে। পূজা দীকা ও

প্রতিষ্ঠার সহিত পবিতারোহণাল, প্রতিমালক-ণাদি, প্রাসাদ লক্ষণাদি, ভোগমোকপ্রদ মন্ত্রসকল শৈবাগম ও তাহার অর্থ, শাক্ত, সৌর, মণ্ডলসকল, বাস্ত্র, বিবিধ্যন্ত্র, ্প্রতিস্গ্, ব্রহ্মাণ্ড পরিমণ্ডল, ভুবনকোষ, দ্বীপ, বর্ষাদি, নদী, গ্র্যা গঙ্গা প্রা-গালি ভীর্থ মাহাল্যা, জ্যোতিপ্তক্র, জ্যোতিষাদি, যুদ্ধ জয়ার্ণৰ মহান্তরালি, বর্ণালির ধর্ম ফাশোচ দ্রব্য শুদ্ধি প্রায়শ্চিত রাজধর্ম ও দানধর্ম সকল বিবিধ-ব্রত ব্যবহার, শান্তি, ঋগবেদাদির বিধান সূর্য্যবংশ দোমবংশ, ধন্তুর্বেদ, বৈদক, গান্ধর্মবেদ অর্থশান্ত্র মীমাংসা নাায় পুৰাণ ও সাংখামাছাল্য ছন্দ:, ব্যাকরণ অহন্ধার নির্ঘ-ট (শব্দসংগ্রহ) শিক্ষা কল্ল নৈমিত্তিক প্ৰাকৃতিক ও আত্যস্তিক প্ৰলয় বেদাস্ত বেশ্ববিজ্ঞান, অফীঙ্গবোগ, স্থোত, পুরাণ মাহাল্য अवीत्भविता, धारे मकल डेक्स्ट अनिर्मित इसे য়াছে। ঋগবেদাদি অপরা ও অকর প্রত্রক বিষ যুক পরা বিদ্যা এবং ত্রেক্সের সপ্রপঞ্চ ও নিস্প্রপঞ্চ রূপও উক্ত হইয়াছে। পঞ্চশসমূস শ্লোকাশ্বক এই পুরাণ শতকোটি শ্লোকে বিস্তারিত হইয়া দেবলোকে দেবগণকর্তৃক গীত হয়। লোকগণের হিতকামনায় অগিদেব ইহা সংক্ষিপ্তরূপে মর্ত্ত-লোকে গান করিয়াছেন।

হে শৌনক প্রমুখ মুনিগণ! আপনারা 'দকলই অকা'এই বাক্য বিশেষ রূপে জানিবেন। যে মানব এই পুরণে ভাবণ করে বা করায়, পাঠ করে वा कतात, लिए वा (लशात, शृक्षा वा कीईन করে, সে স্বর্গ লাভ করে, সন্দেহ নাই। নৃপতি শংশতচিত্তে পুরাণপাঠকের পূজা করিয়া তাঁহাকে গো, ভূমি, হিরণা, বস্ত্র ও অলকারাদি প্রদান कतिरवन: छाहा इहेरलई भूतांग आनरगत कन লাভ করিতে পারিবেন। পুরাণান্তে অবশাই ব্ৰাহ্মণ ভোজন করাইবে, ভাহা হইলে নিৰ্মল 💩 সর্বার্থ প্রাপ্ত হুইয়া নিজকুলগণের সহিত স্বর্গ প্রাপ্ত হয়। পুতকের নিমিত শরষদ্র, সূত্র, পত্র সঞ্চয় পট্টবন্ধ ও বস্তাদি প্রদান করিলে স্বর্গলাভ হয়। যে পুত্তক দান করে, সে ত্রহ্মালেকে গমন করে: যাহার গৃহে পান্তক থাকে; ভাগার কোন্ত ভয় থাকে না এবং গে ভোগ ও মোক প্রাপ্ত হয়। ভোষরা ঈশ্বরের স্বরূপ এট আগ্রেয় পুরাণ শারণ কর। এই বলিয়া উহি,দি,গার কর্ত্ত প্রভিভ সূত যথাহোনে গমন করিলেন এবং শৌনকানি ঋষিগণ হরির উদ্দেশে ভথা হইতে প্রস্থান করিলেন।

ইঙ্যাহেট্রে আলিম্ভাপুনাত্র আল্লেলপুরার্ন্ডানুল্ক দ্বিত্ত।বিক্ষিক্তিন অধ্যায়:

অগ্নিপুরাণ সম্পূর্ণ।

অগ্নিপুরাণের পরিশিষ্ট।

প্রথন অধাার।

সূত কলিলেন, হে ভরম্বাজ ৷ নরসিংহ নারায়ণ ভ্ৰন্ধা হট্যা যেরূপে জগৎ সৃষ্টি বিষয়ে প্রবৃত্ত হট্যাছিলেন, ভাহা আনি ভোমার নিক্ট কীর্ত্তন ক্রিচেড্ছি প্রবণ কর। নারায়ণাখা ভগণান লোক পিতামন প্রসা।, উৎপন্ন হট্য়া সৃষ্টির নিমিত চেষ্টা কবিতে লাগিলেন। ভাঁহার নিজের পরিমাণে ভাঁহার খায়ে শত বংসর। কালরূপ বিফুই ভাঁহার জন্য চরচির ভাতগণের এবং অশেষ পর্নদিত সাগ্র নলগণের ভাগু বাল্যা পরিগণিত হয়। অফীদশ নিমেষে এক কাৰ্ছা, ত্ৰিংশংকলায় এক মৃত্তি এবং তাবৎ সংখ্যক মৃত্তে মতুব্যের এক অহোরাত্র। তিংশং অংহারাত্রে বা পক্ষরে একমাস। ছয়মানে এক শ্যন দ্বিধ উত্তরায়ন 'ও দকিশায়**ন। দকিশ** অধন দেবতা গণেররাত্রি এবং উত্তরায়ন দিন। তুই মন্ত্রেন মনেবগণের একবর্ষ। মানুষ্ণের একমানে পিভূগণের এক দিন হয়। মনুস্যাণের এক ং ৎসারে বস্ত আদি-গণের এক খাহোরাত। দিল্যদশ সহত্র বর্ষে সভ্য ত্রেজাদি এক, এক যুগের চারিটি হয়; ভাহার বিভাগ প্রবণ কর। দিব্য চারি সহস্র বর্ষে এক দত্যযুগ, তিন দহস্ৰ বৰ্ষে ত্ৰেভা, দিদহস্ৰ বৰ্ষে দাপর এক সহস্র বর্ষে এক কলিমুগ হয়। পুরা-

বিদর্গণ কহেন যে সহস্রযুগে এক দিব্যাক হয়। ভাহার শত প্রমাণ অব্দে পূর্ববাসদ্ধা এবং ষুগের পর তত্লাসকাংশ হয়। (হ বিজা: সক্ষাও দন্ধ্যাংশের মধ্যে যে কাল তাহাই সভ্য ত্রেভাদি যুগ ৰলিয়া ভানিবে। সভ্য, ত্রেভা ছাপর ও কলি এই চারিবুগ। সহজ্র সংখ্যায় জ্রন্ধার এক দিন। হে ব্রহ্মন্ ব্রহ্মার এক দিবদে চতুর্দশ মকু চয়। তাহাদের শুভকর প্রতিমান কাল কর্তৃক কৃত হয়। সপুর্ষিণ-, স্তরগণ, শুক্র, মনু ও তংপুত্র নৃপ্রণ এককালে হৃত্ত ও পূর্ববং কুত হয়। চারিনুগের বাষ্ট্র সংখ্যার মন্ত্র মতুর এবং শক্রাদির কাল। হে দ্বিজ। অফ্টশত সহস্ৰ দিবসংখ্যায় সুখ্যাত এবং অন্যাপ্রকার একপঞ্চাশ্র সংখ্যাক ও স্পুদংখ্যক ও বিংশতি সহস্ৰকাল সাধিক বলিয়া কৰিত হয়। এইরংপে ভাসাদিবস সমু⊄ীঠিতি হইয়াছে। এইকালে তিনি মনোঘালা দেবতা, িতু গলার, গ্নব, যক্ত, রাক্স, গুড়ক, প্রি, বিদ্যাধর, মনুষ্য, পশু, পশী, স্বাবর, পিণীলিকা ও ভুক্তমগণে এবং চাতুবর্গ স্জন করিয়া, নিজ-কর্মে নিয়োজনপূর্বক দিনান্তে পুনকার তৈলো ক্যের উপদংহার করিয়া অনস্তশয়নে ভাবং রাত্রি-কাল শর্ম করিয়া থাকেন! তৎপরে পল্নামে

বিখ্যাত মহাকল্প হয়; সেই মহাকল্পে মহোদ ধর মন্তনার্থ মহারবিতার হয়েন, তৎপরে তৃতীয় বরাহ-কল্প পরিকল্পিত হয়, তাহাতে স্বথং বিষ্ণু, প্রীতি-পূর্বিক বাবাহবপুঃ ধাবণ করেন। সেই দেশ দি-দেব ঈথর হরি, জগং আকাশ, ধরা, তোয় ও সকলাপ্রকা স্কলন করিয়া নৈমিতিকাখ্য প্রলয়ে সমস্ত হনন করিয়া শয়ন করেন।

केक्यारग्रेटल मानिमशास्त्रारण পৰিশি, हेरुवि अक्तन नाम क उस्थम काशासा

দ্বিতীর অধ্যায়।

সূত কহিলেন, প্রলয় সাগরে প্রস্থু নারাগ-ণের নাভিদেশে পদ্ম উৎপন্ন হটল, মেই পদ্মে বেদ্বেদ্বিপার্গ ব্রহ্মা উৎপন্ন ছইলেন। ভদনস্তর বাংলা, বিফু কর্কে উজা হেইলেন, চে মহামতে! ভূমি প্ৰজা স্ফান কর, এই বলিয়া প্ৰভূমাধায়ণ অন্তৰ্হিত হইলেন। বিষ্ণু, তিরোভূত হইলে একা। ভাঁছাকে চিন্তা করিতে লাগিলেন। যাহা কিছু জগতের হেতু আছে, তিনি তাহা জানিতেনা পারিয়া অত্যন্ত কোধানিত হটলেন। তাঁহার অঙ্গ ক্ইতে সেই কোধ হটতে কদে উৎ-পর হইল। সে ভনিষাই অংমার নাম প্রদান ককন বলিয়া রোদন করিতে লাগিল; ব্রহ্মা কহি লেন তোমার নাম "রুদ্র" হইল। ত্রসা কদ্রেও কহিলেন যে প্রজা স্ক্রন কর, রুদ্র ওপদ্যা অব-লম্বন করিয়া শাস্ত দলিলে নারম্বার সৃষ্টি করিছে করিতে নিমগ্রইল। ভূতেখর ভ্রহ্মা, উঁংহাকে স্লিল্ম্য হইতে দেখিয়া, আপুনার দক্ষিণাজ হটতে পুনর্বার অন্য প্রজাপতি দক্ষের এবং বামান হইতে তৎগ্রার স্থিক রেলেন, দক সেই পত্নীর গর্ভে স্বায়স্কুন্মসুর উৎপত্তি কবিলেন।
ব্রহ্মা, সেই মনু হইতে স্প্তিব সন্তাবনা করিলেন;
হে মুনিসভ্ম! তাহাই আমি,তোমার নিকট স্প্তির
বিবরণ বর্ণন কবিলান, তুনি স্প্তিক্ত্রী পরমেশ্বের
আর কি অধিক শুনিতে বাসনা কর।

ভবদাজ কহিলেন, হে মহামতে লোমহর্বণ ! শাপনি ইহা সংক্ষেপে কহিলেন, পুনববার দ্বিস্তার আদি সৃষ্টি বর্ণন করুন।

সূত কহিলেন, প্রলয়কালে এক্মাণ্ডের অব সানে, প্রভু নিশামিতা পরিহারপুটাক উথিত হুইলে, সম্বাধানিক ত্রন্ধা শুনালোক অবলো কন করেলেন। অনস্তর ভগবান একা। প্রস্কর (लंद्र पृर्वरक, मन्द्रभञ्चन, अभाभ मान्धर्यद ষ্মতনা ও স্তুতি করিয়া এই রোক প্রাচ্চ কবিলেন। নরপ্রসূত অপ (জল) নারশকে উত্ত হয়, পূর্বের তাহাই তাহার অয়ন অর্থাৎ আঞ্চলি বলিয়া তিনি নারায়ণ নামে বিখ্যাত হুইয়াছেন। কল্পে আদিকালে অবুদ্ধিপুৰাক স্প্ৰীৰ বিষ চিন্তা করিতে করিতে একার মহামোণ্ডের আণিভাব হইল, ভমঃ, মোহ ও মহামোহ ও ভামিলাদি তাহার নাম জানিবেন। সেই মধায়া হটতে পঞ্পকা ম্বিদ্যা ও প্রভেচ্ছ ত হইল ; ধ্যানানস্তর প্রতিবেধ জন্মিলে, সৃষ্টি পঞ্চাগে বিভক্ত হুইল। স্বৰ্গবিদ্ বিচক্ষণগণ, ভাহাকে মুখ্য সৃষ্টি বাল্যা ব্রহ্মা, পুনর্কার ধ্যান করিলে, অন্য এক দৰ্গ উৎপন্ন হটল, তাছার নাম তিৰ্যাক , স্রোভঃ। তাহারা উৎপথগ্রাহী এবং পশুপক্ষ্যাদি। নামে বিখ্যাত। একা ভাগদিগুকে অসাধক দেখিয়া পুনর্বার ভূতীয় স্রোতের সৃষ্টি করিলেন, ভাহাকে উর্দ্ধশাভ বহে। তদনন্তর উর্দ্ধচারী দেবগণের উৎপত্তি হইল। মুখ্যসর্গ সমৃদ্রব সক

দকেই অনাধক দেখিয়া পুনর্বরে চিন্তা করিতে করিতে অব্যাক স্ত্রোতের স্বস্তি করিলেন, অব্যাক্ জোতঃ সমুৎপ্রগণ মনুষ্য, তাহারা সাখ⊅ হইল। ভাষারা তমোযুক্ত ও রজোধিক এবং প্রকাশিত হৃষ্যা গ্ৰমাগ্ৰন করে। সেই হেতৃ তুঃখবগন করিমা ভুয়োভুয়ো জন্মগ্রহণ করিয়া থাকে, হে মুনিসভ্ম! এই আমি ভোমার নিকট স্প্তি বৃত্তাস্ত কীৰ্ত্তন কৰিলাম। মহৎদৰ্গ প্ৰথম, তন্মাত্ৰদৰ্গ দিতায়, বৈশারিকসর্গ তৃতীয় তাহাই ঐব্রিয়কসর্গ, স্থাবর জন্সমাত্মক মুখ্যদর্গ চতুর্থ তির্যাক্সোত বা তিৰ্য্যামেনি পঞ্ম, উৰ্দ্ধপ্ৰতঃ ষষ্ঠ, তাহাই দেব-স্গ। তদন্তর অর্ধাক্সোতঃ দ্রুণ, ভাহাই হত্যদেগ। সাত্তিক ও তামদিক অণুগ্ৰহ সৰ্গ অফ্রম, প্রভাপতির ক্লেদ্র্ম নব্ম : বৈকৃত দর্গ পঞ্জারত সগ চারি, প্রাকৃত ও বৈকৃত সর্গই ভগতের মূল হেছু। স্ট্টিকর্ত্তা অক্ষার, বেরূপ সৃষ্টি ইইয়াছিল ভাষা আমি কীর্তন করিলাম। তদনস্থা সাক্ষাত একরাপ, প্রাপ্রেশ, জগদেক-নাথ নারায়ণ, তিজশক্তি প্রভাবে বৈকারিকে প্রবেশ করিষ। অথিলের সৃষ্টি করিলেন।

> ই এয়াগ্লেষ আদিমহাপুৰাণে প্ৰিশিষ্টে স্টিপ্ৰকরণ নামক ছিতীয় অধ্যায়।

ভূতীয় অধ্যার।

স্প্রিপ্রকরণ।

ভরদ্বাদ্ধ কহিলেন, অব্যক্তদ্বমা, প্রক্ষার নববিধ স্থান্তি উৎপদ্ম হটল, হে সূত। কিরূপে সেই স্থান্তি বৃদ্ধি পাইয়াছিল, তাহা এক্ষণে আমার নিকট কীর্ত্তন করুন।

সৃত কহিলেন, রুদ্রদর্গের পরভ্রন্ধা, সনকাদি

ও মরীচিআদি ভপোধন গণের সৃষ্টি করিলেন।
তাহাদের নাম যথা মরীচি, অতি, অঞ্জিরাঃ, পুলহ,
ক্রতু, মহাতেজাঃ, পুলস্তা, প্রচেডাঃ, ভৃগু, নারদ
ও মহাত্যতি বশিষ্ঠ দশম, সনকাদি ঋষিগণ বিব্
ভাথধেশ্মে নিযুক্ত হইলেন, মরীচি আদি মুনিগণ
প্রেরতাথ্য ধর্মে এবং নারদ মোক্ষধর্মে নিযুক্ত হইলেন। প্রফাপতির অঙ্গমন্তব দক্ষনামে যে মুনি,
তাঁহারই দৌহিত বংশ হইতে এই চরাচর জগতের উৎপত্তি হইয়াছে। দেব, দানব, গন্ধর্বি,
উরগ, পক্ষীদকলেই দক্ষকন্যায় উৎপত্ম হইয়াছে।
চতুর্বিধ ভৃত, স্থাবর ও চর এই সকল মন্তু সর্গোছত্ত হইয়া রুদ্ধি পাইতেছে। মরীচিআদি মহর্ষি
গণ, মনুসর্গের কর্তা। বশিষ্ঠাদি মহ্র্ষিগণ, প্রক্ষার
মানস পুত্র।

সেই অনস্ত পরাত্মা পরমপুরুষ, মুনিম্বরূপ ধারণ করিয়া কালসহকারে আকাশাদি ভূত সমৃ-হের সৃষ্টি করিয়া তদ্মারা চরাচর জগতের সৃষ্টি করিয়াছেন।

> হত্যাগ্রেয়ে পুরাণপবিশিষ্টে স্টেপ্তকণ নামক ভূতীয় অধ্যায়।

চতুর্থ অধ্যায়।

স্থারীপ্রকরণ।

• ভরদাজ কহিলেন, হে মহামতে ! বিস্তার-পূর্বকি রুদ্রদর্গ আমাকে বলুন, মরীচিমাদি মহর্ষি-গণ কিরপেই বা অনুস্ঞি করিয়াছিল ! বশিষ্ঠ পূর্বে জেমার মানসপুত্র হইয়া কিরপেই বা মিত্রা-বরুণের পুত্র হইয়াছিল !

দূত কহিলেন, হে দভম ! আমি তোমাকে ক্রেদর্গ ও মুনিগণের প্রতিদর্গ বিস্তারিতরূপে বলিব প্রবণ কর। কল্লের আদিকালে ভগবান

আত্মতুল্য হুতের নিমিত্ত ধ্যান করিলে ভাঁহার কোড়ে কুমার নীললোহিত আবিভূতি হইলেন। তিনি অর্দ্ধনারীখন বপুঃ, প্রচণ্ড ও অতি প্রকাণ্ড শরীরবান্ হইয়া দিগ্বিদিগ্ তেজোখারা বিভা'সত করিতে লালিলেন দেখিয়া প্রজাপতি ভাঁহাকে কহিলেন, হে মহামতে ! ভূমি আমার বাক্যে আপন শরীর বিভাজিত কর। প্রতাপনান রুদ্রে ব্রন্ধার সেই বাক্য এবণ করিয়া নিজদেহে নারী ও পুরুষরূপে পৃথক্ পৃথক্ বিভাগ করিলেন। সেই পুরুষকে আর একাদশ ভাগে বিভক্ত করিলেন। হে ভিজসত্ম! তাঁহাদের নাম বলিব তাবণ কর, অজৈকপাদ, অহি, ত্রধ্ন, কপালী, রুদু, হর, বহু-রপ্তামক, অপরাজিত রুয়াকপি, শস্তু, কপর্নী, বৈরত এই একাদশ রুদ্র ভুগনেশ্বর গলিচা উক্ত হয়। সেই বহুরপী রুদ্র সেই স্ত্রীকেও এক:দণ ভাগে বিভক্ত করিয়া পত্নীরূপে গ্রহণ করিলেন। তদনন্তর প্রতাপবান্ রুদ্রে জনে উতান্যাপে শ্যন-পুৰ্বাক খোৱতৰ তপদ্যা ক'ব্যা স্থান্তি কৰিতে লাগিলেন। হে বিপ্রেক্ত ! তিনি তপোবলে বিবিধ ভূত, পাপপিশাচ, সিংহ, উষ্ট্র, মকর ও বেতালাদি সহজ্র সহজ্র অন্যান্য ভূতগণের স্মন্তি করিলেন, তাহারা ব্রহ্মভূত হইয়া কৈলাদে খণস্থিতি করি:ত লাগিল। তিনি, বিনায়ক রুদ্রের পঞ্চন কোটি স্ষ্টি করিয়া 'ভারকান্তর বিনাশের নিমিত্ত কলকে স্ষ্টি করিলেন। ক্রদ্র এই প্রকার খবগতি করিও এক্ষণে মর্টিছেখদির অনুসূদর্গ কীর্ত্তন করিব শ্রেবণ কর। সঃজু ভ্রহ্মা, দেবাদি স্থাবরান্ত প্রান্ত প্রজা সৃষ্টি করিলেন। যথন দেখিলেন যে তাহার। আর বৃদ্ধিত হইতেছে না, তখন আল্লাদৃশ মান্স-পুত্রগণকে স্ঠি করিলেন। মরীচি, অত্রি, অঙ্গিরাঃ পুলকা, পুলহ, জতু, প্রচেতাঃ, বশিষ্ঠ ও মহামতি

নারদ পুরাণে এই নয়জন মান্দপুজ নিশ্চিত হট্। য়াছেন। অগ্নি ও পিতৃগণ, ত্রক্ষার মান্যপুক্র; হে মহাভাগ! ব্ৰহ্মা, স্বায়ন্ত্ৰ মনুকে এবং শত-রূপাকে স্মষ্টি করিয়া মনুকে ঐ কন্যা প্রদান করি- ' লেন। মনু হইতে দেবী শতরূপা, প্রিয়ব্রত ও ' উত্তানপাদ নামে ছুট্ পুত্র ও প্রস্তুতি নামে এক কনা। প্রদাব করিলেন। সন্তু, দক্ষকে প্রস্তিক্যা। সমর্পণ করিলে দক্ষের ঔর্সে প্রসৃতি চতুনিরংশতি কন্যা প্রেষ্য করিলেন, এক্সণে ভাহাদের নাম প্রেবণ কর। শ্রন্ধা, ভূ'ত, ধ্রতি, তুষ্টি, পুষ্টি, মেধা, ক্রিয়া বুদ্ধি, লড্জা, বপুঃ, শান্তি, সিদ্ধি, কীর্তি, এই ত্রয়ো দশ দক্ষকন্যাকে ধক্ষা, পরিগ্রাহ করিলেন। জ্রানাদ পত্নীগর্ভে কামাদি পুত্র উৎপন্ন হইল, ধ্যের পুত্র পৌত্রাদিদ্বরো সম্মরণ্শ পরিবন্ধিত হটতে লাগিল, ভাহাদের ক্ষিতাগণের নাম কার্ত্তন কারব। সম্ভতি অনস্থা, আছি, আনিত, জনা, দরতি, দংলা, উজ্জা খাছি, স্বাহা ও স্বল্ল এই একালণা দক্ষ এই কন্যাসকল মহাত্রা মরীচি আদি ঝারণণকে প্রদ্নে করিলেন, ভাছাদের পুত্রগণের নাম প্রবন কর। ম্রীচির সম্ভূতি পত্নীর গটে কশ্পেন্নি জন্মগ্রহণ করেন। স্মৃতি অঞ্চিরর পরী তিনি, সিনীবালী, কুছ, রাকা, অনুমতি, এইসকল কন্য প্রাস্ব করেন। এইরূপে ছাত্রির অনসুষা গর্ভে দোম, দুৰ্কাদা ও যোগী দহাত্ৰেয় এই সকল নিষ্পাৰ্থ পুত্ৰ উংপন্ন হইন। পুলজের, প্রীতিভাষ্যায়, দাদানি পুত্র উৎপন হয়, তাঁহার পুত্র বিশ্রবাঃ, লঙ্কাপুর : নিবাদি রাক্ষণণ তাহার পুত্র, উহাদিপেরই বধের নিণিত ভগবান্ কীরোদ সমূত্রে ত্রলাদি দেবগব কর্ত্ত্ব প্রাখিত হুইয়া অবনীতলে রাম্রূপে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন। পুলহ প্রজাপতির ভার্যাকনা, কৰ্দম অম্বরীন্সহিষ্ণু এই তিন পুত্র প্রস্ব করেন।

অগ্নিপুরাবের পরিশিষ্ট।

04/2, B_{PS}(IO_P) A DEN () के शिक्षा 04/2, B_{PS}(IO_P) A DEN () के शिक्षा (गई मभरत्र (गई शिक्षा

ক্রতুর সম্ভূতি নামক ভাগাা, মঙ্গুষ্ঠ পর্বাপরিমিত প্রক্ষালিত ভাষ্করতুল্য যষ্টিসহস্র বালখিল্য ধারি-দিগকে প্রদাব করেন। প্রচেতার সভ্যাভার্যায় সভাসকা ডিন পুত্র উৎপন্ন হয়, তাঁহাদের শত সহস্র পুত্র পৌত্রাদি উৎপন্ন হট্য়া চতুদ্দিকে वाधि इवेशाहा। विभारतेत डेड्बा वार्याय बोका উদ্ধান্ত, শুক্র প্রভৃতি সপ্তজন পুত্র উৎপন্ন হয়। ভ্ঞার খ্যাতিপ্রাতে লক্ষা উৎপন্ন হইলে, বিষ্ণু তাহাকে গ্রহণ করিলেন। খ্যাতির গর্ভে ধাতা ও বিধতি নামক পুত্ৰয়ও জন্মগ্রহণ করে, আয়তি ও নিয়াত নাম্বী গুণোভনা কন্যান্বয় ধাতা ও বিধা-তার ভাষ্টা হয়, ধাটার আয়তিতে প্রাণ এবং বিধাতার নিয়তিতে মৃক্তু নামক পুত্র জনাগ্রহণ করে। হে বিপ্র! তাহা হইতে মৃত্যুক্যা মার্ক ভেয় জন্মলাভ করিলেন। প্রাণের পুত্র দেবশিবা দুটিসান নামে বৈখ্যাত সঞ্জয় তাঁহার পুত্র। তে মহাভাগ! তাহা হইতে ভাগববংশ বিভাতি লাভ ক্ষিয়াছে। বৃদ্ধার, অগ্নিমক অগ্রন্থ তন্য হইতে সাহাদেবী প্রদীপ্র তেজাঃ পাবক, পাবমান ও জলাশা শুচি এই তিন পুত্র প্রদব করেন। ইইালের ষ্ট্রছারিংশং পুত্র ও দিন প্রের, এই-রূপে ইহাদের উন্পঞ্জার লংশ ক্রিত হইয়াছে, পুৰেৰ কহিয়াছি যে ত্ৰেন্ধা পি ১গণের সৃষ্টি করেন, শেই পিতৃগণ হইতে স্বল্ভ মেনাউৎপন্ন হল। মেনা হইতে ভূধর সকল জনাগ্রহণ করিয়াছে। বেকাা, "প্রজা সৃষ্টি কর" এই বলিয়া দক্ষকে খাদেশ করিলে, তিনি যেরূপে সৃষ্টি করিয়াছিলেন হে দ্রম ! তুনি তাহা আবন কর ৷ হে মুনে ! দক্ষ এথনে মানগে ভূতসমূহের স্তৃষ্টি করিয়া, দেব-গণে, श्राविभाग, शक्कार्यभाग, अञ्चलकार । असम्बर्धाः ি সজন করিলেন, এইরূপে স্ট হইয়া প্রজা দকল

ৰ্কি'ছ হইতে লাগিল। পতি মৃ'ন সৃষ্টি হেতু চিন্তা করিষা নৈথুন ধর্মগারা ^{বিবিধ} প্রজা স্থান্তি করিতে ইদৃক **হইলেন**। বীরণ প্রজাপতির অধিকা নামে এক কন্যা হয়। শুনি-য়াছি দক্ষ তাহাতে ষষ্টি কন্যা স্থলন করিয়া ধর্মকে দুঃ, ক্ল্যুপকে ত্রেষ্টেশ, দোমকে সপ্তবিংশভি বিষ্ণু নেমিকে চারি, বৃদ্ধ পুত্রকে তুই, অঙ্গিরাকে ছু^ট, কুশাখকে ছুই কন্যা প্রদান করেন, তাহা-দিগের ঋপত্য সকল ভাবণ কর। বিখে দেবগণ বিশ্বায় সাধা ও অসাধ্যগণকে মক্ততীতে মক্তত্বান-গণকে উৎপাদন করেন। বস্তু হইতে বস্তুগণ, ভাতু হইতে ভালুগণ, সৃহতায় মুহত্তি দেবগণ, ন্দ্যাতে খোষগণ, নাগ্ৰাথনায় জানিজগণ উৎপন্ন হয়। প্রথমে পুথিবী বিষয় সমস্তই অরুদ্ধতীতে জনালাভ করিরাছে। হে মহামতে। সংক্রায় সংকল্প নামক পুত্র উৎপন্ন হয়। দেংজ্যোতিঃ এমুখ তাহারা মনেক, বস্তু শটজন, তাহাদের নাম জাবৰ কৰ। আপি, এব, সোম, ধর, অনিল্ অনল, প্রভাষ ও প্রভাষ। তাহাদের শত শত সহস্র সহস্র পুত্র প্রেতি, স্থাগণ বছতর, ভাছা-দের সহল সহল পুতা। অণিতি, দিতি, দকু, অ'রকা, ভরদা, ভরভি, বিনতা, ভাষা, জোধা, স্বসা, ইরা, কজে, ও মুন। ইহাদের অপতাগণের নাম জাবৰ কর্ অলিভি গভে কশাঁপের ঔরসে স্থাভন দ্বাদশ পুত্র উৎপন্ন হয়, ফথা ভর্গ, ঋংশ, অব্যাসা, মিএ, বরুণ, মাওতা, শাতা', শিবদাস্, ত্বকা, পৃষা, ইন্দ্র ও বিফু। কশাপ হুটতে দিতির ভূই পুত্র ভদ্মগ্রহণ করে, একের নাম হিরণ্যাক, সেই মহাকায় দৈত্য গরাহরূপি বিষ্ণু কর্তৃক নিহত হয়। দিভির মন্তানা বহুতর মহাবল পুত উংল পন হইয়াছিল; গন্ধৰি হইতে অৱিটা গৰ্ভে

কৈল্পন্থ ইন্দায় বছতের বিদ্যাধরগণ উৎপন্ন হয়, কশ্যপমুনি, হুরভিতে গোগণের এবং বিন্তায় গরুড ও অরুণ নামে বিখ্যাত চুই পুতের উৎপত্তি করেন। গরুড় প্রীতিপূর্বক অমিত তেজাঃ দেব-দেব বিষ্ণুর বাংন এবং অরুণ সূর্যার সার্থি হয়েন। কশ্প হইতে ভাতা গৰ্ভে অশ্ব, উঞ্জু, গৰ্মভ হন্তী, গণৰ ও মুগ এই ছয় পুত্ৰ এবং কোধা গর্ভে ছুফ্টজাতি পশুগণ জন্মগ্রহণ করে। ইরা, বৃক্ষ্লতা, বল্লী, তৃণজাতি ও অধপুত্রিকা এবং **স্থা, যক্ষ, রক্ষ ও অপ্**রাগণকে প্রস্ব করেন। বিষোলবৰ দৰ্শ্যুক মহানাগ সকল কজ পুত্ৰ; যে সপ্তবিংশতি স্তত্ততা সোমের উক্ত হইয়াছে, হে ছিজ! বুণাদি মহাসত্ত্বগণ উহোদের পুত্রগণ। অরিষ্ট নেমির পত্নীগণ ধোড়শপুত্র প্রাস্ব করেন। বহুপুত্র ৰিছুষের তান্ত্রায় বিছ্যুদারি উৎপতি হই-য়াছে। ঋষি সৎকৃত ঋষিগণ প্রত্যাঙ্গরার পুত্র; দেৰ প্রহ্রণগণ, দেব্যি কুশাখের স্ত। ইহারা সহস্রসাস্তে পুনর্কার জন্মগ্রহণ করে। স্থাবর জন্ধন সকল কশ্যপের পুত্র বলিয়া কথিত হট্য়াছে। ইহাদের পুত্র পৌত্রাদিবারা প্রজা-পতির স্ক্রন বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়াছে। হে বিপ্র! নিজম্যাদায় অবস্থিত ধানান নার্দিংছ দেবের এই সকল ঐশ্বর্যা এবং দক্ষ কন্যাগণের অপ্ত্য-সমূহ আমি তৈনোর নিকট কীর্ত্তন করিলাম। যে মানব শ্রেরাবান্ ইইয়া সারণ করে সে যশসান্ ও সভানবান হয়।

হে বিপ্র! এই সামি সজন বৃদ্ধির হেতু সর্গ ও অনুসর্গ তোমার নিকট সংক্ষেপে কহিলাম। মে বিস্থু পরায়ণ মানব নিরন্তর ইহা পাঠ করে সে বুনিধৌত কল্ময় হইয়া নির্দ্ধল হয় সন্দেহ নাই।

উদ্যোগেরে প্রিশিতে স্টিপ্রকরণ নামক চতুর্য অধ্যায়।

প্ৰাম অধ্যায়।

বশিষ্ঠের মিত্রাবরুণ পুত্রত্বকথন।

সুক্ত কহিলেন, হে দ্বিল। মহাত্মা ব্ৰহ্মাকৰ্ত্তক (यक्तरभ रमव मानव यक्तामि छेरभन इहेल, विकुत দেই স্জন আমি তোমাকে কছিলাম। পূর্বে ঋষিগণের সন্মিধানে আমাকে কহিয়াছিলে যে বশিষ্ঠ মিত্রবিরুদের পুত্র কিরুপে হইল ? একণে দেই পুরাতন পবিত্র আখ্যান কহিব, ভর-ঘাজ ! তুমি একমনা হইয়া মতুক্ত দেই সকল প্রাবণ কর। সর্বব বেদবিদগ্রগণ, সর্বব ধর্মার্থ ভদ্ধ বিৎ, সর্ববিদ্যার পারগদক নামক প্রজাপতি, কশ্যপকে ত্রেয়ানশ কন্যা দান কার্য়াছিকেন। ভাঁহাদের নাম বলিব শ্রেণ কর, অদিভি, দিজি, দম্ব, কাষ্ঠা, মূহুৰ্ত্তা, দিংহিকা, শ্ৰুতা, কোষ্ঠা। জ্রভি, বিনতা, কজে, যাজুদেখী ও শুনী এট ত্রয়োদশ দক্ষ তুহিতা কশ্যপকে প্রদন্ত হয়। তাঁচা দৌর মধ্যে অদিতি জ্যেষ্ঠা ও বরিষ্ঠা ঐ অদিতি অগ্নি সমপ্রভাবাদশ পুত্র প্রদাব করেন, ভাষাদের কর্ত্তক দিবারাত্রি প্রবর্ত্তিত হইতেছে, ভাহাদের নাম বলিব আহবণ কর। ভর্গু অংশু, অ্যামা, মিত্র, বরুণ, সবিতা, ধাতা, বিবস্বান্, হুটা, পুষা, ইন্দ্ৰিফু দ্বাদশ; এই দ্বাদশাদিত্য বৰ্ণ ও পালন করেন। অদিভির মধ্যমপুত্র বরুণ, বারুণী অর্থাৎ প্ৰিচম্দিকে লোকপাল বলিয়া প্ৰখ্যাত ও শক্তিত হয়। পশ্চিম সমুদ্রের পশ্চিম ভাগে স্বর্ণয়, জীমান অন্ত নামক পর্বত বিরাজ করে। উহা ধাতু প্রস্রবণাহিত দর্শবরত্বায় দ্বলে শংযুক্ত ও নামারভুমর স্শোভন হইয়া প্রভিভাত এবং মহা-গুছা ও দরীবিশিষ্ট ও দিংহ শাদ্দিলনাদে নিনাদিত ইহার নির্জ্ঞন ভূমিথও সকলে দেব ও গন্ধর্কগণ

অগ্নিপুরাণের পরিশিষ্ট।



ক্রেলে জগৎ অন্ধকারে পরিপূর্ণ হর, উহার শৃঙ্গে বিশ্বকর্মা কর্ত্তুক নানামণিময় স্তম্ভবারা নির্দ্ধিতা, জাস্থ্নদম্মী, দিব্যা সংশাভনা, নানা ভোগসাধন সম্পন্ন। স্থাবতীনামে মনোহরপুরী বিদ্যমান আছে। সেই পুরীতে স্বয়ং ক্রন্মাকর্ত্তুক নিযুক্ত বরুণ ও আদিত্য নিজতেকে দীপ্যমান হইয়া এই সমস্ত লোক পালন করিয়া থাকে।

িকোনও সময়ে অপারা ও গন্ধর্নাগণে উপাত্ত-মান এবং দিব্য গন্ধাতুদীপ্তাঙ্গ ও দিব্যাভরণ ভূষিত হুইয়া বরুণ মিজের সহিত বন্ধমন করিয়াছিলেন, তথায় কুর-ক্ষেত্রে নিরস্তর জক্ষমি দেবিত নানা-পুষ্পা ফল সম্ভিত স্থাোভন খাবণ্যে উদ্ধারেতা মুনিগণের আশ্রম দকল দর্শন করিলেন। বহুপুষ্প-ফলোদক সেই তার্থ আশ্য করিয়া উভযে চার ও ও কৃষ্ণাজিন ধাৰণপূৰ্বকে উভ্যক্তপে তপস্থাচরণ করিতে লাগিলেন। তাহার এক বন খদেশে পুগুৰীক নামে স্থ:শান্তন এক বিমল ব্ৰদ অবন্ধিত, উহার তীরপ্রদেশে বহুতর গুলা লভাৰারা আকীৰ্ণ मानाविध विरुक्तम मारमिनाषिक, मानाविध करूपरम আছের। উহার বিমলজনে নলিনীকুল আংক্টিত হ্ইয়া পরম শোভা ধারণ করিতেছিল,তাহাতে মীন, কছেপ প্রভৃতি বহুতর জলজীৰ স্থাধে নিরন্তর বাস করিতেছে। তথায় ত্রনাচারী মিত্র ও বৰুণ ভাতৃদ্য বিচরণ করিতে লাগিলেন। তাঁহারা যদৃচ্ছাক্রমে বিচরণ করিতে করিতে সেই স্থানে উপস্থিত হই-त्तन। अन्तरा वदा वहानमा उद्योग अमाग्र मधी গণের সহিত তৃথায় স্নানার্থ উপনীতা হইয়া হাস্য কৌতুক ও দঙ্গীত আরম্ভ করিল, উর্বাণী, মনোহর क्रभनावनात्रण्यान, यत्नाख्या, यस्त्रक्षी, त्यांनी, क्यन्वर्कां का श्रिक्षं, कुछ्बनिद्वांक्रशं, भवाभवांत्र-

তাক্ষী, রক্তোষ্ঠী, মৃত্ভাষিণী, লখাকুন্দ ইন্দুস্গ্লভ অবিরল সমণ্ড পংক্তি শোভিতাননা, ফলে, সনাগ্ জনপা, মনস্বিনী, করদন্মিত মধ্যাক্ষী, পীনোকজ ঘনস্থনী, তম্মী মধুরালাপা, স্থমধ্যা, চারু**হা'স্নী** রজে।ৎপল সন্নিভ করচবণা, স্থপদী, বিয়াছিতা, পূৰ্বচন্দ্ৰভা, বালা হললাটা ও মত কুঞ্জর পামিনী মিত্র ও বরুণ দেবছয় দেই তল্পীর রূপ দর্শন কহিয়া কন্দর্পশরে জর্জ্জারিত ইইলেন। উব্ধানীয় হাস্ত্র, লাস্ত্র, ললিভিন্মিত, মৃত্রেচন ও ম**ধ্রসঙ্গীত** ও কটাক এবং পুংসোকিল ও ম**ভ্জমর প্রস্ত**ন, এই সকল দর্শন করিয়া তাঁহাদের উভয়েরই রেড: খুলন হইল। ঐ বেতঃ তিনভা**গে বিভক্ত হ**ইয়া একলাগ কমলে একভাগ জনে ও একভাগ ক্ষুৱা পতিত হইল। হে মুনিদভ্য ! ক'মলে বশিষ্ঠ স্থলে কুন্তমধ্যে পতিত হওয়াতে মগন্তঃ এবং জলে মীনগণের উৎপত্তি হইল। উৰ্বনী নিজস্থানে গমন কৰিল; সেই মহান্ বশিষ্ঠ তাহাতে জন্মগ্রহণ করিলেন, কুম্ভনধ্যে অগস্ত্য ও জলে মৎস্থের উৎপত্তি হইল। অনস্তর মিতাও বরুণ উভয়ে খাশুমে গমনপূর্বাক পরজ্যোতি, শনাতন ত্রন্মের লাভাশয়ে উগ্রন্তর তপস্থা আরম্ভ করিলেন। অনন্তর স্থরশ্রেষ্ঠ ক্রন্ধা আগমন করিয়া। পুত্ৰবানু মহাছ্যতি নিত্ৰাবরুণ দেবদয়কে কহি লেন, তোমাদের বৈঞ্নীসিদি সংসাধিত হইয়াছে আর তপস্যার প্রযোজন নাই, একণে তোমরা নিজ নিজ অধিকারে অবস্থান করিয়া লোক রক্ষ্য কর। ত্রন্ধার বাক্য শ্বণ করিয়া ভাঁছারা নিজ निज অধিকারে নিযুক্ত ছইলেন।

হে বিপ্রা: এই আমি মহাজ্মা বশিষ্ঠ ও ধীমান অগস্তঃ যেরূপে মিত্রাবরুণের পুত্র হইয়াছিলেন, ভাহা ভোমার মিকট বর্ণন করিলাম। এই পুরা স্থানি, পুণা, পাপনাশন উপাথানি, নৃপ, অষাত্য সহিত শুবণ করিয়া পাপ হইতে প্রযুক্ত হইতে পারেন। বে কেহ পুত্রকামী শুচি ও প্রতপরারণ হইরা শুবণ করে সে অচির কালমধ্যেই পুত্রলাভ করে সন্দেহ নাই। হে বিজোভম! যে মানব হব্যকরে ইহা পাঠ করে, দেবগণ পিভৃগণ ভাহার প্রতি প্রদন্ম হন; যে নর, প্রাভংকালে উঠিয়া ইহা পাঠ করে, সে উত্তম পুত্রলাভ করিয়া স্বর্গনামী হয়। পূর্বেইহা বেদজ্ঞগণ কীর্ত্তন করিয়া ক্রিনা গ্রামী হয়। পূর্বেইহা বেদজ্ঞগণ কীর্ত্তন করিয়া ক্রিনা শুবণ আমি ভোমার নিকট কীর্ত্তন করিয়ালাম। যে ইহা স্বর্গনামর নিকট কীর্ত্তন করিবালাম। যে ইহা স্বর্গনামর নিকট কীর্ত্তন করিবালাম। যে ইহা স্বর্গনামর নিকট কীর্ত্তন করিবালাম। যে ইহা স্বর্গনামর করে সন্দেহ নাই।

ষঠ অধ্যায়।

মার্কভেট্যাপাখ্যান।

भूखपंक्षमेग्भभा अक्षाय स्थाप ।

ভরত্বাজ কহিলেন, হে দূত! সহর্ষি মার্কণ্ডেষ কিরুপে মৃত্যু জয় করিয়াছিলেন, তাহা বর্ণন করিব, পুর্বো আপনি আমার নিকট এইরপ কহি-য়াছেন একশে তাহা কার্ভন করিয়া আমার কৌতু-হল চরিতার্থ্ করুণ।

সূত কহিলেন, হে ভরষাজ। আমি এই পুরারত বর্ণন করিতেছি, তুমি এবং ঋষিগণ সকলেই
ভাবণ কর। মহাপুণ্য ক্রুক্কেত্রে উৎকৃষ্ট আশুমে
ব্যাস্পীটে আনীন, কৃতস্থান ও কৃতজ্ঞপ, মুনি
শিষ্যগণে পরিবৃত, বেদ বেদাস তত্ত্ত, সর্বাশাস্ত্র
বিশারদ, মুনি ভোক্ত কৃষ্ণ বৈপায়ন মুনিকে যথাবিধি প্রশাম করিয়া পরমধার্থিক শুক্দেব কৃত্ত্ত্তেলি
হইয়া এই উদ্দেশেই জিজ্ঞানা করিকেন, ধে ছে

পিত:! মুনিবর মার্কণ্ডেয় কিন্দেশ মুক্তা জয় করি-शाहित्नन, छनिए अकाख को जूरन इक्टिकाइ. আপনি বর্ণন করিয়া চরিতার্থ করুণ। ব্যাস কহি-त्मन, (इ वटम ! चार्यि ७) दे पुताबुक वर्गन कान-তেছি তুমি এবং মুণিগণ সমাহিত চিত্তে ইহা প্রবণ কর। ভৃগুর, খ্যাতি নাম্মী পদ্মী গর্ভে মুকণ্ড নামক পুত্র উৎপন্ন হয়। মহাত্মা মৃকভুর ধর্মা নিরতা এবং পতি শুক্রায়ণ তৎপবা শ্বমিত্রা নার্মী পত্নী ছিলেন, তাঁহার গর্ভে মহামতি মার্কণ্ডেয উৎপত্তিলাভ করেন। ভৃত্তর পৌত্র মহামতি পিতৃবল্লভ বালক মার্কণ্ডেয়, পিতা কর্ত্তক সংস্কৃত হইয়াদিন দিন বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। বালক জন্ম গ্ৰহণ কবি বা মাত্ৰেট এই দৈবনাণী হটল যে "দাদশ বর্ষে উপনীত হইলেই ইছাব मुङ्ग इहेर्द"। এই निववानी खोदन अदः बाला कर् মুখ কমল দুৰ্শন কৰিয়া জনক জননী সাভিশ্য তুঃখিত ও মতান্ত দত্তপ্ত হৃণয় হুইলেন। তথাপি ধীমান্পিতা, ভাঁহার কালিক ক্রিয়া দকল সম্পন্ন করিলেন, এবং পুত্র মার্কণ্ডেয়কে গুরুগুহে পাঠা-ইয়া দিলেন। তথার তিনি গুরু সেশায় নিযুক্ত থাকিয়া কেদানি শাস্ত্র সমুদার পাঠ করিয়া গুছে প্রভ্যাগর্ম্পূর্বক বিনায়ান্তিভ হইয়া পিতা মাভার **চরণ वस्पना कরিলেন। उपनस्तर, মহাত্যুতি মার্ক**-ভেয় গৃহেই শ্ৰন্থান করিতে লাগিলেন। সেই মহাত্মাকে এবং উচ্চার বিলকণ প্রজ্ঞা নিয়ীকণ করিয়া মাতা পিতা অভ্যন্ত চু:খিত ও সভও হইতে লাগিলেন। ছে শুক। মহামতি মার্কথেয়। তাঁহাদিগকে ছঃখিত দে খয়। কহিছে লাগিলেন, কি নিমিত্ত আপনাদের ঈদৃশ ছুঃগ। হে মাতঃ! আপুনি আমার মতিমানু পিতার সহিত সভত হুংখ ক্রেন্ জন্নি । আমি জিজ্ঞানা ক্রিডেছি ছঃথের

কারণ প্রকাশিক করুন। দেই মহাতারে এই বাক্য আৰণ করিয়া তদীয় মাতা, পূর্ব্বোক্ত ভবিষ্য-म्वांगी स्थावक कीर्जन कतिहालन। **जाहा** खानन করিয়া ভিনি মাতা পিতাকে কহিলেন মাতঃ আপনি পিতার দহিত কিছুমাত্র ছুঃখ করিবেন না, আমি তপ্ৰ্যা ভারা আমার মৃত্যু অপন্যন্ করিব দলেহ নাই। আমি যাহাতে চিবায়ু হুইতে পারি দেইরূপে মহাতপের মাচরণ বরিব। জনক জননীকে এইরূপে প্রবোধ প্রদান করিয়া নহামতি মার্কণ্ডেয় নানাখাবিসমাকুল ভলীবনে গমন করিলেন। মুনিবর মার্কণ্ডেয়, তথায় মুনিগণের সহিত স্থাপিনিউ নিজ পিতামহ ধর্মাজ ভৃত্যুনিকে দর্শন করিলেন। ভুগু, মহাভাগ বালক মাকণ্ডেয়কে উপস্থিত দুৰ্শন করিয়া কহিলেন, বৎস! তোমার পি 🕆 মাতাব ও বন্ধুগণের কুশল ত ? ভুমি কি নিমিন্ত এখানে আগমন করিয়াছে ? মহাত্মা মুনি কর্ত্ত এইরূপে উক্ত হ্র্য়া মুন্রর মার্ক,গুর ভবিষ্যদ্রাণী আমূলতঃ की छन कहिरलन। (भो छ्वेद र्याका ध्वरण कहिश মহর্ষি ভগু পৌত্রকে কহিলেন ছে মহামতে! এ বিষয়ে তুমি কি করিতে ইচ্ছা ক্রিছেছ। মার্ক-Cety कहिलान CE शहरता! वाचि उटिशावितन জীবগণের বিনাশ কারী মৃত্যুকে জয় করিবার ইচ্ছা করিতেছি; আপ ন এ বিষয়ে উপায় বলিয়া पिछन। क्षत्र कहिर्मन (व वंदम! कांशमरना-বাক্যে ও তপদ্যাঘারা নারায়ণের এর্চনা ব্যতিরেকে অন্য প্রকারে মৃত্তকে জয় করিতে কেইই সমর্থ হয় না ৷ তুমি দেই খনস্ত, জিফু, অচ্যুত, পুরু-ষোত্তম ভূক্তপ্লিয়, হুর শ্রেষ্ঠ বিষ্ণুকে ভক্তি পূর্বক विकास करें हैं। सार्य अप, प्राप्त **व्यक्ति** जनगा जाले त्यहे जनाजन नाहाराजर

জরা মৃত্যু জয় করিয়। দীর্ঘায়ঃ ছই৬' য়
খান করিতেছেন। সেই ভক্ত বহুদান প্রী
নারায়ণ জনার্দ্ধন নার্দিংহ ব্যভিরেন হ মুখ্য সেন
নিবারণ করিতে কাহারও সামর্থ নাই।
কুনির লোক, কর্তা, বিধু, জিফু, গোপ্রাক, জালের নার্দিংহকে নিয়ন প্রা
বহুদা যদি ভূমি অজদের নার্দিংহকে নিয়ন প্রা
কর, তাহা হইলেই দদৈনা মৃত্যুকে জন কার্দিং
পারিবে সংলহ নাই।

ব্যাস কহিলেন, মহাতেলা মারু প্রেন, শিকামহের সেই ৰাক্য শ্রেবণ করিয়া জুনির্মা পুর্যাক
বলিলেন, হে তাত ! বিফুই আরাধ্য কেব ক
ইহা নিশ্চয় করিয়া কহিলেন; ডি, লি ক

হইয়া মৃত্যু হরণ করিবেন । উলি ক
কিরপে তাঁহার আরাধ্য ক্রিব, গাহনে ক
সন্তুত্ত হরণ করিব আরাধ্য ক্রিব, গাহনে ক
সন্তুত্ত হরণ করিব আরাধ্য হরণ কবি না

ভৃত কহিলেন, তুলাও ভদ্রানা ।

দহ পর্বত হইতে উৎপন্ন হইয়াছে

তুমি ঐ ভদ্রতটে কেশব মৃত্তি স ভাপে।

গল্প পুস্পাদিবারা তাহার অর্চনাত্বে ইংশ্রেম্

মায়ত করিয়া শ্রাচক্র গদাধর মৃত্তি কারে ধ্যান

করিতে করিতে "ওঁ নমো ভগবতে বিষ্কালী ।

এই বাদশাক্ষর মন্ত্র জপ করিবে ভা।

এই বাদশাক্ষর মন্ত্র জিন্তান বাদশাক্ষর মন্ত্র জিনিবাদ্যান বাদ্যান বাদ্যান

ব্যাদ কহিলেন, ভৃত্তর বাক্য শুলন ক'ং নার্ছী
মতি মার্কণ্ডর দহ পর্বেতাভিমুখে গনা- করিলা
নারায়ণমূর্ত্তি নির্মাণ করিলা পূজা ক'লে, শে
শেলা । ইনি ইনিং সংখ্যা ক্রিটি তপ্না বিলিক লা গলেন, ঠানী

ु िर्देश मोरायन । क्षित्रभाषा काम पूर्व क्रिक्री ने से सामुद्रा । ए स्वादक विश्व कितान क्रिकान स्तिमक कतिहा माकर उम्र मानि क यम मनाव नेहिंग। ' क्ष नाम । के विकित किया के किरत विकृत्य किया के नम क्रिक् भावक लोबक क्रिकेश गमन । वर्ष ! १ वर्ष क्षित हैं अस्पर्ध हुन दे भारत्यमें कहि । अस े में १० जेंगा सम के ब्रिट्ट विकूत्रात्रां । इंदिक रे शांत कूल प्रदेश डाशांत मासूर्य में के अरी हैं हैं। लेकिक की जार जारिक

अक्षांत्रः ^{भे}ं शक्षात्ररमात् **ड**० १ ५०७७ ३

भ की श्रम के दाव मर्गनेगात जोलन बद्या कायरमञ

集 鐵鐵 小哈爾薩 你只 Mis. Comprise

11、1000年1日 " 4, 0°, Paulio à Brima" W. M. Salk